फ़ज़ाइले आमाल

2

फ़ज़ाइले सदक़ात

फ़ज़ाइले हज

शेखुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया (रह०) कान्धल्वी

फज़ाइले आमाल

फज़ाइले हज फज़ाइले सदक़ात

शैखुल हदीस हज़रत
मौलाना मुहम्मद ज़करिया (रह०)

www.idaraimpex.com

फ़ज़ाइले आमाल (भाग 2)

Fazail-e-A'amaal (Vol.2)

लेखक: शैख़ुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया (रह०)

प्रकाशन : 2015

ISBN 81-7101-026-1 (VOLUME 2)

TP-366-15

Published by Mohammad Yunus for

IDARA IMPEX

D-80, Abul Fazal Enclave-I, Jamia Nagar
New Delhi-110 025 (India)
Tel.: +91-11-2695 6832 & 085888 33786
Fax: +91-11-6617 3545 Email: **sales@idara.in**
Online Store: **www.idarastore.com**

Retail Shop: **IDARA IMPEX**
Shop 6, Nizamia Complex, Gali Gadrian, Near Karim's Hotel
Hazrat Nizamuddin, New Delhi-110013 Tel.: 085888 44786

फ़ज़ाइले सदक़ात

(भाग 1)
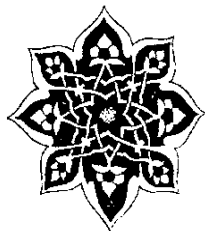
शैखुल हदीस हज़रत
मौलाना मुहम्मद ज़करिया (रह०)

www.idaraimpex.com

फज़ाइले सदक़ात

Fazail-e-Sadaqat Hindi

लेखकः शैख़ुल हदीस मौलवी मुहम्मद ज़करिया (रह०)

प्रकाशन : 2015

ISBN 81-7101-027-X

TP-366-15

Published by Mohammad Yunus for

IDARA IMPEX

D-80, Abul Fazal Enclave-I, Jamia Nagar

New Delhi-110 025 (India)

Tel.: +91-11-2695 6832 & 085888 33786

Fax: +91-11-6617 3545 Email: **sales@idara.in**

Online Store: **www.idarastore.com**

Retail Shop: **IDARA IMPEX**

Shop 6, Nizamia Complex, Gali Gadrian, Near Karim's Hotel

Hazrat Nizamuddin, New Delhi-110013 Tel.: 085888 44786

विषय सूची

फ़ज़ाइले सदक़ात हिस्सा अव्वल

क्या?	कहां?

पेश लफ़्ज़

पहली फ़स्ल-माल ख़र्च करने के फ़ज़ाइल

क्या?	कहां?

दूसरी फ़स्ल बुख़्ल की मज़म्मत में

तीसरी फ़स्ल सिला-रहमी

क्या?	कहां?

चौथी फ़स्ल ज़कात की ताकीद

पांचवीं फ़स्ल ज़कात न देने पर वओदें

पेश लफ़्ज़

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम०

नहम-दुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम०
हामिदन व मुसल्लियन व मुसल्लिमन०

अम्मा बअ्दु :- ये कुछ पन्ने अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल में हैं जिनके मुताल्लिक़ अपने पहले रिसाले फ़ज़ाइले हज के शुरू में लिख चुका हूँ कि चचा जान (यानी हज़रते अक़दस मौलाना शाह मुहम्मद इल्यास) नव्वरल्लाहु मर्क़ द हू को इस रिसाले का बहुत एहतिमाम था और अपनी ज़िंदगी के आख़िरी दिनों में बार बार इसकी ताकीद फरमायी और एक मर्तबा जबकि अस्र की नमाज़ खड़ी हो रही थी तक्बीर होते हुए सफ़ से आगे मुँह निकालकर इस ना पाक को हुक्म फरमाया कि देखो, इसको भूलना नहीं। उस ज़माने में चचा जान बीमारी की वजह से खुद इमामत न करते थे, इसलिये मुक़्तदियों की सफ़ ही में वह भी शरीक थे। इतने इस्रार और ताकीद के बावजूद अपनी कोताही से इसमें देरी होती ही चली गयी और न सिर्फ़ देरी बल्कि तक़रीबन इल्तवा (स्थगन) ही हो गया था कि मुक़द्दरात से शव्वाल 1366 हि० में बस्ती हज़रत निज़ामुद्दीन रह० का लम्बा क़ियाम पेश आया जैसा कि रिसाला फ़ज़ाइले हज के शुरू में लिख चुका हूँ और इस रिसाले के इख़्तिताम के बाद भी जब सहारनपुर वापसी की कोई सूरत पैदा न हुई तो 24 शव्वाल 1366 हि० बुध को इस रिसाले की शुरूआत कर दी गयी। हक़ तआला शानुहू अपने उस लुत्फ़ व इन्आम और करम से जो मेरी गंदगियों के बावजूद दीन और दुनिया

दोनों के एतबार से दिन ब दिन ज़्यादा हैं, इसको तक्मील तक पहुँचा कर क़ुबूल फ़रमाए -

व मा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्लाहि अलैहि तवक्कल्तु व इलैहि उनीबु॰

इस रिसाले में सात फ़स्लें लिखने का ख़्याल है -

1. पहली फ़स्ल में अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल,
2. दूसरी फ़स्ल में बुख़्ल की मज़म्मत, (कंजूसी की बुराई)
3. तीसरी फ़स्ल में सिलारहमी का खुसूसी एहतिमाम,
4. चौथी फ़स्ल में ज़कात का वजूब और फ़जाइल,
5. पांचवी फ़स्ल में ज़कात अदा न करने पर वईदें,
6. छठी फ़स्ल में ज़ुहद व क़नाअत और सवाल न करने की तर्ग़ीब,
7. सातवीं फ़स्ल में ज़ाहिदों और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने वालों की हिकायात (वाकिआत)।

पहली फ़स्ल

माल ख़र्च करने के फ़ज़ाइल में

अल्लाह पाक के कलाम और उसके सच्चे रसूल सैय्यिदुल बशर के इर्शादात में ख़र्च करने की तर्ग़ीब और उसके फ़ज़ाइल इतनी कसरत से आए हैं कि हद नहीं, उनको देखने से मालूम होता है कि पैसा पास रखने की चीज़ है ही नहीं। यह पैदा ही इसलिये हुआ है कि इसको अल्लाह के रास्ते में खर्च किया जाए। जितनी कसरत से इस मस्अले पर इर्शादात हैं, उनका दसवां बीसवां हिस्सा भी जमा करना मुश्किल है। नमूने के तौर पर कुछ आयात और कुछ हदीसों का तर्जुमा अपनी आदत के मवाफ़िक़ पेश करता हूँ।

आयात

(١) هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۙ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ (بقره ع ١)

1. (यह किताब यानी क़ुरआन शरीफ़) रास्ता बताने वाली है ख़ुदा से डरने वालों को जो यक़ीन लाते हैं ग़ैब की चीज़ों पर और क़ायम रखते (पढ़ते) हैं नमाज़ को और जो कुछ हमने उनको दिया है, उसमें से ख़र्च करते हैं और वे लोग ऐसे हैं जो यक़ीन रखते हैं ईमान लाते हैं (उस किताब पर भी जो आप पर नाज़िल की गयी और उन किताबों पर भी जो आपसे पहले नाज़िल की गयीं और आख़िरत पर भी वे यक़ीन रखते हैं। यही लोग उस सही रास्ते पर हैं जो उनके रब की तरफ़ से मिला है। और यही लोग फ़लाह (कामयाबी) को पहुंचने वाले हैं।

(बक़रः रूकूअ् 1,)

फ़ायदा - इस आयते शरीफ़ा में कई मज़मून क़ाबिले ग़ौर हैं -

(अ) रास्ता बताने वाली है, ख़ुदा से डरने वालों को यानी जिसको मालिक का ख़ौफ़ न हो, मालिक को मालिक न जानता हो, वह अपने पैदा करने वाले से जाहिल हो, उसको क़ुरआन पाक का बताया हुआ रास्ता कब नज़र आ सकता है, रास्ता उसी को नज़र आता है जिसमें देखने की सलाहियत भी हो, जिसमें देखने का ज़रिया आँख ही न हो, वह क्या देखेगा, इसी तरह जिसके दिल में मालिक का ख़ौफ़ ही न हो, वह मालिक के हुक्म की क्या परवाह करेगा।

(ब) नमाज़ को क़ायम रखना यह है कि उसको उसके आदाब और शर्तों की रियायत रखते हुए पाबंदी और एहतिमाम से अदा करे जिस का तफ़्सीली बयान रिसाला 'फ़ज़ाइले नमाज़'[1] में गुज़र चुका है, उसमें हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० का यह इर्शाद नक़ल किया गया है कि नमाज़ को क़ायम करने से मुराद यह है कि उसके रूकूअ् व सजदों को अच्छी तरह अदा करे। पूरी तरह मुतवज्जह रहे और ख़ुशूअ् के साथ पढ़े।

क़तादा रज़ि० कहते हैं कि नमाज़ का क़ायम करना उसके औक़ात की हिफ़ाज़त रखना और वुज़ू का और रकूअ् व सजदों का अच्छी तरह अदा करना है।

(स) फ़लाह को पहुंचना बहुत ऊंची चीज़ है। फ़लाह का लफ़्ज़ जहां कहीं भी आता है, वह अपने मफ़्हूम (मतलब) में दीन और दुनिया की बहबूद और कामियाबी को लिए हुए होता है।

1. फ़ज़ाइले नमाज़।

इमाम राग़िब रह० ने लिखा है कि दुन्यवी फ़लाह उन ख़ूबियों का हासिल कर लेना है जिनसे दुन्यवी ज़िंदगी बेहतरीन बन जाए और वह बक़ा और ग़िना (मालदारी) और इज़्ज़त हैं और उख़रवी फ़लाह चार चीज़ें हैं –

1. वह बक़ा जिसको कभी फ़ना न हो,

2. वह मालदारी जिसमें फ़क़्र का शुबह भी न हो,

3. वह इज़्ज़त जिसमें किसी क़िस्म की ज़िल्लत न हो,

4. वह इल्म जिसमें जहल का दख़ल न हो और जब फ़लाह को मुतलक़ बोला गया तो उसमें दीन व दुनिया दोनों की फ़लाह आ गयी।

(٢) لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالْكِتٰبِ وَالنَّبِيّٖنَ وَاٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ وَالسَّآئِلِيْنَ وَفِى الرِّقَابِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ ج (بقرہ ع٢٢)

2. सारा कमाल इसी में नहीं है कि तुम अपना मुंह मश्रिक़ (पूरब) की तरफ़ कर लो या मग़रिब (पश्चिम) की, लेकिन असल कमाल तो यह है कि कोई शख़्स अल्लाह पर ईमान लाये और क़ियामत के दिन पर और फ़रिश्तों पर और अल्लाह की किताबों पर और सब पैग़म्बरों पर और अल्लाह की मुहब्बत में माल देता हो अपने रिश्तेदारों को और यतीमों को और ग़रीबों को और मुसाफ़िरों को और लाचारी में सवाल करने वालों को और क़ैदियों और ग़ुलामों की गरदन छुड़ाने में ख़र्च करता हो और नमाज़ को क़ायम रखता हो और ज़कात को अदा करता हो कि असल कमालात ये चीज़ें हैं।

आयते शरीफ़ में उनकी कुछ और सिफ़ात का ज़िक्र फ़रमा कर इर्शाद है कि यही लोग सच्चे हैं और यही लोग मुत्तक़ी हैं।

फ़ायदा – हज़रत क़तादा रज़ि० कहते हैं कि यहूद मग़्रिब की तरफ़ नमाज़ पढ़ते थे और नसारा (ईसाई) मश्रिक़ की तरफ़ नमाज़ पढ़ते थे, इस पर यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई और भी कई हज़रात से इस क़िस्म का मज़मून नक़ल किया गया है। (दुर्रे मंसूर)

इमाम जस्सास रह० ने लिखा है कि आयते शरीफ़ा में यहूद और नसारा पर रद्द है कि जब उन्होंने क़िब्ला के मंसूख़ होने यानि बैतुल मुक़द्दस के बजाए काबा को क़िब्ला क़रार देने पर एतराज़ किया तो हक़ तआला शानुहू ने यह आयत नाज़िल फ़रमायी कि नेकी अल्लाह की इताअत में है, बग़ैर उसकी इताअत (फ़रदमांबरदारी) के मशिरक़ व मग़िरब की तवज्जोह कोई चीज़ नहीं है। *(अह्कामुल क़ुरआन)*

अल्लाह की मुहब्बत में माल देता हो का यह मतलब है कि इन चीज़ों में अल्लाह जल्ल शानुहू की मुहब्बत और ख़ुश्नूदी की वजह से ख़र्च करे। नाम व दिखावे और अपनी शोहरत, इज़्ज़त की वजह से ख़र्च न करे कि इस इरादे से ख़र्च करना नेकी बर्बाद करना और गुनाह सर लेने के मिस्दाक़ है। अपना माल भी ख़र्च किया और अल्लाह जल्ल शानुहू के यहां बजाए सवाब के गुनाह हुआ।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि हक़ तआला शानुहू तुम्हारी सूरतों और मालों की तरफ़ नहीं देखते कि कितना ख़र्च किया बल्कि तुम्हारे आमाल और तुम्हारे दिलों की तरफ़ देखते हैं (कि किस नियत और किस इरादे से ख़र्च किया।) *(मिश्कात)*

एक और हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि मुझे तुम पर बहुत ज़्यादा ख़ौफ़ शिर्के असग़र (छोटे शिर्क) का है। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! शिर्के असग़र क्या है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, दिखावे के लिये अमल करना।

हदीसों में बहुत कसरत से दिखावे के लिए ख़र्च करने पर तंबीह की गयी है जो आइन्दा आएगी। यह तर्जुमा इस सूरत में है कि आयते शरीफ़ा में अल्लाह की मुहब्बत में दुनियां मुराद हो।

कुछ उलमा ने ख़र्च करने की मुहब्बत का तर्जुमा किया है यानी जो ख़र्च किया हो, उस पर मसरूर (ख़ुश) हो। यह न हो कि उस वक़्त तो ख़र्च कर दिया, फिर उस पर क़लक़ (अफ़सोस) हो रहा है कि मैंने क्यों ख़र्च कर दिया, कैसी बेवक़ूफ़ी हुई, रूपया कम हो गया वग़ैरह वग़ैरह। *(अह्कामुल क़ुरआन)*

और अक्सर उलमा ने माल की मुहब्बत का तर्जुमा किया है, यानि बावजूद माल की मुहब्बत के इन मौक़ों में ख़र्च करे। एक हदीस में है, कि किसी शख़्स ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! माल की मुहब्बत का क्या मतलब है?

माल से तो हर एक को मुहब्बत होती है, हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि जब तू माल ख़र्च करे तो उस वक़्त तेरा दिल तेरी अपनी ज़रूरतें जताए और अपनी हाजत का डर दिल में पैदा हो कि उम्र अभी बहुत बाक़ी है, मुझे एहतियाज न हो जाये।

एक हदीस में है, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, बेहतरीन सदक़ा यह है कि तू ऐसे वक़्त में ख़र्च करे, जब तन्दरूस्त हो, अपनी ज़िंदगी और बहुत ज़माने तक दुनिया में रहने की उम्मीद हो। ऐसा न कर कि सदक़ा करने को टालता रहे यहां तक कि जब दम निकलने लगे और मौत का वक़्त क़रीब आ जाये तो कहने लगे, इतना फ़लां को दिया जाये और इतना फ़लानी जगह दिया जाये कि अब तो वह फ़लां का हो गया।

(दुर्रे मंसूर)

मतलब यह है कि जब अपने से मायूसी हो गयी और अपनी ज़रूरत और हाजत का डर न रहा तो आपने कहना शुरू कर दिया कि इतना फ़लां मस्जिद में, इतना फ़लां मदरसे में, हालांकि अब वह गोया वारिस का माल बन गया। अब हलवाई की दुकान पर नाना जी की फ़ातिहा है। जब तक अपनी ज़रूरतें मौजूद थीं तब तो ख़र्च करने की तौफ़ीक़ न हुई, अब जबकि वह दूसरे के यानी वारिस के पास जाने लगा तो आपको अल्लाह वास्ते देने का जज़्बा पैदा हुआ। इसी वास्ते शरीअते पाक ने हुक्म दे दिया कि मरते वक़्त का सदक़ा एक तिहाई माल में असर कर सकता है। अगर कोई उस वक़्त सारा माल भी सदक़ा करके मर जाये तो वारिसों की इजाज़त के बग़ैर तिहाई से ज़्यादा में उसकी वसीयत मोतबर न होगी। इस आयते शरीफ़ा में माल को यतामा (यतीमों), मसाकीन वग़ैरह पर ख़र्च करने को मुस्तक़िल तौर पर ज़िक्र फ़रमाया है और आख़िर में ज़कात को अलग से ज़िक्र फ़रमाया है, जिससे मालूम होता है कि ये ख़र्चे ज़कात के अलावा बाक़ी माल में से हैं। इसका बयान अहादीस के तहत में नं॰ 1 पर आ रहा है।

(۳) وَاَنْفِقُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَیْدِیْکُمْ اِلَی التَّهْلُکَةِ ۚ وَاَحْسِنُوْا ۚ اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ الْمُحْسِنِیْنَ ○ (بقره ع ۲٤)

3. 'और तुम लोग अल्लाह के रास्ते में ख़र्च किया करो और अपने आपको अपने हाथों तबाही में न डालो और (ख़र्च वग़ैरह को) अच्छी तरह किया करो। बेशक हक़ ताआला महबूब रखते हैं अच्छी तरह काम करने वालों को'।

फ़ायदा- हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि 'अपने आपको हलाकत में न डालो, यह फ़क़्र (तंगी और ग़ुरबत)- के डर से अल्लाह के रास्ते में ख़र्च का छोड़ देना है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हलाकत में डालना यह नहीं है कि आदमी अल्लाह के रास्ते में क़त्ल हो जाए, बल्कि यह कि अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने से रूक जाना है।

हज़रत ज़हहाक बिन ज़ुबैर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि अंसार रज़ि॰ अल्लाह के रास्ते में ख़र्च किया करते थे और सदक़ा किया करते थे। एक साल क़हत हो गया। उनके ख़्यालात बुरे हो गये और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करना छोड़ दिया। इस पर यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई।

हज़रत असलम रज़ि॰ कहते हैं कि हम कुस्तुन्तुनिया की जंग में शरीक थे, कुफ़्फ़ार की बहुत बड़ी जमाअत मुक़ाबले पर आ गयी। मुसलमानों में से एक शख़्स तलवार लेकर उनकी सफ़ में घुस गया। दूसरे मुसलमानों ने शोर किया, कि अपने आप को हलाकत में डाल दिया। हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि॰ भी इस जंग में शरीक थे, वह खड़े हुए और इर्शाद फ़रमाया कि यह अपने आप को हलाकत में डालना नहीं है। तुम इस आयते शरीफ़ा का मतलब यह बताते हो, यह आयत तो हमारे बारे में नाज़िल हुई। बात यह हुई थी कि जब इस्लाम को तरक़्क़ी होने लगी और दीन के मददगार बहुत से पैदा हो गए तो हमारी यानी अंसार की चुपके चुपके यह राय हुई कि अब अल्लाह जल्ल शानुहू ने इस्लाम को ग़लबा तो अता फ़रमा ही दिया और लोगों में दीन के मददगार बहुत से पैदा हो गये, हमारे माल-खेतियां वग़ैरह मुद्दत से ख़बरगीरी पूरी न हो सकने की वजह से बर्बाद हो रही हैं। हम उनकी ख़बरगीरी और इस्लाह कर लें, इस पर यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई और हलाकत में अपने को डालना अपने मालों की इस्लाह में मश्ग़ूल हो जाना और जिहाद को छोड़ देना है।' *(दुर्रे मंसूर)*

(٤) وَيَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ط قُلِ الْعَفْوَ ط (بقره ع ٢٧)

4. 'लोग आपसे पूछते हैं कि ख़ैरात में कितना ख़र्च करें, आप फ़रमा दीजिए कि जितना (ज़रूरत से) ज़्यादा हो।'

(बक़र: रूकूअ् 27)

फ़ायदा - यानी माल तो ख़र्च ही करने के वास्ते है जितनी अपनी ज़रूरत हो उसके मुवाफ़िक़ रख कर जो ज़ायद हो वह ख़र्च कर दे। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि अपने अह्ल व अयाल (घर वालों व बाल, बच्चों) के ख़र्च से जो बचे, वह अफ़्व (ज़रूरत से ज़्यादा) है।

हज़रत अबू यमामा रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि ऐ आदमी ! जो तुझ से ज़ायद है उसको तू ख़र्च कर दे, यह बेहतर है तेरे लिए और तू उसको रोक कर रखे यह तेरे लिये बुरा है और ज़रूरत के लायक़ पर कोई मलामत नहीं। और ख़र्च करने में उन लोगों से शुरूआत कर जो तेरे अयाल में हैं और ऊंचा हाथ यानी देने वाला हाथ बेहतर है उस हाथ से जो नीचे हो (यानी लेने के लिए फैला हुआ हो।)

हज़रत अता रज़ि० से भी यही नक़ल किया गया कि अफ़्व से मुराद ज़रूरत से ज़ायद है। *(दुर्रे मंसूर)*

हज़रत अबू सईद रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि जिसके पास सवारी ज़ायद हो, वह ऐसे शख़्स को सवारी दे जिसके पास सवारी नहीं है और जिसके पास तोशा ज़ायद हो वह ऐसे शख़्स को तोशा दे जिसके पास तोशा न हो। (हुज़ूर सल्ल० ने इस क़दर एहतिमाम से यह बात फ़रमाई कि) हमें यह गुमान होने लगा कि किसी शख़्स का अपने किसी ऐसे माल में हक़ ही नहीं है जो उसकी ज़रूरत से ज़ायद हो। *(अबू दाऊद)*

और कमाल का दर्जा है भी यही कि आदमी की अपनी वाक़ई ज़रूरत से ज़ायद जो चीज़ है वह ख़र्च ही करने के वास्ते है, जमा करके रखने के वास्ते नहीं है।

कुछ उलमा ने अफ़्व का तर्जुमा सह्ल का किया है यानी जितना आसानी से ख़र्च कर सके कि उसको ख़र्च करने से ख़ुद परेशान हो कर दुन्यवी तक्लीफ़ में मुब्तला न हो और दूसरे का हक़ ज़ाया होने से आख़िरत की तक्लीफ़ में मुब्तला न हो।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से नक़ल किया गया कि कुछ आदमी इस

तरह सदक़ा करते थे कि अपने खाने को भी उनके पास न रहता था, यहां तक कि दूसरे लोगों को उन पर सदक़ा करने की नौबत आ जाती थी। इस पर यह आयत नाज़िल हुई।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स मस्जिद में तशरीफ़ लाये। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनकी हालत देखकर लोगों से कपड़ा ख़ैरात करने को इर्शाद फ़रमाया, बहुत से कपड़े चंदे में जमा हो गये। हुज़ूर सल्ल॰ ने उनमें से दो कपड़े उन साहब को अता फ़रमा दिए। उसके बाद हुज़ूर सल्ल॰ ने सदक़ा करने की तर्ग़ीब दी और लोगों ने सदक़े का माल दिया तो उन साहब ने भी दो कपड़ों में से एक सदक़े में दे दिया, तो हुज़ूर सल्ल॰ ने नाराज़ी का इज़्हार फ़रमाया और उनका कपड़ा वापस फ़रमा दिया।
(दुर्रे मंसूर)

क़ुरआन पाक में अपनी ज़रूरत के बावजूद ख़र्च करने की तर्ग़ीब भी आई है, लेकिन यह उन्हीं लोगों के लिए है जो इसको ख़ुशदिली से बर्दाश्त कर सकते हों, उनके दिलों में वाक़ई तौर पर आख़िरत की अहमियत दुनिया पर ग़ालिब आ गयी हो जैसे कि आयात के सिलसिले में नं॰ 38 पर यह मज़्मून तफ़्सील से आ रहा है।

(۵) مَنْ ذَاالَّذِیْ یُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَیُضٰعِفَهٗ لَهٗٓ اَضْعَافًا كَثِیْرَةً ط وَاللّٰهُ یَقْبِضُ وَیَبْصُۜطُ ص وَاِلَیْهِ تُرْجَعُوْنَ ○ (بقرہ ۳۲)

5. कौन है ऐसा शख़्स जो अल्लाह जल्ल शानुहू को क़र्ज़ दे अच्छी तरह क़र्ज़ देना, फिर अल्लाह तआला उसको बढ़ा कर बहुत ज़्यादा कर दे (और ख़र्च करने से तंगी का ख़ौफ़ न करो) कि अल्लाह जल्ल शानुहू ही तंगी और फ़राख़ी करते हैं। (उसी के क़ब्ज़े में है।) और उसी की तरफ़ मरने के बाद लौटाए जाओगे।

फ़ायदा: अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने को क़र्ज़ से इसलिए ताबीर किया गया है कि जैसे क़र्ज़ की अदाएगी और वापसी ज़रूर होती है, इसी तरह अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने का अज्र व सवाब और बदला ज़रूर मिलता है, इसलिये उसको क़र्ज से ताबीर किया।

हज़रत उमर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला को क़र्ज़ देने से

अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करना मुराद है।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जब यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई तो हज़रत अबुद्दहदाह अंसारी रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! अल्लाह जल्ल शानुहू हमसे क़र्ज़ मांगते हैं हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, बेशक, वह अर्ज़ करने लगे अपना दस्ते मुबारक मुझे पकड़ा दीजिए ताकि मैं आप के दस्ते मुबारक पर एक अह्द करूं। हुज़ूर सल्ल॰ ने अपना हाथ बढ़ाया। उन्होंने मुआहदे के तौर पर हुज़ूर सल्ल॰ का हाथ पकड़ कर अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मैं ने अपना बाग़ अपने अल्लाह को क़र्ज़ दे दिया। उनके बाग़ में छः सौ दरख़्त खजूरों के थे और उसी बाग़ में उनके बीवी बच्चे रहते थे, यहां से उठकर फिर अपने बाग़ में गये और अपनी बीवी उम्मे दह्दाह रज़ि॰ से आवाज़ देकर कहा कि चलो इस बाग़ से निकल चलो, यह बाग़ मैं ने अपने रब को दे दिया।

दूसरी हदीस में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ ने उस बाग़ को कुछ यतीमों पर तक़्सीम कर दिया।

एक हदीस में है कि जब यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई -

मन् जा अ बिल् ह स नति (आयत)

'जो एक नेकी करे उसको दस गुना सवाब मिलेगा', तो हुज़ूर सल्ल॰ ने दुआ की कि या अल्लाह ! मेरी उम्मत का सवाब इससे भी ज़्यादा कर दे। उसके बाद यह आयत -

'मन् ज़ल्लज़ी युक़्रिज़ुल्ला-ह'

नाज़िल हुई। हुज़ूर सल्ल॰ ने फिर दुआ की, या अल्लाह ! मेरी उम्मत का सवाब बढ़ा दे, फिर

म-स-लुल्ल-ज़ी-न युन्फ़िक़ू-न (आयत)

जो नम्बर 7 पर आ रही है नाज़िल हुई। हुज़ूर सल्ल॰ ने फिर दुआ की, या अल्लाह मेरी उम्मत का सवाब बढ़ा दे, इस पर

इन् न मा युवफ़्फ़स्साबिरू न अज् र हुम बिग़ैरि हिसाब॰ (सूरः ज़ुमर रूकूअ् 2) नाज़िल हुई कि सब्र करने वालों को उनका सवाब पूरा-पूरा दिया जायेगा, जो बे अंदाज़ा और बेशुमार होगा।

एक हदीस में है कि एक फ़रिश्ता निदा (आवाज़) करता है कि, कौन

है जो आज क़र्ज़ दे और कल को पूरा बदला ले ले।

एक और हदीस में है कि अल्लाह जल्ल शानुहू फ़रमाते हैं, ऐ आदमी अपना ख़ज़ाना मेरे पास अमानत रख दे, न उसमें आग लगने का अंदेशा है, न ग़र्क़ हो जाने का, न चोरी का। ऐसे वक़्त में वह तुझ को पूरा का पूरा वापस करूँगा जिस वक़्त तुझे उसकी इंतिहाई ज़रूरत होगी। (दुर्रे मंसूर)

(٦) يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ ط (بقرہ ع ٣٤)

6. ऐ ईमान वालो ! ख़र्च कर लो उन चीज़ों में से जो हमने तुमको दी हैं, इसके पहले कि वह दिन आ जाए जिसमें न तो ख़रीद व फ़रोख़्त हो सकती है, न दोस्ती होगी, न किसी की (अल्लाह की इजाज़त के बग़ैर) सिफ़ारिश होगी।

फ़ायदाः- यानी उस दिन न तो ख़रीद व फ़रोख़्त है कि कोई उस दिन दूसरों की नेकियां ख़रीद ले, न दोस्ती है कि ताल्लुक़ात में कोई दूसरे से नेकियां मांग ले, न बग़ैर इजाज़त के सिफ़ारिश का किसी को हक़ है कि अपनी तरफ़ से ख़ुशामद करके सिफ़ारिश ही करा ले, ग़रज़ जितने अस्बाब दूसरे से मदद हासिल करने के हुआ करते हैं, वह सभी उस दिन मौजूद न होंगे, उस दिन के वास्ते कुछ करना है तो आज का दिन है। जो बोना है बो लिया जाये उस दिन तो खेती के काटने ही का दिन है जो बोया गया है, वह काट लिया जाएगा, ग़ल्ला हो या फूल, कांटे हों या ईंधन। हर शख़्स ख़ुद ही ग़ौर कर ले कि वह क्या बो रहा है।

(٧) مَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ط وَاللّٰهُ يُضٰعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ ط وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ٥ (بقرہ ع ٣٦)

7. जो लोग अल्लाह के रास्ते में (यानि ख़ैर के कामों में) अपने मालों को ख़र्च करते हैं, उनकी मिसाल ऐसी है जैसा कि एक दाना हो जिसमें सात बालें उगी हों और हर बाल में सौ दाने हों। (तो एक दाने से सात सौ दाने मिल गये) और अल्लाह जल्ल शानुहू जिस को चाहे

ज़्यादा अता फ़रमा देते हैं। अल्लाह जल्ल शानुहू बड़ी वुसअत वाले हैं। (उनके यहां किसी चीज़ की कमी नहीं) और जानने वाले हैं (कि ख़र्च करने वाले की नीयत का हाल भी उन को खूब मालूम है।)

फ़ायदा:- एक हदीस में आया है कि आमाल छः क़िस्म के हैं और आदमी चार क़िस्म के हैं। आमाल की छः क़िस्में ये हैं कि दो अमल तो वाजिब करने वाले हैं और दो अमल बराबर सराबर हैं और एक अमल दस गुना सवाब रखता है और एक अमल सात सौ गुना सवाब रखता है। जो वाजिब करने वाले हैं। वे तो ये हैं कि जो शख़्स इस हालत में मरे कि शिर्क न करता हो, वह जन्नत में दाख़िल होकर रहेगा और जो ऐसी हालत में मरे कि शिर्क करता हो वह जहन्नम में दाख़िल होकर रहेगा और बराबर सराबर ये हैं कि जो शख़्स किसी नेकी का इरादा करे और अमल न कर सके, उसको एक सवाब मिलता है और जो गुनाह करे उसको एक बदला मिलता है और जो शख़्स कोई नेकी करे उसको दस गुना सवाब मिलता है और जो अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करे उसको हर ख़र्च का सात सौ गुना सवाब मिलता है और आदमी चार तरह के हैं-

एक - वे लोग हैं जिन पर दुनिया में भी वुसअत है, आख़िरत में भी,

दूसरे- वे जिन पर दुनिया में वुसअत, आख़िरत में तंगी,

तीसरे - वे जिन पर दुनिया में तंगी, आख़िरत में वुसअत,

चौथे - वे जिन पर दुनिया में भी तंगी और आख़िरत में भी तंगी,

(कंज़ुल उम्माल)

कि यहां के फ़क्र के साथ आमाल भी ख़राब हुए, जिन की वजह से वहां भी कुछ न मिला। दुनिया और आख़िरत दोनों ही बर्बाद हो गयीं।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जो शख़्स एक खजूर के बराबर भी सदक़ा करे बशर्ते कि पाक माल से हो, ख़बीस माल न हो, इसलिये कि हक़ तआला शानुहू तय्यब माल ही को क़ुबूल करते हैं, तो हक़ तआला उस सदक़े की परवरिश करते हैं जैसा कि तुम लोग अपने बछेरे की परवरिश करते हो, हत्ता कि वह सदक़ा बढ़ते बढ़ते पहाड़ के बराबर हो जाता है। *(मिश्कात शरीफ़)*

एक और हदीस में है कि जो शख़्स एक खजूर अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करता है, हक़ तआला शानुहू उसके सवाब को इतना बढ़ाते हैं कि वह उहद

पहाड़ से बड़ा हो जाता है। उहद का पहाड़ मदीना तय्यबा का बहुत बड़ा पहाड़ है। इस सूरत में सात सौ से बहुत ज़्यादा अज्र व सवाब हो जाता है।

एक हदीस में आया है कि जब यह सात सौ गुने वाली आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह जल्ल शानुहू से सवाब के ज़्यादा होने की दुआ की, इस पर पहली आयत नं॰ 5 वाली नाज़िल हुई। *(बयानुल क़ुरआन)*

इस क़ौल के मुवाफ़िक़ इस आयते शरीफ़ा का नुज़ूले मुक़द्दम हुआ, दूसरी हदीस में इसका उलटा आया है, जैसा कि पहले नं॰ 5 के तहत में गुज़रा है।

(٨) اَلَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا یُتْبِعُوْنَ مَآ اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّلَآ اَذًی لَّهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَیْهِمْ وَلَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ۝

(بقره ع ٣٦)

8. जो लोग अपना माल अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं फ़िर न तो (जिसको दिया उस पर) एहसान जताते हैं और न ही किसी तरह उस को तक्लीफ़ पहुंचाते हैं तो उनके लिए उन के रब के पास इस का सवाब है और (क़ियामत के दिन) न तो उनको किसी क़िस्म का ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मगीन होंगे।

फ़ायदाः- यह आयते शरीफ़ा पहली आयत के बाद ही है और इस रुकूअ् में सारा ही मज़्मून इसी के मुताल्लिक़ है। अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने की तर्ग़ीब और एहसान जता कर उसको बर्बाद न करने पर तंबीह है और किसी और तरह से तक्लीफ़ पहुंचाने का यह मतलब है कि अपने इस एहसान की वजह से उसके साथ गिरा हुआ बर्ताव करे, उस को ज़लील समझे।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि कुछ आदमी जन्नत में दाख़िल न होंगे। उनमें से एक वह शख़्स है जो अपने दिए हुए पर एहसान जताये। दूसरा वह शख़्स है जो मां बाप की नाफ़रमानी करे। तीसरा वह है जो शराब पीता रहता हो वग़ैरह वग़ैरह। *(दुर्रे मंसूर)*

इमाम ग़ज़्ज़ाली रह॰ ने एह्या में सदक़े के आदाब में लिखा है कि उसको 'मन्न' और 'अज़ा' से बर्बाद न करे। मन्न और अज़ा की तफ़्सील में

उलमा के कई क़ौल हैं कुछ उलमा ने लिखा है कि मन्न यह है कि ख़ुद उस से इसका तज़्किरा करे और अज़ा यह है कि उस का दूसरों से इज़्हार करे।

कुछ ने फ़रमाया है कि मन्न यह है कि इस अता के बदले में उससे कोई बेगार ले और अज़ा यह है कि उसको फ़क़ीरी का ताना दे। कुछ ने फ़रमाया है कि मन्न यह है कि इस अता की वजह से अपनी बड़ाई उस पर ज़ाहिर करे और अज़ा यह है कि उसको सवाल की वजह से झिड़के।

इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि असल मन्न यह है कि अपने दिल में अपना उस पर एहसान समझे, इसी की वजह से फिर ऊपर वाली बातें ज़ाहिर होती हैं, हालांकि उस फ़क़ीर का अपने ऊपर एहसान समझना चाहिए कि उसने अल्लाह जल्ल शानुहू का हक़ उससे क़ुबूल करके उसको बरीयुज़्ज़िमा बना दिया[1] और उसके माल की पाकी का सबब बना और जहन्नम के अज़ाब से जो ज़कात के रोकने की वजह से होता, निजात दिलायी। *(एह्याउल उलूम)*

मशहूर मुहद्दिस इमाम शाबी रह० फ़रमाते हैं कि जो शख़्स अपने आपको सवाब का इससे ज़्यादा मुहताज न समझे जितना फ़कीर को अपने सद्क़े का मुहताज समझता है, उसने अपने सदक़े को ज़ाया कर दिया और वह सदक़ा उसके मुँह पर मार दिया जाता है। *(एहया उल उलूम)*

क़ियामत का दिन निहायत ही सख़्त रंज व ग़म और ख़ौफ़ का दिन है जैसा कि इस रिसाले के ख़त्म पर आ रहा है, उस दिन किसी का बे-ख़ौफ़ होना, ग़मगीन न होना बहुत ऊँची चीज़ है।

(٩) إِنْ تُبْدُوا الصَّدَقَاتِ فَنِعِمَّا هِيَ وَإِنْ تُخْفُوهَا وَتُؤْتُوهَا الْفُقَرَاءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ط وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ سَيِّئَاتِكُمْ ط وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ٥ (بقره ع ٣٧)

9. सदक़ात को अगर तुम ज़ाहिर करके दो तब भी अच्छी बात है और अगर तुम उन को चुपके से फ़क़ीरों को दे दो तो यह तुम्हारे लिये ज़्यादा बेहतर है और हक़ तआला शानुहू तुम्हारे कुछ गुनाह माफ़ कर देंगे और अल्लाह जल्ल शानुहू को तुम्हारे कामों की ख़बर है। (दूसरी आयत में इर्शाद है)

---

1. यानी ज़िम्मेदारी से बचा लिया।

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ج وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ o (بقره ع٣٨)

जो लोग अपने मालों को ख़र्च करते हैं, रात दिन, पोशीदा और खुल्लम खुल्ला, उनके लिए उनके रब के पास इसका सवाब है और क़ियामत के दिन न उनको कोई ख़ौफ़ होगा और न वे ग़म में होंगे।

फ़ायदा:- इन दोनों आयतों में सदक़ा को छुपाकर देना और खुल्लम खुल्ला ज़ाहिर करके देना दोनों तरीक़ों की तारीफ़ की गयी है और बहुत सी अहादीस और क़ुरआन पाक की आयात में रिया की यानी दिखलावे के लिए काम करने की बुराई और उसको शिर्क बताया है और सवाब को ज़ाया कर देने वाला, बल्कि गुनाह को लाज़िम कर देने वाला बताया है, इसलिए पहले यह समझ लेना चाहिए कि दिखलावा और चीज़ है और यह ज़रूरी नहीं है कि जो काम खुल्लम खुल्ला किया जाये, वह रिया ही हो, बल्कि रिया यह है कि अपनी बड़ाई ज़ाहिर करने के वास्ते, अपनी शोहरत के वास्ते, अपना कमाल ज़ाहिर करने और इज़्ज़त हासिल करने के वास्ते कोई काम किया जाए तो वह रिया है, जो अल्लाह जल्ल शानुहू की रज़ा और ख़ुश्नूदी हासिल करने के लिए किया जाये और अल्लाह की ख़ुश्नूदी किसी मस्लहत से ऐलान ही में हो तो वह रिया नहीं है, इसके बाद हर अमल ख़ासतौर पर सदक़ा में अफ़ज़ल यही है कि वह छुपा कर किया जाए कि इसमें रिया का एहतिमाल (शक) भी नहीं रहता और सदक़ा लेने वाले की ज़िल्लत और तकलीफ़ से भी अम्न है और यह भी मस्लहत है कि उस वक़्त अगरचे रिया न हो, लेकिन जब आम तौर से लोगों में सख़ावत मशहूर होने लगे तो तकब्बुर और ख़ुदबीनी[1] पैदा होने का एहतिमाल है। और यह भी है कि लोगों में अगर शोहरत होगी तो फिर बहुत से लोग सवालात से परेशान करने लगेंगे और अपने मालदार होने की शोहरत से दुन्यवी नुक़्सानात कई क़िस्म के पैदा होने लगेंगे। हुकूमत के टैक्स, चोरों की निगाहें, हासिदों की दुश्मनी।

इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि सदक़ा का छुपे तौर से देना रिया और शोहरत से ज़्यादा बईद है और हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद भी नक़ल किया गया है कि अफ़ज़ल सदक़ा किसी तंगदस्त का अपनी कोशिश से किसी नादार को

1. यानी अपने आप को बड़ा समझना और घमण्ड करना।

चुपके से दे देना है और जो शख़्स अपने सदके का तज़्किरा करता है वह अपनी शोहरत का तालिब है और जो मज्मे में देता है वह रियाकार है।

पहले बुज़ुर्ग इख़्फ़ा में[1] इतनी कोशिश करते थे कि वह यह भी नहीं पसंद करते थे कि फ़क़ीर को भी इसका इल्म हो कि किसने दिया। इसलिए कुछ तो नाबीना फ़क़ीरों को छांट कर देते थे और कुछ सोते हुए फ़क़ीर की जेब में डाल देते थे और कुछ किसी दूसरे के ज़रिए से दिलवाते कि फ़क़ीर को पता न चले और उसको हया (शर्म) न आवे। बहरहाल अगर शोहरत और रिया मक़्सूद है तो नेकी बर्बाद गुनाह लाज़िम है।

इमाम ग़ज़ाली रह॰ ने लिखा है कि जहां शोहरत मक़्सूद होगी वह अमल बेकार हो जाएगा, इसलिये कि ज़कात का वजूब माल की मुहब्बत को ख़त्म करने के वास्ते है और हुब्बे जाह (ओहदे व मरतबे की मुहब्बत) का मर्ज़ लोगों में हुब्बे माल (माल की मुहब्बत) से भी ज़्यादा होता है और आख़िरत में दोनों ही हलाक करने वाली चीज़ें हैं। लेकिन बुख़्ल (कंजूसी) की सिफ़त तो क़ब्र में बिच्छू की सूरत में मुसल्लत होती है और रिया और शोहरत की सिफ़त अज़्दहा की सूरत में मुन्तक़िल हो जाती है। *(एहया उल उलूम)*

एक हदीस में है कि आदमी की बुराई के लिए इतना ही काफ़ी है कि उंगलियों से उसकी तरफ इशारा किया जाने लगे, दीनी उमूर में इशारा हो या दुन्यवी उमूर में।

हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रह॰ फ़रमाते हैं कि जो शख़्स अपनी शोहरत को पसंद करता हो, उसने अल्लाह तआला से सच्चाई का मामला नहीं किया।

अय्यूब सख़्तियानी रह॰ फ़रमाते हैं कि जो शख़्स अल्लाह तआला से सच्चाई का मामला करता है उसको यह पसंद हुआ करता है कि कोई उसका घर भी न जाने कि कहाँ है। *(एहया उल उलूम)*

हज़रत उमर रज़ि॰ एक मर्तबा मस्जिदे नबवी में हाज़िर हुए तो देखा कि हज़रत मुआज़ रज़ि॰ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र शरीफ़ के पास बैठे हुए रो रहे हैं। हज़रत उमर रज़ि॰ ने दर्याफ़्त किया कि क्यों रो रहे हो? हज़रत

---

1. यानी छिपा कर देने में।

मुआज़ रज़ि॰ ने फ़रमाया कि मैंने हुज़ूर सल्ल॰ से सुना था कि रिया का थोड़ा सा हिस्सा भी शिर्क है और हक़ तआला शानुहू ऐसे मुत्तक़ी लोगों को महबूब रखता है जो ज़ाविया-ए-ख़मूल (गुमनामी) में रहते हों कि अगर कहीं चले जायें तो कोई तलाश न करे और मज्मा में आयें तो कोई उनको पहचाने भी नहीं। उनके दिल हिदायत के चिराग़ हों और हर गर्दआलूद तारीक मक़ाम से ख़लासी पाने वाले हों। *(एहयाउल उलूम)*

ग़रज़ रिया की मज़म्मत (बुराई) बहुत सी आयात और अहादीस में वारिद हुई है, लेकिन इन सबके बावजूद कभी एलान में दीनी मस्लहत होती है, मसलन दूसरों को तर्ग़ीब की ज़रूरत के मौक़े पर एक आध शख़्स के सदक़े से दीनी अहम ज़रूरतें पूरी नहीं हो सकतीं। ऐसे वक़्त में सदक़े का इज़्हार दूसरों की तर्ग़ीब का सबब बनकर ज़रूरत के पूरा होने का सबब बन जाता है, इसलिये हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि क़ुरआन पाक को आवाज़ से पढ़ने वाला ऐसा है जैसाकि एलान के साथ सदक़ा करने वाला और क़ुरआन पाक को आहिस्ता पढ़ने वाला ऐसा है जैसा कि चुपके से सदक़ा करने वाला। *(मिश्कात शरीफ़)*

कि क़ुरआन पाक का भी वक़्त के तक़ाज़े के मुनासिब कभी आवाज़ से पढ़ना अफ़ज़ल होता है और कभी आहिस्ता पढ़ना।

पहली आयते शरीफ़ा के मुताल्लिक़ बहुत से उलमा से नक़ल किया गया कि इस आयते शरीफ़ा में सदक़ा-ए-फ़र्ज़ यानी ज़कात और सदक़ा-ए-नफ़ल दोनों का बयान है और सदक़ा-ए-फ़र्ज़ का एलान से अदा करना अफ़ज़ल है, जैसा कि और फ़राइज़ का भी यही हुक्म है कि उनका एलान के साथ करना अफ़ज़ल है, इसलिये कि इसमें दूसरों की तर्ग़ीब के साथ अपने ऊपर से इस इल्ज़ाम और इत्तिहाम का दफ़ा करना मक़्सूद है कि यह ज़कात अदा नहीं करता। इसी वजह से दूसरी मस्लिहतों के अलावा नमाज़ में जमाअत मशरूअ् हुई कि इसमें उसके अदा करने का एलान है।

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह॰ फ़रमाते हैं कि अल्लामा तबरी रह॰ वग़ैरह ने इस पर उलमा का इज्माअ नक़ल किया है कि सदक़ा-ए-फ़र्ज़ में एलान अफ़ज़ल है और सदक़ा-ए-नफ़ल में इख़्फ़ा (छुपाना) अफ़ज़ल है।

ज़ैन बिन अलमुनीर रह॰ कहते हैं कि यह हालात के इख़्तिलाफ़ से

मुख़्तलिफ़ होता है, मसलन अगर हाकिम ज़ालिम हो और ज़कात का माल मख़्फ़ी हो तो ज़कात का इख़्फ़ा औला होगा और अगर कोई शख़्स मुक़्तदा है, उसके फ़ेअ्ल का लोग इत्तिबाअ् करेंगे तो सदक़ा-ए-नफ़ल का भी एलान औला होगा। *(फ़त्हुल बारी)*

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ ने आयते शरीफ़ा (ऊपर ज़िक्र हुई) की तफ़्सीर में इर्शाद फ़रमाया है कि हक़ तआला शानुहू ने नफ़ल सदक़े में आहिस्ता के सदक़े को एलानिया के सदक़े पर सत्तर दर्जा फ़ज़ीलत दी है और फ़र्ज़ सदक़े में एलानिया को मख़्फ़ी सदक़े पर पच्चीस दर्जा फ़ज़ीलत दी है और इसी तरह और सब इबादात के नवाफ़िल और फ़राइज़ का हाल है। *(दुर्रे मंसूर)*

यानी दूसरी इबादात में भी फ़राइज़ को एलान के साथ अदा करना छुप कर अदा करने से अफ़्ज़ल है कि फ़राइज़ छुप कर अदा करने में अपने ऊपर तोहमत है। दूसरे यह भी नुक़्सान है कि अपने मुताल्लिक़ीन ये समझेंगे कि यह शख़्स फ़लां उबादत करता ही नहीं और इससे उनके दिलों में इस इबादत की वक़्अत और अहमियत कम हो जायेगी और नवाफ़िल में भी अगर दूसरों के इत्तिबाअ् और इक़्तिदा का ख़्याल हो तो एलान अफ़्ज़ल है।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ के वास्ते से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल किया गया है कि नेक अमल का चुपके से करना एलानिया से अफ़्ज़ल है; मगर उस शख़्स के लिये जो इत्तिबाअ् का इरादा करे।

हज़रत अबू उमामा रज़ि॰ कहते हैं कि हज़रत अबूज़र रज़ि॰ ने हुज़ूर सल्ल॰ से दर्याफ़्त किया कि कौन सा सदक़ा अफ़्ज़ल है। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि किसी फ़क़ीर को चुपके से कुछ दे देना और नादार की कोशिश अफ़्ज़ल है, और असल यही है कि नफ़्ली सदक़े का मख़्फ़ी तौर से अदा करना अफ़्ज़ल है, अलबत्ता अगर कोई दीनी मस्लहत एलान में हो तो एलान भी अफ़्ज़ल हो जाता है, लेकिन इस बात में अपने नफ़्स और शैतान से बे फ़िक्र न रहे कि वह सदक़े को बर्बाद करने के लिये दिल को यह समझाये कि एलान में मस्लहत है बल्कि बहुत ग़ौर से इसको जांच ले कि एलान में वाक़ई दीनी मस्लहत है या नहीं और सदक़ा करने के बाद भी इसका तज़्किरा न करता फिरे कि यह भी एलानिया सदक़ा करने में दाख़िल हो जाता है।

एक हदीस में आया है कि आदमी कोई अमल मख़्फ़ी करता है तो वह

मख़्फ़ी अमल लिख लिया जाता है, फिर जब वह उसका किसी से इज़हार कर दे तो वह मख़्फ़ी से एलानिया में मुंतक़िल कर दिया जाता है। फिर अगर वह लोगों से कहता फिरे तो वह एलानिया से रिया में मुंतक़िल कर दिया जाता है।
(एहयाउल उलूम)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शाद है कि सात आदमी ऐसे हैं जिनको अल्लाह जल्ल शानुहू उस दिन अपने साए में रखेंगे, जिस दिन अल्लाह के सिवा कहीं साया न होगा, (यानी क़ियामत के दिन)

1. एक आदिल बादशाह (हाकिम)

2. दूसरे वह नौजवान, जो अल्लाह जल्ल शानुहू की इबादत में नश्व व नुमा पाता है।[1]

3. तीसरे वह शख़्स जिसका दिल मस्जिद में अटका हुआ हो,

4. चौथे वे दो शख़्स जिनमें सिर्फ़ अल्लाह की वजह से मुहब्बत हो, कोई दुन्यवी ग़रज़ एक की दूसरे से जुड़ी हुई न हो, उसी पर उनका आपस में इज्तिमाअ् हो और उसी पर अलाहिदगी हो,

5. पांचवे वह शख़्स, जिसको कोई हसब नसब वाली ख़ूबसूरत औरत अपनी तरफ़ मुतवज्जह करे और वह कह दे कि मैं अल्लाह से डरता हूँ, इसी तरह कोई मर्द किसी औरत को मुतवज्जह करे और वह औरत यही कह दे,

6. छठे वह शख़्स जो इतना छुपा कर सदक़ा करे कि बायें हाथ को भी ख़बर न हो कि दाहिने हाथ ने क्या ख़र्च किया,

7. सातवें वह शख़्स जो तंहाई में अल्लाह जल्ल शानुहू को याद करके रो पड़े,

इस हदीस में सात आदमी ज़िक्र फ़रमाये हैं, दूसरी अहादीस में इनके अलावा और भी कुछ लोगों के मुताल्लिक़ यह वारिद हुआ है कि वे इस सख़्त दिन में अर्श के साए के नीचे होंगे। उलमा ने उनकी तायदाद बयासी तक गिनवायी है जिनको साहिबे इत्तिहाफ़ ने नक़ल किया है।

बहुत सी अहादीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल किया गया है कि मख़्फ़ी सदक़ा अल्लाह के गुस्से को ख़त्म कर देता है। हज़रत सालिम बिन

---

1. यानी पलता बढ़ता है।

अबिल जअद रज़ि॰ कहते हैं कि एक औरत अपने बच्चे के साथ जा रही थी। रास्ते में भेड़िये ने उस बच्चे को उचक लिया। यह औरत उस भेड़िये के पीछे दौड़ी। इतने में एक साइल रास्ते में मिला। उस ने सवाल किया। औरत के पास एक रोटी थी। वह साइल को दे दी। वह भेड़िया वापस आया और उसके बच्चे को छोड़कर चला गया। हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि तीन आदमियों को हक् तआला शानुहु महबूब रखते हैं और तीन आदमियों से नाराज़ हैं। जिन को हक् तआला महबूब रखते हैं-

1. उनमें से एक तो वह शख़्स है कि एक आदमी किसी मज्मे से कुछ सवाल करने आया, जो महज़ अल्लाह तआला के वास्ते से सवाल करता था कि उसकी उन लोगों से कुछ क्राबत भी न थी। एक शख़्स उस मज्मे से उठा और उन की ग़ीबत में चुपके से साइल को कुछ दे दिया, जिस के देने की अल्लाह जल्ल शानुहू के सिवा किसी को भी ख़बर न हो।

2. दूसरे वह शख़्स महबूब है कि एक जमाअत रात भर सफ़र में चली और जब नींद उन चलने वालों पर ग़ालिब हो गयी हो और वे थोड़ी देर आराम लेने के लिए सवारियों से उतरे हों, उन में उस वक्त कोई शख़्स बजाए लेटने के नमाज़ में खड़ा होकर हक् तआला शानुहू के सामने आजिज़ी करने लगा हो।

3. तीसरा वह शख़्स है कि एक जमाअत जिहाद कर रही हो, और कुफ़्फ़ार से मुक़ाबले में हार होने लगे और लोग पीठ फेरने लगें, उस वक्त यह शख़्स उन में से सीना तान कर मुक़ाबले में डट जाए, यहां तक कि शहीद हो जाए या फ़त्ह हो जाए।

और तीन शख़्स जिनसे हक् तआला शानुहू नाराज़ हैं -

1. उनमें से एक वह शख़्स है, जो बूढ़ा होकर भी ज़िना में मुब्तला हो।

2. दूसरे वह शख़्स है जो फ़कीर होकर तकब्बुर करे।

3. तीसरा वह मालदार है जो ज़ालिम हो।

अहादीस के सिलसिले में नं॰ 15 पर भी यह हदीस आ रही है। एक और हदीस में है, हज़रत जाबिर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल॰ ने ख़ुत्बा पढ़ा, जिसमें इर्शाद फ़रमाया, ऐ लोगो ! मरने से पहले अपने गुनाहों से तौबा कर लो और नेक अमल करने में जल्दी किया करो। ऐसा न हो किसी दूसरे काम में मश्ग़ूली हो जाए और वह रह जाए और अल्लाह जल्ल शानुहू के साथ

अपना रिश्ता जोड़ कर और कसरत से उसका ज़िक्र करके और मख़्फ़ी और एलानिया सदक़ा करके कि इससे तुम्हें रिज़्क़ दिया जाएगा, तुम्हारी मदद की जाएगी और तुम्हारी शकिस्तगी की इस्लाह की जाएगी।

एक हदीस में है कि क़ियामत के दिन हर शख़्स अपने सदक़े के साए में होगा, जब तक हिसाब का फ़ैसला न हो यानी क़ियामत के दिन जब आफ़ताब निहायत क़रीब होगा, हर शख़्स पर उसके सदक़ात की मिक़्दार से साया होगा। जितना ज़्यादा सदक़ा दिया होगा, उतना ही ज़्यादा साया होगा।

एक दूसरी हदीस में है कि सदक़ा क़ब्रों की गर्मी को दूर करता है और हर शख़्स क़ियामत के दिन अपने सदक़े से साया हासिल करेगा।

और यह मज़्मून तो बहुत सी रिवायात में आया है कि सदक़ा बलाओं को दूर करता है। इस ज़माने में जबकि मुसलमानों पर उनके आमाल की बदौलत हर तरफ़ से हर क़िस्म की बलाएं मुसल्लत हो रही हैं, सदक़ात की बहुत ज़्यादा कसरत करनी चाहिये, ख़ास कर जबकि देखती आँखों उम्र भर का जमा किया हुआ खड़े खड़े छोड़ना पड़ जाता है। ऐसी हालत में बहुत एहतिमाम से बहुत ज़्यादा मिक़्दार में सदक़ात करते रहना चाहिए। कि इसमें वह माल भी ज़ाया होने से महफ़ूज़ हो जाता है जो सदक़ा किया गया। और उसकी बरकत से अपने ऊपर से बलाएं भी हट जाती हैं, मगर अफ़सोस कि हम लोग इन हालात को अपने आँखों से देखते हुए भी सदक़ात का एहतिमाम नहीं करते।

एक हदीस में है कि सदक़ा बुराई के सत्तर दरवाज़े बंद करता है। एक हदीस में है कि सदक़ा अल्लाह जल्ल शानुहू के गुस्से को दूर करता है और बुरी मौत से हिफ़ाज़त करता है।

एक हदीस में है कि सदक़ा उम्र को बढ़ाता है और बुरी मौत को दूर करता है और तकब्बुर और फ़ख़्र को हटाता है।

एक हदीस में है कि हक़ तआला शानुहू एक रोटी के लुक़्मे से या एक मुट्ठी भर खजूर या और कोई ऐसी ही मामूली चीज़, जिस से मिस्कीन की ज़रूरत पूरी होती हो, तीन आदमियों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाते हैं -

एक साहबे ख़ाना, (घर का मालिक) जिसने सदक़े का हुक्म दिया,

दूसरे घर की बीवी, जिसने रोटी वग़ैरह पकायी,

तीसरे वह ख़ादिम, जिसने फ़क़ीर तक पहुँचाया।

यह हदीस बयान फ़रमा कर इर्शाद फ़रमाया, सारी तारीफ़ें हमारे अल्लाह के लिए हैं, जिसने हमारे ख़ादिमों को भी सवाब में फ़रामोश नहीं किया।

एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल॰ ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि जानते हो बड़ा सख़्त ताक़तवर कौन है। लोगों ने अर्ज़ किया कि जो मुक़ाबले में दूसरे को पछाड़ दे। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, बड़ा बहादुर वह है जो गुस्से के वक़्त अपने ऊपर क़ाबू पाए हुए हो। फिर दर्याफ़्त फ़रमाया, जानते हो कि बांझ कौन है? लोगों ने अर्ज़ किया कि जिसके औलाद न हो। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि नहीं, बल्कि वह आदमी है जिसने कोई औलाद आगे न भेजी हो। फिर हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, जानते हो फ़क़ीर कौन है? लोगों ने अर्ज़ किया जिसके पास माल न हो। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया फ़क़ीर और पूरा फ़क़ीर वह है जिसके पास माल हो और उसने आगे कुछ न भेजा (कि वह उस दिन ख़ाली हाथ खड़ा रह जाएगा, जिस दिन उसको सख़्त ज़रूरत होगी)।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया कि अपने नफ़्स को अल्लाह तआला से ख़रीद ले अगरचे एक खजूर के टुकड़े ही के साथ क्यों न हो। मैं तुझे अल्लाह जल्ल शानुहू के किसी मुतालबे से नहीं बचा सकता। ऐ आइशा ! कोई मांगने वाला तेरे पास से ख़ाली न जाए चाहे बकरी का खुर ही क्यों न हो। *(दुर्रे मंसूर)*

इमाम ग़ज़्ज़ाली रह॰ ने लिखा है कि पहले लोग इसको बुरा समझते थे कि कोई दिन सदक़ा करने से ख़ाली जाए, चाहे एक खजूर ही क्यों न हो चाहे एक रोटी का टुकड़ा ही क्यों न हो, इसलिये कि हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि क़ियामत में हर शख़्स अपने सदक़े के साए में होगा। *(एहया अव्वल)*

(۱۰) يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰى وَيُرْبِى الصَّدَقَاتِ (بقره ع ۳۸)

10. हक़ तआला शानुहू सूद को मिटाते हैं और सदक़ात को बढ़ाते हैं।

फ़ायदा:- सदक़ात का बढ़ाना इससे पहले बहुत सी रिवायात में गुज़र चुका है कि आख़िरत में उस का सवाब पहाड़ के बराबर होता है यह तो आख़िरत के एतबार से था और दुनिया में भी अक्सर बढ़ता है कि जो शख़्स सदक़ा इख़्लास के साथ कसरत से करता रहता है उसकी आमदनी में इज़ाफ़ा

होता रहता है जिसका दिल चाहे तजुर्बा करके देख ले, अलबत्ता इख़्लास शर्त है, रिया और फ़ख़्र न हो और सूद आख़िरत में तो मिटाया ही जाता है दुनिया में भी अक्सर बर्बाद हो जाता है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल फ़रमाते हैं कि सूद अगरचे बढ़ा हुआ हो लेकिन उस का अन्जाम कमी की तरफ़ होता है और मामर रज़ि॰ कहते हैं कि चालीस साल में सूद में कमी हो जाती है।

हज़रत ज़ह्हाक रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि सूद दुनिया में बढ़ता है और आख़िरत में मिटा दिया जाता है।

हज़रत अबू बर्ज़ा रज़ि॰ फ़रमाते हैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि आदमी एक टुकड़ा देता है वह अल्लाह जल्ल शानुहू के यहां इस क़दर बढ़ता है कि उहद पहाड़ के बराबर हो जाता है।

(11) لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ (ال عمران ع ۱۰)

11. ऐ मुसलमानो ! तुम (कामिल) नेकी को हासिल न कर सकोगे, यहां तक कि उस चीज़ को ख़र्च न करो जो तुम को (ख़ूब) महबूब हो।

फ़ायदाः- हज़रत अनस रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि अंसार में सब से ज़्यादा दरख़्त खजूरों के हज़रत अबू तल्हा रज़ि॰ के पास थे और उनका एक बाग़ था। जिसका नाम बीरेहा था, वह उनको बहुत ही ज़्यादा पसंद था। यह बाग़ मस्जिदे नबवी के सामने ही था। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अक्सर उस बाग़ में तशरीफ़ ले जाते और उसका पानी नोश फ़रमाते जो बहुत ही बेहतरीन पानी था। जब यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई तो हज़रत अबूतल्हा रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! हक़ तआला शानुहू यूँ इर्शाद फ़रमाते हैं –

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ (ال عمران ع ۱۰)

"लन् तनालुल् बिर् र हत्ता तुन्फ़िक़ू मिम् मा तुहिब्बून॰"

और मुझे अपनी सारी चीज़ों में बीरेहा सबसे ज़्यादा महबूब है, मैं उसको

अल्लाह के लिए सदक़ा करता हूँ और उसके अज्र व सवाब की अल्लाह से उम्मीद रखता हूँ। आप जहां मुनासिब समझें उस को ख़र्च फ़रमाएं। हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया, वाह! वाह! बहुत ही नफ़े का माल है। मैं यह मुनासिब समझता हूँ कि इसको अपने रिश्तेदारों में तक़्सीम कर दो। अबू तल्हा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया, बेहतर है और उसको अपने चचाज़ाद भाईयों और दूसरे रिश्तेदारों में बांट दिया।

एक और हदीस में है, अबू तल्हा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरा बाग़ जो इतनी बड़ी मालियत का है, वह सदक़ा है और मैं अगर इसकी ताक़त रखता हूँ कि किसी को इसकी ख़बर न हो तो ऐसा करता, मगर बाग़ ऐसी चीज़ नहीं जो मख़्फ़ी (छुपी) रह सके।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मुझे जब इस आयते शरीफ़ा का इल्म हुआ तो मैं ने उन सब चीज़ों में ग़ौर किया जो अल्लाह जल्ल शानुहू ने मुझे अता फ़रमायी थीं, मैंने देखा कि इन सबमें मुझे सबसे ज़्यादा महबूब अपनी बांदी मर्जाना है। मैंने कहा कि वह अल्लाह के वास्ते आज़ाद है। इसके बाद अगर मैं उस चीज़ से जिसको अल्लाह के वास्ते दे दिया हो, दोबारा नफ़ा हासिल करना गवारा करता तो उस बांदी से आज़ाद कर देने के बाद निकाह कर लेता। (कि वह जायज़ था और इससे सदक़े में कुछ कमी न होती थी, लेकिन चूंकि इसमें सूरते सदक़े में रूजूअ् की सी थी) यह मुझे गवारा न हुआ, इसलिये उसका निकाह अपने ग़ुलाम हज़रत नाफ़ेअ् रज़ि॰ से कर दिया।

एक और हदीस में है कि हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ नमाज़ पढ़ रहे थे, तिलावत में जब इस आयते शरीफ़ा पर गुज़र हुआ तो नमाज़ ही में इशारे से अपनी एक बांदी को आज़ाद कर दिया। हक़ तआला शानुहू और उसके पाक रसूल सल्ल॰ के इर्शादात की वक़्अत और उन पर अमल करने में पेशक़दमी तो कोई इन हज़रात सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ से सीखे, वाक़ई यही हज़रात इसके मुस्तहिक़ थे कि हुज़ूर सल्ल॰ के सहाबी बनाये जाते। हुज़ूर सल्ल॰ की ख़ादिमियत इन्हीं हज़रात के शायाने शान थी। रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम व अर्ज़ाहुम अज्मईन॰

हज़रत उमर रज़ि॰ ने हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ि॰ को लिखा कि जलूला की बांदियों में से एक बांदी उनके लिये ख़रीद दें, उन्होंने एक बेहतरीन

बांदी खरीद कर भेज दी। हज़रत उमर रज़ि॰ ने उस बांदी को अपने पास बुलाया और यह आयते शरीफ़ा पढ़ी और उसको आज़ाद कर दिया।

हज़रत मुहम्मद बिन मुन्कदिर रज़ि॰ कहते हैं कि जब यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई तो हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि॰ के पास एक घोड़ा था जो उनको अपनी सारी चीज़ों में सबसे ज़्यादा महबूब था, वह उसको लेकर हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि यह सदक़ा है। हुज़ूर सल्ल॰ ने उसको क़ुबूल फ़रमा लिया और लेकर उनके साहबज़ादे हज़रत उसामा रज़ि॰ को दे दिया। हज़रत ज़ैद रज़ि॰ के चेहरे पर इससे कुछ गरानी के आसार ज़ाहिर हुए। (कि घर के घर ही में रहा, बाप के बजाए बेटे का हो गया) हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने तुम्हारा सदक़ा क़ुबूल कर लिया यानी तुम्हारा सदक़ा अदा हो गया। अब मैं चाहे इसको तुम्हारे बेटे को दूं या किसी और रिश्तेदार को या अजनबी को (इसलिये कि तुम तो बेटे को नहीं दे रहे जिस से खुदग़रज़ी का शुब्ह हो, तुम तो मुझे दे चुके, अब मुझे इख़्तियार है कि मैं जिसको दिल चाहे दे दूँ।)

क़बीला बनी सुलैम के एक शख़्स कहते हैं कि हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि॰ रबज़ा नाम के एक गांव में रहते थे, वहां उनके पास ऊँट थे और उनका चराने वाला एक बूढ़ा आदमी था। मैं भी वहां उनके क़रीब ही रहता था। मैंने उनसे अर्ज़ किया कि मैं आपकी ख़िदमत में रहना चाहता हूँ, आपके चरवाहे की मदद करूँगा और आपके फ़ुयूज़ हासिल करूँगा शायद अल्लाह जल्ल शानुहू आपकी बरकात से मुझे भी नफ़ा अता फ़रमा दें। हज़रत अबूज़र रज़ि॰ ने फ़रमाया मेरा साथी वह है (यानी ऐसे शख़्स को मैं अपना साथी बना सकता हूँ) जो मेरा कहना माने, अगर तुम इसके लिए तैयार हो तो मुज़ाईक़ा नहीं, वरना मेरे साथ रहने का इरादा न करो। मैं ने पूछा कि आप किस चीज़ में मेरी इताअत चाहते हैं, फ़रमाया कि जब मैं कोई चीज़ किसी को देने के लिए माँगू तो सब से बेहतर छांट कर दो। मैं ने क़ुबूल कर लिया और एक ज़माने तक उनकी ख़िदमत में रहा। उनको मालूम हुआ कि इस घाट पर जो लोग आबाद हैं उनको तंगी है। मुझसे फ़रमाया कि एक ऊँट मेरे ऊँटों में से लाओ। मैं ने वायदा के अनुसार तलाश किया तो उन सब में बेहतरीन एक ऊँट नर था, जो बहुत सधा हुआ था, उस जैसा कोई जानवर उनमें नहीं था। मैंने उसके ले जाने का इरादा किया। लेकिन मुझे ख़्याल हुआ कि उसकी ख़ुद यहां भी (जुफ़्ती वग़ैरह के लिए)

ज़रूरत रहती है, उसको छोड़कर बाक़ी ऊँटो में जो सबसे अफ़ज़ल और बेहतर जानवर था, वह एक ऊँटनी थी। मैं उसको ले गया। इत्तिफ़ाक़ से हज़रत की नज़र उस ऊंट पर पड़ गयी जिसको मैं मस्लहत की वजह से छोड़कर गया था मुझसे फ़रमाने लगे तुमने मुझ से ख़ियानत की। मैं समझ गया और उस ऊंटनी को वापस लाकर वह ऊंट ले गया। आपने हाज़िराने मज्लिस से मुख़ातिब होकर फ़रमाया कि दो आदमी ऐसे चाहिएं जो एक सवाब का काम करें। दो शख़्सों ने अपने आपको पेश किंया कि हम हाज़िर हैं। फ़रमाया कि अगर तुम्हें कोई उज़्र न हो तो इस ऊंट को ज़िब्ह कर के इसके गोश्त के इतने टुकड़े किये जायें जितने घर उस घाट पर आबाद हैं और सब घरों में एक एक टुकड़ा उसके गोश्त का पहुँचा दिया जाए और मेरा घर भी उनमें शुमार कर लिया जाए और उसमें भी उतना ही जाए जितना और घरों में जाए ज़्यादा न जाए। उन दोनों ने क़ुबूल कर लिया और तामीले इर्शाद कर दी। जब इससे फ़ारिग़ हो गये तो मुझे बुलाया और फ़रमाया कि मुझे यह मालूम न हो सका कि तुम मेरे उस वायदे को जो शुरू में हुआ था भूल गये थे। तब तो मैं माज़ूर समझता हूँ या तुमने बावजूद याद होने के उसको पसे पुश्त डाल[1] दिया था। मैंने अर्ज़ किया कि मैं भूला तो नहीं था मुझे वह याद था, लेकिन जब मैं ने तलाश किया और यह ऊंट सबसे अफ़ज़ल मिला तो मुझे आप की ज़रूरियात का ख़्याल पैदा हुआ कि आप को ख़ुद इसकी ज़रूरत है। फ़रमाने लगे कि महज़ मेरी ज़रूरत की वजह से छोड़ा था? मैं ने अर्ज़ किया कि महज़ इसी वजह से छोड़ा था। फ़रमाने लगे कि मैं अपनी ज़रूरत का वक़्त बताऊं। मेरी ज़रूरत का वक़्त वह है कि जब मैं क़ब्र के गढ़े में डाल दिया जाऊंगा, वह दिन मेरी मुहताजी का दिन होगा। तेरे हर माल में तीन शरीक हैं।

एक- तो मुक़द्दर शरीक है, मालूम नहीं कि तक़्दीर अच्छे माल को ले जाए या बुरे को वह किसी चीज़ का इन्तिज़ार नहीं करती (यानि जिस माल को मैं उम्दा और बेहतर और अपने दूसरे वक़्त के लिए कार आमद समझ कर छोड़ दूँ, मालूम नहीं कि दूसरे वक़्त वह मेरे काम आ सकेगा या नहीं) तो फिर उसी वक़्त क्यों न उसको आख़िरत का ज़ख़ीरा बना कर अल्लाह के बैंक में जमा कर दूँ।

दूसरा- शरीक वारिस है जो हर वक़्त इस इन्तिज़ार में रहता है कि कब

---

1. पीठ पीछे।

तू गढ़े में जावे ताकि वह सारा माल वसूल करे।

तीसरा- तू खुद उस माल का शरीक है (कि अपने काम में ला सकता है) पस इसकी कोशिश कर कि तू तीनों शरीकों में कम हिस्सा पाने वाला न हो। (ऐसा न हो कि मुक़द्दर उसको ले उड़े, कि वह ज़ाया हो जाये या वारिस ले उड़े, इससे बेहतर यही है कि तू उसको जल्दी से हक़ तआला शानुहू के ख़ज़ाने में जमा कर दे।)

इसके अलावा हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है -

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ (ال عمران ع ١٠)

लन् तनालुल् बिर् र हत्ता तुन्फ़िक़ू मिम् मा तुहिब्बून॰

और यह ऊँट जब मुझे सबसे ज़्यादा महबूब है तो क्यों न इसको अपने लिए मख़्सूस करके महफ़ूज़ कर लूँ और आगे भेज दूँ।

एक और हदीस में आया है, हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि एक जानवर का गोश्त हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में पेश किया गया। हुज़ूर सल्ल॰ ने खुद उसको पसंद नहीं किया, मगर दूसरों को खाने से मना भी नहीं किया। मैं ने अर्ज़ किया कि इसको फ़क़ीरों को दे दूँ। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया ऐसी चीज़ें उनको मत दो जिनको खुद खाना पसंद नहीं करती हो।

एक हदीस में है कि हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ शकर ख़रीद कर ग़रीबों पर तक़्सीम कर देते । हज़रत के ख़ादिम ने अर्ज़ किया कि अगर शकर की बजाए खाना तक़्सीम कर दिया जाये तो ग़रीबों को इससे ज़्यादा नफ़ा हो। फ़रमाया, सही है मेरा भी यही ख़्याल है लेकिन हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है -

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ (ال عمران ع ١٠)

लन् तनालुल् बिर् र हत्ता तुन्फ़िक़ू मिम् मा तुहिब्बून॰

और मुझे शकर (मीठा) ज़्यादा मर्ग़ूब (पसंदीदा) है। *(दुर्रे मंसूर)*

ये हज़रात किसी चीज़ को अफ़्ज़ल समझते हुए भी हक़ तआला शानुहू और उसके पाक रसूल सल्ल॰ के ज़ाहिर अल्फ़ाज़ पर अमल करने की अक्सर कोशिश किया करते थे। इसकी बहुत सी मिसालें हदीसों में मौजूद हैं यह मुहब्बत की इंतिहा है कि महबूब की ज़ुबान से निकली हुई बात पर अमल करना है,

चाहे अफ़ज़ल दूसरी चीज़ हो।

(١٢) وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ ۙ اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِى السَّرَّاۗءِ وَالضَّرَّاۗءِ وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ۭ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝

12. और दौड़ो उस बख़्शिश की तरफ़ जो तुम्हारे रब की तरफ़ से है और दौड़ो उस जन्नत की तरफ़ जिसका फैलाव सारे आसमान और ज़मीन हैं जो तैयार की गयी है ऐसे मुत्तक़ी लोगों के लिए जो अल्लाह की राह में ख़र्च करते हैं फ़राख़ी में भी और तंगी में भी और ग़ुस्से को ज़ब्त करने वाले हैं और लोगों की ख़ताओं को माफ़ करने वाले हैं और अल्लाह जल्ल शानुहू महबूब रखते हैं एहसान करने वालों को।

फ़ायदा:- उलमा ने लिखा है कि कुछ लोगों ने बनी इस्राईल की इस बात पर रश्क किया था कि जब कोई शख़्स उनमें से गुनाह करता तो उसके दरवाज़े पर वह लिखा हुआ होता और उसका कफ़्फ़ारा भी कि फ़लां काम इस गुनाह के कफ़्फ़ारे में किया जाए, मसलन नाक काट दी जाये, कान काट दिया जाए वग़ैरह-वग़ैरह। इन हज़रात को इस पर रश्क था कि कफ़्फ़ारा आदा करने से उस गुनाह के ज़ायल (ख़त्म) हो जाने का यक़ीन था और गुनाह की अहमियत इन हज़रात की निगाह में इतनी सख़्त थी कि इस क़िस्म की सज़ाओं को भी इसके मुक़ाबले में हल्का और क़ाबिले रश्क समझते थे। इन हज़रात के जो वाक़िआत हदीस की किताबों में आते हैं, वे वाक़ई ऐसे ही हैं कि बशरीयत से किसी गुनाह के सरज़द हो जाने के बाद[1] उसकी हैबत और अहमियत उन पर बहुत ज़्यादा मुसल्लत हो जाती, मर्द तो मर्द थे ही औरतों में भी यही ज़ज़्बा था। एक औरत से ज़िना सादिर हो गया, ख़ुद हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुई, ख़ुद एतराफ़े जुर्म किया और गुनाह से पाक होने के शौक़ में अपने आप को संगसार होने के लिए पेश किया और संगसार हो गयी; क्यों? इस लिए कि गुनाह की हैबत (डर) उनके दिल में इस मरने से बहुत ज़्यादा थी।

नमाज़ पढ़ते हुए हज़रत अबू तलहा रज़ि० के दिल में अपने बाग़ का ख़्याल गुज़र गया, उसको अल्लाह के रास्ते में सदक़ा करके चैन पड़ी। महज़ इस

1. इंसान होने की हैसियत से किसी गुनाह के हो जाने के बाद।

ग़ैरत में कि नमाज़ में दुनिया की चीज़ का ख़्याल आ गया, ऐसी चीज़ जो नमाज़ में अपनी तरफ़ मुतवज्जह करे अपने पास नहीं रखनी।

एक और अंसारी के साथ भी इस क़िस्म का क़िस्सा गुज़रा कि खजूरें शबाब पर आ रही थीं, नमाज़ में उनका ख़्याल आ गया (कि कैसी पक रही हैं?)

हज़रत उस्मान रज़ि॰ की ख़िलाफ़त का ज़माना था। उनकी ख़िदमत में हाज़िर हो कर बाग़ का क़िस्सा ज़िक्र करके उनके हवाले कर दिया, जिसको उन्होंने पचास हज़ार में फ़रोख़्त करके उसकी क़ीमत दीनी कामों पर ख़र्च कर दी।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ ने एक मुश्तबह लुक़्मा एक मर्तबा ग़लती से खा लिया। बार बार पानी पी पी कर क़ै की कि वह नाजायज़ लुक़्मा बदन का हिस्सा न बन जाए। बहुत से वाक़िआत इन हज़रात के अपने रिसाले 'हिकायाते सहाबा' में लिख चुका हूँ। ऐसी हालत में इन हज़रात को अगर इस पर रश्क हो कि बनू इसराईल के गुनाहों का कफ़्फ़ारा उनको मालूम हो जाता था और इससे गुनाह ख़त्म हो जाता था, बे-महल नहीं। हम ना अहलों का ज़ेहन भी यहां तक नहीं पहुँचता कि गुनाह इस क़दर सख़्त चीज़ है, ग़रज़ इन हज़रात के इस रश्क पर अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने लुत्फ़ व करम और अपने महबूब सय्यिदुल मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत पर फ़ज़्ल व इनआम की वजह से यह आयते शरीफ़ा नाज़िल फ़रमायी कि ऐसे नेक कामों की तरफ़ दौड़ो जिनसे अल्लाह जल्ल शानुहू की मग़्फ़िरत मयस्सर हो जाए।

हज़रत सईद बिन जुबैर रह॰ इस आयते शरीफ़ा की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि नेक आमाल के ज़रिए से अल्लाह जल्ल शानुहू की मग़्फ़िरत की तरफ़ सबक़त करो और ऐसी जन्नत की तरफ़ सबक़त करो जिसकी वुसअत इतनी है कि सातों आसमान बराबर एक दूसरे के साथ जोड़ दिए जाएं जैसा कि एक कपड़ा दूसरे के बराबर जोड़ दिया जाता है और इसी तरह सातों ज़मीनें एक दूसरे के साथ जोड़ दी जाएं तो जन्नत की वुसअत उनके बराबर होगी।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ से भी यही नक़ल किया गया कि सातों आसमान और सातों ज़मीनें एक दूसरे के बराबर जोड़ दी जाएं तो जन्नत की चौड़ाई उनके बराबर होगी।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ के ग़ुलाम हज़रत कुरैब रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मुझे हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ ने तौरात के एक आलिम के पास भेजा और

उनकी किताबों से जन्नत की वुसअत का हाल दर्याफ़्त किया, उन्होंने हज़रत मूसा अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलाम के सहीफ़े निकाले और उनको देख कर बताया कि जन्नत की चौड़ाई इतनी है कि सातों आसमान और सातों ज़मीनें एक दूसरे के साथ जोड़ दी जाएं तो उस के बराबर हों, यह तो चौड़ाई है और उसकी लम्बाई का हाल अल्लाह तआला को मालूम है।

हज़रत अनस रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जंगे बद्र में हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि लोगो ! ऐसी जन्नत की तरफ़ बढ़ो जिसकी चौड़ाई सारे आसमान और ज़मीन हैं।

हज़रत उमैर बिन हम्माम अंसारी रज़ि॰ ने (ताज्जुब से) अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! ऐसी जन्नत जिसकी चौड़ाई इतनी ज़्यादा है। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया बेशक, हज़रत उमैर रज़ि॰ ने अर्ज़ किया वाह! वाह! या रसूलल्लाह खुदा की क़सम, मैं उसमें दाख़िल होने वालों में ज़रूर हूँगा। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, हाँ ! हाँ ! तुम उसमें जाने वालों में हो। उसके बाद हज़रत उमैर रज़ि॰ ने कुछ खजूरें ऊँट के हौदज में से निकाल कर खाना शुरू कीं। (कि लड़ने की ताक़त पैदा हो) फिर कहने लगे कि इन खजूरों के खा चुकने का इंतज़ार तो बड़ी लम्बी ज़िंदगी है, यह कह कर उन को फेंक कर लड़ाई की जगह चल दिए और लड़ते लड़ते शहीद हो गए।

(दुर्रे मंसूर)

इस आयते शरीफ़ा में मोमिनों की एक ख़ास तारीफ़ यह भी जिक्र की गयी कि गुस्से को पीने वाले और लोगों को माफ़ करने वाले, यह बड़ी ऊँची और ख़ास सिफ़त है।

उलमा ने लिखा है कि जब तेरे भाई से लग्ज़िश (ख़ता) हो जाए तो तू उसके लिए सत्तर उज़्र पैदा कर और फिर अपने दिल को समझा कि उसके पास इतने उज़्र हैं और जब तेरा दिल उनको क़ुबूल न करे तो बजाए उस शख़्स के अपने दिल को मलामत कर कि तुझ में किस क़दर क़सावत और सख़्ती है कि तेरा भाई सत्तर उज़्र कर रहा है और तू उनको क़ुबूल नहीं करता और अगर तेरा भाई कोई उज़्र करे तो उसको क़ुबूल कर, इसलिए कि हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि जिस शख़्स के पास कोई उज़्र करे और वह क़ुबूल न करे तो उस पर इतना गुनाह होता है, जितना चुंगी के मुहर्रिर को। हुज़ूर सल्ल॰ ने मोमिन की यह सिफ़त बतायी है कि जल्दी गुस्सा आ जाए और जल्दी ही ख़त्म हो जाए।

यह नहीं फ़रमाया कि गुस्सा न आता हो, बल्कि यह फ़रमाया कि जल्दी ख़त्म हो जाता हो।

इमाम शाफ़ई रह० का इर्शाद है कि जिसको गुस्से की बात पर गुस्सा न आता हो, वह गधा है और जो राज़ी करने पर राज़ी न हो वह शैतान है। इसलिए हक़ तआला शानुहू ने गुस्से को पीने वाले फ़रमाया। यह नहीं फ़रमाया कि उनको गुस्सा न आता हो। *(एह्या)*

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स ऐसी हालत में गुस्से को पी ले कि उसको पूरा करने पर क़ादिर हो तो हक़ तआला शानुहू उसको अम्न और ईमान से भरपूर करते हैं। *(दुर्रे मंसूर)*

यानी मजबूरी का नाम सब्र तो हर जगह होता है, कमाल यह है कि क़ुदरत के बावजूद सब्र करे।

एक हदीस में है कि आदमी गुस्से का घूँट पी डाले, इससे ज़्यादा पसंदीदा कोई घूँट अल्लाह जल्ल शानुहू के नज़दीक नहीं है। जो इस घूँट को पी ले, हक़ तआला शानुहू उसके बातिन को ईमान से भर देते हैं।

एक और हदीस में है, जो शख़्स क़ुदरत के बावजूद गुस्सा पी जाए अल्लाह तआला क़ियामत में सारी मख़्लूक़ के सामने उसको बुलाकर फ़रमायेंगे कि जिस हूर को दिल चाहे इंतिख़ाब कर (छांट) ले।

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि बहादुर वह नहीं है जो दूसरों को पछाड़ दे, बहादुर वह है जो गुस्से में अपने आप पर क़ाबू पा ले।

हज़रत अली बिन इमाम हुसैन रज़ि० की एक बांदी उनको वुज़ू करा रही थी कि लोटा हाथ से गिरा, जिससे उनका मुँह ज़ख़्मी हो गया। उन्होंने तेज़ निगाह से बांदी को देखा। वह कहने लगी अल्लाह तआला का इर्शाद है 'वल् काज़िमीनल् ग़ै-ज़'। हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया मैं ने अपना गुस्सा पी लिया। उस ने फिर पढ़ा, 'वल् आफ़ी न अनिन्ना सि' आपने फ़रमाया तुझे अल्लाह तआला माफ़ करे। उसने पढ़ा- वल्लाहु युहिब्बुल् मुहसिनी न, आपने फ़रमाया तू आज़ाद है। *(दुर्रे मंसूर)*

एक मर्तबा एक मेहमान के लिए उनका गुलाम गर्म गर्म गोश्त का प्याला भरा हुआ ला रहा था। वह उनके छोटे बच्चे के सर पर गिर गया वह मर गया आपने ग़ुलाम से फ़रमाया कि तू आज़ाद है और ख़ुद बच्चे की तज्हीज़ व

तक्फ़ीन में लग गए।

(रौज़)

(١٣)اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَ اِذَا تُلِيَتْ
عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ۝ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ
الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ۝ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ
دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ۝ (انفال ع ١)

13. बस ईमान वाले तो वे लोग होते हैं कि जब उनके सामने अल्लाह जल्ल शानुहू का ज़िक्र आ जाए तो उसकी अज़्मत के ख़्याल से उनके दिल डर जाएं और जब अल्लाह जल्ल शानुहू की आयतें उनके सामने तिलावत की जाती हैं तो वे उनके ईमान को और ज़्यादा मज़बूत कर देती हैं। और वे लोग अपने रब ही पर तवक्कुल करते हैं और नमाज़ को क़ायम करते हैं और जो कुछ हमने उनको दिया है उसमें से अल्लाह के वास्ते ख़र्च करते हैं बस यही हैं, सच्चे-ईमान वाले उनके लिये बड़े बड़े दर्जे हैं उनके रब के पास और उनके लिए मग़्फ़िरत है और उनके लिए इज़्ज़त की रोज़ी है।

फ़ायदा:- हज़रत अबुद्दर्दा रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि दिल का डर जाना ऐसा होता है जैसे कि खजूर के ख़ुश्क पत्तों में आग लग जाना। इसके बाद अपने शागिर्द शहर बिन हौशब रज़ि॰ को ख़िताब करके फ़रमाते हैं कि ऐ शहर ! तुम बदन की कपकपी नहीं जानते? उन्होंने अर्ज़ किया, जानता हूँ। फ़रमाया, उस वक़्त दुआ किया करो। उस वक़्त की दुआ क़ुबूल होती है।

हज़रत साबित बनानी रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि एक बुज़ुर्ग ने फ़रमाया कि मुझे मालूम हो जाता है कि मेरी कौन सी दुआ क़ुबूल हुई और कौन सी नहीं हुई। लोगों ने अर्ज़ किया कि यह किस तरह मालूम हो जाता है, फ़रमाया कि जिस वक़्त मेरे बदन पर कपकपी आ जाए और दिल ख़ौफ़ज़दा हो जाए और आँखों से आँसू बहने लगें, उस वक़्त की दुआ मक़्बूल होती है।

हज़रत सदी रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जब उनके सामने अल्लाह का ज़िक्र आ जाए का मतलब यह है कि कोई शख़्स किसी पर ज़ुल्म का इरादा करे या किसी और गुनाह का क़स्द करे और उससे कहा जाए कि अल्लाह से डर; तो उसके दिल में अल्लाह का ख़ौफ़ पैदा हो जाए।

हारिस बिन मालिक अंसारी रज़ि॰ एक सहाबी हैं। एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर थे। हुज़ूर सल्ल॰ ने दर्याफ़्त फ़रमाया, हारिस! क्या हाल है? अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! मैं बेशक सच्चा मोमिन बन गया। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि सोचकर कहो, क्या कहते हो, हर चीज़ की एक हक़ीक़त होती है, तुम्हारे ईमान की क्या हक़ीक़त है (यानि तुमने किस बात की वजह से यह तय कर लिया कि मैं सच्चा मोमिन बन गया) अर्ज़ किया कि मैंने अपने नफ़्स को दुनिया से फेर लिया, रात को जागता हूँ, दिन को प्यासा रहता हूँ। (यानि रोज़ा रखता हूँ) और जन्नत वालों की आपस में मुलाक़ातों का मंज़र मेरी आँखों के सामने रहता है और जहन्नम वालों के शोर व शग़ब और वावैला का नज़ारा भी आँखों के सामने है (यानि दोज़ख़ जन्नत का तसव्वुर हर वक़्त रहता है) हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, हारिस। बेशक तुमने दुनिया से अपने नफ़्स को फेर लिया। उसको मज़बूत पकड़े रहो। तीन मर्तबा हुज़ूर सल्ल॰ ने यही फ़रमया।

(दुर्रे मंसूर)

और ज़ाहिर बात है कि जिस शख़्स के सामने हर वक़्त दोज़ख़ और जन्नत का मंज़र रहेगा वह दुनिया में कहाँ फंस सकता है।

(١٤) وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَیْءٍ فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ یُوَفَّ اِلَیْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ○ (انفال ع٨)

14. और जो कुछ तुम अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करोगे, उसका सवाब तुमको पूरा पूरा दिया जायेगा और तुम पर किसी क़िस्म का ज़ुल्म न किया जायेगा।

फ़ायदा:- जिन आयात और अहादीस में सवाब बढ़ा कर मिलने का बयान है, वे इसके मनाफ़ी नहीं हैं, उसका मतलब यह है कि उन आमाल में किसी क़िस्म की कमी नहीं होगी, बाक़ी सवाब की मिक़्दार क्या होगी, वह मौक़े की ज़रूरत, ख़र्च करने वाले की नीयत और हालात के एतिबार से जितनी भी बढ़ जाये, यह तो आख़िरत के एतिबार से है और बहुत सी बार दुनिया में भी उसका पूरा बदल मिलता है जैसा कि दूसरी आयात और अहादीस से इसकी ताईद होती है जैसा कि आयात के तहत में नं॰ 20 पर और अहादीस के तहत में नं॰ 8 पर आ रहा है और इस लिहाज़ से अगर इस आयते शरीफ़ा में इस तरफ़ इशारा हो तो बईद नहीं।

(١٥) قُلْ لِّعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّ عَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ ٥ (ابراهيم ع ٥)

15. जो मेरे ख़ास ईमान वाले बंदे हैं, उनसे कह दीजिए कि वे नमाज़ को क़ायम रखें और हमारे दिये हुए रिज़्क़ से ख़र्च करते रहें, पोशीदा तौर से भी और एलानिया भी ऐसे दिन के आने से पहले, जिसमें न ख़रीद व फ़रोख़्त होगी न दोस्ती होगी।

फ़ायदाः- पोशीदा तौर से भी और एलानिया भी यानी जिस वक़्त जिस क़िस्म का सदक़ा मुनासिब हो कि हालात के एतिबार से दोनों क़िस्मों की ज़रूरत होती है और हो सकता है कि मतलब यह हो कि फ़र्ज़ सदक़ात भी जिनका एलानिया अदा करना बेहतर है और नवाफ़िल भी, जिनका इख़्फ़ा (छुपाना) बेहतर है, जैसा कि आयते शरीफ़ा न॰ 9 के तहत में गुज़रा और उस दिन से मुराद क़ियामत का दिन है जैसा कि आयते शरीफ़ा नं॰ 6 में गुज़रा और नमाज़ को क़ायम रखना सबसे पहली आयते शरीफ़ा में गुज़र चुका है।

हज़रत जाबिर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुत्बा पढ़ा, उसमें फ़रमाया, लोगो ! मरने से पहले पहले तौबा कर लो (ऐसा न हो कि मौत आ जाए और तौबा रह जाए) और मशाग़िल की कसरत से पहले पहले नेक आमाल कर लो, (ऐसा न हो कि फिर मश्ग़लों की कसरत से वक़्त न मिले) और अपना और अपने रब का ताल्लुक़ मज़बूत कर लो, उसकी याद की कसरत के साथ और मख़्फ़ी और एलानिया सदक़े की कसरत के ज़रिए से कि इसकी वजह से तुम्हें रिज़्क़ भी दिया जाएगा। तुम्हारी मदद भी होगी, तुम्हारी शिकस्ताहाली भी दूर होगी। *(तर्ग़ीब)*

(١٦) وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ۙ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَآ اَصَابَهُمْ وَالْمُقِيْمِي الصَّلٰوةِ ۙ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ٥ (حج ع ٥)

16. आप ख़ुशख़बरी दीजिए उन आजिज़ी करने वाले मुसलमानों को, जो ऐसे हैं कि जब उनके सामने अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो उनके दिल डर जाते हैं और जो मुसीबतें उन पर पड़ती हैं उन पर सब्र करते हैं और नमाज़ को क़ायम रखने वाले हैं और जो हमने उनको दिया है उससे ख़र्च करते हैं।

फ़ायदाः–'मुख़्बितीन' जिसका तर्जुमा 'आजिज़ी' करने वालों का लिखा गया है इसके तर्जुमे में उलमा के कई क़ौल हैं इसका असल तर्जुमा पस्ती की तरफ़ जाने वालों का है। कुछ उलमा ने इसका तर्जुमा ख़ुदाई अह्काम के सामने गरदन झुका देने वालों का किया है कि वे भी गरदन को नीचे की तरफ़ ले जाते हैं।

कुछ ने तवाज़ोअ् करने वालों का किया है कि वे तो गरदन झुकाने वाले हर वक़्त ही हैं।

हज़रत मुजाहिद रह० ने इसका तर्जुमा 'मुत्मइन लोगों' से किया है।

हज़रत अम्र बिन औस रज़ि० फ़रमाते हैं कि मुख़्बितीन वे लोग हैं, जो किसी पर ज़ुल्म न करें और अगर उन पर ज़ुल्म किया जाए तो वे बदला न लें।

ज़ह्हाक रह० कहते हैं मुख़्बितीन मुतवाज़ेअ् लोग हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० से ज़िक्र किया गया कि वह जब हज़रत रबीअ् बिन ख़ुसैम रज़ि० को देखते तो फ़रमाते कि मैं तुम्हें देखता हूँ तो मुझे मुख़्बितीन याद आ जाते हैं।

(١٧)وَالَّذِيْنَ يُؤْتُوْنَ مَآ اٰتَوْا وَّ قُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ اَنَّهُمْ اِلٰى رَبِّهِمْ رَاجِعُوْنَo
اُولٰٓئِكَ يُسَارِعُوْنَ فِى الْخَيْرَاتِ وَهُمْ لَهَا سَابِقُوْنَo(مؤمنون ع ٤)

17. और जो लोग (अल्लाह की राह में) देते हैं, जो कुछ देते हैं और उस पर भी उन के दिल इससे डरते रहते हैं कि वे अल्लाह के पास जाने वाले हैं। यही लोग हैं जो नेकियों में दौड़ने वाले हैं और यही हैं वे लोग जो नेकियों की तरफ़ सब्क़त करने वाले हैं।

फ़ायदाः- यानी बावजूद अल्लाह की राह में ख़र्च करने के इससे डरते रहते हैं कि देखिए अल्लाह जल्ल शानुहू के यहां इन नेकियों का क्या हश्र हो, क़ुबूल होती हैं या नहीं। यह हक़ तआला शानुहू की ग़ायत अ़ज़्मत और उलूवे मर्तबा (यानी ऊँचे दर्जे) की वजह से है। जो शख़्स जितना ऊँचे मर्तबे का होता है उतना ही उसका ख़ौफ़ ग़ालिब होता है ख़ास कर उस शख़्स के लिए जिसके दिल में वाक़ई अ़ज़्मत हो तथा वे इससे भी डरते रहते हैं कि इसके ख़र्च करने में नीयत भी हमारी ख़ालिस है या नहीं। बहुत सी बार नफ़्स और शैतान के मक्र की वजह से आदमी किसी चीज़ को नेकी समझता रहता है और वह नेकी नहीं

होती, जैसा की सूरः कह्फ़ के आख़िरी रूकुअ् में इर्शाद है :-

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِينَ أَعْمَالًا ۝ الَّذِينَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُونَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُونَ صُنْعًا ۝

'आप कह दीजिए कि हम तुम को ऐसे आदमी बताएं जो आमाल के एतिबार से सबसे ज़्यादा ख़सारे (घाटे) वाले हैं। ये वे लोग हैं जिनकी कोशिशें दुनिया में गयी गुज़री हो गयीं और वे समझते हैं कि हम अच्छे काम कर रहे हैं।'

हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि मोमिन नेकियां करके डरता है और मुनाफ़िक़ बुराईयां करके बे ख़ौफ़ होता है। 'फ़ज़ाइले हज' में कितने ही वाक़िआत इस क़िस्म के ज़िक्र हो चुके हैं कि जिनके दिलों में हक़ तआला शानुहू की अज़्मत और जलाल कामिल दर्जे का होता है, वे ज़बान से लब्बैक कहते हुए इससे डरते हैं कि कहीं यह मर्दूद न हो जाए। हज़रत आइशा रज़ि० कहती हैं, 'या रसूलल्लाह ! वल्लज़ी न युअ्तून' (आयत) यह आयते शरीफ़ा उन लोगों के बारे में है कि एक आदमी चोरी करता है, ज़िना करता है, शराब पीता है और दूसरे गुनाह करता है और इस बात से डरता है कि उसको अल्लाह की तरफ़ रूजूअ् करना है (यानी उसको अपने गुनाहों की वजह से हक़ तआला जल्ल शानुहू के हुज़ूर में पेश होने का डर होता है कि वहां जाकर क्या मुँह दिखाएगा) हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, नहीं, बल्कि ये वे लोग हैं कि एक आदमी रोज़ा रखता है, सदक़ा देता है नमाज़ पढ़ता है और वह इसके बावजूद इससे डरता है कि वह उससे क़बूल न हो।

दूसरी हदीस में है, हज़रत आइशा रज़ि० ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह, ये वे लोग हैं जो ख़ताएं करते हैं, गुनाह करते हैं, और वे डरते हैं। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया, नहीं बल्कि वे लोग हैं जो नमाज़ें पढ़ते हैं, रोज़े रखते हैं, सदक़े देते हैं और उनके दिल डरते रहते हैं।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से नक़ल किया गया कि वे लोग आमाल करते हैं डरते हुए।

सईद बिन जुबैर रज़ि० फ़रमाते हैं कि वे सदक़ात देते हैं और क़ियामत में अल्लाह जल्ल शानुहू के सामने खड़े होने से और हिसाब की सख़्ती से डरते हैं।

हज़रत हसन बसरी रह० से नक़ल किया गया कि ये वे लोग हैं जो नेक अमल करते हैं और इससे डरते हैं कि कहीं उन आमाल की वजह से भी अज़ाब से निजात न मिले। (दुर्रे मंसूर)

हज़रत ज़ैनुल आबिदीन अली बिन हुसैन रज़ि० जब वुज़ू करते तो चेहरे का रंग ज़र्द (पीला) हो जाता और जब नमाज़ को खड़े होते तो बदन पर कपकपी आ जाती, किसी ने इसकी वजह पूछी तो इर्शाद फ़रमाया, जानते भी हो, किसके सामने खड़ा होता हूँ। *(रौज़)*

'फ़ज़ाइले नमाज़ में अनेक वाक़िआत इस क़िस्म के ज़िक्र किए गए और 'हिकायाते सहाबा' रज़ि० का एक बाब मुस्तक़िल अल्लाह तआला जल्ल शानुहू से डरने वालों के बयान में है।

(١٨) وَلَا يَأْتَلِ أُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ أَنْ يُؤْتُوا أُولِي الْقُرْبٰى
وَالْمَسَاكِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ وَلْيَعْفُوْا وَلْيَصْفَحُوْا ۗ
أَلَا تُحِبُّوْنَ أَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ (نور ع ٣)

18. और जो लोग तुममें (दीन के ऐतिबार से) बुज़ुर्गी वाले (और दुनिया के एतिबार से) वुसअत (गुंजाइश) वाले हैं वे इस बात की क़सम न खाएं कि अह्ले क़राबत को और मसाकीन को और अल्लाह की राह में हिजरत करने वालों को न देंगे और उनको यह चाहिए कि वे माफ़ कर दें और दरगुज़र कर दें, क्या तुम यह नहीं चाहते कि अल्लाह तआला तुम्हारे क़ुसूरों को माफ़ कर दे। (पस तुम भी अपने क़ुसूरवारों को माफ़ कर दो) बेशक अल्लाह तआला ग़फ़ूरुर्रहीम है।

फ़ायदा:- सन् 06 हि० में ग़ज़्वा-ए-बनिल मुस्तलिक़ के नाम से एक जिहाद हुआ है, जिसमें हज़रत आइशा रज़ि० भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हमराह थीं, उनकी सवारी का ऊँट अलग था, उस पर हौदज था। यह अपने हौदज में रहती थीं। जब चलने का वक़्त होता कुछ आदमी हौदज को उठाकर ऊँट पर बांधा देते थे, बहुत हल्का फुल्का बदन था उठाने वालों को इसका एहसास भी न होता था कि इस में कोई है या नहीं, इसलिए कि जब चार आदमी मिलकर हौदज को उठाएं उसमें कमसिन हल्की फुल्की औरत के वज़न का क्या पता चल सकता है। मामूल के मुताबिक़ एक मंज़िल पर क़ाफ़िला उतरा

हुआ था। जब रवानगी का वक़्त हुआ तो लोगों ने उनके हौदज को बांध दिया। यह उस वक़्त इस्तिन्जे के लिए तशरीफ़ ले गयी थीं। वापस आयीं तो देखा कि हार नहीं है जो पहन रही थीं। यह उसको तलाश करने चली गयीं। पीछे यहां क़ाफ़िला रवाना हो गया। यह तंहा उस जंगल बयाबान में खड़ी रह गयीं। उन्होंने ख़्याल फ़रमाया कि रास्ते में जब हुज़ूर सल्ल० को मेरे न होने का इल्म होगा तो आदमी तलाश करने इसी जगह आयेगा, वह वहीं बैठ गयीं और जब नींद का ग़लबा हुआ तो सो गयीं। अपने नेक आमाल की वजह से दिली इत्मीनान तो हक़ तआला शानुहू ने इन सब हज़रात को कमाल दर्जे का अता फ़रमा ही रखा था। आजकल की कोई औरत होती, तो तन्हा जंगल बयाबान में रात को नींद आने का तो ज़िक्र ही क्या, ख़ौफ़ की वजह से रो कर चिल्ला कर सुबह कर देती।

हज़रत सफ़वान बिन मुअत्तल रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक बुज़ुर्ग सहाबी थे जो क़ाफ़िले के पीछे इसलिए रहा करते थे कि रास्ते में गिरी पड़ी चीज़ की ख़बर रखा करें। वह सुबह के वक़्त जब उस जगह पहुँचें तो एक आदमी को पड़े देखा और चूँकि पर्दे के नाज़िल होने से पहले हज़रत आइशा रज़ि० को देखा था इसलिए यहां उनको पड़ा देख कर पहचान लिया और ज़ोर से –

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजि ऊन० पढ़ा।

उनकी आवाज़ से उनकी आँख खुली और मुंह ढक लिया। उन्होंने अपना ऊँट बिठाया यह उस पर सवार हो गयीं और वह ऊँट की नकेल पकड़ कर ले गये और क़ाफ़िले में पहुँचा दिया।

अब्दुल्लाह बिन उबई जो मुनाफ़िक़ों का सरदार और मुसलमानों का सख़्त दुश्मन था उसको तोहमत लगाने का मौक़ा मिल गया और ख़ूब इसकी शोहरत की। उसके साथ कुछ भोले मुसलमान भी इस तज़्किरे में शामिल हो गये और अल्लाह की क़ुदरत और शान एक माह तक यह ज़िक्र तज़्किरे होते रहे। लोगों में कसरत से इस वाक़िए का चर्चा होता रहा और कोई वही (ख़ुदाई पैग़ाम) वग़ैरह हज़रत आईशा रज़ि० की बराअत[1] की नाज़िल न हुई। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमानों को इस हादसे का सख़्त सदमा था और जितना भी सदमा होना चाहिए था, वह ज़ाहिर है। हुज़ूर सल्ल० मर्दों से और औरतों से इस बारे में मश्विरा फ़रमाते थे, हालात की तह्क़ीक़ फ़रमाते थे,

1. यानी उस तोहमत से पाक होने के सिलसिले में।

मगर यक्सूई की कोई भी सूरत न होती। एक माह के बाद सूरः नूर का एक मुस्तक़िल रूकूअ़ क़ुरआन पाक में हज़रत आइशा रज़ि॰ की बराअत में नाज़िल हुआ, और अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से उन लोगों पर सख़्त इताब हुआ जिन्होंने बे दलील, बे सबूत इस तोहमत को फैलाया था। इस वाक़िए को शोहरत देने वालों में हज़रत मिस्तह रज़ि॰ एक सहाबी भी थे जो हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ के रिश्तेदार थे और हज़रत अबूबक्र रज़ि॰ उनकी ख़बर गीरी और मदद फ़रमाया करते थे। इस तोहमत के क़िस्से में उनकी शिर्कत से हज़रत अबूबक्र रज़ि॰ को रंज हुआ और होना भी चाहिए था कि उन्होंने अपने होकर बे तह्क़ीक़ बात को फैलाया। इस रंज में हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ ने क़सम खा ली कि मिस्तह रज़ि॰ की मदद न करेंगे। इस पर यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई जो ऊपर लिखी गयी। रिवायात से मालूम होता है कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ के अलावा कुछ दूसरे सहाबा रज़ि॰ ने भी ऐसे लोगों की मदद से हाथ खींच लिया था, जिन्होंने इस तोहमत के वाक़िए में ज़्यादा हिस्सा लिया था।

हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि मिस्तह रज़ि॰ ने इसमें बहुत ज़्यादा हिस्सा लिया और हज़रत अबूबक्र रज़ि॰ के रिश्तेदार थे, उन्हीं की परवरिश में रहते थे। जब बराअत नाज़िल हुई तो हज़रत अबूबक्र रज़ि॰ ने क़सम खा ली कि उन पर ख़र्च न करेंगे, इस पर यह आयत 'व ला याअ्तलि' नाज़िल हुई और आयते शरीफ़ा के नाज़िल होने के बाद हज़रत अबूबक्र रज़ि॰ ने उनको अपनी परवरिश में फिर ले लिया।

एक दूसरी हदीस में है कि इस आयते शरीफ़ा के बाद हज़रत अबूबक्र रज़ि॰ ने जितना पहले से ख़र्च करते थे उसका दो गुना कर दिया।

एक और हदीस में है कि दो यतीम थे जो हज़रत अबूबक्र रज़ि॰ की परवरिश में थे, जिनमें से एक मिस्तह रज़ि॰ थे। हज़रत अबूबक्र रज़ि॰ ने दोनों का नफ़्क़ा बंद करने की क़सम खा ली थी।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि सहाबा रज़ि॰ में कई आदमी ऐसे थे, जिन्होंने हज़रत आइशा रज़ि॰ के ऊपर बोहतान में हिस्सा लिया, जिसकी वजह से बहुत से सहाबा किराम रज़ि॰ जिनमें हज़रत अबूबक्र रज़ि॰ भी हैं, ऐसे थे, जिन्होंने क़सम खा ली थी कि जिन लोगों ने इस बोहतान की इशाअत में हिस्सा लिया, उन पर ख़र्च न करेंगे। इस पर यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई कि बुज़ुर्गी वाले और वुसअत वाले हज़रात इस की क़सम न खाएं कि सिलारहमी

न करेंगे और जिस तरह पहले ख़र्च करते थे, उसी तरह ख़र्च न करेंगे।

(दुर्रे मंसूर)

किस क़दर मुजाहिदा-ए-अज़ीम है कि एक शख़्स किसी की बेटी की आबरूरेज़ी में झूठी बातें कहता फिरे और फिर वह उसकी इआनत (मदद) उसी तरह करे जिस तरह पहले से करता था, बल्कि उससे भी दो गुना कर दे।

(١٩) تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ○ فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِىَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ اَعْيُنٍ ج جَزَآءً ۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ○ (سجده ع ٢)

19. रात को उन के पहलू बिस्तरों से अलाहिदा रहते हैं, इस तरह कि वे लोग अपने रब को (अज़ाब के) ख़ौफ़ से और (सवाब की) उम्मीद से पुकारते रहते हैं और हमारी दी हुई चीज़ों से ख़र्च करते हैं, पस कोई नहीं जानता कि ऐसे लोगों की आंखों की ठंडक का क्या क्या सामान ख़ज़ाना-ए-ग़ैब में मौजूद है। यह सब बदला है उनके नेक आमाल का।

फ़ायदा:- रात को उनके पहलू, बिस्तरों से अलाहिदा रहते हैं के मुताल्लिक़ उलमा-ए-तफ़्सीर के दो क़ौल हैं -

एक यह कि इससे मग़्रिब और इशा का दर्मियान मुराद है। बहुत से आसार से इस की ताईद होती है। हज़रत अनस रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि यह आयते शरीफ़ा हमारे बारे में नाज़िल हुई। हम अंसार की जमाअत मग़्रिब की नमाज़ पढ़कर अपने घर वापस न होते थे, उस वक़्त तक कि हुज़ूर सल्ल॰ के साथ इशा की नमाज़ न पढ़ लें। इस पर यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई।

एक और रिवायत में हज़रत अनस रज़ि॰ ही से नक़ल किया गया कि मुहाजिरीन सहाबा रज़ि॰ की एक जमाअत का मामूल यह था कि वे मग़्रिब के बाद से इशा तक नवाफ़िल पढ़ा करते थे, इस पर यह आयत नाज़िल हुई।

हज़रत बिलाल रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हम लोग मग़्रिब के बाद बैठे रहते और सहाबा रज़ि॰ की एक जमाअत मग़्रिब से इशा तक नमाज़ पढ़ती थी। उस पर यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई।

अबदुल्लाह बिन ईसा रज़ि॰ से भी यही नक़ल किया गया कि अंसार की एक जमाअत मग़्रिब से इशा तक नवाफ़िल पढ़ती थी उस पर यह आयते शरीफ़ा

नाज़िल हुई।

दूसरा क़ौल यह है कि इससे तहज्जुद की नमाज़ मुराद है। हज़रत मुआज़ रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि इससे रात का क़ियाम मुराद है। एक हदीस में मुजाहिद रज़ि॰ से नक़ल किया गया कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रात के क़ियाम का ज़िक्र फ़रमाया और हुज़ूर सल्ल॰ की आंखों से आंसू जारी हो गये और यह आयते शरीफ़ा तिलावत फ़रमायी।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰ फ़रमाते हैं, तौरात में लिखा है जिन लोगों के पहलू रात को बिस्तरों से दूर रहते हैं उनके लिए हक़ तआला शानुहू ने ऐसी चीज़ें तैयार कर रखी हैं जिनको न किसी आँख ने देखा, न किसी कान ने सुना और न किसी आदमी के दिल पर उनका वस्वसा भी पैदा हुआ, न उनको कोई मुक़र्रब फ़रिश्ता जानता है, न कोई नबी, और रसूल, और इसका ज़िक्र क़ुरआन पाक की इस आयते शरीफ़ा में है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ भी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल करते हैं कि अल्लाह जल्ल शानुहू का इर्शाद है कि मैंने अपने नेक बंदों के लिए वे चीज़ें तैयार कर रखी हैं जिनको न किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना, न किसी के दिल पर उनका वस्वसा गुज़रा।

रौज़ुर्रियाहीन वग़ैरह में सैकड़ों वाक़िआत ऐसे लोगों के ज़िक्र हैं जो सारी रात मौला की याद में रो-रो कर गुज़ार देते थे।

हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रह॰ का चालीस साल तक इशा के वुज़ू से सुबह की नमाज़ पढ़ना ऐसी मारूफ़ चीज़ है, जिससे इंकार की गुंजाइश नहीं और माहे मुबारक में दो क़ुरआन शरीफ़ रोज़ाना एक दिन का, एक रात का ख़त्म करना भी मारूफ़ है।

हज़रत उस्मान रज़ि॰ का सारी रात जागना और एक रक्अत में पूरा क़ुरआन शरीफ़ पढ़ लेना भी मशहूर वाक़िआ है।

हज़रत उमर रज़ि॰ बहुत सी बार इशा की नमाज़ पढ़ कर घर में तशरीफ़ ले जाते और घर जाकर नमाज़ शुरू कर देते और नमाज़ पढ़ते पढ़ते सुबह कर देते।

हज़रत तमीम दारी रज़ि॰ मशहूर सहाबी हैं। एक रक्अत में तमाम

क़ुरआन शरीफ़ पढ़ना और कभी एक ही आयत को सुबह तक बार बार पढ़ते रहना उनका मामूल था।

हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ि० सोने के लिए लेटते और इधर उधर करवटें बदल कर यह कह कर खड़े हो जाते या अल्लाह जहन्नम के ख़ौफ़ ने मेरी नींद उड़ा दी और सुबह तक नमाज़ पढ़ते रहते।

हज़रत उमैर रज़ि० एक हज़ार रक्अत, नफ़्ल और एक लाख मर्तबा तस्बीह रोज़ाना पढ़ते।

हज़रत उवैस क़र्नी रह० मशहूर ताबिआी हैं। हुज़ूर सल्ल० ने भी उनकी तारीफ़ फ़रमायी और उनसे दुआ कराने की लोगों को तर्ग़ीब दी। किसी रात को फ़रमाते कि आज की रात रूकूअ् करने की है और सारी रात रूकूअ् में गुज़ार देते। किसी रात फ़रमाते कि आज की रात सज्दे की है और सारी रात सज्दे में गुज़ार देते थे। *(इक़ामतुल् हुज्ज:)*

ग़रज़ इन हज़रात के वाक़िआत रात भर मालिक की याद में महबूब की तड़प में गुज़ार देने के इतने ज़्यादा हैं कि उनका एहाता ना मुम्किन है। यही हज़रात हक़ीक़तन इस शेर के मिस्दाक़ थे –

हमारा काम है रातों को रोना यादे दिलबर में,
हमारी नींद है महवे ख़्याले यार हो जाना !!

काश हक़ तआला शानुहू इन हज़रात के जज़्बात का ज़रा सा साया इस नापाक पर भी डाल देता।

(٢٠) قُلْ اِنَّ رَبِّیْ یَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ یَّشَآءُ مِنْ عِبَادِہٖ وَیَقْدِرُ لَهٗ ط
وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَیْءٍ فَهُوَ یُخْلِفُهٗ ج وَهُوَ خَیْرُ الرّٰزِقِیْنَ ۝ (سبا ع ٥)

20. आप कह दीजिए कि मेरा रब अपने बंदों में से जिस को चाहे, रोज़ी की वुस्अत अता करता है और जिस को चाहे, रोज़ी की तंगी देता है और जो कुछ तुम (अल्लाह के रास्ते में) ख़र्च करोगे, अल्लाह तआला उसका बदला अता करेगा और वह सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है।

फ़ायदा:- यानी तंगी और फ़राख़ी अल्लाह तआला शानुहू की तरफ़ से है, तुम्हारे ख़र्च को रोकने से फ़राख़ी नहीं होती और ख़र्च ज़्यादा करने से तंगी

नहीं होती, बल्कि अल्लाह के रास्ते में जो ख़र्च किया जाए उसका बदला आख़िरत में तो मिलता ही है दुनिया में भी अक्सर उसका बदला मिलता है।

एक हदीस में है कि हज़रत जिब्रील अलैहि॰ ने अल्लाह जल्ल शानुहू का यह इर्शाद नक़ल किया, मेरे बन्दो! मैं ने तुमको अपने फ़ज़्ल से अता किया और तुम से क़र्ज़ मांगा, पस जो शख़्स मुझे अपनी खुशी और रज़ा व रग़बत से देगा, मैं उसका बदल दुनिया में जल्दी दूँगा, और आख़िरत में उसके लिए ज़ख़ीरा बना कर रखूँगा। और जो खुशी से न देगा, बल्कि उससे मैं अपनी दी हुई चीज़ जबरन छीन लूँगा और वह उस पर सब्र करेगा और सवाब की उम्मीद रखेगा, उसके लिए मैं अपनी रहमत वाजिब कर दूँगा और उसको हिदायत याफ़्ता लोगों में लिखूँगा और उसके लिए अपने दीदार को मुबाह कर दूँगा। *(कन्ज़)*

किस क़दर हक़ तआला शानुहू का एहसान है कि अपनी खुशी से न देने की सूरत में भी अगर बंदा जब्र से लिए जाने में भी सब्र कर ले तो उसके लिए भी अज्र फ़रमा दिया, हालांकि जब वह हक़ तआला की अता की हुई चीज़ खुशी से वापस नहीं करता, जबरन् उससे ली जाती है। तो फिर अज्र का क्या मतलब, लेकिन हक़ तआला शानुहू के एहसानात का कोई शुमार हो सकता है?

हज़रत हसन फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस आयते शरीफ़ा के बारे में फ़रमाया कि तुम जो कुछ अपने अह्ल व अयाल पर ख़र्च करो, बग़ैर इस्राफ़ (फ़ुज़ूल ख़र्ची) और बग़ैर कंजूसी के वह सब अल्लाह के रास्ते में है।

हज़रत जाबिर रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल करते हैं कि आदमी जो कुछ शरअी नफ़्क़ा में ख़र्च करे अल्लाह जल्ल शानुहू के यहां उसका बदल है, सिवाय इसके कि जो तामीर में ख़र्च किया हो या गुनाहों में।

हज़रत जाबिर रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल करते हैं कि हर एहसान सदक़ा है और जो कुछ आदमी अपने नफ़्स पर और अपने अहल व अयाल पर ख़र्च करे वह सदक़ा है और जो कुछ अपनी आबरू की हिफ़ाज़त पर ख़र्च करे वह सदक़ा है और मुसलमान जो कुछ (शरीअत के मुवाफ़िक़) ख़र्च करता है, वह सदक़ा है, अल्लाह जल्ल शानुहू उसके बदल के ज़िम्मेदार हैं, मगर वह ख़र्च जो गुनाह में हो, या तामीर में।

हकीम तिर्मिज़ी रह॰ ने हज़रत ज़ुबैर रज़ि॰ से एक मुफ़स्सल क़िस्सा नक़ल किया जो अहादीस के ज़ैल में नं॰ 12 पर मुफ़स्सल आ रहा है। अल्लामा सुयूती रह॰ ने दुर्रे मंसूर में उसको हकीम तिर्मिज़ी की रिवायत से मुफ़स्सल नक़ल किया है, लेकिन खुद उन्होंने 'लआलिल् मस्नूअः' में उसको बहुत मुख़्तसर तौर पर इब्ने अदी रह॰ की रिवायत से मौज़ूआत में नक़ल किया है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि रोज़ाना सुबह को दो फ़रिश्ते हक़ तआला शानुहू से दुआ करते हैं। एक दुआ करता है, ऐ अल्लाह! ख़र्च करने वाले को उसका बदल अता फ़रमा। दूसरा अर्ज़ करता है ऐ अल्लाह! रोक के रखने वाले के माल को हलाक कर। अहादीस के तहत में यह हदीस नं॰ 2 पर आ रही है। और तजुर्बे में भी अक्सर यही आया है कि जो हज़रात सख़ावत करते हैं अल्लाह जल्ल शानुहू के दरबार से फ़ुतूहात का दरवाज़ा उनके लिए हर वक़्त खुला रहता है और जो लोग कंजूसी से जोड़ जोड़ कर रखते हैं अक्सर कोई आसमानी आफ़त, बीमारी, मुक़दमा चोरी वग़ैरह ऐसी चीज़ पेश आ जाती है जिससे बरसों का अन्दोख़्ता दिनों में ज़ाया हो जाता है और अगर किसी के दूसरे नेक आमाल की बरकत से और उसकी नेक नीयती से उस पर कोई ऐसा ख़र्च नहीं पड़ता तो नालायक़ औलाद बाप के अन्दोख़्ता को जो उसकी उम्र भर की कमाई थी, महीनों में बराबर कर देती है।

हज़रत अस्मा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि मुझ से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि खूब ख़र्च किया कर और गिन गिन कर मत रख कि अल्लाह जल्ल शानुहू तुझे भी गिन गिन कर अता करेगा और जमा करके मत रख कि अल्लाह जल्ल शानुहू तुझ से भी जमा कर के रखने लगेगा। अता कर जितना तुझ से हो सके। *(मिश्क़ात, बुख़ारी, मुस्लिम)*

एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत बिलाल रज़ि॰ के पास तशरीफ़ ले गये। उनके पास एक ढेरी खजूरों की रखी थी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया यह क्या है? उन्होंने अर्ज़ किया कि आइन्दा की ज़रूरत के लिए रख लिया है। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि तुम इससे नहीं डरते कि इसका धुआं जहन्नम की आग में देखो। बिलाल खूब ख़र्च करो और अर्श के मालिक से कमी का ख़ौफ़ न करो। *(मिश्क़ात)*

यहां ज़रूरत के दर्जे में भी आइंदा के लिए ज़ख़ीरा रखने पर इताब है और जहन्नम का धुआं देखने की वईद है। हज़रत बिलाल रज़ि॰ के शायाने शान यही चीज़ थी, इसलिए कि यह उन आली मर्तबा लोगों में हैं, जिनके लिए हुज़ूर सल्ल॰ इसको गवारा न फ़रमा सकते थे कि उनको कल का फ़िक्र हो और उनको अपने मालिक पर इसका पूरा भरोसा न हो कि जिसने आज दिया वह कल को भी देगा? हर शख़्स की एक शान और उसका एक मर्तबा हुआ करता है। "ह-सनातुल् अब्रारि सय्यिआतुल् मुक़र्रबीन्" मशहूर कहावत है कि आमी नेक लोगों के लिए जो चीज़ें नेकियां हैं मुक़र्रब लोगों की शान में वे भी कोताहियां शुमार हो जाती हैं। बहुत से वाक़िआत इसकी नज़ीरें हैं।

बहरहाल माल रखने के वास्ते हरगिज़ नहीं, जमा करने की चीज़ बिल्कुल नहीं है। यह सिर्फ़ ख़र्च करने के वास्ते पैदा हुआ है, अपनी ज़ात पर कम से कम और दूसरों पर ज़्यादा से ज़्यादा ख़र्च करना इसका फ़ायदा है, लेकिन यह बात निहायत ही अहम और ज़रूरी है कि हक़ तआला शानुहू के यहां सारा मदार नीयत पर ही है। 'इन्न-मल् अअ्मालु बिन्नियाति' मशहूर हदीस है कि आमाल का मदार नीयत पर ही है जहां नेक नीयती हो, महज़ अल्लाह के वास्ते ख़र्च करना हो, चाहे अपने नफ़्स पर हो, चाहे अह्ल व आयाल पर, चाहे अक़रबा (क़रीबी लोगों) पर, चाहे अग़्यार (ग़ैरों) पर, वह बरकात व समरात लाए बग़ैर नहीं रह सकता और जहां बद नीयती हो, शोहरत और इज़्ज़त मक़्सूद हो, नेक नामी और दूसरी अग़राज़ मिल गयी हों, वहां नेकी बर्बाद गुनाह लाज़िम हो जाता है। वहां बरकत का सवाल ही नहीं रहता।

(۲۱) اِنَّ الَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ ۝ لِيُوَفِّيَهُمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ۝ (فاطر ع ٤)

21. जो लोग क़ुरआन पाक की तिलावत करते रहते हैं और नमाज़ को क़ायम रखते हैं और जो कुछ हमने उनको दिया है, उसमें से पोशीदा और एलानिया ख़र्च करते हैं, वे ऐसी तिजारत के उम्मीदवार हैं जिसमें घाटा नहीं है और यह इसलिए ताकि हक़ तआला शानुहू उनको उनके आमाल की उजरतें भी पूरी-पूरी अता करे और इसके अलावा अपने फ़ज़्ल से (बतौर इनाम के) और ज़्यादा अता करे। बेशक वह बड़ा

बख़्शने वाला, बड़ा क़द्रदान है।

फ़ायदाः- हज़रत क़तादा रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि ऐसी तिजारत से, जिस में घाटा नहीं, जन्नत मुराद है, जो न कभी बर्बाद होगी, न ख़राब होगी और अपने फ़ज़्ल से ज़्यादती से मुराद वह है जिसको (क़ुरआन पाक में) 'व ल-दै ना मज़ीद' से ताबीर किया है। (दुर्रे मंसूर)

यह आयत जिसकी तरफ़ हज़रत क़तादा रज़ि॰ ने इशारा किया है सूरः 'क़ाफ़' की आयत है। जिसमें अल्लाह जल्ल शानुहू का इर्शाद है:-

لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ○

इन (जन्नत वालों) के लिए जन्नत में हर वह चीज़ मौजूद होगी जिसकी ये ख़्वाहिश करेंगे और (उनकी चाही हुई चीज़ों के अलावा) हमारे पास उनके लिए और भी ज़्यादा है (जो हम उनको अता करेंगे) और इसकी तफ़्सीर में अहादीस में बहुत ही अजीब अजीब चीज़ें ज़िक्र की गयीं, जो बड़ी तफ़्सील तलब हैं और इनमें सब से ऊँची चीज़ हक़ तआला शानुहू की रज़ा का परवाना है और बार-बार की ज़ियारत जो ख़ुश क़िस्मत लोगों को नसीब होगी और यह इतनी बड़ी दौलत कैसी कम मेहनत चीज़ों पर मुरत्तब है। जिनमें कोई मशक़्क़त नहीं उठानी पड़ती। अल्लाह की राह में कसरत से ख़र्च करना, नमाज़ को क़ायम रखना और क़ुरआन पाक की तिलावत कसरत से करना, जो ख़ुद दुनिया में भी लज़्ज़त की चीज़ है, क़ुरआन पाक की कसरते तिलावत के कुछ वाक़िआत अभी गुज़र चुके हैं और कुछ वाक़िआत 'फ़ज़ाइले क़ुरआन' में ज़िक्र किये गये, उनको ग़ौर से देखना चाहिये।

(٢٢) وَالَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَمْرُهُمْ شُوْرٰى بَيْنَهُمْ ص وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ○ (شورىٰ ع ٤)

22. और जिन लोगों ने अपने रब का हुक्म माना और नमाज़ को क़ायम किया और उनका हर मुहतम बिश्शान[1] काम मश्विरे से होता है और जो हमने उनको दिया है, उससे वह ख़र्च करते रहते हैं (ऐसे लोगों के लिये हक़ तआला शानुहू के यहां जो अताया हैं वे दुनिया के साज़ व

1. शानदार।

सामान से बदरजहा बेहतर और पायदार हैं।)

फ़ायदा:- इन आयात में कामिल लोगों की बहुत सी सिफ़ात ज़िक्र की हैं और उनके लिए हक़ तआला शानुहू ने अपने पास जो है और वह दुनिया की नेमतों से बदरजहा बेहतर है उसका वायदा फ़रमाया है। उलमा ने लिखा है कि इन आयात में:-

लिल्लज़ी न आ म नू व अला रब्बिहिम य-त-वक्कलून॰

से तरतीब वार हज़रात ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन रज़ियाल्लाहु अन्हुम अजमईन की ख़ुसूसी सिफ़ात और वक़्ती हालात की तरफ इशारा है और हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ि॰ से लेकर हज़रत अली रज़ि॰, और हज़रात हसनैन रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन के ज़माने तक के अहवाल से ख़िलाफ़त की ज़ीनत की तरफ़ इशारा है और उसी तर्तीब से सिफ़ात व अह्वाल पर तंबीह है जिस तर्तीब से उन हज़रात की ख़िलाफ़त हुई और इन आयात में इशारे के तौर पर आख़िरत में इन हज़रात ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन रज़ियाल्लाहु अन्हुम अज्मईन के लिए बहुत कुछ अताया का वायदा है और अल्फ़ाज़ के उमूम से उन सब लोगों के लिए वायदा है जो इन सिफ़ात को अपने अंदर पैदा करने का एहतिमाम करें। काश! हम मुसलमानों को दीन का शौक़ होता और क़ुरआन और हदीस के बताए हुए बेहतरीन अख़्लाक़ को तलाश करके अपनाने का जज़्बा होता, मगर हमारे अख़्लाक़ इस क़दर गिरते जा रहे हैं बल्कि गिर चुके हैं कि उनको देखकर ग़ैर मुस्लिमों को इस्लाम से नफ़रत होती है। इन ग़रीबों को यह मालूम नहीं कि इस्लामी अख़्लाक पर आज कल मुसलमान चल ही नहीं रहे हैं। वे मुसलमान के जो अख़्लाक़ देखते हैं उन्हीं को इस्लामी अख़्लाक़ समझते हैं। **फ़ इल ल्लाहिल मुश्तका॰**

(۲۳) وَفِیْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ○ (ذاریات ع ۱)

23. और उनके मालों में सवाल करने वालों का और (सवाल न करने वाले) नादार का हक़ है।

फ़ायदा:- ऊपर से कामिल ईमान वालों की ख़ास सिफ़तें बयान हो रही हैं जिनके ज़ैल (तहत) में उनकी एक ख़ास सिफ़त यह भी है कि वे सदक़ात इतने कसरत और ऐसे एहतिमाम से देते हैं कि गोया यह उनके ज़िम्मे हक़ हो गया है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि उनके अम्वाल में हक़ है यानी

ज़कात के अलावा जिस से वे सिला रहमी करते हैं और मेहमानों की दावत करते हैं और महरूम लोगों की मदद करते हैं।

मुजाहिद रज़ि॰ कहते हैं कि इससे ज़कात के अलावा मुराद है।

इब्राहीम रज़ि॰ कहते हैं कि वे लोग अपने मालों में ज़कात के अलावा और भी हक़ समझते हैं।

इब्ने अब्बास रज़ि॰ कहते हैं कि महरूम वह परेशान हाल है जो दुनिया का तालिब हो और दुनिया उससे मुँह फेरती हो और आदमियों से सवाल न करता हो। एक और हदीस में उनसे नक़्ल किया गया कि महरूम वह है जिसका कोई हिस्सा बैतूल माल में न हो।

हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि महरूम वह तंगी में पड़ा हुआ शख़्स है जिसकी कमाई उसको काफ़ी न हो।

अबू क़ुलाबा रज़ि॰ कहते हैं कि यमामा में एक आदमी था एक मर्तबा सैलाब आया और उसका सब कुछ माल व मताअ् बहा कर ले गया। एक सहाबी रज़ि॰ ने फ़रमया कि इसको महरूम कहते हैं, इसकी मदद की जाए।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़्ल फ़रमाते हैं कि मिस्कीन वह शख़्स नहीं है जिसको एक एक लुक़्मा दर बदर फिराता है, यानी दरवाज़ों से भीख मांगता है। असल मिस्कीन वह है जिसके पास न खुद इतना माल हो जो उसकी हाजत को पूरा करे और न लोगों को उसका हाल मालूम हो कि उसकी मदद की जाए। यही शख़्स दरअसल महरूम है।

हज़रत फ़ातिमा बिन्त क़ैस रज़ि॰ ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस आयते शरीफ़ा के मुताल्लिक़ सवाल किया तो हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि माल में ज़कात के अलावा और भी हक़ हैं। *(दुर्रे मंसूर)*

यह हदीस इसी फ़स्ल की अहादीस में नं॰ 16 पर आएगी, इसके बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह आयते शरीफ़ा पढ़ी -

لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ. (بقره ع ۲۲)

इस आयते शरीफ़ा का कुछ हिस्सा नं॰ 2 पर गुज़र चुका है। इस आयत में मसाकीन वग़ैरह के देने का जिक्र अलाहिदा है और ज़कात देने का ज़िक्र

अलाहिदा है, जिसमें इस बात की तर्ग़ीब दी गयी है कि आदमी को सिर्फ़ ज़कात ही पर किफ़ायत न करना चाहिए, बल्कि इसके अलावा भी अपने माल को अल्लाह के रास्ते में कसरत से ख़र्च करना चाहिये। मगर आज हम लोगों के लिए ज़कात का ही अदा करना वबाल हो रहा है कितने मुसलमान ऐसे हैं जो ज़कात को भी अदा नहीं करते, हाँ शादी और तक़रीबात की लग्व (बेकार) रस्मों में घर भी गिरवी रख देंगे जहां दुनिया में माल बर्बाद हो और आख़िरत में गुनाह का वबाल हो।

(٢٤) اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاَنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلَفِيْنَ فِيْهِ ط فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَاَنْفَقُوْا لَهُمْ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ○ (حديد ع ١)

24. तुम लोग अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लाओ और जिस माल में उसने तुमको दूसरों का क़ायम मक़ाम बनाया है, उसमें से (उसकी राह में) ख़र्च करो। जो लोग तुम में से ईमान लाए और (उन्होंने अल्लाह की राह में) ख़र्च किया, उनके लिए बहुत बड़ा अज्र है।

फ़ायदाः- क़ायम मक़ाम का मतलब यह है कि यह माल पहले किसी और के पास था, अब कुछ रोज़ के लिये तुम्हारे पास है, तुम्हारी आंख बंद हो जाने के बाद किसी और के पास चला जायेगा। ऐसी हालत में इसको जोड-जोड़ कर रखना बेकार है। यह बे मुरव्वत माल न सदा किसी के पास रहा न रहेगा। खुश नसीब है वह जो इसको अपने पास रखने की तद्बीर कर ले और वह सिर्फ़ यही है कि इसको अल्लाह जल्ल शानुहू के बैंक में जमा करा दें, जिसमें न ज़ाया होने का अन्देशा है, न छूट जाने का ख़तरा है और दुनिया में रहते हुए हर वक़्त ख़तरा ही ख़तरा है और आजकल तो क़ुदरत ने आंखों से दिखा दिया कि बड़े बड़े महल, बड़ी बड़ी जागीरें साज़ व सामान सब का सब खड़े खड़े हाथ से निकलकर दूसरों के क़ब्ज़े में आ गया। कल तक जिन मकानात के बिना किसी और के साझे खुद मालिक थे, आज दूसरों को अपनी आँखों से अपना जान शीन उनमें देखते हैं, फिर भी इब्रत हासिल नहीं होती।

(٢٥) وَمَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ط لَا يَسْتَوِيْ مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَاتَلَ ط اُولٰٓئِكَ

اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَقٰتَلُوْا ؕ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝ (حديد ع ١)

25. और तुम्हें क्या हो गया, क्यों नहीं ख़र्च करते अल्लाह के रास्ते में, हालांकि सब आसमान-ज़मीन आख़िर में अल्लाह ही की मीरास है। जो लोग मक्का मुकर्रमा के फ़त्ह होने से पहले अल्लाह के रास्ते में ख़र्च कर चुके हैं और जिहाद कर चुके हैं, वे बराबर नहीं हो सकते (उन लोगों के जिनका ज़िक्र आगे है, बल्कि) वे बढ़े हुए हैं दर्जे में उन लोगों से जिन्होंने फ़त्हे मक्का के बाद ख़र्च किया और जिहाद किया और अल्लाह तआला ने सवाब का वायदा तो सब ही से कर रखा है (चाहे फ़त्हे मक्का से पहले ख़र्च और जिहाद किया हो या बाद में) और अल्लाह तआला को तुम्हारे आमाल की पूरी ख़बर है।

फ़ायदा:- अल्लाह तआला की मीरास होने का मतलब यह है कि जब सब आदमी मर जायेंगे तो आख़िर में आसमान ज़मीन, माल मताअ् सब उसी का रह जायेगा कि उस पाक ज़ात के सिवा कोई भी बाक़ी न रहेगा तो जब सब कुछ सबको छोड़ना ही है तो फिर अपनी ख़ुशी से अपने हाथ से क्यों न ख़र्च करें कि इसका सवाब भी मिले, इसके बाद आयते शरीफ़ा में इस पर तंबीह की गयी कि जिन लोगों ने फ़त्हे मक्का से पहले अल्लाह तआला के काम पर ख़र्च किया या जिहाद किया, उनका मर्तबा बढ़ा हुआ है उन लोगों से जिन्होंने फ़त्हे मक्का के बाद ख़र्च किया या जिहाद किया इसलिए कि फ़त्ह से पहले एहतियाज ज़्यादा थी और जो चीज़ जितनी ज़्यादा हाजत के वक़्त ख़र्च की जाएगी उतना ही ज़्यादा सवाब होगा, जैसा कि सिलसिला-ए-अहादीस में नं॰ 13 पर आ रहा है।

लोगों को ज़रूरत के वक़्त बहुत ज़्यादा ख़्याल करना चाहिए और ऐसे वक़्त को जिसमें दूसरों को ज़रूरत हो अपने ख़र्च करने के लिए बहुत ग़नीमत समझना चाहिए। हक़ तआला शानुहू ने सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ में भी यह तफ़रीक़ फ़रमा दी कि जिन हज़रात ने फ़त्हे मक्का से पहले ख़र्च किया उनके सवाब को बहुत ज़्यादा बढ़ा दिया, इसी तरह हमेशा ख़्याल रखना चाहिये कि किसी की ज़रूरत के वक़्त उस पर ख़र्च करना बहुत ऊँची चीज़ है।

(٢٦) مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗ وَلَهٗٓ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ۝ (حديد ع ٢)

26. कौन शख़्स ऐसा है जो अल्लाह जल्ल शानुहू को क़र्ज़ हसना दे, फिर अल्लाह तआला उसके सवाब को उसके लिए बढ़ाता चला जाये और उसके लिए बेहतरीन बदला है।

फ़ायदा:- नं॰ 5 पर एक आयते शरीफ़ा इसके मयानों जैसी गुज़र चुकी है, ख़ास एहतिमाम की वजह से इस मज़मून को दोबारा इर्शाद फ़रमाया है और क़ुरआने पाक में बार बार इस पर तंबीह की जा रही है कि आज अल्लाह के रास्ते में ख़र्च का दिन है। जो ख़र्च करना है कर लो मरने के बाद हसरत के सिवा कुछ नहीं है।

(۲۷) اِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَالْمُصَّدِّقَاتِ وَاَقْرَضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ○ (حدید ع۲)

27. बेशक सदक़ा देने वाले मर्द और सदक़ा देने वाली औरतें (और ये सदक़ा देने वाले) अल्लाह तआला जल्ल शानुहू को क़र्ज़ा-ए-हस्ना दे रहे हैं, उनका सवाब बढ़ाया जायेगा और उनके लिए नफ़ीस अज्र है।

फ़ायदा:- यानी जो लोग सदक़ा करते हैं वे हक़ीक़त में अल्लाह जल्ल शानुहू को क़र्ज़ देते हैं, इसलिए कि यह भी क़र्ज़ की तरह से सदक़ा देने वालों को वापस मिलता है। पस यह बहुत ज़्यादा मुआवज़ा और बदला लेकर ऐसे वक़्त में वापस होगा जो वक़्त सदक़ा करने वाले की सख़्त हाजत और सख़्त ज़रूरत और सख़्त मजबूरी का होगा। लोग शादियों के वास्ते, सफ़रों के वास्ते और दूसरी ज़रूरतों के वास्ते थोड़ा-थोड़ा जमा करके रखते हैं कि फ़लां ज़रूरत का वक़्त आ रहा है औलाद की शादी करना है, इसके लिए हर वक़्त फ़िक्र में लगे रहते हैं। और जो गुंजाइश मिले कुछ न कुछ कपड़ा ज़ेवर वग़ैरह ख़रीद कर डालते रहते हैं कि उस वक़्त दिक़्क़त न हो। आख़िरत का वक़्त तो ऐसी सख़्त हाजत और ज़रूरत का है कि उस वक़्त न किसी से ख़रीदा जा सकता है, न क़र्ज़ लिया जा सकता है, न भीख मांगी जा सकती है ऐसे अहम और कठिन वक़्त के वास्ते तो जितना भी ज़्यादा से ज़्यादा मुम्किन हो जमा करते रहना निहायत ही दूरअंदेशी और कार आमद बात है। थोड़ा थोड़ा जमा करते रहना यहां तो मालूम भी न होगा और वहां वह पहाड़ों की बराबर मिलेगा।

(۲۸) وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْإِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ إِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّا أُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَأُولٰئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ○ (حشر ع ۱)

28. (और इसमें उन लोगों का भी हक़ है) जो लोग दारूल इस्लाम में (यानी मदीना मुनव्वरा में पहले से रहते थे) और ईमान में उन (मुहाजिरीन के आने) से पहले से क़रार पकड़े हुए हैं (यानि इन मुहाजिरीन के आने से पहले ही वे ईमान ले आये थे और ये ऐसी ख़ूबी के लोग हैं कि) जो लोग उनके पास हिजरत करके आते हैं उनसे ये लोग (यानि अंसार) मुहब्बत करते हैं और मुहाजिरीन को जो कुछ मिलता है. उससे ये अपने दिलों में कोई ग़रज़ नहीं पाते (कि उसको लेना चाहें या उस पर रश्क करें) और इन मुहाजिरीन को अपने ऊपर तर्जीह देते हैं चाहे ख़ुद उन पर फ़ाक़ा ही क्यों न हो और (हक़ यह है कि) जो शख़्स अपनी तबीअत के लालच से महफ़ूज़ रहे वही लोग फ़लाह पाने वाले हैं।

फ़ायदाः- ऊपर की आयात में बैतुलमाल के मुस्तहिक़्क़ीन का ज़िक्र हो रहा है कि किन किन लोगों का उसमें हक़ है, मिनजुम्ला उनके इस आयते शरीफ़ा में अंसार का ज़िक्र है और उनके ख़ुसूसी औसाफ़ की तरफ़ इशारा है, जिनमें से एक यह है कि उन्होंने अपने घर में रह कर ईमान और कमालात हासिल किये हैं और अपने घर रह कर कमालात का हासिल करना आमतौर से मुश्किल हुआ करता है, दुन्यवी धंधे और दूसरे उमूर अक्सर आड़ बन जाते हैं। और दूसरी ख़ास सिफ़त अंसार की यह है कि ये लोग मुहाजिरीन से बेहद मुहब्बत करते हैं।

इस्लाम की इब्तिदाई तारीख़ का जिसको इल्म है वह इन हज़रात के हालात और इनकी मुहब्बत के वाक़िआत से हैरत में रह जाता है। कुछ वाक़िआत 'हिकायाते सहाबा' में भी गुज़र चुके हैं। एक वाक़िआ मिसाल के तौर पर यहां लिखता हूँ कि -

जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हिजरत करके मदीना तैयबा तशरीफ़ लाये तो मुहाजिरीन और अंसार के दर्मियान में हुज़ूर सल्ल० ने भाई

चारा इस तरह फ़रमा दिया था कि हर मुहाजिर का एक अंसारी के साथ ख़ुसूसी जोड़ पैदा कर दिया था और एक एक मुहाजिर को एक एक अंसारी का भाई बना दिया था इसलिए कि हज़राते मुहाजिरीन परदेसी हज़रात हैं उनको अजनबी जगह हर क़िस्म की मुश्किल पेश आयेगी। अंसार मुक़ामी हज़रात हैं वे अगर उन लोगों को ख़ास तौर से ख़बरगीरी और मुआवनत (मदद) करेंगे तो उनको सहूलियतें पैदा हो जाएंगी। कैसा बेहतरीन इंतिज़ाम था हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कि इसमें मुहाजिरीन को भी हर क़िस्म की सहूलियत हो गई और अंसार को भी दिक़्क़त न हुई कि एक शख़्स की ख़बरगीरी हर शख़्स को आसान है, इसी सिलसिले में हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि॰ ख़ुद अपना क़िस्सा बयान फ़रमाते हैं कि जब हम लोग मदीना तैयबा आये तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरे और सअद बिन रबीअ् रज़ि॰ के दर्मियान भाई बन्दी का रिश्ता जोड़ दिया। सअद बिन रबीअ् रज़ि॰ ने मुझसे कहा कि मैं अंसार में सबसे ज़्यादा मालदार हूँ मेरे माल में से आधा तुम ले लो और मेरी दो बीवियां हैं, उनमें से भी तुम्हें जो पसंद हो, मैं उसको तलाक़ दे दूँ, जब उसकी इद्दत पूरी जो जाए तुम उससे निकाह कर लेना। *(बुख़ारी)*

यज़ीद बिन असम रज़ि॰ कहते हैं कि अंसार ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दरख़्वास्त की कि हम सब की ज़मीनें मुहाजिरीन पर आधी आधी बांट दीजिए। हुज़ूर सल्ल॰ ने इस को क़ुबूल नहीं फ़रमाया बल्कि यह इर्शाद फ़रमाया कि खेती वग़ैरह में ये लोग काम करेंगे और पैदावार में हिस्सेदार होंगे। *(दुर्रे मंसूर)*

कि इनकी मेहनत से तुमको मदद मिलेगी और तुम्हारी ज़मीन से इनको मदद मिलेगी। इस क़िस्म के ताल्लुक़ात और आपस की मुहब्बत महज़ दीनी बिरादरी पर आज अक़्ल में भी मुश्किल से आएगी। अल्लाह तआला की शान है कि आज वह मुसलमान जिसका ख़ुसूसी इम्तियाज़ ईसार और हमदर्दी थी महज़ ख़ुद ग़रज़ी और नफ़्स परवरी में मुब्तला है दूसरों को जितनी भी तक्लीफ़ पहुँच जाए अपने को राहत मिल जाए। कभी मुसलमान का शेवा यह था कि ख़ुद तक्लीफ़ उठाए दूसरों को राहत पहुँच जाए। मुसलमानों की तारीख़ इससे भरी पड़ी है। एक बुज़ुर्ग की बीवी बहुत ज़्यादा बदख़ुल्क़ थीं हर वक़्त तक्लीफ़ें देती थीं। किसी ने उनसे अर्ज़ किया कि आप उसको तलाक़ दे दीजिए। फ़रमाया मुझे यह ख़ौफ़ है कि फिर यह किसी दूसरे से निकाह करेगी और इसकी बद ख़ुल्क़ी

से उसको तक्लीफ़ पहुँचेगी। *(एहया)*

कैसी बारीक चीज़ है। आज हम में से भी कोई इसलिये तक्लीफ़ उठाने को तैयार है कि किसी दूसरे को तक्लीफ़ न पहुँचे?

तीसरी सिफ़त आयते शरीफ़ा में अंसार की यह बयान की कि मुहाजिरीन को अगर ग़नीमत वग़ैरह में से कहीं से कुछ मिलता है तो इससे अंसार को दिलतंगी या रश्क नहीं होता और हसन बसरी रह० कहते हैं कि इसका मतलब यह है कि मुहाजिरीन को अंसार पर जो उमूमी फ़ज़ीलत दी गयी उससे अंसार को गरानी नहीं हुई। *(दुर्रे मंसूर)*

चौथी सिफ़त यह बयान की गयी है कि वे बावजूद अपनी एहतियाज और फ़ाक़ा के दूसरों को अपने ऊपर तर्जीह देते हैं। इसके वाक़िआत बहुत कसरत से उनकी ज़िंदगी की तारीख़ में मिलते हैं। जिनमें से कुछ वाक़िआत मैं अपने रिसाले 'हिकायाते सहाबा रज़ि०' के बाब 'ईसार व हमदर्दी' में लिख चुका हूँ। मिन्जुम्ला उनके वह मशहूर वाक़िआ भी है जो इस आयते शरीफ़ा के शाने नुज़ूल में ज़िक्र किया जाता है कि एक साहब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और भूख की और तंगी की शिकायत की। हुज़ूर सल्ल० ने अपनी बीवियों के घरों में आदमी भेजा मगर कहीं भी कुछ खाने को न मिला तो हुज़ूर सल्ल० ने बाहर मर्दों से इर्शाद फ़रमाया कि कोई साहब ऐसे हैं जो इनकी मेहमानी क़ुबूल करें। एक अंसारी, जिन का नाम मुबारक कुछ रिवायात में अबू तल्हा रज़ि० आया उनको अपने घर ले गये और अपनी बीवी से कहा कि यह हुज़ूर सल्ल० के मेहमान हैं इनकी ख़ूब ख़ातिर करना और घर में कोई चीज़ इनसे बचा कर न रखना। बीवी ने कहा कि घर में तो सिर्फ़ बच्चों के लिए कुछ खाने को रखा है और कुछ भी नहीं है। हज़रत अबू तल्हा रज़ि० ने फ़रमाया कि बच्चों को बहला कर सुला दो और जब हम खाना लेकर मेहमान के साथ बैठें तो तुम चिराग़ को दुरुस्त करने के लिए उठकर उसको बुझा देना ताकि हम न खाएं और मेहमान खा लें। चुनांचे बीवी ने ऐसा ही किया।

सुबह को जब हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िरी हुई तो हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह जल्ल शानुहू को इन मियां बीवी का तर्ज़ बहुत पसंद आया और यह आयते शरीफ़ा इनकी शान में नाज़िल हुई। *(दुर्रे मंसूर)*

अहादीस के सिलसिले में नं॰ 13 पर एक हदीस शरीफ़ इस आयते

शरीफ़ा की तफ़्सीर के तौर पर आ रही है। इसके बाद अल्लाह जल्ल शानुहू का पाक इर्शाद है कि जो शख़्स अपनी तबीअत के शुह्ह (लालच) से बचा दिया जाए वही लोग फ़लाह को पहुँचने वाले हैं। शुह्ह का तर्जुमा तब्ई हिर्स व बुख़्ल है यानि तब्ई तक़ाज़ा बुख़्ल का हो चाहे अमल से बुख़्ल न हो। इसलिए उलमा से इसकी तफ़्सीर में मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ नक़ल किये गए। हिर्स और लालच से उसको ताबीर करना सही है जो अपने माल में भी होता है, दूसरे के माल में भी होता है।

एक शख़्स हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि मैं तो हलाक हो गया। उन्होंने इर्शाद फ़रमाया कि क्यों? वह कहने लगे कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने इर्शाद फ़रमाया कि जो लोग शुह्ह से बचाए जाएं वही फ़लाह को पहुँचने वाले हैं और मुझ में यह मर्ज़ पाया जाता है। मेरा दिल नहीं चाहता कि मेरे पास से कोई भी चीज़ निकल जाए। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० ने फ़रमाया कि यह शुह्ह नहीं है यह बुख़्ल है, अगरचे बुख़्ल भी अच्छी चीज़ नहीं है लेकिन शुह्ह यह है कि दूसरों का माल ज़ुल्म से खावे।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से भी इसके क़रीब ही नक़ल किया गया। वह फ़रमाते हैं कि शुह्ह यह नहीं है कि आदमी अपने माल को ख़र्च करने से रोक ले, यह तो बुख़्ल हुआ और यह भी बहुत बुरी चीज़ है लेकिन शुह्ह यह है कि दूसरे की चीज़ पर निगाह पड़ने लगे।

हज़रत ताऊस रह० कहते हैं बुख़्ल यह है कि आदमी अपने माल को ख़र्च न करे और शुह्ह यह है कि दूसरे के माल में बुख़्ल करे यानी कोई दूसरा ख़र्च करे उससे भी दिल में तंगी होती हो।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से नक़ल किया गया कि शुह्ह बुख़्ल से ज़्यादा सख़्त है इसलिए कि बख़ील तो अपने माल को रोकता है और बस, और शहीह अपने माल को भी रोकता है और यह भी चाहता है कि दूसरों के पास जो कुछ है वह भी उसके पास आ जाए।

एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल किया गया कि जिस शख़्स में तीन ख़स्लतें हों वह शुह्ह से बरी है –

1. माल की ज़कात अदा करता हो,

2. मेहमानों की मेहमानदारी करता हो, और

3. लोगों की मुसीबतों में मदद करता हो।

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद आया है कि इस्लाम को कोई चीज़ ऐसा नहीं मिटाती जैसा कि शुह्ह मिटाता है।

एक और हदीस् में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद नक़ल किया गया है कि अल्लाह के रास्ते का गुबार और जहन्नम का धुआं ये दोनों चीज़ें किसी एक शख़्स के पेट में जमा नहीं हो सकतीं और ईमान और शुह्ह किसी एक के दिल में कभी जमा नहीं हो सकते।

एक हदीस में हज़रत जाबिर रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि ज़ुल्म से बचो इसलिए कि ज़ुल्म क़ियामत में तेह बतेह अंधेरा होगा (यानी ऐसा सख़्त अंधेरा पैदा करेगा कि अंधेरे की तह पर तह जम जाएगी) और अपने आप को शुह्ह से बचाओ कि उसने तुमसे पहले लोगों को हलाक किया कि इसी वजह से उन लोगों ने दूसरे लोगों के ख़ून बहाए और इसी की वजह से अपनी मेहरम औरतों से ज़िना किया।

हज़रत अबू हुरैरह० रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि अपने आपको शुह्ह और बुख़्ल से बचाओ कि उसने तुमसे पहले लोगों को क़त-ए-रहमी पर डाल दिया और उनको अपने मेहरमों से ज़िना करने पर डाल दिया और उनको ख़ून बहाने पर डाल दिया यानी अगर आदमी अजनबी औरत से ज़िना करे तो उसे कुछ देना पड़े और बेटी से ज़िना करे तो मुफ़्त ही में काम चल जाए और माल की वजह से लूट मार तो ज़ाहिर है।

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक शख़्स का इंतिक़ाल हुआ तो लोग कहने लगे कि यह जन्नती आदमी था। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया तुम्हें इसके सारे हालात का क्या इल्म है? क्या बईद है कि कभी उसने ऐसी बात ज़बान से निकाली हो जो बेकार हो या ऐसी चीज़ में बुख़्ल किया हो जो उसको नफ़ा न पहुँचाती हो

दूसरी हदीस में यह क़िस्सा इस तरह नक़ल किया गया कि उहद की लड़ाई में एक साहब शहीद हो गये। एक औरत उनके पास आयी और कहने लगी, बेटा तुझे शहादत मुबारक हो। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया तुम्हें इसकी क्या ख़बर है कि इसने कभी कोई बेकार बात ज़ुबान से नहीं कही हो या ऐसी

चीज़ में बुख़्ल किया हो, जो उसकी ज़रूरत की न हो। (दुर्रे मंसूर)

कि ऐसी मामूली चीज़ में बुख़्ल करना भी हिर्स और लालच की इन्तिहा होता है। वरना मामूली चीज़ें जिनमें अपना नुक़्सान न हो, बुख़्ल के क़ाबिल नहीं होतीं।

(۲۹) يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝ وَاَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْلَآ اَخَّرْتَنِيْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝ وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا ۭ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝ (منافقون ع ۲)

29. ऐ ईमान वालो ! तुम को तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न कर दें और जो ऐसा करेगा, ऐसे ही लोग ख़सारा वाले हैं और जो कुछ हमने तुमको दिया है उसमें से इससे पहले पहले ख़र्च कर लो कि तुममें से किसी को मौत आ जाए और वह कहने लगे, ऐ मेरे रब! मुझको थोड़े दिन की मुहलत और क्यों न दे दी कि मैं ख़ैरात कर देता और नेक लोगों में हो जाता और अल्लाह जल्ल शानुहू किसी शख़्स को भी जब उसकी मौत का वक़्त आ जाए हरगिज़ मोहलत नहीं देता और अल्लाह तआला को तुम्हारे सब कामों की ख़बर है।

(मुनाफ़िक़ून रूकूअ् 2)

फ़ायदा:- माल व मताअ् की मश्ग़ूली, अह्ल व अयाल की मश्ग़ूली ऐसी चीज़ें हैं। जो अल्लाह जल्ल शानुहू के अह्कामात की तामील में कोताही का सबब बनती हैं। लेकिन यह बात यक़ीनी और तै है कि मौत के वक़्त का किसी को हाल मालूम नहीं है कि कब आ जाए, उस वक़्त अलावा हसरत और अफ़सोस के कुछ भी न हो सकेगा और देखती आंखों अह्ल व अयाल, माल व मताअ् सब को छोड़कर चल देना होगा। आज मोहलत है जो करना है कर लो -

रंगा ले न चुनरी, गुंधा ले न सर,
तू क्या क्या करेगी अरी दिन के दिन !
न जाने बुला ले पिया किस घड़ी,
तू देखा करेगी खड़ी दिन के दिन !

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है कि जिस शख़्स के पास इतना माल हो कि हज कर सके, उस पर ज़कात वाजिब हो और अदा न करे तो वह मरने के वक़्त दुनिया में वापस लौटने की तमन्ना करेगा। किसी शख़्स ने इब्ने अब्बास रज़ि॰ से कहा कि दुनिया में लौटने की तमन्ना काफ़िर करते हैं मुसलमान नहीं करते। तो हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ ने यह आयते शरीफ़ा तिलावत की कि इसमें मुसलमानों ही के मुताल्लिक़ अल्लाह तआला ने इर्शाद फ़रमाया है।

एक दूसरी हदीस में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ से नक़ल किया गया कि इस आयते शरीफ़ा में मोमिन आदमी का ज़िक्र है। जब उसकी मौत आ जाती है और उसके पास इतना माल हो जिस पर ज़कात वाजिब हो और ज़कात अदा न की हो या उस पर हज फ़र्ज़ हो गया हो और हज अदा न किया हो या कोई और हक़ अल्लाह जल्ल शानुहू के हुक़ूक़ में से अदा न किया हो तो वह मरने के वक़्त दुनिया में वापसी की तमन्ना करेगा ताकि ज़कात और सद्क़ात अदा करे। लेकिन अल्लाह जल्ल शानुहू का पाक इर्शाद है कि जिसका वक़्त आ जाए वह हरगिज़ मुअख़्ख़र नहीं होता। *(दुर्रे मंसूर)*

क़ुरआन पाक में बार बार इस पर तंबीह की गयी है कि मौत का वक़्त हर शख़्स के लिए एक तै शुदा वक़्त है। इसमें ज़रा सी भी तक़्दीम या ताख़ीर[1] नहीं हो सकती। आदमी सोचता रहता है कि फ़लां चीज़ को सदक़ा करूँगा, फ़लां चीज़ को वक़्फ़ करूँगा, फ़लां फ़लां के नाम वसीयत लिखूँगा, मगर वह अपने सोच और फ़िक्र में ही रहता है। उधर से एक दम बिजली के तार का बटन दबा दिया जाता है और यह चलते चलते मर जाता है। बैठे बैठे मर जाता है, सोते सोते मर जाता है। इसलिए तज्वीज़ों और मश्वरों में हरगिज़ ऐसे कामों में ताख़ीर न करना चाहिये जितना जल्द हो सके अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने में अल्लाह के यहां जमा कर देने में जल्दी करना चाहिये। वल्लाहुल् मुवफ़्फ़िक़॰। (अल्लाह ही तौफ़ीक़ देने वाला है।)

(٣٠) يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّاقَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ
وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌ ۢ بِمَاتَعْمَلُوْنَ ○ وَلَاتَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا

---

1. पहले या बाद में होना।

اللّٰهَ فَاَنْسٰهُمْ اَنْفُسَهُمْ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝ لَا يَسْتَوِیْٓ اَصْحٰبُ

النَّارِ وَاَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ۝ (حشر ع ٣)

30. ऐ ईमान वालो ! अल्लाह से डरते रहो और हर शख़्स यह ग़ौर कर ले कि उसने कल (क़ियामत) के दिन के वास्ते क्या चीज़ आगे भेज दी है। अल्लाह से डरते रहो। बेशक अल्लाह तआला को तुम्हारे आमाल की सब ख़बर है और उन लोगों की तरह से मत बनो जिन्होंने अल्लाह तआला को भुला दिया। (पस उसकी सज़ा में) अल्लाह तआला ने ख़ुद उनको उनकी जान से भुला दिया। यही लोग फ़ासिक़ हैं और याद रखो कि जन्नत वाले और जहन्नम वाले बराबर नहीं हो सकते। जन्नत वाले ही कामियाब हैं (हक़ीक़ी कामियाबी सिर्फ़ जन्नत वालों ही की है।)

(हश्र, रूकूअ़ 3)

फ़ायदाः- अल्लाह जल्ल शानुहू ने उनको उनकी जान से भुला दिया का यह मतलब है कि उनकी ऐसी अक़्ल मार दी गयी कि वे अपने नफ़ा नुक़्सान को भी नहीं समझते और जो चीज़ें उनको हलाक करने वाली हैं उनको इख़्तियार करते हैं।

हज़रत जरीर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मैं दोपहर के वक़्त हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर था कि क़बीला मुज़र की एक जमाअत हाज़िर हुई जो नंगे पांव, नंगे बदन, भूखे थे। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब उन पर फ़ाक़े की हालत देखी तो हुज़ूर सल्ल॰ का चेहरा-ए-अन्वर मुतग़य्यर हो गया। उठकर अंदर मकान में तशरीफ़ ले गये। (ग़ालिबन घर में कोई चीज़ उनके क़ाबिल तलाश करने के लिए तशरीफ़ ले गये होंगे) फिर बाहर मस्जिद में तशरीफ़ लाए, हज़रत बिलाल रज़ि॰ से अज़ान कहने का हुक्म फ़रमाया और ज़ोहर की नमाज़ पढ़ी। उसके बाद मिंबर पर तशरीफ़ ले गये और हम्द व सना के बाद क़ुरआन पाक की कुछ आयात तिलावत कीं जिनमें ये आयात भी थीं, जो ऊपर लिखी गयीं। फिर हुज़ूर सल्ल॰ ने सदक़ा करने का हुक्म फ़रमाया और यह इर्शाद फ़रमाया कि सदक़ा करो, इससे पहले कि सदक़ा न कर सको। सदक़ा करो, इससे पहले कि तुम सदक़ा करने से आजिज़ हो जाओ, कोई शख़्स जो भी दे सके, दीनार दे सके, दिरम दे

सके, कपड़ा दे सके, गेहूँ दे सके, जौ दे सके, खजूर दे सके, यहां तक कि खजूर का टुकड़ा ही दे सके, वह दे दे। एक अंसारी उठे और एक थैला भरा हुआ लाए जो उनसे उठता भी न था। हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में पेश किया। हुज़ूर सल्ल॰ का चेहरा-ए-अन्वर ख़ुशी से चमकने लगा। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि जो शख़्स बेहतर तरीक़ा जारी करे उसको उसका भी सवाब है। और जो उस पर अमल करेंगे उनका भी सवाब उसको होगा, इस तरह पर कि अमल करने वालों के सवाब में कुछ कमी न होगी और इसी तरह अगर कोई शख़्स कोई बुरा तरीक़ा जारी करता है तो उसका गुनाह तो उसको होगा ही जितने आदमी उस पर अमल करेंगे उन सब का गुनाह भी उसको होगा। इस तरह से कि उनके गुनाहों के वबाल में कुछ कमी न होगी।

इसके बाद सब लोग मुतफ़र्रिक़ होकर चले गये, कोई दीनार (अशर्फ़ी) लाया, कोई दिरहम लाया, कोई ग़ल्ला लाया, ग़रज़ ग़ल्ला और कपड़े के दो ढेर हुज़ूर सल्ल॰ के क़रीब जमा हो गये और हुज़ूर सल्ल॰ ने वह सब क़बीला मुज़र के आने वालों पर तक़सीम कर दिये। *(नसई, दुर्रे मंसूर)*

एक हदीस में आया है लोगो ! अपने लिए कुछ आगे भेज दो। अनक़रीब वह ज़माना आने वाला है जबकि हक़ तआला शानुहू का इर्शाद ऐसी हालत में कि न कोई वास्ता दर्मियान में होगा, न कोई पर्दा दर्मियान में होगा। यह होगा, क्या तेरे पास रसूल नहीं आए जिन्होंने तुझे अह्काम पहुँचा दिये हों ? क्या मैं ने तुझको माल अता नहीं किया था ? क्या मैं ने तुझे ज़रूरत से ज़्यादा नहीं दिया था ? तूने अपने लिए क्या चीज़ आगे भेजी ? वह शख़्स इधर उधर देखेगा कुछ नज़र न आएगा, आंखों के सामने जहन्नम होगी। पस जो शख़्स उससे बच सकता हो बचने की कोशिश करे, चाहे खजूर के एक टुकड़े ही से क्यों न हो। *(कन्ज़)*

बड़ा सख़्त मंज़र होगा, बड़ा सख़्त मुतालबा होगा, दहकती हुई, दोज़ख़ सामने होगी और हर आन उसमें फेंक दिए जाने का अंदेशा होगा। उस वक़्त अफ़सोस होगा कि हमने दुनिया में सब कुछ क्यों न ख़र्च कर दिया। आज फ़र्ज़ी ज़रूरतों से हम ख़र्च करने से हाथ खींचते हैं। लेकिन अगर आज आंख बंद हो जाए तो सारी ज़रूरतें ख़त्म हो जाएंगी और एक सख़्त ज़रूरत जहन्नम से बचने की सर पर मौजूद रहेगी।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ ने एक मर्तबा ख़ुत्बे में फ़रमाया कि यह

बात अच्छी तरह जान लो कि तुम लोग सुबह से शाम ऐसी मुद्दत में चलते हो, जिसका हाल तुमसे पोशीदा है कि कब वह ख़त्म हो जाए पस अगर तुमसे हो सके तो ऐसा करो कि यह मुद्दत एहतियात के साथ ख़त्म हो जाए और अल्लाह ही के इरादे से तुम ऐसा कर सकते हो। एक क़ौम ने अपने औक़ात को ऐसे उमूर में ख़र्च कर दिया, जो उनके लिए कारआमद न थे। अल्लाह जल्ल शानुहू ने तुम्हें उन जैसा होने से मना किया है और इर्शाद फ़रमाया है -

وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ نَسُوا اللّٰهَ فَأَنْسٰهُمْ أَنْفُسَهُمْ ۔

"व ला तकूनू कल्लज़ी न नसुल्ला ह फ़ अन्साहुम अन्फु स हुम॰"

कहां हैं तुम्हारे वे भाई, जिनको तुम जानते थे वे अपना ज़माना ख़त्म करके चले गए और उनके अमल ख़त्म हो गये और अब वे अपने अपने अमल पर पहुँच गये जैसे भी किए (अच्छे किए होंगे, तो मज़े उड़ा रहे होंगे, बुरे किए होंगे तो उनको भुगत रहे होंगे) कहां हैं वे, गुज़रे हुए ज़माने के जाबिर लोग, जिन्होंने बड़े बड़े शहर बनाए, ऊँची, ऊँची दीवारों से अपनी मुहाफ़िज़त की, अब वे पत्थरों और टीलों के नीचे पड़े हैं। यह अल्लाह का पाक कलाम है कि न इसके अजाइब ख़त्म होते हैं, न इसकी रौशनी मांद पड़ती है, इससे आज रौशनी हासिल कर लो, अंधेरे के दिन के वास्ते और इससे नसीहत पकड़ लो, अल्लाह जल्ल शानुहू ने एक क़ौम की तारीफ़ की, पस फ़रमाया -

كَانُوا يُسَارِعُونَ فِي الْخَيْرَاتِ وَيَدْعُونَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا وَّكَانُوا لَنَا خَاشِعِينَ (الآية)

"कानू युसारिअू न फ़िल् ख़ैराति व यद् अू न-ना र-ग़-बंव्व र-ह-बंव्व कानू लना ख़ाशिअीन॰"

वे लोग नेक कामों में दौड़ते थे और हमको पुकारते थे रग़बत करते हुए और हमारे सामने आजिज़ी करने वाले थे। *(अल-अंबिया, रूकुअ् 6)*

उस कलाम में कोई ख़ूबी नहीं, जिससे अल्लाह की रिज़ा मक़्सूद न हो और उस माल में कोई भलाई नहीं जो अल्लाह के रास्ते में ख़र्च न हो और वह आदमी अच्छा नहीं जिसका हिल्म उसके गुस्से पर ग़ालिब न हो और वह आदमी बेहतर नहीं जो अल्लाह की रिज़ा के मुक़ाबले में किसी मलामत करने वाले की मलामत की परवाह करे। *(दुर्रे मंसूर)*

(۳۱) اِنَّمَآ اَمْوَالُکُمْ وَاَوْلَادُکُمْ فِتْنَةٌ ط وَاللّٰہُ عِنْدَہٗٓ اَجْرٌ عَظِیْمٌ ۝ فَاتَّقُوا اللّٰہَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا وَاَطِیْعُوْا وَاَنْفِقُوْا خَیْرًا لِّاَنْفُسِکُمْ ط وَمَنْ یُّوْقَ شُحَّ نَفْسِہٖ فَاُولٰٓئِکَ ھُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ (تغابن ع ۲)

31. इसके सिवा दूसरी बात नहीं कि तुम्हारे अम्वाल और तुम्हारी औलाद तुम्हारे लिए एक आज़माईश की चीज़ है (पस जो शख़्स उनमें पड़ कर भी अल्लाह को याद रखे तो) उस के लिए अल्लाह के पास बड़ा अज्र है। पस जहां तक हो सके अल्लाह से डरते रहो और उसकी बात सुनो और मानो और (अल्लाह की राह में ख़र्च करते रहा करो) यह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर होगा और जो शख़्स अपने नफ़्स के शुह्ह यानी लालच से महफ़ूज़ रहा, पस यही लोग फ़लाह को पहुँचने वाले हैं

(तग़ाबुन रूकूअ् 2)

फ़ायदाः- शुह्ह बुख़्ल का आला दर्जा है जैसा कि नं॰ 28 पर गुज़र चुका। माल और औलाद के इम्तिहान की चीज़ होने का यह मतलब है कि यह बात जांचनी है कि कौन शख़्स इनमें फंसकर अल्लाह जल्ल शानुहू के अह्काम को और उसकी याद को भुला देता है और कौन शख़्स इनके बावजूद अल्लाह जल्ल शानुहू की फ़रमांबरदारी करता और उसकी याद में मशग़ूल रहता है और नमूने के लिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का उस्वा (नमूना) सामने है। यहां किसी के एक दो बीवियां होंगी, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नौ बीवियां थीं, औलाद भी थी, बेटे-बेटियां, नवासे सब कुछ मौजूद था। हुज़ूर सल्ल॰ के अलावा हज़राते सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के हालात दुनिया के सामने हैं और बहुत तफ़्सील से किताबों में मौजूद हैं।

हज़रत अनस रज़ि॰ की औलाद का शुमार ही मुश्किल है। एक मौक़े पर फ़रमाते हैं कि मेरी औलाद की औलाद तो अलाहिदा रही, ख़ुद बिला वास्ता अपनी औलाद में से एक सौ पच्चीस तो दफ़्न कर चुका हूं। *(इसाबा)*

और जो ज़िन्दा रहे वे इनके अलावा और औलाद की औलादें मज़ीद-बरआं,[1] इसके बावजूद उन हज़राते सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ [illegible] शुमार है जिनसे कसरत से

1. यानी इनके भी अलावा।

अहादीस नक़ल की गयीं। और जिहाद में कसरत से शिर्कत करते रहे हैं। औलाद की इतनी कसरत न तो इल्म की मश्ग़ूली में रूकावट हुई न जिहाद से।

हज़रत ज़ुबैर रज़ि॰ जिस वक़्त शहीद हुए नौ बेटे, नौ बेटियां, और चार बीवियां थीं, और कई पोते बेटों से भी बड़े थे। *(बुख़ारी)*

जिनका बाप की ज़िंदगी में इंतिक़ाल हो गया, वे अलाहिदा इसके बावजूद न कभी नौकरी की न कोई और शग़ल, जिहाद में उम्र गुज़ारी।

इसी तरह और बहुत से हज़रात का हाल है कि न माल उनको दीन से रूकावट होता था और न औलाद की कसरत, और उनमें से जो लोग तिजारत पेशा थे उनके लिए तिजारत भी दीन के कामों से मानेअ् न होती थी। ख़ुद हक़ तआला शानुहू ने उनकी तारीफ़ क़ुरआन पाक में फ़रमायी -

"रिजालुल्ला तुल्हीहिम तिजार-तुन॰" *(सूरः नूर, रूकूअ 5)*

वे ऐसे लोग हैं जिनको ख़रीद व फ़रोख़्त अल्लाह के ज़िक्र से और नमाज़ क़ायम करने से और ज़कात अदा करने से नहीं रोकती। वे लोग ऐसे दिन से डरते हैं जिस दिन दिल और आंखें उलट पलट हो जाएंगी। और इसका अंजाम यह होगा कि हक़ तआला उनको उनके आमाल का बहुत अच्छा बदला देगा और उनको अपने फ़ज़्ल से (बदले के अलावा इनाम के तौर पर) और भी ज़्यादा देगा।

इस आयते शरीफ़ा की तफ़्सीर में बहुत से आसार में यह मज़्मून ज़िक्र किया गया है कि जो लोग तिजारत करते थे, तिजारत उनको अल्लाह तआला की याद से मानेअ् (रोकने वाली) न होती थी। जब अज़ान सुनते फ़ौरन अपनी अपनी दुकानें छोड़कर नमाज़ के लिए चल देते। *(दुर्रे मंसूर)*

(۳۲) إِنْ تُقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُضٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ط وَاللّٰهُ شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ۝ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ (تغابن ع ۲)

32. अगर तुम अल्लाह जल्ल शानुहू को अच्छी तरह (यानि इख़्लास से) क़र्ज़ दोगे तो वह उसको तुम्हारे लिए बढ़ाता चला जाएगा और तुम्हारे गुनाह बख़्श देगा और अल्लाह जल्ल शानुहू बड़ी क़द्र करने वाला है (कि थोड़े से अमल को भी क़ुबूल कर लेता है) और बड़ा

बुर्दबार है (बड़े से बड़े गुनाह पर भी मुवाख़ज़ा में जल्दी नहीं करता) पोशीदा और ज़ाहिर आमाल का जानने वाला है, ज़बरदस्त है, हिक्मत वाला है।

फ़ायदा:- आयात में 25, 26, 27, पर इस क़िस्म के मज़ामीन गुज़र चुके हैं। यह अल्लाह जल्ल शानुहू का ख़ास लुत्फ़ व करम है कि हमारी ख़ैर ख़्वाही और बन्दों पर करम की वजह से जो चीज़ें उनके लिए अहम और ज़रूरी हैं उनको बार बार ताकीद के साथ फ़रमाया जाता है और हम लोग इन आयात को बार बार पढ़ते हैं। और मुतमइन हो जाते हैं कि बहुत सवाब क़ुरआन पाक के पढ़ने का मिल गया। यह करीम का एहसान और इनआम है कि वह अपने पाक कलाम के महज़ पढ़ने पर भी सवाब अता फ़रमाये, लेकिन यह कलामे पाक महज़ पढ़ने के लिए तो नाज़िल नहीं हुआ, पढ़ने के साथ साथ उसके पाक इर्शादात पर अमल भी तो होना चाहिए। एक चीज़ को मालिकुल मुल्क, अपना आक़ा, अपना मुहसिन, अपना मुरब्बी, अपना राज़िक़ अपना ख़ालिक़ बार बार इर्शाद फ़रमाए और हम कहें कि हमने आपका इर्शाद पढ़ लिया बस काफ़ी है, यह हमारी तरफ़ से कितना सख़्त ज़ुल्म है?

(۳۳) وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ؕ وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا وَّاَعْظَمَ اَجْرًا ؕ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝ (مزمل ع ۲)

33. और तुम लोग नमाज़ को क़ायम रखो और ज़कात देते रहो और अल्लाह जल्ल शानुहू को क़र्ज़े हसना देते रहो और जो नेकी भी तुम अपने लिए ज़ख़ीरा बना कर आगे भेज दोगे उसको अल्लाह जल्ल शानुहू के पास जाकर उससे बहुत बेहतर और सवाब में बढ़ा हुआ पाओगे और अल्लाह तआला से गुनाह माफ़ कराते रहो। बेशक अल्लाह जल्ल शानुहू मग़फ़िरत करने वाला, रहम करने वाला है।

फ़ायदा:- उसको अल्लाह जल्ल शानुहू के पास जाकर उससे बेहतर पाने का मतलब यह है कि जो कुछ दुनिया की चीज़ें ख़रीदने में ख़र्च किया जाता है या दुन्यवी ज़रूरतों में ख़र्च किया जाता है और उसका बदला दुनिया में मिलता है, मसलन एक रूपये के दो सेर गन्दुम दुनिया में मिलते हैं, आख़िरत के बदल

को इस पर क़ियास नहीं करना चाहिए बल्कि आख़िरत में जो बदल उन चीज़ों का मिलता है जो अल्लाह के रास्ते में ख़र्च की जायें वे मिक़्दार के एतिबार से भी और कैफ़ियत के लिहाज़ से भी बदरजहा ज़ायद उस बदल से होगा, जो दुनिया में उस पर मिलता है, चुनांचे आयत नं॰ 7 के तहत में गुज़र चुका है कि अगर तय्यिब माल से नेक नीयती के साथ एक खजूर भी सदक़ा की जाए तो हक़ तआला शानुहू उस के सवाब को उहद पहाड़ के बराबर फ़रमा देते हैं। काश ! इस क़ुदर ज़्यादा मुआवज़ा देने वाले करीम की हम क़द्र करते और ज़्यादा से ज़्यादा क़ीमत उसके यहां जमा करते ताकि ज़्यादा से ज़्यादा माल बड़ी सख़्त ज़रूरत के वक़्त हमको मिलता और इसके साथ ही इस आयते शरीफ़ा में अल्लाह जल्ल शानुहू फ़रमाते हैं कि जिस क़िस्म की नेकी भी तुम आगे भेज दोगे उसका मुआवज़ा ऐसा ही मिलेगा। रिसाला 'बरकाते ज़िक्र' में बहुत तफ़्सील से ऐसी रिवायतें गुज़र चुकी हैं। एक मर्तबा "सुब्हानल्लाह या अल्हम्दु लिल्लाह या ला इला-ह इल्लल्लाहु या अल्लाहु अक्बर"

कहने का सवाब अल्लाह तआला शानुहू के यहां उहद पहाड़ से ज़्यादा मिल जाता है, बशर्ते कि इख़्लास से कहा जाए और इख़्लास की शर्त आख़िरत के हर काम में है। इख़्लास बग़ैर वहां किसी चीज़ की पूछ नहीं और इसी चीज़ के पैदा करने के वास्ते बुज़ुर्गों की जूतियां सीधी करनी पड़ती हैं कि यह दौलत उनके क़दमों में पड़ने से मिलती है।

(٣٤) اِنَّ الْاَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَاْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا o عَيْنًا
يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا o يُوْفُوْنَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُوْنَ
يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا o وَّيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا
وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا o اِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا
شُكُوْرًا o اِنَّا نَخَافُ مِنْ رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوْسًا قَمْطَرِيْرًا o فَوَقٰهُمُ اللّٰهُ شَرَّ
ذٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقّٰهُمْ نَضْرَةً وَّسُرُوْرًا o وَجَزٰهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً
وَّحَرِيْرًا o مُّتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا عَلَى الْاَرَآئِكِ ۚ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا
زَمْهَرِيْرًا o وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا o وَيُطَافُ
عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّاَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَا o قَوَارِيْرَا مِنْ فِضَّةٍ

قَدَّرُوْهَا تَقْدِيْرًاo وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًاo عَيْنًا
فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًاo وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ج اِذَا
رَاَيْتَ نَعِيْمًا وَّمُلْكًا كَبِيْرًاo عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَّاِسْتَبْرَقٌ
وَّحُلُّوْٓا اَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ ج وَسَقٰهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًاo اِنَّ هٰذَا كَانَ
لَكُمْ جَزَآءً وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًاo (دھر ع ۱)

34. बेशक नेक लोग (जन्नत में) ऐसे जामे शराब पियेंगे, जिनमें काफ़ूर की आमेज़िश होगी, ऐसे चश्मों से भरे जायेंगे जिनसे अल्लाह के ख़ास बन्दे पीते हैं। (इन चश्मों में यह अजीब बात होगी) कि वे जन्नती लोग इन चश्मों को जहां चाहें ले जायेंगे (यानी ये चश्मे उनके इशारों के ताबेअ् होंगे) ये ऐसे लोग हैं जो मन्नतों को पूरा करते हैं। (और इसी तरह दूसरे वाजिबात को) और ऐसे दिन से डरते हैं जिस दिन की सख़्ती फैली हुई होगी (यानी आम होगी कि हर शख़्स उस दिन कुछ न कुछ परेशानी में मुब्तला होगा) ये वे लोग हैं। जो अल्लाह तआला की मुहब्बत में खाना खिलाते हैं, मिस्कीन को और यतीम को और क़ैदी को (इसके बावजूद कि वह क़ैदी काफ़िर और लड़ाई में बर सरे पैकार होते थे) और वे लोग (अपने दिल में या ज़ुबान से) कहते हैं। कि हम तुमको सिर्फ़ अल्लाह के वास्ते खिलाते हैं, न तो हम इसका बदला चाहते हैं न शुक्रिया चाहते हैं (बल्कि इस वजह से खिलाते हैं कि हम अपने रब की तरफ़ से सख़्त और तल्ख़ दिन का (यानी क़ियामत के दिन का) ख़ौफ़ रखते हैं। पस अल्लाह जल्ल शानुहू उनको उस दिन की सख़्ती से महफ़ूज़ रखेगा और उनको ताज़गी और सुरूर अता करेगा और उनको इस पुख़्तगी के बदले में जन्नत और रेशमी लिबास अता करेगा, इस, हालत में कि वे जन्नत में मसहरियों पर तकिया लगाये बैठे होंगे, न वहां गर्मी की तपिश पावेंगे न सर्दी (बल्कि मोतदिल मौसम होगा) और दरख़्तों के साए उन लोगों पर झुके होंगे और उनके ख़ोशे उनके मुतीअ् होंगे (कि जिस वक़्त जिसको पसंद करेंगे वह क़रीब आ जाएगा) और उनके पास (खाने पीने के लिए) चांदी के बर्तन और शीशे के आबख़ोरे लाए जायेंगे, ऐसे शीशे जो चांदी के होंगे (यानी वे शीशे बजाए कांच के चांदी के बने हुए होंगे और जो

उस आलम में दुश्वार नहीं) और उनको भरने वालों ने सही अंदाज़ से भरा होगा। (कि न ज़रूरत से कम, न ज़्यादा) और वहां (काफ़ूरी शराब के अलावा) ऐसी शराब के जाम भी पिलाए जायेंगे जिनमें सोंठ की आमेज़िश होगी। (जैसा कि झंजर की बोतल में होता है) ये ऐसे चश्मे से भरे जायेंगे जिसका नाम सलसबील है। काफ़ूर ठंडा होता है और सोंठ गर्म (मक़सद यह है कि वहां मुख़्तलिफुल मिज़ाज शराबें हैं।) और उसको ऐसे लड़के लेकर आते रहेंगे जो हमेशा लड़के ही रहेंगे। और ऐसे (हसीन) कि अगर तू उनको देखे तो यह गुमान करे कि ये मोती हैं जो बिखरे हुए हैं (और जो चीज़ें ऊपर ज़िक्र की गयीं यही फ़क़त नहीं बल्कि) जब तू उस जगह को देखेगा तो वहां बड़ी बड़ी नेमतें और बहुत बड़ा मुल्क नज़र आयेगा और उन लोगों पर वहां बारीक रेशम के सब्ज़ कपड़े होंगे और मोटे रेशम के भी (ग़रज़ मुख़्तलिफ़ अन्वाअ् के बेहतरीन लिबास होंगे) और हाथों में चांदी के कंगन पहनाये जायेंगे और हक़ तआला शानुहू उनको ऐसी शराब पिलायेंगे जो निहायत पाकीज़ा होगी और यह कहा जायेगा कि ये तुम्हारे आमाल का बदला है और तुमने जो कोशिश दुनिया में की थी वह क़ाबिले क़द्र है।

फ़ायदा:- इस कलामे पाक में शराब का तीन जगह ज़िक्र आया है और तीनों जगह शराब की नोइय्यत और तरीक़ा-ए-इस्तेमाल जुदा है। पहली जगह उनका खुद पीना मज़्कूर है। दूसरी जगह ख़ादिमों के पिलाने का ज़िक्र है और तीसरी जगह खुद रब्बुल आलमीन मालिकुल मुल्क की तरफ़ पिलाने की निस्बत है। क्या बईद है कि ये अब्रार की तीन क़िस्मों अद्ना, औसत, आला के एतिबार से हो। इन आयात में जितने फ़ज़ाइल, इक्राम और एज़ाज़ के नेक काम करने वालों के, बिल खुसूस अल्लाह की रिज़ा में खिलाने वालों के ज़िक्र किए गये हैं, अगर हममें ईमान का कमाल हुआ तो इन वायदों के बाद कौन शख़्स ऐसा हो सकता है जो हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह कोई चीज़ भी घर में अल्लाह और उसके रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम के सिवा छोड़े।

इन आयात में कई बातें क़ाबिले तवज्जोह हैं -

1. पहले चश्मों के बारे में ज़िक्र हुआ कि जन्नती लोग उन चश्मों को जहां चाहेंगे ले जायेंगे,

मुजाहिद रह० इसकी तफ्सीर में कहते हैं कि वे लोग उन चश्मों को जहां चाहेंगे खींच लेंगे।

क़तादा रज़ि० कहते हैं कि उनके लिए काफ़ूर की आमेज़िश (मिलावट) होगी और मुश्क की मुहर उन पर लगी हुई होगी और वे उस चश्मे को जिधर को चाहेंगे उधर को उसका पानी चलने लगेगा।

इब्ने शौज़ब रह० कहते हैं कि उन लोगों के पास सोने की छड़ियां होंगी वे अपनी छड़ियों से जिस तरफ़ इशारा करेंगे उसी तरफ़ को वे नहरें चलने लगेंगी।

2. मन्नतों के पूरा करने के मुताल्लिक़ क़तादा रज़ि० से नक़्ल किया गया कि अल्लाह के तमाम अह्काम को पूरा करने वाले लोग हैं। इसी वजह से शुरू में उनको अब्रार से ताबीर किया गया है।

मुजाहिद रह० कहते हैं कि इससे वे मन्नतें मुराद हैं जो अल्लाह के हक़ में की गयी हों (यानी कोई शख़्स रोज़ों की नज़्र कर ले ऐतिकाफ़ की नज़्र कर ले, इसी तरह इबादात की नज़्र कर ले।)

इक्रिमा रज़ि० कहते हैं कि शुक्राने की मन्नतें मुराद हैं। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से नक़्ल किया गया कि हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में एक शख़्स हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि मैं ने यह मन्नत मान रखी थी कि मैं अपने आपको अल्लाह के वास्ते ज़िब्ह कर दूँगा। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किसी चीज़ में मश्गूल थे, तवज्जोह नहीं फ़रमायी। यह साहब हुज़ूर सल्ल० के सुकूत से इजाज़त समझे और (हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ कर देने के बाद) उठे, दूर जाकर अपने आप को ज़िब्ह करने लगे। हुज़ूर सल्ल० को इसका इल्म हुआ। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया अल्लाह का शुक्र है कि उसने मेरी उम्मत में ऐसे लोग पैदा किए जो मन्नत को पूरा करने का इस क़दर एहतिमाम करें। इसके बाद (उनको अपने ज़िब्ह करने से मना फ़रमाया और) उनसे फ़रमाया कि अपनी जान के बदले सौ ऊँट अल्लाह के नाम पर ज़िब्ह करें (इसलिए कि अपने आपको ज़िब्ह करना ना जायज़ है और जान का फ़िदया दियत में सौ ऊँट है।)

3. क़ैदियों के खिलाने से आयते शरीफ़ा में मुश्रिक क़ैदी मुराद हैं, इसलिए कि उस ज़माने में मुश्रिक क़ैदी ही होते थे, मुसलमान क़ैदी उस वक़्त न थे और जब काफ़िरों के खिलाने पर यह सवाब है तो मुसलमान क़ैदी इसमें

ब तरीक़े औला आ गये।

मुजाहिद रह० कहते हैं कि जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बद्र के क़ैदियों को (जो काफ़िर थे) पकड़ कर लाए, तो सात हज़राते सहाबा-ए-किराम, हज़रत अबूबक्र रज़ि० उमर रज़ि०, अली रज़ि०, ज़ुबैर रज़ि०, अब्दुर्रहमान रज़ि०, सअद रज़ि०, अबू उबैदा रज़ि० ने उन पर ख़ास तौर से ख़र्च किया, जिस पर अंसार ने कहा कि हमने तो अल्लाह के वास्ते इनसे क़िताल किया था। तुम इतना ज़्यादा ख़र्च कर रहे हो। इस पर 'इन्नल अबरा-र' से उन्नीस आयतें इन हज़रात की तारीफ़ में नाज़िल हुईं।

हज़रत हसन रज़ि० कहते हैं कि जब ये आयतें नाज़िल हुईं उस वक़्त क़ैदी मुश्रिकीन थे।

हज़रत क़तादा रज़ि० कहते हैं कि जब अल्लाह जल्ल शानुहू ने इन आयात में क़ैदी के साथ एहसान करने का हुक्म फ़रमाया है, हालांकि उस वक़्त क़ैदी मुश्रिक थे तो मुसलमान क़ैदी का हक़ तुझ पर और भी ज़्यादा हो गया।

इब्ने जुरैज रह० कहते हैं कि उस ज़माने में मुसलमान क़ैदी न थे, मुश्रिक क़ैदियों के बारे में यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनकी ख़ैर ख़्वाही का हुक्म फ़रमाते थे।

अबू रज़ीन रज़ि० कहते हैं कि मैं शक़ीक़ बिन सलमा रज़ि० के पास था। कुछ मुश्रिक क़ैदी वहां से गुज़रे तो शक़ीक़ रज़ि० ने मुझे उन पर सदक़ा करने का हुक्म दिया और यह आयते शरीफ़ा तिलावत की।

4. न इसका बदला चाहते हैं, न इसका शुक्रिया चाहते हैं का मतलब ये है कि यह हज़रात इसको भी गवारा न करते थे कि उनके एहसान का कोई बदला, चाहे शुक्रगुज़ारी और दुआ ही के क़बील से हो, उनको दुनिया में मिले। ये अपना सब कुछ आख़िरत ही में लेना चाहते थे।

हज़रत आइशा रज़ि० और हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० का मामूल नक़ल किया गया है कि जब वे किसी फ़क़ीर ज़रूरत मंद के पास कुछ भेजतीं तो क़ासिद से कहतीं कि चुपके से सुनना कि वह इस पर क्या अल्फ़ाज़ कहता है और जब क़ासिद वे अल्फ़ाज दुआ वग़ैरह के आकर नक़ल करता तो उसी क़िस्म की दुआएं वे फ़क़ीर को देतीं और यह कहतीं कि उसकी दुआओं का यह बदला है ताकि हमारा सदक़ा ख़ालिस आख़िरत के वास्ते रह जाए।

हज़रत उमर रज़ि॰ और उनके साहबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि॰ का भी इसी किस्म का मामूल नक़ल किया गया है। *(एहया)*

हज़रत ज़ैनुल आबिदीन रह॰ का इर्शाद है कि जो शख़्स माल ख़र्च करने के वास्ते तलब करने वाले का इंतिज़ार करे, वह सख़ी नहीं। सख़ी वह है जो अल्लाह के हुक़ूक़ को ख़ुद से उसके नेक बंदों तक पहुँचाए और उनसे शुक्रिए का उम्मीदवार न रहे। इसलिए कि उसको अल्लाह के सवाब पर कामिल यक़ीन हो। *(एहया)*

5. जन्नत के ख़ोशे उनके मुतीअ् होंगे का मतलब यह है कि वे उनकी ख़्वाहिश के ताबेअ् होंगे।

हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि॰ कहते हैं कि जन्नती लोग जन्नत के फलों को खड़े बैठे लेटे, जिस हाल में चाहेंगे खा सकेंगे।

मुजाहिद रह॰ कहते हैं कि वे लोग अगर खड़े होंगे तो वे फल ऊपर को हो जायेंगे और वे लोग अगर बैठेंगे तो वे झुक जायेंगे और अगर वे लेटेंगे तो वे और ज़्यादा झुक जायेंगे। दूसरी रिवायत में उनसे नक़ल किया गया कि जन्नत की ज़मीन चांदी की है और उसकी मिटी मुश्क है और उसके दरख़्तों की जड़ें सोने की हैं और उनकी टहनियां और पत्ते मोतियों के और ज़बरजद के हैं। जिनके दर्मियान फल लटके हुए हैं अगर वे खड़े हुए खाना चाहेंगे तो कोई दिक़्क़त नहीं, बैठकर या लेट कर खाना चाहेंगे तो उसके बक़द्र झुक जायेंगे।

6. चांदी के शीशों का मतलब यह है कि चांदी से ऐसे बनाए जाएंगे जैसाकि शीशा होता है।

हज़रत इब्नेअब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि अगर दुनिया में तू चांदी को लेकर इस क़दर बारीक करे कि मक्खी के पर के बराबर बारीक कर दे जब भी उसके अंदर का पानी नज़र न आयेगा। लेकिन जन्नत के आबख़ोरे चांदी के होकर शीशे की तरह साफ होंगे।

दूसरी रिवायत में है कि जन्नत की हर चीज़ का नमूना दुनिया में है, लेकिन चांदी के ऐसे आबख़ोरों का नमूना दुनिया में नहीं है।

क़तादा रज़ि॰ कहते हैं कि अगर सारी दुनिया के आदमी जमा होकर चांदी का ऐसा बर्तन बना दें जिसमें शीशे की तरह से अंदर की चीज़ नज़र आए तो नहीं बना सकते। *(दुर्रे मंसूर)*

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ की एक रिवायत से मालूम होता है कि इन आयात का शाने नुज़ूल हज़रत अली रज़ि॰ और हज़रत फ़ातिमा रज़ि॰ का एक वाक़िआ है जो इसी रिसाले के ख़त्म पर हिकायात में नं॰ 41 पर आ रहा है और मुतअद्दद वाक़िआत का किसी आयत का शाने नुज़ूल होना कोई मुस्तबअद बात नहीं[1]। बसा औक़ात ऐसा हुआ है कि एक ज़माने में कुछ वाक़िआत पेश आए, उस ज़माने में कोई आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई, तो वह आयते शरीफ़ा सब वाक़िआत के मुताल्लिक़ हो सकती है।

(۳۵) قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰی o وَذَكَرَاسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰی o بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۖ o وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰی o (اعلی)

35. बा-मुराद हो गया वह शख़्स जो पाक हो गया और अपने रब का नाम लेता रहा और नमाज़ पढ़ता रहा, बल्कि तुम लोग तो दुनिया की ज़िंदगी को मुक़द्दम रखते हो, हालांकि आख़िरत दुनिया से बहुत ज़्यादा बेहतर और हमेशा रहने वाली चीज़ है।

फ़ायदा:- "पाक हो गया" कि मुतअद्दद तफ़्सीरें उलमा से नक़ल की गयी हैं। बहुत से उलमा का क़ौल है कि उससे, सदक़ा-ए-फ़ित्र अदा करना मुराद है जैसा कि मुतअद्दद रिवायात में आया है और बहुत से उलमा ने इसको आम क़रार दिया है।

सईद बिन जुबैर रज़ि॰ कहते हैं कि पाक हो गया का मतलब यह है कि जो अपने माल से पाक हो गया।

क़तादा रज़ि॰ कहते हैं कि बा-मुराद हो गया वह शख़्स जिसने अपने माल से अपने ख़ालिक़ को राज़ी कर लिया।

हज़रत अबुल अह्वस रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हक़ तआला शानुहू उस शख़्स पर रहम फ़रमाता है जो सदक़ा करे, फ़िर नमाज़ पढ़े। फिर उन्होंने यह आयत पढ़ी ।

एक रिवायत में उनसे यह नक़ल किया गया कि जो शख़्स इसकी ताक़त रखता हो कि नमाज़ से पहले कुछ सदक़ा कर दिया करे वह ऐसा किया करे।

1. यानी कोई ना-मुम्किन बात नहीं।

हज़रत इब्ने मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि जो शख़्स नमाज़ पढ़ने का इरादा करे, क्या हर्ज है कि कुछ सदक़ा इससे पहले कर दिया करे, फिर यह आयते शरीफ़ा पढ़ी।

हज़रत अर्फ़जा रज़ि० कहते हैं कि मैं ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० से 'सब्बिहिस्-म' पढ़ने की दरख़्वास्त की। उन्होंने सुनाना शुरू की और जब इस आयत पर पहुँचे 'बल तुअ्सिरू नल ह्यातद्दुन्या' तो पढ़ना छोड़कर लोगों की तरफ मुतवज्जह हुए और फ़रमाया कि हमने दुनिया को आख़िरत पर तर्जीह दी। लोग चुप बैठे थे। फिर फ़रमाया कि हमने दुनिया को तर्जीह दी, इसलिए कि हमने उसकी ज़ीनत को, उसकी औरतों को, उसके खाने पीने को देखा और आख़िरत की चीज़ें हमसे पोशीदा थीं, पस इस मौजूद चीज़ में लग गये और उस वायदे की चीज़ को छोड़ दिया।

क़तादा रज़ि० कहते हैं कि तमाम लोग हाज़िर (यानी दुनिया में मौजूद चीज़) में लग गए और उसको इख़्तियार कर लिया। सिवाए उनके जिनको अल्लाह ने महफ़ूज़ रखा, हालांकि आख़िरत भलाई में बढ़ी हुई थी। और देरपा थी।

हज़रत अनस रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि 'ला इला-ह इल्लल्लाहु' बन्दों को अल्लाह जल्ल शानुहू की नाराज़ी से महफ़ूज़ रखता है। जब तक कि दुनिया को दीन पर तर्जीह न दें और जब दुनिया को दीन पर तर्जीह देने लगें तो 'ला इला-ह इल्ल-ल्लाहु' भी उन पर लौटा दिया जायेगा और यह कहा जायेगा कि तुम झूठ बोलते हो।

एक दूसरी हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद मनक़ूल है कि जो शख़्स -

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ

ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्द हू ला शरी-क लहू० की शहादत लेकर आये, वह जन्नत में दाख़िल होगा, जब तक कि उसके साथ दूसरी चीज़ न मिला दे। (यानी अपने इस कलाम में खोट और मैल पैदा न कर दे।)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तीन मर्तबा यही बात इर्शाद फ़रमायी, मज्मा चुप-चाप था (हुज़ूर सल्ल० ग़ालिबन इस बात के मुनतज़िर थे कि कोई पूछे और मज्मा अदब और रौब की वजह से चुप था) दूर से एक शख़्स

ने दर्याफ़्त किया, या रसूलल्लाह मेरे मां बाप आप पर क़ुर्बान ! दूसरी चीज़ मिलाने का क्या मतलब है ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, दुनिया की मुहब्बत और उसको तर्जीह देना और उसके लिए माल जमा करके रखना और ज़ालिमों का सा बर्ताव करना।

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि जो शख़्स दुनिया से मुहब्बत रखता है, वह आख़िरत को नुक़्सान पहुँचाता है और जो आख़िरत से मुहब्बत रखता है, वह दुनिया को नुक़्सान पहुँचाता है, पस ऐसी चीज़ की (यानी आख़िरत की) मुहब्बत को तर्जीह दो जो बाक़ी रहने वाली है। उस चीज़ (यानी दुनिया) पर जो फ़ना हो जाने वाली है।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि दुनिया उस शख़्स का घर है, जिसका आख़िरत में घर नहीं और उस शख़्स का माल है, जिसका आख़िरत में माल नहीं और उसके लिए वही शख़्स जमा करता है जिसको अक़्ल नहीं।

एक और हदीस में है कि अल्लाह तआला के नज़दीक उसकी मख़्लूक़ात में से कोई चीज़ दुनिया से ज़्यादा मब्ग़ूज़ (नापसन्दीदा) नहीं है और उसने जब से उसको पैदा किया है, कभी भी उसकी तरफ़ नज़रे इल्तिफ़ात नहीं फ़रमायी।

एक और हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद वारिद हुआ है कि दुनिया की मुहब्बत हर ख़ता की जड़ है।

(दुर्रे मंसूर)

रिसाले के ख़त्म पर छठी फ़स्ल में दुनिया और आख़िरत के मुताल्लिक़ बहुत सी आयात और अहादीस का ज़िक्र इख़्तिसार के साथ आ रहा है, उन आयात के अलावा जो अब तक ज़िक्र हो गयी हैं और भी बहुत सी आयात में अल्लाह जल्ल शानुहू की राह में ख़र्च करने की तर्ग़ीब वारिद हुई है और जिस बात को अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने पाक कलाम में बार बार मुख़्तलिफ़ उन्वान से मुतअद्दद तरह की तर्ग़ीबों से ज़िक्र फ़रमाया हो, उसकी अहमियत का क्या पूछना, बिलख़ुसूस जब कि यह सब कुछ उसी का अता किया हुआ है।

एक शख़्स किसी अपने नौकर को कुछ रूपये देकर यह कहता है कि इसको अपनी ज़रूरियात में ख़र्च कर लो और मेरी ख़ुशी यह है कि इसमें से कुछ पस अंदाज़ करके फ़लाँ जगह भी ख़र्च कर देना। अगर तुम ऐसा करोगे तो

मैं इससे बहुत ज़्यादा दूँगा। हर शख़्स समझ सकता है कि ऐसी हालत में कौन ऐसा होगा जो उसमें से पस अंदाज़ करके उस जगह इस उम्मीद पर ख़र्च न करेगा कि इससे बहुत ज़्यादा मिलेगा। अल्लाह जल्ल शानुहू के इतने इर्शादात के बाद फिर अहादीस के जिक्र करने की ज़रूरत बाक़ी नहीं रहती, लेकिन चूँकि अहादीस भी अल्लाह जल्ल शानुहू के पाक कलाम की तौज़ीह और तफ़्सीर ही हैं इसलिए तक्मील के तौर पर कुछ अहादीस का तर्जुमा भी लिखा जाता है-

अहादीस

(١) عَنْ اَبِیْ هُرَیْرَةَؓ قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم لو کان لی مثل احد ذهبا لسرنی ان لا یمر علی ثلث لیال وعندی منه شئی الا شئی ارصده لدین رواه البخاری (مشکوٰة)

1. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शाद है कि अगर मेरे पास उहद के पहाड़ के बराबर भी सोना हो तो मुझे यह बात पसंद नहीं कि मेरे ऊपर तीन दिन गुज़र जाएं इस हाल में कि मेरे पास उसमें से कुछ भी हो अलावा इसके कि कोई चीज़ अदा-ए-क़र्ज़ के लिए रख ली जाए। *(मिश्कात)*

फ़ायदा:- उहद का पहाड़ मदीना तय्यिबा का मशहूर पहाड़ है जो बहुत बड़ा पहाड़ है। हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि अगर उसके बराबर सोना मेरे पास हो तो मेरी ख़्वाहिश यह है कि तीन दिन के अंदर-अंदर उस सब को तक़्सीम कर दूँ। कुछ भी अपने पास न रखूं। तीन दिन की क़ैद नहीं है इसलिए ज़िक्र फ़रमाया कि इतनी बड़ी मिक़्दार के ख़र्च करने के लिए कुछ न कुछ वक़्त तो लगेगा ही अलबत्ता अगर क़र्ज़ ज़िम्मे हो और जिसको देना है वह उस वक़्त मौजूद न हो तो उसको अदा करना चूंकि सदक़े से मुक़द्दम है इसलिए उसके अदा करने के लिए कुछ रोकना और महफ़ूज़ रखना पड़े तो दूसरी जानिब इससे ज़्यादा अहमियत क़र्ज़े के अदा करने की साबित होती है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह ख़ुसूसी आदते शरीफ़ा थी कि ज़ख़ीरा रखने का वहां गुज़र ही न था। हज़रत अनस रज़ि॰ जो हुज़ूर सल्ल॰ के मख़्सूस ख़ादिम, हर वक़्त के मशहूर ख़िदमत गुज़ार हैं, फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ कल के लिए कोई चीज़ ज़ख़ीरा बना कर नहीं रखते थे।

हज़रत अनस रज़ि॰ ही से दूसरी हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में कहीं से तीन परिन्द आए। उनमें से एक हुज़ूर सल्ल॰ ने अपने ख़ादिम को मरहमत फ़रमा दिया। दूसरे दिन वह ख़ादिम उस परिन्द को लेकर हाज़िर हुए। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया मैं ने तुम्हें मना नहीं कर रखा कि कल के वास्ते कोई चीज़ न रखो, कल की रोज़ी अल्लाह जल्ल शानुहू खुद मरहमत फ़रमाएंगे।

हज़रत समुरा रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि मैं कई मर्तबा दोबारी को महज़ इसलिए देखने जाता हूँ कि कहीं उसमें कोई चीज़ पड़ी न रह जाए और मेरी मौत इस हाल में आ जाए कि वह मेरे पास हो।

(तर्ग़ीब)

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि॰ मशहूर सहाबी हैं, बड़े ज़ाहिद हज़रात में थे। माल से अदावत के उनके बहुत से अजीब वाक़िआत हैं, जिनमें से एक अजीब क़िस्सा आयात के तहत में नं॰11 पर गुज़र चुका है, उनसे भी यह हदीस नक़ल की गयी है। कहते हैं कि मैं एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल॰ के साथ था। हुज़ूर सल्ल॰ ने उहद पहाड़ को देखकर यह फ़रमाया कि अगर यह पहाड़ सोने का बन जाए तो मुझे यह पसंद नहीं कि उसमें से एक दीनार भी मेरे पास तीन दिन से ज़्यादा ठहरे, मगर वह दीनार जिसको मैं क़र्ज़ के अदा करने के लिए महफ़ूज़ रखूं। फिर हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि बहुत ज़्यादा माल वाले ही अक्सर कम सवाब वाले हैं, मगर वह शख़्स जो इस तरह, इस तरह अदा करे।

हदीस नक़ल करने वाले ने इस तरह इस तरह की सूरत दोनों हाथ मिला कर दाएं बाएं जानिब करके बतायी यानी दोनों हाथ भर कर दाएं तरफ़ वाले को दे दे और बाएं तरफ़ वाले को, यानी हर शख़्स को खूब तक़्सीम करे।

(बुख़ारी)

इन्हीं हज़रत का एक और क़िस्सा मिश्कात शरीफ़ में आया है कि यह हज़रत उस्मान रज़ि॰ के ज़माना-ए-ख़िलाफ़त में उनकी ख़िदमत में हाज़िर थे। हज़रत उस्मान रज़ि॰ ने हज़रत काब रज़ि॰ से कहा कि हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि॰ का इंतिक़ाल हो गया और उन्होंने तर्के में माल छोड़ा है, तुम्हारा क्या ख़्याल है, कुछ ना-मुनासिब तो नहीं हुआ? काब रज़ि॰ ने फ़रमाया अगर वह इस माल में अल्लाह के हुक़ूक़ को अदा करते रहे हों तो फिर क्या मुज़ाइक़ा है? हज़रत अबूज़र रज़ि॰ के हाथ में एक लकड़ी थी। उससे हज़रत काब रज़ि॰ को मारना

शुरू कर दिया कि मैं ने ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि अगर यह पहाड़ सोने का हो जाए और मैं उसको सब को ख़र्च कर दूं और वह क़ुबूल हो जाए तो मुझे यह पसंद नहीं कि मैं उसमें से छः औक़िया भी अपने बाद छोड़ूं। इसके बाद अबूज़र रज़ि॰ ने हज़रत उस्मान रज़ि॰ से कहा कि मैं तुम्हें क़सम देकर पूछता हूं, क्या हुज़ूर सल्ल॰ से तुमने यह हदीस तीन मर्तबा सुनी है? हज़रत उस्मान रज़ि॰ ने कहा बेशक सुनी है।

इनका एक और क़िस्सा बुख़ारी शरीफ़ वग़ैरह में आया है। अह्नफ़ बिन क़ैस रज़ि॰ कहते हैं कि मैं मदीना मुनव्वरा में क़ुरैश की एक जमाअत के पास बैठा था। एक साहब तशरीफ़ लाए, जिनके बाल सख़्त थे। (यानी तेल वग़ैरह लगा हुआ नहीं था) कपड़े भी मोटे थे हैअत भी ऐसी ही थी यानी बहुत मामूली सी। उस मज्मे के पास खड़े होकर अव्वल सलाम किया, फिर फ़रमाया कि ख़ज़ाना जमा करने वालों को ख़ुशख़बरी दो उस पत्थर की जो जहन्नम की आग में तपाया जाएगा, फिर वह उनके पिस्तान पर रख दिया जाएगा, जिसकी शिद्दत और गर्मी से गोश्त वग़ैरह पक कर मोंढ़े के ऊपर से उबलने लगेगा फिर वह पत्थर मोंढ़े पर रखा जाएगा तो वह सब कुछ पिस्तान से बहने लगेगा। यह कह कर वह मस्जिद के एक स्तून के पास जाकर बैठ गये। अह्नफ़ रज़ि॰ कहते हैं कि मैं उनको जानता न था कि यह कौन बुज़ुर्ग हैं। मैं उनकी बात सुनकर उनके पीछे पीछे चल दिया और उसी स्तून के पास बैठ गया और मैंने अर्ज़ किया कि उस मज्मे वालों ने आप की बात की तरफ़ कुछ तवज्जोह नहीं की, बल्कि उस गुफ़्तगू को नापसंद समझा। वह फ़रमाने लगे ये बेवक़ूफ़ हैं, कुछ समझते नहीं हैं। मुझ से मेरे महबूब ने कहा है। अह्नफ़ ने पूछा कि आपके महबूब कौन हैं? कहने लगे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम। ऐ अबूज़र तुम उहद का पहाड़ देखते हो, मैं यह समझा कि किसी जगह काम को भेजना मक़्सूद है, इसलिए यह दिखलाना है कि कितना दिन बाक़ी है। मैं ने कहा जी हाँ, देख रहा हूँ। हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि अगर मेरे पास इस पहाड़ के बराबर सोना हो तो मेरा दिल चाहता है कि इस सारे को ख़र्च कर दूँ, मगर तीन दीनार (जिनका बयान दूसरी रिवायात में है।) इसके बाद अबूज़र रज़ि॰ ने कहा लेकिन ये लोग समझते नहीं, दुनिया को जमा करते जाते हैं और मुझे ख़ुदा की क़सम! न तो उनसे दुनिया की तलब, न दीन का इस्तिफ़्ता करना है (फिर मैं क्यूँ दबूँ, मुझे तो साफ़ साफ़ कहना है। *(फ़त्ह)*

हज़रत अबूज़र रज़ि॰ का एक वाक़िआ दूसरी फ़स्ल के सिलसिला-ए-आयत में नं॰ 5 पर भी आ रहा है।

(۲) عَنْ ابی ھریرۃؓ قال قال رسولُ اللہ صلی اللّٰہُ علیہ وسلم مامن یوم یصبح العباد فیہ الاملکان ینزلان فیقول احدھما اللّٰھمّ اعط منفقا خلفا ویقول الاخر اللّٰھمّ اعط ممسکا تلفا متفق علیہ ۔ (مشکوٰۃ)

2. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि रोज़ाना सुबह के वक़्त दो फ़रिश्ते (आसमान से) नीचे उतरते हैं। एक दुआ करता है ऐ अल्लाह! ख़र्च करने वाले को बदल अता फ़रमा। दूसरा फ़रिश्ता दुआ करता है, ऐ अल्लाह रोक कर रखने वाले का माल बर्बाद कर। *(मिश्कात)*

फ़ायदा:- क़ुरआन पाक की आयात में भी नं॰ 20 पर जो आयत गुज़री है उससे इसकी ताईद होती है जिसका मज़्मून यह है कि जो कुछ तुम ख़र्च करोगे, अल्लाह तआला उसका बदल अता करेगा और उस जगह और भी मुतअद्दद रिवायात इसकी ताईद में गुज़र चुकी हैं।

हज़रत अबूदर्दा रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जब भी आफ़्ताब निकलता होता है तो उसकी दोनों तरफ़ फ़रिश्ते एलान करते हैं जिसको जिन्न व इन्स के सिवा सब सुनते हैं कि ऐ लोगों! अपने रब की तरफ़ चलो, थोड़ी चीज़ जो किफ़ायत का दर्जा रखती हो उस ज़्यादा मिक़्दार से बहुत बेहतर है जो अल्लाह से ग़ाफ़िल कर दे और जब आफ़्ताब छुपता है, तो उसके दोनों जानिब दो फ़रिश्ते ज़ोर से दुआ करते हैं, ऐ अल्लाह ख़र्च करने वाले को बदल अता फ़रमा और रोक कर रखने वाले के माल को बर्बाद कर। *(ऐनी, अहमद की रिवायत)*

एक हदीस में है कि जब आफ़्ताब तुलूअ् होता है तो उसके दोनों जानिब दो फ़रिश्ते आवाज़ देते हैं कि या अल्लाह, ख़र्च करने वाले का बदल जल्दी अता फ़रमा और या अल्लाह, रोक कर रखने वाले के माल को जल्दी हलाक फ़रमा।

एक और हदीस में है कि आसमान में दो फ़रिश्ते हैं जिनके मुताल्लिक़ सिर्फ़ यही काम है कोई दूसरा काम नहीं, एक कहता रहता है, या अल्लाह, ख़र्च

करने वाले को बदल अता कर। दूसरा कहता है, या अल्लाह, रोक कर रखने वाले को हलाकत अता फ़रमा। (कन्ज़)

इससे मालूम होता है कि सुबह व शाम की ख़ुसूसियत नहीं। उनकी हर वक़्त यही दुआ है।, लेकिन पहली रिवायत की बिना पर मालूम होता है कि ये फ़रिश्ते आफ़ताब निकलने के वक़्त और ग़ुरूब के वक़्त ख़ास तौर से यह दुआ करते हैं और मुशाहिदा और तजुर्बा भी इसकी ताईद करता है कि माल जमा करके रखने वालों पर अक्सर ऐसी चीज़ें मुसल्लत हो जाती हैं, जिनसे वह सब ज़ाया हो जाता है। किसी पर मुक़द्दमा मुसल्लत हो जाता है, किसी पर आवारगी सवार हो जाती है, किसी के चोर पीछे लग जाते हैं।

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० ने लिखा है कि बर्बादी कभी तो बेऐनिही उस माल की होती है और कभी साहबे माल की, यानी वह ख़ुद ही चल देता है। और कभी बर्बादी नेक आमाल के ज़ाया होने से होती है कि वह उसमें फंस कर नेक आमाल से जाता रहता है और इसके बिल्-मुक़ाबिल जो ख़र्च करता है उसके माल में बरकत होती है बल्कि एक हदीस में आया है कि जो शख़्स सद्क़ा अच्छी तरह करता है, हक़ ताआला शानुहू उसके तर्के में अच्छी तरह नियाबत करते हैं। (एहया)

यानी उसके मरने के बाद भी उसका माल वारिस बर्बाद नहीं करते, लग्व (बेकार) चीज़ों में ज़ाया नहीं करते, वरना अक्सर रईसों के लड़के बाप के माल का जो हश्र करते हैं, वह मालूम ही है।

इमाम नववी रह० ने लिखा है कि जो ख़र्च पसंदीदा है वह वही ख़र्च है जो नेक कामों में हो, अह्ल व आयाल के नफ़्क़े में हो, या मेहमानों पर ख़र्च हो या दूसरी इबादतों में हो।

क़ुर्तबी रह० कहते हैं कि यह फ़र्ज़ इबादत और नफ़्ल इबादत दोनों को शामिल है, लेकिन नवाफ़िल से रोकने वाला बद्-दुआ का मुस्तहिक़ नहीं होता, मगर यह कि उसकी तबीअत पर ऐसा बुख़्ल मुसल्लत हो जाए, जो वाजिबात में भी ख़ुशी से ख़र्च न करे। (फ़क़त) लेकिन आइन्दा हदीस तअ्मीम[1] की तरफ़ इशारा करती है।

1. यानी आम हुक्म की तरफ़

(٣) عن ابی امامةؓ قال قال رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم یا ابن آدم ان تبذل الفضل خیر لك وان تمسکه شر لك ولا تلام علی کفاف وابداء بمن تعول رواہ مسلم (مشکوٰۃ)

3. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि आदम के बेटे तू ज़रूरत से ज़ायद माल को ख़र्च कर दे यह तेरे लिए बेहतर है और तू उसको रोक कर रखे तो यह तेरे लिए बुरा है और बक़द्र किफ़ायत रोकने पर मलामत नहीं और ख़र्च करने में जिनकी रोज़ी तेरे ज़िम्मे है, उनसे इब्तिदा कर (कि उन्हीं पर ख़र्च करना दूसरों से मुक़द्दम है।)

फ़ायदाः- इस मज़्मून की ताईद भी आयात में नं॰ 4 पर गुज़र चुकी है कि हक़ तआला शानुहू ख़ुद ही फ़रमा चुके हैं कि जितना ज़ायद हो वह ख़र्च कर दो। उस जगह यह हदीस शरीफ़ भी गुज़र चुकी है, एहतिमाम और तौज़ीह की वजह से यहां दोबारा ज़िक्र की गयी। हक़ीक़त यही है कि अपने से जो माल ज़ायद हो वह जमा करके रखने के वास्ते है ही नहीं। उसके लिए बेहतरीन बात यही है कि वह अल्लाह के बैंक में जमा कर दिया जाए, जिसको कोई ज़वाल नहीं, उस पर कोई आफ़त नहीं आती और ऐसे सख़्त मुसीबत के वक़्त काम आने वाला है, जिस वक़्त के मुक़ाबले में यहां की ज़रूरत कुछ भी नहीं है। और वहां उस वक़्त कमाने का कोई ज़रिया नहीं है। असासा सिर्फ़ वही होगा जो अपने साथ ले गया है।

दूसरी चीज़ इस हदीस शरीफ़ में यह है कि बक़द्र किफ़ायत रोकने पर मलामत नहीं यानी जितने की वाक़ई ज़रूरत हो कि उसके बग़ैर गुज़र मुश्किल हो या दस्ते सवाल दराज़ करना पड़े उसको महफ़ूज़ रखने पर इल्ज़ाम नहीं है और जिनकी रोज़ी अपने ज़िम्मे है, अह्ल व अयाल हों या दूसरे लोग हों हत्ताकि जानवर भी, अगर महबूस कर रखा है तो उसकी ख़बरगीरी अपने ज़िम्मे है उसको ज़ाया और बर्बाद करने का गुनाह और वबाल होता है।

हदीस पाक में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि आदमी के गुनाह के लिए यही बहुत है कि जिसकी रोज़ी उसके ज़िम्मे हो उसको ज़ाया कर दे।

(मिश्कात)

अब्दुल्लाह बिन सामित रज़ि॰ कहते हैं कि मैं हज़रत अबूज़र रज़ि॰ के साथ था कि उनका वज़ीफ़ा जो बैतुलमाल में था, वह उनको मिला वह अपनी ज़रूरियात ख़रीदने के लिए जा रहे थे उनकी बांदी साथ थी जो उनकी ज़रूरतें मुहय्या कर रही थी। उसके पास ज़रूरी चीज़ों के बाद सात अशर्फ़ियां बच गयीं। उन्होंने बांदी से फ़रमाया कि इन के पैसे ले आ (ताकि उनको तक़्सीम कर दें) मैं ने कहा कि अगर इन अशर्फ़ियों को आप अभी रहने दें कि और ज़रूरत पेश आएंगी, मेहमान भी आते रहते हैं। फ़रमाया कि मुझ से मेरे दोस्त (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यह क़रारदाद की थी कि जो सोना या चांदी बांध कर रखा जाएगा, वह मालिक पर आग की चिंगारी है, जब तक कि उसको अल्लाह के रास्ते में ख़र्च न कर दिया जाए। *(तर्ग़ीब)*

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से अपनी ज़रूरत से ज़्यादा चीज़ को ख़र्च कर देने की इतनी तर्ग़ीबात वारिद हुई हैं कि कुछ सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ को यह ख़्याल होने लगा कि आदमी को अपनी ज़रूरत से ज़्यादा चीज़ रखने का हक़ ही नहीं।

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हम हुज़ूर सल्ल॰ के साथ एक सफ़र में जा रहे थे कि एक शख़्स अपनी ऊँटनी को कभी इधर कभी उधर ले जाते थे। इस पर हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि जिस शख़्स के पास सवारी ज़ायद हो वह उस को दे दे जिसके पास सवारी नहीं, और जिसके पास तोशा ज़ायद हो वह उसको दे दे जिसके पास तोशा नहीं, यहां तक कि हमें यह गुमान होने लगा कि आदमी का अपनी ज़रूरत से ज़्यादा में कोई हक़ ही नहीं। *(अबू दाऊद)*

उन साहब का अपनी ऊँटनी को इधर उधर फिराना या तो उस पर तफ़ाख़ुर और बड़ाई की वजह से था, तब तो हुज़ूर सल्ल॰ के आइंदा इर्शाद के मुख़ातिब यही साहब हैं और हासिल यह है कि ज़रूरत से ज़ायद चीज़ तफ़ाख़ुर[1] के लिए नहीं होती, दूसरों की मदद के लिए होती है और कुछ उलमा ने कहा है कि यह फिराना उसकी ना क़ाबिले बयान हालत दिखाने के वास्ते सूरते सवाल था, इस सूरत में हुज़ूर सल्ल॰ के इर्शाद के मुख़ातब दूसरे हज़रात हैं।

1. यानी घमण्ड और बड़ाई के लिए नहीं।

(٤) عن عقبة بن الحارثؓ قال صليت وراء النبي صلى الله عليه وسلم بالمدينة العصر فسلم ثم قام مسرعًا فتخطى رقاب الناس الى بعض حجر نسائه ففزع الناس من سرعته فخرج عليهم فرأى انهم قدعجبوا من سرعته قال ذكرت شيئا من تبر عندنا فكرهت ان يحبسني فامرت بقسمته رواه البخاري (مشكوة)

4. उक़्बा रज़ि० कहते हैं कि मैं ने मदीना तय्यिबा में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे अस्र की नमाज़ पढ़ी। हुज़ूर सल्ल० ने नमाज़ का सलाम फेरा और थोड़ी देर बाद उठकर निहायत जल्दी के साथ लोगों के मोंढों से गुज़रते हुए अज़्वाजे मुतह्हरात के घरों में से एक घर में तशरीफ़ ले गए। लोगों में हुज़ूर सल्ल० के इस तरह जल्दी तशरीफ़ ले जाने से तश्वीश पैदा हुई कि न मालूम क्या बात पेश आ गयी। हुज़ूर सल्ल० मकान से वापस तशरीफ़ लाये तो लोगों की हैरत को महसूस फ़रमाया। इस पर हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि मुझे सोने का एक टुकड़ा याद आ गया था जो घर में रह गया था। मुझे यह बात गरां गुज़री (कि कभी मौत आ जाये और वह रह जाए और मैदाने हश्र में उसकी जवाब दही और उसका हिसाब) मुझे रोक ले, इसलिए उसको जल्दी बांट देने को कह कर आया हूँ। *(मिश्कात)*

फ़ायदा:- इसी क़िस्से में दूसरी हदीस में है कि मुझे यह बात नापसंद हुई कि कहीं मैं उसको भूल जाऊँ और वह रात को मेरे पास रह जाए। इस से भी बढ़कर एक और क़िस्सा हदीस में आया है। हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीमारी में हुज़ूर सल्ल० के पास छः सात अशर्फ़ियां थीं (उसी वक़्त कहीं से आ गयी होंगी) हुज़ूर सल्ल० ने मुझे हुक्म फ़रमाया कि उन को जल्दी से बांट दो। हुज़ूर सल्ल० की बीमारी की शिद्दत की वजह से मुझे तक़्सीम करने की मोहलत न मिली। हुज़ूर सल्ल० ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि वे अशर्फ़ियां तक़्सीम कर दीं? मैं ने अर्ज़ किया आपकी बीमारी ने बिल्कुल मोहलत न दी, फ़रमाया उठाकर लाओ, उनको लेकर हाथ पर रखा और फ़रमाया कि अल्लाह के नबी का क्या गुमान है (यानी उसको

किस क़दर नदामत होगी) कि अगर वह इस हाल में अल्लाह जल्ल शानुहू से मिले कि ये उस के पास हों। *(मिश्कात)*

एक और हदीस में हज़रत आइशा रज़ि॰ से इसी क़िस्म का एक और क़िस्सा नक़ल किया गया, जिसमें वारिद है कि रात ही को कहीं से आ गयी थीं। हुज़ूर सल्ल॰ की नींद उड़ गयी। जब अख़ीर रात में मैं ने उनको ख़र्च कर दिया जब नींद आयी। *(एहया)*

हज़रत सुहैल रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ के पास सात अशर्फ़ियां थीं, जो हज़रत आइशा रज़ि॰ के पास रखी थीं, हुज़ूर सल्ल॰ ने हज़रत आइशा रज़ि॰ से फ़रमाया कि वह अली रज़ि॰ के पास भेज दो। यह फ़रमाने के बाद हुज़ूर सल्ल॰ पर ग़शी तारी हो गयी जिसकी वजह से हज़रत आइशा रज़ि॰ उसमें मश्ग़ूल हो गयीं। थोड़ी देर बाद इफ़ाक़ा हुआ तो फिर यही फ़रमाया और फिर ग़शी हो गयी। बार बार ग़शी हो रही थी। आख़िर हुज़ूर सल्ल॰ के बार बार फ़रमाने पर हज़रत आइशा रज़ि॰ ने हज़रत अली रज़ि॰ के पास वे भेज दीं। उन्होंने तक़्सीम फ़रमा दीं। यह क़िस्सा तो दिन में गुज़रा और शाम को पीर की रात हुज़ूर सल्ल॰ की ज़िंदगी की आख़िरी रात थी। हज़रत आइशा रज़ि॰ के घर में चिराग़ में तेल भी न था। एक औरत के पास चिराग़ भेजा कि हुज़ूर सल्ल॰ की तबीअत ज़्यादा ख़राब है, विसाल का वक़्त क़रीब है, इस में घी डाल दो कि उसी को जला लें। *(तर्ग़ीब)*

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि॰ से इस क़िस्म का एक और क़िस्सा नक़ल किया गया, वह फ़रमाती हैं कि एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल॰ तश्रीफ़ लाये और आप के चेहरा-ए-मुबारक पर तग़य्युर (गरानी) का असर था। मैं यह समझी कि तबीअत नासाज़ है। मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! आप के चेहरे पर कुछ गरानी का असर है। क्या बात हुई? फ़रमाया सात दीनार रात आ गये थे, वे बिस्तरे के कोने पर पड़े हैं, अब तक ख़र्च नहीं हुए। *(इराक़ी एहया)*

हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हदाया तो आते ही रहते थे, लेकिन दिन हो या रात, सेहत हो या बीमारी, उस वक़्त तक तबीअत मुबारक पर बोझ रहता था जब तक वे ख़र्च न जो जाएं और हद है कि अपने घर में बीमारी की शिद्दत में रात को जलाने के लिए तेल भी नहीं, लेकिन सात अशर्फ़ियां मौजूद होने पर भी घर की ज़रूरत का न हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़्याल आया, न उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ि॰ को ही याद आया कि थोड़ा सा

तेल भी मंगा लें, मुझे अपने वालिद साहब नव्वरल्लाहु मर्क़दहू का यह मामूल देखने का बारहा मौक़ा मिला कि रात को वह अपनी मिल्क में कोई रूपया पैसा नहीं रखना चाहा करते थे। क़र्ज़ा तो हमेशा ही सर रहा हत्ता कि विसाल के वक़्त भी सात आठ हज़ार रूपया क़र्ज़ था। इसलिए रात को अगर रूपयों की कोई मिक़दार होती तो वह किसी क़र्ज़ख़्वाह के हवाले कर देते और पैसे होते तो वे बच्चों में से किसी को दे देते और फ़रमाया करते थे मेरा नहीं जी चाहता कि रात को यह गंदगी मेरे पास रहे, मौत का एतिबार नहीं है। इस से बढ़कर मैंने हज़रते अक़्दस क़ुद्वतुज़्ज़ाहिदीन शाह अब्दुर्रहीम साहब रायपुरी नव्वरल्लाहु मर्क़दहू के मुताल्लिक़ सुना है कि हज़रत के पास फ़ुतूहात की कसरत थी और जब कुछ जमा हो जाता तो बहुत एहतिमाम से उसको ख़ैर के मौक़ों में तक़्सीम फ़रमा दिया करते। इसके बाद फिर कहीं से कुछ आ जाता तो चेहरा-ए-मुबारक पर गरानी के आसार होते और इर्शाद फ़रमाते कि यह और आ गया। आख़िर में हज़रत रह० ने अपने पहनने के कपड़े भी तक़्सीम फ़रमा दिये थे और अपने मख़्सूस ख़ादिम हज़रत मौलाना अब्दुल क़ादिर साहब[1] ज़ा द मज्दुहुम से फ़रमाया था कि बस, अब तो तुम से कपड़ा मुस्तआर (मांगा हुआ) लेकर पहन लिया करूँगा। अल्लाह के औलिया की शानें और अंदाज़ भी अजीब हुआ करते थे। यह भी एक वल्वला है कि जैसे आए थे वैसे ही वापस जाएं, इस दुनिया के मताअ् का ज़ख़ीरा मिल्क में न हो।

(٥) عن ابی ہریرۃ قال قال رجل یا رسول اللہ ای الصدقۃ اعظم اجرًا قال ان تصدق وانت صحیح شحیح تخشی الفقر وتامل الغنی ولا تمھل حتی اذا بلغت الحلقوم قلت لفلان کذا ولفلان کذا وقد کان لفلان متفق علیہ (مشکوۃ)

5. एक आदमी ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! कौन सा सदक़ा सवाब के एतिबार से बढ़ा हुआ है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया यह कि तू सदक़ा ऐसी हालत में करे कि तन्दरूस्त हो, माल की हिर्स दिल में हो, अपने फ़क़ीर हो जाने का डर हो, अपने मालदार होने की तमन्ना हो और सदक़ा करने को उस वक़्त तक मुअख़्ख़र न कर कि रूह हलक़ तक

1. हज़रत शाह अब्दुल क़ादिर साहिब रायपुरी रह० ने भी 16 अगस्त 1962 ई० को विसाल फ़रमाया।

पहुंच जाये, यानी मरने का वक़्त क़रीब आ जाये, तो तू यों कहे कि इतना माल फ़लां-फ़लां (मस्जिद) का और इतना माल फ़लां (मदरसे) का, हालांकि अब माल फ़लां (वारिस) का हो गया। *(मिश्कात)*

फ़ायदाः- फ़लां (वारिस) का हो गया, का मतलब यह है कि वारिस का हक़ उसमें शामिल हो गया, इसलिए वसीयत सिर्फ़ एक तिहाई में हो सकती है और मौत की बीमारी के सदक़ात भी तिहाई में हो सकते हैं। इससे ज़्यादा हक़ मरने वाले को नहीं है। इसी वास्ते एक और हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि आदमी कहता है। कि मेरा माल, मेरा माल ! हालांकि उसका माल सिर्फ़ तीन चीज़ें है, जो खा लिया, या पहन लिया, या अल्लाह के ख़ज़ाने में सदक़ा कर के जमा कर दिया, इसके अलावा जो रह गया, वह जाने वाला है। यानी यह शख़्स उसको लोगों के लिए छोड़ने वाला है।

(मिश्कात)

एक और हदीस में है कि आदमी अपनी ज़िंदगी में एक दिरम सदक़ा कर दे, वह इससे बेहतर है कि मरते वक़्त सौ दिरम सदक़ा करे। *(मिश्कात)*

इसलिए कि वाक़ई मरते वक़्त तो वह गोया दूसरे के माल में से सदक़ा कर रहा है कि अब उसका क्या रहा। उसको तो बहरहाल इस माल को छोड़कर जाना है।

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल किया गया कि जो शख़्स मरते वक़्त सदक़ा करता है, उसकी मिसाल ऐसी है जैसाकि कोई शख़्स जब ख़ूब पेट भर ले तो बचे हुए खाने का हद्या तोहफ़ा किसी के पास लेकर जाए। *(मिश्कात)*

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुख़्तलिफ़ मिसालों से इस पर तंबीह फ़रमायी कि असल सदक़े का वक़्त तन्दरूस्ती और सेहत का है कि अपने नफ़्स से असल मुक़ाबला उसी वक़्त है लेकिन इन सब का यह मतलब नहीं कि मरते वक़्त सदक़ा या वसीयत बेकार है, बहरहाल सवाब उसका भी है, ज़ख़ीरा-ए-आख़िरत वह भी बनता है, अलबत्ता इतना सवाब नहीं होता, जितना अपनी ज़रूरतों और राहतों के मुक़ाबले में सदक़ा करने का सवाब है। हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है।

كُتِبَ عَلَيْكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ إِنْ تَرَكَ خَيْرًا الْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِينَ بِالْمَعْرُوفِ حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِينَ ○

तर्जुमाः- तुम पर यह फ़र्ज़ किया जाता है कि जब तुम में से किसी की मौत आने लगे, अगर वह माल छोड़े तो वालिदैन और दूसरे रिश्तेदारों के लिए कुछ वसीयत कर जाये, जो मारूफ़ तरीक़े पर हो जिनको ख़ुदा का ख़ौफ़ है, उनके ज़िम्मे यह ज़रूरी चीज़ है।

(सूरः बक़र, रूकूअ् 22,)

यह हुक्म जो इस आयते शरीफ़ा में ज़िक्र किया गया, इब्तिदा-ए-इस्लाम का है।, उस वक़्त माँ बाप के लिए यही वसीयत फ़र्ज़ थी। इसके बाद जब मीरास का हुक्म नाज़िल हुआ, तो वालिदैन और जिन रिश्तेदारों का हक़ शरीअत ने मुक़र्रर कर दिया, उनके लिए वसीयत का हुक्म मंसूख़ (ख़त्म) हो गया, लेकिन जिन रिश्तेदारों का हक़ शरीअत ने मुक़र्रर नहीं किया उनके लिए एक तिहाई माल में वसीयत का हक़ अब भी बाक़ी है, लेकिन मीरास के हुक्म से पहले यह फ़र्ज़ था, अब फ़र्ज़ नहीं है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि इस आयते शरीफ़ा के हुक्म से उनको वसीयत मंसूख़ हो गयी जो वारिस बनते हैं। और जो वारिस नहीं बनते, उनको वसीयत मंसूख़ नहीं हुई है।

क़तादा रज़ि॰ कहते हैं कि इस आयते शरीफ़ा में वसीयत अब उन के लिए रह गयी है जो वारिस नहीं होते, चाहे वे रिश्तेदार हों या न हों।

(दुर्रे मंसूर)

एक हदीस में अल्लाह जल्ल शानुहू का इर्शाद आया है कि ऐ आदम के बेटे! तू ज़िंदगी में बख़ील (कन्जूस) था, मरने के वक़्त इस्राफ़ (फ़ुज़ूल ख़र्ची) करने लगा। दो बुराईयां इकट्ठा न कर। एक ज़िन्दगी में 'बुख़्ल' की, दूसरी मरने के वक़्त की, तू अपने ऐसे रिश्तेदारों को देख जो तेरी मीरास से महरूम हैं और उनके लिए कुछ वसीयत कर जा। *(कन्ज़)*

आयात नं॰ 2 पर ख़ुद हक़ तआला जल्ल शानुहू के पाक कलाम में भी इस तरफ़ इशारा गुज़र चुका है कि सदक़ा उस वक़्त का अफ़ज़ल है जबकि आदमी को माल की मुहब्बत सता रही हो, इसके मुक़ाबले में कि दिल सर्द हो चुका हो।

एक हदीस में है कि अल्लाह जल्ल शानुहू उस शख़्स से नाराज़ होते हैं। जो अपनी ज़िंदगी में तो बख़ील हो और मरने के वक़्त सख़ी हो। *(कन्ज़)*

इसलिए जो लोग सदक़ात व औक़ाफ़ में मरने के वक़्त का इंतिज़ार करते रहते हैं, यह पसंदीदा चीज़ नहीं है। अव्वल तो इसी का इल्म किसी को नहीं है कि कब और किस तरह मौत आ जाए।

मुतअद्दद (कितने ही) वाक़िआत इस क़िस्म के क़ाबिले इब्रत देखने में आये कि मरने के वक़्त बहुत कुछ सदक़ात और औक़ाफ़ करने की उमंगें लोगों में थीं, लेकिन बीमारी ने ऐसा घेरा कि मोहलत ही न लेने दी। किसी पर फ़ालिज गिर गया, किसी की ज़बान बंद हो गयी, कहीं वारिस तीमारदार बीच में हायल हो गये और अगर इन सब अवारिज़ से बच कर उसकी नौबत आ भी जाए, जो बहुत कम आती है, तब भी वह दर्जा सवाब का तो होता नहीं, जो अपनी ख़्वाहिशात को नुक़्सान पहुँचा कर सदक़ा करने का है। अलबत्ता अगर अपनी ज़िन्दगी में कोताही से न कर सका हो, तो मरने ही के वक़्त को ग़नीमत समझे कि मरने के बाद कोई किसी को नहीं पूछता। सब दो चार दिन रोकर भूल जाते हैं, रोज़ाना के यह मुशाहदे हैं। जो कुछ ले जाना है ख़ुद अपने साथ ले जाओ, काम देगा।

(٦) عن ابی ہریرۃ ان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم قال قال رجل لا تصدقن بصدقۃ فخرج بصدقتہ فوضعھا فی ید سارق فاصبحوا یتحدثون تصدق اللیلۃ علی سارق فقال اللّٰھم لک الحمد علی سارق لا تصدقن بصدقۃ فخرج بصدقتہ فوضعھا فی ید زانیۃ فاصبحوا یتحدثون تصدق اللیلۃ علی زانیۃ فقال اللّٰھم لک الحمد علی زانیۃ لا تصدقن بصدقۃ فخرج بصدقتہ فوضعھا فی ید غنی فاصبحوا یتحدثون تصدق اللیلۃ علی غنی فقال اللّٰھم لک الحمد علی سارق وزانیۃ وغنی فاتی فقیل لہ اما صدقتک علی سارق فلعلہ ان یستعف عن سرقتہ واما الزانیۃ فلعلھا ان تستعف عن زناھا واما الغنی فلعلہ یعتبر فینفق مما اعطاہ اللہ متفق علیہ (مشکوٰۃ)

6. (बनी इस्राईल के) एक आदमी ने अपने दिल में कहा कि सदक़ा करूँगा, चुनांचे रात को चुपके से एक आदमी के हाथ में माल

देकर चला आया। सुबह को लोगों में आपस में चर्चा हुआ कि रात कोई शख़्स एक चोर को सदक़ा दे गया। उस सदक़ा करने वाले ने कहा , या अल्लाह! उस चोर पर सदक़ा करने में भी तेरे ही लिए तारीफ़ है (कि इससे भी ज़्यादा बद-हाल को दिया जाता, तो भी मैं कर ही क्या सकता था?) फिर उसने दोबारा ठानी कि आज रात को फिर सदक़ा करूँगा। (कि पहला तो ज़ाया हो गया) चुनांचे रात को सदक़े का माल लेकर निकला और उसको एक औरत को दे आया (यह ख़्याल किया होगा कि यह तो चोरी क्या करेगी?) सुबह को चर्चा हुआ कि रात कोई शख़्स फ़लां बदकार औरत को सदक़ा दे गया। उसने कहा, या अल्लाह! तेरे ही लिए तारीफ़ है, ज़िना करने वाली औरत पर भी (कि मेरा माल तो इस से भी कम दर्जे के क़ाबिल था) फिर तीसरी मर्तबा इरादा किया कि आज रात को ज़रूर सदक़ा करूँगा। चुनांचे रात को सदक़ा लेकर गया और उस को एक शख़्स को दे दिया जो मालदार था। सुबह को चर्चा हुआ कि रात को एक मालदार को सदक़ा दिया गया। इस सदक़ा देने वाले ने कहा, या अल्लाह ! तेरे ही लिए तारीफ़ है, चोर पर भी, ज़िना करने वाली औरत पर भी और ग़नी पर भी। रात को ख़्वाब में देखा कि (तेरा सदक़ा क़ुबूल हो गया है) तेरा सदक़ा चोर पर इसलिये कराया गया कि शायद वह अपनी चोरी की आदत से तौबा कर ले और ज़ानिया पर इसलिए कि वह शायद ज़िना से तौबा कर ले (जब वह यह देखेगी कि बग़ैर मुंह काला कराये भी अल्लाह जल्ल शानुहू अता फ़रमाते हैं, तो उसको ग़ैरत आयेगी) और ग़नी पर इसलिए ताकि उसको इब्रत हासिल हो (कि अल्लाह के बन्दे किस तरह छुप कर सदक़ा करते हैं, इसकी वजह से) शायद वह भी उस माल में से जो उसको अल्लाह तआला ने अता फ़रमाया है, सदक़ा करने लगे।

फ़ायदा:- एक हदीस में यह क़िस्सा और तरह से ज़िक्र किया गया है। मुम्किन है कि वह कोई दूसरा क़िस्सा हो कि इस क़िस्म के मुतअद्दद वाक़िआत में कोई इश्काल नहीं और अगर वह यही क़िस्सा है तो इससे उस क़िस्से की कुछ वज़ाहत (ख़ुलासा) होती है।

ताऊस रह० कहते हैं कि एक शख़्स ने मन्नत मानी कि जो शख़्स सब से पहले इस आबादी में नज़र पड़ेगा उस पर सदक़ा करूँगा। इत्तिफ़ाक़ से सबसे

पहले एक औरत मिली, उसको सदक़े का माल दे दिया। लोगों ने कहा कि यह तो बड़ी ख़बीस औरत है। उस सदक़ा करने वाले ने इसके बाद जो शख़्स सबसे पहले नज़र पड़ा उसको माल दे दिया। लोगों ने कहा कि यह तो बद-तरीन शख़्स है। उस शख़्स ने इसके बाद जो सबसे पहले नज़र पड़ा उस पर सदक़ा किया। लोगों ने कहा कि यह तो सबसे मालदार शख़्स है। सदक़ा करने वाले को बड़ा रंज हुआ, तो उसने ख़्वाब में देखा कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने तेरे तीनों सदक़े क़ुबूल कर लिए। वह औरत फ़ाहिशा थी, लेकिन महज़ नादारी की वजह से उसने यह फ़ेल इख़्तियार कर रखा था। जब से तूने उसे माल दिया है, उसने यह बुरा काम छोड़ दिया। दूसरा शख़्स चोर था और वह भी तंगदस्ती की वजह से चोरी करता था, तेरे माल देने पर उसने चोरी से अलाहिदगी इख़्तियार कर ली। तीसरा शख़्स मालदार है और कभी सदक़ा न करता था, तेरे सदक़ा करने से उसको इब्रत हासिल हुई कि मैं इससे ज़्यादा मालदार हूँ इसलिए इससे ज़्यादा सदक़ा करने का मुस्तहिक़ हूँ, अब उसको सदक़ा करने की तौफ़ीक़ हो गयी। (कन्ज़)

इस हदीस शरीफ़ से यह बात वाज़ेह हो गयी कि अगर सदक़ा करने वाले की नीयत इख़्लास की हो और इसके बावजूद वह बेमहल पहुँच जाये तो इसमें भी अल्लाह जल्ल शानुहू की कोई हिक्मत होती है, इससे रंजीदा न होना चाहिए। आदमी का अपना काम यह है कि अपनी नीयत इख़्लास की रखे कि असल चीज़ अपना ही इरादा और फ़ेल है और इन सदक़ा करने वाले बुज़ुर्ग की फ़ज़ीलत भी ज़ाहिर है कि बावजूद अपनी कोशिश के जब सदक़ा बे जगह सर्फ़ हो गया तो उसकी वजह से बद दिल होकर सदक़ा करने का इरादा तर्क नहीं किया, बल्कि दोबारा तिबारा सदक़े को अपने मस्रफ़ पर ख़र्च करने की कोशिश करते रहे। यही वह उनका इख़्लास और नेक नीयती थी, जिसकी बरकत से तीनों सदक़े क़ुबूल भी हो गये और क़ुबूल की बशारत भी ख़्वाब में ज़ाहिर हो गयी।

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० फ़रमाते हैं कि इस हदीस से यह बात मालूम हुई कि अगर सदक़ा ज़ाहिर के एतिबार से अपने महल पर ख़र्च न हुआ हो तो उसको दोबारा अदा करना मुस्तहब है और दोबारा अदा करने से उकताना नहीं चाहिए। जैसा कि कुछ बुज़ुर्गों से मन्क़ूल है कि ख़िदमत को क़ता न कर, अगरचे क़ुबूल न होने के आसार ज़ाहिर हों।

अल्लामा ऐनी रह० फ़रमाते हैं कि इससे यह बात भी मालूम हुई कि

अल्लाह जल्ल शानुहू आदमी की नेक नीयती का बदला ज़रूर अता फ़रमाते हैं, इसलिए कि इन सदक़ा करने वालों ने ख़ालिस अल्लाह के वास्ते सदक़ा करने का इरादा किया था। (इसीलिए रात को छुपा कर दिया था) तो हक़ तआला शानुहू ने उसको क़ुबूल फ़रमाया और बे-महल ख़र्च हो जाने की वजह से मर्दूद नहीं हुआ।

(٧) عن علیؓ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم بادروا بالصدقۃ فان البلاء لا یتخطاہا رواہ رزین (مشکوٰۃ)

7. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि सदक़ा करने में जल्दी किया करो, इसलिए कि बला सदक़े को फांद नहीं सकती।

फ़ायदा:- यानी अगर कोई बला मुसीबत आने वाली होती है, तो वह सदक़ा की वजह से पीछे रह जाती है। एक ज़ईफ़ (कमज़ोर) हदीस में आया है कि सदक़ा बुराई के सत्तर दरवाज़ों को बंद करता है।

एक हदीस में आया है कि हुज़ूर सल्ल ने इर्शाद फ़रमाया, अपने मालों को ज़कात अदा करके पाक करो और अपने बीमारों का सदक़ा से इलाज करो और मुसीबतों की मौजों का दुआ से इस्तिक़बाल करो। *(तर्ग़ीब)*

कन्ज़ुल उम्माल में कई अहादीस के ज़ैल (तहत) में यह मज़्मून आया है कि अपने बीमारों की सदक़े से दवा किया करो और तजुर्बा भी इसका शाहिद है कि सदक़े की कसरत बीमारी से शिफ़ा है।

एक हदीस में आया है कि सदक़े से बीमारों का इलाज किया करो कि सदक़ा आबरू रेज़ियों को भी हटाता है और बीमारियों को भी हटाता है और नेकियों में इज़ाफ़ा करता है और उम्र बढ़ाता है। *(कन्ज़)*

एक हदीस में आया है कि सदक़ा करना सत्तर बलाओं को रोकता है, जिन में कम से कम दर्जा जुज़ाम और बर्स[1] की बीमारी है। *(कन्ज़)*

एक हदीस में आया है कि अपने तफ़क्कुरात और ग़मों की तलाफ़ी सदक़ा से किया करो, इससे हक़ तआला शानुहू तुम्हारी मज़र्रत को भी दफ़ा करेगा और तुम्हारी दुश्मन पर मदद करेगा। *(कन्ज़)*

1. कोढ़ और सफ़ेद दाग़ की बीमारी।

एक और सही हदीस में आया है कि जब कोई शख़्स किसी मुसलमान को कपड़ा पहनाए तो जब तक पहनने वाले के बदन पर एक भी टुकड़ा उस कपड़े का रहेगा पहनाने वाला अल्लाह की हिफ़ाज़त में रहेगा।

इब्ने अबिल जअद रज़ि॰ कहते हैं कि सदक़ा बुराईयों के सत्तर दरवाज़े बंद करता है। *(एहया)*

एक हदीस में है कि सुबह को सवेरे सवेरे सदक़ा कर दिया करो, इसलिए कि बला सदक़े से आगे नहीं बढ़ती। *(तर्ग़ीब)*

आयात के ज़ैल में नं॰ 9 पर इब्ने अबिल जअद रज़ि॰ की नक़ल से एक वाक़िआ भी भेड़िए का गुज़र चुका है और मुतअद्दद रिवायात इस मज़्मून की गुज़र चुकी हैं। हज़रत अनस रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि सदक़ा हक़ तआला शानूहू के ग़ुस्से को दूर करता है और बुरी मौत को हटाता है। *(मिश्कात)*

उलमा ने लिखा है कि सदक़ा मरने के वक़्त शैतान के वस्वसे से महफ़ूज़ रखता है और मर्ज़ की शिद्दत की वजह से ना-शुक्री के अल्फ़ाज़ कहने से हिफ़ाज़त करता है और ना-गहानी मौत को रोकता है, ग़रज़ हुस्ने ख़ात्मा का मुईन (मददगार) है।[1]

एक हदीस में आया है कि सदक़ा क़ब्र की गर्मी को ज़ायल करता है और आदमी क़ियामत के दिन अपने सदक़े के साए में होगा। *(कन्ज़)*

यानी जितना ज़्यादा सदक़ा करेगा उतना ही ज़्यादा साया होगा।

हज़रत मुआज़ रज़ि॰ ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया, मुझे ऐसा अमल बता दीजिए जो जन्नत में दाख़िल कर दे और जहन्नम से दूर रखे। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया तुमने बहुत बड़ी बात पूछी और वह बहुत आसान चीज़ है जिस पर अल्लाह जल्ल शानुहू आसान कर दे और वह यह है कि अल्लाह जल्ल शानुहू की इख़्लास से इबादत करो, किसी को उसका शरीक न बनाओ, नमाज़ को क़ायम करो, ज़कात अदा करते रहो, रमज़ानुल मुबारक के रोज़े रखो और बैतुल्लाह शरीफ़ का हज करो। इसके बाद हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें ख़ैर के दरवाज़े बताऊँ यानी (जिन दरवाज़ों

---

1. यानी बेहतर ख़ात्मे के लिए मददगार साबित होती है

से आदमी ख़ैर तक पहुँचता है) और वे ये हैं - रोज़ा ढाल है (यानी जैसे ढाल की वजह से आदमी दुश्मन के हमले को रोकता रहता है, उसी तरह रोज़े के ज़रिए शैतान के हमलों को रोकता है।) और सदक़ा ख़ताओं को ऐसा बुझा देता है जैसा पानी आग को बुझा देता है और रात के दर्मियानी हिस्से में नमाज़ भी (ऐसी ही चीज़) है। इसके बाद हुज़ूर सल्ल॰ ने यह आयते शरीफ़ा तिलावत फ़रमायी -'त-त-जाफ़ा जुनूबुहुम॰' यह आयते शरीफ़ा आयात के ज़ैल (तहत) में नं॰ 19 पर गुज़र चुकी है। फिर हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि मैं तुमको सारे काम का सर और उसका सतून और उसकी बुलंदी बताऊँ। सब का सर तो इस्लाम है (कि इसके बग़ैर तो कोई चीज़ मोतबर ही नहीं) और इसका सतून नमाज़ है (कि जैसे बग़ैर सतून के मकान का बाक़ी रहना मुश्किल है, ऐसे ही बग़ैर नमाज़ के इस्लाम का बक़ा मुश्किल है।) और इसकी बुलंदी जिहाद है (यानी जिहाद से इसको बुलंदी मिलती है।) फिर हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि इन सब चीज़ों की जड़ बताऊँ (जिस पर सारी बुनियाद क़ायम होती है) हुज़ूर सल्ल॰ ने अपनी ज़बाने मुबारक पकड़ कर इर्शाद फ़रमाया कि इसको क़ाबू में रखो, हज़रत मुआज़ रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! क्या हम उस पर भी पकड़े जायेंगे जो कुछ बात चीत ज़बान से कर लेते हैं ? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, तुझको तेरी माँ रोए ऐ मुआज़ ! क्या आदमियों को नाक के बल औंधे मुँह जहन्नम में ज़बान के अलावा कोई और चीज़ भी डालती है।

(मिश्कात)

'तुझको तेरी माँ रोए' अरब के मुहावरे में तंबीह के लिए बोला जाता है। हासिल यह है कि हम ज़बानों को जो क़ैंची की तरह चलाते रहते हैं वह सब मज्मूआ आमालनामे में तुलेगा और उसमें लग्व (बेकार) और बेहूदा, ना-जायज़ चीज़ें जितनी बोलते हैं वे जहन्नम में जाने का सबब होती हैं।

एक और हदीस में आया है कि आदमी अल्लाह जल्ल शानुहू की ख़ुश्नूदी का कोई कलमा ज़बान से निकालता है, जिसको वह बोलने वाला कुछ अहम भी नहीं समझता, लेकिन हक़ तआला शानुहू उस कलमे की वजह से उसके दर्जे जन्नत में बुलंद कर देते हैं और आदमी अल्लाह जल्ल शानुहू की नाराज़गी का कलमा ज़बान से निकालता है, जिसको वह कहने वाला सरसरी समझता है, लेकिन उस कलमे की वजह से जहन्नम में फेंक दिया जाता है।

एक रिवायत में है कि जहन्नम में इतनी दूर फेंक दिया जाता है जैसा

कि मश्रिक़ से मग़्रिब दूर है।

एक और हदीस में हुज़ूर. सल्ल॰ का पाक इर्शाद है कि जो शख़्स दो चीज़ों का ज़िम्मा ले ले कि बे-महल इस्तेमाल नहीं करेगा, एक वह चीज़ जो दो जबड़ों के दर्मियान है (यानी ज़बान) और दूसरी वह चीज़ जो दो टांगों के दर्मियान है (यानी शर्मगाह) तो मैं उसके लिए जन्नत का ज़ामिन हूं।

एक और हदीस में है कि जहंन्नम में आदमियों को कसरत से यही दो चीज़ें डालती हैं।

एक हदीस में है कि एक आदमी कोई कलमा ज़बान से निकालता है और महज़ इतनी ग़रज़ होती है कि लोग ज़रा हंस पड़ेंगे, तफ़्रीह होगी, लेकिन उसके वबाल से जहन्नम में इतनी दूर फेंक दिया जाता है, जितनी आसमान से ज़मीन दूर है।

हज़रत सुफ़्यान सक़फ़ी रज़ि॰ ने हुज़ूर सल्ल॰ से पूछा कि आपको अपनी उम्मत पर सबसे ज़यादा डर किस चीज़ का है? हुज़ूर सल्ल॰ ने अपनी ज़बाने मुबारक पकड़ कर फ़रमाया कि इसका। *(मिश्कात)*

इनके अलावा और बहुत सी रिवायात में मुख़्तलिफ़ उन्वानों से यह चीज़ वारिद हुई है। हम लोग इससे बहुत ही ग़ाफ़िल हैं। यक़ीनन आदमी को इसका अक्सर लिहाज़ रखना चाहिए कि ज़बान से जो कुछ कह रहा है, उससे अगर कोई नफ़ा न पहुँचे तो कम से कम किसी आफ़त और मुसीबत तो में गिरफ़्तार न हो।

हज़रत सुफ़्यान सोरी रह॰ मशहूर इमामे हदीस और फ़िक़्ह हैं फ़रमाते हैं मुझ से एक गुनाह सादिर हो गया था। जिसकी वजह से पांच महीने तहज्जुद से महरूम रहा। किसी ने पूछा ऐसा क्या गुनाह हो गया था? फ़रमाया एक शख़्स रो रहा था। मैंने अपने दिल में यह कहा था, यह शख़्स रियाकार है। *(एहया)*

यह दिल में कहने की नहूसत है, हम लोग इससे कहीं ज़्यादा सख़्त लफ़्ज़ ज़बान से लोगों के मुताल्लिक़ कहते रहते हैं और बे-वजह कहते रहते हैं और अगर उससे मुख़ालफ़त भी हो, फिर तो उसके ऊपर बुहतान बांधने में ज़रा भी कमी नहीं करते, उसके हर हुनर को ऐब और हर ऐब को ज्यादा वक़ीअ़ बता कर शोहरत कर देते हैं।

(۸) عن ابی ہریرۃ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم مانقصت صدقۃ من مال ومازاد اللہ عبدًا بعفوالاعزا وماتوا ضع احد للّٰہ الا رفعہ رواہ مسلم (مشکوٰۃ)

8. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि सदक़ा करना माल को कम नहीं करता और किसी ख़तावार के क़ुसूर को माफ़ कर देना माफ़ करने वाले की इज़्ज़त ही को बढ़ाता है और जो शख़्स अल्लाह जल्ल शानुहू की रिज़ा की ख़ातिर तवाज़ो इख़्तियार करता है, तो हक़ तआला शानुहू उसको रफ़अत और बुलंदी अता फ़रमाते हैं।

फ़ायदाः- इस हदीस पाक में तीन मज़मून वारिद हुए हैं -

1. यह कि सदक़ा देने से ज़ाहिर के एतिबार से अगरचे माल में कमी मालूम होती है, लेकिन हक़ीक़त में माल में उससे कमी नहीं होती, बल्कि उसका बदल और बेहतरीन बदल आख़िरत में तो मिलता ही है, जैसा कि अब तक की सब आयात और रिवायात से बकसरत मालूम हो चुका है, दुनिया में भी अक्सर उसका बदल मिलता है जैसा कि आयात में नं॰ 14 पर इसकी तरफ़ इशारा गुज़र चुका है और नं॰ 20 पर तो गोया इसकी तस्रीह (खुलासा) गुज़र चुकी है कि जो कुछ तुम (अल्लाह के रास्ते में) ख़र्च करोगे, अल्लाह जल्ल शानुहू उसका बदल अता करेगा और उस आयत के ज़ैल में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुतअद्दद इर्शादात इसकी ताईद में गुज़र चुके हैं और अहादीस के ज़ैल (तहत) में नं॰ 2 पर हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद गुज़र चुका है कि रोज़ाना दो फ़रिश्ते यह दुआ करते हैं कि ऐ अल्लाह! ख़र्च करने वाले को बदल अता फ़रमा और रोकने वाले को बर्बादी अता कर।

हज़रत अबू कब्शा रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया है कि तीन चीज़ें हैं, मैं क़सम खा कर बयान करता हूँ और इसके बाद एक बात ख़ास तौर से तुम्हें बताऊँगा, इसको अच्छी तरह महफ़ूज़ रखना वह तीन बातें जिन पर मैं क़सम खाता हूँ उनमें से अव्वल यह है कि किसी बन्दे का माल सदक़ा करने से कम नहीं होता और दूसरी यह है कि जिस शख़्स पर ज़ुल्म किया जाए और वह उस पर सब्र करे तो हक़ तआला शानुहू उस सब्र की वजह से उसकी इज़्ज़त बढ़ाते हैं और तीसरी यह है कि जो शख़्स लोगों से मांगने का दरवाज़ा खोलेगा, हक़ तआला शानुहू उस

पर फ़क्र का दरवाज़ा खोलते हैं। इन तीन के बाद एक बात तुम्हें बताता हूं, उसको महफ़ूज़ रखो, वह यह है कि दुनिया में चार क़िस्म के आदमी होते हैं-

1. एक वह जिसको हक़ तआला शानुहू ने इल्म भी अता फ़रमाया और माल भी अता फ़रमाया। वह (अपने इल्म की वजह से) अपने माल में अल्लाह से डरता है (कि उसकी ख़िलाफ़े मर्ज़ी ख़र्च नहीं करता), बल्कि सिला रहमी करता है और अल्लाह के लिए उस माल में नेक अमल करता है, इसके हुक़ूक़ अदा करता है। यह शख़्स सबसे ऊँचे दर्जों में है।

2. दूसरा वह शख़्स है जिसको अल्लाह जल्ल शानुहू ने इल्म अता फ़रमाया और माल नहीं दिया। उसकी नीयत सच्ची है। वह तमन्ना करता है कि अगर मेरे पास माल होता तो मैं भी फ़लां की तरह से (नेक कामों में) ख़र्च करता, तो हक़ तलाआ शानुहू उसकी नीयत की वजह से उसको भी वही सवाब देता है, जो पहले का है और ये दोनों सवाब में बराबर हो जाते हैं।

3. तीसरे वह शख़्स है जिसको अल्लाह तआला जल्ल शानुहू ने माल अता किया मगर इल्म नहीं दिया, वह अपने माल में गड़बड़ करता है (बे-महल, लह्व व लअिब और शह्वतों में ख़र्च करता है), न उस माल में अल्लाह का ख़ौफ़ करता है, न सिला रहमी करता है, न हक़ के मुवाफ़िक़ ख़र्च करता है। यह शख़्स (क़ियामत में) ख़बीस तरीन दर्जे में होगा

4. चौथा वह शख़्स है जिसको अल्लाह जल्ल शानुहू ने न माल अता किया, न इल्म दिया, वह तमन्ना करता है, अगर मेरे पास माल हो तो मैं भी फ़लां (यानी नं० 3) की तरह ख़र्च करूँ। तो उसको उसकी नीयत का गुनाह होगा और वबाल में यह और नं० 3 बराबर हो जायेंगे।

(मिश्कात, तिर्मिज़ी की रिवायत)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि सदक़ा करना माल को कम नहीं करता और जब कोई शख़्स सदक़ा करने के लिए हाथ बढ़ाता है तो वह माल फ़क़ीर के हाथ में जाने से पहले अल्लाह जल्ल शानुहू के पाक हाथ में जाता है (यानी क़ुबूल होता है) और जो शख़्स ऐसी हालत में दस्ते सवाल बढ़ाता है कि बग़ैर सवाल के उसका काम चल जाता हो तो हक़ तआला शानुहू उस पर फ़क्र का दरवाज़ा खोल देते हैं।

(तर्ग़ीब)

हज़रत क़ैस बिन सुलअ़ अंसारी रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मेरे भाईयों ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मेरी शिकायत की कि यह बहुत इसराफ़ (फ़ुज़ूल ख़र्ची) करता है और अपने माल को बेजा ख़र्च करता है। मैंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! मैं बाग़ में से अपना हिस्सा ले लेता हूँ और अल्लाह के रास्ते में भी ख़र्च करता हूँ। और जो मुझ से मिलने आते हैं उनको भी खिलाता हूँ। हुज़ूर सल्ल॰ ने मेरे सीने पर हाथ मार कर तीन बार फ़रमाया कि ख़र्च किया कर, अल्लाह जल्ल शानुहू तुझ पर ख़र्च फ़रमायेंगे। इसके कुछ अर्से बाद मैं एक जिहाद के सफ़र में चला तो मेरे पास सवारी भी अपनी थी और अपने सब घर वालों से ज़्यादा सरवत (मालदारी) मुझे हासिल थी। *(तर्ग़ीब)*

यानी जो लोग बड़ी एहतियात के साथ ख़र्च करते थे, उनके पास इतना न था जितना मुझ बे-हद ख़र्च करने वाले के पास था।

हज़रत जाबिर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुत्बे में इर्शाद फ़रमाया, ऐ लोगो ! अल्लाह से तौबा करो इसके पहले कि तुम्हें मौत आ जाये और नेक कामों में जल्दी करो इससे पहले कि तुम इधर उधर मश्ग़ूल हो जाओ और अपने और अल्लाह जल्ल शानुहू के दर्मियान ताल्लुक़ात को जोड़ लो, उसका ज़िक्र कसरत से करके और मख़्फ़ी और एलानिया सदक़ा बहुत कसरत से देकर कि इसकी वजह से तुम्हें रिज़्क़ दिया जाएगा, तुम्हारी मदद की जाएगी, तुम्हारे नुक़्सान की तलाफ़ी की जाएगी। *(तर्ग़ीब)*

एक हदीस में आया है कि सदक़े के ज़रिये रिज़्क़ पर मदद चाहो।

दूसरी हदीस में आया है कि सदक़े के ज़रिए से रिज़्क़ उतारो। *(कन्ज़)*

एक हदीस में आया है कि सदक़े से माल में ज़्यादती होती है। *(कन्ज़)*

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि॰ कहते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि तीन चीज़ें हैं। क़सम है उस पाक ज़ात की , जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है कि मैं इन चीज़ों पर क़सम खाता हूँ, अव्वल यह है कि सदक़ा करने से माल कम नहीं होता, इसलिए ख़ूब सदक़ा किया करो। दूसरे यह कि जिस बन्दे पर कोई ज़ुल्म किया जाए और वह उसको

माफ़ कर दे तो हक़ तआला शानुहू क़ियामत में उसकी इज़्ज़त बढ़ाते हैं। तीसरी बात यह है कि नहीं खोलता कोई बन्दा सवाल के दरवाज़े को मगर हक़ तआला शानुहू उस पर फ़क़्र का दरवाज़ा खोल देते हैं। *(तर्ग़ीब)*

हज़रत अबू सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से भी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नक़ल किया गया कि सदक़ा करने से माल कम नहीं होता, पस सदक़ा किया करो। *(दुर्रे मंसूर, अव्वल)*

कम न होने का मतलब बज़ाहिर यही है कि हक़ तआला शानुहू उसका बेहतरीन बदल बहुत जल्द अता फ़रमाते हैं।

हज़रत हबीब अजमी रह॰ मशहूर बुज़ुर्ग हैं, उनकी बीवी एक मर्तबा आटा गूंधकर बराबर के घर से आग लेने गयीं, पीछे कोई साइल आ गया। हज़रत हबीब रह॰ ने वह आटा उस साइल को दे दिया, यह जब आग लेकर आयीं तो आटा नदारद। ख़ाविंद से पूछा, आटा क्या हुआ? वह कहने लगे कि वह रोटी पकने गया है। उनको यक़ीन न आया। इस्रार करने लगीं। उन्होंने फ़रमाया कि वह तो मैं ने सदक़ा कर दिया। कहने लगीं, सुब्हानल्लाह ! तुमने इतना भी ख़्याल न किया कि इतना ही आटा था, अब सब क्या खाएंगे, आख़िर हमारे लिए भी तो कुछ चाहिए था। वह कह ही रही थीं, कि एक आदमी बड़े प्याले में गोश्त और रोटियां लेकर हाज़िर हुआ। कहने लगीं कैसे जल्दी पका लाए और सालन इज़ाफ़े में साथ लाए। *(रौज़)*

इस क़िस्म के वाक़िआत कसरत से पेश आते हैं, मगर हम चूंकि हक़ तआला शानुहू के साथ ताल्लुक़ नहीं रखते, इसलिए ग़ौर भी नहीं करते कि यह नेमत किस चीज़ के बदले में मिली, ऐसी चीज़ों को समझते हैं कि इत्तिफ़ाक़न फ़लां चीज़ मिल गयी, वरना क्या होता, हालांकि वह चीज़ आती है ख़र्च करने की वजह से।

(٩) عن ابی هریرةؓ عن النبی صلی اللّٰه علیه وسلم قال بینا رجل بفلاة
من الارض فسمع صوتا فی سحابة اسق حدیقة فلان فتنحی ذلك
السحاب فافرغ ماءه فی حرة فاذا شرجة من تلك الشراج قد استوعبت
ذلك الماء كله فتتبع الماء فاذا رجل قائم فی حدیقته یحول الماء
بمسحاته فقال له یا عبد اللّٰه ما اسمك قال فلان الاسم الذی سمع فی
السحابة فقال له یا عبد اللّٰه لم تسألنی عن اسمی فقال انی سمعت

صوتا فی السحاب الذی هذا ماء ہ ویقول اسق حدیقة فلان لا سمك
فما تصنع فیها قال اما اذا قلت هذا فانی انظر الی ما یخرج منها
فاتصدق بثلثه واکل انا وعیالی ثلثا و ارد فیها ثلثه رواه مسلم (مشکوة)

9. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि एक शख़्स एक जंगल में था। उसने एक बादल में से आवाज़ सुनी कि फ़लां शख़्स के बाग़ को पानी दे। इस आवाज़ के बाद फ़ौरन वह बादल एक तरफ़ चला और एक पथरीली ज़मीन में ख़ूब पानी बरसा और वह सारा पानी एक नाले में जमा होकर चलने लगा। यह शख़्स जिसने आवाज़ सुनी थी, उस पानी के पीछे चल दिया। वह पानी एक जगह पहुँचा जहां एक शख़्स खड़ा हुआ बेलचे से अपने बाग़ में पानी फेर रहा था। उसने बाग़ वाले से पूछा कि तुम्हारा क्या नाम है? उन्होंने वही नाम बताया जो उसने बादल में से सुना था। फिर बाग़ वाले ने उससे पूछा कि तुमने मेरा नाम क्यों दयाफ़्त किया? उसने कहा कि मैं ने उस बादल में जिसका पानी यह आ रहा है यह आवाज़ सुनी थी कि फ़लां शख़्स के बाग़ को पानी दे, और तुम्हारा नाम बादल में सुना था। तुम इस बाग़ में ऐसा क्या काम करते हो? (जिसकी वजह से बादल को यह हुक्म हुआ कि उसके बाग़ को पानी दो) बाग़ वाले ने कहा कि जब तुमने यह सब कहा तो मुझे भी कहना पड़ा। मैं इसके अंदर जो कुछ पैदा होता है उसको (तीन हिस्से करता हूँ), एक हिस्सा यानी तिहाई तो फ़ौरन अल्लाह के रास्ते में सदक़ा कर देता हूँ और एक तिहाई मैं और मेरे अहल व अयाल खाते हैं और एक तिहाई इसी बाग़ की ज़रूरियात में लगा देता हूँ।

फ़ायदा:- किस क़दर बरकत है अल्लाह के नाम पर सिर्फ़ एक तिहाई आमदनी ख़र्च करने की कि पर्दा-ए-ग़ैब से उनके बाग़ की परवरिश के सामान होते हैं और खुली मिसाल है उस मज़्मून की जो पहली हदीस में गुज़रा कि सदक़ा करने से माल कम नहीं होता कि बाग़ की एक तिहाई पैदावार सदक़ा की थी और तमाम बाग़ के दोबारा फल लाने के इन्तिज़ामात हो रहे हैं। इस हदीस शरीफ़ से एक बेहतरीन सबक़ और भी हासिल होता है, वह यह कि आदमी को अपनी आमदनी का कुछ हिस्सा अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने के लिए

मुतअय्यन कर लेना ज़्यादा मुफ़ीद है और तजुर्बा भी यही है कि अगर आदमी यह तै कर ले कि इतनी मिक़्दार अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करनी है, तो फिर ख़ैर के मसारिफ़ और ख़र्च करने के मवाक़े बहुत मिलते रहते हैं और अगर यह ख़्याल करे कि जब कोई कारे ख़ैर होगा उस वक़्त देखा जाएगा तो अव्वल तो कोई कारे ख़ैर ऐसी हालत में बहुत कम समझ में आते हैं और हर मौक़े पर नफ़्स और शैतान यही ख़्याल दिल में डालते हैं कि यह कोई ज़रूरी ख़र्च तो है नहीं और अगर कोई बहुत ही अहम काम ऐसा भी हो जिसमें ख़र्च करना खुली ख़ैर है तो अक्सर मौजूद नहीं होता और मौजूदगी में भी अपनी ज़रूरियात सामने आकर कम से कम ख़र्च करने को दिल चाहता है और अगर महीने के शुरू ही में तन्ख़्वाह मिलने पर एक हिस्सा अलाहिदा करके रख दिया जाए या रोज़ाना तिजारत की आमदनी में से सन्दूक़ची का एक हिस्सा अलाहिदा करके उसमें मुतअय्यिना मिक़्दार डाल दी जाया करे कि यह सिर्फ़ अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करना है तो फिर ख़र्च के वक़्त दिल तंगी नहीं होती कि उसको तो बहरहाल वह मिक़्दार ख़र्च करना ही है। बड़ा मुजर्रब नुस्ख़ा है, जिसका दिल चाहे कुछ रोज़ तजुर्बा करके देख ले।

अबू वाइल रज़ि॰ कहते हैं कि मुझको हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ ने क़ुरैज़ा की तरफ़ भेजा और यह इर्शाद फ़रमाया कि मैं वहां जाकर वही अमल इख़्तियार करूँ जो बनी इस्राईल का एक नेक मर्द करता था कि एक तिहाई सदक़ा कर दूँ, और एक तिहाई उसमें छोड़ दूँ और एक तिहाई उनके पास ले आऊँ। (कन्ज़)

इससे मालूम होता है कि सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ भी इस नुस्ख़े पर अमल फ़रमाते थे।

(١٠) عن ابی ہریرةؓ قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم غفرلامراة مومسة مرت بکلب علی راس رکی یلهث کادیقتله العطش فنزعت خفها فاوثقته بخمارها فنزعت له من الماء فغفرلها بذلك قیل ان لنا فی البهائم اجرا قال فی كل ذات کبد رطبة اجر متفق علیه. (مشکوٰة)

10. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है

कि एक फ़ाहिशा औरत (रंडी) की इतनी बात पर बख़्शिश कर दी गयी कि वह चली जा रही थी उसने एक कुएं पर देखा कि एक कुत्ता खड़ा हुआ है जिसकी ज़बान प्यास की शिद्दत की वजह से बाहर निकली पड़ी है। और वह मरने को है। उस औरत ने अपने पांव का (चमड़े का) मोज़ा निकाला और उस को अपनी ओढ़नी में बांध कर कुएं से पानी निकाला और उस कुत्ते को पिलाया। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किसी ने पूछा ! क्या हम लोगों को जानवरों के सिलसिले में भी सवाब मिलता है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, हर जिगर रखने वाले (यानी जानदार) पर एहसान करने पर सवाब है। (मुसलमान हो या काफ़िर, आदमी हो या जानवर।) *(मिश्कात)*

फ़ायदाः– यह क़िस्सा बनी इस्राईल की एक रंडी का है जैसा कि कुछ रिवायात में इसकी तस्रीह है। *(कन्ज़)*

बुख़ारी शरीफ़ वग़ैरह में एक और क़िस्सा इसी क़िस्म का एक मर्द का भी आया है। हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि एक शख़्स जंगल में चला जा रहा था। उसको प्यास की शिद्दत ने बहुत परेशान किया। वह एक कुएं में उतरा और जब पानी पी कर बाहर निकला तो उसने देखा कि एक कुत्ता प्यास से बेताब है और प्यास की शिद्दत कि वजह से गारे में मुंह मार रहा है। उस शख़्स को ख़्याल हुआ कि उसको भी प्यास की वही तक्लीफ़ हो रही है जो मुझे थी। कोई चीज़ पानी निकालने की थी नहीं, इसलिए अपने पांव का मोज़ा निकाला और दोबारा कुएं में उतर कर उसको भरा और अपने मोज़े को मुंह से पकड़ कर दोनों हाथों की मदद से ऊपर चढ़ा और यह पानी उस कुत्ते को पिलाया। हक़ तआला शानुहू ने उसके इस कारनामे की क़द्र फ़रमायी और उस शख़्स की मग़्फ़िरत फ़रमा दी। सहाबा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! जानवरों में भी अज्र होता है? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हर जिगर रखने वाले (यानी जानदार) में अज्र है। *(बुख़ारी)*

एक और हदीस में है कि हर गरम जिगर वाले में अज्र है। *(कन्ज़)*

मोज़े में पानी भरने का मतलब यह है कि अरब में चमड़े के मोज़ों का आम रिवाज है और उनमें पानी भरने से कम गिरता है और मुंह से पकड़ने की ज़रूरत इसलिए पेश आयी कि जंगल के कुओं में आमतौर से कुछ ईंटें वग़ैरह

इस तरह बाहर को निकाल देते हैं कि जिनकी मदद से आदमी अगर उसके पास डोल रस्सी न हो तो नीचे उतर सकता है, लेकिन उतरने चढ़ने के लिए हाथों से मदद लेने की ज़रूरत ज़रूर पेश आया करती है इसलिऐ मोज़े को मुंह से संभालना पड़ा।

रिसाले के ख़त्म पर हिकायत के ज़ैल में नं॰ 47 पर एक ज़ालिम का क़िस्सा भी ऐसा ही है, जिसने एक ख़ारिशी कुत्ते को पनाह दी थी, उसकी वही बात पसंद आ गयी।

इन दोनों हदीसों में कुत्ते जैसे ज़लील जानवर पर एहसान करने का जब यह बदला है तो आदमी जो अशरफ़ुल मख़्लूक़ात है उस पर एहसान करने का क्या कुछ बदल होगा।

कुछ उलमा ने लिखा है कि ऐसे जानवर जिनको मारना मुस्तहब है जैसे सांप, बिच्छू वग़ैरह इससे मुस्तस्ना (अलग) हैं, लेकिन दूसरे अह्ले इल्म हज़रात फ़रमाते हैं कि इनके मारने के हुक्म का मतलब यह नहीं है कि अगर इनका प्यासा होना मालूम जो जाए तो इनको पानी न पिलाया जाये, इसलिए कि हम मुसलमानों को यह हुक्म है कि जिसको किसी वजह से क़त्ल किया जाए उसमें बेहतरी की रियायत रखी जाए। इसी वजह से जिसको क़त्ल करना ज़रूरी है उसके भी हाथ पांव वग़ैरह काटने की मनाही है। (फ़त्ह)

इन दोनों हदीसों से और इनके अलावा और भी बहुत सी अहादीस से एक लतीफ़ चीज़ यह भी मालूम हुई है कि हक़ तआला शानुहू को किसी शख़्स का कोई एक अमल भी अगर पसंद आ जाए तो उसकी बरकत से उम्र भर के गुनाह बख़्श देते हैं। उसके लुत्फ़ व करम के मुक़ाबले में यह कोई भी चीज़ नहीं है। अल-बत्ता क़ुबूल हो जाने और पसंद आ जाने की बात है। यह ज़रूरी नहीं कि हर गुनाहगार के सारे गुनाह पानी पिलाने से या किसी एक नेकी से बख़्श दिए जायेंगे, हां कोई चीज़ किसी की क़ुबूल हो जाए तो कोई मानेअ (रूकावट) नहीं। इसलिए आदमी को निहायत इख़्लास से कोशिश करते रहना चाहिए। अल्लाह जाने कौन सा अमल वहां पसंद आ जाए। फिर बेड़ा पार है। बड़ी चीज़ इख़्लास है। यानी ख़ालिस अल्लाह के लिए कोई काम करना, जिसमें दुनिया की कोई ग़रज़ शामिल न हो, न उससे दुनिया कमाना मक़्सूद हो, न शोहरत व वजाहत मतलूब हो, इनमें से कोई चीज़ शामिल हो जाती है तो वह

सारा किया कराया बर्बाद कर देती है और महज़ उसके लिए कोई काम हो तो मामूली से मामूली काम भी पहाड़ों से वज़न में बढ़ जाता है।

हज़रत लुक़्मान अलै॰ ने अपने साहबज़ादे को नसीहत की कि जब तुझ से कोई गुनाह सादिर हो जाए तो सदक़ा किया कर। *(एहया)*

इसलिए कि यह गुनाह को धोता है और अल्लाह जल्ल शानुहू के गुस्से को दूर करता है।

(١١) عن عليٌّ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ان في الجنة لغرفا يرى ظهورها من بطونها وبطونها من ظهورها قالوا لمن هي قال لمن اطاب الكلام واطعم الطعام وادام الصيام وصلى بالليل والناس نيام اخرجه ابن ابي شيبة والترمذي وغيرهما كذا في الدر

11. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जन्नत में ऐसे बालाख़ाने हैं। जो (गोया आईनों के बने हुए हैं कि) उनके अंदर की सब चीज़ें बाहर से नज़र आती हैं और उनके अंदर से बाहर की सब चीज़ें नज़र आती हैं। सहाबा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! ये किन लोगों के लिये हैं ? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि जो अच्छी तरह बात करें (यानी तुर्श रूई से मुंह चढ़ा कर बात न करें) और लोगों को खाना खिलाएं और हमेशा रोज़ा रखें और ऐसे वक़्त में रात को तहज्जुद पढ़ें कि लोग सो रहे हों।

फ़ायदाः– हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि॰ जो उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हुए थे यहूदी थे कहते हैं कि जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हिजरत करके मदीना तशरीफ़ लाए, मैं ख़बर सुनते ही फ़ौरन गया और आप सल्ल॰ का चेहरा-ए-मुबारक देखकर मैं ने कहा कि यह मुबारक चेहरा झूठे शख़्स का नहीं हो सकता। वहां पहुँच कर जो सबसे पहला इर्शाद हुज़ूर सल्ल॰ की ज़बाने मुबारक से निकला, वह यह था लोगो ! सलाम का आपस में रिवाज डालो और खाना खिलाया करो। सिला रहमी किया करो और रात के वक़्त जब सब लोग सोते हों, नमाज़ पढ़ा करो। सलामती के साथ जन्नत में दाख़िल हो जाओगे। *(मिश्कात)*

आयत के ज़ैल (तहत) में भी नं॰ 34 की तवील (लम्बी) आयत में

यह मज़्मून गुज़र चुका है कि हक़ तआला शानुहू की मुहब्बत में खाना खिलाते हैं। मिस्कीन को, और यतीम को और क़ैदी को और यह कहते हैं कि हम तुमको महज़ अल्लाह के वास्ते खाना खिलाते हैं, न तो हम तुमसे इसका बदला चाहते हैं और न शुक्रिया चाहते हैं।

एक हदीस में आया है कि जो शख़्स अपने भाई को रोटी खिलाए कि उसका पेट भर जाए और पानी पिलाए कि प्यास जाती रहे, हक़ तआला शानुहू उसके और जहन्नम के दर्मियान सात ख़ंदक़ें कर देते हैं। हर ख़ंदक इतनी बड़ी कि सात सौ साल में तै हो। (कन्ज़)

एक हदीस में है कि मख़्लूक़ सारी की सारी अल्लाह तलाआ की अयाल है (ब मंज़िला-ए-औलाद के) पस अल्लाह तआला को सबसे ज़्यादा महबूब वह है जो उसकी अयाल को ज़्यादा नफ़ा पहुँचाने वाला है। (कन्ज़)

एक हदीस में आया है कि हर भलाई सदक़ा है और इसमें यह भी दाख़िल है कि तू अपने भाई से ख़न्दा पेशानी से पेश आये और अपने डोल में से पड़ोसी के बर्तन में डाल दे। (कन्ज़)

अच्छी तरह गुफ़्तगू करने का अहम हिस्सा यह भी है कि उससे ख़न्दा पेशानी से बात करे। मुंह चढ़ा कर तुर्श रूई से बात न करे।

एक हदीस में आया है कि एहसान का कोई हिस्सा भी हक़ीर नहीं है चाहे इतना ही हो कि अपने भाई से ख़ंदा पेशानी ही से पेश आये। एक हदीस में है कि कोई शख़्स एहसान के किसी दर्जे को भी हक़ीर न समझे और कुछ भी न हो तो कम से कम अपने भाई से ख़ंदा पेशानी ही से पेश आये। (कन्ज़)

एक हदीस में आया है, तेरा अपने भाई से ख़न्दा पेशानी से पेश आना भी सदक़ा है, किसी को नेकी का हुक्म करना या बुराई से रोकना भी सदक़ा है, किसी भूले हुए को रास्ता बताना भी सदक़ा है रास्ते से किसी कांटे वग़ैरह तक्लीफ़ देने वाली चीज़ को हटाना भी सदक़ा है। अपने डोल से किसी के बर्तन में पानी डाल देना भी सदक़ा है। (कन्ज़)

एक हदीस में आया है कि क़ियामत के दिन जहन्नमी आदमी एक सफ़ में खड़े किए जायेंगे, उन पर एक मुस्लिम (कामिल जन्नती) गुज़रेगा। उस सफ़ में से एक शख़्स उससे कहेगा कि तू मेरे लिए अल्लाह तआला के यहां

सिफ़ारिश कर दे। वह पूछेगा कि तू कौन है ? वह जहन्नमी कहेगा कि तू मुझे नहीं पहचानता, तूने दुनिया में एक मर्तबा मुझसे पानी मांगा था जिस पर मैं ने तुझे पानी पिलाया था। इस पर वह सिफ़ारिश करेगा (और वह क़ुबूल हो जाएगी) इसी तरह दूसरा शख़्स कहेगा कि तूने मुझसे दुनिया में फ़लां चीज़ मांगी थी, वह मैं ने तुझे दी थी। (कन्ज़)

एक और हदीस में है, जहन्नमियों की सफ़ पर एक जन्नती का गुज़र होगा, तो उनमें से एक शख़्स इसको आवाज़ देकर कहेगा कि तुम मुझे नहीं पहचानते? मैं वही तो हूँ जिसने फ़लां दिन तुम्हें पानी पिलाया था, फ़लां वक़्त तुम्हें वुज़ू को पानी दिया था। (मिश्कात)

एक और हदीस में है कि क़ियामत के दिन जन्नती और जहन्नमी लोगों की जब सफ़ें लग जायेंगी, तो जहन्नमी सफ़ों में से एक शख़्स की नज़र जन्नती सफ़ों में से किसी शख़्स पर पड़ेगी, और वह उसको याद दिलायेगा कि मैं ने दुनिया में तेरे साथ फ़लां एहसान किया था। इस पर वह जन्नती शख़्स उसका हाथ पकड़ कर हक़ तआला शानुहू की बारगाह में अर्ज़ करेगा कि या अल्लाह! इसका मुझ पर फ़लां एहसान है। अल्लाह पाक की तरफ़ से इर्शाद होगा कि अल्लाह की रहमत के तुफ़ैल इसको जन्नत में दाख़िल कर दिया जाये। (कन्ज़)

एक हदीस में है कि फ़क़ीरों की जान पहचान कसरत से रखा करो और उनके ऊपर एहसानात किया करो। उनके पास बड़ी दौलत है किसी ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! वह दौलत क्या है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि उनसे क़ियामत के दिन कहा जायेगा कि जिस ने तुम्हें कोई टुकड़ा खिलाया हो या पानी पिलाया हो या कपड़ा दिया हो, उसका हाथ पकड़ कर जन्नत में पहुँचा दो।

एक हदीस में है कि हक़ तआला शानुहू फ़क़ीर से क़ियामत में इस तरह माज़रत करेंगे, जैसा कि आदमी आदमी से किया करता है और फ़रमायेंगे कि मेरी इज़्ज़त और जलाल की क़सम ! मैं ने दुनिया को तुझसे इसलिए नहीं हटाया था कि तू मेरे नज़दीक ज़लील था, बल्कि इसलिए हटाया था कि तेरे लिए आज बड़ा एज़ाज़ है। मेरे बन्दे उन जहन्नमी लोगों की सफ़ों में चला जा, जिसने तुझे मेरे लिए खाना खिलाया हो या कपड़ा दिया हो, वह तेरा है। वह इस हालत में उनमें दाख़िल होगा कि ये लोग मुँह तक पसीने में ग़र्क़ होंगे। वह पहचान कर उनको जन्नत में दाख़िल करेगा। (रौज़)

एक हदीस में है कि क़ियामत के दिन एक एलान होगा कि उम्मते मुहम्मदिया के फ़ुक़रा कहां हैं ? उठो और लोगों को मैदाने क़ियामत में से तलाश कर लो। जिस शख़्स ने तुम में से किसी को मेरे लिए एक लुक़्मा दिया हो या मेरे लिए कोई घूँट पानी का दिया हो या मेरे लिए कोई नया या पुराना कपड़ा दिया हो, उनके हाथ पकड़ कर जन्नत में दाख़िल कर दो। इस पर फ़ुक़रा-ए-उम्मत उठेंगे और किसी का हाथ पकड़ कर कहेंगे कि या अल्लाह ! इसने मुझे खाना खिलाया था, इसने मुझे पानी पिलाया था। कोई भी फ़ुक़रा-ए-उम्मत में से छोटा या बड़ा शख़्स ऐसा न होगा जो उनको जन्नत में दाख़िल न कराये।

(कन्ज़)

एक हदीस में आया है कि जो शख़्स किसी जानदार को, जो भूखा हो, खाना खिलाए, हक़ तआला शानुहू उसको जन्नत के बेहतरीन खानों में से खाना खिलाएंगे।

एक हदीस में आया है कि जिस घर से लोगों को खाना खिलाया जाता हो, ख़ैर उस घर की तरफ़ ऐसी तेज़ी से बढ़ती है जैसी तेज़ी से छुरी ऊँट के कोहान में चलती है। (कन्ज़)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० उम्दा खजूरें दूसरों को खिलाते और कहते कि जो शख़्स ज़्यादा खाएगा, उसको फ़ी खजूर एक दिरहम दिया जायेगा।

(एहया)

एक हदीस में है कि क़ियामत के दिन एलान करने वाला एलान करेगा, कहां हैं वे लोग जिन्होंने फ़क़ीरों और मिस्कीनों का इक्राम किया। आज तुम जन्नत में ऐसी तरह दाख़िल हो जाओ कि न तुम पर किसी क़िस्म का ख़ौफ़ है, न तुम ग़मगीन हो और एक एलान करने वाला एलान करेगा, कहां हैं वे लोग, जिन्होंने बीमार, फ़क़ीरों और ग़रीबों की इयादत क़ी, आज वे नूर के मिम्बरों पर बैठें और अल्लाह जल्ल शानुहू से बातें करें और दूसरे लोग हिसाब की सख़्ती में मुब्तला होंगे। (कन्ज़)

एक हदीस में है कितनी हूरें ऐसी हैं जिन का मह्र एक मुट्ठी भर खजूर या इतनी ही मिक़्दार में कोई चीज़ देना है। (कन्ज़)

एक हदीस में आया है कि भूखे को खाना खिलाने से ज़्यादा अफ़ज़ल कोई सदक़ा नहीं। (कन्ज़)

एक हदीस में आया है कि अल्लाह जल्ल शानुहू के नज़दीक सब आमाल से ज़्यादा महबूब किसी मुसलमान को ख़ुश करना या उस पर से ग़म का हटाना है या उस का क़र्ज़ अदा कर देना है या भूख की हालत में उसको खाना खिलाना है। (कन्ज़)

यानी ये सब आमाल ज़्यादा पसंदीदा हैं, जो भी हो सके। एक और हदीस में है कि मग़्फ़िरत को वाजिब करने वाली चीज़ों में किसी मुसलमान को ख़ुशी पहुँचाना है, उसकी भूख को ज़ाइल (ख़त्म) करना और उसकी मुसीबत को हटाना है। (कन्ज़)

एक और हदीस में आया है कि जो शख़्स अपने किसी मुसलमान भाई की दुन्यावी हाजत को पूरी करता है, हक़ तआला शानुहू उसकी बहत्तर हाजतें पूरी करते हैं, जिनमें से सबसे हल्की चीज़ उसके गुनाहों की मग़्फ़िरत है। (कन्ज़)

यानी और हाजतें मग़्फ़िरत से भी बढ़कर हैं, नीज़ (तथा) हदीस नं० 13 में भी इसका बयान आ रहा है।

(۱۲) عن اسماء قالت قال رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم انفقی ولا تحصی فیحصی اللّٰہ علیك ولا توعی فیوعی اللّٰہ علیك ارضخی

ما استطعت متفق علیہ کذا فی المشکوٰۃ

12. हज़रत अस्मा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया है कि (ख़ूब) ख़र्च किया कर और शुमार न कर (अगर ऐसा करेगी) तो अल्लाह जल्ल शानुहू भी तुझ पर शुमार करेगा और महफ़ूज़ करके न रख। (अगर ऐसा करेगी) तो अल्लाह जल्ल शानुहू तुझ पर महफ़ूज़ करके रखेगा (यानी कम अता करेगा), अता कर जितना भी तुझ से हो सके।

फ़ायदाः- यह हज़रत अस्मा रज़ि० हज़रत आइशा रज़ि० की हमशीरा (बहन) हैं। हुज़ूर सल्ल० ने इस पाक हदीस में कई नौअ् से ख़र्च के ज़्यादा करने की तर्ग़ीब इर्शाद फ़रमायी, अव्वल तो ख़ूब ख़र्च करने का साफ़ साफ़ हुक्म ही फ़रमाया, लेकिन यह ज़ाहिर है कि ख़र्च वही पसंदीदा है जो शरीअते पाक के मुवाफ़िक़ अल्लाह की रिज़ा की चीज़ों में किया जाए। शरीअत के ख़िलाफ़ ख़र्च

करना सवाब को वाजिब करने वाला नहीं, वबाल है। इसके बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शुमार करने की मुमानअत (मनाही) फ़रमायी जो पहले ही मज़्मून की ताकीद है।

इसके उलमा ने दो मतलब इर्शाद फ़रमाये हैं।

एक यह कि गिनने से मुराद गिन गिन कर रखना और जमा करना है और मतलब यह है कि अगर तू गिन गिन कर रखेगी तो अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से अता में भी तंगी की जाएगी, जैसा करना वैसा भरना।

दूसरा मतलब यह है कि फ़ुक़रा को देने में शुमार न करना, ताकि अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से बदला और सवाब भी बेहिसाब मिले। इसके बाद फिर इस मज़्मून को और ज़्यादा मुअक्कद[1] फ़रमाया कि महफ़ूज़ कर के न रख। अगर तू अपने माल को अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने के बजाए महफ़ूज़ कर के रखेगी तो अल्लाह जल्ल शानुहू भी अपनी अता और एहसान व करम की ज़्यादती को तुझ से रोक लेगा। इसके बाद उसको और ज़्यादा मुअक्कद करने को इर्शाद फ़रमाया कि जितना भी तुम से हो सके ख़र्च किया करो यानी कम व ज़्यादा की परवाह न किया कर, न यह ख़्याल कर कि इतनी बड़ी मिक़्दार मुनासिब नहीं। न यह सोचा कर कि इतनी ज़रा सी चीज़ क्या दूँ। जो अपनी ताक़त और क़ुदरत में हो, उसके ख़र्च करने में दरेग़ न किया कर।

दूसरी अहादीस में कसरत से यह मज़्मून वारिद हुआ है कि जहन्नम की आग से सदक़े के साथ अपना बचाव और अपनी हिफ़ाज़त करो चाहे खजूर का टुकड़ा ही क्यों न हो कि वह भी जहन्नम की आग से हिफ़ाज़त का सबब है।

बुख़ारी शरीफ़ की एक और हदीस में है कि हज़रत अस्मा रज़ि॰ ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दर्याफ़्त किया कि हुज़ूर सल्ल॰ मेरे पास अपनी तो कोई चीज़ अब है नहीं, सिर्फ़ वही होता है जो (मेरे ख़ाविंद) हज़रत ज़ुबैर रज़ि॰ दे दें। क्या उसमें से सदक़ा कर दिया करूँ? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि सदक़ा किया कर और बर्तन में महफ़ूज़ करके न रखा कर (अगर ऐसा करेगी) तो अल्लाह जल्ल शानुहू भी तुझ से (अपनी अता को) महफ़ूज़ फ़रमा लेगा। इस हदीस पाक में अगर हज़रत ज़ुबैर रज़ि॰ के देने से मुराद उनका

---

1. यानी ज़्यादा ताकीद करते हुए फ़रमाया।

हज़रत अस्मा रज़ि॰ को मालिक बना देना है, तब तो यह माल हज़रत अस्मा रज़ि॰ का हो गया, वह जिस तरह चाहें अपने माल को ख़र्च करें, उनको इख़्तियार है, और अगर इससे मुराद घर के ख़र्चों के वास्ते देना है तो फिर हुज़ूर सल्ल॰ के इर्शादे मुबारक का मतलब यह है कि हुज़ूर सल्ल॰ को हज़रत ज़ुबैर रज़ि॰ की तबीअत से इसका अन्दाज़ा हो गया होगा कि उनको सदक़ा करने में गरानी नहीं होती, और इसकी वजह यह भी हो सकती है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ुबैर रज़ि॰ को ख़ास तौर से सदक़ा करने की तर्ग़ीब और ताकीद फ़रमायी थी। ये हज़रात सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उमूमी तर्ग़ीबात पर जान व दिल से फ़िदा होते थे और अगर किसी शख़्स को ख़ुसूसी तर्ग़ीब व नसीहत हुज़ूर सल्ल॰ फ़रमा देते तो उसकी क़द्रदानी का तो पूछना ही क्या है, सैंकड़ों नहीं, हज़ारों वाक़िआत इसके शाहिद हैं। 'हिकायाते सहाबा रज़ि॰' के नवीं बाब में मिसाल के तौर पर कुछ क़िस्से इसके लिख चुका हूँ।

अल्लामा सुयूती रह॰ ने दुर्रे मन्सूर में हज़रत ज़ुबैर रज़ि॰ से एक क़िस्सा नक़ल किया है, जिसमें हुज़ूर सल्ल॰ ने उनको ख़र्च करने की ख़ुसूसी तर्ग़ीब दी है। हज़रत ज़ुबैर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और हुज़ूर सल्ल॰ के सामने बैठा था कि हुज़ूर सल्ल॰ ने (एहतिमाम और तंबीह के तौर पर) मेरे अमामे का पिछला किनारा पकड़ कर फ़रमाया कि ऐ ज़ुबैर! मैं अल्लाह का क़ासिद हूँ। तुम्हारी तरफ़ ख़ास तौर से और सब लोगों की तरफ़ आम तौर से (यानी यह बात तुम्हें अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ से ख़ास तौर से) पहुँचाता हूँ, तुम्हें मालूम है कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने क्या फ़रमाया है? मैंने अर्ज़ किया कि अल्लाह और उसके रसूल सल्ल॰ ही ज़्यादा जानते हैं। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि अल्लाह जल्ल शानुहू जब अपने अर्श पर जल्वा फ़रमा था तो अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने बन्दों की तरफ़ (करम की) नज़र फ़रमायी और यह इर्शाद फ़रमाया कि मेरे बन्दो! तुम मेरी मख़्लूक़ हो। मैं तुम्हारा परवरदिगार हूँ। तुम्हारी रोज़ियां मेरे कब्ज़े में हैं। तुम अपने आपको ऐसी चीज़ के अन्दर मशक़्क़त में न डालो जिसका ज़िम्मा मैं ने ले रखा है।, अपनी रोज़ियां मुझसे मांगो। इसके बाद हुज़ूर सल्ल॰ ने फिर फ़रमाया कि और बताऊँ तुम्हारे रब ने क्या कहा? यह कहा कि ऐ बन्दे! तू लोगों पर ख़र्च कर, मैं तुझ पर ख़र्च करूँगा, तू लोगों पर फ़राख़ी

कर, मैं तुझ पर फ़राख़ी करूँगा। तू लोगों पर ख़र्च में तंगी न कर ताकि मैं तुझ पर तंगी न करूँ, तू लोगों से (बचा कर) बांध कर न रख, ताकि मैं भी तुझ से बांध कर न रखूं, तू ख़ज़ाना जमा करके न रख, ताकि मैं तेरे (न देने) पर जमा करके रख लूं। रिज़्क़ का दरवाज़ा सात आसमानों के ऊपर से खुला हुआ है। जो अर्श से मिला हुआ है। वह न रात को बन्द होता है, न दिन में। अल्लाह जल्ल शानुहू उस दरवाज़े से हर शख़्स पर रोज़ी उतारता रहता है, उस शख़्स की नीयत के बक़द्र उस की अता के बक़द्र, उसके सदक़े के बक़द्र, उसके इख़राजात के बक़द्र उसको अता फ़रमाता है। जो शख़्स ज़्यादा ख़र्च करता है, उसके लिए ज़्यादा उतारा जाता है, जो कम ख़र्च करता है, उसके लिए कमी कर दी जाती है, और जो रोक कर रखता है, उससे रोक दिया जाता है।

ऐ ज़ुबैर ! ख़ुद भी खाओ, दूसरों को भी खिलाओ और बांध कर न रखो कि तुम पर बांध कर रख दिया जाए और शुमार न करो कि तुम पर भी शुमार कर दिया जाये, तंगी न करो कि तुम पर भी तंगी कर दी जाए। मशक़्क़त में (लोगों को) न डालो! कि तुम पर मशक़्क़त डाल दी जाए।

ऐ ज़ुबैर ! अल्लाह जल्ल शानुहू ख़र्च करने को पसंद करता है। और तंगी को ना-पसंद करता है। सख़ावत (अल्लाह जल्ल शानुहू के साथ) यक़ीन से होती है और बुख़्ल शक से पैदा होता है। जो शख़्स (अल्लाह जल्ल शानुहू के साथ कामिल) यक़ीन रखता है, वह जहन्नम में दाख़िल न होगा। और जो शक करता है, वह जन्नत में दाख़िल न होगा। ज़ुबैर ! अल्लाह जल्ल शानुहू सख़ावत को पसंद करता है, चाहे खजूर का एक टुकड़ा ही क्यों न हो, और अल्लाह तआला बहादुरी को पसंद करता है। चाहे सांप बिच्छु ही के मारने में क्यों न हो, ऐ ज़ुबैर ! अल्लाह जल्ल शानुहू ज़लज़लों (और हादसों) के वक़्त सब्र को महबूब रखता है और शह्वतों के ग़लबे के वक़्त ऐसे यक़ीन को पसंद करता है जो सब जगह सरायत कर जाए (और शह्वत के पूरा करने से रोक दे) और (दीन में) शुबहात पैदा होने के वक़्त अक़्ले कामिल को महबूब रखता है और हराम और गंदी चीज़ों के सामने आने पर तक़्वा को पसंद करता है। ऐ ज़ुबैर, भाईयों की ताज़ीम करो और नेक लोगों की अज़्मत बढ़ाओ और अच्छे आदमियों का एज़ाज़ करो, पड़ोसियों के साथ हुस्ने सुलूक करो और फ़ासिक़ लोगों के साथ रास्ता भी न चलो। जो इन चीज़ों का एहतिमाम करेगा, जन्नत में बग़ैर अज़ाब और बग़ैर हिसाब के दाख़िल होगा, यह अल्लाह की नसीहत है, मुझको और मेरी

नसीहत है तुमको।

आयत के ज़ैल में नं॰ 20 पर भी इस क़िस्से की तरफ़ मुख़्तसर इशारा गुज़र चुका है और इसके मुताल्लिक़ कलाम भी। हुज़ूर सल्ल॰ के इस तफ़्सीली इर्शाद के बाद हज़रत ज़ुबैर रज़ि॰ की तबीअत का जो अन्दाज़ा होगा वह ज़ाहिर है। ऐसी हालत में हज़रत असमा रज़ि॰ को उनके माल में से बे दरेग़ ख़र्च करने को अगर फ़रमाया हो तो बेमहल नहीं है। हज़रत ज़ुबैर रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फूफीज़ाद भाई भी हैं। अगर क़राबत वालों से ताल्लुक़ात क़वी (मज़बूत) हों तो इस क़िस्म के तसर्रूफ़ात ताल्लुक़ात की क़ुव्वत और ज़्यादती का सबब हुआ करते हैं, जिन का मुशाहदा और तजुर्बा इस गये गुज़रे ज़माने में भी होता रहता है। इस सब के अलावा ख़ुद हज़रत ज़ुबैर रज़ि॰ की फ़य्याज़ी का क्या पूछना।

साहबे इसाबा ने लिखा है कि उनके एक हज़ार ग़ुलाम थे जो उनको ख़िराज अदा किया करते थे, लेकिन उसमें से ज़रा सा भी घर में न जाता था, यानी सब का सब सदक़ा ही होता था। इसी फ़य्याज़ी का यह समरा (नतीजा) था कि इंतिक़ाल के वक़्त बाईस लाख दिरम क़र्ज़ा था जिसका मुफ़स्सल क़िस्सा बुख़ारी शरीफ़ में मज़्कूर है और क़र्ज़े की सूरत क्या थी, यह कि अमानतदार बहुत थे, मुत्ताात बहुत थे। लोग अपनी अमानतें रखवाते वह यह इर्शाद फ़रमा देते कि अमानत रखने की जगह मेरे पास है नहीं, मुझे क़र्ज़ दे दो जब ज़रूरत हो ले लेना। उसको बजाय अमानत के क़र्ज़ लेते और ख़र्च कर देते, और एक हज़रत ज़ुबैर रज़ि॰ ही क्या, इन सब हज़रात का एक ही सा हाल था। इन हज़रात के यहां माल रखने की चीज़ थी ही नहीं।

हज़रत उमर रज़ि॰ ने एक मर्तबा एक थैली में चार सौ दीनार (अशर्फ़ियां) भरीं और ग़ुलाम से फ़रमाया कि यह अबू उबैदा रज़ि॰ को दे आओ कि अपनी ज़रूरियात में ख़र्च कर लें और ग़ुलाम से यह भी फ़रमा दिया कि इनको देने के बाद वहीं किसी काम में मशग़ूल हो जाना ताकि देखो कि वह इनको क्या करते हैं? वह ग़ुलाम ले गये और ले जाकर उनकी ख़िदमत में पेश कर दिए। हज़रत अबू उबैदा रज़ि॰ ने हज़रत उमर रज़ि॰ को बड़ी दुआएं दीं और अपनी बांदी को बुलाया और उसके हाथ से सात फ़लां को और पांच फ़लां को, इतने इसको, इतने उसको, उसी मज्लिस में सब ख़त्म कर दिए। ग़ुलाम ने वापस आकर हज़रत उमर रज़ि॰ को क़िस्सा सुनाया। फिर हज़रत उमर रज़ि॰ ने उतनी

ही मिक़्दार उनके हाथ हज़रत मुआज़ रज़ि॰ को भेजी और उस वक़्त भी यही कहा कि वहां किसी काम में मश्गूल हो जाना ताकि यह देखो कि वह क्या करते हैं? उन्होंने भी बांदी के हाथ उसी वक़्त फ़लां घर इतने, फ़लां घर इतने भेजने शुरू करा दिये। इतने में हज़रत मुआज़ रज़ि॰ की बीवी आयीं कि हम भी तो मिस्कीन और ज़रूरत मंद हैं, कुछ हमें भी दे दो। हज़रत मुआज़ रज़ि॰ ने वह थैली उनके पास फेंक दी, उसमें दो बाक़ी रह गयी थीं बाक़ी सब तक़्सीम हो चुकी थीं। गुलाम ने आकर हज़रत उमर रज़ि॰ को क़िस्सा सुनाया। हज़रत उमर रज़ि॰ बहुत ख़ुश हुए और फ़रमाया कि ये सब भाई-भाई हैं यानी सब एक ही नमूने के हैं। *(तर्ग़ीब)*

(۱۳)عن ابی سعیدؓ قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم ایما مسلم کسا مسلما ثوبا علی عری کساه الله من خضر الجنة وایما مسلم اطعم مسلمًا علی جوع اطعمه الله من ثمار الجنة وایما مسلم سقی مسلمًا علی ظمأ سقاه الله من الرحیق المختوم رواه ابوداؤد والترمذی کذا فی المشکوٰة.

13. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स किसी मुसलमान को नंगेपन की हालत में एक कपड़ा पहनाएगा, हक़ तआला शानुहू उसको जन्नत के सब्ज़ लिबास पहनाएगा और जो शख़्स किसी मुसलमान को भूख की हालत में कुछ खिलाएगा, हक़ तआला शानुहू उसको जन्नत के फल खिलाएगा और जो शख़्स किसी मुसलमान को प्यास की हालत में पानी पिलाएगा, अल्लाह जल्ल शानुहू उसको ऐसी शराबे जन्नत पिलाएगा जिस पर मुहर लगी हुई होगी।

फ़ायदा:- मुहर लगी हुई शराब से उस पाक शराब की तरफ़ इशारा है जो क़ुरआन पाक में नेक लोगों के लिए तज्वीज़ की गयी है। चुनांचे अल्लाह जल्ल शानुहू का पाक इर्शाद सूरः तत्फ़ीफ़ में है:-

اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِیْ نَعِیْمٍoلا عَلَی الْاَرَآئِکِ یَنْظُرُوْنَ تَعْرِفُ فِیْ وُجُوْهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِیْمِo
یُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِیْقٍ مَّخْتُوْمٍo خِتٰمُهٗ مِسْکٌ وَفِیْ ذٰلِکَ فَلْیَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُوْنَo

तर्जुमा:- नेक लोग बड़ी आसाइश में होंगे, मसहरियों पर बैठे हुए (बहिश्त के अजाइब) देखते होंगे। ऐ मुख़ातब ! तू उनके चेहरों में आसाइश की बशाशत और तरावट पहचानेगा। उनको पीने के लिए ख़ालिस शराब सर ब मुहर,

जिस पर मुश्क की मुहर होगी, मिलेगी। हिर्स करने वालों को इस चीज़ में हिर्स करना चाहिए यानी हिर्स करने की ये चीज़ें हैं।

मुजाहिद रह० कहते हैं कि रहीक़ जन्नत की शराबों में से एक शराब है जो मुश्क से बनायी गयी है और उसमें तस्नीम की आमेज़िश (मिलावट) है। तस्नीम का ज़िक्र इसी सूरः में इस आयत से आगे है।

क़तादा रज़ि० कहते हैं कि तस्नीम जन्नत की शराबों में से अफ़्ज़ल तरीन शराब है। मुक़र्रबीन उसको ख़ालिस पिएंगे और दूसरे दर्जे के लोगों की शराबों में उसकी आमेज़िश होगी।

हसन बसरी रह० से भी नक़ल किया गया है कि रहीक़ एक शराब है जिसमें तस्नीम की आमेज़िश है।

हदीसे बाला में जो फ़ज़ीलत इर्शाद फ़रमायी है, वह नंगेपन की हालत, भूख और प्यास की हालत में कपड़ा पहनाने और खिलाने पिलाने की फ़ज़ीलत बयान फ़रमायी है। यह हालत ख़र्च करने वाले की है या जिस पर ख़र्च किया गया है उसकी है, दोनों एहतिमाल हैं –

पहली सूरत में हदीस पाक का मतलब यह है कि ख़ुद नंगा है यानी कपड़े का ज़रूरतमंद है और दूसरे को इस हालत में कपड़ा पहनाये, ख़ुद भूखा है और खाना कुछ मयस्सर हो गया तो दूसरे को तर्जीह देता है, ख़ुद प्यासा है लेकिन अगर पानी मिल गया तो बजाए ख़ुद पीने के दूसरे पर ईसार करता है। इस मतलब के मुवाफ़िक़ यह हदीस पाक क़ुरआन पाक की उस आयते शरीफ़ा की तफ़्सीर होगी जो आयात के सिलसिले में नं० 28 पर गुज़री है –

يُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۥ

युअ्सि रू-न अला अन्फ़ुसिहिम व लौ का-न बिहिम ख़सासः०

कि ये लोग अपने ऊपर दूसरों को तर्जीह देते हैं, अगरचे ख़ुद को एह्तियाज हो।

दूसरा मतलब यह है कि ये सब हालात उन लोगों के हैं जिन पर ख़र्च किया जा रहा है। इस मतलब के मुवाफ़िक़ हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि हर चीज़ जितनी ज़्यादा ज़रूरत के मौक़े पर ख़र्च की जाएगी, उतने ही ज़्यादा सवाब की बात होगी। एक ग़रीब को कपड़ा दिया जाए, इसका बहरहाल सवाब

है लेकिन ऐसे शख़्स को कपड़ा पहनाया जाए जो नंगा फिर रहा है, फटे हुए कपड़े पहन रहा है, इसका सवाब आम ग़रीबों से कहीं ज़्यादा है। एक फ़क़ीर को खाना खिला दिया जाता है, हर हाल में उसका सवाब है लेकिन ऐसे शख़्स को खाना खिलाया जाए, जिस पर फ़ाक़ा मुसल्लत हो, उसका सवाब बहुत ज़्यादा है। इसी तरह हर शख़्स को पानी पिलाने का सवाब है लेकिन एक शख़्स को प्यास सता रही है, उसको पानी पिलाने का सवाब इतना ज़्यादा है कि उम्र भर के गुनाहों का कफ़्फ़ारा भी कभी बन जाता है। हदीस नं॰ 10 पर अभी गुज़र चुका है कि एक प्यासे कुत्ते को पानी पिलाने से रंडी के उम्र भर के गुनाह माफ़ हो गये।

सिलसिला-ए-आयात में नं॰ 23 के ज़ैल में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद गुज़र चुका है कि मिस्कीन वह नहीं है, जिसको एक एक, दो दो लुक़्मा दर ब दर फिराता हो। असल मिस्कीन वह है जिसके पास न ख़ुद इतना माल हो कि जो उसकी हाजत को काफ़ी हो न लोगों को उसका हाल मालूम हो कि उसकी मदद करें। यही शख़्स अस्ल महरूम है। हदीस नं॰ 11 के ज़ैल में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बहुत से इर्शादात भूखे को खाना खिलाने की फ़ज़ीलत में गुज़र चुके हैं।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जो शख़्स अपने किसी भाई की हाजत रवाई में मश्ग़ूल हो, हक़ तआला शानुहू उसकी हाजत रवाई में तवज्जोह फ़रमाते हैं और जो शख़्स किसी मुसलमान से किसी मुसीबत को ज़ायल करे, हक़ तआला शानुहू क़ियामत के मसाइब में से उसकी कोई मुसीबत ज़ायल फ़रमाते हैं और जो शख़्स मुसलमान की पर्दापोशी करे (ऐब से हो या लिबास से), हक़ तआला शानुहू क़ियामत के दिन उसकी पर्दापोशी (उसी नौअ् की) फ़रमाते हैं। *(मिश्कात)*

इस क़िस्म के मज़ामीन बहुत से सहाबा रज़ि॰ से मुख़्तलिफ़ रिवायात में ज़िक्र किये गये हैं।

एक और हदीस में है कि जो शख़्स किसी पर्दे के क़ाबिल चीज़ को (बदन हो या ऐब) देखे और उसकी पर्दापोशी करे, उसका अज्र ऐसा है जैसा कि किसी ऐसे शख़्स को क़ब्र से निकाला हो, जिसको ज़िन्दा क़ब्र में गाड़ दिया गया हो। *(मिश्काव)*

हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है -

لَا يَسْتَوِي مِنْكُمْ مَّنْ أَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَاتَلَ (الآية)

ला यस्तवी मिन्कुम मन अन्-फ़-क़ मिन क़ब्लिल फ़त्हि व क़ा-त-ल॰

जो सिलसिला-ए-आयत में नं॰ 25 पर गुज़र चुका है, इसकी वजह उलमा ने यही लिखी है कि फ़त्हे मक्का से पहले चूंकि ज़रूरत ज़्यादा थी, इसलिए उस वक़्त ख़र्च करने का दर्जा बढ़ा हुआ है। फ़त्हे मक्का के बाद में ख़र्च करने से 'साहिबे जुमल' कहते हैं, यह इसलिए कि उन लोगों ने इस्लाम और मुसलमानो की इज़्ज़त के ज़माने से पहले ख़र्च किया है। उस वक़्त मुसलमान जान व माल की मदद के ज़्यादा मुहताज थे। यही वे हज़रात साबिक़ीने अव्वलीन हैं, मुहाजिरीन और अन्सार में से, जिनके बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अगर तुम लोग उहद के पहाड़ के बराबर सोना ख़र्च करो तो उनके एक मुद्द बल्कि आधे मुद्द के बराबर भी नहीं हो सकता। *(जुमल)*

इनके अलावा और भी बहुत सी रिवायात में मुख़्तलिफ़ उन्वानात से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़रूरत मन्द को तर्जीह देने पर तर्ग़ीब और तम्बीह फ़रमायी। वलीमा की दावत क़ुबूल करने की तर्ग़ीब बहुत सी रिवायात में वारिद है। लेकिन एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद वारिद हुआ है कि वलीमा का खाना बदतरीन खाना है कि अमीरों को उसके लिए दावत दी जाती है और फ़ुक़रा को छोड़ दिया जाता है। *(मिश्कात)*

यानी जो वलीमा की दावत इस तरह की हो कि उसमें उमरा को मद्‌अू किया जाए ग़ुरबा की दावत न की जाए, वह बद-तरीन खाना है और यह बात न हो तो वलीमा का खाना मस्नून है।

एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद आया है कि जो शख़्स किसी मुसलमान को ऐसी जगह पानी पिलाए जहां पानी मिलता हो, उसने सवाब के एतिबार से गोया एक ग़ुलाम आज़ाद किया और जो शख़्स किसी ऐसी जगह पानी पिलाएं जिस जगह पानी न मिलता हो उसने गोया ज़िन्दगी बख़्शी यानी मरते हुए को गोया हलाकत से बचाया। *(कन्ज़)*

एक हदीस में है कि अफ़्ज़ल तरीन सदक़ा यह है कि किसी भूखे को

(आदमी हो या जानवर) खाना खिलाए। (कन्ज़)

एक हदीस में है कि अल्लाह जल्ल शानुहू को सबसे ज़्यादा यह अमल पसंद है कि किसी मिस्कीन को भूख की हालत में रोटी खिलाए या उसका क़र्ज़ अदा करे या उसकी मुसीबत को ज़ायल करे। (कन्ज़)

उबैद बिन उमैर रज़ि॰ कहते हैं कि क़ियामत के दिन आदमियों का हश्र ऐसी हालत में होगा कि वे इंतिहाई भूख और प्यास की हालत में बिल्कुल नंगे होंगे, पस जिस शख़्स ने दुनिया में किसी को अल्लाह के वास्ते खाना खिलाया होगा, अल्लाह जल्ल शानुहू उस दिन उसको शिकम सेर फ़रमाएंगे और जिसने किसी को अल्लाह के वास्ते पानी पिलाया होगा हक़ तआला शानुहू उसको सेराब फ़रमायेंगे और जिसने जिस किसी को कपड़ा पहनाया होगा, हक़ तआला शानुहू उसको लिबास अता फ़रमाएंगे। (एहया)

(١٤) عن ابی هريرة قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم
الساعی علی الارملة والمسكين كالساعی فی سبيل الله واحسبه قال
كالقائم لايفتر وكالصائم لايفطر متفق عليه (مشكوة)

14. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि बे-ख़ाविंद वाली औरत और मिस्कीन की ज़रूरत में कोशिश करने वाला ऐसा है जैसा कि जिहाद में कोशिश करने वाला और ग़ालिबन यह भी फ़रमाया कि ऐसा है जैसा रात भर नमाज़ पढ़ने वाला कि ज़रा भी सुस्ती न करे और दिन भर रोज़ा रखने वाला कि हमेशा रोज़ादार रहे।

फ़ायदा:- बे-ख़ाविंद वाली औरत से आम मुराद है कि रांड हो गयी हो या उसको ख़ाविंद मयस्सर ही न हुआ हो। इस हदीस पाक में इन दोनों के लिए कोशिश करने वाले के लिए यह अज्र व सवाब और फ़ज़ीलत है, ख़्वाह इसकी कोशिश से कोई समरा (नतीजा) पैदा हुआ हो या न हुआ हो।

एक हदीस में है कि जो शख़्स अपने मुसलमान भाई की ज़रूरत पूरी करने के लिये या उसको नफ़ा पहुँचाने के लिये चले तो उसको अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वालों का सवाब मिलता है। (कन्ज़)

एक हदीस में है कि जो शख़्स अपने मुज़्तर (परेशान) भाई की मदद करे, हक़ तआला शानुहू उसको उस दिन साबित क़दम रखेंगे, जिस दिन पहाड़ भी अपनी जगह से हट जायेंगे। (कन्ज़)

यानी क़ियामत के सख़्त दिन, जिस दिन पहाड़ भी अपनी जगह न जम सकेंगे, यह साबित क़दम रहेगा और इस हदीस पाक से एक लतीफ़ चीज़ यह भी पैदा होती है कि फ़ित्नों और हवादिस के ज़मानों में जब लोगों के क़दम उखड़ जाएं, जैसाकि आज कल का ज़माना गुज़र रहा है। ऐसे लोग साबित क़दम रहते हैं जो लोगों की इआनत और मदद करते रहते हों।

एक हदीस में है कि जो शख़्स अपने मुसलमान भाई की दुन्यावी हाजतों में से किसी हाजत को पूरा करे हक़ तआला शानुहू उसकी सत्तर हाजतें पूरी फ़रमाते हैं, जिनमें से सबसे अद्ना दर्जा यह है कि उसके गुनाह माफ़ हो जाते हैं। (कन्ज़)

एक हदीस में है कि जो शख़्स अपने किसी मुसलमान भाई की हाजत को हुकूमत तक पहुँचा देने का ज़रिया बन जाए, जिससे उसको कोई नफ़ा पहुँच जाए या उसकी कोई मुश्किल दूर हो जाए तो हक़ तआला शानुहू उस शख़्स की जो ज़रिया बना है, क़ियामत के दिन पुल सरात पर चलने में मदद फ़रमायेंगे, जिस वक़्त कि वहां लोगों के क़दम फिसल रहे होंगे। (कंज़)

इसलिए जो लोग हुक्काम रस हैं या मुलाज़िमों के आक़ाओं तक उनकी रसाई है, उनको ख़ासतौर से इस हदीस पाक से फ़ायदा उठाना चाहिए। नौकरों और मह्कूमों की ज़रूरियात की तफ़्तीश करके उनको आक़ाओं और हाकिमों तक पहुँचाना चाहिए, यह न समझना चाहिए कि हम क्यों ख़्वाह मख़्वाह दूसरों की फटन में पांव अड़ाएं। पुल सिरात पर गुज़रना बड़ी सख़्त मुश्किल तरीन चीज़ है इस मामूली कोशिश से उनके लिए ख़ुद कितनी बड़ी सहूलत मयस्सर होती है, लेकिन अल्लाह के वास्ते होना तो हर जगह शर्त है। अपनी वजाहत, अपनी शोहरत लोगों के दिलों में अपनी इज़्ज़त क़ायम करने की नीयत से न हो। अगरचे अल्लाह के लिए करने से ये सब चीज़ें ख़ुद ब ख़ुद हासिल होंगी और उससे ज़्यादा बढ़कर होंगी। जितनी अपने इरादे से होती हैं, लेकिन अपनी तरफ़ से इन चीज़ों का इरादा करना इस मेहनत को आक़ा के लिए होने से निकाल देगा।

(١٥)عن ابی ذرؓ قال قال رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم ثلثۃ یحبھم اللّٰہ وثلثۃ یبغضھم اللّٰہ فامّاالذین یحبھم اللّٰہ فرجل اتی قوما فسألھم باللّٰہ ولم یسألھم لقرابۃ بینہٗ وبینھم فمنعوہ فتخلف رجل باعیانھم فاعطاہ سرًا لایعلم بعطیتہ الااللّٰہ والذی اعطاہ وقوم ساروالیلتھم حتی اذاکان النوم احب الیھم ممّایعدل بہ فوضعوا رؤسھم فقام یتملقنی ویتلوایاتی ورجل کان فی سریہ فلقی العدو فھزموا فاقبل بصدرہ حتی یقتل اویفتح لہ والثلثۃ الذین یبغضھم اللّٰہ، الشیخ الزانی والفقیرالمختال والغنی الظلوم رواہ الترمذی والنسائی کذا فی المشکوٰۃ وعزاہ السیوطی فی الجامع الی ابن حبان والحاکم.

15. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि तीन आदमी ऐसे हैं जिनको अल्लाह जल्ल शानुहू महबूब रखते हैं और तीन शख़्स ऐसे हैं जिनसे अल्लाह जल्ल शानुहू को बुग़्ज़ है, जिन तीन आदमियों को अल्लाह जल्ल शानुहू महबूब रखता है, उनमें एक तो वह शख़्स है कि किसी मज्मा के पास कोई साइल आया और महज़ अल्लाह के वास्ते से उनसे कुछ सवाल करने लगा, कोई क़राबत रिश्तेदारी (वग़ैरह) इस साइल की उनसे न थी। उस मज्मा ने इस साइल को कुछ न दिया। उस मज्मे में से एक शख़्स उठा और चुपके से उस साइल को कुछ दे दिया, जिसकी कुछ ख़बर सिवाए अल्लाह जल्ल शानुहू के या इस साइल के और किसी को न हुई (तो यह देने वाला शख़्स अल्लाह जल्ल शानुहू को बहुत महबूब है, दूसरा) वह शख़्स है कि एक मज्मा कहीं सफ़र में जा रहा है। सारी रात चलने के बाद जब नींद का उन पर इतना ग़लबा हो जाए कि वह हर चीज़ से ज़्यादा महबूब बन गयी हो तो वह मज्मा थोड़ी देर के लिए सोने लेट गया, लेकिन एक शख़्स उनमें से खड़ा होकर अल्लाह जल्ल शानुहू के सामने गिड़गिड़ाने लगे और क़ुरआन पाक की तिलावत शुरू कर दे। तीसरा वह शख़्स है कि किसी जमाअत में जिहाद में शरीक था, वह जमाअत शिकस्त खा गयी, उनमें से एक शख़्स सीना सपर होकर आगे बढ़ा और शहीद हो गया या ग़ालिब हो गया और वह तीन शख़्स जिनसे अल्लाह जल्ल शानुहू बुग़्ज़ रखते हैं,

एक वह जो बूढ़ा होकर भी ज़िना में मुब्तला हो, दूसरा वह शख़्स जो फ़क़ीर होकर भी तकब्बुर करे, तीसरा वह शख़्स जो मालदार होकर ज़ुल्म करे।

फ़ायदा:- इन छः शख़्सों के मुताल्लिक़ इस क़िस्म के मज़ामीन बहुत सी मुख़्तलिफ़ रिवायात में वारिद हुए हैं और यह हदीस आयात के सिलसिले में नं॰ 9 के ज़ैल में भी गुज़र चुकी है। कुछ रिवायात में इनमें से एक शख़्स को ज़िक्र किया है और कुछ में एक से ज़ायद का ज़िक्र किया है।

एक हदीस में है कि तीन मौक़े ऐसे हैं, जिनमें बन्दे की दुआ रद्द नहीं की जाती यानी ज़रूर क़ुबूल होती है –

1. एक वह शख़्स, जो किसी जंगल में हो, जहां कोई उसको न देखता हो और वहां खड़े होकर नमाज़ पढ़ने लगे। (उस वक़्त उसकी दुआ ज़रूर क़ुबूल होगी)

2. एक वह शख़्स जो किसी मज्मा के साथ जिहाद में हो और साथी भाग जाएं, वह अकेला जमा रहे।

3. तीसरा वह शख़्स है जो आख़िर रात में अल्लाह के सामने खड़ा हो जाए। *(जामिउस्सग़ीर)*

एक हदीस में है, तीन आदमी ऐसे हैं। जिनसे अल्लाह जल्ल शानुहू क़ियामत में कलाम न करेंगे, न उनका तज़्किया करेंगे और न उनकी तरफ़ (रहमत की) नज़र फ़रमायेंगे और उनके लिए दुख देने वाला अज़ाब होगा, एक ज़ानी बूढ़ा, दूसरा झूठा बादशाह, तीसरा मुतकब्बिर फ़क़ीर। *(जामिउस्सग़ीर)*

तज़्किया न करने का मतलब यह भी हो सकता है कि उनको गुनाहों से पाक न करेंगे और यह भी हो सकता है कि उनकी तारीफ़ न करेंगे।

एक और हदीस में है कि तीन शख़्स ऐसे हैं जिनकी तरफ़ हक़ तआला शानुहू क़ियामत में (मरहमत) की नज़र न करेंगे और उनके लिए दुख देने वाला सख़्त अज़ाब होगा। एक अधेड़ उम्र का शख़्स ज़िनाकार, दूसरा मुतकब्बिर फ़क़ीर, तीसरा वह शख़्स जो ख़रीद फ़रोख़्त में हर वक़्त क़सम खाता रहे, जो ख़रीदे, क़समें खाकर ख़रीदे और जब फ़रोख़्त करे तो भी क़समें खाकर फ़रोख़्त करे। (यानी बात बे बात, ज़रूरत बे ज़रूरत बार बार क़समें खाता हो कि यह अल्लाह पाक की आलीशान की बे-अदबी है।)

एक और हदीस के अल्फ़ाज़ हैं कि तीन शख़्सों की तरफ़ कल को (क़ियामत के दिन) हक़ तआला शानुहू नज़र न करेंगे, बूढ़ा ज़ानी, दूसरे वह शख़्स जो क़समों को अपनी पूंजी बनाए कि हर हक़, ना हक़ पर क़सम खाता हो, तीसरे मुतकब्बिर फ़क़ीर जो अकड़ता हो। *(जामिअुस्सग़ीर)*

एक और हदीस के अल्फ़ाज़ हैं कि तीन शख़्सों को हक़ तआला शानुहू महबूब रखते हैं और तीन शख़्सों को मब्ग़ूज़ रखते हैं –

1. जिनको महबूब रखते हैं, उनमें से एक वह शख़्स है जो किसी जमाअत के साथ जिहाद में शरीक हो और दुश्मन के सामने सीना तान कर खड़ा हो जाए, यहां तक कि फ़त्ह हो या शहीद हो जाए।

2. दूसरा वह शख़्स जो किसी जमाअत के साथ सफ़र कर रहा हो और जब रात का बहुत सा हिस्सा गुज़र जाए और वह जमाअत थोड़ी देर आराम लेने के लिए लेट जाए तो यह खड़ा होकर नमाज़ पढ़ने लगे, यहां तक कि थोड़ी देर में साथियों को आगे चलने के लिए जगा दे। (यानी ख़ुद ज़रा भी न सोए)।

3. तीसरा वह शख़्स जिसका पड़ोसी उसको सताता हो और वह उसकी अज़ीयत (सताने) पर सब्र करे, यहां तक कि मौत से या सफ़र वग़ैरह से उस में और उसके पड़ोसी में जुदाई हो जाए (यानी यह कि जब तक उसका पड़ोसी बाक़ी रहे, मुसलसल सब्र करता रहे।)

और वे तीन शख़्स जिनको अल्लाह जल्ल शानुहू मब्ग़ूज़ रखते हैं- एक क़समें खाने वाला ताजिर, दूसरा मुतकब्बिर फ़क़ीर, तीसरा वह बख़ील जो सदक़ा करके, एहसान जताता हो। *(जामिउस्सग़ीर)*

(١٦) عن فاطمة بنت قيسؓ قالت قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ان في المال لحقا سوى الزكوٰة ثم تلا لَيْسَ الْبِرَّاَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ الآية رواه الترمذى وابن ماجة والدارمى كذافى المشكوٰة وقال الترمذ ى هذا حديث ليس اسناده بذلك وابوحمزة يضعف ورروى بيان واسمٰعيل عن الشعبى هذا الحديث قوله وهواصح قلت واخرجه ابن ماجه بلفظ ليس فى المال حقا سوى الزكوٰة وقال العينى فى شرح البخارى رواه البيهقى بلفظ الترمذى ثم قال والذين يرويه اصحابنا في التعاليق ليس فى المال حق سوى الزكوٰة اه

16. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि माल में ज़कात के अलावा और भी हक़ है (फिर अपने इस इर्शाद की ताईद में सूरः बक़रः के 22वें रूकूअ् की यह आयत)

"लैसल बिर्-र अन तुवल्लू वुजूह-कुम क़िब-लल् मश्रिक़ि वल् मग़्रिबि॰" आख़िर तक तिलावत फ़रमायी।

फ़ायदाः- इस आयते शरीफ़ा का बयान सिलसिला-ए-आयात में नं॰ 2 पर गुज़र चुका है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस आयते शरीफ़ा से यह तज्वीज़ फ़रमाया कि माल में ज़कात के अलावा और भी हक़ है और यह तज्वीज़ इस वजह से ज़ाहिर है कि आयते शरीफ़ा में अपने माल को रिश्तेदारों पर ख़र्च करने की, यतीमों पर, ग़रीबों पर, मुसाफ़िरों पर और सवाल करने वालों पर ख़र्च करने की, क़ैदियों और ग़ुलामों वग़ैरह की गरदन छुड़ाने में ख़र्च करने की मुस्तक़िल अलाहिदा तर्ग़ीब दी है और इस सब के बाद ज़कात अदा करने को अलाहिदा ज़िक्र फ़रमाया।

मुस्लिम बिन यसार रह॰ कहते हैं कि नमाज़ें दो हैं (एक फ़र्ज़, एक नफ़्ल) इसी तरह ज़कातें भी दो हैं (एक नफ़्ल, दूसरी फ़र्ज़) और क़ुरआन पाक में दोनों मज़्कूर हैं, मैं तुमको बताऊँ? लोगों के दर्याफ़्त करने पर उन्होंने यह आयते शरीफ़ा पढ़ी और इब्तिदाई हिस्सा पढ़कर जिसमें माल के मज़्कूरा मौक़ों पर ख़र्च करना मज़्कूर है, फ़रमाया कि यह तो सब का सब नफ़्ल है। इसके बाद ज़कात का ज़िक्र पढ़कर फ़रमाया कि यह फ़र्ज़ है। *(दुर्रे मन्सूर)*

अल्लामा तय्यबी रह॰ फ़रमाते हैं कि इस हदीस शरीफ़ में हक़ से मुराद यह है कि सवाल करने वाले को महरूम न रखे, क़र्ज़ मांगने वाले को महरूम न करे, अपने घर का मामूली सामान मुस्तआर[1] मांगने वाले को इंकार न करे, मसलन हांडी प्याला वग़ैरह कोई आरियतन[2] मांगे तो उसको न रोके, पानी और नमक और आग को लोगों को इन्कार न करे।

अल्लामा क़ारी रह॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ ने इस हदीसे पाक में जो आयते शरीफ़ा पढ़ी है उसमें ज़कात के अलावा जो उमूर ज़िक्र किए हैं वे मुराद हैं जैसा कि सिला-रहमी, यतीमों पर एहसान करना, मिस्कीन, मुसाफ़िर

1. 2. उधार

और सवाली को देना, लोगों की गरदनों को आज़ादी वग़ैरह के ज़रिए से ख़लास करना। *(मिर्क़ात)*

साहिबे मज़ाहिरे हक़ रह० ने लिखा है कि जक़ात तो फ़र्ज़ है, ज़रूर देनी चाहिए, सिवाए ज़कात के सदक़ा-ए-नफ़्ल भी मुस्तहब है वह भी दिया करें, और वह यह है कि इसके बाद अल्लामा तय्यबी रह० और अल्लामा क़ारी रह० के कलाम का तर्जुमा तहरीर फ़रमा कर लिखा है कि यह आयत हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सनद के लिए पढ़ी है इस वास्ते कि इसमें अव्वल तो अल्लाह तआला ने तारीफ़ की मोमिनों की साथ देने माल के अपनों और यतीमों वग़ैरह को, बाद उसके तारीफ़ की साथ क़ायम करने नमाज़ के और देने ज़कात के, पस मालूम हुआ कि देना माल का सिवाए देने ज़कात के है और वह सदक़ा-ए-नफ़्ल है और हासिल यह है कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो फ़रमाया था कि माल में हक़ है सिवाए ज़कात के, वह इस आयत से साबित हुआ कि अव्वल सदक़ा-ए-नफ़्ल ज़िक्र किया गया, फिर सदक़ा-ए-वाजिब। *(मज़ाहिरे हक़)*

अल्लामा जस्सास राज़ी रह० ने लिखा है कि कुछ उलमा ने इस आयते शरीफ़ा से हुक़ूक़े वाजिबा मुराद लिए हैं जैसा कि सिला रहमी, जब कि किसी ज़ी रहम को सख़्त मशक़्क़त में पाए या किसी मुज़्तर पर ख़र्च करना, जब कि उसको इज़्तिरार ने हलाकत के अन्देशे तक पहुँचा दिया हो तो उस पर इतनी मिक़्दार ख़र्च करना लाज़िम है, जिस से उस की भूख जाती रहे।

इसके बाद अल्लामा रह० ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद कि माल में ज़कात के अलावा हक़ है, नक़ल करके फ़रमाया कि इस से नादार रिश्तेदारों पर ख़र्च करना भी मुराद हो सकता है कि हाकिम ने उनका नफ़्क़ा ज़िम्मे कर दिया हो और मुज़्तर पर ख़र्च करना भी हो सकता है और नफ़्ली हुक़ूक़ भी हो सकते हैं इसलिए कि हक़ का लफ़्ज़ वाजिब और नफ़्ल दोनों पर इत्लाक़ किया जाता है।

फ़तावा आलमगीरिया में है कि लोगों के ज़िम्मे मुहताज का खिलाना फ़र्ज़ है जबकि वह (कमाने के लिए) निकलने से और मांगने से आजिज़ हो और उसमें तीन बातें हैं -

1. अव्वल यह कि जब मुहताज निकलने से आजिज़ हो, तो हर उस

शख़्स पर जिसको उसका हाल मालूम हो, उसका खिलाना फ़र्ज़ है और इतनी मिक़्दार खिलाना ज़रूरी है, जिससे वह निकलने पर और फ़र्ज़ अदा करने पर क़ादिर हो जाए, बशर्ते कि जिसको उसका हाल मालूम है वह खिलाने पर क़ादिर हो और अगर उसमें ख़ुद खिलाने की क़ुदरत न हो, तो उसके ज़िम्मे ज़रूरी है कि दूसरों को उसके हाल की इत्तिला करे और वह मुहताज मर जाए, तो वे सब गुनाहगार होंगे जिनको उसका हाल मालूम है।

2. दूसरी बात यह है कि अगर मुहताज निकलने पर क़ादिर है, लेकिन कमाने पर क़ादिर नहीं है तो लोगों के ज़िम्मे जिनको उसका हाल मालूम है ज़रूरी है कि वे अपने सदक़ाते वाजिबा से उसकी मदद करें और अगर वह कमाने पर भी क़ादिर है तो फिर उसको जायज़ नहीं कि सवाल करे।

3. तीसरी बात यह है कि अगर वह मुहताज निकलने पर क़ादिर है, लेकिन कमाने पर क़ादिर नहीं तो उसके ज़िम्मे ज़रूरी है कि निकल कर लोगों से सवाल कर ले। अगर वह सवाल नहीं करेगा तो गुनाहगार होगा।

(आलमगीरी)

(١٧) عن بهيسةؓ عن ابيهاقالت قال رسول الله صلى الله عليه وسلم
ماالشئ ا لذى لا يحل منعه قال الماء قال يانبى الله ماالشئ الذى
لايحل منعه قال الملح قال يانبى الله ماالشئ الذى لايحل منعه قال ان
تفعل الخيرخير لك رواه الترمذى وابوداؤد كذافى المشكوٰة.

17. हज़रत बहैसा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि मेरे वालिद साहब ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दर्याफ़्त किया कि वह क्या चीज़ है जिसका (किसी मांगने वाले को देने से) रोकना जायज़ नहीं ? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, पानी, मेरे वालिद ने फिर यही सवाल किया तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि नमक, मेरे वालिद ने फिर यही सवाल किया तो हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया जो भलाई तू (किसी के साथ) कर सके वह तेरे लिए बेहतर है।

फ़ायदाः- अगर पानी से मुराद कुएं से पानी लेना हो और नमक से मुराद उसके मादन (खान) से नमक लेना मुराद हो तब तो शरई हैसियत से भी किसी को इन चीज़ों से रोकने का हक़ नहीं है। लेकिन अपना मम्लूक पानी और मम्लूक नमक है तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ग़रज़ इस

पर तम्बीह फ़रमाना है कि ऐसी मामूली चीज़ों को साइल को इन्कार करना हरगिज़ न चाहिए, जिसमें देने वाले को ज़्यादा नुक़्सान नहीं और मांगने वाले की बड़ी एहतियाज पूरी होती है, बशर्ते कि देने वाले की अपनी हाजत भी उसी दर्जे की न हो लेकिन आमतौर पर चूंकि घरों में यह चीज़ें अक्सर मौजूद होती हैं और अपनी कोई वक़्ती ज़रूरत उनसे ऐसी वाबस्ता नहीं होती। अगर किसी शख़्स की हांडी फीकी है, ज़रा से नमक में उसका सारा खाना दुरूस्त हो जाता है और तुम्हारा कोई ऐसा नुक्सान इसमें नहीं होता, ऐसे ही पानी का हाल है।

हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि तीन चीज़ों का रोकना जायज़ नहीं, पानी, नमक, आग। मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! पानी तो हम समझ गये। (कि वाक़ई वहुत मजबूरी की चीज़ है) लेकिन नमक और आग में क्या बात है? हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि ऐ हुमैरा, जब कोई शख़्स किसी को आग देता है तो गोया उसने वह सारी चीज़ सदक़ा की जो आग पर पकी और जिसने नमक दिया उसने गोया वह सारी चीज़ सदक़ा की जो नमक की वजह से लज़ीज़ हो गयी। *(मिश्कात)*

गोया इन दोनों में मामूली ख़र्च से दूसरों का बहुत ज़्यादा नफ़ा है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऊपर वाली हदीस में मिसाल के तौर पर दो चीज़ों का ज़िक्र फ़रमा कर फिर एक ज़ाब्ता इर्शाद फ़रमा दिया कि जो भलाई किसी के साथ कर सकते हो, वह तुम्हारे लिए बेहतर है

"भला कर जो अपना भला चाहता है।"

हक़ीक़त यही है कि आदमी जो कोई एहसान किसी क़िस्म का भी किसी के साथ करता है वह सूरत में दूसरे के साथ एहसान है, हक़ीक़त में वह अपने ही साथ एहसान है।

अल्लाह जल्ल शानुहू के पाक इर्शाद में बसिलसिला-ए-आयात नं॰ 20 पर गुज़र चुका है कि जो कुछ तुम अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करोगे, अल्लाह जल्ल शानुहू उसका बदल अता फ़रमायेगा और बसिलसिला-ए-अहादीस नं॰ 2 पर गुज़र चुका है कि दो फ़रिश्ते रोज़ाना इसकी दुआ करते हैं कि ऐ अल्लाह! ख़र्च करने वाले को बदल अता फ़रमा और रोकने वाले को बर्बादी अता कर। ऐसी हालत में जो एहसान भी कोई शख़्स किसी के साथ करता है वह अपने माल को बर्बादी से बचा कर उसके बदल का अल्लाह जल्ल शानुहू के ख़ज़ाने

से अपने लिए इस्तिहक़ाक़ क़ायम करता है और ग़ौर की निगाह अगर मयस्सर हो तो हक़ीक़त में दूसरों पर ज़रा भी एहसान नहीं, बल्कि ऐसा है, जैसा कि उसने तुम्हारे मकान को लूट से बचा दिया हो, इस लिहाज़ से उसका तुम पर एहसान है, न कि तुम्हारा उस पर।

(١٨) عن سعد بن عبادةؓ قال يارسول الله صلى الله عليه وسلم ان ام سعد ماتت فاى الصدقة افضل قال الماء فحفربيرًا وقال هذه لام سعد رواه مالك وابوداؤد والنسائى كذا فى المشكوٰة.

18. हज़रत सअ़द रज़ि॰ ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह, मेरी वालिदा का इन्तिक़ाल हो गया, (उनके ईसाले सवाब के लिए) कौन सा सदक़ा ज़्यादा अफ़ज़ल है ? हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि पानी सबसे अफ़ज़ल है। इस पर हज़रत सअ़द रज़ि॰ ने अपनी वालिदा के सवाब के लिए एक कुवां खुदवा दिया।

फ़ायदा:- हुज़ूर सल्ल॰ ने पानी को ज़्यादा अफ़ज़ल इसलिए फ़रमाया कि मदीना तैय्यबा में इसकी ज़रूरत ज़्यादा थी। अव्वल तो गर्म मुल्कों में सब ही जगह पानी की ज़रूरत ख़ास तौर से होती है और मदीना मुनव्वरा में उस वक़्त पानी की क़िल्लत भी थी। इसके अलावा पानी का नफ़ा भी आम है और ज़रूरत भी उमूमी है।

एक हदीस में है कि जो शख़्स पानी का सिलसिला जारी कर जाए तो जो इन्सान या जिन्न या परिन्दा भी उससे पानी पिएगा तो मरने वाले को क़ियामत तक इसका सवाब होता रहेगा।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रज़ि॰ के पास एक शख़्स हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि मेरे घुटने में एक ज़ख़्म है, सात साल हो गये, हर क़िस्म की द.. और इलाज कर चुका हूँ किसी से भी फ़ायदा नहीं होता, बड़े बड़े तबीबों से भी रूजू कर चुका हूँ। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रज़ि॰ ने फ़रमाया कि जिस जगह पानी की क़िल्लत हो वहां एक कुवां बनवा दो। मुझे अल्लाह की ज़ात से यह उम्मीद है कि जब उसमें पानी निकल आएगा, तुम्हारे घुटने का ख़ून बन्द हो जाएगा। चुनांचे उन्होंने ऐसा ही किया और घुटने का ज़ख़्म अच्छा हो गया।

मशहूर मुहद्दिस हज़रत अबूअब्दुल्लाह हाकिम रह॰ के चेहरे पर एक

ज़ख़्म हो गया था। हर क़िस्म के इलाज किए कोई भी कारगर न हुआ। एक साल इसी हाल में गुज़र गया। एक मर्तबा उस्ताद अबू उस्मान साबूनी रह० से दुआ की दरख़्वास्त की। जुमा का दिन था, उन्होंने बड़ी देर तक दुआ की। मज्मे ने आमीन कहा। दूसरे जुमा को एक औरत हाज़िर हुई और एक पर्चा मज्लिस में पेश किया, जिसमें यह लिखा था कि मैं गुज़िश्ता जुमा को जब घर वापस गयी तो हाकिम के लिए बहुत एहतिमाम से दुआ करती रही। मैं ने ख़्वाब में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत की। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि हाकिम से कह दो कि मुसलमानों पर पानी की वुसअ़त करे। हाकिम ने यह सुनकर अपने घर के दरवाज़े पर एक सबील क़ायम कर दी। जिसमें पानी के भरने का और उसमें बर्फ़ डालने का एहतिमाम किया। एक हफ़्ता गुज़रा था कि चेहरे के सब ज़ख़्म बिल्कुल अच्छे हो गये और पहले से ज़्यादा ख़ुश्नुमा चेहरा हो गया। *(मिश्कात)*

एक हदीस में है कि हज़रत सअ़द रज़ि० ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह, मेरी वालिदा अपनी ज़िन्दगी में मेरे माल से हज करती थीं, मेरे ही माल से सदक़ा देतीं थीं, सिलारहमी करती थीं, लोगों की इम्दाद करती थीं, अब उनका इन्तिक़ाल हो गया। यह सब काम अगर हम उनकी तरफ़ से करें तो उनको इनका नफ़ा पहुँचेगा? हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि पहुंचेगा। *(कन्ज़)*

एक हदीस में आया है कि एक औरत ने हुज़ूर सल्ल० से सवाल किया कि मेरी वालिदा का अचानक इन्तिक़ाल हो गया। अगर अचानक न होता तो वह कुछ सदक़ा वग़ैरह करतीं। अगर मैं उनकी तरफ़ से कुछ सदक़ा करूँ तो उनकी तरफ़ से हो जाएगा? हुज़ूर सल्ल० नें फ़रमाया हाँ, उनकी तरफ से सदक़ा कर दो। *(अबू दाऊद)*

अपने मां बाप, ख़ाविंद, बीवी, बहिन, भाई, औलाद और दूसरे रिश्तेदार ख़ुसूसन वे लोग जिनके मरने के बाद उनका कोई माल अपने पास पहुँचा हो या उनके ख़ुसूसी एहसानात अपने ऊपर हों, जैसे असातिज़ा[1] और मशाइख़, उनके लिए ईसाले सवाब का बहुत ज़्यादा एहतिमाम करना चाहिए। बड़ी बे ग़ैरती है कि उनके माल से आदमी नफ़ा उठाता रहे, उनकी ज़िन्दगी के एहसानात से फ़ायदा उठाता रहे, और जब वे अपने अताया और अपने हदाया के ज़रूरतमन्द

1. उस्ताद की जमा।

हों, तो उनको फ़रामोश कर दे। आदमी जब मर जाता है तो उसके अपने आमाल ख़त्म हो जाते हैं, सिवाए इस सूरत के कि वह कोई सदक़ा-ए-जारिया छोड़ गया हो या कोई और ऐसा अमल कर गया हो जो सदक़ा-ए-जारिया के हुक्म में हो जैसाकि आइन्दा आ रहा है। उस वक़्त वह दूसरों के ईसाले सवाब और उनकी दुआ वग़ैरह से इम्दाद का मुहताज और मुन्तज़िर रहता है।

एक हदीस में आया है कि मुर्दा अपनी क़ब्र में उस शख़्स की तरह से होता है जो पानी में डूब रहा हो और हर तरफ़ से किसी मददगार का ख़्वाहिशमंद हो और वह इसका मुन्तज़िर रहता है कि बाप भाई वग़ैरह किसी दोस्त की तरफ़ से कोई मदद दुआ की (कम से कम) उसको पहुँच जाए और जब उसको कोई मदद पहुँचती है तो वह उसके लिए सारी दुनिया से ज़्यादा महबूब होती है। *(एहया)*

बशर बिन मन्सूर रह० कहते हैं कि ताऊन के ज़माने में एक आदमी थे जो कसरत से जनाज़ों की नमाज़ों में शरीक होते और शाम के वक़्त क़ब्रस्तान के दरवाज़े पर खड़े होकर यह दुआ करते :-

انس اللہ وحشتکم ورحم غربتکم وتجاوز عن سیاتکم وقبل اللہ حسناتکم

(अल्लाह जल्ल शानुहू तुम्हारी वहशत को दिलबस्तगी से बदल दे और तुम्हारी गुर्बत पर रहम फ़रमाये और तुम्हारी लग़्ज़िशों से दरगुज़र फ़रमाये और तुम्हारी नेकियों को क़ुबूल फ़रमाये)

इस दुआ के बाद अपने घर वापस चले जाते। एक दिन इत्तिफ़ाक़ से इस दुआ को पढ़ने की नौबत नहीं आयी, वैसे ही घर आ गये तो रात को ख़्वाब में एक बड़ा मज्मा देखा जो उनके पास गया। उन्होंने पूछा कि तुम कौन लोग हो? कैसे आये हो? उन्होंने कहा कि क़ब्रस्तान के रहने वाले हैं। तुमने हमको इसका आदी बना दिया था कि रोज़ाना शाम को तुम्हारी तरफ़ से हमारे पास हद्या आया करता था। उन्होंने पूछा कैसा हद्या? वे लोग कहने लगे कि तुम जो दुआ रोज़ाना शाम को किया करते थे, वह हमारे पास हद्या बन कर पहुँचती थी। वह शख़्स कहते हैं कि फिर मैं ने कभी इस दुआ को तर्क नहीं किया।

बिशार बिन ग़ालिब नजरानी रह० कहते हैं कि मैं हज़रत राबिया बसरिया के लिए बहुत कसरत से दुआ किया करता था। मैं ने एक मर्तबा उनको ख़्वाब में देखा। वह कहती हैं कि बिशार ! तुम्हारे तोहफ़े हमारे पास नूर के ख़्वानों

में रखे हुए पहुँचते हैं, जिन पर रेशम के ग़िलाफ़ ढके हुए होते हैं। मैं ने पूछा यह क्या बात है? उन्होंने कहा कि मुसलमानों की जो दुआ मुर्दे के हक़ में क़ुबूल हो जाती है, तो वह दुआ नूर के ख़्वान पर रेशम के ग़िलाफ़ से ढकी हुई मय्यित के पास पेश होती है कि यह फ़लां शख़्स ने तुम्हारे पास हद्या भेजा है। *(एहया)*

आइन्दा हदीस के ज़ैल में भी इस क़िस्म के कई वाक़िआत आ रहे हैं।

इमाम नववी रह॰ ने मुस्लिम शरीफ़ की शरह में लिखा है कि सदके का सवाब मय्यित को पहुँचने में मुसलमानों में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं है, यही मज़हब हक़ है और कुछ लोगों ने जो यह लिख दिया कि मय्यित को उसके मरने के बाद सवाब नहीं पहुँचता, यह क़त्अन बातिल है और खुली हुई ख़ता है, यह क़ुरआन पाक के ख़िलाफ़ है, यह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अहादीस के ख़िलाफ़ है, यह इज्माए उम्मत के ख़िलाफ़ है, इसलिए यह क़ौल हरगिज़ क़ाबिले इल्तिफ़ात नहीं। *(बज़्ल)*

शैख़ तक़ियुद्दीन रह॰ फ़रमाते हैं कि जो शख़्स यह ख़्याल करे कि आदमी को सिर्फ़ अपने ही किये का सवाब मिलता है, वह इज्माए उम्मत के ख़िलाफ़ कर रहा है। इसलिए कि उम्मत का इस पर इज्मा है कि आदमी को दूसरों की दुआ से फ़ायदा पहुँचता है यह दूसरे के अमल से नफ़ा हुआ। नीज़ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मैदाने हश्र में शफ़ाअत फ़रमाएंगे, नीज़ दूसरे अम्बिया और सुलहा सिफ़ारिश फ़रमाएंगे, यह सब दूसरों के अमल से फ़ायदा हुआ, नीज़ फ़रिश्ते, मोमिनों के लिए दुआ और इस्तिग़फ़ार करते हैं, (जैसा कि सूरः मोमिन के पहले रूकूअ् में है) यह दूसरे के अमल से फ़ायदा हुआ, नीज़ हक़ तआला शानुहू महज़ अपनी रहमत से बहुत से लोगों के गुनाह माफ़ फ़रमा देंगे, यह अपनी कोशिश और अमल के अलावा से फ़ायदा हुआ, नीज़ मोमिनों की औलाद अपने वालिदैन के साथ जन्नत में दाख़िल की जाएगी।(जैसा कि वत्तूर के पहले रूकूअ् में है) यह दूसरे के अमल से फ़ायदा हुआ, नीज़ हज्जे बदल करने से मय्यित के ज़िम्मे से फ़र्ज़ हज अदा हो जाता है, यह दूसरे के अमल से नफ़ा हुआ। ग़रज़ बहुत सी चीज़ें इसके लिए दलील और हुज्जत हैं जिन का शुमार भी दुश्वार है। *(बज़्ल)*

एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मेरे भाई का इन्तिक़ाल हो गया। मैंने उनको ख़्वाब में देखा और उनसे पूछा कि क़ब्र में रखने के बाद तुम पर क्या गुज़री?

वह कहने लगे कि उस वक़्त मेरे पास एक आग का शोला आया, मगर साथ ही एक शख़्स की दुआ मुझ तक पहुँची। अगर वह न होती तो वह शोला मुझको लग जाता। अली बिन मूसा हद्दाद रह० कहते हैं कि मैं इमाम अहमद बिन हम्बल रह० के साथ एक जनाज़े में शरीक था। मुहम्मद बिन क़ुदामा रह० भी हमारे साथ थे। जब उस लाश को दफ़्न कर चुके तो एक ना बीना शख़्स आए और वह क़ब्र के पास बैठकर क़ुरआन शरीफ़ पढ़ने लगे। हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल रह० ने फ़रमाया कि क़ब्र के पास बैठकर क़ुरआन शरीफ़ पढ़ना बिद्अत है। जब हम वहां से वापस होने लगे तो रास्ते में मुहम्मद बिन क़ुदामा रह० ने हज़रत इमाम अहमद रह० से पूछा कि आप के नज़दीक मुबश्शिर बिन इस्माईल हल्बी रह० कैसे आदमी हैं? इमाम रह० ने फ़रमाया कि वह मोतबर आदमी हैं। इब्ने क़ुदामा रह० ने पूछा कि आप ने भी उनसे कुछ इल्म हासिल किया है? फ़रमाया हाँ, मैं ने यही हदीसें उनसे ली हैं। इब्ने क़ुदामा रह० ने कहा कि मुबश्शिर रज़ि० ने मुझसे बयान किया कि अब्दुर रहमान बिन अला बिन लजलाज रह० ने अपने वालिद से यह नक़ल किया कि जब उनका इन्तिक़ाल होने लगा तो उन्हों ने यह वसीयत फ़रमायी थी कि उनकी क़ब्र के सिरहाने सूरः बक़रः का अव्वल व आख़िर पढ़ा जाए और यह कह कर फ़रमाया था कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० को यह वसीयत करते हुए सुना था। हज़रत इमाम रह० ने यह क़िस्सा सुनकर इब्ने क़ुदामा रह० से कहा कि क़ब्रस्तान में वापस जाओ और उन ना बीना से कहो कि वह क़ुरआन शरीफ़ पढ़ लें। मुहम्मद बिन अहमद मरूज़ी रह० कहते हैं कि मैं ने हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल रह० से सुना, वह फ़रमाते थे कि जब तुम क़ब्रस्तान में जाया करो, तो अल-हम्दु शरीफ़, क़ुल हुवल्लाहु, क़ुल अऊज़ु बिरब्बिल फ़लक़, क़ुल अऊज़ु बिरब्बिन्नास पढ़ कर क़ब्रस्तान वालों को बख़्शा करो, इसका सवाब उनको पहुँच जाता है। *(एहया)*

साहबे मुग़्नी रह० ने जो फ़िक़्ह-ए-हम्बली की बहुत मोतबर किताब है, इस क़िस्से को नक़ल किया है और इस मज़्मून की और रिवायात भी नक़ल की हैं।

कन्ज़ुल मजहूद में बहर से नक़ल किया है कि जो शख़्स रोज़ा रखे या नमाज़ पढ़े या सदक़ा करे और उसका सवाब दूसरे शख़्स को बख़्श दे, ख़्वाह वह शख़्स जिस को बख़्शा है ज़िन्दा हो या मुर्दा, उसका सवाब उसको पहुँचता है, इसमें कोई फ़र्क़ नहीं कि जिसको सवाब बख़्शा है वह ज़िन्दा हो या मुर्दा।

अबूदाऊद शरीफ़ में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ का यह इर्शाद नक़ल किया गया है कि कोई शख़्स ऐसा है जो इसका ज़िम्मा ले कि मस्जिदे इशार (बसरा के क़रीब है) में जाकर दो रक्अत या चार रक्अत नमाज़ पढ़ कर यह कहे कि यह नमाज़ (यानी इसका सवाब) अबू हुरैरह रज़ि॰ के लिए है।

(अबू दाऊद)

अपने अज़ीज़ मुर्दों को सवाब पहुँचाने का बहुत ज़्यादा एहतिमाम चाहिए, उनके हुक़ूक़ के अलावा अनक़रीब मरने के बाद उनसे मिलना होगा। कैसी शर्म आएगी, जब उनके हुक़ूक़ उनके एहसानात और उनके मालों में जो आदमी अपने काम में ख़र्च करता रहता है, उनको याद न रखे।

(١٩) عن ابى هريرةؓ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم
اذامات الانسان انقطع عنه عمله الامن ثلثة الامن صدقة جارية اوعلم
ينتفع به اوولد صالح يدعوله رواه مسلم كذافى المشكوة قلتؒ
وابوداؤد والنسائى وغيرهما

19. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि जब आदमी मर जाता है तो उसके आमाल का सवाब ख़त्म हो जाता है, मगर तीन चीज़ें ऐसी हैं जिन का सवाब मरने के बाद भी मिलता रहता है, एक सदक़ा-ए-जारिया, दूसरे वह इल्म जिससे लोगों को नफ़ा पहुँचता रहे, तीसरे सालेह औलाद, जो उसके लिए मरने के बाद दुआ करती रहे।

फ़ायदा:- अल्लाह जल्ल शानुहू का किस क़दर ज़्यादा इन्आम व एहसान है, लुत्फ़ व करम है कि आदमी अगर यह चाहे कि मर जाने के बाद जबकि उसके आमाल का वक़्त ख़त्म हो जाए वह अमल करने से बेकार हो जाए, वह क़ब्र में मीठी नींद पड़ा सोता रहे और उसके नेक आमाल में इज़ाफ़ा होता रहे तो उसका ज़रिया भी अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने फ़ज़्ल से पैदा फ़रमा दिया।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इनमें से तीन चीज़ें इस हदीस पाक में ज़िक्र फ़रमायी हैं, एक सदक़ा-ए-जारिया यानी कोई ऐसी चीज़ सदक़ा कर गया जिसका नफ़ा बाक़ी रहने वाला हो, मसलन कोई मस्जिद बनवा

गया, जिसमें लोग नमाज़ पढ़ते रहें, तो जब तक उसमें नमाज़ होती रहेगी, उसको सवाब ख़ुद ब ख़ुद मिलता रहेगा। इसी तरह से कोई मुसाफ़िर ख़ाना, कोई मकान किसी दीनी काम के लिए बनवा कर वक़्फ़ कर गया, जिससे मुसलमानों को या दीनी कामों को नफ़ा पहुँचता रहा, तो उसको इस नफ़े का सवाब मिलता रहेगा। कोई कुवां रिफ़ाहे आम के लिए बनवा गया, तो जब तक उससे लोग पानी पीते रहेंगे, वुज़ू वग़ैरह करते रहेंगे, उसको मरने के बाद भी उसका सवाब पहुँचता रहेगा।

एक और हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद वारिद हुआ है कि आदमी के मरने के बाद जिन चीज़ों का सवाब उसको मिलता है, एक तो वह इल्म है जो किसी को सिखाया हो और इशाअत की हो और वह सालेह (नेक) औलाद है, जिसको छोड़ गया हो और वह क़ुरआन शरीफ़ जो मीरास में छोड़ गया हो और वह मस्जिद है और मुसाफ़िर ख़ाना है जिनको बना गया हो और वह नहर है जो जारी कर गया हो और वह सदक़ा है जिसको अपनी ज़िन्दगी और सेहत में इस तरह दे गया हो कि मरने के बाद उसका सवाब मिलता रहे। *(मिश्कात)*

'सवाब मिलता रहे' का मतलब यह है कि सदक़ा-ए-जारिया के तौर पर दे गया, मसलन वक़्फ़ कर गया हो और इल्म की इशाअत का मतलब यह है कि किसी मदरसे में चन्दा दिया हो या कोई दीनी किताब तालीफ़ की हो या पढ़ने वालों को तक़्सीम की हो या मस्जिदों और मदरसों में क़ुरआन पाक या किताबें वक़्फ़ की हों।

एक और हदीस में है कि आदमी के मरने के बाद सात चीज़ों का सवाब उसको मिलता रहता है, किसी को इल्म पढ़ाया गया हो, कोई नहर जारी कर दी हो, कोई कुवां बना दिया हो, कोई दरख़्त लगा दिया हो, कोई मस्जिद बना दी हो, क़ुरआन पाक मीरास में छोड़ा हो या ऐसी औलाद छोड़ी हो जो उसके लिए दुआ-ए-मग़्फ़िरत करती रहे। *(तर्ग़ीब)*

और इन सब चीज़ों में यह भी ज़रूरी नहीं कि सारी अकेले ख़ुद ही की हों, बल्कि अगर किसी चीज़ में थोड़ी बहुत शिर्कत भी अपनी हो गयी तो बक़द्र अपने हिस्से के उसके सवाब में से हिस्सा मिलता रहेगा।

दूसरी चीज़ ऊपर की हदीस में वह इल्मे दीन है जिससे लोगों को नफ़ा

पहुँचता रहे, मसलन किसी मदरसे में कोई किताब वक़्फ़ कर गया। जब तक वह किताब बाक़ी है, उससे लोग नफ़ा उठाते रहेंगे, उसको सवाब खुद ब खुद मिलता रहेगा। किसी तालिबे इल्म को अपने ख़र्च से हाफ़िज़े क़ुरआन या आलिम बना गया, जब तक उसके इल्म व हिफ़्ज़ से नफ़ा पहुँचता रहेगा चाहे वह हाफ़िज़ और आलिम खुद ज़िन्दा रहे या न रहे उस शख़्स को सवाब मिलता रहेगा। मसलन किसी शख़्स को हाफ़िज़ बनाया था। उसने दस बीस लड़कों को क़ुरआन पाक पढ़ा दिया और वह हाफ़िज़ उस के बाद मर गया तो जब तक ये लड़के क़ुरआन पाक पढ़ते पढ़ाते रहेंगे उस हाफ़िज़ को मुस्तक़िल सवाब मिलता रहेगा और उस हाफ़िज़ बनाने वाले को अलाहिदा सवाब होता रहेगा और इसी तरह से जब तक इन पढ़ने वाले लड़कों का सिलसिला पढ़ने पढ़ाने का क़ियामत तक चलता रहेगा, उस असल हाफ़िज़ बनाने वाले को सवाब खुद ब खुद मिलता रहेगा, चाहे ये लोग सवाब पहुँचायें या न पहुँचायें।

यही सूरत बेऐनिही किसी शख़्स को आलिम बनाने की है कि जब तक बिला वास्ता या वास्ते से उसके इल्म से लोगों को नफ़े का सिलसिला चलता रहेगा उस अव्वल आलिम बनाने वाले को इन सब का सवाब मिलता रहेगा, और यहां भी वही पहली बात है कि यह ज़रूरी नहीं कि पूरा हाफ़िज़ या पूरा आलिम तने तन्हा (अकेले) बनाए। अगर किसी हाफ़िज़ के हिफ़्ज़ में अपनी तरफ़ से मदद हो गयी, किसी आलिम के इल्म हासिल करने में अपनी तरफ़ से कोई इआनत हो गयी तो इस इआनत (मदद) के बक़द्र सवाब का सिलसिला क़ियामत तक जारी रहेगा। ख़ुशनसीब हैं वे लोग, जिनकी किसी क़िस्म की जानी या माली कोशिश इल्म के फैलाने में दीन के बक़ा और हिफ़्ज़ में लग जाए कि दुनिया की ज़िन्दगी ख़्वाब से ज़्यादा नहीं, न मालूम कब इस आलम से एक दम जाना हो जाए, जितना ज़ख़ीरा अपने लिए छोड़ जाएगा, वही देरपा और कारआमद है। अज़ीज़, क़रीब, अह्बाब, रिश्तेदार, सब दो चार दिन रोकर याद करके अपने अपने मशाग़िल में लग कर भूल जायेंगे। काम आने वाली चीज़ें यही हैं। जिनको आदमी अपनी ज़िन्दगी में अपने लिए कभी फ़ना न होने वाले बैंक में जमा कर जाए कि सरमाया महफ़ूज़ रहे और नफ़ा क़ियामत तक मिलता रहे।

तीसरी चीज़ जो इस हदीसे पाक में ज़िक्र की गयी है वह औलादे सालेह है, जो मरने के बाद दुआ-ए-ख़ैर भी करती रहे।

अव्वल तो औलाद का सालेह बन जाना भी मुस्तक़िल सदक़ा-ए-जारिया

है कि जब तक कोई भी नेक काम करती रहेगी, अपने आप को उसका सवाब मिलता रहेगा। फिर अगर वह नेक औलाद वालिदैन के लिए दुआ भी करती रहे और जब वह सालेह है तो दुआएं करती ही रहेगी, यह मुस्तक़िल ज़ख़ीरा वालिदैन के लिए है।

एक नेक औरत का क़िस्सा रौज़ में लिखा है, जिसको बाहीता कहते थे, बड़ी कसरत से इबादत करने वाली थी। जब उसका इन्तिक़ाल होने लगा, तो उसने अपना सर आसमान की तरफ़ उठाया और कहा, ऐ वह ज़ात! जो मेरा तोशा और मेरा ज़ख़ीरा है और उसी पर मेरा ज़िन्दगी और मौत में भरोसा है, मुझे मरते वक़्त रूसवा न कीजियो और क़ब्र में मुझे वहशत में न रखियो। जब वह इन्तिक़ाल कर गयी तो उसके लड़के ने यह एहतिमाम शुरू कर दिया कि हर जुमा को वह मां की क़ब्र पर जाता और क़ुरआन शरीफ़ पढ़ कर उसको सवाब बख़्शता और उसके लिए और सब क़ब्रस्तान वालों के लिए दुआ करता। एक दिन उस लड़के ने अपनी मां को ख़्वाब में देखा और पूछा अम्मां! तुम्हारा क्या हाल है? मां ने जवाब दिया, मौत की सख़्ती बड़ी सख़्त चीज़ है। मैं अल्लाह की रहमत से क़ब्र में बड़ी राहत से हूँ। रैहान मेरे नीचे बिछी हुई है, रेशम के तकिए लगे हुए हैं, क़ियामत तक यही बर्ताव मेरे साथ रहेगा। बेटे ने पूछा कि कोई ख़िदमत मेरे लायक़ हो तो कहो। उसने कहा कि तू हर जुमा को मेरे पास आकर क़ुरआन पाक पढ़ता है, उसको न छोड़ना। जब तू आता है, सारे क़ब्रस्तान वाले खुश होकर मुझे ख़ुशख़बरी देने आते हैं कि तेरा बेटा आ गया। मुझे भी तेरे आने की बड़ी ख़ुशी होती है और उन सबको भी बहुत ख़ुशी होती है। वह लड़का कहता है कि मैं इसी तरह हर जुमा को एहतिमाम (पाबन्दी) से जाता था। एक दिन मैं ने ख़्वाब में देखा कि बहुत बड़ा मज्मा मर्दों और औरतों का मेरे पास आया। मैं ने पूछा, तुम लोग कौन हो? क्यों आये हो? वे लोग कहने लगे कि हम फ़लां क़ब्रस्तान के आदमी हैं, हम तुम्हारा शुक्रिया अदा करने आए हैं, तुम जो हर जुमा को हमारे पास आते हो और हमारे लिए दुआ-ए-मग़्फ़िरत करते हो, इससे हमको बड़ी ख़ुशी होती है, इसको जारी रखना। इसके बाद से मैं ने और भी ज़्यादा एहतिमाम इसका शुरू कर दिया।

एक और आलिम फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने ख़्वाब में देखा कि एक क़ब्रस्तान की सब क़ब्रें एकदम शक़ हो (फट या खुल) गयीं और मुर्दे उनमें से बाहर निकल कर ज़मीन पर से कोई चीज़ जल्दी जल्दी चुन रहे हैं, लेकिन एक

शख़्स फ़ारिग़ बैठा है, वह कुछ नहीं चुनता। मैं ने उसके पास जाकर सलाम किया और उससे पूछा कि ये लोग क्या चुन रहे हैं ? उस शख़्स ने कहा जो लोग कुछ सदक़ा, दुआ, दरूद वग़ैरह करके इस क़ब्रस्तान वालों को भेजते हैं उसकी बरकात समेट रहे हैं। मैं ने कहा कि तुम क्यों नहीं चुनते ? उसने कहा कि मुझे इस वजह से इस्तिग़ना[1] है कि मेरा एक लड़का है, जो फलां बाज़ार में ज़ुलाबिया (हलवे की एक क़िस्म है जो मुंह को चिपक जाती है) बेचा करता है, वह रोज़ाना मुझे एक क़ुरआन शरीफ़ पढ़कर बख़्शता हैं, मैं सुबह को उठकर उस बाज़ार में गया। मैं ने एक नौजवान को देखा कि ज़ुलाबिया फ़रोख़्त कर रहा है और उसके होंठ हिल रहे हैं। मैं ने पूछा कि तुम क्या पढ़ रहे हो उसने कहा कि मैं रोज़ाना एक क़ुरआन पाक ख़त्म करके अपने वालिद को हद्या पेश किया करता हूँ। इस क़िस्से के अर्से के बाद मैंने फिर एक मर्तबा उस क़ब्रस्तान के आदमियों को उसी तरह चुनते देखा और इस मर्तबा उस शख़्स को भी चुनते देखा। जिससे पहली मर्तबा बात हुई थी। फिर मेरी आंख खुल गयी। मुझे इस पर ताज्जुब था। सुबह उठकर फिर मैं उसी बाज़ार में गया। तह्क़ीक़ से मालूम हुआ कि उस लड़के का इन्तिक़ाल हो गया। *(रौज़)*

हज़रत सालेह मुर्री रह० फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा जुमा की रात में अख़ीर रात में जामा मस्जिद जा रहा था ताकि सुबह की नमाज़ वहां पढ़ूं। सुबह में देर थी। रास्ते में एक क़ब्रस्तान था। मैं वहां एक क़ब्र के क़रीब बैठ गया। बैठते ही मेरी आंख लग गयी। मैं ने एक ख़्वाब में देखा कि सब क़ब्रें शक़ हो गयीं। और उनमें से मुर्दे निकल कर आपस में हंसी ख़ुशी बातें कर रहे हैं। उनमें से एक नौजवान भी क़ब्र से निकला, जिसके कपड़े मैले और वह मग़मूम सा एक तरफ़ बैठ गया। थोड़ी देर बाद आसमान से बहुत से फ़रिश्ते उतरे, जिनके हाथों में ख़्वान थे, जिन पर नूर के रूमाल ढके हुए थे, वे हर शख़्स को एक ख़्वान देते थे और जो ख़्वान ले लेता था, वह अपनी क़ब्र में चला जाता था। जब सब ले चुके तो यह जवान भी ख़ाली हाथ अपनी क़ब्र में जाने लगा। मैं ने उससे पूछा कि क्या बात है? तुम इस क़दर ग़मगीन क्यों हो? और ये ख़्वान कैसे थे? उसने कहा कि यह ख़्वान उन हदाया के थे, जो ज़िन्दा लोग अपने अपने मुर्दों को भेजते हैं। मेरे तो कोई और है नहीं जो भेजे। एक वालिदा है, मगर वह दुनिया में फंस

1. यानी बेनियाज़ी, बे-फ़िक्री।

रही है। उसने दूसरी शादी कर ली। वह अपने ख़ाविंद में मशग़ूल रहती है मुझे कभी भी याद नहीं करती। मैंने उससे उसकी वालिदा का पता पूछा और सुबह को उस पते पर जाकर उसकी वालिदा को पर्दे के पीछे बुलाया और उससे उसके लड़के को पूछा और यह ख़्वाब उसे सुनाया। उस औरत ने कहा, बेशक वह मेरा लड़का था। मेरे जिगर का टुकड़ा था, मेरी गोद उसका बिस्तर था। इसके बाद उस औरत ने मुझे एक हज़ार दिरम दिये कि मेरे लड़के और मेरी आंखों की ठंडक के लिए इसको सदका कर देना और मैं आइन्दा हमेशा उसको दुआ और सदके से याद रखूँगी, कभी न भूलूँगी।

हज़रत सालेह रह० फ़रमाते हैं कि मैं ने फिर ख़्वाब में उस मज्मे को उसी तरह देखा और उस नौजवान को भी बड़ी अच्छी पोशाक में बहुत ख़ुश देखा। वह मेरी तरफ़ को दौड़ा हुआ आया और कहने लगा कि सालेह! हक़ तआला शानुहू तुम्हें जज़ा-ए-ख़ैर अता फ़रमाए, तुम्हारा हद्या मेरे पास पहुँच गया। *(रौज़)*

इस किस्म के हज़ारों वाकिआत किताबों में मौजूद हैं। कुछ इससे पहली हदीस में भी गुज़र चुके हैं। पस अगर कोई शख़्स यह चाहता है कि मेरी औलाद मरने के बाद भी मेरे काम आये तो अपने मक़्दूर के मुवाफ़िक़ उसको नेक और सालेह बनाने की कोशिश करनी चाहिए कि यह हक़ीक़त में औलाद के लिए भी ख़ैर ख़्वाही है और अपने लिए भी कारआमद है। अल्लाह जल्ल शानुहू का पाक इर्शाद है :-

يَآ أَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا (تحريم)

या अय्युहल्लज़ी-न आ म-नू कू अन फ़ु स-कुम व अह्ली कुम नारा० *(सूर: तह्रीम)*

तर्जुमाः- ऐ ईमान वालो! अपने आपको और अपने अह्ल व अयाल को (जहन्नम की) आग से बचाओ।

ज़ैद बिन अस्लम रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह आयते शरीफ़ा तिलावत फ़रमायी, तो सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! अपने अह्ल व अयाल को किस तरह आग से बचाएं? हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि उनको ऐसे कामों का हुक्म करते रहो जिससे अल्लाह जल्ल शानुहू राज़ी हों और ऐसी चीज़ों

से रोकते रहो जो अल्लाह तआला को ना पसंद हों।

हज़रत अली करमल्लाहु वज्हहू से इस आयते शरीफ़ा की तफ़्सीर में नक़ल किया गया कि अपने आपको और अपने अह्ल को ख़ैर की बातों की तालीम और तम्बीह करते रहो। *(दुर्रे मंसूर)*

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल किया गया है कि अल्लाह जल्ल शानुहू उस बाप पर रहम करे जो औलाद की इस ..त में मदद करे कि वह बाप के साथ नेकी का बर्ताव करे। यानी ऐसा बर्ताव उससे न करे। जिससे ना फ़रमानी करने लगे। *(एहया)*

औलाद को नेक बनाना भी इसमें दाख़िल है। अगर वह नेक न होगी तो फिर वालिदैन के साथ जो करे वह बर महल है।

एक हदीस में है कि बच्चे का सातवें दिन अक़ीक़ा किया जाए और उसका नाम रखा जाये और जब छः साल का हो जाए तो उसको आदाब सिखाए जायें और जब नौ साल का हो जाए तो उसका बिस्तर अलाहिदा कर दिया जाये (यानी दूसरों के पास न सोये) और जब तेरह साल का हो जाए तो नमाज़ न पढ़ने पर मारा जाये और जब सोलह साल का हो जाए तो निकाह कर दिया जाए। फिर उसका बाप उसका हाथ पकड़ कर कहे कि मैं ने तुझे आदाब सिखा दिये, तालीम दे दी, निकाह कर दिया, अब मैं अल्लाह से पनाह मांगता हूँ दुनिया में तेरे फ़ित्ने से और आख़िरत में तेरी वजह से अज़ाब से। *(एहया)*

तेरी वजह से अज़ाब का मतलब यह है कि बहुत सी अहादीस में मुख़्तलिफ़ उन्वानात से यह इर्शादे नबवी वारिद हुआ है कि जो शख़्स कोई बुरा तरीक़ा इख़्तियार करता है तो उसको अपने अमल का गुनाह भी होता है और जितने लोग उसकी वजह से उस पर अमल करेंगे उन सब का गुनाह भी उसको होगा। इस तरह पर कि करने वालों के अपने गुनाह में कोई कमी न होगी, उनको अपने फ़ेल का मुस्तक़िल गुनाह होगा और उसको ज़रिया और सबब बनने का मुस्तक़िल गुनाह होगा।

इस बिना पर जो औलाद अपने बड़ों की बुरी हरकात उनके अमल की वजह से इख़्तियार करती है, उन सब का गुनाह बड़ों को भी होता है, इसलिए अपने छोटों के सामने बुरी हरकत करने से खास तौर से एहतिराज़ करना (बचना) चाहिए।

इस हदीस शरीफ़ में तेरह वर्ष की उम्र में नमाज़ छोड़ने पर मारने का हुक्म है और बहुत सी अहादीस में है कि बच्चे को जब सात साल का हो जाए नमाज़ का हुक्म करो। और जब दस वर्ष का हो जाए तो नमाज़ न पढ़ने पर मारो। ये रिवायात अपनी सेहत और कसरत के लिहाज़ से मुक़द्दम हैं। बहरहाल बच्चे के नमाज़ न पढ़ने पर बाप को मारने का हुक्म है और उस पर नमाज़ में तंबीह न करना अपना जुर्म है और इसके बिल मुक़ाबिल अगर उसको नमाज़, रोज़ा और दीनी अह्काम का पाबंद और आदी बना दिया, तो उसके आमाले हसना का सवाब अपने आपको भी मिलेगा और इसके साथ जब वह सालेह बन कर वालिदैन के लिए दुआ भी करेगा तो उससे भी ज़्यादा अज्र व सवाब मिलता रहेगा।

इब्ने मालिक रह० कहते हैं कि हदीसे बाला में औलाद को सालेह के साथ इसलिए मुक़य्यद किया है कि सवाब ग़ैर सालेह औलाद का नहीं पहुँचता और उसकी दुआ का ज़िक्र औलाद को दुआ की तर्ग़ीब देने के लिए है। चुनांचे यह कहा गया है कि वालिद को सालेह औलाद के अमल का सवाब ख़ुद ब ख़ुद पहुँचता रहता है। चाहे वह दुआ करे या न करे। जैसा कि कोई शख़्स रिफ़ाहे आम के लिए कोई दरख़्त लगा दे और लोग उसका फल खाते रहें तो इन खाने वालों के खाने का सवाब उसको मिलता रहेगा, चाहे ये लोग दरख़्त लगाने वाले के लिए दुआ करें या न करें।

अल्लामा मनावी रह० कहते हैं कि वालिद को दुआ के साथ तंबीह और तहरीज़ के तौर पर ज़िक्र फ़रमाया कि वह दुआ करे, वरना दुआ हर शख़्स को नाफ़ेअ् है चाहे वह औलाद हो या न हो।

इस हदीस शरीफ़ में तीन चीज़ों का ज़िक्र एहतिमाम की वजह से किया है। इनके अलावा और भी कुछ चीज़ें अहादीस में ऐसी आयी हैं जिनके मुताल्लिक़ यह वारिद हुआ है कि उनका दायमी सवाब मिलता रहता है।

मुतअद्दद अहादीस में यह मज़्मून वारिद हुआ है कि जो शख़्स कोई नेक तरीक़ा जारी कर दे, उसको अपने अमल का सवाब भी मिलेगा और जितने आदमी उस पर अमल करेंगे उन सबके अमल का सवाब भी उसको मिलता रहेगा और करने वालों के अपने अपने सवाब में कोई कमी न होगी। और जो शख़्स बुरा तरीक़ा जारी कर दे, उस पर अपने किये का भी गुनाह है और जितने

आदमी उस पर अमल करेंगे, उन सबके अमल का गुनाह भी उसको होगा और इसकी वजह से उनके गुनाहों में कोई कमी न होगी।

इसी तरह एक और हदीस में है कि हर शख़्स के अमल का सवाब मरने के बाद ख़त्म हो जाता है, मगर जो शख़्स अल्लाह के रास्ते में सरहदों की हिफ़ाज़त करने वाला है, उसका सवाब क़ियामत तक बढ़ता रहता है।

(मिर्क़ात)

इनके अलावा अहादीस में और भी कुछ आमाल का ज़िक्र आया है, जैसा कि कोई दरख़्त लगा देना या नहर जारी कर देना, जिनको अल्लामा सुयूती रह० ने जमा करके ग्यारह चीज़ें बतायी हैं और इब्ने इमाद रह० ने तेरह चीज़ें गिनवायी हैं लेकिन इनमें से अक्सर इन ही तीन की तरफ़ राजेअ् हो जाती हैं जैसा कि दरख़्त लगाना, या नहर जारी करना सदक़ा-ए-जारिया में दाख़िल है।

(औन)

(۲۰) عن عائشةؓ انهم ذبحوا شاة فقال النبی صلی اللہ علیہ وسلم مابقی منها قالت مابقی منها الا کتفها قال بقی کلها الا کتفها رواه الترمذی وصححه کذا فی المشکوٰة.

20. हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि एक मर्तबा घर के आदमियों ने या सहाबा किराम रज़ि० ने एक बकरी ज़िब्ह की (और उसमें से तक़्सीम कर दिया) हुज़ूर सल्ल० ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि कितना बाक़ी रहा? हज़रत आइशा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि सिर्फ़ एक शाना बाक़ी रह गया है (बाक़ी सब तक़्सीम हो गया) हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि वह सब बाक़ी है इस शाने के सिवा।

फ़ायदाः- मक़्सद यह है कि जो अल्लाह के लिए ख़र्च कर दिया गया वह तो हक़ीक़त में बाक़ी है कि उसका दायमी सवाब बाक़ी है और जो रह गया वह फ़ानी है, न मालूम बाक़ी रहने वाली जगह ख़र्च हो या न हो।

साहिबे मज़ाहिर रह० कहते हैं कि इसमें इशारा है अल्लाह जल्ल शानुहू के इस पाक इर्शाद की तरफ़ -

مَاعِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَاعِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ (نحل ع ۱۳)

"मा अिनद-कुम यन्फ़दु व मा अिन्दल्लहि बाक़्०"

(नहल रूकूअ् न० 13)

'जो कुछ तुम्हारे पास दुनिया में है, वह एक दिन ख़त्म हो जाएगा (चाहे उसके ज़वाल से हो या तुम्हारी मौत से) और जो कुछ अल्लाह जल्ल शानुहू के पास है वह हमेशा बाक़ी रहने वाला है'।

एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद वारिद हुआ है कि बन्दा कहता है, मेरा माल मेरा माल, इसके सिवा दूसरी बात नहीं है कि उसका माल वह है जो खा कर ख़त्म कर दिया या पहन कर पुराना कर दिया या अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करके अपने लिए ज़ख़ीरा बना लिया, और इसके अलावा जो रह गया, वह जाने वाली चीज़ है जिसको वह लोगों के लिए छोड़कर चला जाएगा। *(मुस्लिम)*

एक और हदीस में है, कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मर्तबा सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन से दर्याफ़्त फ़रमाया कि तुममें से कौन शख़्स ऐसा है जिसको अपने वारिस का माल अपने माल से ज़्यादा महबूब हो। सहाबा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह, ऐसा तो कोई भी नहीं है, हर शख़्स को अपना माल ज़्यादा महबूब होता है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि आदमी का अपना माल वही है जिसको (ज़ख़ीरा बना कर) आगे भेज दिया और जो माल छोड़ गया, वह वारिस का माल है। *(मिश्कात, बुख़ारी)*

एक सहाबी रज़ि॰ कहते हैं कि मैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सूरः 'अल्हाकुमुत्तकासुर' तिलावत फ़रमायी। फिर इर्शाद फ़रमाया, आदमी कहता है, मेरा माल, मेरा माल ! ओ आदमी ! तेरे लिए इसके सिवा कुछ नहीं जो खाकर ख़त्म कर दे या पहन कर पुराना कर दे या सदक़ा कर के आगे चलता कर दे, ताकि अल्लाह जल्ल शानुहू के ख़ज़ाने में महफ़ूज़ रहे। *(मिश्कात, मुस्लिम)*

मुतअद्दद सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम से इस क़िस्म के मज़ामीन की रिवायतें नक़ल की गयीं। लोगों को दुनिया के बैंक में रूपया जमा करने का बड़ा एहतिमाम होता है, लेकिन वही क्या साथ रहने वाला है ? अगर अपनी ज़िंदगी ही में उस पर कोई आफ़त न भी आए, तो मरने के बाद बहरहाल वह अपने काम आने वाला नहीं है, लेकिन अल्लाह जल्ल शानुहू के बैंक में जमा किया हुआ रूपया हमेशा काम आने वाला है, न उस पर कोई आफ़त है न ज़वाल और मज़ीद बरआं (इससे बढ़कर यह) कि कभी ख़त्म होने वाला नहीं।

हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह तस्तरी रह० अपने माल को अल्लाह के रास्ते में बड़ी कसरत से ख़र्च किया करते थे। उनकी वालिदा और भाईयों ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रज़ि० से इसकी शिकायत की कि यह सब कुछ ख़र्च करना चाहते हैं, हमें डर है कि यह कुछ रोज़ में फ़क़ीर हो जायेंगे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रज़ि० ने हज़रत सहल रज़ि० से दर्याफ़्त किया। उन्होंने फ़रमाया कि आप ही बताएं की अगर कोई मदीना तैय्यबा का रहने वाला रूस्ताक़ में (जो मुल्क फ़ारस का एक शहर है) ज़मीन ख़रीद ले और वहां मुंतक़िल होना चाहे, वह मदीना तैय्यबा में अपनी कोई चीज़ छोड़ेगा? उन्होंने फ़रमाया कि नहीं? कहने लगे, बस यही बात है। लोगों को उनके जवाब से यह ख़्याल हो गया कि वह दूसरी जगह इंतिक़ाले आबादी करने का इरादा कर रहे हैं।

(तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)

और उनकी ग़रज़ दूसरे आलम को इंतिक़ाल थी, और आजकल तो हर शख़्स को इसका ज़ाती तजुर्बा भी है। जो लोग हिन्द से पाकिस्तान या पाकिस्तन से हिन्द में मुस्तक़िल क़ियाम की नीयत से इंतिक़ाले आबादी अपने इख़्तियार से करना चाहते हैं, वे अपने जाने से पहले अपनी जायदाद, मकानात वग़ैरह सब चीज़ों के तबादले की कितनी कोशिश करते हैं और इतने तबादला मुकम्मल नहीं हो जाता, सारी तकालीफ़ बर्दाश्त करने के बावजूद इन्तिक़ाले आबादी का इरादा नहीं करते और जो बिला इख़्तियार जब्री तौर पर एक जगह अपनां सब कुछ छोड़ कर दूसरी जगह मुंतक़िल हो गये हैं। उनकी हसरत व अफ़सोस की न कोई इंतिहा है, न ख़ात्मा, यही सूरत बे ऐनिही हर शख़्स की इस आलम से इंतिक़ाल की है। अभी तक हर शख़्स को अपने सामान, जायदाद वग़ैरह सब चीज़ के इंतिक़ाल का इख़्तियार है, लेकिन जब मौत से जब्री इंतिक़ाल हो जाएगा, सब कुछ इसी आलम में रह जाएगा और गोया बहक़्क़े सरकार ज़ब्त हो जाएगा। अभी वक़्त है कि समझ रखने वाले अपने सामान को दूसरे आलम में मुंतक़िल कर लें।

(٢١) عن ابی ہریرةؓ قال قال رسول اللّٰه صلی اللّٰه علیه وسلم من کان یؤمن باللّٰہ
والیوم الاخر فلیکرم ضیفه ومن کان یؤمن باللّٰہ والیوم الاخر فلایؤذ جاره ومن
کان یؤمن باللّٰہ والیوم الاخر فلیقل خیرًا اولیصمت وفی روایة بدل الجار ومن
کان یؤمن باللّٰہ والیوم الاخر فلیصل رحمه متفق علیه کذا فی المشکوٰة.

21. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि जो शख़्स अल्लाह पर ईमान रखता है, और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है उसको चाहिए कि मेहमान का इक्राम करे और अपने पड़ोसी को न सताए और ज़बान से कोई बात निकाले तो भलाई की निकाले वरना चुप रहे।

और दूसरी रिवायत में है कि सिला रहमी करे।

फ़ायदाः- इस हदीसे पाक में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कई उमूर पर तंबीह फ़रमायी और हर मज़्मून को हुज़ूर सल्ल॰ ने इस इर्शाद के साथ ज़िक्र फ़रमाया कि जो शख़्स अल्लाह पर ईमान रखता है और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है। तर्जुमे में इख़्तिसार की वजह से शुरू ही में ज़िक्र पर इक्तिफ़ा किया गया। हर हर जुम्ले के साथ इस को ज़िक्र फ़रमाने से मक़्सूद इन उमूर की अहमियत और ताकीद है, जैसा कोई शख़्स अपनी औलाद में से किसी को कहे कि अगर तू मेरा बेटा है तो फ़लां काम कर दे।

मक़्सद इस तंबीह से यह है कि ये चीज़ें कामिल ईमान के अफ़राद हैं जो इन का एहतिमाम न करे उसका ईमान भी कामिल नहीं। *(मज़ाहिर)*

और अल्लाह पर ईमान और आख़िरत पर ईमान के ज़िक्र में ख़ुसूसियत ग़ालिबन इस वजह से है कि अल्लाह जल्ल शानुहू पर ईमान बग़ैर तो आख़िरत में किसी नेकी का कोई सवाब नहीं। और अल्लाह जल्ल शानुहू पर ईमान में आख़िरत पर ईमान ख़ुद आ गया था। फिर उसको ख़ुसूसियत से ग़ालिबन इसलिए ज़िक्र फ़रमाया कि यह तंबीह और सवाब की नीयत पर शौक़ दिलाना है कि इन उमूर का हक़ीक़ी बदला और सवाब आख़िरत के दिन मिलेगा, जिस दिन यह मालूम होगा कि दुनिया की ज़रा ज़रा सी चीज़ और अमल पर अल्लाह जल्ल शानुहू के यहां कितना कितना अज्र व सवाब है। इस के बाद हुज़ूर सल्ल॰ ने इस हदीसे पाक में चार चीज़ों पर तंबीह फ़रमायी।

1. पहली चीज़ मेहमान का इक्राम है, वही इस जगह बंदे का इस रिवायत के ज़िक्र करने से मक़्सूद है इसकी तौज़ीह (ख़ुलासा) आइन्दा हदीस में आएगी।

2. दूसरा मज़्मून पड़ोसी को ईज़ा (तक्लीफ़) न देने के मुताल्लिक़ है। इस हदीस शरीफ़ में अद्ना दर्जे का हुक्म किया गया कि पड़ोसी को ईज़ा न

पहुँचाये, यह बहुत ही अद्ना दर्जा है, वरना रिवायात में पड़ोसी के हक़ के मुताल्लिक़ बहुत ज़्यादा ताकीदें वारिद हुई हैं।

शैख़ैन की कुछ रिवायात में 'फ़ल् युक्रिम जा-र-हू' वारिद हुआ है। यानी पड़ोसी का इक्राम करे और शैख़ैन की बाज़ रिवायात में 'फल युहसिन इला जारिही' आया है कि उसके साथ एहसान का मामला करे यानी जिस चीज़ का वह मुहताज हो, उसमें उसकी इआनत (मदद) करे, उससे बुराई को दफ़ा करे।

एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद वारिद हुआ है, जानते हो कि पड़ोसी का क्या हक़ है? अगर वह तुझसे मदद चाहे, उसकी मदद कर, अगर क़र्ज़ मांगे तो उसको क़र्ज़ दे, अगर मुहताज हो तो उसकी इआनत कर, अगर बीमार हो तो इयादत कर, अगर वह मर जाये तो उसके जनाज़े के साथ जा, अगर उसको ख़ुशी हासिल हो तो मुबारकबाद दे, अगर मुसीबत पहुँचे तो ताज़ियत कर। बग़ैर उसकी इजाज़त के उसके मकान के पास अपना मकान ऊँचा न कर, जिससे उसकी हवा रूक जाए। अगर तू कोई फल ख़रीदे तो उसको भी हद्या दे, और अगर यह न हो सके तो उस फल को ऐसी तरह पोशीदा घर में ला कि वह न देखे और उसको तेरी औलाद बाहर लेकर न निकले ताकि पड़ोसी के बच्चे उसको देखकर रंजीदा न हों और अपने घर के धुएं से उसको तक्लीफ़ न पहुँचा, मगर उस सूरत में कि जो पकाए, उसमें से उसका भी हिस्सा लगाये, तुम जानते हो कि पड़ोसी का कितना हक़ है? क़सम है उस पाक ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है कि उसके हक़ को उसके सिवा कोई नहीं जानता, जिस पर अल्लाह रहम करे। रिवायत किया इस को ग़ज़ाली रह० ने अर्बईन में। *(मज़ाहिर)*

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० ने फ़त्हुल बारी में भी इस हदीस को ज़िक्र किया है।

एक हदीस में आया है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (तीन मर्तबा) फ़रमाया, ख़ुदा की क़सम! मोमिन नहीं है! ख़ुदा की क़सम! मोमिन नहीं है।, ख़ुदा की क़सम! मोमिन नहीं है। किसी ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! कौन शख़्स? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया जिसका पड़ोसी उसकी मुसीबतों (और बदियों) से मामून (महफ़ूज़) न हो।

एक और हदीस में है कि जन्नत में वह शख़्स दाख़िल न होगा जिस

का पड़ोसी उसकी मुसीबतों से मामून न हो। (मिश्कात)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ और हज़रत आइशा दोनों हज़रात हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नक़ल करते हैं कि हज़रत जिब्रील अलै॰ मुझे पड़ोसी के बारे में इस क़दर ताकीद करते रहे कि मुझे उनकी ताकीदों से यह गुमान हुआ कि पड़ोसी को वारिस बना कर रहेंगे। (मिश्कात)

हक़ सुब्हान-हू का पाक इर्शाद है -

وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّبِذِی الْقُرْبٰی وَالْيَتٰمٰی وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْجَارِ ذِی الْقُرْبٰی وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ (نساء ع ٦)

तर्जुमाः- 'तुम अल्लाह तआला की इबादत इख़्तियार करो और उसके साथ किसी चीज़ को शरीक मत करो और अपने वालिदैन के साथ अच्छा मामला करो और दूसरे अह्ले क़राबत के साथ भी और यतीमों के साथ और ग़ुरबा के साथ और पास वाले पड़ोसी के साथ भी और दूर वाले पड़ोसी के साथ भी और हम मज्लिस के साथ भी और मुसाफ़िर के साथ भी।

पास वाले पड़ोसी से मुराद यह है कि उसका मकान क़रीब हो और दूर के पड़ोसी से मुराद यह है कि उसका मकान दूर हो।

हसन बसरी रह॰ से किसी ने पूछा कि पड़ोस कहाँ तक है? उन्होंने फ़रमाया कि चालीस मकान आगे की जानिब और चालीस पीछे की जानिब, चालीस दाएं और चालीस बाएं जानिब ।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ से नक़ल किया गया कि दूर के पड़ोसी से इब्तिदा न की जाए, बल्कि पास के पड़ोसी से इब्तिदा की जाए।

हज़रत आइशा रज़ि॰ ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दर्याफ़्त किया कि मेरे दो पड़ोसी हैं, किस से इब्तिदा करूँ? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, जिसका दरवाज़ा तेरे दरवाज़े के क़रीब हो।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ से मुख़्तलिफ़ तरीक़ से नक़ल किया गया है कि पास का पड़ोसी वह है जिस से क़राबत हो और दूर का पड़ोसी वह है जिससे क़राबत न हो।

नौफ़ शामी रह॰ से नक़ल किया गया कि पास का पड़ोसी मुसलमान

पड़ोसी है और दूर का पड़ोसी यहूद व नसारा (यानी ग़ैर-मुस्लिम)।

(दुर्रे मंसूर)

मुस्नद बज़्ज़ार वग़ैरह में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद नक़ल किया गया है कि पड़ोसी तीन तरह के हैं -

1. एक वह पड़ोसी, जिसके तीन हक़ हों, पड़ोस का हक़, रिश्तेदारी का हक़ और इस्लाम का हक़।

2. दूसरी क़िस्म वह है जिसके दो हक़ हों, पड़ोस का हक़ और इस्लाम का हक़।

3. तीसरी क़िस्म वह है जिसका एक ही हक़ हो, वह ग़ैर मुस्लिम पड़ोसी है। (जुमल) गोया पड़ोस के तीन दर्जे तर्तीबवार हो गये।

इमाम ग़ज़्ज़ाली रह० ने भी इस हदीस शरीफ़ को नक़ल फ़रमाया है। इसके बाद फ़रमाते हैं कि देखो, इस हदीस शरीफ़ में महज़ पड़ोसी होने की वजह से मुश्रिक का हक़ भी मुसलमान पर क़ायम कर दिया गया है।

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद नक़ल किया गया है कि क़ियामत के दिन सबसे पहले दो पड़ोसियों में फ़ैसला किया जाएगा।

एक शख़्स हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० के पास आए और अपने पड़ोसी की कसरत से शिकायत करने लगे। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० ने फ़रमाया, जाओ (अपना काम करो) अगर उसने तुम्हारे बारे में अल्लाह जल्ल शानुहू की ना-फ़रमानी की (कि तुमको सताया) तो तुम उसके बारे में अल्लाह तआला शानुहू की ना-फ़रमानी न करो।

एक सही हदीस में आया है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में एक औरत का हाल बयान किया गया कि वह रोज़े भी कसरत से रखती है, तहज्जुद भी पढ़ती है, लेकिन अपने पड़ोसियों को सताती है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि वह जहन्नम में दाख़िल होगी (चाहे फिर सज़ा भुगत कर निकल आवे) इमाम ग़ज़्ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि पड़ोसी का हक़ सिर्फ़ यह ही नहीं कि तकलीफ़ न दी जाये बल्कि उसका हक़ यह है कि उसकी तकलीफ़ को बर्दाश्त किया जाये।

हज़रत इब्नुल मुक़फ़्फ़ा रह० अपने पड़ोसी की दीवार के साए में अक्सर बैठ जाया करते थे। उन को मालूम हुआ कि उसके ज़िम्मे क़र्ज़ हो गया, जिसकी

वजह से वह अपना घर फ़रोख़्त करना चाहता है फ़रमाने लगे कि हम उसके घर के साए में हमेशा बैठे, उसके साए का हक़ हमने कुछ अदा न किया। यह कह कर उसके घर की क़ीमत उसको नज़र कर दी और फ़रमाया कि तुम्हें क़ीमत वसूल हो गयी, अब इसको फ़रोख़्त करने का इरादा न करना।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ के गुलाम ने एक बकरी ज़िब्ह की। हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया कि जब उसकी खाल निकाल चुको तो सबसे पहले उसके गोश्त में से मेरे यहूदी पड़ोसी को देना। कई दफ़ा यही लफ़्ज़ फ़रमाया। गुलाम ने अर्ज़ किया कि आप कितनी मर्तबा इसको फ़रमायेंगे। हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया कि मैं ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना, वह फ़रमाते थे कि मुझे हज़रत जिब्रील अलैहि॰ बार बार पड़ोसी के मुताल्लिक़ ताकीद फ़रमाते रहे, (इसलिए मैं बार बार कह रहा हूँ।)

हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि मकारिमे अख़्लाक़ दस चीज़ें हैं, बसा औक़ात ये चीज़ें बेटे में हो जाती हैं, बाप में नहीं होतीं, गुलाम में हो जाती हैं, आक़ा में नहीं होतीं। हक़ तआला शानुहू की अता है, जिसको चाहे अता कर दे।

1. सच बोलना, 2. लोगों के साथ सच्चाई का मामला करना, (धोखा न देना) 3. साइल को अता करना, 4. एहसान का बदला देना, 5. सिला रहमी करना, 6. अमानत की हिफ़ाज़त करना, 7. पड़ोसी का हक़ अदा करना, 8. साथी का हक़ अदा करना, 9. मेहमान का हक़ अदा करना, 10. इन सबकी जड़ और असल उसूल हया है। *(एहया)*

3. तीसरा मज़्मून हदीसे बाला में यह है कि जो शख़्स अल्लाह पर आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो, वह ख़ैर की बात ज़बान से निकाले या चुप रहे।

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ का यह पाक इर्शाद जामेअ् कलिमा है, इसलिए कि जो बात कही जाए वह ख़ैर होगी या शर और ख़ैर में हर वह चीज़ दाख़िल है जिसका कहना मतलूब है, फ़र्ज़ हो या मुस्तहब, इसके अलावा जो रह गया वह शर है। *(फ़त्ह)*

यानी अगर कोई ऐसी बात हो जो बज़ाहिर न ख़ैर मालूम होती हो, न शर वह हाफ़िज़ रह॰ के कलाम के मुवाफ़िक़ शर में दाख़िल हो जाएगी, इसलिए कि जब कोई फ़ायदा उससे मक़्सूद नहीं, तो लग्व (बेकार) हुई, वह ख़ुद शर है।

हज़रत उम्मे हबीबा रज़ि॰ ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल किया कि आदमी का हर कलाम उस पर वबाल है, कोई नफ़ा देने वाली चीज़ नहीं, सिवाए इसके कि भलाई का हुक्म करे या बुराई से रोके या अल्लाह जल्ल शानुहू का ज़िक्र करे। इस हदीस को सुनकर एक शख़्स कहने लगे, यह हदीस तो बड़ी सख़्त है। हज़रत सुफ़ियान सौरी रह॰ ने फ़रमाया इसमें हदीस की सख़्ती की क्या बात है? यह तो ख़ुद अल्लाह जल्ल शानुहू ने क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाया –

لَاخَيْرَفِي كَثِيْرٍمِّنْ نَّجْوَاهُمْ اِلَّامَنْ اَمَرَبِصَدَقَةٍ اَوْمَعْرُوْفٍ اَوْاِصْلَاحٍ بَيْنَ النَّاسِ ط وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ ابْتِغَآءَ مَرْضَاةِ اللّٰهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا (نسآء ع ١٧)

तर्जुमाः– 'लोगों की अक्सर सरगोशियों में ख़ैर नहीं होती, हां मगर जो लोग ऐसे हैं कि ख़ैरात या किसी नेक काम की या लोगों में बाहम इस्लाह कर देने की तर्ग़ीब देते हैं और जो शख़्स अल्लाह तआला की ख़ुश्नूदी के वास्ते यह काम करेगा, हम उसको अन्क़रीब बहुत ज़्यादा अज्र अता करेंगे।

हज़रत अबूज़र रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूर सल्ल॰ से अर्ज़ किया, मुझे कुछ वसीयत फ़रमा दीजिए। हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम्हें अल्लाह के ख़ौफ़ की वसीयत करता हूँ कि यह तुम्हारे हर काम के लिए ज़ीनत है। मैंने अर्ज़ किया कुछ और इर्शाद? फ़रमाया कि क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत और अल्लाह के ज़िक्र का एहतिमाम कि यह आसमानों में तुम्हारे ज़िक्र का सबब है और ज़मीन में तुम्हारे लिए नूर है। मैं ने और ज़्यादती चाही तो इर्शाद फ़रमाया कि सुकूत (ख़ामोशी) बहुत कसरत से रखा करो, यह शैतान के दूर रहने का ज़रिया है और दीनी कामों में मदद का सबब है। मैं ने और ज़्यादती चाही तो फ़रमाया कि हंसने की ज़्यादती से एहतराज़ करो, (यानी बचो) इससे दिल मर जाता है और मुंह की रौनक़ कम हो जाती है। मैं ने अर्ज़ किया, और कुछ? फ़रमाया, हक़ की बात कहो, चाहे कड़वी क्यों न हो। मैं ने अर्ज़ किया और कुछ? फ़रमाया, अल्लाह के मामले में किसी का ख़ौफ़ न करो। मैं ने अर्ज़ किया, और कुछ? फ़रमाया कि तुम्हें अपने उयूब (का फ़िक्र) लोगों के उयूब को देखने से रोक दे। *(दुर्रे मंसूर)*

इमाम ग़ज़ाली रह॰ फ़रमाते हैं कि ज़बान अल्लाह जल्ल शानुहू की बड़ी नेमतों में से एक नेमत है और उसकी ग़रीब व लतीफ़ सन्अतों में से एक

सन्अत है, उसका जुस्सा छोटा है, लेकिन उसकी इताअत और गुनाह बहुत बड़े हैं, हत्ताकि कुफ़्र व इस्लाम जो गुनाह और इताअत में दो आख़िरी किनारों पर हैं, इसी से ज़ाहिर होते हैं। इसके बाद इसकी बहुत सी आफ़तें शुमार की हैं। बेकार गुफ़्तगू, बेहूदा बातें, जंग व जदल, मुँह फुला कर बातें करना, मुक़फ़्फ़ा इबारतों और फ़साहत में तकल्लुफ़ करना, फ़हश बात करना, गाली देना, लानत करना, शेर व शायरी में इन्हिमाक, किसी के साथ तमस्ख़ुर करना, किसी का राज़ ज़ाहिर करना, झूठा वायदा करना, झूठ बोलना, झूठी क़सम खाना, किसी पर तारीज़ (छींटाकशी) करना, तारीज़ के तौर पर झूठ बोलना, ग़ीबत करना, चुग़लख़ोरी करना, दोरंगी बातें करना, बे-महल किसी की तारीफ़ करना, बे-महल सवाल करना, वग़ैरह-वग़ैरह। इतनी कसीर आफ़तें इस छोटी सी चीज़ के साथ वाबस्ता हैं कि उनका मस्अला निहायत ख़तरनाक है। इसी वजह से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चुप रहने की बहुत तर्ग़ीब फ़रमायी है।

हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि जो शख़्स चुप रहा, वह निजात पा गया। एक सहाबी रज़ि॰ ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! मुझे इस्लाम के बारे में ऐसी चीज़ बता दीजिए कि आप के बाद मुझे किसी से पूछना न पड़े। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, अल्लाह जल्ल शानुहू पर ईमान लाओ और उस पर इस्तिक़ामत रखो, उन्होंने अर्ज़ किया, हुज़ूर सल्ल॰ मैं किस चीज़ से बचूँ? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, अपनी ज़बान से।

एक और सहाबी रज़ि॰ ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! निजात की क्या सूरत है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि अपनी ज़बान को रोके रखो, अपने घर में रहो, (फ़ुज़ूल बाहर न फिरो) और अपनी ख़ताओं पर रोते रहो।

एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद नक़ल किया गया कि जो शख़्स दो चीज़ों का ज़िम्मा ले ले, मैं उसके लिए जन्नत का ज़िम्मेदार हूँ, एक ज़बान, दूसरी शर्मगाह।

एक हदीस में है, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सवाल किया गया कि जो चीज़ें जन्नत में दाख़िल करने वाली हैं, उनमें सबसे अहम क्या चीज़ है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, अल्लाह का ख़ौफ़ और अच्छी आदतें। फिर अर्ज़ किया गया कि जहन्नम में जो चीज़ें दाख़िल करने वाली हैं उनमें अहम क्या चीज़ है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया मुँह और शर्मगाह।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰ सफ़ा और मर्वः की सई कर रहे थे और अपनी ज़बान को ख़िताब करके फ़रमाते थे, ऐ ज़बान! अच्छी बात कह। नफ़ा कमाएगी। और शर से सुकूत कर, सलामत रहेगी, इससे पहले कि शर्मिन्दा हो। किसी ने पूछा कि यह जो कुछ आप फ़रमा रहे हैं, अपनी तरफ़ से फ़रमा रहे हैं या आपने इस बारे में कुछ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है? उन्होंने फ़रमाया कि मैं ने हुज़ूर सल्ल॰ से सुना है कि आदमी को ख़ताओं का अक्सर हिस्सा उसकी ज़बान में होता है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जो शख़्स अपनी ज़बान को रोके रहे, अल्लाह जल्ल शानुहू उसकी ऐबपोशी करते हैं और जो शख़्स अपने गुस्से पर क़ाबू रखे अल्लाह जल्ल शानुहू उसको अपने अज़ाब से महफ़ूज़ फ़रमाते हैं और जो शख़्स अल्लाह जल्ल शानुहू की बारगाह में माज़िरत करता है, हक़ तआला शानुहू उसके उज़्र को क़ुबूल फ़रमाते हैं।

हज़रत मुआज़ रज़ि॰ ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! मुझे कुछ वसीयत फ़रमाएं। हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह जल्ल शानुहू की इस तरह इबादत करो, कि गोया उसको देख रहे हो और अपने आपको मुर्दों में शुमार करो और अगर तुम कहो तो मैं वह चीज़ बताऊँ जिससे इन चीज़ों पर सबसे ज़्यादा क़ुदरत हासिल हो जाए और यह फ़रमाकर अपनी ज़बान की तरफ़ इशारा फ़रमाया। *(एहया)*

हज़रत सुलैमान अला नीबिय्यिना व अलैहिस्सलाम से नक़ल किया गया कि अगर कलाम चांदी है तो सुकूत (ख़ामोशी) सोना है।

हज़रत लुक़्मान हकीम अलै॰ जो अपनी हिक्मत व दानाई की वजह से दुनिया में मशहूर हैं, एक हब्शी गुलाम, निहायत बद-सूरत थे, मगर अपनी हिक्मतों की वजह से मुक़्तदा-ए-आलम[1] थे। किसी ने उनसे पूछा कि तू फ़लां शख़्स का गुलाम नहीं है? उन्होंने फ़रमाया बेशक हूँ, फिर उसने कहा कि तू फ़लां पहाड़ के नीचे बकरियां न चराता था? उन्होंने फ़रमाया सही है। फिर उसने कहा कि फिर यह मर्तबा किस बात से मिला? उन्होंने फ़रमाया, (चार चीज़ों से)

---

1. यानी पूरी दुनिया जिसके पीछे चले।

1. अल्लाह का ख़ौफ़, 2. बात में सच्चाई, 3. अमानत का पूरा पूरा अदा करना और 4. बे-फ़ायदा बात से सुकूत, और भी मुतअद्द (कई) रिवायात में उनकी ख़ुसूसी आदत कसरते सुकूत ज़िक्र की गयी। (दुर्रे मंसूर)

हज़रत बरा रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि एक बद्दू (देहाती) ने आकर अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! मुझे ऐसा अमल बता दीजिए जो जन्नत में ले जाने वाला हो। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, भूखे को खाना खिलाओ, प्यासे को पानी पिलाओ, अच्छी बातों का लोगों को हुक्म करो और बुरी बातों से रोको, और यह न हो सके तो अपनी ज़बान को भली बात के अलावा बोलने से रोके रखो।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि अपनी ज़बान को ख़ैर के अलावा से महफ़ूज़ रखो कि उसके ज़रिये से तुम शैतान पर ग़ालिब रहोगे। ये कुछ रिवायात मुख़्तसरन ज़िक्र की हैं, इनके अलावा बहुत सी रिवायात और आसार हैं जिनको इमाम ग़ज़ाली रह॰ ने ज़िक्र किया और अल्लामा ज़ुबैदी रह॰ और हाफ़िज़ इराक़ी रह॰ ने उन की तख़रीज की है। उनसे मालूम होता है कि ज़बान का मस्अला अहम मस्अला है जिससे हम लोग बिल्कुल ग़ाफ़िल हैं, जो चाहा, ज़बान से कह दिया, हालांकि अल्लाह जल्ल शानुहू के दो निगहबान हर वक़्त दिन और रात, दाएं और बाएं मोंढ़ों पर मौजूद रहते हैं जो हर भलाई और बुराई को लिखते हैं। इस सब के बाद अल्लाह जल्ल शानुहू और उसके पाक रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का क्या क्या एहसान ज़िक्र किया जाए। आदमी से बे-इल्तिफ़ाती में फ़ुज़ूल बात निकल ही जाती है। हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया, कफ़्फ़ारा मज्लिस का यह है कि उठने से पहले तीन मर्तबा यह दुआ पढ़ ले -

سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ
اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ

"सुब्हानल्लाहि व बिहम्दि ही सुब्हान-कल्लाहुम्-म व बिहम्दि-क अश्ह-दु अल्ला इला-ह इल्ला अन्-त अस्तग़्फ़िरू-क व अतूबु इलै-क॰"

(हिस्न हसीन)

एक हदीस में है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अख़ीर में इन कलिमात को पढ़ा करते थे। किसी ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह!

आप पहले तो इन कलिमात को नहीं पढ़ते थे। हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि ये कलिमात मज्लिस का कफ़्फ़ारा हैं।

एक और हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, कुछ कलिमे ऐसे हैं कि जो शख़्स मज्लिस से उठने के वक़्त तीन मर्तबा उनको पढ़े तो वे मज्लिस की गुफ़्तगू के लिए कफ़्फ़ारा होते हैं और अगर मज्लिसे ख़ैर में पढ़े जाएं तो उस मज्लिस (के ख़ैर होने) पर उनसे मुहर लग जाती है, जैसा कि ख़त के ख़त्म पर मुहर लगायी जाती है, वे कलिमात ये हैं–

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَآاِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ

"सुब्हा-न कल्लाहुम्-म व बिहम्दि-क ला इला-ह इल्ला अन्-त अस्तग़्फ़िरू-क व अतूबु इलैक॰" *(अबूदाऊद)*

4. चौथा मज़्मून हदीसे बाला (ऊपर की हदीस) में सिला रहमी के मुताल्लिक़ है, इस का मुफ़स्सल बयान आइन्दा फ़स्लों में आ रहा है।

(۲۲) عن ابی شریح الکعبیؓ ان رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم قال من کان یؤمن باللّٰہ والیوم الاٰخر فلیکرم ضیفہ جائزتہ یوم ولیلۃ والضیافۃ ثلثۃ ایام فما بعد ذٰلک فھو صدقۃ ولایحل لہ ان یثوی عندہ حتّٰی یخرجہ متفق علیہ کذا فی المشکوٰۃ

22. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि जो शख़्स अल्लाह जल्ल शानुहू पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो, उसके लिए ज़रूरी है कि अपने मेहमान का इकराम करे। मेहमान का जायज़ा एक दिन रात है और, मेहमानी तीन दिन रात और मेहमान के लिए यह जायज़ नहीं कि इतना तवील क़ियाम करे, जिससे मेज़बान मशक़्क़त में पड़ जाये।

फ़ायदाः– इस हदीस शरीफ़ में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दो अदब इर्शाद फ़रमाए। एक मेज़बान के मुताल्लिक़, दूसरा मेहमान के मुताल्लिक़। मेज़बान का अदब यह है कि अगर वह अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है जैसा कि पहली हदीस में गुज़र चुका है तो उसको चाहिए कि मेहमान का इक्राम करे और मेहमान का इक्राम यह है कि कुशादारूई (चेहरे की खुशी के साथ) और ख़ुश खुल्क़ी (अच्छे अख़्लाक़) से पेश आए, नर्मी से गुफ़्तगू करे। *(मज़ाहिर)*

एक हदीस में है कि सुन्नत यह है कि आदमी मेहमान के साथ घर के दरवाज़े तक मुशायअत[1] के लिए जाए। *(मिश्कात)*

हज़रत उक़्बा रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जो शख़्स मेहमानी न करे उसमें कोई ख़ैर नहीं।

हज़रत समरा रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेहमानों की ज़ियाफ़त (मेहमान नवाज़ी) का हुक्म फ़रमाया करते थे। *(मज्मउज़्ज़वाइद)*

एक शख़्स ने देखा कि हज़रत अली रज़ि० रो रहे हैं। उसने सबब पूछा तो आपने फ़रमाया कि सात दिन से कोई मेहमान नहीं आया, मुझे इसका डर है कि कहीं हक़ तआला शानुहू ने मेरी इहानत[2] (तौहीन) का इरादा तो नहीं कर लिया। *(एहया)*

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हदीसे बाला में मेहमान के इक्राम का हुक्म फ़रमाने के बाद इर्शाद फ़रमाया कि उसका जायज़ा एक दिन रात है। इसकी तफ़्सीर में उलमा के कई क़ौल हैं:-

हज़रत इमाम मालिक रज़ि० से यह नक़ल किया गया कि इससे मुराद इक्राम व एज़ाज़ और ख़ुसूसी तोहफ़े हैं, यानी एक दिन रात तो उस के एज़ाज़ में अच्छा खाना तैयार करे और बाक़ी अय्याम में मामूली मेहमानी। इसके बाद फिर उलमा के इसमें दो क़ौल हैं कि तीन दिन की मेहमानी, जो हुज़ूर सल्ल० के पाक इर्शाद में वारिद हुई है वह उस एक दिन के बाद है, यानी मेहमान का हक़ कुल चार दिन हो गये या वह एक दिन ख़ुसूसी एज़ाज़ का भी इन ही तीन दिन में दाख़िल है।

दूसरा मतलब यह है कि जायज़ा से मुराद नाश्ता है रास्ते का, और हासिल यह है कि अगर मेहमान क़ियाम करे तो तीन दिन की मेहमानी है और क़ियाम न कर सके तो एक दिन का नाश्ता। *(फ़तहुल बारी)*

तीसरा मतलब यह है कि जायज़ा से मुराद तो नाश्ता ही है लेकिन जो मतलब उलमा ने लिखा है कि तीन दिन की मेहमानी और चौथे दिन रूख़्सत के वक़्त एक दिन का नाश्ता।

---

1. यानी साथ देने के लिए, 2. तौहीन करने का।

चौथा मतलब यह है कि जायज़ा से मुराद गुज़र है और मतलब यह है कि जो शख़्स मुस्तक़िल मुलाक़ात के लिए आए उसका हक़ तीन दिन क़ियाम का है और जो रास्ते में गुज़रते हुए ठहर जाये कि असल मक़्सूद आगे जाना था। यह जगह रास्ते में पड़ गयी इसलिए यहां भी क़ियाम कर लिया, तो उसके क़ियाम का हक़ सिर्फ़ एक दिन है। *(मुन्ज़री)*

और इन सब क़ौलों का खुलासा मुख़्तलिफ़ हैसियात से मेहमान के इक्राम का एहतिमाम ही है, कि एक दिन का उसका खुसूसी एहतिमाम खाने का करे और रवानगी के वक़्त नाश्ते का भी, बिलखुसूस ऐसे रास्तों में जहां रास्ते में खाना न मिल सकता हो।

दूसरा अदब हदीसे वाला में मेहमान के लिए है कि कहीं जाकर इतना तवील (लम्बा) क़ियाम न करे जिससे मेज़बान को तंगी और दिक़्क़त पेश आए।

एक और हदीस में इस लफ़्ज़ की जगह यह इर्शाद है कि इतना न ठहरे कि मेज़बान को गुनाहगार बना दे, यानी यह कि उसके तवील क़ियाम की वजह से मेज़बान उसकी ग़ीबत करने लगे, या कोई ऐसी हरकत करे जिससे मेहमान को अज़ीयत (तक्लीफ़) हो या मेहमान के साथ किसी क़िस्म की बदगुमानी करने लगे, कि ये सब उमूर मेज़बान को गुनाहगार बनाने वाले हैं। लेकिन यह सब कुछ इस सूरत में है कि मेज़बान की तरफ़ से मेहमान के क़ियाम पर इस्रार और तक़ाज़ा न हो या उसके अंदाज़ से ग़ालिब गुमान यह हो कि ज़्यादा क़ियाम उस पर गरां (भारी) नहीं है।

एक हदीस में है कि किसी ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! क्या चीज़ है जो उसको गुनाह में डाले? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि उसके पास इतना क़ियाम करे कि मेज़बान के पास उसके खिलाने को कुछ न हो।

हाफ़िज़ रह० कहते हैं कि इसमें हज़रत सलमान रज़ि० का अपने मेहमान के साथ एक क़िस्सा पेश आया। *(फ़त्ह)*

जिस क़िस्से की तरफ़ हाफ़िज़ रह० ने इशारा किया है। इमाम ग़ज़्ज़ाली रह० ने उसको नक़्ल किया है।

हज़रत अबू वाइल रह० कहते हैं कि मैं और मेरा एक साथी हज़रत सलमान रज़ि० की ज़ियारत के लिए गये। उन्होंने जौ की रोटी और नीम कोफ़्ता नमक हमारे सामने रखा। मेरा साथी कहने लगा कि अगर इसके साथ सातर

(पोदीने की एक क़िस्म है) होता तो बड़ा लज़ीज़ होता। हज़रत सलमान रज़ि॰ तशरीफ़ ले गये और वुज़ू का लोटा रेहन (गिवी) रख कर सातर ख़रीद लाये। जब हम खा चुके तो मेरे साथी ने कहा -

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ قَنَّعَنَا بِمَارَزَقَنَا

"अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी क़न्-न-अना बिमा र-ज़ क़ना" (सब तारीफ़ अल्लाह जल्ल शानुहू के लिए है, जिसने हमें मा ह-ज़र पर क़नाअत की तौफ़ीक़ अता फ़रमायी। हज़रत सलमान रज़ि॰ ने फ़रमाया अगर तुम्हें मा हज़र पर क़नाअत होती तो मेरा लोटा गिरवी न रखा जाता।) *(एहया)*

हासिल यह है कि मेज़बान पर ऐसी फ़रमाइश करना जिससे उसको दिक़्क़त हो, यह भी मेज़बान को तंगी में डालने में दाख़िल है। दूसरे के घर जाकर चुनां चुनीं करना, यह चाहिए, वह चाहिए, हरगिज़ मुनासिब नहीं है। जो वह हाज़िर कर रहा है, उसको सब्र व शुक्र से बशाशत के साथ खा लेना चाहिए। फ़रमाइशें करना बसा औक़ात मेज़बान की दिक़्क़त और तंगी का सबब होता है। अलबत्ता अगर मेज़बान के हाल से अंदाज़ा हो कि वह फ़रमाइश से ख़ुश होता है, मसलन फ़रमाइश करने वाला कोई महबूब हो और जिससे फ़रमाइश की जाए वह जां निसार (जान निछावर करने वाला) हो तो जो चाहे फ़रमाइश करे।

हज़रत इमाम शाफ़ई रह॰ बग़दाद में ज़ाफ़रानी रह॰ के मेहमान थे और वह हज़रत इमाम रह॰ की ख़ातिर में रोज़ाना अपनी बांदी को एक पर्चा लिखा करता था। जिसमें उस वक़्त के खाने की तफ़सील होती थी। हज़रत इमाम शाफ़ई रह॰ ने एक वक़्त बांदी से पर्चा लेकर देखा और उसमें अपने क़लम से एक चीज़ का इज़ाफ़ा फ़रमा दिया। दस्तरख़्वान पर जब ज़ाफ़रानी ने वह चीज़ देखी तो बांदी पर एतिराज़ किया कि मैं ने इसके पकाने को नहीं लिखा था। वह पर्चा लेकर आक़ा के पास आयी और पर्चा दिखा कर कहा कि यह चीज़ हज़रत इमाम रह॰ ने ख़ुद अपने क़लम से इज़ाफ़ा की थी। ज़ाफ़रानी ने जब उसको देखा और हज़रत रह॰ के क़लम से उसमें इज़ाफ़े पर नज़र पड़ी तो ख़ुशी से बाग़ बाग़ हो गया और इस ख़ुशी में उस बांदी को आज़ाद कर दिया। *(एहया)*

अगर ऐसा कोई मेहमान हो और ऐसा मेज़बान हो तो यक़ीनन फ़रमाइश भी लुत्फ़ की चीज़ है।

(۲۳) عن ابی سعیدؓ انه سمع النبی صلی الله علیه وسلم یقول لا تصاحب الامؤمنا ولا یاکل طعامك الاتقی رواه الترمذی وابوداؤد والدارمی کذافی المشکٰوة وبسط فی تخریجه صاحب الاتحاف.

23. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि मुसलमान के अलावा किसी के साथ मुसाहबत और हम-नशीनी न रख और तेरा खाना ग़ैर मुत्तक़ी न खाये।

फ़ायदाः- इस हदीस पाक में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दो आदाब इर्शाद फ़रमाये।

1. अव्वल यह कि हमनशीनी और नशिस्त व बर्ख़ास्त ग़ैर मुस्लिम के साथ न रख। अगर इससे कामिल मुसलमान मुराद है तब तो मतलब यह है कि फ़ासिक़ व फ़ाजिर लोगों के साथ मुजालसत (उठना बैठना) इख़्तियार न कर। दूसरे जुम्ले में चूंकि मुत्तक़ी का ज़िक्र है, उससे इस मफ़्हूम की ताईद होती है, नीज़ इससे भी ताईद होती है कि एक हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है। कि न दाख़िल हों तेरे घर में मगर मुत्तक़ी लोग। *(कन्ज़)*

और अगर इससे मुतलक़न मुसलमान मुराद है तो मतलब यह है कि काफ़िरों के साथ बेज़रूरत मुजालसत इख़्तियार न की जाए, और हर सूरत में तंबीह मक़्सूद है अच्छी सोहबत इख़्तियार करने पर, इसलिए कि आदमी जिस क़िस्म के लोगों में कसरत से नशिस्त व बर्ख़ास्त (उठना बैठना) रखा करता है उसी क़िस्म के आसार आदमी में पैदा हुआ करते हैं। इसी बिना पर हुज़ूर सल्ल० का वह इर्शाद है जो अभी गुज़रा है कि तेरे घर में मुत्तक़ियों के अलावा दाख़िल न हों यानी उनसे मेल जोल होगा तो उनके असरात पैदा होंगे।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि सालेह हमनशीन की मिसाल मुश्क बेचने वाले की है, कि अगर उसके पास बैठा जाए तो वह तुझे थोड़ा सा मुश्क का हद्या भी दे देगा। तू उससे ख़रीद भी लेगा। और दोनों बातें न हों तो पास बैठने की वजह से मुश्क की ख़ुश्बू से दिमाग़ मुअत्तर रहेगा (और फ़रहत पहुँचती रहेगी) और बुरे साथी की मिसाल लोहार की भट्ठी के पास बैठने वाले की है, कि अगर उसकी भट्ठी से कोई चिंगारी उड़ कर लग गयी तो कपड़े जला देगी और यह भी न हो तो बदबू और धुआं तो कहीं गया नहीं। *(मिश्कात)*

एक और हदीस में है कि आदमी अपने दोस्त के मज़हब पर हुआ करता है, पस अच्छी तरह ग़ौर कर ले कि किससे दोस्ती कर रहा है?

(मिश्कात)

मतलब यह है कि पास बैठने का और सोहबत का असर बे इरादा रफ़्ता रफ़्ता आदमी में सरायत करता (घुस्ता) रहता है। यहां तक कि आदमी उसका मज़हब भी इख़्तियार कर लिया करता है, इसलिए पास बैठने वालों की दीनी हालत में अच्छी तरह से ग़ौर कर लेना चाहिए। बद दीनों के पास कसरत से बैठने से बद दीनी आदमी में पैदा हुआ करती है। रोज़मर्रा का तजुर्बा है कि शराब पीने वालों के, शतरंज खेलने वालों के पास थोड़े दिन कसरत से उठना बैठना हो तो ये मर्ज़ आदमी में लग जाते हैं।

एक और हदीस में है, हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू रज़ीन रज़ि॰ से फ़रमाया कि मैं तुझे ऐसी चीज़ बताऊँ, जिससे उस चीज़ पर क़ुदरत हो ज़ाए। जो दारैन की ख़ैर का सबब हो, अल्लाह का ज़िक्र करने वालों की मज्लिस इख़्तियार कर और जब तू तंहा (अकेला) हुआ करे तो जिस क़दर भी कर सके, अल्लाह के ज़िक्र से अपनी ज़बान को हरकत देता रहा कर और अल्लाह के लिए दोस्ती कर और उसी के लिए दुश्मनी कर।

(मिश्कात)

यानी जिससे दोस्ती या दुश्मनी हो वह अल्लाह ही की रज़ा के वास्ते हो, अपने नफ़्स के वास्ते न हो।

इमाम ग़ज़्ज़ाली रह॰ फ़रमाते हैं कि जिस शख़्स की मुसाहबत इख़्तियार करे, उसमें पांच चीज़ें होना चाहिएं –

1. अव्वल साहिबे अक़्ल हो, इसलिए कि अक़्ल असल रासुल माल है। बेवक़ूफ़ की मुसाहबत में कोई फ़ायदा नहीं है। उसका मआले कार (अन्जाम) वहशत और क़ता रहमी है।

हज़रत सुफ़्यान सोरी रह॰ से तो यह भी नक़ल किया गया कि अहमक़ की सूरत को देखना भी ख़ता है।

2. दूसरी चीज़ यह है कि उसके अख़्लाक़ अच्छे हों कि जब आदमी के अख़्लाक़ ख़राब हों तो वह अक़्ल पर बसा औक़ात ग़ालिब आ जाते हैं। एक आदमी समझदार है, बात को खूब समझता है लेकिन गुस्सा, शह्वत, बुख़्ल

वग़ैरह उसको अक्सर अक्ल का काम नहीं करने देते।

3. तीसरी चीज़ यह है कि वह फ़ासिक़ न हो, इसलिए कि जो शख़्स अल्लाह जल्ल शानुहू से भी न डरता हो, उसकी दोस्ती का कोई एतिबार नहीं, न मालूम किस जगह किस मुसीबत में फंसा दे।

4. चौथी चीज़ यह है कि वह बिदअती न हो कि उसके ताल्लुक़ात से बिदअत के साथ मुतास्सिर हो जाने का अंदेशा रहे और उसकी नहूसत के मुतअद्दी होने का ख़ौफ़ है। बिदअती इसका मुस्तहिक़ है कि उससे ताल्लुक़ात अगर हों तो ख़त्म कर लिए जाएं न यह कि ताल्लुक़ात पैदा किए जाएं।

5. पांचवी चीज़ यह है कि वह दुनिया कमाने पर हरीस न हो कि उसकी सोहबत, सिम्मे क़ातिल है, इसलिए कि तबीअत तशब्बुह और इक़्तिदा पर मजबूर हुआ करती है और मख़्फ़ी तौर पर दूसरे के असरात लिया करती है। *(एहया)*

हज़रत इमाम बाक़र रह० फ़रमाते हैं कि मुझे मेरे वालिद हज़रत जैनुल आबिदीन रह० ने वसीयत फ़रमायी है कि पांच आदमियों के साथ न रहना, उनसे बात भी न करना, हत्ता की रास्ता चलते हुए उनके साथ रास्ता भी न चलना –

1. एक फ़ासिक़ शख़्स कि वह तुझे एक लुक़्मा, बल्कि एक लुक़्मे से भी कम में फ़रोख़्त कर देगा। मैंने पूछा कि एक लुक़्मे से कम में फ़रोख़्त करने का क्या मतलब? फ़रमाया कि एक लुक़्मे की उम्मीद पर वह तुझे फ़रोख़्त कर दे फिर उसको वह लुक़्मा भी जिसकी उम्मीद थी, न मिले (महज़ उम्मीद पर फ़रोख़्त कर दे)

2. बख़ील के पास न जाइयो कि वह तुझसे ऐसे वक़्त में ताल्लुक़ तोड़ देगा जब तू उसका सख़्त मुहताज हो।

3. झूठे के पास न जाईयो कि वह बालू (रेत) की तरह से क़रीब को दूर और दूर को क़रीब ज़ाहिर करेगा।

4. अहमक़ के पास को न गुज़रना कि वह तुझे नफ़ा पहुँचाना चाहेगा, नुक़सान पहुँचा देगा।

5. क़ता रहमी करने वाले के पास को न गुज़रियो कि मैं ने उस पर क़ुरआन पाक में तीन जगह लानत पायी है। *(रौज़)*

असरात का लेना आदमियों ही के साथ ख़ास नहीं है, बल्कि जिस चीज़ के साथ आदमी का तलब्बुस ज़्यादा हुआ करता है, उसके असरात मख़्फ़ी (छिपे) तौर पर आदमी के अंदर आ जाया करते हैं।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल किया गया कि बकरियों वालों में मस्कनत होती है और फ़ख़्र व तकब्बुर घोड़े वालों में होता है, इसकी वजह ज़ाहिर है कि इन दोनों जानवरों में ये सिफ़ात पायी जाती हैं। ऊँट और बैल वालों में शिद्दत और सख़्तदिली भी वारिद हुई है।

मुतअद्दद रिवायात में चीते की खाल पर सवारी की मुमानअत (मनाही) आयी है। उलमा ने मिनजुम्ला दूसरी वुजूह के इसकी एक वजह यह भी फ़रमायी है कि ताबिस्ता की वजह से उसमें दरिंदगी की ख़स्लत पैदा होती है। *(कौकब)*

2. दूसरा अदब हदीसे बाला में यह है कि तेरा खाना मुत्तक़ी लोग ही खाएं यह मज़्मून भी मुतअद्दद रिवायात में आया है।

एक हदीस में आया है कि अपना खाना मुत्तक़ी लोगों को खिलाओ और अपने एहसान का मोमिनों को मोरद बनाओ। *(इत्तिहाफ़)*

उलमा ने लिखा है कि इससे मुराद दावत का खाना है, हाजत का खाना नहीं है, चुनांचे एक हदीस में है कि अपने खाने से उस शख़्स की ज़ियाफ़त करो, जिससे अल्लाह की वजह से मुहब्बत हो। *(इत्तिहाफ़)*

दफ़्ए हाजत के खाने में हक़ तआला शानुहू ने क़ैदियों के खिलाने की भी मद्ह (तारीफ़) फ़रमायी है और क़ैदी उस ज़माने के काफ़िर थे। *(मज़ाहिर)*

जैसा कि आयात के सिलसिले में नं॰ 34 पर यह मज़्मून गुज़र चुका है, और अहादीस के सिलसिले में नं॰ 10 पर गुज़र चुका है कि एक फ़ाहिशा औरत की महज़ इसी वजह से मग़्फ़िरत हुई कि उसने एक प्यासे कुत्ते को पानी पिलाया था। और भी मुतअद्दद (कई सारी) रिवायात में मुख़्तलिफ़ मज़ामीन से इसकी ताईद होती है।

हुज़ूर सल्ल॰ ने तो क़ायदा और ज़ाब्ता फ़रमा दिया कि हर जानदार में अज्र है, इसमें मुत्तक़ी, ग़ैर मुत्तक़ी, मुस्लिम काफ़िर, आदमी, हैवान, सब ही दाख़िल हैं। लिहाज़ा एहतियाज और ज़रूरत के खाने में ये चीज़ें नहीं देखी जातीं, वहां तो एहितयाज की शिद्दत और क़िल्लत देखी जाती है। जितनी ज़्यादा

एहितयाज हो, उतना ही ज़्यादा सवाब होगा।

यह खाना दावत और ताल्लुक़ात का है, इसमें भी अगर कोई दीनी मस्लहत हो, ख़ैर की नीयत हो, तो जिस दर्जे की वह ख़ैर और मस्लहत होगी, उसी दर्जे का अज्र होगा, अल-बत्ता अगर कोई दीनी मस्लहत न हो तो फिर खाने वाला जितना ज़्यादा मुत्तक़ी होगा, उतना ही ज़्यादा अज्र का सबब होगा।

साहिबे मज़ाहिर और इमाम ग़ज़ाली रह० ने लिखा है कि मुत्तक़ियों को खिलाना ताअत और नेकियों पर इआनत (मदद) है और फ़ासिक़ों को खिलाना फ़िस्क़ व फ़ुजूर (बुरे कामों) पर इआनत है और ज़ाहिर चीज़ है कि मुत्तक़ी और नेक आदमी में जितनी ज़्यादा ताक़त और क़ुव्वत आएगी इबादत में ज़्यादा मस्रूफ़ होगा और फ़ासिक़ फ़ाजिर में अच्छे खानों से जितनी ज़्यादा क़ुव्वत होगी, लह्व व लअिब, फ़िस्क़ व फ़ुजूर में बढ़ेगा, जिससे उसकी इआनत हुई।

एक बुज़ुर्ग अपने खाने को फ़ुक़रा-ए-सूफ़िया ही को खिलाते थे। किसी ने अर्ज़ किया कि अगर आप आम फ़ुक़रा को भी खिलाएं तो बेहतर हो। उन्होंने फ़रमाया कि इन लोगों की सारी तवज्जोह अल्लाह तआला की तरफ़ है। जब इनको फ़ाक़ा होता है तो इससे तवज्जोह में इन्तिशार (फ़रक़ पड़ता) होता है। मैं एक शख़्स की तवज्जोह को अल्लाह जल्ल शानुहू तक लगाये रखूँ। यह इससे बेहतर है कि ऐसे हज़ार आदमियों की इआनत करूँ जिन की सारी तवज्जोह दुनिया की तरफ़ है। हज़रत जुनैद बग़दादी रह० ने जब यह बात सुनी तो बहुत पसंद फ़रमाया। *(एह्या, इत्तिहाफ़)*

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० से एक दर्ज़ी ने दर्याफ़्त किया कि मैं ज़ालिम बादशाहों के कपड़े सीता हूँ क्या आपका ख़्याल है कि मैं भी ज़ालिमों की इआनत कर रहा हूँ? उन्होंने इर्शाद फ़रमाया कि नहीं, तू इआनत करने वालों में नहीं है, तू तो ख़ुद ज़ालिम है, ज़ालिम की इआनत करने वाले वे लोग हैं जो तेरे हाथ सुई धागा फ़रोख़्त करें। *(एह्या)*

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद वारिद हुआ है कि जो शख़्स करीम पर एहसान करता है उसको गुलाम बना लेता है, और जो ज़लील (लईम) शख़्स पर एहसान करता है, उसकी दुश्मनी अपनी तरफ़ खींचता है। *(कन्ज़)*

एक और हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद वारिद हुआ है कि अपना खाना मुत्तक़ी लोगों को खिलाओ और अपना

एहसान मोमिनीन पर करो। (मिश्कात)

और इसमें अलावा ऊपर वाली मस्लेहतों के मुत्तक़ी और मोमिनीन का एज़ाज़ व इक्राम भी है और यह ख़ुद मुस्तक़िल तौर पर मंदूब और मामूर बिही है। इसी वजह से उलमा ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पाक इर्शाद की जिसमें आपने फ़ासिक़ों की दावत क़ुबूल करने से मना फ़रमाया है। (इत्तिहाफ़) मिन जुम्ला दूसरी वज्हों के एक वजह यह भी लिखी है कि फ़ासिक़ की दावत क़ुबूल करने में उसका एज़ाज़ व इक्राम है।

(٢٤) عن ابی ھریرۃؓ قال یارسول اللہ ای الصدقۃ افضل قال جھد المقل وابدابمن تعول رواہ ابوداؤد وغیرہ (مشکوٰۃ)

24. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सवाल किया कि सबसे अफ़ज़ल सदक़ा क्या है? हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि नादार की इंतिहाई कोशिश, और इब्तिदा उससे करो, कि जिसकी परवरिश तुम्हारे ज़िम्मे है।

फ़ायदा:- यानी जो शख़्स ख़ुद ज़रूरतमंद हो, फ़क़ीर हो, नादार हो, वह अपनी कोशिश से अपने को मशक़्क़त में डाल कर जो सदक़ा करे, वह अफ़ज़ल है।

हज़रत बिश्र रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि तीन अमल बहुत सख़्त हैं यानी उनमें हिम्मत का काम है -

1. एक तंगदस्ती की हालत में सख़ावत,

2. दूसरे तंहाई में तक़्वा और अल्लाह का ख़ौफ़,

3. तीसरे ऐसे शख़्स के सामने हक़ बात का कहना जिससे ख़ौफ़ हो या उम्मीद हो। (इत्तिहाफ़)

यानी उससे अग़राज़ वाबस्ता हैं और यह अंदेशा है कि वह हक़ बात कहने से मेरी अग़राज़ पूरी न करेगा या किसी क़िस्म की मज़र्रत (नुक़सान या तक्लीफ़) पहुँचाएगा। हक़ तआला शानुहू के पाक कलाम में भी इसकी तरफ़ इशारा गुज़र चुका है जैसा कि आयात के सिलसिले में नं॰ 28 पर गुज़रा कि वे हज़रात बावजूद अपनी हाजत और फ़क़्र के दूसरों को तर्जीह देते हैं। और उसके

ज़ैल में इसकी कुछ तफ़्सील भी गुज़र चुकी है।

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू इर्शाद फ़रमाते हैं कि तीन शख़्स हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए। उनमें से एक ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मेरे पास सौ दीनार (अशर्फ़ियां) थे। मैं ने उनमें से दस दीनार अल्लाह के वास्ते सदक़ा कर दिए। दूसरे साहब ने अर्ज़ किया कि मेरे पास दस दीनार थे मैं ने एक दीनार सदक़ा कर दिया। तीसरे साहब ने अर्ज़ किया कि मेरे पास एक ही दीनार था मैं ने उसका दसवां हिस्सा सदक़ा किया है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि तुम तीनों का सवाब बराबर है। इसलिए कि हर शख़्स ने अपने माल का दसवां हिस्सा सदक़ा किया है।

एक और हदीस में इसी क़िस्म का एक और क़िस्सा वारिद हुआ है। उसमें हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यही इर्शाद जवाब में है कि तुम सब, सवाब में बराबर हो कि हर शख़्स ने अपने माल का दसवां हिस्सा सदक़ा कर दिया।

उस हदीस में यह भी वारिद है कि उसके बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह आयते शरीफ़ा पढ़ीः-

"लि युन्फ़िक़् ज़ू स-अ-तिम् मिन् स-अ-तिही०"

यह आयते शरीफ़ा सूरः तलाक़ के पहले रूकूअ् के ख़त्म पर है। पूरी आयते शरीफ़ा का तर्जुमा यह है कि वुसअत वाले को अपने वुसअत के मुवाफ़िक़ ख़र्च करना चाहिए और जिसकी आमदनी कम हो, उसको चाहिए कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने जितना उसको दिया है, उसमें से ख़र्च करे (यानी अमीर आदमी अपनी हैसियत के मुवाफ़िक़ ख़र्च करे और ग़रीब आदमी अपनी हैसियत के मुवाफ़िक़, क्योंकि) खुदा-ए-तआला किसी शख़्स को उससे ज़्यादा तक्लीफ़ नहीं देता, जितना उसको दिया है। (और ग़रीब आदमी ख़र्च करता हुआ इससे न डरे कि फिर बिल्कुल ही नहीं रहेगा) ख़ुदा-ए-तलाआ तंगी के बाद जल्दी ही फ़राग़त भी दे देगा।

अल्लामा सुयूती रह० ने दुर्रे मंसूर में इस आयते शरीफ़ा के ज़ैल में हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू की रिवायत के हम मआनी दूसरे बाज़ सहाबा रज़ि० से भी रिवायत नक़्ल की है और उनसे बढ़ कर एक सही हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद नक़्ल किया गया कि एक

दिरम एक लाख दिरम से भी सवाब में बढ़ जाता है। इस तरह कि एक आदमी के पास दो ही दिरम फ़क़त हैं, उसने उनमें से एक सदक़ा कर दिया। दूसरा शख़्स ऐसा है कि उसके पास बहुत बड़ी मिक़्दार में माल है, उसने अपने कसीर माल में से एक लाख दिरम सदक़ा किए, तो यह एक दिरम सवाब में बढ़ जायेगा।

अल्लामा सुयूती रह॰ ने जामिअुस्सग़ीर में हज़रत अबूज़र रज़ि॰ और हज़रत अबू हुरैरह की रिवायात से इसको नक़ल किया है और सही की अलामत लिखी, यही नादार की कोशिश है, कि एक शख़्स के पास सिर्फ़ दो दिरम हैं, यानी सात आने कि एक दिरम तक़रीबन साढ़े तीन आने का होता है, उनमें से एक सदक़ा कर दे। इससे भी बढ़कर यह है कि जिसको इमाम बुख़ारी रह॰ ने रिवायत किया।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰ इर्शाद फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब हम लोगों को सदक़े का हुक्म फ़रमाया करते थे तो हममें से कुछ आदमी बाज़ार जाते और अपने ऊपर बोझ लाद कर मज़दूरी में एक मुद्द (जो हनफ़िया के नज़दीक एक सेर वज़न है और दूसरे हज़रात के नज़दीक तीन पाव से भी कुछ कम है) कमाते और उसको सदक़ा कर देते। (फ़त्ह)

कुछ रिवायात में है कि हममें से बाज़ आदमी जिनके पास एक दिरम भी न होता था, बाज़ार जाते और लोगों से इसकी ख़्वाहिश करते कि कोई मज़दूरी पर काम करा ले और अपनी कमर पर बोझ लाद कर एक मुद्द मज़दूरी हासिल करते।

रावी यह कहते हैं कि हमें जहां तक ख़्याल है, ख़ुद हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰ ने यह अपना ही ख़ुद हाल बताया है।

हज़रत इमाम बुख़ारी रह॰ ने इस पर यह बाब ज़िक्र किया है, 'बयान उस शख़्स का जो इसलिए मज़दूरी करे कि अपनी कमर पर बोझ लादे और फिर उस मज़दूरी को सदक़ा कर दे'। (फ़त्ह)

आज हममें से भी कोई इस उमंग का आदमी है कि स्टेशन पर जाकर सिर्फ़ इसलिए बोझ उठाए कि दो चार आने जो मिल जायेंगे वह उनको सदक़ा कर देगा?

इन हज़रात को आख़िरत के खाने का हर वक़्त उतना ही फ़िक्र रहता था, जितना हमें दुनिया के खाने का। हम इसलिए मज़दूरी कर सकते हैं कि आज खाने को कुछ नहीं, लेकिन ये इसलिए मज़दूरी करते थे कि आज आख़िरत में जमा करने को कुछ नहीं है।

इब्तिदा-ए-इस्लाम में बाज़ मुनाफ़िक़ ऐसे लोगों पर तान करते थे, जो मशक़्क़त उठा कर थोड़ा थोड़ा सदक़ा करते थे। हक़ तआला शानुहू ने उन पर इताब (नाराज़गी व ग़ुस्सा) फ़रमाया। चुनांचे इर्शाद है:-

اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فِى الصَّدَقَاتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ
اِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ط سَخِرَاللّٰهُ مِنْهُمْ ز وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ○
(توبہ رکوع ۱۰)

तर्जुमाः- ये (मुनाफ़िक़) ऐसे लोग हैं कि नफ़्ल सदक़ा करने वाले मुसलमानों पर सदक़ात के बारे में तान करते हैं। और (बिल् ख़ुसूस) उन लोगों पर (और भी ज़्यादा) तान करते हैं। जिनको सिवाए मेहनत और मज़दूरी के कुछ मयस्सर नहीं होता। ये (मुनाफ़िक़) उनका मज़ाक़ उड़ाते हैं। अल्लाह जल्ल शानुहू उनके मज़ाक़ उड़ाने का बदला (इसी नौअ् से) देगा (कि आख़िरत में इन अहमक़ों का भी अव्वल मज़ाक़ उड़ाया जाएगा) और दुख देने वाला अज़ाब तो उनके लिए है ही, (वह तो टलता नहीं।)

मुफ़स्सिरीन ने इस आयते शरीफ़ा के ज़ैल में बहुत सी रिवायात इस क़िस्म की ज़िक्र की हैं कि ये हज़रात रात भर हम्माली करके मज़दूरी कमाते और सदक़ा करते और जो कुछ थोड़ा बहुत घर में होता, वह तो उनकी निगाह में सदक़े के वास्ते ही होता था। मजबूरी के दर्जे में कुछ ख़ुद भी इस्तेमाल कर लिया।

एक मर्तबा हज़रत अली रज़ि॰ की ख़िदमत में एक साइल हाज़िर हुआ। आपने अपने साहबज़ादे हज़रज हसन या हज़रत हुसैन रज़ियाल्लाहु अन्हुमा से फ़रमाया कि अपनी वालिदा (हज़रत फ़ातिमा रज़ि॰) से कहो कि मैं ने जो छः दिरम तुम्हारे पास रखे हैं। उनमें से एक दे दो। साहबज़ादे गये और यह जवाब लाये कि वे आपने आटे के वास्ते रखवाए थे। हज़रत अली रज़ि॰ ने फ़रमाया कि आदमी अपने ईमान में उस वक़्त तक सच्चा नहीं होता जब तक अपने पास की मौजूद चीज़ से उस चीज़ पर ज़्यादा एतिमाद न हो जो अल्लाह जल्ल शानुहू के

पास है। अपनी वालिदा से कहो कि वह छः दिरम सब के सब दे दो। हज़रत फ़ातिमा रज़ि॰ ने तो याद दहानी के तौर पर फ़रमाया था उनको इसमें क्या ताम्मुल हो सकता था ? इसलिए हज़रत फ़ातिमा रज़ि॰ ने दे दिए। हज़रत अली रज़ि॰ ने वह सब साइल को दे दिए। हज़रत अली रज़ि॰ अपनी उस जगह से उठे भी नहीं थे कि एक शख़्स ऊँट फ़रोख़्त करता हुआ आया। आपने उसकी क़ीमत पूछी। उसने एक सौ चालीस दिरम बताए। आपने वह क़र्ज़ ख़रीद लिया और क़ीमत की अदाएगी का बाद का वायदा कर लिया। थोड़ी देर बाद एक और शख़्स आया और ऊँट को देखकर पूछने लगा कि यह किसका है? हज़रत अली रज़ि॰ ने फ़रमाया कि मेरा है। उसने दर्याफ़्त किया कि फ़रोख़्त करते हो? हज़रत अली रज़ि॰ ने फ़रमाया हाँ, उसने क़ीमत दर्याफ़्त की। हज़रत अली रज़ि॰ ने दो सौ दिरम बताए। वह ख़रीद कर ले गया। हज़रत अली रज़ि॰ ने एक सौ चालीस दिरम अपने क़र्ज़ ख़्वाह यानी पहले मालिक को देकर साठ दिरम हज़रत फ़ातिमा रज़ि॰ को लाकर दे दिए। हज़रत फ़ातिमा रज़ि॰ ने पूछा कि यह कहां से आये? हज़रत अली रज़ि॰ ने फ़रमाया कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वास्ते से वायदा फ़रमाया है कि जो शख़्स नेकी करता है उसको दस गुना बदला मिलता है। *(कंज़ुल उम्माल)*

यह भी ज़ुहद वाले की मशक़्क़त थी कि कुल सिर्फ़ छः दिरम तक़रीबन एक रूपया पांच आने कुल मौजूद थे, जो आटे के लिए रखे हुए थे। अल्लाह जल्ल शानुहू पर कामिल एतिमाद करते हुए उनको ख़र्च फ़रमा दिया और वह दुनिया का बदला वसूल कर लिया, और भी बहुत से वाक़िआत इन हज़रात के अल्लाह जल्ल शानुहू पर एतिमादे कामिल करके सब कुछ ख़र्च कर डालने के वारिद हुए हैं।

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ का क़िस्सा ग़ज़्वा-ए-तबूक का मशहूर व मारूफ़ है जबकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सदक़े का हुक्म फ़रमाया तो जो कुछ घर में था, सब कुछ लाकर पेश कर दिया, और हुज़ूर सल्ल॰ के दर्याफ़्त फ़रमाने पर कि घर में क्या छोड़ा, अर्ज़ किया, अल्लाह और उसके रसूल को, यानी उनकी रज़ा को। हालांकि उलमा ने लिखा है कि जब हज़रत अबूबक्र रज़ि॰ ईमान लाये तो उनके पास चालीस हज़ार अशर्फ़ियां थीं। *(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)*

मुहम्मद बिन अिबाद महलबी रह॰ कहते हैं कि मेरे वालिद मामून रशीद

बादशाह के पास गये। बादशाह ने एक लाख दिरम हद्या दिया। वालिद साहब, जब वहां से उठ कर आये तो सबके सब सदका कर दिये। मामून को इसकी इत्तिला हो गयी। जब दोबारा वालिद साहब की मुलाक़ात हुई तो मामून ने नाराज़ी का इज़्हार किया। वालिद साहब ने कहा, ऐ अमीरूल मोमिनीन ! मौजूद का रोकना माबूद के साथ बदगुमानी है। *(एह्या)*

यानी जो चीज़ मौजूद है, उसको ख़र्च न करना इसी ख़ौफ़ से तो होता है कि यह न रहेगी तो कहां से आएगी, तो गोया कि जिस मालिक ने इस वक़्त दिया है उसको दोबारा देना मुश्किल पड़ जायेगा।

बहुत से वाक़िआत अस्लाफ़ व अकाबिर के ऐसे गुज़रे हैं कि नादारी की हालत में भी जो कुछ था, सब दे दिया, लेकिन इन सब रिवायात और वाक़िआत के ख़िलाफ़ अहादीस में एक मज़्मून और भी आया है, और वह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक और मशहूर इर्शाद – "ख़ैरू स-द-क़-तिन मा का-न अन ज़ह्रि ग़िना" (बेहतरीन सदक़ा वही है जो ग़िना से हो।) यह मज़्मून भी मुतअद्द रिवायात से वारिद हुआ है।

अबू दाऊद शरीफ़ में एक क़िस्सा वारिद हुआ है। हज़रत जाबिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम लोग हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर थे। एक शख़्स हाज़िर हुए और एक बैज़े के बक़द्र सोना पेश कर के अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! यह मुझे एक मादन (कान) से मिल गया है। इसके अलावा मेरे पास कुछ नहीं है। हुज़ूर सल्ल० ने उस जानिब से एराज़ फ़रमा लिया। वह साहब दूसरी जानिब से हाज़िर हुए और यही दर्ख़्वास्त मुकर्रर (दोबारा) पेश की। हुज़ूर सल्ल० ने उस तरफ़ से भी मुँह फेर लिया। इसी तरह मुतअद्द मर्तबा हुआ। हुज़ूर सल्ल० ने उस डली को लेकर ऐसे ज़ोर से फेंका कि अगर वह उनके लग जाती तो ज़ख़्मी कर देती। इसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, कुछ लोग अपना सारा माल सदक़े में पेश कर देते हैं, फिर वे लोगों के सामने सवाल का हाथ फैलाते हैं। बेहतरीन सदक़ा वही है जो ग़िना से हो।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक शख़्स मस्जिद में हाज़िर हुए। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (उनकी बदहाली देखकर) लोगों को कपड़ा सदक़ा करने की तर्ग़ीब दी। लोगों ने कुछ कपड़े पेश किए। जिनमें से दो कपड़े हुज़ूर सल्ल० ने उनको भी मरहमत फ़रमाये। जो उस

वक़्त मस्जिद में दाख़िल हुए थे। इसके बाद दूसरे मौक़े पर हुज़ूर सल्ल॰ ने फिर लोगों को सदक़े की तर्ग़ीब दी तो उन्होंने भी अपने दो कपड़ों में से एक कपड़ा सदक़ा कर दिया। हुज़ूर सल्ल॰ ने उन को तंबीह फ़रमायी और उनका कपड़ा वापस फ़रमा दिया। (अबूदाऊद)

एक और हदीस में इस क़िस्से में हुज़ूर सल्ल॰ का यह इर्शाद वारिद हुआ है कि यह साहब निहायत बुरी हैयत से मस्जिद में आए थे। मुझे यह उम्मीद थी कि तुम उनकी हालत देखकर ख़ुद ही ख़्याल करोगे, मगर तुमने ख़्याल न किया तो मुझे कहना पड़ा कि सदक़ा लाओ, तुम सदक़ा लाए और उनको दो कपड़े दे दिए। फिर मैं ने दूसरी मर्तबा जब सदक़े की तर्ग़ीब दी तो यह भी अपने दो कपड़ों में से एक सदक़ा करने लगे लो अपना कपड़ा वापस लो।

(कंज़ुल उम्माल)

एक और हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद वारिद हुआ है कि कुछ आदमी अपना सारा माल सदक़ा कर देते हैं फिर बैठ कर लोगों के हाथों को देखते हैं। बेहतरीन सदक़ा वह है जो ग़िना से हो।

एक और हदीस में इर्शाद है कि बग़ैर ग़िना के सदक़ा है ही नहीं।

(कंज़ुल उम्माल)

ये रिवायात बज़ाहिर पहली रिवायात के ख़िलाफ़ हैं, गो हक़ीक़त में कुछ ख़िलाफ़ नहीं हैं। इसलिए कि इन रिवायात में मुमानअत की वजह की तरफ़ हुज़ूर सल्ल॰ ने ख़ुद ही इर्शाद फ़रमा दिया कि सारा माल सदक़ा करके फिर लोगों के हाथों को तकते हैं, ऐसे आदमियों के लिए यक़ीनन तमाम माल सदक़ा करना मुनासिब नहीं, बल्कि निहायत बेजा है। लेकिन जो हज़रात ऐसे हैं कि उनको अपने पास जो माल मौजूद हो उससे ज़्यादा एतिमाद उस माल पर हो जो अल्लाह के क़ब्ज़े में है, जैसा कि हज़रत अली रज़ि॰ के क़िस्से में अभी गुज़रा और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ के हालात तो इससे भी बालातर (ऊंचे दर्जे के) हैं, ऐसे हज़रात को सारा माल सदक़ा कर देने में मुज़ाइक़ा नहीं, अलबत्ता इसकी कोशिश ज़रूर करते रहना चाहिए कि अपना हाल भी इन हज़रात जैसा बन जाए और दुनिया से ऐसी ही बे रग़बती और हक़ तआला शानुहू पर ऐसा ही एतिमाद पैदा हो जाए जैसा इन हज़रात को था, और जब आदमी किसी काम की कोशिश करता है तो हक़ तआला शानुहू वह चीज़ अता फ़रमाते ही हैं। "मन

जद्-द्-व-ज-द" ज़र्बुल मसल (कहावत) है कि जो कोशिश करता है, वह पा लेता है।

एक बुज़ुर्ग से किसी ने दर्याफ़्त किया कि कितने माल में कितनी ज़कात वाजिब होती है ? उन्होंने फ़रमाया कि अवाम के लिए दो सौ दिरम में पांच दिरम यानी चालीसवां हिस्सा शरीअत का हुक्म है। लेकिन हम लोगों पर सारा माल सदका कर देना वाजिब है। *(एहया अव्वल)*

इसी ज़ैल में हुज़ूर सल्ल॰ के वे इर्शादात हैं जो अहादीस के सिलसिले में नं॰ 1 पर गुज़रे कि अगर उहद का पहाड़ सारे का सारा सोना बन जाए तो मुझे यह गवारा नहीं कि उसमें से एक दिरम भी बाक़ी रखूं, अलावा उसके जो क़र्ज़ की अदाएगी के लिए हो। इस बिना पर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अस्र की नमाज़ के बाद निहायत उज्लत (जल्दी) से मकान तशरीफ़ ले गये और सोने का टुकड़ा जो घर में इत्तिफ़ाक़ से रह गया था। उसको सदक़े का हुक्म फ़रमा कर वापस तशरीफ़ लाये। और कुछ दामों की मौजूदगी की वजह से अपनी अलालत (बीमारी) में बेचैन हो गये। जैसा कि सिलसिला-ए-अहादीस में नं॰ 4 पर गुज़रा।

हज़रत इमाम बुख़ारी रह॰ ने अपनी सहीह बुख़ारी शरीफ़ में फ़रमाया कि सदक़ा बग़ैर ग़िना के नहीं है, और जो शख़्स ऐसी हालत में सदक़ा करे, कि वह ख़ुद मुहताज हो या उसके अह्ल व अयाल मुहताज हों, या उस पर क़र्ज़ हो तो क़र्ज़ का अदा करना मुक़द्दम है। ऐसे शख़्स का सदक़ा उस पर लौटा दिया जायेगा। अलबत्ता अगर कोई शख़्स सब्र करने में मारूफ़ (मशहूर) हो और अपने नफ़्स पर बावजूद अपनी एहतियाज के तर्जीह दे जैसा कि हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ि॰ का फ़ेल था, या अन्सार ने मुहाजिरीन को अपने ऊपर तर्जीह दी (तो इसमें मुज़ाइक़ा नहीं)

अल्लामा तबरी रह॰ कहते हैं कि जमहूर उलमा का मज़्हब यह है कि जो शख़्स अपना सारा माल सदक़ा कर दे बशर्ते कि उस पर क़र्ज़ न हो और तंगी की उसमें बर्दाश्त हो और उसके अयाल न हों या अगर हों तो वे भी उसकी तरह से साबिर हों तो सारा माल सदक़ा करने में कोई मुज़ाइक़ा नहीं और इनमें से कोई शर्त न पायी जाए तो सारा माल सदक़ा करना मक्रूह है। (फ़त्ह)

हमारे हज़रत हकीमुल उम्मत शाह वलिय्युल्लाह साहब नव्वरल्लाहु

मर्क़-द-हू इर्शाद फ़रमाते हैं कि (हुज़ूर सल्ल॰ के पाक इर्शाद) बेहतरीन सदक़ा वह है जो ग़िना से हो। ग़िना से मुराद दिल का ग़िना है। *(हुज्जतुल्लाह)*

इस सूरत में ये अहादीस पिछली अहादीस के ख़िलाफ़ भी नहीं हैं ख़ुद हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद भी अहादीस में आया है कि ग़िना माल की कसरत से नहीं होता, बल्कि असल ग़िना दिल का ग़िना होता है। *(मिश्कात)*

ऊपर जो क़िस्सा सोने की डाली का गुज़रा, उसमें भी इशारतन यह मज़्मून मिलता है कि उन साहब का बार-बार यह अर्ज़ करना कि यह सारा सादक़ा है और मेरे पास इसके सिवा कुछ नहीं है, इस तरफ़ इशारा कर रहा है कि दिल को उससे वाबस्तगी है।

साहिबे मज़ाहिर फ़रमाते हैं कि यह ज़रूरी है सद्क़ा ग़िना से दिया जाए, चाहे ग़िना-ए-नफ़्स हो यानी अल्लाह जल्ल शानुहू पर एतिमादे कामिल हो, जैसा कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ ने जब तमाम माल अल्लाह के लिए दे दिया और हुज़ूर सल्लह॰ के इर्शाद पर कि अपने आयाल के लिए क्या छोड़ा ? उन्होंने अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला और उसका रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ! तो हुज़ूर सल्ल॰ ने उनकी तारीफ़ फ़रमायी और यह दर्जा हासिल न हो तो फिर माल का ग़िना बाक़ी रहे। हासिल यह है कि तवक्कुले कामिल हो तो जो चाहे ख़र्च कर दे और यह कामिल न हो तो अहल व आयाल की रियायत को मुक़द्दम करे । *(मज़ाहिर)*

मगर अपने दिल को अपनी इस कोताही पर तंबीह करता रहे और ग़ैरत दिलाता रहे कि तुझे इस नापाक दुनिया पर जितना एतिमाद है, अल्लाह जल्ल शानुहू पर उसका आधा-तिहाई भी नहीं है। इन्शाअल्लाह इसके बार-बार तंबीह करने से ज़रुर असर होगा। काश ! हक़ तआला शानुहू इन आकाबिर के तवक्कुल और एतिमाद का कुछ हिस्सा इस कामीने को भी आता फ़रमा देता।

(۲۵) عن عائشة قالت قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اذا انفقت المرأة من طعام بيتها غير مفسدة كان لها اجرها بما انفقت ولزوجها اجره بما كسب وللخازن مثل ذلك لا ينقص بعضهم اجر بعض شيئا متفق عليه كذا في المشكوة

25. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है

कि जब औरत अपने घर के खाने में से ऐसी तरह सद्क़ा करे कि (इस्राफ़ अगैरह से) उस को खराब न करे तो उसको खर्च करने का सवाब है और खाविंद को इस लिए सवाब है कि उसने कमाया था और खाने का इंतिज़ाम करने वाले को (मर्द हो या औरत) ऐसा ही सवाब है और इन तीनों में से एक के सवाब की वजह से दूसरे के सवाब में कमी न होगी। इस हदीस शरीफ़ में दो मज़्मून वारिद हुए है-

एक बीवी के खर्च करने के मुताल्लिक़ है, दूसरा सामान के मुहाफ़िज़ ख़ज़ानची और मुनतज़िम के मुताल्लिक़ि है और दोनों मज़ामीन में रिवायात कसरत से वारिद हुई हैं।

शैख़ैन की एक और रिवायत में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद वारिद हुआ है कि जब औरत खाविंद की कमाई में से उसके बग़ैर हुक्म के खर्च करे तो उस औरत को आधा सवाब है। *(मिश्कात)*

हज़रत सअद रज़ि० फ़रमाते है कि जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने औरतों की जमाअत को बैअत किया, तो एक औरत ख़ड़ी हुई, जो बड़े क़द की थी, ऐसा मालूम होता था जैसा कि क़बीला मुज़र की हों कि उनके क़द लम्बे होते होंगे, और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लह ! हम औरतें अपने वालिदों पर भी बोझ हैं, अपनी औलाद पर भी और अपने खाविन्दों पर भी बोझ हैं। हमें उनके माल में से क्या चीज़ लेने का हक़ है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तरो-ताज़ा चीज़ें (जिनके रोकने में खराब होने का अन्देशा हो) खा भी सकती हो और दूसरों को दे भी सकती हो। *(मिश्कात)*

एक और हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद वारिद हुआ है कि अल्लाह जल्ल शानुहू रोटी के एक लुक़्मे और खजूरों की एक मुट्ठी की वजह से तीन आदमियों को जन्नत में दाखिल फ़रमाते हैं-

1. एक घर के मालिक को यानी खाविंद को,
2. दूसरे बीवी को, जिसने यह खाना पकाया,
3. तीसरे उस खदिम को जो दरवाज़े तक मिस्कीन को देकर आया।

(कन्ज़)

हज़रत आइशा रज़ि० की हमशीरा (बहन) हज़रत आस्मा रज़ि० ने अर्ज़

किया, या रसूलल्लाह ! मेरे पास कोई चीज़ नहीं है, सिवाए उसके जो (मेरे खाविंद) हज़रत ज़ुबैर रज़ि॰ मेझे दे दें, क्या में उसमें से खर्च कर लिया करूं? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, खूब खर्च किया करो, बांध कर न रखो कि तुम पर भी बन्दिश कर दी जाएगी। *(कन्ज़)*

यह रिवायत और इसके हम मायने कई रिवायतें अभी गुज़री हैं।

एक और रिवायत में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि जब औरत खाविंद की कमाई में से उसके बग़ैर हुक्म के ख़र्च करे तो खाविंद को आधा सवाब है। *(ऐनी, मुस्लिम से)*

अभी एक रिवायत में इसका उल्टा गुज़र चूका कि ऐसी सूरत में औरत के लिए आधा सवाब है, लेकिन ग़ौर से मालूम होता है कि खाविंद की कमाई से खर्च करने की दो सूरत होती हैं-

1. एक सूरत यह है कि खाविंद ने कमा कर माल का कुछ हिस्सा औरत को बिल्कुल दे दिया, उसको मालिक बना दिया, ऐसे माल में से अगर औरत खर्च करे, तो उसको पूरा सवाब और खाविंद को निस्फ़ (आधा) सवाब बज़ाहिर है कि खाविंद तो बहरहाल औरत को दे चुका है। अब अगर वह ख़र्च करती है तो हक़ीक़त में ख़ाविंद के माल में से ख़र्च नहीं करती, बल्कि अपने माल में से ख़र्च करती है, लेकिन कमाई चूंकि खाविंद की है, इस लिए उसको भी अल्लाह के लुत्फ़ व करम से उसकी कमाई की वजह से उसके सद्क़ा करने का आधा सवाब है और बीवी को दे देने का मुस्तक़िल सवाब पहले अलाहिदा हो चुका है।

2. दूसरी सूरत यह है कि ख़ाविंद ने कमाने के बाद औरत को मालिक नहीं बनाया, बल्कि घर के इख़्राजात के लिए उसको दिया है, उस माल में से सद्क़ा करने का ख़ाविंद को पूरा सवाब हुआ कि वह असल मालिक है और औरत को आधा कि इख़्राजात में तंगी तो उसको भी पेश आएगी।

इनके अलावा और भी कई रिवायत में मुख़्तलिफ़ उन्वानात से औरतों को तर्ग़ीब दी गयी कि वे खाने की चीज़ों में से अल्लाह के रास्ते में ख़र्च किया करें, ज़रा-सी चीज़ों में यह बहाना न तलाश किया करें कि ख़ाविंद की इजाज़त तो नहीं, लेकिन इन सब रिवायात के ख़िलाफ़ बाज़ (कुछ) रिवायात में इसकी मुमानअत भी वारिद हुई है।

हज़रत अबू उमामा रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज्जतुल विदाअ् के ख़ुत्बे में मिन्जुम्ला और इर्शादात के यह भी फ़रमाया कि कोई औरत ख़ाविंद के घर से (यानी उसके माल में से) बग़ैर उसकी इजाज़त के ख़र्च न करे। किसी ने दर्याफ़्त किया, हुज़ूर ! खाना भी बग़ैर उसकी इजाज़त ख़र्च न करे? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, खाना तो बेहतरीन माल है।

(तर्ग़ीब)

यानी उसको भी बग़ैर इजाज़त ख़र्च न करे।

इस रिवायत को पहली रिवायत से कोई हक़ीक़त में मुख़ालफ़त नहीं है। पहली सब रिवायात आम हालात और मारूफ़ आदात की बिना पर हैं। घरों का आम उर्फ़ सब जगह यही है और यही होता है कि जो चीज़ें, सामान या रुपया पैसा घर में इख़्राजात के वास्ते दे दिया जाता है, उसमें ख़ाविंदों को इससे ख़िलाफ़ नहीं होता कि औरतें उसमें से कुछ सद्क़ा कर दें या ग़ुरबा को कुछ खाने को दे दें, बल्कि, ख़ाविंदों का ऐसी चीज़ों में कंज काव और पूछना, तहक़ीक़ करना, कंजूसी और छिछोरापन शुमार होता है। लेकिन इस उर्फ़ आम के बावजूद अगर कोई बख़ील इसकी इजाज़त न दे कि उसमें से किसी को दिया जाए, तो फिर औरत को जायज़ नहीं कि उस के माल में से कुछ सद्क़ा करे या हद्या दे दे, अलबत्ता अपने माल में से जो चाहे ख़र्च करे।

एक शख़्स ने हुज़ूर सल्ल॰ से अर्ज़ किया या रसूलल्लाह ! मेरी बीवी मेरे माल में से मेरी बग़ैर इजाज़त ख़र्च करती है। हुज़ूर सल्ल ने फ़रमाया, तुम दोनों को उसका सवाब होगा। उन्होंने अर्ज़ किया, मैं उसको मना कर देता हूं। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, तुझे तेरे बुख़्ल का बदला मिलेगा, उसको उसके एहसान का अज्र होगा।

(कंज़)

मालूम हुआ ख़ाविंदों का ऐसी मामूली चीज़ से रोकना बुख़्ल है और उसके रोकने के बाद उसके माल में से औरत को ख़र्च करना जायज़ नहीं, अलबत्ता औरत का अगर दिल ख़र्च करने को चाहता है और ख़ाविंद की मजबूरी से रुकी हुई है, तो उस को उसकी नीयत की वजह से सद्क़े का सवाब मिलता ही रहेगा।

अल्लामा ऐनी रह॰ फ़रमाते हैं, हक़ीक़त में इन चीज़ों में हर शहर का उर्फ़ और आदत मुख़्तलिफ़ होती है और ख़ाविंदों के अह्वाल भी मुख़्तलिफ़ होते

हैं, बाज़ पसन्द करते हैं, बाज़ पसन्द नहीं करते। इसी तरह जो चीज़ ख़र्च की जाए, उसके एतिबार से भी मुख़्तलिफ़ अह्वाल होते हैं, एक तो मामूली चीज़ क़ाबिले तसामुह होती है और कोई ऐसी चीज़ होती है जिसकी ख़ाविंद को अहमियत हो। इसी तरह से कोई एसी चीज़ होती है, जिसके रखने में, उसके ख़राब हो जाने का अंदेशा हो और कोई ऐसी चीज़ होती है, जिसके रोकने में कोई नुक़सान नहीं होता।

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० ने नक़्ल किया है कि यह शर्त तो मुत्तफ़क़ अलैह् है कि वह औरत ख़र्च करने में फ़साद करने वाली न हो।

कुछ उलमा ने कहा है कि ख़र्च करने की तर्ग़ीबें हिजाज़ के उर्फ़ के मुवाफ़िक़ वारिद हुई हैं कि वहां बीवियों को इस क़िस्म के तसर्रुफ़ात की आम इजाज़त होती थी कि वे मसाकीन को, मेहमानों को, पड़ोस की औरतों को, सवाल करने वालों को, खाने वग़ैरह की चीज़ दे दें।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मक़्सद इन रिवायात से अपनी उम्मत को तर्ग़ीब देना है कि अरब की यह नेक ख़स्लत इख़्तियार करें। *(मज़ाहिर)*

चुनांचे हमारे दियार में भी बहुत से घरों में यह उर्फ़ है कि अगर साइल को या किसी अज़ीज़ या ज़रूरतमंद को, भूखे को खाने-पीने की चीज़ें दे दी जाएं, तो खाविंदों के नज़दीक यह चीज़ न उनसे क़ाबिले इजाज़त है न यह उनके लिए मुजिबे तकद्दुर (गरानी का सबब) होता है।

दूसरा मज़्मून हदीसे बाला में मुहाफ़िज़ और ख़ज़ांची के मुताल्लिक़ वारिद हुआ है। अक्सर ऐसा होता है कि असल मालिक किसी शख़्स को हद्या देने की, सद्क़ा करने की ख्वाहिश रखता है, मगर यह ख़ज़ांची और मुहाफ़िज़ कारकुन उसमें रूखा पैदा किया करते हैं, बिलख़ुसूस उमरा और सलातीन के यहां अक्सर ऐसा होता है कि मालिक की तरफ़ से सद्क़ात के परवाने जारी होते हैं और ये मीर मुंशी हमेशा गुंजाइश न होने का उज़्र खड़ा करते हैं । इस लिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुतअद्दद रिवयात में इसकी तर्ग़ीब दी है कि कारकुन हज़रात अगर निहायत तीबे ख़ातिर और ख़नदा पेशानी से मालिक के हुक्म की तामील करें तो उनको महज़ ज़रिया और वास्ता होने की वजह से अल्लह के फ़ज़्ल व इनाम से मुस्तक़िल सवाब मिले जैसा कि ऊपर

के मज़्मुन में मुतअद्दद रिवायात इसकी गुज़र चुकी हैं।

एक हदीस में है कि अगर मुसलमान ख़ज़ांची अमानतदार मालिक के हुक्म की तामील पूरी-पूरी ख़ंदापेशानी और ख़ुशदिली के साथ करे और जितना देने का उसको हुक्म है, उतना ही दे दे, तो वह भी सद्क़ा करने वालों में है। *(मिश्कात)*

एक हदीस में है कि अगर सद्क़ा (बिल् फ़र्ज़) सात करोड़ आदमियों के हाथ में को निकल कर आए तो आख़िर वाले को भी ऐसा ही सवाब होगा जैसा कि अव्वल वाले को। *(कंज़)*

यानी मसलन किसी बादशाह ने सद्क़े का हुक्म दे दिया और उसके अमले के इतने आदमियों को उसमें वास्ता बनना पड़ा तो सब को सवाब होगा यानी अज्र व सवाब के एतिबार से वे भी सब ऐसे ही हैं जैसा कि सद्क़ा करने वाला सवाब का मुस्तहिक़ है, गो दोनों के सवाब में फ़र्क़ मरातिब है। और फ़र्क़ मरातिब के लिए यह ज़रूरी नहीं कि मालिक ही का सवाब ज़्यादा हो। कहीं मालिक का सवाब ज़्यादा होगा, मसलन सौ रुपए मुलाज़िम को दिए या ख़ज़ानची को हुक्म करे कि फ़्लां शख़्स को जो दरवाज़े पर या अपने पास मौजूद है दे दे, इस सूरत में यक़ीनन मालिक को सवाब ज़्यादा होगा, और एक अनार किसी को दे कि फ़्लां मुहल्ले में जो बीमार हैं, उसको दे आओ कि इतनी दूर जाना आनार की क़ीमत से भी मशक़्क़त के एतिबार से बढ़ जाए तो उस सूरत में उस वास्ते का सवाब असल मालिक से भी बढ़ जाएगा। *(ऐनी)*

इसी तरह उस ख़ाज़िन को माल की तहसील में मशक़्क़त ज़्यादा उठानी पड़ती हो और मालिक को बे-मेहनत मुफ़्त में मिल जाए तो ऐसे माल के सद्क़ा करने में यक़ीनन ख़ाज़िन का सवाब ज़्यादा हो जाएगा। 'अल-अज्रु अला क़द्रिन्नस्बि' (सवाब मशक़्क़त के बक़द्र हुआ करता है।) यह शरीअते पाक का मुस्तक़िल ज़ाब्ता है, लेकिन जैसा कि बीवी के लिए बग़ैर ख़ाविंद की इजाज़त के तसर्रुफ़ करने का फ़िलजुम्ला हक़ है। ख़ाज़िन के लिए यह जायज़ नहीं कि बग़ैर इज़्ने मालिक के कोई तसर्रुफ़ उसके माल में करे, अल-बत्ता अगर मालिक की तरफ़ से तसर्रुफ़ की इजाज़त हो तो मुज़ायक़ा नहीं।

(٢٦) عن ابن عباسؓ مرفوعًا فی حدیث لفظه کل معروف صدقة والدّال علی الخیر کفا عِله واللّٰه یحب اغاثة اللهفان کذا فی المقاصد الحسنة وبسط فی تخریجه وطرقهٖ والسیوطی فی الجامع الصغیر حدیث الدّال علی الخیر کفاعله من روایة ابن مسعود وابی مسعود وسهل بن سعد وبریدة وانس.

26. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि हर भलाई सद्क़ा है और किसी कारे ख़ैर पर दूसरे को तर्ग़ीब देने का सवाब ऐसा है जैसा कि ख़ुद करने का सवाब है और अल्लाह जल्ल शनुहू मुसीबत ज़दा लोगों की मदद को महबूब रखता है।

फ़ायदाः- इस हदीस पाक में तीन मज़्मून हैं-

अव्वल यह कि हर भलाई सद्क़ा है यानी सद्क़े के लिए माल ही देना ज़रूरी नहीं है और सद्क़ा इसी में मुनहसर नहीं बल्कि जो भलाई किसी के साथ की जाए, वह सवाब के एतिबार से सद्क़ा है।

एक रिवायत में है कि अदमी के अन्दर तीन सौ साठ जोड़ हैं। उस के लिए ज़रूरी है कि हर जोड़ की तरफ़ से रोज़ाना एक सद्क़ा किया करे।

सहाबा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! इसकी ताक़त किसको है? (कि तीन सौ साठ सद्क़े रोज़ाना किया करे?) हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, मस्जिद में थूक पड़ा हो, उसको हटा दो, यह भी सद्क़ा है। रास्ते में कोई तक्लीफ़ देने वाली चीज़ पड़ी हो, उस को हटा दो, यह भी सद्क़ा है और कुछ न मिले तो चाश्त की दो रक्अत नफ़्ल सब के क़ायम मक़ाम हो जाती है।

(मिश्कात)

इसलिए कि नमाज़ में हर जोड़ को अल्लाह की इबादत में हरकत करना पड़ती है। एक हदीस में है कि रोज़ाना जब आफ़्ताब तुलू होता है तो आदमी पर हर जोड़ के बदले में एक सद्क़ा है, दो आदमियों के दर्मियान इंसाफ़ कर दो यह भी सद्क़ा है, किसी शख़्स की सवारी पर सवार होने में मदद कर दो, यह भी सद्क़ा है, हर वह क़दम जो नमाज़ के लिए चले, सद्क़ा है, किसी को रास्ता बता दो, यह भी सद्क़ा है। रास्ते से तक्लीफ़ देने वाली चीज़ हटा दो, यह भी सद्क़ा है।

(जामिउस्सग़ीर)

एक हदीस में है कि रोज़ाना आदमी के हर जोड़ के बदले में उस पर

सद्क़ा ज़रूरी है, हर नमाज़ सद्क़ा है, रोज़ा सद्क़ा है, हज सद्क़ा है सुब्हानल्लाह कहना सद्क़ा है, अल्हम्दु लिल्लाह कहना सद्क़ा है, अल्लाहु अक्बर कहना सद्क़ा है।

एक और हदीस में है कि जो कोई रास्ते में मिल जाए, उसको सलाम करना भी सद्क़ा है। *(अबूदाऊद)*

और भी इस क़िस्म की मुतअद्द रिवायात वारिद हुई हैं, जिनसे मालूम होता है कि-हर भलाई, हर नेकी, हर एहसान सद्क़ा है बशर्ते कि अल्लाह के वास्ते हो।

दूसरी चीज़ हदीसे बाला में यह ज़िक्र की गयी कि जो शख़्स किसी कारे ख़ैर पर किसी को तर्ग़ीब दे, उसको ऐसा ही सवाब है, जैसा करने वाले को।

यह हदीस मशहूर है, बहुत से सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन से हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद नक़ल किया गया कि भलाई का रास्ता बताने वाला ऐसा ही है जैसा कि उसको करने वाला हो। हक़ तआला शनुहू व अम्म नवालुहू की अता और एहसान, बख़्शिश और इन्आम का क्या ठिकाना है। उसकी अताएं, उसके अल्ताफ़ बे-मेहनत मिलते हैं। मगर हम लेना ही न चाहें, तो इसका क्या इलाज है। एक शख़्स ख़ुद नफ़्लें कसरत से नहीं पढ़ सकता, वह दूसरों को तर्ग़ीब देकर नफ़्लें पढ़वाए उसको भी उनका सवाब हो, ख़ुद नादार होने की वजह से या किसी और वजह से माल कसरत से ख़र्च नहीं कर सकता, दूसरों को तर्ग़ीब देकर ख़र्च कराये और ख़र्च करने वालों के साथ ख़ुद भी सवाब का शरीक बने, एक शख़्स ख़ुद रोज़े नहीं रख सकता, हज नहीं कर सकता, जिहाद नहीं कर सकता और कोई इबादत नहीं कर सकता, लेकिन इन चीज़ों की दूसरों को तर्ग़ीब देता है और ख़ुद इन सब का शरीक बनता है।

बहुत ग़ौर से सोचने और समझने की बात है कि अगर आदमी अपने आप ही इन सब इबादतों को करने वाला हो, एक ही के करने का सवाब तो मिलेगा, लेकिन इन चीज़ों पर सौ आदमियों को तर्ग़ीब देकर खड़ा कर दे तो सौ का सवाब मिलेगा और हज़ार-दो हज़ार को और उनसे ज़्यादा को लगा दे तो जितने लोगों को आमादा कर देगा, सबका सवाब मिलता रहेगा और लुत्फ़ यह है कि ख़ुद अगर मर भी जाएगा तो इन आमाल के करने वालों के आमाल का सवाब बाद में भी पहुंचता रहेगा। क्या अल्लाह जल्ल शानुहू के एहसानात की

कोई हद है और किस क़दर ख़ुशनसीब हैं वे जो लाखों को अपनी ज़िंदगी में दीनी कामों पर लगा गये और अब मरने के बाद वे उन आमाल के करने वालों के सवाब में शरीक हैं। मेरे चचा जान मौलाना मौलवी मुहम्मद इल्यास साहब नव्वरल्लाहु मरक़दहू फ़रमाया करते थे और मसर्रत से फ़रमाया करते थे कि लोग अपने बाद आदमियों को छोड़ कर जाते हैं, मैं मुल्क को छोड़ कर जा रहा हूं। मतलब यह था कि मेवात का ख़ित्ता जहां लाखें आदमी उनकी कोशिश से नमाज़ी बने, हज़ारों तहज्जुद गुज़ार बने, हज़ारों हाफ़िज़े क़ुरआन, इन सब का सवाब इन्शाअल्लाह उनको मिलता रहेगा और अब यह ख़ुश क़िस्मत जमाअत अरब और अजम में तब्लीग़ कर रही है, उनकी कोशिश से जितने आदमी किसी दीनी काम में लग जाएंगे, नमाज़ व क़ुरआन पढ़ने लगेंगे, उन सब का सवाब इन कोशिश करने वालों को भी होगा और उनको भी होगा, जिनको यह मसर्रत (ख़ुशी) थी कि मैं मुल्क को छोड़कर जा रहा हूं। ज़िंदगी बहरहाल ख़त्म होने वाली चीज़ है और मरने के बाद वही काम आता है जो अपनी ज़िंदगी में आदमी कर ले, ज़िंदगी के इन लम्हात को बहुत ग़नीमत समझना चहिए और जो चीज़ ज़ख़ीरा बनायी जा सकती हो, उसमें कसर न छोड़नी चाहिए और बेहतरीन चीज़ें वे हैं जिनका सवाब मरने के बाद भी मिलता रहे।

मेरे बुज़ुर्गों और दोस्तों ! वक़्त को बहुत ग़नीमत समझो और जो साथ ले जाना है, ले जाओ। बाद में न कोई बाप पूछता है न बेटा, सब चंद रोज़ रोकर चुप हो जाएंगे और बेहतरीन चीज़ सद्क़ा-ए-जारिया है।

तीसरी चीज़ हदीसे बाला में यह ज़िक्र फ़रमायी है कि अल्लाह जल्ल शानुहू मुसीबत ज़दा लोगों की फ़रयाद रसी को पसन्द करते हैं।

एक हदीस में है कि अल्लाह जल्ल शानुहू उस पर रहम नहीं फ़रमाते जो आदमियों पर रहम नहीं करता।

एक हदीस में है कि जो शख़्स मुसीबत ज़दा औरतों की मदद करता है या ग़रीब की मदद करता है, वह ऐसा है जैसा कि जिहाद में कोशिश करने वाला हो और ग़ालिबन यह भी फ़रमाया कि और वे ऐसा है जैसा कि तमाम रात नफ़्लें पढ़ने वाला हो कि ज़रा भी सुस्ती नहीं करता और वह ऐसा है जैसा कि हमेशा रोज़ा रखता हो, कभी इफ़्तार न करता हो। *(मिश्कात)*

एक हदीस में है कि जो शख़्स किसी मोमिन से दुनिया की किसी

मुसीबत को ज़ायल (ख़त्म) करता है, अल्लाह जल्ल शानुहू उससे क़ियामत के दिन की मुसीबत को ज़ायल करता है और जो शख़्स किसी मुश्किल में फंसे हुए को सहूलत पहुंचाता है अल्लाह जल्ल शानुहू उस को दुनिया और आख़िरत की सहूलत अता फ़रमाता है, जो शख़्स किसी मुसलमान की दुनिया में पर्दापोशी करता है अल्लाह जल्ल शानुहू दुनिया और आख़िरत में उसकी पर्दापोशी करता है।

(मिश्कात)

एक हदीस में है कि जो शख़्स अपने किसी मुसलमान भाई की हाजत पूरी कर ले, उसका ऐसा सवाब है जैसा कि हक़ तआला शानुहू की तमाम उम्र ख़िदमत (इबादत) की हो।

एक हदीस में है कि जो शख़्स अपने किसी मुसलमान भाई की हाजत को हाकिम तक पहुंचाए, तो उसकी पुलसिरात पर चलने में मदद की ज़ाएगी, जिस दिन की उस पर पांव फ़िसल रहे होंगे।

एक हदीस में है कि अल्लाह तआला के कुछ बन्दे ऐसे हैं, जिनको हक़ तआला शानुहू ने इसी लिए पैदा किया है कि वे लोगों की हाजतें पूरी किया करें, उनके कामों में मदद दिया करें। ये लोग क़ियामत के सख़्त दिन में बे-फ़िक्र होंगे, उनको कोई ख़ौफ़ न होगा।

एक हदीस में है कि जो शख़्स अपने मुज़्तर भाई की मदद करे, हक़ तआला शनुहू उसको उस दिन साबित क़दम रखेंगे, जिस दिन पहाड़ भी अपनी जगह न ठहर सकेंगे (यानी क़ियामत के दिन)।

एक हदीस में है कि जो शख़्स किसी मुसलमान की किसी कलमे से इआनत करे या उसकी मदद में क़दम चलाये, हक़ तआला शानुहू उस पर 73 रहमतें नाज़िल फ़रमाते हैं, जिनमें से एक में उसकी दुनिया और आख़िरत की दुरुस्तगी है और बहत्तर आख़िरत में रफ़ए- दरजात (दर्जों की बुलन्दी) के लिए ज़ख़ीरा हैं, उनके अलावा और भी बहुत सी अहादीस इस क़िस्म के मज़ामीन की साहिबे कंज़ुल उम्माल ने नक़ल की हैं।

एक हदीस में है कि मुसलमान आपस में एक दूसरे पर रहम करने में एक दूसरे के साथ ताल्लुक़ में, एक दूसरे पर मेहरबानी करने में एक जिस्म की तरह हैं कि जब बदन का कोई उज़्व (हिस्सा) माऊफ़ हो जाता है, तो सारे आज़ा जागने में, बुख़ार में, उसका साथ देते हैं। (मिश्कात)

यानी जैसा कि एक उज़्व की तक्लीफ़ से सारे आज़ा बेचैन हो जाते हैं, मसलन हाथ में ज़ख़्म हो जाता है तो फिर किसी उज़्व को भी नींद नहीं आती, सब को जागना पड़ता है, इससे बढ़ कर यह कि उसके अकड़ाहट से सारे बदन को बुख़ार हो जाता है। इसी तरह एक मुसलमान की तक्लीफ़ से सब को बेचैन हो जाना चाहिए।

एक और हदीस में है कि रहम करने वाले आदमियों पर रहमान भी रहम फ़रमाता है, तुम उन लोगों पर रहम करो, जो दुनिया में हैं, तुम पर वे रहम करेंगे जो आसमान में हैं। इससे हक़ तआला शानुहू भी मुराद हो सकते हैं और फ़रिश्ते भी।

एक हदीस में है कि मुसलमानों का बेहतरीन घर वह है जिसमें कोई यतीम हो और उसके साथ अच्छा बर्ताव किया जाता हो और बदतरीन घर वह है जिसमें कोई यतीम हो और उसके साथ बुरा बर्ताव किया जाता हो।

(मिश्कात)

एक हदीस में है जो शख़्स मेरी उम्मत में से किसी शख़्स की हाजत पूरी करे ताकि उसकी ख़ुशी हो, उसने मुझको ख़ुश किया और जिसने मुझे ख़ुश किया, उसने अल्ला जल्ल शनुहू को ख़ुश किया और जो शख़्स हक़ तआला शनुहू को खुश करता है, वह उसको जन्नत में दाख़िल फ़रमा देता है।

एक हदीस में है कि जो शख़्स किसी मुसीबत ज़दा आदमी की मदद करता है, उसके लिए तिहत्तर दर्जे मग़्फ़िरत के लिए लिखे जाते हैं, जिन में से एक दर्जे से तो उसकी दुरुस्तगी होती है (यानी लग़्ज़िशों का बदला हो जाता है) बाक़ी बहत्तर दर्जे रफ़ूए-दरजात का सबब होते हैं।

एक और हदीस में है कि मख़्लुक़ सारी की सारी अल्लाह तआला की अयाल है। आदमियों में सब से ज़्यादा महबूब अल्लाह जल्ल शानुहू के नज़्दीक वह है जो उसके अयाल के साथ अच्छा बर्ताव करे। *(मिश्कात)*

मख़्लूक़ सारी की सारी अल्लाह की अयाल हैं, मशहूर हदीस है कि मुतअद्द सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन से नक़ल की गयी।

उलमा ने लिखा है कि जैसे आदमी अपने अयाल की रोज़ी का एहतिमाम करने वाला होता है। उसी तरह हक़ तआला शानुहू भी अपनी सारी मख़्लूक़ के रोज़ी रसां है । इसी लिहाज़ से उनको अल्लाह की अयाल बताया

गया। (मक़ासिदे हसना)

और इस सिफ़त में मुसलमानें की भी ख़ुसूसियत नहीं है, मुसलमान, काफ़िर सब ही शरीक हैं, बल्कि सारे हैवानात इसमें दाख़िल हैं कि सब के सब अल्लाह तआला शानुहू की मख़्लूक़ और उसकी अयाल हैं। जो शख़्स सब के साथ हुस्ने सुलूक और अच्छा बर्ताव करने वाला होगा, वह हक़ तआला शानुहू को सबसे ज़्यादा महबूब होगा।

(۲۷) عن شداد بن اوسؓ قال سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول من صلّى يرائى فقد اَشرك ومن صام يرائى فَقَدْ اَشرك ومن تصدق يرائى فقد اشرك رواه احمد كذا فى المشكوٰة

27. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जिस ने रिया की नीयत से नमाज़ पढ़ी, उस ने शिर्क किया, जिसने रिया के इरादे से रोज़ा रखा, उसने शिर्क किया , जिसने रिया की नीयत से सद्क़ा दिया उसने शिर्क़ किया।

फ़ायदा:- यानी जिसने अपनी इन इबादतों में अल्लाह जल्ल शानुहू के साथ दूसरों को शरीक बना लिया और वे वे लोग हैं, जिनको दिखाना मक़्सूद है उसने अपनी इबादत को ख़ालिस हक़ तआला शानुहू के लिए नहीं रखा, बल्कि उसकी इबादत साझे की इबातद बन गयी और इबादत की ग़रज़ में उनका हिस्सा भी हो गया, जिनको दिखाना मक़्सूद है, यह बहुत ही अहम चीज़ है। इस पर फ़स्ल को ख़त्म करता हूं।

मक़्सद यह है कि जो इबादत भी हो ख़ालिस अल्लाह जल्ल शानुहू की रज़ा के वास्ते हो, उसमें कोई फ़ासिद ग़रज़-रिया, शोहरत, वजाहत वग़ैरह हरगिज़ न होना चाहिए कि इसमें नेकी बर्बाद, गुनाह लाज़िम हो जाता है।

अहादीस में बहूत कसरत से इस पर वईदें और तंबीहें वारिद हुई हैं। एक हदीसे क़ुदसी में हक़ सुब्हानहू व तक़द्दुस का इर्शाद वारिद हुआ है कि मैं सब शरीकों में सबसे ज़्यादा बे परवा हूं। जो शख़्स किसी इबादत में मेरे साथ किसी दूसरे को शरीक कर देता है, मैं उस इबादत करने वाले को उसके (बानाये हुए) शरीक के साथ छोड़ देता हूं। (मिश्कात)

यानी वह अपना बदला और सवाब उस शरीक से जाकर ले ले, मुझसे

कोई वास्ता नहीं है। एक और हदीस में है कि क़ियामत के दिन एक मुनादी एलान करेगा कि जिस शख़्स ने अपने किसी अमल में अल्लाह तआला के साथ किसी दूसरे को शरीक किया है, वह उस शरीक से अपना सवाब मांग ले, अल्लाह जल्ल शानुहू शिर्कत से बे-नियाज़ है। *(मिश्कात)*

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल॰ हमारे पास तशरीफ़ लाये, तो हम लोग दज्जाल का तज़्किरा कर रहे थे। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें ऐसी चीज़ बताऊं, जिसका मैं तुम पर दज्जाल से भी ज़्यादा ख़ौफ़ करता हूं, हमने अर्ज़ किया कि ज़रूर बताएं। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि वह शिर्के ख़फ़ी है, मसलन एक आदमी नमाज़ पढ़ रहा है, (इख़्लास से शुरू की है, कि कोई शख़्स उसकी नमाज़ को देखने लगे) वह आदमी के देखने की वजह से अपनी नमाज़ लम्बी कर दे।

एक दूसरे सहाबी रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि मुझे तुम पर सबसे ज़्यादा ख़ौफ़ छोटे शिर्क का है। सहाबा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया, छोटा शिर्क क्या है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, रिया है।

एक हदीस में इसके बाद यह भी है कि जिस दिन हक़ तआला शानुहू बन्दों को उनके आमाल का बदला अता फ़रमाएंगे, उन लोगों से यह इर्शाद होगा कि जिनको दिखाने के लिए किए थे, देखो, उनके पास तुम्हारे आमाल का बदला है या नहीं। *(मिश्कात)*

क़ुरआन पाक में भी हक़ तआला शानुहू का पाक इर्शाद है--

فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ۝ كهف ع ۱۲

फ़-मन का-न यर्जू लिक़ा-अ रब्बिही फ़ल यअ्मल अ-म-लन सालिहंव्-वला युश्रिक् बिअिबाद-ति रब्बिही अ-ह-दा॰

(कहफ़ रुकूअ् 12)

'जो शख़्स अपने रब से मिलने की आरज़ू रखे (और उनका महबूब व मुक़र्रब बनना चाहे) तो नेक काम करता रहे और अपने रब की इबादत में किसी को शरीक न करे।'

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने हुज़ूर सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम से दर्याफ़्त किया कि मैं बाज़े (दीनी) मवाक़े में अल्लाह जल्ल शानुहू की रज़ा के वास्ते खड़ा होता हूँ, मगर मेरा दिल चाहता है कि मेरी इस कोशिश को लोग देखें! हुज़ूर सल्ल० ने इसका कोई जवाब मरहमत नहीं फ़रमाया हत्ता कि यह आयत नाज़िल हो गयी।

हज़रत मुजाहिद रह० कहते हैं कि एक साहब ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि मैं सद्क़ा करता हूँ और सिर्फ़ अल्लाह जल्ल शानुहू की रज़ा मक़्सूद होती है, मगर दिल यह चाहता है कि लोग मुझे अच्छा कहें। इस पर यह आयत नाज़िल हुई।

एक हदीसे क़ुदसी में है, हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है कि जो शख़्स अपने अमल में मेरे साथ किसी दूसरे शख़्स को शरीक करता है, तो मैं उस अमल को सारे ही को छोड़ देता हूँ। मैं सिर्फ़ उसी अमल को क़ुबूल करता हूँ जो ख़ालिस मेरे लिए हो। इसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने यह आयते शरीफ़ा तिलावत फ़रमायी।

एक और हदीस में है, अल्लाह जल्ल शानुहू फ़रमाते हैं कि मैं अपने साथी के साथ बेहतरीन तक़्सीम करने वाला हूँ, जो शख़्स अपनी इबादत में मेरे साथ किसी दूसरे को साझी कर दे, मैं अपना हिस्सा भी उस साझी को दे देता हूँ।

एक हदीस में है कि जहन्नम में एक वादी ऐसी है जिस से जहन्नम ख़ुद भी रोज़ाना चार सौ बार पनाह मांगती है, वह रियाकार क़ारियों के लिए है। एक और हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अर्शाद आया है कि 'जुब्बुल हुज़्न' से पनाह मांगा करो (यानी ग़म के कुएं से जो जहन्नम में है)। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! उसमें कौन लोग रहेंगे? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि जो अपने आमाल में रियाकारी करते हैं।

एक सहाबी रज़ि० कहते हैं कि यह आयते शरीफ़ा क़ुरआन पाक में सब से आख़िर में नाज़िल हुई। *(दुर्रे मंसूर)*

क़ुरआन पाक में दूसरी जगह इर्शाद है:-

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تُبْطِلُوا صَدَقَاتِكُم بِالْمَنِّ وَالْأَذَىٰ كَالَّذِي يُنفِقُ مَالَهُ رِئَاءَ النَّاسِ (بقره ع ٣٦)

या अय्युहल्लज़ी-न आ म-नू ला तुब्तिलू स-द-क़ाति कुम बिल् मन्नि वल् अज़ा कल्लज़ी युन्फ़िक़ु मा ल-हू रिआ अन्ना-सि॰

(बक़र: रुकूअ् 36)

'ऐ ईमान वालो ! तुम एहसान जता कर या ईज़ा पहुंचा कर अपनी ख़ैरात को बर्बाद मत करो, जिस तरह वह शख़्स (बर्बाद) करता है, जो अपना माल लोगों को दिखलाने की ग़रज़ से ख़र्च करता है और ईमान नहीं रखता अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर। उस शख़्स की मिसाल ऐसी है जैसा कि एक चिकना पत्थर हो, जिस पर कुछ मिट्टी आ गयी (और उस मिट्टी में कुछ सब्ज़ह वग़ैरह जम गया हो) फिर उस पत्थर पर ज़ोर की बारिश पड़ जाए, तो वह उसको बिल्कुल साफ़ कर देगी, (इसी तरह इन एहसान रखने वालों, तक्लीफ़ देने वालों और रियाकारों का ख़र्च करना भी बिलकुल साफ़ उड़ जाएगा और क़ियामत के दिन)ऐसे लोगों को अपनी कमाई ज़रा भी हाथ न लगेगी यानी ये जो नेकियां की थीं, सद्क़ात दिए थे, ये सब ज़ाया जाएंगे। इसके अलावा और भी कई जगह क़ुरआन पाक में रिया की मज़म्मत फ़रमायी है।

एक हदीस में है कि क़ियामत के दिन सबसे पहले जिन लोगों का फ़ैसला होगा, उनमें एक तो शहीद होगा, उसको बुलाया जाएगा और बुलाने के बाद दुनिया में जो अल्लाह जल्ल शानुहू के इन्आमात उस पर हुए थे, वे उसको याद दिलाए जाएंगे, इसके बाद उससे मुतालबा होगा कि अल्लाह जल्ल शानुहू की इन नेमतों में रह कर तू ने क्या नेक अमल किया? वह अर्ज़ करेगा कि मैंने तेरी रज़ा हासिल करने के लिए जिहाद किया हत्ता कि शहीद हो गया (और तुझ पर क़ुर्बान हो गया)। इर्शाद होगा कि यह झूठ है। तू ने जिहाद इस लिए किया है कि लोग बड़ा बाहदुर बताएंगे। वे तुझे बहुत बड़ा बहादुर बता चुके हैं (जो ग़रज़ अमल की थी, वह पुरी हो गयी है)। इसके बाद उसको जहन्नम में फेंक देने का हुक्म किया जाएगा और तामीले हुक्म में उस को मुंह के बल खींच कर जहन्नम में फेंक दिया जाएगा।

दूसरा शख़्स एक आलिम होगा जिसको बुला कर अल्लाह जल्ल शानुहू के इन्आमात और एहसानात जता कर उस से भी पूछा जायेगा कि अल्लाह तआला की इन नेअमतों में तूने क्या अमल किया? वह कहेगा मैंने इल्म सीखा और लोगों को सिखाया। तेरी रज़ा जोई में क़ुरआन पाक पढ़ता रहा। इर्शाद होगा

यह सब झूठ है। यह सब कुछ इसलिए किया गया था, कि लोग कहेंगे कि फ़लाँ शख़्स बड़ा आलिम, बड़ा क़ारी है सो लोगों ने कह दिया है। (और जो मक़्सद इस मेहनत से था वह हासिल हो चुका है।) उसके बाद उसको भी ज़हन्नम में फेंकने का हुक़्म किया जाएगा। और तामिले हुक़्म में मुँह के बल खींच कर ज़हन्नम में फेंक दिया जाएगा।

तीसरा शख़्स एक सख़ी होगा, जिस पर अल्लाह जल्ल शानुहू ने दुनिया में बड़ी वुसअत फ़रमा रखी थी। हर क़िस्म के माल से उसको नवाज़ा था, उसको बुलाया जाएगा और जो इन्आमात अल्लाह जल्ल शानुहू ने उस पर दुनिया में फ़रमाये थे, वे जता कर सवाल किया जाएगा कि इन इन्आमात में तेरी क्या कारगुज़ारी है? वह अर्ज़ करेगा कि मैंने ख़ैर का कोई मौक़ा, जिसमें ख़र्च करना आपको पसन्द हो, ऐसा नहीं छोड़ा, जिसमें आपकी ख़ुश्नूदी के लिए ख़र्च न किया हो। इर्शाद होगा, यह झूठ है। तू ने महज़ इस लिए ख़र्च किया कि लोग कहेंगे, बड़ा सख़ी शख़्स है, सो कहा जा चुका है। इसके बाद उसको भी जहन्नम में फेंकने का हुक्म होगा और तामीले हुक्म में मुंह के बल खींच कर जहन्नम में फेंक दिया जाएगा। *(मिश्कात, मुस्लिम)*

इस हदीस में और इसी तरह और अहादीस में, जहां एक एक शख़्स का ज़िक्र आता है, इससे एक क़िस्म आदमियों की मुराद होती है। यह मतलब नहीं कि यह मामला सिर्फ़ तीन आदमियों के साथ किया जाएगा, बल्कि मतलब यह है कि तीनों क़िस्म के आदमियों से यह मुतालबा होगा और मिसाल के तौर पर हर क़िस्म में से एक एक आदमी का ज़िक्र कर दिया।

इनके अलावा और भी अहादीस में कसरत से इस पर तंबीह की गयी है और बहुत ज़्यादा अहमियत से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी उम्मत को इस पर मुतनब्बह किया है कि जो काम भी किया जाए वह ख़ालिस अल्लाह जल्ल शानुहू के लिए किया जाए, और जितना भी एहतिमाम हो सके, इसका किया जाए कि उसमें रिया और नमूद व शोहरत और दिखावे का शायबा भी न आने पाये, मगर इस जगह शैतान के एक बड़े मक्र से बेफ़िक्र न होना चाहिए। दुश्मन जब क़वी होता है, वह मुख़्तलिफ़ अन्वाअ्[1] से अपनी दुश्मनी निकाला करता है। यह बहुत मर्तबा आदमी को इस वस्वसे की बदौलत

1. अलग-अलग ढंगों से और शक्लों से।

कि इख़्लास तो है ही नहीं अहम तरीन इबादतों से रोक दिया करता है।

इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि शैतान अव्वल तो नेक काम से रोका करता है और ऐसे ख़्यालात दिल में डाला करता है जिस से उस काम के करने का इरादा ही पैदा न हो, लेकिन जब आदमी अपनी हिम्मत से उसका मुक़ाबल करता है और उसके रोकने पर अमल नहीं करता, तो वह कहा करता है, तुझ में इख़्लास तो है नहीं, यह तेरी इबादत, मेहनत बेकार है। जब इख़्लास ही नहीं, फिर ऐसी इबादत करने से क्या फ़ायदा, और इस क़िस्म के वस्वसे पैदा करके नेक काम से रोक दिया करता है और जब आदमी रुक जाता है तो उसकी ग़रज़ पूरी हो जाती है। *(एहया)*

इस लिए इस ख़्याल से नहीं रुकना चाहिए कि इख़्लास तो है नहीं, बल्कि नेक काम करने में इख़्लास की कोशिश करते रहना चाहिए, और इसकी दुआ करता रहे कि हक़ तआला शानुहू महज़ अपने लुत्फ़ से दस्तगीरी फ़रमाए ताकि न तो दीन का मश्ग़ला ज़ाया हो, न बर्बाद हो।

وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ

व मा ज़ालि-क अलल्लाहि बिअज़ीज़०

बुख़्ल की मज़म्मत में

पहली फ़स्ल में जितनी आयात और अहादीस अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने की गुज़र चुकी हैं, उनसे ख़ुद ही यह बात ज़ाहिर हो गयी कि जब अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने के इतने फ़ज़ाइल व फ़वाइद और ख़ूबियां हैं तो जितनी इसमें कमी होगी, ये मुनाफ़े हासिल न होंगे यह ख़ुद ही काफ़ी मज़म्मत, इंतिहाई नुक़्सान है, लेकिन अल्लाह जल्ल शानुहू और उसके पाक रसूल सल्लाल्लाहु

अलैहि व सल्लम ने तंबीह और एहतिमाम की वजह से बुख़्ल और माल को रोक कर रखने पर ख़ुसूसी वईदें भी इर्शाद फ़रमायी हैं, जो अल्लाह का इन्आम और उसके पाक रसूल सल्ल० की उम्मत पर इंतिहाई शफ़्क़त है कि उसने इस मुह्लिक मर्ज़ पर ख़ास तौर से बहुत सी तंबीहें फ़रमा दीं। क़ुरआन व हदीस में हर मज़्मून निहायत ही कसरत से ज़िक्र किया गाया और मुख़्तलिफ़ उन्वानों से हर ख़ैर के करने पर तर्ग़ीब और हर बुराई से रुकने पर तंबीहें की गयीं। किसी एक मज़्मून का एहाता भी दुश्वार है नमूने के तौर पर इसके मुताल्लिक़ भी कुछ आयात और कुछ अहादीस लिखी जाती हैं।

आयात

(١) وَاَنْفِقُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ (بقره ع ٢٤)

1. तुम लोग अल्लाह के रास्ते में ख़र्च किया करो और अपने आपको अपने हाथों हलाकत में न डालो। *(बक़रः रुकूअ् 24)*

फ़ायदः- यह आयते शरीफ़ा पहली फ़स्ल के सिलसिला-ए-आयात में में न० 3 पर गुज़र चुकी है। इस आयते शरीफ़ा में अललह के रास्ते में ख़र्च न करने को अपने हाथों अपने आप को हलाकत और तबाही में डालना क़रार दिया है, जैसा कि पहले मुफ़स्सल सहाबा-ए-किराम रज़ि० से नक़ल किया जा चुका है। कौन शख़्स है जो अपनी तबाही और बर्बादी चाहता हो, मगर कितने आदमी हैं, जो यह मालूम हो जाने के बावजूद कि यह तबाही और बर्बादी का ज़रिया है, इससे बचते हैं और माल को जोड़-जोड़ कर नहीं रखते, इसके सिवा क्या है कि ग़फ़लत का पर्दा हम लोगों के दिलों पर पड़ा हुआ है और अपने हाथों ही अपने आप को हलाकत में डालते जा रहे हैं।

(٢) اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَاْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَآءِ ج وَاللّٰهُ يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا ط وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ O لا صلے (بقره ع ٢٧)

2. शैतान तुमको मुहताजी (और फ़क़्र) से डराता है और तुमको बुरी बात (बुख़्ल) का मश्वरा देता है, और अल्लाह तआला तुम से (ख़र्च करने पर) अपनी तरफ़ से गुनाह माफ़ कर देने का और ज़्यादा देने का वायदा करता है और अल्लाह तआला वुस्अत वाले हैं (वह सब कुछ दे सकते हैं) ख़ुब जानने वाले हैं (नीयत के मुवाफ़िक़ समरा

देते हैं।) *(सूरः बक़रः रुकूअ् 27)*

फ़ायदाः- हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ फ़रमाते हैं, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि आदमी के अन्दर एक तो शैतान तसर्रुफ़ करता है और एक फ़रिश्ता तसर्रुफ करता है। शैतान का तसर्रुफ़ तो बुराई से डराना है (मसलन सद्क़ा करेगा तो फ़क़ीर हो जाएगा, वग़ैरह-वग़ैरह) और हक़ बात का झुठलाना है। और फ़रिश्ते का तसर्रुफ़ भलाई का वायदा करना है और हक़ बात की तस्दीक़ करना है जो उसको पावे (यानी भलाई की बात का ख़्याल दिल में आवे तो उसको) अल्लाह तआला की तरफ़ से समझे और उसका शुक्र अदा करे। और जो दूसरी बात को पावे (यानी बुरा ख़्याल दिल में आवे) तो शैतान से पनाह मंगे, इसके बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह आयते शरीफ़ा पढ़ी। *(मिश्कात)*

यानी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम ने अपने इर्शाद की ताईद में यह आयते शरीफ़ा पढ़ी, जिसमें हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है कि शैतान फ़क़्र का ख़ौफ़ और फ़हश बातों की तर्ग़ीब देता है और यही हक़ का झुठलाना है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि इस आयते शरीफ़ा में दो चीज़ें अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से हैं और दो चीज़ें शैतान की तरफ़ से हैं। शैतान फ़क़्र का वायदा करता है और बुरी बात क हुक्म करता है। यह कहता है कि माल न ख़र्च कर, एहितयात से रख, तुझे इसकी ज़रूरत पड़ेगी और अल्लाह जल्ल शानुहू इन गुनाहों पर मग़्फ़िरत का वायदा फ़रमाता है और रिज़्क़ में ज़्यादती का वायदा फ़रमाता है। *(दुर्रे मंसूर)*

इमाम ग़ज़्ज़ाली रह॰ फरमाते हैं कि आदमी को आइंदा के फ़िक्र में ज़्यादा मुब्तला नहीं रहना चाहिए कि क्या होगा, बल्कि जब हक़ तआला शानुहू ने रिज़्क़ का वायदा फरमा रखा है तो उस पर एतिमाद करना चाहिए और यह समझते रहना चाहिए कि आइन्दा एहितयाज का ख़ौफ़ शैतानी असर है जैसा कि इस आयते शरीफ़ा में बताया गया। वह आदमी के दिल में यह ख़्याल पकाता रहता है कि अगर तू माल जमा करके नहीं रखेगा तो जिस वक़्त तू बीमार हो जाएगा या कमाने के क़ाबिल नहीं रहेगा या कोई और वक़्ती ज़रूरत पेश आ जाएगी, तो उस वक़्त तू मुश्किल में फंस जाएगा और तुझे बड़ी दिक़्क़त और

तक्लीफ़ होगी और इन ख़्यालात की वजह से उसको इस वक़्त मश्क़्क़त और कोफ़्त और तक्लीफ़ में फांस देता है और हमेशा इसी तक्लीफ़ में मुब्तला रखता है और फिर उसका मज़ाक़ उड़ाता है कि यह अहमक़ आइन्दा की मौहूम (यानी जो वहम पर आधारित है) तक्लीफ़ के डर से इस वक़्त की यक़ीनी तक्लीफ़ में फंस रहा है। *(एह्या)*

कि जमा की फ़िक्र में हर वक़्त परेशान रहता है और आइन्दा का फ़िक्र सवार रहता है।

(٣)وَلَايَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ بِمَآاٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَخَيْرًا لَّهُمْ ط بَلْ هُوَ شَرٌّلَّهُمْ ط سَيُطَوَّقُوْنَ مَابَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ط وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ط وَاللّٰهُ بِمَاتَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌO(ال عمران ع ١٨)

3. हरगिज़ ख़्याल न करें ऐसे लोग जो ऐसी चीज़ के ख़र्च करने में बुख़्ल करते हैं जो उनको अल्लाह जल्ल शानुहू ने महज़ अपने फ़ज़्ल से अता की है कि यह बात (यानी बुख़्ल करना) उनके लिए कुछ अच्छी होगी (हरगिज़ नहीं) बल्कि यह बात उनके लिए बहुत बुरी होगी, इस लिए कि वे लोग क़ियामत के दिन तौक़ पहनाए जाएंगे उस माल का, जिसके साथ बुख़्ल किया था (यानी सांप बना कर उनकी गरदनों में) डाल दिया जाएगा और अख़ीर में आसमान व ज़मीन (और जो कुछ उनके अन्दर है, लोगों के मर जाने के बाद) अल्लाह ही का रह जाएगा, (तुम अपने इरादे से उस को दे दो तो सवाब भी हो, वरना है तो उसी का) और अल्लाह जल्ल शानुहू तुम्हारे सारे आमाल से ख़बरदार है। *(आले 'इम्रान रुकूअ् 18)*

फ़ायदाः- बुख़ारी शरीफ़ में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद वारिद हुआ है कि जिस शख़्स को अल्लाह जल्ल शानुहू ने माल अता किया हो और वह उसकी ज़कात अदा न करता हो तो वह माल क़ियामत के दिन एक गंजा सांप (जिसके ज़हर की कसरत और शिद्दत की वजह से उसके सर के बाल भी जाते रहे हों) बनाया जाएगा, जिसके मुँह के नीचे दो नुक्ते होंगे (यह भी ज़हर की ज़्यादती की अलामत है) और वह सांप उसके गले

में डाल दिया जाएगा, जो उस शख़्स के दोनों जबड़े पकड़ लेगा और कहेगा कि मैं तेरा माल हूं, मैं तेरा ख़ज़ाना हूं। इसके बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह आयते शरीफ़ा तिलावत फ़रमायी। *(मिश्कात)*

यह हदीस शरीफ़ ज़कात अदा न करने की वईदों में पांचवीं फ़स्ल की अहादीस में नं॰ 2 पर आ रही है।

हज़रत हसन बसरी रह॰ फ़रमाते हैं कि यह आयते शरीफ़ा काफ़िरों के बारे में और उस मोमिन के बारे में जो अपने माल को अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने से बुख़्ल (कन्जूसी) करता हो, नाज़िल हुई है।

हज़रत इक्रमा रज़ि॰ कहते हैं कि माल में से जब अल्लाह जल्ल शानुहू के हुक़ूक़ अदा न होते हों तो वह माल गंजा सांप बन कर क़ियामत में उसके पीछे लग जाएगा और वह आदमी उस सांप से पनाह मांगता हुआ होगा।

हजर बिन बयान रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जो ज़ी रहम, अपने क़रीबी रिश्तेदार से उसकी ज़रूरत से बचे हुए माल से मदद माँगे और वह मदद न करे और बुख़्ल करे तो वह माल क़ियामत के दिन सांप बना कर उसको तौक़ पहना दिया जाएगा । और फिर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह आयते शरीफ़ा तिलावत फ़रमायी और मुतअद्दद सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ से भी यह मज़्मून नक़ल किया गया।

मसरूक़ रह॰ कहते हैं कि यह आयते शरीफ़ा उस शख़्स के बारे में है जिसको अल्लाह जल्ल शानुहू ने माल अता किया और वह अपने रिश्तेदारों के उन हुक़ूक़ को जो अल्लाह जल्ल शानुहू ने उस पर रखे हैं, अदा न करे, तो उसका माल सांप बना कर उसको तौक़ पहनाया जायेगा। वह शख़्स उस सांप से कहेगा कि तू ने मेरा पीछा क्यों किया ? वह कहेगा कि मैं तेरा माल हूँ। *(दुर्रे मंसूर)*

इमाम राज़ी रह॰ तफ़्सीरे कबीर में तहरीर फ़रमाते हैं कि ऊपर की आयात में जिहाद में अपनी जानों की शिर्कत पर ताकीद व तर्ग़ीब थी, उसके बाद इस आयत में जिहाद में माल ख़र्च करने की ताकीद है और तंबीह है कि जो लोग जिहाद में माल ख़र्च नहीं करते तो वह माल सांप बन कर उनके गले का हार बन जाएगा। इसके बाद इमाम राज़ी रह॰ तवील (लम्बी) बहस इस पर करते

हैं कि जो शदीद वईद इस आयते शरीफ़ा में हैं, वह ततव्वुआत[1] के तर्क पर तो मुश्किल है, तर्के वाजिब पर ही हो सकती है। अल बत्ता वाजिबात कई क़िस्म के हैं।

1. अव्वल अपने ऊपर और अपने उन अक़ारिब पर ख़र्च करना जिनका नफ़्क़ा (ख़र्चा) अपने ज़िम्मे वाजिब है।

2. दूसरे ज़कात,

3. तीसरे जिस वक़्त मुसलमानों पर कुफ़्फ़ार का हुजूम हो कि वे उनके जान व माल को हलाक करना चाहते हों तो उस वक़्त सब मालदारों पर हस्बे ज़रूरत ख़र्च करना वाजिब है, जिससे मुदाफ़अत करने वालों की मदद हो कि यह दर असल अपनी ही जान व माल की हिफ़ाज़त में ख़र्च है।

4. चौथे मुज़्तर पर ख़र्च करना है, जिससे उसकी जान का ख़तरा ज़ायल (ख़त्म) हो जाए, ये सब इंख़ूराजात वाजिब हैं। *(1. तफ़सीरे कबीर)*

(٤) اِنَّ اللّٰهَ لَا یُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرًا ۙ الَّذِیْنَ یَبْخَلُوْنَ وَیَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَیَكْتُمُوْنَ مَاۤ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِیْنَ عَذَابًا مُّهِیْنًا ۚ (نساء ع ٦)

4. बेशक अल्लाह जल्ल शानुहू ऐसे आदमियों को पसन्द नहीं करता जो (दिल में) अपने आपको बड़ा समझते हों (ज़बान से) शेख़ी की बातें करते हों, जो ख़ुद भी बुख़्ल करते हों और दूसरों को भी बुख़्ल की तालीम देते हों और जो चीज़ अल्लाह जल्ल शानुहू ने उनको अपने फ़ज़्ल से दी है, उसको छुपाते हों और हमने ऐसे ना-शुक्रों के लिये इहानत वाला अज़ाब तैयार कर रखा है। *(सूरः निसा रूकूअ् 6)*

फ़ायदाः- 'दूसरों को बुख़्ल की तालीम देते हों, आम है कि ज़ुबान से उनको तर्ग़ीब देते हों या अपने अमल से तालीम देते हों कि उनके अमल को देख कर दूसरों को बुख़्ल की तर्ग़ीब होती हो। बहुत सी आहादीस में यह मज़्मून वारिद हुआ है कि जो शख़्स बुरा तरीक़ा इख़्तियार करता है, उसको अपने किये

1. अपनी मर्ज़ी से किए जाने वाले भले काम।

का वबाल भी होता है और जितने आदमी उसकी वजह से उस पर अमल करें, उन सब का गुनाह भी उसको होता है, इस तरह पर कि उनकी अपनी-अपनी सज़ाओं में कोई कमी न होगी, यह मज़्मून क़रीब ही मुफ़स्सल गुज़र चुका है।

हज़रत मुजाहिद रह० से 'मुख़्तालन् फ़ख़ूरा' की तफ़्सीर में नक़्ल किया गया है कि यह हर वह मुतकब्बिर है जो अल्लाह की आता की हुई चीज़ों को गिन-गिन कर रखता है और अल्लाह जल्ल शानुहू का शुक्र अदा नहीं करता।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़्ल करते हैं कि क़ियामत के दिन जब हक़ तआला शानुहू सारी मख़्लूक़ को एक जगह जमा फ़रमा देंगे तो जहन्म की आग तह बतह चढ़ती हुई उनकी तरफ़ शिद्दत से बढ़ेगी, जो फ़रिश्ते उस पर मुतअय्यन हैं, वे उसको रोकना चाहेंगे तो वह कहेगी कि मेरे रब की इज़्ज़त की क़सम! या तो मुझे छोड़ दो कि मैं अपने जोड़ीदारों (यारों) को ले लूं, वरना मैं सब पर छा जाऊंगी, वे पूछेंगे तेरे जोड़ीदार कौन हैं? वह कहेगी हर तकब्बुर करने वाला ज़ालिम, इसके बाद जहन्नम अपनी ज़ुबान निकाल लेगी और हर ज़ालिम मुतकब्बिर को चुन-चुन कर अपने पेट में डाल लेगी (जैसा कि जानवर ज़ुबान के ज़रिए से घास वग़ैरह खाता है) उन सब को चुन कर पीछे हट जाएगी। उस के बाद इसी तरह दोबारा ज़ोर करके आएगी और यह कहेगी कि मुझे अपने जोड़ी दारों को लेने दो और जब उस से पूछा जाएगा कि तेरे जोड़ी दार कौन हैं? तो वह कहेगी, हर अकड़ने वाला, ना-शुक्री करने वाला और पहले की तरह चुन कर उन को भी अपने पेट में डाल लेगी। फिर इसी तरह तीसरी बार ज़ोश करके चलेगी और अपने जोड़ी दारों का मुतालबा करेगी और जब उससे पूछा जाएगा कि तेरे जोड़ी दार कौन लोग हैं? तो वह इस मर्तबा कहेगी, हर अकड़ने वाला, फ़ख़्र करने वाला और उनको भी चुन कर अपने पेट में डाल लेगी। इसके बाद लोगों का हिसाब-किताब होता रहेगा।

हज़रत जाबिर बिन सुलैम हुजैमी रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम की ख़िदमात में हाज़िर हुआ। मदीना मुनव्वरा की एक गली में चलते हुए हुज़ूर सल्ल० से मुलाक़ात हो गयी। मैंने सलाम किया और लुन्गी के बारे में मस्अला पूछा, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि पिंडली के मोटे हिस्से तक होनी चाहिए और यह भी पसन्द न हो तो टख़नों के ऊपर तक और यह भी पसन्द न हो तो (आगे गुंजाइश नहीं, इस लिए कि) अल्लाह जल्ल

शानुहू मुतकब्बिर फ़ख़्र करने वाले को पसन्द नहीं करते (और टख़नों से नीचे लुंगी या पाजामा को लटकाना तकब्बुर में दाख़िल है)। फिर मैं ने किसी के साथ एहसान और भलाई करने के मुताल्लिक़ दर्याफ़्त किया। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि भलाई को हक़ीर न समझो (कि इसकी वजह से मुलतवी कर दो) चाहे रस्सी का टुकड़ा ही क्यों न हो, जूते का तस्मा ही क्यों न हो, किसी पानी मांगने वाले के बर्तन में पानी का डोल ही डाल दो, रास्ते में कोई अज़ीयत (तक्लीफ़) पहुंचाने वाली चीज़ हो, उसको हटा दो, हत्ताकि अपने भाई से खन्दा पेशानी से बात ही सही, रास्ता चलने वाले से सलाम ही सही, कोई घबरा रहा हो, उसकी दिलबस्तगी ही सही (कि ये सब चीज़ें एहसान और नेकी में दाख़िल हैं) और अगर कोई शख़्स तुम्हारे ऐब को ज़ाहिर करे और तुम्हें उसके अन्दर कोई दूसरा ऐब मालूम है तो तुम उसको ज़ाहिर न करो, तुम्हें इस इख़्फ़ा (छुपाने) का सवाब मिलेगा, उसको इस इज़्हार का गुनाह होगा, और जिस काम को तुम यह समझो कि अगर किसी को इसकी ख़बर हो गयी, तो मुज़ाइक़ा नहीं, उस को करो और जिसको तुम यह समझो कि किसी को इस की ख़बर न हो, उसको न करो। (कि यह अलामत उसके बुरा होने की है)।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते हैं कि कर्दम बिन यज़ीद रह॰ वग़ैरह बहुत से आदमी अन्सार के पास आते और उनको नसीहत करते कि इतना ख़र्च न किया करो, हमें डर है कि यह सब ख़र्च हो जाएगा, तुम फ़क़ीर बन जाओगे, हाथ रोक कर ख़र्च किया करो, न मालूम कल को क्या ज़रूरत पेश आ जाए, उन लोगों की मज़म्मत में यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई। *(दुर्रे मंसूर)*

(٥) وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝ يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ۭ هٰذَا مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ۝ (توبه ع ٥)

5. जो लोग सोना-चांदी जमा करके खज़ांने के तौर पर रखते हैं और अल्लाह तआला की राह में ख़र्च नहीं करते, आप उनको बड़े दर्दनाक अज़ाब की खुशख़बरी सुना दीजिए, वह उस दिन होगा जिस दिन

उनको (चांदी सोने को) अव्वल जहन्नम की आग में तपाया जायेगा, फिर उनसे उन लोगों की पेशानियों और पसलियों और पुश्तों को दाग़ दिया जाएगा और कहा जाऐगा कि यह वह है जिसको तुमने अपने वास्ते जमा कर रखा था, अब उसका मज़ा चखो, जिसको जमा करके रखा था।

(तौबा रूकूअ् 5)

फ़ायदाः- उलमा ने लिखा है कि पेशानियों वग़ैरह के ज़िक्र से आदमी के चारों तरफ़ मुराद हैं, पेशानी से अगला हिस्सा, पसलियों से दायां और बायां और पुश्त से पिछला हिस्सा मुराद है और मतलब यह है कि सारे बदन को दाग़ दिया जाएगा।

एक हदीस से इसकी ताईद भी होती है, जिस में मुंह से क़दम तक दाग़ दिया जाना वारिद हुआ है और कुछ उलमा ने लिखा है कि इन तीन आज़ा की खुसूसियत इस लिए है कि इन में ज़रा-सी तक्लीफ़ भी ज़्यादा महसूस होती है। और कुछ आलिमों ने लिखा है कि इन तीन को इस वजह से ज़िक्र किया कि आदमी जब चेहरे से फ़कीर को देखता है तो पहलू बचा कर उस तरफ़ पुश्त करके चल देता है, इस लिए इन तीनों आज़ा को खुसूसियत से अज़ाब है, इसके अलावा और भी वज्हें ज़िक्र की गयीं। *(तफ़सीरे कबीर)*

इस आयते शरीफ़ा में उस माल को तपा कर दाग़ देना वारिद हुआ है और आयत न॰ 3 पर उसका सांप बन कर पीछे लगना वारिद हुआ है। इन दोनों में कुछ इश्काल नहीं, ये दोनों अज़ाब अलाहिदा-अलाहिदा हैं, जैसा कि ज़कात अदा न करने के बयान में पांचवीं फ़स्ल की हदीस न॰ 2 पर आ रहा है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि॰ और बहुत से सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ से नकल किया गया कि इस आयते शरीफ़ा में ख़ज़ाने से मुरादा वह माल है जिसकी ज़कात अदा न की गयी हो और जिसकी ज़कात अदा कर दी गयी हो, वह ख़ज़ाना नहीं हैं।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ से नकल किया गया कि यह हुक्म ज़कात का हुक्म नाज़िल होने से पहले था। जब ज़कात का हुक्म नाज़िल हो गया तो हक़ तआला शानुहू ने ज़कात अदा कर देने को बकीया माल के पाक हो जाने का सबब करार दिया।

हज़रत सौबान रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जब यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई

तो हम हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ एक सफ़र में थे, तो कुछ सहाबा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह! सोना-चांदी जमा करने का तो यह हश्र है, अगर हमें यह मालूम हो जाये कि बेहतरीन माल क्या है जिसको ख़ज़ाने के तौर पर जमा करके रखें। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, अल्लाह का ज़िक्र करने वाली ज़ुबान, अल्लाह का शुक्र अदा करने वाला दिल और नेक बीवी, जो आख़िरत के कामों में मदद देती रहे।

हज़रत उमर रज़ि॰ से नक़ल किया गया कि जब यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई तो वह हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि यह आयते शरीफ़ा तो लोगों पर बहुत बार हो रही है। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने ज़कात इसी लिए मशरूअ् फ़रमायी है कि बाक़ी माल पाक हो जाए और मीरास तो उसी माल में जारी होगी जो बाद में बाक़ी रहे और बेहतरीन चीज़ जिसको आदमी ख़ज़ाने की तरह महफ़ूज़ रखे, वह नेक बीवी है, जिसको देख कर जी राज़ी हो जाए, जब उसको कोई हुक्म किया जाए, फ़ौरन इताअत करे और जब ख़ाविंद ग़ायब हो (सफ़र वग़ैरह में), तो अपनी (और उसके माल की) हिफ़ाज़त करे।

हज़रत बरीदा रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि, जब यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई तो सहाबा रज़ि॰ में इसका चर्चा हुआ। हज़रत अबूबक्र रज़ि॰ ने हुज़ूर सल्ल॰ से दर्याफ़्त किया, या रसूलल्लाह! ख़ज़ाना बनाने के लिए क्या चीज़ बेहतर है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, ज़िक्र करने वाली ज़ुबान, शुक्र करने वाला दिल और वह नेक बीवी, जो ईमानी चीज़ों पर मदद करे।

हज़रत अबूज़र रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल करते हैं कि जो शख़्स दीनार (सोने का सिक्का), दिरम (चांदी का सिक्का) या सोने-चांदी का टुकड़ा रखेगा और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च न करेगा, बशर्ते कि क़र्ज़ के अदा करने के वास्ते न रखा हो, वह ख़ज़ाने में दाखिल है, जिसका क़ियामत के दिन दाग़ दिया जाएगा।

हज़रत अबू उमामा रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल करते हैं कि जो शख़्स सोना या चांदी छोड़ कर मर जाए, उसका क़ियामत के दिन दाग़ दिया जाएगा, बाद में चाहे जहन्नम में जाए या मग़्फ़िरत हो जाए।

हज़रत अली करमल्लाहु वज्हहू हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने मुसलमानों के अग़्निया के मालों में वह मिक़्दार फ़र्ज़ कर दी है, जो उनके फ़ुक़रा को काफ़ी है। फ़ुक़रा को भूखे या नंगे होने की मशक़्क़त सिर्फ़ इस वजह से पड़ती है कि अग़्निया उनको देते नहीं। ख़बरदार रहो कि हक़ तआला शानुहू क़ियामत के दिन इन अग़्निया से सख़्त मुतालबा करेंगे या सख़्त अज़ाब देंगे। (दुर्रे मंसूर)

कंज़ुल उम्माल में इस हदीस पर कलाम भी किया है और हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ की हदीस से नक़ल किया है कि अगर अल्लाह जल्ल शानुहू के इल्म में यह बात होती कि अग़्निया की ज़कात फ़ुक़रा को काफ़ी न होगी तो ज़कात के अलावा और कोई चीज़ उनके लिए तज्वीज़ फ़रमाते, जो उन को काफ़ी हो जाती। पस अब जो फ़ुक़रा भूखे हैं, वे अग़्निया के ज़ुल्म की वजह से हैं, (कंज़) कि वे ज़कात पूरी नहीं निकालते।

हज़रत बिलाल रज़ि॰ से नक़ल किया गया कि हुज़ूर सल्ल॰ ने उन से इर्शाद फ़रमाया, अल्लाह तआला से फ़क़्र की हालत में मिलो, तवंगरी की हालत में न मिलो। उन्हों ने अर्ज़ किया, इसकी क्या सूरत है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि जब कहीं से कुछ मयस्सर हो, उसको छुपा कर न रखो, मांगने वाले से इंकार न करो। उन्हों ने अर्ज़ किया हुज़ूर सल्ल॰! यह कैसे हो सकता है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, यही है और यह न हो तो जहन्नम है। (दुर्रे मंसूर)

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि॰ भी उन्हें हज़रात में हैं, जिनका मस्लक यह है कि रूपया-पैसा बिल्कुल रखने की चीज़ नहीं है, एक दिरहम जहन्नम का एक दाग़ है और दो दिरहम दो दाग़ हैं। इनके मुख़्तलिफ़ वक़िआत पहले गुज़र चुके हैं, जिनमें से कुछ पहली फ़स्ल के सिलसिला-ए-अहादीस में नं॰ 1 पर गुज़रे।

एक मर्तबा हबीब बिन सल्मा रह॰ ने जो शाम के अमीर थे, हज़रत अबूज़र रज़ि॰ के पास तीन सौ दीनार (अशर्फ़ियां) भेजे और अर्ज़ किया कि इनको अपनी ज़रूरियात में सर्फ़ कर लें। हज़रत अबूज़र रज़ि॰ ने वापस फ़रमा दिए और यह फ़रमा दिया कि दुनिया में अल्लाह जल्ल शानुहू के साथ धोखा खाने वाला मेरे सिवा कोई न मिला ? (यानी दुनिया की इतनी बड़ी मिक़्दार अपने पास रखना अल्लाह तआला शानुहू से ग़ाफ़िल होना है और यही अल्लाह के साथ धोखा है कि उसके अज़ाब से आदमी बे-फ़िक्र हो जाए, जिसको हक़

तआला शानुहू ने मुतअद्दद जगह क़ुरआन पाक में इर्शाद फ़रमाया कि तुमको धोखेबाज़ शैतान अल्लाह तआला के साथ धोखे में न डाल दे, जैसा कि छठी फ़स्ल में दुनिया और आख़िरत की आयात में नं॰ 38 पर आ रहा है। इसके बाद हज़रत अबूज़र रज़ि॰ ने फ़रमाया, मुझे सिर्फ़ थोड़ा सा साया चाहिए, जिसमें अपने को छिपा लूं और तीन बकरियां, जिनके दूध पर हम सब गुज़र कर लें और एक बांदी जो अपनी ख़िदमत का एहसान हम पर कर दे, इससे ज़ायद जो हो, मुझे उसके अन्दर अल्लाह जल्ल शानुहू से डर लगता है। उनका यह भी इर्शाद है कि क़ियामत के दिन दो दिरम वाला एक दिरम वाले की ब-निस्बत ज़्यादा क़ैद में होगा। *(दुर्रे मंसूर)*

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सामित रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा हज़रत अबूज़र रज़ि॰ के पास था कि उनका रोज़ीना बैतुलमाल से आया। एक बांदी उनके पास थी, जो उसमें से ज़रूरी चीज़ें ख़रीद कर लायी, उस के बाद सात दिरम उनके पास बचे। फ़रमाने लगे कि इसके पैसे कर लाओ (ताकि तक़्सीम कर दें)। मैं ने कहा, उनको अपने पास रहने दो, कोई ज़रूरत पेश आ जाए, कोई मेहमान आ जाए। फ़रमाया, मुझ से मेरे महबूब (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने यह तै शुदा बात फ़रमायी थी कि जिस सोने या चांदी को बांध कर रखा जाएगा वह अपने मालिक पर आग की चिंगारी है, जब तक कि उसको अल्लाह के रास्ते में ख़र्च न कर दिया जाए। *(तर्ग़ीब)*

हज़रत शद्दाद रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हज़रत अबूज़र रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कोई सख़्त हुक्म सुनते थे, फिर जंगल चले जाते थे, (कि अकसर जंगल में क़ियाम रहता था)। उनके तशरीफ़ ले जाने के बाद उस हुक्म में कुछ सहूलत पैदा हो जाती, जिसका उनको इल्म न होता, इस लिए वह सख़्त ही हुक्म पर क़ायम रहते। *(दुर्रे मंसूर)*

यह सही है कि हज़रत अबूज़र रज़ि॰ का मस्लक इस बारे में बहुत ही सख़्ती और शिद्दत का है, बाक़ी इसमें तो शक नहीं कि ज़ुह्द का कमाल यही है जो उनका मस्लक था और बहुत से अकाबिर का यही पसंदीदा मामूल रहा, मगर इस पर न तो किसी को मजबूर किया जा सकता है, न इस पर अमल न करने में जहन्नमी क़रार दिया जा सकता है, अपनी ख़ुशी और रज़ा व रग़बत से इख़्तियार करने की चीज़ यही है। जिस ख़ुश नसीब को भी अल्लाह जल्ल शानुहू अपने लुत्फ़ व करम से नसीब फ़रमा दे। काश ! इस दुनिया के कुत्ते को भी

अल्लाह जल्ल शानुहू इन हज़राते ज़ाहिदीन के औसाफ़े जमीला का कुछ जिस्सा अता फ़रमा देता।

फ़ इन्नल्ला-ह अला कुल्लि शैइन् क़दीर॰

(٦) وَمَامَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ اِلَّآ اَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَبِرَسُوْلِهٖ وَلَا يَاْتُوْنَ الصَّلٰوةَ اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ اِلَّا وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ۝ فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ ؕ اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ۝ (توبه ع ٧)

6. और इन॰ (मुनाफ़िक़ों) की ख़ैर-ख़ैरात क़बूल होने से इसके सिवा कोई चीज़ मानेअ् नहीं है कि उन्हों ने अल्लाह के साथ और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया (निफ़ाक़ से अपने को मोमिन बताते हैं,) ये लोग नमाज़ नहीं पढ़ते, मगर बहुत काहिली से (हारे दिल से) और (नेक कामों में) ख़र्च नहीं करते, मगर ना-गवारी के साथ (बदनामी से बचने की वजह से)। इन (मर्दूदों) का माल और औलाद आप को ताज्जुब में न डाले (कि ऐसे मर्दूदों पर इतने इन्आमात क्यों हैं) अल्लाह जल्ल शानुहू का इरादा यह है कि इन चीज़ों की वहज से उनको दुन्यवी अज़ाब में मुब्तला रखे (कि हर वक़्त उनके फ़िक्रों में मुब्तला रहें) और कुफ़्र ही की हालत में उनकी जानें निकल जाएं।

फ़ायदा:- इब्तिदा में ख़ैरात के क़ुबूल न होने में कुफ़्र के अलावा काहिली से नमाज़ पढ़ने और बद-दिली से सद्क़ा देने का भी दख़ल बताया है। नमाज़ के मुताल्लिक़ मज़ामीन इस नाकारा के रिसाला 'फ़ज़ाइले नमाज़' में गुज़र चुके हैं, उसमें हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद गुज़रा है कि इस्लाम में उसका कोई हिस्सा नहीं जिसकी नमाज़ नहीं। उसके लिऐ दीन नहीं, जिसकी नमाज़ नहीं, नमाज़ दीन के लिए ऐसी ज़रूरी चीज़ है जैसा कि आदमी के लिए उसका सर जरूरी है।

हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि जो नमाज़ को ख़ुशूअ्-ख़ुज़ूअ् से अच्छी तरह पढ़े वह नमाज़ निहायत रोशन चमकादार बन कर दुआ-ए-ख़ैर देती हुई जाती है और जो बुरी तरह पढे, वह बुरी सूरत में स्याह रंग में बद्दुआ देती हुई

जाती है कि अल्लाह जल्ल शानुहू तुझे भी ऐसा ही बरबाद करे जैसा तूने मुझे बरबाद किया और ऐसी नमाज़ पुराने कपड़े की तरह लपेट कर नमाज़ी के मुंह पर मार दी जाती है।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद वारिद है कि क़ियामत के दिन सब से अव्वल नमाज़ का हिसाब होगा, अगर वह अच्छी हुई तो बाक़ी आमाल अच्छे होंगे, वह बुरी हुई तो बाक़ी आमाल भी बुरे होंगे।

दूसरी हदीस में है कि अगर वह क़ुबूल हुई तो बाक़ी आमाल भी क़ुबूल होंगे, वह मुर्दूद हो गयी तो बाक़ी आमाल भी मर्दूद होंगे। *(फ़ज़ाइले नमाज़)*

इसके बाद आयते शरीफ़ा में बद-दिली से सद्क़ा का ज़िक्र फ़रमाया है और बद्-दिली से सद्क़ा देना ज़ाहिर है कि क्या क़ाबिले क़ुबूल हो सकता है, लेकिन अगर वह सद्क़ा फ़र्ज़ है जैसा कि ज़कात, तो वुजूब साक़ित हो ही जाएगा। इसी वास्ते हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ज़कात अदा करने की रिवायात में मुतअद्द जगह 'तय्यिब-तन बिहा नफ़्सुहू' *(तर्ग़ीब)*

'राफ़िद-तन अलैहि कुल्ल आम' *(अबू दाऊद)*

वग़ैरह अल्फ़ाज़ ज़िक्र फ़रमाये, जिनका मतलब यही है कि निहायत ख़ुशदिली से अदा करे ताकि फ़र्ज़। अदा होने के अलावा उसका अज्र व सवाब भी हो और उस पर इन्आम व इक्राम भी हो।

अबू दाऊद की एक रिवायत में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि जो शख़्स सवाब की नीयत से अदा करेगा, उसको उसका अज्र मिलेगा और जो अदा न करेगा, हम उसको लेकर रहेंगे और कुछ रिवायात में उसके साथ तावान भी वारिद है कि अदा न करने की सूरत में जुर्माना भी करेंगे।

हज़रत जाफ़र बिन मुहम्मद रह॰ कहते हैं कि वह अमीरुल मोमिनीन अबू जाफ़र मंसूर के पास गये तो वहां हज़रत ज़ुबैर रह॰ की औलाद में से कोई शख़्स थे, जिन्हों ने मंसूर से कोई अपनी हाजत पेश की थी और मंसूर ने उनकी दर्ख़्वास्त पर कुछ उनको देने का हुक्म भी कर दिया था, मगर वह मिक़्दार ज़ुबैरी के नज़दीक कम थी, जिसकी शिकायत उन्होंने की और मंसूर को उस पर ग़ुस्सा आ गया। हज़रत जाफ़र रह॰ ने फ़रमाया कि मुझे अपने बाप-दादों के वास्ते से हुज़ूर सल्ल॰ का यह इर्शाद पहुंचा है कि जो अता ख़ुशदिली से की जाए, उसमें

देनें वाले के लिए भी बरकत होती है और लेने वाले के लिए भी। मंसूर ने यह हदीस सुनते ही कहा, ख़ुदा की क़सम! देते वक़्त तो मुझे ख़ुश दिली न थी, मगर तुम्हारी हदीस सुनकर मुझमें तीबे नफ़्स पैदा हो गया, उसके बाद हज़रत जाफ़र रज़ि॰ उन ज़ुबैरी की तरफ़ मुतवज्जह हुए और उनसे फ़रमाया कि मुझे अपने बाप-दादों के ज़रिए से हुज़ूर सल्ल॰ का यह इर्शाद पहुंचा है कि जो शख़्स क़लील रिज़्क़ को कम समझे, अल्लाह जल्ल शानुहू उसको कसीर से महरूम फ़रमा देते हैं। ज़ुबैरी कहने लगे कि ख़ुदा की क़सम! पहले से तो यह अतीया मेरी निगाह में कम था, तुम्हारी हदीस सुनने के बाद बहुत मालूम होने लगा। सुफ़ियान बिन ऐनिया रह॰ जो इस क़िस्से को नक़ल करते हैं, वह कहते हैं कि मैंने ज़ुबैरी से पूछा कि वह क्या मिक़्दार थी, जो तुम्हें मंसूर ने दी थी? यह कहने लगे कि उस वक़्त तो बहुत थोड़ी सी थी, लेकिन मेरे पास पहुंचने के बाद अल्लाह जल्ल शानुहू ने उसमें ऐसी बरकत और नफ़ा अता फ़रमाया कि वह पचास हज़ार कि मिक़्दार तक पहुंच गयी।

सुफ़ियान रह॰ कहते हैं कि ये लोग (अहले बैत हज़रत जाफ़र रज़ि॰ और उनके अकाबिर की तरफ़ इशारा है) भी बारीश की तरह से जहां पहुंच जाते हैं, नफ़ा ही पहुंचाते हैं। *(कन्ज़)*

मतलब यह है कि इस जगह दो हदीसें सुना कर दोनों को ख़ुश और मुत्मइन कर दिया, इसी तरह से ये हज़रात जहां भी पहुंचते हैं रूहानी या माद्दी नफ़ा पहुंचाए बग़ैर नहीं रहते, इसके साथ ही उस ज़माने के उमरा की यह चीज़ भी क़ाबिले रश्क है कि बादशाहत के बावजूद हुज़ूर सल्ल॰ के इर्शादात सुनकर उनके सामने गरदन रख देना उस ज़माने की आम फ़िज़ा थी।

आयते शरीफ़ा में इसके बाद आल-औलाद और माल को दुनिया में अज़ाब का ज़रिया फ़रमाया। इन चीज़ों का दुनिया में मूजिबे दिक़्क़त और कुल्फ़त होना ज़ाहिर है, कहीं औलाद की बीमारी है, कहीं उन पर मुसीबतें हैं, कहीं उनके मरने का रंज व हसरत है और ये सब चीज़ें मुसलमानों पर भी पेश आती हैं, लेकिन मुसलमान के लिए चूंकि हर तक्लीफ़ जो दुनिया में पेश आये, वह आख़िरत में अज्र व सवाब का ज़रिया है, इस लिए वह तक्लीफ़ नहीं रहती, क्योंकि वह तक्लीफ़ नहीं बल्कि राहत है, जिसके बदले में उससे कहीं ज़्यादा मिल जाए और जिनको आख़िरत में इन मुसीबतों का बदला नहीं है, उनके लिए

यह दुनिया का अज़ाब ही अज़ाब रह गया।

इब्ने ज़ैद रह० कहते हैं कि इन चीज़ों के दुनिया में अज़ाब होने से मुसीबतें मुराद हैं कि इनके लिए ये अज़ाब हैं और मोमिनीन के लिए सवाब की चीज़ें हैं।

(٧) وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُومًا مَّحْسُورًا ۝ إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۝ (بنی اسرآئیل ع ٣)

7. और न तो (बुख़्ल की वजह से) अपने हाथ को अपनी गर्दन से बांध लेना चाहिए और न बहुत ज़्यादा खोल देना चाहिए (कि इस्राफ़ की हद तक पहुंच जाए कि इस सूरत में) मलामत ज़दा और (फ़क्र की वजह से) थके हुए बैठे रहो और महज़ किसी के फ़क्र की वजह से अपने को परेशानी में मुब्तला करना मुनासिब नहीं। बेशक तेरा रब जिसको चाहता है, ज़्यादा रिज़्क़ देता है और जिस पर चाहता है तंगी करता है। बेशक वह अपने बन्दों (की मस्लहतों और उनके अहवाल) से बा-ख़बर है (कि किसके लिए कितना मुनासिब है) और उनके अहवाल (हालात) को देखने वाला है।

फ़ायदाः- क़ुरआन पाक में इस जगह मआशरत के बहुत से आदाब पर बड़ी तफ़्सीली तंबीहात फ़रमायी हैं, मिन जुम्ला उनके इस आयते शरीफ़ा में बुख़्ल और इस्राफ़ पर तंबीह फ़रमा कर एतिदाल और मियाना रवी की गोया तर्ग़ीब दी।

कुछ रिवायात में आया है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किसी ने कुछ सवाल किया। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि इस वक़्त तो कुछ है नहीं। उसने कहा कि अपना कुर्ता जो आप पहन रहे हैं, यह दे दीजिए। हुज़ूर सल्ल० ने कुर्ता निकाल कर मरहमत फ़रमा दिया। इस पर यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि यह आयते शरीफ़ा ख़ानगी इख़्राजात के बारे में है कि न इनमें बहुत बुख़्ल किया जाए, न बहुत वुसअत इख़्तियार की जाए, मियाना रवी इख़्तियार की जाए। हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० से भी

कितनी ही रिवायतों में यह मज़्मून ज़िक्र किया गया कि जो आदमी मियाना रवी (दर्मियाना रास्ता) इख़्तियार करे, वह फ़क़ीर नहीं होता।

और आयते शरीफ़ा के ख़त्म पर इस अहमक़ाना ख़्याल की तर्दीद फ़रमायी कि सब के सब माली हैसियत से बराबरी का दर्जा रखते हैं। यह सिर्फ़ अल्लाह जल्ल शानुहू के क़ब्ज़ा-ए-क़ुदरत में है कि वह जिस पर चाहे, फ़राख़ी फ़रमाऐ, जिस पर चाहे, तंगी करे, वही बन्दों के अहवाल से वाक़िफ़ है, वही उनके मसालेह को ख़ूब जानता है।

हज़रत हसन रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हक़ तआला शानुहू बन्दों के अहवाल से बा-ख़बर हैं, जिसके लिए सरवत[1] बहतर समझते हैं, उसको सरवत आता फ़रमाते हैं और जिसके लिए तंगी मुफ़ीद समझते हैं, उस पर तंगी फ़रमाते हैं।

दूसरी जगह क़ुरआन पाक में इर्शाद है--

وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوْا فِي الْاَرْضِ وَلٰكِنْ يُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَآءُ
اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ ٥(شوریٰ ع ٣)

तर्जुमा:- अगर अल्लाह तआला अपने सब बन्दों के लिए रोज़ी में वुस्अत कर देता तो वे दुनिया में शरारत (और फ़साद) करने लगते, लेकिन हक़ तआला शानुहू (जिसके लिए) जितना रिज़्क़ मुनासिब समझता है, उतारता है। वह अपने बन्दों (की मसालेह) से बा ख़बर और उनके अहवाल को देखने वाला है।

इस आयते शरीफ़ा में इस तरफ़ इशारा है कि सब पर वुस्अत का होना दुनिया में सरकशी और फ़साद का सबब है और क़रीने क़ियास और तजुर्बे की बात भी है कि अगर हक़ तआला शानुहू अपने लुत्फ़ से सब ही को मालदार बनादें तो फिर दुनिया का निज़ाम चलना नामुम्किन हो जाए कि सब तो आक़ा बन जाएं, मज़दूरी कौन करे?

इब्ने ज़ैद रह॰ कहते हैं कि अरब में जिस साल पैदावार की कसरत होती, एक दूसरे को क़ैद करना और क़त्ल करना शुरू कर देते और जब क़हत पड़ जाता तो उस को छोड़ देते। (दुर्रे मंसूर)

1. दौलत, फ़राख़ी

हज़रत अली और मुतअद्दद हज़राते सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन से नक़ल किया गया कि अस्हाबे सुफ़्फ़ा ने दुनिया की तमन्ना की थी, जिस पर आयते शरीफ़ा 'व लौ ब-स-तल्लाहुर्रिज़्क़' नाज़िल हुई।

हज़रत क़तादा रज़ि॰ इस आयते शरीफ़ा की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि बेहतरीन रिज़्क़ वह है, जो न तुझमें सरकशी पैदा करे न अपने अन्दर तुझे मश्गूल कर ले। हमें यह बताया गया कि एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मुझे अपनी उम्मत पर जिस चीज़ का सबसे ज़्यादा ख़ौफ़ है, वह दुनिया की चमक-दमक है। किसी ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह? क्या ख़ैर (माल) भी बुराई का सबब बन जाता है? इस पर यह आयते शरीफ़ा 'व लौ ब-स-तल्लाहुर्रिज़्क़' नाज़िल हुई।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हदीसे क़ुद्सी में अल्लाह जल्ल शानुहू का पाक इर्शाद नक़ल किया गया कि जो शख़्स मेरे किसी वली की इहानत[1] करता है, वह मेरे साथ लड़ाई के लिए मुक़ाबले में आता है, मैं अपने दोस्तों की हिमायत में ऐसा ग़ुस्से में आता हूँ जैसा कि ग़ज़बनाक शेर, और कोई बन्दा मेरे साथ तक़र्रुब उन चीज़ों से ज़्यादा किसी चीज़ से हासिल नहीं कर सकता, जो मैंने उन पर फ़र्ज़ की हैं (यानी हक़ तआला शानुहू ने जो चीज़ें फ़र्ज़ कर दीं, उनकी बजाआवरी (उन पर अमल करने) से जितना तक़र्रुब हासिल होता है, किसी चीज़ से हासिल नहीं होता, इसके बाद दूसरे दर्जे में नवाफ़िल के ज़रीए से तक़र्रुब हासिल होता है) और नवाफ़िल के ज़रिए से बन्दा मेरे साथ क़ुर्ब हासिल करता रहता है (और जितना नवाफ़िल में इज़ाफ़ा (बढ़ोतरी) होता रहेगा उतना ही क़ुर्ब में इज़ाफ़ा होता रहेगा), यहां तक कि वह मेरा महबूब बन जाता है और जब वह मेरा महबूब बन जाता है, तो मैं उसकी आंख, कान, हाथ और मददगार बन जाता हूँ। अगर वह मुझे पुकारता है, तो मैं उसकी पुकार को क़ुबूल करता हूं और मुझ से कुछ मांगता है तो उसका सवाल पूरा करता हूँ और मुझे किसी चीज़ में, जिसके करने का मैं इरादा करता हूं, इतना तरद्दुद नहीं होता, जितना अपने मोमिन बन्दे की रूह क़ब्ज़ करने में तरद्दुद होता है कि वह (किसी वजह से) मौत को पसन्द नहीं करता और मैं उसका जी बुरा नहीं करना चाहता, लेकिन मौत ज़रूरी चीज़ है। मेरे कुछ बन्दे ऐसे हैं

1. तौहीन, छोटा और कमज़ोर समझना।

कि वे किसी ख़ास नौअ् की इबादत के ख़्वाहिश मन्द होते हैं, लेकिन मैं इस लिए वह नौअ् (किस्म) इबादत की मयस्सर नहीं करता कि उससे उनमें उज्ब[1] पैदा न हो जाए। मेरे कुछ बन्दे ऐसे हैं, जिनके ईमान को उनकी तन्दरुस्ती ही दुरुस्त रख सकती है। अगर मैं उनको बीमार कर दूं तो उन की हालत ख़राब हो जाए और कुछ बन्दे ऐसे हैं, अगर मैं उनको तन्दरुस्ती दे दूं तो वे बिगड़ जाएं, मैं अपने बन्दों के हाल के मुवाफ़िक़ अमल दर आमद करता हूं इस लिए कि मैं उनके दिलों के अहवाल से वाक़िफ़ हूं और बाख़बर हूं। *(दर्रे मंसूर)*

यह हदीस शरीफ़ बड़ी क़ाबिले ग़ौर है। इसका ताल्लुक़ तक्वीनी उमूर से है, इसका मतलब यह नहीं कि अगर कोई ग़रीब है, तो उसकी इम्दाद की हमें ज़रूरत नहीं, कोई बीमार है तो उसके इलाज की ज़रूरत नहीं। अगर यह होता तो फिर सद्क़ात की सब रिवायात और आयात बेमहल हो जातीं । दवा करने का हुक्म जिन रिवायात में है, वे बे-महल होतीं, बल्कि मतलब यह है कि तक्वीनी तौर पर यह सिलसिला तो इसी तरह रहेगा, कोई माहिर डाक्टर या महक्मा-ए-हिफ़्ज़ाने सेहत यह चाहे कि कोई बीमार न हो, नामुम्किन। कोई हुकूमत यह कोशिश करे कि कोई ग़रीब न रहे, कभी नहीं हो सकता, अल-बत्ता हम लोग अपनी वुस्अत के मुवाफ़िक़ उनकी इआनत (मदद) के, हमदर्दी के, इलाज के, इम्दाद के मामूर हैं, और जितनी कोई शख़्स इसमें कोशिश करेगा, उसका अज्र, उसका सवाब, उसका दीन और दुनिया में उसको बदला मिलेगा, लेकिन अपनी सई (कोशिश) के बावजूद कोई बीमार अच्छा नहीं होता, अपनी कोशिश के बावजूद किसी की माली हालत दुरुस्त नहीं होती, तो उसको यह समझना चाहिए कि अल्लाह तआला के नज़दीक इसी में मेरे लिए ख़ैर है, इससे परेशान और घबराना नहीं चाहिए, और चूंकि ग़ैब की ख़बर नहीं और तक्वीनी चीज़ों पर अमल के हम मामूर नहीं, इस लिए अपनी कोशिश, इलाज और इआनत, हमदर्दी और मदद की ज़्यादा से ज़्यादा रखनी चाहिए।

वल्लाहुल् मुवफ़्फ़िक़् लिमा युहिब्बु व यर्ज़ा।

(٨) وَابْتَغِ فِيمَا آتٰكَ اللّٰهُ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيْبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَاَحْسِنْ كَمَآ اَحْسَنَ اللّٰهُ اِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِى الْاَرْضِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ० (قصص ع ٨)

1. घमण्ड।

8. और तुझे जो कुछ अल्लाह जल्ल शानुहू ने दे रखा है, उसमें आलमे आख़िरत की भी जुस्तजू कर और दुनिया से अपना हिस्सा (आख़िरत में ले जाना) फ़रामोश न कर। जिस तरह अल्लाह जल्ल शानुहू ने तेरे साथ एहसान किया, तू भी (बन्दों पर) एहसान कर (और ख़ुदा की ना फ़रमानी और हुक़ूक़ को ज़ाया करके) दुनिया में फ़साद न कर। बेशक अल्लाह तआला फ़साद करने वालों को पसन्द नहीं करता।

(क़सस रुकूअ् 8)

फ़ायदाः- यह क़ुरआन पाक में मुसलमानों की तरफ़ से क़ारून को नसीहत का बयान है, इसका पूरा क़िस्सा ज़कात अदा न करने के बयान में पांचवीं फ़स्ल की अयात के सिलसिले में न॰ 3 पर आ रहा है।

सिद्दी रह॰ कहते हैं कि आख़िरत की जुस्तजू करने का मतलब यह है कि सदक़ा करके अल्लाह जल्ल शानुहू का तक़र्रूब हासिल कर और सिला रहमी कर।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमातें हैं कि दुनिया से अपना हिस्सा मत भूल का मतलब यह है कि दुनिया में अल्लाह तआला के लिए अमल करना न छोड़।

मुजाहिद रह॰ कहते हैं कि दुनियां में अल्लाह तआला की इबादत करना, यह दुनिया से अपना हिस्सा है जिसका सवाब आख़िरत में मिलता है।

हसन बसरी रह॰ फ़रमाते हैं कि बक़द्रे ज़रूरत अपने लिए रोक कर बाक़ी ज़ायद का ख़र्च कर देना और आगे चलता कर देना, यह दुनिया में से अपना हिस्सा है। और एक रिवायत में है कि एक साल का ख़र्च रोक कर बाक़ी का सदक़ा कर दे। *(दुर्रे मंसूर)*

आदमी का अपनी दुनिया में से अपनी आख़िरत का हिस्सा भुला देना अपने नफ़्स पर इंतिहाई ज़ुल्म है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि क़ियामत के दिन आदमी ऐसी हालत में अल्लाह जल्ल शानुहू के सामने लाया जायेगा। जैसा कि (कमज़ोरी और ज़िल्लत के ऐतिबार से) भेड़ का बच्चा हो, वह हक़ तआला शानुहू के सामने खड़ा किया जाएगा, वहां से मुतालबा होगा कि मैं ने तुझे माल दिया, दौलत अता की, तुझ पर बड़े बड़े एहसानात किए, तूने मेरे इन

इन्आमात में क्या कारगुज़ारी की? वह अर्ज़ करेगा, या अल्लाह! मैं ने माल ख़ूब जमा किया, उसको ख़ूब बढ़ाया और जितना माल था, उससे बहुत ज़्यादा करके उसको दुनिया में छोड़ आया। आप मुझे दुनिया में वापस कर दें तो मैं वह सब कुछ अपने साथ ले आऊं। इर्शाद होगा, वह दिखाओ, जिसको ज़ख़ीरा बना कर आगे भेज रखा हो। वह फिर यही अर्ज़ करेगा कि या अल्लाह, मैं ने उसको बहुत जमा किया और बढ़ाया और जितना था, उससे बहुत ज़्यादा करके छोड़ आया, मुझे आप वापस भेज दें, मैं वह सारा ही साथ ले आऊं। बिल आख़िर जब उसके पास ज़ख़ीरा ऐसा न होगा जिसको आगे भेज रखा हो तो उसको जहन्नम में डाल दिया जायेगा। *(मिश्कात)*

यह अल्लाह जल्ल शानुहू और उसके पाक रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इर्शादात बड़े ग़ौर और बहुत एहतिमाम से अमल करने की चीज़ें हैं, सरसरी पढ़ कर छोड़ देने के वास्ते नहीं हैं, दुनिया की ज़िन्दगी को, जो बिल्कुल ख़्वाब की मिसाल है, बहुत एहतिमाम से आख़िरत की तैयारी के लिए ग़नीमत समझो और जो कमाया जा सके, कमा लो। हक़ तआला शानुहू मुझे भी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

(٩) هٰٓاَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ ج فَمِنْكُمْ مَّنْ یَّبْخَلُ ج وَمَنْ یَّبْخَلْ فَاِنَّمَا یَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ ط وَاللّٰهُ الْغَنِیُّ وَاَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ ج وَاِنْ تَتَوَلَّوْا یَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَیْرَكُمْ لا ثُمَّ لَا یَكُوْنُوْٓا اَمْثَالَكُمْ ۝ (محمد ع ٤)

9. तुम लोग ऐसे हो कि तुम को अल्लाह की राह में (थोड़ा सा) ख़र्च करने को बुलाया जाता है, सो इस पर भी तुममें से बाज़ (कुछ) आदमी बुख़्ल करने लगते हैं। (अगर ज़्यादा मांगा जाता तो क्या करते?) और जो शख़्स बुख़्ल करता है, वह ख़ुद अपने ही से बुख़्ल करता है (इसलिए कि अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने का नफ़ा उसी को मिलता है) अल्लाह तआला तो ग़नी है (उसको तुम्हारे माल की परवाह नहीं) और तुम मुहताज हो, (दुनिया में भी और आख़िरत में भी) और इसीलिए तुम्हें सदक़े का हुक्म दिया जाता है कि इसका नफ़ा तुम्हीं को पहुँचता है और अगर तुम (अल्लाह तआला के अहकाम से) रू-गरदानी करोगे तो

ख़ुदा-ए-तआला तुम्हारी जगह दूसरी क़ौम पैदा कर देगा और फिर वह तुम जैसे (रूगरदानी करने वाले) न होंगे (बल्कि निहायत फ़रमांबरदार होंगे)

(मुहम्मद रूकूअ् 4)

फ़ायदा:- यह ज़ाहिर बात है कि अल्लाह जल्ल शानुहू की कोई ग़रज़ हमारी ख़ैरात और सदक़ात के साथ वाबस्ता नहीं है, उसने जिस क़दर ज़्यादा तर्ग़ीबें अपने पाक कलाम और अपने पाक रसूल सल्ल० के ज़रिए से फ़रमायी हैं, वे हमारे ही नफ़े के वास्ते हैं, चुनांचे पहली फ़स्ल में बहुत से दीनी और दुन्यवी फ़वाइद सदक़े के गुज़र चुके हैं और जब एक हाकिम, मालिक, ख़ालिक किसी शख़्स को ऐसे काम का हुक्म करे, जिससे हुक्म करने वाले का कोई नफ़ा न हो, बल्कि जिसको हुक्म दिया है, उसी का नफ़ा हो और फिर भी वह हुक्म उदूली करे तो यक़ीनन उसका जितना ख़मियाज़ा भी भुगते, वह ज़ाहिर है।

एक हदीस में है कि हक़ तआला शानुहू बहुत से लोगों को नेमतें इसलिए देता है कि लोगों को नफ़ा पहुँचाये, जब तक वे लोग ऐसा करते हैं, वे नेमतें उनके पास रहती हैं, जब वे उससे रू-गरदानी करने लगते हैं, वे नेमतें उनसे छीन कर हक़ तआला शानुहू दूसरों की तरफ़ मुंतक़िल कर देते हैं।

(कंज़)

और ये नेमतें माल ही के साथ मख़्सूस नहीं, इज़्ज़त, वजाहत, असर वग़ैरह सब ही चीज़ें इसमें दाख़िल हैं और सब का यही हाल है।

बाज़ (कुछ) अहादीस में आया है कि जब यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई कि अगर तुम रू-गरदानी करोगे तो, अल्लाह जल्ल शानुहू दूसरी क़ौम को पैदा कर देगा, तो बाज़ सहाबा रज़ि० ने पूछा कि हुज़ूर सल्ल०! ये लोग किन में से होंगे, जो हमारी रू-गरदानी की सूरत में हमारे बदल होंगे? तो हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० के मोंढे पर हाथ रखकर इर्शाद फ़रमाया कि यह और इनकी क़ौम! क़सम है उस ज़ात की! जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है कि अगर दीन सुरय्या (जो चांद सितारों के मजमूए का नाम है) पर होता तो फ़ारस के कुछ लोग वहीं से दीन को पकड़ते।

मुतअद्द रिवायात में यह मज़्मून आया है। (दुर्रे मंसूर)

यानी हक़ तआला शानुहू ने उनको दीन की इतनी परवाज़ अता फ़रमायी है कि दीन और इल्म को अगर वह सुरय्या पर होता, वहां से भी हासिल करते।

मिश्कात शरीफ़ में यह रिवायत तिर्मिज़ी शरीफ़ से नक़ल की है। और इसी तरह एक और रिवायत में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल किया है कि हुज़ूर सल्ल॰ के सामने अजमी लोगों का ज़िक्र किया गया तो हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि मुझे उन पर या उनमें से बाज़ पर तुमसे या तुममें से बाज़ से ज़्यादा एतिमाद है। *(मिश्कात)*

और यह ज़ाहिर है कि अजम में बाज़ बाज़ अकाबिर ऐसे ऊँचे दर्जे और कमालात के पैदा हुए हैं कि सहाबी रज़ि॰ होने की फ़ज़ीलत को छोड़कर दूसरे एतिबारात से उनके कमालात बहुत ऊँचे हैं।

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि॰ के बहुत से फ़ज़ाइल हदीस में आये हैं और आने भी चाहिएं कि दीने हक़ की तलाश में उन्होंने बहुत तक्लीफ़ें उठायीं, बहुत से मुल्कों की ख़ाक छानी। उनकी उम्र बहुत ज़्यादा हुई, ढाई सौ साल में तो किसी मोतमद का इख़्तिलाफ़ ही नहीं है। बाज़ ने साढ़े तीन सौ साल बतायी है और बाज़ ने इससे भी ज़्यादा, हत्ताकि बाज़ ने कहा कि उन्होंने हज़रत ईसा अला नबीय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम का ज़माना पाया और हुज़ूर सल्ल॰ के और हज़रत ईसा अलै॰ के ज़माने में छः सौ साल का फ़र्क़ है। उनको पहली किताबों से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नबी-ए-आख़िरूज़्ज़मां के मब्ऊस होने की ख़बर मालूम हुई। यह हुज़ूर सल्ल॰ की तलाश में निकल पड़े और राहिबों से और उस ज़माने के आलिमों से तह्क़ीक़ करते रहे और वे लोग हुज़ूर सल्ल॰ के अंक़रीब पैदा होने की बशारत और हुज़ूर सल्ल॰ की अलामात बताते रहे। यह फ़ारस के शहज़ादों में थे इसी तलाश में मुल्क दर मुल्क तलाश करते फिरते थे। किसी ने उनको क़ैद करके अपना ग़ुलाम बना कर फ़रोख़्त कर दिया। फिर यह इसी तरह बिकते रहे। ख़ुद फ़रमाते हैं, बुख़ारी शरीफ़ में रिवायत है कि मुझे दस आक़ाओं से ज़्यादा ने ख़रीदा और फ़रोख़्त किया। आख़िर में मदीना मुनव्वरा के एक यहूदी ने उनको ख़रीदा। उस वक़्त हुज़ूर सल्ल॰ हिजरत फ़रमा कर मदीना तशरीफ़ ले गये। उनको इसकी ख़बर हुई। यह हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और जो अलामात उनको बताई गई थीं उन अलामात को जांचा और इम्तिहान किया। उसके बाद मुसलमान हुए और अपने यहूदी आक़ा से फ़िद्या देकर (जिसको मुकातब बनना कहते हैं) आज़ाद हुए।

एक हदीस में है हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि हक़ तआला शानुहू

चार आदमियों को महबूब रखते हैं, जिनमें सलमान रज़ि॰ भी हैं। *(इसाबा)*

इसका मतलब यह नहीं कि और किसी से मुहब्बत नहीं, बल्कि यह है कि यह चार महबूबों में हैं।

हज़रत अली रज़ि॰ की एक हदीस में हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि हर नबी के लिए हक़ तआला शानुहू ने सात नुजबा बनाये हैं (यानी मख़्सूस जमाअत बर्गुज़ीदा लोगों की, जो उस नबी के काम की ज़ाहिरी और बातिनी निगरानी करने वाले और मदद करने वाले हों।) लेकिन मेरे लिए हक़ तआला शानुहू ने 14 नुजबा मुक़र्रर फ़रमाये हैं। किसी ने अर्ज़ किया वे कौन हैं? आपने फ़रमाया मैं यानी हज़रत अली रज़ि॰, और मेरे दोनों बेटे, (हज़रत हसन रज़ि॰, हज़रत हुसैन रज़ि॰) और जाफ़र रज़ि॰, और हमज़ा रज़ि॰, अबूबक्र रज़ि॰, उमर रज़ि॰, मुसअ़ब बिन उमैर रज़ि॰, बिलाल रज़ि॰, सलमान रज़ि॰, अम्मार रज़ि॰, अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰, अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि॰, मिक्दाद रज़ि॰। *(मिश्कात)*

हालात की तफ़्सील से यह बात वाज़ेह हो जाती है कि दीन के किसी अहम अम्र में इन हज़रात की ख़ुसूसियात हैं।

बुख़ारी शरीफ़ में है कि जब सूरः जुमा की आयत –

وَاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ

"व आ ख़ री-न मिन् हुम् लम्मा यल् हक़ू बि हिम॰"

नाज़िल हुई तो सहाबा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! ये लोग कौन हैं? हुज़ूर सल्ल॰ ने सुकूत फ़रमाया । सहाबा रज़ि॰ ने मुकर्रर (दोबारा) दर्याफ़्त किया हत्ताकि तीन दफ़ा सवाल किया, तो हुज़ूर सल्ल॰ ने हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि॰ के ऊपर हाथ रखकर फ़रमाया कि अगर ईमान सुरय्या पर होता तो इनमें से बाज़ आदमी वहां से भी ले आते।

एक और हदीस में है कि अगर इल्म सुरय्या पर होता, दूसरी हदीस में है कि अगर दीन सुरय्या पर होता तो फ़ारस के कुछ लोग वहां से भी ले आते। *(मिश्कात)*

अल्लामा सुयूती रह॰, जो ख़ुद मुहक़्क़िक़ीने शाफ़इय्य: में हैं,

फ़रमाते हैं कि यह हदीस हज़रत इमाम अबू-हनीफ़ा के फ़ज़ाइल में पेशीनगोई के तौर पर ऐसी सही चीज़ है जिस पर एतिमाद किया जाता है।

(मुक़द्दमा औजज़)

(١٠) مَآاَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِىٓ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِىْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ اَنْ نَّبْرَاَهَا ط اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝ لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰى مَافَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوْا بِمَآ اٰتٰكُمْ ط وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ۝ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ط وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِىُّ الْحَمِيْدُ ۝ (حديد ع ٣)

10. कोई मुसीबत न दुनिया में आती है और न ख़ास तुम्हारी जानों में मगर वह(सब) एक किताब में (यानी लौहे महफ़ूज़ में) इन जानों के पैदा होने से पहले लिखी हुई है और यह बात (कि वक़ूअ्‌ से इतना पहले लिख देना) अल्लाह तआला के नज़दीक आसान काम है (और यह इसलिए बतला दिया) ताकि जो चीज़ (आफ़ियत, माल या औलाद वग़ैरह) तुम से जाती रहे, उस पर ज़्यादा रंज न करो और जो तुमको मिले, उस पर इतराओ नहीं, (इसलिए कि इतरावे वह जिस को अपने इस्तिह्क़ाक़ से मिले और जो दूसरे के हुक्म से एक चीज़ मिले उस पर क्या इतराना) और अल्लाह तआला किसी इतराने वाले शेख़ीबाज़ को पसंद नहीं करता, (बिल ख़ुसूस) जो लोग ऐसे हैं कि ख़ुद भी बुख़्ल करते हैं और दूसरों को भी बुख़्ल की तालीम करते हैं और जो (अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने से या दीनी कामों से) ऐराज़ करेगा तो अल्लाह तआला (का क्या नुक़्सान करेगा, वह तो) बे-नियाज़ है, हम्द के लायक़ है। *(हदीद 3)*

फ़ायदाः- मुसीबतों पर रंज तो तबई चीज़ है, मक़्सद यह है कि इतना ज़्यादा रंज न हो कि दीन और दुनिया के सब ही कामों से रोक दे और यह भी तबई बात है कि जब किसी बात के मुताल्लिक़ यह पुख़्ता यक़ीन पहले से हो जाए कि फ़लां बात होकर रहेगी, किसी सई और कोशिश से वह मुलतवी नहीं हो सकती तो फिर उस पर रंज व ग़म हल्का हो जाया करता है, बर ख़िलाफ़

इसके कि कोई बात ख़िलाफ़े उम्मीद पेश आए तो उस पर रंज ज़्यादा हुआ करता है, इसलिए इस आयते शरीफ़ा में इस पर मुतनब्बह कर दिया कि मौत व हयात, रंज व ख़ुशी, राहत आफ़त ये सब चीज़ें हमने पहले से तै कर रखी हैं, वे इसी तरह होकर रहेंगी, फिर इसमें इतराने या ग़म से हलाकत के क़रीब हो जाने की क्या बात है?

आयते शरीफ़ा में दो लफ़्ज़ वारिद हुए हैं, "मुख़्ताल फ़ख़ूर" जिसका तर्जुमा इतराने वाले शैख़ीबाज़ का किया है। इतराना अपने आप से होता है यानी दूसरे के बग़ैर भी होता है और शैख़ी दूसरे के सामने और दूसरे के मुक़ाबले में हुआ करती है और बाज़ उलमा ने लिखा है "इख़्तियाल" तो ऐसी चीज़ों पर इतराना होता है जो आदमी के अंदर ज़ाती कमाल हों और फ़ख़्र ऐसी चीज़ों पर होता है जो ख़ारिजी हों जैसा कि माल व जाह वग़ैरह। *(बयानुल क़ुरआन)*

हज़रत क़ज़्अः रह॰ कहते हैं कि मैं ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ को मोटे कपड़े पहने देखा। मैं ने अर्ज़ किया कि मैं ख़ुरासान के बने हुए नरम कपड़े यह लाया हूँ। अगर आप इनको पहन लें तो आपके बदन पर ये कपड़े देखकर मेरी आंखों को ठंडक पहुँचेगी। उन्होंने फ़रमाया, मुझे डर यह है कि ये कपड़े पहन कर कहीं मैं "मुख़्ताल" "फ़ख़ूर" न बन जाऊं।

(दुर्रे मंसूर)

यानी उनके पहनने से कहीं मुझ में उज्ब और तफ़ाख़ुर पैदा न होने लगे।

(١١) هُمُ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا عَلٰى مَنْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوْا وَلِلّٰهِ خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَفْقَهُوْنَ○ (منافقون ع ١)

11. यही (मुनाफ़िक़ीन) वे लोग हैं, जो यह कहते हैं कि ये लोग रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पास जमा हैं, उन पर ख़र्च कुछ न करो, यहां तक कि यह आप ही (ख़र्च न मिलने की वजह से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास से) मुंतशिर हो जाएंगे और (बेवक़ूफ़ ये नहीं जानते कि) अल्लाह तआला ही के लिए हैं सब ख़ज़ाने आसमानों के और ज़मीनों के, लेकिन ये मुनाफ़िक़ (अहमक़ हैं), समझते नहीं हैं। *(मुनाफ़िक़ून-1)*

फ़ायदाः- मुतअद्दद रिवायात में यह मज़्मून वारिद हुआ है कि अब्दुल्लाह बिन उब्बी मुनाफ़िक़ीन का सरदार और उसकी ज़ुर्रियात ने यह कहा कि ये लोग जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जमा हैं, उन की इआनत (मदद) करना छोड़ दी जाए, ये भूख से परेशान होकर ख़ुद ब ख़ुद मुंतशिर हो जाएंगे, उस पर यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई और बिल्कुल हक़ है, रोज़मर्रा का मुशाहदा है सैंकड़ों मर्तबा इसका तजुर्बा हुआ कि जब भी किसी दीनी काम करने वालों के मुताल्लिक़ इनाद (दुश्मनी) और बद-बातिनियत से लोगों ने या किसी ख़ास फ़र्द ने इआनत रोकी अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने लुत्फ़ व करम से दूसरा दरवाज़ा खोल दिया। यह हर शख़्स को यक़ीन के साथ समझ लेना चाहिए कि रोज़ी अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने और सिर्फ़ अपने ही क़ब्ज़े में रखी है, वह किसी के बाप के बंद करने से भी बंद नहीं होती। लेकिन बंद करने वाले, दीन की इआनत से हाथ रोक कर आख़िरत में अल्लाह जल्ल शानुहू के यहां जवाब देने के लिए तैयार हो जाएं। जहां न तो झूठ चल सकता है, कि हमारी यह ग़रज़ थी और वह ग़रज़ थी, न कोई बैरिस्टर या वकील काम दे सकता है, फ़र्ज़ी हीला तलाश करके [illegible]ल्लाह के और दीन के कामों से पहलू तही करने से सिवाए इसके कि अपनी ही आक़िबत ख़राब की जाए और कोई फ़ायदा नहीं, ज़ाती इनाद और दुन्यवी अग़राज़े फ़ासिदा की वजह से किसी दीनी काम में रोड़े अटकाना या किसी दीनी काम करने वाले की इआनत से हाथ रोकना या दूसरों को रोकना अपना ही नुक़्सान करना है, किसी दूसरे का नुक़्सान नहीं।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स किसी मुसलमान की मदद से ऐसे वक़्त पहलू तही करे, जबकि उसकी आबरू गिरायी जा रही हो, उसका एहतिराम तोड़ा जा रहा हो, तो हक़ तआला शानुहू उस शख़्स की मदद करने से ऐसे वक़्त बे-इल्तिफ़ाती फ़रमाते हैं जबकि यह किसी मदद करने वाले की मदद का ख़्वाहिशमंद हो। *(मिश्कात)*

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अमल उम्मत के लिए शाहराह है। हर चीज़ में इसकी कोशिश हर उम्मती का फ़र्ज़ है कि हुज़ूर सल्ल॰ का तरीक़ा क्या था? और इस राह पर चलने की जितनी हो सके कोशिश करना चाहिए। हुज़ूर सल्ल॰ का मामूल था कि दुश्मनों की इआनत से भी दरेग़ न था, सैंकड़ों वाक़िआत अहादीस व तारीख़ की किताबों में इस पर शाहिद हैं, ख़ुद यही अब्दुल्ला बिन उब्बी मुनाफ़िक़ों का सरदार जिस क़द्र तक्लीफ़ें और अज़ीयतें

पहुंचा सकता था उसने कभी दरेग़ नहीं किया। उसी शख़्स का मक़ूला इसी सफ़र का, जिसमें आयते बाला नाज़िल हुई, यह है कि जब हम लोग मदीना वापिस पहुंच जाएंगे तो इज़्ज़तदार लोग यानी हम लोग इन ज़लीलों को (यानी मुसलमानों को) मदीना से निकाल देंगे, लेकिन इन सब हालात के बावजूद उसी सफ़र से वापसी के चंद रोज़ बाद यह बीमार हुआ तो अपने बेटे से जो बहुत बड़े पक्के मुसलमान थे, कहा कि तुम जाकर हुज़ूर सल्ल॰ को मेरे पास बुला लाओ। तुम्हारे बुलाने से वह ज़रूर आ जाएंगे। यह हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और बाप की दरख़्वास्त नक़ल की।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसी वक़्त जूते पहन कर साथ हो लिए। जब हुज़ूर सल्ल॰ को उसने देखा तो रोने लगा। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, ऐ अल्लाह के दुश्मन, क्या घबरा गया? उसने कहा कि मैं ने इस वक़्त आप को तंबीह के वास्ते नहीं बुलाया, बल्कि इस वास्ते बुलाया है कि इस वक़्त मुझ पर रहम करें। यह कलिमा सुनकर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आंखों में आँसू भर आये और इर्शाद फ़रमाया कि क्या चाहते हो? उसने अर्ज़ किया कि मेरी मौत का वक़्त क़रीब है, जब मैं मर जाऊं तो मेरे ग़ुस्ल देने में आप मौजूद हों और अपने मल्बूस में मुझे कफ़न दें और मेरे जनाज़े के साथ क़ब्र तक जाएं और मेरी नमाज़े जनाज़ा पढ़ें।

हुज़ूर सल्ल॰ ने सारी दरख़्वास्तें क़ुबूल फ़रमायीं, जिस पर आयते शरीफ़ा "व ला तुसल्लि अला अ-ह-दिम् मिन्हुम" नाज़िल हुई। *(दुर्रे मंसूर)*

जिसमें हक़ तआला जल्ल शानुहू ने मुनाफ़िक़ीन के जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने की मुमानअत फ़रमायी। यह था हुज़ूर सल्ल॰ का बर्ताव अपने जानी दुश्मनों के साथ, और यह करम था उन कमीनों के साथ जो किसी वक़्त भी सब्ब व शतम और ऐब तराशी[1] में कमी न करते थे। क्या हम लोग भी अपने दुश्मनों के साथ इस क़िस्म का कोई मामला कर सकते हैं कि उस जानी दुश्मन की तक्लीफ़ को देखकर रहमतुल्लिल आलमीन की आंखों में आंसू भर आये और जितनी फ़रमाइशें उसने अपने कुफ़्र के बावजूद कीं, हुज़ूर सल्ल॰ ने अपने करम से सब पूरी कीं, अपना कुर्ता मुबारक उतार कर उसको कफ़न के लिए मरहमत

1. गाली देने बुरे नामों से याद करने और ऐब निकालने में कोई कमी न करते थे।

फ़रमा दिया और बाक़ी सब दर्ख़्वास्तें भी पूरी कीं। गो कुफ़्र की वजह से उसको कारआमद न हो सकीं, बल्कि आइन्दा के लिए हक़ तआला शानुहू की तरफ़ से इस इंतिहाई करम की मुमानअत (मनाही) उतर आयी।

(١٢) اِنَّا بَلَوْنٰهُمْ كَمَا بَلَوْنَآ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ ۚ اِذْ اَقْسَمُوْا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِيْنَ ۙ وَلَا يَسْتَثْنُوْنَ ○ فَطَافَ عَلَيْهَا طَآئِفٌ مِّنْ رَّبِّكَ وَهُمْ نَآئِمُوْنَ ○ فَاَصْبَحَتْ كَالصَّرِيْمِ ۙ فَتَنَادَوْا مُصْبِحِيْنَ ۙ اَنِ اغْدُوْا عَلٰى حَرْثِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰرِمِيْنَ ○ فَانْطَلَقُوْا وَهُمْ يَتَخَافَتُوْنَ ۙ اَنْ لَّا يَدْخُلَنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مِّسْكِيْنٌ ۙ وَّغَدَوْا عَلٰى حَرْدٍ قٰدِرِيْنَ ○ فَلَمَّا رَاَوْهَا قَالُوْآ اِنَّا لَضَآلُّوْنَ ۙ بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ○ قَالَ اَوْسَطُهُمْ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُوْنَ ○ قَالُوْا سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ○ فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَلَاوَمُوْنَ ○ قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ اِنَّا كُنَّا طٰغِيْنَ ○ عَسٰى رَبُّنَآ اَنْ يُّبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَآ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ ○ كَذٰلِكَ الْعَذَابُ ۚ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۙ (قلم ع ١)

12. हमने (इन मक्का वालों को सामाने ऐश देकर) उनकी आज़माइश कर रखी है (कि ये इन नेमतों में क्या अमल करते हैं) जैसा कि इनसे पहले हमने बाग़ वालों की आज़माइश की थी, जब कि उन बाग़ वालों ने आपस में क़सम खायी और अह्द किया कि उस बाग़ का फल ज़रूर सुबह को जाकर तोड़ लेंगे और (उनको ऐसा पुख़्ता यक़ीन था कि) इन्शाअल्लाह भी न कहा, पस उस बाग़ पर आपके रब की तरफ़ से एक अज़ाब फिर गया (जो एक आग थी या लू) और वे लोग सो रहे थे, पस सुबह को वह बाग़ ऐसा रह गया, जैसा कटा हुआ खेत (कि ख़ाली ज़मीन

रह जाती है और बाज़ जगह उसको काट कर उस जगह आग भी लगा दी जाती है) पस सुबह को सवेरे वे बाग़ वाले एक दूसरे को आवाज़ देने लगे कि अगर फल तोड़ना है तो सवेरे चलो, पस चलते हुए आपस में चुपके चुपके बातें करते जा रहे थे कि आज कोई मुहताज तुम तक न आने पाए, वह अपने ख़्याल में इसके रोक लेने पर अपने आपको क़ादिर समझ कर चले (कि सब कुछ ख़ुद ही ले आएंगे) जब वहां पहुँच कर उसको देखा तो कहने लगे कि हम रास्ता भूल गये (कहीं और पहुंच गये, यह तो वह बाग़ नहीं है, लेकिन जब क़राइन से मालूम हुआ कि यह वही जगह है तो कहने लगे), कि हमारी क़िस्मत ही फूट गयी, उनमें जो एक आदमी (किसी क़दर) नेक था (लेकिन अमल में उन का शरीके हाल था) कहने लगा कि मैं ने तुमसे कहा न था (कि ऐसी बद-नीयती न करो, ग़रीबों के देने से बरकत होती है, अब) अल्लाह तआला की पाकी क्यों नहीं बयान करते। तौबा (यानी इस्तिग़फ़ार करो) वे बाग़ वाले कहने लगे, हमारा परवरदिगार पाक है, बेशक हम क़ुसूरवार हैं। फिर एक दूसरे को इल्ज़ाम देने लगे (जैसा कि आम तौर से आदत है कि जब कोई काम बिगड़ जाए तो हर एक दूसरे को क़ुसूरवार बताया करता है।) फिर सब के सब कहने लगे कि बेशक, हम सब ही हद से तजावुज़ करने (बढ़ने) वाले थे, (किसी एक पर इल्ज़ाम नहीं, सब की यही सलाह थी, सब मिल कर तौबा करो, उसकी बरकत से) शायद हमारा परवरदिगार हमको इससे अच्छा बाग़ दे दे, अब हम तौबा करते हैं (इसके बाद अल्लाह जल्ल शानुहू तंबीह के तौर पर फ़रमाते हैं कि) इसी तरह (दुनिया का) अज़ाब हुआ करता है (कि हम बद-नीयती से चीज़ ही को फ़ना कर देते हैं) और आख़िरत का अज़ाब इससे भी बढ़कर है। क्या अच्छा होता कि ये लोग इस बात को जान लेते (कि ग़रीबों से बुख़्ल का नतीजा अच्छा नहीं।)

फ़ायदाः- यह बड़ी इब्रत का क़िस्सा है जो इन आयात में ज़िक्र फ़रमाया है। जो लोग ग़ुरबा, मसाकीन, अह्ले ज़रूरत को न देने के अह्द व पैमान करते हैं, क़समें खा खाकर वायदे करते हैं कि इन ज़रूरत मंदों को एक पैसा भी नहीं दिया जाएगा, एक वक़्त की रोटी भी न दी जाएगी, ये नालायक़ हरगिज़ इआनत के मुस्तहिक़ नहीं, इनको देना बेकार है, वे अपने सारे माल से यों बग़र्क़

वक़्त हाथ धो लेते हैं और जो नेक दिल इस तर्ज़ को पसंद नहीं करते, लेकिन अमलन लिहाज़ मुलाहज़ा में उनके शरीके हाल हो जाते हैं वे भी अज़ाब की बला से निजात नहीं पाते।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि इन आयात में जो वाक़िआ गुज़रा है, वह हब्शा के रहने वाले आदमियों का है। उनके बाप का एक बहुत बड़ा बाग़ था, वह उसमें से मांगने वालों को भी दिया करता था। जब उसका इंतिक़ाल हो गया, तो उसकी औलाद कहने लगी कि अब्बा जान तो बेवक़ूफ़ थे, सब कुछ इन लोगों पर बांट देते थे, फिर क़समें खाकर कहने लगे कि हम सुबह ही सारा बाग़ काट लाएंगे और किसी फ़क़ीर को उसमें से कुछ नहीं देंगे।

हज़रत क़तादा रज़ि॰ कहते हैं कि उस बाग़ के मालिक बड़े मियां का दस्तूर यह था कि उसकी पैदावार में से अपना एक साल का ख़र्च रखकर बाक़ी सब का सब अल्लाह के रास्ते में ख़र्च कर देते थे। उनकी औलाद उनको इस तर्ज़ से रोकती रहती थी, मगर वह मानते न थे। जब उनका इंतिक़ाल हुआ तो उनकी औलाद ने यह कोशिश की जो ऊपर ज़िक्र की गयी कि सारा का सारा रोक लें और किसी ग़रीब को कुछ न दें।

सईद बिन जुबैर रह॰ कहते हैं कि यह बाग़ यमन में था उस जगह का नाम ज़र्वान था जो (यमन के मशहूर शहर) सुनआ से छः मील था।

इब्ने जुरैज रह॰ कहते हैं कि वह अज़ाब जो उस बाग़ पर मुसल्लत हुआ, जहन्नम की घाटी से एक आग निकली, जो उस पर फिर गयी। मुजाहिद रह॰ कहते हैं कि यह बाग़ अंगूर का था।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद नक़ल करते हैं कि अपने आपको गुनाहों से बचाते रहा करो। आदमी बाज़ गुनाह ऐसे करता है कि उसकी नहूसत से इल्म का एक हिस्सा भूल जाता है। (यानी हाफ़िज़ा ख़राब हो जाता है और पढ़ा हुआ भूल जाता है) और बाज़ गुनाह ऐसे होते हैं जिनकी वजह से तहज्जुद को आंख नहीं खुलती और बाज़ गुनाह ऐसे होते हैं, जिनकी वजह से उसकी आमदनी जो बिल्कुल उसके लिए आने को तैयार होती है, जाती रहती है। उसके बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह आयते शरीफ़ा तिलावत फ़रमायी:-

"फ़ ता फ़ अलैहा ताइफ़ुम मिर्रब्बि-क॰" (आयत)

और फ़रमाया कि ये लोग गुनाह की वजह से अपने बाग़ की पैदावार से महरूम हो गये। (दुर्रे मंसूर)

हुज़ूर हक़ सुब्हा नहू व तक़द्दुस का क़ुरआन पाक में दूसरी जगह इर्शाद है-

وَمَا أَصَابَكُمْ مِنْ مُصِيبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ أَيْدِيكُمْ وَيَعْفُوا عَنْ كَثِيرٍ ٥ (شوری ع٤)

"व मा अ सा-ब कुम मिम मुसीब-तिन फ़-बिमा क-स-बत ऐदीकुम व यअ़्फ़ू अन कसीर॰" (सूरः शूरा, रूकूअ 4)

तर्जुमा:- जो मुसीबत तुमको पहुँचती है, वह तुम्हारे ही आमाल की बदौलत पहुँचती है और (हर गुनाह पर नहीं पहुँचती बल्कि) बहुत से गुनाह तो हक़ तआला शानुहू माफ़ फ़रमा देते हैं।

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू फ़रमाते हैं कि मुझसे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि इस आयत की तफ़्सीर तुम्हें बताऊं? ऐ अली, जो कुछ भी तुम्हें पहुँचे, मर्ज़ हो या किसी क़िस्म का अज़ाब या दुनिया की और कोई मुसीबत हो, वह अपने ही हाथों की कमाई है इस मज़्मून को बंदा अपने रिसाला "एतिदाल"[1] में तफ़्सील से लिख चुका है, वहां देखा जाए।

(١٣) وَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِشِمَالِهِ فَيَقُولُ يَا لَيْتَنِي لَمْ أُوتَ كِتَابِيَهْ ٥ وَلَمْ أَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ٥ يَا لَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ٥ مَا أَغْنَى عَنِّي مَالِيَهْ ٥ هَلَكَ عَنِّي سُلْطَانِيَهْ ٥ خُذُوهُ فَغُلُّوهُ ٥ ثُمَّ الْجَحِيمَ صَلُّوهُ ٥ ثُمَّ فِي سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُونَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوهُ ٥ إِنَّهُ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ الْعَظِيمِ ٥ وَلَا يَحُضُّ عَلَى طَعَامِ الْمِسْكِينِ ٥ فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هَاهُنَا حَمِيمٌ ٥ وَلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غِسْلِينٍ ٥ لَا يَأْكُلُهُ إِلَّا الْخَاطِئُونَ ٥ (الحاقة ع١)

13. और जिस शख़्स का नामा-ए-आमाल उसके बाएं हाथ में दिया जाएगा, वह (निहायत ही हसरत से) कहेगा, क्या अच्छा होता कि

1. जो 'इस्लामी सियासत' के नाम से मशहूर है।

मुझको मेरा नामा-ए-आमाल ही न मिलता और मुझको ख़बर ही न होती कि मेरा हिसाब क्या है? क्या अच्छा होता कि मौत ही सब ख़त्म कर देती, (क़ियामत ही न आती जो हिसाब किताब होता) मेरा माल भी मेरे कुछ काम न आया, मेरी जाह (आबरू) भी जाती रही। (उसके लिए फ़रिश्तों को हुक्म होगा) इसको पकड़ो और इसको तौक़ पहना दो, फिर जहन्नम में उस को दाख़िल कर दो, फिर एक सत्तर गज़ लम्बी ज़ंजीर में उसको जकड़ दो, इसलिए कि यह शख़्स अल्लाह तआला पर ईमान न रखता था, (और ख़ुद तो क्या खिलाता) दूसरे आदमियों को भी ग़रीब के खिलाने की तर्ग़ीब न देता था। पस न तो आज उसका कोई यहां दोस्त है और न उसके लिए कोई चीज़ खाने को है सिवाए ग़िस्लीन के, जिसको बजुज़ बड़े गुनाहगारों के और कोई न खायेगा।

फ़ायदाः- ग़िस्लीन का मशहूर तर्जुमा धोवन का है यानी ज़ख़्मों वग़ैरह के धोने से जो पानी जमा हो जाए वह ग़िस्लीन कहलाता है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ से नक़ल किया गया कि ज़ख़्मों के अंदर से जो लहू पीप वग़ैरह निकलती है, वह ग़िस्लीन है।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि ग़िस्लीन का एक डोल अगर दुनिया में डाल दिया जाए तो उसकी बदबू से सारी दुनिया सड़ जाए।

नौफ़ शामी रह॰ से नक़ल किया गया कि वह ज़ंजीर जो सत्तर गज़ लम्बी है, उसका हर गज़ सत्तर बाअ् (हाथ) है और हर बाअ इतना लंबा है कि मक्का मुकर्रमा से कूफ़ा तक पहुँचे।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ से और दूसरे मुफ़स्सिरीन से नक़ल किया गया यह ज़ंजीर पाख़ाने की जगहों को दाख़िल करके नाक में को निकाली जाएगी और फिर उस पर लपेट दी जायेगी, जिससे वह बिल्कुल जकड़ा जाएगा।

(दुर्रे मंसूर)

इस आयते शरीफ़ा में मिस्कीन को खाना खिलाने की तर्ग़ीब न देने पर भी इताब है, इसलिए आपस में अपने अज़ीज़ों को, अपने अहबाब को, मिलने वालों को, ग़ुरबा-परवरी पर, मसाकीन को खिलाने पिलाने पर ख़ास तौर से तर्ग़ीब देते रहना चाहिए कि दूसरों को तर्ग़ीब देने से अपने अंदर से भी बुख़्ल का माद्दा कम होगा।

(١٤) بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۙ۝ الَّذِىْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ۙ۝ يَحْسَبُ اَنَّ مَالَهٗۤ اَخْلَدَهٗ ۚ۝ كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِى الْحُطَمَةِ ۖ۝ وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ ۝ نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۙ۝ الَّتِىْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ ۝ اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ۙ۝ فِىْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ۝ (الهمزة)

14. बड़ी ख़राबी है ऐसे शख़्स के लिए जो पसे पुश्त ऐब निकालने वाला हो, मुंह दर मुंह ताना देने वाला हो, जो माल जमा करके रखता है और (ग़ायत मुहब्बत से) उसको बार बार गिनता है, वह यह गुमान करता है कि उसका यह माल उसके पास हमेशा रहेगा। हरगिज़ नहीं। (यह माल हमेशा नहीं रहेगा) ख़ुदा की क़सम, यह शख़्स ऐसी आग में डाल दिया जाएगा कि उसमें जो चीज़ पड़ जाएगी वह आग उसको तोड़ फोड़ कर डाल दे।

आपको ख़बर भी है, वह कैसी तोड़ देने वाली आग है वह अल्लाह तआला की ऐसी आग है जो दिलों तक पहुँच जायेगी (यानी दुनिया की आग तो जहां बदन में लगी, आदमी मर गया और वहां चूंकि मौत नहीं, इसलिए बदन में लगते ही दिल तक पहुँच जायेगी। और दिल की ज़रा सी ठेस भी आदमी को बहुत महसूस होती है) और वह आग उन लोगों पर बंद कर दी जाएगी। इस तरह पर कि वे लोग लम्बे लम्बे स्तूनों में घिरे हुए होंगे।

फ़ायदा:- "हु-म ज़ः लु-म ज़ः" की तफ़्सीर में मुख़्तलिफ़ अक़्वाल उलमा के हैं। एक तफ़्सीर यह भी है जो ऊपर नक़ल की गयी। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ और मुजाहिद रह॰ से "हु-म ज़ः" की तफ़्सीर "तान देने वाला" और "लु-म ज़ः" की तफ़्सीर ग़ीबत करने वाला नक़ल की गयी है।

इब्ने जुरैज रह॰ कहते हैं कि "हु-म ज़ः" इशारे से होता है, आंख के, मुंह के, हाथ के, जिसके भी इशारे से हो और "लु-म ज़ः" ज़बान से होता है।

एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी मेराज का हाल बयान फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया कि मैं ने मर्दों की एक जमाअत देखी, जिनके बदन क़ैंचियों से कतरे जा रहे थे। मैं ने जिब्रील अलै॰ से दर्याफ़्त किया कि ये कौन लोग हैं? उन्होंने फ़रमाया कि ये वे लोग हैं जो ज़ीनत इख़्तियार करते थे। (यानी हरामकारी के लिए बन संवर कर निकलते थे।) फिर मैं ने एक

कुंवा देखा, जिसमें निहायत सख़्त बदबू आ रही थी और उसमें से चिल्लाने की आवाज़ें आ रहीं थीं, मैं ने जिब्रील अलै॰ से पूछा कि ये कौन लोग हैं? उन्होंने बताया कि ये वे औरतें हैं जो (हरामकारी के लिए) बनती संवरती थीं और नाजायज़ काम करती थीं। फिर मैं ने कुछ मर्द और औरतें मुअल्लक़ देखें (लटके हुए) जो पिस्तानों के ज़रिए से लटक रहे थे। मैं ने पूछा कि ये कौन लोग हैं? तो जिब्रील अलै॰ ने बताया कि ये ताना देने वाले, चुगल ख़ोरी करने वाले हैं। (दुर्रे मंसूर)

अल्लाह जल्ल शानुहू अपने फ़ज़्ल से इन चीज़ों से महफ़ूज़ रखे, बड़ी सख़्त वईदें हैं।

इस सूरः शरीफ़ा में बुख़्ल और हिर्स की ख़ास तौर से मज़म्मत इर्शाद फ़रमायी है कि बुख़्ल की वजह से माल जमा करके रखता है और हिर्स की वजह से बार बार गिनता है कि कहीं कम न हो जाए और इतनी मुहब्बत उससे है कि उसके बार बार गिनने में भी बड़ा मज़ा आता है और यह बुरी आदत तकब्बुर और तअल्ली का सबब बनती है, जिसकी वजह से दूसरों की ऐबजोई और उन पर तान व तश्नीअ् पैदा होता है, इसी वजह से इस सूरः के शुरू में इन ऐबों पर तंबीह फ़रमाने के बाद इस बुरी ख़स्लत की मज़म्मत ज़िक्र की है और हर शख़्स इस ख़ब्त में मुब्तला है कि माल की अफ़्ज़ाइश (ज़्यादती) उसको आफ़ात और हवादिस से बचा सकती है, गोया मालदार को मौत आती ही नहीं। इसलिए इस पर तंबीह फ़रमायी गयी है। वाक़िआत भी कसरत से इसकी ताईद करते हैं कि जब कोई आफ़त और मुसीबत मुसल्लत होती है, यह माल व मताअ् सब रखा रह जाता है, बल्कि माल की कसरत बसा औक़ात ख़ुद आफ़ात को खींचती है, कोई ज़हर देने की फ़िक्र में होता है, कोई क़त्ल करने की, और लूट मार, चोरी डाका, सैकड़ों आफ़ात इस माल की बदौलत आदमी पर मुसल्लत रहती हैं और जब माल ज़्यादा हो जाता है, फिर तो अज़ीज़ व अक़ारिब, बीवी, बेटा सब ही दिल से इसकी ख़्वाहिश करने लगते हैं कि बुड्ढा कहीं मरे तो यह हमारे हाथ आये।

(۱۵) بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ اَرَءَيْتَ الَّذِىْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ○ فَذٰلِكَ الَّذِىْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ ○ وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ○ فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ○ الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ○ الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ○ وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ○ (ماعون)

15. क्या आपने उस शख़्स को देखा जो क़ियामत के दिन को झुठलाता है, (पस उस शख़्स का हाल यह है कि) यतीम को धक्के देता है और ग़रीब को (ख़ुद तो क्या देता, दूसरों को भी उनके) खाना खिलाने की तर्ग़ीब नहीं देता। पस हलाकत है ऐसे नमाज़ियों के लिए जो अपनी नमाज़ों को भुला बैठते हैं। (यानी नहीं पढ़ते और अगर कभी नमाज़ पढ़ते भी हैं तो) वे लोग दिखावा करते हैं और "माऊन" को रोकते हैं। (बिल्कुल देते ही नहीं।)

फ़ायदा:- हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि यतीम को धक्के देना यह है कि उसका हक़ रोकते हैं।

क़तादा रह॰ कहते हैं कि धक्के देने से उस पर ज़ुल्म करना मुराद है और यह चीज़ क़ियामत के दिन को ग़लत समझने से पैदा होती है जिसको आख़िरत के दिन का यक़ीन होगा वहां की जज़ा और सज़ा का पूरा यक़ीन होगा वह किसी पर ज़ुल्म नहीं करेगा और अपने माल को जमा करके नहीं रखेगा। बल्कि ख़ूब ख़र्च करेगा, इसलिए कि जिसको इसका कामिल यक़ीन हो जाए कि आज अगर मैं इस तिजारत में दस रूपये लगा दूँ तो कल को ज़रूर मुझे एक हज़ार जायज़ तरीक़े से मिलेंगे, वह कभी भी इसमें ताम्मुल न करेगा। और जिन नमाज़ियों का इसमें ज़िक्र है, उनके मुताल्लिक़ हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि वे मुनाफ़िक़ लोग मुराद हैं जो लोगों के सामने तो दिखलावे के वास्ते नमाज़ पढ़ते हैं और जहां कहीं अकेले हों, उसको छोड़ दें।

हज़रत सअद रज़ि॰ वग़ैरह मुतअद्दद हज़रात से नक़ल किया गया कि नमाज़ को छोड़ने से मुराद ताख़ीर से पढ़ना है कि बेवक़्त पढ़ते हैं।

माऊन की तफ़्सीर में उलमा के कई क़ौल हैं। इसकी तफ़्सीर कुछ उलमा से ज़कात नक़ल की गयी है, लेकिन अक्सर उलमा से जो तफ़्सीरें मंक़ूल हैं, उनके मुवाफ़िक़ मामूली रोज़मर्रा के बरतने की चीज़ें हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हम हुज़ूर सल्ल॰ के ज़माने में माऊन का मिस्दाक़ ये चीज़ें क़रार देते थे, कि डोल मांगा दे देना, हांडी, कुल्हाड़ी, तराज़ू और इस क़िस्म की जो चीज़ें एक दूसरे को मांगी दे दी जाती हैं कि अपना काम पूरा करके वापस कर दें

हज़रत अबू-हुरैरह रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से

नक़ल करते हैं कि माऊन से मुराद वे चीज़ें हैं, जिनसे लोग आपस में एक दूसरे की मदद कर देते हैं जैसाकि कुल्हाड़ी, देगची, डोल वग़ैरह।

और भी मुतअद्दद रिवायात में यह मज़्मून कसरत से ज़िक्र किया गया।

इक्रमा रज़ि॰ से किसी ने "माऊन" का मतलब पूछा तो उन्होंने फ़रमाया कि इसकी जड़ तो ज़कात है और अद्ना दर्जा, छलनी, डोल, सुई का देना है। *(दुर्रे मंसूर)*

इस सूरः शरीफ़ा में कई चीज़ों पर तंबीह की गयी है। मिनजुम्ला उनके यतीमों के बारे में ख़ास तंबीह है कि हलाकत के अस्बाब में से यतीम को धक्के देकर निकाल देना भी है। बहुत से लोग यतीमों के वाली वारिस बन कर उनका माल अपने तसर्रुफ़ में लाते हैं और जब वह या उसकी तरफ़ से कोई मुतालबा करे तो उसको डांटते हैं, उन पर हलाकत और अज़ाबे शदीद में तो कोई शुबह ही नहीं है।

यही नौअ् इस सूरः शरीफ़ा का शाने नुज़ूल बताया जाता है।

क़ुरआन पाक में बहुत कसरत से यतीमों के बारे में तंबीहात और आयात नाज़िल हुई हैं। चंद आयात की तरफ़ इशारा करता हूँ, जिससे अंदाज़ा होगा कि अल्लाह जल्ल शानुहू व अम्म नवालुहू ने किस एहतिमाम से इस पर तंबीह बार बार फ़रमायी है।

(١) وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّذِی الْقُرْبٰی وَالْیَتٰمٰی وَالْمَسٰکِیْنِ (بقرہ ع ١٠)

1. "व बिल् वालि दै नि इह्सानंव् व ज़िल क़ुर्बा वल यतामा वल् मसा कीन॰" *(सूरः बक़रः रूकूअ् 10)*

(٢) وَاٰتَی الْمَالَ عَلٰی حُبِّهٖ ذَوِی الْقُرْبٰی وَالْیَتٰمٰی وَالْمَسٰکِیْنَ (بقرہ ع ٢٢)

2. "व आतल् मा-ल अला हुब्बि-ही ज़विल क़ुर्बा वल यतामा वल मसा कीन॰" *(सूरः बक़रः रूकूअ् 22)*

(٣) قُلْ مَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَیْرٍ فَلِلْوَالِدَیْنِ وَالْاَقْرَبِیْنَ وَالْیَتٰمٰی (بقرہ ع ٢٦)

3. "क़ुल मा अन्फ़क़्तुम मिन ख़ैरिन फ़लिल् वालिदैनि वल अक़्र-बी-न वल यतामा॰" *(सूरः बक़रः रूकूअ् 26)*

(٤) وَيَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الْيَتٰمٰى ط قُلْ اِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ط (بقرہ ع ۲۷)

4. "व यस् अलू-न-क अनिल यतामा क़ुल इस्लाहु ल्लहुम ख़ैर॰" (सूरः बक़रः रूकूअ़ 27)

(٥) وَاٰتُوا الْيَتٰمٰى اَمْوَالَهُمْ (نسآء ع ۱)

5. "व आतुल् यतामा अम्वा-ल हुम॰" (सूरः निसा, रूकूअ़ 1)

(٦) وَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تُقْسِطُوْا فِى الْيَتٰمٰى (نسآء ع ۱)

6. "व इन ख़िफ़्तुम अल्ला तुक़्सितू फ़िल यतामा॰" (सूरः निसा, रूकूअ 1)

(٧) وَابْتَلُوا الْيَتٰمٰى (اِلٰى قَوْلِهٖ) وَلَا تَاْكُلُوْهَآ اِسْرَافًا وَّبِدَارًا اَنْ يَّكْبَرُوْا (نسآء ع ۱)

7. "वब्त-लुल यतामा (इला क़ौलिही) व ला ताकुलूहा इस्राफ़ंव् व बिदारन् अंय्यक्ब रू॰" (सूरः निसा, रूकूअ़ 1)

(٨) وَاِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ اُولُوا الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى (نسآء ع ۱)

8. "व इ ज़ा ह-ज़-रल् क़ि स्म-त उलुल् क़ुर्बा वल् यतामा॰" (सूरः निसा, रूकूअ़ 1)

(٩) اِنَّ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا (نسآء ع ۱)

9. "इन्नल्लज़ी-न यअ्कुलू न अम्वालल् यतामा ज़ुल्मा॰" (सूरः निसा, रूकूअ 1)

(١٠) وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّبِذِى الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى (نسآء ع ٦)

10. "व बिल वालिदैनि एह्सानंव् व बिज़िल् क़ुर्बा वल यतामा॰" (सूरः निसा, रूकूअ़ 6)

(١١) وَمَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فِى الْكِتٰبِ فِىْ يَتٰمَى النِّسَآءِ (نسآء ع ١٩)

11. "व मा युत्ला अलैकुमि फ़िल् किताबि फ़ी यतामन्निसा-इ॰" (सूरः निसा, रूकूअ़ 9)

(١٢) وَاَنْ تَقُوْمُوْا لِلْيَتٰمٰى بِالْقِسْطِ ط (نسآء ع ١٩)

12. "व अन तक़ूमू लिल् यतामा बिल् क़ि स्त॰" (सूरः निसा, रूकूअ़ 19)

(١٣) وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ (انعام ع ١٩، ١٤ بنى اسرآئيل ع ٤)

13, 14. "व ला तक़र बू मालल् यती-मि इल्ला बिल्लती हि-य

अह्स-नु॰" (सूरः अन्आम रूकूअ् 19, बनी इस्राईल रूकूअ् 4)

(۱۵) مَآاَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ (حشر ع ۱)

15. "मा अफ़ा अल्लाहु अला रसूलिही॰" (हश्र, रूकूअ् 1)

(۱۶) وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا (دھر ع ۱)

16. "वयुत्अिमूनत्तआ-म अला हुब्बिही मिस्कीनंव् व यतीमा॰"
(दह्र, रूकूअ् 1)

(۱۷) كَلَّا بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ ۙ (فجر ع ۱)

17. "कल्ला बल् ला तुक्रिमूनल् यतीम॰" (फ़ज्र, रूकूअ् 1)

(۱۸) اَوْ اِطْعٰمٌ فِىْ يَوْمٍ ذِىْ مَسْغَبَةٍ ۙ يَّتِيْمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۙ (بلد ع ۱)

18. "औ इत् आमुन् फ़ी यौमिन् ज़ी मस्-ग़-ब तिन् यतीमन् ज़ा मक़्रब:॰" (बलद, रूकूअ् 1)

(۱۹) اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا (والضحىٰ)

19. "अ लम् यजिद्-क यतीमन्॰" (वज़्ज़ुहा)

(۲۰) فَاَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا تَقْهَرْ (والضحىٰ)

20. "फ़-अम्मल् यती-म फ़ला तक़्हर्॰" (वज़्ज़ुहा)

ये बीस आयात नमूने के तौर पर ज़िक्र की गयी हैं। आयात की सूरः और रूकूअ भी लिख दिए गये हैं। अगर किसी तर्जुमे वाले क़ुरआन शरीफ़ में इन आयात को निकाल कर तर्जुमा देखा जाए तो मालूम होगा कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने बार बार मुख़्तलिफ़ उन्वानों से इस पर तंबीह फ़रमायी है कि यतीमों के बारे में उनकी, इस्लाह, उनकी ख़ैरख़्वाही, उनके माल में एहतियात, उनके साथ नर्मी का बर्ताव, उनकी सलाह और फ़लाह की कोशिश हत्ताकि अगर किसी यतीम लड़की से निकाह करे तो उसके महर को कम न करने पर भी तंबीह की गयी कि कस्मपुर्सी की वजह से उसके महर में भी कमी न की जाए।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद कई हदीसों में वारिद हुआ है- मैं और वह शख़्स जो किसी यतीम की किफ़ालत करता हो,

जन्नत में ऐसे क़रीब होंगे, जैसे दो उंगलियां, इस इर्शाद पर हुज़ूर सल्ल॰ ने अपनी दो उंगलियों, शहादत की उंगली और बीच की उंगली मिलाकर उनकी तरफ़ इशारा फ़रमाया कि जैसे ये दो क़रीब हैं, मिली हुई हैं ऐसे ही मैं और वह शख़्स जन्नत में क़रीब होंगे।

और बाज़ उलमा ने फ़रमाया है कि बीच की उंगली शहादत की उंगली से थोड़ी सी आगे निकली हुई होती है, तो इस सूरत में मतलब यह होगा कि मेरा दर्जा नुबुव्वत की वजह से थोड़ा सा आगे बढ़ा हुआ होगा और उसके क़रीब ही उस शख़्स का दर्जा होगा।

एक हदीस में इर्शाद है कि जो शख़्स किसी यतीम के सर पर (शफ़्क़त से) हाथ फेरे और सिर्फ़ अल्लाह जल्ल शानुहू की रिज़ा के वास्ते ऐसा करे तो उसका हाथ यतीम के सिर के जितने बालों पर फिरेगा, हर एक बाल के बदले में उसको नेकियां मिलेंगी और जो शख़्स किसी यतीम लड़के या लड़की पर एहसान करे तो मैं और वह शख़्स जन्नत में इस तरह होंगे। वही दो उंगलियों से इशारा फ़रमाया, जैसा ऊपर गुज़रा। और भी कई हदीसों में मुख़्तलिफ़ उन्वान से यही मज़्मून वारिद है। *(दुर्रे मंसूर)*

एक हदीस में है कि क़ियामत के दिन कुछ लोग क़ब्रों से ऐसे उठेंगे कि उनके मुंह में आग भड़क रही होगी। किसी ने पूछा, या रसूलल्लाह, ये कौन लोग होंगे? तो हुज़ूर सल्ल॰ ने आयाते गुज़िश्ता में से नवीं आयत तिलावत फ़रमायी:–

إِنَّ الَّذِينَ يَأْكُلُونَ أَمْوَالَ الْيَتَامَىٰ

"इन्नल्लज़ी–न यअ्‌ कुलू–न अम्वालल्‌ यतामा" जिसका तर्जुमा यह है कि जो लोग यतीमों का माल ज़ुल्म से खाते हैं, वे अपने पेट में आग भरते हैं। शबे मेराज में हुज़ूर सल्ल॰ ने एक क़ौम को देखा कि उनके होंट ऊँट के होंटों की तरह से बड़े बड़े हैं और फ़रिश्ते उन पर मुसल्लत हैं कि वे उनके होंटों को चीर कर उनमें आग के बड़े बड़े पत्थर ठूंस रहे हैं कि वह आग मुँह से दाख़िल होकर पाख़ाना की जगह से निकलती है और वे लोग निहायत आह व ज़ारी से चिल्ला रहे हैं। हुज़ूर सल्ल॰ ने हज़रत जिब्रील अलै॰ से दर्याफ़्त किया कि ये कौन लोग हैं? तो उन्होंने फ़रमाया कि ये वे लोग हैं, जो यतीमों का माल ज़ुल्म से खाते थे, इनको आग खिलायी जा रही है।

एक हदीस में है कि चार क़िस्म के आदमी ऐसे हैं, जिनकी अल्लाह जल्ल शानुहू न तो जन्नत में दाख़िल फ़रमायेंगे, न जन्नत की नेमतें उनको चखना नसीब होंगी।

1. एक वह शख़्स जो शराब पीता हो,

2. दूसरे सूदख़ोर

3. तीसरे वह शख़्स जो नाहक़ यतीम का माल खाये,

4. चौथे वह शख़्स जो वालिदैन की नाफ़रमानी करे। *(दुर्रे मंसूर)*

हज़रते अक़्दस शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब रह० ने तफ़्सीर में तहरीर फ़रमाया है कि यतीमों पर एहसान दो क़िस्म का है:-

1. एक तो वह जो वारिसों पर वाजिब है, मसलन उसके माल की हिफ़ाज़त, कि उसमें ज़राअत या तिजारत वग़ैरह से तरक़्क़ी हो, ताकि उसका नफ़्क़ा और ज़रूरियात पूरी हो सकें। और उसकी ख़ुराक पोशाक वग़ैरह की ख़बरगीरी नीज़ उसके लिखने पढ़ने और तालीमे आदाब वग़ैरह की ख़बरगीरी।

2. दूसरी क़िस्म वह है जो आम आदमियों पर वाजिब है और वह उसकी ईज़ा को तर्क करना है और नर्मी और मेहरबानी से उससे पेश आना है, महफ़िलों और मजालिस में अपने पास बिठाना, उसके सर पर हाथ फेरना, अपनी औलाद की तरह उसको गोद में लेना, उससे मुहब्बत ज़ाहिर करना, इसलिए कि जब वह यतीम हो गया और उसका बाप न रहा, तो हक़ तआला शानुहू ने सब बंदों को हुक्म किया कि उसके साथ बाप जैसा बर्ताव करें और उसको अपनी औलाद की तरह समझें, ताकि बाप के मरने की वजह से जो हुक्मी कमज़ोरी व आजज़ी उसको लाहिक़ हो गयी, इस क़ुव्वते हक़ीक़ी के साथ कि हज़ारों आदमी उसके बाप की जगह हो जाएं, दूर हो जाए। पस यतीम भी क़राबते शर्ई रखता है जैसा कि दूसरे अक़ारिब क़राबते उर्फ़ी रखते हैं। *(सूरः बक़रः)*

दूसरा मज़्मून जो आयते बाला में ख़ुसूसी मज़्कूर है, वह मिस्कीन के खाने पर तर्ग़ीब न देने पर तंबीह है और गोया बुख़्ल के इंतिहाई दर्जे की तरफ़ इशारा है कि ख़ुद तो वह अपना माल क्या ख़र्च करता, वह यह भी गवारा नहीं करता कि दूसरा भी कोई फ़क़ीरों पर ख़र्च करे। क़ुरआन पाक में मिस्कीनों के खाना खिलाने पर बहुत सी आयात में तर्ग़ीब दी गयी, जिनमें से कुछ पहले मज़्कूर हो चुकी हैं। सूरः फ़ज्र में है-

كَلَّا بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ ۙ وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۙ

"कल्ला बल् ला तुक्रिमूनल् यती-म व ला तहाज़्ज़ू-न अला तआमिल् मिस्की-नि॰"

इसमें भी तंबीह की गयी कि तुम लोग न तो यतीमों का इक्राम करते हो, न मिस्कीनों को खाना खिलाने की तर्ग़ीब देते हो।

तीसरी चीज़ जो आयते बाला में ज़िक्र की गयी वह माऊन का रोकना है, जिसकी तफ़्सीर पहले गुज़र चुकी है।

हज़रते अक्दस शाह अब्दुल अज़ीज़ रह॰ ने तहरीर फ़रमाया कि इस सूरः का नाम "माऊन" इस वजह से है कि यह एहसान का अदना दर्जा है और जबकि एहसान न करने का अदना दर्जा भी मुजिबे हिजाब व इताब है तो आला दर्जा यानी अल्लाह के हक़ और बन्दों के हक़ के ज़ाया करने से ब-तरीक़े औला डरना चाहिए। यहां तक इस मज़्मून के मुताल्लिक़ चंद आयात ज़िक्र की गयी हैं।

आगे चंद अहादीस इस मज़्मून के मुताल्लिक़ लिखी जाती हैं, जिन से मालूम होगा कि बुख़्ल और माल को जमा करके रखना किस क़दर सख़्त चीज़ है।

अहादीस मज़म्मते बुख़्ल

(١) عن ابی سعیدؓ قال قال رسول اللّٰه صلی اللّٰه علیه وسلم خصلتان لا تجتمعان فی مؤمن البخل وسوٓء الخلق رواه الترمذی کذافی المشکوٰۃ

1. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि दो ख़स्लतें ऐसी हैं कि वह मोमिन में जमा नहीं हो सकतीं, एक तो बुख़्ल दूसरे बद-ख़ुल्क़ी।

फ़ायदाः- यानी कोई शख़्स मोमिन होकर बख़ील भी हो और बद-ख़ुल्क़ भी, यह मोमिन की शान हरगिज़ नहीं। ऐसे शख़्स को अपने ईमान की बड़ी फ़िक्र चाहिए। ख़ुदा न-ख़्वास्ता ऐसा न हो कि उसी से हाथ धो बैठे कि जैसे हर ख़ूबी दूसरी ख़ूबी को खींचती है, ऐसे ही हर ऐब दूसरे ऐब को खींचता है।

दूसरी हदीस में इससे भी बढ़कर हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि शुह्ह (यानी बुख़्ल की आला क़िस्म) ईमान के साथ जमा नहीं हो सकती। *(मिश्कात)*

कि इन दोनों चीज़ों का इज्तिमाअ् गोया ज़िद्दैन का इज्तिमाअ् है। जैसा कि आग और पानी का जमा होना कि जौन सी चीज़ ग़ालिब होगी वह दूसरे को फ़ना कर देगी। अगर पानी ग़ालिब है, आग को बुझा देगा, आग ग़ालिब है, तो पानी को जला देगी। ऐसे ही ये दोनों चीज़ें एक दूसरे के मनाफ़ी हैं। जौन सी चीज़ ग़ालिब होगी, रफ़्ता रफ़्ता दूसरी को फ़ना कर देगी।

एक हदीस में आया है कि कोई वली ऐसा नहीं हुआ जिसमें अल्लाह जल्ल शानुहू ने दो आदतें न पैदा की हों, एक सख़ावत, दूसरी ख़ुश ख़ुल्क़ी। (कंज़)

दूसरी हदीस में है कि अल्लाह का कोई वली ऐसा नहीं कि जो सख़ावत का आदी न बनाया गया हो। (कंज़)

बहुत ज़ाहिर बात है कि अगर अल्लाह जल्ल शानुहू से ताल्लुक़ और मुहब्बत है तो उसकी मख़्लूक़ पर ख़र्च करने को बे इख़्तियार दिल चाहेगा कि महबूब के अज़ीज़ व अक़ारिब की ख़ातिर मुहब्बत के लवाज़िमात से है और जब मख़्लूक़ अल्लाह की अयाल है तो उन पर ख़र्च करने को वली का दिल ज़रूर चाहेगा और उसके अयाल में भी जिसका ताल्लुक़ उसके साथ जितना ज़्यादा क़वी होगा, उतना ही उस पर ख़र्च करने को ज़्यादा चाहेगा और अगर न चाहे तो मालूम हुआ कि माल की मुहब्बत अल्लाह की मुहब्बत से ज़्यादा है और अल्लाह तआला के साथ मुहब्बत का दावा झूठ है।

(٢) عن ابی بکر الصدیقؓ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم لایدخل الجنۃ خب ولا بخیل ولا منان (رواہ الترمذی کذا فی المشکوۃ)

2. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल किया है कि जन्नत में न तो चालबाज़, (धोखेबाज़) दाख़िल होगा, न बख़ील, न सदक़ा करके एहसान रखने वाला।

फ़ायदाः- उलमा ने इर्शाद फ़रमाया है कि इन सिफ़ात के साथ कोई शख़्स भी जन्नत में दाख़िल न हो सकेगा। अगर किसी मोमिन में ये बुरी सिफ़ात ख़ुदा न-ख़्वास्ता पायी जाती होंगी, तो अव्वल तो हक़ तआला शानुहू उसको दुनिया ही में उनसे तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमावेंगे और अगर यह न हुआ तो

अव्वल जहन्नम में दाख़िल होकर इन सिफ़ात का तन्क़िया (सफ़ाई) होने के बाद जन्नत में दाख़िल हो सकेगा। लेकिन जहन्नम में दाख़िल होना, चाहे थोड़ी देर के लिए हो, क्या कोई मामूली और आसान काम है? दुनिया की आग में थोड़ी देर के लिए डाला जाना क्या असरात पैदा करता है, हालांकि यह आग जहन्नम की आग के मुक़ाबले में कुछ भी हक़ीक़त नहीं रखती।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि दुनिया की आग जहन्नम की आग का सत्तरवां हिस्सा है। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल० यह आग क्या कुछ कम है, यह तो ख़ुद ही बहुत काफ़ी अज़ीयत (तक्लीफ़) पहुँचाने वाली है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि वह इससे उनहत्तर दर्जा बढ़ी हुई है। *(मिश्कात)*

एक दूसरी हदीस में है कि जहन्नम में सबसे कम अज़ाब वाला वह शख़्स होगा जिसको जहन्नम की आग की सिर्फ़ दो जूतियां पहनाई जाएंगी और उनकी वजह से उसका दिमाग़ ऐसे जोश मारेगा जैसे कि हंडिया आग पर जोश मारती है। *(मिश्कात)*

एक हदीस में आया है कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने जन्नते अदन को अपने दस्ते मुबारक से बनाया, फिर उसको सजाया और मुज़य्यन किया।

फिर फ़रिश्तों को हुक्म फ़रमाया कि इसमें नहरें जारी करें और फल इसमें लटकाएं जब हक़ तआला शानुहू ने उसकी ज़ेब व ज़ीनत को मुलाहज़ा फ़रमाया तो इर्शाद फ़रमाया कि मेरी इज़्ज़त की क़सम! मेरे जलाल की क़सम! मेरे बुलंदी वाले अर्श की क़सम! तुझ में बख़ील नहीं आ सकता। *(कंज़)*

(٣) عن ابی ذرؓ قال انتهیت الی النبی صلی اللہ علیه وسلم وهو جالس فی ظل الکعبة فلما رانی قال هم الاخسرون ورب الکعبة فقلت فداك ابی وامی من هم قال هم الاکثرون مالا الامن قال هکذا وهکذا من بین یدیه ومن خلفه وعن یمینه وعن شماله وقلیل ماهم متفق علیه کذا فی المشکوٰة.

3. हज़रत अबूज़र रज़ि० फ़रमाते हैं, मैं एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। हुज़ूर सल्ल० काबा शरीफ़ की दीवार के साए में तशरीफ़ रखते थे। मुझे देखकर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि काबा के रब की क़सम ! वे लोग बड़े ख़सारे (घाटे) में हैं। मैं ने अर्ज़ किया मेरे

मां, बाप आप पर क़ुर्बान। कौन लोग? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि जिनके पास माल ज़्यादा हो, मगर वे लोग जो इस तरह, इस तरह (ख़र्च करें), अपने दाएं से बाएं से ,आगे से, पीछे से, लेकिन ऐसे आदमी बहुत कम हैं।

फ़ायदाः- हज़रत अबूज़र रज़ि॰ ज़ाहिदीन सहाबा रज़ि॰ में हैं, जैसा कि पहले भी गुज़र चुका। उनको देखकेर यह इर्शाद हक़ीक़तन उनकी तसल्ली थी कि अपने फ़क्र व ज़ुह्द पर किसी वक़्त भी ख़्याल न करें, यह माल व मताअ् की कसरत अपने आप में कोई महबूब चीज़ नहीं, बल्कि बड़े ख़सारे और नुक्सान की चीज़ है, और ज़ाहिर है कि यह अल्लाह जल्ल॰ शानुहू से ग़फ़लत का सबब बनता है। रोज़मर्रा का मुशाहदा है कि बग़ैर तंगदस्ती के अल्लाह की तरफ़ रूजू बहुत ही कम होता है। अलबत्ता जिन लोगों को अल्लाह जल्ल शानुहू ने तौफ़ीक़ अता फ़रमायी है और वे ज़रूरत के मवाक़े में जहां और जिस तरफ़ ज़रूरत हो, चारों तरफ़ बख़्शिश का हाथ फैलाते हों, उनके लिए माल मुज़िर (नुक़सान देह) नहीं है। लेकिन हुज़ूर सल्ल॰ ने ख़ुद ही इर्शाद फ़रमा दिया कि ऐसे आदमी कम हैं। आम तौर से यही होता है कि जहां माल की कसरत होती है फ़िस्क व फ़ुजूर आवारगी, अय्याशी अपने साथ लाती है और बेमहल ख़र्च करना, नाम व नमूद पर सर्फ़ करना तो दौलत के अदना करिश्मों में से है। ब्याह, शादियों और दूसरी तक़रीबात पर बेजा और बेमहल हज़ारों रूपये ख़र्च कर दिया जाएगा, लेकिन अल्लाह के नाम पर ज़रूरत मंदों और भूखों पर ख़र्च करने की गुंजाइश ही न निकलेगी।

एक हदीस में है कि जो लोग दुनिया में ज़्यादा मालदार हैं, वही लोग आख़िरत में कम सरमाया वाले हैं। मगर वह शख़्स जो हलाल ज़रिए से कमाये और यों यों ख़र्च कर दे। *(कंज़)*

पहली हदीस की तरह "यों यों" का इशारा इधर उधर ख़र्च करने की तरफ़ है। हक़ीक़त में माल उसके लिए ज़ीनत और इज़्ज़त है, जो उस को इधर उधर ख़र्च कर दे और जो गिन गिन कर, बांध बांध कर रखे, उसके लिए हर क़िस्म की आफ़ात का पेश ख़ेमा है उसको भी हलाक करता है और ख़ुद भी उसके पास से ज़ाया होता है। यह बे-मुरव्वत किसी शख़्स को दीन या दुनिया का फ़ायदा उस वक़्त तक नहीं पहुँचाता, जब तक उसके पास से जुदा न हो।

(٤)عن ابی ہریرةؓ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم السخی قریب من اللہ قریب من الجنة قریب من الناس بعید من النار والبخیل بعید من اللہ بعید من الجنة بعید من الناس قریب من النار والجاہل السخی احب الی اللہ من عابد بخیل رواہ الترمذی کذا فی المشکوٰة

4. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि सख़ी आदमी अल्लाह के क़रीब है, जन्नत से क़रीब है, लोगों से क़रीब है, जहन्नम से दूर है, और बख़ील आदमी अल्लाह से दूर है, जन्नत से दूर है, आदमियों से दूर है और जहन्नम से क़रीब है। बेशक जाहिल सख़ी अल्लाह के नज़दीक आबिद बख़ील से ज़्यादा महबूब है।

फ़ायदा:- यानी जो शख़्स इबादत बहुत कसरत से करता हो, नवाफ़िल बहुत लम्बी लम्बी पढ़ता हो, उससे वह शख़्स अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा महबूब है, जो नवाफ़िल कम पढ़ता हो, लेकिन सख़ी हो। आबिद से मुराद नवाफ़िल कसरत से पढ़ने वाला है, फ़राइज़ का पढ़ना तो हर शख़्स के लिए ज़रूरी है, चाहे सख़ी हो या न हो।

इमाम गज़ाली रह० ने नक़्ल किया है कि हज़रत यह्या बिन ज़करीया अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलामु ने एक मर्तबा शैतान से दर्याफ़्त फ़रमाया कि तुझे सबसे ज़्यादा महबूब कौन शख़्स है और सबसे ज़्यादा नफ़रत किससे है? उसने कहा मुझे सबसे ज़्यादा मुहब्बत मोमिन बख़ील से है और सबसे ज़्यादा नफ़रत फ़ासिक़ सख़ी से है। उन्हों ने फ़रमाया यह क्या बात है? उसने अर्ज़ किया कि बख़ील तो अपने बुख़्ल की वजह से मुझे बेफ़िक्र रखता है, यानी उसका बुख़्ल ही जहन्नम में ले जाने के लिए काफ़ी है, लेकिन फ़ासिक़ सख़ी पर मुझे हर वक़्त फ़िक्र सवार रहता है कि कहीं हक़ तआला शानुहू उसकी सख़ावत की वजह से उससे दर गुज़र न फ़रमावें। *(एह्या)*

यानी अगर हक़ तआला शानुहू उसकी सख़ावत की वजह से किसी वक़्त उससे राज़ी हो गये, तो उसके दरिया-ए-मग़्फ़िरत व रहमत में उम्र भर के फ़िस्क़ व फ़ुजूर की क्या हक़ीक़त है, वह सब कुछ माफ़ फ़रमा सकता है। ऐसी सूरत में मेरी उम्र भर की मेहनत, जो उस से गुनाह सादिर कराने में की थी, सारी ज़ाया हो गयी।

एक हदीस में है कि जो शख़्स सख़ावत करता है, वह अल्लाह जल्ल शानुहू के साथ हुस्ने ज़न की वजह से करता है और जो बुख़्ल करता है वह हक़ तआला के साथ बदज़नी करता है। (कंज़)

हुस्ने ज़न का मतलब यह है कि वह यह समझता है कि जिस मालिक ने यह अता फ़रमाया, वह फिर भी अता फ़रमा सकता है और ऐसे शख़्स के अल्लाह से क़रीब होने में क्या तरद्दुद है और बदज़नी का मतलब यह है कि वह यह समझता है कि ये ख़त्म हो गये, तो फिर कहां से आएंगे ऐसे शख़्स का अल्लाह जल्ल शानुहू से दूर होना ज़ाहिर है, कि वह अल्लाह तआला के ख़ज़ाने को भी महदूद समझता है, हालांकि आमदनी के असबाब उसी के पैदा किए हुए हैं और इन असबाब से पैदावार का न होना उसी के क़ब्ज़ा-ए-क़ुदरत में है। वह न चाहे तो दुकानदार हाथ पर हाथ रखे बैठा रहे, काश्तकार बोए और पैदावार न हो और जबकि यह सब उसी की अता की वजह से है, फिर इसका क्या मतलब कि फिर कहां से आयेगा? मगर हम लोग ज़बान से इसका इक़रार करने के बाद दिल से यह नहीं समझते कि यह सिर्फ़ अल्लाह तआला शानुहू ही की अता है, हमारा इसमें कोई दख़ल नहीं और सहाबा-ए-किराम रज़ि० दिल से यह समझते थे कि यह सब उसी की अता है, जिसने आज दिया, वह कल भी देगा, इसलिए उनको सब कुछ ख़र्च कर देने में ज़रा ताम्मुल न होता था।

(٥) عن ابی هریرةؓ قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم السخاء شجرة فی الجنة فمن کان سخیا اخذ بغصن منها فلم یترکه الغصن حتی یدخله الجنة والشحّ شجرة فی النار فمن کان شحیحا اخذ بغصن منها فلم یترکه الغصن حتی یدخله النار رواه البیهقی فی شعب الایمان کذا فی المشکوٰة

5. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि सख़ावत जन्नत में एक दरख़्त है, पस जो शख़्स सख़ी होगा, वह उसकी एक टहनी पकड़ लेगा, जिसके ज़रिए से वह जन्नत में दाख़िल हो जाएगा और बुख़्ल जहन्नम का एक दरख़्त है, जो शख़्स शहीह् (बख़ील) होगा, वह उसकी एक टहनी पकड़ लेगा, यहां तक कि वह टहनी उसको जहन्नम में दाख़िल करके रहेगी।

फ़ायदा:- शुह्ह बुख़्ल का आला दर्जा है, जैसाकि पहली फ़स्ल की

आयात में नं॰ 28 पर गुज़र चुका है। मतलब ज़ाहिर है कि जब बुख़्ल जहन्नम का दरख़्त है तो उसकी टहनी पकड़ कर जो शख़्स चढ़ेगा, वह जहन्नम ही में पहुँचेगा।

एक हदीस में है कि जन्नत में एक दरख़्त है, जिसका नाम सख़ा है, सख़ावत उसी से पैदा हुई है और जहन्नम में एक दरख़्त है जिसका नाम शुह्ह् है, शुह्ह उसी से पैदा हुआ है। जन्नत में शहीह् दाख़िल न होगा। *(कंज़)*

यह पहले मुतअद्दद मर्तबा मालूम हो चुका कि शुह्ह बुख़्ल का आला दर्जा है।

एक और हदीस में है कि सख़ावत जन्नत के दरख़्तों में से एक दरख़्त है, जिसकी टहनियां दुनिया में झुक रही हैं, जो शख़्स उसकी किसी टहनी को पकड़ लेता है, वह टहनी उसको जन्नत तक पहुँचा देती है। और बुख़्ल जहन्नम के दरख़्तों में से एक दरख़्त है जिसकी टहनियां दुनिया में झुक रही हैं। जो शख़्स उसकी किसी टहनी को पकड़ लेता है, वह टहनी उसको जहन्नम तक पहुँचा देती है। *(कंज़)*

यह ज़ाहिर चीज़ है कि जो सड़क स्टेशन पर जाती है, जब आदमी उस सड़क पर चलता रहेगा तो ला महाला किसी वक़्त स्टेशन पर पहुँचेगा। इसी तरह से ये टहनियां जिन दरख़्तों की हैं, जब उनको कोई पकड़ कर चढ़ेगा तो जहां वह दरख़्त खड़ा है वहां पहुँच कर रहेगा।

(٦) عن ابی ہریرۃؓ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم شر مافی الرجل شح ھالع وجبن خالع رواہ ابو داؤد و کذا فی المشکوۃ.

6. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि बदतरीन आदतें जो आदमी में हों (दो हैं) एक वह बुख़्ल जो बेसब्र कर देने वाला हो, दूसरे वह नामर्दी और ख़ौफ़ जो जान निकाल देने वाला हो।

फ़ायदा:- इन दो ऐबों की तरफ़ अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने पाक कलाम में भी तंबीह फ़रमायी है, चुनांचे इर्शाद है-

اِنَّ الْاِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوْعًا ۝ اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوْعًا ۝ وَّاِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوْعًا ۝ اِلَّا الْمُصَلِّيْنَ ۝ الَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ دَآئِمُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ فِىْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُوْمٌ ۝ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ۝ وَالَّذِيْنَ يُصَدِّقُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۝ وَالَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ۝ اِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ

مَأمُوْنٍ ○ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ○ لا إِلَّا عَلٰى اَزْوَاجِهِمْ اَوْمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ○ فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ○ وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ○ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِشَهٰدٰتِهِمْ قَآئِمُوْنَ ○ وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ○ اُولٰٓئِكَ فِيْ جَنّٰتٍ مُّكْرَمُوْنَ ○ (معارج ١٤)

पूरी आयाते शरीफ़ा का तुर्जमा यह है कि बेशक इंसान कम हिम्मत (थोड़े और कच्चे दिल) का पैदा हुआ है, जब उसको तक्लीफ़ पहुँचती है तो जज़अ-फ़ज़अ करने लगता है और जब उसको ख़ैर (माल) पहुँचती है तो बुख़्ल करने लगता है, मगर वे नमाज़ी जो अपनी नमाज़ पर पाबंदी करने वाले हैं, और जिनके मालों में सवाल करने वालों के लिए और सवाल न करने वालों के लिए मुक़र्रर हक़ है, और वे लोग जो क़ियामत के दिन का एतक़ाद रखते हैं और वे लोग जो अपने परवरदिगार के अज़ाब से डरने वाले हैं। बेशक उनके रब का अज़ाब बेख़ौफ़ होने की चीज़ नहीं। (यक़ीनन उससे हर शख़्स को हर वक़्त डरते रहना चाहिए।) और वे लोग जो अपनी शर्मगाहों को (हराम जगह से) महफ़ूज़ रखते हैं लेकिन अपनी बीवियों से, या बांदियों से (हिफ़ाज़त की ज़रूरत नहीं), क्योंकि उन पर उनमें कोई इल्ज़ाम नहीं (यानी उन लोगों पर बीवियों और बांदियों से सोहबत करने में कोई एतिराज़ की बात नहीं है।), हां जो लोग इनके अलावा और जगह शहवत पूरी करने के तलबगार हों, वे हुदूद से तजावुज़ करने वाले हैं। और वे लोग जो अपने (सुपुर्द की हुई) अमानतों और अपने अह्द (क़ौल व क़रार) का ख़्याल रखने वाले हों और अपनी गवाहियों को ठीक ठीक अदा करते हों, और जो अपनी फ़र्ज़ नमाज़ की पाबन्दी करने वाले हों, यही लोग हैं जो जन्नतों में इज़्ज़त से दाख़िल होंगे। (फ़क़त)

यह उन आयात का तर्जुमा है और इस क़िस्म का पूरा मज़्मून इसके क़रीब-क़रीब दूसरी जगह सूरः मूमिनून के शुरू में भी गुज़र चुका है। हज़रत इम्रान बिन हसीन रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरे अमामे का सिरा पकड़ कर इर्शाद फ़रमाया कि इम्रान! हक़ तआला शानुहू को ख़र्च करना बहुत पसंद है और रोक कर रखना ना पसंद है। तू ख़र्च किया कर और लोगों को खिलाया कर, किसी को मज़र्रत न पहुँचा कि

तुझ पर तेरी तलब में मज़र्रत होने लगेगी। ग़ौर से सुन, हक़ तआला शानुहू शुबहात के वक़्त तेज़ नज़र को पसंद करते हैं। (यानी जिस अम्र (मामले) में जायज़ नाजायज़ का शुबह हो उसमें बारीक नज़र से काम लेना चाहिए, वैसे ही सरसरी तौर पर जो चाहे कर गुज़रना न हो।) और शह्वतों के वक़्त कामिल अक़्ल को पसंद करते हैं (कि शह्वत के ग़लबे में अक़्ल न खो दे) और सख़ावत को पसंद करते हैं चाहे चंद खजूरें ही ख़र्च करे। (यानी अपनी हैसियत के मुवाफ़िक़ ज़्यादा न हो सके तो कम में शर्म न करे जो हो सके ख़र्च करता रहे) और बहादुरी को पसंद करते हैं चाहे सांप और बिच्छु ही के क़त्ल में क्यों न हो। *(कंज़)*

लिहाज़ा ज़रा सी ख़ौफ़ की चीज़ से डर जाना अल्लाह जल्ल शानुहू को पसंद नहीं है। अगर दिल में ख़ौफ़ पैदा भी हो तो उसका इज़्हार न करना चाहिए, बल्कि क़ुव्वत के साथ उसको दफ़ा करना चाहिए।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जो दुआएं उम्मत की तालीम के लिए मंक़ूल हैं उनमें ना-मर्दी से पनाह मांगना भी नक़ल किया गया है और मुतअद्द दुआओं में उससे पनाह मांगना नक़ल किया गया। *(बुख़ारी)*

(٧) عن ابن عباسؓ قال سمعت رسول الله صلی اللّٰہعلیه وسلم لیس المؤمن بالذی یشبع وجاره جائع الیٰ جنبه رواه البیهقی فی الشعب کذافی المشکوٰة

7. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि वह शख़्स मोमिन नहीं जो ख़ुद तो पेट भर खाना खा ले और पास ही उसका पड़ोसी भूखा रहे।

फ़ायदा:- यक़ीनन जिस शख़्स के पास इतना है कि वह पेट भर कर खा सकता है और पास ही भूखा पड़ोसी है तो उसके लिए हरगिज़ हरगिज़ ज़ेबा नहीं कि ख़ुद पेट भर कर खाये और वह ग़रीब भूख में तिलमिलाता रहे, ज़रूरी है कि अपने पेट को कुछ कम पहुंचाए और पड़ोसी की भी मदद करे।

एक हदीस में है हुज़ूर सल्ल॰ इर्शाद फ़रमाते हैं कि वह शख़्स मुझ पर ईमान नहीं लाया जो ख़ुद पेट भर कर रात गुज़ारे और उसको यह बात मालूम है कि उसका पड़ोसी उसके बराबर में भूखा है। *(तर्ग़ीब)*

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि क़ियामत में कितने आदमी ऐसे होंगे जो अपने पड़ोसी का दामन पकड़े हुए अल्लाह तआला से अर्ज़

करेंगे, या अल्लाह! इससे पूछें कि इसने अपना दरवाज़ा बंद कर लिया था और मुझे अपनी ज़रूरत से ज़ायद जो चीज़ होती थी वह भी न देता था। *(तर्ग़ीब)*

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद वारिद हुआ है कि लोगो ! सदक़ा करो, मैं क़ियामत के दिन इसकी गवाही दूँगा, शायद तुममें से कुछ लोग ऐसे भी होंगे, जिनके पास रात को सेर होने के बाद बच रहे और उसका चचाज़ाद भाई भूख की हालत में रात गुज़ारे, तुममें शायद कुछ लोग ऐसे भी होंगे जो खुद तो अपने माल को बढ़ाते रहें और उनका मिस्कीन पड़ोसी कुछ न कमा सके। *(कंज़)*

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद वारिद हुआ है कि आदमी के बुख़्ल के लिए यह काफ़ी है कि वह यों कहे कि मैं अपना हक़ पूरा का पूरा लूँगा। उसमें से ज़रा सा भी नहीं छोड़ूँगा। *(कंज़)*

यानी तक़्सीम वग़ैरह में रिश्तेदारों से हो या पड़ोसियों से, अपना पूरा हक़ वसूल करने की फ़िक्र में लगा रहे। ज़रा-ज़रा सी चीज़ पर कंज व काव करे, यह भी बुख़्ल की अलामत है। अगर थोड़ा बहुत दूसरे के पास चला जाएगा तो इसमें क्या मर जायेगा?

(٨) عن ابی عمرؓ وابی ھریرةؓ قالا قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم عذبت امرأة فی ھرة امسکتھا حتی ماتت من الجوع فلم تکن تطعمھا ولا ترسلھا فتاکل من خشاش الارض متفق علیہ کذافی المشکوٰة ۔

8. हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ और हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ दोनों ने हुज़ूर सल्ल॰ का यह इर्शाद नक़ल किया कि एक औरत को इस पर अज़ाब किया गया कि उसने एक बिल्ली को बांध रखा था, जो भूख की वजह से मर गयी, न तो उसने उसको खाने को दिया न उसको छोड़ा कि वह ज़मीन के जानवरों (चूहे वग़ैरह) से अपना पेट भर लेती।

फ़ायदा:- जो लोग जानवरों को पालते हैं, उनकी ज़िम्मेदारी सख़्त है कि वे बे-ज़बान जानवर अपनी ज़रूरियात को ज़ाहिर भी नहीं कर सकते, ऐसी हालत में उनके खाने पीने की ख़बरगीरी बहुत अहम और ज़रूरी है। इसमें बुख़्ल से काम लेना अपने आप को अज़ाब में मुब्तला करने के लिए तैयार करना है। बहुत से आदमी जानवरों के पालने का तो बड़ा शौक़ रखते हैं लेकिन उनके घास दाने पर ख़र्च करते हुए जान निकलती है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्ल॰ से मुख़्तलिफ़ अहादीस में मुख़्तलिफ़ उन्वानात से यह मज़्मून नक़्ल किया गया कि इन जानवारों के बारे में अल्लाह तआला से डरते रहा करो।

एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ ले जा रहे थे। रास्ते में एक ऊँट नज़रे अक़्दस से गुज़रा, जिसका पेट कमर से लग रहा था। (भूख की वजह से या दुबलेपन की वजह से।) हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि इन बे-ज़बान जानवरों के बारे में अल्लाह से डरते रहा करो, उनकी अच्छी हालत में उन पर सवार हुआ करो और अच्छी हालत में उनको खाया करो। हुज़ूर सल्ल॰ की आदते शरीफ़ा यह थी कि इस्तिंजे के लिए जंगल में तशरीफ़ ले जाया करते थे, किसी बाग़ में या किसी टीले वग़ैरह की आड़ में ज़रूरत से फ़राग़त हासिल करते। एक मर्तबा इस ज़रूरत से एक बाग़ में तशरीफ़ ले गये, तो वहां एक ऊँट था, जो हुज़ूर सल्ल॰ को देखकर बड़ाने लगा और उसकी आँखों से आंसू जारी हो गये। (एक मारूफ़ चीज़ है कि हर मुसीबत-ज़दा का किसी ग़मख़्वार को देखकर दिल भर आता है।) हुज़ूर सल्ल॰ उसके पास तशरीफ़ ले गये, उसके कानों की जड़ पर शफ़्क़त का हाथ फेरा, जिससे वह चुपका हुआ।

हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि इस ऊँट का मालिक कौन है? एक अंसारी तशरीफ़ लाये और अर्ज़ किया कि मेरा है। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि तुम उस अल्लाह से जिसने तुम्हें इसका मालिक बनाया है, डरते नहीं हो? यह ऊँट तुम्हारी शिकायत करता है कि तुम इसको भूखा रखते हो और काम ज़्यादा लेते हो।

एक और हदीस में है कि एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल॰ ने एक गधे को देखा कि उसके मुंह पर दाग़ दिया गया। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि तुमको अब तक यह मालूम नहीं कि मैं ने उस शख़्स पर लानत की है, जो जानवर के मुंह को दाग़ दे या मुँह पर मारे। अबू-दाऊद शरीफ़ में ये रिवायात ज़िक्र की गयीं, इनके अलावा और भी मुख़्तलिफ़ रिवायात में इस पर तंबीह की गयी है कि जानवरों की ख़बरगीरी में कोताही न की जाए और जब जानवरों का यह हाल है और उनके बारे में ये तंबीहात हैं तो आदमी जो अशरफ़ुल मख़्लूक़ात[1] है उसका हाल ख़ूब ज़ाहिर है और ज़्यादा अहम है।

1. जानदारों में सबसे अच्छा और बुज़ुर्ग जानदार।

हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि आदमी के गुनाह के लिए यह काफ़ी है कि जिसकी रोज़ी अपने ज़िम्मे है, उसको ज़ाया करे, इसलिये अगर किसी जानवर को अपनी किसी ज़रूरत से रोक कर रखा है तो उसके खाने में कंजूसी करना और यह समझना कि कौन जाने किस को ख़बर होगी, अपने ऊपर सख़्त ज़ुल्म है। जानने वाला सब कुछ जानता है और लिखने वाले हर चीज़ की रिपोर्ट लिखते हैं, चाहे कितनी ही मख़्फ़ी की जाए और यह आफ़त बुख़्ल से आती है कि जानवरों को अपनी ज़रूरत से, सवारी की हो या खेती की हो, दूध की हो या कोई और काम लेने की हो, पालते हैं, लेकिन कंजूसी से उन पर पैसा ख़र्च करते हुए दम निकलता है।

(۹) عن انسؓ عن النبی صلی اللہ علی وسلم قال یجاء بابن ادم یوم القیٰمۃ کانہ بذج فیوقف بین یدی اللہ فیقول لہ اعطیتک وخولتک وانعمت علیک فما صنعت فیقول یا رب جمعتہ وثمرتہ وترکتہ اکثر ما کان فارجعنی اٰتک بہ کلہ فیقول ارنی ماقدمت فیقول رب جمعتہ وثمرتہ وترکتہ اکثر ماکان فارجعنی اٰتک بہ کلہ فاذا عبد لم یقدم خیرًا فیمضی بہ الی النار رواہ الترمذی وضعفہ کذا فی المشکوٰۃ.

9. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल किया गया कि क़ियामत के दिन आदमी ऐसा (ज़लील व ज़ईफ़) लाया जाएगा जैसा कि भेड़ का बच्चा होता है। और अल्लाह जल्ल शानुहू के सामने खड़ा किया जायेगा। इर्शाद होगा कि मैं ने तुझे माल अता किया, हशम, ख़दम दिए, तुझ पर नेमतें बरसायीं, तूने इन सब इन्आमात में क्या कारगुज़ारी की? वह अर्ज़ करेगा कि मैं ने ख़ूब माल जमा किया, उसको अपनी कोशिश से बहुत बढ़ाया और जितना शुरू में मेरे पास था, उससे बहुत ज़्यादा करके छोड़ आया। आप मुझे दुनिया में वापस कर दें। मैं वह सब आपकी ख़िदमत में हाज़िर कर दूँ। इर्शाद होगा मुझे तो वह बता जो तूने ज़िन्दगी में (ज़ख़ीरे के तौर पर आख़िरत के लिए) आगे भेजा हो। वह फिर अपना पहला कलाम दोहराएगा कि मेरे परवरदिगार! मैंने उसको ख़ूब जमा किया और ख़ूब बढ़ाया और जितना शुरू में था, उससे बहुत ज़्यादा करके छोड़ आया। आप मुझे दुनिया में वापस कर दें।, मैं वह सब लेकर हाज़िर हूँ (यानी ख़ूब सदक़ा करूँ, ताकि वह सब यहां मेरे पास आ जाए।) चूंकि उसके पास कोई ज़ख़ीरा ऐसा न निकलेगा, जो उसने

अपने लिए आगे भेज दिया हो, इसलिए उसको जहन्नम में फेंक दिया जाएगा।

फ़ायदाः- हम लोग तिजारत में, ज़राअत में और दूसरे ज़राए से रूपया कमाने में जितनी मेहनत और दर्दसरी करके जमा करते हैं, वह सब इसी लिए होता है कि कुछ ज़ख़ीरा अपने पास मौजूद रहे, जो ज़रूरत के वक़्त काम आये, न मालूम किस वक़्त क्या ज़रूरत पेश आ जाए। लेकिन जो असल ज़रूरत का वक़्त है, और उसका पेश आना भी ज़रूरी है और उसमें अपनी सख़्त एहतियाज भी ज़रूरी है और यह भी यक़ीनी कि उस वक़्त सिर्फ़ वही काम आएगा जो अपनी ज़िन्दगी में ख़ुदाई बैंक में जमा कर दिया गया हो कि वह तो जमाशुदा ज़ख़ीरा भी पूरे का पूरा मिलेगा और उसमें अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से इज़ाफ़ा भी होता रहेगा। लेकिन उसकी तरफ़ बहुत ही कम इल्तिफ़ात करते हैं, हालांकि दुनिया की यह ज़िंदगी चाहे कितनी ही ज़्यादा हो जाए, बहरहाल एक दिन ख़त्म हो जाने वाली है और आख़िरत की ज़िंदगी कभी भी ख़त्म होने वाली नहीं है। दुनिया की ज़िन्दगी में अगर अपने पास सरमाया न रहे तो उस वक़्त मेहनत मज़दूरी भी की जा सकती है, भीख मांग कर भी ज़िन्दगी के दिन पूरे किये जा सकते हैं लेकिन आख़िरत की ज़िन्दगी में कोई सूरत कमाई की नहीं है। वहां सिर्फ़ वही काम आएगा जो ज़ख़ीरे के तौर पर आगे भेज दिया गया।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद वारिद हुआ है कि मैं जन्नत में दाख़िल हुआ तो मैं ने उसकी दोनों जानिब तीन सतरें सोने के पानी से लिखी हुई देखीं। पहली सतर में:-

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह॰ लिखा था दूसरी सतर में:-

مَا قَدَّمْنَا وَجَدْنَا وَمَا اَكَلْنَا رَبِحْنَا وَمَا خَلَّفْنَا خَسِرْنَا

"मा क़द्दम्ना व जद्ना व मा अकल्ना रबिह्ना व मा ख़लफ़्ना ख़सिर्ना॰" (जो हमने आगे भेज दिया, वह पा लिया और जो दुनिया में खाया, वह नफ़ा में रहा और जो कुछ छोड़ आये वह नुक़्सान रहा।) और तीसरी सतर में लिखा था -

اُمَّةٌ مُّذْنِبَةٌ وَّرَبٌّ غَفُوْرٌ

उम्मतुम मुज़्निब-तुन व रब्बुन ग़फ़ूर॰ (उम्मत गुनाहगार और रब

बख़्शने वाला) (बरकाते ज़िक्र)

पहली फ़स्ल की आयात में नं॰ 6 पर गुज़र चुका कि उस दिन न तिजारत है, न दोस्ती है, न सिफ़ारिश। इसी फ़स्ल में नं॰ 30 पर अल्लाह जल्ल शानुहू का इर्शाद गुज़रा है कि हर शख़्स यह देख ले कि उसने कल के लिए क्या भेजा है। एक हदीस में आया है कि जब आदमी मर जाता है तो फ़रिश्ते यह पूछते हैं कि क्या ज़ख़ीरा अपने हिसाब में जमा कराया? क्या चीज़ कल के लिए भेजी? और आदमी यह पूछते हैं, क्या माल छोड़ा? (मिश्कात)

एक और हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल॰ ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि तुम में कौन शख़्स ऐसा है जिसको अपने वारिस का माल अपने से ज़्यादा महबूब हो? सहाबा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! हममें कोई भी ऐसा नहीं जिसको अपना माल अपने वारिस से ज़्यादा महबूब न हो। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया आदमी का अपना माल वह है जो उसने आगे भेज दिया और जो छोड़ गया, वह उसका माल नहीं उसके वारिस का माल है। (मिश्कात)

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद वारिद है कि आदमी कहता है कि मेरा माल, मेरा माल, उसके माल में से उसके लिए सिर्फ़ तीन चीज़ें हैं, जो खाकर ख़त्म कर दिया या पहन कर पुराना कर दिया, या अल्लाह के यहां अपने हिसाब में जमा करा दिया। इसके अलावा जो कुछ है, वह उसका माल नहीं है, लोगों के लिए छोड़ जाएगा। (मिश्कात)

बड़ा लुत्फ़ यह है कि आदमी अक्सर ऐसे लोगों के लिए जमा करता है, मेहनत उठाता है, मुसीबत झेलता है, तंगी बरदाश्त करता है, जिनको वह अपनी ख़्वाहिश से एक पैसा देने का रवादार नहीं है। लेकिन जमा करके छोड़ जाता है। और मुक़द्दरात उन्हीं को सारे का वारिस बना देते हैं। जिनको वह ज़रा सा भी देना नहीं चाहता था।

अर्तात रह॰ बिन सहिय्यह् का जब इंतिक़ाल होने लगा तो उन्होंने चंद शेर पढ़े, जिनका तर्जुमा यह है कि आदमी कहता है कि मैं ने बहुत माल जमा किया, लेकिन अक्सर कमाने वाला दूसरों के यानी वारिसों के लिए जमा करता है।, वह ख़ुद तो अपनी ज़िन्दगी में अपना भी हिसाब लेता रहता है कि कितना कहाँ ख़र्च हुआ, कितना कहाँ हुआ, लेकिन बाद में ऐसे लोगों को लूटने के लिए छोड़ जाता है जिनसे हिसाब भी नहीं ले सकता कि सारा कहाँ उड़ा दिया । पस

अपनी ज़िन्दगी में खा ले और खिला दे और बख़ील वारिस से छीन ले। आदमी ख़ुद तो मरने के बाद ना-मुराद रहता है (कोई उसको उस माल में याद नहीं रखता) दूसरे लोग उसको खाते उड़ाते हैं। आदमी ख़ुद तो उस माल से महरूम हो जाता है और दूसरे लोग उससे अपनी ख़्वाहिशात पूरी करते हैं।

(इत्तिहाफ़)

एक हदीस में यह क़िस्सा, जो ऊपर की हदीस में ज़िक्र किया गया, दूसरे उन्वान से वारिद हुआ है कि हुज़ूर सल्ल० ने एक मर्तबा सहाबा रज़ि० से दर्याफ़्त फ़रमाया, तुममें कोई ऐसा है, जिसको अपना माल अपने वारिस के माल से ज़्यादा महबूब हो, सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! हममें हर शख़्स ऐसा ही है, जिसको अपना माल ज़्यादा महबूब है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, सोचकर कहो, देखो क्या कह रहे हो? सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! हम तो ऐसा ही समझते हैं कि हममें से हर शख़्स को अपना माल ज़्यादा महबूब है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुममें से कोई भी ऐसा नहीं जिसको अपने वारिस का माल अपने माल से ज़्यादा महबूब न हो। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, हुज़ूर सल्ल० यह किस तरह? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया तुम्हारा माल वह है जो आगे भेज दिया और वारिस का माल वह है जो पीछे छोड़ गया।

(कंज़)

यहां एक बात यह भी क़ाबिले लिहाज़ है कि इन रिवायात का मक़्सद वारिसों को महरूम करना नहीं है, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ुद इस पर तंबीह फ़रमायी है।

हज़रत सअ्द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० फ़त्हे मक्का के ज़माने में ऐसे सख़्त बीमार हुए कि ज़िन्दगी की उम्मीद न रही। हुज़ूर सल्ल० इयादत के लिए तशरीफ़ ले गये, तो उन्होंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल० मेरे पास माल ज़्यादा है और मेरी वारिस सिर्फ़ एक बेटी है। मेरा दिल चाहता है कि अपने सारे माल की वसीयत करूँ, (कि इस-वक़्त उनकी औलाद सिर्फ़ एक बेटी ही थी और उसका तकफ़्फ़ुल उसके ख़ाविंद के ज़िम्मे) हुज़ूर सल्ल० ने मना फ़रमा दिया। उन्होंने दो तिहाई की इजाज़त चाही। हुज़ूर सल्ल० ने इसका भी इंकार फ़रमाया। फिर निस्फ़ (आधे) की दर्ख़्वास्त भी क़ुबूल नहीं फ़रमायी, तो उन्होंने एक तिहाई वसीयत की इजाज़त चाही। हुज़ूर सल्ल० ने इसकी इजाज़त फ़रमा दी और इर्शाद फ़रमाया कि एक तिहाई भी बहुत है, तुम अपने वारिसों को (यानी मरने के वक़्त जो भी

हों चुनांचे इस वाक़िए के बाद और भी औलाद हो गयी थी) ग़नी छोड़ो, यह इससे बेहतर है कि उनको फ़क़ीर छोड़ो कि लोगों के सामने हाथ फैलायें, जो ख़र्च अल्लाह के वास्ते किया जाए वह सवाब का मूजिब है, हत्ताकि अल्लाह के लिए अगर एक लुक़्मा बीवी को दिया जाए तो उस पर भी अज्र है।

(मिश्कात)

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० फ़रमाते हैं कि हज़रत सअ्द रज़ि० का यह क़िस्सा पहली हदीस यानी "तुममें से कौन ऐसा है कि उसको वारिस का माल महबूब हो" को मनाफ़ी नहीं है, इसलिए कि इस हदीस का मक़्सद अपनी सेहत और ज़रूरत के वक़्त में सदक़ा करने की तर्ग़ीब है और हज़रत सअ्द रज़ि० के क़िस्से में मौत की बीमारी में सारा या अक्सर हिस्सा माल को वसीयत करना मक़्सूद है। *(फ़त्ह)*

बन्दा-ए-नाकारा के नज़दीक सिर्फ़ यही नहीं, बल्कि वारिसों को नुक़्सान पहुँचाने के इरादे से वसीयत करना मूजिबे इताब व इक़ाब है। हुज़ूर सल्ल० का पाक इर्शाद है कि बाज़ मर्द और औरत अल्लाह की फ़रमांबरदारी में साठ साल गुज़ारते हैं और जब मरने का वक़्त आता है तो वसीयत में नुक़्सान पहुँचाते हैं। जिसकी वजह से जहन्नम की आग उनके लिए ज़रूरी हो जाती है। इसके बाद इसकी ताईद में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० ने क़ुरआन पाक की आयत –

مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصٰى بِهَآ اَوْ دَيْنٍ غَيْرَ مُضَآرٍّ (نساء ع ٢)

"मिम् बअ-दि वसिय्य-तिय् यूसा बिहा औ दैनिन् ग़ै-र मुज़ार्र०"

(सूरः निसा, रुकूअ् 2)

पढ़ी जिसका तर्जुमा और मतलब यह है कि ऊपर की आयत में जो वारिसों को तक़्सीमे माल की तफ़्सील बयान हुई है, वसीयत के बक़द्र माल निकालने के बाद है और अगर उसके ज़िम्मे क़र्ज़ हो तो क़र्ज़ की मिक़्दार भी निकालने के बाद इस हाल में कि वसीयत करने वाला किसी वारिस को ज़रर न पहुंचाये।

एक हदीस में है कि जो किसी वारिस की मीरास को क़ता करे, अल्लाह जल्ल शानुहू उसकी मीरास को जन्नत से क़ता करेगा। *(मिश्कात)*

लिहाज़ा इसका बहुत ज़्यादा ख़्याल रखना चाहिए कि वसीयत और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने में यह इरादा और नीयत हरगिज़ न हो कि कहीं

फ़लां वारिस न बन जाए, बल्कि इरादा और नीयत अपनी ज़रूरत का पूरा करना, अपने लिए ज़ख़ीरा बनाना हो, आदमी के इरादे और नीयत को इबादात में बहुत ज़्यादा दख़ल है।

हुज़ूर सल्ल० का पाक इर्शाद जो बहुत ज़्यादा मशहूर है "इन्-न मल् अअ्मालु बिन्निय्याति" कि आमाल का दारोमदार नीयत और इरादे पर है। नमाज़ जैसी अहम इबादत अल्लाह के वास्ते पढ़ी जाए, तो कितना ज़्यादा मूजिबे अज्र, मूजिबे सवाब, मूजिबे क़ुर्बत कि कोई दूसरी इबादत उसके बराबर नहीं। यही चीज़ रियाकारी और दिखावे के वास्ते पढ़ी जाए तो शिर्के असग़र और वबाल बन जाए, इसलिए ख़ालिस नीयत अल्लाह ही की रिज़ा और अपनी ज़रूरत में काम आना होना चाहिए, जिसकी बेहतरीन सूरत यह है कि अपनी ज़िंदगी में, अपनी तन्दुरूस्ती में, इस हालत में जबकि यह भी मालूम न हो कि मैं पहले मरूंगा या वारिस पहले मर जाएगा और कौन वारिस होगा, कौन न होगा, ऐसे वक़्त में ख़र्च करे और ख़ूब ख़र्च करे, जितना ज़्यादा से ज़्यादा सदक़ा कर सकता है करे, वसीयत करे, वक़्फ़ करे और जिन ख़ैर के मौक़ों में ज़्यादा सवाब की उम्मीद हो, उनकी फ़िक्र व जुस्तजू में रहे, यह नहीं कि अपने वक़्त में तो बुख़्ल करे और जब मरने लगे तो सख़ी बन जाए जैसा कि हुज़ूर सल्ल० का पाक इर्शाद पहली फ़स्ल की अहादीस में नं० 5 पर गुज़र चुका है कि अफ़ज़ल सदक़ा वह है जो हालते सेहत में किया जाए, न यह कि जब जान निकलने लगे तो कहे कि इतना फ़लां का, इतना फ़लां का, हालांकि माल फ़लां का (यानी वारिस का) हो गया। ख़ूब समझ लो, मैं सब से पहले अपने नफ़्स को नसीहत करता हूँ, इसके बाद अपने दोस्तों को कि साथ जाने वाला सिर्फ़ वही माल है जिसको अल्लाह के बैंक में जमा कर दिया और जिसको जमा करके और ख़ूब ज़्यादा बढ़ा कर छोड़ दिया, वह अपने काम नहीं आता, बाद में न कोई मां बाप याद रखता है, न बीवी औलाद पूछते हैं, इल्ला माशाअल्लाह अपना ही किया अपने काम आता है। इन सब की सारी मुहब्बतों का ख़ुलासा दो चार दिन हाय-हाय, करना है और पांच सात मुफ़्त के आँसू बहाना है। अगर इन आंसुओं में भी पैसे ख़र्च करना पड़ें तो ये भी न रहें। यह ख़्याल कि औलाद की ख़ैर ख़्वाही की वजह से माल को जमा करके छोड़ता है, नफ़्स का महज़ धोखा है, सिर्फ़ माल जमा करके उनके लिए छोड़ जाना उनके साथ ख़ैर ख़्वाही नहीं है, बल्कि शायद बद-ख़्वाही बन जाए। अगर वाक़ई औलाद की ख़ैर ख़्वाही मक़्सूद है, अगर

वाक़ई यह दिल चाहता है कि वे अपने मरने के बाद परेशान हाल, ज़लील व ख़्वार न फिरें, तो उनको मालदार छोड़ने से ज़्यादा ज़रूरी उनको दीनदार छोड़ना है कि, बद-दीनी के साथ माल भी अव्वलन उनके पास बाक़ी न रहेगा, चंद यौम की लज़्ज़ात व शहवात में उड़ जायेगा। और अगर रहा भी तो अपने किसी काम का नहीं है, और दीनदारी के साथ अगर माल न भी हो तो उनकी दीनदारी उनके लिए भी काम आने वाली है और अपने लिए भी काम आने वाली चीज़ है और माल में से तो अपने काम आने वाला सिर्फ़ वही है, जो साथ ले गया।

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू का इर्शाद है कि हक़ तआला शानुहू ने दो ग़नी और दो फ़क़ीरों को वफ़ात दी। इसके बाद एक ग़नी से मुतालबा फ़रमाया कि अपने वास्ते आगे क्या भेजा? और अपने अयाल के वास्ते क्या छोड़ कर आया? उसने अर्ज़ किया या अल्लाह! तूने मुझे भी पैदा किया और उनको भी तूने ही पैदा किया और हर शख़्स की रोज़ी का तूने ही ज़िम्मा लिया और तूने क़ुरआन पाक में फ़रमाया:-

مَنْ ذَا الَّذِیْ یُقْرِضُ اللّٰہَ قَرْضًا حَسَنًا

"मन ज़ल्लज़ी युक़्रिज़ुल्ला-ह क़र्ज़न् ह-स-ना॰ (पहली फ़स्ल की आयात में नं॰ 5 पर गुज़र चुकी है।) इस बिना पर मैंने अपना माल आगे भेज दिया और मुझे यह बात मुहक़्क़क़ थी कि आप उनको रोज़ी देंगे ही। इर्शाद होगा, अच्छा जाओ, अगर तुम्हें (दुनिया में) मालूम हो जाता कि तुम्हारे लिए मेरे पास क्या क्या (इनाम-इक्राम) है तो दुनिया में बहुत ख़ुश होते और बहुत कम रंजीदा होते, इसके बाद दूसरे ग़नी से मुतालबा हुआ कि तूने क्या अपने लिए भेजा और क्या अयाल के लिए छोड़ा। उसने अर्ज़ किया, या अल्लाह! मेरी औलाद थी, मुझे उनकी तक्लीफ़ और फ़क़्र का डर हुआ। इर्शाद हुआ कि क्या मैंने ही तुझको और उन सबको पैदा न किया था, मैंने सब की रोज़ी का ज़िम्मा नहीं उठाया था? उसने अर्ज़ किया या अल्लाह! बेशक ऐसा ही था, लेकिन मुझे उनके फ़क़्र का ख़ौफ़ ही बहुत हुआ। इर्शाद हुआ कि फ़क़्र तो उनको पहुँचा, क्या तूने उसको उनसे रोक दिया, अच्छा जा, अगर तुझे (दुनिया में) मालूम हो जाता कि तेरे लिए मेरे पास क्या क्या (अज़ाब) है तो बहुत कम हंसता और बहुत ज़्यादा रोता। फिर एक फ़क़ीर से मुतालबा हुआ कि तूने क्या अपने लिए जमा किया और क्या अयाल के लिए छोड़ा? उसने अर्ज़ किया, या अल्लाह, आपने मुझे सही, सालिम, तन्दुरूस्त पैदा किया और गोयाई बख़्शी, अपने पाक नाम मुझे सिखाये, अपने से

दुआ करना सिखाया, अगर आप मुझे माल दे देते तो मुझे यह अंदेशा था कि मैं उसमें मशगूल हो जाता, मैं अपनी उस हालत पर जो थी, बहुत राज़ी हूँ। इर्शाद हुआ कि अच्छा जाओ मैं भी तुम से राज़ी हूँ। अगर तुम्हें (दुनिया में) मालूम हो जाता कि तुम्हारे लिए मेरे पास क्या है? तो बहुत ज़्यादा हंसते और बहुत कम रोते। फिर दूसरे फ़क़ीर से मुतालबा हुआ कि तूने अपने लिए क्या भेजा? और अयाल के लिए क्या छोड़ा?

उसने अर्ज़ किया, या अल्लाह! आपने मुझे दिया ही क्या था, जिसका अब सवाल है। इर्शाद हुआ कि क्या हमने तुझे सेहत नहीं दी थी, गोयाई न दी थी, कान आंख न दिए थे, और क़ुरआन पाक में यह न कहा था। "उद्‌ऊनी अस्त जिब् लकुम" (मुझ से दुआएं मांगो, मैं क़ुबूल करूँगा) उसने अर्ज़ किया या अल्लाह! यह तो बेशक सब सही है, मगर मुझ से भूल हुई। इर्शाद हुआ कि अच्छा, आज हमने भी तुझे भूला दिया, जा चला जा, अगर तुझे ख़बर होती कि तेरे लिए हमारे यहां क्या क्या अज़ाब है. तो तू बहुत कम हंसता और बहुत ज़्यादा रोता। *(कंज़)*

(۱۰) عن عمرؓ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال الجالب مرزوق والمحتکر ملعون رواہ ابن ماجہ والدارمی کذا فی المشکوٰۃ۔

10. हज़रत उमर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जो शख़्स रिज़्क़ (ग़ल्ला वग़ैरह) बाहर से लाये (ताकि लोगों को अरज़ां (सस्ता) दे) उसको रोज़ी दी जाती है और जो शख़्स रोक कर रखे, वह मलऊन है।

फ़ायदाः- फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़ंदी रह० फ़रमाते हैं कि बाहर से लाने वाले से वह शख़्स मुराद है, जो तिजारत की ग़रज़ से दूसरे शहरों से ग़ल्ला ख़रीद कर लाये ताकि लोगों के हाथ (अरज़ां) फ़रोख़्त करे, तो उसको (अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से) रोज़ी दी जाती है, क्योंकि लोग उस से मुंतफ़ा होते हैं। उनकी दुआएं उसको लगती हैं और रोकने वाले से वह शख़्स मुराद है जो रोकने की नीयत से ख़रीद कर रखे और लोगों को इससे नुक़्सान पहुँचे। *(तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)*

यानी गरानी के इंतिज़ार में रोके रखे और बावजूद लोगों की हाजत के फ़रोख़्त न करे, उस पर लानत है यानी बुख़्ल और लालच और नफ़ा कमाने की

ग़रज़ से ग़ल्ला वग़ैरह जिन चीज़ों की लोगों को अपनी ज़िन्दगी के लिए एहतियाज है, ख़रीद कर रोके रखे और गरानी की ज़्यादती का दिन ब दिन इंतिज़ार करता रहे। उस पर हुज़ूर सल्ल॰ की तरफ़ से लानत की गयी।

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल किया गया कि जो शख़्स मुसलमानों पर उनके खाने को चालीस दिन तक (बावजूद सख़्त एहतियाज के) रोके रखे, (फ़रोख़्त न करे), हक़ तआला शानुहू उसको कोढ़ के मर्ज़ में और इफ़्लास में मुब्तला करते हैं। *(मिश्कात)*

इससे मालूम हुआ कि जो शख़्स मुसलमानों को नुक़्सान पहुँचाता है और फ़क़्र में मुब्तला करता है उस पर बदनी अज़ाब (कोढ़) भी मुसल्लत होता है और माली अज़ाब इफ़्लास व फ़क़्र भी और इसके बिल मुक़ाबिल पहली हदीस में गुज़र चुका है कि जो दूसरी जगह से लाकर अर्ज़ानी से फ़रोख़्त करता है, अल्लाह जल्ल शानुहू ख़ुद उसको रोज़ी (और नफ़ा) पहुँचाते हैं।

एक हदीस में है कि ग़ल्ला रोकने वाला भी कैसा बुरा आदमी है अगर नर्ख़ (भाव) अरज़ां (सस्ता) होता है तो उसको रंज होता है गरां होता है तो ख़ुश होता है।

एक और हदीस में है कि जो शख़्स चालीस दिन (एहतियाज के बावजूद) ग़ल्ला रोके रखे (फ़रोख़्त न करे), फिर उसको लोगों पर सदक़ा कर दे, तो यह सदक़ा करना भी उस रोकने का कफ़्फ़ारा न होगा। *(मिश्कात)*

एक हदीस में आया है कि पहली उम्मतों में एक बुज़ुर्ग रेत के एक टीले पर गुज़रे, गरानी का ज़माना था। वह अपने दिल में यह तमन्ना करने लगे कि अगर यह रेत का टीला ग़ल्ले का ढेर होता तो मैं इस से बनी इस्राईल को ख़ूब खिलाता, हक़ तआला शानुहू ने उस ज़माने के नबी अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम पर वही इर्साल की कि फ़लां बुज़ुर्ग को बशारत सुना दो कि हमने तुम्हारे लिए उतना ही अज्र व सवाब लिख दिया जितना कि यह टीला ग़ल्ले का होता और तुम उसको लोगों में तक़्सीम कर देते।

(तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)

हक़ तआला शानुहू के यहां सवाब की कमी नहीं है, उसको अज्र व सवाब देने के लिए न ज़ख़ीरे की ज़रूरत है, न आमदनी और कमाई की। उसके एक इशारे में सारी दुनिया की पैदावार है, वहां लोगों का अमल और इख़्लास

देखा जाता है और जो उसकी मख़्लूक़ पर रहमत और शफ़्क़त करता है उस पर रहमत और शफ़्क़त में वहां कोई कमी नहीं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० की ख़िदमत में एक शख़्स हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि मुझे कुछ नसीहत फ़रमा दें। आपने फ़रमाया कि तुम्हें छः चीज़ों की नसीहत करता हूं:-

1. सबसे पहली चीज़ अल्लाह पर भरोसा और यक़ीन उन चीज़ों का, जिनका अल्लाह जल्ल शानुहू ने ख़ुद ज़िम्मा ले रखा है (मसलन रोज़ी वग़ैरह),

2. दूसरे अल्लाह के फ़राइज़ को अपने अपने वक़्त पर अदा करना,

3. तीसरे ज़बान हर वक़्त अल्लाह के ज़िक्र से तर व ताज़ा रहे,

4. चौथे शैतान का कहा न मानना, वह सारी मख़्लूक़ से हसद रखता है,

5. पांचवें दुनिया के आबाद करने में मश्गूल न होना कि वह आख़िरत को बर्बाद करेगी।

6. छठे मुसलमानों की ख़ैर ख़्वाही का हर वक़्त ख़्याल रखना।

फ़क़ीह अबुल्लैस रह० फ़रमाते हैं कि आदमी की सआदत की ग्यारह अलामतें हैं और उसकी बदबख़्ती की भी ग्यारह अलामात (निशानियां) हैं। सआदत की ग्यारह अलामात ये हैं -

7. दुनिया से बे रग्बती और आख़िरत की तरफ़ रग्बत करना,

2. इबादत और तिलावते क़ुरआन की कसरत,

3. फ़ुज़ूल बात से एहतिराज़,

4. नमाज़ का अपने औक़ात पर ख़ुसूसी एहतिमाम,

5. हराम चीज़ से चाहे अद्ना दर्जे की हराम हो, बचना,

6. सुलहा (नेक लोग) की सोहबत इख़्तियार करना,

7. मुतवाज़े रहना, तकब्बुर न करना,

8. सख़ी और करीम होना,

9. अल्लाह की मख़्लूक़ात पर शफ़्क़त करना,

10. मख़्लूक़ को नफ़ा पहुंचाना,

11. मौत को कसरत से याद रखना।

बद-बख़्ती की अलामात ये हैं:- 1. माल के जमा करने की हिर्स, 2. दुन्यवी लज़्ज़तों और शहवतों में मश्ग़ूली, 3. बेहयाई की गुफ़्तगू और बहुत बोलना, 4. नमाज़ में सुस्ती करना, 5.-हराम और मुश्तबह चीज़ों का खाना और फ़ासिक़ फ़ाजिर लोगों से मेल जोल, 6. बद-ख़ुल्क़ होना, 7. मुतकब्बिर और फ़ख़्र करने वाला होना, 8. लोगों के नफ़ा पहुँचाने से यक्सू रहना, 9. मुसलमानों पर रहम न करना, 10. बख़ील होना, 11. मौत से ग़ाफ़िल होना।

(तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)

बन्दा-ए-नाकारा के नज़दीक इन सब की जड़ मौत को कसरत से याद रखना है, जब वह हर वक़्त याद आती रहेगी तो पहली ग्यारह इन्शाअल्लाह पैदा हो जाएंगी और दूसरी ग्यारह से बचाव हासिल हो जाएगा।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का हुक्म है कि लज़्ज़तों को तोड़ने वाली मौत को कसरत से याद किया करो। *(मिश्कात)*

(۱۱) عن انسؓ قال توفی رجل من الصحابة فقال رجل ابشر بالجنة فقال رسول الله صلی الله علیه وسلم ولا تدری لعله تکلم فیما لایعنیه اوبخل بما لا ینقصه رواه الترمذی کذا فی المشکوٰة

11. हज़रत अनस रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु का इंतिक़ाल हुआ, तो मज्मे में से किसी ने उनको बज़ाहिर हालात के एतिबार से जन्नती बताया। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया तुम्हें क्या ख़बर है, मुम्किन है कभी उन्होंने बेकार बात ज़बान से निकाल दी हो या कभी ऐसी चीज़ में बुख़्ल किया हो, जिससे उनको कोई नुक़्सान नहीं पहुँचता था।

फ़ायदा:- यानी ये चीज़ें भी इब्तिदाअन जन्नत में जाने से मानेअ् बन जाती हैं, हालांकि बेकार बातों में मुनहमिक रहना और फ़ुज़ूल गुफ़्तगू में औक़ात ज़ाया करना हम लोगों का ऐसा दिलचस्प मश्ग़ला है कि शायद ही किसी की कोई मज्लिस इससे ख़ाली होती हो, लेकिन हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत पर शफ़क़त और रहमत के क़ुर्बान कि हुज़ूर सल्ल॰ ने हर मुश्किल का हल बताया और 23 वर्ष के क़लील ज़माने में सारी दुनिया की हर क़िस्म की ज़रूरतों का हल तज्वीज़ फ़रमाया।

हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद है कि मज्लिस का कफ़्फ़ारा यह दुआ है,

मज्लिस ख़त्म होने के बाद उठने से पहले यह दुआ पढ़ लिया करे।

سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ

"सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिही सुब्हा-न कल्लाहुम्-म व बिहम्दि-क अश्हदु अल्लाइला-ह इल्ला अन्-त अस्तग़्फ़िरू-क व अतूबु इलैक॰"

(हिस्ने हसीन)

दूसरी चीज़ हदीसे बाला में वही बुख़्ल है कि शायद ऐसी चीज़ में बुख़्ल कर लिया हो जिससे कोई नुक़्सान नहीं था।

एक और हदीस में यह क़िस्सा ज़रा तफ़्सील से आया है। उसमें हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि शायद किसी ला यानी (बेकार) चीज़ में गुफ़्तगू कर ली हो या किसी ला यानी चीज़ में बुख़्ल कर लिया हो। (कंज़)

हम लोग बहुत सी चीज़ों को बहुत सरसरी समझते हैं, लेकिन अल्लाह जल्ल शानुहू के यहां सवाब के एतिबार से भी और अज़ाब के एतिबार से भी उनका बहुत ऊँचा दर्जा होता है।

बुख़ारी शरीफ़ की एक हदीस में है कि आदमी अल्लाह तआला की रिज़ा की कोई बात ज़बान से निकालता है जिसको वह कुछ अहम भी नहीं समझता, लेकिन उसकी वजह से उसके दरजात बहुत बुलंद हो जाते हैं और कोई कलिमा (बात) अल्लाह की नाराज़ी का कह देता है, जिसकी परवाह भी नहीं करता, लेकिन इसकी वजह से जहन्नम में फेंक दिया जाता है और एक हदीस में है कि इतना नीचे फेंक दिया जाता है, जितनी मश्रिक़ से मग़्रिब दूर है। (मिश्कात)

(١٢)عن مولىٰ لعثمان قال اهدى لأم سلمة بضعة من لحم وكان النبى صلى الله عليه وسلم يعجبه اللّحم فقالت للخادم ضعيه فى البيت لعل النبى صلى الله عليه وسلم ياكله فوضعته فى كوة البيت وجاء سائل فقام على الباب فقال تصدقوا بارك الله فيكم فقالوا بارك الله فيك فذهب السائل فدخل النبى صلى الله عليه وسلم فقال يا ام سلمة هل عندكم شئ اطعمه فقالت نعم قالت للخادم اذهبى فاتى رسول الله صلى الله عليه وسلم بذالك اللّحم فذهبت فلم تجد فى الكوة الاقطعة مروة فقال النبى صلى الله عليه وسلم فان ذلك اللحم عادمروة لما لم تعطوه السّائل رواه البيهقى فى دلائل النبوّة كذا فى المشكٰوة .

12. उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ि॰ की ख़िदमत में किसी शख़्स ने गोश्त का एक टुकड़ा (पका हुआ) हद्‌ए के तौर पर पेश किया, चूंकि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को गोश्त का बहुत शौक़ था इसलिए हज़रत उम्मे सलमा रज़ि॰ ने ख़ादिमा से फ़रमाया कि उस को अंदर रख दे, शायद किसी वक़्त हुज़ूर सल्ल॰ नोश फ़रमा लें। ख़ादिमा ने उसको अंदर ताक़ पर रख लिया, इसके बाद एक साइल आया और दरवाज़े पर खड़े होकर सवाल किया कि कुछ अल्लाह के वास्ते दे दो। अल्लाह जल्ल शानुहू तुम्हारे यहां बरकत फ़रमाये। घर में से जवाब मिला कि अल्लाह तुझे बरकत दे। (यह इशारा था कि कोई चीज़ देने के लिए मौजूद नहीं।) वह साइल तो चला गया इतने में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाये और इर्शाद फ़रमाया कि उम्मे सलमा, मैं कुछ खाना चाहता हूँ, कोई चीज़ तुम्हारे यहां है? हज़रत उम्मे सलमा ने ख़ादिमा से फ़रमाया कि जाओ, वह गोश्त हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में पेश करो। वह अन्दर गयी और जाकर देखा कि ताक़ में गोश्त तो है नहीं, सफ़ेद पत्थर का एक टुकड़ा रखा हुआ है (हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को वाक़िआ मालूम हुआ तो) हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि तुम ने वह गोश्त चूंकि साइल (फ़क़ीर) को न दिया, इसलिए वह गोश्त पत्थर का टुकड़ा बन गया।

फ़ायदा:- बड़ी इब्रत का मक़ाम है, अज़्वाजे मुतह्हरात की सख़ावत और फ़ैयाज़ी का कोई क्या मुक़ाबला कर सकता है। एक टुकड़ा गोश्त का अगर उन्होंने ज़रूरत से रोक लिया और वह भी अपनी ज़रूरत से नहीं, बल्कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़रूरत से रोका तो उस का यह हश्र हुआ और यह भी हक़ीक़तन अल्लाह जल्ल शानुहू का ख़ास लुत्फ़ व करम हुज़ूर सल्ल॰ के घर वालों के साथ था कि उस गोश्त का जो असर फ़क़ीर को न देने से हुआ, वह हुज़ूर सल्ल॰ की बरकत से अपनी असली हालत में घर वालों पर ज़ाहिर हो गया, जिसका मतलब यह हुआ कि ज़रूरत मंद से बचा कर और इंकार करके जो शख़्स खाता है वह असर और समरे के एतिबार से ऐसा है जैसा कि पत्थर खा लिया हो कि उससे उस चीज़ का असल फ़ायदा हासिल न होगा, बल्कि सख़्त दिली और मुनाफ़े से महरूमी हासिल होगी। यही वजह है कि हम लोग बहुत सी अल्लाह तआला शानुहू की नेमतें खाते हैं लेकिन उनसे

वे फ़वाइद बहुत कम हासिल होते हैं जो होना चाहिएं और कहते हैं कि चीज़ों में असर नहीं रहा, हालांकि हक़ीक़त में अपनी नीयतें ख़राब हैं, इसलिए बद-नीयती से फ़वाइद में कमी होती है।

(۱۳)عن عمرو بن شعیب عن ابیه عن جدّه ان النبی صلی اللّٰه علیه وسلم قال اول صلاح هذه الامّة الیقین والزهد واول فسادها البخل والامل رواه البیهقی فی الشعب کذا فی المشکوٰة

13. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि इस उम्मत की सलाह की इब्तिदा (अल्लाह तआला के साथ) यक़ीन और दुनिया से बे रग़बती से हुई और उसके फ़साद की इब्तिदा बुख़्ल और लम्बी लम्बी उम्मीदों (से होगी)।

फ़ायदाः- हक़ीक़त में बुख़्ल भी लम्बी लम्बी उम्मीदों से ही पैदा होता है कि आदमी दूर दूर के मंसूबे सोचता है, फिर उसके लिए जमा करने की फ़िक्र होती है। अगर आदमी को अपनी मौत याद आती रहे और यह सोचता रहे कि न मालूम कितने दिन की ज़िन्दगी है, तो फिर न तो ज़्यादा दूर की सोच व फ़िक्र हो, न ज़्यादा जमा करने की ज़रूरत हो, बल्कि मौत याद आती रहे तो फिर उस घर के लिए ज़्यादा से ज़्यादा जमा करने की फ़िक्र हर वक़्त सवार रहे।

(۱٤) عن ابی هریرةؓ ان النبی صلی اللّٰه علیه وسلم دخل علی بلال وعنده صبرة من تمر فقال ما هذا یا بلال قال شیئ اذخرته لغدٍ فقال اما تخشی ان تری له غدًا بخارًا فی نار جهنم انفق یا بلال ولا تخش من ذی العرش اقلالا رواه البیهقی فی الشعب کذا فی المشکوٰة

14. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मर्तबा हज़रत बिलाल रज़ि॰ के पास दाख़िल हुए तो उनके सामने खजूरों का एक ढेर लगा हुआ था। हुज़ूर सल्ल॰ ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि बिलाल, यह क्या है? उन्होंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल॰ आइन्दा की ज़रूरियात के लिए ज़ख़ीरे के तौर पर रख लिया। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि बिलाल, तुम इससे नहीं डरते कि इसकी वजह से कल को क़ियामत के दिन जहन्नम की आग का धुवां तुम देखो। बिलाल ! ख़र्च कर डालो और अर्श वाले (जल्ल जलालुहू) से किसी कमी का ख़ौफ़ न करो।

फ़ायदाः- हर शख़्स की एक शान और एक हालत हुआ करती है हम

जैसे कमज़ोर, ज़ुअफ़ा, कमज़ोर ईमान, कमज़ोर यक़ीन लोगों के लिए शरअन इसकी गुंजाइश हो भी कि वह ज़ख़ीरे के तौर पर आइन्दा की ज़रूरियात के लिए कुछ रख लें, लेकिन हज़रत बिलाल रज़ि॰ जैसे जलीलुल क़द्र कामिलुल ईमान, कामिलुल यक़ीन की यही शान थी कि उनको अल्लाह जल्ल शानुहू से कमी का ज़रा भी ख़ौफ़ या वहम न हो। जहन्नम का धुवां देखने से उसमें जाना लाज़िम नहीं आता, लेकिन उन लोगों के एतिबार से कमी तो ज़रूर होगी, जिनको यह भी नज़र न आए और कम से कम हिसाब का क़िस्सा तो लम्बा हो ही जाएगा।

कुछ अहादीस में मामूली रक़म एक दो दीनार किसी शख़्स के पास निकलने पर भी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से जहन्नम की आग की वईद वारिद हुई है, जैसा कि छठी फ़स्ल की अहादीस के सिलसिले में नं॰ 2 के ज़ैल में आ रहा है और हिसाब का मामला तो हर शख़्स के लिए है कि जितना माल ज़्यादा होगा उतना ही हिसाब तवील (लम्बा) होगा।

हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद है कि मैं जन्नत के दरवाज़े पर खड़ा हूँ मैं ने देखा कि उसमें कसरत से दाख़िल होने वाले फ़ुक़रा हैं और वुस्अत वाले अभी रोके हुऐ हैं और जहन्नमी लोगों को जहन्नम में फेंक दिया गया और मैं जहन्नम के दरवाज़े पर खड़ा हुआ, तो मैं ने उसमें कसरत से दाख़िल होने वाली औरतें देखीं। *(मिश्कात)*

औरतों के जहन्नम में कसरत से दाख़िल होने की वजह एक और हदीस में आयी है। हज़रत अबू सईद रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ईद के दिन ईदगाह में तशरीफ़ ले गये। जब औरतों के मज्मे पर गुज़र हुआ तो हुज़ूर सल्ल॰ ने औरतों से ख़िताब फ़रमा कर इर्शाद फ़रमाया कि तुम सदक़ा बहुत कसरत से किया करो। मैं ने औरतों को बहुत कसरत से जहन्नम में देखा है। उन्होंने दर्याफ़्त किया कि या रसूलल्लाह ! यह क्या बात है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि औरतें लानत (बद-दुआएं) बहुत करती हैं और ख़ाविंद की ना-शुक्री बहुत करती हैं। *(मिश्कात)*

और ये दोनों बातें औरतों में ऐसी कसरत से आम हैं कि हद नहीं। जिस औलाद पर दम देती हैं, हर वक़्त उसकी राहत और आराम की फ़िक्र में रहती हैं, ज़रा-ज़रा सी बात पर उसको हर वक़्त बद-दुआएं तू मर जा, तू गड़ जा, तेरा नास हो जा, वग़ैरह-वग़ैरह अल्फ़ाज़ उनका तकिया-ए-कलाम होता है और ख़ाविंद की नाशुक्री का तो पूछना ही क्या है, वह ग़रीब जितनी भी नाज़ बरदारी

करता रहे उनकी निगाह में वह लापरवाह ही रहता है। हर वक़्त इस ग़म में मरी रहती हैं कि उसने मां को कोई चीज़ क्यों दे दी, बाप को तंख़्वाह में से कुछ क्यों दे दिया, बहन भाई से सुलूक क्यों कर दिया। एक और हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल॰ ने 'सलातुल कसूफ़' में दोज़ख़ जन्नत का मुशाहदा फ़रमाया तो दोज़ख़ में कसरत से औरतों को देखा, सहाबा रज़ि॰ ने जब इसकी वजह दर्याफ़्त की तो हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि वे एहसान फ़रामोशी करती हैं, ख़ाविंद की नाशुक्री करती हैं। अगर तू तमाम उम्र उनमें से किसी पर एहसान करता रहे, फिर कोई ज़रा सी बात पेश आ जाए तो कहने लगती हैं कि मैंने तुझ से कभी कोई भलाई न देखी। *(मिश्कात)*

हुज़ूर सल्ल॰ का यह भी इर्शाद है कि औरतों की आम आदत है कि जितना भी उनके साथ अच्छा बर्ताव किया जाए, अगर किसी वक़्त कोई बात उनकी ख़िलाफ़े मरज़ी पेश आ जाए तो ख़ाविंद के उम्र भर के एहसान सब ज़ाया होकर कहतीं हैं कि इस घर में मुझे कभी चैन न मिला। यह उनका ख़ास तकिया-ए-कलाम है।

इन रिवायात से औरतों के कसरत से जहन्नम में दाख़िल होने की वजह मालूम होने के अलावा यह भी मालूम हुआ कि उससे बचाव और हिफ़ाज़त की चीज़ भी सदक़े की कसरत है, चुनांचे इस वईद वाली हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल॰ जब यह इर्शाद फ़रमा रहे थे हज़रत बिलाल रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ के साथ थे और सहाबी औरतें कसरत से हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद सुनने के बाद अपने कानों का ज़ेवर और गले का ज़ेवर निकाल निकाल कर हज़रत बिलाल के कपड़े में, जिसमें वह चंदा जमा कर रहे थे, डाल रही थीं।

हमारे ज़माने में अव्वल तो औरतों को इस क़िस्म की सख़्त हदीसें सुन कर ख़्याल भी नहीं होता और अगर किसी को होता भी है तो फिर उसका नज़्ला भी ख़ाविंद पर ही गिरता है कि वही उनकी ज़कात अदा करे, उनकी तरफ़ से सदक़े करे। अगर वे ख़ुद भी करेंगी, तो ख़ाविंद से ही वसूल करके। मजाल है कि उनके ज़ेवरों को कोई आंच आ जावे, वैसे चाहे सारा ही चोरी हो जावे, खोया जाए या ब्याह शादियों और लग्व तक़रीबात में गिरवी रख कर हाथ से जाता रहे। मगर उसको अपनी ख़ुशी से अल्लाह के यहां जमा करना, इसका कहीं ज़िक्र नहीं इसी हाल में उसको छोड़कर मर जाती हैं, फिर वह वारिसों में तक़्सीम होकर कम दामों में फ़रोख़्त होता है, बनते वक़्त निहायत गरां (महंगा) बनता है,

बिकते वक़्त निहायत अरज़ां (सस्ता) हो जाता है, लेकिन उनको इससे कुछ ग़रज़ नहीं कि यह घड़ाई के दाम बिल्कुल ज़ाया जा रहे हैं उनको बनवाते रहने से ग़रज़, यह तुड़वा कर वह बनवा लिया, वह तुड़वा कर यह बनवा लिया और अपने काम आने वाला न वह है, न यह है। और बार बार तुड़वाने में माल की बर्बादी के अलावा घड़ाई की उजरत ज़ाया होती रहती है।

यह मज़्मून दर्मियान में औरतों के कसरत से जहन्नम में जाने की वजह से आ गया था। असल मज़्मून तो यह था, कि माल की कसरत कुछ न कुछ रंग तो लाती ही है हत्ताकि हज़रात मुहाजिरीन रज़ियाल्लाहु तआला अन्हुम अज्मईन के बारे में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि क़ियामत के दिन फ़ुक़रा-ए-मुहाजिरीन अग़्निया से चालीस साल पहले जन्नत की तरफ़ बढ़ जाएंगे। *(मिश्कात)*

हालांकि इन हज़रात के ईसार और सदक़ात की कसरत और इख़्लास का न तो अंदाज़ा किया जा सकता है, न मुक़ाबला हो सकता है।

एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल० ने यह दुआ की –

اَللّٰھُمَّ اَحْیِنِیْ مِسْکِیْنًا وَّاَمِتْنِیْ مِسْکِیْنًا
وَّاحْشُرْنِیْ فِیْ زُمْرَۃِ الْمَسَاکِیْنَ

"अल्लाहुम्-म अहयिनी मिस्कीनंव् व अ-मित्नी मिस्कीनंव् वह्शुर्नी फ़ी ज़ुम्रतिल् मसाकीन०"

"ऐ अल्लाह, ज़िंदगी में भी मुझे मिस्कीन रख और मिस्कीनी की हालत में मौत अता कर और मेरा हश्र भी मिस्कीनों की जमाअत में फ़रमा"। हज़रत आइशा रज़ि० ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह, यह क्यों? (यानी आप मिस्कीनी की दुआ क्यों फ़रमाते हैं?) हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि मसाकीन अपने अग़्निया से चालीस साल क़ब्ल (पहले) जन्नत में जाएंगे। आइशा! मिस्कीन को नामुराद वापस न करो, चाहे खजूर का एक टुकड़ा ही क्यों न हो, मसाकीन से मुहब्बत रखा करो। उनको अपना मुक़र्रब बनाया करो। अल्लाह जल्ल शानुहू क़ियामत के दिन तुम्हें अपना मुक़र्रब बनाएंगे। *(मिश्कात)*

कुछ उलमा को इस हदीस पर यह इश्काल हो गया कि इससे आम

फ़ुक़रा का अंबिया से मुक़द्दम होना लाज़िम आता है। बन्दे के नाक़िस ख़्याल में यह इश्काल नहीं है। इस हदीसे पाक में अपने अग़्निया का लफ़्ज़ मौजूद है, हर जमाअत के फ़ुक़रा का उस जमाअत के अग़्निया से मुक़ाबला है, अंबिया का अंबिया से, सहाबा रज़ि० का सहाबा रज़ि० से और इसी तरह और जमाअतें।

(١٥) عن كعب بن عياضؓ قال سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول ان لكل امة فتنة وفتنة امتى المال رواه الترمذى كذا فى المشكوٰة

15. हज़रत कअब रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना है कि हर उम्मत के लिए एक फ़ित्ना होता है (जिसमें मुब्तला होकर वह फ़ित्ने में पड़ जाती है) मेरी उम्मत का फ़ित्ना माल है।

फ़ायदाः- हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद बिल्कुल ही हक़ है, कोई एतिक़ादी चीज़ नहीं है। रोज़मर्रा के मुशाहदे की चीज़ है कि माल की कसरत से जितनी आवारगी, अय्याशी, सूदख़ोरी, ज़िनाकारी, सिनेमा बीनी, जुआबाज़ी, ज़ुल्म व सितम, लोगों को हक़ीर समझना, अल्लाह के दीन से ग़ाफ़िल होना, इबादात में तसाहुल, दीन के कामों के लिए वक़्त न मिलना वग़ैरह वग़ैरह होते हैं, नादारी में इनका तिहाई चौथाई, बल्कि दसवां हिस्सा भी नहीं होता। इसी वजह से एक मसल मशहूर है "ज़र नेस्त इश्क़ टें-टें" पैसा पास न हो तो फिर बाज़ारी इश्क़ भी ज़बानी जमा ख़र्च ही रह जाता है, और ये सब चीज़ें न भी हों तो कम से कम दर्जा माल की बढ़ोतरी का हर वक़्त फ़िक्र तो कहीं गया ही नहीं, सिर्फ़ तीन हज़ार रूपये किसी को दे दीजिए, फिर जो हर वक़्त किसी काम में लगाकर बढ़ाने का फ़िक्र दामनगीर होगा, तो कहां का सोना कहां का राहत व आराम, कैसी नमाज़ कैसा रोज़ा, कैसा हज व ज़कात। अब दिन भर, रात भर दुकान के बढ़ाने की फ़िक्र है, दुकान की मश्ग़ूली, न किसी दीनी काम में शिर्कत की इजाज़त देती है, न दीन के लिये कहीं बाहर जाने का वक़्त मिलता है कि दुकान का हरज हो जाएगा, हर वक़्त यह फ़िक्र सवार कि कौन सा कारोबार ऐसा है, जिसमें नफ़ा ज़्यादा हो, काम चलता हुआ हो, इसी लिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद जो कई हदीसों में आया है कि अगर किसी आदमी के लिए दो वादियां (दो जंगल) माल के हासिल हो जाएं तो वह तीसरी की तलाश में लग जाता है, आदमी का पेट क़ब्र

(की मिट्टी) ही भर सकती है। (मिश्कात)

एक हदीस में है कि अगर आदमी के लिए एक वादी माल की हो तो दूसरी को तलाश करता है, और दो हों तो तीसरी को तलाश करता है। आदमी का पेट मिट्टी के सिवा कोई चीज़ नहीं भरती।

एक हदीस में है कि आदमी के लिए एक जंगल खजूरों का हो तो दूसरे की तमन्ना करता है और दो हों तो तीसरे की और इसी तरह तमन्नाएं करता रहता है। उसका पेट मिट्टी के सिवा कोई चीज़ नहीं भरती। (कंज़)

एक हदीस में है कि अगर आदमी को एक वादी सोने की दे दी जाए तो वह दूसरी को तलाश करता है आदमी का पेट मिट्टी के सिवा कोई चीज़ नहीं भर सकती। (बुख़ारी)

मिट्टी से भरने का मतलब यह है कि क़ब्र की मिट्टी में जाकर ही वह अपनी इस "हल मिम् मज़ीद" की ख़्वाहिश से रूक सकता है, दुनिया में रहते रहते तो हर वक़्त उस पर इज़ाफ़ा और ज़्यादती की फ़िक्र रहती है। एक कारख़ाना अच्छी तरह चल रहा है, उसमें बक़द्रे ज़रूरत आमदनी हो रही है, कहीं कोई दूसरी चीज़ सामने आ गयी, उसमें भी अपनी टांग अड़ा दी, एक से दो हो गयी, दो से तीन हो गयी, ग़रज़ जितनी आमदनी बढ़ती जाएगी, उसको मज़ीद कारोबार में लगाने की फ़िक्र रहेगी, यह नहीं होगा कि उस पर क़नाअत करके कुछ वक़्त अल्लाह की याद में मश्ग़ूली का निकल आए। इसी लिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुआ फ़रमायी है –

"अल्लाहुम्-मज्अल् रिज़्-क़ आलि मुहम्मदिन क़ूतन्॰"

(ऐ अल्लाह!) मेरी औलाद का रिज़्क़ क़ूत हो यानी बक़द्रे किफ़ायत हो ज़ायद हो ही नहीं, जिसके चक्कर में मेरी औलाद फंस जाए।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि बेहतरी और ख़ूबी उस शख़्स के लिए है जो इस्लाम अता किया गया हो और उसका रिज़्क़ बक़द्रे किफ़ायत हो और उस पर क़ानेअ् हो।

एक और हदीस में है कि कोई फ़क़ीर या ग़नी क़ियामत में ऐसा न होगा जो इसकी तमन्ना न करता हो कि दुनिया में उसकी रोज़ी सिर्फ़ क़ूत (यानी बक़द्रि किफ़ायत) होती। (एह्या)

बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि ख़ुदा की क़सम! मुझे तुम्हारे ऊपर फ़क़्र व फ़ाक़ा का ख़ौफ़ नहीं है, बल्कि इसका ख़ौफ़ है कि तुम पर दुनिया की वुस्अत हो जाए जैसा कि तुमसे पहली उम्मतों पर हो चुकी है, फिर तुम्हारा उसमें दिल लगने लगे जैसा कि उनका लगने लगा था, पस यह चीज़ तुम्हें भी हलाक न कर दे जैसा कि पहली उम्मतों को कर चुकी है। *(मिश्कात)*

इनके अलावा और भी बहुत सी रिवायात में मुख़्तलिफ़ उनवानात से, मुख़्तलिफ़ क़िस्म की तंबीहात से माल की कसरत और उसके फ़ित्ने पर मुतनब्बह फ़रमाया, इसलिए नहीं कि माल अपनी ज़ात में कोई नापाक या ऐब की चीज़ है, बल्कि इस वजह से कि हम लोगों के क़ुलूब के फ़साद की वजह से बहुत जल्द हमारे दिलों में माल की वजह से तअफ़्फ़ुन और बीमारियां पैदा हो जाती हैं। अगर कोई शख़्स उसकी मज़र्रतों से बचते हुए, उसकी ज़्यादती से एहतराज़ करते हुए, शराइत के साथ उसको इस्तेमाल करे तो मुज़िर नहीं, बल्कि मुफ़ीद हो जाता है, लेकिन चूंकि आमतौर से न शराइत की रियायत होती है, न इस्लाह की फ़िक्र होती है। इस बिना पर यह अपना ज़हरीला असर बहुत जल्द पैदा कर देता है। इसकी बेहतरीन मिसाल हैज़े के ज़माने में अमरूद का खाना है कि अपनी ज़ात में अमरूद के अंदर कोई ऐब नहीं, उस के जो फ़वाइद हैं वे अब भी उसमें मौजूद हैं लेकिन हवा के फ़साद की वजह से उसके इस्तेमाल से ख़ास कर कसरते इस्तेमाल से बहुत जल्द उसमें तग़य्युर पैदा हो कर मज़र्रत और हलाकत का सबब बन जाता है। इसी वजह से आमतौर पर डाक्टर हैज़ा के ज़माने में अमरूदों की सख़्ती से मुमानअत कर देते हैं। टोकरे के टोकरे ज़ाया करा देते हैं। हैरत की बात यह है कि अगर मामूली हकीम या डाक्टर किसी चीज़ को मुज़िर बताता है तो तव्अन हमारे क़ुलूब उससे डरने लगते हैं। चुनांचे डाक्टरों के इन एलानात के बाद अच्छे अच्छे सूरमाओं की हिम्मत अमरूद खाने की नहीं रहती। लेकिन वह हस्ती जिसके जूतों की ख़ाक तक भी कोई हकीम या डाक्टर नहीं पहुँच सकता, जिसकी तज्वीज़ात नूरे नुबुव्वत से मुस्तफ़ाद हैं, उसके एलान पर उसकी तज्वीज़ पर ज़रा भी ख़ौफ़ पैदा न हो।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब बार बार उसके फ़ित्नों और उसकी मज़र्रतों पर तंबीह फ़रमा रहे हैं, तो यक़ीनन हर शख़्स को बहुत ज़्यादा उसकी मज़र्रतों से डरते रहना चाहिए, उसके इस्तेमाल के लिए शरई

क़वानीन के मातहत, जो उसके लिए ऐसे हैं, जैसा कि अमरूद के लिए नमक मिर्च लीमूं वग़ैरह मुस्लिहात हैं, इनका बहुत ज़्यादा एहतिमाम करना चाहिए. अल्लाह के हुक़ूक़ की अदाएगी का बहुत ज़्यादा इसमें फ़िक्र करते रहना चाहिए।

ख़ुद हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि ग़िना में उस शख़्स के लिए नुक़्सान नहीं, जो अल्लाह से डरता है। *(मिश्कात)*

मेरे नसबी बुज़ुर्गों में मुफ़्ती इलाही बख़्श कांधलवी रह॰ मशहूर फ़क़ीह हज़रते अक़्दस मर्जउलकुल शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब देहलवी नव्वरल्लाहु मर्क़दहू के ख़ास शागिर्द हैं। उनकी बयाज़ में उनके शैख़ की बयाज़ से नक़ल किया है कि दुनिया (यानी माल) आदमी के लिए हक़ तआला शानुहू की मरज़िय्यात पर अमल करने के लिए बेहतरीन मदद है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब लोगों को हक़ तआला शानुहू की तरफ़ बुलाया तो इन चीज़ों के छोड़ देने का हुक्म नहीं फ़रमाया बल्कि अस्बाबे मईशत और अह्ल व अयाल में रहने की तर्ग़ीब दी, लिहाज़ा माल का और अपने अह्ल व अयाल में रहने का इंकार ना वाक़िफ़ शख़्स ही कर सकता है।

हज़रत उस्मान रज़ि॰ के विसाल के वक़्त उनके ख़ज़ांची के पास एक लाख पचास अशर्फ़ियां और दस लाख दिरम थे। और जायदाद ख़ैबर वादी-ए-क़ुरा वग़ैरह की थी, जिसकी क़ीमत दो लाख दीनार थे और हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि॰ के माल की क़ीमत पचास हज़ार दीनार थी और एक हज़ार घोड़े और एक हज़ार ग़ुलाम छोड़े थे और अम्र बिन आस रज़ि॰ ने तीन लाख दीनार छोड़े थे और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि॰ के माल का तो शुमार ही मुश्किल है। इसके बावजूद हक़ तआला शानुहू ने उनकी तारीफ़ क़ुरआन पाक में फ़रमायी:-

يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ (كهف ع ٤)

"यद् अू-न रब्ब-हुम बिल् ग़दाति वल् अशिय्यि युरीदू-न वज्ह-हूँ"
(सूरः कह्फ़, रूकूअ् 4)

"अपने रब की इबादत सुबह व शाम (यानी हमेशा) महज़ उसकी रिज़ा जोई के वास्ते करते हैं और इर्शाद है"।

رِجَالٌ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ (نور ع ٥)

"रिजालुल्ला तुल्हीहिम तिजा-र तुंव्-व ला बै-अुन् अन् ज़िक्रिल्लाहि॰"
(सूरः नूर रूकूअ् 5)

"ये ऐसे लोग हैं कि इनको तिजारत वग़ैरह अल्लाह के ज़िक्र से नहीं रोकती, फ़क़त, बयाज़ की इबारत अरबी है, यह उसका तुजर्मा है और सही है कि उस ज़माने में फ़ुतूहात की कसरत से आम तौर पर इन हज़रात की माली हालत ऐसी ही थी, दुनिया और सरवत उनके जूतों से लिपटती थी, ये उसको फेंकते थे और वह उनको चिपटती थी। लेकिन इस सब के बावजूद उसके साथ उनकी दिलबस्तगी और अल्लाह तआला के साथ मश्ग़ूली क्या थी? "फ़ज़ाइले नमाज़" और "हिकायाते सहाबा" (ये दोनों किताबें हमारे यहां मिल सकती हैं।) में इन हज़रात के कुछ वाक़िआत ज़िक्र किये गये हैं। उनको इब्रत और ग़ौर से देखो।

यही अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि॰ अपनी इस दौलत के साथ जब नमाज़ को खड़े होते तो जैसे एक कील कहीं गाड़ दी हो। सज्दा इतना लम्बा होता कि चिड़िया कमर पर आकर बैठ जाती और हरकत का ज़िक्र नहीं। जिस ज़माने में खुद उन पर चढ़ाई हो रही थी और उन पर गोला बारी हो रही थी, नमाज़ पढ़ रहे थे। एक गोला मस्जिद की दीवार पर लगा, जिससे उसका एक हिस्सा गिरा। उनके दाढ़ी के पास से गुज़रा, मगर उनको उसका पता भी न चला। एक सहाबी रज़ि॰ का बाग़ खजूरों का खूब पक रहा था, यह उस बाग़ में नमाज़ पढ़ रहे थे। नमाज़ में बाग़ का ख़्याल आ गया। इसका रंज और सदमा इस क़दर हुआ कि नमाज़ के बाद फ़ौरन बाग़ को हज़रत उस्मान रज़ि॰ की ख़िदमत में, जो उस वक़्त अमीरूल मोमिनीन थे, पेश कर दिया। उन्होंने पचास हजार में उसको फ़रोख़्त करके उसकी क़ीमत दीनी कामों में ख़र्च कर दी।

हज़रत आइशा रज़ि॰ की ख़िदमत में दो बोरियां दिरम की नज़राने में आयीं, जिनमें एक लाख से ज़्यादा दिरम थे, तबाक़ मंगा कर और भर भर कर सब तक़्सीम कर दीं। अपना रोज़ा था। यह भी ख़्याल न आया कि अपने इफ़्तार के लिए कुछ रख लें या कोई चीज़ मंगा लें। इफ़्तार के वक़्त जब बांदी ने अफ़सोस किया कि अगर एक दिरम का गोश्त मंगा लेतीं तो आज हम भी गोश्त से खाना खा लेते, तो फ़रमाया, अब अफ़सोस से क्या होता है? जब याद दिला देती तो मैं मंगा देती। हिकायाते सहाबा रज़ि॰ में ये और इस क़िस्म के चंद वाक़िआत ज़िक्र किये गये हैं। इनके अलावा हज़ारों वाक़िआत इन हज़रात के

तारीख़ में मौजूद हैं। उनको माल क्या नुक़्सान दे सकता था। जिनके नज़दीक उसमें और घर के कूड़े में कोई फ़र्क़ ही न हो। काश, अल्लाह जल्ल शानुहू इस सिफ़त का कोई शम्मा इस नापाक को भी अता कर देता।

यहां एक बात ख़ास तौर से क़ाबिले लिहाज़ है, वह यह कि इन हज़राते मुतमव्वल (मालदार) सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ के इन अह्वाल से माल की कसरत के जवाज़ पर इस्तिद्‌लाल तो हो सकता है कि ख़ैरूल क़ुरून और ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन के दौर में ये मिसालें भी मिलती हैं, लेकिन हम लोगों को इस ज़हर के अपने पास रखने में उनके इत्तिबाअ को आड़ बनाना ऐसा ही है जैसा कि कोई तपे दिक़ का बीमार किसी जवान क़वी तन्दुरूस्त के इत्तिबाअ में रोज़ाना सोहबत किया करे कि वह तीन चार दिन में क़ब्र का गढ़ा ही देखेगा।

रिसाले के ख़त्म पर हिकायात के सिलसिले में नं॰ 54 पर एक आरिफ़ का इर्शाद ग़ौर से देखना चाहिए।

इमाम गज़ाली रह॰ फ़रमाते हैं कि माल ब मंज़िला एक सांप के है, जिसमें ज़हर भी है और तिरयाक़ भी है। इसके फ़वाइद ब मंज़िला तिरयाक़ के हैं और इसके नुक़्सानात ब मंजिला ज़हर के। जो उस के फ़वाइद और नुक़्सानात से वाक़िफ़ हो जाए इस पर क़ादिर हो सकता है कि उसके फ़वाइद हासिल करे और नुक़्सानात से महफ़ूज़ रहे। इसमें फ़वाइद दो क़िस्म के हैं, दुन्यवी और दीनी।

दुन्यवी फ़वाइद तो हर शख़्स जानता है। उन्हीं की वजह से सारा जहान उसके कमाने में मर मिट रहा है।

दीनी फ़वाइद तीन हैं -

1. अव्वल यह कि ब वास्ता या बिला वास्ता इबादत का सबब है। बिला वास्ता तो जैसे हज, जिहाद वग़ैरह कि ये रूपये ही से हो सकते हैं और ब वास्ता यह कि अपने खाने पीने और ज़रूरियात में ख़र्च करे कि अगर ये ज़रूरतें पूरी न हों तो आदमी का दिल उधर मश्ग़ूल रहता है जिस की वजह से दीनी मशाग़िल में इश्तिग़ाल का वक़्त नहीं मिलता और जब यह बवास्ता इबादत का ज़रिया है तो ख़ुद भी इबादत हुआ, लेकिन सिर्फ़ उतनी ही मिक़्दार जिससे दीनी मशाग़िल में इआनत (मदद) मिले। इससे ज़्यादा मिक़्दार इसमें दाख़िल नहीं।

2. दूसरा दीनी फ़ायदा उससे किसी दूसरे पर ख़र्च करने के मुताल्लिक़ है और यह चार क़िस्म पर है

(अ) सद्क़ा जो गुरबा पर किया जाए। इसके फ़ज़ाइल बेशुमार हैं, जैसा कि पहले गुज़र चुके।

(ब) मुरव्वत जो अग़िनया पर दावत, ग्दया, वग़ैरह में ख़र्च किया जाए कि वह सद्क़ा नहीं है, इसलिए कि सदक़ा फ़ुक़रा पर होता है। यह क़िस्म भी दीनी फ़वाइद लिए हुए है कि इससे आपस में ताल्लुक़ात क़वी होते हैं। सख़ावत की बेहतरीन आदत पैदा होती है। बहुत सी अहादीस हदाया और खाना खिलाने के फ़ज़ाइल में वारिद हुई हैं इस क़िस्म में उन लोगों के फ़क़्र की क़ैद नहीं है, जिन पर ख़र्च किया जाए।

बंदे के नाक़िस ख़्याल में यह फ़ायदा बसा औक़ात पहले नम्बर स भी बढ़ जाता है, मगर जब ही तो, जब उसमें ख़र्च भी किया जाए, लेकिन जो शख़्स निन्नानवे के फेरे में पड़ जाए। उसके लिए न ये फ़ज़ाइल कार आगद हैं, न वे सब अहादीस जो इनके फ़ज़ाइल में आयी हैं उस पर असर करती हैं।

(ज) अपनी आबरू का तहफ़्फ़ुज़ यानी माल का ऐसी जगह ख़र्च करना, जिसमें अगर ख़र्च न किया जाए तो कमीना लोगों की तरफ़ से बदगोई, फ़ह्श वग़ैरह मज़र्रतों का अंदेशा है यह भी सद्क़े के हुक्म में आ जाता है।

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि आदमी अपनी आबरू की हिफ़ाज़त के लिए जो ख़र्च करता है वह भी सद्क़ा करता है।

बन्दा-ए-नाकारा के नज़दीक दफ़्ए ज़ुल्म के लिए रिश्वत देना भी इसमें दाख़िल है। रिश्वत का देना किसी नफ़ा के हासिल करने के वास्ते हराम है, ना जायज़ है, देने वाला भी ऐसा ही गुनाहगार है जैसा कि लेने वाला। लेकिन ज़ालिम के ज़ुल्म को हटाने के वास्ते देने वाले को जायज़ है, लेने वाले को हराम है।

(द) मज़दूरों की उज्रत देना कि आदमी बहुत से काम ख़ुद अपने हाथ से नहीं कर सकता और बाज़ काम ऐसे भी होते हैं कि जिनको आदमी ख़ुद कर तो सकता है लेकिन उनमें बहुत सा अज़ीज़ वक़्त सर्फ़ होता है। अगर उन कामों को उज्रत पर करा ले तो अपना यह वक़्त इल्म व अमल, ज़िक्र व फ़िक्र वग़ैरह ऐसे उमूर पर ख़र्च हो सकता है। जिनमें दूसरा नायब नहीं हो सकता।

3. तीसरा दीनी फ़ायदा उमूमी इख़्राजाते ख़ैर हैं जिनमें किसी दूसरे मुअय्यन शख़्स पर तो ख़र्च नहीं किया जाता है कि यह दूसरे नम्बर में गुज़र चुके हैं, अलबत्ता उमूमी फ़वाइद उससे हासिल होते हैं जैसे मसाजिद का बनाना, मुसाफ़िर ख़ाने, पुल वग़ैरह बनाना, मदारिस, शफ़ाख़ाने वग़ैरह ऐसी चीज़ें बनवाना

जो अपने मरने के बाद भी उसके अज्र व सवाब और उनसे फ़वाइद हासिल करने वाले सुलहा की दुआएं पहुँचती रहें। यह तो इज्माल है इसके फ़वाइद का, और सारे फ़वाइद जो इससे हासिल हो सकते हैं, वे इसमें आ गये।

हज़रते अक़्दस शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब क़ुद्दस सिर्रहू फ़रमाते हैं कि माल का ख़र्च करना सात तरह से इबादत है-

1. ज़कात, जिसमें उश्र भी दाख़िल है।

2. सदक़ा-ए-फ़ित्र,

3. नफ़्ल ख़ैरात जिस में मेहमानी भी दाख़िल है और क़र्ज़दारों की इआनत भी।

4. वक़्फ़े मसाजिद, सराय, पुल वग़ैरह बनाना।

5. हज, फ़र्ज़ हो या नफ़्ल या किसी दूसरे की हज में मदद हो, तोशा से या सवारी से।

6. जिहाद में ख़र्च करना कि एक दिरम उसमें सात सौ दिरम के बराबर है।

7. जिनके इख़राजात अपने ज़िम्मे हैं उनको अदा करना जैसा कि बीवी का और छोटी औलाद का ख़र्च है और अपनी वुसअत के बाद मुहताज रिश्तेदारों का ख़र्च वग़ैरह। *(तफ़्सीरे अज़ीज़ी)*

इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि माल के नुक़सानात भी दो क़िस्म के हैं, दीनी और दुन्यवी।

दीनी नुक़सानात तीन क़िस्म पर हैं -

(अ) मआसी (गुनाहों) की कसरत का सबब होता है कि आदमी अक्सर व बेशतर उसी की वजह से शह्वतों में मुब्तला होता है और नादारी और इज्ज़ (कमज़ोरी) इन की तरफ़ मुतवज्जह भी नहीं होने देता। जब आदमी को किसी मासियत के हुसूल से ना उम्मीदी होती है तो दिल उसकी तरफ़ ज़्यादा मुतवज्जह भी नहीं होता और जब अपने को उस पर क़ादिर समझता है तो कसरत से उधर तवज्जोह रहती है और माल क़ुदरत के बड़े असबाब में से है। इसी वजह से माल का फ़ित्ना फ़क़्र के फ़ित्ने से बढ़ा हुआ है।

(ब) जायज़ चीज़ों में तनअ्उम की कसरत का सबब है। अच्छे से अच्छा खाना, अच्छे से अच्छा लिबास वग़ैरह वग़ैरह। भला मालदार से यह कब

हो सकता है कि जौ की रोटी और मोटा कपड़ा पहने और इन तनअ़ुमात का हाल यह है कि एक चीज़ दूसरे को खींचती है और शुदा शुदा इख़राजात में इज़ाफ़ा होता रहता है और आमदनी जब उनको काफ़ी नहीं होती, तो नाजायज़ तरीक़ों से माल हासिल करने की फ़िक्रें पैदा होने लगती हैं और निफ़ाक़ वग़ैरह बुरी आदात की बुनियाद इसी से पड़ती है कि माल की कसरत की वजह से मुलाक़ाती भी कसीर होंगे और उनके ताल्लुक़ात की बक़ा और हिफ़ाज़त के वास्ते इस क़िस्म के उमूर कसरत से पैदा होंगे और ताल्लुक़ात की कसरत में बुग़्ज़, अदावत, हसद, कीना वग़ैरह उमूर तरफ़ैन में कसरत से पैदा होंगे और ऐसे बे इंतिहा अवारिज़ आदमी के साथ लग जायेंगे, जिनसे माल के होते हुए ख़लासी दुश्वार है और ग़ौर करने से ये मज़र्रतें वसीअ पैमाने पर पहुँच जाती हैं और इन सब का पैदा होना माल ही के सबब से होता है।

(ज) और कम से कम इस बात से तो कोई भी मालदार ख़ाली नहीं हो सकता कि उसका दिल माल की सलाह व फ़लाह के ख़्याल में अल्लाह के ज़िक्र व फ़िक्र से ग़ाफ़िल रहेगा और जो चीज़ अल्लाह जल्ल शानुहू से ग़ाफ़िल कर दे, वह ख़सारा ही ख़सारा है। इसी वास्ते हज़रत ईसा अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलामु ने फ़रमाया कि माल में तीन आफ़तें हैं-

1. अव्वल यह है कि ना जायज़ तरीक़े से कमाया जाता है। किसी ने अर्ज़ किया कि अगर जायज़ तरीक़े से हासिल हो तो, आपने फ़रमाया कि बे जगह ख़र्च होता है। किसी ने अर्ज़ किया कि अगर अपने महल ही पर ख़र्च किया जाए तो, आपने फ़रमाया कि उसकी इस्लाह का फ़िक्र अल्लाह जल्ल शानुहू से तो मश्ग़ूल ही कर देगा और यह ला इलाज बीमारी है कि सारी इबादात का लुब्बे लुबाब और मग़्ज़ अल्लाह जल्ल शानुहू का ज़िक्र व फ़िक्र है और उसके लिए फ़ारिग़ दिल की ज़रूरत है और साहिबे जायदाद शख़्स दिन भर, रात भर, काश्तकारों के झगड़ों की सोच में रहता है, उनसे वसूली के हिसाब किताब में रहता है। शरीकों के मामलात की फ़िक्र में रहता है। कहीं उनके हिस्सों का झगड़ा है, कहीं उनसे पानी की बांट पर झगड़ा है, कहीं डोल बन्दियों में लड़ाई है और हुक्काम और उनके एलचियों का अलाहिदा क़िस्सा हर वक़्त का है, नौकरों, मजदूरों की ख़बरगीरी, उनके कामों की निगरानी एक मुस्तक़िल मश्ग़ला है। इसी तरह ताजिर का हाल है कि अगर शिरकत में तिजारत हो तो शरीकों की हरकतें हर वक़्त की एक मुस्तक़िल मुसीबत और मुस्तक़िल मश्ग़ला है और तंहा

तिजारत हो तो नफ़े के बढ़ने का फ़िक्र हर वक़्त, अपनी मेहनत में कोताही का ख़्याल, तिजारत में नुक़्सान का फ़िक्र ऐसे उमूर हैं जो हर वक़्त मुसल्लत रहते हैं। मशाग़िल के एतिबार से सब से कम वह ख़ज़ाना है जो नक़्द की सूरत में अपने पास हो, लेकिन उसकी हिफ़ाज़त और इज़ाअत (ज़ाया होने) का अंदेशा, चोरों का फ़िक्र और उसके ख़र्च करने के मसारिफ़ का फ़िक्र और जिन लोगों की निगाहें उसकी तरफ़ लगी रहती हैं, उनका ख़्याल, ऐसे तफ़क्कुरात हैं कि जिनकी कोई इंतिहा नहीं है और यही वे सब दुन्यवी मज़र्रात हैं जो माल के साथ लगी रहती हैं और जिसके पास बक़द्रे ज़रूरत हो वह इन सब फ़िक्रों से फ़ारिग़:-

लुगें ज़ेर व लुगें बाला!
ने ग़मे दुज़्द व ने ग़मे काला !!

एक लुंगी नीचे, एक लुंगी ऊपर, न चोर का डर, न पूंजी का (कि इसकी किस तरह हिफ़ाज़त करूँ? रोज़ अफ़्ज़ूं इख़राजात किस तरह पूरे करूँ?) पस माल का तिरयाक़ उसमें बक़द्रे ज़रूरत अपने ज़ाती मसारिफ़ में ख़र्च करने के बाद जो कुछ बचे, उसको ख़ैर के मसारिफ़ में ख़र्च कर देना है। इसके अलावा जो कुछ है, वह ज़हर ही ज़हर है, आफ़त ही आफ़त है। हक़ तआला शानुहू अपने लुत्फ़ व करम से इस ज़हर से इस नाकारा को भी महफ़ूज़ रखे और नेक मसरफ़ पर ख़र्च की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। *(एहया)*

इसकी मिसाल बिल्कुल सांप की सी है, जो लोग उसके पकड़ने के माहिर हैं, उसके तरीक़ों से वाक़िफ़ हैं, उनके लिए उसके पकड़ने में कोई नुक़्सान नहीं, बल्कि वे उस से तिरयाक़ बना सकते हैं और दूसरे फ़वाइद हासिल कर सकते हैं। लेकिन कोई ना वाक़िफ़ इन माहिरों की हिर्स कर के सांप को पकड़ेगा तो हलाक होगा। इसी तरह मुतमव्वल (मालदार) सहाबा-ए-किराम रज़ि० की हिर्स करके हम लोग अगर उस ज़हर का इस्तेमाल कसरत से करें तो हलाकत के सिवा कुछ नहीं है, और इन हज़राते सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन के मुताल्लिक़ महज़ एतिक़ादी बात नहीं, उनकी जिन्दगी का एक एक वाक़िआ इसकी खुली शहादत देता है कि उनके यहां इसकी वक़अत ईंधन से ज़्यादा न थी। उनके लिए इसका वजूद हक़ तआला शानुहू से ज़रा सी तवज्जोह भी हटाने वाला न था और इसके बावजूद वे इससे डरते रहते थे जैसा कि उनकी पूरी तारीख़ इस की शाहिद है।

"वल्लाहुल् मुवफ़्फ़िक़ु लिमा युहिब्बु व यर्ज़ा०"

तीसरी फ़स्ल

सिला-रहमी के बयान में

यह फ़स्ल दर हक़ीक़त पहली ही फ़स्लों का तितिम्मा है, लेकिन अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने पाक कलाम में और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने पाक इर्शादात में इस पर ख़ुसूसियत से ताकीदें फ़रमायी हैं और ताल्लुक़ात के तोड़ने पर ख़ुसूसी वईदें फ़रमायी हैं, इसलिए इस मज़्मून को एहतिमाम की वजह से मुस्तक़िल फ़स्ल में ज़िक्र किया है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि अहले क़राबत पर सदक़े का सवाब दो गुना है। (कंज़)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना रज़ि॰ ने एक बांदी आज़ाद की तो हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि अगर तुम उसको अपने मामुओं को दे देतीं तो वह अफ़ज़ल था। (कंज़)

लिहाज़ा सदक़ात के अंदर अगर कोई दीनी ज़रूरत अहम न हो तो आम सदक़े से अहले क़राबत पर सदक़ा करना अफ़ज़ल है, अलबत्ता अगर कोई दीनी ज़रूरत दरपेश हो तो अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने का सवाब सात सौ गुना तक हो जाता है।

क़ुरआन पाक में और अहादीस में बहुत कसरत से सिला-रहमी की तर्ग़ीबात और क़ता-रहमी पर वईदें आयी हैं। मगर ख़ौफ़ है इस रिसाले के बढ़ जाने का, इस लिए सिर्फ़ तीन आयात तर्ग़ीब की और तीन आयात वईद की ज़िक्र करके चंद अहादीस इस मज़्मून की ज़िक्र करता हूँ कि ज़रा भी तूल हो गया तो हम लोगों को उनके पढ़ने की भी फ़ुर्सत न मिलेगी, मगर ये सारे मज़ामीन इस क़दर अहम हैं कि बावजूद इख़्तिसार के भी यह रिसाला बढ़ता ही जा रहा है

और एक हिस्से के बजाए शायद दो हिस्से करने पड़ जाएं।

(١) اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ٥ (نحل ع ١٣)

1. बेशक अल्लाह जल्ल शानुहू एतिदाल का और एहसान का और अह्ले क़राबत को देने का हुक्म फ़रमाते हैं और मना करते हैं बेहयाई से और बुरी बात से और किसी पर ज़ुल्म करने से और तुमको (इन उमूर की) नसीहत फ़रमाते हैं ताकि तुम नसीहत क़ुबूल करो।

फ़ायदा:- हक़ तआला शानुहू ने क़ुरआन पाक में बहुत सी जगह अह्ले क़राबत की ख़ैर ख़्वाही, उनको देने का हुक्म और उसकी तर्ग़ीब फ़रमायी है। चंद आयात की तरफ़ यहां इशारा किया जाता है, जिसका दिल चाहे किसी मुतर्जम (तर्जुमे वाले) क़ुरआन शरीफ़ को लेकर देख ले।

وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّذِي الْقُرْبٰى (بقره ع ١٠)

"व बिल् वालिदैनि इह्सानंव् व ज़िल् क़ुर्बा॰"

(सूरः बक़रः रूकूअ् 10)

قُلْ مَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ (بقره ع ٢٦)

"क़ुल् मा अन्फ़क़्तुम् मिन् ख़ैरिन् फ़-लिल् वालिदैनि वल् अक़्र-बीन॰"

(बक़रः रूकूअ् 26)

وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّبِذِي الْقُرْبٰى (نساء ع ٦)

"व बिल् वालिदैनि इह्सानवं व बिज़िल् क़ुर्बा॰"

(निसा, रूकूअ् 6)

وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا (انعام ع ١٩)

"व बिल् वालिदैनि इह्सानन्॰" *(अन्आम, रूकूअ् 19)*

وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ ط (انفال ع ١٠)

"व उलुल् अर्हा मि बअ्ज़ुहुम् औला बिबअ्ज़िन् फ़ी किताबिल्लाहि॰"

(अन्फ़ाल, रूकूअ् 10)

لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ط يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ (يوسف ع ١٠)

"ला तस्री-ब अलैकुमुल् यौ-म यग्फ़िरुल्लाहु लकुम॰"

(यूसुफ़, रूकूअ् 10)

وَالَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ مَآاَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ (رعد ع ۳)

"वल्लज़ी-न यसिलू-न मा अ-म-रल्लाहु बिही अंय्यू-स-ल॰"

(रअ्द, रूकूअ् 3)

رَبَّنَا اغْفِرْلِيْ وَلِوَالِدَىَّ (ابراهيم ع ٦)

"रब्बनग्फ़िर् ली व लि वालिदय्-य॰" (इब्राहीम॰ रूकूअ् 6)

وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ط (بنی اسرآئيل ع ۳)

"व बिल् वालिदैनि इह्सानन्" (बनी इस्राईल, रूकूअ् 6)

وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ (بنی اسرآئيل ع ۳)

"वख़्फ़िज़् ल-हुमा जनाहज़्ज़ुल्लि॰" (बनी इस्राईल, रूकूअ् 3)

وَاٰتِ ذَاالْقُرْبٰى حَقَّهٗ (بنی اسرآئيل ع ۳)

"व आति ज़ल् क़ुर्बा हक़्क़-हू॰" (बनी इस्राईल, रूकूअ् 3)

وَكَانَ تَقِيًّا ۙ وَّبَرًّا ۢ بِوَالِدَيْهِ (مريم ع ۱)

"व का-न तक़िय्यंव् व बर्रम् बिवालिदै-हि॰" (मर्यम, रूकूअ् 1)

وَبَرًّا ۢ بِوَالِدَتِيْ (مريم ع ۲)

"व बर्रम् बिवालिद-ती॰" (मर्यम, रूकूअ् 2)

اِذْقَالَ لِاَبِيْهِ يٰۤاَبَتِ الخ (مريم ع ۳)

"इज़् क़ा-ल लि अबी-हि या अ-ब-ति" (मर्यम, रूकूअ् 3)

وَكَانَ يَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ ص (مريم ع ٤)

"व का-न यअ्मुरू अह्ल-हू बिस्सला-ति वज़्ज़का-ति॰"

(मर्यम रूकूअ् 4)

وَاْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ (طٰهٰ ع ۸)

"वअ्मुर अह्ल-क बिस्सलाति॰" (ताहा, रूकूअ् 8)

وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا (فرقان ع ٦)

"वल्लज़ी-न यक़ूलू-न रब्ब-ना हब् लना मिन् अज़्वाजिना व ज़ुर्रीय् यातिना॰" (फ़ुर्क़ान, रूकूअ् 6)

وَاَصْلِحْ لِیْ فِیْ ذُرِّیَّتِیْ ط (احقاف ع ۲)

"व अस्लिह् ली फ़ी ज़ुर्रियत-ती॰" (अह्क़ाफ़, रूकूअ 2)

رَبِّ اغْفِرْلِیْ وَلِوَالِدَیَّ (نوح ع ۲)

"रब्बिग़्फ़िर् ली व लिवालिदय्-य॰" (नूह, रूकूअ् 2)

ये चंद आयात नमूने के तौर पर ज़िक्र की गयीं कि सब के लिखने में और तर्जुमे में तूल का डर था। ये उन तीन आयात के अलावा हैं जो मुफ़स्सल यहां ज़िक्र की गयीं। इनके अलावा और भी आयात मिलेंगी। जिस चीज़ को अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने पाक कलाम में बार बार इर्शाद फ़रमाया हो, उसकी अहमियत का क्या पूछना?

हज़रत कअब अहबार रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि क़सम है उस पाक ज़ात की, जिसने समुन्दर को हज़रत मूसा अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम और बनी इस्राईल के लिए दो टुकड़े कर दिया था। तौरात में लिखा है कि अल्लाह से डरता रह और सिला-रहमी करता रह, मैं तेरी उम्र बढ़ा दूँगा। सहूलत की चीज़ों में तेरे लिए सहूलत पैदा कर दूँगा, मुश्किलात को दूर कर दूँगा। हक़ तआला शानुहू ने क़ुरआन पाक में कई जगह सिला-रहमी का हुक्म किया है। चुनांचे इर्शाद है -

وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ط (نسآء ع ۱)

"वत्त-क़ुल्ला हल्लज़ी तसा अलू-न बिही वल् अर्हा-म॰"
(निसा, रूकूअ् 1)

यानी अल्लाह तआला शानुहू से डरते रहो, जिससे कि अपनी हाजत तलब करते हो और रिश्तों से डरते रहो यानी उनको जोड़ते रहो, तोड़ो नहीं।

दूसरी आयत में इर्शाद है -

وَاٰتِ ذَاالْقُرْبٰی حَقَّهٗ

"व आति ज़ल् क़ुर्बा हक़्क़-हू॰"

यानी रिश्तेदार का जो हक़ नेकी और सिला-रहमी का है, वह अदा करते रहो।

तीसरी जगह इर्शाद है –

إِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ

"इन्नल्ला-ह यअ्मुरू बिल अद्लि वल एहसान॰"

यानी अल्लाह जल्ल शानुहू तौहीद का और "ला इला-ह इल्लल्लाहु" की शहादत का हुक्म फ़रमाते हैं और लोगों के साथ एहसान करने का और उनसे दर गुज़र करने का हुक्म फ़रमाते हैं। और रिश्तेदारों को देने का यानी सिला-रहमी का हुक्म फ़रमाते हैं, तीन चीज़ों का हुक्म फ़रमाने के बाद तीन चीज़ों से मना किया है। फ़ह्श से यानी गुनाह से और मुन्कर से यानी ऐसी बात से, जिसकी शरीअत में और सुन्नत में असल न हो, और ज़ुल्म से यानी लोगों पर तअल्ली से फिर, फ़रमाया कि अल्लाह इन चीज़ों की तुमको नसीहत फ़रमाते हैं ताकि तुम नसीहत क़ुबूल करो।

हज़रत उस्मान बिन मज़ऊन रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ से मुझे मुहब्बत थी और उसी की शर्म में मुसलमान हुआ था कि हुज़ूर सल्ल॰ मुझसे मुसलमान होने को फ़रमाते थे, इस वजह से मैं मुसलमान हो गया, लेकिन इस्लाम मेरे दिल में न जमा था। एक मर्तबा मैं हुज़ूर सल्ल॰ के पास बैठा हुआ कुछ बातें कर रहा था कि मुझसे बातें करते करते हुज़ूर सल्ल॰ किसी दूसरी तरफ़ ऐसे मुतवज्जह हो गये जैसे किसी और से बातें कर रहे हों। थोड़ी देर बाद मेरी तरफ़ मुतवज्जह हुए और इर्शाद फ़रमाया कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम फिर आये थे और यह आयते शरीफ़ा "इन्नल्ला-ह यअ्मुरू बिल अद्लि" आख़िर तक नाज़िल हुई। मुझे इस मज़्मून से बहुत मसर्रत हुई और इस्लाम मेरे दिल में जम गया। मैं वहां से उठकर हुज़ूर सल्ल॰ के चचा अबू तालिब के पास गया, (जो मुसलमान न थे) उनसे जाकर मैं ने कहा कि मैं तुम्हारे भतीजे के पास था। उन पर इस वक़्त यह आयत नाज़िल हुई। वह कहने लगे मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का इत्तिबाअ करो, फ़लाह को पहुँचोगे। ख़ुदा की क़सम, वह अपनी नुबुव्वत के दावे में सच्चे हों या झूठे, लेकिन तुम्हें तो अच्छी आदतों की ही तालीम और करीमाना अख़्लाक़ सिखाते हैं। *(तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)*

यह ऐसे शख़्स की नसीहत है, जो ख़ुद मुसलमान भी नहीं, मगर वह भी इसका इक़रार करते हैं कि नुबुव्वत का दावा सच्चा हो या झूठा, लेकिन इस्लाम की तालीम बेहतरीन तालीम है, वह करीमाना अख़्लाक़ सिखाती है मगर

अफ़सोस कि आज हम मुसलमानों ही के अख़्लाक़ सब से ज़्यादा गिरे हुए हैं।

(٢) وَلَا يَأْتَلِ أُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ أَنْ يُؤْتُوا أُولِي الْقُرْبَى وَالْمَسٰكِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ فِي سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا ۗ أَلَا تُحِبُّوْنَ أَنْ يَغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ○ (نور ع ٣)

फ़ायदा:- यह आयते शरीफ़ा और इसका तर्जुमा पहली फ़स्ल की नं॰ 18 पर गुज़र चुका है, मुझे इसके इआदे (लौटाने) से इस पर तंबीह करना मक़्सूद है कि हम लोग अपने उन अस्लाफ़ के मामूलात पर भी ग़ौर करें और हक़ तआला शानुहू की इस तर्ग़ीब पर भी। कितना सख़्त और अहम वाक़िआ है कि हुज़ूर सल्ल॰ की बीवी सारे मुसलमानों की मां; उन पर औलाद की तरफ़ से बे-बुनियाद तोहमत लगायी जाये और उसको फैलाने वाले वो क़रीबी रिश्तेदार हों, जिनका गुज़र औक़ात भी उनके बाप ही की इआनत पर हो, इस पर बाप यानी हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ को जिस क़दर भी रंज और सदमा हो वह ज़ाहिर है, इस पर भी अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से यह तर्ग़ीब कि माफ़ करें और दर गुज़र करें और हज़रते सिद्दीक़ अक्बर रज़ि॰ की तरफ़ से यह अमल कि जितना पहले ख़र्च करते थे, उसमें इज़ाफ़ा फ़रमाया जैसा कि पहले गुज़र चुका है। क्या हम भी अपने रिश्तेदारों के साथ ऐसा मामला कर सकते हैं कि कोई हम पर इल्ज़ाम रखे, हमारे घर वालों को ऐसी सख़्त चीज़ के साथ मुत्तहम करे और फिर हम क़ुरआन पाक की इस आयते शरीफ़ा को तिलावत करें और उस रिश्तेदार की क़राबत पर निगाह रखते हुए किसी क़िस्म की इआनत (मदद) उसकी गवारा कर लें। हाशा व कल्ला ! उम्र भर की उसी से नहीं उस की औलाद से भी दुश्मनी बंध जाएगी। बल्कि जो दूसरे रिश्तेदार उससे ताल्लुक़ रखेंगे उनका भी बाईकाट कर देंगे और जिस किसी तक़रीब में वे शरीक होंगे, मजाल है कि हम उसमें शिर्कत कर लें। क्यों, फ़क़त इसलिए कि ये लोग ऐसे शख़्स की तक़रीब में या दावत में शरीक हो गये, जिसने हमें गाली दे दी, हमारी आबरू गिरा दी, हमारी बहू बेटी पर तोहमत लगा दी, चाहे ये लोग उस गाली देने वाले के फ़ेल से कितने ही नाराज़ हों, मगर उसकी तक़रीब में शिर्कत के जुर्म में उनसे भी हमारा क़ता ताल्लुक़ है। अल्लाह तआला का पाक इर्शाद यह है कि हम ख़ुद भी उसकी इआनत से हाथ न रोकें। और हमारा अमल यह है कि कोई दूसरा भी उसकी दावत कर दे तो हम उस दूसरे से भी ताल्लुक़ मुंक़ता

कर दें। लेकिन जिनके दिल में हक़ीक़ी ईमान है, अल्लाह जल्ल शानुहू की अज़्मत उन में रासिख़ है। उसके पाक इर्शाद की उनको वक़अत है, उन्होंने इस पर अमल करके दिखा दिया कि इताअत करना इसको कहते हैं, मुतीअ ऐसे होते हैं। अल्लाह जल्ल शानुहू अपनी आली शान के मुवाफ़िक़ उन पर रहमतें नाज़िल फ़रमाये और उनकी शान के मुवाफ़िक़ उनके दरजात बुलन्द फ़रमाये, आख़िर यह भी जज़्बात रखते थे, ग़ैरत हमिय्यत रखते थे, उनके सीनों में दिल और उसमें जज़्बात भी थे, लेकिन अल्लाह जल्ल शानुहू की रिज़ा के सामने कैसा दिल और कहाँ के जज़्बात, कैसी ग़ैरत और कहाँ की बदनामी, अल्लाह की रिज़ा के मुक़ाबले में सब चीज़ फ़ना थी।

(٣) وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسَانًا ط حَمَلَتْهُ أُمُّهُ كُرْهًا وَّوَضَعَتْهُ كُرْهًا ط وَحَمْلُهُ وَفِصَالُهُ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا ط حَتّٰى إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهُ وَبَلَغَ أَرْبَعِيْنَ سَنَةً قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِيْ أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْ أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰهُ وَأَصْلِحْ لِيْ فِيْ ذُرِّيَّتِيْ ط إِنِّيْ تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝ أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّاٰتِهِمْ فِيْٓ أَصْحٰبِ الْجَنَّةِ ط وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ۝ (احقاف ع ٢)

3. और हमने इंसान को अपने मां बाप के साथ नेक सुलूक करने का हुक्म दिया, (बिल खुसूस मां के साथ एहसान का और भी ज़्यादा, क्योंकि) उसकी मां ने बड़ी मशक़्क़त के साथ उसको पेट में रखा और बड़ी मशक़्क़त के साथ उसको जना और उसको पेट में रखने और दूध छुड़ाने में (अक्सर कम से कम) तीस महीने हो जाते हैं, (कितनी तवील मशक़्क़त है) यहां तक कि बच्चा जब जवान होता है (और दानाई के ज़माना) में चालीस वर्ष को पहुँचता है तो (जो सईद होता है वह) कहता है, ऐ मेरे, परवरदिगार ! मुझे इस पर मुदावमत दीजिए कि मैं उन नेमतों का शुक्र अदा करूँ। जो आपने मुझको और मेरे वालिदैन को अता फ़रमाईं, (और इस की तौफ़ीक़ दीजिए कि) मैं ऐसे नेक काम किया करूँ, जिनसे आप राज़ी हो जाएं और मेरी औलाद में भी मेरे (नफ़ा के) लिए सलाहियत पैदा फ़रमायें। मैं (अपने सारे गुनाहों से) तौबा करता हूँ और मैं आपके फ़रमांबरदारों में से हूँ। (आगे हक़ तआला शानुहू इन लोगों

के मुताल्लिक़ फ़रमाते हैं कि) यही लोग हैं जिनके नेक कामों को हम क़ुबूल कर लेंगे और उनकी बुराईयों से दरगुज़र करेंगे इस तरह पर कि ये जन्नत वालों में से होंगे, यह उस वायदे की वजह से है, जिसका उन से इस दुनिया में वायदा किया जाता था, (कि नेक आमाल का सिला जन्नत है।)

फ़ायदाः- हक़ ताआला शानुहू ने अह्ले क़राबत और वालिदैन के बारे में बार बार ताकीद फ़रमायी जैसा कि पहली आयते शरीफ़ा के ज़ैल में भी गुज़र चुका। इस आयते शरीफ़ा में ख़ास तौर से वालिदैन के बारे में एहसान की ख़ुसूसी ताकीद फ़रमायी कि हमने वालिदैन के साथ भलाई का हुक्म दिया है। यह मज़्मून इसी उन्वान से कि हमने "वालिदैन के साथ भलाई का हुक्म दिया है" तीन जगह क़ुरआन पाक में वारिद है- पहली जगह सूरः अन्कबूत रूकूअ् 1 में, फिर सूरः लुक्मान रूकूअ् 2 में, तीसरी मर्तबा यहाँ जिस से बहुत ज़्यादा ताकीद मालूम होती है।

साहिबे ख़ाज़िन रह० ने लिखा है कि यह आयते शरीफ़ा हज़रत अबूबक्र रज़ि० की शान में नाज़िल हुई कि इब्तिदाअन उनकी रिफ़ाक़त हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ शाम के सफ़र में हुई थी। जबकि उनकी उम्र 18 साल की थी और हुज़ूर सल्ल० की उम्र शरीफ़ 20 साल की थी। इस सफ़र में रास्ते में एक बेरी के दरख़्त के पास इन दोनों हज़रात का क़ियाम हुआ। हज़रत अबूबक्र रज़ि० वहां एक राहिब था उससे मिलने तशरीफ़ ले गये और हुज़ूर सल्ल० दरख़्त के साए में तशरीफ़ फ़रमा रहे। उस राहिब ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० से पूछा कि यह शख़्स जो दरख़्त के नीचे है कौन है? आपने फ़रमाया, मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब। राहिब ने कहा, ख़ुदा की क़सम! यह नबी है, हज़रत ईसा (अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलामु) के बाद से इस दरख़्त के नीचे कोई नहीं बैठा। यही नबी-ए-आख़िरूज़्ज़मां हैं। जब हुज़ूर सल्ल० की उम्र शरीफ़ चालीस साल की हुई और आपको नुबुव्वत मिली तो हज़रत अबूबक्र रज़ि० मुसलमान हुए और दो साल बाद जब आप की उम्र शरीफ़ बयालीस साल की हुई तो यह दुआ की "रब्बि औज़िअ्नी" कि मुझे तौफ़ीक़ दीजिए कि मैं उस नेमत का शुक्र अदा करूँ जो मुझ पर और मेरे वालिदैन पर हुई।

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू फ़रमाते हैं कि यह फ़ज़ीलत मुहाजिरीन

में और किसी को हासिल नहीं हुई कि उसके मां बाप दोनों मुसलमान हुए हों और दूसरी दुआ औलाद के मुताल्लिक़ सलाहियत की फ़रमायी, जिसका समरा यह है कि आपकी औलाद भी मुसलमान हुई। (ख़ाज़िन)

सबसे पहली आयत सूरः अंकबूत वाली और भी ज़्यादा सख़्त है कि उसमें उन वालिदैन के साथ भलाई का हुक्म है जो काफ़िर हों और जब काफ़िर वालिदैन के साथ भी हक़ तआला शानुहू की तरफ़ से अच्छा बर्ताव और भलाई करने का हुक्म है तो मुसलमान वालिदैन के साथ भलाई और एहसान की ताकीद बतरीक़े औला।

हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जब मैं मुसलमान हुआ तो मेरी मां ने यह अह्द कर लिया कि मैं न खाना खाऊँगी, न पानी पियूँगी, जब तक कि तू मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दीन से न फिरेगा। उसने खाना पीना छोड़ दिया हत्ताकि ज़बरदस्ती उस के मुंह में डाला जाता था। इस पर यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई। (दुर्रे मंसूर)

इब्रत का मक़ाम है कि ऐसी सख़्त हालत में भी अल्लाह पाक का इर्शाद है कि हमने आदमी को अपने वालिदैन के साथ भलाई का हुक्म दिया है, अलबत्ता अगर वे मुश्रिक बनाने की कोशिश करें तो इसमें इताअत नहीं है।

हज़रत हसन रज़ि॰ से किसी ने पूछा कि वालिदैन के साथ नेकी करने की क्या मिक़्दार है। उन्होंने फ़रमाया कि जो कुछ तेरी मिल्क में है उन पर ख़र्च करे और जो वे हुक्म करें उसकी इताअत करे सिवाए इसके कि वे किसी गुनाह का हुक्म करें कि उसमें इताअत नहीं है।

यह थी इस्लाम की तालीम, मुसलमानों का अमल कि मुश्रिक वालिदैन अगर औलाद को मुश्रिक बनाने की कोशिश भी करें तब भी उन के साथ भलाई का हुक्म है। अलबत्ता शिर्क करने में उनकी इताअत और फ़रमांबरदारी नहीं, इसलिए कि यह ख़ालिक़ का हक़ है, वालिदैन का हक़ ख़्वाह कितना ही क्यों न हो जाए, मालिक के हक़ के मुक़ाबले में किसी का हक़ नहीं है। "ला ताअ-त लिल मख़्लूक़ि फ़ी मअ़सिय-तिल् ख़ालि-क़ि" (ख़ालिक़ की ना-फ़रमानी में मख़्लूक़ की कोई इताअत नहीं) लेकिन उन के इस हुक्म और औलाद को मुश्रिक बनाने की कोशिश पर भी उनके साथ एहसान का भलाई का हुक्म है।

एक और हदीस में सूरः लुक़्मान वाली आयत के मुताल्लिक़ वारिद

हुआ है कि यह हज़रत सअद रज़ि॰ के वाक़िए में नाज़िल हुई। उस हदीस में हज़रत सअद रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मैं अपनी वालिदा के साथ बहुत सुलूक किया करता था। जब मैं मुसलमान हो गया तो मेरी वालिदा ने कहा, सअद ये क्या किया? या तो इस दीन को छोड़ दे, वरना मैं खाना पीना छोड़ दूँगी, यहां तक कि मर जाऊँगी। हमेशा तेरे लिए यह तान की चीज़ रहेगी, लोग तुझे अपनी मां का क़ातिल कहेंगे। मैं ने उनसे कहा कि ऐसा न करें, मैं अपना दीन तो नहीं छोड़ सकता। उसने एक दिन बिल्कुल न खाया, न पिया, दूसरा दिन भी इसी हाल में गुज़र गया, तो मैं ने उससे कहा कि अगर तुम्हारी सौ जानें हों और एक एक करके सब ख़त्म हो जाएं, तब भी दीन तो छोड़ नहीं सकता। जब उसने यह पुख़्तगी देखी तो खाना पीना शुरू कर दिया। *(दुर्रे मंसूर)*

इस आयते शरीफ़ा में वालिदैन के साथ नेक सुलूक का हुक्म है। फ़क़ीह अबुल्लैस फ़रमाते हैं कि अगर हक़ तआला शानुहू वालिदैन के हक़ का हुक्म न भी फ़रमाते तब भी अक़्ल से यह बात समझ में आती है कि उनका हक़ बहुत ज़रूरी है और अहम है, चे-जाएकि अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपनी सब किताबों, तौरात, इंजील, ज़बूर, क़ुरआन शरीफ़ में उनके हक़ का हुक्म फ़रमाया, तमाम अंबिया-ए-किराम को उनके हक़ के बारे में वही भेजी और ताकीद फ़रमायी। *(तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)*

ये तीन आयात हुस्ने सुलूक के मुताल्लिक़ थीं, इसके बाद सिर्फ़ तीन आयात बद सुलूकी पर तंबीह के मुताल्लिक़ भी ज़िक्र करता हूँ।

(١) وَمَا يُضِلُّ بِهٖٓ اِلَّا الْفٰسِقِيْنَ o الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ ۚ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ o (بقره ع٣)

1. और नहीं गुमराह करते अल्लाह तआला शानुहू इस मिसाल से (जिस का पहली आयत में ज़िक्र हुआ) मगर ऐसे फ़ासिक़ लोगों को जो तोड़ते रहते हैं उस मुआहदे को जो अल्लाह तआला से कर चुके थे, इस मुआहदे की पुख़्तगी के बाद और क़ता करते रहते हैं उन ताल्लुक़ात को, जिनके वाबस्ता रखने का अल्लाह तआला ने हुक्म दिया था और फ़साद करते रहते हैं ज़मीन में, यही लोग हैं ख़सारे वाले।

फ़ायदा:- जैसा कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने क़ुरआन पाक में कई जगह

सिला-रहमी बिल्खुसूस वालिदैन के हुक़ूक़ की रिआयत का हुक्म और तर्ग़ीब फ़रमायी जैसा कि ऊपर गुज़रा, इसी तरह से बहुत सी जगह अपने पाक कलाम में कता-रहमी, बिलख़ुसूस वालिदैन के साथ बद सुलूकी पर तंबीह भी फ़रमायी। पहले की तरह से इनमें से भी चंद आयात का हवाला लिखता हूं। दोस्तो ग़ौर करो, अल्लाह के पाक कलाम में जब बार बार इस पर तंबीह है तो इसको सोचो और इब्रत हासिल करो अल्लाह का पाक इर्शाद है -

وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ط (نسآء ع ۱)

"वत्तक़ुल्लाहल्लज़ी तसा-अलू-न बिही वल् अर्हा-म॰"

(निसा रूकूअ् 1)

وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ مِّنْ اِمْلَاقٍ ط (انعام ع ۱۹)

"व ला तक़्तुलू औलाद कुम मिन् इम्लाक़॰"

(अन आम रूकूअ् 19)

وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ ط (بنی اسرآئیل ع ۴)

"व ला तक़्तुलू औलाद कुम ख़श्य-त इम्लाक़॰"

(बनी इस्राईल, रूकूअ् 4)

وَالَّذِیْ قَالَ لِوَالِدَیْهِ (احقاف ع ۲)

"वल्लज़ी क़ा-ल लिवालि दैहि॰" *(अह्क़ाफ़, रूकूअ 3)*

اَنْ تُفْسِدُوْا فِی الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْٓا اَرْحَامَكُمْ (محمد ع ۳)

"अन् तुफ़्सिदू फ़िल् अर्ज़ि व तुक़त्तिअू अर्हा-म कुम॰"

(सूर: मुहम्मद, रूकूअ् 3)

हज़रत मुहम्मद बाक़र रह॰ को उनके वालिद ने जो ख़ास तौर से एहतिमाम से वसीयत फ़रमायी है जो पहली फ़स्ल की अहादीस के सिलसिले में नं॰ 23 पर भी गुज़र चुकी है, वह बहुत तजुर्बे की बात है, वह इर्शाद फ़रमाते हैं कि मुझे मेरे वालिद हज़रत ज़ैनुल आबिदीन रह॰ ने वसीयत फ़रमाई है कि पांच क़िस्म के आदमियों के पास न फटक्ना, उन से बात न कीजियो, हत्ताकि रास्ते चलते हुए इत्तिफ़ाक़न भी उनके साथ न चलना।

1. अव्वल फ़ासिक़ शख़्स कि वह एक लुक्मे के बदले में तुझको बेच

देगा, बल्कि एक लुक्मे से कम में भी, मैं ने पूछा कि एक लुक्मे से कम में किस तरह बेचेगा? फ़रमाने लगे कि महज़ लुक्मे की उम्मीद पर तुझको बेच देगा और वह लुक्मा उसको मयस्सर भी न होगा।

2. दूसरे बख़ील कि वह तेरी सख़्त एहितयाज के वक़्त भी तेरे से किनारा कश हो जायेगा।

3. तीसरे झूठा शख़्स कि वह बालू (धोखा) की तरह से तुझे धोखे में रखेगा, जो चीज़ दूर होगी, उसको क़रीब बतायेगा, जो क़रीब होगी उसको दूर ज़ाहिर करेगा।

4. चौथे बेवक़ूफ़ के पास न लगना कि वह तुझे नफ़ा पहुँचाने का इरादा करेगा, तब भी अपनी हिमाक़त से नुक़्सान पहुँचा देगा। मसल मशहूर है कि दाना (अक़्लमन्द) दुश्मन नादान दोस्त से बेहतर है।

5. पांचवें क़ता-रहमी करने वाले के पास न जाईयो कि मैं ने क़ुरआन पाक में तीन जगह उस पर अल्लाह की लानत पायी है। *(रौज़)*

(٢) وَالَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ
وَيُفْسِدُوْنَ فِى الْاَرْضِ اُولٰٓئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ (رعد ع ٣)

2. और जो लोग अल्लाह तआला के मुआहदे को उसकी पुख़्तगी के बाद तोड़ते हैं और अल्लाह तआला ने जिन ताल्लुक़ात के जोड़ने का हुक्म फ़रमाया, उनको तोड़ते हैं और दुनिया में फ़साद करते हैं, यही लोग हैं जिन पर लानत है और उनके लिए उस जहां में ख़राबी है।

फ़ायदा:- हज़रत क़तादा रज़ि॰ से नक़ल किया गया कि इससे बहुत एहतिराज़ करो कि अहद करके तोड़ दो, अल्लाह जल्ल शानुहू ने इसको बहुत नापसंद किया है और 20 आयतों से ज़ायद में इस पर वईद फ़रमायी है, जो नसीहत के तौर पर और ख़ैर ख़्वाही के तौर पर और हुज्जत क़ायम करने के लिए वारिद हुई है। मुझे मालूम नहीं कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने अह्द के तोड़ने पर जितनी वईदें फ़रमायी हैं, उससे ज़ायद किसी और चीज़ पर फ़रमायी हों, पस जो शख़्स अल्लाह के वास्ते से अह्द कर ले, उसको ज़रूर पूरा करे।

हज़रत अनस रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम ने ख़ुत्बे में फ़रमाया कि जो शख़्स अमानत को अदा न करे, उस का ईमान ही नहीं और जो अह्द को पूरा न करे, उसका दीन नहीं।

हज़रत अबूअमामा रज़ि॰ और हज़रत उबादा रज़ि॰ से भी यह मज़्मून नकल किया गया। (दुर्रे मंसूर)

हज़रत मैमून बिन महरान रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि तीन चीज़ें ऐसी हैं कि उनमें काफ़िर मुसलमान की कोई तफ़रीक़ नहीं, सब का हुक्म बराबर है।

1. अव्वल जिससे मुआहदा किया जाए, उसको पूरा किया जाए, चाहे वह मुआहदा काफ़िर से किया हो या मुसलमान से, इसलिए कि अह्द हक़ीक़त में अल्लाह तआला से है।

2. दूसरे जिस से रिश्ते का ताल्लुक़ हो, उसकी सिला-रहमी की जाए, चाहे वह रिश्तेदार मुसलमान हो या काफ़िर हो।

3. तीसरे जो शख़्स अमानतें रखवाए उसकी अमानत वापस की जाए, चाहे अमानत रखवाने वाला मुसलमान हो या काफ़िर। *(तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)*

क़ुरआन पाक में बहुत सी आयात के अलावा एक जगह ख़ास तौर से इसी का हुक्म है।

وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُوْلًا ۝ (بنی اسرآئیل ع ٤)

"व औफ़ू बिल् अह्दि इन् नल् अह्-द का-न मस्ऊ-ला॰"

(बनी इस्राईल, रूकूअ् 4)

"अहद को पूरा किया करो, बेशक अहद की बाज़पुर्स (पूछताछ) होगी"

हज़रत क़तादा रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जिन ताल्लुक़ात को जोड़ने का हुक्म फ़रमाया, उससे रिश्तेदारियां क़रीब की और दूर की मुराद हैं। (दुर्रे मंसूर)

दूसरी चीज़ ताल्लुक़ात के तोड़ने के मुताल्लिक़ इर्शाद फ़रमायी है।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह॰ फ़रमाते हैं कि जो शख़्स क़राबत के ताल्लुक़ात को तोड़ने वाला हो, उससे मेल जोल पैदा न कीजियो कि मैं ने क़ुरआन पाक में दो जगह उन लोगों पर लानत पायी है, एक इस आयते शरीफ़ा में, दूसरे सूरः मुहम्मद में। (दुर्रे मंसूर)

सूरः मुहम्मद की आयते शरीफ़ा का हवाला क़रीब ही गुज़र चुका है

जिस में क़ता-रहमी के बाद इर्शाद फ़रमाया है, यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की है। फिर (उनको अल्लाह तआला ने अपने अह्काम सुनने से) बहरा कर दिया और (राहे हक़ देखने से) अंधा कर दिया।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० ने दो जगह लानत का लफ़्ज़ फ़रमाया और हज़रत ज़ैनुल आबिदीन रह० ने जैसा कि अभी गुज़रा है, तीन जगह फ़रमाया। इसकी वजह शायद यह हो कि दो जगह तो लानत ही का लफ़्ज़ है, सूरः रअद् में और सूरः मुहम्मद में और तीसरी जगह इनको गुमराह और ख़सारे वाला फ़रमाया है, जो लानत ही के क़रीब है, जैसा कि इससे पहले नम्बर पर सूरः बक़रः की आयत में अभी गुज़रा है।

हज़रत सुलैमान रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद नक़ल करते हैं कि जिस वक़्त कि क़ौल ज़ाहिर हो जाये और अमल ख़ज़ाने में चला जाए यानी तक़रीरें तो बहुत होने लगें, मज़ामीन बहुत कसरत से लिखे जायें लेकिन अमल नदारद हो जाए, गोया मुक़फ़्फ़ल रखा हुआ है और ज़बानी इत्तिफ़ाक़ तो आपस में हो जाए, लेकिन क़ुलूब मुख़्तलिफ़ हों और रिश्तेदार आपस के ताल्लुक़ात तोड़ने लगें, तो उस वक़्त में अल्लाह जल्ल शानुहू उनको अपनी रहमत से दूर कर देते हैं और अंधा बहरा कर देते हैं।

(दुर्रे मंसूर)

कि फिर न सीधा रास्ता उनको नज़र आता है, न हक़ बात उनके कानों में पहुँचती है।

हज़रत हसन रज़ि० से भी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नक़ल किया गया कि जब लोग उलूम को ज़ाहिर करें और अमल को ज़ाया कर दें और ज़बानों से मुहब्बत ज़ाहिर करें और दिलों में बुग्ज़ रखें और क़ता-रहमी करने लगें तो अल्लाह जल्ल शानुहू उस वक़्त उनको अपनी रहमत से दूर कर देते हैं और अंधा बहरा कर देते हैं कि फिर न सीधा रास्ता उनको नज़र आता है, न हक़ बात उनके कानों में पहुँचती है।

एक हदीस में आया है कि जन्नत की ख़ुश्बू इतनी दूर तक जाती है कि वह रास्ता पांच सौ साल में तय हो, वालिदैन की ना-फ़रमानी करने वाला और क़ता रहमी करने वाला जन्नत की ख़ुश्बू भी नहीं सूँघ सकेगा। *(एह्या)*

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबीऔफ़ा रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम अर्फ़ा की

शाम को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हल्क़े के तौर पर चारों तरफ़ बैठे थे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि मज्मे में कोई शख़्स क़ता-रहमी करने वाला हो तो वह उठ जाए, हमारे पास न बैठे। सारे मज्मे में से सिर्फ़ एक साहब उठे, जो दूर बैठे हुए थे और फिर थोड़ी देर में वापस आकर बैठ गये। हुज़ूर सल्ल० ने उनसे दर्याफ़्त फ़रमाया कि मेरे कहने पर मज्मे में से सिर्फ़ तुम उठे थे और फिर आकर बैठ गये, यह क्या बात है? उन्होंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद सुनकर मैं अपनी ख़ाला के पास गया था और उसने मुझसे क़ता ताल्लुक़ कर रखा था। मेरे जाने पर उसने कहा कि तू ख़िलाफ़े आदत कैसे आ गया? मैं ने उससे आप का इर्शादे मुबारक सुनाया। उसने मेरे लिए दुआ-ए-मग़्फ़िरत की। मैं ने उसके लिए दुआ-ए-मग़्फ़िरत की। (और आपस में सुलह करके वापस हाज़िर हो गया) हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया तुमने बहुत अच्छा किया, बैठ जाओ, उस क़ौम पर अल्लाह की रहमत नाज़िल नहीं होती, जिस में कोई क़ता-रहमी करने वाला हो।

फ़क़ीह अबुल्लैस रह० ने इसको नक़ल किया है, लेकिन साहिबे कंज़ रह० ने इसके एक रावी के मुताल्लिक़ इब्ने मुईन से किज़्ब (झूठ) की निस्बत नक़ल की है। *(कंज़)*

फ़क़ीह अबुल्लैस रह० फ़रमाते हैं, कि इस क़िस्से से मालूम हुआ कि क़ता-रहमी इतना सख़्त गुनाह है कि उसकी वजह से उसके पास बैठने वाले भी अल्लाह की रहमत से महरूम हो जाते हैं, इसलिए ज़रूरी है कि जो शख़्स इस में मुब्तला हो, वह इससे तौबा करे और सिला रहमी का एहतिमाम करे।

हुज़ूर सल्ल० का पाक इर्शाद है कि कोई नेकी जिस का सवाब बहुत जल्दी मिलता हो, सिला रहमी से बढ़ कर नहीं है। और कोई गुनाह जिस का वबाल दुनिया में उसके अलावा मिले, जो आख़िरत में मिलेगा, क़ता-रहमी और ज़ुल्म से बढ़कर नहीं है। *(तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)*

मुतअद्दद रिवायात में यह मज़्मून वारिद हुआ है कि क़ता-रहमी का वबाल आख़िरत के अलावा दुनिया में भी पहुँचता है और आख़िरत में बुरे ठिकाने का तो ख़ुद इस आयते शरीफ़ा ही में ज़िक्र है।

फ़क़ीह अबुल्लैस रह० ने एक अजीब क़िस्सा लिखा है, वह फ़रमाते हैं कि मक्का मुकर्रमा में एक नेक शख़्स अमानतदार ख़ुरासान के रहने वाले थे। लोग उनके पास अपनी अमानतें रखवाया करते थे। एक शख़्स उनके पास दस

हज़ार अशर्फ़ियां अमानत रखवा कर अपनी किसी ज़रूरत से सफ़र में चला गया। जब वह सफ़र से वापस आया तो इन ख़ुरासानी का इंतिक़ाल हो चुका था। उनके अह्ल व अयाल से अपनी अमानत का हाल पूछा। उन्होंने ला इल्मी ज़ाहिर की। उनको बड़ा फ़िक्र हुआ कि बहुत बड़ी रक़म थी। उलमा-ए-मक्का मुकर्रमा से कि इत्तिफ़ाक़ से उस वक़्त एक मज्मा उनका मौजूद था, मस्अला पूछा कि मुझे क्या करना चाहिए। उन्होंने कहा कि वह आदमी तो बड़ा नेक था, हमारे ख़्याल में जन्नती आदमी था। तू एक तर्कीब कर। जब आधी या तिहाई रात गुज़र जाए जो ज़मज़म के कुएं पर जाकर उसका नाम लेकर पुकार के उससे दर्याफ़्त कर। उसने तीन दिन तक ऐसा ही किया। वहां से कोई जवाब न मिला। उसने फिर जाकर उलमा से तज़्किरा किया। उन्होंने "इन्ना लिल्लाह" पढ़ा और कहा कि हमें तो डर यह हो गया कि वह शायद जन्नती न हो, तू फ़लां जगह जा, वहां एक वादी है, जिस का नाम बरहूत है, उसमें एक कुआं है। उस कुएं पर आवाज़ दे। उसने ऐसा ही किया। वहां से पहली ही आवाज़ में जवाब मिला कि तेरा माल वैसा ही महफ़ूज़ रखा है, मुझे अपनी औलाद पर इत्मीनान न हुआ, इसलिए मैं ने फ़लां जगह मकान के अंदर गाड़ दिया है। मेरे लड़के से कह कि तुझे उस जगह पहुँचा दे। वहां से ज़मीन खोद कर उसको निकाल ले। चुनांचे उसने ऐसा ही किया और माल मिल गया। उस शख़्स ने वहां बहुत ताज्जुब से उससे यह भी दर्याफ़्त किया कि तू तो बहुत नेक आदमी था, तू यहां क्यों पहुँच गया? कुएं से आवाज़ आयी कि ख़ुरासान में मेरे कुछ रिश्तेदार थे, जिनसे मैं ने क़ता-ताल्लुक़ कर रखा था। इसी हाल में मेरी मौत आ गयी। उसकी गिरफ़्त में मैं यहां पकड़ा हुआ हूँ। *(तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)*

हज़रत अली रज़ि॰ से नक़ल किया गया कि सब से बेहतरीन वादी तमाम वादियों में मक्का मुकर्रमा की वादी है और हिन्दुस्तान की वह वादी, जहां हज़रत आदम अलैहिस्सलाम जन्नत से उतरे थे, उसी जगह उन ख़ुश्बुओं की कसरत है, जिनको लोग इस्तेमाल करते हैं और बदतरीन वादी अह्क़ाफ़ है और वादी हज़रमौत जिसको बरहूत कहते हैं। और सब से बेहतरीन कुआं दुनिया में ज़मज़म का है और बदतरीन कुआं बरहूत का है। जिस में कुफ़्फ़ार की रूहें जमा होती हैं। *(दुर्रे मंसूर)*

इन रूहों का किसी वक़्त इन मवाक़े में होना शरआी हुज्जत नहीं है, कश्फ़ी उमूर से ताल्लुक़ रखता है, जो हक़ तआला शानुहू जिस पर चाहे किसी

वक़्त मुंकशिफ़ फ़रमा देते हैं, लेकिन कश्फ़ शरअी हुज्जत नहीं है।

(۳) اِمَّا یَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَا اَوْ كِلٰهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَا اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ۝ وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ۝ رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ ۚ اِنْ تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا ۝ (بنی اسرائیل ع ۳)

3. अगर वे (यानी मां बाप) तेरे सामने (यानी तेरी ज़िंदगी में) बुढ़ापे को पहुँच जायें चाहे एक उनमें से पहुँचे या दोनों (और बुढ़ापे की बाज़ बातें जवानों को गरां होने लगती हैं और इस वजह से उनकी कोई बात तुझे गरां होने लगे,) तब भी उनसे कभी "हूँ" भी मत करना और न उनसे झिड़क कर बोलना, उनसे ख़ूब अदब से बात करना और उनके सामने शफ़्क़त से, इंकिसारी के साथ झुके रहना और यों दुआ करते रहना कि ऐ हमारे परवरदिगार ! तू इन पर रहमत कर जैसा कि इन्होंने बचपन में मुझे पाला है (और सिर्फ़ ज़ाहिर दारी ही नहीं, बल्कि दिल से उनका एहतिराम करना) तुम्हारा रब तुम्हारे दिल की बात को ख़ूब जानता है, अगर तुम सआदतमंद हो (और ग़लती से कोई बात ख़िलाफ़े अदब सरज़द हो जाए और तुम तौबा कर लो) तो वह तौबा करने वालों की ख़ताएं बड़ी कसरत से माफ़ करने वाला है।

फ़ायदा:- हज़रत मुजाहिद रह॰ से इसकी तफ़सीर में नक़ल किया गया कि अगर वे बूढ़े हो जाएं और तुम्हें उनका पेशाब पाख़ाना धोना पड़ जाए, तो कभी उफ़ भी न करो, जैसा कि वे बचपन में तुम्हारा पेशाब पाख़ाना धोते रहे हैं।

हज़रत अली रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि अगर बे अदबी में उफ़ कहने से कोई अदना दर्जा होता तो अल्लाह जल्ल शानुहू उसको भी हराम फ़रमा देते। हज़रत हसन रज़ि॰ से किसी ने पूछा कि ना फ़रमानी की मिक़दार क्या है? उन्होंने फ़रमाया कि माल से उनको महरूम रखे और मिलना छोड़ दे और उनकी तरफ़ तेज़ निगाह से देखे।

हज़रत हसन रज़ि॰ से किसी ने पूछा कि उनसे "क़ौले करीम" का क्या

मतलब है? उन्होंने फ़रमाया कि उनको "अम्मां-अब्बा" करके खिताब करे, उनका नाम न ले।

हज़रत ज़ुबैर बिन मुहम्मद रज़ि॰ से इसकी तफ़्सीर में नक़ल किया गया कि जब वे पुकारें तो "हाज़िर हूँ, हाज़िर हूँ" से जवाब दे।

हज़रत क़तादा रज़ि॰ से नक़ल किया गया कि नर्मी से बात करें।

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रज़ि॰ से किसी ने अर्ज़ किया कि क़ुरआन पाक में हुस्ने सुलूक का हुक्म तो बहुत जगह है, और मैं उसको समझ गया, लेकिन "क़ौले करीम" का मतलब समझ में नहीं आया, तो उन्होंने फ़रमाया जैसा कि बहुत सख़्त मुजरिम गुलाम सख़्त मिज़ाज आक़ा से बात करता है।

हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में एक शख़्स हाज़िर हुए, उनके साथ एक बड़े मियां भी थे। हुज़ूर सल्ल॰ ने उनसे पूछा कि यह कौन हैं? उन्होंने अर्ज़ किया यह मेरे वालिद हैं। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि इनसे आगे न चलना, इनसे पहले न बैठना, इनका नाम लेकर न पुकारना और इनको बुरा न कहना।

हज़रत उर्वः रज़ि॰ से किसी ने पूछा कि क़ुरआन पाक में उनके सामने झुकने का हुक्म फ़रमाया है, इसका क्या मतलब है? उन्होंने फ़रमाया कि अगर वह कोई बात तेरी ना गवारी की कहें तो तिरछी निगाह से उनको मत देख कि आदमी की नागवारी अव्वल उसकी आंख से ही पहचानी जाती है।

हज़रत आइशा रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल करती हैं कि जिस ने अपने बाप की तरफ़ तेज निगाह कर के देखा, वह फ़रमांबरदार नहीं है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूर सल्ल॰ से दर्याफ़्त किया कि अल्लाह के नज़दीक सबसे ज़्यादा पसंदीदा अमल क्या है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि नमाज़ का अपने वक़्त पर पढ़ना। मैं ने अर्ज़ किया कि इसके बाद कौन सा अमल है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करना। मैं ने अर्ज़ किया, इस के बाद? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि जिहाद।

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद वारिद है कि अल्लाह की

रिज़ा वालिद की रिज़ा में है और अल्लाह की नाराज़ी वालिद की नाराज़ी में है।
(दुर्रे मंसूर)

साहिबे मज़ाहिर रह० ने लिखा है कि मां बाप के हुक़ूक़ में है कि ऐसी तवाज़ो और तमल्लुक़ करे और अदा-ए-ख़िदमत करे कि वे राज़ी हो जाएं, जायज़ कामों में उनकी इताअत करे, बे अदबी न करे, तकब्बुर से पेश न आये, अगरचे वे काफ़िर ही हों, अपनी आवाज़ को उनकी आवाज़ से बुलंद न करे, उनको नाम लेकर न पुकारे, किसी काम में उनसे पहल न करे अम्र बिल मारूफ़, (अच्छे काम का हुक्म करने) और नही अनिल मुन्कर[1] में नर्मी करे। एक बार कहे, अगर वे क़ुबूल न करें तो ख़ुद सुलूक करता रहे और उनके लिए दुआ व इस्तिग़्फ़ार करता रहे और यह बात क़ुरआन पाक से निकाली है, यानी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम की अपने बाप को नसीहत करने से।
(मज़ाहिर, तब्दीली के साथ)

यानी हज़रत इब्राहीम अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने एक मर्तबा नसीहत करने के बाद कह दिया था कि अच्छा, अब मैं अल्लाह से तुम्हारे लिए दुआ करता हूं, जैसा कि सूरः मरयम के तीसरे रूकूअ में आया है, हत्ताकि बाज़ उलमा ने लिखा है कि उनकी इताअत हराम में तो ना जायज़ है, लेकिन मुश्तब्ह उमूर में वाजिब है, इसलिए कि मुश्तब्ह उमूर से एह्तियाते तक़्वा और उनकी रिज़ा जोई वाजिब है, पस अगर उनका माल मुश्तब्ह हो और वे तेरे अलाहिदा खाने से मुकद्दर (नाराज़) हों तो उनके साथ खाना चाहिए।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं, कोई मुसलमान ऐसा नहीं, जिसके वालिदैन हयात (ज़िन्दा) हों और वह उनके साथ अच्छा सुलूक करता हो, उसके लिए जन्नत के दरवाज़े न खुल जाते हों और अगर उनको नाराज़ कर दे तो अल्लाह जल्ल शानुहू उस वक़्त तक राज़ी नहीं होते, जब तक उनको राज़ी न कर ले। किसी ने अर्ज़ किया कि अगर वे ज़ुल्म करते हों? इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया, अगरचे वे ज़ुल्म करते हों।

हज़रत तल्हा रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में एक शख़्स हाज़िर हुए और जिहाद में शिर्कत की

1. यानी भलाईयों को फैलाने और बुराईयों से रोकने में नर्मी से काम लें।

दर्ख़्वास्त की। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, तुम्हारी वालिदा ज़िंदा हैं? उन्होंने अर्ज़ किया, ज़िंदा हैं। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि उनकी ख़िदमत को मज़बूत पकड़ लो। जन्नत उनके पांव के नीचे है। फिर दोबारा और तिबारा हुज़ूर सल्ल॰ ने यही इर्शाद फ़रमाया।

हज़रत अनस रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरा जिहाद को बहुत दिल चाहता है, लेकिन मुझमें क़ुदरत नहीं। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया तुम्हारे वालिदैन में से कोई ज़िन्दा हैं? उन्होंने अर्ज़ किया, वालिदा ज़िंदा हैं? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि उनके बारे में अल्लाह से डरते रहो। (यानी उनके हुक़ूक़ की अदाएगी में फ़त्वा से आगे बढ़कर तक़्वा पर अमल करते रहो) जब तुम ऐसा करोगे तो तुम हज करने वाले भी हो, उमरा करने वाले भी हो, जिहाद करने वाले भी हो यानी जितना सवाब इन चीज़ों में मिलता है, उतना ही तुम्हें मिलेगा।

हज़रत मुहम्मद बिन मुन्कदिर रह॰ कहते हैं कि मेरा भाई उमर तो नमाज़ पढ़ने में रात गुज़ारता था, और मैं वालिदा के पांव दबाने में रात गुज़ारता था, मुझे इसकी कभी तमन्ना न हुई कि उनकी रात (का सवाब) मेरी रात के बदले में मुझे मिल जाए।

हज़रत आइशा रज़ि॰ कहती हैं कि मैं ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दर्याफ़्त किया कि औरत पर सब से ज़्यादा हक़ किसका है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि ख़ाविंद का। मैं ने फिर पूछा कि मर्द पर सबसे ज़्यादा हक़ किसका है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया मां का।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि तुम लोगों की औरतों के साथ अफ़ीफ़ (पाक दामन) रहो, तुम्हारी औरतें भी अफ़ीफ़ रहेंगी। तुम अपने वालिदैन के साथ नेकी का बर्ताव करो, तुम्हारी औलाद तुम्हारे साथ नेकी का बर्ताव करेगी। (दुर्रे मंसूर)

हज़रत ताऊस रह॰ कहते हैं कि एक शख़्स के चार बेटे थे, वह बीमार हुआ। उन बेटों में से एक ने अपने तीन भाईयों से कहा कि अगर तुम बाप की तीमारदारी इस शर्त पर करो कि तुम को बाप की मीरास में से कुछ नहीं मिलेगा, तो तुम करो, वरना मैं इस शर्त पर तीमारदारी करता हूँ कि मीरास से कुछ न लूँगा। वे इस पर राज़ी हो गये कि तू ही इस शर्त पर तीमारदारी कर, हम नहीं

करते। उसने खूब ख़िदमत की, लेकिन बाप का इंतिक़ाल ही हो गया और शर्त के मुवाफ़िक़ उसने कुछ न लिया। रात को ख़्वाब में देखा, कोई शख़्स कहता है, फ़लां जगह सौ दीनार अशर्फ़ियां गड़ी हुई हैं वे तू ले ले। उसने ख़्वाब ही में दर्याफ़्त किया कि उनमें बरक़त भी होगी? उसने कहा कि उनमें बरकत नहीं है, सुबह को बीवी से ख़्वाब का ज़िक्र किया। उसने उनके निकालने पर इस्रार किया। उसने न माना। दूसरे दिन फिर ख़्वाब देखा, जिसमें किसी ने दूसरी जगह दस दीनार बताए। उसने फिर वही बरकत का सवाल किया। उसने कहा कि बरकत उनमें नहीं है। उसने सुबह को बीवी से इसका भी ज़िक्र किया। उसने फिर इस्रार किया, मगर उसने न माना। तीसरे दिन उसने फिर ख़्वाब देखा कोई शख़्स कहता है, फ़लां जगह जा, वहां तुझे एक दीनार (अशर्फ़ी) मिलेगा, वह ले ले। उसने फिर वही बरकत का सवाल किया। उस शख़्स ने कहा। हां उसमें बरकत है। यह ज़ाकर वह दीनार ले आया और बाज़ार में जाकर उससे दो मछलियां ख़रीदीं जिनमें से हर एक के अन्दर से एक ऐसा मोती निकला, जिस क़िस्म का उम्र भर किसी ने नहीं देखा था। बादशाहे वक़्त ने उन दोनों को बहुत इस्रार से नब्बे ख़च्चरों के बोझ के बक़द्र (बराबर) सोने से ख़रीदा।

अहादीस

(١) عن ابی هريرةؓ قال قال رجل يا رسول الله من احق بحسن صحابتی قال امك قال ثم من قال امك قال ثم من قال امك قال ثم من قال ابوك وفی رواية قال امك ثم امك ثم امك ثم اباك ثم ادناك فادناك متفق عليه

1. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किसी ने दर्याफ़्त किया कि मेरे बेहतरीन ताल्लुक़ात (एहसान, सुलूक) का सबसे ज़्यादा मुस्तहिक़ कौन है? हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया मां। फिर दोबारा तिबारा मां को ही बताया। फिर फ़रमाया कि बाप, फिर दूसरे रिश्तेदार, अल अक़रब फ़ल, अक़रब (जो जितना क़रीब हो उतना ही मुक़द्दम है।)

फ़ायदा:- इस हदीस शरीफ़ से बाज़ उलमा ने इस्तिंबात किया है कि हुस्ने सुलूक और एहसान में मां का हक़ तीन हिस्से है और बाप का एक हिस्सा, इसलिए कि हुज़ूर सल्ल० ने तीन मर्तबा मां को बताकर चौथी मर्तबा बाप को बताया। इस की वजह उलमा यह बताते हैं कि औलाद के लिए मां तीन

मशक़्क़तें बर्दाश्त करती है। हमल की, जनने की, दूध पिलाने की। इसी वजह से फ़ुक़्हा ने इसकी तस्रीह की है कि एहसान और सुलूक में मां का हक़ बाप पर मुक़द्दम है। अगर कोई शख़्स ऐसा हो कि वह अपनी नादारी की वजह से दोनों के साथ सुलूक नहीं कर सकता, तो मां के साथ सुलूक करना मुक़द्दम है, अल बत्ता एज़ाज़ और अदब ताज़ीम में बाप का हक़ मां पर मुक़द्दम है।

(मज़ाहिरे हक़)

और यह भी ज़ाहिर है कि औरत होने की वजह से मां एहसान की ज़्यादा मुहताज होती है, और इन दोनों के बाद दूसरे रिश्तेदार हैं जिस की क़राबत जितनी क़रीब होगी, उतना ही मुक़द्दम होगा।

एक हदीस में है कि अपनी मां के साथ हुस्ने सुलूक की इब्तिदा करो, उसके बाद बाप के साथ, फिर बहिन के साथ फिर भाई के साथ "अल अक़्रबु फ़ल अक़्रबु" और अपने पड़ोसियों और हाजतमंदों को न भूलना। *(कंज़)*

हज़रत बह्ज़ बिन हकीम रह॰ अपने दादा से नक़ल करते हैं कि उन्होंने हुज़ूर सल्ल॰ से नक़ल किया कि हुज़ूर सल्ल॰! मैं सुलूक व एहसान किस के साथ करूँ? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, अपनी मां के साथ। उन्होंने फिर यही दर्याफ़्त फ़रमाया। हुज़ूर सल्ल॰ ने फिर यही जवाब दिया। इसी तरह तीसरी मर्तबा भी, चौथी मर्तबा में हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि बाप के साथ, उसके बाद फिर दूसरे रिश्तेदार, जो जितना क़रीब हो, उतना ही मुक़द्दम है।

एक और हदीस में है कि एक शख़्स हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया मुझे कोई हुक्म दें ताकि तामीले इर्शाद करूँ। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि अपनी मां के साथ एहसान करो। दूसरी और तीसरी मर्तबा के बाद हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि बाप के साथ एहसान करो।

(दुर्रे मंसूर)

एक हदीस में है कि तीन चीज़ें ऐसी हैं, जिसमें ये पायी जाएं, हक़ तआला शानुहू मरने के वक़्त को उस पर आसान कर देते हैं, और जन्नत में उसको दाख़िल कर देते हैं। ज़ईफ़ पर मेहरबानी, वालिदैन पर शफ़्क़त और मातहतों पर एहसान। *(मिश्कात)*

(٢) عن انسؓ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من احب ان يبسط لهٗ فى رزقه وينسالهٗ فى اثره فليصل رحمهٗ متفق عليه كذا فى المشكوٰة

2. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स यह चाहता है कि उसके रिज़्क़ में वुसअत की जाए और उसके निशानाते क़दम में ताख़ीर की जाए, उसको चाहिए कि सिला-रहमी करे।

फ़ायदा:- निशानाते क़दम में ताख़ीर किये जाने से उम्र की दराज़ी मुराद ली जाती है, इसलिए कि जिस शख़्स की जितनी उम्र ज़्यादा होगी, उतने ही ज़माने तक उसके चलने से निशानाते क़दम ज़मीन पर पड़ेंगे, और जो मर गया, उसके पांव का निशान ज़मीन से मिट गया, इस पर यह इश्काल किया जाता है कि उम्र हर शख़्स की मुतअय्यन है। क़ुरआन पाक में कई जगह यह मज़्मून सराहत से मज़्कूर है कि हर शख़्स का एक मुक़र्ररा वक़्त है, जिस में एक साअत की न तो तक़्दीम हो सकती है, न ताख़ीर हो सकती है, इस वजह से दराज़ी-ए-उम्र को बाज़ उलमा ने वुसअते रिज़्क़ की तरह से बरकत पर महमूल फ़रमाया है कि उसके औक़ात में इस क़दर बरकत होती है कि जो काम दूसरे लोग दिनों में करते हैं वह घंटों में कर लेता है और जिस काम को दूसरे लोग महीनों में करते हैं, वह दिनों में कर गुज़रता है, और बाज़ उलमा ने दराज़ी-ए-उम्र से उसका ज़िक्रे ख़ैर मुराद लिया है कि बहुत दिनों तक उसके कारनामों के निशानात और ज़िक्रे ख़ैर जारी रहता है।

बाज़ उलमा ने लिखा है कि उसकी औलाद में ज़्यादती होती है, जिसका सिलसिला उसके मरने के बाद देर तक रहता है और यही वुजूह इसकी हो सकती हैं। जब नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने, जिनका क़ौल सच्चा है, इर्शाद बर हक़ है, इसकी इत्तिला दी है। तो सूरत उसकी जो भी हो उसका हासिल होना यक़ीनी है और अल्लाह जल्ल शानुहू की पाक ज़ात क़ादिरे मुतलक़ और मुसब्बिबुल अस्बाब है, उसको अस्बाब पैदा करना क्या मुश्किल है। वह हर चीज़ का, जिसको वह करना चाहे, ऐसा सबब पैदा कर देता है कि आक़िलों की अक़्लें दंग रह जाती हैं, इसलिए इसमें न कोई इश्काल है, न कोई मानेअ है। *(मज़ाहिर)*

मुक़द्दरात का मसअला अपनी जगह पर अटल है लेकिन इस दुनिया को अल्लाह जल्ल शानुहू ने दारुल अस्बाब बनाया है और हर चीज़ के लिए ज़ाहिरी या बातिनी सबब पैदा किया है। अगर हैज़ा के बीमार के लिए हकीम, डाक्टर वग़ैरह के लिए एक एक मिनट में आदमी दौड़ सकता है कि शायद इस दवा से फ़ायदा हो, उस दवा से फ़ायदा हो, क्यों? ताकि उम्र बाक़ी रहे। हालांकि वह

एक मुक़र्ररा, मुतअय्यना चीज़ है फिर कोई वजह नहीं कि बक़ा-ए-उम्र के लिए उससे ज़्यादा जिद्दो जुहद सिला-रहमी में न की जाए, इसलिए कि उसका बक़ा और तूले उम्र के लिए सबब होना यक़ीनी है। और ऐसे हकीम का इर्शाद है, जिसके नुस्ख़े में न कमी ग़लती हुई हो और इन मामूली हकीम डाक्टरों के नुस्ख़ों और तश्ख़ीस में गलतियों के सैकड़ों एहतिमालात हैं।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह पाक इर्शाद जो ऊपर गुज़रा, मुख़्तलिफ़ अहादीस में मुख़्तलिफ़ उन्वानात से वारिद हुआ है, इसलिए इसमें तरद्दुद नहीं।

एक हदीस में हज़रत अली रज़ि॰ से नक़ल किया गया कि जो शख़्स एक बात का ज़िम्मा ले ले, मैं उसके लिए चार बातों का ज़िम्मा ले लेता हूं। जो शख़्स सिला-रहमी करे, उसकी उम्र दराज़ होती है, अइज़्ज़ा उस से मुहब्बत करते हैं, रिज़्क़ में उसके वुसअत होती है और जन्नत में दाख़िल होता है। (कंज़)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ से फ़रमाया कि तीन बातें बिल्कुल हक़ (और पक्की) हैं

1. जिस शख़्स पर ज़ुल्म किया जाए और वह चश्मपोशी करे, उसकी इज़्ज़त बढ़ती है।

2. जो शख़्स माल की ज़्यादती के लिए सवाल करे, उसके माल में कमी होती है

3. जो शख़्स अता और सिला-रहमी का दरवाज़ा खोल दे, उसके माल में कसरत होती है। (दुर्रे मंसूर)

फ़क़ीह अबुल्लैस रह॰ फ़रमाते हैं कि सिला-रहमी में दस चीज़ें क़ाबिले मदह (तारीफ़) हैं:-

1. अव्वल यह है कि उसमें अल्लाह जल्ल शानुहू अम्म नवालुहू की रिज़ा व ख़ुश्नूदी है कि अल्लाह पाक का हुक्म सिला-रहमी का है।

2. दूसरे रिश्तेदारों पर मसर्रत पैदा करना है और हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद है कि अफ़ज़ल तरीन अमल मोमिन को ख़ुश करना है।

3. तीसरे इस से फ़रिश्तों को भी बहुत मसर्रत होती है।

4. चौथे मुसलमानों की तरफ़ से उस शख़्स की मदद और तारीफ़ होती है

5. पांचवें शैतान (उस पर लानत हो) को इस से बड़ा रंज व ग़म होता है।

6. छठे इसकी वजह से उम्र में ज़्यादती होती है।

7. सातवें रिज़्क़ में बरकत होती है।

8. आठवें मुर्दों को इससे मसर्रत होती है कि बाप दादा जिनका इंतिक़ाल हो गया, उनको जब इसकी ख़बर होती है तो उनको बड़ी खुशी इससे हासिल होती है।

9. नवें आपस के ताल्लुक़ात में इस से कुव्वत होती है। जब तुम किसी की मदद करोगे, उस पर एहसान करोगे, तुम्हारी ज़रूरत और मशक़्क़त के वक़्त में वह दिल से तुम्हारी इआनत (मदद) करने का ख़्वाहिशमंद होगा।

10. दसवें मरने के बाद तुम्हें सवाब मिलता रहेगा कि जिसकी भी तुम मदद करोगे, तुम्हारे मरने के बाद वह हमेशा तुम्हें याद करके दुआ-ए-ख़ैर करता रहेगा।

हज़रत अनस रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन रहमान के अर्श के साए में तीन क़िस्म के आदमी होंगे।

1. एक सिला-रहमी करने वाला कि उसके लिए दुनिया में भी उस की उम्र बढ़ायी जाती है, रिज़्क़ में भी वुसअत की जाती है और उसकी क़ब्र में भी वुसअत कर दी जाती है।

2. दूसरे वह औरत जिसका ख़ाविंद मर गया हो और वह छोटी औलाद की परवरिश की ख़ातिर उनके जवान होने तक निकाह न करे ताकि उनकी परवरिश में मुश्किलात पैदा न हों।

3. तीसरे वह शख़्स जो खाना तैयार करे और यतीमों मसाकीन को दावत करे।

हज़रत हसन रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल करते हैं कि दो क़दम अल्लाह के यहां बहुत महबूब हैं:-

1. एक वह क़दम जो फ़र्ज़ नमाज़ अदा करने के लिए उठा हो।

2. दूसरा वह क़दम जो किसी मेहरम की मुलाक़ात के लिए उठा हो।

कुछ उलमा ने लिखा है कि पांच चीज़ें ऐसी हैं कि जिन पर दवाम और इस्तिक़्लाल से अल्लाह जल्ल शानुहू के यहां ऐसी नेकियां मिलती हैं, जैसे कि ऊँचे ऊँचे पहाड़ और उनकी वजह से रिज़्क़ में भी वुसअत होती है –

1. एक सदक़े की मुदावमत थोड़ा हो या ज़्यादा,
2. दूसरे सिला-रहमी पर मुदावमत, चाहे क़लील हो या कसीर,
3. तीसरे अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना,
4. चौथे हमेशा बा वुज़ू रहना,
5. पांचवे वालिदैन की फ़रमांबरदारी पर मुदावमत करना।

(तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)

एक हदीस में आया है कि जिस अमल का सवाब और बदला सबसे जल्दी मिलता है, वह सिला-रहमी है। बाज़ आदमी गुनाहगार होते हैं, लेकिन सिला-रहमी की वजह से उनके मालों में भी बरकत होती है और उनकी औलाद में भी। *(एहया)*

एक हदीस में है कि सदक़ा तरीक़े के मुवाफ़िक़ करना और मारूफ़ (भलाई) का इख़्तियार करना, वालिदैन के साथ एहसान करना और सिला-रहमी आदमी को बद-बख़्ती से नेक बख़्ती की तरफ़ फेर देता है, उम्र में ज़्यादती का सबब है और बुरी मौत से हिफ़ाज़त है। *(कंज़)*

उम्र और रिज़्क़ में ज़्यादती जितनी कसरत से रिवायात में ज़िक्र की गयी है, उसका नमूना मालूम हो गया और ये दोनों चीज़ें ऐसी हैं, जिन पर हर शख़्स मरता है और दुनिया की सारी कोशिशें इन्हीं दो चीज़ों की ख़ातिर हैं। हुज़ूर सल्ल॰ ने इन दोनों के लिए बहुत सहल तद्बीर बता दी कि सिला-रहमी किया करें, दोनों तमन्नाएं हासिल होंगी। अगर हुज़ूर सल्ल॰ के इर्शाद के हक़ होने पर यक़ीन है तो फिर उम्र और रिज़्क़ की ज़्यादती के ख़्वाहिशमंदों को इस नुस्ख़े पर ज़्यादा से ज़्यादा अमल करना चाहिए और जो मयस्सर हो, अक़रबा पर ख़र्च करना चाहिए कि रिज़्क़ में ज़्यादती के वायदे से उसका बदला भी मिलेगा, और उम्र में इज़ाफ़ा मुफ़्त में है।

(۳) عن ابن عمرؓ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ان من ابر البر صلۃ الرجل اھل ودابیہ بعد ان یولی رواہ مسلم کذا فی المشکوٰۃ

3. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि बाप के साथ हुस्ने सुलूक का आला दर्जा यह है कि उसके चले जाने के बाद उसके साथ ताल्लुक़ात रखने वालों के साथ हुस्ने सुलूक करे।

फ़ायदा:- "चले जाने" से मुराद आरज़ी चला जाना भी हो सकता है और मुस्तक़िल चला जाना यानी मर जाना भी हो सकता है। और यह दर्जा बढ़ा हुआ इसलिए है कि ज़िन्दगी में तो उसके दोस्तों के साथ हुस्ने सुलूक में अपने ज़ाती अग़राज़ का शायबा भी हो सकता है कि उनके साथ ताल्लुक़ की कुव्वत और अच्छा सुलूक उन अग़राज़ के पूरा होने में मुईन (मददगार) होगा जो वालिद से वाबस्ता हैं। लेकिन बाप के मरने के बाद उनके साथ सुलूक और एहसान करना अपने ज़ाती अग़राज़ से बाला तर होता है। इस में बाप का एहतिराम ख़ालिस रह जाता है।

एक हदीस में है, इब्ने दीनार रह० कहते हैं कि हज़रत इब्ने उमर रज़ि० मक्का के रास्ते में तशरीफ़ ले जा रहे थे, रास्ते में एक बद्दू जाता हुआ नज़र पड़ गया। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने उसको अपनी सवारी दे दी और अपने सरे मुबारक से अमामा उतार कर उसकी नज़्र कर दिया। इब्ने दीनार रह० ने अर्ज़ किया कि हज़रत ! यह शख़्स तो इससे कम दर्जा एहसान पर भी बहुत ख़ुश हो जाता (आपने अमामा भी दे दिया और सवारी भी) हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया कि इसका बाप मेरे बाप के दोस्तों में था और मैं ने हुज़ूर सल्ल० से यह सुना कि बेहतरीन सिला आदमी का अपने बाप के दोस्तों पर एहसान करना है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं मदीना तय्यिबा हाज़िर हुआ तो हज़रत इब्ने उमर रज़ि० मुझसे मिलने तशरीफ़ लाये और यह फ़रमाया कि तुम्हें मालूम है, मैं क्यों आया हूँ? मैं ने हुज़ूर सल्ल० से सुना है कि जो शख़्स चाहे कि अपने बाप के साथ उसकी क़ब्र में सिला-रहमी करे, उसको चाहिए कि अपने बाप के दोस्तों के साथ अच्छा सुलूक करे और मेरे बाप उमर रज़ि० म और तुम्हारे वालिद में दोस्ती थी, इसलिए आया हूँ। *(तर्ग़ीब)*

कि दोस्त की औलाद भी दोस्त ही होती है।

एक और हदीस में है, हज़रत अबू उसैद मालिक बिन रबीअः रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर थे। क़बीला बनू सलमा के एक साहब हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, या

रसूलल्लाह! मेरे वालिदैन के इंतिक़ाल के बाद उनके साथ हुस्ने सुलूक का कोई दर्जा बाक़ी है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, हां, हां। उनके लिए दुआएं करना, उनकी मग़्फ़िरत की दुआ मांगना, उनके अह्द को, जो किसी से कर रखा हो, पूरा करना और उनके रिश्तेदारों के साथ हुस्ने सुलूक करना, उनके दोस्तों का एहतिराम करना। (*मिश्कात*)

एक और हदीस में इस क़िस्से के बाद है, उस शख़्स ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह, यह कैसी बेहतरीन और बढ़िया बात है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया तो फिर इस पर अमल करो। (*तर्ग़ीब*)

(٤) عن انسؓ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ان العبد ليموت والده او احدهما وانه لهما لعاق فلا يزال يدعو لهما ويستغفر لهما حتى يكتبه الله بارًا رواه البيهقي في الشعب كذا في المشكوٰة .

4. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जिस शख़्स के मां बाप दोनों या उनमें से कोई एक मर जाए और वह शख़्स उनकी नाफ़रमानी करने वाला हो, तो अगर वह उनके लिए हमेशा, दुआ-ए-मग़्फ़िरत करता रहे, इसके अलावा उनके लिए और दुआएं करता रहे तो वह शख़्स फ़रमांबरदारों में शुमार हो जाएगा।

फ़ायदा:- यह अल्लाह तआला का किस क़दर इनआम व एहसान और लुत्फ़ व करम है कि वालिदैन की ज़िन्दगी में बसा औक़ात नागवार उमूर पेश आ जाने से दिलों में मैल आ जाता है, लेकिन जितना भी रंज हो जाए, वालिदैन ऐसी चीज़ नहीं, जिनके मरने के बाद भी दिलों में रंज रहे, उनके एहसानात याद आकर आदमी बेताब न हो जाए। लेकिन अब वह मर गये, अब क्या तलाफ़ी हो सकती है? अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने फ़ज़्ल से उसका दरवाज़ा भी खोल दिया कि उनके मरने के बाद अब उनके लिए दुआएं करे, उनकी मग़्फ़िरत को अल्लाह से मांगता रहे। उनके लिए ईसाले सवाब, जानी और माली करता रहे कि यह अब उनकी ज़िन्दगी के ज़माने में, जो उनके हुक़ूक़ ज़ाया हुए हैं, उसकी तलाफ़ी कर देगा और बजाए ना-फ़रमानों में शुमार होने के फ़रमांबरदारों में शुमार हो जाए। यह अल्लाह तआला का किस क़दर एहसान है कि हाथ से वक़्त निकल जाने के बाद भी उसका रास्ता खोल दिया। किस क़दर बे-ग़ैरती और दिली क़सावत होगी, अगर इस मौक़े को भी हाथ से खो दिया जाए। ऐसा कौन

होगा जिससे हमेशा वालिदैन की रिज़ा ही के काम होते रहे हों और अदा-ए-हुक़ूक़ में कोताही तो कुछ न कुछ होती ही है। अगर अपना मामूल और कोई ज़ाब्ता ऐसा मुक़र्रर कर लिया जाए, जिससे उनको सवाब पहुँचता रहे, तो किस क़दर आला चीज़ हासिल हो सकती है?

एक हदीस में है कि जो शख़्स अपने वालिदैन की तरफ़ से हज करे, तो यह उनके लिए हज्जे बदल हो सकता है, उनकी रूह को आसमान में उस की ख़ुशख़बरी दी जाती है और यह शख़्स अल्लाह के नज़दीक फ़रमांबरदारों में शुमार होता है, अगरचे पहले से ना फ़रमान हो।

एक और रिवायत में है कि जो शख़्स अपने वालिदैन में से किसी की तरफ़ से हज करे तो उनके लिए एक हज का सवाब होता है और हज करने वाले के लिए नौ हजों का सवाब होता है। *(रहमतुल मवद्दत)*

अल्लामा ऐनी रह० ने शरहे बुख़ारी में एक हदीस नक़ल की है कि जो शख़्स एक मर्तबा यह दुआ पढ़े –

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَلَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ لِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَلَهُ الْعَظَمَةُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ هُوَ الْمَلِكُ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَرَبُّ الْاَرْضِ رَبُّ الْعَالَمِيْنَ وَلَهُ النُّوْرُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ.

"अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आल-मी-न रब्बिस्समावाति वल् अर्ज़ि रब्बिल आल-मी-न वल-हुल् किब्रिया-उ फ़िस्समावाति वल् अर्ज़ि व हुवल् अज़ीज़ुल हकीमु लिल्लाहिल हम्दु रब्बिस्समावाति व रब्बिल् अर्ज़ि रब्बिल आल-मी-न व ल-हुल् अज़्म-तु फ़िस्समावाति वल अर्ज़ि व हुवल् अज़ीज़ुल् हकीमु हुवल् मलिकु रब्बुस्समावाति व रब्बुल अर्ज़ि व रब्बुल आल-मी-न व लहुन्नू-रू फ़िस्समावाति वल अर्ज़ि व हुवल् अज़ीज़ुल हकीम०"

और इसके बाद यह दुआ करे कि या अल्लाह, इसका सवाब मेरे वालिदैन को पहुँचा दे, उसने वालिदैन का हक़ अदा कर दिया।

एक और हदीस में है कि आदमी अगर कोई नफ़्ली सदक़ा करे तो इसमें क्या हरज है कि उसका सवाब अपने वालिदैन को बख़्श दिया करे, बशर्ते कि वे मुसलमान हों कि इस सूरत में उनको सवाब पहुँच जाएगा और सदक़ा करने वाले के सवाब में कोई कमी न होगी। (कंज़)

इस हदीस शरीफ़ के मुवाफ़िक़ कुछ करना भी नहीं पड़ता जो कुछ भी किसी मौक़े पर ख़र्च किया जाए, उसका सवाब अपने वालिदैन को पहुँचा दिया करे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि० फ़रमाते हैं, उस पाक ज़ात की क़सम जिसने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हक़ बात के साथ भेजा है, यह अल्लाह के पाक कलाम में है कि जो शख़्स तेरे बाप के साथ सिला-रहमी करता हो तू उसके साथ क़ता-रहमी न कर, इससे तेरा नूर जाता रहेगा।

एक हदीस में है कि जो अपने वालिदैन की या उनमें से एक की क़ब्र की हर जुमा को ज़ियारत करे, उसकी मग़्फ़िरत की जाएगी और वह फ़रमांबरदारों में शुमार होगा।

औज़ाओ रह० कहते हैं कि मुझे यह बात पहुँची है कि जो शख़्स अपने वालिदैन की ज़िन्दगी में ना-फ़रमान हो, फिर उनके इंतिक़ाल के बाद उनके लिए इस्तिग़्फ़ार करे, अगर उनके ज़िम्मे क़र्ज़ हो तो उसको अदा करे, और उनको बुरा न कहे, तो वह फ़रमांबरदारों में शुमार हो जाता है। और जो शख़्स वालिदैन की ज़िन्दगी में फ़रमांबरदार था, लेकिन उनके मरने के बाद उनको बुरा भला कहता है, उनका क़र्ज़ भी अदा नहीं करता उनके लिए इस्तिग़्फ़ार भी नहीं करता, वह ना फ़रमान शुमार हो जाता है। (दुर्रे मंसूर)

(٥) عن سراقة بن مالكؓ ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال الا ادلکم علی افضل الصدقة ابنتك مردودة الیك لیس لها کاسبٌ غیرك رواہ ابن ماجة كذا فی المشكوٰة

5. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मर्तबा इर्शाद फ़रमाया कि मैं तुम्हें बेहतरीन सदक़ा बताता हूँ, तेरी वह लड़की (उसका महल) है जो लौट कर तेरे ही पास आ गयी हो और उसके लिए तेरे सिवा कोई कमाने वाला न हो (कि ऐसी लड़की पर जो भी ख़र्च

किया जाएगा, वह बेहतरीन सदक़ा है।)

फ़ायदा:- "लौट कर आ जाने" से मुराद यह है कि लड़की का निकाह कर दिया था, उसके ख़ाविंद का इंतिक़ाल हो गया या ख़ाविंद ने तलाक़ देदी या कोई और सबब ऐसा पेश आ गया, जिसकी वजह से वह लड़की फिर बाप के ज़िम्मे हो गयी, तो उसकी ख़बरगीरी, उस पर ख़र्च करना अफ़्ज़ल तरीन सदक़ा है और उसका अफ़ज़ल होना साफ़ ज़ाहिर है कि उसमें एक सदक़ा है, दूसरे मुसीबत ज़दा की इम्दाद है, तीसरे सिला-रहमी है, चौथे औलाद की ख़बरगीरी है, पांचवे ग़म ज़दा की दिलदारी है कि औलाद का इब्तिदा में वालिदैन के ज़िम्मे होना रंज के बजाए ख़ुशी का सबब होता है लेकिन उसका अपना घर हो जाने के बाद अपना ठिकाना बन जाने के बाद, फिर वालिदैन के ज़िम्मे हो जाना ज़्यादा रंज का सबब हुआ करता है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स किसी मुसीबत ज़दा की फ़रियादरसी करे, उसके लिए तिहत्तर दर्जे मग़्फ़िरत के लिखे जाते हैं, जिनमें से एक में उसके तमाम उमूर की इस्लाह और दुरूस्ती है और बहत्तर दर्जे उसके लिए क़ियामत में तरक़्क़ियात का सबब हैं इस मज़्मून की बहुत सी रिवायात पहली फ़स्ल की अहादीस में नं॰ 26 के ज़ैल में गुज़र चुकी हैं।

उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ि॰ ने हुज़ूर सल्ल॰ से दर्याफ़्त किया कि मेरे पहले ख़ाविंद अबू सलमा की जो औलाद मेरे पास है, उन पर ख़र्च करने का भी मुझे सवाब मिलेगा, वह तो मेरी ही औलाद है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, उन पर ख़र्च किया कर, इसका तुझे सवाब मिलेगा। *(मिश्कात)*

और औलाद पर रहमत और शफ़्क़त तो बग़ैर उसकी एहतियाज और ज़रूरत के भी मुस्तक़िल मंदूब और मत्लूब है।

एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास दोनों नवासे हज़रत हसन रज़ि॰ और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु में से एक मौजूद थे। हुज़ूर सल्ल॰ ने उनको प्यार किया।

अक़्रअ बिन हाबिस रज़ि॰ क़बीला तमीम का सरदार भी वहां मौजूद था, कहने लगा कि मेरे दस बेटे हैं। मैं ने उनमें से कभी भी किसी को प्यार नहीं किया। हुज़ूर सल्ल॰ ने उसकी तरफ़ तेज़ निगाह से देखा और फ़रमाया कि जो

रहम नहीं करता, उस पर रहम किया भी नहीं जाता।

एक और हदीस में है कि एक बद्दू ने अर्ज़ किया तुम बच्चों को प्यार करते हो, हम तो नहीं करते। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमया मैं इसका क्या इलाज करूँ कि अल्लाह ने तेरे दिल से रहमत का माद्दा निकाल दिया। *(तर्ग़ीब)*

औलाद होने के अलावा उसका मुसीबतज़दा होना मुस्तक़िल अज्र का सबब है।

(٦) عن سلیمان بن عامرؓ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیه وسلم الصدقة علی المسکین صدقة وهی علی ذی الرحم ثنتان صدقة وصلة رواه احمد والترمذی وغیرهما کذا فی المشکوٰة

6. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि ग़रीब पर सदक़ा करना सिर्फ़ सदक़ा है और रिश्तेदार पर सदक़ा करना सदक़ा भी है और सिला-रहमी भी, दो चीज़ें हो गयीं।

फ़ायदा:- जहां तक अहले क़राबत और रिश्तेदारों का ताल्लुक़ है, उन पर सदक़ा आम ग़ुरबा पर सदक़े से मुक़द्दम और अफ़ज़ल है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुख़्तलिफ़ रिवायात में मुख़्तलिफ़ उन्वानात से यह मज़्मून भी बहुत कसरत से नक़ल किया गया।

हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि एक अशर्फ़ी तू अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करे, एक अशर्फ़ी तू ग़ुलाम के आज़ाद करने में ख़र्च करे, एक अशर्फ़ी तू किसी फ़क़ीर को दे, एक अशर्फ़ी तू अपने अहल व अयाल पर ख़र्च करे, उनमें सबसे अफ़ज़ल यही है जो तू अपने अहल व अयाल पर ख़र्च करे (बशर्ते कि महज़ अल्लाह के वास्ते ख़र्च किया जाए और वे ज़रूरतमंद भी हों, जैसा कि आगे आ रहा है।)

एक और हदीस में है कि हज़रत मैमूना रज़ि॰ ने एक बांदी आज़ाद की। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि अगर उसको अपने मामुओं को दे देतीं तो ज़्यादा सवाब होता।

एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने औरतों को ख़ास तौर से सदक़ा करने की तर्ग़ीब दी।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰ मशहूर सहाबी और फ़ुक़हा-ए-सहाबा में हैं, उनकी बीवी हज़रत ज़ैनब रज़ि॰ ने उनसे कहा कि आज हुज़ूर सल्ल॰ ने

हमें सदक़ा करने का हुक्म दिया है, तुम्हारी माली हालत कमज़ोर है, अगर तुम हुज़ूर सल्ल॰ से जाकर यह दर्याफ़्त कर लो कि मैं सदक़े का माल तुम्हें दे दूं तो यह काफ़ी है या नहीं। उन्होंने फ़रमाया कि तुम ख़ुद ही जाकर दर्याफ़्त कर लो (कि उनको अपनी ज़ात के लिए दर्याफ़्त करने में ग़ालिबन हिजाब और ख़ुद ग़रज़ी का ख़्याल हुआ होगा) हज़रत ज़ैनब रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुईं, वहां दरवाज़े पर देखा कि एक और औरत भी खड़ी है और वह भी यही मसअला दर्याफ़्त करना चाहती है, लेकिन हुज़ूर सल्ल॰ के रौब की वजह से दर्याफ़्त करने की हिम्मत न हुई। इतने में हज़रत बिलाल रज़ि॰ आ गये। इन दोनों ने उनसे दर्ख़्वास्त की कि हुज़ूर सल्ल॰ से अर्ज़ कर दें कि दो औरतें खड़ी हैं और यह दर्याफ़्त करती हैं कि अगर वे अपने ख़ाविंदों पर और जो यतीम बच्चे पहले ख़ाविंदों से उनके पास हैं, उन पर सदक़ा कर दें तो यह काफ़ी है? हज़रत बिलाल रज़ि॰ ने हुज़ूर सल्ल॰ को पयाम पहुँचाया। हुज़ूर सल्ल॰ ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि कौन औरतें हैं? हज़रत बिलाल रज़ि॰ ने अर्ज़ किया कि एक फ़लां औरत अन्सारिया हैं और एक अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰ की बीवी ज़ैनब रज़ि॰ हैं। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि हां उनके लिए दो गुना सवाब है सदक़े का भी और क़राबत का भी। *(मिश्कात)*

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू का इर्शाद है कि मैं अपने किसी भाई की एक दिरम से मदद करूँ, यह मुझे ज़्यादा पसंद है, दूसरे पर बीस दिरम ख़र्च करने से, और मैं उस पर सौ दिरम ख़र्च कर दूं, यह ज़्यादा महबूब है एक गुलाम आज़ाद करने से। *(एह्या, इत्तिहाफ़)*

एक हदीस में है कि जब आदमी ख़ुद ज़रूरतमंद हो तो वह मुक़द्दम है, जब अपने से ज़ायद हो तो अयाल मुक़द्दम है, उससे ज़ायद हो तो दूसरे रिश्तेदार मुक़द्दम हैं, उनसे ज़ायद हो तो फिर इधर उधर ख़र्च करा। *(कंज़)*

यह मज़्मून कंज़ुल उम्माल वग़ैरह मे कई रिवायात में ज़िक्र किया गया। इससे मालूम हुआ कि दूसरों को मुअख़्ख़र करना जब ही है, जबकि अपने को और अपने अहल व अयाल को एहतियाज ज़्यादा हो और अगर अपने से ज़्यादा मुहताज दूसरे हों या ख़ुद बावजूद एहतियाज के सबर पर क़ादिर है और अल्लाह पर एतमादे कामिल है तो दूसरों को मुक़द्दम कर देना कमाल का दर्जा है। पहली फ़स्ल की आयात में नं॰ 28 पर "व युअ्सिरू-न अला अन्फ़ुसिहिम" के ज़ैल में यह मज़्मून मुफ़स्सल गुज़र चुका है।

हज़रत अली रज़ि॰ इर्शाद फ़रमाते हैं कि मैं तुम्हें अपना और (अपनी बीवी) हज़रत फ़ातिमा रज़ि॰ का, जो हुज़ूर सल्ल॰ की सबसे ज़्यादा लाडली औलाद थीं, क़िस्सा सुनाऊँ। वह मेरे घर रहती थीं, ख़ुद चक्की पीसतीं जिसकी वजह से हाथों में गट्टे पड़ गये, ख़ुद पानी भर कर लातीं, जिसकी वजह से मश्कीज़ा की रगड़ से बदन पर रस्सी के निशान पड़ गये, ख़ुद घर में झाड़ू लगातीं जिससे कपड़े मैले रहते, ख़ुद खाना पकातीं जिससे धुएं के असर से कपड़े काले रहते। ग़रज़ हर क़िस्म की मशक़्क़तें उठाती रहती थीं। एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल॰ के पास कुछ ग़ुलाम बांदी वग़ैरह आये, तो मैंने कहा कि तुम भी जाकर एक ख़ादिम मांग लो कि इस मशक़्क़त से कुछ अम्न मिले। वह हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुईं, वहां कुछ मज्मा था, शर्म की वजह से कुछ अर्ज़ न कर सकीं, वापस चली आयीं।

एक हदीस में है कि हज़रत आइशा रज़ि॰ से अर्ज़ कर के चली आयीं। दूसरे दिन हुज़ूर सल्ल॰ तशरीफ़ लाये और इर्शाद फ़रमाया कि फ़ातिमा ! तुम कल क्या कहने गयीं थीं, वह तो शर्म की वजह से चुपकी हो गयीं।

हज़रत अली रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मैं ने उनकी सारी हालत पानी वग़ैरह भरने की बयान करके अर्ज़ किया कि मैं ने उनको भेजा था कि एक ख़ादिम आप से मांग लें। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें ख़ादिम से बेहतर चीज़ बताऊँ? जब सोने लेटा करो तो "सुब्हानल्लाह" 33 मर्तबा, "अल हम्दु लिल्लाह" 33 मर्तबा, "अल्लाहु अक्बर" 34 मर्तबा पढ़ा करो। यह ख़ादिम से बढ़ कर है। *(अबू दाऊद)*

एक और हदीस में इस क़िस्से में हुज़ूर सल्ल॰ का यह इर्शाद भी नक़ल किया गया है कि मैं तुम्हें ऐसी हालत में हरगिज़ नहीं दे सकता कि अह्ले सुफ़्फ़ा के पेट भूख की वजह से लिपट रहे हों, मैं इन ग़ुलामों को बेच कर इनकी क़ीमत अह्ले सुफ़्फ़ा पर ख़र्च करूँगा। *(फ़त्हुल बारी)*

(۷) عن اسماء بنت ابی بکرؓ قالت قدمت علی امی وھی مشرکۃ فی عہد قریش فقلت یا رسول ان امی قدمت علی وھی راغبۃ افاصلہا قال نعم صلیہا متفق علیہ کذا فی المشکوۃ.

7. हज़रत अस्मा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि जिस ज़माने में हुज़ूर

सल्ल॰ का क़ुरैश से मुआहदा हो रहा था उस वक़्त मेरी काफ़िर वालिदा (मक्का मुकर्रमा से) मदीना तैय्यबा आयीं मैं ने हुज़ूर सल्ल॰ से दर्याफ़्त किया कि मेरी वालिदा, (मेरी इआनत की) तालिब बन कर आयी हैं उनकी इआनत कर दूं? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, हां, उनकी इआनत करो।

फ़ायदा:- इब्तिदा-ए-ज़माना में कुफ़्फ़ार की तरफ़ से मुसलमानों पर जिस क़दर मज़ालिम हुए वे बयान से बाहर हैं। तवारीख़ की कुतुब उनसे पुर हैं। हत्ताकि मुसलमानों को मजबूर होकर मक्का मुकर्रमा से हिजरत करनी पड़ी। मदीना मुनव्वरा पहुँचने के बाद भी मुश्रिकीन की तरफ़ से हर तरीक़े से लड़ाई और ईज़ा रसानी (तक्लीफ़ पहुंचाने) का सिलसिला रहा।

हुज़ूरे अक़्दस सल्ल॰ सहाबा रज़ि॰ की एक जमाअत के साथ महज़ उमरा करने की नीयत से मक्का मुकर्रमा तशरीफ़ लाये तो काफ़िरों ने मक्के में दाख़िल भी न होने दिया, बाहर ही से वापस होना पड़ा। लेकिन उस वक़्त आपस में एक मुआहदा चंद साल के लिए हो गया था, जिसमें चंद साल के लिए कुछ शर्तों पर आपस में लड़ाई न होने का फ़ैसला हुआ था। मशहूर क़िस्सा है उसी मुआहदा की तरफ़ हज़रत अस्मा रज़ि॰ ने इस हदीस में इशारा फ़रमाया है कि जिस ज़माने में क़ुरैश से मुआहदा हो रहा था उस मुआहदे के ज़माने में हज़रत अबूबक्र रज़ि॰ की एक बीवी जो हज़रत अस्मा रज़ि॰ की वालिदा थीं और मुसलमान नहीं हुई थीं अपनी बेटी हज़रत अस्मा रज़ि॰ के पास कुछ इआनत (मदद) की ख़्वाहिश लेकर गयीं, चूंकि वह मुश्रिक थीं, इसलिए हज़रत अस्मा रज़ि॰ को इश्काल पेश आया कि उनकी इआनत की जाए या नहीं, इसलिए हुज़ूर सल्ल॰ से दर्याफ़्त किया। हुज़ूर सल्ल॰ ने इआनत का हुक्म फ़रमाया।

इमाम ख़त्ताबी रह॰ फ़रमाते हैं कि इस क़िस्से से मालूम हुआ कि काफ़िर रिश्तेदारों की सिला-रहमी भी माल से ज़रूरी है जैसा कि मुसलमान रिश्तेदारों की है।

एक रिवायत में है कि इसी क़िस्से में क़ुरआन पाक की आयत:-

لَا يَنْهٰكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ لَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ فِى الدِّيْنِ وَلَمْ يُخْرِجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ
اَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَتُقْسِطُوْٓا اِلَيْهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ○ (ممتحنه ١٤)

"ला यन्हा कुमुल्लाहु अनिल्लज़ी-न लम् युक़ातिलू कुम फ़िद्दीनि व लम युख़्रिजू कुम मिन दियारि कुम अन् तबर्रू हुम व तुक़्सितू इलैहिम इन्नल्ला-ह युहिब्बुल मुक़सिती-न॰" *(सूरः मुम्तहिनः रूकूअ् 1)*

नाज़िल हुई। *(फ़त्हुल बारी)*

जिसका तर्जुमा यह है किः-

तर्जुमाः- अल्लाह तआला तुमको उन लोगों के साथ एहसान और इंसाफ़ का बर्ताव करने से मना नहीं करता जो तुम से दीन के बारे में नहीं लड़े और तुमको तुम्हारे घरों से उन्होंने नहीं निकाला। अल्लाह तआला इंसाफ का बर्ताव करने वालों से मुहब्बत रखते हैं।

हज़रते अक़्दस हकीमुल उम्मत मौलाना थानवी क़द्दस सिर्रहू फ़रमाते हैं कि मुराद वे काफ़िर हैं जो ज़िम्मी या मुसालेह हों यानी मुहसिनानः बर्ताव उनसे जायज़ है और इसी को मुंसिफ़ाना बतार्व फ़रमाया, पस इंसाफ़ से मुराद ख़ास इंसाफ़ है यानी उनकी ज़िम्मियत या मुसालहत के एतिबार से इंसाफ़ इसी को मुतक़ाज़ी है कि उनके साथ इंसाफ़ से दरेग़ न किया जाए, वरना मुतलक़ इंसाफ तो हर काफ़िर बल्कि जानवर के साथ भी वाजिब है। *(बयानुल क़ुरआन)*

हज़रत अस्मा रज़ि॰ की यह वालिदा, जिनका नाम क़तीला बिन्त अब्दुल उज़्ज़ा है, चूंकि मुसलमान न हुई थीं, इसलिए हज़रत अबूबक्र रज़ि॰ ने उनको तलाक़ दे दी थी। बाज़ रिवायात में है कि यह कुछ घी पनीर वग़ैरह हद्या के तौर पर लेकर अपनी बेटी हज़रत अस्मा के पास गयीं। उन्होंने उनको अपने घर में दाख़िल न होने दिया और अपनी अल्लाती हमशीरा हज़रत आइशा रज़ि॰ के पास मसअला दर्याफ़्त करने के लिए आदमी भेजा, कि हुज़ूर सल्ल॰ से दर्याफ़्त करके इत्तिला दें। हुज़ूर सल्ल॰ ने इजाज़त फ़रमा दी और यह आयते शरीफ़ा इसी क़िस्से में नाज़िल हुई। *(फ़त्ह, दुर्रे मंसूर)*

यह उन हज़रात की दीन पर पुख़्तगी और क़ाबिले रश्क जज़्बा था कि मां घर पर आयी है। महज़ बेटी से मिलने के वास्ते आयी है कि उस वक़्त तक इआनत की तलब का तो वक़्त ही न आया था, लेकिन हज़रत अस्मा रज़ि॰ ने मसअला तहक़ीक़ करने के लिए आदमी दौड़ा दिया कि मैं अपनी मां को घर में दाख़िल होने की इजाज़त दे सकती हूं या नहीं ?

मुतअद्दद रिवायात में यह मज़्मून वारिद हुआ है कि सहाबा-ए-किराम

रज़ि॰ ग़ैर मुस्लिमों पर सदक़ा करना इब्तिदा में पसंद नहीं करते थे, जिस पर हक़ तआला शानुहू ने आयते शरीफ़ा :-

لَيْسَ عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ ۗ (بقره ع ۳۷)

"लै-स अलै-क हुदाहुम व ला किन्नल्ला-ह यह्दी मंय्यशा-उ व मा तुन्फ़िक़ू मिन ख़ैरिन फ़-लि अन्फ़ुसिकुम्"।

(आयत, सूरः बक़रः रूकूअ् 37)

नाज़िल फ़रमायी कि आप के ज़िम्मे उनकी हिदायत नहीं है, यह तो ख़ुदा-ए-तआला का काम है, जिसको चाहे हिदायत पर लावे, जो कुछ तुम (ख़ैरात वग़ैरह) ख़र्च करते हो अपने नफ़े के वास्ते करते हो और अल्लाह तआला की रिज़ाजोई के अलावा किसी और फ़ायदे की ग़रज़ से नहीं करते, यानी तुम तो सदक़ा वग़ैरह अल्लाह तआला शानुहू की रिज़ा के वास्ते करते हो, इसमें हर हाजतमंद दाख़िल है, काफ़िर हो या मुसलमान।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि लोग अपने काफ़िर रिश्तेदारों पर एहसान करना पसंद नहीं करते थे, ताकि वे भी मुसलमान हो जाएं। उन्होंने इस बारे में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस्तिफ़सार (मालूम) किया, उस पर यह आयते शरीफ़ा "लै-स अलै-क हुदाहुम" नाज़िल हुई और भी मुतअद्दद रिवायात में यह मज़्मून वारिद हुआ है। *(दुर्रे मंसूर)*

इमाम ग़ज़ाली रह॰ ने लिखा है कि एक मजूसी हज़रत इब्राहीम अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आपका मेहमान बनने की दर्ख़्वास्त की। आपने फ़रमा दिया कि अगर तू मुसलमान हो जाए तो मैं तेरी मेहमानी क़ुबूल करता हूँ। वह मजूसी चला गया। अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से वही नाज़िल हुई कि इब्राहीम, तुम एक रात का खाना तब्दीली-ए-मज़हब बग़ैर न खिला सके, हम सत्तर साल से उसके कुफ़्र के बावजूद उसको खाना दे रहे हैं, एक वक़्त का खाना खिला देते तो क्या मुज़ाइक़ा था। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम फ़ौरन उसकी तलाश में दौड़ने लगे, वह मिल गया। उसको अपने साथ वापस लाये और उसको खाना खिलाया। उस मजूसी ने पूछा कि क्या बात पेश आयी कि तुम खुद मुझे तलाश करने निकले। हज़रत इब्राहीम अलै॰ ने वही का क़िस्सा सुनाया। वह मजूसी कहने लगा, उसका

मेरे साथ यह मामला है तो मुझे इस्लाम की तालीम दीजिए और उसी वक़्त मुसलमान हो गया। *(एहया)*

एक हदीस में है कि तीन चीज़ें ऐसी हैं जिनमें किसी शख़्स को कोई गुंजाईश नहीं –

1. वालिदैन के साथ एहसान करना, चाहे वालिदैन मुसलमान हों या काफ़िर।

2. जिस से अहद कर लिया जाए, उसको पूरा करना चाहे मुसलमान से अहद किया हो या काफ़िर से।

3. अमानत को वापस करना, चाहे मुसलमान की हो या काफ़िर की। *(जामिउस्सग़ीर)*

मुहम्मद बिन हनफ़िया रह०, अत्तार रह० और क़तादा रह० तीनों हज़रात से यह नक़ल किया गया कि हक़ तआला शानुहू के पाक इर्शाद–

إِلَّآ أَنْ تَفْعَلُوٓا إِلَىٰٓ أَوْلِيَآئِكُمْ مَّعْرُوفًا (احزاب ع ١)

"इल्ला अन तफ़्अलू इला औलियाइकुम मअ्रूफ़न्०"

(अह्ज़ाब, रुकूअ् 1)

में मुसलमान की यहूद व नसारा ग़ैर मुस्लिम रिश्तेदारों के लिए वसीयत मुराद है। *(मुग़्नी)*

(٨) عن انسؓ وعبد اللهؓ قالا قال رسول الله صلى الله عليه وسلم الخلق عيال الله فاحب الخلق الى الله من احسن الى عياله رواه البيهقى فى الشعب كذا فى

8. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि मख़्लूक सारी की सारी अल्लाह तआला की अयाल है, पस अल्लाह तआला को वह शख़्स बहुत महबूब है जो उसकी अयाल के साथ एहसान करे।

फ़ायदा:- मख़्लूक़ के अंदर मुसलमान, काफ़िर, इंसान, हैवान सब ही दाख़िल हैं हर मख़्लूक़ के साथ एहसान का बर्ताव करना, इस्लाम की तालीम है और अल्लाह जल्ल शानुहू को महबूब है। पहली फ़स्ल के नं० 10 पर यह हदीस गुज़र चुकी कि एक फ़ाहिशा औरत की इस पर बख़्शीश हो गयी कि उसने प्यासे कुत्ते को पानी पिलाया।

दूसरी फ़स्ल की नं॰ 8 पर यह हदीस गुज़री है कि एक औरत को इस बिना पर अज़ाब हुआ कि उसने एक बिल्ली पाल रखी थी और उस को खाने को न दिया। जब जानवर का यह हाल है तो आदमी तो अशरफ़ुल मख़्लूक़ात है, उस पर एहसान और अच्छे बर्ताव का क्या अज्र होगा।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मशहूर इर्शाद है कि-

اِرْحَمُوْا مَنْ فِی الْاَرْضِ یَرْحَمْکُمْ مَنْ فِی السَّمَآءِ

इर्ह-मू मन फ़िल अर्ज़ि यर्हम्कुम मन फ़िस्समा-इ

'तुम ज़मीन पर रहने वालों पर रहम करो, तुम पर आसमान वाले रहम करेंगे।

दूसरी हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि जो शख़्स आदमियों पर रहम नहीं करता, अल्लाह जल्ल शानुहू उस पर रहम नहीं फ़रमाता।

एक और हदीस में है कि रहम उसी शख़्स के दिल से निकाला जाता है जो बद बख़्त हो। *(मिश्कात)*

ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सारी ज़िंदगी सारी दुनिया के लिए रहमत थी। आप की ज़िन्दगी का एक एक वाक़िआ इस की शहादत देता है। उम्मत के लिए ज़रूरी है कि हुज़ूर सल्ल॰ की ज़िन्दगी के वाक़िआत की तहक़ीक़ करे और उसका इत्तिबाअ करे। हक़ तआला शानुहू का पाक इर्शाद है:-

وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ○ (انبیآء ع ۷)

"व मा अर्सलना-क इल्ला रहम-तल्लिल आल-मी-न॰"

(अंबिया, रूकूअ् 7)

'और हमने आप को और किसी बात के लिए नहीं भेजा, मगर दुनिया जहान के लोगों पर मेहरबानी करने के लिए।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ इस आयते शरीफ़ा की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि जो लोग हुज़ूर सल्ल॰ पर ईमान ले आये, उनके लिए तो आप का वजूद दुनिया और आख़िरत की रहमत है ही, लेकिन जो लोग ईमान नहीं लाये, उनके लिए भी आप का वजूद इस लिहाज़ से रहमत है कि वे पहली उम्मतों की तरह दुनिया के अज़ाब, मस्ख़ हो जाने से, ज़मीन में धंस जाने से, आसमानों से पत्थर

बरसने से महफ़ूज़ हो गये।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि बाज़ लोगों ने हुज़ूर सल्ल॰ से दर्ख़्वास्त की कि कुरैश ने मुसलमानों को बहुत अज़ीयत पहुँचायी, बहुत नुक़्सानात दिए, आप इन लोगों पर बद दुआ फ़रमाएं। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि मैं बद दुआएं करने के लिए नहीं भेजा गया, मैं लोगों के लिए रहमत बना कर भेजा गया हूँ। और भी मुतअद्दद रिवायात में यह मज़्मून वारिद हुआ है। *(दुर्रे मंसूर)*

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ताइफ़ के सफ़र का जां-गुदाज़ वाक़िआ 'हिकायाते सहाबा' के शुरू में लिख चुका हूँ कि इन बद नसीबों ने कितनी सख़्त सख़्त तक्लीफ़ें पहुँचायीं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बदने मुबारक से ख़ून जारी हो गया और उस पर जब उस फ़रिश्ते ने जो पहाड़ों पर मुतअय्यन था, आकर दर्ख़्वास्त की कि अगर आप फ़रमावें तो दोनों जानिब के पहाड़ों को मिला दूँ जिस से ये सब बीच में कुचल जायेंगे, तो हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि मुझे अल्लाह की ज़ात से यह उम्मीद है कि अगर ये लोग मुसलमान न भी हों तो इन की औलाद में से कुछ लोग अल्लाह का नाम लेने वाले पैदा हो जायेंगे।

उहद की लड़ाई में जब हुज़ूर सल्ल॰ पर सख़्त हमला किया गया हुज़ूर सल्ल॰ का दन्दाने (दांत) मुबारक शहीद हो गया। लोगों ने कुफ़्फ़ार पर बद दुआ की दर्ख़्वास्त की। हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया या अल्लाह, मेरी क़ौम को हिदायत फ़रमा कि ये लोग ना वाक़िफ़ हैं। हज़रत उमर रज़ि॰ ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह, अगर आप भी हज़रत नूह अलै॰ की तरह बद दुआ फ़रमा देते तो हम सब के सब हलाक हो जाते कि आप को हर क़िस्म की तक्लीफ़ें पहुँचायी गयीं लेकिन आप हर वक़्त यही फ़रमाते रहे कि या अल्लाह मेरी क़ौम की मग़्फ़िरत फ़रमा कि वे जानते नहीं।

क़ाज़ी अयाज़ रह॰ फ़रमाते हैं कि इन हालात को बड़े ग़ौर से देखना चाहिए कि किस क़दर हुज़ूर सल्ल॰ का हिल्म और अख़्लाक़ का आला नमूना और जूद व करम की इंतिहा है कि इन सख़्त सख़्त तक्लीफ़ों पर हुज़ूर सल्ल॰ कभी मग़्फ़िरत की, कभी हिदायत की दुआएं ही करते रहे।

ग़व्वास बिन हारिस का वाक़िआ मशहूर है कि जब एक सफ़र में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तंहा सो रहे थे, वह तलवार हाथ में लेकर

हुज़ूरे अक़्दस सल्ल॰ के पास पहुंच गया और हुज़ूर सल्ल॰ की आंख उस वक़्त खुली, जबकि वह तलवार लिए सूंते हुए पास खड़ा था। उसने ललकार कर कहा कि बता, अब तुझे बचाने वाला कौन है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि अल्लाह जल्ल शानुहू। हुज़ूर सल्ल॰ का यह फ़रमाना था कि उसके हाथ को कपकपी हुई और तलवार हाथ से गिर गयी। हुज़ूर सल्ल॰ ने वह तलवार अपने दस्ते मुबारक में लेकर फ़रमाया कि अब तू बता तुझे बचाने वाला कौन है? वह कहने लगा कि आप बेहतरीन तलवार लेने वाले हैं। (यानी माफ़ फ़रमायें) हुज़ूर सल्ल॰ ने माफ़ फ़रमा दिया।

यहूदी औरत का हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ज़हर देने का वाक़िआ भी मशहूर है और उस औरत ने इसका इक़रार भी कर लिया कि मैं ने हुज़ूर सल्ल॰ को ज़हर दिया, लेकिन हुज़ूर सल्ल॰ ने अपना इंतिक़ाम नहीं लिया।

लबीद बिन अअ्सम ने हुज़ूर सल्ल॰ पर जादू किया। हुज़ूर सल्ल॰ को इसका इल्म भी हो गया, मगर हुज़ूर सल्ल॰ ने इस वाक़िए का चर्चा भी गवारा नहीं किया। ग़रज़ दो चार वाक़िआत नहीं हज़ारों वाक़िआत हुज़ूर सल्ल॰ के दुश्मनों पर रहम व करम के हैं। *(शिफ़ा)*

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि तुम उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकते, जब तक एक दूसरे के साथ रहम का बर्ताव न करो। सहाबा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह, हम में से हर शख़्स रहम तो करता ही है। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, यह रहम नहीं है जो अपने ही के साथ हो, बल्कि रहम वह है जो आम हो।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मकान में तशरीफ़ ले गये, वहां चंद क़ुरैश के हज़रात बैठे हुए थे, हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि यह सलतनत और हुकूमत का सिलसिला क़ुरैश में रहेगा जब तक कि वे यह मामूल रखें कि जो उनसे रहम की दर्ख़्वास्त करे, उस पर रहम करें, जब कोई हुक्म लगायें तो अद्ल का लिहाज़ रखें, जब कोई चीज़ तक़्सीम करें तो इंसाफ़ को इख़्तियार करें। और जो शख़्स इन उमूर का ख़्याल न करे उस पर अल्लाह की लानत, फ़रिश्तों की लानत, सारे आदमियों की लानत।

एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल॰ एक मकान में तशरीफ़ ले गये जहां मुहाजिरीन

और अंसार की एक जमाअत तशरीफ़ रखती थी। हुज़ूर सल्ल० को तशरीफ़ लाता देख कर हर शख़्स अपनी जगह से हट गया, इस उम्मीद पर कि हुज़ूर सल्ल० वहां तशरीफ़ रखें हुज़ूर सल्ल० दरवाज़े पर तशरीफ़ फ़रमा रहे और दरवाज़े के दोनों जानिबों पर हाथ रख कर इर्शाद फ़रमाया कि मेरा तुम पर बहुत हक़ है। यह अम्र सल्तनत का क़ुरैश में रहेगा, जब तक वे तीन बातों का एहतिमाम रखें।

1. जो शख़्स उनसे रहम की दर्ख़्वास्त करे, उस पर रहम करें।
2. जो फ़ैसला करें, इंसाफ़ से करें
3. जो मुआहदा किसी से कर लें उसको पूरा करें और जो शख़्स ऐसा न करे, उस पर अल्लाह की लानत है, फ़रिश्तों की लानत है, तमाम आदमियों की लानत है।

हुज़ूर सल्ल० का पाक इर्शाद है कि जो शख़्स एक चिड़िया को भी बग़ैर हक़ के ज़िब्ह करेगा, क़ियामत के दिन उससे मुतालबा होगा। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि उसका हक़ क्या है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि ज़िब्ह करके उसको खाया जाए यह नहीं कि वैसे ही ज़िब्ह करके फेंक दी जाए।

बहुत सी अहादीस में यह मज़्मून वारिद हुआ है कि ग़ुलाम जो तुम्हारे मातहत हैं, उनको उस चीज़ से खिलाओ, जिससे ख़ुद खाते हो, उस चीज़ से पहनाओ, जिससे ख़ुद पहनते हो और जिससे मुवाफ़क़त न आए उसको फ़रोख़्त कर दो, उसको अज़ाब में मुब्तला करने का कोई हक़ नहीं। *(तर्ग़ीब)*

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि जब तुम्हारा कोई ख़ादिम तुम्हारे लिए कोई चीज़ पका कर लाये कि उसकी गर्मी और धुएं की मशक़्क़त उसने उठायी है, तो तुम्हें चाहिए कि उसको खाने में अपने साथ शरीक करो। अगर इतनी मिक़्दार न हो कि उसको शरीक कर सको तो उसमें से थोड़ा सा उसे भी दे दो। *(मिश्कात)*

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि मातहतों के साथ अच्छा बर्ताव करना मुबारक है और उनके साथ बद खुल्क़ी बरतना बद बख़्ती है। *(मिश्कात)*

ग़रज़ हर नौअ से हुज़ूर सल्ल० ने मख़्लूक़ पर रहम की ताकीद फ़रमायी, मुख़्तलिफ़ नौअ से उन पर इक्राम की तर्ग़ीब दी।

(۹) عن ابن عمرؓ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم لیس الواصل بالمکافی ولکن الواصل الذی اذا قطعت رحمہ وصلها رواہ البخاری کذا فی المـ

9. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि वह शख़्स सिला-रहमी करने वाला नहीं है जो, बराबर-सराबर का मामला करने वाला हो, सिला-रहमी करने वाला तो वह है जो दूसरे के तोड़ने पर सिला-रहमी करे।

फ़ायदाः- बिल्कुल ज़ाहिर और आम बात है, जब आप हर बात में यह देख रहे हैं कि जैसा बर्ताव दूसरा करेगा वैसा ही मैं भी करूँगा तो आपने क्या सिला-रहमी की ? यह बात तो हर अजनबी के साथ भी होती है कि जब दूसरा शख़्स आप पर एहसान करेगा तो आप ख़ुद उस पर एहसान करने में मजबूर हैं। सिला-रहमी तो दर हक़ीक़त यही है कि अगर दूसरे की तरफ़ से बे इल्तिफ़ाती, बे नियाज़ी, क़ता-ए-ताल्लुक़ हो तो तुम उसके जोड़ने कि फ़िक्र में रहो, इसको मत देखो कि वह क्या बर्ताव करता है, इस को हर वक़्त सोचो कि मेरे ज़िम्मे क्या हक़ है? मुझे क्या करना चाहिए? दूसरे के हुक़ूक़ अदा करते रहो, ऐसा न हो कि उसका कोई हक़ अपने ज़िम्मे रह जाए, जिसका क़ियामत में अपने से मुतालबा हो जाए और अपने हुक़ूक़ के पूरा होने का वहम भी दिल में न लो, बल्कि अगर वे पूरे नहीं होते तो और भी ज़्यादा मसरूर हो कि दूसरे आलम में जो अज्र व सवाब इसका मिलेगा, वह उससे बहुत ज़्यादा होगा जो यहां दूसरे के अदा करने से वसूल होता।

एक सहाबी, रज़ि० ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! मेरे रिश्तेदार हैं, मैं उनके साथ सिला-रहमी करता हूँ, वे क़ता-रहमी करते हैं, मैं उन पर एहसान करता हूँ वे मेरे साथ बुराई करते हैं, मैं हर मामले में तहम्मुल से काम लेता हूँ वे जहालत पर उतरे रहते हैं। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया अगर यह सब कुछ सही है तो तू उनके मुँह में ख़ाक डाल रहा है (यानी ख़ुद ज़लील होंगे) और तेरे साथ अल्लाह तआला शानुहू की मदद शामिले हाल रहेगी, जब तक तू अपनी इस आदत पर जमा रहेगा। (मिश्कात) और जब तक अल्लाह जल्ल शानुहू की मदद किसी के शामिले हाल रहे न किसी की बुराई से नुक़्सान पहुँच सकता है, न किसी का क़ता ताल्लुक़ नफ़ा पहुँचने से मानेअ (रोक) हो सकता है:-

तू न छूटे मुझ से या रब तेरा छुटना है ग़ज़ब,
यूं मैं राज़ी हूँ मुझे चाहे ज़माना छोड़ दे !!

यह खुली हुई हक़ीक़त है कि अल्लाह तआला शानुहू किसी का मददगार हो जाए तो उसको कब किसी दूसरे की मदद की एहतियाज बाक़ी रह सकती है, फिर सारी दुनिया उसकी मजबूरन मुईन (मददगार) है और सारी दुनिया मिल कर उसको कोई नुक़्सान पहुँचाना चाहे तो नुक़्सान नहीं पहुँचा सकती।

एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि मुझे मेरे रब ने नौ बातों का हुक्म फ़रमाया है:-

1. हक़ तआला शानुहू का ख़ौफ़ ज़ाहिर में भी और बातिन में भी (यानी दिल से और ज़ाहिर से या ख़लवत में और जलवत में)

2. इंसाफ़ की बात ख़ुशी में भी गुस्से में भी (आदमी जब किसी से ख़ुश हुआ करता है तो उयूब छुपा कर तारीफ़ों के पुल बांधा करता है, जब ख़फ़ा होता है तो झूठे इल्ज़ाम तराशा करता है। मुझे हुक्म है कि हर हालत में इंसाफ़ की बात कहूँ।)

3. मियाना रवी फ़क़्र की हालत में भी और वुसअत की हालत में भी (न तंगी में कंजूसी करूँ, न वुसअत में इसराफ़ करूँ, या न फ़क़्र में जज़अ् फ़ज़अ् करूँ, न ग़िना में उज्ब और फ़ख़्र करूँ)

4. नीज़ (तथा) यह कि जो शख़्स मुझसे क़ता ताल्लुक़ करे मैं उसके साथ भी ताल्लुक़ात वाबस्ता करूँ।

5. और जो शख़्स मुझे अपनी अता से महरूम करे, मैं उसके साथ हुस्ने सुलूक करूं।

6. और जो शख़्स मुझ पर ज़ुल्म करे, उसको माफ़ कर दूँ (इंतिक़ाम लेने की फ़िक्र में न पड़ूं।)

7. यह कि मेरा सुकूत यानी ख़ामोशी (आख़िरत का) या अल्लाह तआला की आयात की फ़िक्र हो।

8. मेरी गोयाई यानी बोलना अल्लाह तआला का ज़िक्र हो (तस्बीह वग़ैरह या अल्लाह के अहकाम का बयान)

9. मेरी नज़र इब्रत हो (यानी जिस चीज़ को देखूँ, इब्रत की निगाह से देखूं।)

10. और मैं नेक काम का हुक्म करता रहूँ। *(मिश्कात)*

शुरू में नौ चीज़ें फ़रमायी थी, तफ़्सील में दस हो गयीं, मगर यह दसवीं चीज़ साबिक़ा नौ चीज़ों का इज्माल भी हो सकता है। और नं॰ 7 और नं॰ 8 दो मुक़ाबिल होने की वजह से एक भी शुमार हो सकते हैं। जैसा कि शुरू में ज़ाहिर, बातिन एक शुमार हुए, ख़ुशी और गुस्सा एक हुए।

हज़रत हकीम बिन हिज़ाम रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने हुज़ूर सल्ल॰ से दर्याफ़्त किया कि अफ़ज़ल तरीन सदक़ा क्या है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, काशेह रिश्तेदार के साथ हुस्ने सुलूक करना। *(तर्ग़ीब)*

काशेह उस शख़्स को कहते हैं जो दिल में किसी से बुग्ज़ व कीना रखे।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद वारिद हुआ है कि जो शख़्स यह पसंद करे कि क़ियामत में उसको बुलंद मकानात मिलें, उसको ऊँचें दर्जे मिलें, उसको चाहिए कि जो शख़्स उस पर ज़ुल्म करे, उससे दरगुज़र करे, जो उसको अपनी अता से महरूम रखे, उस पर एहसान करे और जो उस से ताल्लुक़ात तोड़े उससे ताल्लुक़ात जोड़े। *(दुर्रे मंसूर)*

एक हदीस में है कि जब आयते शरीफ़ा -

خُذِالْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِيْنَ (اعراف ع ٢٤)

"ख़ुज़िल अफ़्-व वअ्मुर बिल् उर्फ़ि व अअ् रिज़् अनिल् जाहिली-न॰"

(आराफ़, रूकूअ् 24)

"माफ़ी को इख़्तियार करो, नेकी का हुक्म करो और जाहिलों से एराज़ करो" नाज़िल हुई तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम से इसकी तफ़्सीर दर्याफ़्त फ़रमायी तो उन्होंने अर्ज़ किया, जानने वाले (हक़ तआला शानुहू) से दर्याफ़्त करके अर्ज़ करूँगा। वह वापस तश्रीफ़ ले गये और फिर आकर अर्ज़ किया, अल्लाह तआला का इर्शाद है कि जो आप पर ज़ुल्म करे, उसको माफ़ करें और जो आपको अपनी अता से महरूम रखे, उसको अता फ़रमाएं और जो आपसे ताल्लुक़ात तोड़े उससे ताल्लुक़ात जोड़ें।

एक और हदीस में इस वाक़िए के बाद यह भी है कि इसके बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों से ख़िताब करके फ़रमाया कि

मैं तुमको दुनिया और आख़िरत के बेहतरीन अख़्लाक़ बताऊँ? सहाबा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया ज़रूर बतायें हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया, जो तुम पर ज़ुल्म करे, उसको माफ़ करो, जो तुम्हें अपनी अता से महरूम रखे, उसको अता करो, जो तुमसे ताल्लुक़ात तोड़े उससे सिला-रहमी करो। हज़रत अली रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मुझे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं तुम्हें अव्वलीन और आख़िरीन के बेहतरीन अख़्लाक़ बताऊँ। मैं ने अर्ज़ किया ज़रूर इर्शाद फ़रमायें, हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि जो तुम्हें अपनी अता से महरूम रखे, उसको अता करो, जो तुम पर ज़ुल्म करे, उसको माफ़ करो, और जो तुमसे क़राबत के ताल्लुक़ात तोड़े उसके साथ ताल्लुक़ात जोड़ो।

हज़रत उक़्बा रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ ने मुझसे फ़रमाया कि मैं तुम्हें दुनिया और आख़िरत के बेहतरीन अख़्लाक़ बताऊँ? फिर यही तीन चीज़ें इर्शाद फ़रमायीं। और भी मुतअद्दद सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ से यह मज़्मून ज़िक्र किया गया।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि आदमी ख़ालिस ईमान तक उस वक़्त तक नहीं पहुँच सकता जब तक कि यह काम न करे कि अपने से ताल्लुक़ तोड़ने वालों के साथ ताल्लुक़ात जोड़ा करे। अपने ऊपर ज़ुल्म करने वालों को माफ़ किया करे, अपने को गालियां देने वाले को बख़्श दिया करे और जो अपने साथ बुराई करे, उसके साथ भलाई करे। (दुर्रे मंसूर)

(۱۰) عن ابی بکرۃؓ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم مامن ذنب احری ان یعجل اللہ لصاحب العقوبۃ فی الدنیا مع ما یدخرلہ فی الاخرۃ من البغی وقطعیۃ الرحم رواہ الترمذی وابوداؤد کذا فی المشکوٰۃ

10. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि नहीं है कोई गुनाह, जो ज़्यादा मुस्तहिक़ इस बात का हो कि उसका वबाल आख़िरत में ज़ख़ीरा रहने के बावजूद दुनिया में उसकी सज़ा बहुत जल्द न भुगतनी पड़े, इन दो के अलावा एक ज़ुल्म दूसरा क़ता-रहमी।

फ़ायदाः- यानी ये दो गुनाह ज़ुल्म और क़त्ता-रहमी ऐसे हैं कि आख़िरत में उन पर जो कुछ वबाल होगा, वह होगा ही; आख़िरत के अलावा दुनिया में भी उनकी सज़ा बहुत जल्द मिलती है।

एक और हदीस में है कि हक़ तआला शानुहू हर गुनाह को, जब चाहे, मग़्फ़िरत फ़रमा देते हैं, मगर वालिदैन की क़ता रहमी की सज़ा मरने से पहले पहले दे देते हैं। *(मिश्कात)*

एक हदीस में है कि हर गुनाह की सज़ा अल्लाह जल्ल शानुहू आख़िरत पर मुअख़्ख़र फ़रमा देते हैं। *(जामिउस्सग़ीर)*

बहुत सी अहादीस में यह भी मज़्मून है कि हक़ तआला शानुहू क़ियामत के दिन रहम (क़राबत) को ज़बान अता फ़रमा देंगे। वह अर्श मुअल्ला को पकड़ कर दर्ख़्वास्त करता रहेगा कि या अल्लाह जिसने मुझे मिलाया, तू उसको मिला और जिसने मुझे क़ता किया तू उसको क़ता कर।

बहुत सी अहादीस में है कि हक़ तआला शानुहू फ़रमाते हैं कि रहम का लफ़्ज़ अल्लाह तआला के पाक नाम रहमान से निकाला गया है, जो इसको मिलाएगा, रहमान उसको मिलाएगा। जो इसको क़ता करेगा, रहमान उसको क़ता करेगा।

एक हदीस में है कि उस क़ौम पर रहमत नाज़िल नहीं होती, जिसमें कोई क़ता-रहमी करने वाला हो।

एक हदीस में है कि हर जुमेरात को अल्लाह जल्ल शानुहू के यहां आमाल पेश होते हैं, क़ता रहमी करने वाले का कोई अमल क़ुबूल नहीं होता। *(दुर्रे मंसूर)*

फ़क़ीह अबुल्लैस रह० फ़रमाते हैं कि क़ता-रहमी इस क़दर बदतरीन गुनाह है कि पास बैठने वालों को भी रहमत से दूर कर देता है इसलिए ज़रूरी है कि हर शख़्स इससे बहुत जल्द तौबा करे और सिला रहमी का एहतिमाम करे।

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि सिला-रहमी के अलावा कोई नेकी ऐसी नहीं जिसका बदला बहुत जल्द मिलता हो और क़ता-रहमी और ज़ुल्म के अलावा कोई गुनाह ऐसा नहीं है जिसका वबाल आख़िरत में बाक़ी रहने के साथ साथ दुनिया में जल्दी न मिल जाता हो। *(तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)*

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० एक मर्तबा सुबह की नमाज़ के बाद एक मज्मे में तशरीफ़ फ़रमा थे, फ़रमाने लगे कि मैं तुम लोगों को क़सम

देता हूँ कि अगर इस मज्मे में कोई शख़्स क़ता-रहमी करने वाला हो, तो वह चला जाए हम लोग अल्लाह तआला शानुहू से एक दुआ करना चाहते हैं। और आसमान के दरवाज़े क़ता-रहमी करने वाले के लिए बंद हो जाते हैं। *(तर्ग़ीब)*

यानी उसकी दुआ आसमान पर नहीं जाती। इससे पहले ही दरवाज़ा बंद कर दिया जाता है और जब उसके साथ हमारी दुआ होगी तो वह दरवाज़ा बंद हो जाने की वजह से रह जायेगी।

इनके अलावा बहुत सी रिवायात से यह मज़्मून मालूम होता है और दुनिया के वाक़िआत बहुत कसरत से इसकी शहादत देते हैं कि क़ता-रहमी करने वाला दुनिया में भी ऐसे मसाइब में फंसता है कि फिर रोता ही फिरता है और अपनी हिमाक़त और जहालत से उसको यह ख़बर भी नहीं होती कि इतने इस गुनाह से तौबा न करे, उसकी तलाफ़ी न करे, उसका बदल न करे, इतने उस आफ़त और उस अज़ाब से, जिसमें मुब्तला है, ख़लासी न होगी, चाहे लाख तदबीरें कर ले, और अगर किसी दुन्यवी आफ़त में मुब्तला हो जाए तो वह इससे बहुत हल्की है कि किसी बद दीनी में ख़ुदा न करे, मुब्तला हो जाए कि इस सूरत में उसको पता भी न चलेगा कि तौबा ही कर ले। हक़ तआला शानुहू ही अपने फ़ज़्ल से महफ़ूज़ फ़रमाये।

चौथी फ़स्ल

ज़कात की ताकीद और फ़ज़ाइल में

ज़कात को अदा करना इस्लाम के अर्कान में से अहम तरीन रूक्न है। हक़ तआला शानुहू ने अपने पाक कलाम में मशहूर क़ौल के मुवाफ़िक़ बयासी जगह नमाज़ के साथ साथ ज़कात का हुक्म फ़रमाया और जहां जहां सिर्फ़ ज़कात का हुक्म है वे उनके अलावा हैं।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मशहूर इर्शाद है कि इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ों पर है:- 1. कलिमा-ए-तय्यिबा का इक़रार,

2. नमाज़, 3. ज़कात, 4. रोज़ा, 5. हज।

एक हदीस में है कि अल्लाह तआला उस शख़्स की नमाज़ क़ुबूल नहीं करते जो ज़कात अदा न करे, इसलिए कि अल्लाह तआला ने (क़ुरआन पाक) में इसको नमाज़ के साथ जमा किया है पस इन दोनों में फ़र्क़ न करो।

(कंज़)

उलमा का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि इनमें से किसी चीज़ का इंकार करने वाला काफ़िर है। यही पांच चीज़ें इस्लाम की बुनियाद हैं, यही अहम इबादात हैं यही वे चीज़ें हैं जिन पर इस्लाम का गोया मदार है, लेकिन अगर ग़ौर की निगाह से देखा जाए, तो इनका ख़ुलासा क्या है, इक़रारे अब्दियत के बाद सिर्फ़ दो हाज़िरियां हैं, आक़ा के दरबार की, महबूब की बारगाह की।

1. पहली हाज़िरी रूहानी है जो नमाज़ के ज़रिये से है, इसीलिए हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि नमाज़ी अल्लाह तआला से बातें करता है, इसलिए उसको मेअ्राजुल मोमिनीन कहा जाता है। यह हाज़िरी अपनी हर वक़्त की हाजात और ज़रूरतें मालिक के हुज़ूर में पेश करने का वक़्त है। इसलिए बार बार हाज़िरी की ज़रूरत पेश आती है कि आदमी की ज़रूरतें हर वक़्त पेश आती रहती हैं। इसी वजह से अहादीस में कसरत से यह मज़्मून आया है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सारे अंबिया-ए-किराम अलै० को जब कोई हाजत पेश आती नमाज़ की तरफ़ रूजू करते। इस हाज़िरी में बंदे की तरफ़ से हम्द व सना के बाद इआनत की दर्ख़्वास्त है, और अल्लाह तआला की तरफ़ से इजाबत का वायदा है, जैसा कि अहादीस में सूरः फ़ातिहा की तफ़्सीर में इसकी तस्रीह है। इसलिए जब नमाज़ के लिए पुकारा जाता है, तो नमाज़ के लिए आओ के साथ ही एलान किया जाता है कि फ़लाह के लिए आओ यानी दोनों जहान की कामियाबी के लिए आओ।

इसकी ताईद में कसरत से अहादीस का ज़ख़ीरा मौजूद है और नमाज़ पर चूंकि दोनों जहान की फ़लाह और कामियाबी ही मौला और आक़ा के दरबार से मिलती है, दीन और दुनिया दोनों ही अता होती हैं, इसलिए ज़कात गोया इसका तक्मिला और ततिम्मा है, कि हमारे दरबार से जो अता हो, उसमें से निहायत क़लील मिक़्दार ढाई रूपया सैंकड़ा हमारे नाम लेवा फ़क़ीरों को भी दे दिया करो, गोया शुक्राना है दरबार की अता का, जो अक़्ली भी है, फ़ितरी भी

है, और मोताद भी है कि दरबार की अताओं में से दरबार के नौकरों को भी दिया ही जाता है।

यही वजह है कि क़ुरआन पाक में कसरत से जहां जहां नमाज़ का हुक्म आता है, उसके साथ ही उसके बाद अक्सर ज़कात का हुक्म होता है, कि नमाज़ के ज़रिए हमसे मांगो और लो। फिर जो मिले उसमें से थोड़ा सा हमारे नाम लेवाओं को देते जाओ। फिर लुत्फ़ पर लुत्फ़ यह कि उस क़लील मिक़्दार की अदाएगी पर मुस्तक़िल अज्र है, मुस्तक़िल सवाब और इनआमाते कसीरा का वायदा है।

2. दूसरी हाज़िरी जिस्मानी महबूब के घर की है, जिसको हज कहते हैं। इसमें चूंकि फ़िल जुम्ला मशक़्क़त है जानी भी, माली भी, इसलिए इस्तिताअत पर उम्र भर में एक मर्तबा की हाज़िरी ज़रूरी क़रार दी और वहां की हाज़िरी के लिए, अपने आपको गंदगियों से पाक करने के लिए चंद यौम का रोज़ा ज़रूरी क़रार दिया गया कि सारी गंदगियों की जड़ पेट और शर्मगाह है। इसकी चंद यौम एहतिमाम से हिफ़ाज़त की जाए ताकि वहां की हाज़िरी की क़ाबिलियत पैदा हो जाए, इसीलिए रोज़े का महीना ख़त्म होते ही हज का ज़माना शुरू हो जाता है। इसी मस्लहत से ग़ालिबन फ़ुक़हा-ए-किराम इसी तर्तीब से इन इबादात को अपनी किताबों में ज़िक्र फ़रमाते हैं।

इसके अलावा रोज़े में दूसरी मसालेह का मलहूज़ होना उसके मनाफ़ी नहीं, माल ख़र्च न करने पर आयात में जो वईदें आयी हैं जिनमें से बाज़ दूसरी फ़स्ल में गुज़र चुकी हैं, वे अक्सर उलमा के नज़दीक ज़कात अदा न करने पर ही नाज़िल हुई हैं। उन सब आयात या अहादीस का ज़िक्र करना तो ज़ाहिर है कि दुश्वार है, नमूने के तौर पर चंद आयात और चंद अहादीस इस बारे में ज़िक्र की जाती हैं। मुसलमान के लिए तो एक आयत या हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक इर्शाद भी काफ़ी है और जो महज़ नाम का मुसलमान है, उसके लिए तमाम क़ुरआन पाक और अहादीस का सारा दफ़्तर भी बेकार है। फ़रमांबरदार के लिए तो इसका एक मर्तबा मालूम हो जाना भी काफ़ी है कि आक़ा का यह हुक्म है और ना-फ़रमान के लिए हज़ार तंबीहें भी बेकार हैं। इतने अज़ाब का जूता न पड़े, इतने कब समझ में आ सकता है?

आयात

(١) وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَo (بقرہ ع ٥)

1. और क़ायम करो तुम लोग नमाज़ को और दो ज़कात को और आजिज़ी करो, आजिज़ी करने वालों के साथ या रूकूअ करो, रूकूअ् करने वालों के साथ *(बक़र: रूकूअ् 5)*

फ़ायदा:- हज़रत मौलाना थानवी क़द्दस सिर्रहू तहरीर फ़रमाते हैं, फ़ुरूए इस्लामिया में आमाल दो क़िस्म के हैं, आमाले ज़ाहिरी और आमाले बातिनी।

फिर आमाले ज़ाहिरी दो क़िस्म के हैं, इबादते बदनी और इबादते माली, तो ये तीन कुल्लियात हुईं। इन तीनों कुल्लियात में से एक एक जुज़्ई को ज़िक्र कर दिया।

नमाज़ इबादते बदनी है और ज़कात इबादते माली है और ख़ुशूअ ख़ुज़ूअ इबादते बातिनी है। चूंकि तवाज़ो-ए-बातिनी में अह्ले तवाज़ो की मअिय्यत (साथ) को बड़ा दख़ल है और तासीरे अज़ीम है, इसलिए "म-अ रांकिअ़ीन" का लफ़्ज़ बढ़ाना निहायत बर महल हुआ। *(बयानुल क़ुरआन)*

इस क़ौल के मुवाफ़िक़ रूकूअ से ख़ुशूअ ख़ुज़ूअ मुराद है और बड़े लतीफ़ उमूर आयते शरीफ़ा से ज़ाहिर होते हैं।

1. एक यह कि सारी इबादात में अहम्मुल इबादत (सबसे अहम इबादत) नमाज़ है, इसीलिए इसको सबसे मुक़द्दम किया।

2. दूसरे दर्जे में ज़कात है, इसलिए इसको दूसरे नम्बर पर ज़िक्र किया।

3. ज़कात इस अता का शुक्राना है, जैसा कि अभी मुफ़स्सल गुज़रा है।

4. यह कि इबादात में बदनी इबादात माली इबादात पर मुक़द्दम हैं, इसलिए बदनी इबादात को अव्वल और माली को दूसरे नम्बर पर ज़िक्र फ़रमाया।

5. यह कि इबादात में उनकी ज़ाहिरी सूरत बातिनी हक़ीक़त पर मुक़द्दम है, इसीलिए ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ को तीसरे नम्बर पर ज़िक्र फ़रमाया।

6. यह कि ख़ुशूअ ख़ुज़ूअ पैदा करने में इस जमाअत के साथ शिर्कत को बड़ा दख़ल है। इसी वजह से मशाइख़ ख़ानक़ाहों के क़ियाम को अहमियत

देते हैं कि इन हज़रात की ख़िदमत में रहने से यह सिफ़त जल्दी पैदा होती है।

7. तीनों क़िस्म की इबादात में मुसलमानों के उमूमी अफ़राद के अमल को बहुत अहमियत है, इसलिए सब जगह जमा के सीग़े इर्शाद हुए।

ग़ौर से और भी लताइफ़ पैदा होते हैं-

दूसरा क़ौल यह है कि रूकूअ से मुराद नमाज़ का रूकूअ है। हमारे हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब क़ुद्दस सिर्रहू ने 'तफ़सीरे अज़ीज़ी' में जो लिखा है, उसका ख़ुलासा यह है कि नमाज़ पढ़ो, नमाज़ पढ़ने वालों के साथ, यानी जमाअत से नमाज़ अदा करो। इस लफ़्ज़ में गोया जमाअत की ताकीद है और जमाअत की नमाज़ इसी मज़हब का ख़ास्सा है, और दीनों में नहीं है। और इसको रूकूअ के लफ़्ज़ से इसलिए ताबीर किया कि यहूद का ऊपर से बयान हो रहा है और उनकी नमाज़ में रूकूअ नहीं होता। पस गोया इशारा है इस तरफ़ कि नमाज़ मुसलमानों की तरह पढ़ो। *(तफ़्सीरे अज़ीज़ी)*

नमाज़ के ज़ैल में जमाअत को बहुत ख़ुसूसी दख़ल है जैसा कि रिसाला 'फ़ज़ाइले नमाज़' (हमारे यहां से हिंदी में मिल सकती है।) में इस का बयान तफ़्सील से गुज़र चुका है। हत्ताकि फ़ुक़हा ने बग़ैर जमाअत की नमाज़ को नाक़िस अदा बताया है।

(۲) وَرَحْمَتِىْ وَسِعَتْ كُلَّ شَىْءٍ ؕ فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِنَا يُؤْمِنُوْنَ ۚ
(اعراف ع ۱۹)

2. और मेरी रहमत (ऐसी आम है कि) तमाम चीज़ों को मुहीत है, पस उसको उन लोगों के लिए (कामिल तौर पर, ख़ास तौर से) लिखूँगा, जो ख़ुदा-ए-तआला से डरते हैं और ज़कात देते हैं और हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं। *(आराफ़, रूकूअ 19)*

फ़ायदा:- हज़रत हसन रज़ि० और क़तादा रज़ि० से मंक़ूल है कि अल्लाह जल्ल शानुहू की रहमत दुनिया में हर शख़्स को शामिल है, नेक हो या बद हो, लेकिन आख़िरत में ख़ास तौर से मुत्तक़ी लोगों ही के लिए है। एक आराबी मस्जिद में आए और नमाज़ पढ़ कर उन्होंने दुआ की, या अल्लाह ! मुझ पर और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर रहमत फ़रमा और हमारे साथ रहमत में किसी और को शरीक न कर। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम ने उनको दुआ करते हुए सुन लिया, तो फ़रमाया कि तुमने अल्लाह की वसीअ रहमत को तंग किया। अल्लाह जल्ल शानुहू ने रहमत के सौ हिस्से फ़रमा कर एक हिस्सा दुनिया में उतारा जिसको सारी दुनिया में तक़सीम फ़रमा दिया, इसी की वजह से मख़्लूक़ सारी की सारी, जिन्नात हों या इंसान या चौपाए एक दूसरे पर (आल-औलाद पर, अपने पर, बेगाने पर) रहम करते हैं, और 99 हिस्से अपने पास रख ली।

एक और हदीस में है कि अल्लाह की रहमत के सौ हिस्से हैं, जिनमें से एक की वजह से मख़्लूक़ एक दूसरे पर रहम खाती है, उसी की वजह से जानवर अपनी औलाद पर रहम करते हैं और 99 हिस्से क़ियामत के दिन के लिए मुअख़्ख़र कर दिए। और भी मुतअद्दद अहादीस में यह मज़्मून आया है। *(दुर्रे मंसूर)*

किस क़दर मसर्रत की बात है, किस क़दर लुत्फ़ की चीज़ है कि माएं अपनी औलाद पर जितनी शफ़्क़त करती हैं कि उसकी ज़रा सी तक्लीफ़ से बे-चैन हो जाती हैं, बाप अपनी औलाद को किसी मुसीबत में देखते हैं, परेशान हो जाते हैं; अज़ीज़ व अक़रबा, मियां बीवी अपने और अजनबी किसी पर मुसीबत देख कर तिलमिलाने लगते हैं। ये सारी चीज़ें उस रहमत ही का तो असर है जो अल्लाह तआला ने क़ुलूब में रखी है। सारी दुनिया की सारी रहमतें मिला कर एक बटा सौ (1/100) हिस्सा है उस रहमत का, जिसके निन्नानवे हिस्से अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने लिए इख़्तियार फ़रमाये, इतने बड़े रहीम इतने बड़े शफ़ीक़ के अहकाम की परवाह न करना किस क़दर बे-ग़ैरती है, किस क़दर ज़ुल्म है, कोई मां अपने लड़के पर इंतिहाई करम करती हो और फिर वह लड़का उसके कहने की परवाह न करे तो मां को किस क़दर रंज हो, हालांकि मां का लुत्फ़ व करम अल्लाह के लुत्फ़ व करम के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं। इसी से हक़ तआला शानुहू के अहकाम की परवाह न करने का अंदाज़ा कर लिया जाए।

(٣)وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ رِّبًا لِّيَرْبُوَا فِيْٓ اَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُوْا عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ زَكٰوةٍ تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ ۝(روم ع ٤)

3. और जो चीज़ तुम इस ग़रज़ से दोगे कि सूद बन कर लोगों

के माल में बढ़ौतरी का सबब बने, यह तो अल्लाह के नज़दीक नहीं बढ़ता और जो कुछ ज़कात (वग़ैरह) दोगे, जिससे कि अल्लाह तआला की रिज़ा मक़्सूद हो तो ऐसे लोग अपने दिए हुए माल को अल्लाह तआला के पास बढ़ाते रहते हैं।

फ़ायदा:- मुजाहिद रह० कहते हैं कि बढ़ौतरी की ग़रज़ से माल देने में वह सब माल दाख़िल है जो इस नीयत से दिए जाएं कि इससे अफ़ज़ल मिले यानी चाहे दुनिया में इससे अफ़ज़ल मिलने की, ज़्यादा मिलने की उम्मीद पर ख़र्च करे या आख़िरत में ज़्यादा मिलने की उम्मीद पर ख़र्च करे, वह सब बढ़ौतरी की उम्मीद में दाख़िल है। इसीलिए रिबा (सूद) और ज़कात को साथ ज़िक्र किया।

एक और हदीस में हज़रत मुजाहिद रह० से नक़ल किया गया कि इससे हदाया मुराद हैं। *(दुर्रे मंसूर)*

यानी जो हद्या वग़ैरह किसी को इस ग़रज़ से दिया जाए कि वह उसके बदले में इससे बढ़कर देगा, मसलन किसी की दावत इस ग़रज़ से की जाए कि फिर वह नज़राना देगा जो उससे ज़्यादा होगा, जितना दावत पर ख़र्च किया गया। इसी में न्योता वग़ैरह भी दाख़िल है कि यह सब के सब बढ़ौतरी की नीयत से ख़र्च किये जाते हैं। इन सब का एक ही ज़ाब्ता है कि अल्लाह तआला के यहां इज़ाफ़ा उसी चीज़ का होता है जो उसकी रिज़ा के लिए ख़र्च किया जाए।

हज़रत सईद बिन जुबैर रह० फ़रमाते हैं कि जो कोई हद्या इस नीयत से दिया जाये कि उसका बदला दुनिया में मिले, उसका कोई सवाब आख़िरत में नहीं है और ज़ाहिर है कि जब आख़िरत की नीयत से दिया ही नहीं तो वहां क्यों मिले।

हज़रत कअब क़ुरज़ी रह० फ़रमाते हैं कि कोई शख़्स किसी को इस नीयत से दे कि वह बदले में उससे ज़्यादा देगा, वह अल्लाह तआला के यहां किसी इज़ाफ़े का सबब नहीं और जो शख़्स महज़ अल्लाह के वास्ते दे कि जिस शख़्स को दिया है, उससे किसी क़िस्म की मुकाफ़ात और बदले का उम्मीदवार न हो, यही वह माल है जो अल्लाह के नज़दीक बढ़ता रहता है।

(दुर्रे मंसूर)

लिहाज़ा जो लोग किसी को ज़कात वग़ैरह का माल देकर इसके

उम्मीदवार रहते हैं कि वे हमेशा एहसानमंद रहेंगे, वे अपने सवाब में इस बद नीयती से ख़ुद कमी कर देते हैं। सबसे पहली फ़स्ल की आयात में नं॰ 34 पर गुज़रा है –

إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللَّهِ لَا نُرِيدُ مِنكُمْ جَزَاءً وَلَا شُكُورًا ۝

"इन्न-मा नुत् अिमुकुम लिवज्हिल्लाहि ला नुरीदु मिन्कुम जज़ा-अंव् व ला शुकूरा॰"

'हम तुमको महज़ अल्लाह के वास्ते खिलाते हैं, न तो हम इसका तुमसे बदला चाहते हैं न इसका शुक्रिया चाहते हैं, और हक़ तआला शानुहू ने ज़्यादा बदला चाहने की नीयत से ख़र्च करने को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तो ख़ास तौर से मना फ़रमाया है, चुनांचे दूसरी जगह ख़ुसूसियत से हुज़ूर सल्ल॰ को इर्शाद है:-

"व ला तम्नुन तस्तक्सिर॰" *(मुद्दस्सिर)*

'और आप किसी को इस ग़रज़ से न दें कि उसका ज़्यादा मुआवज़ा चाहें।''

और अल्लाह जल्ल शानुहू के लिए ख़र्च करने का सवाब और उसकी ज़्यादती दीन और दुनिया में मुतअद्दद आयात और रिवायात से पहली फ़स्ल में गुज़र चुकी है, इसलिए ख़र्च करने वालों को बहुत एहतिमाम से इसका लिहाज़ रखना चाहिए कि किसी पर ख़र्च करने की सूरत में हरगिज़ उनसे किसी क़िस्म के बदले या शुक्रिए का उम्मीदवार न रहना चाहिए। यह दूसरी बात है कि लेने वाले का फ़र्ज़ है कि वह एहसानमंद हो और उसका शुक्र अदा करे, लेकिन देने वाला अगर उसकी नीयत करेगा, तो वह अल्लाह के वास्ते से निकल कर दुनिया के वास्ते में दाख़िल हो जाएगा, बिल ख़ुसूस ज़कात में तो इसका वाहमा भी न होना चाहिए कि इसमें वह ख़ुद अपना फ़र्ज़ अदा कर रहा है। इसमें किसी पर क्या एहसान है। इसलिए आयते शरीफ़ा में ज़कात को अल्लाह की रिज़ा के लिए देने के साथ मुक़य्यद किया है।

अहादीस

(١) عن ابن عباسؓ قال لما نزلت وَالَّذِينَ يَكْنِزُونَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ كبر ذالك على المسلمين فقال عمرؓ انا افرج عنكم فانطلق فقال يا نبي الله

انه كبر على اصحابك هذه الاية فقال ان الله لم يفرض الزكوٰة الا ليطيب مابقى من اموالكم وانما فرض المواريث وذكر كلمة لتكون لمن بعد كم فقال فكبّر عمرؓ ثم قال له الااخبرك بخير مايكنز المرء المرأة الصالحة اذا نظر اليها سرته واذا امرها اطاعته واذا غاب عنها حفظته رواه ابو داؤد وكذا فى المشكوٰة .

1. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जब क़ुरआन पाक में आयते शरीफ़ा "वल्लज़ी-न यक्निज़ू-नज़् ह ब वल फ़िज़्ज़-त" नाज़िल हुई तो सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम पर यह आयत बहुत शाक़ हुई। हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया कि इस मुश्किल को मैं हल करूँगा। हज़रत उमर रज़ि॰ यह फ़रमा कर हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में तश्रीफ़ ले गये। और वहां हाज़िर होकर अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! यह आयत तो लोगों पर बड़ी शाक़ हो रही है। हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने ज़कात इसीलिए फ़र्ज़ की है कि बक़िया माल को उम्दा और तैय्यब बना दे और मीरास तो आख़िर इसी वजह से फ़र्ज़ हुई कि माल बाद में बाक़ी रहे। हज़रत उमर रज़ि॰ ने ख़ुशी में अल्लाहु अक्बर फ़रमाया, फिर हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं बेहतरीन चीज़ ख़ज़ाने के तौर पर रखने की बताऊँ? वह औरत है जो नेक हो कि जब ख़ाविंद उसको देखे, तो उसकी तबीअत ख़ुश हो जाये और जब उसको कोई हुक्म करे तो वह इताअत करे, और जब वह कहीं चला जाये तो वह औरत (ख़ाविंद की छोड़ी हुई चीज़ों की) हिफ़ाज़त करे, (जिसमें अपनी इफ़्फ़त भी दाख़िल है।)

फ़ायदा:- दूसरी फ़स्ल की आयात में नं॰ 5 पर यह आयते शरीफ़ा और इसका तर्जुमा गुज़र चुका है। इस आयते शरीफ़ा के ज़ाहिर से मालूम होता था कि हर क़िस्म का जख़ीरा चाहे कैसी ही ज़रूरत से जमा किया जाये, वह सख़्त अज़ाब का सबब है। इसलिए सहाबा किराम रज़ि॰ को बड़ा शाक़ गुज़रा कि अल्लाह तआला और उसके पाक रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इर्शादात पर अमल तो सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन की जान थी, और ज़रूरतें बसा औक़ात रूपया वग़ैरह रखने पर मजबूर करती थीं। इसलिए

बड़ी गरानी हो रही थी, जिसको हज़रत उमर रज़ि॰ ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दर्याफ़्त करके हल किया। हुज़ूर सल्ल॰ ने तसल्ली फ़रमा दी कि ज़कात इसलिए फ़र्ज़ हुई है कि उसके अदा करने के बाद बाक़ी माल तैय्यब हो जाए और इससे माल के जमा रखने पर दलील हो गयी कि ज़कात तो जब ही वाजिब होगी, जब साल भर माल मौजूद रहे। अगर माल का रखना जायज़ न होता तो ज़कात क्यों वाजिब होती? नीज़ इससे ज़कात की कितनी बड़ी फ़ज़ीलत मालूम हुई कि उसके अदा करने का सवाब तो मुस्तक़िल और अलाहिदा रहा, उसकी वजह से बाक़ी माल भी पाक साफ़ और तैय्यब बन जाता है ख़ुद क़ुरआन पाक में भी इस तरफ़ इशारा है। हक़ तआला शानुहू इर्शाद फ़रमाते हैं –

خُذْمِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيْهِمْ بِهَا (توبه ع ۱۲)

"ख़ुज़् मिन् अम्वालिहिम स-द-क़-तन तुतह्हिरू हुम व तुज़क्की हिम बिहा॰" *(तौबा, रुकूअ़ 12)*

'आप उन मालों से सदक़ा ले लीजिए, जिसके ज़रिए से आप उन को (गुनाह के आसार से) पाक साफ़ कर देंगे।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद है कि अपने माल की ज़कात अदा किया करो कि यह तुम्हारे पाक होने का ज़रिया है। *(कंज़)*

एक और हदीस में है कि ज़कात अदा किया करो कि वह पाक करने वाली है। अल्लाह तआला तुमको (इसके ज़रिये से) पाक कर देगा।

एक और हदीस में है कि अपने मालों को ज़कात के ज़रिए से (गंदगी से या इज़ाअत से) महफ़ूज़ बनाओ और अपने बीमारों की सदक़े से दवा करो और बलाओं के लिए दुआओं को तैयार करो। *(कंज़)*

एक और हदीस में है कि ज़कात के ज़रिए से अपने माल को महफ़ूज़ बनाओ, अपने बीमारों की सदक़े से दवा करो और बलाओं के ज़वाल के लिए दुआ और आजिज़ी से मदद चाहो। *(कंज़)*

इसके बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हदीसे बाला में माल जमा रखने के जवाज़ (जायज़ होने) की दूसरी दलील इर्शाद फ़रमायी, कि मीरास का हुक्म तो इसी वजह से है कि माल रखना जायज़ है, अगर माल का रखना जायज़ न हो तो फिर तक़्सीमे मीरास किस चीज़ की होगी ? इसके

बाद हुज़ूर सल्ल॰ ने इस पर तंबीह फ़रमायी कि जायज़ होना अम्रे आख़र (दूसरी बात) है, लेकिन ख़ज़ानों में रखने की चीज़ नहीं है, बल्कि उसको तो ख़र्च ही कर देना चाहिए। महफ़ूज़ रखने की चीज़ नेक बीवी है।

कुछ रिवायात से मालूम होता है कि सहाबा रज़ि॰ ने इस जगह सवाल फ़रमाया था जिस पर हुज़ूर सल्ल॰ का यह इर्शाद है।

हज़रत सौबान रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जब यह आयते शरीफ़ा "वल्लज़ी-न यक्नि ज़ूनज़्ज़-ह-ब" नाज़िल हुई तो हम हुज़ूर सल्ल॰ के साथ सफ़र में थे। बाज़ सहाबा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! अगर यह मालूम हो जाता कि ख़ज़ाने के तौर पर क्या चीज़ हिफ़ाज़त से रखने की है, तो हुज़ूर ने फ़रमाया, बेहतरीन चीज़ वह ज़बान है जो ज़िक्र करने वाली हो, वह दिल है जो शुक्रगुज़ार हो और वह नेक बीवी है जो दीन के कामों में मदद करने वाली हो। *(दुर्रे मंसूर)*

एक हदीस में है कि जब यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई तो हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि सोने चांदी का नास हो, कैसी बुरी चीज़ है? तीन मर्तबा हुज़ूर सल्ल॰ ने यही फ़रमाया, इस पर बाज़ सहाबा रज़ि॰ ने दर्याफ़्त किया कि ख़ज़ाने के तौर पर क़ाबिले हिफ़ाज़त क्या चीज़ बेहतर है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि ज़बान ज़िक्र करने वाली, दिल अल्लाह से डरने वाला और वह नेक बीवी जो दीन के कामों में मुईन व मददगार हो। *(तफ़्सीरे कबीर)*

कैसी पाक और जामेअ तालीम है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कि माल रखने का जवाज़ भी बता दिया और जमा रखने का पसंदीदा न होना भी बता दिया और दुनिया में राहत की ऐसी ज़िन्दगी, जो आख़िरत में काम दे, वह भी बता दी कि ज़िक्र करने वाली ज़बान, शुक्र करने वाला दिल और दुनिया की लज़्ज़त की वह चीज़ भी बता दी जो राहत से ज़िन्दगी गुज़ारने का सबब हो और वे फ़ित्ने उसमें न हों जो माल में हैं। हर क़िस्म की राहत उससे मयस्सर हो और वह बीवी है, बशर्ते कि नेक हो, दीनदार हो, फ़रमांबरदार हो और समझदार हो कि ख़ाविंद के माल व मताअ की हिफ़ाज़त करने वाली हो।

(۲) عن ابی الدرداءؓ عن رسول الله صلی الله علیه وسلم قال الزكوٰة قنطرة الاسلام رواه الطبرانی فی الاوسط والكبير كذا فی الترغيب

2. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि

ज़कात इस्लाम का (बहुत बड़ा मज़बूत) पुल है।

फ़ायदा:- जैसा कि मज़बूत पुल ज़रिया और सहूलत का सबब होता है किसी जगह जाने का, इसी तरह ज़कात ज़रिया और रास्ता है इस्लाम की हक़ीक़त तक सहूलत से पहुँचने का, या अल्लाह जल्ल शानुहू के आली दरबार तक पहुँचने का।

अब्दुल अज़ीज़ बिन उमैर रह० हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० के पोते, फ़रमाते हैं कि नमाज़ तुझे आधे रास्ते तक पहुँचा देगी और रोज़ा बादशाह के दरवाज़े तक पहंचा देगा और सदक़ा तुझे बादशाह के पास पहुँचा देगा।

(इत्तिहाफ़)

पुल के साथ एक लतीफ़ मुनासिबत हज़रत शक़ीक़ बलख़ी रह० जो मशहूर बुज़ुर्ग और सूफ़ी हैं, के कलाम से भी मालूम होती है, वह फ़रमाते हैं कि हमने पांच चीज़ें तलाश कीं, उनको पांच जगह पाया:-

1. रोज़ी की बरकत को चाश्त की नमाज़ में पाया, और
2. क़ब्र की रोशनी तहज्जुद की नमाज़ में मिली,
3. मुन्किर नकीर के जवाब को तिलावते क़ुरआन में पाया, और
4. पुल सिरात पर सहूलत से गुज़रना रोज़े और सदक़े में पाया, और
5. अर्श का साया ख़लवत में पाया। *(फ़ज़ाइले नमाज़)*

(۳) عن جابرؓ قال قال رجل یا رسول اللہ ارأیت ان ادی الرجل زکوٰۃ ماله فقال رسول اللہ صلی اللہ علیه وسلم من ادی زکوٰۃ ماله فقد ذهب عنه شره رواہ الطبرانی فی الاوسط وابن خزیمة فی صحیحه والحاکم مختصرا وقال صحیح علی شرط مسلم کذا فی الترغیب۔

3. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स माल की ज़कात अदा कर दे तो उस माल का शर उस से जाता रहता है।

फ़ायदा:- बाज़ रिवायात में यह मज़्मून इस तरह आया है कि जब तू माल की ज़कात अदा कर दे तो तूने उस माल के शर को ज़ायल कर दिया।

(कंज़)

यानी माल बहुत से शुरूर का सबब होता है लेकिन उसकी ज़कात अगर

एहतिमाम से अदा होती रहे तो उसके शर से हिफ़ाज़त रहती है। आख़िरत के एतिबार से तो ज़ाहिर है कि फिर उस माल पर अज़ाब नहीं होता, दुनिया के एतिबार से इस लिहाज़ से कि ज़कात का अदा करना माल के महफ़ूज़ रहने का ज़रिया है, जैसा कि इससे अगली हदीस में आ रहा है और अगर ज़कात न अदा की जाए तो वह माल ज़ाया हो जाता है, जैसा कि आइन्दा फ़स्ल के नं॰ 6 पर आ रहा है।

(٤)عن الحسنؒ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم حصنوا اموالكم بالزكوة وداووا مرضاكم بالصدقة واستقبلوا امواج البلاء بالدعاء والتضرع رواه ابو داؤد فى المراسيل و رواه الطبرانى والبيهقى وغيرهما عن جماعة من الصحابة مرفوعًا متصلا والمرسل اشبه كذا فى الترغيب

4. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि अपने मालों को ज़कात के ज़रिए महफ़ूज़ बनाओ और अपने बीमारों का सदक़े से इलाज करो और बला और मुसीबत की मौजों का दुआ और अल्लाह तआला के सामने आजिज़ी से इस्तिक़बाल करो।

फ़ायदा:- तहसीन के मायने अपने चारों तरफ़ क़िला बना लेने के हैं यानी जैसा कि आदमी क़िले में बैठ जाने से हर तरफ़ से महफ़ूज़ हो जाता है, ऐसा ही ज़कात का अदा कर देना उस माल को ऐसा महफ़ूज़ कर देता है जैसा कि वह माल क़िले में महफ़ूज़ हो गया हो।

एक हदीस में है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिदे काबा में हतीम में तश्रीफ़ रखते थे। किसी शख़्स ने तज़्किरा किया कि फ़लां आदमियों का बड़ा नुक़्सान हो गया, समुन्दर की मौज ने उनके माल को ज़ाया कर दिया। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि जंगल हो या समुन्दर, किसी जगह भी जो माल ज़ाया होता है, वह ज़कात न देने से ज़ाया होता है, अपने मालों की ज़कात अदा करने के ज़रिए हिफ़ाज़त किया करो, और अपने बीमारों की सदक़े से दवा किया करो। और बलाओं के नुज़ूल को दुआओं से दूर किया करो। दुआ उस बला को भी ज़ायल कर देती है, जो नाज़िल हो गयी हो और उस बला को भी रोक देती है जो अभी तक नाज़िल न हुई हो। जब अल्लाह जल्ल शानुहू किसी क़ौम की बक़ा चाहते हैं या उनकी बढ़ौतरी चाहते हैं तो उस क़ौम में गुनाहों से इफ़्फ़त और जवांमर्दी (यानी जूद व बख़्शिश) अता फ़रमाते हैं और जब किसी क़ौम को ख़त्म करना चाहते हैं तो उसमें ख़ियानत पैदा कर देते हैं। *(कंज़)*

(٥) روی عن علقمة انهم اتوا رسول الله صلی الله علیه وسلم قال فقال لنا النبی صلی الله علیه وسلم ان تمام اسلامکم ان تؤدوا زکوٰة اموالکم رواه البزار

5. हज़रत अल्क़मा रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जब हमारी जमाअत हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुई तो हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम्हारे इस्लाम की तक्मील इसमें है कि मालों की ज़कात अदा करो।

फ़ायदा:- इस्लाम की तक्मील का ज़कात पर मौक़ूफ़ होना ज़ाहिर है। कि जब ज़कात इस्लाम के पांच मशहूर अर्कान (1. कलिमा तैय्यबा का इक़रार, 2. नमाज़, 3. रोज़ा, 4. हज, 5. ज़कात) का एक रूक्न है, तो जब तक एक रूक्न भी बाक़ी रहेगा, इस्लाम की तक्मील नहीं हो सकती।

हज़रत अबू अय्यूब रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि एक साहब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, मुझे ऐसा अमल बता दीजिए जो मुझे जन्नत में दाख़िल कर दे। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, अल्लाह की इबादत करो, किसी को उसका शरीक न करो, नमाज़ को क़ायम करो, ज़कात अदा करते रहो और सिला-रहमी करते रहो।

एक और हदीस में है, एक आराबी ने सवाल किया मुझे ऐसा अमल बता दीजिए जिस पर अमल करके जन्नत में दाख़िल हो जाऊँ। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, अल्लाह की इबादत करो, उसके साथ किसी को शरीक न करो, फ़र्ज़ नमाज़ को एहतिमाम से अदा करते रहो, फ़र्ज़ ज़कात अदा करते रहो, रमज़ान के रोज़े रखते रहो। उन साहब ने अर्ज़ किया, उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है इसमें ज़रा भी कमी ज़्यादती न होगी। जब वह चले गये तो हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि जिस शख़्स का किसी जन्नती आदमी को देख कर दिल खुश हो, वह इस शख़्स को देखे। *(तर्ग़ीब)*

(٦) عن عبد الله بن معوية الغاضری قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم ثلث من فعلهن فقد طعم طعم الایمان من عبد الله وحده وعلم ان لا اله الا الله واعطیٰ زکوٰة ماله طیبة بها نفسه رافدة علیه کل عام ولم یعط الهرمة ولا الدرنة ولا المریضة ولا الشرط اللئیمة ولکن من وسط اموالکم فان الله لم یسئالکم خیره ولم یامرکم بشره . رواه ابو داؤد کذا فی الترغیب.

6. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स तीन काम कर ले, उसको ईमान का मज़ा आ जाए, सिर्फ़ अल्लाह जल्ल शानुहू की इबादत करे और इसको अच्छी तरह जान ले कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और ज़कात को हर साल ख़ुश दिली से अदा करे (बोझ न समझे) इसमें (जानवरों की ज़कात में) बूढ़ा जानवर या ख़ारिशी जानवर या मरीज़ या घटिया क़िस्म का जानवर न दे, बल्कि मुतवस्सित जानवर दे। अल्लाह जल्ल शानुहू ज़कात में तुम्हारे बेहतरीन माल नहीं चाहते, लेकिन घटिया माल का भी हुक्म नहीं फ़रमाते।

फ़ायदा:- इस हदीस में तज़्किरा अगरचे जानवरों की ज़कात का है लेकिन ज़ाब्ता हर ज़कात का यही है कि न तो बेहतरीन माल वाजिब है, न घटिया माल जायज़ है, बल्कि दर्मियानी माल अदा करना असल है। अलबत्ता कोई अपनी ख़ुशी से सवाब हासिल करने के लिए, अल्लाह तआला को राज़ी करने के लिए उम्दा माल अदा करे तो उसकी सआदत है, उसकी ख़ुश क़िस्मती है। इस सिलसिले में सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ के अह्वाल को ग़ौर से देखे, उनके तर्ज़े अमल की तहक़ीक़ात करे। दो वाक़िए नमूने के तौर पर/इस जगह नक़ल करता हूँ:-

मुस्लिम बिन शोअ्बा रज़ि॰ कहते हैं कि नाफ़ेअ बिन अल्क़मा रज़ि॰ ने मेरे वालिद को हमारी क़ौम का चौधारी बना दिया था। एक मर्तबा उन्होंने मेरे वालिद को हुक्म दिया कि सारी क़ौम की ज़कात जमा करके ले जाएं। मेरे वालिद ने मुझे सबसे ज़कात का माल वसूल करने और जमा करने को भेज दिया। मैं एक बड़े मियां के पास जिनका नाम हज़रत सअर रज़ि॰ था। उनकी ज़कात लेने के लिए गया, उन्होंने मुझसे पूछा, भतीजे, किस तरह का माल लोगे? मैं ने कहा अच्छे से अच्छा लूँगा, हत्तांकि बकरी के थन तक भी देखूँगा कि बड़े हैं या छोटे यानी एक एक चीज़ देखकर हर एतिबार से उम्दा से उम्दा माल छांटकर लूँगा। उन्होंने कहा कि पहले मैं तुम्हें एक हदीस सुना दूँ (ताकि मसअला तुम को मालूम हो जाए, उसके बाद जैसा दिल चाहे ले लेना) मैं हुज़ूर सल्ल॰ के ज़माने में इसी जगह रहता था। मेरे पास हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास से दो आदमी क़ासिद बन कर आए और यह कहा कि हमें हुज़ूर सल्ल॰ ने तुम्हारी ज़कात के लिए भेजा है। मैं ने उनको अपनी बकरियां दिखा कर दर्याफ़्त किया कि इनमें क्या चीज़ वाजिब है? उन्होंने शुमार कर के बताया

कि एक बकरी वाजिब है। मैं ने एक निहायत उम्दा बकरी जो चर्बी और दूध से लबरेज़ थी, निकाली कि ज़कात में दे दूँ। उन साहबों ने उसको देख कर कहा कि यह बच्चों वाली बकरी है हमें ऐसी बकरी लेने की हुज़ूर सल्ल॰ की तरफ़ से इजाज़त नहीं है। मैं ने पूछा फिर कैसी लोगे? उन दोनों ने कहा कि छः महीने का मेंढ़ा या एक साल की बकरी। मैं ने एक शशमाहा (छः महीने का) बच्चा निकाल कर उनको दे दिया, वे ले गये। *(अबू दाऊद)*

इस वाक़िए में हज़रत सअर की ख़्वाहिश इब्तिदाअन यही थी कि तमाम बकरियों में जो बेहतर से बेहतर हो, वह अदा की जाए और इब्ने नाफ़ेअ रज़ि॰ को ग़ालिबन यह वाक़िआ इसलिए सुनाया कि उनको मसअला मालूम हो जाए और इसके बाद उनका अंदाज़ा तो इस वाक़िए से ख़ुद ही मालूम हो गया कि यह ज़कात में अपना बेहतरीन माल देना चाहते है।

दूसरा वाक़िआ हज़रत उबई बिन काब रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मुझे हुज़ूर सल्ल॰ ने एक मर्तबा ज़कात वसूल करने के लिए भेजा। मैं एक साहब के पास गया। जब उन्हों ने अपने ऊँट मेरे सामने किए तो मैं ने देखा कि उनमें एक साल की ऊँटनी वाजिब है। मैं ने उनसे कहा कि एक साला ऊँटनी दे दो। वह कहने लगे कि एक साला ऊँटनी किस काम आएगी, न तो वह सवारी का काम दे सकती है, न दूध का। यह कहने के बाद उन्होंने एक निहायत उम्दा, बहुत मोटी ताज़ी बड़ी ऊँटनी निकाली और कहा कि इसे ले जाओ। मैं ने कहा कि मैं तो इस को क़ुबूल नहीं कर सकता, अलबत्ता हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुद सफ़र में ही तशरीफ़ फ़रमा हैं और तुम्हारे क़रीब ही आज मंज़िल है। अगर तुम्हारा दिल चाहे, तो बराहे रास्त हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में जाकर पेश कर दो। अगर हुज़ूर सल्ल॰ ने इजाज़त दे दी तो मैं ले लूँगा। वह साहब ऊँटनी को लेकर मेरे साथ चल दिए। जब हम हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में पहुँचे तो उन्होंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह, आप के क़ासिद मेरे पास आए थे कि मेरी ज़कात लें और ख़ुदा की क़सम, यह सआदत मुझे अब से पहले कभी नसीब नहीं हुई कि हुज़ूर सल्ल॰ ने या हुज़ूर सल्ल॰ के क़ासिद ने कभी मुझसे माल तलब किया हो। मैं ने आप के क़ासिद के सामने अपने ऊँट कर दिए। उन्होंने उनको देख कर फ़रमाया कि इनमें एक साला ऊँटनी वाजिब है। हुज़ूर

सल्ल॰ एक साला ऊँटनी न तो दूध का काम दे सकती है न सवारी का, इसलिए मैं ने एक बेहतर सी ऊँटनी इनकी ख़िदमत में पेश की थी। जो यह मेरे साथ हाज़िर है। इन्होंने इस के क़ुबूल करने से इंकार कर दिया। इसलिए मैं आपकी ख़िदमत में लाया हूँ। या रसूलल्लाह, इस को क़ुबूल फ़रमा लीजिए। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि तुम पर वाजिब तो वही है जो उन्होंने बताया। अगर तुम नफ़्ल के तौर पर ज़्यादा उम्र की ऊँटनी देते हो, तो अल्लाह जल्ल शानुहू तुम्हें इसका अज्र देगा। उन्होंने अर्ज किया, या रसूलल्लाह ! मैं इसीलिए साथ लाया हूँ, इसको क़ुबूल फ़रमा लें। हुज़ूर सल्ल॰ ने उसके लेने की इजाज़त फ़रमा दी।

(अबू दाऊद)

इन हज़रात के दिलों में ज़कात का माल अदा करने के ये वलवले थे। वे इस पर फ़ख़्र करते थे इसको इज़्ज़त समझते थे कि अल्लाह का और इसके रसूल का क़ासिद आज मेरे पास आया और मैं इस क़ाबिल हुआ। वे उसको तावान और बेगार नहीं समझते थे। हम लोग उम्दा माल को यह सोचते हैं कि इसको रख लें कि अपने काम आएगा और ये हज़रात अपने काम आना उसी को समझते थे जो अल्लाह के रास्ते में ख़र्च कर दिया हो।

हज़रत अबूज़र रज़ि॰ का वाक़िआ पहली फ़स्ल की आयात के ज़ैल में नं॰ 11 पर गुज़र चुका है, कि जब क़बीला बनी सुलैम के एक शख़्स ने आप की ख़िदमत में रहने की दर्ख़्वास्त की तो आपने उनसे यह फ़रमा दिया कि इस शर्त पर मेरे पास क़ियाम की इजाज़त है कि जब मैं किसी को कोई चीज़ देने को कहूँ तो जो चीज़ मेरे माल में सबसे उम्दा और बेहतर हो, उसको छांट कर देना होगा। यह मुफ़स्सल क़िस्सा गुज़र चुका है और आइंदा फ़स्ल की अहादीस में नं॰ 6 पर यह मज़्मून तफ़्सील से आ रहा है कि ज़कात व सदक़ात में बिलख़ुसूस ज़कात में ख़राब माल हरगिज़ न देना चाहिए।

(٧) عن ابی ہریرةؓ ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال اذا اديت الزكوٰة فقد قضيت ماعليك ومن جمع مالاحرامًا ثم تصدق به لم يكن له فيه اجر وكان اصره عليه رواه ابن حبان وابن خزيمة فى صحيحهما والحاكم وقال

7. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि जब तू माल की ज़कात अदा कर दे तो जो हक़ (वाजिब) तुझ पर था, वह तो अदा हो गया (आगे नवाफ़िल का सिर्फ़ दर्जा है) और जो

शख़्स हराम तरीक़े (सूद रिश्वत वग़ैरह) से माल जमा करके सदक़ा करे, उसको उस सदक़े का कोई सवाब नहीं है। बल्कि इस हराम कमाई का वबाल उस पर है।

फ़ायदा:- इस हदीस पाक में दो मज़्मून वारिद हुए हैं: -

एक तो यह कि वाजिब दर्जा ज़कात का है, इसके अलावा जो दरजात हैं, वे सदक़ात और नवाफ़िल के हैं।

एक और हदीस में है कि जो शख़्स ज़कात को अदा कर दे, उसने उस हक़ को तो अदा कर दिया जो उस पर वाजिब था, उससे ज़्यादा जो अदा करे वह अफ़ज़ल है। (कंज़)

हज़रत ज़िमाम बिन सालबा रज़ि॰ की मशहूर हदीस जो बुख़ारी शरीफ़ व मुस्लिम शरीफ़ वग़ैरह सब कुतुब में बहुत तरीक़ों से ज़िक्र की गयी है, जिसमें उन्होंने हुज़ूर सल्ल॰ से इस्लाम और उसके अर्कान के मुताल्लिक़ सवालात किये और हुज़ूर सल्ल॰ ने सब को तफ़्सील से बताया। उसमें मिनजुम्ला दूसरे अर्कान के हुज़ूर सल्ल॰ ने ज़कात का भी ज़िक्र फ़रमाया। हज़रत ज़िमाम रज़ि॰ ने पूछा कि ज़कात के अलावा कोई और चीज़ मुझ पर वाजिब है? हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि नहीं, अलबत्ता अगर नफ़्ल के तौर पर तुम अदा करो, तो इख़्तियार है।

हज़रत उमर रज़ि॰ के ज़माने में एक शख़्स ने मकान फ़रोख़्त किया तो हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया कि इसकी क़ीमत को एहतियात से अपने घर में गढ़ा खोदकर उसमें रख देना। उसने अर्ज़ किया कि इस तरह कंज़ (ख़ज़ाने) में दाख़िल न हो जाएगा ? हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया कि जिस की ज़कात अदा कर दी जाए वह कंज़ में दाख़िल नहीं होता।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ का इर्शाद है कि मुझे इसकी परवाह नहीं कि मेरे पास उहद पहाड़ के बराबर सोना हो, मैं उसकी ज़कात अदा करता रहूँ और उसमें अल्लाह की इताअत करता रहूँ। (दुर्रे मंसूर)

इस नौअ की बहुत सी रिवायात कुतुबे अहादीस में मौजूद हैं, जिनकी बिना पर जम्हूर उलमा और चारों इमामों का यही मज़हब है कि माल में बहैसियत माल के ज़कात के अलावा किसी दूसरी चीज़ का वुजूब नहीं, अलबत्ता दूसरी हैसियात से अगर वुजूब हो तो वह अम्रे आख़र है, जैसा कि

बीवी का और छोटी औलाद का नफ़्क़ा है और इसी तरह से दूसरे नफ़क़ात हैं, और इसी तरह से मुज़्तर की ज़रूरत का पूरा करना है कि जो शख़्स भूख या प्यास की वजह से मर रहा है, उसको मौत से बचाना फ़र्ज़े किफ़ाया है।

इमाम गज़ाली रह० एहयाउल उलूम में फ़रमाते हैं कि बाज़ (कुछ) ताबिईन का मज़हब यह है कि माल में ज़कात के अलावा कुछ हुक़ूक़ हैं जैसा कि नख़ई रह०, शअबी रह०, अता रह० और मुजाहिद रह० का मज़हब है।

इमाम शअबी रह० से किसी ने पूछा कि माल में ज़कात के अलावा भी हक़ है? उन्होंने फ़रमाया है, और क़ुरआन पाक की आयत 'व आ तल मा-ल अला हुब्बिही' तिलावत फ़रमायी जो सबसे पहली फ़स्ल की आयात में नं० 2 पर गुज़र चुकी है। ये हज़रात यह फ़रमाते हैं कि यह हुक़ूक़े मुस्लिम में दाख़िल है कि मालदारों के ज़िम्मे यह ज़रूरी है कि जब वे किसी ज़रूरतमंद को देखें तो उसकी ज़रूरत का इज़ाला कर दें, लेकिन जो चीज़ फ़िक़्ह के एतिबार से सही है, वह यह है कि जब किसी शख़्स को इज़्तिरार का दर्जा हासिल हो जाए तो उसका इज़ाला फ़र्ज़े किफ़ाया है, लेकिन उसका इज़ाला बतौर क़र्ज़ के किया जाए या इआनत के तौर पर फ़ुक़हा के यहां इस में इख़्तिलाफ़ है। *(एहया)*

मुज़्तर की इआनत अपनी जगह पर मुस्तक़िल वाजिब है, जबकि वह भूख से या प्यास से या किसी और वजह से हलाकत के क़रीब हो, लेकिन मालदार पर माली हैसियत से ज़कात से ज़्यादा वाजिब नहीं। यहां दो अम्र क़ाबिले लिहाज़ हैं।

अव्वल इफ़रात, (ज़्यादती) हम लोगों की आदत यह है कि जब भी किसी चीज़ की तरफ़ बढ़ते हैं तो ऐसा ज़ोर से दौड़ते हैं कि फिर हदों की ज़रा भी परवाह नहीं रहती, इसलिए इसकी रियायत ज़रूरी है कि किसी दूसरे शख़्स का माल बग़ैर उसकी तीबे ख़ातिर के लेना जायज़ नहीं है। फ़ुक़हा ने मुज़्तर के लिए दूसरे का माल खाने की ज़रूर इजाज़त दी है लेकिन इसमें ख़ुद हनफ़िय्य: के यहां भी दो क़ौल हैं कि उसको मुर्दार का खाना, दूसरे का माल खाने पर मुक़द्दम है या दूसरे का माल मुर्दार खाने पर मुक़द्दम है, जैसा कि कुतुबे फ़िक़्ह में मज़्कूर है, लेकिन इतना ज़रूर है कि वह इस हालत पर पहुँच जाए कि उसको मुर्दार खाने की इजाज़त हो जाए जब वह दूसरे का माल खा सकता है, हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है:-

وَلَا تَأْكُلُوْا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوْا بِهَا إِلَى الْحُكَّامِ لِتَأْكُلُوْا فَرِيْقًا مِّنْ أَمْوَالِ النَّاسِ بِالْإِثْمِ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ. (بقره ع ٢٣)

"व ला तअ्कुलू अम्वा-लकुम बै-नकुम बिल् बातिलि व तुदलू बिहा इलल् हुक्का-मि लि तअ्कुलू फ़रीक़म् मिन् अम्वा लिन्ना-सि बिल इस्मि व अन्तुम तअ्ल-मून॰" *(सूर: बक़र: रूकूअ, 33)*

"और आपस में एक दूसरे का माल ना हक़ न खाओ और उनको हुक्काम के यहां इस ग़रज़ से न ले जाओ कि लोगों के माल का एक हिस्सा बतरीक़े गुनाह के खा जाओ और तुम उसको जानते हो।"

हुज़ुरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि किसी पर ज़ुल्म न करो, किसी शख़्स का माल उसकी तीबे ख़ातिर के बग़ैर लेना हलाल नहीं है। *(मिश्कात)*

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मशहूर इर्शाद है कि जो शख़्स एक बालिश्त ज़मीन किसी की ज़ुल्म से लेगा, क़ियामत के दिन सातों ज़मीनों का वह हिस्सा, जो उसके बलिश्त के मुक़ाबिल है तौक़ बना कर उसके गले में डाल दिया जाएगा। *(मिश्कात)*

वफ़्दे हवाज़न का क़िस्सा निहायत मशहूर है कि जब वह शकिस्त खाने के बाद मुसलमान होकर हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और यह दर्ख़्वास्त की कि ग़नीमत में जो क़ैदी और माल उनका लिया गया है, वह उनको वापस मिल जाए। तो हुज़ूर सल्ल॰ ने बाज़ मसालेह की बिना पर यह वायदा फ़रमा लिया कि दोनों चीज़ें तो वापस नहीं हो सकतीं। उन में से एक वापस हो सकती है। उन्होंने क़ैदियों के वापस मिल जाने की दर्ख़्वास्त की तो हुज़ूर सल्ल॰ ने सब मुसलमानों से, जिनका उनमें हक़ था, यह एलान फ़रमाया कि मैं ने उनके क़ैदियों को वापस करने का वायदा कर लिया है, तुममें से जो शख़्स ख़ुश दिली से अपना हिस्सा मुफ़्त दे सकें, वह दे दे और जो इसको पसंद न करे, हम उसका बदल उसको दे देंगे। भला हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ईमा (इशारे) के बाद सहाबा रज़ि॰ में कौन इंकार करने वाला था? मज्मे ने अर्ज़ किया कि हम ख़ुशदिली से पेश करते हैं। हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि मज्मे के दर्मियान में यह सही तौर पर पता नहीं चल सकता कि किसकी ख़ुशी से इजाज़त

है और किसकी नहीं। इसलिए तुम्हारे चौधरी तुमसे अलाहिदा-अलाहिदा बात करके तुम्हारी रिज़ा की मुझे इत्तिला करें। *(मिश्कात)*

दूसरे के माल में एहतिमात का यह उसवा (नमूना) हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का है, और इस मज़्मून की ताईद में अहादीस का बड़ा ज़ख़ीरा है कि जब्र व इक्राह (ज़बर दस्ती) से बिला रिज़ामंदी किसी दूसरे का माल लेना हरगिज़ जायज़ नहीं है।

उलमा-ए-हक़ ने इसमें इतनी एहतियात बरती है कि जो मज्मे की शर्म में किसी कारे ख़ैर में चंदा दिया जाए, उसको भी पसंद नहीं किया। इस लिए एक जानिब तो इसमें इफ़रात से बचना ज़रूरी है कि ब-जब्र व इक्राह किसी दूसरे का माल न लिया जाए। किसी वक़्ती तहरीक से मरऊब होकर हरगिज़ क़ौल व फ़ेल से, तहरीर व तक़रीर से जम्हूर असलाफ़ के ख़िलाफ़ न करना चाहिए। ग़रीब-परवरी का जज़्बा बहुत मुबारक है मगर इसमें हुदूद से तजावुज़ हरगिज़ न करना चाहिए।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि बदतरीन लोगों में से है वह शख़्स जो दूसरे की दुनिया की ख़ातिर अपनी आख़िरत को नुक़्सान पहुँचाये। *(बुख़ारी)*

इसलिए इसमें एक जानिब इफ़रात से बचना ज़रूरी है और दूसरी जानिब इसमें तफ़रीत (कमी) से बचना भी अहम और निहायत ज़रूरी है। यह सही है कि माल में ज़कात ही वाजिब है, लेकिन महज़ वाजिब की अदाएगी पर किफ़ायत करना हरगिज़ मुनासिब नहीं।

अब तक जो मज़ामीन और रिवायात रिसाले में गुज़र चुकी हैं वे सब की सब ब-बांगे दुहल इसका एलान कर रही हैं कि अपने काम आने वाला सिर्फ़ वही माल है जो अपनी ज़िंदगी में दे दिया गया और अल्लाह के यहां जमा कर दिया गया, बाद में न कोई मां बाप याद रखता है न बीवी या औलाद पूछती है। सब चंद रोज़ के फ़र्ज़ी आँसू मुफ़्त के बहाकर अपने अपने मश्ग़ले में लग जायेंगे, किसी को महीनों और सालों भी मरने वाले का ख़्याल नहीं आएगा। इस सब से क़ता-नज़र हदीसे बाला के सिलसिले में एक और अहम और कुल्ली बात भी ज़ेहन नशीन रखना चाहिए कि दीन के मुताल्लिक़ एक मोहमल और बेहूदा लफ़्ज़ हमारी ज़बानों पर होता है। "अजी हम दुनियादारों से फ़राइज़ ही अदा हो जायें

तो ग़नीमत है, नवाफ़िल तो बड़े लोगों का काम है," यह शैतानी धोखा है, नवाफ़िल और ततव्वुआत फ़राइज़ ही की तक्मील के वास्ते होते हैं। कौन शख़्स यह यक़ीन कर सकता है कि मैं ने अल्लाह तआला के किसी फ़र्ज़ को भी पूरा का पूरा अदा कर दिया और जब उसमें कोताही रहती ही है तो उसके पूरा करने के लिए नवाफ़िल होते हैं।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि आदमी नमाज़ से ऐसी हालत में फ़ारिग़ होता है कि उसके लिए उस नमाज़ का दसवां हिस्सा लिखा जाता है, नवां हिस्सा, आठवां हिस्सा, सातवां हिस्सा, छठा हिस्सा, पांचवां हिस्सा, चौथा हिस्सा, तिहाई हिस्सा, आधा हिस्सा लिखा जाता है।

(अबू दाऊद)

यह मिसाल के तौर पर हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया हम लोग जैसी नमाज़ पढ़ते हैं, उसका तो हज़ारवां, बल्कि लाखवां हिस्सा भी लिख लिया जाए तो महज़ उसका लुत्फ़ व करम है, वरना वह तो अपनी बद-आमालियों और बे-इख़्लासी की वजह से ऐसी होती है जैसा कि दूसरी अहादीस में है, और बाज़ नमाज़ें पुराने कपड़े की तरह लपेट कर मुंह पर मार दी जायेंगी कि उनमें क़ुबूलियत का कोई दर्जा भी न होगा। ऐसे अहवाल में नहीं कहा जा सकता कि हमारे फ़राइज़ का कितना हिस्सा लिखा गया।

एक और हदीस में है कि क़ियामत में सबसे पहले नमाज़ का मुहासबा होगा। अल्लाह जल्ल शानुहू का पाक इर्शाद फ़रिश्तों को होगा कि मेरे बन्दे की नमाज़ को देखो कि नाक़िस है या पूरी है, अगर पूरी होती है तो वह पूरी लिख ली जाती है और अगर नाक़िस होती है तो जितना नुक़्सान होता है, वह दर्ज हो जाता है। फिर इर्शाद होता है कि देखो, इस के पास कुछ नवाफ़िल हैं या नहीं। अगर नवाफ़िल उसके पास होते हैं तो उनसे फ़राइज़ की तक्मील कर दी जाती है। इसके बाद फिर इसी तरह ज़कात का हिसाब किताब होता है यानी अव्वल फ़राइज़ का हिसाब होता है, फिर नवाफ़िल से उसकी तक्मील होती है, उसके बाद फिर इसी तरह बक़ीया आमाल का हिसाब किताब होता है।

(अबू दाऊद)

ऐसी सूरत में इस घंमड में किसी शख़्स को हरगिज़ न रहना चाहिए कि मैं ज़कात हिसाब के मुवाफ़िक़ देता रहता हूं, न मालूम कितनी कोताहियां उसमें हो जाती होंगी। उनकी तलाफ़ी के लिए ज़्यादा से ज़्यादा मिक्दार में सदक़ाते

नाफ़िला का ज़ख़ीरा रहना चाहिए। अदालत में जब मुक़दमे के लिए आदमी जाता है, हमेशा ख़र्च से ज़्यादा रूपया जेब में डाल कर जाता है कि न मालूम क्या ख़र्च पेश आ जाए, वह अदालत तो सब अदालतों से ऊँची है, जहां न झूठ चलता है, न ज़बानज़ोरी, न सिफ़ारिश, हां अल्लाह की रहमत हर चीज़ से बालातर है, वह साहिबे हक़ है, बिल्कुल ही माफ़ कर दे तो किसी का क्या इजारा है, लेकिन यह ज़ाब्ते की चीज़ नहीं है और मराहिमे ख़ुसरवाना की उम्मीद पर जुर्म नहीं किये जाते, इसलिए फ़र्ज़ की मिक़्दार को बहुत एहतिमाम से उसके शराइत और आदाब की रिआयत रखते हुए अदा करते रहना चाहिए और महज़ फ़राइज़ की अदाएगी पर हरगिज़ हरगिज़ क़नाअत न करना चाहिए बल्कि उनकी कोताही के ख़ौफ़ से तक्मील के लिए ज़्यादा से ज़्यादा हिस्सा नवाफ़िल के ज़ख़ीरे का अपने पास रहना चाहिए।

अल्लामा सुयूती रह० ने 'मिर्अतुस्सऊद' में नक़ल किया है कि सत्तर नवाफ़िल एक फ़रीज़े की बराबरी करते हैं। इसलिए फ़र्ज़ को बहुत एहतिमाम से अदा करना चाहिए कि उसकी थोड़ी सी कोताही से नवाफ़िल का बहुत बड़ा ज़ख़ीरा उसमें वज़अ हो जाता है और फ़राइज़ में एहतिमाम के बावजूद एहतियात के तौर पर नवाफ़िल का बहुत बड़ा ज़ख़ीरा अपने नामा-ए-आमाल में महफ़ूज़ रखना चाहिए।

दूसरा मज़्मून हदीसे बाला में यह था कि जो शख़्स हराम माल जमा करके उसमें से सदक़ा करे, उसको सदक़े का सवाब नहीं।

बहुत सी रिवायात में यह मज़्मून ज़िक्र किया गया है कि हक़ तआला शानुहू हलाल माल से सदक़े क़ुबूल करते हैं।

एक हदीस में है कि हक़ तआला शानुहू ग़ुलूल के माल का सदक़ा क़ुबूल नहीं करते। ग़ुलूल माले ग़नीमत में ख़ियानत को कहते हैं, उलमा ने लिखा है कि ग़लूल का तज़्किरा इस वजह से फ़रमाया है कि ग़नीमत के माल में सबका हिस्सा होता है, तो जब ऐसे माल का सदक़ा जिसमें ख़ुद भी अपना हिस्सा है, क़ुबूल नहीं होता तो, जिस माल में अपना कोई हिस्सा न हो, उसमें से सदक़ा ब-तरीक़े औला क़ुबूल न होगा।

एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद वारिद हुआ है कि जो शख़्स हराम माल कमाता है वह अगर ख़र्च करे तो उसमें

बरकत नहीं होती, सदक़ा करे तो क़ुबूल नहीं होता, पीछे मीरास के तौर पर छोड़ जाए तो गोया जहन्नम का तोशा छोड़ गया।

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जो शख़्स हलाल माल कमा ले, उसका ज़कात अदा न करना उस माल को ख़बीस बना देता है और जो शख़्स हराम माल कमावे उसका ज़कात अदा करना उस माल को तैय्यब नहीं बनाता। (दुर्रे मंसूर)

पांचवीं फ़स्ल

ज़कात अदा न करने की वईद में

क़ुरआन पाक में बहुत सी आयात नाज़िल हुई हैं जिनमें से मुतअद्दद आयात दूसरी फ़स्ल में यानी माल ख़र्च न करने की वईद में गुज़र चुकी हैं। जिनके मुताल्लिक़ उलमा ने तस्रीह की है कि यह ज़कात अदा न करने में हैं और ज़ाहिर है कि जितनी वईदें गुज़री है वह ज़कात अदा न करने पर जब कि ज़कात बिल इज्माअ फ़र्ज़ है, ब-तरीक़े औला शामिल होंगी। चुनांचे:-

(١) وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

1. वल्लज़ी-न यक्निज़ून ज़्ज़-ह-ब वल फ़िज़्ज़ त व ला युन्फ़िक़ून-हा फ़ी सबीलिल्ला-हि॰ (आयत) जो दूसरी फ़स्ल की नं॰ 5 पर तर्जुमा के साथ गुज़र चुकी है, जम्हूर सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ और जम्हूर उलमा के नज़दीक ज़कात के बारे में नाज़िल हुई है और जो सख़्त अज़ाब इस आयते शरीफ़ा में ज़िक्र किया गया वह ज़कात अदा न करने वालों के लिए है जैसा कि इसके ज़ैल में भी गुज़र चुका और मुतअद्दद अहादीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पाक इर्शाद से भी इसकी ताईद होती है, कि जो अज़ाब इस आयते शरीफ़ा में ज़िक्र किया गया कि उसके माल को तपा कर उस शख़्स की पेशानी को और पहलू वग़ैरह को उससे दाग़ दिए जायेंगे। यह ज़कात अदा न करने का अज़ाब है। अल्लाह ही अपने फ़ज़्ल से महफ़ूज़ रखे कि पकते हुए धात का ज़रा सा दाग़ भी सख़्त अज़ीयत पहुँचाने वाला होता है, चे जाये कि जितना माल ज़्यादा

हो, उतने ही ज़्यादा दाग़ आदमी को दिए जायेंगे। चंद रोज़ इन सोने चांदी के ठीकरों के अपने पास रख कर कितनी सख़्त मुसीबत का सामना है।

(२) وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ (الاٰية)

2. व ला यह्स-बन्नल्लज़ी-न यब्ख़ लू-न बिमा आता हुमुल्लाहु मिन फ़ज़्लिही॰ (आयत) यह आयते शरीफ़ा भी मय तर्जुमा के दूसरी फ़स्ल के नं॰ 3 पर गुज़र चुकी है, और इसकी ताईद में बुख़ारी शरीफ़ की हदीस से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद गुज़र चुका है कि जिस शख़्स को अल्लाह जल्ल शानुहू ने माल अता किया हो और वह उसकी ज़कात अदा न करता हो, वह माल सांप बन कर उसके गले में डाल दिया जाएगा और वह कहेगा कि मैं तेरा माल हूँ, तेरा ख़ज़ाना हूँ। सांप जिस घर में भी निकल आता है, दहशत की वजह से अंधेरे में उस घर में भी जाना मुश्किल हो जाता है कि कहीं लिपट न जाए, लेकिन अल्लाह के पाक रसूल सल्ल॰ फ़रमाते हैं कि यही माल जिसको आज महफ़ूज़ ख़ज़ानों और लोहे की अलमारियों में रखा जाता है, ज़कात अदा न करने पर कल को सांप बन कर तुम्हें लिपटा दिया जाएगा। घर के सांप का लिपटना ज़रूरी नहीं, महज़ एहतिमाल है कि शायद वह लिपट जाए और शायद इस एहतिमाल पर बार बार फ़िक्र व ख़ौफ़ होता है कि कहीं इधर से न निकल आए, उधर से न निकल आए और ज़कात अदा न करने पर उस का अज़ाब यक़ीनी है, मगर फिर भी उसका ख़ौफ़ हम को नहीं होता।

(٣) اِنَّ قَارُوْنَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوْسٰى فَبَغٰى عَلَيْهِمْ ص وَاٰتَيْنٰهُ مِنَ الْكُنُوْزِ مَآ اِنَّ مَفَاتِحَهٗ لَتَنُوْٓءُ بِالْعُصْبَةِ اُولِى الْقُوَّةِ ق اِذْ قَالَ لَهٗ قَوْمُهٗ لَا تَفْرَحْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِيْنَ ٥ وَابْتَغِ فِيْمَآ اٰتٰكَ اللّٰهُ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيْبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَاَحْسِنْ كَمَآ اَحْسَنَ اللّٰهُ اِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِى الْاَرْضِ ط اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ٥ قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ عِنْدِىْ ط اَوَلَمْ يَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهٖ مِنَ الْقُرُوْنِ مَنْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَّاَكْثَرُ جَمْعًا ط وَلَا يُسْئَلُ عَنْ ذُنُوْبِهِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ٥ فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ فِىْ زِيْنَتِهٖ ط قَالَ الَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا يٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَآ اُوْتِىَ قَارُوْنُ لا اِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ٥ وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ج وَلَا يُلَقّٰهَآ اِلَّا الصّٰبِرُوْنَ ٥ فَخَسَفْنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ الْاَرْضَ قف فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِيْنَ ٥ وَاَصْبَحَ الَّذِيْنَ تَمَنَّوْا مَكَانَهٗ

بِالْاَمْسِ يَقُوْلُوْنَ وَيْكَاَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ ج لَوْلَآ اَنْ مَّنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا ط وَيْكَاَنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ٥ (قصص ٨٢)

3. क़ारून हज़रत मूसा अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम का चचा ज़ाद भाई था। जिसका क़िस्सा मशहूर व मारूफ़ है। क़ुरआन पाक में सूरः क़सस का आठवां रूकूअ सारा का सारा इसी क़िस्से में है, जिसका तर्जुमा मय तौज़ीह यह है कि क़ारून (हज़रत) मूसा (अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम) की बिरादरी में से (उनका चचा ज़ाद भाई) था सो वह (कसरते माल की वजह से) उन लोगों के मुक़ाबले में तकब्बुर करने लगा और हमने उसको इस क़दर ख़ज़ाने दिये थे कि उनकी कुंजियां कई कई ज़ोर आवर शख़्सों को गरांबार कर देती थीं, (यानी उन से ब-मुश्किल उठती थीं और जब ख़ज़ानों की कुंजियां इतनी थीं तो ज़ाहिर है कि ख़ज़ाने तो बहुत ही होंगे, और उसने यह तकब्बुर उस वक़्त किया था) जब कि उसको उसकी बिरादरी ने (हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम वग़ैरह ने समझाने के तौर पर) कहा कि तू (इस माल व दौलत पर) इतरा मत, वाक़ई अल्लाह तआला इतराने वालों को पसंद नहीं करता और तुझको ख़ुदा-ए-तआला ने जितना दे रखा है उसमें आलमे आख़िरत की भी जुस्तजू किया कर, और दुनिया से अपना हिस्सा (आख़िरत में ले जाना) फ़रामोश न कर, और जिस तरह अल्लाह तआला ने तुझ पर एहसान किया है तू भी (उसके बंदों पर) एहसान किया कर। (और ख़ुदा की नाफ़रमानी और हुक़ूक़े वाजिबा ज़ाया करके) दुनिया में फ़साद का ख़्वाहां मत हो। बेशक अल्लाह तआल फ़सादी लोगों को पसंद नहीं करता। क़ारून ने (उनकी नसीहतें सुन कर यह) कहा कि मुझको तो यह सब कुछ मेरी ज़ाती हुनरमंदी से मिला (कि मेरी हुस्ने तदबीर से यह जमा हुआ, न इसमें कुछ ग़ैबी एहसान है, न किसी दूसरे का इसमें कोई हक़ है, हक़ तआला शानुहू उसके क़ौल पर इताब फ़रमाते हैं कि) क्या उस क़ारून ने यह न जाना कि अल्लाह तआला इससे पहले गुज़िश्ता उम्मतों में ऐसे लोगों को हलाक कर चुका है, जो माली क़ुव्वत में भी इससे कहीं बढ़े हुए थे और (जमाअती हैसियत से) मज्मा भी उनका ज़्यादा था (यह तो दुनिया में हुआ और आख़िरत में जहन्नम का अज़ाब अलग रहा।) और मुज्रिमों से (उनके गुनाहों का) मालूम करने की ग़रज़

से सवाल भी न होगा (कि हर शख़्स का पूरा हाल अल्लाह तआला शानहू को मालूम है (मुतालबे की वजह से सवाल अलाहिदा रहा) फिर (वह क़ारून एक मर्तबा) अपनी आराइश व शान के साथ अपनी बिरादरी के सामने निकला तो जो लोग (उसकी बिरादरी में) दुनिया के तालिब थे वे कहने लगे कि क्या अच्छा होता कि हमको भी यह साज़ व सामान मिला होता जो क़ारून को मिला है। वाक़ई यह क़ारून बड़ा साहिबे नसीब है। (यह तमन्ना और हिर्स माल की थी, इससे उन लोगों का काफ़िर होना लाज़िम नहीं है जैसा कि अब भी बहुत से मुसलमान दूसरी क़ौमों की दुन्यावी तरक़्क़ियां देखकर हर वक़्त ललचाते हैं। और इसकी फ़िक्र व सई में लगे रहते हैं। कि यह दुन्यावी फ़रोग़ हमें भी नसीब हो) और जिन लोगों को इल्मे दीन (और उसका फ़हम) अता किया गया था (उन हरीसों से) कहने लगे, अरे तुम्हारा नास हो (तुम इस दुनिया पर क्या ललचाते हो?) अल्लाह के घर का सवाब(इस चंद रोज़ा माल व दौलत से लाख लाख दर्जे) बेहतर है, जो ऐसे शख़्स को मिलता है जो ईमान लाये और अच्छे अमल करे और (उनमें से भी कामिल दर्जे का सवाब) उन्हीं लोगों को दिया जाता है जो सब्र करने वाले हों और फिर (जब हमने क़ारून की सरकशी और फ़साद की वजह से) उसको और उसकी महल सराए को ज़मीन में धांसा दिया, सो कोई जमाअत ऐसी न हुई कि उसको अल्लाह के अज़ाब से बचा लेती और न वह ख़ुद ही किसी तदबीर से बच सका। (बेशक अल्लाह तआला के अज़ाब से कौन बचा सकता है और कौन बच सकता है? क़ारून पर यह अज़ाब की हालत देखकर) कल जो लोग उस जैसा होने की तमन्ना कर रहे थे, वे कहने लगे, बस जी यों मालूम होता है कि (रिज़्क़ की फ़राख़ी और तंगी का मदार ख़ुश नसीबी या बद नसीबी पर नहीं, बल्कि अल्लाह तआला अपने बंदों में से जिसको चाहता है रोज़ी की फ़राख़ी देता है और जिसको चाहता है तंगी देता है) यह हमारी ग़लती थी कि उसकी फ़राख़ी को ख़ुश नसीबी समझ रहे थे (वाक़ई) अगर हम पर अल्लाह तआला की मेहरबानी न होती तो हमको भी धांसा देता। (कि गुनाहगार तो आख़िर हम भी हैं ही) बस जी मालूम हो गया कि काफ़िरों को फ़लाह नहीं है (गो यह चंद रोज़ा ज़िन्दगी

के मज़े लूट लें।) (बयानुल क़ुर्आन)

फ़ायदा:- हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि क़ारून हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम की बिरादरी से था, उनका चचा ज़ाद भाई था। (दुन्यवी) उलूम में बहुत तरक़्क़ी की थी और हज़रत मूसा अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलाम पर हसद करता था। हज़रत मूसा अलै॰ ने उससे फ़रमाया कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने मुझे तुमसे ज़कात वसूल करने का हुक्म दिया है। उसने ज़कात देने से इंकार कर दिया और लोगों से कहने लगा कि मूसा इस नाम से तुम्हारे मालों को खाना चाहता है। उसने नमाज़ का हुक्म दिया, तुमने बर्दाश्त किया, उसने और अहकाम जारी किये जिनको तुम बर्दाश्त करते रहे, अब वह तुम्हें ज़कात का हुक्म देता है, उसको भी बर्दाश्त करो। लोगों ने कहा कि यह हमसे बर्दाश्त नहीं होता तुम्हीं कोई तर्कीब बताओ। उसने कहा, मैं ने यह सोचा है कि किसी फ़ाहिशा औरत को इस पर राज़ी किया जाये, जो हज़रत मूसा अलै॰ पर इसकी तोहमत लगाए कि वह मुझसे ज़िना करना चाहते हैं। लोगों ने एक फ़ाहिशा को बहुत कुछ इनाम का वायदा करके इस पर राज़ी कर लिया कि वह हज़रत मूसा अलै॰ पर यह इल्ज़ाम लगाये।

उसके राज़ी होने पर क़ारून हज़रत मूसा अलै॰ के पास गया। उनसे कहा कि अल्लाह तआला ने जो अहकाम आपको दिए हैं, वह बनी इस्राईल को सबको जमा करके सुना दीजिए। हज़रत मूसा अलै॰ ने इसको पसंद फ़रमाया और सारे बनी इस्राईल को जमा किया और जब सब जमा हो गये तो हज़रत मूसा अलै॰ ने अल्लाह तआला के अहकाम बताना शुरू किये कि मुझे ये अहकाम दिए हैं कि उसकी इबादत करो, किसी को उसका शरीक न करो, सिला-रहमी करो और दूसरे अहकाम गिनवाये जिनमें यह भी फ़रमाया कि अगर कोई बीवी वाला ज़िना करे तो उसको संगसार किया जाए। इस पर लोगों ने कहा, और अगर आप खुद ज़िना करें ? हज़रत मूसा अलै॰ ने फ़रमाया अगर मैं ज़िना करूँ तो मुझे भी संगसार किया जाए। लोगों ने कहा कि आपने ज़िना किया है। हज़रत मूसा अलै॰ ने ताज्जुब से फ़रमाया कि मैं ने ? लोगों ने कहा जी हां आपने ! और यह कह कर उस औरत को बुला कर उससे पूछा कि तू हज़रत मूसा अलै॰ के मुताल्लिक़ क्या कहती है? हज़रत मूसा अलै॰ ने भी उसको क़सम देकर फ़रमाया कि तू क्या कहती है?

उस औरत ने कहा कि जब आप कुसम देते हैं तो बात यह है कि इन लोगों ने मुझसे इतने इतने इनाम का वायदा किया है कि अगर मैं आप पर यह इल्ज़ाम लगाऊँ। आप इस इल्ज़ाम से बिल्कुल बरी हैं। यह सुनकर हज़रत मूसा अलै॰ रोते हुए सज्दे में गिर गये। अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से सज्दे ही में वही आयी कि रोने की क्या बात है? तुम्हें इन लोगों को सज़ा देने के लिए हमने ज़मीन पर तसल्लुत दे दिया। तुम जो चाहो, उनके मुताल्लिक ज़मीन को हुक्म फ़रमाओ। हज़रत मूसा अलै॰ ने सज्दे से सिर उठाया और ज़मीन को हुक्म फ़रमाया कि इनको निगल जा। उसने एड़ियों तक निगला था कि वे आजिज़ी से मूसा अलै॰ को पुकारने लगे। हज़रत मूसा अलै॰ ने फिर हुक्म फ़रमाया कि इनको धंसा दे, हत्ताकि वे लोग गरदन तक धंस गये, फिर बहुत ज़ोर से वे हज़रत मूसा अलै॰ को पुकारते रहे। हज़रत मूसा अलै॰ ने फिर ज़मीन को यही फ़रमाया कि इनको ले ले। वह सबको निगल गयी, इस पर अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से हज़रत मूसा अलै॰ पर वही आयी कि वे तुम्हें पुकारते रहे और तुम से आजिज़ी करते रहे। मेरी इज़्ज़त की कुसम! अगर वे मुझे पुकारते तो मैं उनकी दुआ कुबूल कर लेता।

एक और हदीस में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ से नक़ल किया गया कि आयते शरीफ़ा में 'दुनिया से अपना हिस्सा न भूल' का मतलब यह है कि इसमें आख़िरत के लिए अमल कर। हज़रत मुजाहिद रह॰ से नक़ल किया गया कि अल्लाह की इताअत करना दुनिया का वह हिस्सा है जिसमें आख़िरत का सवाब मिलता है।

हज़रत हसन रज़ि॰ से नक़ल किया गया कि दुनिया से अपना हिस्सा न भूल, यानी जितने की दुनिया में ज़रूरत है उसको बाक़ी रख और जो ज़्यादा है उसको आगे भेज दे।

एक और हदीस में उनसे नक़ल किया गया कि एक साल की रोज़ी बाक़ी रख ले और जो उससे ज़्यादा है, वह सदक़ा कर दे। *(दुर्रे मंसूर)*

इसका कुछ हिस्सा बुख़्ल के बयान में दूसरी फ़स्ल की आयात के सिलसिले में नं॰ 8 पर भी गुज़र चुका है।

अहादीस

(١) عن ابی هريرةؓ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ما من صاحب ذهب ولا فضة لايؤدى منها حقها الااذا كان يوم القيمة صفحت له صفائح من نارفاحمي عليها فى نارجهنم فيكوى بها جنبه وجبينه وظهره كلماردت اعيدت له فى يوم كان مقداره خمسين الف سنة حتى يقضى بين العباد فيرى سبيله امّا الى الجنة وامّا الى النار الحديث بطوله فى المشكوٰة عن مسلم.

1. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि कोई शख़्स जो सोने का मालिक हो या चांदी का और उसका हक़ (यानी ज़कात) अदा न करे तो क़ियामत के दिन उस सोने चांदी के पत्तरे बनाये जायेंगे और उनको जहन्नम की आग में ऐसा तपाया जाएगा गोया कि वह खुद आग के पत्तरे हैं फिर उनसे उस शख़्स के पहलू और पेशानी और कमर दाग़ दी जाएगी और बार बार इसी तरह तपा तपा कर दाग़ दिये जाते रहेंगे। क़ियामत के पूरे दिने में, जिसकी मिक़्दार दुनिया के हिसाब से पचास हज़ार साल होगी, इसके बाद उसको जहां जाना होगा, जन्नत में या जहन्नम में चला जायेगा।

फ़ायदाः- यह बड़ी लम्बी हदीस है, जिसमें ऊँट वालों पर ऊँट की ज़कात न देने का, गाय बकरी वालों पर उनकी ज़कात न देने का अज़ाब और उसकी कैफ़ियत बतायी गयी है। यहां आम तौर से जानवरों की इतनी मिक़्दारें, जिन पर ज़कात वाजिब हो, नहीं होतीं। अरब में इन्हीं की कसरत थी। अलबत्ता सोने चांदी और इसके मुतालिक़ात ऐसी चीज़ें हैं जो यहां आम तौर से होती हैं इसलिए इतनी ही हदीस पर क़नाअत की और इससे भी सब चीज़ों का अन्दाज़ा मालूम हो सकता है कि ज़कात न देने का क्या हश्र है कि यह वबाल और अज़ाब जो इस हदीस में ज़िक्र किया गया कि सोना चांदी जहन्नम की आग के टुकड़े बन कर दाग़ दिये जायेंगे।

यह तो सिर्फ़ क़ियामत के एक दिन का अज़ाब है, जो पेशी का दिन है, लेकिन उस दिन की मिक़्दार भी पचास हज़ार साल की होगी और इतने दिन ज़कात न देने का अज़ाब भुगत कर यह मालूम होगा कि अपने दूसरे आमाल इस

क़ाबिल हैं कि उनकी वजह से माफ़ी होकर जन्नत में जाने की इजाज़त हो जाए या वे अगर इस क़ाबिल नहीं और माफ़ी की कोई सूरत नहीं, या ज़कात न देने ही का अभी कुछ और अज़ाब भुगतना बाक़ी है, तो जहन्नम में फेंक दिया जायेगा। वहां जो कुछ गुज़रेगी, वह तो तहरीर व तक़रीर में आ ही नहीं सकती।

इस हदीस में क़ियामत का दिन पचास हज़ार साल का है और क़ुरआन पाक की आयते शरीफ़ा सूरः मआरिज के शुरू में भी क़ियामत के दिन को इसी मिक़्दार का बताया है। लेकिन कुछ अहादीस में आया है कि अल्लाह तआला के फ़रमांबरदार बंदों पर यह दिन ऐसा हल्का गुज़र जाएगा जैसा कि एक फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ ली हो और कुछ लोगों पर उन के आमाल के लिहाज़ से ऐसा होगा जैसा ज़ुहर से अस्र तक का वक़्त। (दुर्रे मंसूर)

इतनी जल्दी गुज़र जाने का मतलब यह है कि वे उस दिन सैर व तफ़रीह में होंगे। और सैर व तफ़रीह के शौक़ीन सभी इससे वाक़िफ़ हैं कि लज़्ज़त के औक़ात मिनटों में ख़त्म हो जाया करेंगे।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि यह न होगा कि रूपया पर रूपया और अशर्फ़ी पर अशर्फ़ी रख दी जाए बल्कि उसके बदन को इतना वसीअ् कर दिया जाएगा जिस पर ये सब बराबर बराबर रखे जा सकेंगे और उन लोगों से कहा जाएगा अपने ख़ज़ानों का मज़ा चखो।

हज़रत सौबान रज़ि० से नक़ल किया गया कि जितना सोना चांदी उसके पास होगा, उसके हर क़ीरात का (जो तक़रीबन तीन रत्ती का होता है फैला कर) आग का एक टुकड़ा बना दिया जाएगा, फिर उससे उसके सारे बदन को मुंह से पांव तक दाग़ दिया जाएगा। इसके बाद चाहे उस की बख़्शिश हो जाए या जहन्नम में डाल दिया जाए। (दुर्रे मंसूर)

आग में तपा कर दाग़ दिए जाने का जो अज़ाब इस हदीस शरीफ़ में गुज़रा है, यह क़ुरआन पाक में भी आया है, जैसा कि दूसरी फ़स्ल की आयात में नं० 5 पर गुज़रा है। कुछ अहादीस में उसके माल का सांप बन कर तौक़ पहनाना भी आया है। जैसा कि आइन्दा आ रहा है।

(٢) عن ابی هريرةؓ قال قال رسول الله صلی الله عليه وسلم من اتاه الله مالا فلم يؤد زكوته مثل له ماله يوم القيمة شجاعًا اقرع له زبيبتان يطوقه يوم القيمة ثم ياخذ بلهزمتيه يعنی شدقيه ثم يقول انا مالك انا كنزك ثم

تلا وَلَايَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ الاية رواه البخارى كذافى المشكوٰة
وقدروى من مسند ثوبان وابن مسعودؓ وابن عمرؓ بمعناه فى الترغيب

2. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जिस शख़्स को अल्लाह जल्ल शानुहू ने माल दिया हो और वह उसकी ज़कात अदा न करता हो तो वह क़ियामत के दिन एक ऐसा सांप बना दिया जाएगा जो गंजा हो और उसकी आंखों पर दो स्याह नुक़्ते होंगे फिर वह सांप उसकी गरदन में तौक़ की तरह डाल दिया जायेगा, जो उसके दोनों जबड़ों को पकड़ लेगा और कहेगा, मैं तेरा माल हूँ तेरा ख़ज़ाना हूँ। इसके बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (इसकी ताईद में) क़ुरआन पाक की आयत 'व ला यह्स-बन्नल्लज़ी-न यब्ख़ लू-न' पढ़ी (आयत)

फ़ायदा:- यह आयते शरीफ़ा मय इसके तर्जुमे के दूसरी फ़स्ल के नं० 3 पर गुज़र चुकी है। उस सांप की एक सिफ़त तो यह बयान की कि वह शुजाअ हो, जिससे बाज़ उलमा ने नर सांप मुराद लिया है और बाज़ ने कहा है कि शुजाअ वह सांप कहलाता है जो दुम के ऊपर सीधा खड़ा होकर मुक़ाबला करे। *(फ़त्हुल बारी)*

और दूसरी सिफ़त उस सांप की यह फ़रमायी कि वह गंजा होगा और गंजा इस वास्ते कहा कि सांप जब बहुत ज़्यादा ज़हरीला होता है तो ज़हर की शिद्दत से उसके सर के बाल उड़ जाया करते हैं।

और तीसरी सिफ़त उस सांप की यह बयान फ़रमायी कि उस पर दो नुक़्ते स्याह होंगे। उस पर दो नुक़्ते स्याह होना भी सांप के ज़्यादा जहरीला होने की अलामत है ऐसे सांप की उम्र भी ज़्यादा होती है और बाज़ उलमा ने दो नुक़्तों के बजाए सांप के मुंह में ज़हर की कसरत से दोनों जानिब ज़हर का झाग तर्जुमा किया है, और बाज़ ने दो दांत जो उसके मुंह से बाहर दोनों जानिब निकले हुए हों, और बाज़ ने दो ज़हर की थैलियां, जो दोनों जानिब लटकी हुई हों, तर्जुमा किया है। *(फ़त्हुल बारी)*

इस हदीसे पाक में ज़कात न देने पर उस माल का सांप बनकर तौक़ पहनाना ज़िक्र किया है और पहली हदीस में आग पर तपा कर दाग़ देना गुज़रा है और दोनों क़िस्म के अज़ाब क़ुरआन पाक की दो आयतों में भी गुज़र चुके

हैं और दोनों आयतें दूसरी फ़स्ल की आयात के ज़ैल में गुज़री हैं। दो अज़ाबों में कोई इश्काल नहीं। मुख़्तलिफ़ औक़ात के एतिबार से भी फ़र्क़ हो सकता है और मुख़्तलिफ़ अन्वाए माल के एतिबार से भी और मुख़्तलिफ़ आदमियों के एतिबार से भी और दोनों अज़ाब जमा भी हो सकते हैं।

हज़रते अक़्दस शाह वलिय्युल्लाह साहब रह० 'हुज्जतुल्लाहिल बालिग़ः' में फ़रमाते हैं कि सांप बन कर पीछे लगने में और पत्तरे बन कर दाग़ देने में फ़र्क़ इस वजह से है कि आदमी को अगर मुज्मलन माल से मुहब्बत हो, उसकी तफ़ासील से ख़ुसूसी ताल्लुक़ न हो, उसका माल तो एक शै-वाहिद (एक चीज़) सांप बन कर उसके पीछे लग जाएगा और जिसको माल की तफ़ासील से ताल्लुक़े ख़ातिर (दिली तअल्लुक़) हो, वह रूपया और अशर्फ़ी को गिन गिन कर रखता हो और जो मिल जाए उसके रूपये बना कर रखता हो, तो उसका माल पत्तरे बना कर दाग़ दिया जायेगा।

एक हदीस में है कि जो शख़्स अपने पीछे ख़ज़ाना छोड़ जाएगा, तो वह ख़ज़ाना एक गंजा, दो नुक़्तों वाला सांप बन कर क़ियामत के दिन उस शख़्स के पीछे लग जाएगा, वह शख़्स घबरा कर कहेगा, तू क्या बला है? वह कहेगा मैं तेरा ख़ज़ाना हूँ? जिसको छोड़ कर आया था। वह सांप अव्वल उसके हाथ को खा लेगा, फिर सारे बदन को। *(तर्ग़ीब)*

क़ियामत के अज़ाबों में कसरत से यह बात है कि जो शख़्स किसी अज़ाब की वजह से रेज़ा रेज़ा टुकड़े टुकड़े हो जाएगा, फिर अज़ाब के मुसल्लत होने के वास्ते अपनी असली हालत पर औद (लौट) करके दोबारा अज़ाब का महल बनेगा।

(۳) عن عبداللہ بن مسعودؓ قال امرنا باقام الصلوٰۃ وایتاء الزکوٰۃ ومن لم یزک فلا صلوٰۃ لہ رواہ الطبرانی فی الکبیر باسانید احدھا صحیح کذا فی الترغیب

3. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० इर्शाद फ़रमाते हैं कि हमें नमाज़ क़ायम करने का और ज़कात अदा करने का हुक्म है और जो शख़्स ज़कात अदा न करे उसकी नमाज़ भी (क़ुबूल) नहीं।

फ़ायदा:- यानी नमाज़ पर जो सवाब अल्लाह जल्ल शानुहू के यहां से मिलता, वह भी नहीं मिलेगा, अगरचे फ़र्ज़ अदा हो जायेगा।

एक और हदीस में है कि जो शख़्स ज़कात अदा न करे वह (कामिल) मुसलमान नहीं। उसको उसके नेक अमल फ़ायदा न देंगे। *(तर्ग़ीब)*

यानी दूसरे आमाल से ज़कात न देने का वबाल नहीं टलेगा। उसका मुतालबा बदस्तूर रहेगा।

एक और हदीस में है कि बग़ैर ज़कात अदा करने के दीन (कामिल) नहीं है। *(कंज़)*

एक और हदीस में है कि हक़ तआला शानुहू उस शख़्स की नमाज़ को क़ुबूल नहीं फ़रमाते जो ज़कात न देता हो। जब अल्लाह तआला शानुहू ने (बीसियों जगह क़ुरआन पाक में) नमाज़ और ज़कात को जमा फ़रमाया है तो उसको अलाहिदा न करो। *(कंज़)*

अलाहिदा करने का मतलब यह है कि नमाज़ पढ़ी जाये और ज़कात अदा न की जाए।

(٤) عن علیؓ قال قال رسول اللہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم ان اللہ فرض علی اغنیاء المسلمین فی اموالھم القدر الذی یسع فقراء ھم ولن یجھد الفقراء اذاجاعوا اوا عروا الا بما یمنع اغنیاء ھم الاوان اللہ یحاسبھم حسابا شدیدا و یعذبھم عذابا الیما . کذا فی الدروقال اخرجہ الطبرانی فی الاوسط وابوبکر الشافعی فی الغیلانیات قلت ولفظ المنذری فی الترغیب ویعذبھم بالواو وقال رواہ الطبرانی فی الاوسط والصغیر وقال تفردبہ ثابت بن محمد الزاھد قال الحافظ ثابت ثقۃ صدوق روی عنہ البخاری وغیرہ وبقیۃ رواتہ لاباس بھم وروی موقوفا علیٰ علیؓ وھواشبہ کذا فی الترغیب وعزاہ صاحب کنزالعمال الی الخطیب فی تاریخہ وابن النجار وقال فیہ محمد بن سعید البورقی کذاب یضع اھ

4. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने दौलत मंदों पर उनके मालों में इतनी मिक़्दार को फ़र्ज़ कर दिया है जो उनके फ़ुक़रा को काफ़ी है, और नहीं मशक़्क़त में डालती फ़ुक़रा को, जब कि वे भूखे या नंगे हों, मगर सिर्फ़ यह बात कि उनके ग़नी अपने फ़रीज़े को रोकते हैं यानी पूरा अदा नहीं करते। ग़ौर से सुन लो कि हक़ तआला शानुहू इन दौलत-मंदो से सख़्त मुहासबा फ़रमायेंगे और (फ़र्ज़ की कोताही पर) सख़्त अज़ाब देंगे।

फ़ायदा:- हासिल यह है कि हक़ तआला शानुहू ने अपने अल्ला मुल

ग़ुयूब होने की वजह से ज़कात की जो मिक़्दार फ़र्ज़ फ़रमा दी है, वह यक़ीनन इतनी काफ़ी मिक़्दार है कि अगर लोग उसको पूरा पूरा अदा करते रहें और उसूल से अदा करते रहें तो कोई शख़्स भूखा और नंगा नहीं रह सकता और यह बिल्कुल ज़ाहिरी और यक़ीनी चीज़ है।

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि॰ की हदीस में यह मक़्सूद ज़्यादा वाज़ेह अल्फ़ाज़ में ज़िक्र किया गया है। यह तवील हदीस है कि जिसको फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़न्दी रह॰ ने 'तंबीहुल ग़ाफ़िलीन' में मुफ़स्सल ज़िक्र किया है। उसमें मिन जुम्ला और सवालात के एक यह भी है, मैं ने अर्ज़ किया या नबीयल्लाह, आपने ज़कात का हुक्म फ़रमाया, ज़कात क्या है? हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया, अबूज़र, जो शख़्स अमानतदार नहीं, उसका ईमान नहीं और जो शख़्स ज़कात अदा नहीं करता, उसकी नमाज़ (मक़्बूल) नहीं। हक़ तआला शानुहू ने ग़नी लोगों पर उनके मालों की ज़कात इतनी मिक़्दार में वाजिब कर दी है जो उनके फ़ुक़रा को काफ़ी हो जाए। हक़ तआला शानुहू क़ियामत के दिन उनके माल की ज़कात का मुतालबा करेगा और उस पर उनको अज़ाब फ़रमाएगा।

यह हदीस साफ़ तौर से इस पर दलालत करती है कि हुज़ूर सल्ल॰ का यह इर्शाद ज़कात ही के मुताल्लिक़ है।

इमाम ग़ज़ाली रह॰ एह्या में फ़रमाते हैं कि हक़ तआला शानुहू ने ज़कात में कोताही करने वालों के लिए सख़्त वईद इर्शाद फ़रमायी है, चुनांचे इर्शाद है:-

وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ

'वल्लज़ी-न यक्नि ज़ू-न ज़्ज़-ह-ब' *(आयात)*

और अल्लाह तआला के रास्ते में ख़र्च करने से मुराद ज़कात का अदा करना है। इसके बाद फ़रमाते हैं कि ज़कात अपने मुतल्लिक़ात के एतिबार से छः क़िस्म पर है -

1. जानवरों की ज़कात, 2. सोने चांदी की ज़कात, 3. तिजारती माल की ज़कात, 4. रिकाज़ व मादन की ज़कात, 5. पैदावार की ज़कात, 6. सदक़ा-ए-फ़ित्र।

(एहया)

ये सब चीज़ें अइम्मा-ए-अर्बआ (चारों इमामों) के नज़दीक मुत्तफ़क़ अलैहि हैं अलावा मादनके कि इसमें हनफ़ीया के नज़दीक बजाए ज़कात के

ख़ुम्स यानी पांचवां हिस्सा वाजिब है, जो वजूब के एतिबार से ज़कात ही जैसा है, और यक़ीनन अगर मुसलमान इन सब अन्वाअ को एहतिमाम और पाबंदी से निकालते रहें तो किसी ग़रीब को इज़्तिरार से मरने की नौबत न आए।

बाज़ उलमा को हज़रत अली रज़ि॰ की इस रिवायत से यह इश्तिबाह पैदा हो गया कि इससे ज़कात से ज़ायद मिक़्दार का ईजाब मक़्सूद है, यह सही नहीं। इसलिये कि अगर यह मुराद हो तो वह ख़ुद हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू रज़ि॰ की दूसरी रिवायत के ख़िलाफ़ हो जाएगा।

हज़रत अली रज़ि॰ से हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद नक़ल किया गया कि ज़कात के वाजिब होने ने इसके अलावा सदक़ात को मंसूख़ कर दिया। यह हदीस मर्फ़ूअन भी नक़ल की गयी और इमाम राज़ी रह॰ जस्सास ने 'अह्कामुल क़ुरआन' में लिखा है कि हज़रत अली रज़ि॰ का क़ौल होना बेहतर सनद से नक़ल किया गया। साहिबे कंज़ुल उम्माल रह॰ ने मुतअद्द कुतुब से इस रिवायत को नक़ल किया है, जिसके अल्फ़ाज़ ये हैं कि ज़कात ने हर उस सदक़े को मंसूख़ कर दिया जो क़ुरआन पाक में है, और "ग़ुस्ले जनाबत" ने उस के अलावा और ग़ुस्लों को मन्सूख़ कर दिया और रमज़ान के रोज़े ने हर रोज़े को मंसूख़ कर दिया। और क़ुर्बानी ने हर ज़बीहा को मंसूख कर दिया।

ख़ुद हज़रत अली रज़ि॰ का इर्शाद है कि जो शख़्स सारी दुनिया का माल ले ले और उसकी नीयत महज़ रिज़ा-ए-इलाही हो वह ज़ाहिद है जैसा कि आइन्दा फ़स्ल के शुरू में आ रहा है।

बाज़ उलमा ने फ़रमाया है कि ज़कात की फ़र्ज़ियत से पहले अपनी ज़रूरत के बक़द्र रख कर बाक़ी का ख़र्च करना ज़रूरी था। जिसको ज़कात की फ़र्ज़ियत ने मंसूख कर दिया, जैसा कि अल्लामा सुयूती रह॰ ने:-

خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ (اعراف ع ۲۴)

"ख़ुज़िल् अफ़्‌व व-वअ्मुर बिल् उर्फ़ि" *(सूरः आराफ़, रूकूअ् 24)*

की तफ़्सीर में सद्दी रह॰ से नक़ल किया। लिहाज़ा अगर इससे ईजाब मुराद हो भी तो वह मंसूख़ है। नीज़ हदीसे बाला से ज़कात से ज़ाइद का मुराद लेना हुज़ूर सल्ल॰ के उस इर्शाद के भी ख़िलाफ़ होगा। जिसमें वारिद हुआ है कि जिस शख़्स ने ज़कात अदा कर दी, उसने उस हक़ को अदा कर दिया, जो उस पर है और जो ज़ायद है, वह फ़ज़्ल है। *(कंज़)*

इस मज़्मून की मुतअद्दद रिवायात पहले भी गुज़र चुकी हैं और इससे वाज़ेह वह रिवायत है जो हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ के वास्ते से नक़ल की गयी और वह हज़रत अली रज़ि॰ की हदीस के हम मआनी है, जिसमें इर्शाद है कि अगर हक़ तआला शानुहू यह जानते कि अग़निया की ज़कात फ़ुक़रा के लिए काफ़ी न होगी, तो ज़कात के अलावा और चीज़ उन पर फ़र्ज़ करते, पस अगर अब फ़ुक़रा भूखे होते हैं तो अग़निया के ज़ुल्म की वजह से होते हैं। *(कंज़)*

यानी अग़्न्या ज़कात को पूरा अदा नहीं करते, इसकी वजह से फ़ुक़रा पर फ़ाक़ों की नौबत आती है। इसी वजह से मुहद्दिस हसैमी रह॰ ने 'मजम-उज़्ज़-वाइद' में हज़रत अली रज़ि॰ की इस हदीस पर फ़रज़ियते ज़कात का तर्जुमा बांधा, बल्कि इस बाब को इसी हदीस से शुरू किया, जिससे उसका महमले ज़कात होना ज़ाहिर है और साहिबे कंज़ुल उम्माल रह॰ ने भी इसी वजह से 'किताबुज़्ज़कात' ही में इसको ज़िक्र किया।

हाफ़िज़ इब्ने अब्दुल बर्र रह॰ फ़रमाते हैं कि हक़ तआला शानुहू का इर्शाद 'वल्लज़ी-न यक्निज़ू नज़्ज़-ह-ब वल फ़िज़्ज़-त' और इस क़िस्म के दूसरे इर्शादात उस हालत पर महमूल हैं जबकि ज़कात अदा न की जाए। जम्हूर फ़ुक़हा-ए-अम्सार का यही मज़हब है और यही क़ौल है हज़रत उमर रज़ि॰, हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰, हज़रत जाबिर रज़ि॰, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰, हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि॰ का, और इस की ताईद उस हदीस से होती है जिसको अबू दाऊद वग़ैरह ने ज़िक्र किया कि हज़रत उम्मे सलमा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि मैं सोने का एक ज़ेवर पहन रही थी। मैं ने हुज़ूर सल्ल॰ से दर्याफ़्त किया कि यह भी कंज़ में दाख़िल है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया जो चीज़ मिक़्दारे ज़कात को पहुँच जाए और उसकी ज़कात अदा कर दी जाए, वह कंज़ में दाख़िल नहीं है, नीज़ इसकी ताईद अबू हुरैरह रज़ि॰ की उस हदीस से भी होती है, जिसको तिर्मिज़ी रह॰ ने और हाकिम रह॰ ने ज़िक्र किया, जिसमें हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल किया गया कि जब तूने ज़कात अदा कर दी, तो उस हक़ को पूरा कर दिया, जो तुझ पर वाजिब था।

नीज़ हज़रत जाबिर रज़ि॰ को हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल किया गया कि जब तूने अपने माल की ज़कात अदा कर दी, तो उस की बुराई को ज़ायल कर दिया। हाकिम रह॰ ने इस हदीस को मर्फ़ूअन मुस्लिम की शर्त पर नक़ल किया है, और बैहक़ी रह॰ ने इसको हज़रत जाबिर रज़ि॰ पर मौक़ूफ़

बताया है और अबू ज़ुर्अः रह० ने भी हज़रत जाबिर रज़ि० पर मौक़ूफ़न इन अल्फ़ाज़ के साथ सही बताया है कि जिस माल की ज़कात अदा कर दी जाए, वह कंज़ नहीं है और यही मज़्मून हज़रत इब्ने उमर रज़ि० और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से भी नक़ल किया गया।

अता रह० और मुजाहिद रह० से नक़ल किया गया कि जिस माल की ज़कात अदा कर दी गयी हो वह कंज़ नहीं है, अगरचे ज़मीन के अंदर गाड़ रखा हो और जिसकी ज़कात अदा न की गयी हो वह कंज़ है, अगरचे ज़मीन के ऊपर रखा हो। और ज़ाहिर है कि शरअी इस्तिलाह लुग़्वी इस्तिलाह पर मुक़द्दम है (यानी लुग़त में अगरचे कंज़ उसको कहते हैं, जो ज़मीन के अंदर गड़ा हुआ हो, लेकिन शरीअत में वह माल है, जिसकी ज़कात अदा न की गयी हो) और मैं ने चंद हज़रात के सिवा किसी को इस का मुख़ालिफ़ नहीं पाया कि कंज़ वही है जिसकी ज़कात अदा न की गयी हो, अलबत्ता चंद हज़रात हज़रत अली रज़ि०, हज़रत अबूज़र रज़ि० और हज़रत ज़ह्हाक रज़ि० और बाज़ दूसरे ज़ाहिद इस तरफ़ गये हैं कि माल में ज़कात के अलावा भी कुछ हुक़ूक़ हैं, उनमें से हज़रत अबूज़र रज़ि० तो यहां तक फ़रमाते हैं कि जो माल रोज़ी और ज़िन्दगी से ज़ायद हो, वह सारा ही कंज़ है, और हज़रत अली रज़ि० से नक़ल किया गया कि चार हज़ार की मिक़्दार से ज़ायद कंज़ है, और ज़ह्हाक रज़ि० कहते हैं कि दस हज़ार दिरम की मिक़्दार माले कसीर है, नीज़ इब्राहीम नख़अी रह०, मुजाहिद रह०, शअबी रह० और हसन बसरी रह० भी इसके क़ायल हैं कि माल में ज़कात के अलावा कुछ हुक़ूक़ हैं।

इब्ने अब्दुल बर्र रह० कहते हैं कि इनके अलावा बक़ीया सब उलमा-ए-मुतक़द्दिमीन और मुतअख़्ख़िरीन का मज़हब कंज़ के बारे में वही है, जो पहले गुज़रा (कि कंज़ वह है जिसकी ज़कात अदा न की गयी हो) और जिन आयात और अहादीस से यह दूसरा फ़रीक़ इस्तिदलाल करता है, वह जम्हूर के नज़दीक इस्तिहबाब पर महमूल है, या ज़कात के वाजिब होने से पहले का हुक्म है जो ज़कात के वाजिब होने से मंसूख़ हो गया, जैसा कि आशूरा का रोज़ा रमज़ान के रोज़े से मंसूख़ हो गया। अलबत्ता फ़ज़ीलत का दर्जा अब भी बाक़ी है।

(इत्तिहाफ़)

इसकी ताईद इससे भी होती है कि जब फ़ुक़रा-ए-मुहाजिरीन बे माल व ज़र हिजरत फ़रमा कर मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ ले गये और हुज़ूरे अक़्दस

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुवासात के तौर पर मुक़ामी अंसार से जो मालदार थे, उनका भाई चारा किया तो अंसार ने यह दरख़्वास्त की कि हमारे अम्वाल को भी उन पर आधा तक़्सीम कर दीजिए। हुज़ूर सल्ल॰ ने इसका इंकार फ़रमा दिया, बल्कि यह तय फ़रमाया कि मुहाजिरीन उनके बाग़ात में काम करेंगे और बटाई के तौर पर फलों में शिर्कत होगी।

इसी ज़ैल में हुज़ूर सल्ल॰ ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि॰ और हज़रत सअद बिन रबीअ् रज़ि॰ के दर्मियान मुवाख़ात (भाईचारा) फ़रमायी तो हज़रत सअद रज़ि॰ ने हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि॰ से कहा कि सबको यह बात मालूम है कि अंसार में सबसे ज़्यादा मालदार मैं हूँ। मैं अपना माल आधा तुम्हें देता हूँ। हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि॰ ने उसको क़ुबूल फ़रमाने से इंकार कर दिया और फ़रमाया कि मुझे बाज़ार का रास्ता बता दो। वहां जाकर ख़रीद व फ़रोख़्त का काम शुरू कर दिया। अगर मालदारों के ज़ायद अम्वाल में फ़ुक़रा का बिला इज़्तिरार हक़ था तो फिर क्यों हुज़ूर सल्ल॰ ने इंकार फ़रमाया और क्यों हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि॰ ने अपना हक़ लेने से इंकार फ़रमाया?

अस्हाबे सुफ़्फ़ा के वाक़िआत इतनी कसरत से कुतुबे अहादीस व सियर में मौजूद हैं कि उनका इहाता भी मुश्किल है। इन हज़रात पर कई कई दिन के फ़ाक़े गुज़र जाते थे, भूख की वजह से गिर जाते थे और अंसार में बहुत से हज़रात मालदार भी थे, लेकिन हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किसी पर जब्र नहीं फ़रमाया कि अपने माल का ज़रूरत से ज़ायद हिस्सा इन लोगों पर तक़्सीम कर दो, तर्ग़ीबात अलबत्ता कसरत से फ़रमाते थे।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि अस्हाबे सुफ़्फ़ा सत्तर आदमी थे, जिनमें से किसी एक के पास भी चादर न थी। (दुर्रे मंसूर)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ ने ख़ुद अपने वाक़िआत इस हाल के कसरत से बयान किए हैं जो कुतुबे अहादीस में मौजूद हैं। एक मर्तबा का वाक़िआ इर्शाद फ़रमाते हैं कि उस ज़ात की क़सम, जिसके सिवा कोई माबूद नहीं कि मैं अपने जिगर के बल ज़मीन पर भूख की शिद्दत से पड़ा रहता था और कभी अपने पेट पर पत्थर बांध लिया करता था। एक मर्तबा मैं रास्ते में इस उम्मीद पर बैठ गया कि शायद कोई मुझे अपने साथ ले जाए। इतने में हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ तशरीफ़ लाये। मैं ने एक आयत उनसे महज़ इसलिए दर्याफ़्त की कि शायद वह मुझे अपने साथ ले जाएं। मगर वह वैसे ही चले गये। उनके बाद हुज़ूरे अक़्दस

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाये और मेरी हालत देख कर तबस्सुम फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया कि मेरे साथ आ जाओ। मैं हमराह चल दिया। हुज़ूर सल्ल॰ मकान पर तशरीफ़ ले गये। वहां एक प्याला दूध का रखा हुआ था। हुज़ूर सल्ल॰ ने दर्याफ़्त फ़रमाया, यह कहाँ से आया? घरवालों ने अर्ज़ किया, फ़लां ने हद्या भेजा है। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि अबू हुरैरह, सब अस्हाबे सुफ़्फ़ा को बुला लाओ।

अबू हुरैरह रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि अस्हाबे सुफ़्फ़ा इस्लामी मेहमान थे, न उनके अहल व अयाल थे, न उनके पास माल व ज़र था, न किसी के ज़िम्मे उनका खाना मुक़र्रर था, न किसी के ज़िम्मे उनका बार था। जब हुज़ूर सल्ल॰ के पास कहीं से सदक़े की कोई चीज़ आती तो उनको मरहमत फ़रमा देते, ख़ुद उसमें से नोश न फ़रमाते और जब हदया की कोई चीज़ आती तो ख़ुद भी उसको हुज़ूर सल्ल॰ तनावुल फ़रमाते और उन लोगों को भी शरीक फ़रमा लेते।

हुज़ूर सल्ल॰ ने उस वक़्त जब यह फ़रमाया कि अस्हाबे सुफ़्फ़ा को बुला लाओ तो मुझे बहुत गरानी हुई कि यह एक प्याला दूध अस्हाबे सुफ़्फ़ा का क्या बनाएगा? हुज़ूर सल्ल॰ मुझे मरहमत फ़रमा देते, मुझमें पीकर कुछ जान आ जाती। अब मैं उन सब को लेकर आऊँगा तो हुज़ूर सल्ल॰ मुझ ही को हुक्म फ़रमायेंगे कि सब को दे दो। मैं जब उनको तक़्सीम करूँगा तो मेरा नम्बर अख़ीर में आएगा, न मालूम कुछ बचेगा भी या नहीं। मगर तामीले हुक्म के बग़ैर चारा-ए-कार क्या था? मैं उन सबको बुला लाया। जब वे सब आकर हुज़ूर सल्ल॰ की मज्लिस में बैठ गये तो हुज़ूर सल्ल॰ ने वह प्याला मुझे मरहमत फ़रमाया कि इन सबको पिला दो। मैं ने सबको पियाला और हर एक सेर हो गया। आख़िर में हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि अबू हुरैरह रह॰, अब तो तुम और मैं ही बाक़ी रह गये। मैं ने अर्ज़ किया, बेशक! हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया लो बैठ कर पी लो। मैं ने ख़ूब सेर होकर पिया। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि और पियो। मैं ने और पिया। हुज़ूर सल्ल॰ ने फिर फ़रमाया कि और पी लो। मैं ने फिर और पिया। हत्ताकि मैं ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर अब मुझ में और पीने की गुंजाइश नहीं, तो फिर बक़ीया हुज़ूर सल्ल॰ ने पिया।

एक और मर्तबा का अपना क़िस्सा बयान करते हैं कि मुझ पर तीन दिन का फ़ाक़ा था। मुझे कुछ खाने को न मिला। मैं सुफ़्फ़े पर जा रहा था कि रास्ते में गिर गया। बच्चे कहने लगे कि अबू हुरैरह को जुनून हो गया। मैं ने कहा,

जुनून तो तुम्हें हो रहा है, बिल आख़िर मैं सुफ़्फ़े तक पहुँचा। वहां हुज़ूर सल्ल॰ के पास दो प्याले सरीद के कहीं से आये हुए थे और हुज़ूर सल्ल॰ अस्हाबे सुफ़्फ़ा को खिला रहे थे मैं भी सर ऊपर को उठा रहा था कि हुज़ूर सल्ल॰ की नज़र मुझ पर पड़ जाए और हुज़ूर सल्ल॰ मुझको भी बुला लें, हत्ताकि सब फ़ारिग़ हो गये और प्यालों में कुछ भी न बचा। हुज़ूर सल्ल॰ ने उन प्यालों को अपने दस्ते मुबारक से चारों तरफ़ से पोंछा तो एक लुक़्मा बन गया। हुज़ूर सल्ल॰ ने अपनी उंगलियों पर रख कर मुझसे फ़रमाया कि अल्लाह का नाम लेकर इसको खाओ मैं ने उसको खाया तो पेट भर गया।

हज़रत फ़ुज़ाला बिन उबैद रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब सुबह की नमाज़ पढ़ कर तशरीफ़ फ़रमा होते तो अस्हाबे सुफ़्फ़ा में से बाज़ लोग भूख की शिद्दत से खड़े खड़े गिर जाते। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनकी तरफ़ इल्तिफ़ात फ़रमा कर इर्शाद फ़रमाते कि अगर तुम्हें मालूम हो जाए कि अल्लाह तआला के यहां तुम्हारे लिए क्या दर्जा है तो इससे ज़्यादा फ़क़्र व फ़ाक़े को पसंद करने लगो। *(तर्ग़ीब)*

पहली फ़स्ल की आयात में नं॰ 30 पर क़बीला मुज़र की एक जमाअत का मुफ़स्सल क़िस्सा गुज़र चुका, जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में भूखे और नंगे हाज़िर हुए कि उनके पास पहनने के लिए कपड़ा न था, खाने की कोई चीज़ न थी। फ़ाक़े की वजह से मशक़्क़त में पड़े हुए थे। हुज़ूर सल्ल॰ ने अपने घरों में उनके लिए तलाश किया, कुछ न मिला, तो मज्मा इकट्ठा किया और सदक़े की तर्ग़ीब दी और बहुत ज़ोर से तर्ग़ीब दी, जिस पर दो ढेर सामान के जमा हो गये और वे उन लोगों पर तक़्सीम फ़रमा दिए, न किसी पर जब्र फ़रमाया न किसी से उसके पास ज़रूरत से ज़ायद का मुहासबा फ़रमाया।

हज़रत अनस रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि एक अंसारी ने आकर हुज़ूर सल्ल॰ से सवाल किया। हुज़ूर सल्ल॰ ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि तुम्हारे घर में कुछ नहीं है? उन्होंने अर्ज़ किया एक टाट है, जिसको आधे को बिछा लेते हैं और आधा ओढ़ लेते हैं, और एक प्याला है पानी पीने को। हुज़ूर सल्ल॰ ने दोनों चीज़ें मंगायीं और दो दिरम में नीलाम कर दीं और वे उन को दिए कि एक दिरम का ग़ल्ला ख़रीद कर घर दे आवें और दूसरे दिरम का कुल्हाड़ी का फलड़ा ख़रीद कर लाएं। वह लेकर आये, तो हुज़ूर सल्ल॰ ने अपने दस्ते मुबारक से उसमें

लकड़ी यानी दस्ता लगाया। और फ़रमाया कि जाओ लकड़ियां काट कर बेचो, पंद्रह दिन तक तुम्हें यहां न देखूं, उन्होंने इर्शाद की तामील की और पन्द्रहवें दिन दस दिरम कमाकर लाये, जिनमें से कुछ का ग़ल्ला, कुछ का कपड़ा ख़रीदा। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया यह अच्छा है सवाल करने से, कि भीख मांगने से क़ियामत के दिन तुम्हारे चेहरे पर दाग़ होता। इसके बाद हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि सवाल की सिर्फ़ तीन आदमियों के लिए गुंजाईश है:-

لِذِی فَقْرٍ مُدْقِعٍ اَوْ لِذِی غُرْمٍ مُفْظِعٍ اَوْ لِذِی دَمٍ مُوْجِعٍ

"लि ज़ी फ़क़्रिन् मुद्क़िअिन् औ लि ज़ी ग़ुर्मिन् मुफ़्ज़िअिन् औ लि ज़ी दमिन् मूजिअिन्॰"

एक उस शख़्स के लिए जिसका फ़क्र हलाक करने वाला हो, दूसरे उसके लिए जिस पर कोई तावान सख़्त पड़ गया हो, तीसरे जो दर्दनाक ख़ून के मामले में फंस गया हो।

इन तीन हालतों में भी हुज़ूर सल्ल॰ ने सवाल ही की इजाज़त दी और ख़ुद यह साहिबे वाक़िआ, जिस फ़क्र में मुब्तला थे, उनको न तो सवाल की इजाज़त दी, न किसी पर उनका नफ़्क़ा वाजिब फ़रमाया। ग़रज़ हज़ारों वाक़िआत कुतुबे अहादीस में इसके शाहिद हैं कि जहां तक वुजूब का ताल्लुक़ है, वह सिर्फ़ ज़कात है। इस पर इज़ाफ़ा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मशहूर क़ौल 'अल् मुत-अद्दी फ़िस्स-द-क़ति क-मानिअिहा' (सदक़े में तअद्दी और इफ़रात करने वाला ऐसा ही है जैसा कि उसको न देने वाला) का मिस्दाक़ है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत ज़ह्हाक बिन क़ैस रज़ि॰ को सदक़ात वसूल करने के लिए भेजा, वह इस माल में बेहतरीन ऊँट छांट लाए हुज़ूर सल्ल॰ ने उसको देखकर फ़रमाया कि तुम उन लोगों का उम्दा माल ले आए। उन्होंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! इस वक़्त आप जिहाद में तशरीफ़ ले जाने का इरादा फ़रमा रहे हैं। मैं इस लिए ऐसे ऊँट लाया हूँ। जिन पर सवारी हो सके। और सामान लादा जा सके। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, इनको वापस करके आओ और मामूली माल लेकर आओ। *(मज्मउज़्ज़वाइद)*

हालांकि जिहाद की ज़रूरत भी ज़ाहिर, और इस मौक़े पर हुज़ूर सल्ल॰ ने ऐसी ऐसी तर्ग़ीबात इर्शाद फ़रमाई हैं कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ अपने

घर का सारा असासा (यानी सामान) ले आये और हज़रत उमर रज़ि॰ ने हर चीज़ का आधा हिस्सा पेश कर दिया।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि॰ ने एक मर्तबा अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह, मेरे पास चार हज़ार हैं। दो हज़ार घर के इख़राजात के वास्ते रखता हूँ, दो हज़ार अल्लाह के वास्ते पेश करता हूँ और एक सहाबी रज़ि॰ ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह, मैं ने रात भर मज़दूरी करके दो साअ (सात सेर) खजूरें मज़दूरी में कमायी हैं, आधी घर के ख़र्च के वास्ते छोड़ आया हूँ, आधी हाज़िर हैं। *(दुर्रे मंसूर)*

हज़रत अबू मसऊद रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ सदक़े का हुक्म फ़रमाते और हममें से बाज़ के पास कुछ भी न होता, तो वह सिर्फ़ उसके लिए बाज़ार जाता, मज़दूरी करता, और मज़दूरी में एक मुद (डेढ़ पाव) खजूर कमाता और सदक़ा कर देता। *(बुख़ारी)*

पहली फ़स्ल की अहादीस में नं॰ 24 पर यह मज़्मून तफ़्सील से गुज़र चुका है, लेकिन इस सबके बावजूद ज़ाब्ते के तौर पर यहां मामूली ऊँट की जगह उम्दा ऊँट भी क़ुबूल नहीं फ़रमाया, इसलिए जहां तक वजूब का ताल्लुक़ है वह माली हैसियत से सिर्फ़ ज़कात है और जहां तक ख़र्च करने का ताल्लुक़ है मुसलमान इस लिए पैदा ही नहीं हुआ कि वह माल जमा करके रखे। क़ुरआन पाक की आयात और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इर्शादात जो पहली फ़स्ल में गुज़र चुके, वे बड़े ज़ोर से इसकी तर्ग़ीब व ताकीद कर रहे हैं कि माल सिर्फ़ इसलिए है कि उसको अल्लाह की रिज़ा के कामों में ख़र्च कर दिया जाए। ख़ुद अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ तंगी उठाली जाए, दूसरों पर ख़र्च किया जाए। अपने काम सिर्फ़ वही आएगा जो अल्लाह के ख़ज़ाने में जमा कर दिया जाएगा कि उसके बैंक में जमा कर देने पर न उसके ज़ाया हो जाने का अंदेशा है, न बैंक के फ़ैल हो जाने का एहतिमाल है। और ऐसी ज़रूरत के वक़्त काम आएगा, जिस वक़्त कि आदमी इन्तिहाई मुहताज होगा।

ख़ुद हक़ सुब्हानहू व तक़द्दुस का इर्शाद हुज़ूर सल्ल॰ नक़ल फ़रमाते हैं कि-ऐ-आदमी, तू अपना ख़ज़ाना मेरे पास बहा दे, न तो उसको आग लग जाने का ख़ौफ़ रहेगा, न चोरी का, न दरियाबुर्द होने का और मैं ऐसे वक़्त तुझको पूरा का पूरा दे दूँगा, जब तू बेहद मुहताज होगा। *(तर्ग़ीब)*

हक् तआला शानुहू का पाक इर्शाद पहली फ़स्ल के नं॰ 30 पर गुज़र चुका, कि हर शख़्स यह ग़ौर कर ले कि उसने कल क़ियामत के दिन के लिए क्या चीज़ आगे भेजी है। उन लोगों की तरह न बनो, जिन्होंने अल्लाह तआला को भुला दिया। अल्लाह तआला ने ख़ुद उनकी जानें भुला दीं। दूसरी आयत में नं॰ 31 पर गुज़रा कि तुम्हारे माल व मताअ, आल व औलाद तुम्हारे लिए इम्तिहान की चीज़ें हैं, अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करते रहो, यह तुम्हारे लिए बेहतर होगा।

हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद इसी फ़स्ल की अहादीस में नं॰ 1 पर गुज़र चुका है कि अगर मेरे पास उहद के पहाड़ के बराबर सोना हो तो मेरा दिल नहीं चाहता कि उसमें से कुछ भी मैं अपने पास रखूँ। सिवाए इसके कि क़र्ज़ की अदाएगी के वास्ते रखा हो।

नं॰ 3 पर हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद गुज़रा कि जो चीज़ ज़रूरत से ज़ायद हो, उसको अल्लाह के रास्ते में ख़र्च कर देना तुम्हारे लिए बेहतर है, बचा कर रखना बुरा है।

नं॰ 12 पर हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद गुज़रा कि गिन गिन कर ख़र्च न कर, जितना भी हो सके ख़र्च कर डाल।

नं॰ 20 पर यह वाक़िआ गुज़र चुका है कि एक बकरी ज़िब्ह की गयी, और बजुज़ (अलावा) एक शाना के टुकड़े के सारी तक़्सीम कर दी गयी। हुज़ूर सल्ल॰ ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि कितनी तक़्सीम हो गयी तो अर्ज़ किया गया कि एक शाना बाक़ी रह गया और बाक़ी सब ख़र्च हो चुकी है। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया वह सारी बाक़ी है इस शाने के अलावा।

इस क़िस्म के बहुत से इर्शादात फ़स्ले अव्वल में गुज़र चुके हैं, इसलिए इससे क़ता-नज़र कि वाजिब क्या है, मंदूब व मुस्तहब क्या है, अपने काम आने वाला सिर्फ़ वही माल है जो अपनी ज़िन्दगी में आदमी आगे भेज दे। अगर इस मेहनत व मशक़्क़त से कमायी हुई चीज़ को अपनी जरूरत के वक़्त काम आने के लिए कहीं महफ़ूज़ करना है तो वह सिर्फ़ अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करना है, जिसका नफ़ा आख़िरत में तो है ही, दुनिया में भी ज़्यादा से ज़्यादा है कि बलाओं के दूर होने में, अमराज़ से सेहत होने में, सदक़े को ज़्यादा से ज़्यादा दख़ल है। बुरे ख़ात्मे से इसकी वजह से हिफ़ाज़त होती है।

हुज़ूर सल्ल॰ का मशहूर इर्शाद है कि क़ाबिले रश्क दो आदमी हैं-

1. एक वह जिसको अल्लाह जल्ल शानुहू ने क़ुरआन पाक अता फ़रमाया हो कि वह रात दिन उसकी तिलावत में, उस पर अमल करने में मुन्हमिक रहे।

2. दूसरा वह शख़्स है, जिसको अल्लाह जल्ल शानुहू ने बहुत माल अता किया हो और वह हर वक़्त उसको अल्लाह के रास्ते में लुटाने पर तुला हुआ हो। *(मज्मउज़्ज़वाइद)*

हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद दूसरी फ़स्ल के नं॰ 2 पर गुज़र चुका कि सरमाएदार बड़े ख़सारे में हैं, सिवाए उस शख़्स के जो दोनों हाथों से इधर उधर, दाएं बाएं, आगे पीछे, अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करता रहे और नं॰ 7 पर हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद गुज़र चुका कि वह हक़ीक़त में मोमिन ही नहीं, जो ख़ुद पेट भर कर खा ले और उसका पड़ोसी भूखा पड़ा रहे।

ग़रज़ इस रिसाले में पहली फ़स्लों में तफ़्सील से यह मज़्मून गुज़र चुका है जिसका ख़ुलासा यह है कि मुसलमान की हरगिज़ यह शान नहीं कि माल को जमा करके रखे। इसकी सही मिसाल बिल्कुल पाख़ाने की सी है कि वह ज़रूरी तो इतना कि एक दो दिन न हो तो हकीम और डाक्टर की दवाएं वग़ैरह सब ही कुछ आदमी करने पर मजबूर है, लेकिन अगर मुनासिब मिक़्दार से ज़ायद आने लगे तो उसको बंद करने के वास्ते भी हकीम और डाक्टर की ज़रूरत है। और अगर कोई शख़्स पाख़ाने को इस वजह से कि वह इतनी अहम और ज़रूरी चीज़ है, अपने घर में महफ़ूज़ रखे कि बड़ी मशक़्क़त से हासिल हुई है, तो मकान भी सड़ जाएगा, दिमाग़ भी सड़ जाएगा, अमराज़ भी ब-कसरत पैदा हो जायेंगे, बेऐनिही (बिलकुल) यही सूरत इस माल की है कि ज़रूरी तो इतना कि अगर चंद रोज़ कुछ न मिले तो सारे जतन इसके लिए भी करना पड़ें। लेकिन इसके बावजूद इतना ही गंदा है कि अगर इसको फ़ौरन मजबूरी से ज़ायद मिक़्दार को पाख़ाने की तरह से घर से न निकाला जाए। तो तकब्बुर इससे पैदा होता है, ग़ुरूर इससे पैदा होता है, तफ़ाख़ुर इससे पैदा होता है, दूसरों को ज़लील व हक़ीर समझना इससे होता है। आवारगी अय्याशी इसका समरा है, ग़रज़ हर क़िस्म की आफ़ात इस पर मुसल्लत हैं, इसलिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआ अपनी औलाद के लिए है -

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ رِزْقَ اٰلِ مُحَمَّدٍ قُوْتًا

"अल्लाहुम् मज्अल रिज़्-क़ आलि मुहम्मदिन कूतन्॰"

(या अल्लाह, मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की औलाद का रिज़्क़ बक़द्रे किफ़ायत अता फ़रमा) यानी ज़्यादा हो ही नहीं, जिस पर फ़सादात मुरत्तब हों, यही वजह है कि सय्यद आम तौर से ज़्यादा मुतमव्वल नहीं होते। एक दो का मुतमव्वल हो जाना इसके मनाफ़ी नहीं, अक्सरियत ऐसी ही मिलेगी। हक़ तआला शानुहू अपने लुत्फ़ व करम से इस नापाक हक़ीकत को इस नापाक पर भी वाज़ेह कर दें तो कैसे लुत्फ़ की ज़िन्दगी मयस्सर हो।

(٥) عن بريدةؓ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم مامنع قوم الزكوٰة الاابتلاهم الله بالسنين رواه الطبرانى فى الاوسط و رواته ثقات كذا فى الترغيب وفى الباب روايات كثيرة فى الترغيب والكنز غيرهما.

5. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि जो क़ौम भी ज़कात को रोक लेती है, हक़ तआला शानुहू उसको क़हत में मुब्तला फ़रमाते हैं।

फ़ायदाः- क़हत की वबा हम लोगों पर ऐसी मुसल्लत हो रही है कि इस की हद नहीं। हज़ारों तदबीरें उसके ज़ायल करने के वास्ते की जाती हैं, लेकिन कोई भी कारगर नहीं हो रही है। और जब हक़ तआला शानुहू कोई वबाल किसी गुनाह पर उतार दें, दुनिया में किसकी ताक़त है कि उसको हटा सके। लाख तदबीरें कीजिए, हज़ारों तरह के क़ानून बनाइये, जो चीज़ मालिकुल मुल्क की तरफ़ से मुसल्लत है, वह तो उसी के हटाने से हट सकती है। उसने मर्ज़ बता दिया, उसका सही इलाज बता दिया। अगर मर्ज़ को ज़ायल करना मक़्सूद है तो सही इलाज इख़्तियार कीजिए। हम लोग अम्राज़ के अस्बाब ख़ुद पैदा करते रहें और इस पर रोते रहें कि अम्राज़ बढ़ रहे हैं, यह कहाँ की अक़्लमंदी है?

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस आलम में जो हवादिस और मसाइब आते हैं, उन पर और उनके अस्बाब पर ख़ास तौर से मुतनब्बह फ़रमा दिया, जिनको बंदा मुख़्तसर तौर पर अपने रिसाले 'एतिदाल' में लिख चुका है। यहां उनका इआदा (लौटाना) तत्वील का सबब है। किसी का दिल चाहे तो उसमें देख ले कि उसमें हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम ने कैसे एहतिमाम से इस पर मुतनब्बह फ़रमाया, कि जब मेरी उम्मत ये हरकतें करने लगेगी तो आफ़ात और बलाओं में फंस जाएगी, उस वक़्त सुर्ख़ आंधियां, ज़मीनों में धंस जाना, सूरतों का मस्ख़ हो जाना और ज़लज़लों का आना, आसमान से पत्थर बरसना, दुश्मनों का ग़लबा और मुसलमानों पर उनका मुसल्लत हो जाना, ताऊन और क़त्ल व ग़ारत का मुसल्लत होना, बारिश का रूक जाना, तूफ़ान का आ जाना, दिलों का मर्अूब हो जाना और दिलों पर ख़ौफ़ का मुसल्लत हो जाना, नेक लोग दुआएं भी करें तो उनकी दुआओं का क़ुबूल न होना, ये सब आफ़ात हुज़ूर सल्ल॰ ने बतायीं और जिस जिस हरकत पर जो आफ़त मुसल्लत होती है, उसको हुज़ूर सल्ल॰ ने तक़रीबन चौदह सौ वर्ष पहले से बता दिया, मुतनब्बह कर दिया और हम लोग अब उनके तजुर्बे भी कर रहे हैं। और ऐसे हर्फ़ ब-हर्फ़ ये इर्शादात सामने आ रहे हैं कि ज़रा भी फ़र्क़ नहीं हो रहा है। काश हम लोग हुज़ूर सल्ल॰ जैसे शफ़ीक़ के इर्शादात की क़द्र करते जो सिर्फ़ मुसलमानों ही के लिए नहीं, बल्कि सारी मख़्लूक़ के लिए रहमत बना कर भेजे गये थे। और उन उसूल पर अमल करना सारी ही मख़्लूक़ के लिए इंतिहाई फ़ायदे की चीज़ है। मगर जब ख़ुद मुसलमान अपने इस्लामी दावों के बावजूद उनकी क़द्र न करें तो दूसरों पर क्या इल्ज़ाम है और दूसरों को क्या ख़बर की अल्लाह की मुजस्सम रहमत ने दुन्यवी आफ़ात से बचने के भी कैसे कैसे ज़र्रीं (सुनहरे) उसूलों पर मुतनब्बह फ़रमाया है। अब भी अगर उन उसूलों को एहतिमाम से पकड़ लिया जाए तो दुनिया को मसाइब से निजात मिल जाए।

मुस्लिम हकीम डाक्टरों का इलाज ग़ैर मुस्लिम भी करते हैं और ग़ैर मुस्लिमों का इलाज मुस्लिम भी करते हैं। अगर इस हाज़िक़ हकीम के नुस्ख़े पर लोग अमल करें तो कैसी राहत व आराम सबको मिल जाए? इस जगह मुझे ज़कात के मुताल्लिक़ दो एक अहादीस पर मुतनब्बह करना है कि वही इस जगह मक़्सूद है।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ ने एक मर्तबा इर्शाद फ़रमाया कि ऐ, मुहाजिरीन की जमाअत, पांच चीज़ें ऐसी हैं कि अगर तुम उनमें मुब्तला हो जाओ और मैं अल्लाह से पनाह मांगता हूँ इस बात से कि तुम उनमें मुब्तला हो (तो बड़ी आफ़ात में फंस जाओ) एक तो यह कि फ़ुह्श, बदकारी जिस क़ौम में भी खुल्लम खुल्ला अलल् ऐलान होने लगे, तो उनमें ऐसी नयी नयी बीमारियां पैदा होंगी, जो पहले कभी सुनने में न आयी हों। और जो लोग

नाप तौल में कमी करने लगेंगे उन पर कहत और मशक्कत और बादशाह का ज़ुल्म मुसल्लत हो जाएगा। और जो कौम ज़कात को रोक लेगी, उन पर बारिश रोक दी जायेगी। अगर जानवर न हों तो एक कतरा भी बारिश का न हो (जानवर चूंकि अल्लाह की मख़्लूक़ हैं और बे कुसूर हैं। उनकी वजह से थोड़ी बहुत बारिश होगी) और जो लोग मुआहदों की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करेंगे, उन पर दूसरी कौमों का तसल्लुत हो जावेगा और उनके माल व मताअ् को लूट लेंगे। और जो लोग अल्लाह के कानून के ख़िलाफ़ हुक्म जारी करेंगे, उनमें ख़ाना-जंगी हो जायेगी। *(तर्ग़ीब)*

आज हम लोगों को बड़े ग़ौर से इन ऐबों को देखना चाहिए कि इनमें से कौन सा ऐब ऐसा है जिसमें हम मुब्तला नहीं हैं, और साथ ही यह भी ग़ौर कर लें कि जो आफ़ात उन पर बतायी गयी हैं, कौन सी आफ़त ऐसी है जो हम पर मुसल्लत नहीं है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि पांच चीज़ें पांच चीज़ों के बदले में हैं। किसी ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह, इसका क्या मतलब है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि जो कौम मुआहदे की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करती है, उस पर दुश्मन ग़ालिब आ जाता है। और जो लोग अल्लाह के कानून के ख़िलाफ़ हुक्म करेंगे, उनमें मौतों की कसरत होगी। और जो लोग ज़कात को रोक लेंगे, उन पर बारिश बंद कर दी जाएगी, और जो लोग नाप तौल में कमी करेंगे, उनकी पैदावार में कमी हो जायेगी, और कहत मुसल्लत हो जायेगा। *(तर्ग़ीब)*

इस हदीस शरीफ़ में ग़ालिबन इख़्तिसार हुआ कि तफ़्सील में चार ही चीज़ें ज़िक्र की गयीं। इस हदीस पाक में अल्लाह के हुक्म की ख़िलाफ़ वर्ज़ी पर अम्वात (मौतों) की कसरत और पहली में ख़ानाजंगी इर्शाद हुआ है। दोनों चीज़ें अलाहिदा अलाहिदा भी हो सकती हैं और ख़ानाजंगी से अम्वात की कसरत का नमूना आज कल तो आंखों के सामने है।

हज़रत अली रज़ि॰ और अबू हुरैरह रज़ि॰ दोनों हज़रात से यह हदीस नकल की गयी कि जब मेरी उम्मत इन पन्द्रह उयूब (ऐबों) में मुब्तला हो जाये, मिनजुम्ला उनके यह भी दोनों हदीसों में है कि ज़कात का अदा करना तावान बन जाए (यानी उसका अदा करना ऐसा मुसीबत हो जाए जैसा तावान होता है,

या वह तावान की तरह से वसूल की जाने लगे) तो उस वक़्त सुर्ख़ आंधियां, ज़लज़ले, ज़मीनों में धंस जाना, सूरतों का मस्ख़ हो जाना, आसमानों से पत्थर बरसना, ऐसे लगातार मसाइब एक के बाद एक नाज़िल होने लगेंगे जैसा कि तस्बीह का धागा टूट जाए और उसके दाने एक एक होकर गिरना शुरू कर दें। (कंज़)

एतिदाल में ये रिवायतें पूरी ज़िक्र की गयी हैं, और उसमें उन पन्द्रह उयूब की तफ़्सील भी है, जिस पर ये सख़्त अज़ाब ज़िक्र फ़रमाये हैं, उनके अलावा और भी रिवायात इस क़िस्म के मज़ामीन की ज़िक्र की गयीं, यहां सिर्फ़ ज़कात की वजह से उन रिवायात की तरफ़ इशारा कर दिया।

(٦) عن ابی هریرةؓ قال سمعت عمر بن الخطابؓ حدیثا عن رسول اللّٰه صلی اللّٰه علیه وسلم ماسمعته منه وکنت اکثرهم لزومًا لرسول اللّٰه صلی اللّٰه علیه وسلم قال عمر قال رسول اللّٰه صلی اللّٰه علیه وسلم ما تلف مال فی بر ولا بحر الابحبس الزکوٰة رواه الطبرانی فی الاوسط وهو غریب کذا فی الترغیب وله شاهد من حدیث عبادة بن الصامتؓ فی الکنز بروایة ابن عساکر

6. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो माल किसी जंगल में या दरिया में कहीं भी ज़ाया होता है, वह ज़कात के रोकने से ज़ाया होता है।

फ़ायदाः- यानी ज़कात अदा न करने के जो वबाल व अज़ाब आख़िरत के हैं वे तो अलाहिदा रहे, दुनिया में भी इसका वबाल यह होता है कि वह माल के ज़ाया हो जाने का सबब बनता है। एक और हदीस में इस हदीस शरीफ़ के मुताल्लिक़ एक क़िस्सा भी नक़ल किया है। हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का मुकर्रमा में हतीम के साए में तशरीफ़ फ़रमा थे। किसी ने आकर अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह, फ़लां, घराने का सामान समुन्दर के किनारे पड़ा हुआ था, वह हलाक हो गया। (समुन्दर की मौज से ब-ज़ाहिर ज़ाया हुआ) हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि कोई

माल बर्र (ख़ुश्की) व बहर (तरी) में (यानी ख़ुश्की में हो या समुद्र में, मतलब यह है कि सारी दुनिया में) इसके बग़ैर ज़ाया नहीं होता कि उसकी ज़कात अदा न हुई हो। अपने मालों की ज़कात अदा करने के ज़रिये हिफ़ाज़त किया करो, और अपने बीमारों का सदके के ज़रिये से इलाज किया करो, और ना-गहानी मुसीबतों को दुआ के ज़रिए से हटाया करो कि दुआ उस मुसीबत को ज़ायल कर देती है जो आन पड़ी हो, और उसको रोक देती है जो अभी तक न आयी हो।

और हुज़ूर सल्ल॰ यह भी फ़रमाया करते थे कि अल्लाह जल्ल शानुहू जिस क़ौम की बढ़ौतरी और बक़ा का इरादा फ़रमाते हैं, उसमें इफ़्फ़त (पाकबाज़ी) और समाहत यानी नर्मी और जूद अता फ़रमाते हैं और जिस क़ौम के ख़ात्मे और फ़ना का इरादा फ़रमाते हैं, उसमें ख़ियानत पैदा फ़रमा देते हैं, इसके बाद हुज़ूर सल्ल॰ ने यह आयते शरीफ़ा तिलावत फ़रमायी:-

حَتّٰۤى اِذَا فَرِحُوۡا بِمَاۤ اُوۡتُوۡۤا اَخَذۡنٰهُمۡ بَغۡتَةً فَاِذَا هُمۡ مُّبۡلِسُوۡنَ

"हत्ता इज़ा फ़रिहू बिमा ऊतू अख़ज़्नाहुम बग़्त-तन् फ़-इज़ा हुम मुब्लिसू-न॰" (कंज़)

"यह आयते शरीफ़ा सूरः अन्आम के पांचवें रूकूअ की है जिसका शुरू":- فَلَمَّا نَسُوۡا مَا ذُكِّرُوۡا بِهٖ ،

'फ लम्मा नसू मा ज़ुक्किरू बिही॰' से है, और ऊपर की दो आयात से इब्रत और नसीहत हासिल करने के लिए पहली उम्मतों की हलाकत का एक दस्तूर इर्शाद फ़रमाया है कि हमने पहली उम्मतों की तरफ़ भी जो कि आप से पहले थीं पैग़म्बर भेजे थे (जब उन्होंने पैग़म्बरों का कहना न माना तो) फिर हमने उनको मुसीबतों और बीमारियों से पकड़ा (यानी मसाइब और बीमारियों में मुब्तला किया) ताकि वे आजिज़ी करें। पस जब उनको हमारी (तरफ़ से मसाइब की) सज़ा पहुँची थी तो उन्होंने आजिज़ी क्यों न की (कि उन पर रहम किया जाता और उनका क़ुसूर माफ़ कर दिया जाता) लेकिन उनके दिल तो सख़्त हो गये थे (वे नसीहत क्या क़ुबूल करते) और शैतान उनके आमाल को (जिनको वे पहले से कर रहे थे, उनकी निगाह में) आरास्ता करके दिखलाता रहा (जिसकी वजह से वे अपने बुरे आमाल में जिनको वे अच्छा समझते रहे, फंसे रहे) फिर जब वे लोग उन चीज़ों को भूले रहे (और उनकी तरफ़ इल्तिफ़ात भी न किया) जिनकी उनको पैग़म्बरों की तरफ़ से नसीहत की जाती थी तो हमने

उन पर (ऐश व इश्रत, राहत व आराम के) हर क़िस्म के दरवाज़े खोल दिए, यहां तक कि जब वे उन चीज़ों पर (जो उनको ऐश व इश्रत की मिली थीं) इतराने लगे (जिससे उनकी गुमराही और भी बढ़ गयी) तो हमने उनको (अज़ाब में ऐसा) दफ़्अतन पकड़ लिया (कि उन को इसका गुमान भी न था)फिर ज़ालिम लोगों की जड़ें तक कट गयीं। फ़क़त।

ये आयाते शरीफ़ा बड़ी इब्रत की आयात हैं कि अल्लाह तआला की ना-फ़रमानियों के बावजूद अगर किसी क़िस्म की सख़्ती के बजाए ऐश व इश्रत और राहत के सामान होते रहें तो यह ज़्यादा ख़तरे की चीज़ है।

एक हदीस में आया है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि जब तू यह देखे कि कोई शख़्स अपने गुनाहों पर मुसिर है और उस पर दुनिया की वुस्अत हो रही है, तो यह अल्लाह की तरफ़ से ढील है। फिर हुज़ूर सल्ल० ने यही आयत 'फ़लम्मा नसू मा ज़ुक्किरू बिही' तिलावत फ़रमायी।

हज़रत अबू हाज़िम रज़ि० से नक़ल किया गया कि जब तू यह देखे कि तू अल्लाह की ना-फ़रमानी कर रहा है और उसकी नेमतें तुझ पर लगातार हो रही हैं तो इससे डरता रह और वह हर नेमत जो अल्लाह तआला शानुहू से क़ुर्ब पैदा न करे, वह मुसीबत है। *(दुर्रे मंसूर)*

छठी फ़स्ल की अहादीस में नं० 17 पर यह मज़्मून तफ़्सील से आ रहा है और चूंकि माल भी अल्लाह तआला की नेमतों में से बड़ी नेमत है, उसको ज़्यादा से ज़्यादा हक़ तआला शानुहू की पाक बारगाह में तक़र्रुब पैदा करने का ज़रिया बनाना चाहिए और कोई शख़्स बजाए इसके कि उसको अल्लाह की राह में ज़्यादा से ज़्यादा ख़र्च करके तक़र्रुब पैदा करे, उसकी ज़कात भी अदा न करे, जो अल्लाह तआला शानुहू का अहम फ़रीज़ा है तो उसकी ना-फ़रमानी में क्या शक है? और ऐसे शख़्स को अपने माल के बाक़ी रहने की ज़्यादा उम्मीद न रखनी चाहिए। वह ख़ुद उसके ज़ाया हो जाने की तदबीर कर रहा है और अगर इस हाल में भी ख़ुदा न ख़्वास्ता ज़ाया न हो तो यह और भी सख़्त ख़तरनाक है कि इस सूरत में यह किसी बड़ी मुसीबत का पेश ख़ेमा है। अल्लाह तआला शानुहू ही अपने फ़ज़्ल से महफ़ूज़ रखे।

(۷) عن عائشة قالت قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ما خالطت الزكوٰة مالًا قط الا اهلكته رواه الشافعي والبخاري في تاريخه كذا في المشكوٰة وعزاه المنذري الى البزار والبيهقي

7. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि जिस माल के साथ ज़कात का माल मिल जाता है, वह उस माल को हलाक किए बग़ैर नहीं रहता।

फ़ायदाः- इस हदीस पाक के मतलब में उलमा की दो तफ़्सीरें हैं और दोनों सही हैं हुज़ूर सल्ल॰ का यह पाक इर्शाद दोनों पर सादिक़ आता है -

1. एक यह कि जिस माल में ज़कात वाजिब हो गयी हो और उसमें से ज़कात न निकाली गयी हो, तो यह सारा माल ज़कात के साथ मख़्लूत है और यह ज़कात का माल सब को ही हलाक कर देगा।

इस मतलब के मुवाफ़िक़ यह हदीसे पाक इससे पहली हदीस शरीफ़ के हम मायने हुई कि यही मज़्मून बि-ऐनिही पहली हदीस शरीफ़ का है।

हाफ़िज़े इब्ने तैमिया रह॰ ने मुंतक़ा में इन्ही मायनों को इख़्तियार किया है, इसलिए इस पर ज़कात निकालने में जल्दी करने का बाब लिखा है और हुमैदी रह॰ से इस हदीस के बाद यह नक़ल किया है कि अगर तुझ पर ज़कात वाजिब हो जाए और तू उसको न निकाले तो हराम माल हलाल को भी हलाक कर देगा, यानी ज़कात का माल, जिसका रोकना हराम है, बाक़ी माल को जिसका रोकना हलाल है ज़ाया कर देगा।

2. दूसरी तफ़्सीर जो हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह॰ से नक़ल की गयी, यह है कि जो शख़्स ख़ुद साहिबे निसाब हो, यानी साढ़े बावन तोला चांदी या उसकी क़ीमत की कोई चीज़ असली ज़रूरत से ज़ायद उसके पास हो और फिर वह अपने को ग़रीब ज़ाहिर करके किसी से ज़कात का माल ले ले, तो यह माल उसके पास जो अपना असली माल पहले से था उसको भी ज़ाया कर देगा। (मिश्कात)

इस हदीसे पाक से उन लोगों को बहुत डरते रहना चाहिए जो साहिबे निसाब होने के बावजूद लोगों की ज़कातें लेते रहते हैं कि यह ज़कात का माल उनके असली माल को भी फ़ना कर देगा और थोड़े से नफ़ा की ख़ातिर बहुत सा नुक़्सान बर्दाश्त करना पड़ जाएगा, फिर चाहे चोरों को गालियां देते रहें, या

ज़ालिमों को बद दुआएं देते रहें। अपनी हरकत की बदौलत माल चला ही जाएगा और ऐसी हालत में कि वह मुस्तहिक़ न था, लेने का गुनाह सर पर रहेगा।

(٨) عن عبد الله بن مسعودؓ قال من كسب طيبًا خبث منع الزكٰوة ومن كسب خبيثالم تطيبه الزكٰوة رواه الطبرانی فی الكبير موقوفًا باسناد

8. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जो शख़्स तैय्यब माल (हलाल माल) कमाए, ज़कात का अदा न करना उसको ख़बीस बना देता है और जो शख़्स हराम माल कमाए, ज़कात का अदा करना उसको पाक नहीं बनाता।

फ़ायदा:- कितनी सख़्त वईद है कि जिस माल को बड़ी जां फ़शानी से जायज़ ना जायज़ का एहतिमाम रखते हुए कमाया था, वह ज़रा से बुख़्ल से कि उसकी ज़कात का एहतिमाम नहीं रखा, सारा का सारा अल्लाह तआला शानुहू के नज़दीक ख़बीस बन गया।

एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद वारिद हुआ है कि जो शख़्स हराम तरीक़े से माल कमाए और फिर उसको सदक़ा करे उसके लिए उसमें कोई अज्र नहीं है और इसका वबाल उस पर है। *(तर्ग़ीब)*

यानी हराम कमाने का वबाल सर पर रहा और इस सदक़े का कोई सवाब उसको नहीं है।

(٩) عن اسماء بنت يزيدؓ ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال ايما امراة تقلدت قلادة من ذهب قلدت فی عنقها مثلها من النار يوم القيٰمة وايما امراة جعلت فی اذنها خرصامن ذهب جعل فی اذنها مثله من النار رواه ابوداؤد والنسائی باسناد جيد كذا فی الترغيب.

9. हज़रत अस्मा बिन्ते यज़ीद रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जो औरत अपने गले में सोने का हार डालेगी, उसके गले में उसी तरह का आग का हार

क़ियामत के दिन डाला जाएगा और जो औरत अपने कान में सोने की बाली डालेगी, उसके कान में उसी जैसी आग की बाली क़ियामत के दिन डाली जाएगी।

फ़ायदा:- इस हदीस शरीफ़ से औरतों के लिए भी सोने का पहनना नाजायज़ और हराम मालूम होता है। इसी वजह से बाज़ उलमा ने इस को इब्तिदा-ए-इस्लाम पर महमूल किया है, इसलिए कि सब उलमा के नज़दीक दूसरी अहादीस की बिना पर औरतों के लिए सोने चांदी का ज़ेवर जायज़ है लेकिन बाज़ उलमा ने इस हदीस को और इस जैसी अहादीस को ज़कात अदा न करने पर महमूल फ़रमाया है, और बाज़ रिवायात से इसकी ताईद होती है। चुनांचे ख़ुद हज़रत अस्मा रज़ि॰ ही की रिवायात में है कि मैं और मेरी ख़ाला हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुई और हमारे हाथों में सोने के कंगन थे। हुज़ूर सल्ल॰ ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि इनकी ज़कात अदा करती हो, हमने अर्ज़ कर दिया नहीं। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया तुम इससे नहीं डरतीं कि अल्लाह जल्ल शानुहू तुम्हें आग के कंगन पहनायेंगे, इनकी ज़कात अदा किया करो। *(तर्ग़ीब)*

यह रिवायत इस मज़्मून में साफ़ और वाज़ेह है कि जहन्नम की आग इसके बदले में पहनना इसी सूरत में है कि इनकी ज़कात अदा न की जाए। औरतों को इसका बहुत ख़्याल रखना चाहिए कि जो ज़ेवर आज बदन की ज़ीनत बन रहा है वह ज़कात अदा न करने की सूरत में कल को जहन्नम की दहकती हुई आग बनकर बदन का अज़ाब बनेगा।

हज़रत अस्मा रज़ि॰ का यह फ़रमाना कि ज़कात अदा नहीं करती, मुम्किन है कि इस वजह से हो कि उनको उस वक़्त तक यह मसअला मालूम न था। चुनांचे दूसरी हदीस में उनका सवाल करना इसकी दलील है। यह भी हो सकता है कि उस वक़्त तक वह ज़ेवर को औरत की असली ज़रूरत में समझती हों, हालांकि ज़ेवर असली जरूरत में नहीं है, एक ज़ायद चीज़ है। इस मतलब के मुवाफ़िक़ सोने की कोई तख़्सीस न होगी, चांदी का भी यही हुक्म है।

चुनांचे एक और हदीस में है, हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ तशरीफ़ लाये, तो मेरे हाथों में चांदी के छल्ले मुलाहज़ा फ़रमाये, इर्शाद फ़रमाया कि यह क्या है? हज़रत आइशा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया, मैं ने इसलिए

बनवाये कि आपके लिए अपनी ज़ीनत करूँ। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि इसकी ज़कात भी देती हो? मैं ने अर्ज़ किया, नहीं, हुज़र सल्ल० ने फ़रमाया कि तुझको तो जहन्नम की आग के लिए ये ही काफ़ी हैं। *(तर्ग़ीब)*

यहां इंकार की इन दो वजहों के अलावा जो पहली हदीस में गुज़रीं, तीसरी वजह यह भी हो सकती है कि चांदी के छल्लों का वज़न आम तौर से इतना नहीं होता कि वह निसाब तक पहुँच जाए और हुज़ूर सल्ल० के इर्शाद का मतलब यह है कि एक ज़ेवर की मिक्दार अगरचे इतनी न हो, लेकिन दूसरे ज़ेवर के साथ मिला कर भी निसाब को पहुँच जाये तो उस पर ज़कात वाजिब है।

एक और हदीस में है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में एक औरत हाज़िर हुई, उनके साथ उनकी बेटी थीं जिनके हाथ में दो वज़नी कंगन सोने के थे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि इनकी ज़कात अदा करती हो,? उन्होंने अर्ज़ किया, नहीं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि क्या तुम्हें इस बात से ख़ुशी है कि हक़ तआला शानुहू इनके बदले में आग के दो कंगन तुम्हें क़ियामत के दिन पहनावें? उन्होंने यह सुनते ही दोनों कंगन हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में पेश कर दिए कि यह अल्लाह के वास्ते देती हूँ। *(तर्ग़ीब)*

यही वह ख़ास अदा सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन के मर्द व औरतों में थी कि अल्लाह तआला शानुहू या उसके रसूल सल्ल० का इर्शाद सुनने के बाद फिर तामील में कोई हील हुज्जत, लैत लअल्ल होती ही न थी, इन सब रिवायात के मुवाफ़िक़ सोने चांदी के सब ज़ेवरों का एक ही हुक्म है। ज़कात न देने पर जहन्नम की आग मुसल्लत हो जाने में दोनों बराबर हैं। ख़्वाह किसी रिवायत में सोने के ज़ेवर हों या चांदी के ज़ेवर, और बाज़ उलमा ने उन रिवायात की वजह से, जिनमें ज़कात का ज़िक्र नहीं है और सोने चांदी में फ़र्क़ किया गया है यह भी फ़रमाया है कि इससे तकब्बुर, तफ़ाख़ुर और इज़्हार मुराद है।

एक रिवायत से इस मफ़्हूम की ताईद भी होती है। चुनांचे अबू दाऊद शरीफ़ और नसाई शरीफ़ की एक रिवायत में है कि, ऐ औरतों की जमाअत! क्या तुम्हें ज़ेवर बनाने के लिए चांदी काफ़ी नहीं है? याद रखो कि जो औरत सोने का ज़ेवर बनाये और उसको ज़ाहिर करे वह उसकी वजह से अज़ाब दी जाएगी। *(तर्ग़ीब)*

और यह बात आम तौर से मुशाहेदे में आती है कि औरतों के यहां चांदी के ज़ेवर बिलख़ुसूस जो औरतें अपनी जहालत से अपने को ऊँचे ख़ानदान की समझती हैं कुछ वक़अत और अहमियत नहीं रखता, वे चांदी के ज़ेवर को कोई इज़्हार या तफ़ाख़ुर की चीज़ नहीं समझतीं। उनके हाथों में चांदी के कंगन हों तो ज़रा भी उनको उसके इज़्हार का दाअिया पैदा न हो, लेकिन सोने के कंगन हों तो बेवजह पचास मर्तबा मक्खी उड़ाने के बहाने से हाथ हिलाएंगी। बीस मर्तबा दोपट्टा दुरूस्त करने के वास्ते हाथ फेरेंगी, बिलख़ुसूस कोई नई औरत घर में आ जाए या वे किसी दूसरे के घर जाएं फिर तो न मक्खी उनके बदन से उड़ कर देती है, न उनका दोपट्टा दुरूस्त होकर देता है। बार बार हाथों को हरकत देती रहती हैं और इस हरकत से महज़ दूसरे पर तफ़ाख़ुर मक़्सूद होता है, अपने ज़ेवर को दिखाना होता है। लिहाज़ा दोनों बातों का एहतिमाम बहुत ज़रूरी है कि ज़ेवर से तफ़ाख़ुर और तकब्बुर और उसका इज़्हार हरगिज़ न होना चाहिए और उसकी ज़कात बहुत एहतिमाम से अदा करना चाहिए। और दोनों में से अगर कोई सी एक बात का भी लिहाज़ न रखा जाए तो अपने आपको अज़ाब के लिए तैयार रखना चाहिए।

(١٠) عن الضحاك قال كان اناس من المنافقين حين امر الله ان تؤدى الزكوة يجيئون بصدقاتهم باردأما عندهم من الثمرة فانزل الله وَلاَ تَيَمَّمُوا الْخَبِيْثَ مِنْهُ تُنْفِقُوْنَ اخرجه ابن جرير وغيره كذا فى الدر المنثور.

10. हज़रत ज़ह्हाक रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जब हक़ तआला शानुहू ने ज़कात अदा करने का हुक्म फ़रमाया तो मुनाफ़िक़ आदमी बदतरीन फल जो उनके पास होते थे, वे दिया करते थे इस पर हक़ तआला शानुहू ने क़ुरआन पाक में आयते शरीफ़ा 'व ला तयम्म-मुल ख़बी-स मिन्हु' नाज़िल फ़रमायी।

फ़ायदाः- यह आयते शरीफ़ा सूरः बक़रः के 37 वें रूकूअ् की पहली आयत का जुज़्व (हिस्सा) है। यह आयते शरीफ़ा

"या अय्युहल्ल ज़ी-न आ-म-नू अन्फ़िक़ू मिन तय्यिबाति मा कसब्तुम॰"

से शुरू है, जिसका तर्जुमा यह है कि ऐ ईमान वालो, अपनी कमाई में से उम्दा माल को ख़र्च किया करो (नेक कामों में ख़र्च किया करो उम्दा माल को) उस चीज़ में से जिसको हमने तुम्हारे लिए ज़मीन से पैदा किया (यानी फल वग़ैरह) और रद्दी माल का इरादा भी न किया करो कि उसमें से ख़र्च करने लगो, हालांकि (अगर तुमको वैसी ख़राब चीज़ कोई तुम्हारे हक़्क़े वाजिब में या सौग़ात (तोहफ़े) में देने लगे तो (तुम कभी भी उसको लेने वाले न हो, मगर यह कि चश्मपोशी करके (शर्मे-शर्माये) ले लो और यह समझ लो कि हक़ तआला शानुहू किसी के मुहताज नहीं हैं (कि ऐसे रद्दी माल से ख़ुश हो जाएं वह) तारीफ़ के लायक़ हैं।

बहुत सी अहादीस इन आयात के बारे में वारिद हुई हैं कि मआल (नतीजा) सब का एक ही है। हज़रत बरा रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि ये आयात हम अंसारियों के बारे में नाज़िल हुई हैं। हम बाग़ात के मालिक थे। हर शख़्स अपने बाग़ की हैसियत के मुवाफ़िक़ कम व बेश लाया करता था। बाज़ आदमी एक दो ख़ोशे मस्जिद में टांग देता । अहले सुफ़्फ़ा फ़ुक़रा की जमाअत थी। जिनके खाने का कोई ख़ास इंतिज़ाम न था। उनमें से जिसको भूख लगती वह उन ख़ोशों में लकड़ी मारता और जो पक्की कच्ची खजूरें गिरतीं खा लेता। बाज़ लोग जिन्हें ख़ैर के कामों में ज़्यादा दिलचस्पी नहीं थी वे बाज़ रद्दी क़िस्म की खजूरों का ख़ोशा या ख़राब शुदा ख़ोशा टांग देता, उस पर यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई जिसका मतलब यह है कि अगर तुमको हद्या में ऐसी चीज़ दी जाए तो शर्मे शर्माए तो ले लो, वैसे न लो। इसके बाद से अच्छे से अच्छे ख़ोशे आने लगे। इस मज़्मून को मुतअद्द रिवायात वारिद हुई हैं।

एक और हदीस में है कि बाज़ लोग बाज़ार से सस्ता माल ख़रीदते और वह सदक़े में देते जिस पर यह आयत नाज़िल हुई।

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू से रिवायत है कि यह आयते शरीफ़ा फ़र्ज़ ज़कात के बारे में नाज़िल हुई। जब लोग खजूरें काटते तो अच्छा अच्छा माल छांट कर अलाहिदा कर लेते। जब ज़कात लेने के लिए आदमी जाता तो रद्दी माल उसके सामने कर देते।

एक हदीस में है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मर्तबा मस्जिद में तशरीफ़ ले गये। हुज़ूर सल्ल॰ के दस्ते मुबारक में एक लकड़ी

थी और मस्जिद में किसी ने रद्दी खजूरों का ख़ोशा लटका रखा था। हुज़ूर सल्ल॰ ने उस ख़ोशे में लकड़ी मारी और फ़रमाया कि जिसने यह लटकाया है, अगर इससे बेहतर लटकाता तो क्या नुक़्सान हो जाता। यह शख़्स जन्नत में ऐसी ही रद्दी खजूरें पायेगा। *(दुर्रे मंसूर)*

हज़रत आइशा रज़ि॰ हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करती हैं कि मसाकीन को उस माल को न खिलाओ, जिस को तुम ख़ुद न खा सको। *(कंज़)*

एक और हदीस में है कि गोश्त में बू हो गयी थी। हज़रत आइशा रज़ि॰ ने इरादा फ़रमाया कि वह किसी को अल्लाह वास्ते दे दें। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया क्या ऐसी चीज़ का सदक़ा करती हो जिसको ख़ुद नहीं खाती। *(जमउल फ़वाइद)*

मतलब यह कि अल्लाह तआला के नाम पर जब दिया जा रहा है तो अच्छा माल जहां तक मुम्किन हो देना चाहिए, लेकिन यह मतलब नहीं कि अच्छा दिया न जाए और ख़राब इस वजह से न दे, बस हज़फ़ ही हो जाए। अगर उम्दा की तौफ़ीक़ न हो, तो न देने से घटिया देना बेहतर है। ज़कात में रद्दी माल देना भी ज़कात न देने ही की एक क़िस्म है।

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद फ़रमाया हुआ ज़कात अदा करने का ज़ाब्ता चौथी फ़स्ल की अहादीस में नं॰ 6 पर गुज़र चुका है कि न तो अल्लाह जल्ल शानुहू बेहतरीन माल का मुतालबा फ़रमाते हैं, न घटिया माल की इजाज़त देते हैं। बल्कि मुतवस्सित माल का मुतालबा है। यही असल ज़ाब्ता ज़कात के अदा करने का है।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ ने जो अहकामात अपने मातहतों को ज़कात वसूल करने के तहरीर फ़रमाये उनमें ज़कात की तफ़्सील तहरीर फ़रमायी और तमहीद में तहरीर फ़रमाया कि जो इस तफ़्सील के साथ ज़कात वसूल करे उसको दी जाए और जो इससे ज़्यादा लेना चाहे, उसको न दी जाए।

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब हज़रत मुआज़ रज़ि॰ को यमन का हाकिम बना कर भेजा तो नमाज़ के हुक्म के बाद ज़कात अदा करने के हुक्म की तल्क़ीन फ़रमायी और यह इर्शाद फ़रमाया कि जब वे ज़कात अदा करें तो उनके बेहतरीन माल को लेने की कोशिश न करना, मज़्लूम की बद

दुआ से बचना कि मज़्लूम की बद दुआ के क़ुबूल होने में कोई आड़ नहीं होती।

इमाम ज़ोहरी रह० फ़रमाते हैं कि जब हुकूमत का आदमी ज़कात लेने आये तो बकरियों के तीन हिस्से कर दिये जायें। उम्दा उम्दा एक जगह और रद्दी रद्दी एक जगह। तीसरा हिस्सा जो दर्मियानी है उसमें से ले ले।

(अबू दाऊद)

यही असल ज़ाब्ता है ज़कात लेने वाले के हक़ में, लेकिन देने वाला अगर अपनी ख़ुशी से अच्छे से अच्छा माल दे तो इसमें मुज़ाइक़ा नहीं है, जैसा कि इसी हदीस नं० 6 के ज़ैल में सहाबा रज़ि० के बाज़ वाक़िआत और हुज़ूर सल्ल० का पाक इर्शाद गुज़र चुका कि तुम अगर अपनी ख़ुशी से उम्दा माल ज़ाब्ते से ज़्यादा देना चाहो तो अल्लाह तआला तुमको इस का अज्र देगा, इसलिए देने वाले को यह समझ कर कि अपने काम आने वाला सिर्फ़ यही माल है जो दिया जा रहा है, बेहतर माल छांट कर देना चाहिए।

इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि जो शख़्स ज़कात को आख़िरत के वास्ते अदा करना चाहे उसके लिए कुछ आदाब हैं, कुछ क़वाइद हैं उनकी रिआयत करना चाहिए।

इमाम ग़ज़ाली रह० ने इस मज़्मून को बड़ी तफ़्सील से ज़िक्र किया है, बन्दा इसको निहायत इख़्तिसार से और कहीं कहीं मामूली तौज़ीह से ज़िक्र करता है, यह उसका तर्जुमा नहीं है।

इमाम ग़ज़ाली रह० ने आठ अदब ज़िक्र फ़रमाये हैं –

सबसे पहली चीज़ तो यह समझने की है कि आख़िर ज़कात क्यों वाजिब हुई? क्यों इसको इस्लाम का रुक्न क़रार दिया गया। इसकी तीन वजह हैं

(अ) इस वजह से कि ज़बान से कलिमे का इक़रार कर लेना, वह अल्लाह तआला शानुहू को तने तंहा माबूद मानने का इक़रार है, यानी यह कि उसके साथ कोई दूसरी चीज़ शरीक नहीं है और उसकी तक्मील और तमामी जब ही हो सकती है जब कि उस एक पाक ज़ात के सिवा मुहब्बत के दावेदार के दिल में इख़्तियारी तौर पर किसी दूसरी चीज़ की गुंजाइश न रहे। इसलिए कि मुहब्बत शिर्कत की हरगिज़ मुतहम्मिल नहीं है, और महज़ ज़बानी दावा-ए-मुहब्बत बेकार है। मुहब्बत का इम्तिहान जब ही हो सकता है, जब दूसरी महबूब चीज़ों

से मुक़ाबला पड़ जाए और माल हर शख़्स को बित्तबअ़् महबूब होता है, इसलिए अल्लाह की मुहब्बत और उसकी तंहा माबूदियत के इक़रार में इम्तिहान की कसौटी के तौर पर माल का ख़र्च करना फ़र्ज़ किया गया है, जिससे लोगों की हक़ तआला शानुहू के साथ मुहब्बत का अंदाज़ा होता है, इसलिए हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है -

إِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اَنْفُسَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ بِاَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ (توبه ع ١٤)

"इन्नल्ला हश्तरा मिनल् मुअ्मिनी-न अन्फ़ु स-हुम् व अम्वा-ल-हुम बि अन्-न लहुमुल जन्नः" *(तौबा, रूकूअ् 14)*

'बिला शुब्ह हक़ तआला शानुहू ने मुसलमानों से उनकी जानों को और मालों को इस बात के बदले में ख़रीद लिया है कि उनको जन्नत मिलेगी। और जानों को ख़रीद लेना जिहाद के ज़रिए से है और मालों का ख़र्च करना जान के ख़र्च करने से हल्का है और जब माल के ख़र्च करने का यह मफ़्हूम हुआ कि मुहब्बत के इम्तिहान की कसौटी है तो आदमी इस इम्तिहान में तीन क़िस्म के हुए:-

1. पहली क़िस्म उन लोगों की है जिन्होंने अल्लाह तआला की यक्ताई का सच्चा इक़रार किया कि उसकी मुहब्बत में ज़रा सी भी शिर्कत किसी चीज़ की नहीं आने दी, और अपने अहद को पूरा पूरा अदा कर दिया कि अपने मालों को सबको उसके नाम पर क़ुर्बान कर दिया, न अपने लिये कोई दीनार रखा, न दिरम। वहां ज़कात के वाजिब होने का सवाल ही नहीं आता, इसी वजह से बाज़ बुज़ुर्गों से मंक़ूल है कि उनसे किसी ने दर्याफ़्त किया कि दो सौ दिरम में कितनी मिक़्दार वाजिब है तो उन्होंने फ़रमाया कि आम लोगों पर शरीअते मुतह्हरा के ज़ाब्ते के मुवाफ़िक़ पांच दिरम हैं लेकिन हम लोगों को सबका ख़र्च कर देना ज़रूरी है। यही वजह थी कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ ने अपना सारा माल ख़िदमत में पेश कर दिया और मुहब्बत के दावे को ऐसा पूरा किया कि महबूब के सिवा कुछ भी न छोड़ा।

2. दूसरी क़िस्म उन लोगों की है जो दर्मियानी दर्जे के हैं कि वे बक़द्रे हाजत व ज़रूरत बाक़ी रखते हैं। ये वे लोग हैं जो नेमतों और लज़्ज़तों में तो मश्ग़ूल नहीं होते, अलबत्ता बक़द्रे ज़रूरत ज़ख़ीरा रखते हैं और ज़रूरत से ज़ायद

को सर्फ़ कर देते हैं। ये हज़रात भी ख़र्च करने में मिक़्दारे ज़कात पर इक्तिफ़ा नहीं करते, बल्कि फ़ाज़िल माल जो कुछ होता है वह सब ख़र्च कर देते हैं। इसी वजह से बाज़ ताबिओन जैसा कि इमाम नख़ओ रह० शअ्बी रह० वग़ैरह हज़रात इस तरफ़ गये हैं कि माल में ज़कात के अलावा भी हुक़ूक़ वाजिब हैं। इन हज़रात के नज़दीक मालदार के ज़िम्मे वाजिब है कि जहां कहीं ज़रूरतमंद को देखे तो ज़कात से ज़ायद से भी उसकी हाजत को पूरा करे, लेकिन फ़िक़्ह के एतिबार से सही यह है कि अगर कहीं कोई शख़्स इज़्तिरार के दर्जे को पहुँच गया हो तो उसकी ज़रूरत का पूरा करना फ़र्ज़े किफ़ाया है और इसमें उलमा का इख़्तिलाफ़ है कि मुज़्तर पर इतनी मिक़्दार ख़र्च करना भी, जिससे वह हलाकत से बच जाए मुफ़्त ज़रूरी है या कर्ज देना भी काफ़ी है। और जो क़र्ज़ देना कहते हैं वे गोया तीसरी क़िस्म में दाख़िल हैं और

3. तीसरी क़िस्म अदना दर्जे के लोगों की है जो सिर्फ़ वाजिब यानी मिक़्दारे ज़कात ही अदा करते हैं, न उससे कम करते हैं न ज़्यादा। आम लोग बेशतर इसी क़िस्म में दाख़िल हैं, इसलिए कि उनको माल से मुहब्बत है। वे इसके ख़र्च करने में बुख़्ल करते हैं, उन्हें आख़िरत की रग़बत कम है।

इमाम ग़ज़ाली रह० ने यह तीन क़िसमें आदमियों की लिखी हैं। चौथी क़िस्म को ज़िक्र नहीं किया जो मिक़्दारे वाजिब को भी पूरी अदा नहीं करते या बिल्कुल ही अदा नहीं करते। इसलिए कि ये लोग तो अपने दावा-ए-मुहब्बत में बिल्कुल ही झूठे हैं ऐसों का क्या ज़िक्र करना जो झूठी मुहब्बत के दावेदार हों।

(ब) इस वजह से भी कि ज़कात से आदमी को सिफ़ते बुख़्ल से पाक करना मक़्सूद है, जो बड़ी मुहलिक (हलाक करने वाली) चीज़ है -

हुज़ूर सल्ल० का पाक इर्शाद है कि तीन चीज़ें मुहलिक हैं -

1. एक वह हिर्स व बुख़्ल जिसकी इताअत की जाए (यानी अगर तबअन कोई शख़्स बख़ील हो, मगर अमल अपनी तबीअत के ख़िलाफ़ करता है और तबीअत पर जब्र करता है तो यह मुहलिक नहीं मुहलिक वह बुख़्ल है कि अमल भी उसके मुवाफ़िक़ हो)

2. दूसरी वह ख़्वाहिशे नफ़्स जिसका इत्तिबाअ किया जाए (इसका भी यही मतलब है कि मसलन शहवत किसी शख़्स को हो और वह उसको जब्र से रोके तो वह मुहलिक नहीं, मुहलिक वह है कि उसके मुवाफ़िक़ अमल भी

करे)।

3. तीसरी चीज़ हर शख़्स का अपनी राय को सबसे बेहतर समझना है। इसके अलावा क़ुरआन पाक की मुतअद्द आयात और बहुत सी अहादीस में बुख़्ल की मज़म्मत वारिद हुई है जैसा कि दूसरी फ़स्ल में उनमें से चंद गुज़र चुकीं, और आदमी से सिफ़ते बुख़्ल इसी तरह ज़ायल हो सकती है कि ज़बर्दस्ती उसको माल ख़र्च करने का आदी बनाये कि जब किसी से मुहब्बत ताल्लुक़ छुड़ाना मक़्सूद होता है तो उसकी सूरत यही होती है कि अपने को उससे दूर रखने पर मजबूर किया जाए ताकि उसकी मुहब्बत जाती रहे।

इसी लिहाज़ से ज़कात को पाकी का ज़रिया कहा जाता है कि वह आदमी को बुख़्ल की गन्दगी से पाक करती है और जिस क़दर ज़्यादा माल ख़र्च करेगा और जितनी ज़्यादा मसर्रत और ख़ुशी से ख़र्च करेगा और जितनी भी अल्लाह तआला के रास्ते में ख़र्च करने से बशाशत होगी, उतनी ही बुख़्ल की गन्दगी से नज़ाफ़त हासिल होगी।

(ज) इस वजह से भी कि यह अल्लाह तआला शानुहू की नेमते माल का शुक्राना है कि अल्लाह जल्ल शानुहू के हर शख़्स के जान व माल में इस क़दर इन्आमात व एहसानात हैं कि हद नहीं। पस ताआते बदनिया बदनी इन्आमात का शुक्राना हैं और ताआते मालिया माली इन्आमात का शुक्राना हैं। और किस क़दर कमीना और ज़लील है वह शख़्स जो किसी फ़क़ीर को देखे, उसकी तंगदस्ती और बद हाली को उस पर रिज़्क़ की कमी की मुसीबत को देखे, फिर भी उसके दिल में अल्लाह तआला को उस नेमत के शुक्राने का ख़्याल न आये, जो अल्लाह तआला ने उस शख़्स पर की, कि उसको भीख मांगने से मुस्तग़्नी किया और उस फ़क़ीर की तरह अपनी हाजत को दूसरे के सामने ले जाने से बे नियाज़ किया। बल्कि इस क़ाबिल किया कि दूसरा शख़्स उसके सामने अपनी ज़रूरत पेश करे, क्या उसका शुक्राना यह नहीं है कि अपने माल का दसवां या चालीसवां हिस्सा अल्लाह तआला के नाम पर ख़र्च कर दे (दसवें से पैदावार का उश्र और चालीसवें से ज़कात मुराद है)

2. दूसरा अदब ज़कात की अदाएगी के वक़्त के एतिबार से है और वह यह है कि उसकी अदाएगी में बहुत उज्लत (जल्दी) करे कि उसके वाजिब होने के वक़्त से पहले ही अदा कर दे कि उसमें हक़ तआला शानुहू के इम्तिसाले हुक्म में रग़्बत का इज़्हार है, और फ़ुक़रा के दिलों में मसर्रत का पैदा करना है

और देर करने में अपने ऊपर और माल पर किसी क़िस्म की बीमारी और आफ़त आ जाने का भी एहतिमाल है, और जिन के नज़दीक ज़कात का फ़ौरन अदा करना ज़रूरी है, उनके नज़दीक तो ताख़ीर का गुनाह मुस्तक़िल है, लिहाज़ा जिस वक़्त भी दिल में ख़र्च करने का ख़्याल पैदा हो, उसको फ़रिश्ते की तहरीक समझे, इसलिए कि हदीस में आया है कि आदमी के साथ एक तहरीक फ़रिश्ते की होती है और एक शैतान की।

फ़रिश्ते की तहरीक तो ख़ैर की तरफ़ मुतवज्जह करना है और हक़ की तस्दीक़ है। जब आदमी उसको पावे तो अल्लाह तआला का शुक्र अदा करे और शैतान की तहरीक बुराई की तरफ़ मुतवज्जह करना और हक़ बात को झुठलाना है। जब आदमी उसको पावे, तो अऊज़ु बिल्लाह पढ़े। *(सआद:)*

एक और हदीस में है कि आदमी का दिल अल्लाह की दो उंगलियों में है, जिस तरह चाहे पलट देता है, इसलिए दिल में जो यह ख़्याल ख़र्च करने का आया है, उसके बदल जाने का भी ख़तरा है। इसके अलावा शैतान आदमी को अपनी एहितयाज का ख़्याल दिलाता रहता है, जैसा कि दूसरी फ़स्ल की आयात में नं० 2 पर गुज़रा है, और फ़रिश्ते की तहरीक के बाद शैतान की तहरीक भी होती है, इसलिए उसकी तहरीक के पैदा होने से पहले पहले अदा कर ले। और अगर सारी ज़कात एक ही वक़्त अदा करना मक़्सूद हो तो उसकी अच्छी सूरत यह है कि कोई सा एक महीना ज़कात अदा करने का मुअय्यन कर ले। और बेहतर यह है कि अफ़ज़ल महीनों में से मुक़र्रर करे ताकि उसमें ख़र्च करने से सवाब में ज़्यादती हो, जैसा कि मसलन मुहर्रम का महीना है कि वह साल का शुरू महीना होने के अलावा अश्हुरे हुरुम में से है, और उसमें एक दिन यानी आशूरा का ऐसा है कि उसमें सदक़ा करने की और अहल व अयाल पर ख़र्च में वुसअत की फ़ज़ीलत आयी है। लिहाज़ा इस महीने में अगर अदा करे तो बेहतर यह है कि दसवीं तारीख़ को अदा करे। *(सआद:)*

या मसलन रमज़ानुल मुबारक का महीना है, अहादीस में आया है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जूद व बख़्शिश में तमाम आदमियों से बढ़कर थे, और रमज़ान में तो आपकी बख़्शिश और जूद ऐसी तेज़ी से चलती थी जैसा कि तेज़ हवा, नीज़ इस महीने में लैल-तुल क़द्र है, जो हज़ार महीनों से अफ़ज़ल है। नीज़ अल्लाह तआला की नेमतें भी इस महीने में अपने बंदों पर रोज़अफ़्ज़ूं होती हैं। इसी तरह ज़िलहिज्जा का महीना भी बड़ी फ़ज़ीलत वाले

महीनों में है। इसी में हज होता है। इसमें अय्यामे मअ़लूमात हैं। यानी अ़श्रा ज़िलहिज्जा और अय्यामे मअ़दूदात हैं। यानी अय्यामे तश्रीक़, और इन दोनों में अल्लाह तआला की याद की तर्ग़ीब क़ुरआन पाक में आती है। पस अगर कोई रमज़ान को मुतअय्यन करे तो इस का अ़श्रा-ए-आख़िर (आख़िरी दशक) मुनासिब है और ज़िलहिज्जा को मुक़र्रर करे तो इसका अ़श्रा-ए-अव्वल (पहला दशक) बेहतर है।

बन्दा-ए-नाकारा ज़करिया का मश्विरा यह है कि हर शख़्स को अपनी ज़कात का तक़रीबी अंदाज़ा तो होता ही है इसलिये साल के शुरू ही से ज़रूरत के मवाक़े पर इस अंदाज़ की रिआयत रखते हुए थोड़ा थोड़ा देता रहे, और जब साल वजूब का ख़त्म हो उस वक़्त अपने माल का और अपनी ज़कात का पूरा हिसाब लगा ले। अगर कुछ कमी रह गयी हो तो उस वक़्त पूरी कर दे और कुछ ज़्यादा अदा हो गया हो तो अल्लाह तआला का शुक्र अदा करे कि उसी की तौफ़ीक़ थी कि वाजिब से भी ज़्यादा अदा हो गया। इसमें तीन मस्लहतें हैं-

1. अव्वल तो यह कि पूरी रक़म अगर मिक़्दार में ज़्यादा होती तो बड़ी रक़म का बयक वक़्त ख़र्च करना अक्सर तबीअत पर बार हो जाता है और ज़कात के अदा करने में तीबे नफ़्स से ख़र्च को ज़्यादा अहमियत है।

2. दूसरी मस्लहत यह है कि ज़रूरत के मवाक़े हर वक़्त मयस्सर नहीं होते। इस तरह अदा करने में ज़रूरत के मवाक़े पर ख़र्च होता रहेगा। और अगर साल के ख़त्म पर हिसाब करके इस ख़्याल से उसको अलाहिदा रखेगा कि वक़्तन फ़वक़्तन ख़र्च करता रहूँगा। तो उसमें एक तो हर दिन ताख़ीर होती रहेगी। दूसरे इसका इत्मीनान नहीं कि अदाएगी से पहले कोई हादिसा जानी या माली पेश न आ जाए, और ज़कात वाजिब हो जाने के बाद अदा न होने में सबके नज़दीक गुनाह है।

3. तीसरी मस्लहत यह है कि वक़्तन फ़वक़्तन अदा करते रहने में अगर आदमी के बुख़्ल ने ज़्यादा ज़ोर न किया, तो उम्मीद यह है कि मिक़्दारे वाजिब से कुछ ज़्यादा अक्सर अदा हो जाया करेगा, जो मर्ग़ूब चीज़ है, और बयक वक़्त हिसाब लगा कर उस पर इज़ाफ़ा करना बहुत से लोगों को दुश्वार होगा।

यहां एक बात एहतिमाम से ज़ेहन में रखना चाहिए कि ज़कात का मदार क़मरी (इस्लामी) साल पर है, शम्सी साल पर नहीं है। बाज़ लोग अंग्रेज़ी महीने

से ज़कात का हिसाब रखते हैं, इसमें दस यौम की ताख़ीर तो हर साल हो ही जाती है। इसके अलावा छत्तीस साल में एक साल की ज़कात कम हो जाएगी, जो अपने ज़िम्मे पर रह गयी।

3. तीसरा अदब ज़कात का मख़्फ़ी (छूपे) तरीक़े से अदा करना है, इसलिए कि इसमें रिया और शोहरत से अम्न है, और लेने वाले की परदापोशी है, उसको ज़िल्लत से बचाना है और अफ़ज़ल यही है कि अगर कोई मजबूरी इज़्हार की न हो तो मख़्फ़ी तौर पर अदा करे। इसलिए कि सदक़े की मस्लहत बुख़्ल की गंदगी को दूर करना है और माल की मुहब्बत को ज़ायल करना है, और ज़्यादा शोहरत में हुब्बे जाह को दख़ल होता है और यह मरज़ यानी हुब्बे जाह का हुब्बे माल से भी ज़्यादा सख़्त है, और लोगों पर हुब्बे माल से भी ज़्यादा मुसल्लत है, और सिफ़ते बुख़्ल क़ब्र में बिच्छू बन कर आदमी को काटती है और सिफ़ते रिया व शोहरत अज़दहा बन कर डसती है तो सिफ़ते बुख़्ल को ज़ायल करके सिफ़ते रिया को तक़्वियत देने की मिसाल ऐसी है जैसा कि कोई शख़्स बिच्छू को मार कर सांप को खिलाए कि इसमें बिच्छू तो यक़ीनन मर गया और उसकी मज़र्रत जाती रही, लेकिन सांप ज़्यादा क़वी हो गया और मक़्सूद दोनों का मारना है, और सांप का मारना ज़्यादा ज़रूरी है

4. चौथा अदब यह है कि अगर कोई दीनी मस्लहत इज़्हार की हो, मसलन दूसरों को तर्ग़ीब मक़्सूद हो या दूसरे लोग उसके फ़ेल का इत्तिबाअ करते हों या कोई और दीनी मस्लहत हो तो उस वक़्त इज़्हार अफ़ज़ल होगा। इन दोनों नम्बरों का बयान पहली फ़स्ल की आयात में नं॰ 9 पर मुफ़स्सल गुज़र चुका।

5. पांचवां अदब यह है कि अपने सदक़े को 'मन्न व अज़ा' से बर्बाद न करे। मन्न के मायने एहसान रखने के हैं यानी जिस पर सदक़ा किया है उस पर अपने सदक़े का एहसान जताये, और अज़ा के मायने तक्लीफ़ के हैं, यानी उसको किसी और तरह की अज़ीयत इस घमंड पर पहुँचाये कि अपना दस्तेनिगर है, मुहताज है, इसकी ज़रूरत अपने से वाबस्ता है या मैं ने ज़कात देकर इस पर एहसान किया है। यह मज़्मून भी पहली फ़स्ल की आयात में नं॰ 8 पर तफ़्सील से गुज़र चुका है।

6. छठा अदब यह है कि अपने सदक़े को हक़ीर समझे। उसको बड़ी चीज़ समझने से उज्ब (तकब्बुर) पैदा होने का अंदेशा है, जो बड़ी हलाकत की

चीज़ है और नेक आमाल को बर्बाद करने वाली है। हक़ तआला शानुहू ने भी क़ुरआन पाक मे तअन् (ताने) के तौर पर इसको ज़िक्र फ़रमाया है। चुनांचे इर्शाद है:-

وَيَوْمَ حُنَيْنٍ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنكُمْ شَيْئًا (براءة ع ٤)

"व यौ-म हुनैनिन् इज़ अअ्-ज बत्कुम कस्र-तु कुम फ़-लम तुग़्नि अन्कुम शैअन्॰" *(बराअत, रूकूअ् 4)*

और हुनैन के दिन (भी तुमको ग़लबा दिया था) जब कि (यह क़िस्सा पेश आया था) तुमको अपने मज्मे की कसरत से घमंड पैदा हो गया था, फिर वह कसरत तुम्हारे कुछ काम न आयी और (कुफ़्फ़ार के तीर बरसाने से तुम्हें इस क़दर परेशानी हुई कि) ज़मीन अपनी वुसअत के बावजूद तुम पर तंग हो गयी, फिर तुम (मैदाने जंग से) मुंह फेर कर भाग गये। इसके बाद अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने रसूल और मोमिनीन पर तसल्ली नाज़िल फ़रमायी और ऐसे लश्कर (फ़रिश्तों के) तुम्हारी मदद के लिए भेजे, जिनको तुमने नहीं देखा।

इसका क़िस्सा कुतुबे अहादीस में मशहूर है। कसरत से रिवायात इस क़िस्से के बारे में वारिद हुई हैं, जिनका ख़ुलासा यह है कि रमज़ानुल मुबारक सन् 08 हि॰ में, जबकि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का मुकर्रमा को फ़त्ह कर लिया तो क़बीला हवाज़िन और सक़ीफ़ पर हमले के लिए रमज़ान ही में तशरीफ़ ले गये, चूंकि मुसलमानों की जमइय्यत उस वक़्त पहले ग़ज़वात के लिहाज़ से बहुत ज़्यादा हो गयी थी तो उनमें अपनी कसरत पर उज्ब (गुमान) पैदा हुआ कि हम इतने ज़्यादा हैं कि मग़्लूब नहीं हो सकते। इसी बिना पर कि हक़ तआला शानुहू को घमंड और उज्ब बहुत ना पसंद है, इब्तिदा में मुसलमानों को शकिस्त हुई, जिस की तरफ़ से आयते बाला में इशारा है कि तुम को अपने मज्मे की कसरत पर घमंड पैदा हुआ, लेकिन मज्मे की कसरत तुम्हारे कुछ भी काम न आयी।

हज़रत उर्वः रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जब अल्लाह के पाक रसूल सल्ल॰ ने मक्का मुकर्रमा फ़त्ह कर लिया तो क़बीला हवाज़िन और सक़ीफ़ के लोग चढ़ाई करके आये और मौज़ा हुनैन में वे लोग जमा हो गये।

हज़रत हसन रज़ि॰ से नक़्ल किया गया कि जब मक्का वाले भी फ़त्ह के बाद मदीने वालों के साथ मुज्तमा हो गये, तो वे लोग कहने लगे कि वल्लाह,

अब हम इकट्ठे होकर हुनैन वालों से मुक़ाबला करेंगे। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उन लोगों की यह घमंड की बात गरां गुज़री और ना पसंद हुई। (दुर्रे मंसूर)

ग़रज़ उज्ब की वजह से यह परेशानी पेश आयी।

उलमा ने लिखा है कि नेकी जितनी भी अपनी निगाह में कम समझी जायेगी, उतनी ही अल्लाह तआला के यहां बड़ी समझी जाएगी, और गुनाह जितना भी अपनी निगाह में बड़ा समझा जाएगा, उतना ही अल्लाह तआला के यहां हल्का और कम समझा जायेगा, यानी हल्के से गुनाह को भी यही समझे कि मैंने बहुत बड़ी हिमाक़त की, हरगिज़ हरगिज़ न करना चाहिए था। किसी गुनाह को भी यह न समझो कि चलो इसमें क्या हो गया। बाज़ उलमा से नक़ल किया गया कि नेकी तीन चीज़ों से कामिल होती है:-

1. एक यह कि उसको बहुत कम समझे कि कुछ भी न किया,

2. दूसरे जब करने का ख़्याल आ जाए तो उसको करने में जल्दी करे, मुबादा यह मुबारक ख़्याल यानी नेकी करने का निकल जाए या किसी वजह से न हो सके।

3. तीसरे यह कि उसको मख़्फ़ी तौर से करे और जो कुछ ख़र्च किया है, उसको हक़ीर समझने का तरीक़ा यह है कि यह देखे कि जो कुछ ख़र्च किया है, उसका मवाज़ना उससे करे, जो अपने ऊपर ख़र्च किया जा चुका और अपने पास बाक़ी रहने दिया। फिर सोचे कि मैं ने अल्लाह की राह में कितना ख़र्च किया और अपने लिए कितना रखा। मसलन अगर जो कुछ उसके पास मौजूद था उसमें से एक तिहाई ख़र्च कर दिया तो गोया मालिकुल मुल्क आक़ा और महबूब की रिज़ा में तो एक तिहाई हुआ और मुहब्बत के दावेदार के हिस्से में दो तिहाई, और अगर कोई शख़्स उसका अक्सर या सारा भी ख़र्च कर दे, जिसकी मिसाल इस ज़माने में तो मिलना भी मुश्किल है तब भी यह सोचना चाहिए कि आख़िर माल तो अल्लाह ही का था, उसी की अता फ़रमायी हुई चीज़ अपने पास थी, जिसमें उसने अपने लुत्फ़ व करम, एहसान से ख़र्च की और अपनी ज़रूरत में काम में लाने की इजाज़त दे रखी थी। अगर किसी ऐसे शख़्स की अमानत अपने पास हो, जिसने अमानत रखवाते वक़्त यह भी कह दिया हो कि अगर आपको कोई ज़रूरत पेश आवे तो इसको अपना ही माल

तसव्वुर करके ख़र्च कर लें, फिर तुम किसी वक़्त उसकी अमानत कम व बेश वापस कर दो तो उसमें कौन सा एहसान तुम्हारा हुआ, जिसको तुम यह समझो कि हमने बड़ा कारनामा किया।

और फिर मज़ीद यह है कि अल्लाह तआला शानुहू को उसकी अता की हुई चीज़ वापस करने में यानी उसके नाम पर ख़र्च करने में उसकी तरफ़ से अज्र व सवाब और बदले का ऐसा ऐसा वायदा है कि उसके लिहाज़ से तो यह कहा भी नहीं जा सकता कि हमने उसकी अमानत वापस कर दी, बल्कि यों कहा जाएगा कि एक शख़्स ने मसलन सौ रूपए अमानत रखवाये थे और उसमें से उसने पचास साठ वापस ले लिए, इस वायदे पर कि अंक़रीब ही इतनी गिन्नियां इसके बदले में तुम्हें दे दूँगा। या यों समझ लो कि पचास वापस लिए और पांच सौ का चेक बैंक का काटकर तुम्हारे हवाले कर दिया, तो ऐसी हालत में क्या घमंड का मौक़ा है, इस बात का कि मैं ने अमानत रखने वाले को कुछ वापस किया। इसी वजह से इस अदब के मातहत यह चीज़ भी है कि जब सदक़ा करे तो बजाए फ़ख़्र और घमंड के शर्मिंदगी की सी सूरत से ख़र्च करे, जैसा कि किसी की अमानत कोई शख़्स इस तरह वापस करे कि उसमें से कम या ज़्यादा रख भी ले। मसलन किसी के सौ रूपये अमानत रखे हों और अमानत की वापसी के वक़्त उसमें से पचास ही वापस करे और यह कह कर वापस करे कि तुमने चूँकि मुझे ख़र्च की इजाज़त दे दी थी इसलिए पचास मैं ने ख़र्च कर लिये, या अपनी किसी ज़रूरत के लिए रख लिए यह कहते वक़्त जैसा कि आदमी पर एक हिजाब, एक शर्म एक ग़ैरत, एक आजिज़ी एक ज़िल्लत टपकती है और उसको यह बात खुद महसूस होती है कि मैं ने इस करीमुन्नफ़स आदमी के माल में तसर्रूफ़ किया। उसका कितना बड़ा एहसान है कि उसने बाक़ी का मुतालबा नहीं किया यही हैअत बिऐनिही अल्लाह की राह में ख़र्च करते वक़्त होनी चाहिए कि उसकी अता का कुछ हिस्सा उसको ऐसी तरह वापस किया जा रहा है कि उसमें से हमने कुछ खा भी लिया और कुछ रख भी लिया और यह इस वजह से कि सदक़ा जो किसी फ़क़ीर को दिया जा रहा है या ज़रूरत के मौक़े पर ख़र्च किया जा रहा है तो वह हक़ीक़त में अल्लाह तआला शानुहू ही को वापस किया जा रहा है। फ़क़ीर तो महज़ एक एलची है जो गोया उसने अपना आदमी अपनी अमानत वापस लेने के लिए भेजा है, ऐसे मवाक़े में आदमी एलची की कैसी ख़ुशामद किया करता है कि तू आक़ा से हाकिम से ज़रा

सिफ़ारिश कर दीजियो, कह दीजियो कि उसके पास सारा मुतालबा अदा करने को इस वक़्त था नहीं, मेरी ज़रूरतों और अह्वाल पर नज़र करके इतने ही को क़ुबूल कर लें, वग़ैरह, वग़ैरह।

ग़रज़ जितनी ख़ुशामद क़ासिदों की, अहलकारों की ऐसे वक़्त में होती है, जबकि पूरा हक़ अदा न किया जा रहा हो, उससे ज़्यादा अमली सूरत से फ़ुक़रा और सदक़े का माल लेने वालों की होना चाहिए। इसलिए कि यह अल्लाह तआला के एलची हैं, मालिकुल मुल्क के क़ासिद हैं। उस मालिकुल मुल्क, क़ादिरे मुतलक़ और बे नियाज़ के भेजे हुए हैं, जिसने सब कुछ अता किया और वह जब चाहे, आन की आन में सब कुछ छीन कर तुम्हें भी ऐसा ही मुहताज कर दे, जैसा कि तुम्हारे सामने है। और यह सब कुछ इसलिए है कि माल सारा का सारा अल्लाह तआला ही का है और उसकी राह में सारा ख़र्च कर देना मर्ग़ूब और पसंदीदा है। उसने अपने लुत्फ़ व करम से सब के ख़र्च करने का ईजाब हम पर नहीं फ़रमाया, इसलिये कि अगर वह सब कुछ ख़र्च करना वाजिब फ़रमा देता तो हमें अपने तबई बुख़्ल व कंजूसी से बहुत बार हो जाता।

7. सातवां अदब यह है कि अल्लाह की राह में सदक़ा करने के लिए बिलख़ुसूस ज़कात के अदा करने में जो उसका एक अहम हुक्म और फ़रीज़ा है बेहतर से बेहतर माल ख़र्च करे, इसलिए कि हक़ तआला शानुहू ख़ुद तय्यिब हैं, हर क़िस्म के ऐब से पाक हैं, इसलिए तैय्यब ही माल क़ुबूल फ़रमाते हैं। अगर आदमी यह ख़्याल करे कि यह माल जो सदक़ा किया जा रहा है, हक़ तआला शानुहू को दिया जा रहा है तो किस क़दर गुस्ताख़ी और बेअदबी है कि जिस पाक ज़ात का माल है, जिसका अता किया हुआ है उसकी ख़िदमत में तो घटिया क़िस्म का माल पेश करे और ख़ुद अपने लिए उम्दा और बेहतर रखे। इसकी मिसाल उस नौकर या ख़ानसामा की सी है जो आक़ा के लिए तो बासी रोटी और दाल बू दार रखे और अपने लिए क़ोरमा पकाये। ख़ुद ही ग़ौर कर लो कि ऐसे नौकर के साथ आक़ा का क्या मामला होना चाहिए, फिर दुनिया के आक़ाओं को तो हर हर चीज़ की ख़बर भी नहीं होती और उस अलीम व ख़बीर के सामने हर हर बात रहती है बल्कि दिल के ख़्यालात भी हर वक़्त सामने हैं, ऐसी हालत में उसी के माल में से उसी के लिए घटिया और ख़राब चीज़ भेजना किस क़दर नमक हरामी है, और अगर आदमी यह ख़्याल करे कि यह जो कुछ ख़र्च कर

रहा है; वह अपने ही नफ़े के लिए है, उसका बदला निहायत सख़्त एहतियाज के वक़्त अपने ही को मिलता है, तो किस क़दर हिमाक़त की बात है कि आदमी अपने लिए तो सड़ियल घटिया चीज़ें रखे और अच्छा अच्छा माल दूसरों के वास्ते छोड़ जाए।

हदीस में आया है, आदमी कहता है कि मेरा माल, मेरा माल, हालांकि उसका माल सिर्फ़ वह है जो सदक़ा करके आगे भेज दिया या खा कर ख़त्म कर दिया। बाक़ी जो रह गया वह दूसरों का माल है (यानी वारिसों का)

एक हदीस में आया है कि एक दिरम कभी लाख दिरम से बढ़ जाता है और वह इसी तरह से है कि आदमी हलाल कमाई से उम्दा माल तीबे ख़ातिर और सुरूर से ख़र्च करे, बजाए इसके कि मक्रूह माल से एक लाख दिरम ख़र्च करे।

8. आठवां अदब यह है कि अपने सदक़े को ऐसे मौक़े में ख़र्च करे जिससे उसका सवाब बढ़ जाए और छः सिफ़ात ऐसी हैं कि जिसके अंदर उनमें से एक भी सिफ़त हो, उसको देने से सदक़े का सवाब बहुत बढ़ जाता है और जिसमें इनमें से जितनी सिफ़ात ज़्यादा होंगी, उतना ही अज्र भी ज़्यादा होगा, और सवाब के एतिबार से उतना ही सदक़ा भी बढ़ जाएगा।

(अ) मुत्तक़ी परहेज़गार हो, दुनिया से बेरग़बत और आख़िरत के कामों में मश्गूल हो।

हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद है कि तेरा खाना मुत्तक़ियों के सिवा कोई न खावे। यह हदीस पहली फ़स्ल की अहादीस में नं॰ 23 पर गुज़र चुकी है। और इसकी वजह यह है कि मुत्तक़ी आदमी तेरे इस सदक़े से अपने तक़्वे और इताअत में इआनत हासिल करेगा और तू गोया उसके तक़्वे में मुईन (मददगार) हुआ और उसकी इबादत में सवाब का शरीक हुआ।

(ब) अहले इल्म हो, इसलिए कि इससे तेरी इआनत उसके उलूम हासिल करने में और फैलाने में शामिल हो जायेगी और इल्म तमाम इबादतों में अशरफ़ और आला इबादत है, और जितनी भी इल्मी मश्ग़ले में नीयत अच्छी होगी, उतनी ही यह इबादत आला से आला होती जाएगी।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह॰ मशहूर मुहद्दिस और बुज़ुर्ग हैं। वह अपनी अताओं को उलमा के साथ मख़्सूस रखते थे। किसी ने अर्ज़ किया कि

अगर ग़ैर आलिमों पर भी आप करम फ़रमाएं तो कैसा अच्छा हो। उन्होंने फ़रमाया कि मैं नुबुव्वत के दर्जे के बाद इल्म के बराबर किसी का दर्जा भी नहीं पाता। जब कोई अहले इल्म में से किसी दूसरी तरफ़ मुतवज्जह होता है तो उसके इल्मी मश्ग़ले में नुक्सान होता है। इसलिए उनको इल्मी मशाग़िल के लिए फ़ारिग़ रखना सबसे अफ़ज़ल है।

(ज) वह शख़्स अपने तक़्वा और अपने इल्म में हक़ीक़ी मुवह्हिद हो और हक़ीक़ी मुवह्हिद होने की अलामत यह है कि जब उस पर कोई एहसान करे तो वह अल्लाह तआला शानुहू का शुक्र करे और दिल से यह बात समझे कि हक़ीक़ी एहसान उसी पाक ज़ात का है, वही असल अता करने वाला है और जो देने वाला ज़ाहिर में दे रहा है वह सिर्फ़ वास्ता और एलची है।

हज़रत लुक़्मान अलै॰ की अपने बेटे को वसीयत है कि अपने और हक़ तआला शानुहू के दर्मियान किसी दूसरे को एहसान करने वाला मत बना, किसी दूसरे के एहसान को अपने ऊपर तावान समझ। जो शख़्स वास्ते का हक़ीक़ी एहसान समझता है, उसने हक़ीक़ी एहसान करने वाले को पहचाना ही नहीं। उसने यह न समझा कि यह वास्ता है। अल्लाह तआला ही ने उसके दिल में यह बात डाली थी कि फ़लां शख़्स पर एहसान किया जाए, इसलिए वह अपने उस एहसान करने में मजबूर था, और जब आदमी के दिल में यह बात जम जाए तो फिर उसकी निगाह असबाब पर नहीं रहती, बल्कि मुसब्बिुल अस्बाब पर हो जाती है, और ऐसे शख़्स पर एहसान करना एहसान करने वाले के लिए ज़्यादा नाफ़ेअ होता है और दूसरों के बहुत लंबे चौड़े सना व शुक्र के अल्फ़ाज़ से उस पर एहसान करना कहीं ज़्यादा बढ़ा हुआ है, इसलिए कि जो आज एहसान पर लंबी चौड़ी तारीफ़ कर रहा है, वह कल को इआनत रोकने पर उसी तरह बुराईयां शुरू कर देगा, और जो हक़ीक़ी मुवह्हिद होगा, वह कल को मज़म्मत भी न करेगा कि वह वास्ते को वास्ता ही समझता है।

(द) जिस पर सदक़ा किया जाए वह अपनी हाजात और ज़रूरतों का इख़्फ़ा करने वाला हो। लोगों से अपनी क़िल्लते मआश का और आमदनी की कमी का इज़्हार न करता हो। बिलख़ुसूस वह शख़्स जो मुरव्वत वालों में से हो और उसकी आमदनी पहले से कम रह गयी हो लेकिन उस की मुरव्वत की आदत जो आमदनी की ज़्यादती के ज़माने में थी, वह बदस्तूर बाक़ी हो वह दर हक़ीक़त ऐसा ज़रूरतमंद है, जो ज़ाहिर में ग़नी है। ऐसे ही लोगों की तारीफ़ में

अल्लाह जल्ल शानुहू ने फ़रमाया है -

"यह्स-बु हुमुल जाहिलु अग्निया-अ मिनत्तअफ़्फ़ु-फ़ि॰"

यह आयते शरीफ़ा सूर बक़रः के 37 वें रूकूअ् की है। पूरी आयते शरीफ़ा यह है:-

لِلْفُقَرَآءِ الَّذِيْنَ اُحْصِرُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ضَرْبًا فِى الْاَرْضِ ز يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ اَغْنِيَآءَ مِنَ التَّعَفُّفِ ج تَعْرِفُهُمْ بِسِيْمَاهُمْ ج لَا يَسْئَلُوْنَ النَّاسَ اِلْحَافًا ط وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ع

"लिल् फ़ु-क़ राइल्लज़ी-न उह्सिरू फ़ी सबीलिल्ला-हि ला यस्तती अू-न ज़र्बन फ़िल अर्ज़ि यहस-बुहुमुल जाहिलु अग्निया-अ मिनत्तअफ़्फ़ु-फ़ि तअ्रिफ़ु हुम बिसी-मा हुम ला यस् अलू-नन्ना-स इल्हाफ़न् व मा तुन्फ़िक़ू मिन् ख़ैरिन् फ़-इन्नल्ला-ह बिही अलीम॰"

(सूरः बक़रः रूकूअ 37)

सदक़ात असल हक़ उन हाजत मंदों का है जो मुक़य्यद हो गये हों, अल्लाह की राह (यानी दीन की ख़िदमत में और उसी ख़िदमते दीन में मुक़य्यद और मशगूल रहने से वे लोग) तलबे मआश के लिए (कहीं मुल्क में चलने फिरने का) आदतन (इम्कान नहीं रखते और ना वाक़िफ़ शख़्स उनको तवंगर ख़्याल करता है, उनके सवाल से बचने के सबब से) अलबत्ता (तुम उन लोगों को उनके तर्ज़ से पहचान सकते हो वे लोगों से लिपट कर मांगते नहीं फिरते) जिससे कोई उनको हाजतमंद समझे यानी मांगते ही नहीं, क्योंकि अक्सर जो लोग मांगने के आदी हैं, वे लिपट कर ही मांगते हैं, और उन लोगों की ख़िदमत करने को (जो माल ख़र्च करोगे, बेशक हक़ तआला शानुहू को इसकी ख़ूब इत्तिला है) दूसरे लोगों को देने से उनकी ख़िदमत का फ़ी नफ़्सिही सवाब ज़्यादा देंगे।

फ़ायदाः- फ़ी नफ़्सिही की क़ैद इसलिए लगायी कि असल में तो ज़्यादा सवाब इसी में है लेकिन किसी आरिज़ा की वजह से इसके ग़ैर में भी सवाब का ज़्यादा होना मुम्किन है। मसलन उन लोगों की हाजत से ज़्यादा दूसरों को हाजत हो या यह उम्मीद हो कि उनकी ख़िदमत तो कोई और भी कर देगा, दूसरे बिल्कुल महरूम रह जायेंगे। और जहां ये अवारिज़ न हों, वहां के लोग ख़िदमत के लिए अफ़ज़ल हैं, और आरिज़ की वजह से ग़ैर मुत्तक़ी बल्कि ग़ैर मोमिन

के साथ एहसान करने में भी अफ़ज़लियत मुम्किन है, और जानना चाहिए कि हमारे मुल्क में इस आयत के मिस्दाक़ सबसे ज़्यादा वे हज़रात हैं जो उलूमे दीनिया की इशाअत में मश्ग़ूल हैं। पस इस बिना पर सबसे अच्छा मसरफ़ तालिबे इल्म ठहरे और इन पर जो बाज़ ना तजुर्बाकार यह ताना करते हैं कि इनसे कमाया नहीं जाता, इसका जवाब क़ुरआन में दे दिया गया, जिसका हासिल यह है कि एक शख़्स ऐसे दो काम नहीं कर सकता जिनमें से एक में या दोनों में पूरी मश्ग़ूली की ज़रूरत हो और जिसको इल्मे दीन का कुछ मज़ाक़ होगा, वह मुशाहदा से समझ सकता है कि इसमें ग़ायत मश्ग़ुली और इन्हिमाक की हाजत है, इसके साथ इक्तिसाबे माल का शुग़्ल जमा नहीं हो सकता, और इसके करने से इल्मे दीन की ख़िदमत ना तमाम रह जाती है, चुनांचे हज़ारों नज़ाइर पेशे नज़र हैं। *(बयानुल क़ुरआन, कुछ तब्दीली के साथ)*

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि इस आयते शरीफ़ा में फ़ुक़रा से अस्हाबे सुफ़्फ़ा मुराद हैं। अस्हाबे सुफ़्फ़ा की जमाअत भी हक़ीक़त में तलबा ही की जमाअत थी, जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में ज़ाहिरी और बातिनी उलूम हासिल करने के लिए पड़े हुए थे।

मुहम्मद बिन कअब क़ुरज़ी रह॰ कहते हैं कि इससे अस्हाबे सुफ़्फ़ा मुराद हैं जिनके न घर थे, न कुंबा। हक़ तआला शानुहू ने उन पर सदक़ात की तर्ग़ीब दी है।

क़तादा रह॰ कहते हैं कि वे फ़ुक़रा मुराद हैं, जिन्होंने अपने आप को अल्लाह के रास्ते में जिहाद में रोक रखा है (यानी मश्ग़ूल कर रखा है) तिजारत वग़ैरह नहीं कर सकते। *(दुर्रे मंसूर)*

इमाम ग़ज़ाली रह॰ फ़रमाते हैं कि ये वे लोग हैं जो सवाल में नहीं लिपटते, उनके दिल अपने यक़ीन की वजह से ग़नी हैं, मुजाहदा-ए-नफ़्स पर ग़ालिब हैं, ऐसे लोगों को ख़ास तौर से तलाश करके दिया जाए और दीनदारों के अन्दरूनी अहवाल की ख़ास तौर से जुस्तजू की जाए कि उनके गुज़रान की क्या सूरत है कि उन पर ख़र्च करने का सवाब भीख मांगने वालों पर ख़र्च करने से कहीं ज़्यादा है, लेकिन ऐसे लोगों की जुस्तजू भी मुश्किल है कि ये अपना हाल दूसरों पर कम ज़ाहिर करते हैं, और इसी वजह से लोग उनको ग़नी समझते हैं।

(ह) यह कि आदमी अयालदार भी हो या किसी बीमारी में मुब्तला हो

या किसी और ऐसे सबब में गिरफ़्तार हो कि कमा नहीं सकता तो वह भी कुरआन पाक की आयते बाला 'उहसिरू फ़ी सबी लिल्लाहि' में दाख़िल है कि वह भी घिरा हुआ है, ख़्वाह अपने फ़क्र में घिरा हुआ हो, या मआश की तंगी में घिरा हुआ हो, या अपनी इस्लाहे कल्ब के मश्ग़ले में घिरा हुआ हो कि ये लोग अपनी इन मजबूरियों की वजह से बक़द्रे ज़रूरत कमाने पर क़ादिर नहीं हैं। इसी वजह से हज़रत उमर रज़ि॰ बाज़ घर वालों को दस दस बकरियां या इससे भी ज़ायद देते थे और हुज़ूर सल्ल॰ के पास जब फ़ै का माल आता तो बीवी वाले को दोहरा हिस्सा देते और मुजर्रद (अकेले, बेशादी शुदा) आदमी को इकहरा हिस्सा मरहमत फ़रमाते। फ़ै का माल वह माल कहलाता है जो कुफ़्फ़ार से बग़ैर लड़ाई के हासिल हुआ हो।

(व) यह कि रिश्तेदार हो कि इसमें सदके का सवाब अलाहिदा है और सिला-रहमी का अलाहिदा है। तीसरी फ़स्ल की अहादीस में नं॰ 6 पर मज़्मून गुज़र चुका है।

इन छः औसाफ़ को ज़िक्र करने के बाद इमाम ग़ज़ाली रह॰ फ़रमाते हैं कि ये सिफ़ात उस शख़्स में मतलूब हैं जिन पर ख़र्च किया जाए और हर सिफ़त में कमी बेशी के एतिबार से दरजात का बहुत तफ़ावुत है, यानी मसलन तक़्वे की आला क़िस्म और अदना क़िस्म में ज़मीन आसमान का फ़र्क़ है। क़राबत एक बहुत क़रीब की है और एक बहुत दूर की है, इसी तरह दूसरे औसाफ़ भी हैं, लिहाज़ा हर सिफ़त में आला दर्जे की तलाश अहम है, और किसी शख़्स में ये सारी ही सिफ़ात मौजूद हों तो वह शख़्स बड़ी ग़नीमत चीज़ है और बहुत बड़ा ज़ख़ीरा है, उस पर अपनी कोई चीज़ ख़र्च हो जाने में बड़ी कोशिश और तलाश करना चाहिए। और इन औसाफ़ के साथ मुत्तसिफ़ होने वाले की कोशिश और तलाश करना चाहिये अगर अपनी कोशिश के बाद हक़ीक़त में ऐसा शख़्स मिल गया तो 'नुरून अला नूर' है और दोहरा अज्र है, एक कोशिश का, दूसरा हक़ीक़ी मसरफ़ का, और अगर कोशिश के बाद अपनी तहक़ीक़ के मुवाफ़िक़ तो इन औसाफ़ के मुत्तसिफ़ ही पर ख़र्च किया था और वह दर हक़ीक़त ऐसा न था बल्कि उसकी मालूमात में ग़लती हो गयी तब भी उसको अपनी कोशिश का एक अज्र तो मिल ही गया कि इस एक अज्र में भी एक तो उसके नफ़्स का बुख़्ल से पाक होना है, दूसरे अल्लाह तआला की मुहब्बत का उसके दिल में ज़ोर से जगह पकड़ना है, और उसकी इताअत में अपनी कोशिश का होना है। और ये

तीनों सिफ़ात ऐसी हैं जो उसके दिल को क़वी करती हैं और दिल में अल्लाह तआला के मिलने का शौक़ पैदा करती हैं, लिहाज़ा ये मुनाफ़े तो बहरहाल हासिल हैं। और अगर दूसरा अज्र भी हासिल हो गया यानी सही मसरफ़ पर ख़र्च हो गया तो इसमें और मज़ीद फ़वाइद हासिल होंगे कि लेने वाले की दुआ और तवज्जोह उसको शामिल होगी, कि अल्लाह के नेक बंदों के दिलों की बड़ी तासीरात और बरकात दुनिया और आख़िरत दोनों के एतिबार से हासिल होती हैं। उनकी तवज्जोह और दुआ में अल्लाह तआला शानुहू ने बड़ी तासीर रखी है।[1]

मुहम्मद ज़करिया कांधलवी

मुक़ीम मदरसा मज़ाहिरे उलूम, सहारनपुर

1. एह्याउल उलूम, कुछ ज़्यादती और इख़्तिसार के साथ।

फ़ज़ाइले सदक़ात

(भाग 2)

शैखुल हदीस हज़रत
मौलाना मुहम्मद ज़करिया (रह०)

www.idaraimpex.com

विषय सूची

फ़ज़ाइले सदक़ात हिस्सा दोम

क्या?	कहां?

छठी फ़स्ल ज़ुहद व क़नाअत और सवाल न करने की तर्ग़ीब में

क्या?	कहाँ?

सातवीं फ़स्ल

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम
नह्मदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल् करीम॰

ज़ुहद व क़नाअ़त और सवाल न करने की तर्ग़ीब में

तालीफ़ के वक़्त यह सब एक ही रिसाला था, लेकिन तबाअत के वक़्त ज़ख़ामत के बढ़ जाने की वजह से छठी, सातवीं फ़स्ल को अलाहिदा करके हिस्सा दोम क़रार दे दिया कि पढ़ने वालों को इस में शायद सहूलत रहे।

क़नाअ़त की फ़ज़ीलत, मसाइब पर सब्र की तर्ग़ीब व ताकीद और सवाल करने की मज़म्मत, ये तीनों चीज़ें क़ुरआन पाक और अहादीस में इतनी कसरत से मुख़्तलिफ़ उन्वानात से, मुख़्तलिफ़ मज़ामीन से, मिसालों से, और तंबीहों से, अह्काम से और क़िस्सों से ज़िक्र की गई हैं कि उनको इजमालन और मुख़्तसरन ज़िक्र करना भी बड़ी तफ़्सील को चाहता है, जिनका इस मुख़्तसर रिसाले में इख़्तिसार से लिखना भी रिसाले के तवील हो जाने का सबब है, लेकिन मुख़्तसरन तो करना ही है।

यह मज़्मून दूसरी फ़स्ल के ख़त्म पर गुज़र चुका है कि माल में नफ़ा भी है, नुक़्सान भी है, और तिरयाक़[1] भी है, ज़हर भी है। हुज़ूर सल्ल॰ का पाक

1. अमृत।

इर्शाद है कि हर उम्मत के लिए एक फ़ित्ना होता है मेरी उम्मत का फ़ित्ना माल है, इस लिए इस फ़िले से और इसके ज़हर से अपने को महफ़ूज़ रखना बड़ी अहम चीज़ है, और यह सांप किसी के पास हो तो उस से तिरयाक़ बना लिया जाए तो अपने लिए भी मुफ़ीद है, दूसरों को भी फ़ायदा है, वर्ना इसका ज़हर अपने को भी हलाक करेगा, दूसरों को भी नुक़सान पहुँचायेगा। इसीलिए हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि यह माल सरसब्ज़ व शादाब और मीठी चीज़ है। अगर इसको हक़ के मुवाफ़िक़ (यानी शरअी ज़ाब्ते और तरीक़े के मुवाफ़िक़) हासिल करे और हक़ के मुवाफ़िक़ ख़र्च करे तो काम आने वाली मददगार चीज़ है और जो बग़ैर हक़ के हासिल करे, वह ऐसा है जैसा कि आदमी को "जूउल बक़र"[1] हो जाए कि आदमी खाता रहे और पेट न भरे। *(मिश्कात)*

इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि माल में नफ़ा भी है और नुक़सान भी है, इस की मिसाल सांप की सी है कि जो शख़्स उसका मन्तर जानता है वह सांप को पकड़ कर उसके दांत निकाल देता है,-फिर उस से तिरयाक़ तैयार करता है और उसको देख कर कोई ना वाक़िफ़ शख़्स उस को पकड़ ले तो वह सांप उस को काट लेगा और वह हलाक होगा और उसके ज़हर से वह शख़्स महफ़ूज़ रह सकता है जो पांच चीज़ों का एहतिमाम करे:-

1. यह ग़ौर करे कि माल का मक़सद क्या है? किस ग़रज़ से यह पैदा किया गया ताकि सिर्फ़ वही ग़रज़ उस से वाबस्ता रखी जाए।

2. माल के आने और हासिल करने के तरीक़ की सख़्ती से निगरानी करे, कहीं उसमें ना जायज़ तरीक़ा शामिल न हो जाए, मसलन ऐसा हदिया जिसमें रिश्वत का शायबा हो, ऐसा सवाल जिसमें ज़िल्लत का अन्देशा हो।

3. हाजत की मिक़्दार से ज़्यादा अपने पास न रहने दे, जितनी मिक़्दार की वाक़ई ज़रूरत है वह तो मजबूरी है, उस से ज़्यादा को फ़ौरन ख़र्च कर दे।

4. ख़र्च के तरीक़ की निगरानी करे, कहीं बे-महल ख़र्च न हो जाए नाजायज़ मौक़े पर ख़र्च न हो जाए।

5. माल की आमद में, ख़र्च में और बक़द्रे ज़रूरत रोकने में हर चीज़ में नियत ख़ालिस रहे, महज़ अल्लाह की रिज़ा मक़्सूद हो, जो रखे या इस्तेमाल में

---

1. एक बीमारी का नाम है जिसमें भूख ज़्यादा लगती है।

लावे, वह महज़ इस नियत से कि उस से अल्लाह की इताअत में क़ुव्वत हो, जो ज़रूरत से ज़ायद हो, उसको लग्व व बेकार समझ कर जल्द ख़र्च कर दे, उसको ज़लील समझ कर ख़र्च करे, वक़ीअ न समझे। इन शराइत के साथ माल का होना मुज़िर नहीं है। इसी लिए हज़रत अली रज़ि॰ का इर्शाद है कि अगर कोई शख़्स सारी दुनिया का माल महज़ अल्लाह तआला के वास्ते लेता है (अपनी ग़रज़ से नहीं), तो वह ज़ाहिद है और अगर बिल्कुल ज़रा सा भी नहीं लेता और यह न लेना अल्लाह के वास्ते नहीं है (बल्कि किसी दुन्यवी ग़रज़, हुब्बे जाह वग़ैरह की वजह से है) तो वह दुनियादार है। *(एहया)*

एक और हदीस में है कि यह माल सर सब्ज़ और मीठी चीज़ है जो उसको हक़ के मुवाफ़िक़ हासिल करता है उसके लिए उसमें बरकत दी जाती है। एक और हदीस में है कि दुनिया क्या ही अच्छा घर है उस शख़्स के लिए जो इसको आख़िरत का तोशा बनाए और हक़ तआला शानुहू को (इसके ज़रिये) राज़ी कर ले और कितना बुरा है उस शख़्स के लिए जिस को आख़िरत से रोक दे और अल्लाह तआला की रिज़ा में कोताही पैदा कर दे। *(कंज़)*

ग़रज़ बहुत सी रिवायात में यह मज़्मून वारिद हुआ है कि माल अपने आप में बुरी चीज़ नहीं है अच्छी चीज़ है, कारआमद है और बहुत से दीनी और दुन्यवी फ़वायद उसके साथ वाबस्ता हैं, इसीलिए रोज़ी के कमाने की माल के हासिल करने की तर्ग़ीबात भी अहादीसे में वारिद हुई हैं लेकिन चूंकि इसमें एक ज़हरीला और सम्मी माद्दा है और क़ुलूब आमतौर से बीमार हैं, इस लिए कसरत से क़ुरआन पाक की आयात और अहादीसे शरीफ़ा में इसकी ज़्यादती और कसरत से बचने की तर्ग़ीबें आई हैं। इसकी कसरत को ख़ास तौर से ग़ैर पसंदीदा बल्कि मुह्लिक बताया गया, इस लिए हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि अल्लाह जल्ल शानुहू जिस बन्दे से मुहब्बत फ़रमाते हैं दुनिया से उसकी ऐसी हिफ़ाज़त फ़रमाते हैं और उसको एहतिमाम से बचाते हैं जैसा कि तुम लोग अपने बीमार को पानी से बचाते हो। *(मिश्कात)*

हालांकि पानी कैसी अहम और ज़रूरी चीज़ है कि ज़िन्दगी का मदार ही इस पर है, बग़ैर इसके ज़िन्दगी नहीं रह सकती, लेकिन इस सबके बावजूद अगर हकीम किसी बीमार के लिए पानी को मुज़िर बता दे तो कितनी कितनी तरकीबें उसको पानी से रोकने की की जाती हैं और यह क्यों, इसलिए कि माल की कसरत से अमूमन नुक़्सानात ज़्यादा पहुँचते हैं और यह इस वजह से है कि हमारे

क़ुलूब ऐसे साफ़ नहीं हैं कि वे इसके नशे से मुतास्सिर न हों, इसी वजह से हुज़ूर सल्ल० का पाक इर्शाद है कि तुममें से कोई शख़्स ऐसा है कि जो पानी पर चले और उसके पांव पानी से तर न हों? सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! ऐसा तो कोई भी नहीं है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया यही हाल दुनियादार का है कि उसको गुनाहों से बचना मुश्किल है। *(मिश्कात)*

मुशाहदा भी यही है कि बुख़्ल, हसद, तकब्बुर, उज्ब, कीना, रिया, तफ़ाख़ुर वग़ैरह क़लबी अमराज़ और गुनाह जितने हैं वे माल की वजह से बहुत जल्द और बहुत कसरत से पैदा होते हैं। और इसी तरह आवारगी, शराबनोशी, क़ुमारबाज़ी, सूदख़ोरी वग़ैरह और मुख़्तलिफ़ क़िस्म के शहवानी गुनाह भी इस की वजह से बहुत कसरत से होते हैं, और फिर इसकी तबअी मुहब्बत क़ुलूब में इस दर्जा जगह पकड़े हुए है कि आदमी के पास जितना भी ज़्यादा से ज़्यादा हो जाए, उस पर हमेशा ज़्यादती का तालिब और उसका कोशां रहता है, चुनांचे मुतअद्दिद रिवायात में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है, अगर आदमी के पास दो जंगल सोने के हों तो वह तीसरे का तालिब होता है और दुनिया का मुशाहदा और तजुर्बा है कि कोई शख़्स किसी मिक़्दार पर भी क़नाअत करने वाला नहीं है। इल्ला माशा अल्लाह। इसी वजह से क़ुरआन पाक और अहादीस में कसरत से क़नाअत की तर्ग़ीबात दी गयी हैं। कि यह "जूउल बक़र" कुछ कम हो। इसी वजह से दुनिया की हक़ीक़त और उसकी गन्दगी और ना पायदारी वाज़ेह की गयी कि इससे मुहब्बत में कमी हो कि जो चीज़ बहरहाल बहुत जल्द ज़ाया होने वाली है उससे आदमी क्या दिल लगाए, दिल लगाने की चीज़ सिर्फ़ वही है जो हमेशा रहने वाली और हमेशा काम आने वाली हो। और इसी वजह से सब्र की ताकीद और तर्ग़ीब कसरत से वारिद हुई कि आदमी उसकी कमी को मुतलक़न मुसीबत न समझे, बल्कि उसमें भी बसा औक़ात अल्लाह की बड़ी हिक्मतें मुज़्मर (छिपी) होती हैं। अल्लाह तआला का पाक इर्शाद है-

وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ (شوریٰ ع ۳)

व लौ ब-स-तल्लाहुर्रिज़्-क लि अिबादि-ही० (आयत)

(शूरा, रुकूअ 3)

अगर अल्लाह तआला अपने बंदों में रिज़्क़ की ज़्यादती, वुसअत फ़रमा दे तो वे ज़मीन में सरकशी शुरू कर दें, चुनांचे तजुर्बा भी यही है कि जहां इसकी

कसरत है वहीं हद से ज़्यादा फ़सादात हैं, और चूंकि इस की फ़रावानी मक़सूद नहीं और लोगों के दिल इसकी तरफ़ तबअन मुतवज्जह होते हैं इसी वजह से सवाल करने की मुमानअत, उसकी क़बाहत (बुराई) कसरत से ज़िक्र की गयी, कि आदमी माल की मुहब्बत और कसरत की फ़िक्र में बिला मजबूरी भी सवाल करने लगता है कि इसमें मेहनत तो कुछ करनी नहीं पड़ती, ज़रा सी ज़बान हिलाने से कुछ न कुछ मिल ही जाता है जिससे माल में इज़ाफ़ा हो जाता है। इन्हीं तीन मज़ामीन क़नाअत, मसाइब पर सब्र और सवाल की मज़म्मत के मुताल्लिक़ कुछ आयात और कुछ अहादीस इस जगह लिखी जाती हैं :

आयात

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْاَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ط ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ج وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبِo قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَاَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ د وَاللّٰهُ بَصِيْرٌ ۢ بِالْعِبَادِo اَلَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ o اَلصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْاَسْحَارِo (ال عمران ع ٢)

तर्जुमा:- आरास्ता कर दी गई लोगों के लिए ख़्वाहिशात की मुहब्बत (मसलन) औरतें हुईं, और बेटे हुए और ढेर लगे हुए सोने और चांदी के, और निशान लगे हुए (यानी उम्दा और आला) घोड़े और दूसरे मवेशी और ज़राअत (लेकिन ये सब चीज़ें) दुन्यवी ज़िन्दगी की इस्तेमाली चीज़ें हैं और अंजामकार की ख़ूबी (और काम आने वाली चीज़ तो) अल्लाह ही के पास है (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तुम उनसे कह दो क्या मैं तुम को ऐसी चीज़ बता दूँ जो (बदरजहा) बेहतर हो। इन सब चीज़ों से (वह क्या है ग़ौर से सुनो) ऐसे लोगों के लिए जो अल्लाह तआला से डरते हैं उनके रब के पास ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं उनमें वे लोग हमेशा रहेंगे, और उनके लिए वहां ऐसी बीवियां हैं जो हर तरह पाक साफ़ सुथरी हैं और (इन सबसे बढ़ कर

चीज़) अल्लाह की ख़ुश्नूदी है और अल्लाह तआला बन्दों (के अह्वाल) को ख़ूब देखने वाले हैं (ये लोग जिनके लिए यह आख़िरत की चीज़ें हैं ऐसे लोग हैं) जो कहते हैं कि ऐ हमारे परवरदिगार! हम ईमान ले आये हैं पस आप हमारे गुनाहों को माफ़ कर दीजिए और हमको जहन्नम के अज़ाब से बचा दीजिए। ये लोग (वे हैं जो मुसीबतों पर) सब्र करने वाले हैं, सच बोलने वाले हैं (अल्लाह तआला के सामने) आजिज़ी करने वाले हैं और (नेक कामों में माल) ख़र्च करने वाले हैं और पिछली रात में गुनाहों की माफ़ी चाहने वाले हैं। *(आले इमरान, रूकूअ् 2)*

फ़ायदा – हक़ तआला शानुहू ने इन सब चीज़ों की मुहब्बत को शहवतों की मुहब्बत से ताबीर किया है। इमाम ग़ज़ाली रह॰ फ़रमाते हैं कि शहवत की इफ़रात ही का नाम इश्क़ है जो बीमारी है ऐसे दिल की जो तफ़क्कुरात से ख़ाली हो। उसका इलाज इब्तिदा ही से करना ज़रूरी है कि उसकी तरफ़ नज़र कम कर दे, उसकी तरफ़ इल्तिफ़ात कम कर दे, वर्ना जब इल्तिफ़ात बढ़ जायेगा तो हटाना मुश्किल हो जाएगा। और इब्तिदा में बहुत सह्ल है। यही हाल है हर चीज़ के इश्क़ का, माल हो, जाह हो, जायदाद हो, औलाद हो, हत्ता की परिंदों (कबूतर वग़ैरह) से खेलने का और शतरंज वग़ैरह से खेलने का भी यही हाल है, कि ये सब चीज़ें जब आदमी पर मुसल्लत हो जाती हैं तो उसकी दीन और दुनिया दोनों को बर्बाद कर देती हैं। इसकी मिसाल ऐसी है कि कोई शख़्स सवारी पर सवार है, अगर वह जानवर की बाग़ उसी वक़्त दूसरी तरफ़ फेर दे, जब वह बे-जगह जाने का रूख़ कर रहा हो तो उस वक़्त बहुत आसानी से वह जगह पर पड़ सकता है, लेकिन जब वह जानवर किसी दरवाज़े में घुस जाए और सवार फिर दुम पकड़ कर पीछे खीचना चाहे तो फिर बड़ी सख़्त दुश्वारी हो जाती है। इसलिए इन सब चीज़ों की मुहब्बत को इब्तिदा ही से निगाह में रखे, कि ऐतिदाल से न बढ़ने दे। *(एह्या)*

उलमा ने फ़रमाया है कि दुनिया की जितनी भी चीज़ें हैं वे तीन क़िस्म में दाख़िल हैं, मादनियात, नबातात, हैवानात। हक़ तआला शानुहू ने इन आयात में तीनों की मिसालें ज़िक्र फ़रमा कर दुनिया की सारी ही चीज़ों पर मुतनब्बह फ़रमा दिया। बीवियों और बेटों को ज़िक्र फ़रमा कर आल व औलाद, अज़ीज़ व अक़ारिब, अहबाब, ग़रज़ इंसानी महबूबों पर तंबीह फ़रमा दी और सोने चांदी को ज़िक्र फ़रमा कर सारी मादनियात पर, घोड़े, मवेशी को ज़िक्र फ़रमा कर हर

क़िस्म के जानवरों पर और खेती से हर क़िस्म की पैदावार पर और यही चीज़ें सारी दुनिया की कायनात में हैं। *(एह्या)*

सबको गिनवाकर उन पर तंबीह फ़रमा कर इर्शाद फ़रमा दिया कि ये सब की सब इस चंद रोज़ा ज़िन्दगी के गुज़रान की चीज़ें हैं, इनमें से कोई चीज़ भी मुहब्बत के क़ाबिल नहीं, दिल लगाने के क़ाबिल नहीं, दिल लगाने की चीज़ें सिर्फ़ वही हैं जो पायदार हैं, हमेशा रहने वाली हैं, हमेशा काम आने वाली हैं, और उनमें सबसे बढ़कर अल्लाह की रिज़ा है, उसकी ख़ुश्नूदी है। वह दुनिया और आख़िरत की हर चीज़ पर फ़ाइक़ है, हर चीज़ से बढ़कर है। दूसरी जगह जन्नत की नेमतों का ज़िक्र फ़रमा कर इर्शाद है:-

وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللهِ اَكْبَرُ ط ذٰلِكَ هُوَالْفَوْزُ الْعَظِيْمُ○ (توبه ع ١٠)

व रिज़्वानुम् मिनल्लाहि अक्बर॰ ज़ालि-क हुवल् फ़ौज़ुल्अज़ीम॰
(तौबा, रूकूअ् 10)

कि अल्लाह तआला की रज़ामंदी उन सब चीज़ों से बढ़ी हुई है और वही चीज़ है जो बड़ी कामियाबी है और हक़ीक़त भी यही है कि अल्लाह तआला की रज़ामंदी की बराबरी न दुनिया की कोई चीज़ कर सकती है न आख़िरत की कोई नेमत उसके बराबर है। आयते बाला में दुनिया की सारी मरग़ूबात को तफ़्सील से ज़िक्र फ़रमा कर इस पर मुतनब्बह कर दिया कि ये सब महज़ दुन्यवी ज़िन्दगी के अस्बाब हैं, और फिर बार बार क़ुरआन पाक में इस चीज़ पर तंबीह फ़रमायी गई, मुख़्तलिफ़ उन्वानात से नसीहत की गयी, कहीं दुनिया की तलबी की मज़म्मत की गयी, कहीं दुनिया को तरजीह देने वालों की क़बाहत बयान की गयी, कहीं उस की बे सबाती पर तंबीह की गयी, कहीं उसको महज़ धोखा बताया गया, ताकि इस हक़ीक़त को अच्छी तरह ज़ेहन नशीन कर लिया जाए कि दुनिया और दुनिया की हर चीज़ महज़ आरज़ी, महज़ ज़रूरत पूरा करने की चीज़ है, न यह दायमी है, न दिल लगाने की चीज़ है। इसी सिलसिले की चंद आयात पर इस जगह तंबीह करता हूँ :-

(١) اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ز فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَاهُمْ يُنْصَرُوْنَ○(بقره ع ١٠)

1. यही लोग हैं जिन्होंने दुनिया की ज़िन्दगी को आख़िरत के बदले में ख़रीद लिया, पस न तो उनके अज़ाब में तख़्फ़ीफ़ की जायेगी, न

उनकी किसी क़िस्म की मदद की जाएगी।

(٢) فَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا وَمَالَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا ۔ (بقرہ ع ٢٥)

2. पस कुछ आदमी तो ऐसे हैं जो यों कहते हैं कि ऐ हमारे रब! हमें तो जो कुछ देना है दुनिया ही में दे दे। (पस उनको तो जो कुछ मिलना होगा दुनिया ही में मिल जाएगा) उनके लिए आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं है। और बाज़ लोग यों कहते हैं कि ऐ अल्लाह, हमको दुनिया में भी भलाई अता फ़रमा, और आख़िरत में भी भलाई अता फ़रमा और हमें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा ले, यही लोग हैं जिनके लिए हिस्सा है उस चीज़ से जो उन्होंने (नेक आमाल से) कमाया है।

(٣) وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِىْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ۔ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌ بِالْعِبَادِ
(بقرہ ع ٢٥)

3. और बाज़ आदमी बेच देते हैं अपनी जान को अल्लाह की रिज़ा की चीज़ों में, अल्लाह तआला ऐसे बंदो पर मेहरबान हैं।

(٤) زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُوْنَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا م وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۔ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ (بقرہ ع ٢٦)

4. दुन्यवी मआश कुफ़्फ़ार के लिए आरास्ता कर दी गयी और वे मुसलमानों के साथ तमस्ख़ुर करते हैं हालांकि ये मुसलमान जो कुफ़्र व शिर्क से बचते हैं, क़ियामत के दिन उन काफ़िरों से (दर्जों में) बुलंद होंगे और (आदमी को महज़ फ़राग़े मआशत पर ग़ुरूर न करना चाहिए क्योंकि) रोज़ी तो अल्लाह तआला जिसको चाहते हैं, बे हिसाब दे देते हैं। (इसलिए महज़ अमीर होना कोई फ़ख़्र की चीज़ नहीं है।)

(٥) وَتِلْكَ الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ج (ال عمران ع ١٤)

5. और ये (दुनिया की ज़िन्दगी के) दिन उनको हम लोगों के दर्मियान अदलते बदलते रहते हैं। (यानी कभी एक क़ौम ग़ालिब हो गयी, कभी दूसरी ग़ालिब हो गयी) इसलिए ग़ालिब या मग़लूब होने की फ़िक्र से ज़्यादा अहम और ज़्यादा ज़रूरी आख़िरत की फ़िक्र है।

(٦) قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيلٌ ج وَالْآخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقَى قف وَلَا تُظْلَمُونَ فَتِيلًا ○ أَيْنَ مَا تَكُونُوا يُدْرِككُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنتُمْ فِي بُرُوجٍ مُّشَيَّدَةٍ ط (نساء ع ١١)

6. आप कह दीजिए कि दुनिया का तमत्तोअ बहुत थोड़ा (चंद रोज़ा है) और आख़िरत हर तरह से बेहतर है उस शख़्स के लिए जो अल्लाह तआला से डरता हो और तुम पर ज़र्रा बराबर भी ज़ुल्म न किया जाएगा। तुम चाहे कहीं भी हो, वहां ही मौत आकर रहेगी, अगरचे तुम क़लई चूना के क़िलों ही में क्यों न हो (फिर जब मरना बहरहाल है तो उसकी फ़िक्र हर वक़्त रहना चाहिए)

(٧) وَلَا تَقُولُوا لِمَنْ أَلْقَى إِلَيْكُمُ السَّلَمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا ج تَبْتَغُونَ عَرَضَ الْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا ز فَعِندَ اللَّهِ مَغَانِمُ كَثِيرَةٌ ط (نساء ع ١٣)

7. और ऐसे शख़्स को जो तुम्हारे सामने इताअत (की अलामत) डाल दे (मसलन अस्सलामु अलैकुम करे या कलिमा पढ़े) यों मत कह दिया करो कि तू (दिल से) मुसलमान नहीं, तुम दुन्यावी ज़िन्दगी का सामान ढूढँते हो, हालांकि अल्लाह तआला के पास बहुत से ग़नीमत के माल हैं। *(सूरः निसा, रूकूअ 13)*

फ़ायदा – ये आयतें इस पर तंबीह हैं कि बाज़ मुसलमानों ने बाज़ काफ़िरों को जो अपने को मुसलमान बताते थे माले ग़नीमत के शौक़ में क़त्ल कर दिया था, इस पर ये आयतें नाज़िल हुईं कि महज़ दुनिया कमबख़्त का माल कमाने के लिए यह नापाक हरकत की गयी। बहुत सी अहादीस में इन वाक़िआत को तफ़्सील से ज़िक्र किया गया। एक हदीस में यह भी आया है कि एक मुसलमान ने एक काफ़िर पर हमला किया, उसने जल्दी से कलिमा पढ़ लिया, उस मुसलमान ने फिर भी उसको क़त्ल कर दिया। हुज़ूर सल्ल० को जब इसकी

इत्तिला हुई तो हुज़ूर सल्ल॰ ने उस मुसलमान से मुतालबा किया। उसने ये माज़िरत की कि उस शख़्स ने महज़ डर की वजह से कलिमा पढ़ा था। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि तूने उसके दिल को चीर कर देख लिया था कि उसने डर की वजह से पढ़ा है? इसके बाद उस मुसलमान की मौत बहुत बुरी तरह से हुई।
(दुर्रे मंसूर)

हक़ तआला शानुहू ने हुदूद से तजावुज़ की इजाज़त किसी जगह नहीं दी, दूसरा मज़्मून शुरू हो जाएगा इसलिए इसको नहीं लिखता, लेकिन महज़ दुन्यवी अग़राज़ की वजह से कुफ़्फ़ार पर ज़्यादती की भी शरीअत हरगिज़ इजाज़त नहीं देती। बहुत सी आयात, बहुत सी रिवायात इस मज़्मून में वारिद हैं। सूरः माइदः के शुरू में हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है :-

لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ (مائده ع ۲)

'ला यज्रिमन्न-कुम शन-आनु क़ौमिन्'

(आयत, माइद: रूकूअ 2)

'यानी कुफ़्फ़ारे मक्का ने जो तुम को हुदैबिया के उमरः के मौक़े पर मक्का में दाख़िल होने से रोक दिया और बग़ैर उमरः के तुमको मक्का मुकर्रमा के क़रीब से नाकाम वापस होना पड़ा, इसका ग़ुस्सा तुम को हुदूद से न निकलने दे, ऐसा हरगिज़ न हो कि तुम तअद्दी करने लगो, नेकी और तक़्वे में एक दूसरे की इआनत करो और गुनाह और ज़ुल्म में किसी की इआनत (मदद) न करो।' इस सूर-ए-शरीफ़ के दूसरे रूकूअ में इर्शाद है:-

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ

'या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कूनू क़व्वामी-न॰'

(आयत, माइद:, रूकूअ् 2)

'ऐ मुसलमानों, तुम अल्लाह तआला की ख़ुश्नूदी के लिए उसके अहकाम की पूरी पाबन्दी करने वाले बनो और (कहीं नौबत आ जाए तो) गवाही इंसाफ़ के साथ दो। किसी क़ौम के साथ अदावत तुमको अदल व इंसाफ़ से न हटावे। ग़रज़ बहुत सी जगह इन उमूर पर तंबीह की गयी, दुनिया की मुहब्बत आदमी की अक़्ल को भी बेकार कर देती है।

(۸) وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ط وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ط اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ○ (انعام ع ٤)

8. और दुन्यवी ज़िन्दगानी कुछ भी नहीं है सिवाए लअिब व लह्व के, और आख़िरत का घर मुत्तक़ियों के लिए बेहतर है, क्या तुम्हें अक़्ल नहीं है (जो ऐसी साफ़ वाज़ेह बात तुम्हारी समझ में नहीं आती कि दुनिया के इस लह्व व लअिब को आख़िरत की उम्दा ज़िन्दगी से कुछ भी मुनासबत नहीं है।) *(सूरः अनआम रूकूअ 4)*

(۹) وَذَرِ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّلَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا (انعام ع ۸)

9. ऐसे लोगों से बिलकुल किनारा कश (यक्सू और अलाहिदा) रहो, जिन्होंने अपने दीन को लह्व व लअिब बना रखा है और दुन्यवी ज़िन्दगी ने उनको धोखे में डाल रखा है। *(अनआम रूकूअ 8)*

(۱۰) وَلَقَدْ جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّتَرَكْتُمْ مَّا خَوَّلْنٰكُمْ وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ ج (انعام ع ۱۱)

10. और तुम हमारे पास (मरने के बाद) तंहा तंहा होकर आ गए, जिस तरह हमने तुमको दुनिया में अव्वल मर्तबा पैदा किया था (कि हर शख़्स अलग अलग पैदा होता था) और जो कुछ हमने तुमको (दुनिया में माल व मताअ, साज़ व सामान) अता किया था, उसको वहीं छोड़ आए। *(सूरः अनआम, रूकूअ 11)*

फ़ायदा – यानी जिस तरह आदमी मां के पेट से बग़ैर माल व मताअ पैदा होता है, उसी तरह क़ब्र की गोद में तने तन्हा जाता है। यह सब कुछ माल व मताअ यहां का यहां ही रह जाएगा, बजुज़ (सिवाए) उसके जो अल्लाह तआला के यहां अपनी ज़िन्दगी में जमा करा दिया हो कि वह सब जमा शुदा माल वहां पूरा का पूरा मिल जायेगा, बल्कि सरकारी ख़ज़ाने से उसमें इज़ाफ़ा भी मिलेगा।

(۱۱) وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا (اعراف ع ۱٦)

11. और दुनिया की ज़िन्दगी ने उनको धोखे में डाल रखा है। *(अअ्राफ़; रूकूअ 16)*

(۱۲) فَخَلَفَ مِنْ ۢبَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ (اعراف ع ۲۱)

12. पस (नेक बंदों के बाद) ऐसे लोग उनके जा नशीन हुए कि किताब को तो उनसे हासिल किया (लेकिन ऐसे हराम ख़ोर हैं कि किताब के अहकाम के बदले में) इस दुनिया-ए-दनी का माल व मताअ ले लेते हैं और कहते हैं कि हमारी ज़रूर मग़्फ़िरत हो जायेगी, (क्योंकि हम अल्लाह के लाडले हैं।)

(١٣)وَالدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ط اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ o (اعراف ع ٢١)

13. और आख़िरत का घर बेहतर है मुत्तक़ी लोगों के वास्ते, क्या तुम बिल्कुल अक़्ल नहीं रखते (जो ऐसी खुली हुई साफ बात भी नहीं समझते।) *(आराफ़, रूकूअ 21)*

(١٤) وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ o (انفال ع ٣)

14. तुम इस बात को जान रखो कि तुम्हारे अमवाल और तुम्हारी औलाद एक इम्तिहान की चीज़ है (ताकि हम इसका इम्तिहान करें कि कौन शख़्स उनकी मुहब्बत को तर्जीह देता है और कौन शख़्स अल्लाह तआला की मुहब्बत को तर्जीह देता है और इस बात को भी जान रखो कि जो शख़्स अल्लाह तआला की मुहब्बत को तर्जीह देता है, दुनिया की ज़िन्दगी को आख़िरत की ज़िन्दगी के लिए कारआमद बनाता है उसके लिए) अल्लाह तआला के पास बहुत बड़ा अज्र है। *(अल अन्फ़ाल, रूकूअ 3)*

(١٥) تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا وَاللّٰهُ يُرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ط (انفال ع ٩)

15. तुम तो दुनिया का माल व अस्बाब चाहते हो और अल्लाह तआला शानुहू (तुम से) आख़िरत को चाहते हैं यानी यह कि तुम आख़िरत की फ़िक्र में रहो, उसकी तैयारी में हर वक़्त मश्ग़ूल रहो।

(सूरः अल अन्फ़ाल, रूकूअ 9)

(١٦) اَرَضِيْتُمْ بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا مِنَ الْاٰخِرَةِ ج فَمَا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا قَلِيْلٌ o (توبه ع٦)

16. क्या तुम लोग आख़िरत की ज़िन्दगी के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िन्दगी पर राज़ी हो गये, दुनिया की ज़िन्दगी तो आख़िरत के

मुक़ाबले में कुछ भी नहीं है।

(तौबा, रूकूअ 6)

(١٧) اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا وَرَضُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَاطْمَاَنُّوْا بِهَا وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا غٰفِلُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝ (یونس ع ١)

17. जिन लोगों को हमारे पास आने की उम्मीद नहीं है और दुनियावी ज़िंदगी पर राज़ी हो गये और उससे उनको इत्मीनान हासिल हो गया और जो लोग हमारी तंबीहों से ग़ाफ़िल हो गये हैं, ऐसे लोगों का ठिकाना उनके आमाल की वजह से जहन्नम है।

(सूर: यूनुस, रूकूअ 1)

(١٨) يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ لا مَّتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ز ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ اِنَّمَا مَثَلُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ مِمَّا يَاْكُلُ النَّاسُ وَالْاَنْعَامُ ط حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذَتِ الْاَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ اَهْلُهَآ اَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ عَلَيْهَآ لا اَتٰهَآ اَمْرُنَا لَيْلًا اَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنٰهَا حَصِيْدًا كَاَنْ لَّمْ تَغْنَ بِالْاَمْسِ ط كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝ وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ط وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝ (یونس ع ٣)

18. ऐ लोगो, सुन लो, यह तुम्हारी सरकशी तुम्हारे लिए वबाल होने वाली है। दुन्यवी ज़िन्दगी में (चंद रोज़ उससे) नफ़ा उठा रहे हो, फिर हमारे पास तुमको आना है, फिर हम सब तुम्हारा किया हुआ तुमको जतला देंगे। पस दुनियावी ज़िन्दगी की हालत तो ऐसी है जैसे हमने आसमान से पानी बरसाया, फिर उस पानी से ज़मीन के नबातात (ज़मीन से उगने वाली चीज़ें) जिनको आदमी और जानवर खाते हैं, ख़ूब गुंजान होकर निकले, यहां तक कि जब ज़मीन अपनी रौनक़ का पूरा हिस्सा ले चुकी और उसकी ख़ूब ज़ेबाइश हो गयी (यानी पैदावार, सब्ज़ा वग़ैरह ख़ूब शबाब पर हो गया) और उसके मालिकों ने समझ लिया कि हम इस पैदावार पर बिल्कुल क़ाबिज़ हो चुके हैं तो एकदम उस पैदावार पर हमारी तरफ़ से दिन में या रात में कोई हादसा पड़ा (पाला, टिड्डी वग़ैरह), पस हमने उसको ऐसा साफ़ कर दिया कि गोया वह कल यहां मौजूद ही न थी (यही हालत बि-ऐनिही इस दुनिया की ज़िन्दगी और इसकी रौनक़ और ज़ेब व ज़ीनत की है कि वह अपने पूरे शबाब और

कामिल ज़ेब व ज़ीनत के बावजूद दम के दम में ऐसी ज़ायल हो जाती है कि गोया थी ही नहीं) इसी तरह हम आयात को साफ़ साफ़ बयान करते हैं उन लोगों के (समझाने के) लिए जो सोचते हैं और जो सोचने का इरादा नहीं करता, वह क्या समझे, और (जब दुनिया की और उसकी ज़ेब व ज़ीनत की यह हालत है कि ना-पायदार और ख़तरे की चीज़ है। बस इसीलिए हक़ तआला शानुहू तुमको दारूलबक़ा (जो घर पायदार है और उसको कोई ख़तरा नहीं है) की तरफ़ बुलाता है और जिसको चाहता है राहे रास्त पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा देता है।

(सूरः यूनुस, रूकूअ 3)

(١٩) قُلْ بِفَضْلِ اللهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ط هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ○

(يونس ع ٦)

19. (पहले से क़ुरआन पाक की ख़ूबियां बयान फ़रमाने के बाद इर्शाद है) आप कह दीजिए (कि जब क़ुरआन पाक ऐसी चीज़ है) पस लोगों को ख़ुदा के इनाम और रहमत पर ख़ुश होना चाहिए कि (उसने इतनी बड़ी दौलत हमको अता फ़रमाई) वह इस (दुनिया से बदरजहा) बेहतर है जिसको ये लोग जमा कर रहे हैं (इसी लिए कि दुनिया का नफ़ा बहुत थोड़ा और बहुत जल्द ज़ायल हो जाने वाला है।) और क़ुरआन पाक का नफ़ा बहुत ज़्यादा और हमेशा रहने वाला है। *(यूनुस, रूकूअ 6)*

(٢٠) مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ○ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ صلے وَحَبِطَ مَاصَنَعُوْا فِيْهَا وَبٰطِلٌ مَّاكَانُوْا يَعْمَلُوْنَ○(هود ع ٢)

20. जो शख़्स (अपने नेक आमाल से) दुनियावी, ज़िन्दगी और उसकी रौनक़ चाहता है (जैसे माल व मताअ व शोहरत, नेक नामी वग़ैरह) हम उन लोगों के आमाल (का बदला) उनको दुनिया ही में पूरे तौर से भुगता देते हैं और उनके लिए दुनिया में कुछ कमी नहीं होती, यही लोग हैं जिनके लिए आख़िरत में बजुज़ (अलावा) दोज़ख़ के और कुछ नहीं है, और उन्होंने जो कुछ किया था, वह आख़िरत में सब का सब बेकार साबित होगा और (हक़ीक़त में) ये जो कुछ कर रहे हैं सब बातिल

(बेकार) है। (हूद, रूकूअ 2)

(۲۱) اَللّٰہُ یَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ یَّشَآءُ وَیَقْدِرُ ط وَفَرِحُوْا بِالْحَیٰوۃِ الدُّنْیَا ط وَمَا الْحَیٰوۃُ الدُّنْیَا فِی الْاٰخِرَۃِ اِلَّا مَتَاعٌ o (رعد ع ۳)

21. अल्लाह तआला जिसको चाहता है ज़्यादा रोज़ी देता है और जिसको चाहता है तंगी कर देता है (रहमत और ग़ज़ब का यह मदार नहीं है। ये लोग दुन्यवी ज़िन्दगी पर खुश होते हैं और उसके ऐश व इशरत, राहत व आराम पर इतराते हैं) हालांकि आख़िरत के मुक़ाबले में दुनियावी ज़िन्दगी एक मताअे क़लील है (कुछ भी नहीं है, चंद रोज़ा ज़िन्दगी के दिन काटने हैं, जिस तरह भी गुज़र जायें।) *(सूरः रअ़द रूकूअ 3)*

(۲۲) لَا تَمُدَّنَّ عَیْنَیْکَ اِلٰی مَا مَتَّعْنَا بِہٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْھُمْ (حجر ع ٦)

22. आप अपनी आंख उठाकर भी न देखें उस (ज़ेब व ज़ीनत और माल व मताअ़, राहत व आराम) को जो हमने मुख़्तलिफ़ क़िस्म के काफ़िरों को (अह्ले किताब हों या मुश्रिकीन) दे रखा है, बरतने के लिए (कि चंद रोज़ के फ़वाइद इससे उठा लें और फिर यह सब कुछ फ़ना हो जायेगा।) *(हिज्र, रूकूअ 6)*

(۲۳) مَا عِنْدَکُمْ یَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللّٰہِ بَاقٍ ط (نحل ع ۱۳)

23. जो कुछ तुम्हारे पास (दुनिया में) है वह (एक दिन) ख़त्म हो जाएगा (ख़्वाह वह जाता रहे या तुम मर जाओ, दोनों हाल में ख़त्म होगा) और जो अल्लाह तआला के पास है वह हमेशा बाक़ी रहने वाली चीज़ है।

(۲٤) ذٰلِکَ بِاَنَّھُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَیٰوۃَ الدُّنْیَا عَلَی الْاٰخِرَۃِ (نحل ع ۱٤)

24. यह (जो अज़ाब ऊपर की आयात में ज़िक्र किया गया) इस वजह से है कि उन लोगों ने दुनियावी ज़िन्दगी को आख़िरत के मुक़ाबले में महबूब रखा। *(नह्ल, रूकूअ 14)*

(۲٥) مَنْ کَانَ یُرِیْدُ الْعَاجِلَۃَ عَجَّلْنَا لَہٗ فِیْھَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِیْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَہٗ جَھَنَّمَ یَصْلٰھَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا o وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَۃَ وَسَعٰی لَھَا سَعْیَھَا

وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ كَانَ سَعْيُهُم مَّشْكُورًا ○ كُلًّا نُّمِدُّ هَٰؤُلَاءِ وَهَٰؤُلَاءِ مِنْ عَطَاءِ رَبِّكَ ۚ وَمَا كَانَ عَطَاءُ رَبِّكَ مَحْظُورًا ○ انظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ وَلَلْآخِرَةُ أَكْبَرُ دَرَجَاتٍ وَأَكْبَرُ تَفْضِيلًا ○ (بنی اسرآئیل ع ۲)

25. जो शख़्स दुनिया का इरादा करता है (और अपनी कोशिश और आमाल का समरा सिर्फ़ दुनिया ही में चाहता है) हम उसको दुनिया में जितना चाहते हैं और जिसको चाहते हैं देते हैं (न यह ज़रूरी है कि हर शख़्स को दे दें, जिसको हमारा दिल चाहता है देते हैं और जिसको देते हैं उसको भी यह ज़रूरी नहीं कि जितना मांगे वह सब दे दें, जितना हमारा दिल चाहता है देते हैं) फिर आख़िरत में उसके लिए जहन्नम तजवीज़ कर देते हैं कि वह उसमें बदहाल रांदा होकर जलता रहेगा, और जो शख़्स आख़िरत का इरादा करे और उसके लिए जैसी कोशिश करनी चाहिए करे, बशर्ते कि वह मोमिन हो। ऐसे लोगों की कोशिश अल्लाह के यहां मक़्बूल है। हर फ़रीक़ की (दुनियादार हो या दीनदार) आपके रब की अता में से हम मदद करते हैं और आपके रब की (यह दुनियावी अता) किसी से भी बंद नहीं की गयी। आप ख़ुद ही देख लें कि इस दुनियावी अता में हमने एक को दूसरे पर (ख़्वाह वह मुसलमान हो या काफ़िर) कैसी फ़ौक़ियत दे रखी है। (आप इससे ख़ुद ही अंदाज़ा कर लेंगे कि अता किसी और की तरफ़ से है, कि एक शख़्स को कोशिश से भी बहुत कम मिलता है और दूसरा बग़ैर कोशिश के भी बहुत कुछ हासिल कर लेता है, और आख़िरत (जो मख़्सूस है ईमान के साथ इस दुनिया से) दर्जों के एतिबार से बहुत बड़ी है और फ़ज़ीलत के एतिबार से भी बढ़ी हुई है। *(सूर: बनी इस्राईल, रूकूअ 2)*

(۲٦) وَاضْرِبْ لَهُم مَّثَلَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ أَنزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ فَأَصْبَحَ هَشِيمًا تَذْرُوهُ الرِّيَاحُ ۗ وَكَانَ اللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا ○ الْمَالُ وَالْبَنُونَ زِينَةُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۖ وَالْبَاقِيَاتُ الصَّالِحَاتُ خَيْرٌ عِندَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَخَيْرٌ أَمَلًا ○ (کہف ع ٦)

26. आप उन लोगों से दुन्यवी ज़िन्दगी की मिसाल बयान कीजिए, वह ऐसी है जैसा कि हमने आसमान से पानी बरसाया हो, फिर

उसकी वजह से ज़मीन के नबातात (पैदावार) ख़ूब गुंजान हो गए हों, फ़िर (ख़ूब सरसब्ज़ व शादाब होकर एक दम किसी हादसे में ख़ुश्क होकर) रेज़ा रेज़ा हो जाए कि उसको हवा उड़ाये उड़ाये फिरती हो बिल्कुल यही हालत दुनियावी, ज़िन्दगी उसकी ऐश व इशरत और माल व मताअ की है कि आज सब कुछ है और एकदम कोई मुसीबत आ जाए तो कुछ भी न रहा, और अब तो ज़माना इसको अपनी आंखों से ख़ूब ही देख रहा है) और अल्लाह तआला हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता है। (जब चाहे जिसको चाहे अमीर बना दे, जिसको चाहे लखपती से फ़क़ीर बना दे, जिसको चाहे साहबे औलाद कर दे और जिसको चाहे बड़ी औलाद और कुंबा वाला होने पर दम के दम में अकेला कर दे, तो यह समझ लो कि) माल और औलाद दुन्यावी ज़िन्दगी की सिर्फ़ एक रौनक़ हैं, और जो नेक आमाल हमेशा बाक़ी रहने वाले हैं, वे सवाब और बदले के एतिबार से भी (बदरजहा) बेहतर हैं और उम्मीद के एतिबार से भी बेहतर हैं (कि उनकी ही उम्मीदें लगानी चाहियें और उन उम्मीदों के पूरा होने की कोशिश करना चाहिए।) *(सूरः कहफ़, रूकूअ 6)*

(۲۷) يَتَخَافَتُونَ بَيْنَهُمْ إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا عَشْرًا ٥ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ إِذْ يَقُولُ أَمْثَلُهُمْ طَرِيقَةً إِنْ لَبِثْتُمْ إِلَّا يَوْمًا ٥ (طٰهٰ ع ٥)

27. (ऊपर की आयात में क़ियामत के आने का और सूर फूँके जाने का ज़िक्र है, उस दिन ये मुजरिम लोग) चुपके चुपके आपस में बातें करते होंगे (और एक दूसरे से कहते होंगे कि तुम लोग (दुनिया में) सिर्फ़ दस दिन रहे होगे, जिस बात को वे कहेंगे हम उस को ख़ूब जानते हैं, जबकि उनमें ज़्यादा साइबुर्राय (सही राय वाला) कहेगा कि नहीं तुम एक ही दिन रहे हो (उसको ज़्यादा साइबुर्राय उनमें का इसलिए कहा कि उसका क़ौल एक दिन का बमुक़ाबला दस दिन के ज़्यादा क़रीब है, वैसे तो आख़िरत के दिनों के एतिबार से दुनिया की सारी ज़िन्दगी एक दिन क्या उसका दसवां हिस्सा भी नहीं है।, यह है हक़ीक़त दुनिया के सारे क़ियाम की आख़िरत के मुक़ाबले में। *(सूरः ताहा, रूकूअ 5)*

(۲۸) وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ أَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيَوٰةِ الدُّنْيَا لِنَفْتِنَهُمْ فِيهِ ۚ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَأَبْقَىٰ ٥ وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلَوٰةِ وَاصْطَبِرْ

عَلَيْهَا لَا نَسْئَلُكَ رِزْقًا ۭ نَحْنُ نَرْزُقُكَ ۭ وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوٰى ٥ (طٰهٰ ع ٨)

28. और हरगिज़ आंख उठाकर भी आप उन चीज़ों की तरफ़ न देखें जिनसे हमने इन (दुनियादारों) के मुख़्तलिफ़ गिरोहों को उनकी आज़माइश के लिए मुतमत्तअ कर रखा है कि वह सब कुछ महज़ दुन्यवी ज़िन्दगी की रौनक़ है (और आज़माईश इसकी है कि कौन उस माल मताअ में बंदगी का हक़ अदा करता है और कौन नहीं करता) और आपके रब का अतिय्य: (जो आख़िरत में मिलेगा, वह उससे बदरजहा बेहतर और पायदार है और अपने मुताल्लिक़ीन को नमाज़ का हुक्म करते रहें और ख़ुद भी उसके ऊपर जमे रहें। हम आपसे रोज़ी कमवाना नहीं चाहते, रोज़ी तो आपको हम देंगे और बेहतर अन्जाम तो परहेज़गारी ही का है। *(सूर: ताहा, रूकूअ 8)*

(٢٩) اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِىْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ٥ (الانبياء ع ١)

29. लोगों के लिए उनके हिसाब (किताब) का दिन आ पहुँचा और वे ग़फ़लत में ऐराज़ किए हुए पड़े हैं।

(٣٠) حَتّٰى اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ ۙ لَعَلِّىْ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ كَلَّا ۭ اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَآئِلُهَا ۭ (مؤمنون ع ٦)

30. हत्ताकि जब उनमें से किसी के सर पर मौत आ जाती है (और आख़िरत के अह्वाल खुलने लगते हैं) तो कहता है, ऐ मेरे रब! मुझे (मौत से बचा कर) दुनिया में फिर भेज दीजिए (ताकि जिस दुनिया को और उसके माल व मताअ) को छोड़ कर आया हूँ उसमें (वापस जाकर) नेक काम करूँ। (हक़ तआला शानुहू फ़रमाते हैं) ऐसा हरगिज़ नहीं होगा, (जिसका वक़्त आ चुका है वह टलता नहीं) यह (शख़्स जो कुछ कह रहा है वह फ़ुज़ूल) एक बात है जिसको वह कह रहा है। *(सूर: मूअमिनून, रूकूअ 6)*

(٣١) قٰلَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِى الْاَرْضِ عَدَدَ سِنِيْنَ ٥ قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسْئَلِ الْعَآدِّيْنَ ٥ قٰلَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا لَّوْ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ٥ اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ٥ (مؤمنون ع ٦)

31. क़ियामत के दिन हक़ तआला शानुहू की तरफ़ से उन लोगों की हसरत व अफ़सोस बढ़ाने के लिए इर्शाद होगा, (अच्छा यह बताओ) कि तुम दुनिया में कितने बरस रहे थे, वे (वहां के ज़माने के तूल के लिहाज़ से) कहेंगे कि हम तो (दुनिया में) एक दिन या इससे भी कम रहे होंगे। (और सच तो यह है कि हमें ख़्वाब की तरह से यह भी अंदाज़ा नहीं कि कितना वक़्त गुज़रा है,) पस गिनने वालों से (यानी फ़रिश्तों से जो हर चीज़ का हिसाब लिखते थे) पूछे लें (कि हम कितना थोड़ा ठहरे थे) इर्शाद होगा कि जब तुम इतना कम ठहरे थे, तो क्या ही अच्छा होता कि तुम (यह बात) जान लेते (कि यह दुनिया महज़ चंद रोज़ा है, बहुत ही थोड़े दिन यहां क़ियाम है, अच्छा यह तो बताओ) क्या तुम यह समझते थे कि हमने तुमको यों ही बेकार पैदा किया, (कोई ग़रज़ तुम्हारे पैदा करने से नहीं थी, हालांकि हमने क़ुरआन पाक में साफ़ साफ़ बता दिया था कि जिन्न व इन्सान की पैदाइश हमने महज़ इबादत के लिए की है, क्या तुम्हारा यह ख़्याल था कि) तुम हमारे पास नहीं लौटाये जाओगे?

(सूरः मूअमिनून, रूकूअ 6)

(۳۲) وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ ۢ بَطِرَتْ مَعِيْشَتَهَا ۚ فَتِلْكَ مَسٰكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَنْ مِّنْ ۢ بَعْدِهِمْ اِلَّا قَلِيْلًا ؕ (قصص ع ٦)

32. (ये लोग जो अपनी ख़ुश ऐशी पर नाज़ां हैं, इनकी हिमाक़त है, इनको ख़बर नहीं कि) हम बहुत सी ऐसी बस्तियां हलाक कर चुके हैं जो अपने सामाने ऐश पर नाज़ां थे। पस (तुम ख़ुद ही देख लो कि) ये उनके घर (ख़ाली पड़े हुए हैं, जो) उनके बाद आबाद ही नहीं हुए, मगर थोड़ी देर को। *(सूरः क़सस, रूकूअ 6)*

(۳۳) وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَزِيْنَتُهَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ؏ (قصص ع ٦)

33. पस जो कुछ तुमको (दुनिया में ऐश व इशरत और राहत व आराम का सामान दिया गया है वह महज़ दुन्यवी ज़िन्दगी के बरतने के लिए है और (इसी चंद रोज़ा ज़िन्दगी) की ज़ेब व ज़ीनत है (जो बहुत जल्द ज़ायल हो जाने वाली है) और अल्लाह (जल्ल शानुहू) के यहां जो

अज्र व सवाब है वह बदरजहा इससे बेहतर है और हमेशा बाक़ी रहने वाला है, क्या तुम इतनी बात नहीं समझते? *(क़सस रूकूअ 6)*

(۳٤) اَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ○ (قصص ع ۷)

34. क्या वह शख़्स जिससे हमने एक पंसदीदा वायदा आख़िरत का कर रखा है फिर वह शख़्स उस मौजूद चीज़ को पाने वाला भी है,ऐसे शख़्स के बराबर हो सकता है, जिसको हमने दुन्यवी ज़िन्दगी का कुछ मताअ (मामूली फ़ायदा) दे रखा है, फिर क़ियामत के दिन यह शख़्स(अपने जुर्मों की पादाश में) गिरफ़्तार कर लिया जाएगा।

(सूर: क़सस, रूकूअ 7)

(۳۵) قَالَ الَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا يٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ قَارُوْنُ لا اِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ○ (قصص ع ۸)

35. जो लोग तालिबे दुनिया थे वे (तो क़ारून की ज़ेब व ज़ीनत को देखकर) कहने लगे कि क्या ही अच्छा होता कि हमको भी ऐसा ही साज़ व सामान मिलता जैसा कि क़ारून को मिला है। वह तो बड़ा साहबे नसीब है। (क़ारून का मुफ़स्सल क़िस्सा इबरतनाक, ज़कात अदा न करने के बयान में पांचवीं फ़स्ल की आयात के सिलसिले में नं॰ 3 पर गुज़र चुका है। दौलत और सरवत की कसरत का अगर उसको अल्लाह तआला की रिज़ा का ज़रिया न बनाया जाये तो यही हश्र है।)

(सूर: क़सस, रूकूअ 8)

(۳٦) وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّلَعِبٌ ط وَاِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ م لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ○ (عنكبوت ع ۷)

36. और यह दुन्यवी ज़िन्दगी बजुज़ लह्व व लअिब के कुछ भी नहीं है, और असल ज़िन्दगी (जो हक़ीक़त में ज़िन्दगी कहलाने के लायक़ है) वह आख़िरत ही की ज़िन्दगी है, काश ये लोग इस बात को (अच्छी तरह) जान लेते (तो फिर आख़िरत के लिए कैसी कोशिश

करते)। (अन्कबूत, रूकूअ 7)

(٣٧) يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَهُمْ عَنِ الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ (روم ع ١)

37. ये लोग दुन्यवी ज़िन्दगी की सिर्फ़ ज़ाहिरी हालत को जानते हैं। (इसी की कोशिश करते हैं, इसी पर जान देते हैं) और ये लोग आख़िरत से बिल्कुल ग़ाफ़िल हैं, (न वहां के सवाब की तमन्ना, न वहां के अज़ाब का ख़ौफ़) (रूम, रूकूअ 1)

(٣٨) يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِىْ وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ ۚ وَلَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْئًا ۚ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ (لقمن ع ٤)

38. ऐ लोगो! अपने रब से डरो और उस दिन से डरो जिसमें न कोई बाप अपनी औलाद की तरफ़ से कोई मुतालबा पूरा कर सकता है न कोई औलाद अपने बाप की तरफ़ से ही कोई चीज़ अदा कर सकती है। बेशक अल्लाह का वायदा (जो आख़िरत के मुताल्लिक़ है) सच्चा है, पस तुमको दुनिया की ज़िन्दगी धोखे में न डाले कि तुम उसमें लग कर आख़िरत के दिन को भूल जाओ और न तुमको धोखेबाज़ (शैतान) अल्लाह तआला से धोखे में डाल दे कि तुम उसके बहकाए में आकर अल्लाह तआला के अज़ाब से बेफ़िक्र हो जाओ (और यह समझने) लगो कि हमें अज़ाब न होगा। (लुक़मान-4)

हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि फ्तुमको शैतान अल्लाह तआला के साथ धोखे में न डाले का मतलब यह है कि तुम गुनाह करते रहो और अल्लाह तआला से मग़्फ़िरत की आरज़ू क़रते रहो (दुर्रे मंसूर) यानी हक़ तआला शानुहू से मग़्फ़िरत तलब करने का मुंह जब है जब पुख़्ता तौर पर गुनाहों से तौबा करो, गुनाह न करने का पक्का इरादा करो, फिर अल्लाह तआला से गुज़िश्ता गुनाहों की मग़्फ़िरत चाहो और यह हिमाक़त है कि दिन भर गुनाहों से मुंह काला करते रहो, ज़बान से कहते रहो कि या अल्लाह, तू माफ़ कर, जैसा कि इसी फ़स्ल के नं॰ 18 पर मुफ़स्सल आ रहा है और इस मज़्मून की आयत दूसरी भी आ रही है।

(۳۹) يَاَيُّهَا النَّبِيُّ قُل لِّاَزْوَاجِكَ اِن كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ اُمَتِّعكُنَّ وَاُسَرِّحكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا وَاِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ فَاِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُنَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ٥(احزاب ع٤)

39. ऐ नबी, (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! तुम अपनी बीवियों से (भी दो टोक साफ़ साफ़ बात) कह दो कि अगर तुमको दुन्यवी ज़िन्दगी और उसकी ज़ेब व ज़ीनत चाहिए तो आओ, मैं तुमको कुछ दुन्यवी माल व मताअ (महर नफ़्क़ा वग़ैरह) दे दूँ और तुमको ख़ूबी और ख़ुशदिली के साथ तलाक़ देकर रूख़्सत कर दूँ और अगर तुम अल्लाह तआला की रिज़ा (को और उसके रसूल) सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के निकाह में तंगी और फ़क्र व फ़ाक़े के साथ रहने (को और आख़िरत) के आला दर्जों (को चाहती हो तो) यह दिलनशीन कर लो कि (तुममें से नेकी करने वालियों के लिए अल्लाह तआला ने बहुत बड़ा अज्र व सवाब तैयार कर रखा है।), जो जितनी ज़्यादा नेकी करेगी उतना ही ज़्यादा अज्र व सवाब पावेगी। *(अहज़ाब, रूकूअ 4)*

(٤٠) يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ (فاطر ع١)

40. ऐ लोगो! अच्छी तरह समझ लो, ख़ूब दिल में जमा लो कि बेशक अल्लाह तआला का वायदा सच्चा है, ऐसा न हो कि यह दुन्यवी ज़िन्दगी तुमको धोखे में डाल दे और ऐसा न हो कि धोखेबाज़ (शैतान) तुमको अल्लाह तआला से धोखे में डाल दे कि उसके धोखे में आकर तुम अल्लाह जल्ल शानुहू से बेफ़िक्र हो जाओ। *(फ़ातिर, रूकूअ 1)*

हज़रत सईद बिन जुबैर रज़ि० इसकी तफ़्सीर में फ़रमाते हैं कि दुनिया का धोखे में डालना यह है कि उसमें मश्ग़ूल होकर आख़िरत की तैयारी से ग़ाफ़िल हो जाओ और शैतान का धोखा यह है कि गुनाह करते रहो और अल्लाह तआला से मग़्फ़िरत की तमन्ना करते रहो। *(दुर्रे मंसूर)*

(٤١) يٰقَوْمِ اِنَّمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ وَّاِنَّ الْاٰخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ٥(مؤمن ع٥)

41. फ़िरऔन के ख़ानदान के उस मोमिन शख़्स ने जिसने अपने

ईमान को मख़्फ़ी कर रखा था, अपनी बिरादरी को नसीहत करते हुए कहा ए क़ौम, यह दुन्यवी ज़िन्दगी महज़ चन्द रोज़ा है, और असल ठहरने की जगह तो आख़िरत ही है। *(सूर: मोमिन, रूकूअ 5)*

(٤٢) مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ وَمَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا وَمَالَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ○ (شورىٰ ع ٣)

42. जो शख़्स आख़िरत की खेती का तालिब हो (यानी जैसा खेती के लिए बीज बोया जाता है, फिर उसको पानी वग़ैरह दिया जाता है ताकि फल पैदा हो, इसी तरह वह आख़िरत की खेती करना चाहता है, उसके लिए बीज डालकर उसकी परवरिश करता है ईमान से और आमाले सालिहा से) हम उसके लिए उसकी खेती में तरक़्क़ी देंगे और जो दुनिया की खेती का तालिब हो (कि सारी कोशिश इसी ज़िन्दगी पर ख़र्च कर दे) तो हम उसको दुनिया में से कुछ दे देंगे और ऐसे शख़्स का आख़िरत में कुछ हिस्सा नहीं है। *(सूर: शूरा, रूकूअ 3)*

(٤٣) فَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ج وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ○ وَالَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَاِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ يَغْفِرُوْنَ ○ وَالَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ص وَاَمْرُهُمْ شُوْرٰى بَيْنَهُمْ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ○ وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُوْنَ ○ (شورىٰ ع ٤)

43. पस जो कुछ तुमको (इस दुनिया में) दिया गया, वह महज़ चंद रोज़ा ज़िन्दगी के बरतने के लिए है (बहुत जल्द फ़ना हो जाने वाला है और आख़िरत में) जो कुछ अल्लाह तआला के पास है वह बदरजहा बेहतर और पायदार है, वह –

1. उन लोगों के लिए है जो ईमान लाये और अपने रब पर ही तवक्कुल करते हैं और कबीरा गुनाहों से और बे हयाई की बातों से एहतिराज़ करते हैं और जब उनको गुस्सा आता है तो माफ़ कर देते हैं और

2. (ये वे लोग हैं) जिन्होंने अपने रब का कहना माना और नमाज़ को क़ाइम किया और उनका (हर मुहतम्म बिश्शान) काम आपस के मश्विरे से होता

है और

3. (वे लोग हैं कि) मैंने जो कुछ उनको दिया है, उसमें से (ख़ूब) ख़र्च करते हैं और

4. जो ऐसे (मुन्सिफ़ मिज़ाज हैं) कि अगर उन पर ज़ुल्म हो (और उनको बदला लेने की ज़रूरत पड़े) तो बराबर का बदला लेते हैं (यह नहीं कि एक के बदले में दो और किसी का बदला किसी से ले लें।

उलमा ने लिखा है कि इन आयात में बाज़ अहम उमूर और ख़ुसूसी औसाफ़ के साथ इशारा करते हुए चारों खुलफ़ा-ए-राशिदीन की तरफ़ तर्तीबे ख़िलाफ़त से नम्बर वार इशारा है। *(सूरः शूरा, रूकूअ 4)*

(٤٤) وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ ٥ (زخرف ع٣)

44. और आपके रब की रहमत उससे बदरजहा बेहतर है जिस (दुनिया) को ये लोग जमा करते हैं। उसके बाद दुन्यवी ज़ेब व ज़ीनत की चंद अश्या (चीज़ें) ज़िक्र करने के बाद इर्शाद है–

وَاِنْ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَالْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ ٥ زخرف ع٣

'व इन कुल्लु ज़ालि-क लम्मा मताउल् हयातिद दुन्या वल् आख़िर-तु इन्-द रब्बि-क लिल् मुत्तक़ीन॰ *(ज़ुख़रूफ़, रूकूअ 3)*

(ऊपर से सोने चांदी की छतों और दरवाज़ों वग़ैरह के ज़िक्र के बाद इर्शाद है) और यह सब का सब सिर्फ़ दुन्यवी ज़िन्दगी की चंद रोज़ा कामरानी है, (दो चार दिन की बहार है) और आपके रब के यहां आख़िरत तो मुत्तक़ी लोगों के लिए है। *(सूरः ज़ुख़रूफ़, रूकूअ 3)*

(٤٥) وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ٥ مَا اُرِيْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ وَّمَا اُرِيْدُ اَنْ يُّطْعِمُوْنِ ٥ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُوالْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ ٥ (الذاريٰت ع٣)

45. और मैं ने जिन्न और इन्सान को सिर्फ़ इसी लिए पैदा किया कि वे मेरी इबादत किया करें, मैं उनसे रिज़्क़ रसानी नहीं चाहता और न यह चाहता हूँ कि वे मुझे खिलाया करें, हक़ तआला शानुहू तो ख़ुद ही सबको रिज़्क़ पहुँचाने वाला क़वी, निहायत क़ुव्वत वाला है।

(सूरः अज़्ज़ारियात, रूकूअ 3)

(٤٦) إِعْلَمُوْآ أَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ ، كَمَثَلِ غَيْثٍ أَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطَامًا ، وَفِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ شَدِيْدٌ وَّمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ ، وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ۞ سَابِقُوْآ إِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ أُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ، ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ، وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۞ (حديد ع٣)

46. तुम ख़ूब जान लो कि दुन्यवी ज़िन्दगी (हरगिज़ हरगिज़ इस क़ाबिल नहीं कि आदमी उसी में लग जाये, यह (तो महज़ लह्व व लअिब और ज़ाहिरी ज़ेब व ज़ीनत और बाहम एक दूसरे पर फ़ख़्र करना है और अमवाल व औलाद में एक दूसरे पर बढ़ोतरी है, इसकी मिसाल ऐसी है जैसा कि मींह बरसा कि उसकी वजह से पैदावार (ऐसी बढ़ी कि वह) काश्तकारों को अच्छी मालूम होने लगी, फिर वह खेती ख़ुश्क हो जाती है कि तू उसको ज़र्द देखता है, फिर वह चूरा चूरा हो जाती है (यही हालत दुनिया की ज़ेब व ज़ीनत और बहार की है, कि आज ज़ोरों पर है, फिर इज़्मिहलाल है, फिर ज़वाल है) और आख़िरत की यह हालत है कि उसमें सख़्त अज़ाब है (जिससे बचने की इंतिहाई कोशिश होना चाहिए) और ख़ुदा तआला की तरफ़ मग़्फ़िरत और रज़ामंदी है (जिसके हासिल करने की कोशिश उसकी शान के मुनासिब होना चाहिए और यह बात ज़ेहन नशीन कर लेना चाहिए कि) दुनिया की ज़िन्दगी धोखे का सामान है (जब दुनिया की यह हालत है और आख़िरत की यह कैफ़ियत है, तो सआदत की बात यह है कि) तुम अपने परवरदिगार की मग़्फ़िरत की तरफ़ दौड़ो (और उसकी शान के मुनासिब कोशिश करो और निहायत एहतिमाम से दौड़ो) ऐसी जन्नत की तरफ़ जिसकी वुसअत आसमान व ज़मीन की वुसअत के बराबर है, जो ऐसे लोगों के लिए तैयार की गयी है जो अल्लाह पर और उसके रसूल सल्ल॰ पर ईमान रखते हैं और यह सब कुछ अल्लाह तआला की तरफ़ से फ़ज़्ल व एहसान है, वह जिसको चाहता है अपने फ़ज़्ल से नवाज़ देता है और अल्लाह तआला शानुहू बहुत ज़्यादा फ़ज़्ल वाले हैं। (मगर कोई उसके फ़ज़्ल से हिस्सा लेना भी चाहे)।

(सूरः हदीद, रुकूअ 3)

इमाम ग़ज़ाली रह॰ फ़रमाते हैं कि बच्चा, जब उसको कुछ भी समझ शुरू होती है तो वह लह्व व लअिब की तरफ़ मशग़ूल होता है और उसके अंदर उसका ऐसा जज़्बा पैदा होता है कि जिसके मुक़ाबले में उस को कोई चीज़ अच्छी नहीं मालूम होती, फिर उसके बाद जब वह ज़रा बड़ा होता है तो उसमें ज़ेब व ज़ीनत, अच्छे कपड़ों का पहनना, घोड़े वग़ैरह की सवारी का शौक़ पैदा होता है, जिसके सामने लह्व व लअिब की लज़्ज़त भी लग्व हो जाती है, उसके बाद उसमें जवानी की लज़्ज़तों का ज़ोर होता है, शहवत पूरी करने के मुक़ाबले में उसकी निगाह में कोई चीज़ नहीं रहती, न माल व मातअ की वक़्अत रहती है, न इज़्ज़त व आबरू की, उसके बाद फिर उसमें बड़ाई और तफ़ाख़ुर और रियासत का जज़्बा पैदा होता है जो पहले जज़्बों पर ग़ालिब आ जाता है, ये सब दुन्यावी लज़्ज़ात हैं उसके बाद फिर अल्लाह तआला की मअ्रिफ़त का जज़्बा पैदा होता है जिसके मुक़ाबले में हर चीज़ लग्व बन जाती है, यही असल जज़्बा है जो सबसे ज़्यादा क़वी है, पस इब्तिदाई ज़माने में खेल कूद की रग़बत होती है और बुलूग़ के शुरू में शहवत का ज़ोर होता है, बीस साल की उम्र के बाद से रियासत का जज़्बा शुरू होता है और चालीस साल की उम्र के क़रीब से उलूम और मअ्रिफ़त का जज़्बा शुरू होता है, जैसा कि बचपन में बच्चा खेल के मुक़ाबले में औरतों के इख़्तिलात और रियासत को लग्व समझता है उसी तरह यह दुनियादार उन लोगों पर हँसते हैं जो अल्लाह की मअ्रिफ़त में मश्ग़ूल होते हैं और यह अल्लाह वाले समझते हैं कि ये बच्चे हैं, बुलूग़ के लुत्फ़ को जानते ही नहीं। *(एह्या)*

इस आयते शरीफ़ा में दुन्यवी लज़्ज़ात के सब अनवाअ् को ज़िक्र फ़रमा कर इस पर तंबीह फ़रमायी है कि ये सारी ही लज़्ज़तें धोखा हैं और काम आने वाली सिर्फ़ आख़िरत और आख़िरत की ज़िन्दगी है, दुनिया की सारी लज़्ज़तें उस खेती की तरह हैं जो लहलहा कर ख़ुश्क हो जाए, फिर उसको हवा उड़ाकर फ़ना कर दे।

(٤٧) إِنَّ هٰٓؤُلَآءِ يُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُونَ وَرَآءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيلًا ۝ (دهر ع ٢)

47. ये लोग दुनिया से मुहब्बत रखते हैं और अपने आगे आने वाले एक भारी दिन को छोड़ बैठे हैं (यानी क़ियामत के दिन की न तो कोई फ़िक्र है, न उसकी कोई तैयारी है, दुनिया की मुहब्बत ने ऐसा अंधा कर रखा है कि ज़रा भी तो उस इंतिहाई मुसीबत के दिन की परवाह नहीं

है।) (दहर, रुकूअ 2)

(٤٨)فَإِذَا جَآءَتِ الطَّآمَّةُ الْكُبْرٰى ○ يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ مَاسَعٰى ○ وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِمَنْ يَّرٰى ○ فَأَمَّا مَنْ طَغٰى ○ وَاٰثَرَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ○ فَإِنَّ الْجَحِيْمَ هِيَ الْمَاْوٰى ○ وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ○ فَإِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَاْوٰى ○ (والنازعات ع ٢)

48. पस जिस दिन वह बहुत बड़ा हंगामा (मुसीबत का दिन यानी क़ियामत का दिन) आ जाएगा जिस दिन आदमी याद करेगा कि (दुनिया में) किस काम के लिए कोशिश की थी और दोज़ख़ उस दिन आंखों के सामने होगी (उस दिन का क़ानून यह है कि) जिस शख़्स ने (दुनिया में) सरकशी की होगी और दुन्यवी ज़िन्दगी को (आख़िरत पर) तर्जीह दी होगी, उसका ठिकाना तो जहन्नम में होगा और जो शख़्स (दुनिया में) अपने रब के सामने खड़ा होने से डरता रहा होगा, और नफ़्स को (हराम) ख़्वाहिशात से रोका होगा, पस जन्नत उसका ठिकाना होगा। *(सूर: वन्नाज़िआत, रुकूअ 2)*

(٤٩)قَدْ أَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى ○ وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ○ بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ○ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّأَبْقٰى ○ إِنَّ هٰذَا لَفِي الصُّحُفِ الْأُوْلٰى ○ صُحُفِ إِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى ○ (اعلى)

49. बेशक बामुराद हो गया वह शख़्स जो (बुराइयों से) पाक हुआ और अपने रब का नाम लेता और नमाज़ पढ़ता रहा (मगर तुम लोग क़ुरआन पाक की नसीहतों पर अमल नहीं करते) बल्कि तुम तो दुन्यवी ज़िन्दगी को (आख़िरत की ज़िन्दगी पर) तर्जीह देते हो हालांकि आख़िरत (दुनिया से कहीं ज़्यादा) बेहतर है और हमेशा रहने वाली है, यही मज़्मून अगले सहीफ़ों में है, यानी इब्राहीम और मूसा (अला नबिय्यिना व अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के सहीफ़ों में) *(सूर: आला)*

फ़ायदा:- इन सहीफ़ों के मज़ामीन बहुत से आसार और रिवायात में ज़िक्र किये गये हैं। एक हदीस में है, हज़रत अबूज़र रज़ि॰ ने हुज़ूर सल्ल॰ से दर्याफ़्त किया कि कुल किताबें कितनी नाज़िल हुईं, हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, सौ सहीफ़े और चार किताबें, उनमें से हज़रत शीस अलैहिस्सलाम पर पचास सहीफ़े नाज़िल हुए और हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम पर तीस और हज़रत इब्राहीम

अलैहिस्सलाम पर दस और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर तौरात से पहले दस सहीफ़े नाज़िल हुए और चार किताबें, तौरात (हज़रत मूसा अलैहि॰ पर) और इंजील (हज़रत ईसा अलैहि॰ पर) ज़बूर (हज़रत दाऊद अलैहि॰ पर) और क़ुरआन मजीद (सैय्यिदुर्रूसुल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर) नाज़िल हुईं, मैं ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह सल्ल॰ हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के सहीफ़ों में क्या था, हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया, सब अमसाल (तंबीहात) थीं, (एक मज़्मून उसका यह है) ओ ग़लबा करके हुकूमत लेने वाले बादशाह, और मग़रूर ! मैं ने तुझे इसलिए नहीं उठाया था कि तू दुनिया को तेह ब तेह जमा करता रहे, मैं ने तुझे इसलिये उभारा था कि तू मज़्लूम की आवाज़ को मुझ तक न आने दे (उसकी दादरसी वहीं कर दे), इस लिए कि मैं उसकी पुकार को रद्द नहीं करूँगा, चाहे वह काफ़िर ही क्यों न हो।

अक़्ल वाले के लिए ज़रूरी है अगर उसकी अक़्ल मग़लूब नहीं हो गई कि अपने औक़ात को तीन हिस्सों पर तक़्सीम कर दे:-

1. एक हिस्से में अल्लाह तआला से राज़ व नियाज़ (उसकी इबादत) करे।

2. एक हिस्सा अपने ऊपर मुहासबे में ख़र्च करे कि मैं ने क्या किया (कितने औक़ात नेकियां कमाने में ख़र्च किए, कितने बुराईयां और गुनाह कमाने में, और उन औक़ात में क्या क्या नेक काम किए और क्या क्या बुरे काम किए, नेकियां किस दर्जे की कमाईं और गुनाह किस दर्जे के किए और कितने औक़ात महज़ बेकार ज़ाया कर दिए) और,

3. एक हिस्सा अपनी जायज़ ज़रूरियात (खाने कमाने) में ख़र्च करे ताकि यह हिस्सा औक़ात का पहले दो हिस्सों के लिए मददगार बने और दिल-जमई का और पहले दोनों कामों के लिए वक़्त के फ़ारिग़ करने का सबब बने, और आक़िल के लिए ज़रूरी है कि अपने औक़ात का मुहाफ़िज़ हो, अपने मशाग़िल में मुतवज्जह रहे, अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त करे। जो शख़्स अपनी बात की निगहबानी करेगा, बेकार बातों में गुफ़्तगू कम करेगा, और आक़िल के ज़िम्मे ज़रूरी है कि तीन बातों का तालिब रहे:-

1. एक अपनी गुज़र औक़ात यानी मआशी इस्लाह का।

2. दूसरी आख़िरत का तोशा।

3. तीसरी जायज़ राहतें (खाना-पीना, सोना वग़ैरह) इन तीनों के अलावा जिस चीज़ में भी वक़्त ज़ाया किया जाये महज़ बेकार और लग्व है। जब आदमी कोई बात या काम शुरू करे तो यह सोच ले कि इन तीन में से कौन से में दाख़िल है।

हज़रत अबूज़र रज़ि॰ फ़रमाते हैं, मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह हज़रत मूसा अलैहि॰ के सहीफ़ों में क्या था, इर्शाद फ़रमाया कि सब की सब इब्रत की बातें थीं (मिन्जुमला उनके यह भी था) मुझे ताज्जुब है उस शख़्स पर जिस को मौत का यक़ीन हो, फिर भी वह किसी बात पर किसी तरह ख़ुश होता है (कि मौत हर वक़्त सर पर सवार है, न मालूम किस वक़्त आ जाये) मुझे ताज्जुब है उस शख़्स पर जिसको मौत का यक़ीन है फिर उसको किसी पर हंसी आ जाए, मुझे ताज्जुब है उस शख़्स पर जो दुनिया को और उसके इंक़िलाबात को देखे (कि आज एक शख़्स लखपती है, कल को फ़क़ीर और टुकड़े टुकड़े का मुहताज है। आज एक शख़्स जेलख़ाने में है और कल को हाकिम बन रहा है) फिर उसकी किसी बात पर इत्मीनान करे और (ताज्जुब है) उस शख़्स पर जो तक़दीर पर यक़ीन रखता हो फिर वह किसी बात पर रंज करे और (ताज्जुब है) उस शख़्स पर जिसको (क़ियामत के दिन) हिसाब का यक़ीन है फिर वह अमल न करे (कि उस दिन हर क़िस्म का जानी माली मुतालबा नेक आमाल ही से पूरा किया जाएगा और अपने पास नेक अमल न होंगे तो दूसरे के गुनाह हिसाब पूरा करने को लेने पड़ेंगे) मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह, आप पर भी हज़रत इब्राहीम और हज़रत मूसा अलैहिमस्सलाम के सहीफ़ों में से कुछ नाज़िल हुआ? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, हां यही आयत "क़द अफ़्-ल-ह मन् त ज़क्का"। *(दुर्रे मंसूर)*

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हक़ तआला शानुहू ने सूरः नज्म में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तारीफ़ में फ़रमाया "व इब्राहीमल्ल ज़ी वफ़्फ़ा" और वह इब्राहीम जिन्होंने पूरा पूरा अदा कर दिया, यानी इस्लाम के सारे सिहामों को पूरा कर दिया, इस्लाम के कुल तीस सिहाम हैं, जिनमें से दस तो सूरः बराअत में ज़िक्र किए गये। इन आयात में "इन्नल्ला हश्तरा मिनल मुअ्मिनी-न' और दस सूरः अह्ज़ाब में इन आयात में (इन्नल् मुस्लि मी-न वल् मुस्लिमात् (रूकूअ 5) और छः क़द अफ़्ल-हल मुअ्मिनू-न) की शुरू की आयात में और चार "स-अ-ल साइलुन्" में "वल्ल ज़ी-न युसद्दिक़ू-न

बियौमिद्दी न" (मआरिज, रूकूअ 1) यह सब तीस हुए, जो इनमें से किसी एक चीज़ के साथ भी अल्लाह तआला के यहां जाएगा वह इस्लाम के एक सिहाम के साथ जाएगा। (दुर्रे मंसूर)

(٥٠) بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ٥

اَلۡهٰکُمُ التَّکَاثُرُ ۙ٥ حَتّٰی زُرۡتُمُ الۡمَقَابِرَ ؕ٥ کَلَّا سَوۡفَ تَعۡلَمُوۡنَ ۙ٥ ثُمَّ کَلَّا سَوۡفَ تَعۡلَمُوۡنَ ؕ٥ کَلَّا لَوۡ تَعۡلَمُوۡنَ عِلۡمَ الۡیَقِیۡنِ ؕ٥ لَتَرَوُنَّ الۡجَحِیۡمَ ۙ٥ ثُمَّ لَتَرَوُنَّہَا عَیۡنَ الۡیَقِیۡنِ ۙ٥ ثُمَّ لَتُسۡـَٔلُنَّ یَوۡمَئِذٍ عَنِ النَّعِیۡمِ ٥ؒ (تکاثر)

50. (दुन्यवी सामान पर) तफ़ाख़ुर ने तुमको (आख़िरत से) ग़ाफ़िल कर रखा है हत्ताकि तुम (मर कर) क़ब्रस्तान में पहुँच जाते हो। हरगिज़ (ये चीज़ें क़ाबिले फ़ख़्र और तवज्जोह) नहीं हैं। तुमको बहुत जल्द (क़ब्र में जाते ही) मालूम हो जाएगा (कि दुनिया क्या थी और आख़िरत क्या है) फिर तुमको दूसरी मर्तबा मुतनब्बह किया जाता है कि हरगिज़ (यह चीज़ें क़ाबिले फ़ख़्र व इल्तिफ़ात) नहीं, तुमको बहुत जल्द (क़ब्रों से निकलते ही हश्र में) मालूम हो जाएगा और तुमको तीसरी दफ़ा मुतनब्बह किया जाता है कि हरगिज़ (ये चीज़ें क़ाबिले फ़ख़्र व इल्तिफ़ात) नहीं। अगर तुम यक़ीनी तौर पर (क़ुरआन व हदीस से इस बात को) जान लेते (कि ये चीज़ें क़ाबिले तफ़ाख़ुर नहीं हैं जैसा कि तुमको मरने के बाद इसका यक़ीन हुआ तो कभी भी इनमें मशग़ूल न होते) वल्लाह! तुम जहन्नम को ज़रूर देखोगे (वह कोई फ़र्ज़ी चीज़ नहीं है, कि दोबारा, तुमसे ताकीद से) फिर (कहा जाता है कि) वल्लाह! तुम उसको ऐसा देखोगे जो ख़ुद यक़ीन है (यानी उसका देखना बिल्कुल यक़ीनी और क़तई है), फिर उस दिन तुमसे सारी नेमतों की पूछ होगी (कि अल्लाह की नेमतों का क्या हक़ अदा किया।)

फ़ायदा:- इन नेमतों के सवाल के मुताल्लिक़ बहुत सी तफ़ासील बहुत सी अहादीस में आई हैं और जितनी तफ़ासील आई हैं, वे सब ही मिसाल के तौर पर हैं। हक़ तआला शानुहू की नेमतों का, जो हर वक़्त हर आन, हर आदमी पर बारिश की तरह से बरसती रहती हैं, कौन एहाता या शुमार कर सकता है। हक़

तआला शानुहू का पाक इर्शाद बिल्कुल हक़ है:-

وَإِنْ تَعُدُّوا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوهَا ۔ (ابراھیم ع ٥)

"व इन् तउद्दू निअ्म-तल्लाहि ला तुह्सूहा॰"

(इब्राहीम, रूकूअ 5, सूरः नह्ल रूकूअ 2)

'अगर तुम अल्लाह तआला की नेमतों को गिनने लगो तो शुमार भी नहीं कर सकते।

एक हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल॰ ने यह सूरः तिलावत फ़रमायी और जब यह पढ़ा -

ثُمَّ لَتُسْئَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيمِ ○

'सुम्म लतुस्अलुन्-न यौ मइ-ज़िन् अनिन् नओ़ी-मि॰'

'फिर उस दिन नेमतों से सवाल किए जाओगे' तो इर्शाद फ़रमाया कि तुम्हारे रब के सामने तुमसे ठंडे पानी का सवाल किया जाएगा, मकानों के साए का सवाल किया जाएगा (कि हमने धूप और बारिश से बचने के लिए साया अता किया था) पेट भराई खाने से सवाल किया जाएगा। आज़ा के सही सालिम होने से सवाल किया जाएगा। (कि हमने हाथ पांव, आंख नाक कान वग़ैरह सही सालिम अता किये थे, उनका क्या हक़ अदा किया) मीठी नींद से सवाल किया जायेगा, हत्ताकि अगर तुमने किसी औरत से मंगनी चाही और किसी और शख़्स ने भी उस औरत से मंगनी चाही और अल्लाह ने तुमसे उसका निकाह करा दिया तो उससे भी सवाल होगा, कि यह हक़ तआला शानुहू का तुम पर एहसान था कि बेटी वालों के दिल में हक़ तआला शानुहू ने यह बात डाली कि वे तुमसे उसका निकाह करें, दूसरे से न करें। और उन चीज़ों को जो इस हदीस शरीफ़ में ज़िक्र की गयीं, ग़ौर करने से आदमी अंदाज़ा कर सकता है कि उस पर हर वक़्त अल्लाह तआला शानुहू के किस क़दर एहसानात हैं, और इन चीज़ों में ग़रीब अमीर सब ही शरीक हैं। कौन शख़्स ग़रीब से ग़रीब, फ़क़ीर से फ़क़ीर ऐसा है जिस पर हर वक़्त अल्लाह तआला शानुहू के बेइन्तिहा इनामात न बरसते हों। एक सेहत और आज़ा की तन्दुरूस्ती ही ऐसी चीज़ है और इससे बढ़कर हर वक़्त सांस का आते रहना ही एक ऐसी नेमत है जो हर वक़्त हर ज़िंदा को मयस्सर है।

एक और हदीस में है कि जब यह सूरः नाज़िल हुई तो बाज़ सहाबा

रज़ि॰ ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्ल॰ कौन सी नेमतों में हम हैं, जौ की रोटी, वह भी आधी भूख मिलती है, पेट भर कर नहीं मिलती तो अल्लाह तआला ने "वही" भेजी कि आप उनसे फ़रमायें, क्या तुम जूता नहीं पहनते, ठंडा पानी नहीं पीते? यह भी तो अल्लाह तआला की नेमतों में से हैं।

एक और हदीस में है कि क़ियामत के दिन सबसे पहले जिन नेमतों का सवाल होगा, वह बदन की सेहत और ठंडा पानी है।

एक हदीस में है कि जिन नेमतों का सवाल होगा, वह रोटी का टुकड़ा है जिसको खाए और वह पानी है जिससे प्यास बुझाए और वह कपड़े का टुकड़ा है जिससे बदन छुपाए।

एक और हदीस में है कि एक मर्तबा सख़्त धूप में दोपहर के वक़्त हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ मस्जिदे नबवी में तशरीफ़ ले गये, हज़रत उमर रज़ि॰ को ख़बर हुई वह भी अपने घर से तशरीफ़ लाए और हज़रत अबूबक्र रज़ि॰ से पूछा कि इस वक़्त कैसे आना हुआ? उन्होंने फ़रमाया कि भूख की शिद्दत ने मजबूर किया। हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया, उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है। इसी बेचैनी ने मुझे भी मजबूर किया। ये दोनों इसी हाल में थे कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने दौलतकदे से तशरीफ़ लाये और उनसे दर्याफ़्त किया कि तुम इस वक़्त कहां आये? उन्होंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल॰ भूख की शिद्दत ने मजबूर किया। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि इसी मजबूरी से मैं भी आया हूँ। ये तीनों हज़रात उठकर हज़रत अबूअय्यूब अंसारी रज़ि॰ के मकान पर तशरीफ़ ले गए, वह ख़ुद तो मौजूद नहीं थे, उनकी अहलिया (बीवी) ने बहुत ख़ुशी का इज़्हार किया। हुज़ूर सल्ल॰ ने दर्याफ़्त किया कि अबूअय्यूब कहाँ हैं? बीवी ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल॰, अभी आते हैं। इतने में अबूअय्यूब रज़ि॰ आ गये और जल्दी से खजूर का एक ख़ोशा तोड़ कर लाए। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, सारा ख़ोशा क्यों तोड़ लिया। इसमें से पकी पकी क्यों न छांट लीं। उन्होंने अर्ज़ किया, हज़रत! (सल्ल॰) इस ख़्याल से तोड़ लिया कि पकी और अधकचरी और ख़ुश्क व तर हर क़िस्म की सामने हो जायें, जिसकी रग़बत हो। इन हज़रात ने हर क़िस्म की खजूरें उस खोशे में से नोश फ़रमायीं। इतनी देर में हज़रत अबूअय्यूब रज़ि॰ ने एक बकरी का बच्चा ज़िब्ह करके जल्दी से कुछ हिस्सा आग पर भूना, कुछ हांडी में पकाया और इन हज़रात के सामने

लाकर रखा। हुज़ूर सल्ल॰ ने ज़रा सा गोश्त एक रोटी में लपेट कर अबूअय्यूब रज़ि॰ को दिया कि यह फ़ातिमा को दे आओ। उसने भी कई दिन से ऐसी कोई चीज़ नहीं खाई। वह जल्दी से दे आए। इन हज़रात ने गोश्त रोटी खाया, उसके बाद हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया (अल्लाह की इतनी नेमतें खाईं) गोश्त और रोटी और कच्ची खजूरें, पक्की खजूरें यही फ़रमाते हुए हुज़ूर सल्ल॰ की आंखों में आँसू भर आये और इर्शाद फ़रमाया कि यही वे नेमतें हैं जिनसे क़ियामत में सवाल होगा। सहाबा रज़ि॰ को यह सुनकर बड़ा शाक़ हुआ (कि ऐसी सख़्त भूख की हालत में ये चीज़ें भी बाज़पुर्स के क़ाबिल हैं।) हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, बेशक हैं, और इसकी तलाफ़ी यह है कि जब शुरू करो तो बिस्मिल्लाह के साथ शुरू करो और जब ख़त्म करो तो, यह दुआ पढ़ो :-

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ هُوَ اَشْبَعَنَا وَاَنْعَمَ عَلَیْنَا وَاَفْضَلَ

"अलहम्दु लिल्लाहिल्लज़ी हु-व अश्ब-अ़ना व अन्अ़-म अ़लैना व अफ़्ज़-ल॰"

"तमाम तारीफ़ें सिर्फ़ अल्लाह ही के लिए हैं कि उसी ने हमको (महज़ अपने फ़ज़्ल से) पेट भर कर अता किया और हम पर इनाम फ़रमाया और बहुत ज़्यादा अता किया।"

इस मज़्मून की बहुत सी रिवायात कुतुबे अहादीस में मौजूद हैं। उनका ज़िक्र इस वक़्त मक़्सूद नहीं है, इस जगह तो सिर्फ़ यह दिखाना मक़्सूद था कि दुनिया की नापायदारी को, उसके नाक़ाबिले इल्तिफ़ात होने को आख़िरत के मुक़ाबले में उसके बिल्कुल हेच होने को उसमें इश्तिग़ाल के बाइस ख़सारा होने और अन्जामकार अज़ाब तक पहुँच जाने को किस कसरत से हक़ तआला शानुहू ने कलामुल्लाह शरीफ़ में फ़रमाया, और बार बार इस पर तंबीह फ़रमायी, जिसमें से नमूने के तौर पर सिर्फ़ पचास आयतों का ज़िक्र इस जगह किया गया। इनके अलावा और भी बकसरत (बहुत सी) आयात में इस मज़्मून पर तंबीह फ़रमायी है। किस क़दर सख़्त हैरत और ग़ैरत की बात है कि जितनी ज़्यादा हक़ तआला शानुहू की तरफ़ से इस पर तंबीह है उतनी ही ज़्यादा हमारी तरफ़ से इसमें ग़फ़लत बरती जा रही है। इसके बाद उस पाक बारगाह में हाज़िरी का क्या मुंह रह जाता है।

(فَاِلَی اللّٰهِ الْمُشْتَکٰی وَهُوَ الْمُسْتَعَانُ)

(फ़-इ लल्लाहिल् मुश्तका व हुवल् मुस्त-आन्)

(٢) وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْأَمْوَالِ وَالْأَنْفُسِ وَالثَّمَرَاتِ ط وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ ه الَّذِيْنَ إِذَآ أَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالُوْٓا إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّآ إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ ه أُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ وَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ ه (بقره ع ١٩)

1. और हम तुम्हारा इम्तिहान करेंगे किसी क़दर ख़ौफ़ से (जो मुख़ालिफ़ीन की तरफ़ से या हवादिस से पेश आए) और (किसी क़दर) फ़क़्र व फ़ाक़े से और (किसी क़दर) माल और जान और फ़लों की कमी से (पस तुम लोग इस क़िस्म की जो चीज़ें पेश आवें उन पर सब्र करना) और आप उन सब्र करने वालों को बशारत सुना दीजिए, (जिनकी यह आदत है) कि जब उन पर कोई मुसीबत पड़ती है तो वे इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन पढ़ते हैं, यही लोग हैं जिन पर अल्लाह तआला शानुहू की ख़ास ख़ास रहमतें हैं और रहमते आम्म: भी है और यही लोग हिदायत याफ़्ता हैं।

फ़ायदा:- मुसीबत के वक़्त "इन्ना लिल्लाहि" का ज़बान से पढ़ना भी मुफ़ीद और अज्र का सबब है और दिल से इसके मायने समझ कर पढ़ना और भी ज़्यादा मोअस्सिर और बाअिसे अज्र और बाअिसे तमानियत है।

इसका तर्जुमा यह है कि हम सब के सब (मय अपनी जानों के और मालों के) अल्लाह तआला ही की मिल्क हैं (और मालिक को अपनी मिल्क में हर तरह तसर्रूफ़ का हक़ है। वह जिस तरह चाहे तसर्रूफ़ करे) और हम सब अल्लाह तआला ही की तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं, यानी मरने के बाद सबको वहीं जाना है, यहां के नुक़्सानात और तकालीफ़ का बदला और सवाब बहुत ज़्यादा वहां मिलेगा, जैसा कि दुनिया में किसी शख़्स का कुछ नुक़्सान हो जाए और उसको कामिल यक़ीन हो कि इस नुक़्सान के बदले में इससे बहुत ज़्यादा बहुत जल्द मिल जायेगा तो उसको अपने नुक़्सान का ज़रा सा भी रंज नहीं होता। इसी तरह अगर अल्लाह तआला शानुहू के यहां ज़्यादा से ज़्यादा बदला मिलने का यक़ीन हो जाए तो फिर ज़रा भी कुल्फ़त न रहे, लेकिन हम लोगों में चूंकि ईमान और यक़ीन की कमी है इस वजह से ज़रा सी मशक़्क़त, ज़रा सी तकलीफ़, ज़रा सा नुक़्सान भी हमारे लिए बड़ी मुसीबत बन जाता है। हक़

तआला शानुहू ने अपने पाक कलाम में इसकी तरफ़ भी मुज्मलन और मुफ़स्सलन बहुत सी जगह तंबीह फ़रमाई है कि यह दुनिया सख़्त इब्तिला और इम्तिहान की जगह है और कई कई मज़्मूनों में इम्तिहान होता है, कभी माल की इफ़रात (ज़्यादती) से कि उसको किस तरह कमाया और किस तरह ख़र्च किया जा रहा है, और कभी फ़ुक़्र व फ़ाक़े से कि इसका किस तरह इस्तिक़बाल किया जा रहा है। जज़अ फ़ज़अ से या सब्र व सलात से। इसीलिए बार बार सब्र व सलात और अल्लाह की तरफ़ रूजूअ की तर्ग़ीबें दी जाती हैं और इस पर तंबीह की जाती है कि तुम आज कल इम्तिहान में हो, ऐसा न हो कि इस इम्तिहान में फ़ैल हो जाओ। नमूने के तौर पर चंद आयात की तरफ़ इशारा करता हूँ -

(۱) وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ (بقره ع ٥)

1. और मदद हासिल करो सब्र के साथ और नमाज़ के साथ।

(बक़र:, रूकूअ 5)

हज़रत क़तादा रज़ि॰ कहते हैं कि ये दोनों चीज़ें अल्लाह की तरफ़ से मदद हैं, इनसे मदद लो। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल॰ के साथ सवारी पर सवार था, हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया लड़के, मैं चंद बातें बताता हूँ, तुझे हक़ तआला शानुहू उनसे नफ़ा देंगे, मैं ने अर्ज़ किया, ज़रूर बतायें। इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह की हिफ़ाज़त कर (यानी उसके हुक़ूक़ अदा कर) अल्लाह तआला शानुहू तेरी हिफ़ाज़त फ़रमायेंगे। अल्लाह तआला (के हुक़ूक़) की हिफ़ाज़त कर, तू उसको (हर वक़्त अपनी मदद के लिए) सामने पाएगा, सरवत की हालत में अल्लाह तआला शानुहू को पहचान ले (यानी याद कर ले) वह तुझे मुसीबत के औक़ात में पहचानेगा (मदद करेगा) और यह अच्छी तरह जान ले कि जो कुछ भी मुसीबत तुझे पहुँची है, वह हरगिज़ तुझसे चूकने वाली न थी और जो नहीं पहुँची, वह कभी भी पहुँचने वाली न थी, अगर सारी मख़्लूक़ सब की सब मिलकर इसकी कोशिश करें कि वे तुझे कुछ दें और अल्लाह तआला शानुहू उसका इरादा न करें तो वे सब के सब हरगिज़ इस पर क़ादिर नहीं हो सकते कि तुझे कुछ दे दें। और अगर वे सब के सब मिलकर तुझसे किसी मुसीबत को हटाना चाहें और अल्लाह तआला शानुहू न चाहे तो वे कभी भी उस मुसीबत को नहीं हटा सकते। तक़्दीर का क़लम हर उस चीज़ को लिख चुका है जो क़ियामत तक होने वाली है। जब तू कुछ मांगे तो सिर्फ़ अल्लाह ही से मांग, और जब मदद चाहे तो सिर्फ़ अल्लाह ही से मदद चाह,

और जब भरोसा करे तो सिर्फ़ अल्लाह ही पर भरोसा कर, ईमान व यक़ीन में शुक्र के साथ अल्लाह तआला के लिए अमल कर और यह ख़ूब जान ले कि नागवार चीज़ों पर सब्र बहुत बेहतर चीज़ है, और अल्लाह की मदद सब्र के साथ है और मुसीबत के साथ राहत है और तंगदस्ती के साथ फ़राख़ दस्ती है, यानी जब कोई मुसीबत पहुँचे तो समझ लो कि अब कोई राहत भी मिलने वाली है और जब तंगी हो तो समझ लो कि अब फ़राख़ी भी होने वाली है।

एक हदीस में है कि जो शख़्स भूखा या मुहताज हो और अपनी हाजत को लोगों से छुपाये तो अल्लाह तआला के ज़िम्मे है कि उसको एक साल की रोज़ी हलाल तरीक़े से अता फ़रमायेंगे।

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ को जब भी कोई अहम चीज़ पेश आती तो नमाज़ की तरफ़ मुतवज्जह हो जाते । हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि पहले अंबिया (अलैहि॰) को जब भी कोई मुश्किल पेश आती तो वे नमाज़ में मश्ग़ुल होते।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ एक मर्तबा सफ़र में जा रहे थे, रास्ते में अपने बेटे के इंतिक़ाल की ख़बर सुनी, सवारी से उतरे और दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी और 'इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन' पढ़ा और फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने हमें यही हुक्म दिया है। फिर यह आयत 'वस्तओ़नू बिस्सब्रि व स्सलाति' पढ़ी। हज़रत उबादा रज़ि॰ के जब इंतिक़ाल का वक़्त क़रीब हुआ तो फ़रमाया कि मैं तुममें से हर शख़्स को इससे रोकता हूँ कि कोई मुझे रोए, और जब मेरी जान निकल जाए तो हर शख़्स बहुत अच्छी तरह वुज़ू करे और मस्जिद में जाकर दो रकअ़त नमाज़ पढ़े, फिर मेरे लिए और अपने लिए दुआ-ए-मग़्फ़िरत करे और फिर जल्दी ही मुझे दफ़न कर देना।

(दुर्रे मंसूर)

(٢) يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ (بقره ع ١٩)

2. ऐ ईमान वालो (मुसीबतों में) सब्र और नमाज़ के साथ मदद हासिल करो।

(बक़रः, रूकूअ 19)

(٣) وَالصّٰبِرِيْنَ فِى الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ (بقره ع ٢٣)

3. और सब्र करने वाले तंगदस्ती में और बीमारी में और ख़ौफ़ व क़िताल के वक़्त।

(बक़रः, रूकूअ 22)

यह आयते शरीफ़ा पहली फ़स्ल के नं॰ 1 पर पूरी गुज़र चुकी।

(٤) وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ٥ (بقره ع ٢٣)

4. और अल्लाह तआला सब्र करने वालों के साथ है।

(बक़र:, रूकूअ 23)

इस मज़्मून की आयत कुरआन पाक में बहुत जगह नाज़िल हुई। बार बार अल्लाह तआला शानुहू यह मुज़्दा (खुश खबरी) और तसल्ली फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला सब्र करने वालों के साथ है।

(٥) اَلصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰدِقِيْنَ (ال عمران ع ٢)

5. यह आयते शरीफ़ा इसी फ़स्ल के नं॰ 1 पर पूरी गुज़र चुकी।

(٦) وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْـًٔا (ال عمران ع ١٣)

6. अगर तुम सब्र करो और अल्लाह से डरते रहो तो उन (काफ़िरों) का कोई मक्र तुमको ज़रा सा भी नुक़सान नहीं पहुँचा सकता।

(आले इमरान, रूकूअ 13)

(٧) اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جَاهَدُوْا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ (ال عمران ع ١٤)

7. क्या तुम यह गुमान करते हो कि जन्नत में दाख़िल हो जाओगे, हालांकि अल्लाह तआला शानुहू ने अभी तक नहीं जाना (यानी अभी तक इम्तिहान नहीं लिया) उन लोगों को, जिन्होंने तुम में से जिहाद किया और नहीं जाना (और जांचा) सब्र करने वालों को (और यह बात याद रखना चाहिए कि दीन के लिए हर कोशिश जिहाद में दाख़िल है।)

(आले इमरान, रूकूअ 14)

(٨) وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ (ال عمران ع ١٩)

8. अगर तुम सब्र करो और परहेज़गार बने रहो तो (बेहतर है,) क्योंकि सब्र और तक़्वा ताकीदी अहकाम में से हैं।

(आले इमरान, रूकूअ 19)

(٩) وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا عَلٰى مَا كُذِّبُوْا وَاُوْذُوْا حَتّٰى اَتٰـهُمْ نَصْرُنَا (انعام ع ٤)

9. बहुत से रसूल जो आपसे पहले हुए हैं उनकी भी (बे ईमानों की तरफ़ से) तकज़ीब की गयी (और उनको सख़्त तक्लीफ़ें पहुँचाई गयीं) पस उन्होंने उस पर सब्र ही किया जो उनकी तकज़ीब की गयी और उनको तक्लीफ़ें पहुँचाई गयीं, यहां तक कि हमारी मदद उनको पहुँची (इसी तरह आप भी उनकी तकलीफ़ों पर सब्र करते रहें।)

(अनआम, रूकूअ 4)

(١٠) قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا ۚ إِنَّ الْأَرْضَ لِلّٰهِ يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۖ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ٥ قَالُوْا أُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ أَنْ تَأْتِيَنَا وَمِنْ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ۚ قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ أَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ٥ (اعراف ع ١٥)

10. हज़रत मूसा अलैहि॰ ने अपनी क़ौम से कहा कि अल्लाह से मदद चाहते रहो और सब्र करते रहो, ज़मीन अल्लाह तआला की है, जिसको चाहता है अपने बंदों में से उसका वारिस (और हाकिम) बना देता है, (चुनांचे इस वक़्त फ़िरऔन को दे रखी है) और आख़िर कामियाबी उन्हीं को होती है जो अल्लाह तआला से डरने वाले होते हैं। (अगर तुम सब्र और तक़्वा इख़्तियार करोगे तो अंजामकार तुम्हारी हो जायेगी हज़रत मूसा अलैहि॰ की) क़ौम ने कहा कि हम तो हमेशा मुसीबत ही में रहे, आपके तशरीफ़ लाने से पहले भी (हम पर मुसीबतें डाली जाती थीं और हमारी औलाद को क़त्ल किया जाता था) और आपके तशरीफ़ लाने के बाद भी (तरह तरह की मुसीबतें हम पर डाली जा रही हैं) हज़रत मूसा अलैहि॰ ने कहा, बहुत जल्द हक़ तआला शानुहू तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर देंगे और बजाय उनके तुमको इस ज़मीन का मालिक बना देंगे, फिर तुम्हें देखेंगे कि तुम कैसा अमल करते हो (शुक्र और इताअत करते हो या नाक़दरी और मासियत करते हो, फिर जैसा तुम्हारा अमल होगा, वैसा तुम्हारे साथ बर्ताव होगा)

(आराफ़, रूकूअ 15)

(١١) إِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ۗ (توبه ع ١٤)

11. बिला शुब्ह अल्लाह तआला ने मुसलमानों से उनकी जानों को और उनके मालों को इस बात के एवज़ (बदले) ख़रीद लिया कि उनको जन्नत मिलेगी। *(तौबा, रूकूअ 14)*

फ़ायदा:- जब मुसलमानों का जान व माल सब अल्लाह तआला के हाथ फ़रोख़्त हो चुका है तो हक़ तआला शानुहू ऐसी चीज़ों में जो उसी की पैदा की हुई हैं और फिर मज़ीद यह कि उनको ख़रीद भी लिया जो चाहे तसर्रूफ़ करे बल्कि मुसलमानों के बेच देने का मुक़्तज़ा तो यह है कि अब ये ख़ुद मुश्तरी (ख़रीदने वाले) तक उसको ख़रीदा हुआ माल पहुँचाने की कोशिश करें और ख़ुद इस पर पेशक़दमी करते चे जायें कि वह ख़ुद अपनी ख़रीदी हुई चीज़ ले, तो उसमें भी रंज व क़लक़ करें।

(١٢) وَاتَّبِعْ مَا يُوحٰى إِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ ج وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ○ (یونس ع ١١)

12. आप उसका इत्तिबाअ करते रहें जो कुछ आपके पास वही भेजी जाती है और (उनकी ईज़ा पर) सब्र कीजिए यहां तक कि अल्लाह तआला शानुहू (ख़ुद ही उनका) फ़ैसला कर देंगे (चाहे दुनिया में हलाकत से करें या आख़िरत में अज़ाब से) और वे सब फ़ैसला करने वालों में बेहतरीन फ़ैसला करने वाले हैं। *(सूर: यूनुस, रूकूअ 11)*

(١٣) وَلَئِنْ أَذَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنٰهَا مِنْهُ ج إِنَّهُ لَيَئُوسٌ كَفُورٌ ○ وَلَئِنْ أَذَقْنٰهُ نَعْمَاءَ بَعْدَ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ ذَهَبَ السَّيِّاٰتُ عَنِّي ط إِنَّهُ لَفَرِحٌ فَخُورٌ ﴿﴾ إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ط أُولٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ○ (هود ع ٢)

13. और अगर हम आदमी को अपनी मेहरबानी का मज़ा चखा कर (राहत व दौलत वग़ैरह देकर) उससे छीन लेते हैं तो वह बहुत ना उम्मीद हो जाता है और नाशुक्री करने लगता है, और अगर उसको किसी तक्लीफ़ के बाद जो उस पर वाक़ेअ हुई हो, किसी नेमत का मज़ा चखा देते हैं तो (बेफ़िक्र होकर) कहने लगता है कि मेरी बुराईयों का दौर ख़त्म हो गया, (फिर वह) इतराने लगता है, शैख़ी मारने लगता है (हालांकि न पहली चीज़ मायूसी और नाशुक्री की थी, न दूसरी हालत अकड़ने व इतराने की) अलबत्ता जो लोग साबिर हैं और नेक अमल करने वाले हैं

(वे न किसी मुसीबत में अल्लाह की रहमत से मायूस होते हैं, न राहत व सरवत में शैख़ी मारते हैं,) यही लोग हैं, जिनके लिए बड़ी मग़्फ़िरत और बड़ा अज्र है। (सूरः हूद, रूकूअ 2)

(١٤) اِنَّهٗ مَنْ يَّتَّقِ وَيَصْبِرْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝ (يوسف ع ١٠)

14. बेशक जो शख़्स अल्लाह से डरता है और (मुसीबतों पर) सब्र करता है तो अल्लाह तआला ऐसे नेक काम करने वालों का अज्र ज़ाया नहीं करता। (सूरः युसूफ़, रूकूअ 10)

(١٥) اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝ الَّذِيْنَ يُوْفُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَلَا يَنْقُضُوْنَ الْمِيْثَاقَ ۝ وَالَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ يُّوْصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُوْنَ سُوْٓءَ الْحِسَابِ ۝ وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً وَّيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ۝ جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ۝ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ۝ (رعد ع ٣)

15. इसके सिवा दूसरी बात ही नहीं कि नसीहत तो समझदार ही क़ुबूल करते हैं, ये ऐसे लोग हैं जो कि अल्लाह से जो कुछ उन्होंने अह्द किया, उसको पूरा करते हैं और उस (अहद) को तोड़ते नहीं और यह ऐसे लोग हैं कि जिनके ताल्लुक़ात को (रिश्तेदारी वग़ैरह के) क़ायम रखने का अल्लाह ने हुक्म किया है, उनको बाक़ी रखते हैं। (उनको तोड़ते नहीं) और अपने रब से डरते रहते हैं और (क़ियामत के दिन के) हिसाब की सख़्ती से डरते हैं, और यही लोग हैं जो अपने रब की ख़ुशनूदी की ख़ातिर (मुसीबतों पर) सब्र करते हैं और नमाज़ को क़ायम रखते हैं और जो कुछ हमने उनको दिया है उससे मख़्फ़ी तौर पर भी और ऐलानिया भी ख़र्च करते हैं, और बुराई को भलाई से दफ़ा करते हैं (यानी कोई उनके साथ बद सुलूकी करे तो ये फिर भी उसके साथ हुस्ने सुलूक करते हैं) यही लोग हैं जिनके लिए पिछला घर है यानी हमेशा रहने वाली जन्नतें, जिसमें ये लोग दाख़िल होंगे और (उनके साथ) उनके मां बाप और बीवियों और औलाद में जो (जन्नत में दाख़िल होने के)

लायक़ होंगे (यानी मोमिन होंगे, अगरचे वे आमाल और दर्जों के एतिबार से उनके बराबर न हों, दाख़िल होंगे) और फ़रिश्ते उन लोगों के पास जन्नत के हर दरवाज़े से हाज़िर होकर सलाम करेंगे (या सलामती की बशारत देंगे कि तुम हर आफ़त से अब महफ़ूज़ रहोगे) यह सब कुछ इसी वजह से है कि तुमने सब्र किया था (और दीन पर मज़बूत क़ायम रहे थे) पस क्या ही अच्छा है पिछला घर। *(रअ्द, रूकूअ 3)*

फ़ायदा:- हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि जन्नत में सबसे अदना दर्जे का आदमी जो होगा, उसको एक महल साफ़ शफ़्फ़ाफ़ मोती का मिलेगा, जिसमें सत्तर हज़ार कमरे होंगे और हर कमरे में सत्तर हज़ार दरवाज़े होंगे और हर दरवाज़े से सत्तर हज़ार फ़रिश्ते सलाम करने के लिए आयेंगे।

(١٦) وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۵ۙ وَذَكِّرْهُمْ بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۵ (ابراهيم ع ١)

16. और हमने मूसा अलैहिस्सलाम को अपनी निशानियां देकर भेजा कि अपनी क़ौम को अंधेरों से रोशनी की तरफ़ निकाल कर लाओ और उनको अल्लाह तआला के मामलात याद दिलाओ (कि जिन पर इनाम हुआ तो कैसा कैसा हुआ और अज़ाब हुआ तो कैसा सख़्त हुआ,) बेशक इन मामलात में इबरतें हैं हर सब्र करने वाले के लिए और हर शुक्र करने वाले के लिए (कि अल्लाह की नेमतों पर शुक्र करे और मुसीबतों पर सब्र करे कि सब्र व शुक्र दोनों उसके यहां मतलूब और मर्ग़ूब हैं।) *(इब्राहीम, रूकूअ 1)*

(١٧) وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِى اللّٰهِ مِنْ ۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً ؕ وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۵ۙ الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۵ (نحل ع ٦)

17. और जिन लोगों ने अल्लाह के वास्ते अपना वतन छोड़ दिया (यानी हिजरत करके दूसरी जगह चले गये) बाद इसके कि उन पर (कुफ़्फ़ार की तरफ़ से) ज़ुल्म किया गया था, हम उनको दुनिया में ज़रूर अच्छा ठिकाना देंगे और आख़िरत का सवाब (इस दुनिया के ठिकाने से भी) बहुत बढ़ा हुआ है, काश इन लोगों को (उसकी ख़ूबियों की और बड़ाई की) ख़बर होती। ये वे लोग हैं जिन्होंने (अपनी मुसीबतों पर) सब्र

किया और ये लोग अपने अल्लाह पर तवक्कुल करते हैं। (घर छोड़ते वक़्त यह नहीं सोचते कि दारूल इस्लाम में जाकर खाने पीने की क्या सूरत होगी।) *(नह्ल, रूकूअ 6)*

(١٨) وَاِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ط وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ ۝ وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ ۝ اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ۝ (نحل ع ١٦)

18. और अगर तुम (अपने ऊपर ज़ुल्म करने वालों से) बदला लो तो उतना ही बदला लो जितना तुम्हारे साथ बर्ताव किया गया। (और इस वजह से कि दूसरे ने ज़ुल्म की इब्तिदा की है तुम बदले में उससे कहीं ज़्यादा बदला ले लो, इसका हक़ हरगिज़ नहीं है। यह तो जब है जब तुम बदला लेना ही चाहो) और अगर तुम सब्र कर जाओ तो यह बात तो साबिर लोगों के लिए बहुत अच्छी चीज़ है (इसके बाद ख़ास तौर से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़िताब है कि आपकी शान बदला लेने से बुलंद है, इसलिए) आप तो सब्र करें और नहीं है आपका सब्र करना मगर अल्लाह तआला ही की तौफ़ीक़ से, और उन लोगों (की मुख़ालफ़त) पर रंज न कीजिए और जो कुछ भी (मुख़ालिफ़ीन आपकी मुख़ालफ़त में) तदबीरें करते हैं उससे तंगदिल न होजिए (कि ये आपका कुछ भी नहीं कर सकते, इसलिए कि आप साहबे तक़्वा और साहबे एहसान हैं) और अल्लाह तआला उनके साथ होता है जो मुत्तक़ी हों और एहसान करने वाले हों। *(नह्ल, रूकूअ 16)*

(١٩) اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۝ (كهف ع ١)

19. हमने ज़मीन के ऊपर की सब चीज़ों को ज़मीन के लिए ज़ीनत बनाया है ताकि हम उसके ज़रिए से लोगों का इम्तिहान लें कि कौन शख़्स ज़्यादा अच्छे अमल करता है। *(कह्फ़, रूकूअ 1)*

हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह आयते शरीफ़ा तिलावत फ़रमाई, मैं ने इसका मतलब दर्याफ़्त किया तो हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि ताकि हक़ तआला शानुहू इसका इम्तिहान

लें कि कौन ज़्यादा अक्लमंद है (जो अक़्ल की बात को इख़्तियार करे) और कौन हक़ तआला शानुहू की नाजायज़ करदा चीज़ों से ज़्यादा एहतियात करता है और कौन अल्लाह तआला की इताअत में जल्दी करता है। हज़रत हसन रज़ि॰ कहते हैं कि इम्तिहान इसका है कि दुनिया को छोड़ने में ज़्यादा सख़्त कौन है? और सुफ़ियान सोरी रह॰ फ़रमाते हैं कि इम्तिहान इसका है कि दुनिया में ज्यादा ज़ाहिद कौन है? (दुर्रे मंसूर)

यानी दुनिया की नेमतों और लज़्ज़तों से सब्र करने वाला कौन सबसे ज़्यादा है।

(٢٠) فَاصْبِرْ عَلٰى مَايَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا ۚ وَمِنْ اٰنَآئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ وَاَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضٰى (طٰهٰ ع٨)

20. पस आप उनकी बातों पर सब्र कीजिए और अपने रब की हम्द के साथ उसकी तस्बीह किया कीजिए (जिसमें अल्लाह तआला की हम्द व सना और नमाज़ सब दाख़िल हैं।) आफ़ताब निकलने से पहले (जिसमें सुबह की नमाज़ भी आ गयी) और आफ़ताब ग़ुरूब होने से पहले (जिसमें ज़ुहर, अस्र की नमाज़ भी आ गयी) और रात के हिस्से में भी तस्बीह किया कीजिये (जिसमें मग़रिब, इशा की नमाज़ भी आ गई) दिन के अव्वल हिस्से में और आख़िर हिस्से में (तस्बीह के लिए मुकर्रर (दोबारा) कहा जाता है, जिसमें सुबह और अस्र की नमाज़ की ज़्यादा ताकीद आ गयी। चुनांचे बहुत सी अहादीस में इनकी ख़ास ताकीद आयी है और सुबह शाम की तस्बीहें भी आ गयीं) ताकि (आपको इन सब चीज़ों पर जो आख़िरत का बहुत ज़्यादा सवाब मिले, उससे) आप ख़ुश हो जायें। *(ताहा, रूकूअ 8)*

(٢١) وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ۙ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَآ اَصَابَهُمْ وَالْمُقِيْمِى الصَّلٰوةِ ۙ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝ (حج ع٥)

21. और आप (अल्लाह के हुक्म के सामने) गर्दन झुका देने वालों को ख़ुशख़बरी (अल्लाह की रिज़ा और जन्नत की) सुना दीजिए, जो ऐसे लोग हैं कि जब उनके सामने अल्लाह तआला का ज़िक्र किया

जाए तो उन के दिल (उसकी अज़्मत और ख़ौफ़ से) डर जाते हैं, और जो उन पर मुसीबत पड़ती है उस पर सब्र करते हैं और जो नमाज़ की पाबंदी करते हैं और उस चीज़ से जो हमने उनको दी है ख़र्च करते हैं।

(सूर: हज, रूकूअ 5)

यह आयत पहली फ़स्ल के नं॰ 16 पर मुफ़स्सल गुज़र चुकी है।

(۲۲) الٓمّٓ ۚ اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْٓا اَنْ يَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ ○ وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِيْنَ ○ اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ اَنْ يَّسْبِقُوْنَا ۭ سَاۗءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ○ (عنكبوت ع١)

22. क्या लोगों ने यह गुमान कर रखा है कि वे महज़ इतना कहने पर छूट जाएंगे, कि हम तो मुसलमान हैं और उनको (मुख़्तलिफ़ अनवाअ् की मसाइब से) आज़माया न जाएगा? (ऐसा नहीं हो सकता, यह दुनिया इम्तिहान का घर है) और हम तो उन लोगों का इम्तिहान ले चुके हैं जो इनसे पहले गुज़रे (उनमें भी) बाज़ अपने दावों में सच्चे निकले और बाज़ झूठे। इसी तरह अब भी अल्लाह तआला (इम्तिहानी क़ायदे से) जान कर रहेगा। उन लोगों को जिन्होंने (अपने ईमान और मुहब्बत के दावों में) सच कहा और उन लोगों को जिन्होंने झूठ बोला (चुनांचे ऐसे ही इम्तिहानात में जो सच्चे मुसलमान हैं वे इन हवादिस से और ज़्यादा अल्लाह तआला की तरफ़ रूजूअ् हो जाते हैं, और जो नालायक़ हैं वे और ज़्यादा गुमराही में मुब्तिला हो जाते हैं, हत्ताकि बाज़ मुर्तद होकर इस्लाम ही छोड़ बैठते हैं या मसाइब के डर से बुराईयों की हिमायत शुरू कर देते हैं) हां, तो ये लोग जो बुराईयां कर रहे हैं क्या यह समझ रहे हैं कि हमसे कहीं निकल जायेंगे, उनकी यह तजवीज़ निहायत बेहूदा है।

(अनकबूत, रूकूअ 1)

(۲۳) نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ○ الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ○ وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَاۗبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ۤ اَللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ○ (عنكبوت ع٦)

23. नेक काम करने वालों का क्या ही अच्छा अज्र है, वे लोग जिन्होंने (मुसीबतों पर) सब्र किया और वे (हर तंगी में रोज़ी की तरफ़ से हो या और किसी बात से) अपने रब पर भरोसा रखते हैं (और अगर

तुम्हें यह ख़्याल हो कि आख़िर मआश का ज़रिया क्या होगा तो आख़िर यह सोचो कि) बहुत से जानवर ऐसे हैं जो अपनी रोज़ी उठाकर नहीं रखते अल्लाह तआला ही उनको रोज़ी देता है और वही तुमको भी रोज़ी देता है वह (हर मांगने वाले की बात को) सुनने वाला है और (हर शख़्स के हाल को) जानने वाला है (उसी से मांगो, वह तुम्हारी हालत से बख़ूबी वाक़िफ़ है, जितना मुनासिब समझेगा, अता करेगा।)

(अन्‌कबूत, रूकूअ 6)

(٢٤) اِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ٥(زمر ع ٢)

24. इसके सिवा दूसरी बात नहीं कि सब्र करने वालों को उनका बदला बे हिसाब, (बेशुमार) मिलता है। (ज़ुमर, रूकूअ 2)

(٢٥) وَلَا تَسْتَوِى الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ اِدْفَعْ بِالَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِىْ بَيْنَكَ وَبَيْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِىٌّ حَمِيْمٌ ٥ وَمَا يُلَقّٰهَآ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا ۚ وَمَا يُلَقّٰهَآ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ٥ وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۖ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ٥ (حٰم سجده ع ٥)

25. और भलाई और बुराई कभी बराबर नहीं होती (बल्कि हर एक के नतीजे और असरात जुदा जुदा हैं, जब यह बात है तो) आप (और इसी तरह आपका इत्तिबाअ़ करने वाले भी) बुराई को नेकी के साथ हटाया कीजिए, फिर एकदम वह शख़्स, जिसमें और आप में अदावत है ऐसा हो जायेगा जैसा कि दिली दोस्त होता है। (यानी बुराई का बदला बुराई से करना अदावत को कम नहीं किया करता बल्कि बढ़ाया करता है, और बुराई का बदला एहसान से करना, अगर दूसरा बिल्कुल ही कमीना न हो तो उसको अदावत छोड़ने पर मजबूर कर देता है, हत्ताकि वह एहसान मंद होकर दोस्त बन जाता है, लेकिन चूंकि बुराई और ईज़ा रसानी का बदला एहसान से करना बहुत दुश्वार है इसलिए इर्शाद है कि) और यह आदत उन्हीं को दी जाती है जो साबिर हों (कि मसाइब का तहम्मुल उनकी आदत हो गयी हो) और यह आदत उसी को दी जाती है जो बड़ा साहिबे नसीब हो, और अगर ऐसे वक़्त आपको शैतान की तरफ़ से कुछ वसवसा आने लगे (मसलन यही कि उसके

साथ भलाई करने से अपनी तौहीन होगी या उसका हौसला बढ़ जायेगा वग़ैरह वग़ैरह) तो अल्लाह की पनाह मांग लिया कीजिए।

(हामीम सज्द:, रूकूअ 5)

(٢٦) لَايَسْئَمُ الْاِنْسَانُ مِنْ دُعَآءِ الْخَيْرِوَاِنْ مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَئُوْسٌ قَنُوْطٌo وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِنْ 'بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ هٰذَالِيْ (حٰمٓ سجده ع ٦)

26. आदमी का दिल तरक़्क़ी की ख़्वाहिश से कभी नहीं भरता और अगर उसको कुछ तक्लीफ़ पहुँच जाये तो बिल्कुल मायूस, ना उम्मीद बन जाता है (हालांकि अल्लाह की ज़ात से ना उम्मीद कभी भी नहीं होना चाहिए) और अगर उस तक्लीफ़ के बाद जो उसको पहुँची, हम अपनी रहमत का मज़ा चखायें तो कहता है कि यह तो (आईनी तौर पर) मेरा हक़ है ही (हालांकि न अल्लाह तआला की ज़ात से ना उम्मीद होना चाहिए, न अपना कोई इस्तिहक़ाक़ है।) *(हामीम सज्द:, रूकूअ 6)*

(٢٧) وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ۗ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَo وَلَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهٖ فَاُولٰٓئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِّنْ سَبِيْلٍ ۗo اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَظْلِمُوْنَ النَّاسَ وَيَبْغُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ o وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ o (شورٰى ع ٤)

27. और बुराई का बदला उसी क़िस्म की बुराई है (यानी जिस क़िस्म की बुराई किसी ने की, उसी क़िस्म की बुराई से बदला लिया जा सकता है, बशर्ते कि वह फ़ेअल जायज़ हो, मसलन सख़्त कलामी का बदला सख़्त कलामी, मार का बदला मार है, यह नहीं कि सख़्त कलामी का बदला मार से लिया जाए) फिर जो शख़्स (बदला ही न ले बल्कि) माफ़ कर दे और इस्लाह करे (यानी उसके साथ अच्छाई का बर्ताव करे) तो उसका अज्र अल्लाह तआला के ज़िम्मे है। वाक़ई अल्लाह तआला ज़ालिमों को महबूब नहीं रखते, और जो अपने ऊपर ज़ुल्म होने के बाद बराबर का बदला ले ले, पस ऐसे लोगों पर कोई इल्ज़ाम नहीं होता। इल्ज़ाम सिर्फ़ उन्हीं लोगों पर है जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं और दुनिया में सरकशी करते हैं। ऐसे लोगों के लिए दर्दनाक अज़ाब है और जो

(दूसरों के ज़ुल्म पर) सब्र करे और (उसको) माफ़ कर दे, यह अलबत्ता बड़ी हिम्मत के कामों में से है। (यानी मज़ालिम पर सब्र करना और माफ़ करना बड़ी उलुल अज़मी (हिम्मत) की बात है।)

(शूरा, रूकूअ 4)

(٢٨)تَبٰرَكَ الَّذِیْ بِیَدِهِ الْمُلْكُ ز وَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرُ o بِالَّذِیْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَیٰوةَ لِیَبْلُوَكُمْ اَیُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا (ملك ع ١)

28. वह (पाक ज़ात) बड़ी आलीशान है जिसके क़ब्ज़े में तमाम मुल्क है (सारी दुनिया की सल्तनतें उसी के कब्ज़े में हैं) और वह हर चीज़ पर क़ादिर है। वह (पाक) ज़ात है जिसने मौत और ज़िन्दगी को इसलिए पैदा किया ताकि तुम्हारा इम्तिहान करे कि कौन शख़्स अमल में ज़्यादा अच्छा है। हज़रत क़तादा रज़ि॰ कहते हैं कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने इस घर को ज़िन्दगी और मौत का घर बनाया है और आख़िरत के घर को बदला और बक़ा का घर बनाया है। इस घर की सारी तकालीफ़ का मुन्तहा मौत है, और वह बहरहाल आने वाली चीज़ है, और उस घर की तक्लीफ़ की कोई इन्तिहा ही नहीं कि वहां मौत भी नहीं है।

(सूरः मुल्क, रूकूअ 1)

(٢٩) هَلْ اَتٰی عَلَی الْاِنْسَانِ حِیْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ یَكُنْ شَیْئًا مَّذْكُوْرًا o اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ ق نَّبْتَلِیْهِ فَجَعَلْنٰهُ سَمِیْعًا بَصِیْرًا o اِنَّا هَدَیْنٰهُ السَّبِیْلَ اِمَّا شَاكِرًا وَّاِمَّا كَفُوْرًا o (دهر ع ١)

29. बेशक इंसान पर ज़माने में एक ऐसा वक़्त आ चुका है कि वह कुछ भी क़ाबिले ज़िक्र न था (कि उससे पहले मनी था और उससे पहले वह भी न था) हमने उसको नुत्फ़-ए-मख़्लूत से (यानी मां बाप की मनी के मिलने से) पैदा किया, कि हम उसको जांचें, फिर हमने उसको सुनता, देखता, बनाया (यानी आंख कान दिए कि हक़ बात ख़ुद देखे या दूसरों से सुने, फिर) हमने उसको (भलाई का) रास्ता बता दिया (फिर वे आदमी दो तरह के हो गए) या तो शुक्र गुज़ार (और मोमिन बन गया) या नाशुक्री करने वाला (काफ़िर) बन गया। *(दहर, रूकूअ 1)*

फ़ायदा:- जब यह दारूल इम्तिहान है, ऐसी हालत में किसी हालत पर भी नाशुक्री करते हुए यह सोचना ज़रूरी है कि अल्लाह के कितने इनामात ऐसे

हैं जिन पर शुक्र इस तक्लीफ़ और मुसीबत से ज़्यादा ज़रूरी है।

(٣٠) فَاَمَّا الْاِنْسَانُ اِذَا مَا ابْتَلٰهُ رَبُّهٗ فَاَكْرَمَهٗ وَنَعَّمَهٗ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ اَكْرَمَنِ ۝ وَاَمَّآ اِذَا مَا ابْتَلٰهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهٗ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ اَهَانَنِ ۝ كَلَّا بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ ۝ وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝ وَتَاْكُلُوْنَ التُّرَاثَ اَكْلًا لَّمًّا ۝ وَّتُحِبُّوْنَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ۝ كَلَّآ اِذَا دُكَّتِ الْاَرْضُ دَكًّا دَكًّا ۝ وَّجَآءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۝ وَجِايْٓءَ يَوْمَئِذٍ بِجَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ يَّتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ وَاَنّٰى لَهُ الذِّكْرٰى ۝ يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ قَدَّمْتُ لِحَيَاتِيْ ۝ (الفجر ع ١)

30. पस आदमी का जब हक़ तआला शानुहू इम्तिहान लेता है, पस (इम्तिहान के तौर पर कभी) उस पर इनाम व इकराम फ़रमाता है(माल का, जाह का और इस क़िस्म की चीज़ों का, ताकि इन चीज़ों में अल्लाह तआला की शुक्र गुज़ारी का इम्तिहान हो और यह जांचा जाए कि अल्लाह की इन नेमतों में क्या कार गुज़ारी की, यह माल और जाह उसके रास्ते में ख़र्च हुए या नाराज़ी में) तो वह कहता है कि मेरे रब ने मेरा इक्राम किया (यानी अपने मुकर्रम और मुअज़्ज़ज़ होने का घमंड शुरू हो जाता है हालांकि यह घमंड की चीज़ नहीं है, और अगरचे अल्लाह का शुक्र उसकी नेमतों पर बहुत ज़रूरी है मगर उसके साथ ही इन नेमतों के इम्तिहानी पहलू का ख़ौफ़ भी ज़रूरी है, और जब हक़ तआला शानुहू को आदमी का दूसरी तरह इम्तिहान करना मक़्सूद होता है) और उसको जांचता है। इस तरह पर कि उसकी रोज़ी उस पर तंग कर देता है (जिससे उसके सब्र और रिज़ा का इम्तिहान मक़्सूद होता) तो कहता है कि मेरे रब ने मुझे ज़लील कर दिया। (यानी मेरे इस्तिहक़ाक़ के इक्राम के बावजूद मुझे नज़रों से गिरा रखा है, हालांकि न माल व दौलत इक्राम की दलील है न फ़क्र व फ़ाक़ा इहानत की दलील है), हरगिज़ नहीं, (यह बात बिल्कुल नहीं है कि रोज़ी की तंगी इहानत की बात हो) बल्कि (मूजिबे इहानत ये चीज़ें हैं कि) तुम लोग यतीम का इक्राम नहीं करते और दूसरों को भी मिस्कीन को खाना खिलाने की तर्ग़ीब नहीं देते, और मीरास का माल सारा खा जाते हो (और दूसरों का हक़ भी हज़्म कर जाते हो, बिलख़ुसूस यतीमों और ज़ओफ़ों का जो तुमसे लड़ भी न सकते

हों) और तुम माल से बहुत ही मुहब्बत रखते हो (जो जड़ है सारी बुराईयों की, सारे मज़ालिम की, सारे उयूब की, इसलिए कि दुनिया की मुहब्बत हर ख़ता की जड़ है, तुम लोग इन चीज़ों को हल्का समझते हो) हरगिज़ नहीं (ये मामूली चीज़ें नहीं हैं बल्कि) जिस वक़्त ज़मीन को तोड़कर रेज़ा रेज़ा कर दिया जाएगा और आपका रब और फ़रिश्ते जूक़ जूक़ (मैदाने हश्र में) आयेंगे और उस दिन जहन्नम को (सामने) लाया जाएगा, उस दिन आदमी को समझ आयेगी और उस वक़्त समझ आने का वक़्त कहां (रहेगा, उस दिन का समझ में आना कारआमद नहीं) उस दिन आदमी कहेगा कि काश! मैं आज की ज़िन्दगी के वास्ते कुछ ज़ख़ीरा आगे भेज देता। *(सूरः फ़ज्र, रुकूअ 1)*

(٣١) بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○ وَالْعَصْرِ ۙ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ۙ اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ○

31. क़सम है ज़माने की (कि जिसके तग़य्युरात मूजिबे इब्रत हैं, कहीं रंज, कहीं ख़ुशी, कहीं सरवत, कहीं गुर्बत, कहीं सेहत, कहीं बीमारी) कि इंसान (अपनी अज़ीज़ उम्र को ज़ाया करके) बड़े ख़सारे में है, मगर वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे अमल किए और एक दूसरे को हक़ (बात कहने की और हक़ पर क़ायम रहने की) वसीयत (और ताकीद) करते रहे, और एक दूसरे को सब्र की वसीयत करते रहे (जिसमें ताआत पर एहतिमाम भी दाख़िल है, और शहवतों और ना जायज़ उमूर से नफ़्स को रोकना भी दाख़िल है और मसाइब और ज़माने के हवादिस पर सब्र करना भी दाख़िल है।) *(सूरः अस्र)*

ये इकत्तीस आयात इशारे के तौर पर ज़िक्र की गयी हैं। हर आयतें शरीफ़ा पर अगर फ़ायदा और तंबीह लिखी जाये तो बहुत तवील हो जाए, मुश्तरका तरीक़े से ये मज़्मून सब ही में मुश्तरक है कि यह दुनिया इम्तिहान की जगह है। जिसकी न दौलत, इज़्ज़त बाअिसे गुरूर व इफ़्तिख़ार, न फ़ाक़ा व फ़क्र बाअिसे इहानत और हिक़ारत है। माल का वजूद भी मूजिबे शुक्र होने के साथ इम्तिहान का एक मज़्मून है जैसा कि फ़क्र व फ़ाक़ा भी मूजिबे सब्र होने के अलावा रिज़ा का इम्तिहान है और माल का वजूद इम्तिहान के एतिबार से ज़्यादा सख़्त है, इसलिए कि इस इम्तिहान में आदमी बहुत कम पास होते हैं, फ़ैल

ज़्यादा होते हैं। इसी वजह से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि मुझे तुम्हारे ऊपर फ़क्र व फ़ाक़े का इतना ख़ौफ़ नहीं है जितना इस बात का ख़ौफ़ है कि दुनिया की फ़ुतूहात और उसकी नेमतें तुम पर फैल जाएं और तुम उसमें ऐसा दिल लगाकर बैठो जैसा कि पहले लोग उसके साथ दिल लगा बैठे। पस यह आफ़त तुम्हें भी हलाक कर दे जैसा कि उनको हलाक कर चुकी है। इस लिए इसके फ़ित्ने से बहुत ज़्यादा बचना चाहिए और नादारी और मसाइब को भी इम्तिहान की हैसियत से बर्दाश्त करना चाहिए।

(٣) إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ آيَاتُهُ زَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝ الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ۝ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا ۚ لَّهُمْ دَرَجَاتٌ عِندَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ۝

3. इसके सिवा दूसरी बात ही नहीं कि ईमान वाले तो ऐसे लोग होते हैं कि जब (उनके सामने) अल्लाह तआला का ज़िक्र आता है (तो उसकी अज़्मत व ख़ौफ़ से) उनके दिल डर जाते हैं और जब अल्लाह तआला की आयतें उनको पढ़कर सुनाई जायें तो वे आयतें उनके ईमान को मज़बूत कर दें, और वे सिर्फ़ अपने रब ही पर तवक्कुल करते हैं, और नमाज़ को क़ायम करते हैं। और जो कुछ हमने उनको दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं, पस ईमान वाले हक़ीक़तन यही लोग हैं, उनके लिए बड़े बड़े दर्जे अल्लाह तआला के पास हैं और (उनके लिए उनके गुनाहों से) माफ़ी है और इज़्ज़त की रोज़ी है। *(सूर: अन्फ़ाल, रुकूअ 1)*

फ़ायदा:- यह आयते शरीफ़ा पहली फ़स्ल के नं॰ 13 पर भी गुज़र चुकी है, यहां इसलिए दोबारा लिखी है कि हक़ीक़ी मोमिन की शान सिर्फ़ अल्लाह जल्ल शानुहू पर तवक्कुल करना, उसी पर ऐतिमाद करना, उसी पर भरोसा करना, उसके ग़ैर की तरफ़ इल्तिफ़ात न करना, इस आयते शरीफ़ा में वारिद है, और इस पर दर्जात बुलंद होना, गुनाहों का माफ़ होना और इज़्ज़त की रोज़ी का वायदा मज़कूर है। इनमें से हर चीज़ ऐसी है कि वह तंहा भी तवक्कुल पर इंतिहाई कोशिश का मूजिब होती है, चे जाये कि तीन ऐसे ऊँचे वायदे उस पर अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से हों, उस के बाद जितनी भी इस सिफ़त के हासिल करने की कोशिश की जाए, कम है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि अल्लाह पर तवक्कुल का

मतलब यह है कि उसके ग़ैर से कोई उम्मीद न रखी जाए। हज़रत सईद बिन ज़ुबैर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि अल्लाह पर तवक्कुल ईमान का मजमूआ है।

(दुर्रे मंसूर)

अगर क़ुरआन पाक में सिर्फ़ एक ही आयत अल्लाह पर ऐतिमाद और भरोसे के मुताल्लिक़ नाज़िल होती तब भी बहुत काफ़ी थी, लेकिन क़ुरआन पाक में इस कसरत से अल्लाह पर ऐतिमाद और सिर्फ़ उसी पाक ज़ात पर ऐतिमाद करना और मसाइब और हाजात में सिर्फ़ उसी को पुकारना और उसी से मदद चाहना, उसी पर नज़र रखना वारिद हुआ है कि बहुत कम दूसरे मज़ामीन इतनी कसरत से वारिद हुए होंगे। बार बार इसी का हुक्म है और नेक और पसंदीदा लोगों के अहवाल में इसी का ज़िक्र है, इसी की तर्ग़ीब है और होना भी चाहिए कि हक़ीक़त में तवक्कुल तौहीद का समरा है, जो शख़्स तौहीद में जितना ज़्यादा पुख़्ता होगा उतना ही उसका तवक्कुल बढ़ा हुआ होगा। और चूंकि तौहीद ही इस्लाम की बुनियाद है, ईमान की जड़ है, बग़ैर तौहीद के कोई चीज़ भी मोतबर नहीं सारे मज़हब और सारी शरीअत का मदार तौहीद ही पर है, इसलिए जितना भी इसका एहतिमाम वारिद हो, ज़ाहिर है और फिर अल्लाह जल्ल शानुहू ने क़ुरआन पाक में इतना ऊँचा परवाना-ए-रिज़ा तवक्कुल पर इर्शाद फ़रमाया है कि मर मिटने के क़ाबिल है। अल्लाह का पाक इर्शाद है कि अल्लाह तआला तवक्कुल करने वालों को महबूब रखता है। सिफ़ते महबूबियत के बराबर कोई सिफ़त दुनिया में हो सकती है? कोई शख़्स मालिकुल मुल्क शहंशाहे आलम का महबूब बन जाए, इससे बढ़कर कौन सा इज़्ज़त व इफ़्तिख़ार का मक़ाम दुनिया या आख़िरत में हो सकता है। फिर उसकी ज़िम्मेदारी का भी अल्लाह पाक का वायदा है कि जो शख़्स अल्लाह पर तवक्कुल कर ले तो वह उसको काफ़ी है। भला फिर ऐसे शख़्स को किसी ज़रूरत के लिए किसी और की क्या हाजत बाक़ी रहेगी? इसी लिए हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद है कि अगर तुम लोग अल्लाह पर ऐसा तवक्कुल कर लो जैसा कि उसका हक़ है तो तुमको ऐसी तरह रोज़ी अता करे जैसा कि परिन्दों को अता करता है। एक और हदीस में है कि जो शख़्स अल्लाह तआला की तरफ़ बिल्कुल्लिया मुन्क़ता हो जाए तो हक़ तआला शानुहू उसकी हर मशक़्क़त की किफ़ायत फ़रमाता है और ऐसी तरह उस को रोज़ी अता करता है जिसका उसको गुमान भी न हो। *(एह्या)*

अहादीस के सिलसिले में पहली हदीस के ज़ैल में भी मुतअद्द

रिवायात इस मज़्मून के मुनासिब आ रही हैं। इस जगह भी हस्बे मामूल चंद आयात की तरफ़ इशारा करना मक़्सूद है जिनसे अल्लाह पर तवक्कुल और उसी की तरफ़ हाजात में रूजूअ् का इर्शाद वारिद है और सिर्फ़ नमूने के तौर पर चंद आयात ज़िक्र की जाती हैं कि इख़्तिसार के ख़्याल से हर जगह इज्माल और इशारात ही पर इक्तिफ़ा किया गया। अगर हम लोगों को दीन का कुछ ख़्याल हो, आख़िरत का एहतिमाम हो, दुनिया के बेकार मश्ग़लों से हमको थोड़ा बहुत वक़्त ख़ाली मिल जाए तो ये आयात और अहादीस बहुत इहतिमाम से बहुत ग़ौर व फ़िक्र से सोचने की चीज़ें हैं।

(١) وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ٥ (آل عمران ع ٢)

1. मोमिनों को सिर्फ़ अल्लाह तआला ही पर तवक्कुल करना चाहिए, यानी किसी दूसरे पर भरोसा ज़रा भी न करना चाहिए (आले इमरान, रूकूअ् 13) यह मज़्मून इन ही अल्फ़ाज़ के साथ क़ुरआन पाक में कई जगह वारिद हुआ है, बार बार नाज़िल हुआ है। (आले इमरान, रूकूअ 17), (माइदा, रूकूअ 2), (तौबा, रूकूअ 7), (इब्राहीम, रूकूअ 2), (मुजादला, रूकूअ 2), (तग़ाबुन, रूकूअ 1), इन सब आयात में यही इर्शाद है।

(٢) قُلْ اِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ ج يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ط وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ٥ لا يَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ط وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ٥ (آل عمران ع ٤)

2. (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप कह दीजिए कि बेशक फ़ज़्ल (जिसमें रोज़ी भी दाख़िल है) तो ख़ुदा के क़ब्ज़े में है, वह उसको जिसे चाहें अता कर दें, और अल्लाह तआला बड़ी वुस्अत वाले हैं, उनके यहां फ़ज़्ल की कमी नहीं, ख़ूब जानने वाले हैं। (कि किसको किस वक़्त कितना देना चाहिए), ख़ास कर देते हैं। अपनी रहमत (और फ़ज़्ल) के साथ जिसको चाहें और अल्लाह तआला बड़े फ़ज़्ल वाले हैं। *(सूरः आले इमरान, रूकूअ 8)*

(٣) اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ٥ (آل عمران ع ١٧)

3. हक़ तआला शानुहू तवक्कुल करने वालों को महबूब रखते हैं। *(आले इमरान, रूकूअ 17)*

फ़ायदा:- और जिसको अल्लाह तआला महबूब बना ले उसके उरूज (बुलन्दी) का क्या कहना।

(٤) اَلَّذِيْنَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ اِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوْا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ اِيْمَانًا ۖ وَّقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ۝ فَانْقَلَبُوْا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ سُوْٓءٌ ۙ وَّاتَّبَعُوْا رِضْوَانَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ ذُوْفَضْلٍ عَظِيْمٍ ۝ اِنَّمَا ذٰلِكُمُ الشَّيْطٰنُ يُخَوِّفُ اَوْلِيَآءَهٗ ۠ فَلَا تَخَافُوْهُمْ وَخَافُوْنِ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝ (ال عمران ١٨)

4. हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में एक ख़ास वाक़िए की तरफ़ इशारा है जिसमें इर्शाद है कि ये ऐसे लोग हैं कि जब इनसे लोगों ने कहा कि उन लोगों ने (यानी दुश्मनों ने) तुम्हारे (मुक़ाबले के) लिए बड़ा सामान जमा कर रखा है सो तुमको उनसे अंदेशा करना चाहिए, तो इस ख़बर ने उनके ईमान को और ज़्यादा मज़बूत कर दिया और कहने लगे कि हमें हक़ तआला शानुहू काफ़ी है (हर मुसीबत में वही किफ़ायत फ़रमाने वाला है) और वही बेहतरीन कारसाज़ है। पस ये लोग ख़ुदा की नेमत और फ़ज़्ल के साथ (उस मौक़े से ऐसी तरह) वापस हुए कि उनको कोई मज़र्रत न पहुँची और वे रिज़ा-ए-हक़ के ताबेअ रहे और अल्लाह तआला बड़े फ़ज़्ल वाला है। (मुसलमानों ! ऐसे हवादिस में एक बात समझ लो कि इस क़िस्म के वाक़िआत में) शैतान अपने दोस्तों से डराया करता है। तुम उनसे न डरा करो और सिर्फ़ मुझी से डरा करो अगर तुम मोमिन हो।

(आले इमरान, रूकूअ 18)

मतलब यह है कि जिस वक़्त दुश्मनों के मुक़ाबले और हमले की ख़बरें सुनो तो उससे ख़ौफ़ज़दा और मुतवह्हिश होने की बात नहीं है, अल्लाह पर ऐतिमादे कामिल और पूरा भरोसा रखते हुए अपनी इमकानी तैयारी करो। और ख़ौफ़ सिर्फ़ इस बात का रखो कि हमसे कोई बात मालिक की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ सादिर न हो कि असल हलाकत यही है जो दुनिया की भी हलाकत है और आख़िरत की हलाकत तो है ही। उसके अलावा किसी से ख़ौफ़ की बात नहीं है, इसलिए कि दूसरे आदमी इससे ज़्यादा तो कुछ नहीं कर सकते कि वे मार देंगे सो मौत बहरहाल आने वाली चीज़ है और अपने वक़्त से पहले आ नहीं सकती।

(٥) كَفٰى بِاللّٰهِ وَلِيًّا ۘ وَّكَفٰى بِاللّٰهِ نَصِيْرًا ۝ (نساء ع ٧)

5. अल्लाह तआला शानुहू तुम्हारी मदद (इआनत) के लिए भी काफ़ी है और तुम्हारी हि..यत के लिए भी काफ़ी है।

(निसा, रूकूअ 7)

(٦) وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۔ (نساء ع ١١)

6. आप अल्लाह ही पर तवक्कुल कीजिए, वह कारसाज़ होने के लिए काफ़ी है। (निसा, रूकूअ 11)

(٧) وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْآ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ٥ (مائده ع ٤)

7. सिर्फ़ अल्लाह ही पर भरोसा करो अगर तुम मोमिन हो।

(माइदा, रूकूअ 4)

(٨) قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ (انعام ع٢)

8. आप कह दीजिए क्या अल्लाह के सिवा किसी और को मददगार बनाऊँ, वह अल्लाह जो आसमान और ज़मीन का पैदा करने वाला है, वह सबको रोज़ी देता है उसको कोई (बवजह एहतियाज न होने के) रोज़ी नहीं देता। (अनआम, रूकूअ 2)

(٩) وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ؕ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ٥ (انعام ع٢)

9. अगर अल्लाह तआला तुझे कोई मज़र्रत पहुंचायें तो उसका दूर करने वाला उनके सिवा कोई नहीं और अगर वह कोई नफ़ा पहुंचायें तो (कोई रोकने वाला नहीं) वह हर चीज़ पर क़ादिर है।

(अनआम, रूकूअ 2)

(١٠) وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ٥ (انفال ع٧)

10. और जो शख़्स अल्लाह पर तवक्कुल करता है (तो वह अक्सर ग़ालिब रहता है, इसलिए कि) अल्लाह तआला बिला शुब्ह ज़बर्दस्त है (वह अपने ऊपर ऐतिमाद रखने वाले को ग़ालिब करता है और अगर कभी ऐसा न हो तो उसमें कोई हिक्मत होती है (क्योंकि) वह हकीम है। (अन्फ़ाल, रूकूअ 7)

(۱۱) وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۖ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ٥(انفال ع ٨)

11. आप अल्लाह पर तवक्कुल कीजिए बेशक, वह सुनने वाला है, जानने वाला है (लोगों की पुकार को भी सुनता है और उनके अह्वाल से भी बख़ूबी वाक़िफ़ है।) *(अन्फ़ाल, रूकूअ 8)*

(۱۲) وَإِذَا مَسَّ الْإِنسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنبِهِ أَوْ قَاعِدًا أَوْ قَائِمًا ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهُ مَرَّ كَأَن لَّمْ يَدْعُنَا إِلَىٰ ضُرٍّ مَّسَّهُ ۚ (یونس ع ۲)

12. जब इंसान को कोई तक्लीफ़ पहुँचती है तो हमको पुकारने लगता है, लेटे भी, बैठे भी, खड़े भी, फिर जब हम (उसकी आह व ज़ारी से) वह तक्लीफ़ हटा देते हैं तो फिर वह (हमसे ऐसा बे ताल्लुक़) हो जाता है गोया हमको किसी तक्लीफ़ के लिए पुकारा ही न था (यह बड़ी हिमाक़त है।) *(यूनुस, रूकूअ 2)*

(۱۳) قُلْ مَن يَرْزُقُكُم مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَمَّن يَمْلِكُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَمَن يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَن يُدَبِّرُ الْأَمْرَ ۚ فَسَيَقُولُونَ اللّٰهُ ۚ فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ٥(یونس ع ٤)

13. आप उनसे पूछें वह कौन है जो तुमको आसमान और ज़मीन से रिज़्क़ देता है या वह कौन है जो तुम्हारे कानों और आंखों का मालिक है और वह कौन है जो ज़िन्दा को मुर्दे से और मुर्दे को ज़िंदा से पैदा करता है। और वह कौन है जो सारे कामों की तदबीरें करता है, पस वे लामुहाला यही कहेंगे कि ये सब काम अल्लाह तआला ही करता है। फिर आप उनसे कहिए कि तुम फिर उससे क्यों डरते नहीं (दूसरे से क्यों डरते हो) *(यूनुस, रूकूअ 4)*

(١٤) وَقَالَ مُوسَىٰ يَا قَوْمِ إِن كُنتُمْ آمَنتُم بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوا إِن كُنتُم مُّسْلِمِينَ ٥ فَقَالُوا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ (یونس ع ٩)

14. (और मूसा अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम से) फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम, अगर तुम (सच्चे दिल से) अल्लाह पर ईमान रखते हो तो उस पर तवक्कुल करो, अगर तुम मुसलमान हो, पस उन लोगों ने (जवाब में) कहा कि हमने अल्लाह ही पर तवक्कुल किया। *(यूनुस, रूकूअ 9)*

(١٠)وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ اِلَّا هُوَ ۚ وَاِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ۭ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۭ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ○(یونس ع ١١)

15. अगर तुमको अल्लाह तआला कोई तक्लीफ़ पहुँचाये तो अलावा उसके कोई उसका दूर करने वाला नहीं, और अगर वह कोई राहत पहुँचाना चाहे तो उसके फ़ज़्ल का कोई हटाने वाला नहीं, वह अपना फ़ज़्ल जिसको चाहे पहुँचा दे, वह बड़ी मग़्फ़िरत वाला, बड़ी रहमत वाला है। (युनूस, रूकूअ 11)

(١٦) وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْاَرْضِ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا (هود ع ١)

16. और कोई जानदार ज़मीन पर चलने वाला ऐसा नहीं जिसकी रोज़ी अल्लाह तआला के ज़िम्मे न हो (पस उसी से रोज़ी तलब करना चाहिए) (हूद, रूकूअ 1)

(١٧) قُلْ هُوَ رَبِّيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ مَتَابِ ○(رعد ع ٤)

17. आप कह दीजिए कि वही मेरा रब है (मेरा मुरब्बी है) उसके सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं है, मैं ने उसी पर भरोसा कर लिया है, और उसी की तरफ़ मुझे लौट कर जाना है। (रअद, रूकूअ 4)

(١٨) اَلَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ○(نحل ع ٦)

18. यही लोग (जिनकी ऊपर तारीफ़ हो रही है) ऐसे हैं जो (मसाइब में) सब्र करते हैं और अपने रब पर तवक्कुल करते हैं(यह नहीं सोचते कि हिजरत के बाद खाने का क्या इंतिज़ाम होगा)। (नह्ल, रूकूअ 6)

(١٩) اِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ○(نحل ع ١٣)

19. उसका (यानी शैतान का) क़ाबू ऐसे लोगों पर नहीं चलता जो ईमान रखते हैं और अपने रब पर (दिल) से भरोसा रखते हैं। (नह्ल, रूकूअ 13)

(٢٠) وَاٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِيْ وَكِيْلًا ○(بنی اسرائیل ع ١)

20. और हमने मूसा (अलै०) को किताब (तौरात) दी और उसको बनी इस्राईल के लिए हिदायत (का ज़रिया) बनाया और उसमें और अहकाम के साथ यह भी हुक्म (दिया) (कि तुम मेरे सिवा किसी को कारसाज़ न बनाओ।) *(बनी इस्राईल, रूकूअ 1)*

(٢١) وَاِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِى الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُوْنَ اِلَّآ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا نَجّٰكُمْ اِلَى الْبَرِّ اَعْرَضْتُمْ ۗ وَكَانَ الْاِنْسَانُ كَفُوْرًا ۝ (بنی اسرائیل ع ٧)

21. और जब तुमको दरिया में (तूफ़ान वग़ैरह की) मज़र्रत पहुँचती है, उस वक़्त अल्लाह तआला के सिवा और जितनों को पुकारा करते थे (उनकी इबादत करते थे, उनसे मदद चाहते थे) सब खोए जाते हैं (दिल में भी उनका ख़्याल नहीं आता, उस वक़्त सिर्फ़ अल्लाह तआला ही को पुकारा जाता है) और जब अल्लाह तआला तुमको ख़ुशकी पर पहुँचा देता है तो उस से रूगरदानी करने लगते हो। वाक़ई इंसान बड़ा नाशुक्रा है। *(बनी इस्राईल, रूकूअ 7)*

(٢٢) مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ ۫ وَّلَا يُشْرِكُ فِىْ حُكْمِهٖٓ اَحَدًا ۝ (كهف ع ٤)

22. न तो उनके लिए अल्लाह के सिवा कोई मदद करने वाला है और न वह अपने हुक्म में किसी को शरीक करता है कि पार्लियामेंट से राय ले। *(क़हफ़, रूकूअ 4)*

(٢٣) يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ۗ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ۝ (حج ع ٢)

23. अल्लाह तआला के अलावा ऐसी चीज़ को पुकारता है (उस की इबादत करता है) जो न नुक़्सान दे सकती है, न नफ़ा, यह इंतिहाई गुमराही है। *(हज्ज, रूकूअ 2)*

(٢٤) وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِىْ لَا يَمُوْتُ (فرقان ع ٥)

24. उस (पाक ज़ात) पर जो ज़िंदा है और कभी उस पर मौत तारी न होगी, तवक्कुल कीजिए। *(फ़ुरक़ान, रूकूअ 5)*

(٢٥) وَالَّذِىْ هُوَ يُطْعِمُنِىْ وَيَسْقِيْنِ ۝ وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ۝ (شعراء ع ٥)

25. वही मुझे खिलाता पिलाता है और जब मैं बीमार होता हूँ तो वही शिफ़ा देता है। (शुअरा, रूकूअ 5)

(٢٦) وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيزِ الرَّحِيمِ ۝ (شعرآء ع ١١)

26. और आप उस (पाक ज़ात) पर तवक्कुल कीजिए जो क़ादिर है, रहीम है। (शुअरा, रूकूअ 11)

(٢٧) فَابْتَغُوا عِنْدَ اللّٰهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوهُ وَاشْكُرُوا لَهٗ ؕ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝ (عنكبوت ع ٢)

27. पस तुम लोग रिज़्क़ ख़ुदा से मांगो (कि वही रिज़्क़ का मालिक है) उसकी इबादत करो, उसका शुक्र अदा करो, उसी की तरफ़ (क़ियामत में) लौट कर जाना है। (अन्कबूत, रूकूअ 2)

(٢٨) وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ۖ اَللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ ۖ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝

28. कितने जानवर ऐसे हैं जो अपनी रोज़ी उठाकर नहीं रखते, अल्लाह तआला ही उनको रोज़ी पहुँचाता है और तुमको भी (और वही भरोसे के क़ाबिल है क्योंकि) वह सुनने वाला, जानने वाला है। (अन्कबूत, रूकूअ 6)

(٢٩) وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝ (احزاب ع ١)

29. और आप अल्लाह पर तवक्कुल कीजिए वही कारसाज़ी के लिये काफ़ी है।

(٣٠) قُلْ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَعْصِمُكُمْ مِّنَ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَ بِكُمْ سُوْٓءًا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ؕ وَلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ۝ (احزاب ع ٢)

30. आप उनसे यह फ़रमा दीजिए कि वह कौन है जो अल्लाह तआला से तुमको बचा सके। अगर अल्लाह तआला तुमको कोई बुराई (किसी क़िस्म की मज़र्रत नुक़्सान) पहुँचाना चाहे (तो कौन रोक सकता है) या वह कौन है जो ख़ुदा की रहमत को तुमसे रोक सके। अगर वह तुम पर किसी क़िस्म का फ़ज़्ल करना चाहे, (तो सारी दुनिया मिल कर नहीं रोक सकती, इसको ख़ूब समझ लें कि) वे ख़ुदा के सिवा न तो कोई अपना हिमायती पायेंगे, न मददगार। (अहज़ाब, रूकूअ 2)

(۳۱) اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ (زمر ع ٤)

31. क्या अल्लाह तआला अपने बंदे के लिए काफ़ी नहीं ?

(ज़ुमर, रूकूअ 4)

(۳۲) قُلْ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَنِيَ اللّٰهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ ضُرِّهٖۤ اَوْ اَرَادَنِيْ بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهٖ ؕ قُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝ (زمر ع ٤)

32. आप उनसे फ़रमायें कि अच्छा तो यह बताओ कि ख़ुदा के सिवा तुम जिन लोगों को पुकारते हो (उनकी बंदगी करते हो) अगर अल्लाह तआला मुझे कोई तक्लीफ़ पहुँचाना चाहे तो क्या ये उसकी दी हुई तक्लीफ़ को दूर कर सकते हैं या अगर अल्लाह तआला मुझ पर कोई रहमत (इनायत) करना चाहे तो क्या ये उसको रोक सकते हैं। आप कह दीजिए कि मेरे लिए अल्लाह ही काफ़ी है और उसी पर तवक्कुल करने वाले तवक्कुल करते हैं। *(ज़ुमर, रूकूअ 4)*

(۳۳) ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبِّيْ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ ۝ (شورى ع ٢)

33. यही अल्लाह मेरा रब है, उसी पर तवक्कुल रखता हूँ, और उसी की तरफ़ रूजूअ् करता हूँ। *(शूरा, रूकूअ 2)*

(٣٤) اَللّٰهُ لَطِيْفٌ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ۝ (شورى ع ٢)

34. अल्लाह तआला अपने बंदों पर मेहरबान है, जिस शख़्स को जितनी ज़्यादा चाहता है रोज़ी देता है, वह क़ुव्वत वाला और ज़बर्दस्त है।

(शूरा, रूकूअ 2)

(۳۵) وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝ (شورى ع ٤)

35. और तुम्हारे लिए अल्लाह के सिवा न कोई कारसाज़ है न मददगार है। *(शूरा, रूकूअ 8)*

(۳٦) وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝ (شورى ٤)

36. और जो चीज़ अल्लाह तआला के पास है वह बदरजहा, बेहतर और बाक़ी रहने वाली है, वह उन लोगों के लिए है जो ईमान ले

आए और अपने रब पर तवक्कुल करते हैं। (शूरा, रूकूअ 4)

(۳۷)وَفِی السَّمَآءِ رِزْقُکُمْ وَمَاتُوْعَدُوْنَ o (ذاریات ع ۱)

37. और तुम्हारा रिज़्क़ और जिन चीज़ों को तुमसे वायदा किया गया है वह सब आसमान में है (यानी वहां लौहे महफ़ूज़ में लिखा हुआ है या वहां से बारिश वग़ैरह के ज़रिए से नाज़िल होता है।)

(ज़ारियात, रूकूअ, 1)

(۳۸) رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنَبْنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ o (ممتحنہ ع ۱)

38. (हज़रत इब्राहीम अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलाम की दुआ है) ऐ हमारे रब! तेरे ही ऊपर हमने तवक्कुल किया और तेरी ही तरफ़ (हर ज़रूरत में) हमने रूजूअ् किया और तेरी ही तरफ़ (क़ियामत में) लौट कर जाना है। (मुमतहिना, रूकूअ 1)

(۳۹) هُمُ الَّذِينَ يَقُولُونَ لَا تُنفِقُوا عَلَىٰ مَنْ عِندَ رَسُولِ اللهِ حَتَّىٰ يَنفَضُّوا وَلِلَّهِ خَزَائِنُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَفْقَهُوْنَ o (منافقون ع ۱)

39. ये मुनाफ़िक़ यों कहते हैं कि जो लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जमा हैं, उन पर ख़र्च न करो, यहां तक कि (जब ये भूखे मरने लगेंगे तो) आप ही हुज़ूर सल्ल॰ के पास से मुन्तशिर हो जायेंगे (हालांकि ये अहमक़ यह नहीं जानते कि) सिर्फ़ अल्लाह ही के लिए हैं सब ख़ज़ाने आसमानों के और ज़मीन के, लेकिन मुनाफ़िक़ लोग समझते नहीं हैं (अहमक़ हैं, यों समझते हैं कि रोज़ी उन लोगों के अताया पर मौक़ूफ़ है।) (मुनाफ़िक़ून, रूकूअ 1)

(۴۰) وَمَن يَتَّقِ اللهَ يَجْعَل لَّهُ مَخْرَجًا ۙ وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ۚ وَمَن يَتَوَكَّلْ عَلَى اللهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ۚ إِنَّ اللهَ بَالِغُ أَمْرِهِ ۚ قَدْ جَعَلَ اللهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا o

(طلاق ع ۱)

40. और जो शख़्स अल्लाह तआला से डरता है, अल्लाह तआला उसके लिए नजात (और सहूलत का) रास्ता निकाल देता है और उसको ऐसी जगह से रिज़्क़ पहुंचाता है जहां से उसको गुमान भी नहीं होता, और जो शख़्स अल्लाह पर तवक्कुल करता है तो अल्लाह तआला

उसके लिए काफ़ी है। बेशक अल्लाह तआला (जिस काम का इरादा करता है) अपने काम को पूरा करके रहता है (अलबत्ता यह ज़रूर है कि) अल्लाह तआला ने हर शै का एक अंदाज़ (और वक़्त) मुक़र्रर कर रखा है। *(तलाक़, रूकूअ 1)*

अहादीस के सिलसिले में पहली हदीस के ज़ैल में इस आयते शरीफ़ा के मुताल्लिक़ एक क़िस्सा भी पेश आ रहा है।

(٤١) رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ٥(مزمل ع ١)

41. वह मश्रिक़ और मग़्रिब का मालिक है, उसके सिवा कोई इबादत के क़ाबिल नहीं है, उसी को अपना काम सुपुर्द करने के लिए क़रार दिए रहो (यानी जब कि मश्रिक़ मग़्रिब का मालिक वही है तो उस पर एतिमाद और भरोसा होना चाहिए।) *(मुज़्ज़म्मिल, रूकूअ 1)*

ये इकतालीस आयतें नमूने के तौर पर ज़िक्र की गयीं वर्ना क़ुरआन पाक का तो हर मज़्मून तौहीद ही की तालीम है और तौहीद ही का समरा तवक्कुल है, जिसको जितना ज़्यादा तौहीद में रूसूख़ और कमाल होगा, उतना ही तवक्कुल, अल्लाह पर एतिमाद उसके मासिवा से बेनियाज़ी होगी। चुनांचे मशहूर है कि हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम को जब आग में डाला जा रहा था तो हज़रत जिबराईल अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने आकर दर्ख़्वास्त की कि मेरे क़ाबिल कोई ख़िदमत हो तो हुक्म फ़रमायें। आपने फ़रमाया कि नहीं, तुमसे मेरी कोई हाजत वाबस्ता नहीं। *(एहया-उल-उलूम)*

एक मस्जिद में एक फ़क़ीर ऐतिकाफ़ की नीयत से जाकर बैठ गए। पास कोई सामान खाने पीने का कुछ न था। मस्जिद के इमाम साहब ने उनको नसीहत की कि यों बिना किसी सामान से मस्जिद में बैठने से यह अच्छा था कि कहीं मज़दूरी करते (पेट का पालना फ़र्ज़ है), फ़क़ीर ने उन की बात का कुछ जवाब न दिया, उन्होंने दूसरी दफ़ा, फिर यही कहा फ़क़ीर चुप हो गए, उसने तीसरी दफ़ा फिर कहा, फ़क़ीर ख़ामोश रहे, उसने चौथी दफ़ा फिर कहा तो उन्होंने जवाब दिया कि यह मस्जिद के क़रीब जो यहूदी की दुकान है, उसने मेरी दो रोटी रोज़ाना की मुक़र्रर कर ली है। इमाम साहब ने फ़रमाया कि अगर उसने खाना मुक़र्रर कर दिया तो बहुत अच्छा है फिर ऐतिकाफ़ ज़रूर करें। फ़क़ीर ने कहा, काश! आप इमाम न होते तो बहुत अच्छा था, तुम अपनी इस नाक़िस

तौहीद के साथ अल्लाह और उसके बंदों के दर्मियान वास्ता बन कर खड़े होते हो। एक काफ़िर यहूदी के वायदे को तुमने अल्लाह तआला के रोज़ी के वायदे पर बढ़ा दिया (अफ़सोस है तुम पर और तुम्हारे हाल पर) *(रौज़)*

वाक़ई सच कहा, हमारी यही हालत है कि बंदे के वायदे पर तो हमें इत्मीनान है, अल्लाह के वायदे पर नहीं है। इन आयात पर जो ज़िक्र की गयीं इंतिहाई ग़ौर होना चाहिए और ज़्यादा से ज़्यादा इसकी कोशिश होनी चाहिए कि सिर्फ़ हक़ तआला शानुहू व तक़द्दुस पर ही हमारी निगाह हो, उसी पर एतिमाद हो, उसी की पाक ज़ात से अपना सवाल हो, उसी से भीख मांगी जाए, उसके अलावा किसी के सामने हाथ न फैले, बल्कि दिल में भी किसी दूसरे का ख़्याल न आए बल्कि वही पाक ज़ात और सिर्फ़ वही पाक ज़ात अपना सहारा हो। वही नफ़ा और नुक्सान का मालिक दिल से समझा जाए, ज़बान से कहते रहना तो हमारी आम आदत है लेकिन असल कारआमद यह चीज़ है कि हमारे दिल में यह बात अच्छी तरह जम जाए कि बग़ैर उसके इरादे के कोई हाकिम, कोई दौलतमंद न किसी क़िस्म की मज़र्रत (नुक्सान) पहुंचा सकता है न किसी क़िस्म का नफ़ा पहुंचा सकता है और थोड़ा सा भी ग़ौर किया जाए तो बहुत ही खुली हुई बात है कि तमाम दुनिया के क़ुलूब (दिल) सिर्फ़ उसी के कब्ज़े में हैं, हम लाख किसी शख़्स की मन्नत समाजत करें मगर जब उसका अपना दिल दूसरे के क़ब्ज़े में है तो जब तक दिलों के मालिक का इरादा न हो, हमारी मन्नत समाजत से उसके दिल पर क्या असर हो सकता है, और जब दिलों का मालिक किसी काम को करना चाहे तो वह बात ख़ुद ब ख़ुद दूसरों के दिलों में पड़ेगी, हम लाख बेनियाज़ी बरतें उसका दिल उसको ख़ुद · ्र करेगा, बार बार उसके दिल में ख़्याल आएगा, बग़ैर तहरीक के ख़्याल आयेगा, इसलिए अगर अपनी हाजत मांगने का महल है तो सिर्फ़ वही पाक ज़ात है अगर आजिज़ी औ मन्नत समाजत करने की जगह है तो उसी का दरबार है, सारी दुनिया के दिल उसके इरादे के ताबेअ् हैं, सारी दुनिया के ख़ज़ाने उसकी मिल्क हैं।

या अल्लाह महज़ अपने फ़ज़्ल से बिला इस्तिहक़ाक़ बल्कि इस्तिहक़ाक़ के ख़िलाफ़ इस नापाक को भी इस जौहर का कोई शम्मा अता फ़रमा दे कि तेरी अता के वास्ते इस्तिहक़ाक़ भी शर्त नहीं –

'ख़ुदा की दैन का मूसा से पूछिये अहवाल,
कि आग लेने को जाएं पयम्बरी मिल जाये।

इसके बाद चन्द अहादीस इन ही मज़ामीन के मुताल्लिक़ मुख़्तसरन पेश करता हूँ जिनके मुताल्लिक़ ऊपर की तीन आयात मुस्तकिल तौर पर ज़िक्र की गयीं:-

(١) عن عبد الله بن مسعودؓ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من نزلت به فاقة فانزلها بالناس لم تسد فاقته ومن نزلت به فاقة فانزلها بالله فيوشك الله له برزق عاجل اواجل رواه الترمذى وهكذا فى الدرالمنثور برواية ابى داؤد والترمذى والحاكم وقد صححه ولفظ ابى داؤد بموت عاجل اوغنى عاجل وفى المشكوٰة بموت عاجل او غنى اجل.

1. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जिस शख़्स को फ़ाक़े की नौबत आ जाए और वह उस को लोगों के सामने पेश करे उस का फ़ाक़ा बंद न होगा और जो शख़्स अपने फ़ाक़े को अल्लाह तआला पर पेश करे (और उससे दर्ख़्वास्त करे) तो हक़ तआला शानुहू जल्द उसको रोज़ी अता फ़रमाते हैं, फ़ौरन हो जाए या कुछ ताख़ीर से मिल जाये।

फ़ायदा:- जो शख़्स लोगों से सवाल करता फिरे उसका फ़ाक़ा बंद न होगा का मतलब यह है कि इहतियाज पूरी न होगी। आज अगर एक ज़रूरत के वास्ते भीख मांगी है और वह सूरत के ऐतिबार से पूरी हो गयी तो कल उससे अहम कोई ज़रूरत पेश आ जाएगी और इहतियाज बदस्तूर बाक़ी रहेगी, और अगर अल्लाह जल्ल शानुहू की पाक बारगाह में हाथ फैलाए तो यह ज़रूरत तो पूरी होगी ही, दूसरी ज़रूरत पेश न आएगी और अगर आई तो उसका इंतिज़ाम मालिक साथ ही कर देगा।

पहली फ़स्ल की अहादीस में नं॰ 8 के ज़ैल में हज़रत कब्शा रज़ि॰ की हदीस गुज़र चुकी है, जिसमें हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़सम खाकर चंद बातें इर्शाद फ़रमायीं। उनमें से एक यह भी है कि जो शख़्स लोगों से मांगने का दरवाज़ा खोलेगा। हक़ तआला शानुहू उस पर फ़क्र का दरवाज़ा खोलते हैं, उसी जगह एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का क़सम खाकर यही मज़्मून हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि॰ की रिवायत से भी गुज़र चुका। यही वजह है कि दर ब दर भीख मांगने वाले हमेशा फ़क़ीर और तंगदस्त ही रहते हैं।

एक और हदीस में यह मज़्मून इस तरह वारिद हुआ है कि जो शख़्स अपने फ़ाक़े और एहतियाज को अल्लाह तआला शानुहू के सामने पेश करता है, हक़ तआला शानुहू बहुत जल्द उसके फ़क्र को दूर फ़रमाते हैं, जल्दी की मौत से या जल्दी की ग़िना से।

जल्दी की मौत के दो मतलब हैं, एक यह कि उसका वक़्त अगर ख़ुद क़रीब आ गया तो उसको फ़ाक़ों की तक्लीफ़ में मुसीबत उठाने से पहले ही हक़ तआला शानुहू मौत अता फ़रमा देंगे।

दूसरा मतलब यह है कि किसी की मौत उसके ग़िना का सबब बन जाए, मसलन किसी की मीरास का बड़ा हिस्सा मिल जाए या कोई शख़्स मरते वक़्त इसकी वसीयत कर जाए कि मेरे माल में से इतना फ़लां शख़्स को दे देना।

मुतअद्द वाक़िआत इस क़िस्म के देखने और सुनने में आए कि मक्का में बाज़ मरने वालों ने यह वसीयत की कि हिन्दुस्तान के फ़लां शहर में इस नाम का एक शख़्स है, उसको मेरा माल फ़रोख़्त करके रूपया भेज दिया जाए।

कुर्द एक क़बीले का नाम है, उसमें एक शख़्स मशहूर डाकू था। वह अपना क़िस्सा बयान करता है कि मैं अपने साथियों की एक जमाअत के साथ डाके के लिए जा रहा था, रास्ते में हम एक जगह बैठे थे। वहां हमने देखा कि खजूर के तीन दरख़्त हैं, दो पर तो ख़ूब फल आ रहा है और एक बिल्कुल ख़ुश्क है और एक चिड़िया बार बार आती है और फलदार दरख़्तों पर से तरोताज़ा खजूर अपनी चोंच में लेकर उस ख़ुश्क दरख़्त पर जाती है। हमें यह देखकर ताज्जुब हुआ, मैं ने दस मर्तबा उस चिड़िया को ले जाते देखा तो मुझे यह ख़्याल हुआ कि उस पर चढ़कर देखूं कि यह चिड़िया उस खजूर को क्या करती है? मैं ने उस दरख़्त की चोटी पर जाकर देखा कि वहां एक अंधा सांप मुंह खोले पड़ा है और यह चिड़िया वह तरोताज़ा खजूर उसके मुंह में डाल देती है। मुझे यह देखकर इस क़दर इब्रत हुई कि मैं रोने लगा। मैं ने कहा, मेरे मौला! यह सांप जिसके मारने का हुक्म तेरे नबी सल्ल॰ ने दिया, तूने जब यह अधां हो गया तो इसको रोज़ी पहुँचाने के लिये चिड़िया को मुक़र्रर कर दिया और मैं तेरा बंदा, तेरी तौहीद का इक़रार करने वाला, तूने मुझे लोगों के लूटने पर लगा दिया? इस कहने पर मेरे दिल में यह डाला गया कि मेरा दरवाज़ा तौबा के लिए खुला हुआ है। मैं ने उसी वक़्त अपनी तलवार तोड़ डाली जो लोगों को लूटने में काम देती थी और अपने सर पर ख़ाक डालता हुआ 'इक़ालतन इक़ालतन' (दरगुज़र, दरगुज़र)

चिल्लाने लगा। मुझे ग़ैब से आवाज़ आयी कि हमने दरगुज़र कर दिया, दरगुज़र कर दिया। मैं अपने साथियों के पास आया। वे कहने लगे, तुझे क्या हो गया? मैं ने कहा मैं महजूर था, अब मैं ने सुलह कर ली, यह कह कर मैं ने सारा क़िस्सा उनको सुनाया, वे कहने लगे कि हम भी सुलह करते हैं। यह कह कर सबने अपनी अपनी तलवारें तोड़ दीं और सब लूट का सामान छोड़कर हम एहराम बांध कर मक्का के इरादे से चल दिए, तीन दिन चल कर एक गांव में पहुँचे तो एक अंधी बुढ़िया मिली, उसने हमसे मेरा नाम लेकर पूछा कि तुम में से इस नाम का कोई कुर्दी है, लोगों ने कहा, है। उसने कुछ कपड़े निकाले और यह कहा कि तीन दिन हुए मेरा लड़का मर गया उसने यह कपड़े छोड़े हैं, मैं तीन दिन से रोज़ाना हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में देख रही हूँ, हुज़ूर सल्ल॰ फ़रमाते हैं कि उसके कपड़े फ़लां कुर्दी को दे दो। वह कुर्दी कहते हैं कि वह कपड़े मैं ने ले लिये और हम सबने उनको पहना। *(रौज़)*

इस क़िस्से में दोनों चीज़ें क़ाबिले इब्रत हैं अंधे सांप की अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से रोज़ी का सामान और हुज़ूर सल्ल॰ की तरफ़ से कपड़ों का अतिय्या।

जब अल्लाह तआला किसी की मदद करना चाहे तो उसके लिए असबाब पैदा करना क्या मुश्किल है। सारे असबाब ग़िना और फ़क़्र के वही पैदा करता है और सच्चां तौबा की बरकत से हुज़ूर सल्ल॰ की तरफ़ से कपड़ों का ऐज़ाज़ ख़ुद एक क़ाबिले फ़ख़्र चीज़ है और जल्दी की मौत से ग़िना के हासिल होने की एक मिसाल है और बहुत से वाक़िआत मरते वक़्त वसीयतों के तो अक्सर सुनने में आए कि मेरे सामान में से इतना फ़लां शख़्स को दे दें।

एक हदीस में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जो शख़्स भूखा हो या हाजतमंद हो और वह लोगों से अपनी हाजत को पोशीदा रखे तो अल्लाह तआला शानुहू पर (बवजह उसके लुत्फ़ व करम के) यह हक़ है कि उसको एक साल की रोज़ी हलाल माल से अता फ़रमाये। *(मिश्कात)*

एक और हदीस में है कि जो शख़्स भूखा हो या मुहताज हो और लोगों से उसको छुपाये और अल्लाह तआला शानुहू से मांगे तो अल्लाह तआला शानुहू एक साल के लिए हलाल रोज़ी का दरवाज़ा उस पर खोल देते हैं। *(कंज़)*

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद वारिद हुआ है कि जो शख़्स अल्लाह तआला से ग़िना तलब करता है तो अल्लाह तआला उसको ग़िना अता फ़रमाते हैं और जो शख़्स अल्लाह तआला से इफ़्फ़त (पाक बाज़ी) मांगता है, अल्लाह तआला उसको इफ़्फ़त अता फ़रमाते हैं और ऊपर का हाथ (यानी अता करने वाला) बेहतर है। नीचे के हाथ से (यानी मांगने वाले हाथ से) और कोई शख़्स ऐसा नहीं जो सवाल का दरवाज़ा खोले मगर हक़ तआला शानुहू उस पर फ़क़्र का दरवाज़ा खोल देते हैं। हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू ने एक शख़्स की आवाज़ सुनी, जो अरफ़ात के मैदान में लोगों से सवाल कर रहा था, उन्होंने दुर्रे से उसकी ख़बर ली, कि ऐसे दिन में और ऐसी जगह अल्लाह के ग़ैर से सवाल करता है? एक और हदीस में है कि जो शख़्स सवाल का दरवाज़ा खोलता है, अल्लाह तआला शानुहू उस पर दुनिया और आख़िरत में फ़क़्र का दरवाज़ा खोल देते हैं। और जो शख़्स अल्लाह की रिज़ा के वास्ते अता का दरवाज़ा खोलता है, हक़ तआला शानुहू उस पर दुनिया और आख़िरत की ख़ैर का दरवाज़ा खोल देते हैं। एक और हदीस में है कि जो शख़्स सवाल का दरवाज़ा खोलता है, हक़ तआला शानुहू उस पर फ़क़्र का दरवाज़ा खोल देते हैं। कोई शख़्स रस्सी लेकर लकड़ियां इकट्ठी करके अपनी कमर पर लाकर फ़रोख़्त कर दे और उससे अपना गुज़र चला ले, यह इससे बेहतर है कि भीख मांगे, चाहे वह भीख मिले या न मिले।

एक और हदीस में है जो शख़्स अता का दरवाज़ा खोलता है, सदक़े से हो या सिला-रहमी से, हक़ तआला शानुहू उस पर कसरत फ़रमाते हैं (यानी उसके माल में इज़ाफ़ा होता है।) और जो शख़्स माल की ज़्यादती की नीयत से सवाल का दरवाज़ा खोलता है इसकी वजह से उस पर कमी बढ़ती जाती है यानी हाजतें बढ़ती जायेंगी और आमदनी के नाकाफ़ी होने में इज़ाफ़ा होता रहेगा।

हज़रत इमरान बिन हसीन रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद नक़ल करते हैं कि जो शख़्स कुल्लियतन अल्लाह तआला की तरफ़ मुतवज्जह हो जाए, हक़ तआला शानुहू उसकी हर ज़रूरत का तकफ़्फ़ुल फ़रमाते हैं और उसको ऐसी जगह से रिज़्क़ अता फ़रमाते हैं जिसका उसको गुमान भी नहीं होता, और जो शख़्स पूरे तौर पर दुनिया की तरफ़ लग जाता है, हक़ तआला शानुहू उसको दुनिया के हवाले कर देते हैं (कि तू जान और तेरा काम, यानी मेहनत कर और कमा ले, जितनी मशक़्क़त उठायेगा उसके मुनासिब हम देते रहेंगे।)

हज़रत अबूज़र रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं तुम्हें अल्लाह तआला के तक़्वा की वसीयत करता हूँ तंहाई में भी और एलानिया भी, और जब भी कोई बुरा काम सरज़द हो जाए तो (तलाफ़ी के तौर पर कोई) अच्छा काम भी करो और किसी से सवाल न करो, किसी की अमानत न रखो, दो आदमियों के दर्मियान क़ाज़ी न बनो (कि यह बहुत अहम काम है हर शख़्स के बस का नहीं)।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि जो थोड़े पर राज़ी हो जाए और क़नाअत कर ले और अल्लाह पर तवक्कुल करे, वह कमाने की मेहनत से बे फ़िक्र हो जाता है। एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि जो शख़्स यह चाहे कि सबसे ज़्यादा क़वी हो, वह अल्लाह पर तवक्कुल करे और जो चाहे कि ये सबसे ज़्यादा ग़नी हो उसको यह चाहिए कि जो चीज़ अल्लाह के पास है उस पर उससे ज़्यादा एतिमाद रखे, जितना अपने पास की चीज़ पर होता है और जो यह चाहे कि सबसे ज़्यादा मुअ़ज़्ज़ज़ हो जाए, वह तक़्वा इख़्तियार करे (और यह तजुर्बे की बात है कि आदमी के तक़्वे का जितना असर लोगों पर पड़ता है उतना किसी चीज़ का नहीं पड़ता। जिस शख़्स में जितना ज़्यादा तक़्वा बढ़ा हुआ होगा, उतना ही लोगों के दिलों में उसका एज़ाज़ व इकराम ज़्यादा होगा।)

हज़रत वहब रह॰ हक़ तआला शानुहू का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जब बंदा मुझ पर भरोसा कर लेता है तो अगर आसमान ज़मीन सब के सब मिलकर भी उसके साथ मक्र करें तो मैं उसके लिए रास्ता निकाल दूँगा। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम पर वही भेजी कि मुझ पर तवक्कुल करो, मैं तुम्हारी ज़रूरियात का कफ़ील बनूँगा। मेरे ग़ैर को अपना वली न बनाओ ताकि मैं तुम्हें न छोड़ दूँ।

बहुत सी अहादीस में यह वाक़िआ ज़िक्र किया गया कि हज़रत औफ़ बिन मालिक रज़ि॰ के साहबज़ादे को काफ़िरों ने क़ैद कर लिया और चमड़े के तस्मों से ख़ूब मज़बूत उनको जकड़ दिया। उन पर निहायत सख़्ती की जाती थी और भूखा भी रखा जाता था। उन्होंने अपने वालिद के पास किसी तरह अपने अहवाल की इत्तिलाअ् भेजी कि हुज़ूर सल्ल॰ से दुआ के लिए अर्ज़ करें। हुज़ूर सल्ल॰ को जब इत्तिलाअ् पहुँची तो हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि उनके पास यह कहला भेजो कि अल्लाह तआला से डरते रहें (तक़्वा इख़्तियार करें) और उसी

पर तवक्कुल करें और सुबह व शाम यह आयते शरीफ़ा पढ़ा करें।

لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُم بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ٥
فَإِن تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ٥ (توبہ ع ١٦)

"लक़द् जा अकुम् रसूलुम्मिन अन्फ़ुसिकुम अज़ीज़ुन् अलैहि मा अनित्तुम् हरीसुन अलैकुम् बिलमुअ्मिनी-न रऊफ़ुर्रहीम. फ़-इन् तवल्लौ फ़क़ुल हस्बियल्ला-हु ला इला-ह इल्ला हु-व अलैहि तवक्कलतु व हु-व रब्बुल् अर्शिल अज़ीम"। *(तौबा, रूकूअ 16)*

उनके पास जब इत्तिलाअ् पहुँची तो उन्होंने इस आयते शरीफ़ा को पढ़ना शुरू किया, ख़ुद ब ख़ुद एक दिन वे तस्मे टूट गये। यह उनकी क़ैद से छूट कर भाग आए और कुछ जानवर वग़ैरह भी उनके अपने साथ पकड़ लाये।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जिस शख़्स को बादशाह के ज़ुल्म का ख़ौफ़ हो या किसी दरिन्दे का या दरिया में डूब जाने का डर हो और इस आयते शरीफ़ा को तिलावत करे तो इंशा अल्लाह कोई मज़र्रत उसको न पहुँचेगी।

एक और हदीस में है कि इस क़िस्से में "ला हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्ला-हि" भी कसरत से पढ़ने का हुक्म है। इन्ही साहबज़ादे के क़िस्से में यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई -

وَمَن يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَل لَّهُ مَخْرَجًا ٥ وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ؕ (طلاق ع ١)

"व मंय्यत्तक़िल्ला-ह यज्अल्ल-हू मख़्र-जन व यर्ज़ु क़्-हु मिन् है-सु ला यह्त सिब॰" *(सूर: तलाक, रूकूअ 1)*

"जो अल्लाह से डरता है हक़ तआला शानुहू उसके लिए रास्ता खोल देते हैं और ऐसी जगह से उसको रोज़ी पहुँचाते हैं जहां से उसको गुमान भी नहीं होता और जो शख़्स अल्लाह तआला पर भरोसा करता है अल्लाह तआला उसके लिए काफ़ी है।" उन सहाबी रज़ि॰ को इसका क्या गुमान हो सकता था कि यही काफ़िर जो इस क़दर (सख़्त) ज़ुल्म पर उतरे हुए हैं उन्हीं के माल से उनकी रोज़ी मुक़द्दर है।

एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैं और मेरा एक साथी एक पहाड़ में रहते थे हर वक़्त इबादत ही मशग़ला था। मेरे एक साथी का गुज़र तो घास वग़ैरह पर था

और, मेरे लिए हक़ तआला शानुहू ने यह इंतिज़ाम फ़रमा रखा था कि एक हिरनी रोज़ाना आया करती थी और मेरे क़रीब आकर टांगें चीर कर खड़ी हो जाती। मैं उसका दूध पी लिया करता, वह चली जाती। बहुत ज़माना इसी तरह गुज़र गया वह हिरनी रोज़ आ जाया करती और मैं उसका दूध पीता था। मेरे साथी के क़ियाम की जगह उस पहाड़ में मुझसे दूर थी। एक दिन वह मेरे पास आया और कहने लगा कि एक क़ाफ़िला यहां क़रीब आकर ठहरा है, चलो क़ाफ़िला वालों के पास चलें, वहां शायद कुछ दूध और इसके अलावा कुछ खाने की चीज़ें मयस्सर आ जायें। मैं ने अव्वल तो बहुत इंकार किया लेकिन जब उसने बहुत इसरार किया तो मैं भी उसके साथ हो लिया। हम दोनों क़ाफ़िले में पहुंचे, उन लोगों ने हमें खाना खिलाया, हम खाने से फ़ारिग़ होकर अपनी अपनी जगह वापस आ गये। इसके बाद मैं हमेशा उस हिरनी के वक़्त पर उसका इंतिज़ार किया करता मगर उसका आना बंद हो गया। कई दिन इंतिज़ार के बाद मैं समझ गया कि उस गुनाह की नहूसत से वह रोज़ी जिसकी वजह से मैं बेफ़िक्र था, बंद हो गयी।

साहिबे रौज़ रह० कहते हैं कि बज़ाहिर तीन चीज़ें इसमें गुनाह की थीं।

एक जिस तवक्कुल को इख़्तियार कर रखा था, उसको छोड़ा।

दूसरे तमअ् की, और उस रोज़ी पर क़नाअत न की जिसकी वजह से बेफ़िक्री थी।

तीसरे ऐसा खाना खाया जो तय्यिब न था जिसकी वजह से तय्यिब रिज़्क़ से महरूमी हो गयी।

बड़ी इब्रत का क़िस्सा है। हम लोग बसा औक़ात अपनी हिर्स व तमअ् से हक़ तआला शानुहू के इनआमात से महरूम हो जाते हैं। सूरत के एतिबार से सवाल करने पर उस वक़्त कुछ मिल जाता है मगर उसकी नहूसत से अल्लाह तआला शानुहू के उस इनआम से महरूमी हो जाती है जो बे-तलब और बे-मन्नत मिलता है।

हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह० की दुआ है -

اَللّٰهُمَّ كَمَا صُنْتَ وَجْهِيْ عَنْ سُجُوْدِ غَيْرِكَ فَصُنْ وَجْهِيْ عَنْ مَسْئَلَةِ غَيْرِكَ

"अल्लाहुम्-म कमा सुन्-त वज्ही अन् सुजूदि ग़ैरि-क फ़सुन् वज्ही अंमस्अ-ल-ति ग़ैरि-क०"

'ऐ अल्लाह, जैसा कि तूने मेरे सर को अपने ग़ैर के सामने सज्दा करने से महफ़ूज़ रखा, इसी तरह मेरी ज़बान को अपने ग़ैर से सवाल करने से भी महफ़ूज़ फ़रमा। अल्लाहुम्म आमीन।

(۲) عن ابی ھریرۃ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم من سال الناس تکثرا فانما یسال جمرا فلیستقل او لیستکثر رواہ مسلم کذا فی المشکوۃ

2. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स इस लिए सवाल करता है कि अपने माल में ज़्यादती करे, वह जहन्नम के अंगारे मांग रहा है, जिसका दिल चाहे थोड़ा मांग ले, या ज़्यादा मांग ले।

फ़ायदा:- पहली हदीस शरीफ़ में सिर्फ़ अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से ग़ैबी इआनत और इमदाद बंद होने की वईद थी, इसलिए कि उस हदीस में ज़रूरत के मौक़ों पर सवाल का ज़िक्र था और इस जगह बिला ज़रूरत महज़ अपनी जमा बढ़ाने के लिए भीख मांगना मज़्कूर है इसलिए इसमें ज़्यादा सख़्त वईद है कि वह जहन्नम की आग इकट्ठी कर रहा है। अब आदमी को इख़्तियार है कि जितने अंगारे दिल चाहे इकट्ठे कर ले।

एक मर्तबा हज़रत उमर रज़ि॰ ने हुज़ूर सल्ल॰ से अर्ज़ किया कि फ़लां फ़लां दो शख़्स आपकी तारीफ़ कर रहे थे कि आपने उनको दो दीनार दिए। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, लेकिन फ़लां शख़्स मैं ने उसको दस से लेकर सौ तक अशरफ़िया दीं मगर उसने ऐसा नहीं किया। फिर फ़रमाया कि बाज़ आदमी सवाल करते हैं और मैं उनके सवाल की वजह से जो देता हूँ, वे बग़ल में दबाकर ले जाते हैं, लेकिन वे अपनी बग़ल में आग दबाकर ले जाते हैं, हज़रत उमर रज़ि॰ ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्ल॰! फिर आप देते क्यों हैं? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया मैं क्या करूँ? वे बग़ैर मांगे रहते नहीं और अल्लाह तआला मेरे लिए बुख़्ल को गवारा नहीं फ़रमाते।

एक और हदीस के अल्फ़ाज़ हैं, हज़रत उमर रज़ि॰ ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल॰! जब आपको मालूम है कि वह आग है तो आप क्यों मरहमत फ़रमाते हैं? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया मैं क्या करूँ? वे बग़ैर सवाल के रहते नहीं और अल्लाह तआला मेरे लिए बुख़्ल गवारा नहीं फ़रमाते।

हज़रत क़बीसा रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मैं ने एक बोझ (तावान वग़ैरह का)

अपने ज़िम्मे रख लिया, यानी किसी चीज़ की ज़मानत कर ली, इस सिलसिले में मैं हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में मदद चाहने के लिए हाज़िर हुआ। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया ठहर जाओ। कहीं से सदक़े का माल आ जाएगा तो मैं मदद करूँगा। फ़िर हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि क़बीसा। सवाल सिर्फ़ तीन आदमियों के लिए जायज़ है।

1. एक वह शख़्स जिसने कोई बोझ ज़िमान वग़ैरह का अपने ज़िम्मे रख लिया हो उसको जायज़ है कि इतनी मिक़्दार का सवाल कर ले और फिर रूक जाये, उससे ज़्यादा के सवाल का हक़ नहीं।

2. दूसरे वह शख़्स जिसको कोई हादसा पहुँच जाए जिससे सारा माल हलाक हो जाए (मसलन आग लग जाए या कोई और ऐसी आफ़त अचानक पहुँच जाए जिससे सब कुछ लुट लुटा जाए) तो उसको जायज़ है कि इतनी मिक़्दार का सवाल कर ले जिससे ज़िन्दगी का सहारा हो सके।

3. तीसरे वह शख़्स जिसको फ़ाक़े गुज़रने लगें हत्ताकि तीन आदमी उसकी क़ौम के कहने लगें कि इसको फ़ाक़ा होने लगा, तो उसको भी इतनी मिक़्दार सवाल कर लेना जायज़ है जिससे ज़िन्दगी का सहारा हो जाए। इन तीन के अलावा जो शख़्स सवाल करता है वह हराम माल खाता है।

एक और हदीस में है कि सवाल करना दो शख़्सों के लिए जायज़ नहीं, एक ग़नी के लिए दूसरे क़वी तन्दुरूस्त के लिए (जो कमाने पर क़ादिर हो), अलबत्ता जिस शख़्स को ख़ाक में मिला देने वाला फ़क़्र या परेशान कर देने वाला क़र्ज़ लाहिक़ हो गया हो, उसको सवाल करना जायज़ है और जो शख़्स माल को बढ़ाने की ग़रज़ से सवाल कर रहा है, उसके मुंह पर क़ियामत के दिन ज़ख़्म होंगे और वह जहन्नम की आग खा रहा है, जिसका दिल चाहे ज़्यादा सवाल कर ले, जिसका दिल चाहे कम सवाल कर ले।

एक और हदीस में है कि सवाल क़ियामत के दिन मुंह पर ज़ख़्म बन जायेंगे, जिनसे उसका चेहरा ज़ख़्मी हो जाएगा, जिसका दिल चाहे अपने चेहरे की रौनक़ को बाक़ी रखे जिसका दिल चाहे छोड़ दे। अलबत्ता अगर बादशाह से (यानी बैतुलमाल से बशर्ते की उसमें से लेने का हक़ हो) मांगे या मजबूरी के दर्जे में मांगे तो मुज़ायक़ा नहीं है।

एक और हदीस में है कि आदमी सवाल करता रहता है हत्ताकि

क़ियामत के दिन उसके चेहरे पर ज़रा सा भी गोश्त न रहेगा।

हज़रत मस्ऊद बिन अम्र रज़ि॰ कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में एक जनाज़ा नमाज़ पढ़ने के लिए लाया गया, हुज़ूर सल्ल॰ ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि क्या तरका छोड़ा? लोगों ने अर्ज़ किया कि दो तीन अशर्फ़ियां छोड़ी हैं। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि जहन्नम के दो तीन दाग़ हैं

रावी कहते हैं कि मैं ने हज़रत अबूबक्र रज़ि॰ के मौला अब्दुल्लाह बिन क़ासिम रज़ि॰ से इसके मुताल्लिक़ सवाल किया। उन्होंने कहा कि यह माल बढ़ाने की नीयत से सवाल करता था।

कुतुबे अहादीस में मुतअद्द वाक़िआत इस क़िस्म के वारिद हुए हैं, जिन्में हुज़ूर सल्ल॰ ने मामूली रक़मों के छोड़ने पर जहन्नम के दाग़ और इस क़िस्म की वईदें इर्शाद फ़रमायी हैं। उलमा ने उनके मुताल्लिक़ लिखा है कि यह इस सूरत में है जब आदमी के पास पहले से कुछ मौजूद हो और वह झूठ बोलकर अपने आपको बिल्कुल फ़क़ीर और मुहताज ज़ाहिर करके सवाल करे और बावजूद फ़क़ीर न होने के फ़ुक़रा की जमाअत में अपने आप को शामिल करे।

इमाम गज़ाली रह॰ फ़रमाते हैं कि सवाल करने के बारे में मुमानअत की बहुत सी रिवायात वारिद हुईं और बड़ी सख़्त सख़्त वईदें हदीस में आई हैं लेकिन साथ ही बाज़ अहादीस से इजाज़त मालूम होती है। इसका वाज़ेह बयान यह है कि फ़ी नफ़्सिही (अपने आप में) तो सवाल करना हराम है। लेकिन मजबूरी के दर्जे में या ऐसी हाजत में जो मजबूरी के क़रीब हो, जायज़ है। अगर ये दोनों बातें न हों तो हराम है और हुरमत की वजह यह है कि सवाल करना तीन बातों से ख़ाली नहीं होता और वे तीनों हराम हैं –

1. अव्वल तो इसमें अल्लाह तआला शानुहू की शिकायत का इज़्हार है गोया, उसकी तरफ़ से इन्आम में कमी है जैसा कि कोई ग़ुलाम अगर किसी से सवाल करे तो इसका मतलब यह होता है कि गोया सैय्यद (मालिक) की तरफ़ से उस पर तंगी है और उसका मुक़्तज़ा यह है कि बिला सख़्त मजबूरी के हलाल न हो, जैसा कि मुर्दार का खाना सख़्त मजबूरी में हलाल है।

2. दूसरे इसमें मांगने वाले का अपने नफ़्स को ग़ैर अल्लाह के सामने ज़लील करना है और मोमिन की शान यह है कि अपने नफ़्स को अल्लाह

तआला के सिवा किसी के सामने ज़लील न करे, अलबत्ता उस पाक मौला के सामने ज़लील करना अपनी इज़्ज़त है, इसलिए कि महबूब के सामने ज़िल्लत व इंकिसार लज़्ज़त है और आक़ा के सामने इज़्ज़त का इज़हार सआदत है।

3. तीसरे इसमें उस शख़्स की ईज़ा अक्सर होती ही है जिससे सवाल किया जाए, बहुत सी बार देने वाले का दिल ख़ुशी से आमादा नहीं होता, महज़ शर्म वग़ैरह की वजह से ख़र्च करता है। पस अगर उसने शर्म की वजह से या रिया की वजह से दिया है तो वह लेने वाले पर भी हराम है और अगर वह इंकार भी कर दे तब भी बसा औक़ात उसको इस बात से रंज होगा कि वह सूरतन बख़ील बना, इसलिए हर हाल में ईज़ा का इहतिमाल है जिसका सबब यह साइल बना, और ईज़ा देना बिला मजबूरी के हराम है और जब यह बात ज़ेहन नशीन हो गयी तो यह भी वाज़ेह हो गया कि हुज़ूर सल्ल॰ की तरफ़ से सवाल करने पर इस क़दर सख़्त वओदें क्यों वारिद हुईं। हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि जो हमसे सवाल करेगा उस को हम देंगे (हम क्यों इंकार करें, अपने सवाल के जवाज़ का वह ख़ुद ज़िम्मेदार है) और जो मुस्तग़नी होता है (यानी सवाल नहीं करता या अल्लाह तआला से ग़िना का तालिब होता है अल्लाह तआला उसको ग़नी कर देते हैं।) और जो हमसे सवाल न करे, वह हमें ज़्यादा महबूब है, उस शख़्स के मुक़ाबले में, जो सवाल करे।

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि लोगों से मुस्तग़नी रहो और सवाल जितना भी कम हो उतना ही अच्छा है हज़रत उमर रज़ि॰ ने एक साइल को देखा कि मग़रिब के बाद सवाल कर रहा है। आपने किसी से फ़रमा दिया कि इसको खाना खिला दो, उन्होंने फ़ौरन तामील की और खाना खिला दिया। हज़रत उमर रज़ि॰ ने फिर उसकी आवाज़ सवाल की सुनी तो उन साहब से मुतालबा किया, मैं ने तुमसे इसको खाना खिलाने को कहा था। उन्होंने अर्ज़ किया कि मैं ने खिला दिया। हज़रत उमर रज़ि॰ ने उस साइल की तरफ़ देखा तो उसकी बग़ल में एक झोली पड़ी हुई थी, जिसमें बहुत सी रोटियां थीं। हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया कि तू साइल नहीं बल्कि ताजिर है, यानी फ़क़ीर नहीं बल्कि तिजारत के लिए सवाल करता है ताकि इन रोटियों को जमा करके फ़रोख़्त करे। उसके बाद उसकी झोली छीनकर सदक़े के ऊंटों के सामने उलट दी। और उसके दुर्रे मार कर कहा कि फिर कभी ऐसा न कीजियो।

इमाम ग़ज़ाली रह॰ कहते हैं कि अगर सवाल हराम न होता तो हज़रत

उमर रज़ि॰ न तो उसको मारते और न उसकी रोटियां छीनते, बाज़ लोगों को इस पर एतिराज़ है। वे कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ि॰ का मारना तो तंबीह और तादीब हो सकती है लेकिन उसके माल का छीनना ज़ुल्म है, शरीअत ने किसी का माल छीन लेने की सज़ा नहीं बताई, लेकिन यह एतिराज़ हक़ीक़त की ना वाक़िफ़ियत से पैदा हुआ। भला हज़रत उमर रज़ि॰ की फ़ुक़ाहत तक दूसरों की रसाई कहां हो सकती है? क्या हज़रत उमर रज़ि॰ के मुताल्लिक़ यह गुमान हो सकता है कि उनको यह मसअला मालूम न था कि दूसरे का माल लेना जायज़ नहीं? या यह गुमान हो सकता है कि बावजूद मसअला मालूम होने के उनको फ़ेअ़्ले हराम यानी सवाल पर ग़ुस्सा आ गया और नऊज़ु बिल्लाह ग़ुस्से में ऐसा कर गए या सवाल से आइंदा रोकने की मसलहत की वजह से ऐसा तरीक़ इख़्तियार किया जो ना जायज़ था, अगर ऐसा था तो यह फ़ेअ़्ल ख़ुद ना जायज़ था बल्कि बात यह थी कि जब उसने बेज़रूरत सवाल किया और देने वालों ने उसको फ़क़ीर और मुहताज समझ कर दिया तो यह धोखे से हासिल करने की वजह से उसकी मिल्क में न आया था और असल मालिकों का पता चलना अब दुशवार था तो यह बमंज़िला लुक़्ता के था जिसके मालिक का पता नहीं है, इसलिए इसका मसरफ़ (बैतुलमाल के) मसालेह आम्मा हैं, इसलिए सदक़े के ऊंटों को खिला दिया। उस फ़क़ीर का सवाल करना वैसा ही है जैसा कि कोई गुनाहगार शख़्स अपने को सूफ़ी ज़ाहिर करके सदक़ा ले ले, अगर देने वाले को उसका हाल मालूम हो जाए तो कभी भी न दे। ऐसे शख़्स को लेना जायज़ नहीं, उसको ज़रूरी है कि मालिक को वापस करे।

जब यह बात मुहक़्क़क़ हो गयी कि सवाल सिर्फ़ ज़रूरत में जायज़ है तो यह समझ लेना चाहिए कि ज़रूरत के चार दर्जे हैं –

1. अव्वल दरजा इज़्तिरार का है।

2. दूसरा सख़्त हाजत का, लेकिन इज़्तिराब की हद से कम।

3. तीसरा मामूली हाजत का।

4. चौथा हाजत न होने का, यह पहला दर्जा मसलन कोई शख़्स ऐसा है कि उसको भूख की वजह से या मर्ज़ की वजह से हलाकत का और मर जाने का अंदेशा है या ऐसा नंगा है कि उसके पास कोई कपड़ा बदन छुपाने को नहीं

है, तो ऐसे शख़्स को सवाल करना जायज़ है।[1] बशर्ते कि जवाज़ की बाक़ी शर्तें पाई जाती हों, और वे ये हैं –

(अ) जो चीज़ मांगे, वह चीज़ जायज़ हो।

(ब) जिससे मांगे वह तीबे ख़ातिर से राज़ी हो।

(ज) मांगने वाला कमाने से आजिज़ हो। अगर वह कमाने पर क़ादिर है तो वह लग़्व (बेकार) आदमी है जो बजाय कमाने के सवाल करता है।

अलबत्ता अगर कोई तालिबे इल्म हो जो अपने औक़ात को तलबे इल्म में मशग़ूल रखता हो तो उसको मुज़ायक़ा नहीं कि सवाल कर ले, और चौथा दरजा उसके बिलमुक़ाबिल कोई शख़्स ऐसी चीज़ का सवाल करे जो चीज़ उसके पास मौजूद है, मसलन कपड़े का सवाल करे और बक़द्रे ज़रूरत कपड़ा उसके पास मौजूद है तो उस शख़्स को सवाल हराम है। यह दो दरजे तो मुक़ाबिल हुए इनके दर्मियान दो दरजे रहे, एक सख़्त हाजत का, मसलन कोई शख़्स बीमार है और दवा के लिए दाम नहीं है, लेकिन मर्ज़ ऐसा नहीं है जो हलाकत के दर्जे का हो, या जैसे किसी के पास कपड़ा तो है मगर सर्दी का पूरा बचाव उससे नहीं होता। यह दरजा भी ऐसा है कि इसमें सवाल के जायज़ होने की गुंजाइश है। लेकिन उसका तर्क औला (छोड़ना बेहतर) है। ऐसा शख़्स अगर सवाल करे तो उसको ना जायज़ या मकरूह तो न कहेंगे लेकिन ख़िलाफ़े औला कहेंगे, बशर्ते कि अपने सवाल की नौइयत ज़ाहिर कर दे। मसलन यों कहे कि मेरे पास कपड़ा तो है मगर सर्दी के लिए काफ़ी नहीं है। ज़रूरत के दर्जे से ज़्यादा का इज़्हार न करे।

दूसरा दरजा कम हाजत का है। मसलन उसके पास रोटी के दाम तो हैं, सालन के लिए दाम नहीं या फटे पुराने कपड़े हैं और दो एक कुर्ता ऐसा बनाना चाहता है जो उन पर बाहर जाने के वक़्त पहन लिया करे। ताकि लोगों पर बोसीदा कपड़े ज़ाहिर न हों तो ऐसे शख़्स के लिए सवाल जायज़ तो है मगर कराहत के साथ, बशर्ते कि जिस दर्जे की ज़रूरत है उसको ज़ाहिर कर दे और इन तीन चीज़ों में से कोई बात न पाई जाए जो पहले गुज़र चुकीं, यानी एक यह

---

1. बल्कि बाज़ हालात में वाजिब और मुज़्तर के लिए बग़ैर इजाज़त के लेना भी बाज़ वक़्तों में जयज़ है।

कि हक़ तआला शानुहू की शिकायत न हो यानी इसी तरह सवाल करे जिससे शिकायत न टपकती हो। दूसरे अपनी ज़िल्लत न हो, तीसरे जिससे मांगे उसको अज़िय्यत न हो अगर यह कहा जाये कि इन तीनों चीज़ों से ख़ाली होने की क्या सूरत है?

तो मैं बताता हूं कि शिकवे से ख़ाली होने की सूरत यह है कि अल्लाह तआला का शुक्र भी साथ हो और अपनी ज़रूरत न होने का इज़्हार भी हो। फ़क़ीरों की तरह सवाल न करे मसलन यों कहे कि ज़रूरत का दरजा तो है नहीं, ज़रूरत की मिक़्दार अल्लाह का शुक्र है मेरे पास मौजूद है, लेकिन यह नफ़्स एक अच्छे कपड़े की ख़्वाहिश करता है और ज़िल्लत से बचने की सूरत यह है कि अपने बाप भाई या किसी ऐसे दोस्त से सवाल करे जिसके मुताल्लिक़ यह गुमान हो कि इस सवाल से उसकी निगाह में ज़िल्लत न होगी या ऐसे करीम से सवाल करे जिसके यहां सदक़ात का ज़ोर हो कि उसके सवाल करने से उसको मसर्रत हो और ईज़ा (तक्लीफ़) से बचने की सूरत यह है कि मसलन ख़ुसूसी सवाल किसी से न करे बल्कि उमूमी सवाल करे या ऐसे अंदाज़ से करे कि अगर वह शख़्स जिससे सवाल किया है टालना चाहे तो टाल सके।

और यह समझ लेना चाहिए कि जो चीज़ देने वाले ने शर्म की वजह से या ज़ोर देने से मजबूर होकर दिल न चाहते हुए दी है उसका लेना इज्माअन हराम है। यह ऐसा ही है जैसा किसी का माल मार कर ज़बर्दस्ती छीन लिया हो। इसलिए कि किसी शख़्स के ज़ाहिर बदन को मारना और दिल को मलामत और शर्म के कोड़े से मारना बराबर है। अलबत्ता मुज़्तर के लिए यह हक़ है कि बग़ैर तीबे ख़ातिर के भी ले ले लेकिन मामला अहकमुल हाकिमीन से है और हालात सब उसके सामने अयां (ज़ाहिर) हैं वह हर शख़्स की हालत को ख़ूब जानता है, नीज़ ऐसे दोस्तों से सवाल में भी मुज़ायक़ा नहीं जिनके मुताल्लिक़ यह अदांज़ा हो कि वे सवाल से ख़ुश होंगे। *(एह्या)*

अल्लामा ज़ुबैदी रह० फ़रमाते हैं कि इन वईदात में सवाल से मुराद अपनी ज़ात के लिए सवाल है। जो सवाल किसी दूसरे के लिए हो वह इसमें दाख़िल नहीं बल्कि वह उसकी इआनत है नीज़ वह सवाल में दाख़िल नहीं जो अपने लिए हो, लेकिन अपने अइज़्ज़ा और दोस्तों से हो इसलिए कि वे इससे ख़ुश होते है। *(इत्तिहाफ़)*

लेकिन यह शर्त है कि यह ऐसी जगह होगा जहां अज़िज़्ज़ा उस से ख़ुश होते हों, और जहां ऐसा न हो वहां तो अह्ले क़राबत को अज़िय्यत देना और भी ज़्यादा सख़्त है अलबत्ता जो अइज़्ज़ा करीम होते हैं। वे इस सवाल से ख़ुश होते हैं। मुझे ख़ुद इसका ज़ाती तजुर्बा है और बहुत कसरत से वाक़िआत इसके शाहिद हैं। मेरी वालिदा की एक हक़ीक़ी ख़ाला हैं जो अब तक भी हयात हैं[1] मेरे बचपन से उनका दस्तूर मुझे कांधला के हर सफ़र में दो पैसे देने का था, जब मैं साहबे औलाद हो गया और उन्होंने मेरे बच्चों को भी दो दो पैसे देना शुरू कर दिए तो मैं ने बहुत इस्रार से अपने दो पैसे के बजाय चार पैसे करे और यह कह कर कराए कि तुम मुझे और मेरी औलाद को एक दर्जे में रखती हो? मुझे हमेशा याद रहेगा कि मेरे इन चार पैसों का मुतालबा उनके लिए इस क़दर मसर्रत का सबब होता है कि मुझे भी उनकी ख़ुशी से लुत्फ़ आ जाता है। हत्ताकि बाज़ औक़ात अगर उनके पास उस वक़्त कुछ न हुआ तो मैं ने ख़ुद उनकी कुछ नज़्र किया ताकि उसमें से वह मेरे पैसे मुझे मरहमत फ़रमा दें, इसलिए कि उन को उनमें से देने से भी उतनी ही ख़ुशी होती थी और इसकी तरफ़ इल्तिफ़ात भी नहीं होता कि यह मैं उसी के पैसों में से दे रही हूँ।

इसी तरह मेरे वालिद साहब रह० के एक हक़ीक़ी मामूं मौलाना शम्सुल हसन साहब रहमतुल्लाहि अलैहि थे, हमेशा से उनका मामूल मुझे हर सफ़र में एक रूपया मरहमत फ़रमाने का था। जब मेरे औलाद हो गयी तो उन्होंने बजाय मेरे उनकी तरफ़ उसको मुन्तक़िल कर दिया। मैं ने ज़बर्दस्ती अपने रूपये का इजरा कराया, मैं ने उनसे कहा कि बच्चों को आप दें या न दें, मैं उनका ज़िम्मेदार नहीं हूँ। मेरा रूपया बंद नहीं होगा। मुझे हमेशा याद रहेगा और जब भी याद आ जाता है, मैं हमेशा उनके लिए दुआ करता हूँ कि हक़ तआला शानुहू उनकी मग़्फ़िरत फ़रमा कर अपनी आलीशान के मुवाफ़िक़ अज्रे जज़ील अता फ़रमायें कि उनको मेरे इस मुतालबे से किस क़दर मसर्रत होती थी, अक्सर क़ह-क़हा से हंसा करते थे और बार बार मेरे इस लफ़्ज़ को दोहराते, "हां जी, मेरा रूपया बंद नहीं होगा, मैं कहता कि हरगिज़ बंद नहीं होगा।"

और भी मुझे अपने अइज़्ज़ा और अहबाब से इस नौअ् के वाक़िआत का

---

1. किताब छपने के वक़्त इन्तिक़ाल हो गया। अल्लाह तआला मग़्फ़िरत करें।, नाज़िरीन से दुआ-ए-मग़्फ़िरत की दरख़्वास्त है।

साबिक़ा पड़ा है। ये मैं ने इस लिए लिखा है कि आज कल ताल्लुक़ात बिलखुसूस आपसदारी के आमतौर से ऐसे ख़राब हो जाते हैं कि यह बात अब ज़ेहनों में आना भी दुशवार हो जाएगी कि अज़ीज़ों का सवाल मसर्रत का सबब भी हो सकता है।

दूसरी चीज़ अल्लामा ज़ुबैदी रह॰ ने यह लिखी कि अगर दूसरे के वास्ते कोई शख़्स सवाल करे तो वह इसमें दाख़िल नहीं है। यह ज़ाहिर है और पहली फ़स्ल में जितनी रिवायात किसी दूसरे के लिए इआनत और मदद की गुज़री हैं वे इसके लिए दलील हैं। इसी तरह तालिबे इल्म की मशग़ूली सवाल की ज़िल्लत से अहम है।

मुल्ला अली क़ारी रह॰ ने नक़ल किया है कि अगर कोई शख़्स कमाने पर क़ादिर है और इल्मी इश्तिग़ाल की वजह से उसको नहीं करता तो उसको ज़कात का लेना भी जायज़ है और सदक़ाते ततव्वोअ् का लेना भी, और अगर बावजूद क़ुदरत के कमाना नवाफ़िल और इबादात में मशग़ूली की वजह से छोड़ा है तो उसको माले ज़कात का सवाल जायज़ नहीं है, सदक़ाते ततव्वोअ से सवाल में मुज़ायक़ा नहीं गो कराहतन हो और अगर कोई जमाअत इस्लाहे नफ़्स और तज़्किया-ए-बातिन के लिए मुजतमा है तो बेहतर यह है कि कोई शख़्स उन सबके लिए रोटी कपड़ा जमा कर लिया करे। *(मिक़ात)*

इल्मी इश्तिग़ाल[1] चाहे उलूमे ज़ाहिरा हों या उलूमे बातिना, यक़ीनन बहुत ज़्यादा अहम हैं और ऐसे लोगों के लिए यक़ीनन किसी दूसरी चीज़ में मशग़ूल होना हरगिज़ न चाहिए और महज़ नादानों, अहमक़ों के तान व तश्नीअ के ख़ौफ़ से इस अहम मशग़ले के साथ कमाई वग़ैरह की तरफ़ लगना जाहिलों के तान के ख़ौफ़ से अपनी क़ीमती माया को ज़ाया करना है। नादानों के तान, तश्नीअ से न अह्ले इल्म कभी बचे, न अंबिया-ए-किराम अलैहि॰ बचे।

आजकल यह वबा बहुत आम होती जा रही है कि अहले इल्म को अपना गुज़र चलाने के लिए किसी सन्अत व हिरफ़त का सीखना ज़रूरी है, और अहले इल्म भी दुनियादारों के तान व तश्नीअ से बद दिल होकर उसकी अहमियत को महसूस कर रहे हैं और मदारिसे अरबिया व दीनिया में यह सिलसिले भी जारी हो रहे हैं, लेकिन यह इल्म को बहुत ज़्यादा नुक़्सान देने

1. इल्म हासिल करने में लगा रहना।

वाली चीज़ है। इसमें असलाफ़ के नमूने सामने रखे जाते हैं, जिन्होंने अपने मआश के लिए तिजारत व हिरफ़त वग़ैरह के मशाग़िल इख़्तियार करते हुए दीन की और इल्म की ख़िदमत की, और यक़ीनन अगर अल्लाह जल्ल शानुहू तौफ़ीक़ अता फ़रमाए तो यह बेहतरीन तरीक़ा है। मगर हम लोगों के क़ुलूब और हमारे क़ुवा और हमारे अहवाल न तो इसके मुतहम्मिल हैं कि हम लोग दो काम बयक वक़्त कर सकें और न हमारी तमअ-ए-नफ़्स और हुब्बे दुनिया इसकी गुंजाइश देती है कि माल की बढ़ोतरी के असबाब पैदा होने के बावजूद अल्लाह के काम के वास्ते, दीन की ख़ातिर, इल्म की ख़ातिर, हम अपने औक़ात को दुनिया के कमाने के मशाग़िल से ज़्यादा से ज़्यादा फ़ारिग़ कर सकें। नतीजा यह होता है कि इब्तिदा में दोनों काम शुरू किए और आख़िर में इल्मी मशग़ले पर दुनिया की कमाई और तलब ग़ालिब आ गई जिसके बारहा तजुर्बे हो चुके हैं।

इमाम गज़ाली रह॰ ने तलबे इल्म के जो दस आदाब लिखे हैं उनमें लिखते हैं कि चौथा अदब यह है कि दुनिया में मशग़ूली को बहुत ही कम कर दे और अपने अह्ल और वतन से दूर चला जाए, इसलिए कि ताल्लुक़ात की कसरत मशग़ूली का सबब होती है और मक़सद से हटाने वाली होती है और अल्लाह तआला किसी शख़्स के लिए दो दिल नहीं बनाते (कि एक दिल इल्म में मशग़ूल रहे और दूसरा दुनिया कमाने में, यह क़ुरआन पाक की आयत की तरफ़ इशारा है।)

"मा ज-अ-लल्लाहु लि रजुलिम् मिन् क़ल्बै-नि फ़ी जौफ़िह्॰"

(अहज़ाब, रूकूअ 1)

और जितना ज़्यादा अपने फ़िक्र और ग़ौर को मुतफ़र्रिक़ चीज़ों में मशग़ूल करोगे, उलूम के हक़ायक़ से दूर रहोगे। इसी वजह से कहा गया है कि इल्म तुझे अपना थोड़ा सा हिस्सा जब देगा, जब तू अपने आपको पूरा का पूरा इल्म की नज़्र कर देगा और जो ग़ौर व फ़िक्र मुतफ़र्रिक़ उमूर की तरफ़ मुन्तशिर रहता है उसकी मिसाल उस नाली की सी है जिसकी डोल टूट गयी हो कि उसमें से पानी इधर उधर निकलेगा और बहुत कम खेत में पहुँचेगा। *(एह्या)*

लेकिन उसके साथ यह भी ज़रूरी है कि वाक़ई इल्म हासिल करना मक़्सूद हो, महज़ रोटी खाने और सदक़ात का माल जो आदमियों का मैल है, जमा करना मक़्सूद न हो। इमाम ग़ज़ाली रह॰ वे वईदात जो बुरे आलिमों के बारे

में वारिद हुई हैं ज़िक्र फ़रमाने के बाद लिखते हैं कि इनसे मालूम हुआ कि दुनियादार आलिम हालत के एतिबार से बहुत ज़्यादा ख़सीस है और अज़ाब के एतिबार से बहुत ज़्यादा अज़ाब का मुस्तहिक़ है बनिस्बत जाहिल के, और कामयाब सिर्फ़ वही उलमा हैं जो आख़िरत के आलिम हैं और आख़िरत के आलिम के लिए चंद अलामात (निशानियां) हैं जिनमें से पहली यह है कि अपने इल्म से दुनिया कमाना मक़्सूद न हो। आलिम का सबसे अदना दरजा यह है कि दुनिया की हिक़ारत, दुनिया का कमीनापन, दुनिया की गंदगी, उसका फ़ानी होना, उसको मुस्तहज़र हो, वह आख़िरत की बड़ाई उसकी पायदारी, उसकी उम्दगी, उसकी नेअमतों की पाकीज़गी उसकी रफ़अते शान को पाने वाला हो। और इस बात को खूब समझता हो कि दुनिया और आख़िरत दो सौकनें हैं, जब वह एक को राज़ी करेगा, दूसरी नाराज़ होगी (जैसा कि हदीस में यही मज़्मून आया है) और यह समझे कि दुनिया और आख़िरत बमंज़िला तराज़ू के दो पलड़े के हैं, जौन सा एक झुक जायेगा दूसरा ऊपर चढ़ जायेगा। जो शख़्स दुनिया की हिक़ारत को न समझता हो वह फ़ासिदुल अक़्ल है, उलमा में से कैसे हो सकता है?

हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि उलमा का अज़ाब दिल की मौत है और दिल की मौत आख़िरत के अमल से दुनिया की तलब है (यानी दीन का काम इस ग़रज़ से करना कि उससे दुनिया का माल व सरवत या इज़्ज़त व जाहत कमाई जाए) यह्या बिन मुआज़ रह० फ़रमाते हैं कि इल्म व हिक्मत की रौनक़ जाती रहती है जब उनसे दुनिया कमाई जाए। हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रह० फ़रमाते हैं कि जब आलिम को उमरा के दरवाज़े पर देखो तो वह चोर है। हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब किसी आलिम को दुनिया से मुहब्बत रखने वाला समझो तो उसको अपने दीन के बारे में मुत्तहिम समझना, इसलिए कि हर शख़्स उसी में घुसा करता है जिससे उसको मुहब्बत हो। *(एहया मुख़्तसरन)*

लिहाज़ा यह तो ज़रूरी है कि उलमा को अपने नफ़्स को हर वक़्त मुत्तहिम समझते हुए उसकी सख़्ती से निगरानी करते रहना चाहिए, हर वक़्त इस फ़िक्र में ज़रूर रहना चाहिए कि कहीं दुनिया की मुहब्बत जो हर ख़ता की जड़ है, ग़ैर महसूस तरीक़े से जड़ न पकड़ ले, और दुनिया से बेरग़्बती बल्कि नफ़रत रासिख़ हो जाने के बाद न सवाल में मुज़ायक़ा है, न सदक़ात व ज़कात के लेने में, बल्कि सदक़ात वालों का अहम वज़ीफ़ा है, कि अहले इल्म को मुक़द्दम करें जैसा कि पहले सदक़ा अदा करने के आदाब में गुज़र चुका। हक़ तआला शानुहू

इस नापाक दुनिया के कुत्ते को भी इस मुहलिक मर्ज़ से निजात अता फ़रमाये कि दुनिया तलबी ऐसा मुहलिक मर्ज़ है जो आहिस्ता आहिस्ता तरक्क़ी करता रहता है और वह सिर्फ़ माल ही के हासिल करने में मुज़मर नहीं है बल्कि जाह के हासिल करने में माल से भी ज़्यादा सुरअत (तेज़ी) के साथ बढ़ता है। और दीनी माहौल में यह मर्ज़ हुब्बे दुनिया से भी ज़्यादा तरक़्क़ी करता है।

(۳) عن حکیم بن حزام قال سألت رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فاعطانی ثم سألتہ فاعطانی ثم قال یاحکیم ان ھذا المال خضر حلو فمن اخذہ بسخاوۃ نفس بورك لہ فیہ ومن اخذہ باشراف نفس لم یبارك لہ فیہ وکان کالذی یاکل ولا یشبع والید العلیا خیر من الید السفلی قال حکیم فقلت یا رسول اللہ والذی بعثك بالحق لاارزأ احدا بعدك شیئا حتی افارق الدنیا متفق علیہ کذا فی المشکوۃ.

3. हकीम बिन हिज़ाम रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मैं ने हुज़ूर सल्ल॰ से सवाल किया, हुज़ूर सल्ल॰ ने अता फ़रमाया, मैं ने फिर मांगा, हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़िर अ़िनायत फ़रमाया, इसके बाद इर्शाद फ़रमाया कि ऐ हकीम! यह सर सब्ज़ माल मीठी चीज़ है यानी ख़ुशनुमा है देखने में, लज़ीज़ है दिलों में पस, जो शख़्स इसको नफ़्स की सख़ावत (यानी इस्तिग़्ना) से लेता है उसके लिए तो इसमें बरकत दी जाती है और जो इसको इशराफ़े नफ़्स (यानी हिर्स और तमअ् जैसा कि आइन्दा हदीस के ज़ैल में आएगा) के साथ लेता है, उसके लिए इसमें बरकत नहीं होती, वह ऐसा है जैसा कोई (भूख का मरीज़ कि) खाता रहे और पेट न भरे, ऊपर का हाथ नीचे के हाथ से बेहतर है (यानी न मांगने वाला हाथ मांगने वाले से अच्छा है) हकीम रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मैं ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्ल॰ क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अब आप के बाद मरने तक कभी किसी को तक्लीफ़ नहीं दूँगा।

फ़ायदा:- यानी अब सारी उम्र कभी किसी से सवाल नहीं करूँगा। कुछ रिवायात में इस हदीस के बाद में यह मज़्मून भी है कि इसके बाद हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ अपने ख़िलाफ़त के ज़माने में हज़रत हकीम रज़ि॰ को बुलाते ताकि उनका जो हक़ बैतुलमाल के फ़ैई में है वह उनको मरहमत फ़रमायें, वह लेने से इंकार कर देते। फिर हज़रत उमर रज़ि॰ के ज़माने में भी यही मामूल रहा कि वह हकीम रज़ि॰ को उनका हिस्सा देने को बुलाते, वह लेने से इंकार

कर देते। हज़रत उमर रज़ि॰ ने लोगों को इस पर गवाह बनाया कि वह हकीम रज़ि॰ का हिस्सा देने को बुलाते हैं, वह कुबूल नहीं करते। लेकिन हज़रत हकीम रज़ि॰ ने अपने इंतिक़ाल तक किसी से न लिया। *(तर्ग़ीब)*

एक और हदीस में है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बहरैन से माल आया। अव्वल हुज़ूर सल्ल॰ ने हज़रत अब्बास रज़ि॰ को बुलाया और लप भर कर अता फ़रमाया, उन्होंने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह सल्ल॰! इसका लेना मेरे लिए अच्छा है या बुरा? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, बुरा है। उन्होंने वापस कर दिया और क़सम खाई कि मैं किसी की भी अता क़बूल नहीं करूंगा। फिर हकीम रज़ि॰ ने दरख़्वास्त की या रसूलल्लाह! मेरे लिये दुआ कीजिए कि हक़ तआला शानुहू मेरे यहां बरकत अता फ़रमाये। हुज़ूर सल्ल॰ ने दुआ की कि हक़ तआला शानुहू इनके हाथ की कमाई में बरकत अता फ़रमाये। *(तर्ग़ीब)*

हज़रत मुआविया रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि मांगने में इसरार न किया करो, ख़ुदा की क़सम! जो शख़्स मुझसे कोई चीज़ मांगे और महज़ उसके मांगने की वजह से अपनी तबीअत के ख़िलाफ़ मैं कोई चीज़ उसको दूं तो उसमें बरकत न होगी। एक और हदीस में है कि जिस शख़्स को मैं तीबे नफ़्स से कोई चीज़ दूँ उसमें तो बरकत होगी और जिस शख़्स को उसकी तमअ और सवाल की वजह से बग़ैर तीबे ख़ातिर के कोई चीज़ दूंगा वह ऐसा होगा जैसा कि आदमी खाता रहे और पेट न भरे। हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि सवाल में इसरार न किया करो। जो शख़्स इसरार के साथ हमसे कोई चीज़ लेगा, उसमें बरकत न होगी। *(तर्ग़ीब)*

क़ुरआन पाक में भी इस पर तंबीह फ़रमाई गयी चुनांचे इर्शाद है –

"ला यस्-अलू नन्ना-स इल्हाफ़ा" *(बक़र: रूकूअ 37)*

"कि लोगों से इसरार से नहीं मांगते"।

हज़रत आइशा रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करती हैं कि यह माल सर सब्ज़ और मीठी चीज़ है, पस जिस शख़्स को हम उसमें से कोई चीज़ अपनी तीबे नफ़्स से दें ऐसी हालत में कि लेने वाले की तरफ़ से रोज़ी लेने की अच्छी हालत हो (यानी इस्तिहक़ाक़ के एतिबार से बेहतरीन मुस्तहिक़ हो, सवाल के एतिबार से जायज़ तलब हो मुबालग़ा

न हो) और उसकी तरफ़ से तमअ् न हो, तो उस माल में उसके लिए बरकत दी जाती है और जिस शख़्स को हम कोई चीज़ ऐसी तरह दें कि तीबे ख़ातिर न हो और उसकी तरफ़ से लेने वाले की अच्छी हालत न हो और उसकी तमअ् शामिल हो तो उसमें बरकत नहीं होती। *(तर्ग़ीब)*

बरकत ऐसी अहम और क़ाबिले क़द्र चीज़ है कि उसमें थोड़ी सी चीज़ में बहुत सी ज़रूरत पूरी हो जाती है। पहले इस क़िस्म के वाक़िआत गुज़र चुके हैं कि एक प्याला दूध बहुत से असहाबे सुफ़्फ़ा को काफ़ी हो गया, यह आख़िर बरकत ही तो थी। और इस जमाने में भी बसा औक़ात इस का मुशाहदा होता रहता है गो वैसा न हो जैसा कि हुज़ूर सल्ल० के लिए बरकत का नमूना ज़ाहिर होता था और वैसा हो भी नहीं सकता। लेकिन इस ज़माने और हालात के एतिबार से बहुत मर्तबा इसका तजुर्बा होता है कि हक़ तआला शानुहू अपने फ़ज़्ल से किसी चीज़ में ऐसी बरकत फ़रमा देते हैं कि देखने वाले ताज्जुब में रह जाते हैं और इसके बिल्मुक़ाबिल बे बरकती ऐसी मनहूस चीज़ है कि जितना भी कमाए जाओ, कभी काफ़ी नहीं होता, जिसकी मिसाल हुज़ूर सल्ल० के पाक कलाम में क़रीब ही गुज़री है कि खाए जाओ पेट न भरे। इस बे बरकती में अपना ही तजुर्बा ख़ुद अपने ही ऊपर और अपनी हिमाक़त का इज़्हार करता हूँ। मुझे बचपन में बैतबाज़ी का बहुत शौक़ था और चूंकि वालिद साहब नव्वरल्लाहु मरक़दहू की तरफ़ से बावजूद उनके तशद्दुद और सख़्तियों के इस फ़ेअ्ल पर नकीर न थी, इसलिए यह मर्ज़ तरक़्क़ी पज़ीर था और बिला मुबालग़ा हर ज़बान के हज़ारों शेर याद थे, जो अब नहीं रहे। मेरा अहम तरीन खेल यह था कि अपने मख़्सूस अइज़्ज़ा (क़रीबी लोग) जब कहीं एक जगह इत्तिफ़ाक़िया जमा हो जाते तो यह मशग़ला शुरू हो जाता।

मुझे अपने इब्तिदाई मुदर्रिसी के ज़माने में एक रात के लिए कैराना जाने का इत्तिफ़ाक़ हुआ, जहां मेरे फूफीज़ाद भाई वकालत करते थे, वह भी इस मशग़ले के शौक़ीन या मरीज़ थे। मेरी वजह से और भी बाज़ अइज़्ज़ा जमा हो गये और हस्बे मामूल इशा की नमाज़ के बाद यह बेकार मशग़ला शुरू हो गया। सर्दी का ज़माना था, उन्होंने तीन सेर दूध इस ख़्याल से मंगा कर रखा था कि रात को दो तीन मर्तबा चाय का दौर तो आख़िर चलेगा ही। मगर इस ख़्याल से कि अभी थोड़ा सा वक़्त गुज़र जाये तो पकाई जायेगी, चाय पकाने की नौबत भी न आई। मेरे अंदाज़ों के मुवाफ़िक़ आध पौन घंटा गुज़रा होगा कि मुझे पेशाब की

ज़रूरत हुई और बाहर आया तो आसमान पर मशिरक़ की जानिब ऐसी तेज सफ़ेदी नज़र आयी कि हैरत हो गयी, कुछ समझ में न आया कि यह सफ़ेदी क्या चीज़ है? उसके देखने के वास्ते मैं ने दूसरे अइज़्ज़ा को आवाज़ दी। सब उसको देखकर हैरान थे कि यह सफ़ेदी किस चीज़ की है। मुख़्तलिफ़ क़यासात घढ़े जा रहे थे कि चारों तरफ़ से अज़ानों की आवाज़ें आनी शुरू हो गयीं, जिससे मालूम हुआ कि यह सुबह सादिक़ है। वह दिन भी अजीब हैरत में गुज़रा कि रात कहां निकल गयी और उसके बाद से अब तक भी जब ख़्याल आ जाता है, एक सन्नाटा सा गुज़र जाता है कि उस रात में इस क़दर बे बरकती क्यों हुई और अब तो जब कभी उस रात का ख़्याल आ जाता है तो हैरत के अलावा एक इब्रत और अफ़सोस भी होता है कि मरने के बाद सारी उम्र ही उस रात जैसी होगी। उसी दिन मेरे मौसूफ़ भाई ने अपने वालिद, मेरे फूफा मौलाना रज़ीयुल हसन साहब रहमतुल्लाहि अलैहि को, जो बुज़ुर्ग हस्ती क़ुत्बे आलम हज़रत गंगोही नव्वरल्लाहु मरक़दहू के हदीस में शागिर्द थे, ख़्वाब में देखा, फ़रमा रहे हैं कि मियां ज़करिया भी कैसे बुज़ुर्ग हैं, इस तरह रात को ज़ाया कर देते हैं। कुछ उन्हीं की तवज्जोह का असर होगा कि उसके बाद से फिर कभी इस मशग़ले की नौबत न आई। लेकिन उम्र भर की हैरत के लिए यह कैराना की रात मुझे ताज्जुब में डालने के लिए काफ़ी है। और इस वाक़िए से दो चीज़ें ऐसी ज़ेहन नशीन हो गयीं कि उनमें ज़रा भी इस्तिब्आद नहीं रहा। एक तो बुज़ुर्गों के वे वाक़िआत और हालात जिनके मुताल्लिक़ तवारीख़ में इस क़िस्म की चीज़ें ज़िक्र की जाती हैं। कि सारी रात नमाज़ में गुज़ार दी। इशा के वुज़ू से सुबह की नमाज़ पढ़ लीं, रात रात भर मुनाजात में गुज़ार दी कि इस क़िस्म के जितने वाक़िआत हैं वे सब क़रीने क़यास हैं। लज़्ज़त और इन्हिमाक यक़ीनन ऐसी चीज़ है कि उसके हासिल होने के बाद न रात का तूल रह सकता है, न नींद का हमला। हक़ तआला शानुहू ने अपने लुत्फ़ से इन हज़रात को इन इबादात में लज़्ज़त का मर्तबा अता फ़रमाया, यह उसको वसूल करते हैं। जिनको इनमें लज़्ज़त नहीं है उनको जितना भी दुश्वार और पहाड़ मालूम हो, ज़ाहिर है।

और दूसरी चीज़ जो अपने तज़ुर्बे से ज़ेहन में आई, वह एक हदीसे पाक का मज़्मून है कि क़ियामत का सख़्त तरीन दिन जो पचास हज़ार बरस के बराबर है, बाज़ लोगों पर ऐसा गुज़र जाएगा जैसा कि एक नमाज़ या एक नमाज़ से दूसरी नमाज़ तक का वक़्त होता है। यक़ीनन यह हज़रात जिनके पास मआसी न होने से

ख़ौफ़ का गुज़र न हो, अपने नेक अमाल की वजह से ला ख़ौफ़ुन अलैहिम (अलआयत) के मिस्दाक़ हैं कि न उनको उस दिन कोई ख़ौफ़ होगा, न वे ग़मगीन होंगे, वे अर्श के साया तले अपने कारनामों की लज़्ज़तों में मशग़ूल और मुनहमिक होंगे, उन पर यह तवील वक़्त जितना भी मुख़्तसर से मुख़्तसर गुज़र जाए, मेरे लिए तो अपना तजुर्बा इसकी ताईद करता है।

(٤) عن خالد بن على الجهنى قال سمعتُ رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول من بلغه عن اخيه معروف من غير مسئلة ولا اشراف نفس فليقبله ولا يرده فانما هو رزق ساقه الله عزوجل اليه رواه احمد باسناد صحيح وابن حبان فى صحيحه والحاكم كذا فى الترغيب.

4. हज़रत ख़ालिद बिन अली रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जिस शख़्स को बग़ैर सवाल के और बग़ैर इशराफ़े नफ़्स यानी (तमअ् और हिर्स) के अपने भाई की तरफ़ से कोई चीज़ पहुँचे उसको क़ुबूल करना चाहिए, उसको रद्द न करना चाहिए, यह अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से रोज़ी है, जो उसको भेजी गयी है।

फ़ायदा:- मुतअद्दद अहादीस में यह मज़्मून वारिद हुआ है कि बिला तलब और बिला तमअ् के अगर कोई हदया मिले तो उसको क़ुबूल करना चाहिए, इसलिए कि उसके वापस करने में अल्लाह की नेमत का कुफ़रान है और ठुकराना है, यही वजह है कि अक्सर अकाबिर बावजूद तबीअत न चाहने के भी क़ुबूल करते हैं।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुझे अता के तौर पर कुछ मरहमत फ़रमाते, मैं अर्ज़ कर देता कि हुज़ूर सल्ल० किसी ऐसे शख़्स को मरहमत फ़रमा दें जो मुझ से ज़्यादा हाजत मंद हो। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि नहीं, ले लो, जब कोई माल ऐसी तरह आवे कि न तो उस का सवाल किया जाए न उसमें इशराफ़े नफ़्स हो तो उसको ले लिया करो। फिर अगर दिल चाहे उसको अपने काम में लाओ और दिल न चाहे तो सदक़ा कर दिया करो और जो माल ख़ुद न आए उसकी तरफ़ ध्यान भी न लगाओ।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० के साहबज़ादे हज़रत सालिम रज़ि० फ़रमाते हैं कि इस हदीस की वजह से हज़रत इब्ने उमर रज़ि० की यह आदत थी कि कभी

किसी से सवाल न करते थे और कहीं से कुछ आता तो उसको रद्द न फ़रमाते।

इसी क़िस्म का क़िस्सा हज़रत उमर रज़ि॰ को भी पेश आया कि हुज़ूर सल्ल॰ ने उनको कुछ मरहमत फ़रमाया, हज़रत उमर रज़ि॰ ने उसको वापस कर दिया। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि वापस क्यों कर दिया? हज़रत उमर रज़ि॰ ने अर्ज़ किया कि आप ही ने तो यह इर्शाद फ़रमाया था कि हमारे लिये यही बेहतर है कि किसी से कोई चीज़ न लिया करें। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि उससे मांग कर न लेना मुराद है। जब बग़ैर मांगे कोई चीज़ मिले तो वह अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से रोज़ी है जिसको अल्लाह तआला ने अता फ़रमाया है, हज़रत उमर रज़ि॰ ने अर्ज़ किया कि फिर हुज़ूर (सल्ल॰) उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है अब से कभी किसी से कोई चीज़ मांगूगा नहीं और बिला तलब मिलेगी तो उसको क़ुबूल करूँगा।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन आमिर रज़ि॰ ने हज़रत आइशा रज़ि॰ की ख़िदमत में कुछ दाम और कुछ कपड़ा किसी क़ासिद के हाथ भेजा, हज़रत आइशा रज़ि॰ ने यह कह कर वापस कर दिया कि मेरी आदत तो किसी से लेने की नहीं है। जब वह क़ासिद वापस जाने लगा, घर से निकला ही था हज़रत आइशा रज़ि॰ ने उसको वापस बुला लिया और उस हदये को रख लिया और यह फ़रमाया कि मुझे एक बात याद आ गई, हुज़ूर सल्ल॰ ने मुझसे यह फ़रमाया था कि आइशा, बे मांगे कोई चीज़ मिले तो उसको ले लेना, वह अल्लाह की तरफ़ से रोज़ी है, जो तुम्हारी तरफ़ भेजी गयी है। ग़ालिबन यह इब्तिदाई क़िस्सा होगा, इसके बाद हज़रत आइशा रज़ि॰ हदाया क़ुबूल करने लगीं। मुतअद्दद रिवायात में सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ से बड़ी बड़ी रक़में हज़रत आइशा रज़ि॰ की ख़िदमत में पेश होना और हज़रत आईशा रज़ि॰ का उनको लेकर हाथ के हाथ तक़्सीम कर देना वारिद हुआ है।

वासिल बिन ख़त्ताब रज़ि॰ कहते हैं कि मैं ने हुज़ूर सल्ल॰ से दर्याफ़्त किया कि क्या आप (सल्ल॰) ने यह इर्शाद फ़रमाया था कि किसी से कुछ मांगना नहीं। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि हां मांगने के मुताल्लिक़ मैं ने कहा है, लेकिन बग़ैर मांगे अगर अल्लाह तआला कोई चीज़ मरहमत फ़रमा दें तो उसको ले लेना, वह अल्लाह तआला की तरफ़ से रोज़ी है जो अल्लाह तआला ने तुमको दी है।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ भी हुज़ूर सल्ल॰ का यह इर्शाद नक़ल करते हैं कि जिस शख़्स को अल्लाह तआला शानुहू बे मांगे कोई चीज़ दिलवाये तो उसको क़ुबूल करना चाहिए, वह अल्लाह तआला की तरफ़ से उसको रोज़ी भेजी गयी है।

आबिद बिन उमर रज़ि॰ भी हुज़ूर सल्ल॰ से यही नक़ल करते हैं कि जिस शख़्स को कोई रोज़ी बग़ैर मांगे और बग़ैर इशराफ़े नफ़्स के पेश की गयी हो उससे अपने ख़र्च में वुस्अत पैदा करना चाहिए और अगर ख़ुद उस को उसकी हाजत न हो तो फिर किसी ऐसे शख़्स को दे देना चाहिए जो अपने से ज़्यादा ज़रूरत मंद हो। हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह॰ के साहबज़ादे अब्दुल्लाह रह॰ कहते हैं कि मैं ने अपने वालिद से दर्याफ़्त किया कि इशराफ़े नफ़्स क्या चीज़ है? उन्होंने फ़रमाया कि तू अपने दिल में यह ख़्याल करे कि यह शख़्स मुझे कुछ देगा? फ़लां शख़्स मुझे कुछ भेजेगा। *(तर्ग़ीब)*

इशराफ़ के असल मायने झांकने के हैं। इशराफ़े नफ़स यह है कि नफ़स उसको झांक रहा हो, उसकी ताक में लगा हुआ हो जैसा कि हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह॰ ने फ़रमाया है कि दिल में यह ख़्याल हो कि यह मुझे कुछ अता करेगा। इसी वजह से अक्सर उलमा इसको हिर्स व तमअ् से ताबीर करते हैं कि इसमें भी नफ़स की ख़्वाहिश होती है कि मुझे मिल जाये।

अल्लामा ऐनी रह॰ फ़रमाते हैं कि इशराफ़े नफ़्स के मायने बाज़ ने शिद्दते हिर्स के फ़रमाये हैं और बाज़ उलमा ने कहा है कि इशराफ़े नफ़स यह है कि देने वाला गरानी के साथ अता करे।

इमाम ग़ज़ाली रह॰ उस चीज़ के क़ुबूल करने के आदाब में जो बेतलब कहीं से आये, लिखते हैं कि इसमें तीन चीज़ें क़ाबिले ग़ौर व फ़िक्र होती हैं। एक तो माल, दूसरे देने वाले की ग़रज़, तीसरे लेने वाले की ग़रज़, यानी अव्वल तो माल देखना है कि वह कैसा है? अगर हराम माल है या मुश्तबह है तो उससे एहतिराज़ ज़रूरी है, इसके बाद दूसरी चीज़ देने वाले की ग़रज़ का देखना है कि वह किस नीयत से देता है यानी हदये की नीयत से दे रहा है जिससे दूसरे का दिल ख़ुश करना और उसकी मुहब्बत का बढ़ाना मक़सूद हो या सदक़े की नीयत से दे रहा है या अपनी शोहरत और नमूद की ग़रज़ से दे रहा है (या किसी और फ़ासिद ग़रज़ से दे रहा है जिस का बयान दूसरी हदीस में आ रहा है) पस अगर

महज़ हदया है तो उस का क़ुबूल करना सुन्नत है (बहुत सी अहादीस में हदये के देने की और क़ुबूल करने की तर्ग़ीबात आई हैं बशर्ते कि उसमें लेने वाले पर मन्नत, एहसान और बोझ न हो) अगर मन्नत हो तो रद्द करने में मुज़ायक़ा नहीं। और अगर हदये की मिक़्दार ज़्यादा होने पर मन्नत हो तो उसमें से कुछ मिक़्दार ले लेने और कुछ मिक़्दार वापस कर देने में मुज़ायक़ा नहीं। हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में एक शख़्स ने घी और पनीर और एक मेंढा पेश किया। हुज़ूर सल्ल॰ ने घी और पनीर क़ुबूल फ़रमा लिया मेंढ़ा वापस कर दिया और हुज़ूर सल्ल॰ की यह आदते शरीफ़ा भी थी कि बाज़ का हदया क़ुबूल फ़रमा लेते और बाज़ का रद्द फ़रमा देते। एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया मेरा यह इरादा है कि किसी शख़्स का हदया क़ुबूल न करूँ बजुज़ उन लोगों के जो क़ुरैशी हों या अंसारी या सक़फ़ी या दौसी (और इस इर्शाद का मब्ना (बुनियाद) यह था कि एक आराबी ने हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में एक ऊँटनी पेश की। हुज़ूर सल्ल॰ की आदते शरीफ़ा चूँकि हदये का बदला मरहमत फ़रमाने की थी इसलिए उसके बदले में हुज़ूर सल्ल॰ ने छः ऊंट उसको दिए जो उसने कम समझे कि वह उनसे भी ज़्यादा का उम्मीदवार था और इस पर उसने नागवारी का इज़्हार किया। जब हुज़ूर सल्ल॰ को इस वाक़िए का इल्म हुआ तो हुज़ूर सल्ल॰ ने वअ़ज़ में इस वाक़िए का ज़िक्र फ़रमा कर अपने इस इरादे का इज़्हार फ़रमाया और जिन लोगों को मुस्तस्ना किया, उनके इख़्लास पर हुज़ूर सल्ल॰ को इतिमाद था।) *(बज़्ल)*

और हज़रात ताबिईन का भी यह मामूल कसरत से नक़्ल किया गया कि बाज़ हदया क़ुबूल फ़रमा लेते, बाज़ को रद्द फ़रमा देते। फतह बिन शख़रफ़ मूसली रह॰ की ख़िदमत में किसी ने एक थैली पचास दिरम की पेश की, उन्होंने फ़रमाया, मुझे हुज़ूर सल्ल॰ का यह इर्शाद पहुँचा है कि जिस शख़्स के पास बिला तलब कोई रिज़्क़ आए और वह उसको वापस कर दे तो अल्लाह की रोज़ी को वापस करता है। इसके बाद वह थैली उन्होंने ले ली और उसमें से एक दिरम क़ुबूल करके बाक़ी को वापस कर दिया। हसन बसरी रह॰ भी इस हदीस को रिवायत करते हैं लेकिन उनके पास एक शख़्स दराहिम की थैली और एक गठरी ख़ुरासान के बारीक कपड़ों की लाया। उन्होंने उसको वापस फ़रमा दिया और यह फ़रमाया कि जो शख़्स इस मर्तबे पर बैठे जहां मैं बैठा हूँ (यानी वअ़ज़ व नसीहत, रुश्द व हिदायत के मर्तबे पर) फिर लोगों से इस क़िस्म की चीज़ें क़ुबूल करे, वह अल्लाह तआला शानुहू से ऐसे हाल में मिलेगा कि उसका कोई हिस्सा न

होगा। (यानी आख़िरत में कुछ न मिलेगा, इसलिए कि इसमें शायबा दीनी काम में बदला लेने का है।)

हज़रत उबादा रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मैं असहाबे सुफ़्फ़ा को क़ुरआन शरीफ़ पढ़ाया करता था। उनमें से एक शख़्स ने मुझे एक कमान हदये में दी। मैं ने यह सोचा कि यह कुछ ऐसा माल भी नहीं है और अल्लाह के रास्ते, जिहाद में इससे काम लूँगा फिर भी मुझे ख़्याल आया कि हुज़ूर सल्ल॰ से दर्याफ़्त कर लूँ। मैं ने हुज़ूर सल्ल॰ से दर्याफ़्त किया, हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि अगर तुम्हें यह पसंद हो कि आग का एक तौक़ तुम्हारे गले में डाल दिया जाये तो ले लो।

(अबू दाऊद)

हसन बसरी रह॰ के इस अमल (और हुज़ूर सल्ल॰ के इर्शाद) से मालूम हुआ कि क़ुबूले हदया के मामले में आलिम और वाज़िज़ का मामला ज़्यादा सख़्त है। इसके बावजूद हसन बसरी रह॰ (अपने मख़सूस) असहाब से हदया क़ुबूल करते थे (जहां मुआवज़ा का शुब्ह न होता था) और इब्राहीम तैमी रह॰ अपने असहाब से एक एक, दो दो दिरम ले लेते थे और बाज़ लोग सैंकड़ों पेश करते थे, उस को क़ुबूल न करते थे, और बाज़ हज़रात का यह मामूल था कि जब उनको कोई हदया देता तो वे फ़रमाते कि अभी अपने ही पास रहने दो और मुझे ग़ौर करके यह बताओ कि अगर इसके क़ुबूल करने से मेरी वक़्अत (मुहब्बत) तुम्हारे दिल में उससे ज़्यादा बढ़ जाए जितनी क़ुबूल करने से पहले है, तब तो मुझे ख़बर देना, मैं ले लूँगा वरना नहीं। इमाम ग़ज़ाली रह॰ फ़रमाते हैं कि इसकी अलामत यह है कि रद्द करने से देने वाले की दिल शिकनी हो और क़ुबूल करने से उसको मसर्रत हो और उस का क़ुबूल कर लेना वह अपने ऊपर एहसान समझता हो।

बिश्र रह॰ कहते हैं कि मैं ने हज़रत सिर्री सक़ती रह॰ के सिवा कभी किसी से सवाल नहीं किया, उनसे अलबत्ता इसलिए सवाल करता हूँ कि मुझे उनके ज़ुह्द का हाल मालूम है, मुझे यह बात मुहक़्क़क़ है कि उन की मिल्क से किसी चीज़ का निकल जाना उनकी मसर्रत का सबब होता है और उनके पास रहना गरानी का सबब होता है इसलिए मैं उनसे लेकर उनकी ख़ुशी में मदद करता हूँ। एक शख़्स ख़ुरासान के रहने वाले हज़रत जुनैद बग़दादी रह॰ के पास बहुत सा माल हदये में लाए। हज़रत ने फ़रमाया कि बहुत अच्छा, मैं इसको फ़ुक़रा पर तक़्सीम कर दूँगा। उसने अर्ज़ किया मैं इसलिए नहीं पेश करता, मेरा

दिल चाहता है कि इसको आप ख़ुद अपने खाने में ख़र्च करें। हज़रत ने फ़रमाया कि मैं इसके ख़त्म होने तक कहाँ ज़िंदा रहूँगा (बहुत बड़ी मिक़्दार है, इसके ख़त्म होने के वास्ते ज़माना चाहिए) उसने अर्ज़ किया मैं यह नहीं चाहता कि आप इसको सिरका और सब्ज़ी में ख़र्च करें (कि बरसों में ख़त्म हो)। मेरा दिल चाहता है कि इस से आप हलवा वग़ैरह अच्छी चीज़ें नोश फ़रमावें। हज़रत ने क़ुबूल फ़रमा लिया। ख़ुरासानी ने अर्ज़ किया कि बग़दाद में कोई शख़्स भी ऐसा नहीं जिसका एहसान मुझ पर आपसे ज़्यादा हो (इस वजह से कि आप ने मेरी दर्ख़्वास्त पर मेरा हदया क़ुबूल फ़रमा लिया।) हज़रत ने फ़रमाया कि तेरे जैसे शख़्स का हदया ज़रूर क़ुबूल करना चाहिए (यह सारी बहस हदये की थी।)

दूसरी क़िस्म सदक़ात और ज़कात है। पस अगर वह ज़कात है तो लेने वाले को चाहिए कि वह यह देखे कि ज़कात का मुस्तहिक़ है या नहीं। अगर मुस्तहिक़ है तो ले ले (ज़कात की फ़स्ल के ख़त्म पर इस की कुछ तफ़्सील गुज़र चुकी है) और अगर बग़ैर ज़कात का सदक़ा है तो लेने वाले को यह ग़ौर करना चाहिए कि वह क्यों दे रहा है। अगर वह उसकी दीनदारी की वजह से दे रहा है तो अपने हाल पर नज़र करना चाहिए कि वह दर पर्दा किसी ऐसे गुनाह का मुरतकिब तो नहीं है। कि अगर देने वाले को उस गुनाह का इल्म हो जाये तो कभी भी न दे और उस की तबीअत को इस से नफ़रत हो जाए, अगर ऐसा है तो उसका लेना ना जायज़ है। यह ऐसा ही है जैसा कि किसी शख़्स को आलिम समझ कर कोई शख़्स दे और वह महज़ जाहिल हो या सैय्यद समझ कर कोई शख़्स दे और वह सैयद न हो तो उनको इसका लेना बिल्कुल जायज़ नहीं। बे तरद्दुद हराम है और अगर देने वाले की ग़रज़ फ़ख़्र व रिया और शोहरत है तो उसको हरगिज़ क़ुबूल न करना चाहिए। इसलिए कि यह मासियत है और लेने वाला गुनाह में मददगार होगा। (हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसे लोगों का खाना खाने की मुमानअत फ़रमाई है जो तफ़ाख़ुर के लिए खिलाते हों) *(तर्ग़ीब)*

हज़रत सुफ़यान सोरी रह॰ बाज़ हदाया को यह कह कर वापस कर देते थे कि अगर मुझे यह यक़ीन हो जाए कि देने वाला फ़ख़्र के तौर पर इस को ज़िक्र नहीं करेगा तो मैं ले लूँ। बाज़ बुज़ुर्गों पर जब उनके हदाया वापस करने पर एतिराज़ किया गया तो उन्होंने फ़रमाया कि देने वालों पर तरस खाकर वापस कर देता हूँ कि वे इसका लोगों से तज़्किरा करते हैं, जिस से उनका सवाब जाता रहता

है तो बग़ैर सवाब के उनका माल क्यों ज़ाया हो।

तीसरी चीज़ लेने वाले की ग़रज़ है। अगर वह मुहताज है और माल उन आफ़ात से महफ़ूज़ है जो पहले दो नम्बरों में गुज़रीं तो उसका लेना अफ़ज़ल है। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि लेने वाला अगर मुहताज है तो वह सदक़ा के लेने में सवाब के एतिबार से देने वाले से कम नहीं है और हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि जिस शख़्स को हक़ तआला शानुहू कोई माल बग़ैर मांगे और बग़ैर इशराफ़े नफ़्स के दे तो वह अल्लाह तआला का रिज़्क़ है जो उसने अता फ़रमाया।

इस मज़्मून की मुअतद्दद रिवायात अभी गुज़र चुकी हैं। उलमा का इर्शाद है कि जो शख़्स बग़ैर मांगे मिलने पर न ले, उसको मांगने पर भी नहीं मिलता।

हज़रत सिर्री सक़ती रह० हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह० के पास हद्या भेजा करते थे। एक मर्तबा उन्होंने वापस कर दिया तो हज़रत सिर्री सक़ती रह० ने फ़रमाया कि अहमद वापस करने का वबाल, लेने के वबाल से सख़्त है। हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह० ने फ़रमाया, एक मर्तबा फिर इस बात को फ़रमा दें (ताकि मैं इस पर ग़ौर करूँ) हज़रत सिर्री रह० ने फिर यही बात फ़रमाई कि वापस करने का वबाल, लेने के वबाल से ज़्यादा सख़्त है। हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह० ने कहा कि मैं ने इसलिए वापस किया कि मेरे पास एक महीने के गुज़र के क़ाबिल मौजूद है। आप इसको अपने पास रहने दीजिए, एक महीना के बाद मुझे मरहमत फ़रमा दें।

बाज़ उलमा का इर्शाद है कि जो शख़्स एहतियाज के बावजूद वापस कर दे वह किसी सज़ा में मुब्तिला होता है। तमअ् पैदा हो जाए या मुश्तबह माल लेना पड़ जाये या कोई और आफ़त ऐसी ही आ जाए और अगर उसको एहतियाज नहीं है तो फिर यह देखे कि वह इन्फ़िरादी ज़िन्दगी गुज़ारता है या इज्तिमाओ। यानी अगर वह यकसू रहता है दूसरे लोगों से उसके ताल्लुक़ात नहीं हैं तो ऐसे आदमी को ज़रूरत से ज़्यादा लेकर अपने पास रोकना नहीं चाहिए कि यह महज़ इत्तिबाअ-ए-ख़्वाहिश है और उसको फ़िल्ने में मुब्तला कर देने का सबब है। अगर किसी वजह से ले ले तो उसको दूसरों पर तक़्सीम कर दे। और इमाम अहमद बिन हंबल रह० ने हज़रत सिर्री रह. की अता इस वजह से क़ुबूल नहीं की कि उनको ख़ुद तो हाजत न थी और यह गवारा न हुआ कि उसको लेकर उसकी तक़्सीम और ख़र्च करने में अपने औक़ात को मशग़ूल करें इसलिए कि

इसमें बहुत सी आफ़ात और बहुत सी दिक्क़तें थीं और एहतियात का तक़ाज़ा यही है कि आफ़ात के महल से दूर रहे इसलिए कि शैतान के मक्र से किसी वक़्त में इत्मीनान नहीं।

एक शख़्स मक्का के रहने वाले कहते हैं कि मेरे पास कुछ दराहिम थे जिनको मैंने अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने के लिए रखा था। मैं ने एक फ़क़ीर की आवाज़ सुनी जो तवाफ़ से फ़ारिग़ होकर बहुत आहिस्ता से (काबे का पर्दा पकड़ कर) कह रहे थे, ऐ अल्लाह, तुझे मालूम है कि मैं भूखा हूँ, ऐ अल्लाह तुझे मालूम है कि मैं नंगा हूँ, ऐ वह ज़ात पाक जो दूसरों को देखती है उसको कोई नहीं देखता। मैं ने जो उन फ़क़ीर साहब की तरफ़ निगाह की तो उनके बदन पर दो पुरानी चादरें थीं, जिनसे उन का बदन ढका भी न जाता था, मैं ने अपने दिल में ख़्याल किया कि मेरे दिरहमों का मसरफ़ इनसे बेहतर नहीं मिलेगा। मैं ने वे सब उनके सामने पेश कर दिये। उन्होंने उसमें से सिर्फ़ पांच दिरहम लेकर बाक़ी मुझे वापस कर दिए और यह कहा कि चार दिरहम दो लुंगियों की क़ीमत है और एक दिरहम तीन दिन खाने में ख़र्च हो जायेगा। (एक दिरहम तक़रीबन साढ़े तीन आने का होता है) मैं ने दूसरी रात को उनको देखा कि दो नई लुंगियां उनके बदन पर थीं। मेरे दिल में उनकी तरफ़ से कुछ ख़तरा गुज़रा, उन्होंने मुझे देखा और मेरा हाथ पकड़ कर अपने साथ तवाफ़ कराया तो तवाफ़ के सातों चक्करों के हर फेरे में मेरे पांव के नीचे मादनियात भरे पड़े थे कि पांव के नीचे वे हरकत करते थे जिसमें सोना चांदी, यांक़ूत, मोती और जवाहिरात थे। मुझे वे नज़र आ रहे थे और लोगों को नज़र नहीं आते थे। इसके बाद उन साहब ने कहा कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने यह सब कुछ मुझे अता फ़रमा रखा है, लेकिन मैं इसमें से लेना नहीं चाहता, लोगों के हाथ से लेकर ख़र्च करता हूँ, इसलिए कि इस में उन लोगों का नफ़ा होता है जिन से लूँ और उन पर अल्लाह की रहमत होती है।

ग़रज़ इन वाक़िआत से यह है कि ज़रूरत से ज़ायद का लेना फ़ित्ने का सबब है जो अल्लाह की तरफ़ से इम्तिहान है कि उस को किस काम में ख़र्च किया और बक़द्रे हाजत का लेना अल्लाह तआला की रहमत है। पस आदमी को रहमत और इम्तिहान में फ़र्क़ करना चाहिए। हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है।

"इन्ना जअल्ना मा अलल् अर्ज़ि ज़ीन-तल्लहा॰"

(कह्फ़, रूकूअ 1)

"हमने जो कुछ ज़मीन के ऊपर है उसको ज़मीन के लिए ज़ीनत बना रखा है ताकि उन लोगों का इम्तिहान करें और देखें कि उनमें कौन शख़्स ज़्यादा अच्छे अमल करता है (और कौन नहीं करता यानी कौन शख़्स इस ज़ेब व ज़ीनत में फंसकर अल्लाह तआला से ग़ाफ़िल हो जाता है। और कौन इससे ऐराज़ करके ख़ुदा (की याद) में मशग़ूल रहता है।) और हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि आदमी के लिए तीन चीज़ के अलावा कोई हक़ नहीं, एक इतनी मिक़्दार खाना जिससे कमर सीधी रहे, एक इतना कपड़ा जिससे बदन ढ़का रहे और एक घर जिस में आदमी समा सके। इससे ज़्यादा जो कुछ है वह हिसाब है। पस इन तीन चीज़ों में से सिर्फ़ ज़रूरत की मिक़्दार तो बाअिसे अज्र है इससे ज़्यादा में अगर अल्लाह तआला की नाफ़रमानी भी न करे तब भी हिसाब तो है ही और अगर नाफ़रमानी भी की तो अज़ाब भी है, पस ज़रूरत से ज़ायद अगर कुछ हो भी तो वह मुहताजों पर सर्फ़ कर दे। यह सब तो इन्फ़िरादी ज़िन्दगी का हाल था, अगर कोई शख़्स ऐसा है कि उसकी इज्तिमाई ज़िन्दगी है, उसकी तबीअत में जूद व सख़ा का माद्दा है। फ़ुक़रा और सुलहा की जमाअत उससे वाबस्ता है उनकी ज़रूरियात भी पूरी करने की ज़रूरत होती है तो ऐसे शख़्स को अपनी हाजत से ज़ायद लेने में मुज़ायक़ा नहीं लेकिन लेने के बाद बहुत जल्द उसको ख़र्च कर देना चाहिये, अहले ज़रूरत पर बांट देना चाहिए, एक रात भी उसको अपने पास रखना फ़िक्र की बात है। ऐसा न हो कि दिल में उसका ख़्याल पैदा होने लगे, ख़र्च करने से तबीअत रूकने लगे बल्कि ऐसे शख़्स को अल्लाह पर एतिमाद करके, क़र्ज़ लेकर ख़र्च करने में भी कुछ मुज़ायक़ा नहीं। हक़ तआला शानुहू उसका क़र्ज़ अदा फ़रमायेंगे। *(एह्या)*

(٥) عن انسؓ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا اقرض احدكم قرضًا فاهدى اليه او حمله على الدابة فلا يركبه ولا يقبلها الا ان يكون جرى بينه وبينه قبل ذلك رواه ابن ماجة والبيهقى فى الشعب كذا فى المشكوٰة.

5. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जब तुम में से कोई शख़्स किसी को क़र्ज़ दे फिर वह क़र्ज़दार उसको कोई हद्या दे या अपनी सवारी पर सवार कराये, तो न हद्या क़ुबूल करे न उसकी सवारी पर सवार हो, अलबत्ता अगर उस क़र्ज़ के मामले से पहले इस क़िस्म का बर्ताव दोनों में था तो मुज़ायक़ा नहीं।

फ़ायदा – यानी अगर इस से पहले से आपस में इस क़िस्म के ताल्लुक़ात हदया वग़ैरह के या उसकी चीज़ मुस्तआर लेने के थे तब तो क़र्ज़ की हालत में भी उस के क़ुबूल करने में मुज़ायक़ा नहीं और अगर पहले से ऐसे ताल्लुक़ात न थे, बल्कि अब क़र्ज़दार होने की वजह से कर रहा है तो वह सूद है। एक और हदीस में है, हज़रत अबूबर्दा रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मुझसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि॰ ने फ़रमाया कि तुम ऐसी जगह के रहने वाले हो जहां सूद का बहुत रिवाज है, पस अगर तुम्हारा किसी शख़्स के ज़िम्मे कोई हक़ हो फिर वह तुम्हारे यहां भुस की गठरी या घास की गठरी डाल दे तो उसको मत लेना, वह सूद है। *(मिश्कात)*

पस हदया क़ुबूल करने में यह देखना भी ज़रूरी है कि देने वाले की कोई फ़ासिद ग़रज़ तो नहीं है जैसा कि क़र्ज़ ही की सूरत में अलावा सूद होने के अगर यह भी ग़रज़ है कि क़र्ज़ख़्वाह तक़ाज़ा न करे तो यह सूद के साथ रिश्वत भी है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बहुत सी अहादीस में रिश्वत देने वाले पर, रिश्वत लेने वाले पर, दोनों पर लानत आई है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रिश्वत लेने वाले पर, और रिश्वत देने वाले पर लानत की है। एक और हदीस में है कि रिश्वत लेने वाला और रिश्वत देने वाला दोनों जहन्नमी हैं। एक और हदीस में है कि जिस क़ौम में सूद का रिवाज होगा उन पर क़हत मुसल्लत होगा और जिस क़ौम में रिश्वत का ज़ुहूर होगा वे मरऊब और ख़ौफ़ज़दा होंगे, मुतअद्दद अहादीस में है कि हुज़ूर सल्ल॰ ने रिश्वत लेने वाले को, रिश्वत देने वाले को और उस शख़्स को जो रिश्वत के मामले में दर्मियानी वास्ता बने, लानत फ़रमायी है। *(तर्ग़ीब)*

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक साहब को सदक़ात वसूल करने के लिए भेजा। वह जब अपने काम से फ़ारिग़ होकर वापस आए तो हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में उन्होंने अर्ज़ किया कि यह माल तो सदक़े में मिला है और यह मुझे लोगों ने हदये के तौर पर दिया है, हुज़ूर सल्ल॰ ने वअ़्ज़ में इस पर तंबीह फ़रमायी कि बाज़ लोगों को सदक़े का माल वसूल करने के लिए भेजा जाता है वे आकर यह कहते हैं कि यह सदक़े का माल है और यह मुझे हदये में मिला है, अपने बाबा के घर या अपनी मैया के घर बैठकर देखते कि हदया दिया जाता है या नहीं। *(मिश्कात)*

जैसा कि पहली अहादीस में क़र्ज़ की सूरत में हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि अगर बिला मामला क़र्ज़ के यह सूरत हदये की पहले से हो तो मुज़ायक़ा नहीं, उसी की तरफ़ इस अिताब में भी इशारा है कि बग़ैर हाकिम होने की सूरत में अपने घर बैठे, जिस शख़्स को हदया मिलता हो वह तो हदया है। लेकिन जो हदया महज़ हाकिम होने की वजह से दिया जाता हो तो वह हदया नहीं है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि जो शख़्स किसी की सिफ़ारिश करे और उस सिफ़ारिश की वजह से उसको हदये में कोई चीज़ मिले और वह उसको क़ुबूल कर ले तो वह सूद के दरवाज़ों में से बहुत बड़े दरवाज़े में दाख़िल हो गया। *(मिश्कात)*

हज़रत मुआज़ रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे यमन का हाकिम बना कर भेजा तो मेरे पीछे एक आदमी भेजा जो मुझे रास्ते से वापस बुलाकर लाया। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया तुम्हें मालूम है कि मैं ने क्यों बुलाया है, कोई चीज़ मेरी बग़ैर इजाज़त न लेना कि यह ख़ियानत होगी।

وَمَن يَغْلُلْ يَأْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ (آل عمران ع۱۷).

"व मंय्यग़्लुल् यअ्ति बिमा ग़ल्-ल यौमल् क़ियाम-ति॰"

(आले इमरान, रूकूअ 17)

"और जो शख़्स ख़ियानत करेगा वह उसको क़ियामत में (अपने ऊपर लादकर अदालत में) लायेगा। *(मिश्कात)*

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हज़रत रिफ़ाआ रज़ि॰ ने एक ग़ुलाम हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हदये के तौर पर पेश किया, वह हुज़ूर सल्ल॰ के साथ ग़ज़्वा-ए-ख़ैबर में गए, वह एक मौक़ा पर हुज़ूर सल्ल॰ के ऊँट पर सामान बांध रहे थे कि एक तीर कहीं से आकर उनके लगा जिससे वह शहीद हो गये। लोगों ने कहा कि उनको शहादत मुबारक! (कि हुज़ूर सल्ल॰ का ग़ुलाम और फिर इज़ाफ़ा शहादत का, मुबारकबादी की बात है ही), हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया नहीं, इसने एक चादर की ख़ियानत कर ली थी, जो इस वक़्त आग बनकर उससे लिपट रही है। हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुनैन की लड़ाई में एक साहब का इन्तिक़ाल हो गया, जब जनाज़ा तैयार हुआ तो हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में नमाज़ पढ़ाने की दरख़्वास्त की गई। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमा दिया कि तुम ही इसकी नमाज़ पढ़ लो। सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु

अन्हुम के (रंज की वजह से) चेहरे उतर गये। हुज़ूर सल्ल० ने (जब उनको अफ़्सुरदा देखा तो) फ़रमाया कि इसने ख़ियानत कर रखी है। हज़रत ज़ैद रज़ि० कहते हैं कि हमने उस मरहूम के सामान की तलाशी ली तो उसमें यहूद के मोतियों में से कुछ छोटे छोटे मोटे मोती (जिनको पोथ कहते हैं) मिले जो दो दिरहम (यानी तक़रीबन सात आने) के भी न होंगे। (दुर्रे मंसूर)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि हक़ तआला शानुहू ख़ुद तैय्यिब हैं इसलिए तैय्यिब ही माल क़ुबूल फ़रमाते हैं और हक़ तआला शानुहू ने मुसलमानों को उसी चीज़ का हुक्म फ़रमाया जिसका रसूलों को हुक्म फ़रमाया, चुनांचे इर्शाद है :

يٰٓاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ط (مؤمنون ع ٤)

"या अय्युहर्रूसुलु कुलू मिनत् तय्यिबा-ति वअ्मलू सालिहा०"

(सूरः मुमिनून, रूकूअ 4)

"ऐ रसूलो! खाओ अच्छी चीज़ें (यानी हलाल माल)" और नेक अमल करो। और मोमिनों को फ़रमाया:-

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبَاتِ مَارَزَقْنٰكُم (بقره ع ٢١)

"या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कुलू मिन् तय्यिबा-ति मा रज़क़्नाकुम"

(बक़र : रूकूअ, 294)

"ऐ मोमिनों, खाओ तैयब चीज़ें उनमें से जो हमने तुमको दी हैं फिर हुज़ूर सल्ल० ने ज़िक्र फ़रमाया एक आदमी का कि लम्बे सफ़र में जा रहा है (जो दुआ क़ुबूल होने का ख़ास महल है) परेशान हाल, गुबार से भरा हुआ (जिससे उसकी मस्कनत भी मालूम होती है) फिर दोनों हाथ आसमान की तरफ़ फैलाकर ऐ अल्लाह, (करके दुआएं) करता है लेकिन उसका खाना हराम (माल से) है, पीना हराम है, लिबास हराम है और हराम माल ही से परवरिश हुई है, भला उसकी दुआ कहां क़ुबूल हो सकती है।

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि अन्क़रीब एक ज़माना आने वाला है जिसमें आदमी को यह भी परवा न होगी कि हलाल माल से मिला या हराम माल से। *(मिश्कात)*

इनके अलावा बहुत से मुख़्तलिफ़ मज़ामीन की रिवायात कुतुबे अहादीस

में बकसरत वारिद हुई हैं। जिनमें बहुत ज़्यादा तंबीह इस पर की गयी है कि आदमी को आमदनी के ज़राए पर कड़ी निगाह करना चाहिए, ऐसा न हो कि पैसे के लालच में ना जायज़ आमदनी से चश्मपोशी कर ले। इस सिलसिले में अहले इल्म की ज़िम्मेदारी आम लोगों से बढ़ी हुई है कि वे जायज़ ना जायज़ को ख़ुद समझते हैं, ख़ास कर अहले मदारिस और दूसरे ऐसे हज़रात जिनका ताल्लुक़ चन्दे के माल से है उनको ज़्यादा मुहतात रहने की ज़रूरत है।

हमारे हज़रत बक़िय्यतुस्सलफ़ फ़ख़रूल् अमासिल हज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साहब रायपुरी क़द्दस सिर्रहू इर्शाद फ़रमाया करते थे कि मैं इन मदारिस के रूपये से जितना डरता हूँ लोगों के ममलूक रूपये से उतना नहीं डरता, अगर किसी के ज़ाती माल में कुछ बे एहतियाती हो जाए उससे आख़िर में माफ़ करा ले तो वह माफ़ हो जाता है। लेकिन मदारिस का रूपया दुनिया भर का चंदा है और मुन्तज़िमीने मदारिस अमीन हैं।

अगर उसमें कोई ख़ियानत हो या नाहक़ तसर्रूफ़ हो तो वह मुन्तज़िमीन के माफ़ करने से माफ़ तो होता नहीं अलबत्ता वे ख़ुद माफ़ करके इस जुर्म में शरीक हो जाते हैं। अल्लाह तआला ही अपने लुत्फ़ व करम से हुक़ूक़ुल इबाद के मामले से महफ़ूज़ रखे कि यह बड़ी सख़्त चीज़ है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि अल्लाह तआला शानुहू के यहां क़ियामत के दिन तीन कचहरियां हैं एक कचहरी में तो माफ़ी का ज़िक्र ही नहीं, यह तो शिर्क व तौहीद की कचहरी है। अल्लाह तआला ने ख़ुद इर्शाद फ़रमाया:-

"इन्नल्ला-ह ला यग़्फ़िरू अंय्युश्र-क बिही॰"

(सूर: निसा, रूकूअ 18)

हक़ तआला शानुहू शिर्क को तो माफ़ नहीं फ़रमायेंगे इसके अलावा जिसको चाहेंगे माफ़ कर देंगे। दूसरी कचहरी में (बग़ैर मुहासबा के) अल्लाह तआला न छोड़ेगा यहां तक कि उस का बदला न ले ले, और यह लोगों के एक दूसरे पर ज़ुल्म की है (चाहे जानी हो जैसा कि बुरा भला कहना, आबरू रेज़ी करना, ऐब लगाना वग़ैरह वग़ैरह या माली हो कि किसी का माल नाहक़ तरीक़े से ले लिया हो और तीसरी कचहरी अल्लाह तआला के अपने हुक़ूक़ की है,

उसमें चाहे अज़ाब दे दे चाहे माफ़ कर दे। (मिश्कात)

इन अहादीस के ज़िक्र करने से यही मक़सद है कि आदमी को अपनी आमदनी के ज़राये पर बहुत गहरी निगाह रखना चाहिए कि आमदनी अगर हराम हो तो न उसकी दुआ क़ुबूल होती है जैसा कि अभी गुज़रा है, न उसके सदक़ात क़ुबूल हों जैसा कि ज़कात के बयान में मुतअद्दद रिवायात इसकी गुज़र चुकी हैं। बल्कि बाज़ रिवायात में यह मज़्मून भी गुज़र चुका है कि जो गोश्त हराम माल से पैदा हुआ हो, जहन्नम की आग उस के लिए ज़्यादा मौज़ूं (मुनासिब) है और आइंदा हदीस के ज़ैल में भी इस क़िस्म के मज़ामीन आ रहे हैं। अल्लाह ही अपने फ़ज़्ल से हम लोगों को इस से महफ़ूज़ रखे। आमीन!

(٦) عن ابن مسعودؓ عن النبی صلی اللّٰه علیه وسلم قال لاتزول قدما ابن ادم یوم القیٰمة حتی یسأل خمس عن عمره فیما افناه وعن شبابه فیما ابلاه وعن ماله من این اکتسبه وفیما انفقه وما ذا عمل فیما علم رواه الترمذی وقال حدیث غریب کذا فی المشکوٰة ص ٢٢٥ و قدروی هذاالحدیث عن معاذ بن جبل وابی برزة الاسلمی فی الترغیب ص ٤٣

6. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि क़ियामत के दिन आदमी के दोनों क़दम उस वक़्त तक (मुहासबा की जगह से) नहीं हट सकते, जब तक पांच चीज़ों का मुतालिबा न हो जाए। (और उनका माक़ूल जवाब न मिले,) (1) अपनी उम्र किस काम में ख़र्च की, (2) अपनी जवानी किस चीज़ में ख़र्च की, (3) माल कहां से कमाया और, (4) कहां ख़र्च किया, (5) अपने इल्म में क्या अमल किया।

फ़ायदाः- यह हदीस पाक कई सहाबा रज़ि० से नक़ल की गयी है। इसमें हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुख़्तसर तरीक़े से क़ियामत के मुहासबों की फ़ेहरिस्त शुमार कर दी और उनमें से हर चीज़ के मुताल्लिक़ दूसरी अहादीस में मुख़्तलिफ़ उन्वानात से इन पर तंबीह फ़रमाई गयी है। सबसे अव्वल मुतालिबा और जवाब तलब चीज़ यह है कि अपनी उम्र जिसका, हर सांस इन्तिहाई क़ीमती सरमाया है, किस चीज़ में ख़र्च की, हम लोग क्यों पैदा किए गये, हमारी ज़िन्दगी किसी मसलहत के लिए है, किसी काम के लिए है या

एक बेकार चीज़ पैदा की गयी है। हक़ तआला शानुहू ने ख़ुद इस पर तंबीह फ़रमायी है।[1] (दुर्रे मंसूर)

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ ۝ (مؤمنون ع ٦)

"अ-फ़-हसिबतुम अन्नमा ख़लक़्नाकुम अ-ब-संव्-व अन्नकुम् इलैना ला तुर्ज-ऊन॰" (मुअ्मिमून, रुकूअ 6)

"हां तो क्या तुमने यह गुमान कर रखा था कि हमने तुमको यों ही बेकार (फुज़ूल) पैदा किया है और तुम (ने यह गुमान कर रखा था कि तुम) हमारी तरफ़ नहीं लाए जाओगे (और तुम्हें अपनी ज़िन्दगी का हिसाब देना नहीं होगा) और फिर इतना ही नहीं बल्कि दूसरी जगह हक़ तआला शानुहू ने मक़्सदे ज़िन्दगी भी ख़ुद ही इर्शाद फ़रमा दिया:-

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ (ذريٰت ع ٣)

"वमा ख़लक़्तुल् जिन्-न वल्इन्-स इल्ला लियअ्बुदून॰" (ज़ारियात, रुकूअ 3)

"मैं ने जिन्न व इन्स को सिर्फ़ इसलिए पैदा किया है कि वे मेरी इबादत करें। ऐसी हालत में हर शख़्स को अपनी ज़िन्दगी के पूरे औक़ात का जायज़ा लेना चाहिए कि वह अपने क़ीमती औक़ात का किस क़दर हिस्सा तो उस मक़्सद में ख़र्च करता है जिस काम के लिए वह पैदा किया गया और कितना हिस्सा अपनी ज़रूरियात, तफ़रीहात और ग़ैर मुताल्लिक़ मशाग़िल में ख़र्च करता है।

आप एक मेअ्मार (इमारत बनाने वाले) को तामीर के काम के वास्ते नौकर रखते हैं। वह आपके औक़ात में कितना वक़्त तामीर में ख़र्च करता है और कितना हुक़्क़ाबाज़ी और अपने खाने में। इसका आप ख़ुद अंदाज़ा कर लें कि कितना वक़्त आप उसकी अपनी ज़रूरियात में बर्दाश्त कर सकते हैं और जितना आप अपने मातहतों से तसामुह कर सकते हैं। उतना ही तसामुह अपनी ज़ात के लिए भी बर्दाश्त करें।

---

1. इस आयते शरीफ़ा के मुताल्लिक़ एक अजीब चीज़ हदीस में आई है। एक सहाबी रज़ि॰ कहते हैं कि हमको हुज़ूर सल्ल॰ ने एक लड़ाई पर भेजा और यह इर्शाद फ़रमाया कि सुबह-शाम इस आयते शरीफ़ा को पढ़ते रहा करो। हम पढ़ते रहे, हम को उस लड़ाई में ग़नीमत भी मिली और हम सही सालिम रहे। (दुर्रे मंसूर)

आप एक शख़्स को दुकान पर रहने के लिए मुलाज़िम रखते हैं, उसी की उसको तंख़्वाह देते हैं, वह दिन भर अपनी ख़ानगी ज़रूरियात में लगा रहता है, चंद मिनट को एक फेरा दुकान पर भी लगा जाता है। क्या आप गवारा कर लेंगे कि उसको पूरी तंख़्वाह देते रहें? और अगर नहीं तो फिर अपने मुताल्लिक़ आपका क्या उज़्र है कि हक़ तआला शानुहू ने महज़ इबादत के लिए पैदा किया और वह मालिक व ख़ालिक़ हर वक़्त आपको अपनी अताओं से नवाज़ता है और आप अपने फ़ुज़ूल कामों में उम्र गुज़ार दें और अपने आपको तसल्ली देते रहें कि पांच वक़्त नमाज़ में हाज़िरी तो दे देते हैं और क्या हो सकता है ग़ौर कर लीजिए कि यह जवाब आप अपने नौकरों से भी बर्दाश्त कर लेंगे?

हक़ तलाआ शानुहू का महज़ इंआम व एहसान है कि उसने तमाम औक़ात की इबादत फ़र्ज़ नहीं फ़रमायी बल्कि उसका बहुत थोड़ा सा हिस्सा फ़र्ज़ किया है, उसमें भी अगर कोताही हो तो कितना ज़ुल्म है।

मुतालिबे की दूसरी चीज़ हदीसे बाला में यह इर्शाद फ़रमायी गयी है कि जवानी की क़ुव्वत किस चीज़ में ख़र्च की गयी, क्या अल्लाह तआला की रिज़ा और ख़ुशनूदी के कामों में, उसकी इबादत में, मज़लूमों की हिमायत में, ज़ईफ़ों और अपाहिजों की इआनत में या फ़िस्क़ व फ़ुज़ूर में, अय्याशी और आवारगी में, बेबसों पर ज़ुल्म करने में, नाहक़ की मदद करने में, नापाक दुनिया के कमाने में और दीन व दुनिया दोनों जगह काम न आने वाले फ़ुज़ूल मशग़लों में।

इसका जवाब ऐसी अदालत में देना है जहां न तो कोई वकालत चल सकती है, न झूठ फ़रेब और लस्सानी काम आ सकती है, जहां की ख़ुफ़िया पुलिस हर वक़्त, हर आन आदमी के साथ रहती है और यही नहीं बल्कि ख़ुद आदमी के वे आज़ा (अंग) जिनसे ये हरकात की हैं, वे ख़ुद अपने ख़िलाफ़ गवाही देंगे और जराइम का इक़रार करेंगे।

الْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلَىٰ أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا أَيْدِيهِمْ وَتَشْهَدُ أَرْجُلُهُم بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ (يٰس ع ۴)

"अल्यौ-म नख़्तिमु अला अफ़्वाहिहिम् व तुकल्लिमुना ऐदीहिम् व तश्ह-दु अर्जुलुहुम् बिमा कानू यक्सिबून॰" *(यासीन, रूकूअ 4)*

'आज (यानी क़ियामत के दिन) हम उनके मुहों पर मुहर लगा देंगे (ताकि लग्व उज़्र न घड़ें) और उनके हाथ हमसे कलाम करेंगे और उनके पांव गवाही देंगे उस चीज़ की जो कुछ ये किया करते थे।

यानी हाथ ख़ुद बोल उठेगा कि मुझसे किस किस पर ज़ुल्म किया गया। क्या क्या ना जायज़ हरकात मुझ से सादिर कराई गयीं। पांव ख़ुद गवाही देगा कि मुझे कैसी कैसी ना जायज़ मज्लिसों में ले जाया गया। दूसरी जगह इर्शाद है। –

وَيَوْمَ يُحْشَرُ أَعْدَاءُ اللَّهِ إِلَى النَّارِ (حٰمٓ سجدة ع ٣)

"व यौ-म युह्श-रू अअ्दा उल्ला-हि इलन्ना-रि"

(अल्आयत हामीम सज्द:, रूकूअ 3)

'और जिस दिन अल्लाह के दुश्मन दोज़ख़ की तरफ़ जमा किए जायेंगे, फिर उनको (एक जगह चलते चलते) रोक दिया जायेगा (ताकि सब एक जगह इकट्ठे हो जायें) यहां तक कि जब सब दोज़ख़ के क़रीब आ जायेंगे (और हिसाब किताब शुरू होगा) तो उनके कान और आंखें और खाल उनके ऊपर (उनके आमाल) की गवाही देंगे और वे लोग अपने उन आज़ा से कहेंगे कि तुमने हमारे ख़िलाफ़ गवाही क्यों दी। वे आज़ा कहेंगे हमको उस (क़ादिर) ने बोलने की ताक़त दी जिसने हर चीज़ को गोयाई अता फ़रमाई और उसी ने तुमको अव्वल मर्तबा पैदा किया था और उसीं के पास अब (दोबारा ज़िंदा करके) लाये गये हो। (आगे हक़ तआला शानुहू तंबीह फ़रमाते हैं) और तुम इस बात से तो अपने को छुपा ही न सकते थे कि तुम पर तुम्हारे कान और आंखें और खालें गवाही देंगी (और ज़ाहिर है कि आदमी जो जो हरकतें करता है, उसके आंख, कान वग़ैरह तो उसको देखते ही हैं, उनसे कैसे छुपा कर कोई शख़्स कोई काम कर सकता है) लेकिन तुम इस गुमान में रहे कि अल्लाह तआला को तुम्हारे बहुत से आमाल की ख़बर भी नहीं (जो चाहो कर गुज़रो कौन पूछ सकता है) और तुम्हारे इस गुमान ने जो तुमने अपने रब के साथ कर रखा था (कि उसको ख़बर भी नहीं है) तुमको बर्बाद कर दिया, पस तुम ख़सारे में पड़ गये।

अहादीस में बहुत सी रिवायात इन गवाहियों के बारे में आई हैं। एक हदीस में है, हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर थे, हुज़ूर सल्ल० ने तबस्सुम फ़रमाया कि जिस से दनदाने (दांत) मुबारक ज़ाहिर हो गये, फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया जानते हो, मैं क्यों हंसा? सहाबा रज़ि० ने ला इल्मी ज़ाहिर की। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि बंदा अपने मौला से क़ियामत के दिन यों कहेगा कि या अल्लाह तूने मुझ पर ज़ुल्म से तो अमान दे

रखी है, इर्शाद होगा कि बिल्कुल, तो बंदा कहेगा, या अल्लाह मैं अपने ख़िलाफ़ किसी दूसरे की गवाही मोतबर नहीं मानता, इर्शाद होगा कि अच्छा हम तुझी को तेरे नफ़्स पर गवाह बनाते हैं। उसके मुंह पर मुहर लगा दी जायेगी और उसके बदन के आज़ा से पूछा जायेगा और जब वह अपने सब आमाल गिनवा देंगे तो मुंह की मुहर हटा दी जायेगी, तो वह अपने आज़ा से कहेगा, कमबख़्तो, तुम्हारा नास हो, तुम्हारे ही लिये तो मैं ये चीज़ें करता था, (यानी इन हरकतों की लज़्ज़तें तुमको ही तो मिलती थीं, तुम ही अपने ख़िलाफ़ गवाही देने लगे, मगर आज़ा भी मजबूर हैं कि उस दिन कोई चीज़ ख़िलाफ़े हक़ बात न कह सकेगी। एक और हदीस में है कि आदमी के आज़ा में सबसे पहले बायीं रान बोलेगी कि उससे क्या क्या हरकतें हुईं और उसके बाद दूसरे आज़ा बोलेंगे। ग़रज़ हर अज़्व (अंग) अपने किए हुए नेक और बदआमाल गिनवा देगा। इसी वजह से एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि सुब्हानल्लाहि, अलहम्दु लिल्लाहि वग़ैरह को उंगलियों पर गिना करो इसलिए कि क़ियामत के दिन इन आज़ा को गोयाई (बोलने की ताक़त) अता होगी और इनसे बाज़पुर्स होगी।

यानी जहां ये आज़ा अपने गुनाह गिनवायेंगे वहां बहुत से नेक काम भी तो गिनवायेंगें, जहां हाथ बुरी हरकात, ज़ुल्म व सितम और ना जायज़ अफ़आल बतायेगा वहां अल्लाह का पाक नाम इससे गिनना, सदक़ात का देना, नेक आमाल में हाथों का मशग़ूल रखना भी तो बतायेंगे। ग़रज़ यह मज़्मून अपनी तफ़सील के एतिबार से बहुत तवील है लेकिन मुख़्तसर यह है कि इन आज़ा को जवानी के ज़ोर में ज़ुल्म व सितम और ना जायज़ हरकात से बचाने की बहुत ज़रूरत है। हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है:-

الشَّبَابُ شُعْبَةٌ مِّنَ الْجُنُوْنِ وَالنِّسَاءُ حِبَالَةُ الشَّيْطَانِ.

"अश्शबाबु शुअ्-बतुम् मिनलजुनू-नि वन्निसा-उ हिबा-ल तुश्शैतान॰

(जामे सग़ीर)

'जवानी जुनून का एक शोबा है और औरत शैतान का जाल है। यानी आदमी अपने जुनून की वजह से इस जाल में फंस जाता है हर जुमा के ख़ुत्बे में ये अल्फ़ाज़ सुने जाते हैं। उस वक़्त जवानी के नशे में ज़रा भी इसका ख़्याल हम लोगों को नहीं होता कि इसकी जवाबदही करना पड़ेगी। हम उसकी क़ुव्वत को गुनाहों में और दुनिया कमाने में ज़ाया कर रहे हैं हालांकि जवानी इसलिए है कि उसकी क़ुव्वत को ऐसे काम में ख़र्च किया जाए जो मरने के बाद काम आए।

ख़ुश क़िस्मत हैं वे नौजवान जो अल्लाह के काम में हर वक़्त मुन्हमिक रहते हैं और गुनाहों से दूर रहते हैं।

तीसरी चीज़ जो ऊपर की हदीस में ज़िक्र की गयी जिसके जवाब बग़ैर क़ियामत में हिसाब की जगह से टलना न हो सकेगा। वह यह है कि माल जो हासिल किया, किस ज़रिये से किया, जायज़ था या ना जायज़ था। इससे पहली हदीस में कुछ ज़िक्र इसका आ चुका है।

हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि आदमी ना जायज़ तरीक़े से जो माल हासिल करता है अगर उसमें से सदक़ा करे तो क़ुबूल न होगा, ख़र्च करे तो बरकत न होगी और जो तरका छोड़ेगा वह उसके लिए जहन्नम का ज़ख़ीरा होगा। एक और हदीस में है कि जो गोश्त (यानी आदमी के बदन का टुकड़ा) हराम माल से नश्व-नुमा पाये, जहन्नम उसके लिए बेहतर है। एक हदीस में है कि जो आदमी दस दिरहम का कपड़ा ख़रीदे और उनमें एक दिरहम ना जायज़ आमदनी का हो तो जब तक वह कपड़ा बदन पर रहेगा, उसकी नमाज़ क़ुबूल न होगी।

(मिश्कात)

हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद मुतअद्द अहादीस में आया है कि रोज़ी को दूर न समझो, कोई आदमी उस वक़्त तक मर नहीं सकता जब तक कि जो उसके मुक़द्दर में रोज़ी लिख दी गयी है, वह उसको न मिल जाये। लिहाज़ा रोज़ी के हासिल करने में बेहतर तरीक़ा इख़्तियार करो। हलाल रोज़ी कमाओ, हराम को छोड़ो। कई हदीसों में है कि रिज़्क़ आदमी को उसी तरह तलाश करता है जिस तरह मौत आदमी को तलाश करती है। यानी जिस तरह आदमी को उस की मौत आए बग़ैर चारा नहीं इसी तरह उसको उसकी रोज़ी जो उसके मुक़द्दर में लिख दी गयी है बग़ैर मिले चारा-ए-कार नहीं है। एक हदीस में है कि अगर आदमी अपनी रोज़ी से भागना भी चाहे तो वह उसको पाकर ही रहेगी जैसा कि मौत उसको लामुहाला पाकर रहेगी। एक हदीस में है कि रोज़ी आदमी के लिए मुतअय्यन है, अगर सारी दुनिया के जिन्न व इन्स मिलकर उस को उस से हटाना चाहें तो नहीं हटा सकते। *(तर्ग़ीब)*

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि अगर तुझमें चार चीज़ें हों तो दुनिया की किसी चीज़ के न होने का क़लक़ (रंज) नहीं है। अमानत की हिफ़ाज़त, बात में सच्चाई, अच्छी आदत, रोज़ी में पाकीज़गी। एक हदीस में है,

मुबारक है वह शख़्स जिसकी कमाई अच्छी हो (यानी पाकीज़ा हो) उसका बातिन नेक हो, उसका ज़ाहिर शरीफ़ाना हो, लोग उसकी बुराई से महफ़ूज़ हों, मुबारक है वह शख़्स जो अपने इल्म पर अमल करे और ज़रूरत से ज़ायद माल को (अल्लाह की राह में ख़र्च कर दे।) और ज़रूरत से ज़ायद बात को रोक ले यानी बेज़रूरत बात न किया करे। हज़रत सअद रज़ि॰ ने एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल॰ से दर्ख़्वास्त की कि मेरे लिए इस बात की दुआ कर दें कि हक़ तआला शानुहू मुझे मुस्तजाबुद्दुआ (जो दुआ करे वह क़ुबूल हो जाये) बना दे, हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया अपनी रोज़ी को पाकीज़ा बना लो (मुश्तबह माल न खाओ) मुस्तजाबुद्दुआ बन जाओगे, क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की जान है कि आदमी एक हराम का लुक़्मा अपने पेट में डालता है जिससे उसकी चालीस दिन की इबादत ना मक़बूल बन जाती है और जिसकी परवरिश हराम माल से हुई हो जहन्नम उसके लिए ज़्यादा मुनासिब है। और भी बहुत सी रिवायात इसी मज़्मून की अहादीस में आई हैं (तर्ग़ीब) इसलिए अपनी आमदनी के ज़राए में बड़ी एहतियात करना चाहिए, ज़ाहिर के एतिबार से अगर उस एहतियात में कोई नुक़्सान नज़र में आता हो तब भी बरकत और माल के एतिबार से वह कमी बहुत ज़्यादा फ़ायदामंद और नुक़्सान से बचाने वाली है।

चौथा मुतालबा हदीसे बाला में यह है कि माल को कहां ख़र्च किया। यह रिसाला सारा ही इस मज़्मून में है कि आदमी के माल में उसके काम आने वाला सिर्फ़ वही है जिसको अल्लाह के रास्ते में आदमी ख़र्च कर दे, इसके मौजूद रहने में इसके अलावा कि वह अपने काम न आ सका, बेकारे महज़ रहा। मुतअद्दद नुक़्सानात भी दूसरी फ़स्ल के ख़त्म पर गुज़र चुके हैं, और जितनी ज़्यादा माल की कसरत होगी, उतना ही ज़्यादा हिसाब में देर लगना तो एक खुली हुई बात है। क़ियामत का वह सख़्त तरीन होशरूबा दिन, जिसमें गर्मी की शिद्दत से हर शख़्स पसीना पसीना हो रहा होगा हर शख़्स ख़ौफ़ की शिद्दत से ऐसा मालूम होगा जैसा कि नशे में हो मगर हक़ीक़तन नशा न होगा जिसके मुताल्लिक़ हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है –

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ اِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيْمٌo يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّآ اَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌo (حج ع ۱)

"या अय्युहन्नासुत्तक़ू रब्बकुम इन्-न ज़ल्ज़-ल-तस्साअति शैउन् अज़ीम॰ यौ-म तरौन-हा तज़्हलु कुल्लु मुर्ज़िअतिन् अम्मा अर्ज़अत् व त-ज़-अु कुल्लु ज़ाति हम्लिन हम्ल-हा व तरन्ना-स सुकारा वमा हुम् बिसुकारा व लाकिन्-न अज़ाबल्लाहि शदीद॰" *(हज, रूकूअ 1)*

(ऐ लोगो! अपने रब से डरो बेशक क़ियामत का ज़लज़ला (जो अंक़रीब आने वाला है) बहुत सख़्त चीज़ है। जिस दिन तुम उसको देखोगे तमाम दूध पिलाने वाली औरतें (ख़ौफ़ की वजह से) अपने दूध पीते बच्चे को भूल जायेंगी, और तमाम हामिला औरतें (दहशत की वजह से) अपने हमल (वक़्त से पहले ही अधूरे) गिरा देंगी और तू लोगों को नशा की सी हालत में देखेगा और हक़ीक़तन वह नशा न होगा बल्कि अल्लाह तआला का अज़ाब ही सख़्त है (जिसके ख़ौफ़ से उन सबकी यह हालत होगी।)

दूसरी जगह इर्शाद है:-

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِي غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ٥(انبیاء ع ١)

"इक़्त-र्-ब लिन्नासि हिसाबुहुम् वहुम् फी ग़फ़्लतिम् मुअ्रिज़ून्॰"

(अंबिया, रूकूअ 1)

लोगों के हिसाब का दिन तो क़रीब आ गया (कि क़ियामत तेज़ी से क़रीब आ रही है) और ये लोग (अभी तक) ग़फ़लत में पड़े हैं (और उसके लिए तैयारी से) रूगर्दां हैं।

इसके चंद रूकूअ बाद इर्शाद है:-

وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا ط وَاِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ط وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ ٥(انبیاء ع ٤)

"व न-ज़-उल् मवाज़ीनल् क़िस्-त लियौमिल् क़ियाम-ति फ़ला तुज़्ल-मु नफ़्सुन् शैअन्, व इन् का-न मिस्क़ा-ल हब्ब-तिम् मिन् ख़र्द-लिन् अतैना बिहा, व कफ़ा बिना हासिबी-न"

(सूरः अंबिया रूकूअ 4)

'और क़ियामत के दिन हम मीज़ाने अदल क़ायम करेंगे और किसी पर किसी क़िस्म का ज़ुल्म न होगा और अगर राई के दाने के बराबर भी किसी का कोई अमल (नेक या बद) होगा तो हम उसको वहां सामने लायेंगे और हम

हिसाब लेने वाले काफ़ी हैं।

एक और जगह इर्शाद है -

لِلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنٰى ط وَالَّذِيْنَ لَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهٗ لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ ط اُولٰٓئِكَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْحِسَابِ ۝ (رعد ٢)

"लिल्लज़ीनस् तजाबू लिरब्बिहिमुल् हुस्ना वल्लज़ी-न लम यस्तजीबू लहू लौ अन्-न लहुम् माफ़िल् अर्ज़ि जमीअंव्-व मिस्लहू म-अ-हू लफ़्त-दौ बिही उलाइ-क लहुम् सूउल् हिसाब०" *(रअद, रूकूअ 2)*

जिन लोगों ने अपने रब का कहना मान लिया (और उसके इर्शादात की तामील की) उनके लिए अच्छा बदला है (जो जन्नत में उनको मिलेगा और जिन लोगों ने उसका कहना न माना, उनके पास (क़ियामत के दिन) अगर तमाम दुनिया की सारी चीज़ें मौजूद हों बल्कि उसके साथ उसी के बराबर और भी हों (यानी सारी दुनिया की तमाम चीज़ों से दोगुनी हों) वे सब चीज़ें अपनी (ख़लासी के लिए) फ़िदया में दे दें उन लोगों का सख़्त हिसाब होगा।

और भी बहुत सी आयात में उस दिन के हिसाब पर उसकी सख़्ती और अहमियत पर तंबीह की गयी है। हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ ने एक मर्तबा इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत में जिस शख़्स से हिसाब किया जायेगा वह हलाक हो जाएगा। (इसलिए कि हिसाब में पूरा उतरना सख़्त मुश्किल होगा) हज़रत आइशा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्ल॰ हक़ तआला शानुहू ने तो (सूरः इज़स्समाउन शक़्क़त में) यह इर्शाद फ़रमाया कि सहल (आसान) हिसाब होगा। हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि यह हिसाब (जिसका इस सूरः में ज़िक्र है यह) तो महज़ आमाल का पेश होना है जिसका मुहासबा शुरू हो जायेगा, वह हलाक हो जायेगा। एक और हदीस में हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ यह दुआ किया करते थे कि या अल्लाह मुझ से हिसाबे यसीर (सहल हिसाब) कीजिए। मैं ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्ल॰ हिसाबे यसीर क्या चीज़ है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, उसका आमाल नामा देखकर यह फ़रमा दिया जाए कि उसको माफ़ कर दिया। लेकिन जिस से मुहासबा होने लगे वह हलाक हो गया।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि तीन

चीज़ें ऐसी हैं, जिस शख़्स में ये तीनों मौजूद हों उसका हिसाब सहल होगा और हक़ तआला शानुहू उसको अपनी रहमत से जन्नत में दाख़िल कर देगा। वे तीन चीज़ें ये हैं, कि जो शख़्स तुझे अपनी इनायत से महरूम रखे, तू उस पर एहसान कर, जो तुझ पर ज़ुल्म करे उसको माफ़ कर, जो तुझसे क़तअ्-रहमी करे तू उसके साथ सिला-रहमी कर। *(दुर्रे मंसूर)*

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि तुममें से कोई शख़्स भी ऐसा न होगा जिस से हक़ तआला शानुहू ऐसी तरह बात न करें कि उसके और अल्लाह तआला के दर्मियान में न कोई पर्दा होगा, न कोई वास्ता होगा, अपने दायें तरफ़ देखेगा तो वे आमाल होंगे जो दुनिया में किए, बायें तरफ़ देखेगा तो वे आमाल होंगे जो किये थे (नेक आमाल हों या बुरे) दहकती हुई जहन्नम आंख के सामने होगी, उस से (बचने की बेहतरीन चीज़ सदक़ा है पस सदक़ा के ज़रिये से उससे बचो) चाहे आधी खजूर ही सदक़ा क्यों न हो। *(मिश्कात)*

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि मुझे जन्नत दिखाई गई, उसके आला दरजों में फ़ुक़रा-ए-मुहाजिरीन थे और ग़नी लोग और औरतें बहुत कम मिक़्दार में उस जगह थीं, मुझे यह बताया गया कि ग़नी लोग तो अभी जन्नत के दरवाज़ों पर हिसाब में मुब्तला हैं और औरतों को सोने चांदी की मुहब्बत ने मशग़ूल कर रखा है। एक और हदीस में है, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि मैं जन्नत के दरवाज़ों पर खड़ा था, अक्सर मसाकीन उसमें दाख़िल हो रहे थे और ग़नी लोग (हिसाब में) मुक़य्यद थे, और मैं ने दोज़ख़ के दरवाज़े पर देखा कि औरतें उसमें कसरत से दाख़िल हो रही हैं। एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि आदमी दो चीज़ों से घबराता है और दोनों उसके लिए ख़ैर हैं। एक मौत से घबराता है हालांकि मौत फ़ित्नों से बचाव है, दूसरे माल की कमी से घबराता है हालांकि जितना माल कम होगा उतना ही हिसाब कम होगा। *(तर्ग़ीब)*

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मर्तबा सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन के मज्मा में तशरीफ़ फ़रमा थे हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं ने आज रात जन्नत को और उस में तुम लोगों के मर्तबों को देखा है, उसके बाद हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि० की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया कि मैं ने उस एक शख़्स को देखा कि वह जन्नत के जिस दरवाज़े पर भी जाता था वहां से मर्हबा मर्हबा (तशरीफ़ लाइए, तशरीफ़ लाइए) की आवाज़ें

आती थीं, (हर नेक अमल के लिए जन्नत में एक ख़ास दरवाज़ा है, हर दरवाज़े से दर्ख़्वास्त का मतलब यह है कि हर नेक अमल में उसका पाया बहुत बढ़ा हुआ है) हज़रत सलमान रज़ि॰ ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्ल॰ जिस शख़्स का यह मर्तबा है वह तो कोई बहुत ही बुलंद पाया शख़्स है। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया यह शख़्स अबूबक्र (रज़ि॰) हैं फिर हुज़ूर सल्ल॰ ने हज़रत उमर रज़ि॰ की तरफ़ तवज्जोह फ़रमा कर इर्शाद फ़रमाया कि मैं ने जन्नत में सफ़ेद मोती का एक घर देखा जिसमें याक़ूत जड़े हुए थे, मैं ने पूछा यह मकान किसका है ? मुझे बताया गया कि यह क़ुरैश के एक नौजवान का है (उस मकान की निहायत उम्दगी, चमक, रौनक़ और अपने सैय्यिदुलमुर्सलीन होने की वजह से) मुझे यह ख़्याल हुआ कि यह मकान मेरा ही है। मैं उसमें दाख़िल होने लगा तो मुझे बताया गया कि यह उमर (रज़ि॰) का है। फिर हुज़ूर सल्ल॰ ने हज़रत उस्मान रज़ि॰, हज़रत अली रज़ि॰ वग़ैरह मुतअद्दद हज़रात के मरातिब इर्शाद फ़रमाए, उसके बाद हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि॰ की तरफ़ मुतवज्जह होकर इर्शाद फ़रमाया कि मेरे साथियों में से तुम बहुत देर से मेरे पास पहुँचे। मुझे तो तुम्हारे मुताल्लिक़ यह डर हो गया था कि कहीं हलाक तो नहीं हो गये और तुम पसीना पसीना हो रहे थे, मैं ने तुमसे पूछा कि इतनी देर आने में तुम्हें कहाँ लग गयी थी तो तुमने जवाब दिया था कि मैं अपने माल की कसरत की वजह से हिसाब में मुब्तला रहा मुझसे इसका हिसाब हुआ कि माल कहाँ से कमाया और कहाँ ख़र्च किया। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि॰ अपने मुताल्लिक़ यह सुनकर रोने लगे और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह सल्ल॰ रात ही मेरे पास मिस्र की तिजारत से सौ ऊँट आये हैं ये मदीना मुनव्वरा के फ़ुक़रा और यतामा पर सदक़ा हैं शायद अल्लाह जल्ल शानुहू इसी की वजह से उस दिन के हिसाब में मुझ पर तख़्फ़ीफ़ फ़रमा दें। *(तर्ग़ीब)*

एक हदीस में है कि एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि अब्दुर्रहमान (रज़ि॰) तुम मेरी उम्मत के ग़नी लोगों में हो और जन्नत में घिसट कर जाओगे (पांव पर खड़े होकर न जाओगे)। तुम अल्लाह तआला शानुहू को क़र्ज़ दो ताकि तुम्हारे पांव खुल जायें। हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि॰ ने पूछा: या रसूलल्लाह सल्ल॰ क्या चीज़ क़र्ज़ दूँ? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, अपना सारा माल। यह सुनकर फ़ौरन उठे ताकि अपना सारा माल लाकर हाज़िर करें। हुज़ूर सल्ल॰ ने उनके पीछे क़ासिद को भेज कर उनको

बुलाया और यह इर्शाद फ़रमाया कि हज़रत जिब्रील अलै॰ अभी आए और ये पैग़ाम दे गये कि अब्दुर्रहमान रज़ि॰ से कह दीजिए कि मेहमान नवाज़ी किया करें, ग़रीबों को खाना खिलाया करें, सवाल करने वालों का सवाल पूरा किया करें, और जो उनके अयाल हैं उनसे सदक़े में इब्तिदा किया करें, ये चीज़ें उनके तज़्किया (दुरूस्त होने) के लिए काफ़ी हैं। *(हाकिम)*

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि॰ बड़े जलीलुलक़द्र सहाबी, बड़े फ़ज़ाइल और मफ़ाख़िर के मालिक हैं, अश्रा-ए-मुबश्शरा में उनका शुमार है, यानी इन दस सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ में जिनको दुनिया ही में हुज़ूर सल्ल॰ जन्नत की ख़ुशख़बरी दे गए नीज़ उन छह हज़रात में हैं जिन पर हज़रत उमर रज़ि॰ ने अपनी शहादत के वक़्त ख़लीफ़ा बनाने का दारोमदार रखा था और यह कहा था कि इन हज़रात से हुज़ूर अक़्दस सल्ल॰ अलैहि व सल्लम राज़ी होकर दुनिया से तशरीफ़ ले गये हैं और फिर इन छह हज़रात में से बक़िया पांच हज़रात ने बिल आख़िर उन ही की राय पर ख़लीफ़ा चुनने का मदार रखा था और उनकी तजवीज़ से हज़रत उस्मान रज़ि॰ ख़लीफ़ा-ए-सालिस (तीसरे ख़लीफ़ा) मुक़र्रर हुए थे। साबिक़ीने अव्वलीन में उनका शुमार है जिनके मुताल्लिक़ अल्लाह पाक ने फ़रमाया।

وَالسَّابِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهَاجِرِيْنَ وَالْاَنْصَارِ. (توبہ ع ۱۳)

"वस्साबिक़ूनल् अव्वलू-न मिनल् मुहाजिरी-न वल्अन्सार्॰"

(सूरः तौबा, रूकूअ 13)

तर्जुमाः- 'और जो मुहाजिरीन और अंसार ईमान लाने में उम्मत से साबिक़ और मुक़द्दम हैं और जो लोग इख़लास से उनके पैरू हैं अल्लाह तआला उन सब से राज़ी हुआ और ये सब अल्लाह तआला से राज़ी हुए, अल्लाह तआला ने उनके लिए ऐसे बाग़ तैय्यार कर रखे हैं, जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, जिनमें ये हमेशा रहेंगे।

इसके अलावा हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि॰ ने दोनों हिजरतें कीं, ग़ज़्वा-ए-बद्र और सब ग़ज़्वों के शरीक हैं। हुज़ूर सल्ल॰ के ज़माने ही में अहले इल्म और अहले फ़त्वा में इनका शुमार है। महज़ इन की राय पर हज़रत उमर रज़ि॰ ने बाज़ उमूर को इख़्तियार किया। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मर्तबा सफ़र में सुबह की नमाज़ उनका मुक़्तदी बन कर अदा

फ़रमाई कि हुज़ूर सल्ल॰ ज़रूरत के लिए तशरीफ़ ले गये। सहाबा रज़ि॰ ने मिलकर उनको इमाम चुना था। जब हुज़ूर सल्ल॰ वापस तशरीफ़ लाये तो नमाज़ हो रही थी, एक रकअ़त हो चुकी थी। हुज़ूर सल्ल॰ ने उनके इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ी। जब हज़रत उमर रज़ि॰ ख़लीफ़ा बने तो पहले साल में अपना क़ायम मुक़ाम अमीरूल हज बना कर उनको भेजा। *(इसाबा)*

ग़रज़ बेइन्तिहा फ़ज़ाइल के बावजूद इस माल की कसरत ने उनको अपने मर्तबा के लोगों में पीछे कर दिया और माल भी महज़ हक़ तआला शानुहू के फ़ज़्ल और उसकी अता और उसके इन्आम ही से मिला था, वरना बहुत ग़रीब थे, हिजरत की इब्तिदा में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब मुहाजिरीन और अंसार का आपस में भाई चारा किया था ताकि फ़ुक़रा-ए-मुहाजिरीन की इआनत और मदद ख़ुसूसी ताल्लुक़ पर अंसार करते रहें तो उनको हज़रत सअद बिन रबीअ् अंसारी रज़ि॰ का भाई बनाया था। हज़रत सअद रज़ि॰ ने उनसे कहा था कि मदीने में सबसे ज्यादा माल और दौलत अल्लाह जल्ल शानुहू ने मुझे अता फ़रमा रखा है, मैं सब माल में से आधा आधा तुम्हें देता हूँ और मेरी दो बीवियां हैं, उनमें से जौन सी तुम्हें पसंद हो मैं उसको तलाक़ दे दूँगा, इद्दत के बाद तुम उससे निकाह कर लेना। उनकी सैर चश्मी कि उन्होंने फ़रमाया, अल्लाह तआला तुम्हारे माल में बरकत अता फ़रमाये, मुझे इसकी ज़रूरत नहीं है मुझे तो तुम यहां के बाज़ार का रास्ता बता दो। बाज़ार गये और ख़रीद व फ़रोख़्त शुरू की और शाम को नफ़े में थोड़ा सा घी और पनीर बचा कर लाये। इसी तरह रोज़ाना जाते और कुछ ही दिन गुज़रे थे कि बचत इतनी हो गयी कि निकाह कर लिया। *(बुख़ारी)*

फिर वह वक़्त भी आया कि हुज़ूर सल्ल॰ ने एक मर्तबा सदक़े की तर्ग़ीब दी तो आप ने सारे माल का आधा हिस्सा सदक़ा किया और माल की कसरत का अंदाज़ा इस से हो सकता है जो अभी गुज़रा है कि सिर्फ़ मिस्र की तिजारत से सौ ऊँट सामान के लदे हुए आये थे जो सदक़ा कर दिये और इसके बाद एक मर्तबा चालीस हज़ार दीनार (अशरफ़ियां) सदक़ा कीं, एक मौक़े पर पांच सौ घोड़े, पांच सौ ऊँट जिहाद के लिए दिए और तीस हज़ार ग़ुलाम आज़ाद किए और एक रिवायत में है कि तीस हज़ार घराने आज़ाद किये। *(मुस्तदरक)*

हर घराने में न मालूम कितने मर्द और औरत, बड़े और बच्चे होंगे। एक मर्तबा एक ज़मीन चालीस हज़ार अशर्फ़ियों में फ़रोख़्त की और सब की सब

फ़ुक़रा-ए-मुहाजिरीन और अपने रिश्तेदारों और अज़वाजे मुतह्हरात पर तक़्सीम कर दीं। *(मुस्तदरक)*

और अपने इंतिक़ाल के वक़्त जो वसिय्यत की उसमें हर उस शख़्स को जो बद्र की लड़ाई में शरीक था फ़ी आदमी चार सौ दीनार (अशर्फ़ियां) की वसिय्यत की थी। उस वक़्त अह्ले बद्र में से सौ आदमी ज़िंदा थे। *(इसाबा)*

और एक बाग़ की वसीयत अज़्वाजे मुतह्हरात के लिए की जो चालीस हज़ार अशर्फ़ियों में फ़रोख़्त हुआ।*(मुस्तदरक)*

और ख़ुद अपना हाल यह था कि एक मर्तबा ग़ुस्ल करके खाना खाने के लिए बैठे तो एक प्याले में रोटी और गोश्त (सरीद) सामने रखा गया, उसको देखकर रोने लगे, किसी ने रोने की वजह पूछी तो फ़रमाया कि हुज़ूर सल्ल० का ऐसी हालत में विसाल हुआ कि जौ की रोटी भी पेट भर कर न मिलती थी। हमें ये हालात जो अपने सामने हैं कुछ अपने लिए ख़ैर नहीं मालूम होते' *(इसाबा)*

यानी अगर यह वुस्अत कुछ ख़ैर की चीज़ होती तो हुज़ूर सल्ल० के लिए भी होती। जब हुज़ूर सल्ल० के लिए ये चीज़ें न थीं तो कुछ ख़ैर की चीज़ें मालूम नहीं होतीं। इन कमालात पर वह मुहासबा है जो ऊपर ज़िक्र किया गया।

पांचवां मुतालबा हदीसे बाला में जिसका क़ियामत के मैदान में जवाब देना होगा, यह है कि जो इल्म हक़ तआला शानुहू ने तुम्हें अता किया था, उस पर किस हद तक अमल किया। किसी जुर्म का मालूम न होना कोई उज़्र नहीं, क़ानून से नावाक़फ़ियत किसी अदालत में भी मोतबर नहीं क्योंकि उसका मालूम करना अपना फ़रीज़ा है और यह बात कि अल्लाह का हुक्म मालूम नहीं था, मुस्तक़िल जुर्म और मुस्तक़िल गुनाह है। इसलिए हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि हर मुसलमान पर (मज़हबी) इल्म का सीखना फ़र्ज़ है। लेकिन यह भी ज़ाहिर है कि इल्म के बाद किसी जुर्म का करना ज़्यादा सख़्त है। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि अपने इल्म से एक दूसरे को नसीहत करते रहा करो कि इल्म में ख़ियानत माल में ख़ियानत से ज़्यादा सख़्त है और अल्लाह तआला शानुहू के यहां इसका मुतालबा होगा, और यह मज़्मून तो बहुत सी अहादीस में है कि जिस शख़्स से इल्म की कोई बात पूछी जाये और वह उसको छुपा जाये तो क़ियामत के दिन उसके मुंह में आग की लगाम डाली जायेगी।

एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वअ़्ज़

फ़रमाया, जिसमें बाज़ क़ौमों की तारीफ़ फ़रमायी और फिर यह इर्शाद फ़रमाया कि यह क्या बात है कि बाज़ क़ौमें अपनी पड़ोसी क़ौमों को तालीम नहीं देतीं, न उनको नसीहत करती हैं, न उनको समझदार बनाती हैं, न उनको अच्छी बातों का हुक्म करती हैं, न बुरी बातों से रोकती हैं, और यह क्या बात है बाज़ी क़ौमें अपने पड़ोसियों से न इल्म सीखती हैं, न समझ सीखती हैं, न नसीहत हासिल करती हैं। या तो ये लोग अपने पड़ोसियों को इल्म सिखायें और उनको नसीहत करें और उनको समझदार बनायें और दूसरे लोग इन इल्म वालों से उन चीज़ों को हासिल करें और अगर ऐसा न हुआ, तो ख़ुदा की क़सम, मैं इन सबको दुनिया ही में सख़्त सज़ा दूँगा। (आख़िरत का क़िस्सा अलग है)। इसके बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मिम्बर से उतर आये, लोगों में इसका चर्चा हुआ कि इससे कौन सी क़ौमें मुराद हैं? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि अशअ़री क़ौम के लोग मुराद हैं कि वे अह्ले इल्म हैं, अह्ले फ़िक़्ह हैं और उन के आस पास की रहने वाली क़ौमें जाहिल हैं।

यह ख़बर अशअ़री लोगों को पहुँची। वे हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह (सल्ल॰) आपने बाज़ क़ौमों की तो तारीफ़ फ़रमाई और हम लोगों के मुताल्लिक़ यह इर्शाद फ़रमाया। हुज़ूर सल्ल॰ ने अपना पाक इर्शाद उनके सामने फ़रमाया कि या तो ये लोग अपने पड़ोसियों को इल्म सिखायें और उनको नसीहत करें, उनको समझदार बनायें, उनको अच्छी बातों का हुक्म करें, बुरी बातों से मना करें और दूसरे लोग उनसे इन चीज़ों को हासिल करें, वरना मैं दुनिया ही में सख़्त सज़ा दूँगा। उन्होंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह, सल्ल॰ हम दूसरों को किस तरह समझदार बनायें? हुज़ूर सल्ल॰ ने फिर अपना वही हुक्म इर्शाद फ़रमाया। उन्होंने तीसरी दफ़ा फिर यही अर्ज़ किया और हुज़ूर सल्ल॰ ने फिर भी अपना वही हुक्म इर्शाद फ़रमाया तो उन्होंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्ल॰ अच्छा एक साल की मुहलत हमको दे दें। हुज़ूर सल्ल॰ ने उन पड़ोसियों की तालीम के लिए एक साल की मुहलत अता फ़रमा दी। *(तर्ग़ीब व मज्मउज़्ज़वाइद)*

इस हदीसे पाक और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस सख़्त इताब से यह भी वाज़ेह हो गया है कि जो लोग ख़ुद अह्ले इल्म हैं, समझदार हैं उनकी यह भी ज़िम्मेदारी है कि वह अपने आस पास के रहने वाले जाहिलों की तालीम की कोशिश करें, उनका यह ख़्याल कि जिसको ग़रज़ होगी,

खुद सीखेगा, काफ़ी नहीं। न सीखने का मुस्तक़िल मुतालबा और मुस्तक़िल गुनाह उनके ज़िम्मे हैं लेकिन उनको सिखाने की ज़िम्मेदारी उन आलिमों की भी है यह खुद इसकी कोशिश करें, इसकी तद्बीर करें कि वे इल्म सीखें। यह भी अपने इल्म पर अमल करने में दाख़िल है कि इल्म के अमल में उसका सिखाना भी दाख़िल है।

(तर्ग़ीब)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जो दुआयें कसरत से नक़ल की गयीं हैं, उनमें यह दुआ भी बकसरत वारिद है कि ऐ अल्लाह, मैं तुझसे ऐसे इल्म से पनाह मांगता हूँ जो नफ़ा न दे।

हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि क़ियामत के दिन एक शख़्स (यानी एक नौअ् (क़िस्म) आदमियों की चाहे उस नौअ् के कितने ही आदमी हों) लाया जायेगा और उसको जहन्नम में फेंक दिया जाएगा, जिस से उसकी अंतड़ियां निकल पड़ेंगी और वह उनके गिर्द इसी तरह घूमेगा जैसा कि चक्की का गधा चक्की के गिर्द फिरता है (यानी जैसा कि जानवर, गधा, बैल वग़ैरह आटा पीसने की चक्की के चारों तरफ़ घूमता है।), जहन्नम के लोग उसके चारों तरफ़ जमा हो जायेंगे और उससे दर्याफ़्त करेंगे कि तुझे क्या हुआ, तू तो हमको भी अच्छी बातों का हुक्म करता था, बुरी बातों से रोकता था? वह जवाब देगा कि मैं तुमको इसका हुक्म करता था लेकिन ख़ुद उस पर अमल नहीं करता था। एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि मैं ने शबे मेराज (मेराज की रात) में एक जमाअत को देखा कि उनके होंट जहन्नम की आग की क़ैंचियों से कतरे जा रहे थे। मैं ने हज़रत जिब्रील अलैहि॰ से दर्याफ़्त किया कि ये कौन लोग हैं? उन्होंने बताया कि ये आपकी उम्मत के वे बाज़ वाइज़ हैं जो दूसरों को नसीहत करते थे और खुद उस पर अमल नहीं करते थे। एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि "ज़बानियः" ऐसे पढ़े लिखों को जो फ़िस्क में मुब्तिला हों, काफ़िरों से भी पहले पकड़ेंगे। वे कहेंगे यह क्या हुआ कि हमारी पकड़ काफ़िरों से भी पहले हो रही है, उन को जवाब दिया जायेगा कि आलिम और जाहिल बराबर नहीं होते।

(तर्ग़ीब)

यानी तुम ने बावजूद जानने के यह हरकतें कीं। ज़बानिया फ़रिश्तों की वह सख़्त तरीन जमाअत है जो लोगों को जहन्नम में फेंकने पर मामूर है। सूरः इक़्रा में भी इनका ज़िक्र है।

एक हदीस में है कि बाज़ जन्नती बाज़ जहन्नमी लोगों के पास जाकर कहेंगे कि तुम्हें क्या हुआ? तुम यहां पड़े हो, हम तो तुम्हारी ही वजह से जन्नत में गए हैं कि तुम ही से हमने इल्म सीखा था। वे जवाब देंगे कि हम दूसरों को तो बताते थे, ख़ुद उस पर अमल नहीं करते थे। हज़रत मालिक बिन दीनार रह० हज़रत हसन बसरी के ज़रिये से हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जो शख़्स भी वअ्ज़ कहता है, हक़ तआला शानुहू उससे क़ियामत के दिन मुतालबा फ़रमायेंगे कि उसका क्या मक़्सद था, (यानी उससे कोई दुनियावी ग़रज़ थी, माल व मन्फ़अत या जाह व शोहरत या ख़ालिस अल्लाह तआला के वास्ते कहा था) हज़रत मालिक रह० के शागिर्द कहते हैं कि मालिक रह० जब इस हदीस को बयान करते तो इतना रोते कि आवाज़ न निकलती, फिर यों फ़रमाते कि तुम यों समझते हो कि वअज़ से मेरी आंख ठंडी होती है (यानी मेरा दिल ख़ुश होता है), हालांकि मुझे मालूम है कि मुझसे क़ियामत के दिन इसका सवाल होगा कि इस वअज़ का क्या मक़्सद था? *(तर्ग़ीब)*

इसके बावजूद जो कहने की मजबूरी है, वह अभी गुज़र चुकी है, यानी लोगों को इल्म से रुशनास करने की ज़िम्मेदारी भी है, जैसा कि बहुत सी रिवायात में वारिद हुआ और अश्अरी लोगों का क़िस्सा अभी गुज़रा। हज़रत अबूदर्दा रज़ि० फ़रमाया करते थे कि मुझे इसका ख़ौफ़ और डर है कि क़ियामत के दिन सारी मख़्लूक़ के सामने मुझे आवाज़ दी जाए, मैं अर्ज़ करूँ "लब्बैक रब्बी" मेरे रब मैं हाज़िर हूँ, वहां से मुतालबा हो कि अपने इल्म में क्या अमल किया था? एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि क़ियामत के दिन सख़्त तरीन अज़ाब वाला वह आलिम है जिसके इल्म से उसको नफ़ा न हो। हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि० फ़रमाते हैं कि मुझे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़बीला क़ैस की तालीम के लिए भेजा, मैं ने जाकर देखा कि वे वहशी ऊँटों की तरह से हैं, उनका हर वक़्त ध्यान अपने ऊँट और बकरी में लगा रहता है, इनके सिवा कोई दूसरी फ़िक्र ही इनको नहीं। (हर वक़्त बस दुनिया के धंधों में लगे रहते हैं।) मैं वहां से वापस आ गया, हुज़ूर सल्ल० ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि क्या करके आये? मैं ने हुज़ूर सल्ल० से उनका हाल बयान कर दिया और (दीन से) उनकी ग़फ़लत की ख़बर सुनाई। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि अम्मार, इससे ज़्यादा ताज्जुब की बात उस क़ौम की हालत है, जो आलिम होने के बावजूद (दीन से) ऐसे ही ग़ाफ़िल हो जैसा कि यह ग़ाफ़िल है।

एक और हदीस में है कि बाज़ आदमी जहन्नम में डाले जायेंगे, जिनकी बदबू और तअफ़्फ़ुन से जहन्नमी लोग भी परेशान हो जायेंगे। वे लोग उनसे कहेंगे, तुम्हारा क्या अमल ऐसा था जिसकी यह नहूसत है, हमें अपनी ही मुसीबत, जिसमें हम मुब्तला थे, क्या कम थी, तुम्हारी इस बदबू ने और भी परेशान कर दिया। ये लोग कहेंगे कि हम अपने इल्म से नफ़ा नहीं उठाते थे। *(तर्ग़ीब)*

हज़रत उमर रज़ि॰ का इर्शाद है कि मुझे इस उम्मत पर ज़्यादा ख़ौफ़ मुनाफ़िक़ आलिम का है। किसी ने पूछा कि मुनाफ़िक़ आलिम कौन होता है? आपने फ़रमाया कि ज़बान का आलिम, दिल और अमल का जाहिल, यानी तक़रीर तो बड़ी लच्छेदार करे मगर अमल के नाम पर सिफ़र। हज़रत हसन बसरी रह॰ फ़रमाते हैं कि तू ऐसा न बन कि उलमा के इल्म का जमा करने वाला हो, हकीमों के नादिर कलाम का हामिल हो मगर अमल में अहमक़ बेवक़ूफ़ों की तरह हो। हज़रत सुफ़यान सोरी रह॰ फ़रमाते हैं कि इल्म अमल के लिए आवाज़ देता है। अगर कोई शख़्स उस पर अमल करे तो वह इल्म बाक़ी रहता है। वरना वह भी चला जाता है। यानी इल्म ज़ाया हो जाता है। हज़रत फ़ुज़ैल रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मुझे तीन शख़्सों पर बड़ा रहम आता है, एक क़ौम का सरदार जो ज़लील हो गया हो, दूसरा वह ग़नी जो ग़िना के बाद फ़क़ीर हो गया हो, तीसरा वह आलिम जिससे दुनिया खेलती हो (यानी दुनिया का तालिब हो और जो इसका तालिब होगा यह उससे खेलेगी) हज़रत हसन रह॰ फ़रमाते हैं कि उलमा का अज़ाब दिल की मौत है और दिल की मौत आख़िरत के अमल से दुनिया तलब करना है। किसी शायर का शेर है :-

عجبت لمبتاع الضلالة بالهدی ومن یشتری دنیاه بالدین اعجبا

واعجب من هٰذین من باع دینه بدنیا سواه فهو من ذین اعجب

"अजिबतु लिमुब्ताइ-ज़्ज़लालति बिलहुदा।
व मंय्यश्तरी दुन्याहु बिद्दीन अअ्जबा।।
वअअ्-जबु मिन् हाज़ैनि मन् बाअ दी-नहू।
बि दुन्या सिवाहु फहु-व मिन् दीनिन अअ्जबु।।

तर्जुमाः- "मुझे उस शख़्स पर ताज्जुब आता है जो हिदायत के बदले गुमराही ख़रीदे और उससे ज़्यादा ताज्जुब उस शख़्स पर है जो दीन के बदले

दुनिया ख़रीदे और इन दोनों से ज़्यादा ताज्जुब उस शख़्स पर है जो अपने दीन को दूसरों की दुनिया के बदले फ़रोख़्त कर दे यानी दुनिया का फ़ायदा तो दूसरे को हो और दीन उन का ज़ाया और बर्बाद हो"

इमाम गज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि जो आलिम दुनियादार हो वह अह्वाल के एतिबार से जाहिल से ज़्यादा कमीना है और अज़ाब के एतिबार से ज़्यादा सख़्ती में मुब्तला होगा और कामयाब और अल्लाह तआला के यहां मुक़र्रब उलमा-ए-आख़िरत हैं जिनकी चंद आलमतें हैं।

1. अपने इल्म से दुनिया न कमाता हो। आलिम का कम से कम दरजा यह है कि दुनिया की हक़ारत का, उसके कमीने पन का, उसके मुकद्दर होने का, उसके जल्द ख़त्म हो जाने का उसको एहसास हो, आख़िरत की अज़मत, उसका हमेशा रहना, उसकी नेमतों की उम्दगी का एहसास हो और यह बात अच्छी तरह जानता हो कि दुनिया और आख़िरत दोनों एक दूसरे की ज़िद हैं, दो सौकनों की तरह हैं, जौन सी एक को राज़ी करेगा दूसरी ख़फ़ा हो जाएगी। ये दोनों तराज़ू के दो पलड़ों की तरह से हैं। जौन सा एक पलड़ा झुकेगा दूसरा हल्का हो जाएगा। दोनों में मश्रिक़ मग़्रिब का फ़र्क़ है, जौन से एक से तू क़रीब होगा, दूसरे से दूर हो जायेगा। जो शख़्स दुनिया की हक़ारत का, उसके गदलेपन का और इस बात का एहसास नहीं करता कि दुनिया की लज़्ज़तें, दोनों जहां की तक्लीफ़ों के साथ मुनज़्ज़म हैं, वह फ़ासिदुल अक़्ल है। मुशाहदा और तजुर्बा इन बातों का शाहिद है कि दुनिया की लज़्ज़तों में दुनिया की भी तक्लीफ़ है और आख़िरत की तक्लीफ़ तो है ही। पस जिस शख़्स को अक़्ल ही नहीं वह आलिम कैसे हो सकता है, बल्कि जो शख़्स आख़िरत की बड़ाई और उसके हमेशा रहने को भी नहीं जानता वह तो काफ़िर है, ऐसा शख़्स कैसे आलिम हो सकता है, जिसको ईमान भी नसीब न हो? और जो शख़्स दुनिया और आख़िरत का एक दूसरे की ज़िद होने को नहीं जानता और दोनों के दर्मियान जमा करने की तमअ् में है, वह ऐसी चीज़ में तमअ् कर रहा है जो तमअ करने की चीज़ नहीं है। वह शख़्स तमाम अंबिया अलैहि० की शरीअत से नावाक़िफ़ है और जो शख़्स इन सब चीज़ों को जानने के बावजूद दुनिया को तर्जीह देता है वह शैतान का क़ैदी है, जिसको शहवतों ने हलाक कर रखा है। और बद बख़्ती उस पर ग़ालिब है जिसकी यह हालत हो वह उलमा में कैसे शुमार होगा।

हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला का इर्शाद नक़ल किया

है कि जो आलिम दुनिया की ख़्वाहिश को मेरी मुहब्बत पर तर्जीह देता है उसके साथ अदना से अदना मामला मैं यह करता हूँ कि अपनी मुनाजात की लज़्ज़त से उसको महरूम कर देता हूँ। (कि मेरी याद में मेरी दुआ में उसको लज़्ज़त नहीं आती।) ऐ दाऊद, (अलैहि०) ऐसे आलिम का हाल न पूछ जिसको दुनिया का नशा सवार हो कि मेरी मुहब्बत से तुझको दूर कर दे, ऐसे लोग डाकू हैं। ऐ दाऊद, जब तू किसी को मेरा तालिब देखे तो उसका ख़ादिम बन जा, ऐ दाऊद, जो शख़्स भाग कर मेरी तरफ़ आता है, मैं उसको जहबज़ (हाज़िक़, समझदार) लिख देता हूँ और जिसको जहबज़ लिख देता हूँ, उसको अज़ाब नहीं करता।

यह्या बिन मुआज़ रज़ि० कहते हैं कि इल्म व हिक्मत से जब दुनिया तलब की जाये तो उनकी रौनक़ जाती रहती है। सईद बिन मुसैय्यिब रह० कहते हैं कि जब किसी आलिम को देखो कि वह उमरा (अमीरों) के यहां पड़ा रहता है तो उसको चोर समझो और हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि जिस आलिम को दुनिया से मुहब्बत रखने वाला देखो, अपने दीन के बारे में उसको मुत्तहम समझो। इसलिए कि जिस शख़्स को जिस से मुहब्बत होती है उसी में घुसा करता है। एक बुज़ुर्ग से किसी ने पूछा कि जिसको गुनाह में लज़्ज़त आती हो, वह अल्लाह का आरिफ़ हो सकता है? उन्होंने फ़रमाया कि मुझे इसमें ज़रा तरद्दुद नहीं है कि जो शख़्स दुनिया को आख़िरत पर तर्जीह दे, वह आरिफ़ नहीं हो सकता और गुनाह करने का दरजा तो इससे बहुत ज़्यादा है, और यह बात भी ज़ेहन में रखना चाहिए, कि सिर्फ़ माल की मुहब्बत न होने से आख़िरत का आलिम नहीं होता, जाह का दरजा और उसका नुक़्सान माल से भी बढ़ा हुआ है।

यानी जितनी वओदें ऊपर दुनिया के तर्जीह देने की और उसकी तलब की गुज़री हैं, उनमें सिर्फ़ माल कमाना ही दाख़िल नहीं बल्कि जाह की तलब, माल की तलब की बनिस्बत ज़्यादा दाख़िल है इसलिए कि जाह तलबी का नुक़्सान और उसकी मज़र्रत माल तलबी से भी ज़्यादा सख़्त है।

2. दूसरी अलामत यह है कि उसके क़ौल व फ़ेअ्ल में तआरूज़ (इख़्तिलाफ़) न हो, दूसरों को ख़ैर का हुक्म करे और ख़ुद उस पर अमल न करे। हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है :-

اَتَأْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَاَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتَابَ ط (بقره ع ٥)

"अ तअ्मुरूनन्ना-स बिल्बिर्रि व तन्सौ-न अन्फ़ुसकुम व अन्तुम

तत्लूनल् किताब॰" (बक़र:, रूकूअ 5)

'क्या ग़ज़ब है कि दूसरों को नेक काम करने को कहते हो और अपनी ख़बर नहीं लेते, हालांकि तुम तिलावत करते रहते हो किताब की'। दूसरी जगह इर्शाद है :-

كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَالَا تَفْعَلُوْنَ ۝ (صف ع ۱)

'कबु-र मक़्तन् अिन्दल्लाहि अन तक़ूलू मा ला तफ़्अलून॰'

(सफ़्फ़, रूकूअ: 1)

'अल्लाह तआला के नज़दीक यह बात बहुत नाराज़ी की है कि ऐसी बात कहो, जो करो नहीं।

हातिम असम रह॰ कहते हैं कि क़ियामत के दिन उस आलिम से ज़्यादा हसरत वाला कोई न होगा जिसकी वजह से दूसरों ने इल्म सीखा और उस पर अमल किया, वह तो कामयाब हो गए और वह ख़ुद अमल न करने की वजह से नाकाम रहा। इब्ने सिमाक रह॰ कहते हैं कितने शख़्स ऐसे हैं जो दूसरों को अल्लाह तआला की याद दिलाते हैं, ख़ुद अल्लाह तआला को भूलते हैं, दूसरों को अल्लाह तआला से डराते हैं, ख़ुद अल्लाह तआला पर जुर्रत करते हैं, दूसरों को अल्लाह तआला का मुक़र्रब बनाते हैं, ख़ुद अल्लाह तआला से दूर हैं, दूसरों को अल्लाह तआला की तरफ़ बुलाते हैं, ख़ुद अल्लाह तआला से भागते हैं। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ग़नम रज़ि॰ कहते हैं कि मुझसे दस सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ ने यह मज़्मून बयान किया कि हम लोग क़ुबा की मस्जिद में बैठे हुए इल्म हासिल कर रहे थे, हुज़ूर सल्ल॰ तश्रीफ़ लाये और फ़रमाया कि जितना चाहे इल्म हासिल कर लो, अल्लाह तआला के यहां से अज्र बग़ैर अमल के नहीं मिलता।

3. तीसरी अलामत यह है कि ऐसे उलूम में मशग़ूल हो जो आख़िरत में काम आने वाले हों, नेक कामों में रग़्बत पैदा करने वाले हों, ऐसे उलूम से इहतिराज़ करे जिनका आख़िरत में कोई नफ़ा नहीं है या कम है। हम लोग अपनी नादानी से उनको भी इल्म कहते हैं जिनसे सिर्फ़ दुनिया कमाना मक़्सूद हो, हालांकि वह जह्ले मुरक्कब है कि ऐसा शख़्स अपने को पढ़ा लिखा समझने लगता है, फिर उसको दीन के उलूम सीखने का एहतिमाम भी नहीं रहता। जो शख़्स कुछ भी पढ़ा हुआ न हो, वह कम से कम अपने आपको जाहिल तो समझता है, दीन की बातें मालूम करने की कोशिश तो करता है, मगर जो अपनी

जहालत के बावजूद अपने आप को आलिम समझने लगे, वह बड़े नुक्सान में है।

हातिम असम रह०, जो मशहूर बुर्जुग और हज़रत शक़ीक़ बलख़ी रह० के ख़ास शागिर्द हैं, उनसे एक मर्तबा हज़रत शैख़ ने दर्याफ़्त किया कि हातिम कितने दिन से तुम मेरे साथ हो? उन्होंने अर्ज़ किया, तैंतीस बरस से, फ़रमाने लगे कि इतने दिनों में तुमने मुझसे क्या सीखा? हातिम रह.० ने अर्ज़ किया आठ मसअले सीखे हैं। हज़रत शक़ीक़ रह० ने फ़रमाया- इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन० इतनी तवील मुद्दत में सिर्फ़ आठ मसअले सीखे, मेरी तो उम्र ही तुम्हारे साथ ज़ाया हो गयी। हातिम० रह० ने अर्ज़ किया हुज़ूर सिर्फ़ आठ ही सीखे हैं, झूठ तो बोल नहीं सकता। हज़रत शक़ीक़ रह० ने फ़रमाया कि अच्छा बताओ, वे क्या मसअले हैं? हातिम रह० ने अर्ज़ किया:-

(1) मैं ने देखा कि सारी मख़्लूक़ को किसी न किसी से मुहब्बत है (बीवी से, औलाद से, माल से, अह्बाब से वग़ैरह वग़ैरह) लेकिन मैं ने देखा कि जब वह क़ब्र में जाता है तो उसका महबूब उससे जुदा हो जाता है, इसलिए मैं ने नेकियों से मुहब्बत कर ली ताकि जब मैं क़ब्र में जाऊं तो मेरा महबूब भी साथ ही जाये और मरने के बाद भी मुझसे जुदा न हो। हज़रत शक़ीक़ रह० ने फ़रमाया, बहुत अच्छा किया।

(2) मैं ने अल्लाह तआला का इर्शाद क़ुरआन पाक में देखा-

'व अम्मा मन ख़ा-फ मक़ा-म रब्बिही०" *(वन्नाज़िआत, रूकूअ 2)*

और जो शख़्स (दुनिया में) अपने रब के सामने (आख़िरत में) खड़ा होने से डरा होगा और नफ़्स को (हराम) ख़्वाहिश से रोका होगा तो जन्नत उसका ठिकाना होगा। मैं ने जान लिया कि अल्लाह तआला का इर्शाद हक़ है, मैं ने अपने नफ़्स को ख़्वाहिशात से रोका, यहां तक कि वह अल्लाह तआला की इताअत पर जम गया।

(3) मैं ने दुनिया को देखा कि हर शख़्स के नज़दीक जो चीज़ बहुत क़ीमती होती है, बहुत महबूब होती है, वह उसको उठा कर बड़ी एहतियात से रखता है, उसकी हिफ़ाज़त करता है। फिर मैं ने अल्लाह ताआल का इर्शाद देखा:-

"मा अिन्दकुम् यन्फ़-दु वमा अिन्दल्लाहि बाक़िन्०"

(नह्ल, रूकूअ 13)

जो कुछ तुम्हारे पास दुनिया में है, वह ख़त्म हो जायेगा (ख़्वाह वह जाता रहे या तुम मर जाओ, हर हाल में वह ख़त्म होगा) और जो अल्लाह तआला के पास है, वह हमेशा बाक़ी रहने वाली चीज़ है।

इस आयते शरीफ़ा की वजह से जो चीज़ भी मेरे पास ऐसी कभी हुई जिसकी मुझे वक़्अत ज़्यादा हुई, वह पसंद ज़्यादा आई, वह मैं ने अल्लाह तआला के पास भेज दी ताकि हमेशा के लिए महफ़ूज़ हो जाए।

(4) मैं ने सारी दुनिया को देखा, कोई शख़्स माल की तरफ़ (अपनी इज़्ज़त और बड़ाई में) लौटता है, कोई हसब की शराफ़त की तरफ़, कोई और फ़ख़्र की चीज़ों की तरफ़ यानी उन चीज़ों के ज़रिए से अपने अंदर बड़ाई पैदा करता है और अपनी बड़ाई ज़ाहिर करता है। मैं ने अल्लाह तआला का इर्शाद देखा।

"इन्-न अक्-र-मकुम अिन्दल्लाहि अत्क़ाकुम॰"

(हुजुरात, रूकूअ 2)

'अल्लाह तआला के नज़दीक तुम में सब में बड़ा वह शरीफ़ है जो सब से ज़्यादा परहेज़गार हो, इस बिना पर मैं ने तक़्वा इख़्तियार कर लिया। ताकि अल्लाह जल्ल शानुहू के नज़दीक शरीफ़ बन जांऊ।

(5) मैं ने लोगों को देखा कि एक दूसरे पर तान करते हैं, ऐब जोई करते हैं, बुरा भला कहते हैं और यह सब हसद की वजह से होता है कि एक को दूसरे पर हसद आता है। मैं ने अल्लाह तआला शानुहू का इर्शाद देखा-

"नह्नु क़सम्ना बै-नहुम् मअीश-त-हुम॰"

(ज़ुख़रूफ़, रूकूअ 3)

'दुनियावी ज़िन्दगी में उनकी रोज़ी हमने ही तक़्सीम कर रखी है और (इस तक़्सीम में) हमने एक को दूसरे पर फ़ौक़ियत दे रखी है ताकि (इस की वजह से) एक दूसरे से काम लेता रहे। (सब के सब बराबर एक ही नमूने के बन जायें तो फिर कोई किसी का काम क्यों करे; क्यों नौकरी करे और इससे दुनिया का निज़ाम ख़राब हो ही जायेगा।) मैं ने इस आयते शरीफ़ा की वजह से हसद करना छोड़ दिया, सारी मख़्लूक़ से बे ताल्लुक़ हो गया और मैं ने जान लिया कि रोज़ी का बांटना सिर्फ़ अल्लाह तआला ही के क़ब्ज़े में है, वह जिसके हिस्से में जितना चाहे लगाये, इसलिए लोगों की अदावत छोड़ दी और यह समझ

लिया कि किसी के पास माल के ज़्यादा या कम होने में, उनके फ़ेअ्ल को ज़्यादा दख़ल नहीं है, यह तो मालिकुल मुल्क की तरफ़ से है, इसलिए अब किसी पर गुस्सा ही नहीं आता।

(6) मैं ने दुनिया में देखा कि तक़रीबन हर शख़्स की किसी न किसी से लड़ाई है, किसी न किसी से दुश्मनी है। मैं ने ग़ौर किया तो देखा कि हक़ तआला शानुहू ने फ़रमायाः

"इन्नश्शैता-न लकुम् अदुव्वुन् फ़त्तख़िज़ूहु अदुव्वा॰"

(फ़ातिर, रूकूअ 1)

"शैतान बेशुबह तुम्हारा दुश्मन है पस उसके साथ दुश्मनी ही रखो" (उसको दोस्त न बनाओ) पस मैं ने अपनी दुश्मनी के लिए उसी को चुन लिया और उससे दूर रहने की इंतिहाई कोशिश करता हूँ। इसलिए कि जब हक़ तआला शानुहू ने उसके दुश्मन होने को फ़रमा दिया तो मैं ने उसके अलावा से अपनी दुश्मनी हटा ली।

(7) मैं ने देखा कि सारी मख़्लूक़ रोटी की तलब में लग रही है, इसी की वजह से अपने आपको दूसरों के सामने ज़लील करती है और ना जायज़ चीज़ें इख़्तियार करती है। फिर मैं ने देखा कि अल्लाह जल्ल शानुहू का इर्शाद है:-

"वमा मिन् दाब्बतिन् फ़िलअर्ज़ि इल्ला अलल्लाहि रिज़्क़ुहा॰"

(हूद, रूकूअ 1)

"और कोई जानदार ज़मीन पर चलने वाला ऐसा नहीं जिसकी रोज़ी अल्लाह तआला के ज़िम्मे न हो। मैं ने देखा कि मैं भी उन्हीं ज़मीन पर चलने वालों में से एक हूँ। जिनकी रोज़ी अल्लाह तआला के ज़िम्मे है, पस मैं ने अपने औक़ात उन चीज़ों में मशग़ूल कर लिए जो मुझ पर अल्लाह तआला की तरफ़ से लाज़िम हैं और जो चीज़ अल्लाह तआला के ज़िम्मे थी उससे अपने औक़ात को फ़ारिग़ कर लिया।

(8) मैं ने देखा कि सारी मख़्लूक़ का एतिमाद और भरोसा किसी ख़ास ऐसी चीज़ पर है जो ख़ुद मख़्लूक़ है। कोई अपनी जायदाद पर भरोसा करता है, कोई अपनी तिजारत पर एतिमाद करता है कोई अपनी दस्तकारी पर निगाह जमाए हुए है, कोई अपने बदन की सेहत और कुव्वत पर (कि जब चाहे, जिस तरह

चाहे, कमा लूँगा) और सारी मख़्लूक़ ऐसी चीज़ों पर एतिमाद किए हुए है जो उनकी तरह ख़ुद मख़्लूक़ है। मैं ने देखा कि अल्लाह तआला का इर्शाद है -

"व मंय्यत वक्कल् अलल्लाहि फ हु व हस्बुहू॰" *(तलाक़ रूकूअ 1)*

'जो शख़्स अल्लाह तआला पर तवक्कुल (और एतिमाद) करता है पस अल्लाह तआला उसके लिए काफ़ी है। इस लिए मैं ने बस अल्लाह तआला पर तवक्कुल और भरोसा कर लिया।

हजरत शक़ीक़ रह॰ ने फ़रमाया कि हातिम तुम्हें हक़ तआला शानुहू तौफ़ीक़ अता फ़रमाये, मैं ने तौरात, इंजील, ज़बूर और क़ुरआने अज़ीम के उलूम को देखा, मैं ने ख़ैर के काम इन ही आठ मसाइल के अंदर पाये, पस जो इन आठों पर अमल कर ले, उसने अल्लाह तआला शानुहू की चारों किताबों के मज़ामीन पर अमल कर लिया इस क़िस्म के उलूम को उलमा-ए-आख़िरत ही पा सकते हैं और दुनियादार आलिम तो माल और जाह के ही हासिल करने में लगे रहते हैं।

(4) चौथी अलामत आख़िरत के उलमा की यह है कि खाने पीने की और लिबास की उम्दगियों और बेहतराईयों की तरफ़ मुतवज्जह न हो, बल्कि इन चीज़ों में दर्मियानी रफ़्तार इख़्तियार करे और बुज़ुर्गों के तर्ज़ को इख़्तियार करे। इन चीज़ों में जितना कमी की तरफ़ उसका मैलान बढ़ेगा, अल्लाह तआला शानुहू से उतना ही उसका क़ुर्ब बढ़ता जायेगा और उलमा-ए-आख़िरत में उतना ही उसका दरजा बुलंद होता जायेगा।

इन्हीं शैख़ अबू हातिम रह॰ का एक अजीब क़िस्सा जिसको शैख़ अबू अब्दुल्लाह ख़्वास रह॰ जो शैख़ अबू हातिम रह॰ के शागिर्दों में हैं, नक़ल करते हैं, वह कहते हैं कि मैं एक मर्तबा हज़रत शैख़ हातिम रह॰ के साथ मौज़ा रई में जो एक जगह का नाम है, गया, तीन सौ बीस आदमी हमारे साथ थे, हम हज के इरादे से जा रहे थे। सब मुतवक्किलीन की जमाअत थी। इन लोगों के पास तोशा सामान वग़ैरह कुछ न था। रई में एक मामूली ख़ुश्क मिज़ाज ताजिर पर हमारा गुज़र हुआ, उसने सारे क़ाफ़िले की दावत कर दी और हमारी एक रात की मेहमानी की, दूसरे दिन सुबह को वह मेज़बान हज़रत हातिम रह॰ से कहने लगा कि यहां एक आलिम बीमार हैं, मुझे उनकी अयादत को इस वक़्त जाना है। अगर आपको रग़बत हो तो आप भी चलें। हज़रत हातिम रह॰ ने फ़रमाया कि

बीमार की अयादत तो सवाब है, मैं ज़रूर तुम्हारे साथ चलूँगा। यह बीमार आलिम उस मौज़अ् (बस्ती) के क़ाज़ी शैख़ मुहम्मद बिन मुक़ातिल रह॰ थे। जब उनके मकान में पहुँचे तो हज़रत हातिम रह॰ सोच में पड़ गये कि अल्लाहु अक्बर एक आलिम का मकान और ऐसा ऊँचा महल। ग़रज़ हमने हाज़िरी की इजाज़त मंगाई और जब अंदर दाख़िल हुए तो वह अन्दर से भी निहायत ख़ुशनुमा, निहायत वसीअ्, पाकीज़ा, जगह जगह पर्दे लटक रहे थे। हज़रत हातिम रह॰ इन सब चीज़ों को देख रहे थे और सोच में पड़े हुए थे। इतने में हम क़ाज़ी साहब के क़रीब पहुँचे तो वह एक निहायत नर्म बिस्तर पर आराम कर रहे थे। एक ग़ुलाम उनके सिरहाने पंखा झल रहा था। वह ताजिर तो सलाम करके उनके पास बैठ गये और मिज़ाज पुर्सी की। हातिम रह॰ खड़े ही रहे। क़ाज़ी साहब ने उनको भी बैठने का इशारा किया। उन्होंनें बैठने से इंकार कर दिया। क़ाज़ी साहब रह॰ ने पूछा आपको कुछ कहना है? उन्होंने फ़रमाया, हां एक मस्अला दर्याफ़्त करना है। क़ाज़ी साहब रह॰ ने फ़रमाया कहो, उन्होंने कहा कि आप बैठ जायें (ग़ुलामों ने क़ाज़ी साहब रह॰ को सहारा देकर उठाया कि ख़ुद उठना मुश्किल था) वह बैठ गये। हज़रत हातिम रह॰ ने पूछा कि आपने इल्म किस से हासिल किया? उन्होंने फ़रमाया, मोतबर उलमा से। उन्होंने पूछा कि उन उलमा ने किस से सीखा था? क़ाज़ी साहब रह॰ ने फ़रमाया कि उन्होंनें हज़रात सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन से सीखा था। हज़रत हातिम रह॰ ने पूछा कि सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ ने किस से सीखा था? क़ाज़ी साहब रह॰ ने फ़रमाया कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से। हज़रत हातिम रह॰, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किससे सीखा था? क़ाज़ी साहब रह॰, हज़रत जिब्रील अलैहि॰ से सीखा था, हज़रत हातिम रह॰, जिब्रील अलैहि॰ ने किस से सीखा था? क़ाज़ी साहब रह॰ अल्लाह तआला शानुहू से। हज़रत हातिम रह॰ ने फ़रमाया कि जो इल्म हज़रत जिब्रील अलैहि॰ ने हक़ तआला शानुहू से लेकर हुज़ूर सल्ल॰ तक पहुँचाया और हुज़ूर सल्ल॰ ने सहाबा रज़ि॰ को अता फ़रमाया और सहाबा रज़ि॰ ने मोतबर उलमा को और उनके ज़रिये से आप तक पहुँचा उसमें कहीं यह भी वारिद है कि जिस शख़्स का जिस क़दर मकान ऊंचा और बड़ा होगा उसका उतना ही दरजा अल्लाह जल्ल शानुहू के यहां भी ज़्यादा होगा। क़ाज़ी साहब रह॰ ने फ़रमाया नहीं, यह उस इल्म में नहीं आया। हज़रत हातिम रह॰ ने फ़रमाया, अगर यह नहीं आया तो फिर उस इल्म में क्या आया है? क़ाज़ी साहब रह॰ ने

फ़रमाया, कि उसमें यह आया है कि जो शख़्स दुनिया से बेरग़बत हो, आख़िरत में रग़बत रखता हो, फ़ुक़रा को महबूब रखता हो अपनी आख़रत के लिये अल्लाह के यहां ज़ख़ीरा भेजता रहता हो, वह शख़्स हक़ तआला शानुहू के यहां साहिबे मर्तबा है। हज़रत हातिम रह० ने फ़रमाया कि फिर आपने किसका इत्तिबाअ् और पैरवी की, हुज़ूर सल्ल० की, हुज़ूर सल्ल० के सहाबा रज़ि० की, मुत्तक़ी उलमा की या फ़िरऔन और नमरूद की? ऐ बुरे आलिमों, तुम जैसों को जाहिल दुनियादार जो दुनिया के ऊपर औंधे गिरने वाले हैं, देखकर यह कहते हैं कि जब आलिमों का यह हाल है तो हम तो उनसे ज़्यादा बुरे होंगे।

यह कह कर हज़रत हातिम रह० तो वापस चले गये और क़ाज़ी साहब के मर्ज़ में इस गुफ्तगू और नसीहत से और भी ज़्यादा इज़ाफ़ा हो गया। लोगों में इसका चर्चा हुआ तो किसी ने हज़रत हातिम रह० से कहा कि तनाफ़्सी रह० जो क़ज़्वैन में रहते हैं, (क़ज़्वैन रई से सत्ताईस फ़र्सख़ यानी इक्यासी मील है) वह इनसे भी ज़्यादा रईसाना शान से रहते हैं। हज़रत हातिम रह० (उनको नसीहत करने के इरादे से चल दिये), जब उनके पास पहुँचे तो कहा कि एक अजमी आदमी है (जो अरब का रहने वाला नहीं है।) आप से यह चाहता है कि आप उसको दीन की बिल्कुल इब्तिदा से यानी नमाज़ की कुंजी वुज़ू से तालीम दें। तनाफ़सी ने कहा, बड़े शौक़ से। यह कहकर तनाफ़सी रह० ने वुज़ू का पानी मंगाया और तनाफ़सी रह० ने वुज़ू करके बताया कि इस तरह वुज़ू की जाती है। हज़रत हातिम रह० ने उनकी वुज़ू के बाद कहा कि मैं आपके सामने वुज़ू कर लूँ ताकि अच्छी तरह ज़ेहन नशीन हो जाए। तनाफ़सी रह० वुज़ू की जगह से उठ गये और हज़रत हातिम रह० ने बैठकर वुज़ू करना शुरू किया और दोनों हाथों को चार चार मर्तबा धोया। तनाफ़सी रह० ने कहा कि यह इसराफ़ है, तीन तीन मर्तबा धोना चाहिए। हज़रत हातिम रह० ने कहा कि सुब्हानल्लाहिल अज़ीम, मेरे एक चुल्लू पानी में तो इस्राफ़ हो गया और यह सब कुछ जो साज़ व सामान मैं तुम्हारे पास देख रहा हूँ, इसमें इस्राफ़ न हुआ। जब तनाफ़सी रह० को ख़्याल हुआ कि इनका मक़सद सीखना नहीं था बल्कि यह ग़रज़ थी। उसके बाद जब बग़दाद पहुँचे और हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह० को उनके अह्वाल का इल्म हुआ तो वह इनसे मिलने के लिए तशरीफ़ लाए और उन से दर्याफ़्त फ़रमाया कि दुनिया से सलामती की क्या तदबीर है? हातिम रह० ने फ़रमाया कि दुनिया से उस वक़्त तक महफ़ुज़ नहीं रह सकते जब तक तुम में चार चीज़ें न हों, 1. लोगों

की जहालत से दर गुज़र करते रहो, 2. ख़ुद उनके साथ कोई हरकत जहालत की न करो, 3. तुम्हारे पास जो चीज़ हो, उन पर ख़र्च कर दो, 4. उनके पास जो चीज़ हो उसकी उम्मीद न रखो।

उसके बाद जब हज़रत हातिम रह॰ मदीना मुनव्वरा पहुँचे तो वहां के लोग ख़बर सुनकर उनके पास मिलने के लिए जमा हो गये। उन्होंने दर्याफ़्त किया कि यह कौन सा शहर है? लोगों ने कहा कि यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का शहर है। कहने लगे कि इसमें हुज़ूर सल्ल॰ का महल कौन सा था, मैं वहां भी जाकर दोगाना अदा करूँगा। लोगों ने कहा कि हुज़ूर सल्ल॰ का तो महल नहीं था। बहुत मुख़्तसर सा मकान था जो बहुत नीचे था। कहने लगे कि सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ के महल कहां कहां हैं, मुझे वही दिखा दो। लोगों ने कहा कि सहाबा रज़ि॰ के भी महल नहीं थे, उनके भी छोटे छोटे मकानात ज़मीन से लगे हुए थे। हातिम रह॰ ने कहा, फिर यह तो शहर फ़िरऔन का शहर है। लोगों ने उनको पकड़ लिया (कि यह शख़्स मदीना मुनव्वरा की तौहीन करता है और हुज़ूर सल्ल॰ के शहर को फ़िरऔन का शहर बताता है) और पकड़ कर अमीरे मदीना के पास ले गये कि यह अजमी शख़्स मदीना तैयबा को फ़िरऔन का शहर बताता है। अमीर ने उनसे मुतालबा किया कि यह क्या बात है? उन्होंने कहा, आप जल्दी न करें, पूरी बात सुन लें। मैं एक अजमी आदमी हूँ, मैं जब इस शहर में दाख़िल हुआ तो मैं ने पूछा कि यह किसका शहर है? फिर पूरा क़िस्सा अपने सवाल व जवाब का सुनाकर कहा कि अल्लाह तआला ने तो क़ुरआन शरीफ़ में यह फ़रमाया है

"लक़द् का-न लकुम् फ़ी रसूलिल्लाहि उस्वतुन् ह-स-नः॰"

(अहज़ाब, रूकूअ 3)

तर्जुमाः- तुम लोगों के वास्ते यानी ऐसे शख़्स के लिए जो अल्लाह से और आख़िरत के दिन से डरता हो और कसरत से ज़िक्रे इलाही करता हो (यानी कामिल मोमिन हो) ग़रज़ ऐसे शख़्स के लिए रसूलुल्लाह (सल्ल॰) का एक उम्दा नमूना मौजूद है। (यानी हर बात में यह देखना चाहिए कि हुज़ूर सल्ल॰ का क्या मामूल था और उस का इत्तिबाअ् करना चाहिए)

पस अब तुम ही बताओ कि तुमने यह हुज़ूर सल्ल॰ का इत्तिबाअ कर रखा है या फ़िरऔन का ! इस पर लोगों ने उनको छोड़ दिया।

यहां एक बात यह क़ाबिले लिहाज़ है कि मुबाह चीज़ों के साथ लज़्ज़त हासिल करना या उनकी वुस्अत हराम या ना जायज़ नहीं है लेकिन यह ज़रूरी है कि उनकी कसरत से उन चीज़ों के साथ उन्स पैदा होता है, उन चीज़ों की मुहब्बत दिल में हो जाती है और फिर उनका छोड़ना मुश्किल हो जाता है और उनके फ़राहम करने के लिए असबाब तलाश करने पड़ते हैं, पैदावार और आमदनी के बढ़ाने की फ़िक्र होती है और जो शख़्स रूपया बढ़ाने के फ़िक्र में लग जाता है उसको दीन के बारे में मुदाहनत भी करनी पड़ती है उसमें बसा औक़ात गुनाहों के मुर्तकिब होने की नौबत भी आ जाती है। अगर दुनिया में घुसने के बाद उससे महफ़ूज़ रहना आसान होता तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इतने एहतिमाम से दुनिया से बे रग़बती पर तंबीह न फ़रमाते और इतनी शिद्दत से उससे ख़ुद न बचते कि नक़्शीन कुर्ता भी बदने मुबारक पर से उतार दिया।

यह्या बिन यज़ीद नोफ़ली रह० ने हज़रत इमाम मालिक रह० को एक ख़त लिखा, जिसमें हम्द व सलात के बाद लिखा कि मुझे यह ख़बर पहुँची है कि आप बारीक कपड़ा पहनते हैं और पतली रोटी इस्तेमाल करते हैं और नर्म बिस्तर पर आराम करते हैं। दरबान भी आपने मुक़र्रर कर रखा है। हालांकि आप ऊँचे उलमा में हैं, दूर दूर से लोग सफ़र करके आपके पास इल्म सीखने के लिए आते हैं, आप इमाम हैं, मुक़्तदा हैं, लोग आपका इत्तिबाअ् करते हैं, आपको बहुत एहतियात करनी चाहिए महज़ मुख़्लिसाना यह ख़त लिख रहा हूँ। अल्लाह के सिवा किसी दूसरे को इस ख़त की ख़बर नहीं। फ़क़त् वस्सलाम्।

हज़रत इमाम मालिक रह० ने उसका, जवाब तहरीर फ़रमाया कि तुम्हारा ख़त पहुँचा जो मेरे लिए नसीहत नामा, शफ़्क़त नामा और तंबीह थी, हक़ तआला शानुहू तक़्वा के साथ तुम्हें मुन्तफ़ा फ़रमाए और इस नसीहत की जज़ा-ए-ख़ैर अता फ़रमाये और मुझे हक़ तआला शानुहू अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। ख़ूबियों पर अमल और बुराईयों से बचना अल्लाह तआला ही की तौफ़ीक़ से हो सकता है। जो उमूर तुमने ज़िक्र किये सही हैं ऐसा ही होता है। अल्लाह तआला मुझे माफ़ फ़रमाये (लेकिन ये सब चीज़ें जायज़ हैं) और अल्लाह तआला का इर्शाद है कि:-

قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِينَةَ اللَّهِ (اعراف ع ٤)

"कुल मन् हर्र-म ज़ीनतल्लाहि" (आराफ़, रूकूअ 4)

'आप यह कह दीजिए कि (यह बतलाओ) कि अल्लाह तआला की पैदा की हुई ज़ीनत (कपड़े वग़ैरह) को जिनको उसने बंदों के वास्ते पैदा किया और खाने पीने की हलाल चीज़ों को किसने हराम किया? इसके बाद तहरीर फ़रमाया कि यह मैं ख़ूब जानता हूँ कि इन उमूर का इख़्तियार न करना इख़्तियार करने से औला और बेहतर है, आइंदा भी अपने गरामी नामों से मुझे मुशर्रफ़ करते रहें, मैं भी ख़त लिखता रहूँगा, फ़क़त् वस्सलाम्।

कितनी लतीफ़ बात इमाम मालिक रह० ने इख़्तियार फ़रमायी कि जवाज़ का फ़त्वा भी तहरीर फ़रमा दिया और इसका इक़रार भी फ़रमाया कि वाक़ई ज़्यादा बेहतर इन उमूर का तर्क ही था।

5. पांचवीं अलामत उलमा-ए-आख़िरत की यह है कि सलातीन और हुक्काम से दूर रहें (बिला ज़रूरत के) उनके पास हरगिज़ न जायें, बल्कि वे ख़ुद भी आयें तो मुलाक़ात कम रखें, इसलिए कि उनके साथ मेल जोल, उनकी ख़ुश्नूदी और रिज़ा जोई में तकल्लुफ़ बरतने से ख़ाली न होगा। वे लोग अक्सर ज़ालिम और नाजायज़ उमूर का इर्तिकाब करने वाले होते हैं जिस पर इंकार करना ज़रूरी है, उनके ज़ुल्म का इज़हार उनके नाजायज़ फ़ेअ्ल पर तंबीह करना ज़रूरी है और इस पर सुकूत (ख़ामोशी) दीन में मुदाहनत है और अगर उनकी ख़ुश्नूदी के लिए उनकी तारीफ़ करना पड़े तो यह सरीह झूठ है और उनके माल की तरफ़ अगर तबीअत को मैलान हो और तमअ् हुई तो नाजायज़ है। बहरहाल उनका इख़्तिलात (मेल जोल) बहुत से मफ़ासिद (ख़राबियों) की कुंजी है। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि जो शख़्स जंगल में रहता है, वह सख़्त मिज़ाज हो जाता है और जो शिकार के पीछे लग जाता है, वह(सब चीज़ से) ग़ाफ़िल हो जाता है और जो बादशाह के पास आमद व रफ़्त (आना जाना) शुरू कर दे, वह फ़िल्ने में पड़ जाता है। हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० फ़रमाते हैं कि अपने आपको फ़िल्नों की जगह खड़े होने से बचाओ, किसी ने पूछा कि फ़िल्नों की जगह कौन सी हैं? फ़रमाया कि उमरा के दरवाज़े कि उन के पास जाकर उनकी ग़लत कारियों की तस्दीक़ करनी पड़ती है और (उनकी तारीफ़ में) ऐसी बातें कहनी पड़ती हैं जो उनमें नहीं हैं। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि बद तरीन उलमा वे हैं जो हुक्काम के यहां हाज़िरी दें और बेहतरीन हाकिम वह है जो उलमा के यहां हाज़िर हो।

हज़रत समनून रह० (जो हज़रत सिर्री सक़्ती रह० के असहाब में हैं)

कहते हैं कि मैं ने यह सुना था कि जब तुम किसी आलिम को यह सुनो कि वह दुनिया की मुहब्बत रखता है तो उस शख़्स को अपने दीन के बारे में मुत्तहम समझो। मैं ने इसका ख़ुद तजुर्बा किया, जब भी मैं बादशाह के यहां गया तो वापसी पर मैं ने अपने दिल को टटोला, तो उस पर मैं ने एक वबाल पाया, हालांकि तुम देखते हो कि मैं वहां सख़्त गुफ़्तगू करता हूँ और उनकी राय का सख़्ती से ख़िलाफ़ करता हूँ, वहां की किसी चीज़ से मुन्तफ़ा नहीं होता, हत्ताकि वहां का पानी भी नहीं पीता, हमारे उलमा बनू इस्राईल के उलमा से भी बुरे हैं कि वे हुक्काम के पास जाकर उनको गुंजाईशें बताते हैं, उनकी ख़ुशनूदी की फ़िक्र करते हैं। अगर वे उनसे उनकी ज़िम्मेदारियां साफ़ साफ़ बतायें तो वे लोग उनका जाना भी। गरां समझने लगें और यह साफ़ साफ़ कहना उन उलमा के लिए हक़ तआला शानुहू के यहां निजात का सबब बन जाये। उलमा का सलातीन के यहां जाना एक बहुत बड़ा फ़ित्ना है और शैतान के इग़वा (गुमराह) करने का ज़रिया है। बिलख़ुसूस जिसको बोलना अच्छा आता हो, उसको शैतान यह समझाता है कि तेरे जाने से उनकी इस्लाह होगी, वे इसकी वजह से ज़ुल्म से बचेंगे और दीन के शआइर की हिफ़ाज़त होगी, हत्ताकि आदमी यह समझने लगता है कि उनके पास जाना भी कोई दीनी चीज़ है, हालांकि उनके पास जाने से उन की दिलदारी में मुदाहनत की बातें करना और उनकी बेजा तारीफ़ें करनी पड़ती हैं, जिसमें दीन की हलाकत है।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० ने हज़रत हसन बसरी रह० को लिखा कि मुझे ऐसे मुनासिब लोगों का पता बताओ जिनसे मैं अपनी इस (ख़िलाफ़त के) काम में मदद लूं। हज़रत हसन रह० ने (जवाब में) लिखा कि अह्ले दीन तो तुम तक न आयेंगे और दुनियादारों को तुम इख़्तियार न करोगे (और न करना चाहिए यानी हरीस तम्माअ् लोगों को कि वे अपने लालच में काम ख़राब कर देंगे।) इसलिए शरीफ़ुन्नसब लोगों से काम लो, इसलिए कि उनकी क़ौमी शराफ़त उनको इस बात से रोकेगी कि वे अपनी नसबी शराफ़त को ख़ियानत से गंदा करें। यह जवाब जनाब उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० को लिखा जिनका ज़ुह्द व तक़्वा अदल व इंसाफ़ ज़रबुल मसल है हत्ताकि वह उमरे सानी (दूसरे उमर रज़ि०) कहलाते हैं।

यह इमाम ग़ज़ाली रह० का इर्शाद है, लेकिन इस नाकारा के ख़्याल में अगर कोई दीनी मजबूरी हो तो अपने नफ़्स की हिफ़ाज़त और निगरानी करते हुए

जाने में मुज़ायक़ा नहीं, बल्कि बसा औक़ात दीनी मसालेह और ज़रूरतों का तक़ाज़ा जाना ही होता है, लेकिन यह ज़रूरी है कि अपनी ज़ाती ग़रज़, ज़ाती नफ़ा, माल व जाह कमाना मक़्सूद न हो, बल्कि सिर्फ़ मुसलमानों की ज़रूरत हो। हक़ तआला शानुहू ने फ़रमाया –

وَاللّٰهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ (بقرہ ع ۲۷)

"वल्लाहु यअ्लमुल् मुफ़्सि-द मिनल् मुस्लिह॰" *(बक़र: रुकूअ 27)*

'और अल्लाह तआला मसलहत के ज़ाया करने वाले को और मसलहत की रियायत रखने वाले को (अलग अलग) जानते हैं।

6. छठी अलामत उलमा-ए-आख़िरत की यह है कि फ़त्वा सादिर कर देने में जल्दी न करे, मसअला बताने में बहुत एहतियात करे, हत्तल वसअ (जहां तक हो सके) अगर कोई दूसरा अह्ल हो तो उस का हवाला कर दे। अबू हफ़्स नीशापूरी रह॰ कहते हैं कि आलिम वह है कि जो मसअले के वक़्त इससे ख़ौफ़ करता हो कि कल को क़ियामत में यह जवाब दही करनी पड़ेगी कि कहां से बताया था? बाज़ उलमा ने कहा है कि सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ चार चीज़ों से बहुत एहतिराज़ करते थे –

1. इमामत करने से, 2. वसी बनने से(यानी किसी की वसीयत में माल वग़ैरह तक़्सीम करने से), 3. अमानत रखने से, 4. फ़त्वा देने से, और उनका ख़ुसूसी मशग़ला पांच चीज़ें थीं –

1. क़ुरआन पाक की तिलावत, 2. मसाजिद का आबाद करना, 3. अल्लाह तआला का ज़िक्र, 4. अच्छी बातों की नसीहत करना, 5. बुरी बातों से रोकना।

इब्ने हसीन रह॰ कहते हैं कि बाज़ आदमी ऐसे जल्द फ़त्वा सादिर करते हैं कि वह मसअला अगर हज़रत उमर रज़ि॰ के सामने पेश होता तो सारे बद्र वालों को इकट्ठा करके मश्वरा करते। हज़रत अनस रज़ि॰ इतने जलीलुल क़द्र सहाबी हैं कि दस बरस हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत की, जब उनसे मसअला दर्याफ़्त किया जाता तो फ़रमाते मौलाना अलहसन रह॰ से दर्याफ़्त करो (यह हज़रत हसन बसरी रह॰ मशहूर फ़ुक़हा और मशहूर सूफ़िया में हैं और ताबई हैं, हज़रत अनस रज़ि॰ बावजूद सहाबी होने के इन ताबई का नाम बताते) और

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० से जब मसअला दर्याफ़्त किया जाता (हालांकि वह मशहूर सहाबी और रईसुल मुफ़स्सिरीन हैं) तो फ़रमाते कि जाबिर बिन ज़ैद रह० (जो अह्ले फ़त्वा ताबओ हैं) से दर्याफ़्त करो, और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर ख़ुद बड़े मशहूर फ़कीह सहाबी हैं, हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रह० (ताबिओ) पर हवाला फ़रमा देते।

7. सातवीं अलामत उलमा-ए-आख़िरत की यह है कि उसको बातिनी इल्म यानी सुलूक का एहतिमाम बहुत ज़्यादा हो। अपनी इस्लाहे बातिन और इस्लाहे क़ल्ब में बहुत ज़्यादा कोशिश करने वाला हो कि यह उलूमे ज़ाहिरिया में भी तरक़्क़ी का ज़रिया है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो अपने इल्म पर अमल करे, हक़ तआला शानुहू उसको ऐसी चीज़ों का इल्म अता फ़रमाते हैं जो उसने नहीं पढ़ीं। पहले अंबिया की किताबों में है कि बनी इस्राईल! तुम यह मत कहो कि उलूम आसमान पर हैं, उनको कौन उतारे या वे ज़मीन की जड़ों में हैं उनको कौन ऊपर लाये या वे समुन्दरों के पार हैं, कौन उन पर गुज़रे ताकि उनको लाए, उलूम तुम्हारे दिलों के अंदर हैं, तुम मेरे सामने रूहानी हस्तियों के आदाब के साथ रहो, सिद्दीक़ीन के अख़्लाक़ इख़्तियार करो, मैं तुम्हारे दिलों में से उलूम को ज़ाहिर कर दूँगा, यहां तक कि वे उलूम तुमको घेर लेंगे और तुमको ढांक लेंगे और तजुर्बा भी इसका शाहिद है कि अहलुल्लाह को हक़ तआला शानुहू वे उलूम और मआरिफ़ अता फ़रमाता है कि किताबों में तलाश से भी नहीं मिलते।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद, जिसको हक़ तआला शानुहू से नक़ल फ़रमाते हैं कि मेरा बंदा किसी ऐसी चीज़ के साथ मुझसे तक़र्रुब हासिल नहीं कर सकता जो मुझे ज़्यादा महबूब हो, उन चीज़ों से जो मैं ने उस पर फ़र्ज़ कीं (जैसा कि नमाज़, ज़कात, रोज़ा, हज वग़ैरह यानी जितना तक़र्रुब फ़राईज़ के अच्छी तरह अदा करने से हासिल होता है ऐसा तक़र्रुब दूसरी चीज़ों से नहीं होता) और बंदा नवाफ़िल के साथ भी मेरे साथ तक़र्रुब हासिल करता रहता है, यहां तक कि मैं उसको महबूब बना लेता हूँ और जब मैं उसको महबूब बना लेता हूँ तो मैं उसका कान बन जाता हूँ जिससे वह सुनता है और उसकी आंख बन जाता हूँ जिससे वह देखता है, और उसका हाथ बन जाता हूँ जिससे वह किसी चीज़ को पकड़ता है, और उसका पांव बन जाता हूँ जिससे वह चलता है, अगर वह मुझसे सवाल करता है तो मैं उसको पूरा

करता हूँ और वह किसी चीज़ से पनाह चाहता है तो उसको पनाह देता हूँ।

यानी उसका चलना फिरना, देखना सुनना सब काम मेरी रिज़ा के मुताबिक़ हो जाते हैं और बाज़ हदीसों में इसके साथ यह मज़्मून भी आया है कि जो शख़्स मेरे किसी वली से दुश्मनी करता है वह मुझ से ऐलाने जंग करता है और चूंकि औलिया अल्लाह का ग़ौर व फ़िक्र सब ही हक़ तआला शानुहू के साथ वाबस्ता हो जाता है, इसी वजह से क़ुरआन पाक के दक़ीक़ उलूम उनके क़ुलूब पर मुन्कशिफ़ हो जाते हैं, उसके असरार उन पर वाज़ेह हो जाते हैं। बिलख़ुसूस ऐसे लोगों पर जो अल्लाह तआला के ज़िक्र व फ़िक्र के साथ हर वक़्त मशग़ूल रहते हैं और हर शख़्स को इसमें से हस्बे तौफ़ीक़ इतना हिस्सा मिलता है जितना कि अमल में उसका एहतिमाम और उसकी कोशिश होती है।

हज़रत अली रज़ि० ने एक बड़ी तवील हदीस में उलमा-ए-आख़िरत का हाल बयान फ़रमाया है, जिसको इब्ने क़य्यिम रह० ने मिफ़्ताह दारूस्सआदत में और अबू नुईम रह० ने हिल्यह् में ज़िक्र फ़रमाया है। उसमें फ़रमाते हैं कि क़ुलूब बमंज़िला बर्तन के हैं और बेहतरीन क़ुलूब वे हैं जो ख़ैर को ज़्यादा से ज़्यादा महफ़ूज़ रखने वाले हैं। इल्म का जमा करना माल के जमा करने से बेहतर है कि इल्म तेरी हिफ़ाज़त करता है और माल की तुझको हिफ़ाज़त करनी पड़ती है। इल्म ख़र्च करने से बढ़ता है और माल ख़र्च करने से कम होता है। माल का नफ़ा उसके ज़ायल होने (ख़र्च करने) से ख़त्म हो जाता है। लेकिन इल्म का नफ़ा हमेशा हमेशा बाक़ी रहता है (आलिम के इंतिक़ाल से भी ख़त्म नहीं होता कि उसके इर्शादात बाक़ी रहते हैं।) फिर हज़रत अली रज़ि० ने एक ठंडा सांस भरा और फ़रमाया कि मेरे सीने में उलूम हैं, काश उसके अह्ल मिलते, मगर मैं ऐसे लोगों को देखता हूँ जो दीन के असबाब को दुनिया तलबी में ख़र्च करते हैं या ऐसे लोगों को देखता हूँ जो लज़्ज़तों में मुन्हमिक हैं, शहवतों की तलब की ज़ंजीरों में जकड़े हुए हैं या माल जमा करने के पीछे पड़े हुए हैं, ग़रज़ यह तवील मज़्मून है जिसके चंद फ़िक़रे यहां नक़ल किये हैं।

8. आठवीं अलामत यह है कि उसका यक़ीन और ईमान अल्लाह तआला शानुहू के साथ बढ़ा हुआ हो और इसका बहुत ज़्यादा एहतिमाम उसको हो। यक़ीन ही असल रापुल्माल है। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि यक़ीन ही पूरा ईमान है। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि यक़ीन को सीखो और इस इर्शाद का मतलब यह है कि यक़ीन वालों के पास एहतिमाम से बैठो, उनका इत्तिबाअ् करो

ताकि उसकी बरकत से तुम में यक़ीन की पुख़्तगी पैदा हो, उसको हक़ तआला शानुहू की क़ुदरते कामिला और सिफ़ात का ऐसा ही यक़ीन हो जैसा कि चांद सूरज के वजूद का। वह इसका कामिल यक़ीन रखता हो कि हर चीज़ का करने वाला सिर्फ़ वही एक पाक ज़ात है और ये दुनिया के सारे असबाब उसके इरादे के साथ मुसख़्ख़र हैं जैसा कि मारने वाले के हाथ में लकड़ी कि इसमें लकड़ी को कोई शख़्स भी दख़ील नहीं समझता और जब यह पुख़्ता हो जाएगा तो उसको तवक्कुल, रिज़ा और तस्लीम सहल हो जायेगी, नीज़ उसको इसका पुख़्ता यक़ीन हो कि रोज़ी का ज़िम्मा सिर्फ़ अल्लाह जल्ल शानुहू का है। और उसने हर शख़्स कि रोज़ी का ज़िम्मा ले रखा है, जो उसके मुक़द्दर में है, वह उसको बहरहाल मिल कर रहेगा और जो मुक़द्दर में नहीं है वह किसी हाल में न मिल सकेगा, और जब उसका यक़ीन पुख़्ता हो जाएगा तो रोज़ी की तलब में एतिदाल पैदा हो जाएगा, हिर्स और तमअ् जाती रहेगी, जो चीज़ मयस्सर न होगी, उस पर रंज न होगा, नीज़ उसको इसका यक़ीन हो कि अल्लाह जल्ल शानुहू हर भलाई और बुराई का हर वक़्त देखने वाला है, एक ज़र्रे के बराबर कोई नेकी या बुराई हो तो वह अल्लाह तआला के इल्म में है और उसका बदला नेक या बद ज़रूर मिलेगा। वह नेक काम के करने पर सवाब का ऐसा ही यक़ीन रखता हो जैसा कि रोटी खाने से पेट भरना और बुरे काम पर अज़ाब को ऐसा ही यक़ीनी समझता हो जैसा कि सांप के काटने से ज़हर का चढ़ना (वह नेकी की तरफ़ ऐसा माइल हो जैसा कि खाने पीने की तरफ़ और गुनाह से ऐसा ही डरता हो जैसा कि सांप बिच्छू से) और जब यह पुख़्ता हो जायेगा तो हर नेकी के कमाने की उसको पूरी रग़बत होगी और हर बुराई से बचने का पूरा एहतिमाम होगा।

9. नवीं अलामत यह है कि उसकी हर हरकत व सुकून से अल्लाह जल्ल शानुहू का ख़ौफ़ टपकता हो, उसकी अज़मत व जलाल और हैबत का असर उस शख़्स की हर अदा से ज़ाहिर होता हो, उसके लिबास से, उसकी आदात से, उसके बोलने से, चुप रहने से हत्ताकि हर हरकत और सुकून से यह बात ज़ाहिर होती हो, उसकी सूरत देखने से अल्लाह तआला शानुहू की याद ताज़ा होती हो, सुकून वक़ार, मस्कनत, तवाज़ोअ् उसकी तबीअत बन गया हो, बेहूदा गोई, लग्व कलामी, तकल्लुफ़ से बातें करने से गुरेज़ करता हो कि ये चीज़ें फ़ख़्र और अकड़ की अलामात हैं, अल्लाह तआला शानुहू से बेख़ौफ़ी की दलील हैं। हज़रत उमर रज़ि० का इर्शाद है कि इल्म सीखो और इल्म के लिए सुकून और

वक़ार सीखो, जिस से इल्म हासिल करो उसके सामने निहायत तवाज़ोअ् से रहो, जाबिर उलमा में से न बनो।

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि मेरी उम्मत के बेहतरीन अफ़राद वे हैं जो मज्मे में अल्लाह तआला की वुस्अते रहमत से ख़ुश रहते हों और तंहाईयों में अल्लाह तआला के अज़ाब के ख़ौफ़ से रोते हों, उनके बदन ज़मीन पर रहते हों और उनके दिल आसमान की तरफ़ लगे रहते हों, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किसी ने पूछा कि सबसे बेहतर अमल क्या है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि नाजायज़ उमूर से बचना और यह कि अल्लाह तआला शानुहू के ज़िक्र से तेरी ज़बान तरोताज़ा रहे। किसी ने पूछा कि बेहतरीन साथी कौन है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि वह शख़्स है कि अगर तू नेक काम से ग़फ़लत करे तो वह तुझे मुतनब्बह कर दे और अगर तुझे ख़ुद याद हो तो उसमें तेरी इआनत (मदद) करे। किसी ने पूछा कि बुरा साथी कौन है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया वह शख़्स है कि अगर तुझे नेक काम से ग़फ़लत हो तो वह मुतनब्बह न करे और तू ख़ुद करना चाहे तो उसमें तेरी इआनत न करे। किसी ने पूछा कि सबसे बड़ा आलिम कौन है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि जो शख़्स सबसे ज़्यादा अल्लाह तआला शानुहू से डरने वाला हो। किसी ने पूछा कि हम किन लोगों के पास ज़्यादातर नशिस्त (बैठना) रखें? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि जिनकी सूरत से अल्लाह की याद ताज़ा होती हो।

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि आख़िरत में ज़्यादा बेफ़िक्र वह शख़्स होगा जो दुनिया में फ़िक्र मंद रहा हो और आख़िरत में ज़्यादा हँसने वाला वह होगा जो दुनिया में ज़्यादा रोने वाला हो।

10. दसवीं अलामत यह है कि उसका ज़्यादा एहतिमाम उन मसाइल से हो जो आमाल से ताल्लुक़ रखते हों, जायज़ नाजायज़ से ताल्लुक़ रखते हों, फ़लां अमल करना ज़रूरी है। इस चीज़ से फ़लां अमल ज़ाया हो जाता है। (मसलन फ़लां चीज़ से नमाज़ टूट जाती है, मिस्वाक करने से यह फ़ज़ीलत हासिल होती है, वग़ैरह वग़ैरह), ऐसे उलूम से ज़्यादा बहस न करता हो जो महज़ दिमाग़ी तफ़रीहात और तफ़रीआत हों ताकि लोग उसको मुहक़्क़िक़ समझें, हकीम और फ़लासफ़र समझें।

11. ग्यारहवीं अलामत यह है कि अपने उलूम में बसीरत के साथ नज़र करने वाला, महज़ लोगों की तक़्लीद में और इत्तिबाअ् में उनका क़ायल न बन

जाये, असल इत्तिबाअ् हुज़ूर सल्ल॰ के पाक इर्शादात का है और इसी वजह से सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन का इत्तिबाअ् है कि वे हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अफ़्आल को देखने वाले हैं और अब असल इत्तिबाअ् हुज़ूर सल्ल॰ ही का है तो हुज़ूर सल्ल॰ के अक़्वाल व अफ़्आल के जमा करने में उन पर गौर व फ़िक्र में बहुत ज़्यादा एहतिमाम करे।

12. बारहवीं अलामत बिद्आत से बहुत शिद्दत और एहतिमाम से बचना है, किसी काम पर आदमियों की कसरत का जमा हो जाना कोई मोतबर चीज़ नहीं, बल्कि असल इत्तिबाअ् हुज़ूर सल्ल॰ का है और यह देखना है कि सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ का क्या मामूल रहा है और इसके लिए उन हज़रात के मामूलात और अह्वाल का ततब्बोअ् और तलाश करना और उसमें मुन्हमिक रहना ज़रूरी है। हज़रत हसन बसरी रह॰ का इर्शाद है कि दो शख़्स बिद्अती हैं जिन्होंने इस्लाम में दो बिद्अतें जारी कीं, एक वह शख़्स जो यह समझता है कि दीन वह है जो उसने समझा है और जो उसकी राय की मुवाफ़क़त करता है, वही नाजी (निजात पाने वाला) है, दूसरा वह शख़्स जो दुनिया की परस्तिश (पूजा) करता है, उसी का तालिब है, दुनिया कमाने वालों से ख़ुश होता है और जो दुनिया न कमावें उन से ख़फ़ा होता है। इन दोनों आदमियों को जहन्नम के लिए छोड़ दो और जिस शख़्स को हक़ तआला शानुहू ने इन दोनों से महफ़ूज़ रखा हो, वह पहले अकाबिर का इत्तिबाअ् करने वाला है, उनके अहवाल और तरीक़े की पैरवी करने वाला है, उसके लिए इंशाअल्लाह बहुत बड़ा अज्र है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ का इर्शाद है कि तुम लोग ऐसे ज़माने में हो कि इस वक़्त ख़्वाहिशात इल्म के ताबेअ् हैं, लेकिन अंक़रीब एक ऐसा ज़माना आने वाला है कि इल्म ख़्वाहिशात के ताबेअ् होगा यानी जिन चीज़ों को अपना दिल चाहेगा, वही उलूम से साबित की जायेंगी। बाज़ बुज़ुर्गों का इर्शाद है कि सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ के ज़माने में शैतान ने अपने लश्करों को चारों तरफ़ भेजा, वे सब के सब फिर फिरा कर निहायत परेशान हाल, थके हुए वापस हुए। उसने पूछा क्या हाल है? वे कहने लगे कि इन लोगों ने तो हमको परेशान कर दिया हमारा कुछ भी असर इन पर नहीं होता, हम इनकी वजह से बड़ी मशक़्क़त में पड़ गये। उसने कहा कि घबराओ नहीं यह लोग अपने नबी (सल्ल॰) के सोहबत याफ़्ता हैं, इन पर तुम्हारा असर मुश्किल है, अंक़रीब ऐसे लोग आने वाले हैं जिन से तुम्हारे मक़ासिद पूरे होंगे। उसके बाद ताबिईन के

ज़माने में उसने अपने लश्करों को सब तरफ़ फैलाया, वे सब के सब उस वक़्त भी परेशान हाल वापस हुए। उसने पूछा क्या हाल है?, कहने लगे कि इन लोगों ने तो हमें दिक़ कर दिया, ये अजीब क़िस्म के लोग हैं कि हमारी अग़राज़ इनसे कुछ पूरी हो जाती हैं, मगर जब शाम होती है तो अपने गुनाहों से ऐसी तौबा करते हैं कि हमारा सारा किया कराया बर्बाद हो जाता है। शैतान ने कहा कि घबराओ नहीं, अंक़रीब ऐसे लोग आने वाले हैं जिनसे तुम्हारी आंखें ठंडी हो जायेंगी, वे अपनी ख़्वाहिशात में दीन समझ कर ऐसे गिरफ़्तार होंगे कि उनको तौबा की भी तौफ़ीक़ न होगी। वे बद्दीनी को दीन समझेंगे। चुनांचे ऐसा ही हुआ कि बाद में शैतान ने उन लोगों के लिए ऐसी बिद्आत निकाल दीं जिनको वे दीन समझने लगे, उस से उनको तौबा कैसे नसीब हो।

ये बारह अलामात मुख़्तसर तरीक़े से ज़िक्र की गयीं हैं जिनको अल्लामा ग़ज़ाली रह० ने तफ़्सील से ज़िक्र किया है, उलमा को अपने मुहासबा के दिन से ख़ास तौर से डरने की ज़रूरत है कि उनका मुहासबा भी सख़्त है, उनकी ज़िम्मेदारी भी बढ़ी हुई है और क़ियामत का दिन जिसमें यह मुहासबा होगा बड़ा सख़्त दिन होगा। अल्लाह तआला शानुहू महज़ अपने फ़ज़्ल व करम स उस दिन की सख़्ती से महफ़ूज़ रखे।

(۷) عن ابی هریرةؓ قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم ان الله تعالیٰ یقول ابن ادم تفرغ لعبادتی املأ صدرك غنی واسد فقرك وان لا تفعل ملأت یداك شغلا ولم اسد فقرك رواه احمد وابن ماجة كذا فی المشكوٰة وزاد فی الترغیب الترمذی وابن حبان والحاكم صححه وفی الباب عن عمران وغیره فی الترغیب

7. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि हक़ तआला शानुहू व अम्म नवालुहू का फ़रमान है कि ऐ आदम की औलाद! तू मेरी इबादत के लिए फ़ारिग़ हो जा, मैं तेरे सीने को ग़िना से पुर कर दूंगा और तेरे फ़क़्र को ज़ायल कर दूंगा और अगर तू ऐसा नहीं करेगा तो मैं तुझे मशाग़िल में फांस दूंगा और तेरा फ़क़्र ज़ायल नहीं करूँगा।

फ़ायदा:- मुतअद्दद अहादीस में मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ से यह मज़्मून वारिद हुआ है कि हज़रत इम्रान बिन हसीन रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जो शख़्स हमातन अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ मुतवज्जह हो जाए, उसी का बन जाये तो हक़ तआला

शानुहू उसकी हर ज़रूरत को ख़ुद पूरी फ़रमाते हैं और ऐसी जगह से उस को रोज़ी अता फ़रमाते हैं कि उस को गुमान भी नहीं होता, और जो शख़्स दुनिया के पीछे पड़ जाता है उसकी फ़िक्र में हर वक़्त रहता है, हक़ तआला शानुहू उसको दुनिया के हवाले कर देते हैं कि तू दुनिया से निबट ले।

हज़रत अनस रज़ि० हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जिस शख़्स की पूरी तवज्जोह और आख़िरी मक़्सद दुनिया कमाना हो, उसी के लिए सफ़र करता है, उसी का ख़्याल दिल में रहता है, तो हक़ तआला शानुहू फ़क़्र व फ़ाक़ा (का ख़ौफ़) उसकी आंख के सामने कर देते हैं। हर वक़्त इस से डरता रहता है कि आमदनी तो बहुत कम है, क्या होगा, क्यों कर गुज़र चलेगा, और उस के औक़ात को (इसी फ़िक्र व तरद्दुद में) परेशान कर देते हैं और मिलता उतना ही है जितना कि मुक़द्दर में होता है और जिस शख़्स की तवज्जोह और हक़ीक़ी मक़्सद आख़िरत होती है, उसी के कामों के लिए सफ़र करता है, उसी का ख़्याल दिल में रहता है, तो हक़ तआला शानुहू (दुनिया से बे नियाज़ी और बे फ़िक्री और) इस्तिग़्ना उसके सामने कर देते हैं और उसके अहवाल को मुज्तमा कर देते हैं और दुनिया ख़ुद ब ख़ुद ज़लील होकर उसके पास आती है।

(तर्ग़ीब)

ख़ुद ब ख़ुद ज़लील होकर आने का मतलब यह है कि जो चीज़ मुक़द्दर है वह तो आकर रहेगी, इसलिए कि बहुत सी अहादीस में यह मज़्मून गुज़र चुका है कि रोज़ी ख़ुद आदमी को ऐसा तलाश करती है जैसा कि मौत आदमी को तलाश करती है। जब वह ख़ुद उसकी तलाश में है, उसके पास आने पर मजबूर है और उसकी तरफ़ से इस्तिग़्ना रहे, तो वह बहरहाल उसके पास आकर रहेगी। इससे ज़्यादा ज़िल्लत क्या होगी कि वह ख़ुद उसके पास आए और यह लापरहवाही बरते।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद वारिद हुआ है कि जो शख़्स उस चीज़ की तलब मे लग जाये जो अल्लाह तआला शानुहू के पास है, आसमान उसका साया हो, ज़मीन उसका बिस्तर हो, दुनिया की किसी चीज़ की उसको फ़िक्र न हो, तो ऐसा शख़्स बग़ैर खेती किए रोटी खाएगा, बग़ैर बाग़ लगाये फल खायेगा। अल्लाह तआला पर उसका तवक्कुल हो और उस की रिज़ा की जुस्तजू में लगा रहता हो, अल्लाह जल्ल शानुहू सातों आसमान और सातों ज़मीनों को उसकी रोज़ी का ज़िम्मेदार बना देते हैं। वे सब के सब उसको रोज़ी पहुँचाने के

कोशाँ रहते हैं, उसको हलाल, रोज़ी पहुँचाने में कोताही नहीं करते और वह बग़ैर हिसाब के अपनी रोज़ी पूरी कर लेता है। (दुर्रे मंसूर)

एक और हदीस में है, हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ इर्शाद फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मस्जिदे ख़ैफ़ (मिना की मस्जिद) में वअज़ फ़रमाया, उसमें हम्द व सना के बाद इर्शाद फ़रमाया कि जिस शख़्स का मक़सद दुनिया बन जाये, हक़ तआला शानुहू उसके अहवाल को परेशान और मुन्तशिर कर देते हैं और फ़क्र (का ख़ौफ़) हर वक़्त आंखों के सामने रहता है और दुनिया तो जितनी मुक़द्दर है उससे ज़्यादा मिलती नहीं।

हज़रत अबूज़र रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जो शख़्स दुनिया के पीछे पड़ जाये, उसका हक़ तआला शानुहू से कोई वास्ता नहीं, और जिसको मुसलमानों का (उनकी भलाई का, ख़ैरख़्वाही का) फ़िक्र न हो, उसको मुसलमानों से कोई वास्ता नहीं, और जो (दुन्यवी अग़राज़ के लिए) अपने आपको ख़ुशी से ज़लील करे, उसका हमसे कोई ताल्लुक़ नहीं (महज़ चार पैसे के वास्ते या किसी और दुन्यवी ग़रज़ के लिए अपने आप को दूसरों के सामने ज़लील करना यक़ीनन अपनी क़द्र व क़ीमत का न पहचानना है और अपने उन बुज़ुर्गों के नाम को धब्बा लगाना है, जिनकी तरफ़ अपनी निस्बत है और सबसे ऊँची निस्बत फ़ख़्रेरूसुल सल्ल॰ की उम्मत में होना है।)

हज़रत अनस रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नक़ल करते हैं कि चार चीज़ें बदबख़्ती की अलामत हैं :-

1. आंखों का ख़ुश्क होना (कि अल्लाह के ख़ौफ़ से किसी वक़्त भी आंसू न टपकें)

2. दिल का सख़्त होना (कि अपनी आख़िरत के लिए या किसी दूसरे के लिए किसी वक़्त भी नर्म न पड़े।)

3. आरज़ुओं का लम्बा होना

4. दुनिया की हिर्स (तर्ग़ीब)

हज़रत अबू दर्दा रज़ि॰ ने एक मर्तबा तंबीह फ़रमाई, लोगो! तुम्हें क्या हो रहा है? मैं देखता हूँ कि तुम्हारे उलमा दिन ब दिन (मौत की वजह से) कम होते जा रहे हैं। और तुम्हारे जाहिल लोग इल्म सीखते नहीं। इस से पहले पहले

इल्म सीख लो कि उलमा इंतिक़ाल कर जायें और उनके इंतिक़ाल से इल्म जाता रहे। (फिर कोई पढ़ाने वाला भी सही न मिलेगा) मैं तुमको देखता हूँ कि उस चीज़ के जमा करने पर तो बड़ा लालच करते हो जिसको अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने ज़िम्मे ले रखा है (यानी रोज़ी) और उस चीज़ को ज़ाया कर रहे हो जिसके तुम ख़ुद ज़िम्मेदार हो, (यानी इल्म व अमल) मैं तुम्हारे बद तरीन आदमियों को देख रहा हूँ, ये वे लोग हैं जो ज़कात को तावान समझते हैं और नमाज़ को टाल कर पढ़ते हैं और क़ुरआन पाक के पढ़ने में भी बे इल्तिफ़ाती करते हैं। *(तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)*

(٨) عن ابی موسیٰ قال قال رسول اللّٰه صلی اللّٰه علیه وسلم من احب دنیاہ اضر بآخرته ومن احب اخرته اضربدنیاہ فاثروا مایبقی علی مایفنی رواہ احمد والبیهقی فی شعب الایمان کذا فی المشکوٰة

8. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स दुनिया से मुहब्बत रखता है वह अपनी आख़िरत को नुक़्सान पहुँचाता है और जो अपनी आख़िरत से मुहब्बत रखता है वह (सूरत के एतिबार से) दुनिया को नुक़्सान पहुँचाता है, पस (जब यह उसूल है तो) जो चीज़ हमेशा रहने वाली है (यानी आख़िरत) उसको तर्जीह दो उस चीज़ पर जो बहरहाल फ़ना हो जाने वाली है।

फ़ायदा:- दुनिया की ज़िन्दगी चाहे कितनी ही ज़्यादा हो जाए बहर हाल ख़त्म होने वाली है और उसका माल व मताअ् चाहे कितना ही ज़्यादा से ज़्यादा हो जाए एक दिन छूटने वाला है। मौत से छूट जाये, चाहे ज़ाया हो जाने से छूट जाये, और आख़िरत की ज़िन्दगी कभी भी ख़त्म होने वाली नहीं है, उसकी नेअ्मतें हमेशा हमेशा रहने वाली हैं, ऐसी हालत में खुली हुई बात है कि आदमी में अगर ज़रा सी भी अक़्ल हो तो ऐसी चीज़ को इख़्तियार करना चाहिए जो हमेशा अपने पास रहेगी। ऐसी चीज़ के पीछे पड़ना जो किसी तरह भी अपने पास हमेशा नहीं रह सकती, बेवक़ूफ़ी की इंतिहा है, मगर हम लोगों की अक़्ल पर ग़फ़लत का पर्दा पड़ा हुआ है, इस स्टेशन की वेटिंगरूम की ज़ेब व ज़ीनत पर दिल लगाये बैठे हैं और क़ियाम सिर्फ़ इतना है कि जब रेलगाड़ी आ जाये उस पर सवार हो जाना है। इतने ज़रा से वक़्त में अगर आदमी अपने सफ़र की तैयारी में मशग़ूल रहे, अपने सामाने सफ़र को जो चीज़ें वतन में पहुँचकर काम आने

वाली हैं उनको फ़राहम कर ले, तैयार कर ले, तो यक़ीनन उसके लिए कारआमद है, वह अपना यह क़ीमती वक़्त और थोड़ी सी फ़ुर्सत वहां के सैर सपाटे में ख़र्च कर दे, अपना सामान बिखरा पड़ा रहे और ख़ुद वेटिंगरूम की सफ़ाई और उसके फ़र्नीचर को क़रीने से रखने में लग जाये या इस से बढ़कर हिमाक़त यह करे कि उसमें लटकाने के वास्ते आईने और नक़्शे ख़रीदने में लग जाये तो अपना सामान भी खोयेगा और अपनी मताअ् भी ज़ाया करेगा।

इस हदीस पाक में दुनिया से मुहब्बत न करने पर तंबीह है कि मुहब्बत ऐसी सख़्त चीज़ है कि जिसके साथ भी लग जाये, रफ़्ता रफ़्ता आदमी को उसी का बना देती है इसलिए आख़िरत के साथ मुहब्बत पैदा करने की तर्ग़ीब फ़रमाई है और दुनिया से तर्के मुहब्बत पर तंबीह है, कि दुनिया से मुहब्बत रखने वाला अगरचे आख़िरत के आमाल उस वक़्त करता हो लेकिन इस नापाक दुनिया की मुहब्बत रंग लाये बग़ैर न रहेगी और आहिस्ता आहिस्ता आख़िरत के कामों में तसाहुल और हर्ज और नुक़्सान पैदा कर देगी। बुज़ुर्गों का इर्शाद है कि जो शख़्स दुनिया को महबूब रखता है, सारे पीर व मुर्शिद मिल कर भी उसको हिदायत नहीं कर सकते, और जो शख़्स दुनिया को तर्क कर देता है, (उस से नफ़रत करता है) उसको सारे मुफ़्सिद मिलकर भी गुमराह नहीं कर सकते।

(मज़ाहिरे हक़)

हज़रत बरा रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़्ल करते हैं कि जो शख़्स दुनिया में अपनी शहवतों को पूरा करता है, वह आख़िरत में अपनी ख़्वाहिशात के पूरा करने से महरूम होता है और जो शख़्स दुनिया में नाज़ परवरदा (रईस) लोगों की ज़ेब व ज़ीनत की तरफ़ (ललचाई हुई) आंखों से देखता है, वह आसमानों की बादशाहत में ज़लील समझा जाता है और जो शख़्स कम से कम रोज़ी पर सब्र व तहम्मुल करता है वह जन्नत में फ़िर्दौसे आला में ठिकाना पकड़ता है। *(दुर्रे मंसूर)*

हज़रत लुक़्मान अलैहि॰ मशहूर हकीम हैं, क़ुरआन पाक में भी उनकी नसीहतों का ज़िक्र फ़रमाया गया। यह एक हब्शी ग़ुलाम स्याह फ़ाम थे, अल्लाह जल्ल शानुहू ने नवाज़ा कि हकीम लुक़्मान अलैहि॰ बन गये। बाज़ रिवायात में है कि हक़ तआला शानुहू ने उनको इख़्तियार दिया था कि हिक्मत और बादशाहत में से जिसको चाहें पसंद कर लें, तो उन्होंने हिक्मत को पसंद फ़रमाया।

एक हदीस में है कि हक़ तआला शानुहू ने उन से इर्शाद फ़रमाया कि क्या तुम इसको पसंद करते हो कि तुमको बादशाह बना दिया जाए और तुम हक़ के मुवाफ़िक़ हुकूमत करो। उन्होंने अर्ज़ किया अगर मेरे रब की तरफ़ से यह हुक्म है तो मुझे उज़्र नहीं, इसलिए कि इस सूरत में अल्लाह तआला शानुहू की तरफ़ से मेरी इआनत होगी, और अगर मुझे इस का इख़्तियार है कि मैं क़ुबूल करूँ या न करूँ तो मैं माफ़ी का ख़्वास्तगार हूं, मैं अपने ज़िम्मे मुसीबत रखना नहीं चाहता। फ़रिश्तों ने पूछा कि लुक़्मान अलैहि॰ यह क्या बात है? उन्होंने जवाब दिया कि हाकिम बड़ी सख़्त जगह में होता है, नागवार चीज़ें और ज़ुल्म हर तरफ़ से उसको घेर लेता है, उसमें उसकी मदद हो सके या न हो सके, अगर हक़ के मुवाफ़िक़ फ़ैसला करे तब तो निजात हो सकती है वरना जन्नत के रास्ते से भटक जायेगा और कोई शख़्स दुनिया में ज़लील बन कर दिन गुज़ार दे यह इस से बेहतर है कि दुनिया में शरीफ़ाना ज़िन्दगी गुज़ार कर (आख़िरत के एतिबार से) ज़ाया हो जाये और जो शख़्स दुनिया को आख़िरत पर तर्जीह देता है दुनिया तो उस से छूट जाती है और आख़िरत के काम का रहता नहीं। फ़रिश्तों को उनके जवाब से बड़ी हैरत हुई। इसके बाद वह सो गये तो हक़ तआला शानुहू ने उन पर हिक्मत को ढांक दिया। *(दुर्रे मंसूर)*

उन से जो हिक्मतें और अपने साहबज़ादे को नसीहतें नक़ल की गयीं बड़ी अजीब हैं, वे बहुत कसरत से रिवायात में आई हैं। मिन्जुम्ला उनके यह भी है कि बेटा उलमा की मज्लिस में कसरत से बैठा करो और हुकमा की बात एहतिमाम से सुना करो। अल्लाह तआला शानुहू हिक्मत के नूर से मुर्दा दिल को ऐसा ज़िंदा फ़रमाते हैं जैसा कि मुर्दा ज़मीन ज़ोरदार बारिश से ज़िंदा होती है।

एक शख़्स उनके पास से गुज़रा उनके पास उस वक़्त मज्मा बैठा हुआ था, वह कहने लगा क्या तू फ़लाँ क़ौम का गुलाम नहीं है? उन्होंने फ़रमाया कि हां मैं उनका गुलाम था। उसने पूँछा क्या तू वही नहीं है जो फ़लाँ पहाड़ के क़रीब बकरियां चराया करता था? उन्होंने फ़रमाया, हां मैं वही शख़्स हूँ। उसने पूछा कि तू फिर इस मर्तबे तक कैसे पहुँच गया? उन्होंने फ़रमाया, चंद चीज़ों की पाबंदी और एहतिमाम करने से।

वे चीज़ें ये हैं :-

अल्लाह तआला शानुहू का ख़ौफ़ और बात में सच्चाई और अमानत का

पूरा पूरा अदा करना और बेकार गुफ़्तगू से एहतिराज़, उनका इर्शाद है कि बेटा अल्लाह तआला शानुहू से ऐसी तरह उम्मीद रखो कि उसके अज़ाब से बे ख़ौफ़ न हो जाओ और ऐसी तरह उसके अज़ाब से ख़ौफ़ करो कि उस की रहमत से ना उम्मीद न हो जाओ। साहब ज़ादे ने अर्ज़ किया दिल तो एक ही है उसमें ख़ौफ़ और उम्मीद दोनों किस तरह जमा हों? उन्होंने फ़रमाया कि मोमिन ऐसा ही होता है कि उसके लिए गोया दो दिल होते हैं, एक में पूरी उम्मीद और एक में पूरा ख़ौफ़। उनका यह भी इर्शाद है कि बेटा "रब्बिग़्फ़िर्ली" बहुत कसरत से पढ़ा करो, अल्लाह तआला शानुहू के अल्ताफ़ में बाज़ औक़ात ऐसे होते हैं कि उनमें जो कुछ आदमी मांगता है वह मिल जाता है। उनका इर्शाद है कि बेटा नेक अमल अल्लाह तआला शानुहू के साथ यक़ीन बग़ैर नहीं हो सकता। जिसका यक़ीन ज़ईफ़ (कमज़ोर) होगा उसका अमल भी सुस्त होगा। बेटा जब शैतान तुझे किसी शक में मुब्तला करे तो उसको यक़ीन के साथ मग़्लूब कर और जब वह तुझे अमल में सुस्ती करने की तरफ़ ले जाये तो क़ब्र और क़ियामत की याद से उस पर ग़लबा हासिल कर, और जब दुनिया में रग़बत या (यहां की तक्लीफ़ के) ख़ौफ़ के रास्ते से वह तेरे पास आये तो उस से कह दे कि दुनिया हर हाल में छूटने वाली चीज़ है (न यहां की राहत को दवाम है, न यहां की तक्लीफ़ हमेशा रहने वाली है।) उनका इर्शाद है कि बेटा जो शख़्स झूठ बोलता है उसके मुँह की रौनक़ जाती रहती है और जिस शख़्स की आदतें ख़राब होंगी, उस पर ग़म सवार होगा और पहाड़ की चट्टानों का एक जगह से दूसरी जगह मुन्तक़िल करना अहमक़ों के समझाने से ज़्यादा आसान है।

उनका इर्शाद है कि बेटा झूठ से अपने को बहुत महफ़ूज़ रखो, झूठ बोलना चिड़िया (परिन्दे) के गोश्त की तरह से लज़ीज़ तो मालूम होता है लेकिन बहुत जल्द झूठ बोलने वाले शख़्स के साथ दुश्मनी का ज़रिया बन जाता है। बेटा, जनाज़े में एहतिमाम से शिर्कत किया करो और तक़रीबात में शिर्कत से गुरेज़ किया करो, इसलिये कि जनाज़ा आख़िरत की याद को ताज़ा करता है और शादियां तक़रीबातें दुनिया की तरफ़ मशग़ूल करती हैं। बेटा, जब पेट भरा हुआ हो, उस वक़्त न खाओ, पेट भरे पर खाने से कुत्ते को डाल देना बेहतर है। बेटा, न तो तुम इतना मीठा बनो कि लोग तुम्हें खा जायें न तुम इतना कड़वा बनो कि लोग तुम्हें थूक दें। बेटा, तुम मुर्ग़ से ज़्यादा आजिज़ न बनो कि वह तो सेहर के वक़्त जाग कर चिल्लाना शुरू कर दे और तुम अपने बिस्तर पर पड़े सोते रहो।

बेटा, तौबा में देर न करो कि मौत का कोई वक़्त मुक़र्रर नहीं, वह दफ़्अतन आ जाती है। बेटा, जाहिल से दोस्ती न करो कि उसकी जहालत की बातें तुम्हें अच्छी मालूम होने लगें और हकीम से दुश्मनी मोल न लो ऐसा न हो कि वह तुम से ऐराज़ करने लगे (और फिर उसकी हिक्मतों से तुम महरूम हो जाओ) बेटा, अपना खाना मुत्तक़ी लोगों के सिवा किसी को न खिलाओ और अपने कामों में उलमा से मश्वरा लिया करो।

किसी ने उनसे पूछा कि बद तरीन शख़्स कौन है? उन्होंने फ़रमाया जो इसकी परवाह न करता हो कि कोई शख़्स उसको बुराई करते हुए देख ले। उनका इर्शाद है कि बेटा नेक लोगों के पास अपनी नशिस्त कसरत से रखा करो कि उनके पास बैठने से नेकी हासिल कर सकोगे और अगर उन पर किसी वक़्त अल्लाह की रहमते ख़ास्सा नाज़िल हुई तो उसमें से तुमको भी कुछ न कुछ ज़रूर मिलेगा (कि जब बारिश उतरती है तो उस मकान के सब हिस्सों में पहुँचती है) और अपने आपको बुरे लोगों की सोहबत से दूर रखो कि उनके पास बैठने से किसी ख़ैर की तो उम्मीद नहीं और उन पर किसी वक़्त अज़ाब हुआ तो उस का असर तुम तक पहुँच जायेगा। उन का इर्शाद है कि बाप की मार औलाद के लिए ऐसी मुफ़ीद है जैसा कि पानी खेती के लिए। उनका इर्शाद है कि बेटा तुम जिस दिन से दुनिया में आए हो हर दिन आख़िरत के करीब होते जा रहे हो (और दुनिया से हर दिन पुश्त फेरते जा रहे हो, पस वह घर जिसकी तरफ़ तुम रोज़ाना चल रहे हो, वह बहुत क़रीब है, उस घर से जिस से हर दिन दूर होते जा रहे हो) बेटा, क़र्ज़ से अपने आप को महफ़ूज़ रखो कि यह दिन की ज़िल्लत और रात का ग़म है (यानी क़र्ज़ख़्वाह के तक़ाज़े से दिन में ज़िल्लत उठानी पड़ती है और रात भर क़र्ज़ के फ़िक्र में गुज़रती है) बेटा, अल्लाह की रहमत की ऐसी उम्मीद रखो जिससे गुनाहों पर जुर्रत न होने पाये और उसके ख़ौफ़ से ऐसा डरो कि उसकी रहमत से ना उम्मीदी न हो जाये। बेटा, जब तुमसे कोई शख़्स आकर किसी की शिकायत करे कि फ़लां ने मेरी दोनों आंखें निकाल दीं और हक़ीक़त में भी उसकी दोनों आंखें निकली हुई हों तो उस वक़्त तक उसके मुताल्लिक़ कोई राय क़ायम न करो जब तक कि दूसरे की बात न सुन लो, क्या ख़बर है कि उसने ख़ुद पहल की हो और उस ने उस से पहले चार आंखें निकाल दी हों।

(दुर्रे मंसूर)

फ़क़ीह अबुल्लैस रह० ने नक़ल किया है कि जब हज़रत लुक़्मान

अलैहि॰ का इंतिक़ाल होने लगा तो उन्होंने अपने साहब ज़ादे से फ़रमाया कि बेटा मैं नें तुमको इस मुद्दते ज़िंदगी में बहुत सी नसीहतें कीं, इस वक़्त (आख़िरी वक़्त है), छह नसीहतें तुमको करता हूँ:-

1. दुनिया में अपने आपको फ़क़त इतना ही मशग़ूल रखना जितनी ज़िंदगी बाक़ी है (और वह आख़िरत के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं)

2. हक़ तआला शानुहू की तरफ़ जितनी तुम्हें एहतियाज है उतनी ही उसकी इबादत करना (और ज़ाहिर है कि आदमी हर चीज़ में उसका मुहताज है)।

3. आख़िरत के लिए उस मिक़्दार के मुवाफ़िक़ तैयारी करना जितनी मिक़्दार वहां क़ियाम का इरादा हो (और जाहिर है कि मरने के बाद तो वहां के अलावा कोई मक़ाम ही नहीं है)।

4. जब तक तुम्हें जहन्नम से ख़लासी का यक़ीन न हो जाये उस वक़्त तक उससे ख़लासी की कोशिश करते रहना (ज़ाहिर है कि जब कोई किसी संगीन मुक़द्दमे में माख़ूज़ हो तो जब तक उसको मुक़द्दमे के खारिज हो जाने का यक़ीन न हो, हर वक़्त कोशिश में लगा रहता है।)

5. गुनाहों पर इतनी जुर्रत करना जितना जहन्नम की आग में जलने का हौसला और हिम्मत हो (कि गुनाहों की सज़ा ज़ाब्ते की चीज़ है और मराहिमे ख़ुसरवाना की ख़बर नहीं।)

6. जब कोई गुनाह करना चाहो तो ऐसी जगह तलाश कर लेना जहां हक़ तआला शानुहू और उसके फ़रिश्ते न देखें (कि ख़ुद हाकिम के सामने, सी.आई. डी. के अमले के सामने बग़ावत का अंजाम मालूम है) *(तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)*

ये चंद नसीहतें हज़रत लुक़्मान अलैहि॰ की तब्अन ज़िक्र कर दी गयीं, मक़्सूद उनकी नसीहतों में से भी वही मज़्मून है जो पहले मैं लिख रहा था कि जो शख़्स दुनिया से मुहब्बत रखता है वह अपनी आख़िरत को नुक़्सान पहुँचाता है।

अर्फ़जा सक़फ़ी रह॰ कहते हैं कि मैं ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि॰ से "सब्बिहिस-म" पढ़ने की दर्ख़्वास्त की, उन्होंने पढ़ना शुरू किया और जब :-

بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّ اَبْقٰى

"बल् तुअ्सिरूनल् हयातद्दुन्या वल् आख़िर-तु ख़ैरूंव्व अब्क़ा॰"

पर पहुँचे जिसका तर्जुमा यह है कि तुम दुनिया की ज़िन्दगी को तर्जीह देते हो हालांकि आख़िरत ज़्यादा बेहतर और हमेशा रहने वाली चीज़ है तो हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि॰ ने तिलावत को बंद करके फ़रमाया कि बेशक हमने दुनिया को आख़िरत पर तर्जीह दे दी। सब हाज़िरीन ख़ामोश थे, फिर दोबारा फ़रमाया कि हम ने दुनिया को तर्जीह दे दी इसलिए कि हम ने उसकी ज़ेब व ज़ीनत को देखा, उसकी औरतों को देखा, उस के खाने पीने को देखा और आख़िरत की ये सब चीज़ें हमसे मख़्फ़ी (छूपी हुई) थीं, इसलिए दुनिया को तर्जीह दे बैठे और आख़िरत को छोड़ दिया।

हज़रत अनस रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि "ला इला-ह इल्लल्ला-हु" का कलिमा अल्लाह की नाराज़ी से बंदों को महफ़ूज़ रखता है जब तक कि दुनिया की तिजारत को आख़िरत की तिजारत पर तर्जीह न दें और जब दुनिया की तिजारत को आख़िरत की तिजारत पर तर्जीह देने लगें फिर "ला इला-ह इल्लल्ला-हु" कहें तो वह कलिमा उन पर यह कह कर लौटा दिया जाता है कि तुम झूठ बोल रहे हो(यानी तुम्हारा इक़रार झूठा है, महज़ (ज़बानी जमा ख़र्च है) एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि जो शख़्स "ला इला-ह इल्लल्लाहु वह्दहू ला शरी-क लहू" की गवाही के साथ अल्लाह तआला जल्ल शानुहू से मिलता है, वह (सीधा) जन्नत में दाख़िल होता है, जब तक कि उसके साथ दूसरी चीज़ को ख़लत न कर दे, तीन मर्तबा हुज़ूर सल्ल॰ ने अपना यह इर्शाद फ़रमाया। मज्मे में से एक शख़्स ने अर्ज़ किया, मेरे मां बाप आप पर क़ुर्बान, दूसरी चीज़ ख़लत करने का क्या मतलब है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, दुनिया की मुहब्बत और उसकी तर्जीह, उसके लिए माल का जमा करना और दुनिया की चीज़ों से खुश होना और मुतकब्बिर लोगों का अमल।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि दुनिया उस शख़्स का घर है जिसका (आख़िरत में) घर नहीं और दुनिया उस शख़्स का माल है जिसका आख़िरत में माल नहीं और दुनिया के लिए वह शख़्स माल जमा करता है जिसको बिल्कुल अक़्ल नहीं है। (दुर्रे मंसूर)

हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है दुनिया ख़ुद मल्ऊन है और जो कुछ इसमें है

वह सब मल्ऊन है, बजुज़ उसके जो हक़ तआला शानुहू के लिए हो।

(जामिउस्सग़ीर)

इमाम ग़ज़ाली रह॰ मज़म्मते दुनिया की किताब में तहरीर फ़रमाते हैं कि तमाम तारीफ़ें और हम्द उसी पाक ज़ात के लिए हैं जिसने अपने दोस्तों को दुनिया के मुहलिकात और उसकी आफ़ात से वाक़िफ़ कर दिया और दुनिया के उयूब और उसके राज़ों को अपने दोस्तों पर रौशन कर दिया, यहां तक कि इन हज़रात ने दुनिया के अहवाल को पहचान लिया और उसकी भलाई और बुराई का मुवाज़ना करके यह जान लिया कि उस की बुराईयां उसकी भलाई पर ग़ालिब हैं और जो उम्मीदें दुनिया से वाबस्ता हैं वे इन अंदेशा नाक चीज़ों का मुक़ाबला नहीं कर सकतीं जो इस पर मुरत्तब हैं। दुनिया एक चटपटी औरत की तरह से लोगों को अपने हुस्न व जमाल से गिरफ़्तार करती है और अपनी बद किरदारी से अपने विसाल के ख़्वाहिशमंदों को हलाक करती है। यह अपने चाहने वालों से भागती है और उनकी तरफ़ तवज्जोह करने में बड़ी बख़ील है और अगर मुतवज्जह भी होती है तो उसकी तवज्जोह में भी आफ़त और मुसीबत से अम्न नहीं है। अगर एक दफ़ा एहसान करती है तो एक साल तक बुराईयां करती रहती है जो इसके धोखे में आ जाता है उसका अंजाम ज़िल्लत है और जो इसकी वजह से तकब्बुर करता है वह आख़िर कार हसरत व अफ़सोस की तरफ़ चलता है। इसकी आदत अपने उश्शाक़ से भागना है और जो इससे भागे उसके पीछे पड़ना है, जो इसकी ख़िदमत करे उस से अलाहिदा रहती है और जो इससे ऐराज़ करे उसकी मुलाक़ात की कोशिश करती है। इसकी सफ़ाई में भी तकद्दुर है, इसकी ख़ुशी में भी रंज व ग़म लाज़िम है। इसकी नेमतों का फल हसरत व नदामत के सिवा कुछ नहीं। यह बड़ी धोखा देने वाली मक्कार औरत है बड़ी भगोड़ी और एकदम उड़ जाने वाली है यह अपने चाहने वालों के लिए निहायत ज़ेब व ज़ीनत इख़्तियार कर लेती है और जब वे अच्छी तरह इसमें फंस जाते हैं तो दांत दिखाने लगती है और उनके मुनज़्ज़म अहवाल को परेशान कर देती है और अपनी नैरंगियां उनको दिखाती है, फिर अपना ज़हरे क़ातिल उनको चखाती है। यह अल्लाह तआला की दुश्मन है, उसके दोस्तों की दुश्मन है, उसके दुश्मनों की दुश्मन है, अल्लाह तआला की दुश्मनी इस तरह से कि उसकी तरफ़ चलने वालों की रहज़नी करती है, उसके दोस्तों के साथ दुश्मनी इस तरह करती है कि उनके दिल लुभाने के लिए तरह तरह की ज़ीनतें अपने ऊपर लादती है जिस से

वे इस की तरफ़ मुल्तफ़ित हो कर इस से क़ता-ए-ताल्लुक़ पर सब्र का कड़वा घूंट पीते हैं और अल्लाह तआला के दुश्मनों से दुश्मनी इस तरह करती है कि अपने मक्र व फ़रेब से उनको शिकार करती है और जब वे इस की दोस्ती पर भरोसा करने लगते हैं तो ऐसे वक़्त उनको एकदम अधर में छोड़ देती है जिस वक़्त कि वे इसके सख़्त मुहताज हों जिस से वे दायमी हसरत और दायमी अज़ाब में मुब्तला हो जाते हैं।

क़ुरआन पाक की आयते करीमा और अहादीसे शरीफ़ा में कसरत से इसकी मज़म्मत वारिद हुई है, बल्कि तमाम अंबिया-ए-किराम अला नबिय्यिना व अलैहि॰ की बेअ्सत इसी पर तंबीह के लिए हुई है कि इस से दिल न लगाया जाये। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मर्तबा एक मुर्दा बकरी के पास से गुज़रे, हुज़ूर सल्ल॰ ने सहाबा रज़ि॰ से ख़िताब फ़रमा कर इर्शाद फ़रमाया, क्या तुम्हारा यह ख़्याल है कि इस मरी हुई बकरी की कोई वक़अत इसके मालिक के यहां होगी। सहाबा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया कि इसकी बे वक़अती इसी से मालूम होती है कि इसको फेंक दिया। हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला शानुहू के नज़दीक दुनिया इससे भी ज़्यादा ज़लील और बे वक़अत है जितनी यह मुर्दा बकरी अपने मालिक के नज़दीक है। अगर अल्लाह तआला शानुहू के नज़दीक दुनिया की वक़अत एक मच्छर के पर की बराबर भी होती तो किसी काफ़िर को इसमें से एक घूंट पानी का भी न मिलता। हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि दुनिया की मुहब्बत हर ख़ता की असास (जड़) और बुनियाद है।

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हम एक मर्तबा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ की ख़िदमत में हाज़िर थे कि आपने कुछ पीने को मांगा तो शहद का शर्बत ख़िदमत में पेश किया गया, उसको मुंह के क़रीब फ़रमा कर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ रोने लगे और इतना रोये कि पास बैठने वाले भी मुतास्सिर होकर रोने लगे और ख़ूब रोये। इसके बाद फिर दोबारा मुंह के क़रीब किया और फिर रोने लगे। इसके बाद अपनी आंखो के आंसू पोंछे और इर्शाद फ़रमाया कि मैं एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर था, मैं ने देखा कि हुज़ूर सल्ल॰ अपने दोनों हाथों से किसी चीज़ को दफ़ा फ़रमा रहे हैं। और कोई चीज़ हुज़ूर सल्ल॰ के सामने मुझे नज़र न आयी तो मैं ने हुज़ूर सल्ल॰ से दर्याफ़्त किया कि हुज़ूर सल्ल॰ किस चीज़ को अपने से हटा रहे हैं। हुज़ूर सल्ल॰

ने फ़रमाया कि दुनिया मेरे सामने हाज़िर हुई थी, मैं ने उसको अपने से हटा दिया। इसके बाद फिर दोबारा दुनिया मेरे (यानी हुज़ूर सल्ल॰ के) पास आई और कहने लगी कि अगर आप मुझसे बच गये तो (कुछ क़लक़ नहीं, इसलिए कि) आपके बाद आने वाले मुझसे नहीं बच सकते।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद है कि बहुत ज़्यादा ताज्जुब उस शख़्स पर है जो इस पर ईमान रखता है कि आख़िरत दायमी और हमेशा रहने वाली है और इसके बाद भी वह इस धोखे के घर दुनिया के लिए कोशिश करता है। एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक कूड़ी पर को गुज़रे जहां कुछ बोसीदा हड्डियां, पाख़ाना और पुराने फटे हुए चीथड़े पड़े हुए थे, हुज़ूर सल्ल॰ वहां खड़े हो गये और इर्शाद फ़रमाया कि आओ लो देखो, यह है दुनिया का मुन्तहा और इसकी सारी ज़ेब व ज़ीनत।

एक और हदीस में इस मुजमल इर्शाद की तफ़्सील भी आई है लेकिन अल्लामा इराक़ी रह॰ वग़ैरह हज़रात मुहद्दिसीन फ़रमाते हैं कि हमें वह रिवायत नहीं मिली कि कहां है, लेकिन इमाम ग़ज़ाली रह॰ ने उसको नक़ल किया है और साहिबे क़ुव्वत ने उसको हज़रत हसन बसरी रह॰ से मुर्सलन नक़ल किया है, वह यह है :-

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मुझसे हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि मैं तुम्हें दुनिया की हक़ीक़त दिखाऊँ? मैं ने अर्ज़ किया ज़रूर इर्शाद फ़रमायें। हुज़ूर सल्ल॰ मुझे अपने साथ लेकर मदीना, मुनव्वरा से बाहर एक कूड़ी पर तशरीफ़ ले गये, जहां आदमियों की खोपड़ियां, पाख़ाने और फटे हुए चीथड़े और हड्डियां पड़ी हुई थीं। हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया, अबू हुरैरह, ये आदमियों की खोपड़ियां हैं ये दिमाग़ इसी तरह दुनिया की हिर्स करते थे, जिस तरह तुम सब ज़िंदा रह कर आज कल कर रहे हो। यह भी इसी तरह उम्मीदें बांधा करते थे जिस तरह तुम लोग उम्मीदें लगाये हो। आज ये बग़ैर खाल के पड़ी हुई हैं और चंद रोज़ गुज़र जाने के बाद मिट्टी हो जायेंगी, ये पाख़ाने वे रंग बिरंग के खाने हैं जिनको बड़ी मेहनत से कमाया, हासिल किया फिर इनको तैयार किया और खाया। अब ये इस हाल में पड़े हैं कि लोग इस से (नफ़रत करके) भागते हैं (वह लज़ीज़ खाना जिसकी ख़ुशबू दूर से लोगों को अपनी तरफ़ मुतवज्जह करती थी, आज उसका मुन्तहा यह है कि उसकी बदबू दूर से लोगों को अपने से मुतनफ़्फ़िर करती है।) यह चीथड़ा वह ज़ीनत का लिबास (था

जिसको पहन कर आदमी अकड़ता था, आज यह इस हाल में) है कि हवायें इसको इधर से उधर फेंकती हैं, ये हड्डियां उन जानवरों की हड्डियां हैं जिन पर लोग सवारियां किया करते थे (घोड़े पर बैठ कर मटकते थे) और दुनिया में घूमते थे। बस जिसे इन अहवाल पर (और इनके इब्रत नाक अंजाम पर) रोना हो वह इनको देखकर रोये, हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हम सब बहुत रोये।

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि दुनिया (ज़ाहिर के एतिबार से) मीठी और सर-सब्ज़ है और हक़ तआला शानुहू ने तुमको इसमें अपने असलाफ़ का जानशीन इसलिए बनाया है ताकि वह यह देखे कि तुम इसमें क्या अमल करते हो। बनी इस्राईल पर जब दुनिया की फ़ुतूहात होने लगीं तो वे उसकी ज़ेब व ज़ीनत और औरतों और ज़ेवरों के चक्कर में पड़ गये।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का इर्शाद है कि दुनिया को अपना सरदार न बनाओ, वह तुम्हें अपना गुलाम बना लेगी। अपना ख़ज़ाना ऐसी पाक ज़ात के पास महफ़ूज़ कर दो जहां ज़ाया होने का अंदेशा नहीं है। दुनिया के ख़ज़ानों में इज़ाअत[1] का अंदेशा हर वक़्त है और अल्लाह तआला शानुहू के ख़ज़ाने पर कोई आफ़त नहीं है।

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का इर्शाद है कि दुनिया की ख़बासत के आसार में से यह बात भी है कि इसमें अल्लाह तआला की नाफ़रमानी की जाती है और इसकी ख़बासत की अलामत में से यह भी है कि आख़िरत इसको छोड़े बग़ैर नहीं मिलती। यह बात अच्छी तरह समझ लो कि दुनिया की मुहब्बत, हर ख़ता की जड़ है और थोड़ी देर की ख़्वाहिश बहुत तवील ज़माने के रंज व अज़ाब का ज़रिया बन जाती है। उनका यह भी इर्शाद है कि दुनिया बाज़ों की तालिब होती है, बाज़ों की मतलूब होती है। जो आख़िरत के तालिब हैं, उनकी तो यह ख़ुद तालिब होती है कि झक मार कर उनकी रोज़ी उन को पहुँचाती है और जो इसकी तलब में लग जाते हैं, आख़िरत उनको ख़ुद तलब नहीं करती हत्ताकि मौत आकर उन की गरदन दबा लेती है।

हज़रत सुलैमान अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम एक मर्तबा अपने लशकर के साथ तशरीफ़ ले जा रहे थे, परिन्दे उन पर साया किये हुए थे

---

1. बर्बाद करना।

और जिन्न व इंस दायें बायें थे। एक आबिद पर गुज़रे, उसने अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला शानुहू ने बहुत बड़ी सल्तनत आपको अता फ़रमा रखी है कि जिन्न व इन्स, चरिन्द व परिन्द सब पर आपकी हुकूमत है, हज़रत सुलैमान अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने फ़रमाया कि मुसलमान के आमाल नामे में एक मर्तबा, सुब्हानल्लाह सुलैमान के सारे मुल्क से ज़्यादा अफ़ज़ल है, इसलिए कि यह सारी सल्तनत बहुत जल्द ख़त्म हो जायेगी और सुब्हानल्लाह का सवाब हमेशा हमेशा बाक़ी रहने वाला है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जिस शख़्स का मुन्तहा-ए-मक़्सद दुनिया हो जाये, उसको अल्लाह तआला शानुहू से कोई वास्ता नहीं है और उसको हक़ तआला शानुहू चार चीज़ों में मुब्तला फ़रमा देते हैं।

1. ऐसा ग़म जो कभी भी ख़त्म न हो (कि हर वक़्त आमदनी के बढ़ाने की फ़िक्र में लगा रहेगा),

2. एक ऐसा शुग़्ल जिस से किसी वक़्त भी फ़राग़त न हो,

3. एक ऐसा फ़क़्र जो कभी भी मुस्तग़्नी न बनाये (कि जितनी आमदनी बढ़ती जाए उतना ही ख़र्च ज़्यादा हो कर आमदनी कम ही मालूम हो),

4. और ऐसी लम्बी लम्बी उम्मीदें, जो कभी भी पूरी न हों।

हज़रत इब्राहीम अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम के सहीफ़े में है कि ऐ दुनिया, तू किस क़दर ज़लील है, उन नेक बंदों की निगाह में जिनके लिए तू अपने को आरास्ता करती है, मैं ने उनके दिलों में तेरी अदावत डाल दी है और तेरे से एराज़ उनमें पैदा कर दिया है। मैं ने कोई मख़्लूक़ तुझ से ज़्यादा ज़लील पैदा नहीं की, तेरी सारी रफ़्अत निहायत ना चीज़ है और ख़त्म होने वाली है। मैं ने तेरे मुताल्लिक़ तेरी पैदाईश के दिन यह फ़ैसला कर दिया था कि न तू हमेशा किसी के पास रहेगी और न तेरे साथ हमेशा कोई रहेगा, चाहे तेरा मालिक कितना ही तेरे साथ बुख़्ल करे। मुबारक हैं वे नेक बंदे जो दिल से राज़ी ब रज़ा रहने की मुझे इत्तिला देते हैं और अपने ज़मीर से सच्चाई और पुख़्तगी की मुझे ख़बर देते हैं, उनके लिए सर-सब्ज़ी है, जब वे अपनी क़ब्रों से उठ कर मेरे पास आयेंगे तो मेरे पास उनके लिए एक नूर है, जो उस वक़्त उनके सामने होगा और फ़रिश्ते दायीं बायीं जानिब होंगे, हत्ताकि मैं उनकी उन सब उम्मीदों

को पूरा कर दूँगा, जो उन्होंने मेरे साथ बांध रखी हैं।

हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि बाज़ लोग क़ियामत के दिन इतने ज़्यादा आमाल लेकर आयेंगे जैसा कि मुल्के अरब के पहाड़, लेकिन जहन्नम में डाल दिये जायेंगे। किसी ने पूछा, या रसूलल्लाह सल्ल॰ क्या ये लोग नमाज़ी होंगे? हुज़ूर ने फ़रमाया नमाज़ी भी होंगे, रोज़ादार भी होंगे, बल्कि तहज्जुद गुज़ार होंगे, लेकिन जब दुनिया की कोई चीज़ (दौलत, इज़्ज़त वग़ैरह) उनके सामने आ जाये तो एक दम उस पर कूद पड़ते हैं (जायज़ ना जायज़ की भी परवाह नहीं करते) हज़रत ईसा अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम का इर्शाद है कि दुनिया और आख़िरत की मुहब्बत एक दिल में जमा नहीं हो सकती जैसा कि आग और पानी एक बरतन में जमा नहीं हो सकते। हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि दुनिया से बचते रहो, यह हारूत मारूत से भी ज़्यादा जादू करने वाली है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मर्तबा सहाबा रज़ि॰ के पास तशरीफ़ लाये और इर्शाद फ़रमाया कि तुम में से कौन शख़्स ऐसा है जो यह चाहता हो कि अल्लाह तआला शानुहू उसके (दिल के) अंधेपन को दूर कर दे और उसकी (इबरत की) आंखे खोल दे (जो यह चाहता हो वह ग़ौर से सुन ले कि) जो शख़्स दुनिया में जितनी रग़्बत करता है और जैसी लम्बी लम्बी उम्मीदें बांधता है, उसी की बक़द्र हक़ तआला शानुहू उसके दिल को अंधा कर देते हैं और जो शख़्स दुनिया से बेरग़्बती करता है, अपनी आरज़ुओं को मुख़्तसर करता है, हक़ तआला शानुहू उस को बग़ैर सीखे इल्म अता फ़रमाते हैं और बग़ैर किसी के दिखाए रास्ता बताते हैं। अंक़रीब ऐसे लोग आने वाले हैं जिनके लिए सल्तनत, क़त्ल और जब्र से क़ायम होगी, बुख़्ल व फ़ख़्र से उनको ग़िना हासिल होगा। ख़्वाहिशात के इत्तिबाअ् से लोगों के दिलों में उनकी मुहब्बत होगी। तुम में से जो शख़्स ऐसे ज़माने को पाए और उस वक़्त फ़क़्र पर सब्र करे, हालांकि वह ग़नी हो सकता है वह लोगों की दुशमनी को बर्दाश्त करे, हालांकि वह (उनकी ख़्वाहिशात के ताबेअ् होकर उनके दिलों में मुहब्बत पैदा कर सकता है,) वह ज़िल्लत पर क़नाअत करे हालांकि वह (लोगों की मुवाफ़क़त करके) इज़्ज़त पा सकता है, लेकिन वह शख़्स इन चीज़ों को सिर्फ़ अल्लाह तआला शानुहू के लिए बर्दाश्त करता है तो उसको पचास सिद्दीक़ीन का सवाब होगा।

एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में बहरैन का बहुत सा माल आया, (अहले ज़रूरत) अंसारी सहाबा रज़ि॰ ने जब

यह ख़बर सुनी तो कसरत से सुबह की नमाज़ में हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हुज़ूर सल्ल० ने नमाज़ के बाद मज्मे को देखकर तबस्सुम फ़रमाया और यह इर्शाद फ़रमाया कि मेरे ख़्याल में इस माल की ख़बर सुनकर तुम आये हो, उन्होंने अर्ज़ किया बेशक या रसूलल्लाह सल्ल० इसीलिए हम हाज़िर हुए हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया मैं तुम्हें (कसरते माल की) ख़ुशख़बरी देता हूँ कि अंक़रीब माल बहुत ज़्यादा होने वाला है और जिस चीज़ से तुम ख़ुश होते हो (यानी माल) उसकी उम्मीद रखो कि वह तुम्हारे पास बहुत ज़्यादा आने वाला है। मैं तुम्हारे फ़क़्र व फ़ाक़ा से ख़ाइफ़ नहीं हूँ, लेकिन मुझे इसका डर है कि तुम्हारे ऊपर दुनिया फैल पड़े, जैसा कि तुमसे पहले लोगों पर फैल चुकी है और फिर तुम उसमें दिल लगा बैठो, जिसकी वजह से वह तुमको भी इसी तरह हलाक कर दे जैसा कि तुमसे पहले लोगों को हलाक कर चुकी है।

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि मुझे तुम लोगों पर ज़्यादा ख़ौफ़ इस बात का है कि हक़ तआला शानुहू तुम पर ज़मीन की बरकात निकाल दें। किसी ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्ल० ज़मीन की बरकता क्या चीज़ें हैं? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि दुनिया की रौनक़।

हज़रत अबू दर्दा रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद नक़ल किया कि जो कुछ मुझे मालूम है अगर तुमको मालूम हो जाए तो हंसना कम कर दो और बहुत कसरत से रोने लगो और दुनिया तुम्हारे नज़दीक बहुत ज़लील बन जाए और आख़िरत को इस पर तर्जीह देने लगो। इसके बाद अबूदर्दा रज़ि० ने अपनी तरफ़ से फ़रमाया कि जो कुछ मुझे मालूम है अगर तुमको मालूम हो जाए तो तुम जंगलों को रोते हुए और चिल्लाते हुए निकल जाओ और अपने मालों को बग़ैर मुहाफ़िज़ छोड़ जाओ, लेकिन तुम्हारे दिलों से आख़िरत का ज़िक्र ग़ायब है और दुनिया की उम्मीदें तुम्हारे सामने हैं, इसलिए दुनिया तुम्हारे आमाल की मालिक बन रही है और तुम ऐसे बन गये गोया कुछ जानते ही नहीं, इसलिए तुम में से बाज़ तो उन जानवरों से भी बदतर हो गये जो अंजाम के ख़ौफ़ से अपनी शहवतों को नहीं छोड़ते, तुम्हें क्या हो गया कि तुम आपस में मुहब्बतें नहीं रखते, एक दूसरे को नसीहत नहीं करते हालांकि तुम आपस में दीनी भाई हो। तुम्हारी ख़्वाहिशात में सिर्फ़ तुम्हारे बातिनी ख़ुब्स ने तफ़रीक़ कर रखी है, अगर तुम भी सब दीन परवर दीनी उमूर पर मुजतमा हो जाओ तो आपस में ताल्लुक़ात भी ज़्यादा हो जायें। आख़िर तुम्हें यह क्या हो गया कि दुनिया के कामों में तो

एक दूसरे को नसीहत करते हो लेकिन आख़िरत के कामों में एक दूसरे को नसीहत नहीं करते। तुम जिससे मुहब्बत करते हो उसको आख़िरत के उमूर पर नसीहत नहीं कर सकते। यह सिर्फ़ इस वजह से है कि तुम्हारे दिलों में ईमान की कमी है, अगर तुम आख़िरत की भलाई और बुराई पर ऐसा यक़ीन रखते जैसा कि दुनिया की भलाई और बुराई पर यक़ीन रखते हो तो ज़रूर आख़िरत को दुनिया पर तर्जीह देते, इसलिए कि आख़िरत तुम्हारे कामों की दुनिया से ज़्यादा मालिक है। अगर तुम यह कहो कि दुनिया की ज़रूरत फ़ौरी है, इस वक़्त दरपेश है, आख़िरत की ज़रूरत बाद में होगी तो तुम ख़ुद सोचो कि दुनिया में बाद में आने वाले और हासिल होने वाले कामों के लिए तुम कितनी मशक़्क़त उठाते हो (खेती की मशक़्क़त बर्दाश्त करते हो कि बाद में पैदावार होगी, बाग़ लगाने में कितनी जांफ़शानी करते हो कि कई साल बाद फल आयेगा, वग़ैरह वग़ैरह) तुम किस क़दर बुरी क़ौम हो कि अपने ईमान की जांच उन चीज़ों के साथ नहीं करते। जिससे तुम्हारे ईमान की मिक़्दार तुम्हें मालुम हो जाए कि ईमान किस दर्जे तक तुम में मौजूद है।

अगर तुम लोगों को उस चीज़ में शक है जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम लेकर आये तो आओ, हमारे पास आओ हम तुम्हें वाज़ेह तरीक़े से बतायें और वह नूर दिखायें जिससे तुम्हें इत्मीनान हो जाए कि हुज़ूर सल्ल॰ ने जो फ़रमाया वह हक़ है। तुम कम अक़्ल बेवक़ूफ़ नहीं हो जिसकी वजह से हम तुमको माज़ूर समझ लें। दुनिया के कामों में तो तुम बड़ी अच्छी राय रखते हो और उसमें बड़ी एहतियात पर अमल करते हो (फिर क्या मुसीबत है कि आख़िरत के कामों में न तुम समझ से काम लेते हो, न एहतियात पर अमल करते हो) आख़िर यह क्या बात है, यह तुम्हें क्या हो गया है कि दुनिया के ज़रा से फ़ायदे से बड़ा ख़ुश होते हो, ज़रा से नुक़्सान से रंजीदा हो जाते हो, जिसका असर तुम्हारे चेहरों पर मालूम होने लगता है (कि ख़ुशी में फूल जाता है, रंज में ज़रा सा मुँह निकल आता है) मुसीबतें ज़बान पर आने लगती हैं, ज़रा सी बात को मसाइब कहने लगते हो, मातम की मज्लिसें क़ायम करते हो, लेकिन दीन की बड़ी से बड़ी बात भी छूट जाए तो न उसका रंज व ग़म है न चेहरे पर कोई तग़य्युर है। मैं तुम्हारी बद दीनी की हालत देख कर यह ख़्याल करता हूँ कि हक़ तआला शानुहू ही तुम से बेज़ार हो गये हैं। तुम लोग आपस में एक दूसरे से ख़ुशी ख़ुशी मिलते हो और हर एक यह चाहता है कि दूसरे के सामने

कोई ऐसी (हक़) बात न कहे जो उसको नागवार हो ताकि वह भी उसके मुताल्लिक़ कोई नापसंदीदा बात न कह दे। पस दिलों के अंदर ही अंदर ऐसी बातें रखते हुए एक दूसरे के साथ रहते हो और बातिन की गंदगियों पर तुम्हारे ज़ाहिर के चमन खिल रहे हैं और मौत की याद के छोड़ देने पर सब जमा हो गये हो, काश! हक़ तआला शानुहू मुझे मौत देकर तुम लोगों से राहत अता करता और मुझे इन हज़रात (यानी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा-ए-किराम रज़ि०) के साथ मिला देते जिनके देखने का मैं मुश्ताक़ हूँ। अगर ये हज़रात ज़िंदा होते तो तुम्हारे साथ रहना ज़रा भी पसंद न करते, पस अगर तुम में कोई शिम्मा ख़ैर का बाक़ी है तो मैं तुम्हें साफ़ साफ़ कह चुका हूँ और हक़ की बात सुना चुका हूँ, अगर तुम उस चीज़ को (यानी आख़िरत को) जो अल्लाह तआला के पास है, तलब करना चाहो तो वह बहुत आसान है और मैं सिर्फ़ अल्लाह ही से मदद चाहता हूँ तुम्हारे हक़ में भी और अपने हक़ में भी (फ़क़त, हज़रत अबूदर्दा रज़ि० का इर्शाद ख़त्म हो गया)

हज़रत अबूदर्दा रज़ि० की यह डांट बड़े ग़ौर से पढ़ने की है, यह उन हज़रात पर ख़फ़ा हो रहे हैं जिनके मुताल्लिक़ हम यह समझते हैं कि हम उन जैसे दीनदार बन भी नहीं कसते, उनके अहवाल, उनके कारनामे हमारे सामने हैं, अगर यह हज़रत अबूदर्दा रज़ि० हम लोगों को देखते तो यक़ीनन रंज से हलाक हो जाते। यक़ीनन ये हज़रात हमारे अहवाल को देख भी न सकते, उनका किसी तरह तहम्मुल न कर सकते।

हज़रत हसन बसरी रह० का इर्शाद है कि हक़ तआला शानुहू उन लोगों पर रहम करे जिनके पास दुनिया अमानत थी, वे इस अमानत को दूसरों के हवाले कर गये और ख़ुद बेफ़िक्र चल दिये। आपका यह इर्शाद भी है कि जो शख़्स दीन के बारे में तेरी मुज़ाहमत करे, उस से मुज़ाहमत कर और जो दुनिया के बारे में तेरी मुज़ाहमत करे, इस दुनिया को उसके मुँह पर मार और बेफ़िक्र हो जा। हज़रत अबू हाज़िम रह० का इर्शाद है कि दुनिया से बचते रहो, क़ियामत के दिन आदमी को मैदाने हश्र में खड़ा करके कहा जायेगा, यह वह शख़्स है जिस ने ऐसी चीज़ को बड़ा समझा, जिसको अल्लाह तआला शानुहू ने हक़ीर बताया था, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० का इर्शाद है कि हर शख़्स अपने घर में चंद रोज़ा मेहमान है और उसका माल व मताअ् मांगी हुई चीज़ है मेहमान को बहरहाल चंद दिन में अपने घर (यानी आख़िरत) को चला जाना है

और मांगी हुई चीज़ बहरहाल वापस होने वाली है।

हज़रत राबिआ बसरियः रह॰ एक मज्मे में तशरीफ़ रखती थीं, लोग कुछ दुनिया की बुराई कर रहे थे, वह कहने लगीं कि उसका ज़िक्र बुराई से भी न करो, उसके ज़िक्र करने से यह मालूम होता है कि उसकी तुम्हारे दिलों में वक़्अत है, अगर यह न होती तो उसका बार बार ज़िक्र भी ज़बान पर न आता (पाख़ानों की गंदगी और बुराई का बार बार कौन ज़िक्र करता है।)

हज़रत लुक़्मान अलैहि॰ की अपने बेटे को वसीयत है कि अपनी दुनिया को दीन के बदले में बेच दो, दोनों जहान में नफ़ा मिलेगा और दीन को दुनिया के बदले में न बेचो, दोनों जहान में ख़सारा रहेगा। हज़रत मुतर्रिफ़ बिन शख़ीर रह॰ का इर्शाद है कि बादशाहों के ऐश व इशरत और उनके उम्दा लिबास पर नज़र न करो बल्कि यह सोचो कि उनका अंजाम क्या होगा। हज़रत अबू अमामा रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेअ्सत हुई तो शैतान ने अपने लशकरों को हालात की तहक़ीक़ के लिए भेजा, उन्होंने बताया कि एक नबी की बेअ्सत हुई है और उनकी बहुत बड़ी उम्मत है तो उसने तहक़ीक़ किया कि इन लोगों में दुनिया की मुहब्बत भी है? उन्होंने कहा कि हां हां है। शैतान ने कहा कि फिर मुझे इसका रंज नहीं कि वह बुत परस्ती न करें, मैं तीन चीज़ें उन पर मुसल्लत कर दूंगा।

1. ना-जायज़ तरीक़े से कमाना,
2. ना-जायज़ तरीक़े पर ख़र्च करना और,
3. जहां ख़र्च का वाक़ई महल हो, उसमें ख़र्च न करना।

हज़रत अली रज़ि॰ का इर्शाद है कि दुनिया के हलाल माल का हिसाब है और उसके हराम में अज़ाब है।

हज़रत मालिक बिन दीनार रह॰ का इर्शाद है कि इस जादूगर से बचते रहो यह उलमा के दिलों पर भी जादू कर देती है। हज़रत अबू सुलैमान दारानी रह॰ फ़रमाते हैं कि जिस दिल में आख़िरत होती है, दुनिया उस से झगड़ा करती रहती है और उस दिल पर क़ब्ज़ा करने की कोशिश करती रहती है और जिस दिल में दुनिया होती है आख़िरत उस से मुज़ाहमत नहीं करती, इसलिए कि आख़िरत करीम है, वह दूसरे के घर पर क़ब्ज़ा करना नहीं चाहती और दुनिया कमीनी है, वह हर एक के घर पर ज़बर्दस्ती क़ब्ज़ा करना चाहती है।

मालिक बिन दीनार रह० कहते हैं कि तू जिस क़दर दुनिया का ग़म करेगा उतना ही आख़िरत का ग़म तेरे दिल से निकल जायेगा और जितना तू आख़िरत का ग़म करेगा उतना ही दुनिया का ग़म तेरे दिल से निकल जायेगा।

हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि मैं ने ऐसे आदमियों को पाया है जिनके नज़दीक दुनिया उस मिट्टी से ज़्यादा ज़लील थी जिस पर तुम चलते हो, उनको इसकी परवाह नहीं थी कि दुनिया है या जाती रही, इसके पास चली गयी या उसके पास चली गयी।

एक आदमी ने हज़रत हसन बसरी रह० से दर्याफ़्त किया कि आप उस शख़्स के मुताल्लिक़ क्या फ़रमाते हैं जिसको हक़ तआला शानुहू ने माल व दौलत अता किया हो, वह उसमें से सदक़ात भी करता है, सिला-रहमी भी करता है, क्या उसके लिए यह मौज़ूं और मुनासिब है कि ख़ुद भी अच्छे अच्छे खाने खाये और नेमतों में ज़िन्दगी गुज़ारे। उन्होंने फ़रमाया, नहीं, अगर सारी दुनिया भी उसको मिल जाये तो उसको अपने ऊपर बक़द्रे ज़रूरत ही ख़र्च करना चाहिए और इससे ज़्यादा को उस दिन (यानी आख़िरत के दिन) के लिए भेज देना चाहिए जो दिन उसकी सख़्त एहतियाज का दिन होगा।

हज़रत फ़ुज़ैल रज़ि० का इर्शाद है कि अगर दुनिया सारी की सारी मुझे मिल जाये और मुझ से उसका हिसाब भी न लिया जाये तब भी मैं उस से ऐसी घिन और कराहत करूँ जैसी कि तुम लोग मुर्दार जानवर से करते हो कि कहीं कपड़े को न लग जाये।

हज़रत हसन रज़ि० फ़रमाते हैं कि बनी इस्राईल को हक़ तआला शानुहू की बंदगी करने के बावजूद सिर्फ़ दुनिया की मुहब्बत ने बुत परसती तक पहुँचा दिया था इनका यह भी इर्शाद है कि आदमी अपने माल को तो हमेशा कम समझता है मगर अपने अमल को कभी कम नहीं समझता, दीन में कोई मुसीबत आ जाए तो ख़ुश रहता है, दुनिया में कोई मुसीबत पेश आ जाए तो घबरा जाता है।

हज़रत फ़ुज़ैल रज़ि० का इर्शाद है कि दुनिया में दाख़िल होना तो बहुत आसान है लेकिन इस से निकलना बहुत मुश्किल है। एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं, ताज्जुब है उस शख़्स पर जिसको मौत का यक़ीन हो कि वह बहर हाल आने वाली है, न मालूम कब आ जाए, फिर भी किसी बात से क्यों कर ख़ुश होता

है? ताज्जुब है उस शख़्स पर जिसको इसका यक़ीन है कि जहन्नम हक़ है (और अपना हश्र नहीं मालूम) फिर किस तरह वह किसी बात पर हंसता है? ताज्जुब है उस शख़्स पर जो दुनिया के हर वक़्त के इन्क़िलाबात को देखता है फिर कैसे दुनिया की किसी बात पर मुतमइन होता है? ताज्जुब है उस शख़्स पर जिसको यक़ीन है कि तक़्दीर बरहक़ है (जो कुछ मुक़द्दर में है, वह मिल कर रहेगा), फिर क्यों मुसीबतें उठाता है?

हज़रत अमीर मुआविय: रज़ि॰ के पास शहर नजरान के एक बुज़ुर्ग आए, जिनकी उम्र दो सौ बरस थी, अमीर मुआविय: रज़ि॰ ने उनसे पूछा, दुनिया को तुम ने बहुत देखा, कैसा पाया? कहने लगे, चंद एक साल राहत के, चंद एक साल तक्लीफ़ के हर दिन रात में कोई न कोई पैदा होता है, कोई न कोई मर जाता है। अगर पैदा होना बंद हो जाये तो दुनिया एक दिन ख़त्म हो जाए (कि मरने का सिलसिला भी है) अगर मरना बंद हो जाये तो दुनिया में रहने की जगह भी न मिले (इसलिए कि मोतदिल निज़ाम यही है कि पैदा भी होते रहें, मरते भी रहें।) हज़रत मुआविय: रज़ि॰ ने फ़रमाया मुझसे कोई चीज़ मतलूब हो, मेरे क़ाबिल कोई ख़िद्मत हो तो बताओ, मैं उसको पूरा कर दूँ, वह कहने लगे कि जो उम्र मेरी ख़त्म हो चुकी है, वह मुझे वापस मिल जाये या आइंदा मौत न आये। अमीर मुआविय: रज़ि॰ ने कहा, यह तो मैं नहीं कर सकता। कहने लगे कि फिर मुझे आप से कुछ मांगना भी नहीं है।

अबू सुलैमान रह॰ फ़रमाते हैं कि दुनिया की शहवतों से वही शख़्स सब्र कर सकता है जिसके दिल में आख़िरत की चीज़ों के साथ कोई मशग़ूली हो।

मालिक बिन दीनार रह॰ कहते हैं कि हम सबने दुनिया के साथ मुहब्बत कर लेने पर सुलह कर ली है, जिसकी वजह से कोई शख़्स किसी को न अच्छी बातों का हुक्म करता है, न बुरी बातों से रोकता है। हक़ तआला शानुहू इस हाल पर हमें हमेशा छोड़े रखे, यह हरगिज़ नहीं हो सकता, न मालूम किस वक़्त क्या अज़ाब हम पर नाज़िल हो जाये।

हज़रत हसन रज़ि॰ का इर्शाद है कि हक़ तआला शानुहू जिस बंदे के साथ भलाई का इरादा फ़रमाते हैं, उसको थोड़ी सी दुनिया मरहमत फ़रमा कर रोक लेते हैं। जब हव माल उसके पास ख़त्म हो जाता है तो फिर थोड़ा सा और दे देते हैं और जो शख़्स अल्लाह तआला के नज़दीक ज़लील होता है उस पर

दुनिया को फैला देते हैं।

एक बुज़ुर्ग के दुआ के अल्फ़ाज़ हैं, ऐ वो पाक ज़ात, जो इस पर क़ादिर है कि आसमान को ज़मीन पर गिरने से रोक दे, दुनिया को मेरे पास आने से रोक दे।

मुहम्मद बिन मुंकदिर रह० कहते हैं कि अगर कोई शख़्स हमेशा रोज़े रखे, कभी इफ़्तार न करे, रात भर तहज्जुद पढ़े, बिल्कुल न सोये, अपने माल को खूब ख़ैरात करता हो, अल्लाह के रास्ते में जिहाद करता हो और गुनाहों से बचता हो लेकिन क़ियामत के दिन उस को खड़ा करके यह मुतालबा किया जायेगा कि उसकी निगाह में वह चीज़ वक़ीअ् (वक़्अत वाली) थी जिसको अल्लाह तआला ने ज़लील बताया (यानी दुनिया) और वह चीज़ ग़ैर-वक़ीअ् थी, जिसको अल्लाह तआला ने वक़ीअ् बताया (यानी आख़िरत) तुम ही बताओ कि उस पर क्या गुज़रेगी? फिर हम लोगों का क्या हाल होगा जो इस मर्ज़ में यानी दुनिया की वक़्अत में मुब्तला हैं। और इसके साथ साथ गुनाहों में भी मुब्तला हैं।

अब्दुल्लाह बिन मालिक रह० फ़रमाते हैं कि दुनिया की मुहब्बत ने और गुनाहों ने दिलों को वहशी बना रखा है इसलिए ख़ैर की बात दिलों तक पहुँचती ही नहीं, यानी असर नहीं करती।

वहब बिन मुनब्बह रह० कहते हैं कि जो शख़्स दुनिया की किसी चीज़ से खुश होता है वह हिकमत के ख़िलाफ़ करता है और जो शख़्स शहवतों को अपने क़दम के नीचे दबा लेता है कि उनको सर भी नहीं उठाने देता, शैतान ऐसे शख़्स के साए से डरता है।

हज़रत इमाम शाफ़ई रह० ने अपने एक दीनी भाई को नसीहत फ़रमाई कि दुनिया ऐसा कीचड़ है, जिसमें पांव फिसल जाते हैं (लिहाज़ा बच बच कर क़दम रखना चाहिए और पांव की लग़्ज़िश से हर वक़्त डरते रहना चाहिए) दुनिया ज़िल्लत का घर है, इसकी आबादी का मुन्तहा बर्बादी है, इसमें रहने वालों को तंहा क़ब्रों तक जाना है, इसका इज्तिमा इफ़्तिराक़ पर मौक़ूफ़ है, इसकी वुस्अत फ़क़्र की तरफ़ लौटा दी गयी। इस की कसरत मशक़्क़त में पड़ना और इसकी तंगी सहूलत में पहुँचना है, पस हमातन अल्लाह तआला शानुहू की तरफ़ मुतवज्जह रहो और अल्लाह जल्ल शानुहू ने जितना रिज़्क़ अता फ़रमा दिया, उस

पर राज़ी रहो। अपनी आख़िरत में से दुनिया के लिए क़र्ज़ न लो (यानी ऐसी चीज़ें इख़्तियार न करो जिनका बदला आख़िरत में अदा करना पड़ जाये और वहां ज़रूरत के मौक़े पर कमी पड़ जाये।) इसलिए कि यहां की ज़िन्दगी ब मंज़िला एक साया के है, जो अंक़रीब ख़त्म होने वाली है और बमंज़िला एक दीवार के है जो झुक गयी है, अंक़रीब गिरने वाली है। नेक अमल कसरत से करते रहो और उम्मीदें बहुत कम बांधो।

हज़रत इब्राहीम बिन अधम रह० ने एक शख़्स से दर्याफ़्त किया कि तुम्हें अगर ख़्वाब में कोई शख़्स एक दिरहम (साढ़े तीन आने) दे वह तुम्हें ज़्यादा पसंद है या कोई शख़्स तुम्हें जागने की हालत में एक दीनार (अशर्फ़ी) दे वह ज़्यादा पसंद है, उसने अर्ज़ किया कि (यह एक खुली हुई बात है) जागते हुए दीनार ज़्यादा महबूब है। हज़रत इब्राहीम रह० ने फ़रमाया कि तुम झूठ बोलते हो इसलिए कि जिस चीज़ को तुम दुनिया में महबूब रखते हो, उसको तुम गोया ख़्वाब में पसंद कर रहे हो और जिस चीज़ को आख़िरत की, पसंद नहीं कर रहे हो उससे गोया जागने में ऐराज़ कर रहे हो।

यहया बिन मुआज़ रज़ि० कहते हैं कि तीन आदमी अक़्लमद हैं :-

1. एक वह शख़्स जो दुनिया को इससे पहले छोड़ दे कि दुनिया उसको छोड़े।

2. दूसरा वह शख़्स जो अपनी क़ब्र की तैयारी इस से पहले कर ले कि उसमें दाख़िल होने का वक़्त आ जाये।

3. तीसरा वह शख़्स जो अपने मौला को इस से पहले राज़ी कर ले कि उस से मुलाक़ात करे।

इनका यह भी इर्शाद है कि दुनिया की बदबख़्ती इस दरजे को पहुँच गयी है कि इसकी तमन्ना तुझे हक़ तआला शानुहू की इताअत से अपने अंदर मशग़ूल कर देती है। जब उसकी तमन्ना का यह हाल है तो अगर दुनिया में फंस जायेगा तो क्या हाल होगा।

बक्र बिन अब्दुल्लाह रज़ि० कहते हैं कि जो शख़्स दुनिया को हासिल करके उस से बेफ़िक्र होना चाहता है, वह ऐसा है जैसा कोई शख़्स आग को बुझाने के लिए उस पर ख़ुश्क घास डाले।

बिन्दार रह० कहते हैं कि जब दुनियादार ज़ुहद की बातें करते हैं तो

समझ लें कि शैतान उनके साथ मज़ाक़ कर रहा है। एक बुज़ुर्ग का इर्शाद है कि लोगो, फ़ुर्सत के इन अय्याम में नेक अमल कर लो और हक़ तआला शानुहू से डरते रहो और लम्बी लम्बी उम्मीदों से और मौत को भूल जाने से धोखे में न पड़ो और दुनिया की तरफ़ ज़रा भी मुतवज्जह न हो, यह कमबख़्त बड़ी बेवफ़ा है, बड़ी धोखेबाज़ है, अपने धोखे से तुम्हारे लिए बनती संवरती है और अपनी आरज़ुओं के साथ तुमको फ़िल्ने में डालती है, वह अपने ख़ाविन्दों के लिए ज़ीनत इख़्तियार करती है और बिल्कुल नई दुल्हन की तरह से बन जाती है जैसा कि वह शादी के दिन होती है कि आंखें उसकी तरफ़ लग जाती हैं और दिल उस पर जम जाते हैं और आदमी उसके आशिक़ बन जाते हैं लेकिन इस कमबख़्त ने अपने कितने आशिक़ों को क़त्ल कर डाला और कितने आदमियों को जो इस पर इत्मीनान किए हुए बैठे थे, बे यार व मदद गार छोड़ दिया। इसको हक़ीक़त की निगाह से ग़ौर से देखो, यह ऐसा घर है जिसमें मुहलिकात बहुत ज़्यादा हैं और ख़ुद इसके पैदा करने वाले ने इस की बुराई बताई है (एक हकीम कोई दवाई तैयार करता है और वह ख़ुद कहता है कि इसमें ज़हर है सिर्फ़ एक रत्ती इसकी इहतियाज के वक़्त इस्तेमाल की जा सकती है। अगर कोई बेवक़ूफ़, एक तोला, दो तोला उसमें से खा लेगा तो लामुहाला मरेगा और बनाने वाले हकीम के ख़बर कर देने के बाद ऐसा करना हिमाक़त की इंतिहा है।) इसकी हर नयी चीज़ पुरानी हो जायेगी, इसका मुल्क ख़ुद ही फ़ना हो जायेगा, इसका अज़ीज़ आख़िर कार ज़लील होगा। इसकी कसरत बिल आख़िर क़िल्लत की तरफ़ पहुँचती है, इसकी दोस्ती फ़ना होने वाली है, इसकी भलाई ख़त्म होने वाली है। तुम लोगों पर अल्लाह तआला शानुहू रहम करे, अपनी ग़फ़लत से होशियार हो जाओ, अपनी नींद से जाग जाओ, इस से पहले पहले कि यह शोर हो जाये कि फ़लां शख़्स बीमार हो गया है, मायूसी की हालत है, कोई अच्छा हकीम बताओ। किसी अच्छे डाक्टर को लाओ, फिर तुम्हारे लिए हकीम और डाक्टर बार बार बुलाये जायें और ज़िन्दगी की कोई उम्मीद न दिलाये, फिर यह आवाज़ आने लगे कि उसने वसिय्यतें शुरू कर दीं। ऐ लोगो, उसकी तो ज़बान भी भारी हो गयी, अब तो आवाज़ भी अच्छी तरह नहीं निकलती, अब तो वह किसी को पहचानता भी नहीं, लम्बे लम्बे सांस भी आने लगे, कराह भी बढ़ गयी, पलकें भी झुकने लगीं। उस वक़्त तुझे आख़िरत के अहवाल महसूस होने लगेंगे लेकिन ज़बान तुतला गयी। अब कोई बात कह भी नहीं सकता, भाई बंद रिश्तेदार खड़े रो रहे

हैं। कहीं बेटा सामने आता है, भाई सामने आता है, बीवी सामने आती है, मगर ज़बान कुछ नहीं बोलती, इतने में बदन के अज्ज़ा (अंगों) से रूह निकलना शुरू हो जाती है और आख़िर वह तो निकल कर आसमान पर चली जाती है, अज़ीज़ अक़ारिब जल्दी जल्दी दफ़्नाने की तैयारी शुरू कर देते हैं, इयादत करने वाले रो धोकर चुप हो जाते हैं, दुश्मन ख़ुशियां मनाते हैं, अज़ीज़ रिश्तेदार माल बांटने में लग जाते हैं और मरने वाला अपने आमाल में फंस जाता है (यह हक़ीक़त है इस ज़िन्दगी की)

हज़रत हसन बसरी रह० ने हज़रत अमीरूल मोमिनीन उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० को एक बार ख़त लिखा, जिसमें हम्द व सलात के बाद तहरीर फ़रमाया कि दुनिया कूच का घर है, यह रहने का घर नहीं है। हज़रत आदम अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम को इसमें सज़ा के तौर पर भेजा गया था कि जन्नत में उनसे एक लग़्ज़िश हो गयी थी (तो बतौर जेलख़ाने के यहां भेजा गया था) इसलिए इस से डरते रहें, इसका तोशा इसको छोड़ देना है, इसका ग़िना इसका फ़क्र है (यानी इसमें ग़नी वही शख़्स है जो ज़ाहिर में फ़क़ीर है) यह हर वक़्त किसी न किसी को हलाक करती रहती है, जो इसको अज़ीज़ समझे, उसको यह ज़लील करती है, जो इसको जमा करने का इरादा करे उसको यह (दूसरों का) मुहताज बनाती है यह एक ज़हर है जिसको अंजान लोग खाते हैं फिर वे मर जाते हैं। इसमें ऐसी तरह ज़िन्दगी गुज़ार दें जैसा कि ज़ख़्मी बीमार हर चीज़ से एहतियात करता है ताकि सेहत नसीब हो जाये और कड़वी दवा इसलिए इस्तेमाल करता है ताकि मर्ज़ तूल न पकड़े। आप इस मक्कार, दग़ाबाज़, फ़रेबी से एहतियात रखें जो महज़ धोखा देने की वजह से बनती संवरती है और धोखे से लोगों को मुसीबत में फंसाती है और अपनी उम्मीदों के साथ लोगों के यहां आती है और अपनी मंगनी करने वालों को आज कल पर टालती रहती है, पस यह उनके लिए ऐसी बनी ठनी नई दुल्हन बन जाती है कि आंखें इस पर टकटकी लगा लेती हैं और दिल इसके फ़रेफ़्ता हो जाते हैं और आदमी इसके जांनिसार बन जाते हैं, लेकिन यह कमबख़्त सबके साथ दुश्मनी करती है। हैरत है कि न तो रहने वाले जाने वालों से इब्रत पकड़ते हैं न बाद में आने वाले पहलों का हाल सुन कर इससे एहतिराज़ करते हैं और न अल्लाह तआला के इर्शादात को जानने वाले उसके इर्शादात से नसीहत पकड़ते हैं, और इसके आशिक़ अपनी हाजत पूरी होती देख कर धोखे में पड़ जाते हैं और सरकशी में मुब्तला होकर

आख़िरत को भूल जाते हैं, हत्ताकि उनका दिल इसमें मशग़ूल हो जाता है और क़दम आख़िरत के रास्ते से फिसल जाता है, फिर नदामत और हसरत के सिवा कुछ नहीं होता कि मौत की और नज़अ् का कर्ब और बेचैनी उनको घेर लेती है और इस सबके छूट जाने की हसरतें उस पर मुसल्लत हो जाती हैं, रग़्बत करने वाला अपने मक़ासिद को कभी भी पूरा नहीं कर सकता और मशक़्क़त से कभी भी राहत नहीं पाता, यहां तक कि बग़ैर तोशा लिए इस आलम से चला जाता है और बग़ैर तैयारी के पहुँच जाता है। अमीरूल मोमिनीन इस से बहुत बचते रहें और इससे निहायत ख़ुशी के औक़ात में भी बहुत ज़्यादा डरते रहें। इस पर एतिमाद करने वाला जब भी कुछ ख़ुश होता है तो यह किसी न किसी मुसीबत में उसको मुब्तला कर देती है। इसमें ख़ुश रहने वाला धोखे में पड़ा हुआ है और इसमें (ज़रूरत से ज़्यादा) नफ़ा उठाने वाला नुक़्सान में पड़ा हुआ है। इसकी राहत तक्लीफ़ों के साथ वाबस्ता है और इसमें रहने का मुन्तहा फ़ना है, इसकी ख़ुशी रंज के साथ मख़्लूत है, जो कुछ गुज़र चुका है, वह वापस आने वाला नहीं है और जो जाने वाला है उसका हाल मालूम नहीं कि क्या हो? इसकी आरज़ुएं झूठी, इसकी उम्मीदें सब बातिल, इसकी सफ़ाई में गदलापन है, इसके ऐश में मशक़्क़त है और आदमी इसमें हर वक़्त ख़तरे की हालत में है। अगर उसको अक़्ल हो और वह ग़ौर करे तो इसकी नेमतें ख़तरनाक हैं, और इसकी बलाओं का हर वक़्त ख़ौफ़ है। अगर हक़ तआला शानुहू जो इसके ख़ालिक़ हैं, वह इसकी बुराईयों की इत्तिला न फ़रमाते, तब भी इस मक्कार की अपनी हालत ही सोतों को जगाने के वास्ते और ग़ाफ़िलों को होशियार करने के वास्ते काफ़ी थी। चे जाये कि हक़ तआला शानुहू ने खुद इस पर तंबीह फ़रमाई और इसके बारे में नसीहतें फ़रमाईं कि अल्लाह जल्ल शानुहू के यहां इसकी कोई क़द्र नहीं और इसको पैदा फ़रमा कर कभी भी इसकी तरफ़ नज़रे इल्तिफ़ात नहीं फ़रमाई। यह अपने सारे ख़ज़ानों के साथ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुई। हुज़ूर सल्ल० ने इसको क़ुबूल नहीं फ़रमाया, मुंह नहीं लगाया, इसलिए कि हुज़ूर सल्ल० ने हक़ तआला की मंशा के ख़िलाफ़ को पसंद नहीं किया और जिस चीज़ से उसके ख़ालिक़ ने बुग़्ज़ रखा, उस से आप ने मुहब्बत नहीं की और जिस चीज़ की अल्लाह ने क़ीमत गिरा दी, आप सल्ल० ने उसको पसंद करके उसका दरजा बुलंद नहीं किया। इसलिए हक़ तआला शानुहू ने अपने नेक बंदों से उसको क़सदन हटा दिया और अपने दुश्मनों

पर इसकी वुस्अत कर दी। बाज़ धोखे में पड़े हुए लोग जो इसको वक़्अत से देखते हैं, वे इसकी वुस्अत को देख कर यह समझने लगते हैं, कि अल्लाह तआला शानुहू ने उन पर इक्राम किया और वे इस बात को भूल जाते हैं कि (सैयिदुर्रूसुल् फ़ख़्रूल् अव्वलीन वल आख़िरीन) सैयिदिना मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ अल्लाह तआला शानुहू ने इस बारे में क्या मामला रखा कि पेट पर पत्थर बांधने पड़े।

एक हदीस में अल्लाह तआला शानुहू का इर्शाद हज़रत मूसा अलैहि० से है कि जब तुम वुस्अत को आते देखो तो समझो कि किसी गुनाह की सज़ा में यह आ रही है और जब फ़क्र व फ़ाक़ों को आता देखो तो कहो कि सालिहीन का शिआर आ रहा है और अगर कोई हज़रत ईसा अला नबिय्यिना व अलैहि० का इत्तिबाअ् करना चाहता है तो उनका इर्शाद यह है कि मेरा सालन भूख है (भूख में फ़क़त रोटी भी ऐसी लज़ीज़ मालूम होती है जैसी सालन से) और मेरा शिआर अल्लाह तआला शानुहू का ख़ौफ़ है और मेरा लिबास सूफ़ है (भेड़ बकरी के बाल) और मेरा सर्दी में सेकना धूप है और मेरा चिराग़ चांद की रोशनी है और मेरी सवारी मेरे पांव हैं और मेरा खाना और मेवे ज़मीन की घास है, मैं सुबह इस हाल में करता हूँ कि मेरे पास कुछ नहीं होता, और शाम इस हाल में करता हूँ कि मेरे पास कुछ नहीं होता, और सारी दुनिया में मुझसे ज़्यादा ग़नी (बे-परवाह, जो किसी का मुहताज न हो) कोई भी नहीं है।

इस क़िस्म के इर्शादात इन हज़राते किराम अंबिया अलैहि० और सहाबा-ए-किराम और औलिया-ए-अिज़ाम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन के बहुत कसरत से किताबों में मौजूद हैं। यहां ग़ौर से एक बात समझ लेना चाहिए, वह यह है कि असल ज़िन्दगी और महमूद व मर्ग़ूब ज़िन्दगी यही है जो इन हज़रात के इर्शादात और हालात से मालूम होती है, लेकिन इसके साथ ही अपने आज़ा और अपने क़ुवा के तहम्मुल की रिआयत भी ज़रूरी है। जहां तक अपने क़ुवा तहम्मुल करें, वहां तक इत्तिबाअ् की सओ़ी (कोशिश) होना चाहिए और जहां अपना ज़ोअफ़ मुतहम्मिल न हो, वहां मजबूरन अपने ज़ोअफ़ (कमज़ोरी) की रिआयत ज़रूरी है। इन अहवाल के नक़ल से मक़्सद यह है कि कम अज़ कम इतना ज़ेहन नशीन हो जाए कि दुनिया की असल ज़िन्दगी यह है और इस से ज़ायद जहां तक हम अपने अमराज़ और आज़ार (उज़्रों) से मजबूर हैं। वहां मजबूरी के दरजे में अपने ज़ोअफ़ और उज़्रों की रिआयत ज़रूरी है। इसके

मिसाल बीमार का रोज़ा खोलना है कि असल तो यही है कि माहे मुबारक में रोज़ा रखा जाए लेकिन अगर कोई बीमारी की वजह से रोज़ा नहीं रख सकता या तबीब (डाक्टर) रोज़ा को सेहत के लिए मुज़िर बताता है तो मजबूरन रोज़ा खोलना पड़ेगा। मगर यह ज़ाहिर है कि असल माहे मुबारक में रोज़ा ही था, वही असल मक़सद है, वही मर्ग़ूब है, मगर बीमार ग़रीब मजबूर है कि नहीं रख सकता, अलबत्ता उसकी रग़बत, उसकी सओ़ी हर सच्चा मुसलमान करता है। इसी तरह हम लोग अपनी हिम्मतों और क़ुवा के ज़ोअफ़ की वजह से इस तर्ज़े ज़िन्दगी के मुतहम्मिल नहीं हैं। इसलिए बदरजा-ए-मजबूरी जिस क़दर हाजत है उसी क़दर दुनिया से तलब्बुस ज़रूरी है, मगर अपने ज़ोअफ़ की मजबूरी का एहसास भी रहे और असल ज़िन्दगी दिल से उसी को समझता रहे जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और दीगर अंबिया-ए-किराम और उन औलिया-ए-अिज़ाम की थी जिनमें से चंद के अक़्वाल गुज़रे और इसके साथ ही साथ दुनिया का बे-हक़ीक़त होना उस का दिल न लगाने के क़ाबिल होना, उसका फ़ानी और महज़ धोखा होना, ये उमूर ऐसे ज़रूरी हैं कि अपने ज़ोअफ़ और मजबूरी की हालत में भी दिल में जितने ज़्यादा से ज़्यादा जमाए जा सकते हों, उनको जामए। ज़बान से नहीं दिल से दुनिया को हक़ीक़तन ऐसा ही समझे, इसके समझने में कोई चीज़ मानेअ् (रूकावट) नहीं, हमारे पास कोई उज़्र ऐसा नहीं जो किसी दर्जे में भी इस बदबख़्त को दिलों में वक़ीअ् (क़द्र के क़ाबिल) बना दे।

इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि दुनिया बहुत जल्द फ़ना हो जाने वाली है, जल्दी ही ख़त्म होने वाली है यह अपने बाक़ी रहने के वायदे तो करती है, मगर इन वायदों को पूरा नहीं करती, तू जब इसको देखे तो यह तुझे एक जगह ठहरी हुई मालूम होगी लेकिन वाक़िए में यह बहुत सुरअत (तेज़ी) से चल रही है, मगर देखने वालों को इसकी हरकत महसूस नहीं होती, उसको जब ही पता चलता है जब यह ख़त्म हो जाती है। इसकी मिसाल साए की सी है कि वह हर वक़्त चलता रहता है लेकिन उसकी हरकत मालूम नहीं होती।

हज़रत हसन बसरी रह० के सामने एक मर्तबा दुनिया का ज़िक्र आया तो उन्होंने फ़रमाया:-

احلام نوم او کظل زائل　　　　ان اللبیب بمثلها لایخدع

"अह्लामु नौमिन् औ क-ज़िल्लिन् ज़ाइलिन्
इन्नल्लबी-ब बिमिस्लिहा ला यख़्द-अु"

'इसकी मिसाल सोने वाले के ख़्वाब की है या चलने वाले साए की है। अक़्लमंद आदमी को इस जैसी चीज़ के साथ धोखा नहीं दिया जा सकता। हज़रत इमाम हसन रज़ि॰ अक्सर यह शेर पढ़ा करते थे':-

يا اهل للذات دنيا لابقاء لها ان اغترارا بظل زائل حمق

"या अह्-ल लज़्ज़ाति दुन्या ला बक़ा-अ लहा
इन्नग़्तिरारन् बिज़िल्लिन् ज़ाइलिन हुमुक़ुन्"

'ऐ दुनिया की लज़्ज़त वालो, इस को दवाम बिल्कुल नहीं है, ऐसे साए के साथ धोखा खाना जो चल रहा हो, हिमाक़त है।

यूनुस बिन उबैद रह॰ कहते हैं कि मैंने अपने दिल को दुनिया की यह मिसाल समझाई कि एक आदमी मसलन सो रहा है, जब वह ख़्वाब में बहुत सी अच्छी और बुरी बातों को देखता है, एकदम उसकी आंख खुल गयी और वह सारा ख़्वाब ख़त्म हो गया। इसी तरह आदमी सब सो रहे हैं और यह सब कुछ ख़्वाब में देख रहे हैं, जब मौत से एकदम आंख खुल जाएगी तो यहां की खुशी न रहेगी, न ग़म रहेगा, कहते हैं कि एक मर्तबा हज़रत ईसा अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम को दुनिया की हक़ीक़त का कश्फ़ हुआ, देखा कि वह एक निहायत बूढ़ी औरत है जिसके बुढ़ापे की वजह से दांत टूट गये और निहायत ज़र्क़ बर्क़ का फ़ाख़िरा लिबास पहन रही है। हर क़िस्म की ज़ीनत का सामान उस पर है, बिल्कुल दुल्हन बन रही है। हज़रत ईसा अलैहि॰ ने उससे पूछा कि तू अब तक कितने निकाह कर चुकी है (कि अब फिर निकाह के शौक़ में दुल्हन बन रही है,) उसने जवाब दिया कि उनका कोई शुमार नहीं। हज़रत ईसा अलै॰ ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि वे सब मर गए या उन्होंने तुझको तलाक़ दे दी। उसने जवाब दिया कि मैं ने सबको क़त्ल कर दिया। हज़रत ईसा अलैहि॰ फ़रमाते हैं कि तेरे बाक़ी ख़ाविंदों का नास हो, वे तेरे गुज़िश्ता ख़ाविंदों से इब्रत हासिल नहीं करते कि तूने किस तरह एक एक करके सबको हलाक कर दिया। हक़ीक़ी बात यही है कि यह बिल्कुल एक बड़ी उम्र की बुढ़िया है जिसने अपने ऊपर ज़ीनत का लिबास पहन रखा है। लोग इसकी ज़ाहिरी ज़ीनत को देख कर धोखा खा जाते हैं, जब इसकी हक़ीक़त पर मुत्तला होते हैं और इसके चेहरे से पर्दा

हटाते हैं तो इसकी सूरत नज़र आती है।

अला बिन ज़ियाद रह॰ फ़रमाते हैं कि मैं ने ख़्वाब में एक बुढ़िया को देखा जो बहुत बूढ़ी थी और बहुत उम्दा लिबास, ज़ेवर वग़ैरह पहन रही थी, दुनिया की हर क़िस्म की ज़ेब व ज़ीनत उस पर मौजूद थी और लोग बहुत कसरत से उसके गिर्द जमा हैं, बड़े शौक़ से उसको देख रहे हैं। मैं उसके क़रीब गया और उसको देख कर मुझे उन सब देखने वालों पर बड़ा तअज्जुब हुआ। मैं ने ख़्वाब में उससे पूछा कि तू कौन है? कहने लगी तू मुझे नहीं जानता? मैंने कहा नहीं मैं तो नहीं जानता, उसने कहा मैं दुनिया हूँ। मैं ने कहा अल्लाह तआला शानुहू तुझसे मुझे अपनी पनाह में रखे। कहने लगी अगर तू मुझ से पनाह में रहना पसंद करता है तो दिरहम (रूपये) से बुग्ज़ पैदा कर ले।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि क़ियामत में दुनिया ऐसी हालत में लाई जायेगी कि बहुत बूढ़ी औरत, बदसूरत कैरी आंखें, दांत आगे को निकले हुए, लोगों के सामने लाकर खड़ी कर दी जायेगी और उनसे पूछा जायेगा कि इसको पहचानते हो? वे कहेंगे खुदा की पनाह यह क्या बला है? उन से कहा जायेगा यह वही दुनिया है जिसकी बदौलत एक ने दूसरे को क़त्ल किया, आपस में क़ता-ए-रहमी की, इसकी वजह से तुम आपस में एक दूसरे से हसद रखते थे, बुग्ज़ रखते थे और इसके धोखे में पड़े रहे। इसके बाद उस बुढ़िया को जहन्नम में फेंक दिया जायेगा। वह चिल्लायेगी कि मेरे साथ इनको भी लाओ, मेरे पीछे लगने वालों को भी तो मेरे साथ करो। हक़ तआला शानुहू का इर्शाद होगा कि इसके पीछे चलने वालों को भी इसके साथ करो।

हक़ीक़त में आदमी के ग़ौर करने की बात है कि उसके तीन ज़माने हैं, एक आलम की इब्तिदा से उसकी पैदाईश तक का ज़माना, दूसरा आदमी के मरने के बाद से हमेशा का ज़माना, इन दोनों के दर्मियान में तीसरा ज़माना यह है जो उसकी पैदाइश से लेकर उसकी मौत तक का वक़्त है। इस मुद्दत को अगर इब्तिदा और इंतिहा दोनों के मजमूए के साथ मुक़ाबला किया जाए तो मालूम हो कि कितना क़लील वक़्त है। इसीलिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि मुझे दुनिया से क्या लेना है, मेरी मिसाल तो उस सवार की सी है जो सख़्त गर्मी में सफ़र कर रहा हो, गर्मी की शिद्दत में कोई साएदार दरख़्त नज़र पड़ जाये तो उसके साए में थोड़ी देर आराम करने के लिए

दोपहर में ठहर जये, फिर उस दरख़्त को वहीं छोड़ कर आगे चला जाए। और वाक़ई बात यह है कि जो शख़्स दुनिया को इस निगाह से देखे जो हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया तो कभी भी इसकी तरफ़ न झुके और ज़रा भी इसकी परवाह न करे कि यह थोड़ा सा वक़्त राहत और खुशी में गुज़र गया या रंज व तकलीफ़ में।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक सहाबी (रज़ि॰) को देखा कि चूने से मकान की तामीर कर रहे हैं, हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि मौत इससे ज़्यादा क़रीब है। एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद आया है कि दुनियादार की मिसाल उस शख़्स की सी है जो पानी पर चल रहा हो। क्या कोई शख़्स इसकी ताक़त रखता है कि पानी में चले और उसके पांव न भीगें। हुज़ूर सल्ल॰ के इस इर्शाद से तुम्हें उन लोगों की जहालत का अंदाज़ा हो गया होगा जो यह समझते हैं कि हमारे बदन तो दुनियावी लज़्ज़तों से मुन्तफ़ा हो रहे हैं, लेकिन हमारे दिल दुनिया से पाक हैं और हमारे क़लबी ताल्लुक़ात दुनिया से टूटे हुए हैं। यह तख़य्युल शैतान का उन लोगों के साथ मक्र है, बल्कि उन लोगों के पास से अगर दुनिया को छीन लिया जाए तो उसके फ़िराक़ में एकदम बेचैन हो जायें। पस जिस तरह पानी में चलने से पांव लामुहाला भीगते हैं उसी तरह दुनिया के साथ ताल्लुक़ और इख़्तिलात दिल में ज़ुल्मत ज़रूर पैदा करता है।

हज़रत ईसा अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम का इर्शाद है कि एक हक़ीक़ी बात तुम से कहता हूँ जैसे बीमार आदमी को तक्लीफ़ की शिद्दत की वजह से खाने में लज़्ज़त नहीं आती, उसी तरह दुनियादार को इबादत में लज़्ज़त नहीं आती और जिस तरह जानवर पर अगर सवारी करना छोड़ दिया जाये तो इससे उसका मिज़ाज सख़्त हो जाता है और सवारी की आदत उसको नहीं रहती। इसी तरह अगर मौत के ज़िक्र और इबादत की मशक़्क़त के साथ दिलों को नर्म न किया जाए तो वे सख़्त हो जाते हैं, उनमें क़सावत पैदा हो जाती है और एक हक़ बात कहता हूँ कि मश्कीज़ा जब तक फटे नहीं वह शहद (पानी वग़ैरह) का बर्तन बनता है, लेकिन जब वह फट जाता है तो फिर शहद उसमें नहीं रखा जाता, इसी तरह दिल को जब तक शहवतों से फाड़ा न जाए या तमअ़ से उसको ख़राब न किया जाए या नेमतों से उसको सख़्त न किया जाए तो वह हिक्मत का बर्तन बनता है। इसके अलावा यह बात भी क़ाबिले लिहाज़ है कि दुनिया की शहवतें इस वक़्त बड़ी लज़ीज़ मालूम होती हैं लेकिन मुन्तहा के एतिबार से मौत के वक़्त उतनी ही मकरूह और नागवार होंगी। उलमा ने लिखा

है कि लज़्ज़ात से दुनिया की ज़िन्दगी में जितना ज़्यादा शग़फ़ और मुहब्बत होगी, मौत के वक़्त उतनी ही ज़्यादा कराहत इनसे होगी। इसकी मिसाल खाने के साथ दी जाती है कि जो खाना जितना ज़्यादा लज़ीज़ और ज़्यादा चिकनाई और घी वाला होता है, उसका पाख़ाना उतना ही ज़्यादा गंदा और बदबूदार होता है और जितना ज़्यादा सादा खाना होता है उतनी ही उसके पाख़ाने में बदबू कम होती है।

इस सबके बाद यह बात ज़रूर क़ाबिले लिहाज़ है कि दुनिया क्या चीज़ है, जिसकी इतनी मज़म्मतें क़ुरआन पाक और अहादीस वग़ैरह में आई हैं, उसको ग़ौर से समझ लेना चाहिए कि आदमी की मौत से पहले (यानी ज़िन्दगी में) जो कुछ अहवाल पेश आते हैं जो उमूर उसको लाहिक़ होते हैं, वे सब दुनिया कहलाते हैं, और मौत के बाद जो कुछ होता है वह सब आख़िरत कहलाता है मौत से पहले उमूर तीन क़िस्म के होते हैं :-

एक वे चीज़ें हैं जो आदमी के साथ उस आलम में चली जाती हैं, वे इल्मे दीन और नेक अमल हैं जो ख़ालिस हक़ तआला शानुहू के वास्ते किया गया हो। ये दोनों चीज़ें ख़ालिस आख़िरत और दीन है, दुनिया नहीं है, अगरचे आदमी को इनमें लज़्ज़त आती हो और जिन लोगों को इनमें लज़्ज़त आ जाती है वे इनकी वजह से खाना पीना सोना शादी वग़ैरह तक छोड़ देते हैं, लेकिन इस सबके बावजूद ये दोनों चीज़ें आख़िरत ही की चीज़ें हैं। दूसरी क़िस्म इनके बिलमुक़ाबिल गुनाहों की लज़्ज़तें और जायज़ चीज़ों की वे मिक़्दारें जो महज़ फ़ुज़ूल और ज़ायद हैं जैसा कि सोने चांदी के ढेर और फ़ाख़िरा लिबास, ख़ुशनुमा जानवरों का शौक़, ऊँचे ऊँचे महल, लज़ीज़ लज़ीज़ खाने, यह सब दुनिया है, जिनकी मज़म्मत पहले गुज़री है, तीसरी क़िस्म इन दोनों के दर्मियानी वे ज़रूरी चीज़ें हैं जो आख़िरत के कामों के लिए मुईन और मददगार हों जैसा कि बक़द्रे ज़रूरत खाना, सोना और ज़रूरत के मुवाफ़िक़ मामूली लिबास गर्मी का सर्दी का और हर वह चीज़ जिसकी आदमी को अपनी सेहत और बक़ा के लिए ज़रूरत है और इनकी वजह से पहली क़िस्म में इआनत हासिल होती है। ये चीज़ें भी दुनिया नहीं हैं, यह आख़िरत ही है, दीन ही है, बशर्ते कि वाक़ई ज़रूरत के दर्जे में हो, इनसे मक़्सद दीनी उमूर में तक़्वियत हो और अगर इनका मक़्सद महज़ हिफ़्ज़े नफ़्स और दिल की ख़्वाहिशात का पूरा करना होगा तो यही, चीज़ें दुनिया हो जायेंगी। *(एह्या)*

मैं ने अपने वालिद साहब नव्वरल्लाहु मरक़दहू से एक किस्सा अक्सर सुना, वह फ़रमाते थे कि एक शख़्स को पानीपत एक ज़रूरत से जाना था। रास्ते में जमुना पड़ती थी जिसमें इत्तिफ़ाक़ से तुग़्यानी (पानी के चढ़ने) की सूरत थी कि कश्ती भी उस वक़्त न चल सकती थी। यह शख़्स बहुत परेशान था। लोगों ने उस से कहा कि फ़लां जंगल में एक बुज़ुर्ग रहते हैं, उनसे जाकर अपनी ज़रूरत का इज़्हार करो, अगर वह कोई सूरत तज्वीज़ कर दें तो शायद काम चल जाये वैसे कोई सूरत नहीं है, लेकिन वह बुज़ुर्ग अव्वल अव्वल बहुत ख़फ़ा होंगे, इंकार करेंगे, उससे मायूस न होना चाहिए। चुनांचे यह शख़्स वहां गया, उस जंगल में एक झोंपड़ी पड़ी हुई थी, उसी में उनके अहल व अयाल भी रहते थे। उस शख़्स ने बहुत रोकर अपनी ज़रूरत का इज़्हार किया कि मुक़दमे की कल को तारीख़ है, जाने की कोई सूरत नहीं। अव्वल तो उन्होंने हस्बे आदत ख़ूब डांटा कि, मैं क्या कर सकता हूँ, मेरे क़ब्ज़े में क्या है? इसके बाद जब उसने बहुत ज़्यादा आजिज़ी की तो उन्होंने फ़रमाया कि जमुना से जाकर कह दो कि ऐसे शख़्स ने मुझे भेजा है जिसने उम्र भर न कभी कुछ खाया, न बीवी से सोहबत की। यह शख़्स वापस हुआ और उनके कहने के मुवाफ़िक़ अमल किया, जमुना का पानी एकदम रूक गया और वह शख़्स पार हो गया। जमुना फिर हस्बे मामूल चलने लगी। लेकिन उस शख़्स के वापस होने के बाद उन बुज़ुर्ग की बीवी ने रोना शुरू कर दिया कि तूने मुझे ज़लील और रूसवा किया, बग़ैर खाए तू खुद फूल कर हाथी बन गया, इसका तुझे इख़्तियार है, अपने मुताल्लिक़ जो चाहे झूठ बोल दे लेकिन यह बात कि तू कभी बीवी के पास नहीं गया, इस बात ने मुझे रूसवा कर दिया, इसका मतलब तो यह हुआ कि यह औलाद जो फिर रही है, यह सब हराम की औलाद हुई। उन बुज़ुर्ग ने अव्वल तो यह कहा कि तुझसे इसका कोई ताल्लुक़ नहीं। जब मैं औलाद को अपनी औलाद बताता हूँ फिर क्या एतिराज़ है। मगर वह बेतहाशा रोती रही कि तूने मुझे ज़िना करने वाली बना दिया। इस पर उन बुज़ुर्ग ने कहा कि ग़ौर से सुन। मैं ने जब से होश संभाला है, कभी अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स के लिए कोई चीज़ नहीं खाई, हमेशा जो खाया महज़ इस इरादे और नीयत से खाया कि उससे अल्लाह की इताअत के लिए बदन को क़ुव्वत पहुँचे और जब भी तेरे पास गया हमेशा तेरा हक़ अदा करने का इरादा रहा, कभी अपनी ख़्वाहिश के तक़ाज़े से सोहबत नहीं की। क़िस्सा तो ख़त्म हुआ। अब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक पाक

इर्शाद में ग़ौर करने से इस मज़्मून की ताईद होती है।

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि आदमी के अंदर तीन सौ साठ जोड़ हैं, उसके ज़िम्मे ज़रूरी है कि हर जोड़ की तरफ़ से (उसकी सलामती के शुक्राने में) रोज़ाना एक सदक़ा करे। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, कि या रसूलल्लाह सल्ल०! इतने सदक़ात (यानी तीन सौ साठ) रोज़ाना अदा करने की किसको ताक़त है? हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि मस्जिद में थूक वग़ैरह पड़ा हुआ हो, उस पर मिट्टी डाल देना सदक़ा (का सवाब रखता) है। रास्ते में से किसी तक्लीफ़ देने वाली चीज़ को हटा देना भी सदक़ा है और चाश्त की नमाज़ इन सब सदक़ों के बराबर हो सकती है। *(मिश्कात)*

चूंकि नमाज़ में बदन का हर जोड़ इबादत में मशग़ूल रहता है इसलिए हर जोड़ की तरफ़ से गोया सदक़ा हो गया।

दूसरी हदीस में इन चीज़ों की और भी मिसालें ज़िक्र फ़रमायी हैं जिसमें इर्शाद है कि किसी को सलाम करना भी सदक़ा है। अच्छे काम का हुक्म करना, बुरे काम से मना करना भी सदक़ा है और बीवी से सोहबत करना भी सदक़ा है और इन सबके क़ायम मुक़ाम दो रक्अत चाश्त की नमाज़ वह सारे जोड़ों की तरफ़ से सदक़ा हो जाता है। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्ल०! एक शख़्स अपनी शहवत पूरी करता है, यह भी सदक़ा हो जाएगा? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अगर वह उसको ना-जायज़ जगह पूरी करता तो क्या गुनाह न होता? *(अबू दाऊद)*

यानी जब हरामकारी गुनाह है तो उस से बचने की नीयत से बीवी से सोहबत यक़ीनी सवाब की चीज़ है। इसी तरह खाना, पीना, सोना पहनना सब चीज़ें इबादतें हैं बशर्ते की वाक़ई अल्लाह तआला की इताअत के इरादे से हों।

इमाम ग़ज़ाली रह० एक जगह तहरीर फ़रमाते हैं कि दुनिया फ़ी नफ़्सिही मम्नूअ् और ना-जायज़ नहीं है बल्कि इस वजह से मम्नूअ् है कि वह हक़ तआला शानुहू तक पहुँचने में मानेअ् बनती है। इसी तरह फ़क्र फ़ी नफ़्सिही मतलूब नहीं है बल्कि वह इसलिए मतलूब है कि उसमें हक़ तआला शानुहू से हटाने वाली कोई चीज़ नहीं (बल्कि वह हक़ तआला शानुहू तक पहुँचाने में मुईन है) लेकिन बहुत से ग़नी ऐसे भी हैं कि ग़िना उन को हक़ तआला शानुहू तक पहुँचने में मानेअ् नहीं हुआ, जैसा कि हज़रत सुलैमान अलैहिस्सलाम, हज़रत

उस्मान रज़ि०, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० वग़ैरह हज़रात, और बाज़ फ़क़ीर ऐसे होते हैं कि उनको फ़क्र भी अल्लाह तआला शानुहू तक पहुँचने से मानेअ् बन जाता है कि नादारी के साथ माल की मुहब्बत उसको रास्ते से हटा देती है। लिहाज़ा असल मम्नूअ् और ना-जायज़ माल की मुहब्बत है चाहे उसके विसाल से हो जैसा कि ग़िना, या फ़िराक़ से हो जैसा कि दुनियादार फ़क़ीर।

दुनिया हक़ीक़त में अल्लाह तआला शानुहू से ग़ाफ़िल लोगों की माशूक़ा है जो इस का आशिक़ यानी दुनियादार फ़क़ीर इस से महरूम है, वह इसकी तलब में मर रहा है और जिस आशिक़ को इस का विसाल हासिल है जैसा कि ग़नी, वह इसकी हिफ़ाज़त और इससे लज़्ज़तें हासिल करने में अल्लाह तआला शानुहू से ग़ाफ़िल है लेकिन अक्सर क़ायदा यह है कि जो इस से महरूम है वह इसके फ़ित्नों से बहुत ज़्यादा महफ़ूज़ है और जो इसमें फंसा हुआ है, वह फ़ित्नों में मुब्तला है। इसी वजह से सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन का इर्शाद है कि हम नादारी के फ़ित्ने (इम्तिहान) में मुब्तला किए गये तो हम ने सब्र किया (यानी कामयाब रहे) फिर हम सरवत और दौलत के फ़ितने (और इम्तिहान) में मुब्तला हुए तो सब्र न कर सके (यानी इस हाल में भी उस माल से बिल्कुल अलाहिदा रहते, यह न हो सका) और अक्सर लोगों का यही हाल है कि माल के होने की सूरत में उसकी मज़र्रतों से कोई बरसहा बरस में ही ऐसा निकलता है जो इस से महफ़ूज़ रह सके। इसी वजह से कुरआन पाक और अहादीस में कसरत से इस से बचने की तर्ग़ीब और इसमें फंस जाने की मज़र्रतों पर तंबीह की है। इसलिए कि इस से बचना तो हर शख़्स के लिए मुफ़ीद ही है, इसी वजह से उलमा का इर्शाद है कि (हाथ से रूपया पैसा वग़ैरह) माल का उलटना पलटना भी ईमान की हलावत को चूस लेता है। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि हर उम्मत के लिए कोई बछड़ा (गऊ माता वग़ैरह) है जिसकी वे परस्तिश करते हैं, मेरी उम्मत का बछड़ा रूपया और अशरफ़ी है (कि उसके साथ भी ऐसा ही बर्ताव करते हैं जैसा कि परस्तिश का होता है) और हज़रत मूसा अलैहि० की क़ौम का बछड़ा भी तो सोने चांदी का ज़ेवर ही था। *(एहया)*

और यह बात तमाम अंबिया-ए-किराम अलैहि० और औलिया-ए-अिज़ाम रह० ही के लिए होती है कि उनकी निगाह में सोना चांदी पानी पत्थर एक ही दरजा रखते हैं। फिर इसके बाद मुजाहदात की कसरत इन हज़रात के लिए और भी ज़्यादा इस चीज़ को पूरा कर देती है। इसी वजह से जब दुनिया अपनी ज़ेब

व ज़ीनत के साथ हुज़ूर सल्ल॰ की बारगाह में हाज़िर हुई तो हुज़ूर सल्ल॰ ने उस से फ़रमा दिया कि मुझसे दूर ही रह।

हज़रत अली रज़ि॰ का इर्शाद है कि ऐ ज़र्द व सफ़ेद (सोने चांदी) मेरे अलावा किसी और को धोखे में डाल (मैं तेरे धोखे में नहीं आऊँगा) और यही असल ग़िना है कि दिल को उसके साथ ताल्लुक़ न रहे इसी वजह से हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि ग़िना माल की कसरत से नहीं होता बल्कि असल ग़िना दिल का ग़नी होना है और यह बात हर शख़्स को नसीब होना मुश्किल है, इसलिए असल तरीक़ा इस से दूर ही रहना है, इस लिए कि माल पर क़ुदरत और क़ब्ज़े की सूरत में चाहे सदक़ा ख़ैरात भी करता हो, लेकिन दिल में उसके साथ उन्स पैदा हो ही जाता है और यही मुहलिक चीज़ है कि जिस दरजे में उस से उन्स होगा उतना ही हक़ तआला शानुहू से बोअ्द (दूरी) होगा और वहशत होगी और जब तंगदस्ती की वजह से उससे उन्स कम होगा तो मुसलमान होने की सूरत में लामुहाला हक़ तआला शानुहू के साथ वाबस्ता होगा, इसलिए कि दिल फ़ारिग़ नहीं रहता, किसी न किसी से उसका लगाव ज़रूर होता है और जब हक़ तआला के ग़ैर से मुन्क़तअ् हो जायेगा तो अल्लाह तआला शानुहू के साथ ही लगेगा।

मालदार आदमी को अक्सर यह धोखा लगता है कि वह अपने आप को यह समझने लगता है कि मुझे माल से मुहब्बत नहीं है लेकिन यह बड़ी लग़्ज़िश है और महज़ धोखा है, दर हक़ीक़त उसके दिल में मुहब्बत मर्कूज़ होती है जो उसको महसूस नहीं होती और इसका एहसास उस वक़्त होता है जब वह माल ज़ाया हो जाए या चोरी हो जाये और जो शख़्स इसका तजुर्बा करना चाहे, वह अपने माल को तक़्सीम करके तजुर्बा कर ले, अगर दिल को इसके बाद से उसकी तरफ़ इल्तिफ़ात मालूम हो तो मालूम होगा कि मुहब्बत थी, और दिल को इसका ख़्याल भी न आये तो मालूम होगा कि मुहब्बत न थी और जितनी भी दुनिया से मुहब्बत कम होगी उतना ही उस शख़्स की इबादत में सवाब होगा। इसलिए कि इबादत और तस्बीहात में ज़बान की महज़ हरकत असल मक़्सूद नहीं बल्कि इनका मक़्सूद दिल पर असर है और दिल जितना फ़ारिग़ होगा उतना ही उस पर असर क़वी होगा।

ज़हहाक रह॰ कहते हैं कि जो शख़्स बाज़ार जाए और किसी चीज़ को देख कर उसके ख़रीदने की रग़बत हो और नादारी की वजह से उस पर सब्र

करे, वह एक हज़ार अशरफ़ियां अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने से अफ़ज़ल है।

एक शख़्स ने हज़रत बिश्र बिन हारिस रह० से कहा कि मेरे लिए दुआ कीजिए, कुंबा ज़्यादा है जिसकी वजह से ख़र्च में तंगी है उन्होंने फ़रमाया कि जब घर वाले कहें कि आटा नहीं है (और तू उस से परेशान हो) उस वक़्त तू अल्लाह से दुआ कर, तेरी उस वक़्त की दुआ मेरी दुआ से अफ़ज़ल होगी। इसके अलावा माल की कसरत में क़ियामत के दिन के हिसाब का तवील होना तो बहर हाल है, यही वजह है कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० को जन्नत के दाख़िले में देर हुई, जैसा कि हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद पहले गुज़र चुका है।

इसी वजह से हज़रत अबू दर्दा रज़ि० का इर्शाद है कि मुझे यह भी पसंद नहीं कि मेरी कोई दुकान मस्जिद के दरवाज़े पर हो, जिसकी वजह से हर वक़्त की जमाअत मुझे मिलती रहे और ज़िक्र व शुग्ल में मशग़ूल रहूँ और दुकान से पचास अशरफ़ियां रोज़ाना मैं कमाता रहूँ और सदक़ा करता रहूँ। किसी ने पूछा, इसमें क्या बुराई होगी? फ़रमाने लगे कि हिसाब तो लम्बा हो ही जायेगा।

हज़रत सुफ़्यान रह० फ़रमाते हैं कि फ़ुक़रा ने तीन चीज़ें पसंद कीं और मालदारों ने तीन चीज़ें पसंद कीं :-

1. फ़ुक़रा ने तो नफ़्स की राहत।
2. दिल का फ़ारिग़ होना, और
3. हिसाब की तख़्फ़ीफ़ पसंद की और मालदारों ने -

1. नफ़्स की मशक़्क़त,
2. दिल की मशग़ूली और,
3. हिसाब का लम्बा होना पसंद किया। (एह्या)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मशहूर इर्शाद है कि आदमी उसी के साथ (क़ियामत में होगा) जिस से उसको मुहब्बत होगी। सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन को इस्लाम के बाद किसी दूसरी चीज़ की इतनी ख़ुशी नहीं हुई जितनी कि इस हदीस की हुई। इसलिये कि अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ इन हज़रात की मुहब्बत ज़रबुल्-मसल और आफ़ताब से ज़्यादा रौशन थी, फिर उनको ख़ुशी क्यों न होती?

और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ का इर्शाद है कि जिस शख़्स को अल्लाह तआला शानुहू अपनी मुहब्बत का ज़रा सा ज़ायक़ा भी चखा देते हैं, वह दुनिया की तलब से फ़ारिग़ हो जाता है और लोगों से उसको वहशत होने लगती है।

अबू सुलैमान दारानी रह॰ फ़रमाते हैं कि हक़ तआला शानुहू की ऐसी भी मख़्लूक़ है जिनको जन्नत अपनी सारी नेमतों और दायमी राहतों के बावजूद अपनी तरफ़ नहीं खींच सकती, वह सिर्फ़ हक़ सुब्हानहू व तक़द्दुस ही से वाबस्ता है। ऐसे लोगों को दुनिया अपनी तरफ़ क्या खींच सकती है?

हज़रत ईसा अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम एक जमाअत पर गुज़रे, जिनके बदन दुबले थे, चेहरे ज़र्द थे। हज़रत ईसा अलै॰ ने पूछा, तुम्हें यह क्या हो गया? उन्होंने कहा, जहन्नम के ख़ौफ़ ने यह हाल कर दिया। हज़रत ईसा अलैहि॰ ने फ़रमाया कि हक़ तआला शानुहू के (फ़ज़्ल से उसके) ज़िम्मे है कि जिस शख़्स को जहन्नम का ख़ौफ़ हो, उसको जहन्नम से महफ़ूज़ रखे। आगे चले तो चंद आदमी और मिले, उनका हाल उन पहले लोगों से भी ज़्यादा सख़्त था बहुत दुबले चेहरों पर बहुत ज़्यादा परेशानी थी। हज़रत ईसा अलैहि॰ ने उनसे पूछा कि तुम्हें क्या हो गया? उन्होंने अर्ज़ किया जन्नत के शौक़ (व इश्क़) ने यह हाल कर दिया। हज़रत ईसा अलैहि॰ ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला शानुहू के ज़िम्मे है कि तुम जिस चीज़ की उम्मीद उससे लगाए हो, वह तुमको अता करे।

आगे चले तो एक और जमाअत मिली जो उन दूसरों से भी ज़्यादा ज़ईफ़, मनहनी[1] मगर उनके चेहरे नूर से आईने की तरह चमक रहे थे। उनसे भी हज़रत ईसा अलैहि॰ ने यही सवाल किया, उन्होंने अर्ज़ किया हक़ तआला शानुहू के इश्क़ ने यह हाल कर दिया, हज़रत ईसा अलैहि॰ ने फ़रमाया तुम ही लोग असल मुक़र्रब हो, तुम ही मुक़र्रब हो, तुम ही मुक़र्रब हो, तीन मर्तबा फ़रमाया।

यह्या बिन मुआज़ रह॰ कहते हैं कि एक राई के दाने के बराबर अल्लाह तआला शानुहू की मुहब्बत मुझे बग़ैर मुहब्बत की सत्तर बरस की इबादत से ज़्यादा महबूब है। *(एहया)*

---

1. यानी कमज़ोर और हड्डियों का ढांचा।

(۹) عن ابی ہریرۃؓ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال لایزال قلبُ الکبیر شابًا فی اثنین فی حبّ الدنیا وطول الامل. متفق علیہ کذا فی المشکوٰۃ

9. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि बूढ़े आदमी का दिल हमेशा दो चीज़ों में जवान रहता है, एक दुनिया की मुहब्बत, दूसरे आरज़ुओं और उम्मीदों के तवील होने में।

फ़ायदा:- पहली हदीस शरीफ़ के ज़ैल में यह मज़्मून तफ़्सील से गुज़र चुका है कि असल दुनिया जिसकी बुराई क़ुरआन पाक और अहादीस वग़ैरह में बहुत कसरत से आयी है, वह माल की मुहब्बत है। इस हदीस शरीफ़ में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसी सिलसिले में एक ख़ास चीज़ पर तंबीह फ़रमायी है जो तजुर्बे में बहुत सही साबित हुई, कि बुढ़ापे में दुनिया की मुहब्बत और लम्बी लम्बी उम्मीदें बहुत बढ़ जाती हैं और जितना भी मरने का ज़माना बुढ़ापे के लिहाज़ से क़रीब आता जाता है, उतनी ही औलाद की शादियों की उमंगें, अच्छे अच्छे मकानात तामीर करने का वलवला, जायदाद बढ़ाने का जज़्बा वग़ैरह ज़्यादा होते चले जाते हैं। इसलिए ऐसी हालत में आदमी को अपने नफ़्स की ख़ासतौर से निगहदाश्त करने की ज़रूरत है।

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि आदमी बूढ़ा होता रहता है और दो चीज़ें उसमें जवान होती रहती हैं, एक माल की हिर्स और दूसरी ज़्यादा उम्र होने की हिर्स। *(मिश्कात)*

ज़्यादा उम्र होने की हिर्स भी वही उम्मीदों का तवील होना है कि वह मरने के क़रीब होता जा रहा है लेकिन मरने की तैयारी के बजाय दुनिया में हमेशा रहने की तैयारी में मशग़ूल रहता है। एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मिसाल देकर समझाने के तौर पर एक मुरब्बा (चार लकीरों वाली) शक्ल खींची और उसके दर्मियान में एक दूसरी लकीर खींची जो उस मुरब्बा की शक्ल से आगे निकली चली गयी फिर उस मुरब्बा शक्ल के अंदर छोटी छोटी लकीरें बनायीं। जिसकी सूरत उलमा ने मुख़्तलिफ़ लिखी है, मिनजुम्ला उनकी यह सूरत [diagram] वाज़ेह हैं। फिर हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि यह दर्मियानी लकीर तो आदमी है और जो लकीरें (मुरब्बा) उसको चारों तरफ़ से घेर रही है वह उसकी मौत है कि आदमी उस से निकल ही नहीं सकता और जो लकीर बाहर निकल रही है, वे उसकी उम्मीदें हैं कि अपनी ज़िन्दगी से भी

आगे की लगाये बैठा है और ये छोटी छोटी लकीरें जो इसके दोनों तरफ़ हैं, वे उसकी बीमारियां, हवादिस वग़ैरह हैं जो इसकी तरफ़ मुतवज्जह हैं। हर एक छोटी लकीर एक आफ़त है अगर एक से बच जाये तो दूसरी मुसल्लत है और मौत के अंदर तो घिरा हुआ है कि वह तो चारों तरफ़ से उसको घेरे हुए है लेकिन उम्मीद की लकीर मौत से भी आगे निकली हुई है।

एक और हदीस में है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सरे मुबारक के पिछले हिस्से पर अपना दस्ते मुबारक रख कर फ़रमाया कि यह तो आदमी की मौत है जो उसके सर पर हर वक़्त सवार है और दूसरे हाथ को दूर तक फैला कर इर्शाद फ़रमाया कि यह दूर तक इसकी उम्मीदें जा रही हैं।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद है कि इस उम्मत की भलाई की इब्तिदा आख़िरत के यक़ीन और दुनिया से बे-रग़बती के साथ हुई है, और इसके फ़साद की इब्तिदा माल के बुख़्ल और उम्मीदों की लम्बाई से होगी।

(मिश्कात)

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद है कि इस उम्मत के इब्तिदाई हिस्से ने अल्लाह के साथ यक़ीन और दुनिया से बे-रग़बती के साथ निजात पायी और इसके आख़िरी हिस्से की हलाकत बुख़्ल और उम्मीदों की वजह से है। *(तर्ग़ीब)*

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद वारिद हुआ है कि अंक़रीब ऐसा ज़माना आने वाला है कि लोग तुम्हारे (मुसलमानों के) खा जाने के वास्ते एक दूसरे को इस तरह दावत देंगे जैसा कि दस्तरख़्वान पर बैठने वाला दूसरे की तवाज़ो करता है। (कि हर क़ौम दूसरों को इसकी तर्ग़ीब और दावत देगी कि इन मुसलमानों को किसी तरह पहले हलाक कर दो) सहाबा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्ल॰! क्या उस वक़्त हमारी तायदाद बहुत कम होगी? (जिसकी वजह से काफ़िरों के ये हौसले होंगे) हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, नहीं तुम्हारी तायदाद उस ज़माने में बहुत ज़्यादा होगी, लेकिन तुम लोग उस ज़माने में सैलाब के झाग की तरह से (बिल्कुल बेजान) होगे और तुम्हारे दुश्मनों के दिल से तुम्हारा ख़ौफ़ जाता रहेगा और तुम्हारे अपने दिलों में वह्न पैदा हो जायेगी। सहाबा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह, वह्न क्या चीज़ है? हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद

फ़रमाया कि दुनिया की मुहब्बत और मौत से डरना। (मिश्कात)

उम्मे वलीद रज़ि०, हज़रत उमर रज़ि० की साहब ज़ादी फ़रमाती हैं कि एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शाम के वक़्त अंदर से बाहर तशरीफ़ लाए और इर्शाद फ़रमाया, तुम लोगों को शर्म नहीं आती? सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह क्या बात हुई? हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया, इतनी मिक़्दार जमा करते हो, जितना खाते नहीं हो और इतने मकानात बना लेते हो, जिनमें रहते भी नहीं हो, और ऐसी उम्मीदें बांध लेते हो, जिनको पूरी भी नहीं कर सकते, क्या इन बातों से तुम शर्माते नहीं हो? (तर्ग़ीब)

यानी ज़रूरत से ज़ायद मकान बना लेते हो, मकान उतना ही बनाना चाहिए जितने की ज़रूरत हो, इसी तरह ख़ज़ाना जमा करते जाते हो, जो अपनी हाजत से ज़ायद है, वह जमा करने के लिए नहीं वह अल्लाह तआला के रास्ते में ख़र्च करने के लिए है।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मर्तबा मिंबर पर तशरीफ़ रखते थे, और मज्मा सामने हलक़ा बनाये हुए था। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, लोगो! अल्लाह तआला शानुहू से ऐसी शर्म करो जैसा कि उससे शर्म करने का हक़ है, सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्ल० हक़ तआला शानुहू से तो हम हया करते ही हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया जो शख़्स तुम में से हक़ तआला शानुहू से हया करे, उसके लिए ज़रूरी है कि कोई रात उस पर ऐसी न गुज़रे कि उस की मौत उस की आंखों के सामने न हो और उस के लिए ज़रूरी है कि हिफ़ाज़त करे पेट की और उस चीज़ की जिसको पेट ने घेर रखा है, और हिफ़ाज़त करे सर की और उस चीज़ की जिसको सर ने घेर रखा है। और उसके लिए ज़रूरी है कि मौत को याद रखे और अपनी बोसीदगी को (कि मरने के बाद यह बदन सारा का सारा शिकस्ता होकर ख़ाक हो जायेगा) और ज़रूरी है कि दुनिया की ज़ीनत को छोड़ दे। (तर्ग़ीब)

उलमा ने लिखा है कि सर की हिफ़ाज़त का मतलब यह है कि अल्लाह तआला शानुहू के अलावा किसी के सामने न झुके, न इबादत के लिए, न ताज़ीम के लिए, हत्ताकि झुक कर सलाम भी न करे, और जिन चीज़ों को सर ने घेर रखा है, का मतलब यह है कि आंख कान ज़बान ये सब चीज़ें सर के तहत में

दाख़िल हैं, इन सबकी हिफ़ाज़त करे, इसी तरह पेट की हिफ़ाज़त का मतलब यह है कि मुश्तबह माल से हिफ़ाज़त करे और जिस चीज़ को पेट ने घेर रखा है, इस से मुराद वे चीज़ें हैं जो पेट के क़रीब हैं जैसे शर्मगाह, हाथ पांव और दिल, कि इन सब चीज़ों की हिफ़ाज़त करे।

इमाम नववी रह० कहते हैं कि इस हदीस को कसरत से पढ़ना मुस्तहब है।

(मज़ाहिरे हक़)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने एक मर्तबा फ़रमाया लोगो! अल्लाह तआला शानुहू से ऐसी हया करो जैसा कि उसका हक़ है, हमने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्ल० अल्लाह तआला का शुक्र है कि हम लोग हक़ तआला शानुहू से सब के सब हया करते हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया नहीं, यह मामूली हया नहीं, बल्कि हक़ तआला शानुहू से हया का हक़ यह है कि आदमी सर की हिफ़ाज़त करे और उस चीज़ की, जिसको सर ने घेर रखा है, और पेट की हिफ़ाज़त करे और उन चीज़ों की हिफ़ाज़त करे जिन पर पेट हावी हो रहा है। (शर्मगाह वग़ैरह) और ज़रूरी है कि मौत को कसरत से याद रखा करे और शिकस्तगी (मरने के बाद सब टूट फूट कर ख़ाक हो जाने) को याद रखा करे और जो शख़्स आख़िरत का इरादा करता है, वह दुनिया की ज़ीनत को छोड़ देता है। *(तर्ग़ीब)*

चूंकि मौत को कसरत से याद करने को दुनिया से बेरग़बती में और उम्मीदों के इख़्तिसार (कम करने) में बहुत ज़्यादा दख़ल है इसी वजह से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मौत को कसरत से याद करने का हुक्म फ़रमाया है।

एक शख़्स हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्ल० सब से बड़ा ज़ाहिद कौन शख़्स है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया जो मौत को और अपने मर गल कर, पुराना हो जाने को न भूले, और दुनिया की ज़ीनतों को छोड़ दे, और आख़िरत को दुनिया पर तर्जीह दे और आने वाले कल को अपनी ज़िन्दगी यक़ीनी न समझे और अपने आपको मुर्दों में समझता रहे।

(तर्ग़ीब)

कि अंक़रीब मर कर उनमें शामिल हो जाऊँगा।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का

इर्शाद नक़ल करते हैं कि इन लज़्ज़तों को तोड़ने वाली चीज़ यानी मौत को बहुत कसरत से याद किया करो। जो शख़्स तंगी की हालत में इसको याद करता है तो यह उस पर वुसअत और सहूलत का सबब होती है (यह इत्मीनान होता है कि मौत बहरहाल आने वाली है उस से सारी तक्लीफ़ों का ख़ात्मा है) और जो शख़्स फ़राख़दस्ती में उसको याद करता है तो उसके लिए ख़र्चों में तंगी का सबब होता है (कि मौत के फ़िक्र से ज़्यादा ऐश व इशरत को दिल नहीं चाहता)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ भी हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि लज़्ज़तों को तोड़ने वाली चीज़ यानी मौत का तज़्किरा कसरत से रखा करो।

हज़रत अनस रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल॰ तशरीफ़ लाये तो सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ हंस रहे थे, हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि लज़्ज़तों को तोड़ देने वाली चीज़ को कसरत से याद रखा करो, इसको जो शख़्स फ़राख़ी में याद करता है, उस पर यह तंगी करती है और जो तंगी में इसको याद करता है, उस पर फ़राख़ी करती है।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल॰ मस्जिद में तशरीफ़ लाये तो बाज़ लोगों के हंसी की वजह से दांत खिल रहे थे, हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि अगर तुम लज़्ज़तों को तोड़ने वाली चीज़ मौत को कसरत से याद करते तो वह उन चीज़ों में मशग़ूल होने से रोक देती, जिन से हंसी आयी। हर शख़्स की क़ब्र रोज़ाना ऐलान करती है कि मैं बिल्कुल तंहाई का घर हूँ, मैं सबसे अलाहिदा रहने का घर हूँ, मैं कीड़ों का घर हूँ, जब नेक मोमिन दफ़्न होता है तो क़ब्र उस से कहती है कि तेरा आना बड़ा मुबारक है, तेरे आने से बड़ी ख़ुशी हुई, जितने लोग मेरी पुश्त पर चलते थे, उनमें तू मुझे बहुत पसंद था, आज तू मेरी मातहती में आया है तो मैं अपना तर्ज़े अमल तुझे दिखाऊँगी, इसके बाद वह इतनी वसीअ् हो जाती है कि जहां तक मुर्दे की नज़र जाये वहां तक ज़मीन खुल जाती है और एक खिड़की जन्नत में खुल जाती है (जिस से वहां की ख़ुशबुएं, हवायें वग़ैरह आती रहती हैं) और जब कोई बदकार या काफ़िर दफ़्न होता है तो ज़मीन उस से कहती है कि तेरा आना बड़ा ना-मुबारक है, तेरे आने से जी बहुत बुरा हुआ, जितने लोग मेरी पुश्त पर चलते थे, तू उनमें मुझे बहुत ही बुरा लगता था, आज तू मेरी मातहती में आया है तो मैं अपना तर्ज़े अमल तुझे दिखाऊँगी, यह कह कर वह ऐसी मिलती है (यानी उसको भींचती है) कि मुर्दे की हड्डियां पसलियां एक दूसरे में घुस जाती हैं।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक हाथ की उंगलियां दूसरे हाथ में डालकर बताया कि इस तरह हड्डियां पसलियां एक जानिब की दूसरी जानिब में घुस जाती हैं और सत्तर अज़्दहे उसको डसना शुरू कर देते हैं, और वे ऐसे ज़हरीले होते हैं कि अगर उनमें से एक भी ज़मीन के ऊपर फूँक मार दे तो क़ियामत तक ज़मीन पर घास उगना बंद हो जाये। ये सब के सब क़ियामत तक उसको काटते रहेंगे। इसके बाद हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि क़ब्र या तो जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है या दोज़ख़ के गढ़ों में से एक गढ़ा है। हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने हुज़ूर सल्ल॰ से दर्याफ़्त किया कि या रसूलल्लाह सल्ल॰ सब से ज़्यादा समझदार और सब से ज़्यादा मुहतात आदमी कौन है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि जो शख़्स मौत को कसरत से याद रखता हो और मौत के लिए हर वक़्त तैयारी में मशग़ूल रहता हो, यही लोग हैं जो दुनिया की शराफ़त और आख़िरत का इकराम हासिल करने वाले हैं।

(तर्ग़ीब)

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह॰ एक मर्तबा एक जनाज़े के साथ तशरीफ़ ले गये और क़ब्रस्तान में पहुँच कर अलाहिदा एक जगह बैठ कर कुछ सोचने लगे। किसी ने अर्ज़ किया, अमीरूल मोमिनीन, आप इस जनाज़े के वली थे, आप ही अलाहिदा बैठ गये? फ़रमाया, हां, मुझे एक क़ब्र ने आवाज़ दे दी और मुझ से यों कहा कि ऐ उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ तू मुझ से यह नहीं पूछता कि मैं इन आने वालों के साथ क्या क्या करती हूँ? मैं ने कहा तू ज़रूर बता? उसने कहा, इनके कफ़न फाड़ देती हूँ, बदन के टुकड़े टुकड़े कर देती हूँ, ख़ून सारा चूस लेती हूँ, गोश्त खा लेती हूँ, और बातऊँ कि आदमी के जोड़ों के साथ क्या करती हूँ, मोंढ़ों को बांहों से जुदा कर देती हूँ, और सुरीनों से रानों को जुदा कर देती हूँ और रानों को घुटनों से जुदा कर देती हूँ, घुटनों को पिण्डलियों से जुदा कर देती हूँ और पिण्डलियों को पांवों से जुदा कर देती हूँ और यह फ़रमा कर उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रोने लगे और फ़रमाया कि दुनिया का क़ियाम बहुत थोड़ा है और इसका धोखा बहुत ज़्यादा है कि इस में जो अज़ीज़ है वह आख़िरत में ज़लील है, इसमें जो दौलत वाला है, वह आख़िरत में फ़क़ीर है, इसका जवान बहुत जल्द बूढ़ा हो जायेगा, इसका ज़िंदा बहुत जल्द मर जायेगा, इसका तुम्हारी तरफ़ मुतवज्जह होना तुमको धोखे में न डाल दे, हालांकि तुम देख रहे हो कि यह कितनी जल्दी मुंह फेर लेती है और बेवक़ूफ़ वह है जो इसके

धोखे में फंस जाये। कहां गए इसके वे दिलदादा, जिन्होंने बड़े बड़े शहर आबाद किए, बड़ी बड़ी नहरें निकालीं, बड़े बड़े बाग़ लगाये और बहुत थोड़े दिन रह कर सबको छोड़ कर चल दिये, वे अपनी सेहत और तन्दरूस्ती से धोखे में पड़े कि सेहत के बेहतर होने से उनमें निशात पैदा हुआ और इस से गुनाहों में मुब्तला हुए, वे लोग ख़ुदा की क़सम, दुनिया में माल की कसरत की वजह से क़ाबिले रश्क थे, बावजूद कि माल के कमाने में उनको रूकावटें पेश आती थीं, मगर फिर भी खूब कमाते थे, उन पर लोग हसद करते थे, लेकिन वे बेफ़िक्र माल को जमा करते रहते थे और उसके जमा करने में हर क़िस्म की तक्लीफ़ को खुशी से बर्दाश्त करते थे, लेकिन अब देख लो कि मिट्टी ने उनके बदनों का क्या हाल कर दिया और ख़ाक ने उनके बदनों को क्या बना दिया, कीड़ों ने उनके जोड़ों और उनकी हड्डियों का क्या हाल बनाया, वे लोग दुनिया में ऊँची ऊँची मसहरियों पर ऊँचे ऊँचे फ़र्श और नर्म गद्दों पर नौकरों और ख़ादिमों के दर्मियान आराम करते थे, अज़ीज़ व अक़ारिब, रिश्तेदार और पड़ोसी हर वक़्त दिलदारी को तैयार रहते थे। लेकिन अब क्या हो रहा है, आवाज़ देकर पूछो कि क्या गुज़र रही है, ग़रीब, अमीर सब एक मैदान में पड़े हुए हैं, उनके मालदार से पूछ कि उसके माल ने क्या काम दिया, उन के फ़क़ीर से पूछ कि उसके फ़क्र ने क्या नुक़्सान दिया, उनकी ज़बान का हाल पूछ जो बहुत चहकती थी, उनकी आखों को देख जो हर तरफ़ देखती थीं, उनकी नर्म नर्म खालों का हाल दर्याफ़्त कर, उनके खूबसूरत और दिलरूबा चेहरों का हाल पूछ, क्या हुआ उनके नाज़ुक बदन को, मालूम कर कहां गया और कीड़ों ने उन सब का क्या हश्र बनाया। उनके रंग काले कर दिये, उनका गोश्त खा लिया, उनके मुंह पर मिट्टी डाल दी, अज़ा को अलग अलग कर दिया, जोड़ों को तोड़ दिया, आह कहां हैं उनके वे खुद्दाम जो हर वक़्त "हाज़िर हूँ जी" कहते थे, कहां हैं उनके वे ख़ेमे और कमरे जिनमें आराम करते थे, कहां हैं उनके वे माल और ख़ज़ाने जिनको जोड़ जोड़ कर रखते थे।

इन हशम व खदम ने उसको क़ब्र में खाने के लिए कोई तोशा भी न दिया और उसकी क़ब्र में कोई बिस्तरा भी न बिछा दिया, कोई तकिया भी न रख दिया, ज़मीन ही पर डाल दिया, कोई दरख़्त, फूल, फुलवारी भी न लगा दी, आह अब वे बिल्कुल अकेले पड़े हैं, अंधेरे में पड़े हैं, उनके लिए अब रात दिन बराबर हैं। दोस्तों से मिल नहीं सकते, किसी को अपने पास बुला नहीं सकते,

कितने नाज़ुक बदन मर्द, नाज़ुक बदन औरतें, आज उनके बदन बोसीदा हैं, उनके आज़ा एक दूसरे से जुदा हैं, आंख निकल कर मुंह पर गिर गईं, गर्दन जुदा हुई पड़ी है, मुंह में पानी, पीप, वग़ैरह भरा हुआ है और सारे बदन में कीड़े चल रहे हैं। वे इस हाल में पड़े हैं और उनकी जोरूओं ने दूसरे निकाह कर लिए। वे मज़े उड़ा रही हैं, बेटों ने मकानों पर क़ब्ज़ा कर लिया, वारिसों ने माल तक़्सीम कर लिया, मगर बाज़ ख़ुशनसीब ऐसे भी हैं जो अपनी क़ब्रों में भी लज़्ज़तें उड़ा रहे हैं, तर व ताज़ा चेहरों के साथ राहत व आराम में हैं, (लेकिन ये वही लोग हैं जिन्होंने) इस धोखे के घर में उस घर को याद रखा, इसकी उम्मीदों से उसकी उम्मीदों को मुक़द्दम किया और अपने लिए तोशा जमा कर दिया और अपने पहुँचने से पहले अपने जाने का सामान कर दिया, ऐ वह शख़्स जो कल को क़ब्र में ज़रूर जायेगा, तुझे इस दुनिया के साथ आख़िर किस चीज़ ने धोखे में डाल रखा है? क्या तुझे यह उम्मीद है कि यह कमबख़्त दुनिया तेरे साथ रहेगी, क्या तुझे यह उम्मीद है कि तू इस कूच के घर में हमेशा रहेगा, तेरे ये वसीअ् मकान, तेरे बाग़ों के पके हुए फल, तेरे नर्म बिस्तरे, तेरे गर्मी सर्दी के जोड़े, ये सब के सब एकदम रखे रह जायेंगे। मलकुल-मौत आकर मुसल्लत हो जायेगा, कोई चीज़ उसको न हटा सकेगी, पसीनों पर पीसने आने लगेंगे, प्यास की शिद्दत बढ़ जायेगी और जांकनी की सख़्ती में करवटें बदलता रह जायेगा। अफ़सोस! सद अफ़सोस! ऐ वह शख़्स जो आज मरते वक़्त अपने भाई की आंख बंद कर रहा है, अपने बेटे की आंखें बंद कर रहा है, अपने बाप की आंख बंद कर रहा है, उन में से किसी को नहला रहा है किसी को कफ़्न दे रहा है, किसी के जनाज़े के साथ जा रहा है, किसी को क़ब्र के गढ़े में डाल रहा है, कल को तुझे भी यह सब कुछ पेश आना है।

और भी इस क़िस्म की बातें फ़रमाईं, फिर दो शेअ्र पढ़े जिनका तर्जुमा यह है कि आदमी ऐसी चीज़ के साथ ख़ुश होता है जो अंक़रीब फ़ना होने वाली है, और लम्बी लम्बी आरज़ुओं और दुनिया की उम्मीदों में मशग़ूल रहता है। अरे बेवक़ूफ़, ख़्वाब की लज़्ज़तों से धोखे में नहीं पड़ा करते, तेरा दिन सारा ग़फ़लत में गुज़रता है और तेरी रात सोने में गुज़रती है और मौत तेरे ऊपर सवार है। आज तू वे काम कर रहा है कि कल को उन पर रंज करेगा। दुनिया में चौपाए इसी तरह ज़िन्दगी गुज़ारते हैं, जिस तरह तू गुज़ार रहा है। कहते हैं कि इस वाक़िए के बाद एक हफ़्ता भी न गुज़रा था कि हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० का

विसाल हो गया। रज़ियल्लाहु अन्हु व अर्ज़ाहु। (मुसामरात)

हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि चार चीज़ें बदबख़्ती की अलामत हैं:-

1. आंख का ख़ुश्क होना (कि अपने गुनाह और आख़िरत की किसी बात पर रोना ही न आये।),

2. दिल का सख़्त होना,

3. उम्मीदों का तवील होना और

4. दुनिया की हिर्स।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हज़रत उसामा रज़ि॰ ने एक बांदी क़र्ज़ ख़रीदी और एक महीने का वायदा क़ीमत अदा करने का कर लिया। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब इसका इल्म हुआ तो इर्शाद फ़रमाया कि किस क़दर ताज्जुब की बात है कि उसामा (रज़ि॰) ने एक महीने के वायदे पर क़र्ज़ ख़रीदा, उसामा रज़ि॰ को भी (अपनी ज़िन्दगी की), बड़ी लम्बी उम्मीद है, (गोया उस को यह यक़ीन हो गया कि एक महीना तो वह ज़िंदा ही रहेगा) उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, मुझे आंख के पलक झपकने तक की भी अपनी ज़िन्दगी का यक़ीन नहीं होता और पानी पीने का प्याला जब मैं उठाता हूँ तो उसके रखने तक भी मुझे अपनी ज़िन्दगी का यक़ीन नहीं होता, और जब कोई लुक़्मा खाता हूँ तो उसके निगलने का भी मौत से पहले पहले यक़ीन नहीं होता। क़सम है उस पाक ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, जिन चीज़ों का तुम से वायदा किया गया है (मौत, क़ियामत, हिसाब वग़ैरह) सब चीज़ें ज़रूर आने वाली है, और तुम हक़ तआला शानुहू को आजिज़ नहीं कर सकते (कि वह किसी काम का इरादा फ़रमाये और कोई उसमें रूकावट डाल दे।)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ इर्शाद फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल॰ ने मेरा मोंढ़ा पकड़ कर इर्शाद फ़रमाया कि दुनिया में इस तरह ज़िन्दगी गुज़ार दो जैसा कि कोई मुसाफ़िर, कोई रास्ता चलने वाला है और हर वक़्त अपने आपको क़ब्रस्तान वालों में समझा करो। इसके बाद हुज़ूर सल्ल॰ ने मुझसे फ़रमाया, ऐ इब्ने उमर! (और बाज़ रिवायात में है कि यह मक़ूला इब्ने उमर रज़ि॰ का है।) जब सुबह हो जाये तो शाम तक की ज़िन्दगी का यक़ीन न करो और जब शाम हो जाये तो सुबह तक कि ज़िन्दगी का यक़ीन न करो, अपनी

सेहत की हालत में बीमारी के ज़माने के लिए नेक अमल कर रखो (कि बीमारी के ज़माने में जो कोताही हो, उसका जब्र पहले से हो जाये या सेहत में जिन आमाल का आदी होगा, बीमारी की वजह से उनके न हो सकने पर भी उनका सवाब मिलता रहेगा) और अपनी मौत के लिए ज़िन्दगी ही में तैयारी कर लो, कल को मालूम नहीं तुम्हारा क्या अंजाम हो जाये। (यानी किन लोगों में शुमार हो जाये, नेक लोगों में या बद लोगों में, फ़मिन्हुम् शक़िय्युवं-व सईद)।

हज़रत मुआज़ रज़ि॰ ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्ल॰ मुझे कुछ नसीहत फ़रमा दीजिए। हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह जल्ल शानुहू की इबादत इस तरह किया करो कि गोया तुम उसको देख रहे हो वह तुम्हारे सामने है, और अपने आपको हर वक़्त मुर्दों की फ़ह्‌रिस्त में शुमार किया करो। और हर पत्थर और दरख़्त के क़रीब अल्लाह तआला शानुहू का ज़िक्र किया करो (ताकि क़ियामत में इसकी गवाही देने वाले बहुत कसरत से हो जायें) और जब कोई बुरी हरकत हो जाए तो उसकी तलाफ़ी के लिए कोई नेक अमल करो। अगर बुराई छुप कर की है तो उसकी तलाफ़ी में नेक अमल भी छुप कर करो और बुराई एलानिया हुई है तो उसकी तौबा और तलाफ़ी भी एलानिया की जाये। हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि क़ियामत तो क़रीब आती जा रही है और लोग दुनिया की हिर्स में और हक़ तआला शानुहू से बईद (दूर) होने में बढ़ते चले जा रहे हैं।

(तर्ग़ीब)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मर्तबा बाहर तश्रीफ़ लाये और इर्शाद फ़रमाया कि कोई शख़्स तुम में से यह चाहता है कि हक़ तआला शानुहू उसको बग़ैर सीखे इल्म अता फ़रमाये, और बग़ैर किसी के रास्ता बताये, हिदायत अता फ़रमाये। कोई तुम में से ऐसा है जो यह चाहता हो कि हक़ तआला शानुहू उसके अंधेपन को दूर फ़रमा कर उसके (दिल की) निगाह को खोल दें अगर ऐसा चाहते हो तो समझ लो कि जो शख़्स दुनिया से बेरग़बती करे और अपनी उम्मीदों को मुख़्तसर रखे, हक़ तआला शानुहू उसको बग़ैर सीखे इल्म अता फ़रमाते हैं। *(दुर्रे मंसूर)*

पहले भी यह रिवायत मुफ़स्सल गुज़र चुकी है। हज़रत जाबिर रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि मुझे अपनी उम्मत पर सबसे ज़्यादा ख़ौफ़, ख़्वाहिशात की कसरत और उम्मीदों के

बढ़ जाने का है। ख़्वाहिशात हक़ से हटा देती हैं और उम्मीदों का तवील होना आख़िरत को भुला देता है, यह दुनिया भी चल रही है और हर दिन दूर होती जा रही है और आख़िरत भी चल रही है और हर दिन क़रीब होती जा रही है, (यानी हर वक़्त, हर दिन हर आन ज़िन्दगी कम होती जा रही है, और मौत क़रीब आती जा रही है।)

"ग़ाफ़िल तुझे घड़ियाल ये देता है मुनादी।
गर्दूं ने घड़ी उम्र की एक और घटा दी।।

अगर घंटे की आवाज़ को ग़ौर से सुना जाये तो वाक़ई 'घटा दी, घटा दी' का नारा पैदा होता है। इसके बाद हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि दुनिया और आख़िरत हर एक के इस दुनिया में कुछ सपूत हैं अगर तुम से हो सके तो इसकी कोशिश करो कि दुनिया के सपूत न बनो (आख़िरत के सपूत बनो) आज अमल का (और खेती बोने का) दिन है, हिसाब आज नहीं, कल को तुम आख़िरत के घर में होगे जहां अमल नहीं। *(मिश्कात)*

(बल्कि खेती के काटने का और बदले का दिन है।)

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि, तीन आदमी ऐसे हैं कि जब मुझे उनका ख़्याल आता है तो इस क़दर ताज्जुब होता है कि मुझे हंसी आने लगती है, एक वह शख़्स जो दुनिया में उम्मीदें लगाये बैठा है और मौत उसकी फ़िक्र में है, दूसरा वह शख़्स जो (अल्लाह तआला शानुहू से) ग़ाफ़िल है और (अल्लाह तआला शानुहू) उससे ग़ाफ़िल नहीं, तीसरे वह शख़्स जो मुंह भर कर (खिलखिला कर) हंसता है और उस को इसकी ख़बर नहीं कि अल्लाह तआला शनुहू उस से खुश है या नाराज़ है (हालांकि यह फ़िक्र ऐसी चीज़ है कि किसी वक़्त भी हंसी न आना चाहिए।) और तीन चीज़ें ऐसी हैं जो मुझे हर वक़्त ग़मगीन रखती हैं, यहां तक कि मैं रोने लगता हूँ, एक दोस्तों का फ़िराक़, यानी हुज़ूर सल्ल॰ और सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ का, दूसरे मौत का फ़िक्र, तीसरे हश्र में हक़ तआला शानुहू के सामने पेश होना है, फिर मालूम नहीं कि मेरे लिए जन्नत का हुक्म हो या दोज़ख़ का।

एक शख़्स कहते हैं कि मैं ने ज़ारह बिन औफ़ा रह॰ को उनके इंतिक़ाल के बाद ख़्वाब में देखा तो मैं ने पूछा कि सबसे बढ़ा हुआ अमल क्या है? उन्होंने फ़रमाया, तवक्कुल और उम्मीदों का मुख़्तसर रखना। हज़रत सुफ़्यान सोरी रह॰

फ़रमाते हैं कि ज़ुहद उम्मीदों के मुख़्तसर करने का नाम है, मोटा खाने और जुब्बा पहनने का नाम नहीं है। हज़रत दाऊद ताई रह० फ़रमाते हैं कि अगर मैं यह उम्मीद रखूं कि मैं एक महीना ज़िंदा रहूँगा तो मैं अपने आप को बड़ा मुज्रिम समझूँ और इसकी किस तरह उम्मीद कर सकता हूँ ऐसी हालत में कि मैं देखता हूँ कि आए दिन लोगों को हवादिस कभी रात में पकड़ लेते हैं कभी दिन में पकड़ लेते हैं।

हज़रत शक़ीक़ बल्ख़ी रह० अपने एक उस्ताद अबू हाशिम रमानी रह० की ख़िदमत में हाज़िर हुए, उनकी चादर के कोने में कुछ बंध रहा था, अबू हाशिम रह० ने पूछा, यह क्या है? अर्ज़ किया कि मेरे एक दोस्त ने तरबूज़ दिये थे, मेरा दिल चाहता है कि आज शाम को आप उनसे इफ़्तार कर लें। अबू हाशिम रह० ने कहा, शक़ीक़ तुम्हें यह उम्मीद है कि तुम रात तक ज़िंदा रहोगे? (मैं तुमको ऐसा नहीं समझता था, अब) मैं तुम से कभी नहीं बोलूँगा। यह कह कर अंदर चले गये और किवाड़ बंद कर लिये। क़अ्क़ाअ बिन हकीम रह० कहते हैं कि मैं तीस बरस से हर वक़्त मौत के लिए तैयार हूँ अगर वह आ जाए तो मुझे ज़रा भी उसकी ताख़ीर की ख़्वाहिश न हो। सुफ़्यान सोरी रज़ि० कहते हैं कि मैं कूफ़ा की मस्जिद में हर वक़्त मौत का इंतिज़ार करता हूँ, अगर वह आ जाए तो मुझे न किसी से कुछ कहना, न सुनना, न मेरा किसी के पास कुछ चाहिए, न किसी का मेरे पास।

अबू मुहम्मद ज़ाहिद रह० कहते हैं कि मैं एक जनाज़े के साथ चला, हज़रत दाऊद ताई रह० भी साथ थे क़ब्रस्तान पहुँच कर वह एक जगह अलाहिदा बैठ गए, मैं भी उनके पास बैठ गया, वह फ़रमाने लगे कि जो शख़्स अल्लाह तआला की वईद से डरता हो, उसके लिए दूर का सफ़र (यानी आख़िरत का) आसान है और जिस शख़्स की उम्मीदें लम्बी होती हैं, उसका अमल सुस्त हो जाता है और जो चीज़ आने वाली है (यानी मौत) वह क़रीब है। भाई एक बात समझ ले कि जो चीज़ भी तुझे तेरे रब से अपनी तरफ़ मशग़ूल कर ले, वह मनहूस है। एक बात सुनो, जितने आदमी दुनिया में हैं, सब ही को क़ब्र में जाना है। उस वक़्त उनको उस चीज़ की नदामत होगी जो यहां छोड़ दी और उस चीज़ की ख़ुशी होगी जो आगे भेज दी और जिस चीज़ पर मरने वाले को नदामत है, उस पर ये रहने वाले (वारिस) लड़ते झगड़ते हैं, मुक़दमे बाज़ी करते हैं।

(एहया)

फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़ंदी रह० इर्शाद फ़रमाते हैं कि जो शख़्स उम्मीदों को मुख़्तसर रखे, हक़ तआला शानुहू चार क़िस्म के इकराम उस पर करते हैं:-

1. अपनी ताअत पर उसको क़ुव्वत अता फ़रमाते हैं और जब उसको अंक़रीब मौत का यक़ीन होता है तो अमल में ख़ूब कोशिश करता है। और नागवार चीज़ों से मुतास्सिर नहीं होता।

2. उसका ग़म कम हो जाता है।

3. रोज़ी की थोड़ी मिक़्दार पर राज़ी हो जाता है।

4. उसके दिल को मुनव्वर कर देते हैं। उलमा ने कहा है कि दिल का नूर चार चीज़ों से पैदा होता है:-

1. ख़ाली पेट से।

2. नेक आदमी के पास रहने से।

3. गुज़रे हुए गुनाहों को याद करने (और उन पर नदामत) से और

4. उम्मीदों के मुख़्तसर करने से और जिस शख़्स की उम्मीदें लंबी लंबी होती हैं उसको हक़ तआला शानुहू चार क़िस्म के अज़ाबों में मुब्तला कर देते हैं:-

1. इबादत में काहिली पैदा हो जाती है।

2. दुनिया का ग़म ज़्यादा सवार हो जाता है।

3. माल के जमा करने और बढ़ाने का फ़िक्र हर वक़्त मुसल्लत रहता है।

4. दिल सख़्त हो जाता है, और उलमा ने लिखा है कि दिल की सख़्ती चार चीज़ों से पैदा होती है :-

1. ज़्यादा शिकमसेरी से।

2. बुरी सोहबतों से।

3. गुनाहों को याद न करने से।

4. उम्मीदों के लंबी होने से, इसलिए ज़रूरी है कि आदमी लंबी लंबी उम्मीदें हरगिज़ न बांधे। हर वक़्त यह फ़िक्र रहना चाहिए कि न मालूम कौन सा सांस ज़िन्दगी का आख़िरी सांस हो, (किस वक़्त दिल की हरकत बंद हो जाये।)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत आइशा रज़ि० से

इर्शाद फ़रमाया कि अगर तू (क़ियामत में) मेरे साथ रहना चाहती है तो दुनिया में ऐसे गुज़ार देना, जैसा कि मुसाफ़िर सवारी पर जाता जाता कहीं ज़रा ठहर जाए, और मालदारों के पास बैठने से एहतिराज़ करना और कपड़े को उस वक़्त तक बेकार करके न छोड़ना जब तक कि उसमें पैवन्द न लग जायें। अबू उस्मान नहदी रह० कहते हैं कि मैं ने हज़रत उमर रज़ि० को मिम्बर पर ख़ुत्बा पढ़ते हुए देखा और उनके कुर्ते में बारह पैवंद लग रहे थे। *(तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)*

(١٠) عَنْ سَهلِ بن سعدٌ قال جاء رجل الى النبى صلى الله عليه وسلم فقال دلنى على عمل اذا عملته احبنى الله واحبنى الناس قال ازهد فى الدنيا يحبك الله وازهد فيما عند الناس يحبك الناس رواه الترمذى وابن ماجه كذافى المشكوٰة

10. एक सहाबी रज़ि० ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्ल० मुझे कोई ऐसा अमल बता दीजिए जिस से अल्लाह जल्ल शानुहू भी मुझ से मुहब्बत फ़रमावें और आदमी भी मुझ से मुहब्बत करने लगें। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि दुनिया से बे रग़बती पैदा कर लो, हक़ तआला शानुहू तुमको महबूब रखेंगे और लोगों के पास जो चीज़ें हैं (माल वग़ैरह) उनसे बे रग़बती पैदा कर लो, वे भी तुम से मुहब्बत करने लगेंगे।

फ़ायदाः- दुनिया से बे रग़बती पर हक़ तआला शानुहू की मुहब्बत, आख़िरत का एज़ाज़ व इकराम वग़ैरह उमूर तो पहली रिवायात में बहुत कसरत से गुज़र ही चुके हैं, दूसरा मज़्मून कि लोगों के अमवाल पर निगाह न रखी जाये, इसी से उनके दिलों में भी मुहब्बत पैदा होती है, बड़े तजुर्बे की बात है। हर शख़्स को हर वक़्त इसका तजुर्बा होता रहता है कि जितने भी आपस में बेहतरीन ताल्लुक़ात हों लेकिन जहां किसी चीज़ के सवाल का ज़िक्र आ जाता है, सारे ही ताल्लुक़ात और अक़ीदतें ख़त्म हो जाती हैं।

हज़रत जिब्रील अलैहि० एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और यह कहा कि ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप जितने दिन भी ज़िंदा रहें मौत बहर हाल एक दिन आने वाली चीज़ है, और जो अमल भी आप करेंगे (भला या बुरा) उसका बदला मिलेगा, और जिस से भी आप (दुनिया में) ताल्लुक़ात पैदा करें, उस से एक दिन जुदा होना पड़ेगा (उसकी मौत से हो या अपनी मौत से हो) यह बात

ज़हनन-शीन कर लें कि आदमी का शर्फ़ (बुज़ुर्गी) तहज्जुद की नमाज़ है और आदमी की इज़्ज़त लोगों से इस्तिग़्ना है। *(तर्ग़ीब)*

यानी आदमी की इज़्ज़त उसी वक़्त तक है जब तक लोगों की चीज़ों पर निगाह न हो, और जहां कहीं दूसरों के माल पर निगाह पड़ी, सारी इज़्ज़त ख़ाक में मिल जाती है।

हज़रत उरवः रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जब तुम में से कोई शख़्स दुनिया की ज़ीनत और उसकी रौनक़ को देखे (और वह अच्छी लगे, तो (उसको चाहिए कि अपने घर जाकर घर वालों को नमाज़ में मशग़ूल कर दे। इस लिए कि हक़ तआला शानुहू ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इर्शाद फ़रमाया है कि "ला तमुद्दन्-न अैनै-क" (ताहा, रूकूअ 8) और हरगिज़ आप अपनी आंख उठा कर भी न देखें उन चीज़ों की तरफ़ जो हम ने इन दुनियादारों को दे रखी हैं, ताकि इन चीज़ों से इनका इम्तिहान लें, यह महज़ दुन्यवी ज़िन्दगी की रौनक़ है और आपके रब का अतिय्या जो आख़िरत में मिलेगा, इस से बदरजहा बेहतर है और हमेशा रहने वाला है और अपने मुताल्लिक़ीन को नमाज़ का हुक्म कीजिए और ख़ुद भी इसके पाबंद रहिए। *(दुर्रे मंसूर)*

दूसरी जगह हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है कि "ला तमुद्दन्-न अैनै-क" *(हिज्र, रूकूअ 6)*

आप आंख उठा कर भी न देखें उस (ज़ेब व ज़ीनत) को जो हम ने मुख़्तलिफ़ क़िस्म के लोगों को दे रखा है, इस आयते शरीफ़ा की तफ़सीर में हज़रत सुफ़्यान बिन उयैनः रह॰ फ़रमाते हैं, कि जिस शख़्स को हक़ तआला शानुहू ने क़ुरआन पाक की दौलत से नवाज़ा हो, फिर वह दुनिया की किसी चीज़ की तरफ़ भी निगाह उठा कर देखें उसने क़ुरआन पाक को बहुत कम समझा। (यानी उसकी क़द्र नहीं की।)

इमाम ग़ज़ाली रह॰ फ़रमाते हैं कि फ़क़्र बहुत महमूद चीज़ है, लेकिन यह ज़रूरी है कि वह शख़्स क़नाअत करने वाला हो, लोगों के पास जो अमवाल हैं, उनमें तमअ् न रखता हो, उनकी तरफ़ ज़रा भी इल्तिफ़ात न करता हो, और न माल के कमाने की उसमें हिर्स हो, और ये सब चीज़ें जब ही हो सकती हैं जब कि आदमी अपने इख़राजात में निहायत कमी करने वाला हो, खाने में, लिबास में, मकान में कम से कम और मजबूरी के दर्जे में किफ़ायत करने वाला हो,

और घटिया से घटिया चीज़ पर क़नाअत करने वाला हो, अगर किसी चीज़ की ज़रूरत महसूस हो तो एक महीने के अंदर अंदर की ज़रूरत का तो ख़्याल हो, उस से आगे की किसी चीज़ की तरफ़ अपने ख़्याल और ध्यान को न लगाये, अगर इस से आगे की सोच में पड़ जायेगा तो क़नाअत की इज़्ज़त से महरूम होकर हिर्स व तमअ् की ज़िल्लत में फंस जायेगा। और उसकी वजह से बुरी आदतें पैदा हो जायेंगी। मकरूह चीज़ें इख़्तियार करना पड़ जायेंगी, इसलिए कि आदमी तब्ई तौर पर हरीस है।

हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि अगर आदमी के लिए दो जंगल सोने के हो जायें, तब भी वह तीसरे की फ़िक्र में लग जायेगा। हज़रत अबू मूसा अश्अरी रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि एक सूरः इतनी बड़ी, जितनी कि सूरः बराअत है, नाज़िल हुई थी, फिर वह मंसूख़ हो गयी, उसमें से यह मज़्मून याद है कि अल्लाह तआला शानुहू इस दीन की मदद ऐसे (फ़ासिक़ और काफ़िर) लोगों से भी कर देते हैं जिनका कोई हिस्सा दीन में न हो, और अगर आदमी के लिए दो जंगल माल के हो जायें तो वह तीसरे की तमन्ना करता है। आदमी का पेट (क़ब्र की) मिट्टी ही भर सकती है। अलबत्ता अगर कोई शख़्स तौबा कर ले तो हक़ तआला शानुहू तौबा को क़ुबूल करते हैं और हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि दो हरीस आदमियों का कभी पेट नहीं भरता, एक वह शख़्स जो इल्म का हरीस हो और (उसको इल्मी चस्का लग गया हो, किसी वक़्त उसका दिल नहीं भरता,) दूसरा वह शख़्स जो माल का हरीस हो, और चूंकि आदमी की जिबिल्लत में यह मुहलिक चीज़ है, इसी बिना पर हक़ तआला शानुहू ने और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़नाअत की बड़ी तारीफ़ फ़रमाई है। हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि मुबारक है वह शख़्स जिसको हक़ तआला शानुहू ने इस्लाम की दौलत से नवाज़ा हो और सिर्फ़ ज़रूरत के बक़द्र उसकी रोज़ी हो और वह उस पर क़ानेअ् हो। हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद यह भी है कि क़ियामत के दिन कोई शख़्स ग़रीब हो या अमीर, ऐसा न होगा जो इसकी तमन्ना न करता हो कि काश दुनिया में उसको सिर्फ़ ज़रूरत के दर्जे की रोज़ी मिलती, इससे ज़्यादा न मिलती। इसी वजह से हुज़ूर सल्ल॰ ने तमअ् से और माल कमाने में ज़्यादा कोशिश करने से मना फ़रमाया है।

हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि लोगो, माल के हासिल करने में अच्छा तरीक़ा इख़्तियार किया करो (बुरे तरीक़ों से न कमाओ) इसलिए कि आदमी को

मुक़द्दर से ज़्यादा तो मिलता नहीं और जो मुक़द्दर है वह बहरहाल मिल कर रहेगा। आदमी उस वक़्त तक मर ही नहीं सकता जब तक उसका जो मुक़द्दर हिस्सा है, वह ज़लील और मजबूर होकर उस तक न पहुँच जाये। हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि तू मुत्तक़ी बन जा, तू सबसे बड़ा इबादत करने वाला हो जायेगा, और (कम से कम मिक़्दार पर) क़नाअत करने वाला बन जा, तू सबसे ज़्यादा शुक्रगुज़ार हो जायेगा, और अपने भाई के लिए भी उस चीज़ को पसंद कर, जिसको अपने लिए पसंद करता है, तू कामिल मोमिन बन जायेगा।

हज़रत अबूअय्यूब रज़ि॰ फ़रमाते हैं, एक शख़्स हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह, सल्ल॰ मुझे मुख़्तसर सी नसीहत कर दीजिए (ताकि मैं उसको मज़बूत पकड़ लूँ) हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया जब नमाज़ पढ़ो तो ऐसी पढ़ो जैसा कि उम्र की आख़िरी नमाज़ यही हो (जब आदमी को यह ख़्याल आ जायेगा कि यह बिल्कुल आख़िरी नमाज़ है तो फिर जिस क़दर ज़्यादा एहतिमाम और ख़ुशूअ् ख़ुज़ूअ से पढ़ेगा वह ज़ाहिर है) और कोई ऐसी बात ज़बान से न निकालो, जिसकी मअ़ज़िरत करना (और माफ़ी चाहना) पड़े, और अपने दिल को पक्के तौर से इस चीज़ से मायूस कर लो जो दूसरे के पास हो (कि उसकी तरफ़ ज़रा सा भी तुम्हें इल्तिफ़ात न हो) हज़रत उमर रज़ि॰ का इर्शाद है कि तमअ् करना फ़क्र (और मुहताजगी) है और ना उम्मीदी ग़िना है। जो शख़्स ऐसी चीज़ों से ना उम्मीद हो जाये जो दूसरों के क़ब्ज़े में है वह उनसे मुस्तग़नी रहता है। एक हकीम से किसी ने पूछा कि ग़िना क्या चीज़ है? उन्होंने फ़रमाया कि तमन्नाओं का कम करना और जो अपने लिए काफ़ी हो जाये, उस पर ख़ुश रहना। मुहम्मद बिन वासेअ् रह॰ सूखी रोटी को पानी में भिगो कर खा लिया करते थे। और फ़रमाया करते थे कि जो इस पर क़नाअत कर ले, वह किसी का भी मुहताज न हो। एक हकीम से किसी ने पूछा, तुम्हारी मालियत क्या है? फ़रमाने लगे ज़ाहिर में ख़ुशहाल रहना, बातिन में इख़्तिसार और मियाना रवी इख़्तियार करना, और दूसरों के पास जो चीज़ें हैं, उनसे उम्मीद न रखना। हक़ तआला शानुहू का (हदीस में) इर्शाद है कि आदम के बेटे! अगर सारी दुनिया तुझको मिल जाये, तब भी तो तू उसमें से अपनी हाजत के बक़द्र ही खायेगा। अगर मैं इतनी मिक़्दार तुझे दे दूँ और उस से ज़ायद न दूँ जिसका तुझे हिसाब देना पड़े तो यह तो मैं ने तुझ पर एहसान किया।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जब किसी से कोई

हाजत तलब करे तो मामूली तरीक़े से तलब करे, ऐसा न कहे कि आप तो ऐसे हैं, आप तो ऐसे हैं, चुना हैं, चुनीं हैं। कि इस से उसकी तो कमर तोड़ दोगे (कि वह उज्ब और तकब्बुर में हलाक हो जायेगा) और तुम्हें मुक़द्दर से ज़्यादा न मिलेगा। कहते हैं कि बनू उमैया के एक बादशाह (सुलैमान बिन अब्दुल मलिक) ने हज़रत अबू हाज़िम रज़ि॰ को बड़े इस्रार से लिखा कि आप को कुछ ज़रूरत हुआ करे तो मुझ से मंगा लिया करें। उन्होंने जवाब में लिखा कि मैं ने अपनी ज़रूरतें अपने आक़ा की ख़िदमत में पेश कर दीं, उसने उन पर जो कुछ मुझे अता फ़रमा दिया, मैं ने उस पर क़नाअत कर ली। एक हकीम का इर्शाद है कि मैं ने सब से ज़्यादा ग़म में मुब्तिला रहने वाला, हसद करने वाले को पाया, और सबसे बेहतरीन ज़िन्दगी गुज़ारने वाला क़नाअत करने वालों को पाया, और सब से ज़्यादा सब्र करने वाला हरीस को पाया (कि हर चीज़ की हिर्स करता है, फ़िर वह मिलती नहीं तो सब्र करता है) और सब से ज़्यादा लतीफ़ ज़िन्दगी गुज़ारने वाला दुनिया के छोड़ देने वाले को पाया, और सब से ज़्यादा नदामत वाला उस आलिम को पाया जो हद से बढ़ने वाला हो।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि॰ ने हज़रत कअब अह्बार रज़ि॰ से दर्याफ़्त किया कि उलमा के क़ुलूब से इल्म को क्या चीज़ ज़ाया कर देती है? हालांकि पढ़ते वक़्त उन्होंने समझ कर पढ़ा था, उसको याद रखा था। हज़रत कअब रज़ि॰ ने फ़रमाया, तमअ् और हिर्स और लोगों से अपनी हाजतों का मांगना। किसी शख़्स ने हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रह॰ से हज़रत कअब रज़ि॰ के कलाम की शरह पूछी तो उन्होंने फ़रमाया कि जब आलिम किसी चीज़ की तमअ् करने लगता है तो उसकी तलब में लग जाता है, जिस से उसका दीन बर्बाद हो जाता है (कि उसकी तलब की मशग़ूली दीन की मशग़ूली को खो देती है) और हिर्स उसको हर हर चीज़ की तरफ़ खींचती है हत्ताकि उसका हर चीज़ को यह दिल चाहता है कि यह भी मुझे मिल जाये, यह भी मुझे मिल जाये, फिर लोगों से उसके पूरा करने का तालिब होता है। जो शख़्स उसकी तलब को पूरा कर देता है, उसके सामने झुकना पड़ता है, उसका मुतीअ् होना पड़ता है, वह जिधर चाहे खींच कर ले जाये, तुम्हें झक मार कर उसका कहना मानना पड़ता है। जब वह गुज़रे तो उसको सलाम करना पड़ता है, बीमार हो जाये तो इयादत करना पड़ता है, और यह सलाम और इयादत अल्लाह के वास्ते नहीं होती बल्कि दुनिया की मुहब्बत की वजह से होती है। (और जब दुनिया की वजह से हुई तो

उसका सवाब मालूम है) इसके बाद हज़रत फ़ुज़ैल रह० ने फ़रमाया कि यह हदीस (अमल के लिए और कारआमद होने के लिए) सौ हदीसों से बढ़ कर है। (एहया)

हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक शख़्स हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह, सल्ल० मुझे मुख़्तसर सी नसीहत फ़रमा दीजिए। (ताकि मैं उस को मज़बूत पकड़ लूँ) हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि जो चीज़ दूसरों के पास है, उस से अपने को बिल्कुल मायूस बना लो (ज़रा भी उसकी तरफ़ इल्तिफ़ात न करो) और तमअ् से अपने को बिल्कुल महफ़ूज़ रखो। इसलिए कि तमअ् फ़ौरी फ़क्र है (यानी उस चीज़ की ज़रूरत तो जब होगी, जब होगी उसकी तरफ़ एहतियाज अभी से हो गयी) और अपने आप को ऐसी चीज़ से बचाओ, जिसकी मअ्ज़िरत करना पड़े। (तर्ग़ीब)

हज़रत अबू अय्यूब रज़ि० की रिवायत से इस क़िस्म का एक सवाल व जवाब और भी क़रीब ही गुज़र चुका है, इन दोनों हदीसों में और नसीहतें मुश्तरक़ हैं एक एक नसीहत हर शख़्स के मुनासिबे हाल अलाहिदा है, और बाज़ रिवायात में सअद रज़ि० की हदीस में चार बातें मज़कूर हैं। तीन वे जो हज़रत अबूअय्यूब रज़ि० की रिवायत में गुज़रीं और चौथी तमअ् की इसमें ज़ायद है। (तर्ग़ीब)

और यह बात कि दूसरों के पास जो चीज़ हो, उस से अपने आपको बिल्कुल मायूस रखो, दोनों में मुश्तरक और बड़ी अहम चीज़ है कि इसकी वजह से न तो खुद को परेशान होना पड़ता है और न दूसरे के सामने झुकना पड़ता है।

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि जो शख़्स अपने घर में अम्न से हो और अल्लाह तआला शानुहू ने बदन की सेहत अता फ़रमा रखी हो और एक दिन का खाना उसके पास मौजूद हो तो गोया दुनिया सारी की सारी उस के पास मौजूद है। (तर्ग़ीब)

फिर उसको किसी दूसरे की किसी चीज़ की तरफ़ क्या निगाह लगाना है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से भी इस क़िस्म का वाक़िआ नक़ल किया गया कि एक शख़्स ने हुज़ूर सल्ल० से अर्ज़ किया कि मुझे कोई मुख़्तसर बात बता दीजिए। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि नमाज़ ऐसी पढ़ो गोया यह आख़िरी नमाज़ है (और तुम हक़ तआला शानुहू के सामने हाज़िर हो) इसलिए

कि अगर तुम उसको नहीं देख सकते तो वह तो तुम्हें बहरहाल देख रहा है और जो चीज़ दूसरों के कब्ज़े में है उस से मायूस बने रहो, तुम सबसे ज़्यादा ग़नी होगे और अपने आपको ऐसी चीज़ से (क़ौल हो या फ़ेअ्ल) बचाओ जिसकी फिर मअ्ज़िरत करना पड़े। (तर्ग़ीब)

हज़रत सअद रज़ि॰ से भी एक शख़्स ने यह दर्ख़ास्त की कि आप मुझे कोई नसीहत करें, उन्होंने फ़रमाया, जब नमाज़ पढ़ो तो बहुत अच्छी तरह वुज़ू करो, इसलिए कि बग़ैर वुज़ू के नमाज़ नहीं होती और बग़ैर नमाज़ के ईमान नहीं ,फिर जब नमाज़ शुरू करो तो ऐसी पढ़ो जैसा कि आख़िरी नमाज़ हो और बहुत सी हाजतें तलब न किया करो, इसलिए कि यह भी फ़ौरी फ़क़्र है, और जो चीज़ दूसरों के कब्ज़े में हो उस से अपने आप को बिल्कुल मायूस रखो, यही असल ग़िना है और कोई कलाम या कोई फ़ेअ्ल ऐसा न करो जिस से फिर मअ्ज़िरत करना और माफ़ी चाहना पड़े। (इत्तिहाफ़ुस्सलात)

इमाम ग़ज़ाली रह॰ फ़रमाते हैं कि बाज़ आदमी यह समझते हैं कि माल का छोड़ देने वाला ज़ाहिद है, यह सही नहीं, इसलिए कि माल का छोड़ देना और मोटे कपड़े पहन लेना हर ऐसे शख़्स के लिए आसान है जो लोगों में अपनी वक़अत चाहता हो, उनके यहां अपनी तारीफ़ का तालिब हो। कितने ही दुनिया से बे ताल्लुक़ी का इज़्हार करने वाले, जो थोड़े से खाने पर क़नाअत करते हैं और अपना दरवाज़ा हर वक़्त बंद रखते हैं, बल्कि ऐसे बंद मकान में रहते हैं जिसके दरवाज़ा ही न हो, उनका मक़सद सिर्फ़ यह है कि लोगों के यहां उनकी शुहरत हो और कितने ही उम्दा लिबास पहनने वाले ज़ुह्द का दावा करते हैं और कहते हैं कि वे अच्छा लिबास इत्तिबा-ए-सुन्नत में पहनते हैं और यह कि वे ख़ुद इन कपड़ों वग़ैरह की तरफ़ अपनी ख़्वाहिश से मुतवज्जह नहीं होते बल्कि लोगों के इसरार और ख़्वाहिश से पहनते हैं और मक़सद यह होता है कि लोग इस क़िस्म के कपड़े हदाया में पेश किया करें। ये दोनों फ़रीक़ दुनिया को दीन के ज़रिये से हासिल करने वाले हैं दुनिया सिर्फ़ माल ही का नाम नहीं, जाह की तलब भी दुनिया है।

ज़ाहिद की तीन अलामतें हैं, जिनको अपने अंदर पैदा करने की कोशिश करना चाहिए:-

1. जो उसके पास मौजूद है, उस से ख़ुश न हो; और जो चीज़ नहीं है

उस पर रंजीदा न हो, बल्कि औला तो यह है कि मौजूदा से रंजीदा हो और जो नहीं उस से खुश हो।

2. उसकी निगाह में उसकी तारीफ़ करने वाला, मज़म्मत करने वाला बराबर हो कि यह जाह के ज़ुह्द की अलामत है और पहली चीज़ माल के ज़ुह्द की अलामत है।

3. हक़ तआला शानुहू से उन्स और मुहब्बत हो और ताआत में हलावत (मिठास) हो। (एह्या)

इस जगह दो वाक़िए अपने अकाबिर के नमूने के लिए लिखने को दिल चाहता है, एक तो वह मक्तूबे गरामी जो शैख़ुल मशाइख़ क़ुत्बुल इर्शाद हज़रत गंगोही क़द्दस सिर्रहू ने अपने मुर्शिद शैख़ुल अरब वल अजम हज़रत हाजी इम्दादुल्लाह साहब अअ़्लल्लाहु मराति-बहू की ख़िदमत में लिखा जो मकातीबे रशीदिया में छप भी हो चुका है, उसके अल्फ़ाज़ ये हैं:-

हुज़ूर ने, जो बंदा-ए-नालायक़ के हालात से इस्तिफ़्सार फ़रमाया है, मेरे मावा-ए-दारैन इस नाक़स के क्या हालात और किस दर्जे की कोई ख़ूबी है जो आफ़ताबे कमालात के रूबरू अर्ज़ करूँ। बख़ुदा सख़्त शर्मिंदा हूँ, कुछ नहीं हूँ मगर जो इर्शादे हज़रत है तो क्या करूँ, बनाचारी कुछ लिखना पड़ता है। हज़रत मुर्शिदे मन, इल्मे ज़ाहिरी का तो यह हाल है कि आपकी ख़िदमत से दूर हुए, ग़ालिबन अरसा सात साल से कुछ ज़्यादा हुआ है, इस साल तक दो सौ से चंद अदद ज़्यादा आदमी सनदे हदीस हासिल करके गये और अक्सर उनमें वे हैं कि उन्होंने दर्स जारी किया और सुन्नत के एह्या में सरगरम हुए, और इशाअते दीन उनसे हुई, और इस शर्फ़ से ज़्यादा कोई शर्फ़ नहीं, अगर क़ुबूल हो जाये, और हज़रत के अक़दामे नअ़्लैन की हाज़िरी के समरे का यह ख़ुलासा है कि जज़्बा-ए-क़ल्ब में ग़ैर हक़ तआला से नफ़ा व ज़रर का इल्तिफ़ात नहीं, वल्लाह बाज़ औक़ात अपने मशाइख़ की तरफ़ से अलाहिदगी हो जाती है, लिहाज़ा किसी के मद्ह (तारीफ़) व ज़म (बुराई) की परवाह नहीं रही और ज़ाम (बुराई करने वालो) व मादेह (तारीफ़ करने वाला) को दूर जानता हूँ और मअ़्सियत की तबअन नफ़रत और इताअत की तबअन रग़्बत पैदा हो गयी, और यह असर उसी निस्बते याददाश्त के बेरंग का है जो मिश्काते अनवारे हज़रत से पहुँची है, पस ज़्यादा अर्ज़ करना गुस्ताख़ी और शोख़ चश्मी है। या अल्लाह! माफ़ फ़रमाना

कि हज़रत के इर्शाद से तहरीर हुआ है, झूठा हूँ कुछ नहीं हूँ, तेरा ही ज़िल्ल है, तेरा ही वजूद है, मैं क्या हूँ। कुछ नहीं और वह जो मैं हूँ वह तू है और "मैं" तो ख़ुद शिर्क दर शिर्क है।

أَسْتَغْفِرُ اللهَ أَسْتَغْفِرُ اللهَ أَسْتَغْفِرُ اللهَ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ

"अस्तग़्फ़िरूल्ला-ह अस्तग़्फ़िरूल्ला-ह अस्तग़्फ़िरूल्ला-ह लाहौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्ला-हि" अब अर्ज़ से माज़ूर फ़रमा कर क़ुबूल फ़रमायें, वस्सलाम। सन् 1306 हि०।

यह गरामी क़द्र मक्तूब विसाल से सतरह साल क़ब्ल का है इन सतरह साल में मदह व ज़म (तारीफ़ व बुराई) की बराबरी में और ग़ैरे हक़ से नफ़ा व ज़रर (नुक़्सान) की तरफ़ इल्तिफ़ात न होने में जो तरक़्क़ियात हुई होंगी, उनका इदराक भी कौन कर सकता है?

दूसरा वाक़िआ जिसको अमीर शाह खां साहब ने अमीरूर्रिवायात में लिखा है, वह लिखते हैं कि तहसील सिकंदराबाद में एक गांव है हसन पुर, मैं ने भी देखा है बहुत बड़ा गांव है, यह एक वक़्त में मौलवी मुहम्मद इस्हाक़ साहब रह० (देहलवी जो मशहूर असातज़ा-ए-हदीस में हैं) और मौलवी मुहम्मद याक़ूब साहब रह० का था। मौलवी मुज़फ़्फ़र हुसैन साहब रह० (कांधलवी) फ़रमाते थे कि मौलवी मुहम्मद इस्हाक़ साहब रह० और मौलवी मुहम्मद याक़ूब साहब रह० निहायत सख़ी थे और अक्सर तंगी की वजह से कुछ मलूल से रहते थे, लेकिन एक रोज़ मैं ने देखा कि दोनों भाई निहायत हश्शाश बश्शाश हैं और ख़ुशी में इधर से उधर आते जाते हैं और किताबें यहां से वहां और वहां से यहां रखते और ख़ुशी के लहजे में आपस में बात कर रहे हैं, मैं यह देख कर समझा कि शायद आज कोई बड़ी रक़्म हिन्दुस्तान से आ गयी (दोनों हज़रात मक्का मुकर्रमा में तश्रीफ़ फ़रमा थे) जिस से ये इस क़द्र ख़ुश हैं। यह समझ कर मैं ने चाहा कि वाक़िआ दर्याफ़्त करूँ। मगर बड़े मियां से तो पूछने की हिम्मत न हुई, छोटे मियां से पूछा कि हज़रत, आप आज बहुत ख़ुश नज़र आते हैं इसकी क्या वजह है। उन्होंने ताज्जुब के लहजे में फ़रमाया कि तुम ने नहीं सुना? मैं ने कहा नहीं, फ़रमाया कि हमारा गांव हसनपुर ज़ब्त हो गया, यह ख़ुशी उसी की है क्योंकि जब तक वह था, हमको ख़ुदा पर पूरा तवक्कुल न था और अब सिर्फ़ ख़ुदा पर भरोसा रह गया।

हज़रत मौलाना अशरफ़ अली साहब थानवी नव्वरल्लाहु मरक़दहू इस वाक़िए पर लिखते हैं कि मुझे हज़रत ग़ौस पाक रह॰ की ख़ुशी याद आ गयी कि जिस वक़्त ख़ादिम ने एक क़ीमती आईने के टूट जाने की डरते डरते इस मिस्रअ् से इत्तिला दी कि "अज़ क़ज़ा आईना-ए-चीनी शकिस्त" आपने फ़िल बदीह फ़रमाया, "ख़ूब शुद असबाबे ख़ुद बीनी शकिस्त"। *(अमीरुर्रिवायात)*

पहले मिस्रअ् का तर्जुमा यह है कि तक़दीर से चीनी का आईना टूट गया। दूसरे का तर्जुमा यह है, बहुत अच्छा हुआ कि ख़ुदबीनी के असबाब जाते रहे। फ़क़त।

(۱۱) عن عائشةؓ قالت ماشبع رسول الله صلى الله عليه وسلم من خبز شعير يومين متتابعين حتى قبض (رواه الترمذى فى الشمائل)

11. हज़रत आईशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तमाम उम्र में अपनी वफ़ात तक कभी जौ की रोटी भी दो दिन लगातार पेट भर कर नोश नहीं फ़रमायी।

फ़ायदाः- यही हुज़ूर सल्ल॰ की ज़िन्दगी थी। दो चार हदीसों में नहीं, सैंकड़ों अहादीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िन्दगी का यही नक़्शा मौजूद है। आज मुसलमानों के फ़क़्र व फ़ाक़े का इस क़दर शोर है कि हद नहीं, मगर कितने आदमी ऐसे होंगे जिनको उम्र भर में दो दिन भी पेट भर कर मामूली रोटी न मिली हो। शमाइल ही की एक और हदीस में हज़रत आईशा रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ के सारे घराने का यही अमल नक़ल करती हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ के घर वालों ने हुज़ूर सल्ल॰ की वफ़ात तक कभी भी दो दिन लगातार जौ की रोटी से भी पेट नहीं भरा।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ पर कई कई रातें मुसलसल ऐसी गुज़र जाती थीं कि हुज़ूर सल्ल॰ को और हुज़ूर सल्ल॰ के घर वालों को शाम को खाना मयस्सर नहीं होता था, रात भर वे सब के सब फ़ाक़े से गुज़ार देते थे। और जौ की रोटी पर हुज़ूर सल्ल॰ का गुज़ारा था। हज़रत सुहैल रज़ि॰ से किसी ने पूछा कि हुज़ूर सल्ल॰ का मामूल छने हुए आटे की रोटी खाने का था? हज़रत सुहैल रज़ि॰ ने फ़रमाया कि हुज़ूर सल्ल॰ ने विसाल तक छने हुए आटे को देखा भी न होगा, फिर उसने पूछा कि क्या हुज़ूर सल्ल॰ के ज़माने में आप हज़रात के यहां छलनियां नहीं थीं, हज़रत सुहैल रज़ि॰ ने फ़रमाया कि

छलनियों का दस्तूर नहीं था। उन्होंने (ताज्जुब से) पूछा कि बग़ैर छने जौ के आटे को क्यों कर खाते थे? हज़रत सुहैल रज़ि॰ ने फ़रमाया कि आटे को हरकत देकर उस में फूँक मार दिया करते थे, जिस से (मोटे मोटे) तिनके उड़ जाते थे, बाक़ी को पका लिया करते थे। *(शमाइले तिर्मिज़ी)*

फ़ायदा:- आज गेहूँ की रोटी बग़ैर छने आटे की खाना मुश्किल समझा जाता है। ये हज़रात जौ के आटे की रोटी बग़ैर छने नोश फ़रमाते थे, वह भी पेट भर कर न मिलती थी। हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि जब मैं पेट भर खाना खाती हूँ तो मेरा रोने को (बे इख़्तियार) दिल चाहता है, पस रोने लगती हूँ, किसी ने अर्ज़ किया यह क्या बात है? फ़रमाने लगीं, मुझे हुज़ूर सल्ल॰ का ज़माना याद आ जाता है कि गोश्त से या रोटी से कभी भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को विसाल तक दिन में दो मर्तबा पेट भर कर तनावुल फ़रमाने की नौबत न आयी। *(शमाइल)*

सईद मक़्बरी रह॰ कहते हैं कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ का एक जमाअत पर गुज़र हुआ, वे लोग खाना खा रहे थे और मुर्ग़ी भुनी हुई उनके सामने रखी थी। उन्होंने हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ की तवाज़ो की। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ ने इंकार फ़रमा दिया और यह फ़रमाया कि हुज़ूर सल्ल॰ इस हालत में दुनिया से तशरीफ़ ले गये कि जौ की रोटी से पेट भरने की नौबत नहीं आयी।

(मिश्कात)

मेरा किस तरह दिल चाहे कि मुर्ग़ खाऊँ। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ का यह इर्शाद आम हालत के एतिबार से है वर्ना मुर्ग़ी का खाना हुज़ूर सल्ल॰ से भी साबित है।

एक हदीस में है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अक्सर भूखे रहते थे बग़ैर नादारी के यानी ऐसा भी होता था कि खाना मौजूद हो फिर भी हुज़ूर सल्ल॰ कम तनावुल फ़रमाते थे इसलिए कि भूखे रहने से अनवार की कसरत होती है।

एक हदीस में आया है कि जो शख़्स दुनिया में खाने पीने की मिक़्दार कम रखता है, हक़ तआला शानुहू उस पर फ़रिश्तों के सामने तफ़ाख़ुर के तौर पर इर्शाद फ़रमाते हैं कि देखो मैं ने इस को खाने पीने की कमी में मुब्तला किया, इस ने सब्र किया, तुम गवाह रहो कि जो लुक़्मा इस ने कम किया है, उसके

बदले में जन्नत के दर्जे इसके लिए तजवीज़ करता हूँ। (एहया)

यह बात हर जगह मलहूज़ रखना चाहिए कि अपने इख़्तियार से इतनी कमी हरगिज़ न करे, जो सेहत को मुज़िर हो कर दूसरे दीनी कामों में नुक़्सान का सबब हो, इसी वजह से रोज़े में सेहरी को सुन्नत क़रार दिया गया कि रोज़े में ज़ोअफ़ न पैदा हो, इसी वजह से दोपहर का सोना सुन्नत क़रार दिया गया कि रात के जागने में मुईन (मददगार) हो।

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि कोई बर्तन भरने के एतिबार से पेट से बुरा नहीं। (यानी जितना पेट का भरना बुरा है उतना किसी बर्तन का भरना बुरा नहीं है।) और चूंकि मजबूरी है, खाना पड़ता ही है इसलिए एक तिहाई पेट खाने के लिए, एक तिहाई पीने के लिए और एक तिहाई सांस के लिये रखना चाहिए।

एक मर्तबा हज़रत फ़ातिमा रज़ि० एक रोटी का टुकड़ा हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में लेकर हाज़िर हुईं, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया ! यह क्या चीज़ है? हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह, सल्ल० मैं ने आज रोटी पकाई थी। मेरे दिल ने बग़ैर आपके नोश फ़रमाये खाना गवारा न किया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि तीन दिन के अंदर यह पहली चीज़ है जो तुम्हारे बाप के मुंह में जा रही है (यानी तीन दिन से कोई चीज़ खाने की नौबत नहीं आयी,) हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि दुनिया में जो लोग भूखे रहने वाले हैं, आख़िरत में वही लोग पेट भरने वाले हैं और हक़ तआला शानुहू को वह शख़्स बहुत नापसंद है जो इतना खाये कि बद-हज़्मी हो जाये। जो शख़्स किसी ऐसी चीज़ के खाने को तर्क करे, जिसको दिल चाहता है, उसके लिए जन्नत में दर्जे हैं।

हज़रत उमर रज़ि० का इर्शाद है कि पेट भर कर खाने से एहतियात रखो, यह ज़िन्दगी में भारीपन का सबब है और मरने के बाद गंदगी और उफ़ूनत है। हज़रत शक़ीक़ बलख़ी रह० का इर्शाद है कि इबादत एक पेशा है, जिसकी दुकान तंहाई है और उसका आला (जिससे पेशा किया जाये,) भूखा रहना है। हज़रत फ़ुज़ैल रह० अपने दिल से फ़रमाया करते थे कि तू भूखा रहने से डरता है, यह डरने की चीज़ नहीं है, तेरी क्या हक़ीक़त है, जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा-ए-किराम रज़ि० भूखे रह चुके हैं। हज़रत फ़ुज़ैल रह० यह भी कहा करते थे, या अल्लाह, तूने मुझे और मेरे अहल व अयाल को भूखा रखा, अंधेरी रातों में बग़ैर रोशनी के रखा, यह तो तू अपने नेक बंदों के

साथ किया करता है। या अल्लाह, तूने मुझे यह दौलत किस अमल पर अता फ़रमाई। यानी इस पर ताज्जुब किया करते थे कि मैं (अपने ख़्याल के मुवाफ़िक़) नेक तो हूँ नहीं फिर यह नेक लोगों का सा बर्ताव मेरे साथ किस अमल के सिले में है।

हज़रत कहमस रह॰ फ़रमाया करते थे, या अल्लाह, तूने मुझे भूखा रखा, नंगा रखा, अंधेरी रातों में बग़ैर चिराग़ के रखा (मैं तो इन एहसानात के क़ाबिल न था, ये दर्जे) किन चीज़ों की वजह से मुझे मिले? हज़रत फ़तह मूसली रह॰ को जब कोई सख़्त बीमारी लाहिक़ होती या भूख की शिद्दत होती तो कहते, या अल्लाह, तूने मुझे भूख और मर्ज़ में मुब्तला किया और तू यह इब्तिला अपने नेक बंदों को दिया करता है। मैं किस नेक अमल से तेरे इस एहसान का शुक्र अदा करूँ। मालिक बिन दीनार रह॰ ने मुहम्मद बिन वासेअ् रह॰ से कहा, बड़ा मुबारक है वह शख़्स जिस के लिए मामूली सी पैदावार ऐसी हो, जिस से वह ज़िंदा रह सके और लोगों से मांगने का मुहताज न हो। मुहम्मद बिन वासेअ् रह॰ ने फ़रमाया, मुबारक वह शख़्स है जो सुबह को भी भूखा रहे, शाम को भी भूखा रहे और उस पर भी अपने रब से राज़ी रहे। तौरात में लिखा है कि जब तू पेट भरकर खाना खाया करे तो भूखे आदमियों का भी दिल में ख़्याल लाया कर। अबू सुलैमान रह॰ कहते हैं कि मैं रात के खाने में से एक लुक़्मा कम खाऊँ, यह मुझे सारी रात के जागने से ज़्यादा पसंद है। उनका यह भी इर्शाद है कि भूख अल्लाह का ऐसा ख़ज़ाना है, जो अपने दोस्तों ही को देता है।

हज़रत सह्ल बिन अब्दुल्लाह तस्तरी रज़ि॰ मुसलसल बीस बीस दिन से ज़्यादा भूखे गुज़ार देते थे और उनकी साल भर की ग़िज़ा की मीज़ान एक दिरहम यानी (बाईस नये पैसे) होती थी। यह भूखे रहने की बड़ी तर्ग़ीब दिया करते थे। यहां तक कहा करते थे कि ज़रूरत से ज़ायद खाना छोड़ने के बराबर कोई भी नेक अमल नहीं, इसलिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यही इत्तिबाअ है, इन का यह भी इर्शाद है कि हिक्मत और इल्म भूखे रहने में है और जह्ल और गुनाह पेट भर कर खाने में मर्कूज़ है। उनका यह भी इर्शाद है कि आदमी अब्दाल में से नहीं हो सकता। जब तक भूखा रहने, और चुप रहने और रातों को जागने का आदी न हो, और तंहाई को पसंद न करता हो। उनका यह भी इर्शाद है कि जो शख़्स भूखा रहता है, उसको वसवसे कम आया करते हैं।

अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद रह॰ क़सम खाकर फ़रमाया करते थे कि हक़

तआला शानुहू किसी शख़्स की सफ़ाई बग़ैर भूखे रहने के नहीं करते और इसी की वजह से बुज़ुर्ग पानी पर चला करते हैं, इसी की वजह से उन को तैयुल-अर्ज़ हासिल होता है। *(एह्या)*

तैयुल-अर्ज़ बुज़ुर्गों की एक ख़ास रफ़्तार का नाम है, जिसकी वजह से चंद क़दम में हज़ारों मील तै कर लेते हैं।

इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि भूखे रहने में दस फ़ायदे हासिल होते हैं:-

1. दिल की सफ़ाई इस से हासिल होती है, तबीअत तेज़ होती है। बसीरत बढ़ जाती है, इसलिए कि पेट भर कर खाने से तबीअत में बलादत आती है, और दिल का नूर जाता रहता है, मेअ्दे के बुख़ारात दिमाग़ को घेर लेते हैं जिसका असर दिल पर भी पड़ता है। कि वह फ़िक्र में दौड़ने से आजिज़ हो जाता है, बल्कि कम उम्र बच्चा अगर ज़्यादा खाने लगे तो उसका हाफ़िज़ा भी ख़राब हो जाता है, ज़ेहन भी कुन्द हो जाता है। अबू सुलैमान दारानी रह० फ़रमाते हैं कि भूखा रहने की आदत पैदा करो, यह नफ़्स को मुतीअ् करता है, दिल को नर्म करता है और आसमानी उलूम इस से हासिल होते हैं।

हज़रत शिब्ली रह० फ़रमाते हैं कि मैं अल्लाह तआला के लिए जिस दिन भूखा रहा, मैं ने अपने अंदर इबरत और हिक्मत का एक दरवाज़ा खुला हुआ पाया। इसी वजह से हज़रत लुक़्मान अलैहि० की अपने बेटे को नसीहत है कि बेटा, जब मेअ्दा भर जाता है तो फ़िक्र सो जाता है और हिक्मत गूंगी हो जाती है और अअ्ज़ा इबादत से सुस्त पड़ जाते हैं। अबू यज़ीद बुस्तामी रह० फ़रमाते हैं कि भूख एक अब्र (बादल) है जब आदमी भूखा होता है तो वह अब्र दिल पर हिक्मत की बारिश करता है।

2. दूसरा फ़ायदा दिल का नर्म होना है जिस से ज़िक्र वग़ैरह का असर दिल पर होता है। बसा औक़ात आदमी बड़ी तवज्जोह से ज़िक्र करता है। लेकिन दिल उस से लज़्ज़त हासिल नहीं करता, और न उस से मुतास्सिर होता है, और जिस वक़्त दिल नर्म होता है तो ज़िक्र में भी लज़्ज़त आती है, दुआ और मुनाजात में भी मज़ा आता है। अबू सुलैमान दारानी रह० कहते हैं कि मुझे सब से ज़्यादा इबादत में मज़ा जब आता है ,जब मेरा पेट भूख की वजह से कमर को लग जाता है। हज़रत जुनैद बग़दादी रह० फ़रमाते हैं कि आदमी हक़ तआला शानुहू के और

अपने सीने के दर्मियान एक झोली खाने की कर लेता है, फिर यह भी चाहता है कि अल्लाह तआला से मुनाजात की हलावत भी नसीब हो (पेट भरने को फ़क़ीर की झोली भरने से तश्बीह दी है)

3. तीसरा फ़ायदा यह है कि आदमी में आजिज़ी मस्कनत पैदा होती है और अकड़ मकड़ जाती रहती है, जो सरकशी और अल्लाह तआला शानुहू से ग़फ़लत का सर चश्मा है। नफ़्स किसी चीज़ से भी इतना ज़ेर (नीचा) नहीं होता, जितना भूखा रहने से होता है और आदमी जब तक अपने नफ़्स की ज़िल्लत और आजिज़ी नहीं देखता उस वक़्त तक अपने मौला की इज़्ज़त और उसका ग़लबा नहीं देख सकता। आदमी को चाहिए कि कसरत से भूखा रहे, ताकि ज़ौक़ से अपने मौला की तरफ़ मुतवज्जह रहे। यही वजह है कि जब हक़ तआला शानुहू ने हुज़ूर सल्ल० पर यह पेश फ़रमाया कि मक्का मुकर्रमा की सारी ज़मीन सोने की कर दी जाये तो हुज़ूर सल्ल० ने अर्ज़ किया या अल्लाह यह नहीं बल्कि मैं तो यह चाहता हूँ कि एक दिन भूखा रहूँ और एक दिन खाऊँ, ताकि जिस दिन भूखा रहूँ तो सब्र करूँ और तेरी तरफ़ आजिज़ी करूँ (तुझ से मांगूं) और जिस दिन खाऊँ, उस दिन तेरा शुक्र अदा करूँ।

4. चौथा फ़ायदा यह है कि अहले मुसीबत और फ़ाक़ा ज़दों से ग़फ़लत पैदा नहीं होती। पेट भरे आदमी को बिल्कुल अंदाज़ा नहीं होता कि भूखों और मुहताजों पर क्या गुज़र रही है।

हज़रत यूसुफ़ अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलाम से किसी ने अर्ज़ किया कि ज़मीन के ख़ज़ाने तो आपके क़ब्ज़े में हैं, फिर भी आप भूखे रहते हैं, फ़रमाया कि मुझे यह डर है कि ख़ुद पेट भर लेने से कहीं भूखों को न भूल जाऊँ और भूखे प्यासे रहने से क़ियामत के दिन की भूख और प्यास की याद भी ताज़ा होती है, अल्लाह तआला शानुहू के अज़ाब का ख़ौफ़ भी पैदा होता है, यह भी याद आ जाता है कि भूख और प्यास की शिद्दत में जहन्नम में खाना क्या मिलेगा, वह जो हलक़ में अटक जाये और पीने को क्या मिलेगा, जहन्नमियों के ज़ख़्मों का लहू और पीप।

5. पांचवा फ़ायदा जो असल और अहम है, गुनाहों से बचना है कि पेट भरना ही सारी शहवतों की जड़ है और भूखा रहना हर क़िस्म की शहवत को तोड़ता है और आदमी के लिए बड़ी सआदत यह है कि वह अपने नफ़्स पर

क़ाबू रखे और बड़ी बदबख़्ती यह है कि उसका नफ़्स उस पर क़ाबू पा जाये और जैसा कि सरकश घोड़े को भूखा रख कर क़ाबू में रखा जा सकता है और जब वह ख़ूब खाता पीता रहता है तो सरकश हो जाता है इसी तरह नफ़्स का भी हाल है।

एक बुज़ुर्ग से किसी ने पूछा कि आप बुढ़ापे में भी अपने बदन की ख़बर गीरी नहीं करते (कुछ ताक़त और क़ुव्वत की चीज़ें खाने की ज़रूरत है) वह फ़रमाने लगे कि यह नफ़्स निशात की तरफ़ बड़ी तेज़ी से चलने वाला है, मुझे यह डर है कि कहीं मुझे किसी गुनाह की मुसीबत में न फांस दे, इस लिए मैं इसको मशक़्क़त में डाले रखूँ। यह मुझे ज़्यादा महबूब है इस से कि वह मुझे किसी गुनाह की हलाकत में डाल दे।

हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि सब से पहली बिद्अत जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद पैदा हुई, वह पेट भर कर खाने की है। जब आदमियों के पेट भर जाते हैं तो उनके नुफ़ूस दुनिया की तरफ़ झुकने लगते हैं और यह फ़ायदा जो ज़िक्र किया जा रहा है एक ही फ़ायदा नहीं बल्कि फ़वाइद का ख़ज़ाना है, और इसमें कम से कम जो फ़ायदा है, वह शर्मगाह की शहवत और फ़ुज़ूल बात की ख़्वाहिश का छोड़ना है, इसलिए कि भूखे आदमी का दिल फ़ुज़ूल की बातें करने को नहीं चाहा करता और इसी एक बात की वजह से आदमी ग़ीबत से, झूठ से, फ़ुहश बात करने से, चुग़ली वग़ैरह बहुत सी चीज़ों से महफ़ूज़ रहता है। और पेट भरने पर आदमी का दिल तफ़्रीह की बातों को चाहा करता है। आम तौर से हम लोगों की तफ़्रीहें आदमियों की आबरूओं से ही होती हैं और हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद है कि ज़बान की खेतियाँ ही आदमी को अक्सर जहन्नम में डालती हैं। और शर्मगाह की शहवत की हलाकत तो किसी से भी मख़्फ़ी नहीं है और आदमी का जब पेट भरा हुआ होता है तो फिर शर्मगाह पर क़ुदरत दुश्वार हो जाती है। अगर अल्लाह के ख़ौफ़ से आदमी इस पर क़ुदरत भी पा ले, तब भी आंख का गुनाह (ना-जायज़ तरीक़े से किसी औरत या मर्द को देखना) तो हो ही जाता है।

हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि आंख भी ज़िना करती है जैसा कि शर्मगाह ज़िना करती है, और अगर आदमी आंख बंद करके इस पर भी क़ुदरत पा ले, तब भी जिसको देख चुका है उसका ख़्याल तो दिल में आता ही रहेगा और शहवत के ख़्यालात हक़ तआला शानुहू से मुनाजात की लज़्ज़त को खो देते हैं

और बसा औक़ात ये फ़ासिद ख़्यालात नमाज़ में भी आ जाते हैं। ज़बान और शर्मगाह मिसाल के तौर पर ज़िक्र कर दिए, वर्ना सातों अअ्ज़ा के सारे गुनाह उसी क़ुव्वत से पैदा होते हैं जो पेट भरने से हासिल हुई है।

6. छठा फ़ायदा यह है कि कम खाने से नींद कम आती है, कसरत से जागने की दौलत नसीब होती है, इसलिए कि पेट भर कर खाने से प्यास खूब लगती है और पानी पीने से नींद खूब आती है। मशाइख़ का मक़ूला है कि ज़्यादा न खाओ वर्ना ज़्यादा पानी पियोगे, फिर ज़्यादा सोओगे, जिसकी वजह से ज़्यादा ख़सारे में रहोगे, कहते हैं कि सत्तर हकीमों का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि ज़्यादा पानी पीने से ज़्यादा नींद आती है और ज़्यादा सोने में उम्र का बहुत बड़ा हिस्सा ज़ाया हो जाता है, और तहज्जुद का फ़ौत हो जाना अलाहिदा रहा, नीज़ ज़्यादा सोने से तबीअत की बलादत सुस्ती और दिल की क़सावत भी पैदा होती है और बीवी पास न हो तो एहतिलाम का सबब भी होता है। फिर गुस्ल के असबाब मुहय्या न होने में अक्सर तहज्जुद भी फ़ौत हो जाती है।

7. सातवां फ़ायदा इबादत पर सहूलत से क़ादिर होना है कि पेट भर कर खाने से अक्सर काहिली पैदा होती है, जो इबादत को मानेअ् होती है और खुद खाने ही में बहुत सा वक़्त ज़ाया हो हाता है और अगर उस को तैयार भी करना पड़े तो और भी ज़्यादा इज़ाअते (बर्बादीए) वक़्त है, फिर खाने के बाद हाथ धोना, ख़िलाल करना, फिर बार बार पानी पीना इन सब औक़ात का हिसाब लगाया जाये तो कितना वक़्त हुआ। अगर यह सारा वक़्त अल्लाह की याद में और दूसरी इबादतों में ख़र्च होता तो कितना नफ़ा कमाता।

हज़रत सिर्री सक़ती रह० फ़रमाते हैं कि मैं ने अली जुर्जानी रह० के साथ सत्तू देखा जिसको वह फांक रहे थे। मैं ने पूछा कि सत्तू की आदत कैसे पड़ गयी? फ़रमाने लगे कि मैं ने जो हिसाब लगाया तो लुक़्मा मुंह में रखने से उसके निगलने तक सत्तर मर्तबा सुब्हानल्लाह कहने का वक़्त मिलता है, इस वजह से मैं ने चालीस साल से रोटी नहीं खाई कि उसके चबाने में बहुत देर लगती है। हक़ीक़त यही है कि आदमी का हर सांस बहुत बड़ा क़ीमती जौहर है जिसको आख़िरत के ख़ज़ाने में महफ़ूज़ करने की सख़्त ज़रूरत है ताकि वह कभी ज़ाया न हो। और उसकी सूरत सिर्फ़ यही है कि उस सांस को अल्लाह के ज़िक्र या किसी और इबादत में सर्फ़ कर दे, इसके अलावा खाना ज़्यादा खाने से वुज़ू कम ठहरती है इस्तिंजे की ज़रूरत ज़्यादा होती और इन उमूर की वजह से अलावा

इसके कि इन में वक़्त ज़ाया होता है, मस्जिद में ज़्यादा औक़ात नहीं गुज़ार सकता कि बार बार इन ज़रूरियात की वजह से निकलना पड़ेगा, इस के अलावा रोज़ा भी उस को बहुत सहल होता है जो भूखा रहने का आदी हो जाये। ग़रज़ रोज़ा, एतिकाफ़ और कसरत से बावुज़ू रहना और खाने पीने के औक़ात को इबादत में ख़र्च करना, इतने कसीर फ़ायदे हैं जिनका शुमार नहीं। इसकी क़द्र वे ग़ाफ़िल लोग क्या जानें, जिनको दीन की क़द्र नहीं, वे दुनिया की चंद रोज़ा ज़िन्दगी पर राज़ी होकर मुतमईन हो गए, पस दुनिया ही के हालात को जानते हैं, उनको आख़िरत की ख़बर ही नहीं, क्या चीज़ है?

8. आठवां फ़ायदा कम खाने में बदन की सेहत है कि बहुत से अमराज़ ज़्यादा खाने ही से पैदा होते हैं कि इसकी वजह से मेअ्दे में और रगों में अख़्लाते रद्दिया जमा हो जाते हैं, जिन से तरह तरह के अमराज़ पैदा होते हैं और अमराज़ से क़तअ-ए-नज़र इसके कि सेहत के मनाफ़ी हैं, इबादात से भी मानेअ् होते हैं, दिल को भी तश्वीश में डालते हैं, ज़िक्र व फ़िक्र से मानेअ् होने के अलावा दवा, परहेज़, हकीम, डाक्टर, फ़स्द खोलने वाला, जोंकें लगाने वाला, ग़रज़ एक लम्बा चौड़ा झगड़ा आदमी के साथ खड़ा हो जाता है। फिर इन सब चीज़ों में मशक़्क़त अलाहिदा है, ख़र्च अलाहिदा है और भूखे रहने में इन सब आफ़ात से अम्न है।

कहते हैं कि हारून रशीद ने एक मर्तबा चार माहिर हकीमों को जमा किया, एक हिन्दी माहिर, दूसरा रूमी (अंग्रेज़ी), तीसरा इराक़ी, चौथा सवादी (सवाद का रहने वाला) और चारों से दर्याफ़्त किया, कोई ऐसी दवा बताओ जो किसी चीज़ को नुक़्सान न करती हो। हिन्दी ने कहा मेरे ख़्याल में ऐसी दवा जो किसी चीज़ को नुक़्सान नहीं करती, अह्लीजे असवद (हलीला स्याह) है, इराक़ी ने कहा, मेरे ख़्याल में हब्बुर्रशाद अल्अबयज़ (जिसको फ़ारसी में तुख़्मे सिपन्दान और हिन्दी में हालून कहते हैं) रूमी ने कहा कि मेरे नज़दीक गर्म पानी है यानी वह किसी चीज़ को मुज़िर नहीं है, सवादी ने कहा कि यह सब ग़लत है, हलीला मेअ्दे को रौंदता है (पांव से किसी चीज़ को मसलना) और यह बीमारी है (इस के अलावा जिगर के लिए भी मुज़िर है, जकरिया) और हब्बुर्रशाद मेअ्दे में फिसलन पैदा करता है और गर्म पानी मेअ्दे को ढीला कर देता है। इन सब तबीबों ने कहा, फिर तुम बताओ ऐसी क्या दवा है जो किसी को नुक़्सान नहीं करती। सवादी ने कहा कि खाना उस वक़्त तक न खाया जाये जब तक कि ख़ूब रग्बत पैदा न हो और ऐसी हालत में ख़त्म किया जाए कि ज़्यादा की रग्बत बाक़ी

हो। बक़ीया तीनों तबीबों ने उसकी राय से इत्तिफ़ाक़ किया।

एक फ़लसफ़ी हकीम के सामने हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल किया गया कि तिहाई पेट खाने के लिए, तिहाई पानी के लिए और तिहाई सांस लेने के लिए, उस ने सुन कर बड़ा ही ताज्जुब किया और कहा कि खाना कम खाने में इस से बेहतर और मज़बूत बात मैं ने आज तक नहीं सुनी, बेशक यह हकीम का कलाम है।

9. नवां फ़ायदा इख़राजात (ख़र्चों) की कमी है, जो शख़्स कम खाने का आदी होगा, उसका ख़र्च भी कम होगा और ज़्यादा खाने में इख़राजात भी बढ़ेंगे, जिनके हासिल करने के लिए या तो ना जायज़ तरीक़े इख़्तियार करने पर मजबूर होगा या लोगों से मांगने की ज़िल्लत इख़्तियार करेगा (हज़रत सह्ल तस्तरी रह॰ का हाल क़रीब ही गुज़र चुका है कि उनके खाने की मीज़ान साल भर की साढ़े तीन आने होती थी।)

एक हकीम का क़ौल है कि मैं अपनी अक्सर ज़रूरतें तर्क कर देने से पूरी करता हूँ जिस से मुझे बड़ी यकसूई और राहत रहती है। एक और हकीम का क़ौल है कि जब मुझे अपनी किसी ज़रूरत के पूरा करने के लिए किसी से क़र्ज़ की ज़रूरत होती है तो मैं अपने नफ़्स ही से क़र्ज़ मांग लेता हूँ, उसको समझा देता हूँ कि इस को फिर किसी वक़्त अदा कर दूँगा यांनी तेरी ख़्वाहिश इस वक़्त मेरे ज़िम्मे क़र्ज़ है। इसको किसी दूसरे वक़्त पूरी कर दूँगा। हज़रत इब्राहीम अधम रह॰ जब किसी चीज़ का नर्ख़ (भाव) मालूम करते कि वह बहुत गरां है तो अपने दोस्तों से फ़रमाते कि इसको छोड़ कर अर्ज़ां (सस्ता) कर दो (जिस चीज़ का ख़रीदना आदमी छोड़ दे, अपनी तरफ़ से तो वह टका सेर हो ही गयी, अपनी बला से जितने में चाहे बिके) आदमी की हलाकत का बड़ा सबब दुनिया की हिर्स है और यह हिर्स पेट और शर्मगाह की वजह से पैदा होती है और शर्मगाह की क़ुव्वत भी पेट की क़ुव्वत से होती है और खाना कम खाने में इन सब आफ़तों से अम्न है। हक़ तआला शानुहू जिस को भी नसीब फ़रमा दे।

10. दसवां फ़ायदा ईसार, हमदर्दी और सदक़ात की कसरत का सबब है, कम खाने की वजह से जितना खाना बचेगा, वह यतामा मसाकीन, ग़ुरबा पर सदक़ा होकर क़ियामत में उस के लिए साया बनेगा कि हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद पहले गुज़र चुका है कि आदमी क़ियामत के दिन अपने सदक़े के साये के

नीचे होगा और जितना ज़्यादा खाएगा वह पाख़ाना बन कर कूड़ी पर जमा होता रहेगा और अल्लाह तआला शानुहू के ख़ज़ाने में जो जमा हो गया वह हमेशा हमेशा काम आता रहेगा और जो पाख़ाना हो गया, वह ज़ाया गया। इसलिए हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है जो पहले भी गुज़र चुका है कि आदमी कहता है कि मेरा माल मेरा माल, उस के लिए उस के माल में से बजुज़ (अलावा) तीन चीज़ के कुछ नहीं है, एक वह जो सदक़ा कर दिया और हमेशा के लिए महफ़ूज़ कर लिया, दूसरा वह जो खा लिया और खाकर ख़त्म कर दिया और तीसरा वह जो पहन कर पुराना कर दिया। इसके अलावा जो है वह दूसरों का माल है, वारिसों का हिस्सा है, इस का उस में कुछ भी नहीं है।

इसके अलावा सदक़ात के फ़ज़ाइल कसरत से गुज़र ही चुके हैं। ये दस फ़वाइद कम खाने के निहायते इख़्तिसार से ज़िक्र किये गये हैं। इन में से हर एक फ़ायदा अपने अंदर बेशुमार फ़ायदे रखता है। *(एह्या)*

यह बात क़ाबिले लिहाज़ है जो पहले भी मुतअद्दद बार लिखी जा चुकी है कि इन फ़ज़ाइल के हक़ होने में तरद्दुद नहीं। यक़ीनन ये वे कमालात हैं कि जिस खुशनसीब को हक़ तआला शानुहू अपने लुत्फ़ से अता फ़रमा दे, उसके लिए दीन और दुनिया दोनों की राहत है और आख़िरत के लिए बेशुमार दरजात और तरक़्क़ियात का ज़ीना यही चीज़ें हैं, लेकिन अपने तहम्मुल की रिआयत ज़रूरी है। ऐसा न हो कि कौआ चला हंस की चाल, वह अपनी भी भूल गया, ज़्यादा के शौक़ में आदमी थोड़े से भी जाता रहे। इस लिए इन सब चीज़ों की तरफ़ से दिल को रग़बत देते रहने के साथ इन चीज़ों के और इस तर्ज़े ज़िन्दगी के अपने अंदर पैदा करने की कोशिश के साथ और इन उमूर को निहायत वक़्अत से देखने के साथ अमल उतना ही करना चाहिए जितना अपने अंदर तहम्मुल हो। बीमार आदमी ताक़त से ज़्यादा बोझ उठायेगा तो जल्दी मरेगा। हम लोग नफ़्स की बीमारियों के बीमार हैं, अअ्ज़ा और क़ुवा के ज़ोअफ़ के मारे हुए हैं, इसलिए सेहत की तमन्ना और कोशिश, सअी और रग़बत के साथ ऐसी कोई चीज़ अमली तौर से इख़्तियार न करना चाहिए जो उस हालत से भी गिरा दे, जिस पर अब मौजूद हैं।

इमाम ग़ज़ाली रह॰ फ़रमाते हैं कि कम खाने की आदत आहिस्ता आहिस्ता पैदा करना चाहिए। जो शख़्स ज़्यादा खाने का आदी हो, वह दफ़्अतन कम करेगा तो उस का तहम्मुल भी न होगा, ज़ोअफ़ भी हो जायेगा, मशक़्क़त भी

बढ़ जायेगी, इसलिए बहुत अहिस्तगी और सहूलत के साथ इसको इख़्तियार करना चाहिए, मसलन अगर कोई शख़्स दो नान खाता हो तो उसको एक नान का अट्ठाईसवां हिस्सा रोज़ाना कम करना चाहिए, इस से एक महीने के अंदर आधी ख़ुराक रह जायेगी (और अगर इसका तहम्मुल दुश्वार हो तो चालीसवां हिस्सा कम करना चाहिए।)

हज़रत सह्ल तस्तरी रह० से किसी ने पूछा कि आपके मुजाहदों की इब्तिदा किस तरह हुई, उन्होंने फ़रमाया कि मेरा सालाना ख़र्च इब्तिदा में तीन दिरहम था (यानी साढ़े दस आने) इब्तिदा में इसकी सूरत यह थी कि मैं एक दिरहम का तोदबस (अंगूर या खजूर का शीरा या रस) ले लेता था और एक दिरम का चावल का आटा और एक दिरम का घी और इन तीनों को मिला कर तीन सौ साठ लड्डू बना लेता था, एक रोज़ाना रोज़ा इफ़्तार करने के वक़्त खा लेता था। किसी ने पूछा कि अब क्या मामूल है? फ़रमाया, अब तो कोई मुतअय्यन चीज़ नहीं, जब मौक़ा हो, कुछ खा लेता हूँ (यह क़रीब ही गुज़र चुका है कि ये हज़रात बीस बीस दिन बग़ैर कुछ खाये गुज़ार देते थे।)

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि० फ़रमाते हैं कि मेरा गुज़रान हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में एक साअ् जौ (तक़्रीबन साढ़े तीन सेर) फ़ी हफ़्ता था, ख़ुदा की क़सम! मैं इस से ज़्यादा मरने तक कभी भी न बढ़ाऊंगा, इस लिए कि मैं ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना था कि तुम में से मुझे ज़्यादा महबूब और क़ियामत में मुझ से ज़्यादा क़रीब वह शख़्स होगा जो मरने तक उसी हाल पर रहे जिस पर अब है। इसी वजह से यह बाज़ हज़रात सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम पर एतिराज़ किया करते थे कि तुम ने वह तर्ज़ छोड़ दिया जो हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में था, तुमने जौ का आटा छानना शुरू कर दिया, हालांकि उस ज़माने में नहीं छाना जाता था, तुम ने पतली रोटियां खाना शुरू कर दीं, कई कई सालन दस्तरख़्वान पर आने लगे, तुम हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में ऐसे नहीं थे।

हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि मुसलमान की मिसाल बकरी के बच्चे की सी है, जिसे एक मुट्ठी पुरानी खजूर, एक मुट्ठी सत्तू, एक घूँट पानी काफ़ी है और मुनाफ़िक़ की मिसाल दरिंदे की सी है, हप हप, गट गट जो हो सब खा पी ले, न अपने पड़ोसी का ख़्याल करे न दूसरे को अपने ऊपर तर्जीह

दे। ज़रूरत से ज़ायद चीज़ें (सदक़ा करके) आगे भेज दो (तुम्हारे काम आयेंगी)

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ छः यौम का मुसलसल फ़ाक़ा कर लेते थे और हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि॰ सात दिन का फ़ाक़ा कर लेते थे। कहते हैं कि एक बुज़ुर्ग की एक राहिब से मुलाक़ात हुई, उस से बातें करते रहे, इसी में उस को इस्लाम की दावत भी दे दी, उस ने गुफ़्तगू के दौरान में कहा कि हज़रत मसीह (अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम) चालीस दिन का फ़ाक़ा कर लिया करते थे, यह बात मोजिज़ा ही के तौर पर हो सकती है, नबी के अलावा किसी से नहीं हो सकती। उन बुज़ुर्ग ने फ़रमाया कि अगर मैं पचास दिन का फ़ाक़ा कर दूँ। तब भी तुम मुसलमान हो जाओगे? उस राहिब ने कहा, ज़रूर। यह वहीं उसके पास ही ठहर गये, उस के पास रहते, जब पचास दिन पूरे हो गये तो कहने लगे कि यह तो वायदे के थे, दस दिन और ज़ायद लो, यह कह कर दस दिन का फ़ाक़ा और भी कर दिया। पूरे साठ दिन बाद खाना खाया: वह राहिब बड़ी ही हैरत में रह गया और मुसलमान हो गया।

एक हदीस में आया है कि हुज़ूर सल्ल॰ जब सुबह को खाना तनावुल फ़रमा लेते थे तो शाम को तनावुल न फ़रमाते थे और जब शाम को तनावुल फ़रमा लेते थे तो सुबह को तनावुल न फ़रमाते थे। *(जामिउस्सग़ीर)*

(यानी कभी ऐसा भी मामूल था) और भी पहले बुज़ुर्गों से एक वक़्त खाने का मामूल नक़ल किया गया है। इमाम राज़ी रह॰ फ़रमाते हैं कि जो शख़्स एक वक़्त खाने का आदी हो, उस के लिए बेहतर यह है कि सहरी के वक़्त खाए, ताकि दिन में रोज़े की फ़ज़ीलत हासिल हो और रात को नवाफ़िल और ज़िक्र वग़ैरह मेअ्दे के ख़ाली होने की हालत में हो। हज़रत मालिक बिन दीनार रह॰ का चालीस साल तक दूध को दिल चाहता रहा, मगर इस्तेमाल नहीं किया। एक मर्तबा कहीं से उनकी ख़िदमत में तर व ताज़ा खजूरें आयीं, अपने दोस्तों से फ़रमाया कि इनको खा लो, मैं ने तो इन को चालीस साल से नहीं चखा। *(एहया)*

इमाम ग़ज़ाली रह॰ ने बहुत कसरत से इस क़िस्म के वाक़िआत इन हज़रात के ज़िक्र फ़रमाये हैं। इन्ही मुजाहदों की बरकात से इन हज़रात से करामतों का ज़हूर था। अब इन हज़रात की करामतों का तो हर शख़्स ख़्वाहिशमंद है, मगर उसके लिए उन जैसे मुजाहदे भी तो किए जायें। हम लोगों को ग़िज़ायें तो उम्दा से उम्दा, बेहतर से बेहतर चाहियें, फिर मुजाहदे कैसे हों। एक बुज़ुर्ग ने

अपने किसी मिलने वाले की दावत की और उनके लिए दस्तर ख़्वान पर रोटियां रखीं। वह उन में से उलट पलट कर अच्छी रोटी तलाश करने लगे। मेज़बान बुज़ुर्ग ने फ़रमाया यह क्या कर रहे हो, जिस रोटी को तुम बुरी समझ कर छोड़ रहे हो, उसमें इतने इतने तो फ़वाइद हैं और इतनी इतनी मशक़्क़त उठाने वालों की इसमें मेहनत हुई है कि बहुत से काम करने वालों के अमल के बाद अब्र में पानी आया, फिर वह बरसा, फिर वह हवाओं की, ज़मीन की, चौपायों की, आदमियों की मेहनत इसमें लगी, जब तो यह रोटी तुम्हारे सामने आयी। इसके बाद तुम इसमें अच्छी बुरी छांटने लगे। कहते हैं कि एक रोटी पक कर तुम्हारे सामने नहीं आती जब तक उसमें तीन सौ साठ काम करने वालों का अमल नहीं होता, सब से अव्वल हज़रत मीकाईल अलैहिस्सलाम हैं जो अल्लाह तआला की रहमत के ख़ज़ाने से नाप कर चीज़ निकालते हैं, फिर वे फ़रिश्ते, जो अब्र पर मामूर हैं और बादलों को चलाते हैं, फिर चांद सूरज, आसमान फिर वे फ़रिश्ते जो हवाओं पर मामूर हैं, फिर चौपाये, सब से आख़िर में रोटी पकाने वाले। सच है पाक इर्शाद मेरे रब सुब्हानहू व तक़द्दुस का:-

وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا (ابراهيم ع ٥)

"व इन् तउद्दू निअ्-म तल्लाहि ला तुह्सूहा॰"

(इब्राहीम, रूकूअ 5)

'अगर तुम अल्लाह तलाआ की एक नेमत (और) उसकी तफ़्सीलात को शुमार करने लगो तो कभी भी पूरी नहीं गिन सकते।

इसके बाद निहायत अहम और क़ाबिले लिहाज़ चीज़ यह भी है कि कम खाने की अगर सूरत इख़्तियार करे तो उसमें रिया और हुब्बे जाह से बचने का भी बहुत एहतिमाम रखे। ऐसा न हो कि भूखा भी मरे और नफ़्स बजाय सालेह बनने के और ज़्यादा फ़ासिद बन जाये। उलमा ने लिखा है कि जो शख़्स खाने की ख़्वाहिश से भाग कर रिया की ख़्वाहिश में फंस जाये वह ऐसा है जैसा कि बिच्छू से भाग कर सांप के मुंह में चला जाये। *(एह्या)*

अलग़रज़ कम खाना महमूद है। दीन और दुनिया दोनों के कसीर फ़ायदे इसमें हैं, बशर्ते कि ज़ोअफ़ या रिया वग़ैरह किसी दूसरे ख़तरे में न पड़ जाये। अलबत्ता यह ज़रूरी है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िन्दगी को, हुज़ूर सल्ल॰ की मईशत और मुआशरत, हुज़ूर सल्ल॰ के फ़क्र

और फ़ाके को ज़ेहन में रखे, दिल से उसको पसंद करता रहे कि असल चीज़ वही है, हुज़ूर सल्ल० ने जो तर्ज़ इख़्तियार फ़रमाया था वह नादारी और मजबूरी से नहीं था, इस वजह से नहीं था कि मयस्सर नहीं आ सकता था, बल्कि खुशी और रग़बत से इसी तर्ज़ को पसंद फ़रमाया था।

एक मर्तबा हज़रत आइशा रज़ि० ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्ल० आप हक़ तआला शानुहू से रोज़ी की वुस्अत नहीं मांग लेते? हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि मैं यह कह कर और हुज़ूर सल्ल० की भूख की शिद्दत को देख कर रो पड़ी, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि आइशा, उस पाक ज़ात की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर अपने रब से यह मांगूं कि सोने के पहाड़ मेरे साथ साथ चला करें तो हक़ तआला शानुहू उनको भी मेरे साथ चला दे, लेकिन मैं ने दुनिया में भूखा रहने को पेट भरने पर तर्जीह दे रखी है। मैं ने दुनिया के फ़क्र को उस की सरवत पर तर्जीह दी है मै नें दुनिया के ग़म को उसकी खुशी पर तर्जीह दी है। आइशा, दुनिया मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और उस की आल के लिए मुनासिब नहीं है। हक़ तआला शानुहू ने उलुल अज़्म (यानी हिम्मत वाले और ऊँचे दर्जे के) रसूलों के लिए इसी को पसंद फ़रमाया है कि दुनिया की तक्लीफ़ों पर सब्र करें, दुनिया की राहतों से बचे रहें और जो चीज़ उनके लिए पसंद फ़रमाई थी, उसी का मुझे हुक्म है, चुनांचे इर्शाद है:-

فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ أُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ (محمد ع ٤)

"फ़स्बिर् कमा स-ब-र उलुल् अज़्मि मिनर्रूसुलि"

(मुहम्मद, रूकूअ 4)

'आप भी उसी तरह सब्र कीजिए जिस तरह उलुल अज़्म रसूलों ने सब्र किया।"

मेरे लिए अल्लाह के हुक्म की तामील के सिवा चारा नहीं है, मैं ख़ुदा की क़सम, जहां तक मेरी ताक़त है, ऐसा ही सब्र करूँगा जैसा कि उन्होंने किया और ताक़त तो अल्लाह ही के देने से आती है।

हदीस में आया है कि जब हज़रत उमर रज़ि० के ज़माने में फ़ुतूहात की कसरत बहुत हो गयी तो उनकी साहबज़ादी उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़्सा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि अब तो आप भी जब दूसरे मुल्कों के क़ासिद आयें तो बारीक

कपड़ा पहन लिया करें और किसी को खाना पकाने का हुक्म फ़रमा दिया करें, ताकि आप उन लोगों को खिलायें और आप भी उनके साथ खा लिया करें। हज़रत उमर रज़ि॰ ने इर्शाद फ़रमाया, यह तो तुम्हें मालूम है कि आदमी के हालात से उसके घर वाले ही अच्छी तरह वाक़िफ़ हुआ करते हैं। हज़रत हफ़्सा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया, बेशक, हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया, मैं तुम को क़सम देकर पूछता हूँ, क्या तुम्हें मालूम नहीं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नुबुव्वत के बाद इतने साल ज़िंदा रहे, इस ज़माने में हुज़ूर सल्ल॰ और हुज़ूर सल्ल॰ के घर वाले अगर रात को खाना नोश फ़रमा लेते थे, तो दिन में भूखे रहते थे और दिन में खा लेते थे, तो रात को भूखे रहते थे। क्या तुम्हें मालूम नहीं कि नुबुव्वत के बाद इतने साल तक हुज़ूर सल्ल॰ ज़िंदा रहे, लेकिन हुज़ूर सल्ल॰ ने और उनके घर वालों ने ख़ैबर के फ़त्ह होने तक कभी भी पेट भर कर खजूरें भी नहीं खायीं। मैं तुम से क़सम देकर पूछता हूँ, क्या तुम्हें मालूम नहीं कि एक मर्तबा तुमने ऊँचे ख़्वान पर (मेज़ की तरह) खाना रख दिया था, तो हुज़ूर सल्ल॰ के चेहरा-ए -अन्वर पर तग़य्युर आ गया था, यहां तक कि उसको हटा कर ज़मीन पर खाना रखा गया (जब हुज़ूर ने नोश फ़रमाया) मैं तुम से क़सम देकर पूछता हूँ, कि क्या तुम्हें मालूम नहीं कि हुज़ूर सल्ल॰ अपनी अबा को (चादर की एक क़िस्म) दोहरा करके उस पर आराम फ़रमाया करते थे। तुमने एक मर्तबा उसको चोहरा (चार तेह) करके बिछा दिया था तो हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि तुम ने मुझे रात के उठने से रोका (कि चार तह हो जाने से बिस्तरा नर्म हो गया, जिस से नींद अच्छी तरह आ गयी) इसको दोहरा ही कर दो जैसा कि रोज़ाना हुआ करता था। मैं तुम से क़सम देकर पूछता हूँ कि क्या तुम्हें मालूम नहीं कि हुज़ूर सल्ल॰ अपना कपड़ा धोने के लिए बदने मुबारक से उतारते और उसको धोते, ऐसी हालत में अगर बिलाल (रज़ि॰) नमाज़ के लिए बुलाने आ जाते थे तो हुज़ूर सल्ल॰ के पास दूसरा कपड़ा न था, जिसको पहन कर नमाज़ पढ़ायें, हुज़ूर सल्ल॰ उसी को खुश्क करके पहन कर नमाज़ पढ़ाया करते थे। मैं तुम से क़सम देकर पूछता हूँ कि क्या तुम्हें मालूम नहीं कि बनू ज़फ़र की एक औरत ने हुज़ूर सल्ल॰ के लिये दो कपड़े तैयार किये थे। एक लुंगी, एक चादर, उन में से उसने एक पहले भेज दिया, दूसरे को भेजने में देर लगी तो हुज़ूर सल्ल॰ उसी को (बदन पर इस तरह लपेट कर दोनों कोनों में गर्दन पर गिरह लगायी थी। कि बदन न खुल जाये) पहन कर नमाज़ के लिए तशरीफ़ ले गये,

हुज़ूर सल्ल॰ के पास दूसरा कपड़ा न था, जिस को पहन कर नमाज़ के लिए तशरीफ़ ले जाते।

इसी तरह और वाक़िआत गिनवाते रहे, यहां तक कि उन वाक़िआत को याद दिला कर हज़रत हफ़्सा रज़ि॰ को भी रूलाया और ख़ुद भी इतने रोये कि चीखें मारने लगे। हमें यह अंदेशा हुआ कि इस ग़म में कहीं उनकी जान न निकल जाये। एक और हदीस में है कि हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया, मेरे दो रफ़ीक़ थे (हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबू बक्र रज़ि॰) वे दोनों एक ही रास्ते पर चले, अगर मैं उनका रास्ता छोड़ कर दूसरा रास्ता इख़्तियार करूँ तो मेरे साथ भी वह मामला नहीं किया जायेगा जो उन के साथ किया गया मैं ख़ुदा-ए-पाक की क़सम उनकी (दुनिया की) सख़्त ज़िन्दगी पर अपने आपको मजबूर करूँगा ताकि (आख़िरत की) उनकी शादाब ज़िन्दगी को पा सकूँ। *(एह्या)*

फ़तावा आलमगीरिया में लिखा है कि खाने के चंद मरातिब हैं :-

1. पहला दर्जा फ़र्ज़ है और वह इतनी मिक़्दार है जिस से आदमी हलाकत से बचे। अगर कोई शख़्स इतना कम खाए या खाना पीना छोड़ दे जिस से हलाक हो जाए तो गुनाहगार होगा, और

2. दूसरा दर्जा सवाब का है कि इतनी मिक़्दार खाए, जिस से खड़े होकर नमाज़ पढ़ी जा सके और रोज़ा सहूलत से रख सके।

3. तीसरा दर्जा जायज़ का है और वह नं॰ 2 की मिक़्दार पर पेट भरने की मिक़्दार तक इज़ाफ़ा है ताकि बदन में क़ुव्वत पैदा हो। इस दर्जे में न तो सवाब है, न गुनाह है, मामूली हिसाब इस में है बशर्ते कि माल हलाल तरीक़े से हासिल हुआ हो,

4. चौथा दर्जा हराम है, वह पेट भरने से ज़ायद मिक़्दार है अलबत्ता इस दर्जे में अगर मक़्सूद रोज़े पर क़ुव्वत हो कि कल को रोज़ा रखना है या यह ग़रज़ हो कि मेहमान भूखा न रहे, तो इस मिक़्दार में भी मुज़ाइक़ा नहीं और कम खाने का ऐसा मुजाहदा, जिससे फ़राइज़ में नुक़्सान आवे, जायज़ नहीं, अलबत्ता अगर इस में नुक़्सान न आवे तो कम खाने का मुजाहदा करने में मुज़ाइक़ा नहीं कि इस में नफ़्स की इस्लाह भी है और खाना भी रग़बत से खाया जाता है। इसी तरह किसी जवान को कम खाने का मुजाहदा, ताकि उस की शहवत का ज़ोर टूट

जाये, जायज़ है। *(आलमगीरिया)*

इस तक़्सीम में नं॰ 2 पर साहिबे दुर्रे मुख़्तार रह॰ वग़ैरह ने कलाम किया है और इतनी मिक़्दार को फ़र्ज़ में दाख़िल किया है जिस से खड़े होकर नमाज़ पढ़ी जा सके। आलमगीरी की अख़ीर इबारत से भी इस की ताईद होती है।

(١٢) عن عليٌّ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من رضى من الله باليسير من الرزق رضى الله منه بالقليل من العمل رواه البيهقى فى الشعب كذا فى المشكوٰة

12. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स हक़ तआला शानुहू से थोड़ी रोज़ी पर राज़ी रहे, हक़ तआला शानुहू भी उसकी तरफ़ से थोड़े से अमल पर राज़ी हो जाते हैं।

फ़ायदा:- इस हदीसे पाक में आमदनी की कमी में हक़ तआला शानुहू के एक ख़ास एहसान पर तंबीह की गयी है कि इस सूरत में आदमी की तरफ़ से अगर नेकियों में कमी होती है, वह मालिकुल मुल्क भी उस कमी को बख़ुशी क़ुबूल फ़रमा लेते हैं। इस के बिल मुक़ाबिल जब अल्लाह तआला शानुहू की तरफ़ से अताया में इफ़रात हो और आदमी किसी चीज़ में कमी को भी गवारा न करे, तो उस मालिक की तरफ़ से भी यही मुतालबा है कि फिर उसके हुक़ूक़ की अदायगी में तुम्हारी तरफ़ से भी इफ़रात होना चाहिए और ज़ाहिर है कि जिस मुलाज़िम को तनख़्वाह मुंह मांगी दी जाए, फिर वह अपनी मन्सबी ख़िदमत में कोताही करे तो उसकी नमक हरामी में क्या तरद्दुद है,लेकिन हमारा मामला इसके बरअक्स है कि ग़ुरबा को तो अल्लाह तआला की तरफ़ रूजूअ् करने की तौफ़ीक़ भी हो जाती है, ज़िक्र और नवाफ़िल के लिए वक़्त भी मिल जाता है, लेकिन जहां चार पैसे हाथ में आए या उनके आने के असबाब पैदा हुए, फिर फ़र्ज़ नमाज़ों के वास्ते भी वक़्त नहीं मिलता और क़लील रोज़ी पर क़नाअत जब हासिल हो सकती है जब आदमी पांच बातों का एहतिमाम करे:-

1. अपने इख़्राजात में कमी करे, ज़रूरत की मिक़्दार से ज़्यादा ख़र्च न करे, उलमा ने लिखा है कि तंहा आदमी हो तो उसको एक जोड़ा काफ़ी है, कई कई जोड़े बनाने की ज़रूरत नहीं है, ऐसे ही मामूली रोटी सालन पर गुज़र हो सकता है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो ख़र्च में मियाना रवी इख़्तियार करे, वह फ़क़ीर नहीं होता।

2. अगर बक़द्रे ज़रूरत मयस्सर हो तो आइंदा की फ़िक्र में न पड़े और

हक़ तआला शानुहू के वायदे पर एतिमाद करे कि हक़ तआला शानुहू ने रोज़ी का ज़िम्मा ले रखा है। शैतान हमेशा आदमी को आइन्दा की सोच में डाले रखा करता है कि कुछ ज़ख़ीरा फ़ंड के तौर पर जमा रखना चाहिए, आदमी के साथ हरज भी लगा हुआ है, बीमारी भी लगी हुई है, वक़्ती इख़राजात भी पेश आते रहते हैं फिर तुझे दिक़्क़त और मशक़्क़त होगी और इन ख़्यालात की वजह से उसको मशक़्क़त और आइंदा के फ़िक्र और सोच में परेशान रखा करता है, और फिर आदमी का मज़ाक उड़ाया करता है कि यह बेवक़ूफ़ आइंदा की तक्लीफ़ के डर से जो मौहूम है, इस वक़्त की यक़ीनी मशक़्क़त और तक्लीफ़ उठा रहा है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰ से इर्शाद फ़रमाया कि अपने ऊपर ज़्यादा ग़म सवार न करो, जो मुक़द्दर में है, वह होकर रहेगा और जितनी रोज़ी तुम्हारी है, वह आकर रहेगी। हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि हक़ तआला शानुहू अपने मोमिन बंदे को रोज़ी उस जगह से अता फ़रमाते हैं जहां से उसका गुमान भी न हो और क़ुरआन पाक में भी यह मज़्मून वारिद है।

3. इस अम्र पर ग़ौर किया करे कि थोड़े पर क़नाअत में लोगों से इस्तिग़्ना की कितनी बड़ी इज़्ज़त हासिल है और हिर्स और तमअ् में लोगों के सामने कितना ज़लील होना पड़ता है। इसको बहुत एहतिमाम से ग़ौर किया करे कि उसको एक तक्लीफ़ ज़रूर बर्दाश्त करनी है या लोगों के सामने हाथ फैलाने की ज़िल्लत की या अपने नफ़्स को लज़ीज़ चीज़ों से रोकने की। और यह दूसरी तक्लीफ़ जो है, उस पर अल्लाह के यहां सवाब का वायदा भी है और पहली में आख़िरत का वबाल है, इसके अलावा लोगों के सामने हाथ फैलाने वाला आदमी उनको हक़ बात कहने से रूक जाता है। अक्सर दीन के बारे में मुदाहनत करनी पड़ती है। हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि आदमी की इज़्ज़त उसका लोगों से इस्तिग़्ना है। इसी वजह से मशहूर मक़ूला है कि जिस से तू इस्तिग़्ना करे तू उस का हमसर है (यानी उसे देने पर मजबूर नहीं है) और जिसकी तरफ़ एहतियाज पेश करे, उसका क़ैदी है और जिस पर एहसान करे, उसका हाकिम है।

4. दुनियादार मालदारों के अंजाम को सोचा करे, यहूद नसारा और बेदीन सरवत वालों का अंजाम सोचे, और अंबिया और औलिया का अंजाम सोचे उन के हालात को ग़ौर से पढ़े और तहक़ीक़ करे, फिर अपने नफ़्स से पूछे कि अल्लाह के मुक़र्रब लोगों की जमाअत में शरीक होना पसंद करता है या

अहमक़ों और बेदीन लोगों की मुशाबहत पसंद करता है।

5. माल के ज़्यादा होने में जो ख़तरात पहले बयान हो चुके हैं, उन को ग़ौर किया करे कि कितने मसाइब इसके साथ हैं, जब आदमी इन पांचों को ग़ौर करता रहेगा, तो थोड़े पर क़नाअत आसान हो जायेगी। *(एह्या)*

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि वह शख़्स फ़लाह को पहुँच गया जो मुसलमान हो और थोड़ी रोज़ी दिया गया हो और हक़ तआला शानुहू ने उसको उसी पर क़नाअत अता फ़रमा रखी हो। हज़रत फ़ुज़ाला बिन उबैद रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि मुबारक है वह शख़्स जिसको इस्लाम लाने की तौफ़ीक़ हो गयी हो और उस की आमदनी बक़द्रे ज़रूरत हो और उस पर वह क़ानेअ् हो। *(तर्ग़ीब)*

हज़रत अबूदर्दा रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जब भी सूरज निकलता है उसके दोनों जानिब फ़रिश्ते रोज़ाना यह एलान करते हैं, ऐ लोगो! अपने रब की तरफ़ मुतवज्जह हो जाओ, जो माल थोड़ा हो और वह किफ़ायत कर जाए, वह बेहतर है उस कसीर माल से जो अल्लाह तआला शानुहू के अलावा दूसरी तरफ़ मश्ग़ूल करे।

(١٣) عن معاذ بن جبلؓ ان رسول الله صلى الله عليه وسلم لما بعث به الى اليمن قال اياك والتنعم فان عباد الله ليسوا بالمتنعمين رواه احمد كذا فى المشكوٰة

13. हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको यमन (का हाकिम बना कर) भेजा तो यह इर्शाद फ़रमाया कि अपने आपको नाज़ व नेमत में परवरिश करने से बचाते रहना, इसलिए कि अल्लाह के नेक बंदे नाज़ व नेमत में लगने वाले नहीं होते।

फ़ायदा:- हाकिम और गवर्नर हो जाने के बाद राहत व आराम के असबाब कसरत से मुहैया हो ही जाते हैं, हर क़िस्म की नेमतें भी आसानी से मयस्सर हो जाती हैं, इसलिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने, जब कि यह हाकिम बना कर भेजे जा रहे थे, इस चीज़ से बचने की ख़ुसूसी तंबीह फ़रमायी। हुज़ूर सल्ल॰ की वसाया में, इसी तरह हज़रात ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन की वसाया और अहकाम में इस चीज़ पर ख़ास तौर से तंबीहें बड़ी क़सरत से की गयी हैं।

—हज़रत फ़ुज़ाला बिन उबैद रज़ि०, अमीर मुआविया रज़ि० की तरफ़ से मिस्र के क़ाज़ी थे, उनकी ख़िदमत में एक सहाबी रज़ि० किसी हदीस की तहक़ीक़ के लिए तश्रीफ़ ले गये, उन्होंने जाकर देखा कि क़ाज़ी साहब के बाल भी परेशान से हैं और पांव भी नंगे हैं, उन्होंने दर्याफ़्त किया कि तुम इस ज़मीन के हाकिम हो, मैं तुम्हारे बालों को बिखरा हुआ देख रहा हूँ। हज़रत फ़ुज़ाला रज़ि० ने फ़रमाया कि हुज़ूर सल्ल० ने हमें ज़ेब व ज़ीनत की कसरत से मना फ़रमाया था, फिर उन्होंने पूछा कि मैं तुम्हें नंगे पावं देख रहा हूँ, हज़रत फ़ुज़ाला रज़ि० ने फ़रमाया कि हमें हुज़ूर सल्ल० का यह भी इर्शाद था कि कभी नंगे पांव भी चला करें। अब्दुल्लाह में बिन मुग़फ़्फ़ल रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने बालों में रोज़ाना कंघा करने से मना फ़रमाया है। *(अबू दाऊद)*

(١٤) عن جبير بن نفير مرسلا قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم ما اوحى الى ان اجمع المال واكون من التاجرين ولكن اوحى الى ان سَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ (رواه فى شرح السنة وابونعيم فى الحلية عن ابى مسلم كذا فى المشكوٰة

14. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि मुझे हक़ तआला शानुहू ने यह वही नहीं भेजी कि मैं ताजिर बनूं और माल जमा करूँ, बल्कि यह वही भेजी है कि (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तुम अपने परवर दिगार की तस्बीह और तहमीद करते रहो और नमाज़ें पढ़ने वालों में रहो और अपने रब की इबादत करते रहो, यहां तक कि (इसी हालत में) तुमको मौत आ जाये।

फ़ायदा:- यह वही जिसकी तरफ़ इशारा फ़रमाया है, सूरः हिज्र की आख़िरी आयत है और हदीसे पाक का यह मज़्मून मुतअद्दद सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम से नक़ल किया गया। चुनांचे सुयूती रह० ने दुर्रे मंसूर में हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद, अबू मुस्लिम ख़ौलानी, अबूदर्दा रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन से हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद नक़ल किया है।

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद नक़ल किया गया है कि बेहतरीन आदमी दो शख़्स हैं:-

1. एक वह जो अपने घोड़ों की बाग पकड़े हुए अल्लाह के रास्ते में जान दे देने को तलाश करता फिरता हो।

2. दूसरा वह शख़्स जिसके पास चंद बकरियां हों और किसी जंगल या पहाड़ी में (यानी ग़ैर मारूफ़ जगह, जहां यकसूई हो) नमाज़ पढ़ता हो, ज़कात देता हो, अपने मौला की इबादत में मशग़ूल रहे, यहां तक कि उसको उसी हालत में मौत आ जाये, आदमियों को उस से ख़ैर के सिवा कोई (शर) न पहुँचे।

(दुर्रे मंसूर)

हक़ तआला शानुहू के इस पाक इर्शाद की तामील जिस तरह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने विसाल तक करके दिखा दी, वह हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० की सीरत पर नज़र रखने वालों से मख़्फ़ी नहीं और फिर जितने जितने हक़ तआला शानुहू की तरफ़ से इन्आमात ज़्यादा होते थे, उतना ही हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ से इबादत में इन्हिमाक ज़्यादा होता था।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि जब सूरः फ़त्ह नाज़िल हुई तो हुज़ूर सल्ल० ने इबादत में और भी ज़्यादा कोशिश शुरू कर दी। किसी ने पूछा, या रसूलल्लाह सल्ल० इस आयते शरीफ़ा में तो आपकी अगली पिछली लग्ज़िशें सब ही माफ़ कर दी गयीं, फिर इतनी मशक़्क़त हुज़ूर सल्ल० बर्दाश्त करते हैं? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया क्या मैं शुक्र गुज़ार बंदा न बनूँ।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब सूरः फ़त्ह नाज़िल हुई तो हुज़ूर सल्ल० ने इतनी तवील नमाज़ कर दी कि पांव पर वरम आ गया और इबादत में इतनी कसरत कर दी कि सूख कर पुरानी मशक की तरह से हो गये और जब वह अर्ज़ किया गया जो ऊपर गुज़रा तो हुज़ूर सल्ल० ने वही जवाब इर्शाद फ़रमाया कि क्या मैं शुक्र गुज़ार बंदा न बनूँ?

हज़रत हसन रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० इबादत में इतनी ज़्यादा कोशिश फ़रमाते थे कि पुरानी मशक की तरह से बिल्कुल सूख गये थे, इसके बाद फिर वही सवाल व जवाब ज़िक्र फ़रमाया। हज़रत अबू जुहैफ़ा रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० इतनी लंबी नमाज़ पढ़ते थे कि पांव मुबारक फट गये थे। हज़रत अनस रज़ि० कहते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इतनी देर तक नमाज़ में खड़े रहते थे कि पांव पर वरम आ गया था।

इनके अलावा और भी बहुत सी अहादीस में कसरत से इस क़िस्म के मज़्मून नक़ल किये गये और उन में से अक्सर में लोगों की तरफ़ से यही दर्ख़्वास्त कि हुज़ूर सल्ल० के लिए तो माफ़ी का क़त्ई इर्शाद क़ुरआन पाक में

आ चुका है और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यही जवाब "क्या मैं शुक्र गुज़ार बंदा न बनूं?" ज़िक्र किया गया है। (दुर्रे मंसूर)

क्या हम लोग भी कभी इस चीज़ को सोच लेते हैं कि हक़ तआला शानुहू का फ़लां ख़ुसूसी इंआम हुआ है, उसके शुक्राने में दो रकअत मुख़्तसर ही पढ़ लें।

मुतअद्दद अहादीस में आया है कि जब हुज़ूर सल्ल॰ के पास कहीं से फ़त्ह की ख़बर आती या कोई ख़ुशी की बात सुनने में आती, हुज़ूर सल्ल॰ शुक्र के लिए सज्दे में गिर जाते थे और इन सब अहवाल के बावजूद अल्लाह तआला शानुहू से ख़ौफ़ का यह हाल था कि :-

बुख़ारी शरीफ़ में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल किया गया, ख़ुदा की क़सम, मुझे मालूम नहीं, हालांकि मैं अल्लाह का रसूल हूं कि क़ियामत में मेरे साथ और तुम्हारे साथ क्या मामला किया जायेगा। *(मिश्कात)*

"मालूम नहीं का मतलब यह है कि तफ़्सीली अहवाल का इल्म नहीं, बा-इख़्तियार बादशाह को हक़ है कि जो चाहे करे।"

हज़रत उम्मे दर्दा रज़ि॰ ने अपने ख़ाविंद हज़रत अबू दर्दा रज़ि॰ से अर्ज़ किया, कि आप इस तरह माल की तलाश और जुस्तजू क्यों नहीं करते, जिस तरह फलां शख़्स करते हैं। (आख़िर वह भी तो माल कमाते हैं, तुमको तो इसकी फ़िक्र ही नहीं) हज़रत अबूदर्दा रज़ि॰ ने फ़रमाया कि मैं ने हुज़ूर सल्ल॰ से सुना है कि तुम्हारे आगे एक बड़ी दुश्वार गुज़ार घाटी (मैदाने हश्र) आने वाली है, उसमें से भारी बोझ वाले (जिनके ज़िम्मे हिसाब किताब का बोझ हो, सहूलत से) नहीं गुज़र सकते, इसलिए मेरा दिल चाहता है कि मैं उस घाटी में हल्का रहूँ। *(मिश्कात)*

यानी मेरे ज़िम्मे हिसाब का ज़्यादा बोझ न हो ताकि मैं हल्का फुल्का उसमें से गुज़र जाऊँ।

इन हज़रात को बहुत ही ख़ौफ़ इसका रहता था कि क़ियामत में क्या गुज़रेगी? इसलिए हर वक़्त वहां की फ़िक्र और तैयारी में मशग़ूल रहते थे और हमको हर वक़्त दुनिया का फ़िक्र सवार रहता है और उस घाटी का ख़्याल भी नहीं आता।

हस्सान बिन सिनान रह॰ एक जगह जा रहे थे, रास्ते में एक मकान नज़र

पड़ गया जो पहले से वहां न था, कहने लगे, यह मकान कब बना है, फिर अपने नफ़्स को ख़िताब करके कहा, तूने फ़ुज़ूल बात क्यों पूछी? तुझे इस से क्या ग़रज़ थी कि यह कब बना? तुझे एक साल रोज़े रखने की सज़ा दूंगा। एक साल तक रोज़े रखे कि फ़ुज़ूल बात क्यों की?

मालिक बिन ज़ैग़म रज़ि॰ कहते हैं कि हज़रत रिबाह क़ैसी रज़ि॰ हमारे घर अस्र के बाद आए और मेरे वालिद को पूछने लगे कि कहां है? मैं ने कहा सो रहे हैं। कहने लगे कि यह वक़्त क्या सोने का है? यह कह कर वापस चले गये। मैं ने उनके पीछे आदमी भेजा कि अगर आप फ़रमावें तो जगा दें। वह आदमी उनके पीछे गया तो वह इतने में एक क़ब्रस्तान में दाख़िल हो चुके थे और वहां अपने आप को मलामत कर रहे थे और यह कह रहे थे, हां! क्या यह सोने का वक़्त है? तुझे इस से क्या मतलब था, आदमी जिस वक़्त चाहे सोए, तुझे क्या ख़बर थी कि यह सोने का वक़्त है या नहीं है। मुझे अल्लाह की क़सम कि तुझे साल भर तक ज़मीन पर सोने के लिए नहीं लिटाऊँगा। मगर यह कि तू बीमार हो जाये या तेरी अक़्ल जाती रहे तो मजबूरी है। तेरा नास हो, तू कब तक लोगों पर तान करता रहेगा। तू अपनी हरकतों से बाज़ नहीं आयेगा। यह कहते जाते थे और रोते जाते थे। वह क़ासिद यह देख कर वापस आ गया और उस की हिम्मत न पड़ी कि उनसे कोई बात करे।

हज़रत तल्हा रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि एक सहाबी रज़ि॰ एक दिन अपने कपड़े उतार कर सख़्त गर्म रेत में लोट रहे थे और यह कह रहे थे कि मज़ा चख ले और जहन्नम की गर्मी इस से बहुत ज़्यादा सख़्त होगी। रात को मुर्दार बना (सोता) रहता है, दिन को बेकार फिरता है। वह इसी हाल में थे कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको देख लिया, उनके पास तशरीफ़ ले गये। वह अर्ज़ करने लगे, हुज़ूर सल्ल॰! मेरी तबीअत पर ऐसा ग़लबा इसका हुआ क्या अर्ज़ करूँ? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया तुम्हें इसकी ज़रूरत न थी। तुम्हारे लिए आसमान के सब दरवाज़े खोल दिये गये और अल्लाह जल्ल शानुहू तुम्हारे साथ अपने फ़रिश्तों से फ़ख़्र कर रहे हैं, फिर हुज़ूर सल्ल॰ ने अपने साथियों से फ़रमाया कि अपने लिए इन से तोशा लो, सब ने उन से दुआ की दर्ख़्वास्त की, फिर हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि सबके लिए दुआ करो।

हज़रत हुज़ैफ़ा बिन क़तादा रज़ि॰ कहते हैं कि एक शख़्स ने एक बुज़ुर्ग से पूछा कि जब तुम्हारा नफ़्स किसी चीज़ को चाहे, तो तुम इसकी क्या सूरत

इख़्तियार करते हो, वह कहने लगे कि मुझे अपने नफ़्स से जितना बुग़्ज़ है उतना सारी दुनिया में किसी से भी नहीं, भला मैं उसकी ख़्वाहिश को कैसे पूरा कर सकता हूँ, जिस से मुझे इस क़दर नफ़रत हो।

हज़रत मज्मअ् रज़ि॰ ने एक मर्तबा कोठे की तरफ़ मुँह उठाया तो एक ना मेहरम औरत पर निगाह पड़ गयी, उन्होंने अह्द कर लिया कि जब तक ज़िंदा रहूँगा कभी सर ऊपर नहीं उठाऊंगा।

इसके अलावा बहुत से वाक़िआत इन हज़रात के इमाम ग़ज़ाली रह॰ ने नक़ल किये हैं, जिन में ज़रा सी मामूली बात भी अगर उनसे सादिर हो जाती थी तो अपने नफ़्स को सख़्त सज़ा देते थे और यह सब क्यों था, सिर्फ़ उसी घाटी के डर की वजह से जिस का अबूदर्दा रज़ि॰ ने अपनी बीवी से ज़िक्र किया, और हम सब उस से ऐसे मुत्मइन हैं जैसा कि वह घाटी इन हज़राते सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ के ही रास्ते में आयेगी, हम तो हवाई जहाज़ में सवार होकर उस पर से गुज़र जायेंगे। हम लोग किस क़द्र अपनी जानों पर ज़ुल्म कर रहे हैं कि भूल कर भी उस घाटी का ख़्याल नहीं आता?

इसके बाद इमाम ग़ज़ाली रह॰ तहरीर फ़रमाते हैं कि बड़े ताज्जुब की बात है कि तू अपने ग़ुलाम को (अपने नौकर को) अपनी औलाद को जब उन से कोई कोताही हो जाती है, सज़ा देता है और यह कहता है कि अगर तंबीह न की गयी तो वे बेक़ाबू हो जायेंगे, सरकश हो जायेंगे, लेकिन अपने नफ़्स की कभी परवाह नहीं करता कि यह सरकश होता जा रहा है। दूसरों की सरकशी से तुझे इतना नुक़्सान नहीं पहुँचता जितना तेरे नफ़्स की सरकशी से तुझे नुक़्सान पहुँचता है, इसलिये कि दूसरों की सरकशी से अगर नुक़्सान पहुँचता है तो वह तेरी दुनिया का नुक़्सान है और तेरे नफ़्स की सरकशी से तेरी आख़िरत को नुक़्सान पहुँच रहा है, जो कभी फ़ना होने वाली नहीं हैं, उसकी नेमतें ख़त्म होने वाली नहीं हैं, उनका नुकसान कितना सख़्त नुक़्सान है। यही वजह है कि असलाफ़ में से अगर किसी से आख़िरत के कामों में कुछ कोताही हो जाती थी तो वह उसकी तलाफ़ी की इंतहाई फ़िक्र करता था।

हज़रत उमर रज़ि॰ की एक मर्तबा अस्र की नमाज़ जमाअत से फ़ौत हो गयी तो उन्होंने उसकी तलाफ़ी में एक बाग़ जिसकी क़ीमत दो लाख दिरम थी, सदक़ा कर दिया।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ की जिस दिन किसी नमाज़ की जमाअत फ़ौत हो जाती तो उस दिन शाम को सारी रात जागा करते थे। एक दिन मग़्रिब की नमाज़ को देर हो गयी थी तो दो गुलाम उसकी तलाफ़ी में आज़ाद किये।

जब किसी शख़्स को इबादत में सुस्ती पैदा हो तो मुनासिब यह है कि हक़ तआला शानुहू के किसी ऐसे बंदे की सोहबत में रहे जो इबादत में ज़्यादा इह्तिमाक से मशग़ूल हो और अगर किसी ऐसे की सोहबत मयस्सर न आवे तो फ़िर ऐसे लोगों के अहवाल को इबरत और ग़ौर की निगाह से पढ़ा करे (जिन में से बहुत से वाक़िआत रौज़ुर्रियाहीन में लिखे हैं जिसका मुख़्तसर उर्दू तर्जुमा नुज़्हतुल बसातीन भी है।)

एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि जब मुझे इबादात में सुस्ती होने लगती है तो मैं हज़रत मुहम्मद बिन वासेअ् रह॰ के हालात देखता हूँ और एक हफ़्ता मुसलसल इस अमल को जारी रखता हूँ। (इसी तरह दूसरे औलिया अल्लाह की सवानेह उमरियां हैं बशर्ते कि मोतबर हज़रात की लिखी हुई हों) कि इन लोगों के अहवाल का देखना इस शौक़ के पैदा करने के लिए बहुत ज़्यादा मुफ़ीद है और यह चीज़ भी सोचने की है कि उनकी सारी मशक़्क़तें और मेहनतें आख़िर ख़त्म हो गयीं, लेकिन अब हमेशा हमेशा के लिए उनकी नेमतें, उनकी राहतें बाक़ी रह गयीं जो कभी भी ख़त्म होने वाली नहीं हैं। किस क़दर हसरत है हम जैसों पर जो इन अहवाल को जानते और देखते हुए भी दुनिया कमाने और दुनिया की लज़्ज़तों में मशग़ूल रहते हैं और उन हमेशा के मज़े उड़ाने वालों के हालात से भी नसीहत नहीं पकड़ते।

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू का इर्शाद है और बाज़ लोगों ने इसे हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद बताया है कि हक़ तआला शानुहू ऐसे लोगों पर रहम फ़रमाये जिनको लोग बीमार समझें और वे वाक़ेअ् (हक़ीक़त) में बीमार न हों, हज़रत हसन बसरी रह॰ फ़रमाते हैं कि उन को इबादात की कसरत ने मशक़्क़त में डाल रखा है जिस से लोग उनको बीमार समझते हैं।

उनका यह भी इर्शाद है कि मैं ने ऐसे हज़रात को देखा है और उन की सोहबतों में रहा हूँ, जिनको दुनिया की किसी चीज़ के आने से ख़ुशी न होती थी, जाने से रंज न होता था, उनकी निगाह में दुनिया के माल व मताअ् की हक़ीक़त उस मिट्टी से ज़्यादा ज़लील न थी जो जूतों में लगी रहती है।

मैं ने ऐसे लोगों को देखा है कि उम्र भर में कभी न उनका कोई कपड़ा तेह होकर रखा गया, न कभी किसी खाने की चीज़ के पकाने की फ़रमाइश की, न कभी सोने के लिए उनको बिस्तरे की ज़रूरत हुई, ज़मीन पर लेटे सो गये। ज़मीन के और उनके दर्मियान में कोई चीज़ भी आड़ न होती थी। वे लोग अल्लाह की किताब पर अमल करने वाले थे, उस के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत का इत्तिबाअ् करने वाले थे। जब रात हो जाती तो सारी रात पाँवों पर (नमाज़ में) खड़े रहते या ज़मीन पर अपने मुंह को (सज्दे में) बिछा देते और उनकी आंखों से उन के रूख़सारों पर आंसुओं की लड़ी बंधी रहती। रात भर अपने रब से बातें करते रहते (सही हदीस में आया है कि नमाज़ी आदमी अल्लाह तआला से बातें करता है।) अज़ाब से निजात को अपने मौला से मांगते रहते, जब कोई नेक काम उन से हो जाता, उस पर अल्लाह तआला का बड़ा शुक्र अदा करते, उस से खुश होते और उस के क़ुबूल होने की दुआ करते, जब कोई बुरी बात हो जाती उस से बहुत रंजीदा होते, अल्लाह से तौबा करते, माफ़ी की दुआ और इस्तिग़फ़ार करते। इसी हाल में उन्होंने अपनी उम्रें गुज़ार दीं।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० जब बीमार हुए तो एक मज्मा उनकी इयादत के लिए गया, उन में एक नौजवान निहायत कमज़ोर ज़र्द रंग, दुबला पतला भी था। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० ने दर्याफ़्त फ़रमाया, तुम्हारा यह क्या हाल हो रहा है? वह कहने लगे कि आज़ार और बीमारियां लाहक़ (लगी) हैं। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० ने फ़रमाया कि नहीं, सही बात बताओ? वह कहने लगे कि मैं ने दुनिया का मज़ा चखा, वह बहुत ही कड़वा निकला, उस की रौनक़, उस की हलावत, उस का लुत्फ़ उस की राहत मेरी निगाह में बहुत ही ज़लील बन गयी, उस का सोना और उस का पत्थर, मेरी निगाहों में बिल्कुल बराबर है, और अल्लाह तआला शानुहू का अर्श गोया हर वक़्त मेरे सामने रहता है और मैदाने हश्र में एक जमाअत का जन्नत की तरफ़ जाना, दूसरी जमाअत का जहन्नम में फेंका जाना मेरी निगाह के गोया सामने रहता है जिसकी वजह से मैं सारे दिन अपने को (रोज़े में) प्यासा रखता हूँ और सारी रात (अल्लाह की याद में) जागता रहता हूँ और ये दोनों चीज़ें भी अल्लाह तआला के सवाब और अज़ाब के मुक़ाबले में कोई भी हक़ीक़त नहीं रखतीं।

हज़रत दाऊद ताई रह० रोटी के टुकड़े पानी में भीगे हुए पी लिया करते थे, रोटी न खाते थे। किसी ने उन से इसकी वजह दर्याफ़्त की तो फ़रमाया कि

इसके पीने में और रोटी चबा कर खाने में क़ुरआन पाक की पचास आयतों का हर्ज होता है। एक दिन उनके घर में कोई शख़्स आया वह कहने लगा कि आपके हुजरे की कड़ी टूट गयी, वह फ़रमाने लगे कि मैं ने बीस बरस से इसकी छत नहीं देखी।

ये हज़रात जैसे फ़ुज़ूल बात करने से एहतिराज़ करते थे। ऐसे ही इधर उधर फ़ुज़ूल देखने से भी बचते थे।

मुहम्मद बिन अब्दुल अज़ीज़ रह॰ कहते हैं कि मैं अहमद बिन रज़ीन रह॰ के पास सुबह से अस्र तक रहा, मैं ने उन को इधर उधर देखते हुए नहीं देखा, किसी ने उनसे इसके मुताल्लिक़ पूछा तो फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने ये आंखें इसलिए दी हैं कि इन से उस की अज़्मत और बड़ाई की चीज़ों को इब्रत की निगाह से देखे, जब यह न हो तो वह देखना ख़ता है।

हज़रत मस्रूक़ रज़ि॰ की बीवी कहती हैं कि मस्रूक़ रज़ि॰ की पिण्डलियों पर रात भर नमाज़ में खड़े रहने से वरम आ जाता था, जब वह नमाज़ में मुन्हमिक होते तो मैं उनके पीछे बैठी हुई उनकी हालत पर तरस खाकर रोती रहती थी।

हज़रत अबू दर्दा रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि अगर दुनिया में तीन लज़्ज़त की चीज़ें न होतीं तो मेरे लिए इस दुनिया में एक दिन जीना भी गवारा न था:-

1. एक सख़्त गर्मी के दिन दोपहर के वक़्त (रोज़े में) प्यासे रहने की लज़्ज़त।

2. दूसरी आख़िरी शब (रात) में सज्दा करने में जो लुत्फ़ आता है, उस की लज़्ज़त,

3. तीसरी ऐसे बुज़ुर्गों की सोहबत जिनकी बातों में उमदा मेवे ऐसे चुने जाते हैं जैसे बाग़ में से उम्दा से उम्दा फल छांट कर चुने जाते हैं।

असवद बिन यज़ीद रह॰ इबादत में इतनी मशक़्क़त उठाते और गर्मियों की शिद्दत में रोज़े रखते कि उनका बदन काला पड़ गया था। अल्क़मा बिन क़ैस रज़ि॰ ने उन से पूछा कि आप अपने बदन को इस क़दर अज़ाब क्यों देते हैं? फ़रमाने लगे (क़ियामत में) इस के एज़ाज़ के लिए यानी यह मशक़्क़त इस लिए उठाता हूँ कि क़यामत के दिन इस बदन को एज़ाज़ नसीब हो जाये।

एक बुज़ुर्ग का क़िस्सा लिखा है कि वह रोज़ाना एक हज़ार रक्अत

नमाज़ खड़े होकर पढ़ते, जब पांव रह जाते यानी खड़े होने से आजिज़ हो जाते, तो एक हज़ार रक्अत बैठकर पढ़ते और अम्र के बाद आजिज़ी से बैठकर कहते या अल्लाह, इस मख़्लूक़ पर बड़ी हैरत है कि किस क़दर उन्होंने तेरा बदल दूसरी चीज़ों को बना लिया, कैसी ताज्जुब की बात है, उनका दिल तेरे सिवा किसी चीज़ से किस तरह मानूस होता है बल्कि ताज्जुब की बात यह है कि तेरे ज़िक्र के सिवा कोई दूसरी चीज़ उनके दिल में किस तरह चमकती है।

हज़रत जुनैद बग़दादी रह० फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रत सिर्री सक़ती रह० से ज़्यादा इबादत करने वाला किसी को नहीं देखा, अट्ठानवें बरस तक किसी ने उनको मरज़ुल मौत के अलावा लेटे हुए नहीं देखा।

हज़रत अबू मुहम्मद जरीरी रह० ने मक्का मुकर्रमा में एक साल का एतिकाफ़ किया, जिस में न तो बिल्कुल सोए, न बात की. न किसी लकड़ी या दीवार का साहारा लिया या टेक लगायी। हज़रत अबूबक्र कतानी रह० ने उन से पूछा कि इस मुजाहदे पर तुम्हें किस चीज़ से क़ुदरत हासिल हुई? वह फ़रमाने लगे कि अल्लाह तआला शानुहू ने मेरे बातिन की पुख़्तगी को देखा, उस ने मेरे ज़ाहिर को इस पर क़ुदरत अता फ़रमा दी। हज़रत अबूबक्र कतानी रह० ने यह सुन कर सोच और फ़िक्र में गर्दन झुका ली और थोड़ी देर कुछ सोचते रहे फिर इसी सोच व फ़िक्र में चले गये।

एक शख़्स कहते हैं कि मैं हज़रत फ़त्ह बिन सईद मूसली रह० के पास से गुज़रा, वह दोनों हाथ फैलाये रो रहे थे और उनके आंसू उंगलियों के बीच में से नीचे गिर रहे थे और वे ज़र्द थे (यानी आंसुओं में ख़ून की आमेज़िश थी) मैं ने उन से क़सम देकर पूछा कि यह ख़ून के आंसू किस सदमे में गिरा रहे हो, (ख़ैर तो है क्या आफ़त आ गयी) वह फ़रमाने लगे कि अगर तुम क़सम न देते तो मैं न बताता। हां मैं इस पर रो रहा हूं कि मैं ने हक़ तआला शानुहू का जो हक़ मुझ पर था, उस को अदा नहीं किया। मैं ने कहा कि ख़ून क्यों आ गया? कहने लगे, कि इस ख़ौफ़ से कि मेरा यह रोना कहीं ग़ैर मोतबर और झूठा (निफ़ाक़ से) न हो।

वह शख़्स कहते हैं कि जब उनका इंतिक़ाल हो गया तो मैं ने उनको ख़्वाब में देखा, मैं ने उन से पूछा कि आपके साथ क्या मामला हुआ? फ़रमाया कि मेरी मग़्फ़िरत हो गयी। मैं ने पूछा कि तुम्हारे आंसुओं का क्या हश्र हुआ?

फ़रमाया कि हक़ तआला शानुहू ने मुझे अपने क़रीब फ़रमा कर इर्शाद फ़रमाया कि ये आंसू कैसे थे, मैं ने अर्ज़ किया इस पर रंज था कि आपका जो हक़ मुझ पर वाजिब है, वह मैं अदा न कर सका। इर्शाद हुआ कि ख़ून क्यों था? मैं ने अर्ज़ किया कि ख़ौफ़ से, कि यह रोना झूठा न हो, ग़ैर मोतबर न हो जाये। इर्शाद हुआ कि आख़िर तू इस सब से क्या चाहता था? मेरी इज़्ज़त की क़सम, तेरे किरामन कातिबीन चालीस साल से तेरे आमाल का सहीफ़ा ऐसे ला रहे हैं कि उस में कोई ख़ता लिखी हुई नहीं होती।

अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद रह० कहते हैं कि मेरा गुज़र एक गिरजा पर हुआ, वहां एक राहिब (दुनिया से मुन्क़तअ्) रहता था, मैं ने उस को राहिब कह कर आवाज़ दी, वह न बोला, फिर दूसरी दफ़ा पुकारा, फिर भी न बोला, फिर तीसरी दफ़ा जब मैं ने पुकारा तो वह मेरी तरफ़ मुतवज्जह हुआ और कहने लगा कि मैं राहिब नहीं हूँ, राहिब वह शख़्स होता है जो अल्लाह ताला शानुहू से डरता हो, उस की किबरियाई में उस की ताज़ीम करता हो, उस की बलाओं पर सब्र करता हो, फिर उस के तक़्दीरी फ़ैसलों पर राज़ी हो, उस की नेमतों का शुक्र अदा करता हो, उस की अज़्मत के सामने तवाज़ोअ् से रहता हो, उस की इज़्ज़त के मुक़ाबले में अपने को ज़लील रखता हो, उस की क़ुदरते कामिला का इताअत करने वाला हो, उस की हैबत से आजिज़ी करता हो, उस के हिसाब और उस के अज़ाब की हर वक़्त फ़िक्र में रहता हो, दिन में रोज़ा रखता हो, रात को बेदार रहता हो जहन्नम के ख़ौफ़ ने और मैदाने हश्र के सवाल ने उसकी नींद उड़ा दी हो, जिस में ये बातें हों, वह राहिब है, मैं तो एक हड़काया कुत्ता हूँ। इस वजह से यहां बैठ गया हूँ कि कहीं किसी को काट न खाऊँ।

मैं ने उस से पूछा क्या बात है कि लोग हक़ तआला शानुहू की बड़ाई को जानते हैं फिर भी उस से उनका रिश्ता टूटा हुआ है, उसने कहा कि सिर्फ़ दुनिया की मुहब्बत ने और उसकी ज़ेब व ज़ीनत ने उनका रिश्ता तोड़ रखा है। दुनिया गुनाहों का घर है, समझदार और आक़िल वह शख़्स है जो इसको अपने दिल से फेंक दे और अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ मुतवज्जह हो जाये, और ऐसे काम इख़्तियार करे जो अल्लाह तआला शानुहू के क़रीब कर दें।

हज़रत उवैस क़रनी रह० जो मशहूर बुज़ुर्ग हैं, किसी दिन फ़रमाते कि आज की रात रूकूअ् करने की है, पस तमाम रात रूकूअ् में गुज़ार देते, फिर कहते कि आज की रात सज्दे की है तो तमाम रात एक सज्दे में गुज़ार देते। जब

उत्बा गुलाम ताईब हुए तो खाने पीने की ज़रा भी परवाह न करते थे। उनकी मां ने एक मर्तबा उन से कहा, अपने नफ़्स पर रहम खा, कुछ राहत भी ले लिया कर, कहने लगे, उस पर रहम खाने ही के लिए सब कुछ कर रहा हूँ, थोड़े दिन की मशक़्क़त है, फिर हमेशा हमेशा राहत ही लेना है।

अब्दुल्लाह बिन दाऊद रह० कहते हैं कि ये (बुज़ुर्ग हज़रात) जब कोई इन में चालीस साल की उम्र को पहुँच जाता है तो वह बिस्तर उठा कर लपेट देता है यानी फिर सोने का नम्बर ख़त्म हो जाता है।

हज़रत कहमस बिन हसन रह० हर रात में एक हज़ार रक्अत नमाज़ पढ़ते और अपने नफ़्स को ख़िताब करके कहते कि ऐ हर बुराई की जड़ (नमाज़ के लिए) खड़ा हो जा। जब ज़ोअफ़ बहुत ज़्यादा हो गया तो रोज़ाना पांच सौ रक्अतें कर दी थीं और इस पर रोया करते थे कि मेरा आधा अमल जाता रहा।

हज़रत रबीअ् रह० कहते हैं कि मैं हज़रत उवैस क़रनी रह० के पास आया, वह सुबह की नमाज़ पढ़ कर तस्बीह पढ़ने में मशग़ूल हो गये थे, मुझे ख़्याल हुआ कि इस वक़्त इनका हरज होगा। मैं फ़रागत के इंतिज़ार में बैठ गया, वह इसी हाल में बैठे पढ़ते रहे, यहां तक कि ज़ुहर का वक़्त हो गया, वह ज़ुहर की नमाज़ पढ़ने खड़े हो गये और अस्र की नमाज़ तक पढ़ते रहे फिर अस्र की नमाज़ से फ़ारिग़ होकर उसी जगह मग़िब तक बैठे रहे, फिर मग़िब की नमाज़ पढ़ी, इशा की नमाज़ पढ़ी, फिर सुबह तक वहीं जमे रहे, दूसरे दिन सुबह की नमाज़ के बाद बैठे थे, इसी हाल में कुछ ग़ुनूदगी सी आ गयी, चौंक कर कहने लगे या अल्लाह, ऐसी आंख से तुझ से पनाह मांगता हूँ जो बार बार सोती हो और ऐसे पेट से पनाह मांगता हूँ जो भरता ही न हो। मैं यह सब हालत देखकर वहां से यह कह कर चला आया कि मुझे तो इब्रत के वास्ते यही काफ़ी है, जो मैं ने देख लिया।

अहमद बिन हर्ब रह० कहते हैं, कि ताज्जुब तो उस शख़्स पर है जिसको यह मालूम है कि आसमानों पर उस के लिए जन्नत को आरास्ता किया जा रहा है और उसके नीचे जहन्नम भड़काई जा रही है, इन दोनों के दर्मियान उसको कैसे नींद आती है। एक शख़्स कहते हैं कि मैं हज़रत इब्राहीम बिन अधम रह० के पास गया, वह इशा की नमाज़ के बाद अपनी अबा में लिपट कर एक करवट लेते और सुबह तक उसी तरह लेटे रहे न तो हरकत की, न करवट बदली, सुबह

को उठकर बग़ैर वुज़ू किये नमाज़ पढ़ ली। मैं ने उनसे कहा अल्लाह तआला तुम्हारे हाल पर रहम करे। सारी रात लेटे सोते रहे और बग़ैर वुज़ू ही नमाज़ पढ़ ली। फ़रमाने लगे कि मैं सारी रात कभी जन्नत के बाग़ों में दौड़ता था कभी जहन्नम की घाटियों में, ऐसी हालत में नींद कहां आ सकती थी?

कहते हैं कि अबूबक्र बिन अयाश रह॰ चालीस बरस तक बिस्तरे पर नहीं लेटे और अपने बेटे को नसीहत की कि इस खिड़की (कोलकी) में गुनाह न करना, मैं ने इस में बारह हज़ार क़ुरआन पाक ख़त्म किये हैं। जब उनका इंतिक़ाल होने लगा तो मकान के एक कोने की तरफ़ इशारा करके फ़रमाया कि इस कोने में मैं ने चौबीस हज़ार क़ुरआन पाक ख़त्म किये हैं।

हज़रत समनून रह॰ पांच सौ रक्अत नफ़्ल रोज़ाना पढ़ते थे। उन्हीं का एक क़िस्सा अल्लामा ज़ुबैदी रह॰ ने लिखा है कि बग़दाद में एक शख़्स ने चालीस हज़ार दिरहम फ़ुक़रा पर तक़्सीम किये, समनून रह॰ फ़रमाने लगे कि दिरहम तो हमारे पास हैं नहीं, चलो हम हर दिरहम के बदले एक रक्अत नमाज़ पढ़ लें, यह कह कर मदाइन गये और वहां चालीस हज़ार रकअतें पढ़ीं।

अबूबक्र मुतव्विअी रह॰ कहते हैं कि मेरा मामूल अपनी जवानी में इक्तीस हज़ार या चालीस हज़ार मर्तबा (रावी को शक है) रोज़ाना क़ुल हुवल्लाह् शरीफ़ पढ़ने का था।

एक शख़्स कहते हैं कि मैं आमिर बिन अब्दुल क़ैस रह॰ के साथ चार महीने रहा, मैं ने उनको दिन में या रात में सोते नहीं देखा। हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू के एक शागिर्द कहते हैं कि एक मर्तबा हज़रत अली रज़ि॰ सुबह की नमाज़ पढ़ा कर दायीं जानिब मुंह कर के बैठे, आप पर रंज का असर बहुत था, तुलूअे आफ़ताब तक आप बैठे रहे, उस के बाद हाथ को (अफ़सोस के साथ) पलट कर फ़रमाया ख़ुदा की क़सम, मैं ने हुज़ूर सल्ल॰ के सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन को देखा, आज कोई बात भी उनकी मुशाबहत की नहीं देखता।

वे हज़रात इस हालत में सुबह करते थे कि उन के बाल बिखरे हुए होते, चेहरे ग़ुबार आलूदा और ज़र्द होते थे। वे सारी रात अल्लाह तआला के सामने सज्दे में पड़े रहते थे या उस के सामने खड़े क़ुरआन पाक पढ़ते रहते थे। खड़े खड़े कभी एक पांव पर सहारा दे लेते थे, कभी दूसरे पांव पर, जब वे अल्लाह

तआला शानुहू का ज़िक्र करते थे। तो ऐसे (मज़े में) झूमते थे जैसे कि हवाओं में दरख़्त हरकत करते हैं। और (अल्लाह तआला शानुहू के शौक़ और ख़ौफ़ से) उनकी आंखों से इतने आंसू बहते कि उन के कपड़े तर हो जाते थे। अब लोग बिल्कुल ही ग़फ़लत में रात गुज़ार देते हैं।

हज़रत अबू मुस्लिम ख़ौलानी रह॰ ने एक कोड़ा अपने घर की मस्जिद में लटका रखा था और अपने नफ़्स को ख़िताब करके कहा करते कि उठ खड़ा हो, मैं तुझे (इबादत में) अच्छी तरह घसीटूँगा, यहां तक कि तू थक जायेगा मैं नहीं थकूँगा और जब उन पर कुछ सुस्ती होती तो उस कोड़े को अपनी पिण्डलियों पर मारते और फ़रमाते कि ये पिण्डलियां पिटने के लिए मेरे घोड़े की बनिस्बत ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं। यह भी कहा करते कि सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ यों समझते हैं कि (जन्नत के सारे दर्जे) वही उड़ा कर ले जायेंगे, नहीं हम उन से (उन दर्जों में) अच्छी तरह मुज़ाहमत करेंगे ताकि उनको भी मालूम हो जाये कि वह भी अपने पीछे मर्दों को छोड़कर आये हैं।

हज़रत क़ासिम बिन मुहम्मद बिन अबीबक्र रह॰ फ़रमाते हैं कि मैं एक दिन सुबह को अपनी फूफी हज़रत आईशा रज़ि॰ की ख़िदमत में सलाम के लिए हाज़िर हुआ, वह चाश्त की नमाज़ पढ़ रही थीं और यह आयते शरीफ़ा पढ़ रही थीं :-

فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَوَقٰنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ (طور ع ١)

"फ़मन्नल्लाहु अलैना व वक़ाना अज़ाबस्समूम॰" (तूर, रूकूअ 1)

तर्जुमा:- पस एहसान किया हक़ तआला शानुहू ने हम पर, पस हम को जहन्नम के अज़ाब से बचा लिया।

हज़रत आइशा रज़ि॰ इस आयते शरीफ़ा को बार बार पढ़ती जाती थीं और रोती जाती थीं। क़ासिम रह॰ कहते हैं कि मैं बहुत देर तक तो इंतिज़ार करता रहा, फिर मुझे ख़्याल आया कि मैं इतने बाज़ार हो आऊँ। ज़रूरियात से फ़ारिग़ होकर वापसी में सलाम करता जाऊँगा। मैं बाज़ार चला गया और वहां से फ़रागत के बाद जब मैं वापस आया तो वह उसी तरह खड़ी हुई इसी आयत को पढ़ रही थीं और रो रही थीं।

मुहम्मद बिन इस्हाक़ रह॰ कहते हैं कि अब्दुर्रहमान बिन असवद हज के लिए जब आये तो उनके एक पांव में तक्लीफ़ थी, वह इशा के बाद सिर्फ़ एक

पांव के सहारे खड़े हुए और सुबह तक एक ही पांव पर खड़े होकर नफ़्ल पढ़ते रहे, हत्ताकि उसी वुज़ू से सुबह की नमाज़ पढ़ ली।

एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मुझे मौत से सिर्फ़ इसलिए डर लगता है कि फिर तहज्जुद की नमाज़ जाती रहेगी और वह लुत्फ़ जो इस नमाज़ में आता है, वह ख़त्म हो जायेगा।

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू का इर्शाद है कि सुलहा (नेक लोगों) की अलामत, रात के जागने से चेहरों का ज़र्द हो जाना और रातों को रोने की वजह से आंखों का चौंधा हो जाना और रोज़ों की कसरत से होठों का खुश्क हो जाना है, उनके चेहरे ख़ौफ़ज़दा रहते हों।

हज़रत हसन बसरी रह० से किसी ने पूछा कि इबादत की कसरत करने वालों के चेहरे ऐसे ख़ूबसूरत किस तरह हो जाते हैं? उन्होंने फ़रमाया कि जब वे तंहाई में रहमान के साथ मशगूल होते हैं, तो वह रहमत वाला अपने नूर का साया उन पर डाल देता है।

हज़रत क़ासिम बिन राशिद रह० कहते हैं कि ज़मआ रह० हमारे क़रीब मुहसब में (जो मक्का मुकर्रमा के क़रीब एक जगह है) ठहरे हुए थे, उनके साथ उन की बीवी और बेटियां भी थीं, वह रात को बहुत लम्बी नमाज़ पढ़ते रहते, जब पिछला पहर हो जाता तो वह ज़ोर से आवाज़ देते, अरे मुसाफ़िरो! क्या रात भर सोते ही रहोगे, उठो चलो। इस आवाज़ पर सब के सब जाग जाते, कोई वुज़ू कर रहा है कोई नमाज़ पढ़ रहा है कोई किसी कोने में बैठा रो रहा है, कोई क़ुरआन पाक पढ़ रहा है। जब सुबह हो जाती तो वह फ़रमाते कि रात के चलने वाले सुबह को ठहर जाया करते हैं।

एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैं बैतुल मक़्दिस के पहाड़ों में जा रहा था, एक जगह पहुँच कर मैं ने एक आवाज़ सुनी, मैं उस आवाज़ की तरफ़ चल दिया, देखा कि एक सब्ज़ा है, वहां एक दरख़्त है, उस के नीचे एक शख़्स खड़े होकर नमाज़ पढ़ रहे हैं और यह आयत बार बार पढ़ते हैं :-

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا ۚ وَمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوْءٍ ۚ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهٗۤ اَمَدًا ۢ بَعِيْدًا ۗ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ۗ (آل عمران ع ٣)

"यौ-म तजिदु कुल्लु नफ़्सिम्मा अमिलत् मिन ख़ैरिम् मुह्-ज़रवं वमा अमिलत् मिन् सूइन तवद्दु लौ अन्-न बैन-हा व बैन-हू अ-म-दम्

बऔीदा, व युहज़्ज़िरुकुमुल्लाहु नफ़्सहू॰" *(आले इमरान, रूकूअ 3)*

"जिस दिन हर शख़्स अपने अच्छे कामों को (जो उस ने दुनिया में किये होंगे) सामने लाया हुआ पायेगा और अपने बुरे कामों को (भी अपने सामने लाया हुआ पायेगा) और इस बात की तमन्ना करता होगा; काश! इस दिन के दर्मियान और उस आदमी के (यानी मेरे) दर्मियान बहुत बड़ी दूर दराज़ की मसाफ़त हाइल हो जाती (कि यह बुरे आमाल उसके सामने न आते) और तुमको अल्लाह तआला शानुहू अपने से डराता है (उसके मुतालबे और हिसाब और अज़ाब से बहुत एहतिमाम से डरते रहो)

यह बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैं चुपके से उनके पीछे बैठ गया, वह बार बार इसी आयते शरीफ़ा को पढ़ रहे थे और रो रहे थे, इतने में उन्होंने ज़ोर से एक चीख़ मारी और बेहोश होकर गिर गये, मुझे बहुत क़लक़ हुआ कि यह मेरी नहूसत से बेहोश होकर गिर गये, बहुत देर में उनको होश आया तो वह कहने लगे, ऐ अल्लाह, मैं तुझ से पनाह मांगता हूँ, झूठे तौर पर खड़े होकर रोने वालों से (गोया उन्होंने अपने इस पढ़ने और रोने को निफ़ाक़ का रोना क़रार दिया) और ऐ अल्लाह, मैं तुझ से पनाह मांगता हूँ बेहूदा लोगों के आमाल से (कि मेरा यह पढ़ना और रोना लग्व आदमियों का पढ़ना है कि मेरे बराबर दूसरा कौन बेहूदा होगा) ऐ अल्लाह, मैं तुझ से ग़ाफ़िल लोगों के ऐराज़ से पनाह मांगता हूँ (कि यह मेरा फ़ेअ्ल भी ग़फ़लत के साथ हो रहा है) फिर कहने लगे, या अल्लाह, डरने वालों के दिल तेरी ही तरफ़ आजिज़ी करते हैं और नेक अमल में कोताही करने वाले तेरी ही (रहमत की) तरफ़ उम्मीदें लगाते हैं, आरिफ़ लोगों के दिल तेरी ही बड़ाई के सामने ज़लील होते हैं।

इसके बाद उन्होंने दोनों हाथ झाड़े (जैसा कि मिट्टी वग़ैरह हाथ को लग जाने से झाड़े जाते हैं।) और फ़रमाया मुझे दुनिया से क्या काम और दुनिया को मुझ से क्या काम, ऐ दुनिया, तू अपने बेटों के पास चली जा, तू अपनी नेमतों के क़द्र दानों के पास चली जा तू अपने आशिक़ों के पास चली जा, उन्हीं को धोखे में डाल (मुझे दिक़ न कर) फिर कहने लगे, पहले ज़माने वाले कहां चले गये? सब के सब मिट्टी में मिल गये, बोसीदा होकर ख़ाक में रल गये और जूं जूं ज़माना गुज़र रहा है, लोग फ़ना होते जा रहे हैं।

मैं ने उन बुज़ुर्ग से कहा कि मैं बड़ी देर से आप के फ़ारिग़ होने के

इंतिज़ार में बैठा हूँ, फ़रमाने लगे, ऐसे शख़्स को फ़रागत कहां हो सकती है जिसको वक़्त ख़त्म होने का फ़िक्र हो रहा है वह जल्दी करता है कि वक़्त ख़त्म होने से पहले पहले कुछ कर लूँ और वक़्त जल्दी कर रहा है कि मैं किसी तरह जल्दी ख़त्म हो जाऊं। वह कैसे फ़ारिग़ हो सकता है जिस को वक़्त गुज़र जाने से मौत के जल्दी आ जाने का फ़िक्र सवार हो, वह कैसे फ़ारिग़ हो सकता है जिस के औक़ात तो गुज़रते जा रहे हों और उन गुज़रे हुए औक़ात में जो गुनाह किये हैं वे उस के हिसाब में जमा हों।

फिर वह हक़ तआला शानुहू की तरफ़ मुतवज्जह होकर कहने लगे तू ही मेरी इस मुसीबत के लिए (यानी जो गुनाह मेरे हिसाब में जमा हो गये) और हर आने वाली मुसीबत के लिए पनाह की जगह है (तेरी ही रहमत से बेड़ा पार हो सकेगा), फिर थोड़ी देर इस में मशग़ूल रहे, फिर क़ुरआन पाक की दूसरी आयतः-

وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَالَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ○ (زمر ع ٥)

"व बदा लहुम् मिनल्लाहि मालम् यकूनू यह्तसिबून॰"

(ज़ुमर, रूकूअ 5).

तर्जुमाः- और ख़ुदा तआला की तरफ़ से उनके साथ वह मामला पेश आयेगा जिस का उनको गुमान भी न था।

यह एक आयते शरीफ़ा का टुकड़ा है, पूरी आयते शरीफ़ा यह है :-

وَلَوْ اَنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَا فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ مِنْ سُوْٓءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مَالَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ○ (زمر ع ٥)

"व लौ अन्-न लिल्लज़ी-न ज़-ल-मू मा फ़िल् अर्ज़ि जमीअंव् व मिस्ल-हू म-अ-हू लफ़्तदौ बिही मिन् सूइल् अज़ाबि यौमल् क़ियामः व बदा लहुम् मिनल्लाहि मालम् यकूनू यह्तसिबून॰" *(ज़ुमर, रूकूअ 5)*

और इस आयते शरीफ़ा का तर्जुमा यह है कि -:

जिन लोगों ने (दुनिया में) ज़ुल्म किया था (यानी कुफ़्र व शिर्क वग़ैरह किया था, जैसाकि दूसरी जगह इर्शाद है कि शिर्क करना ज़ुल्मे अज़ीम है।) अगर उनके पास दुनिया भर की तमाम चीज़ें हों और इन सब के साथ इतनी ही चीज़ें और भी हों तो वे लोग क़ियामत के दिन सख़्त अज़ाब से छूट जाने के लिए

(बे-तरद्दुद) उन सब को फ़िदये में दे दें (लेकिन फ़िदया उस दिन क़ुबूल नहीं है, जैसा कि सूरः बक़रः में कई जगह और सूरः माइदः में गुज़रा) और (उन लोगों के साथ) ख़ुदा तआला की तरफ़ से वह मामला पेश आयेगा जिस का उनको (वहम और) गुमान भी न था। (कि इतनी सख़्ती भी हो सकती है। इस जगह कई आयतें इस मज़्मून के मुनासिब हैं।)

ग़रज़ उन बुज़ुर्ग ने यह आयते शरीफ़ा पढ़ी और पहले से बहुत ज़्यादा ज़ोर से चिल्लाये और बेहोश होकर इस तरह गिरे कि मैं ने यह समझ लिया कि जान निकल गयी। मैं उनके क़रीब पहुँचा तो वह तड़प रहे थे। बहुत देर के बाद इफ़ाक़ा हुआ तो वह यह कह रहे थे कि या अल्लाह, जब (क़ियामत में) आपके सामने खड़ा हूँ तो महज़ अपने फ़ज़्ल से मेरी बुराईयां माफ़ कर दीजियो, और अपनी सत्तारी के पर्दे में मुझे छुपा लीजियो और सिर्फ़ अपने करम से मेरे गुनाह माफ़ कर दीजियो।

मैं ने उन से कहा कि जिस (पाक ज़ात) की रहमत की तुम उम्मीद कर रहे हो उसी के वास्ते से मेरी यह दर्ख़्वास्त है कि ज़रा मुझ से बात कर लीजिये, वह फ़रमाने लगे कि तुझे ऐसे शख़्स से बात करना चाहिए, जिस के कलाम से तुझे नफ़ा पहुँचे और जिस शख़्स को उस के गुनाहों ने हलाक कर रखा हो (यानी मैं) ऐसे शख़्स से बात करना छोड़ दे।

इसके बाद फ़रमाया कि मैं इस जगह अल्लाह जाने कितने बरस से शैतान से लड़ रहा हूँ। मैं उस से लड़ाई में मश्गूल हूँ और वह मुझ से लड़ने में मश्गूल है (कि वह मुझ को अल्लाह तआला शानुहू की तरफ़ से तवज्जोह हटाने की हर वक़्त कोशिश में लगा रहता है), उस को अब तक तेरे सिवा कोई सूरत ऐसी न मिली जिस से वह मुझे उस चीज़ से हटा देता जिस में मैं मशग़ूल हूँ। (यानी अल्लाह तआला की तरफ़ तवज्जोह से) पस तू मुझ से दूर हो जा तू (शैतान के) धोखे में पड़ा हुआ है, तूने मेरी ज़ुबान को मुनाजात से मुअत्तल कर दिया और मेरे दिल को (हक़ तआला शानुहू से हटाकर) अपनी बात की तरफ़ मुतवज्जह कर लिया, मैं अल्लाह तआला शानुहू से तेरे शर से पनाह मांगता हूँ और उस पाक ज़ात से इस की भी उम्मीद रखता हूँ कि वह अपने गुस्से से मुझे पनाह अता फ़रमायेगा।

यह साहब जो बात करना चाहते थे, कहते हैं कि मुझे यह डर हुआ कि मैं ने उनकी हक़ तआला शानुहू की तरफ़ से तवज्जोह को हटा दिया है, ऐसा न

हो कि मुझ पर इस बात की वजह से कोई अज़ाब नाज़िल हो जाये, इसलिए मैं उनको उसी जगह छोड़ कर चला आया।

हज़रत कुर्ज़ बिन वबरः रह० हर रोज़ तीन कुरआन शरीफ़ ख़त्म किया करते थे और इस के अलावा इबादात में हर वक़्त मुन्हमिक रहते थे, किसी ने अर्ज़ किया कि आपने अपने नफ़्स को बड़ी मेहनत में डाल दिया, फ़रमाने लगे कि सारी दुनिया की उम्र कितनी है, उस ने अर्ज़ किया सात हज़ार बरस, फ़रमाया क़ियामत का दिन कितना है? अर्ज़ किया पचास हज़ार बरस। फ़रमाने लगे कि क्यों कर तुम में से कोई शख़्स इस से आजिज़ रह सकता है कि दिन के सातवें हिस्से में मेहनत कर ले, ताकि सारे दिन राहत से रहे (यानी अगर किसी शख़्स को सिर्फ़ साढ़े तीन घंटा मेहनत करके सारा दिन राहत का मिले तो कौन छोड़ सकता है) पस अगर क़ियामत के दिन की राहत के लिए कोई दुनिया की पूरी ज़िन्दगी सात हज़ार बरस मेहनत कर ले, तब भी बड़े नफ़े का सौदा है, चेजायेकि आदमी की उम्र दुनिया की तमाम उम्र में से भी बहुत थोड़ा सा हिस्सा है और आख़िरत की ज़िन्दगी क़ियामत के दिन के बाद भी बे इंतिहा है।

ये चंद क़िस्से नमूने के तौर पर ज़िक्र किये गये। इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि यह थी पहले ज़माने के बुज़ुर्गों की आदत और ख़स्लत अगर तेरा मुतमर्रिद (सर्कश) नफ़्स इबादत ख़ुद नहीं कर सकता, तो इन मर मिटने वालों के अहवाल में ग़ौर कर, और यह ग़ौर कर कि इन अकाबिर का इक़्तिदा और इन बुज़ुर्गों की जमाअत में शामिल होना बेहतर है जो दीन के हकीम और आख़िरत में बसीरत रखने वाले अक़्लमंद थे, या अपने ज़माने के उन जाहिल बेवक़ूफ़ों की इक़्तिदा बेहतर है जो दीन से ग़ाफ़िल हैं। ऐसा हरगिज़ न कर कि अक़्लमंदों का इत्तिबा छोड़ कर अहमक़ों का इत्तिबा करे। अगर तुझे यह वहम हो कि ये क़वी लोग थे, इनका इक़्तिदा मुश्किल है तो फिर चंद औरतों के हालात भी सुन ले, और तू मर्द होकर इस से तो आजिज़ न बन कि औरतों जैसा भी न हो, तू ही ग़ौर कर, वह मर्द कितना ख़सीस है जो दीन में औरतों का भी साथ न दे सके। अब ग़ौर से सुनः-

हज़रत हबीबा अदविया रह० जब इशा की नमाज़ से फ़ारिग़ हो जातीं तो अपने कपड़ों को अपने ऊपर अच्छी तरह लपेट कर छत पर खड़ी हो जातीं और दुआ में मशग़ूल हो जातीं और कहतीं, या अल्लाह, सितारे छिटक गये और लोग सो गये, बादशाहों ने अपने दरवाज़े बंद कर दिये और हर शख़्स अपने महबूब के

साथ तख़लिए (तन्हाई) में चला गया और मैं तेरे सामने खड़ी हूँ, यह कह कर नमाज़ शुरू कर देतीं और सारी रात नमाज़ पढ़तीं, जब सुबह सादिक़ हो जाती तो कहतीं या अल्लाह रात चली गयी और दिन का चांदना हो गया, काश, मुझे ये मालूम हो जाता कि मेरी यह रात तूने क़ुबूल फ़रमा ली ताकि मैं अपने को मुबारक बाद दूँ या तूने रद्द फ़रमा दी ताकि मैं अपनी ताज़ियत करूँ। तेरी इज़्ज़त की क़सम, मैं तो हमेशा इसी तरह करती रहूँगी, तेरी इज़्ज़त की क़सम, अगर तूने मुझे दरवाज़े से धकेल दिया तब भी तेरे करम और तेरी बख़्शिश का जो हाल मुझे मालूम है, उसकी वजह से मैं तेरे दर से हटूँगी नहीं।

हज़रत उजरः रह॰ नाबीना थीं, सारी रात जागतीं और जब सहर का वक़्त होता तो बहुत ग़मगीन आवाज़ से कहतीं, या अल्लाह, आबिदों की जमाअत ने तेरी तरफ़ चल कर रात के अंधेरे को क़तअ् किया, वे तेरी रहमत और तेरी मग़्फ़िरत की तरफ़ एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश करते रहे। या अल्लाह मैं सिर्फ़ तुझ ही से सवाल करती हूँ, तेरे सिवा किसी दूसरे से मेरा सवाल नहीं कि, तू मुझे साबिक़ीन के गिरोह में शामिल कर ले और आला इल्लिय्यीन तक पहुँचा दे, और मुक़र्रब लोगों के दरजे में दाख़िल कर दे और अपने नेक बंदो में शामिल कर दे, तू सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाला है। हर ऊँचे दरजे वाले से बुलंद है। सारे करीमों से ज़्यादा करीम है। ऐ करीम! (मुझ पर करम कर) यह कह कर सज्दे में गिर जातीं कि उनके रोने की आवाज़ सुनाई देती और सुबह तक रोती रहतीं और दुआयें करती रहतीं।

यह्या बिन बुस्ताम रह॰ कहते हैं कि हम हज़रत शअवाना रह॰ की मज्लिस में हाज़िर होते और उनके रोने चिल्लाने को सुनते। मैं ने अपने एक साथी से कहा कि किसी वक़्त तंहाई में उनके पास जाकर समझायें कि इस रोने में कुछ कमी कर दें। मेरे साथी ने कहा कि अच्छा जैसी तुम्हारी राय हो। हम उन के पास तंहाई में गये और उन से जाकर कहा अगर तुम इस रोने में कुछ कमी कर दो और अपनी जान पर तरस खाओ तो यह ज़्यादा बेहतर है कि बदन में कुछ ताक़त रहेगी, देर तक इस से काम ले सकोगी, वह यह सुनकर रोने लगीं और कहने लगीं कि मेरी तो यह तमन्ना है कि मैं इतना रोऊँ कि आंख में आंसू न रहे, फिर ख़ून के आंसुओं से रोना शुरू कर दूँ। यहां तक कि मेरे बदन का सारा ख़ून आंखों से निकले एक भी क़तरा ख़ून का न रहे, और कहने लगीं कि मुझे रोना कहां आता है, मुझे रोना कहां आता है। बार बार इसी लफ़्ज़ को कहती रहीं कि

मुझे रोना कहां आता है, यहां तक कि बेहोश हो गयीं।

मुहम्मद बिन मआज़ रह० कहते हैं कि मुझ से एक इबादत गुज़ार औरत ने बयान किया कि मैं ने ख़्वाब देखा कि मैं जन्नत में दाख़िल होने को जा रही हूँ, वहां देखा कि सारे आदमी जन्नत के दरवाज़े पर खड़े हैं, मैं ने पूछा क्या बात है, ये सब के सब दरवाज़े पर क्यों जमा हो गये? किसी ने बताया कि एक औरत आ रही हैं, जिनके आने की वजह से जन्नत को सजाया गया है, ये बस उनके इस्तिक़बाल के वास्ते बाहर हो गये हैं, मैं नें पूछा वह औरत कौन हैं? कहने लगे कि ऐका की रहने वाली एक स्याह (काली) बांदी हैं, जिनका नाम शअवाना रह० है। मैं ने कहा, ख़ुदा की क़सम वह तो मेरी बहन है। इतने में देखा कि शअवाना रह० एक निहायत उम्दा ख़ुशनुमा असील ऊँटनी पर बैठी हवा में उड़ी आ रही हैं। मैं ने उनको आवाज़ दी कि मेरी बहन। तुम्हें अपना और मेरा ताल्लुक़ मालूम है, अपने रब से दुआ कर दो कि मुझे भी तुम्हारे साथ कर दें। वह यह सुनकर हंसीं और कहने लगीं, अभी तुम्हारे आने का वक़्त नहीं आया। लेकिन मेरी दो बातें याद रखना (आख़िरत के) ग़म को अपने साथ चिमटा लो और अल्लाह तआला की मुहब्बत अपनी हर ख़्वाहिश पर ग़ालिब कर दो, और इस की परवाह न करो कि मौत कब आयेगी, यानी हर वक़्त उसके लिए तैयार रहो।

एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैं एक दिन बाज़ार जा रहा था, मेरे साथ मेरी हब्शी बांदी थी, मैं उसको एक जगह बिठा कर आगे चला गया और उस से कह गया कि यहीं बैठी रहना, मैं अभी आता हूँ। जब मैं वापस आया तो वह उस जगह न मिली, मुझे बहुत गुस्सा आया और ग़ुस्से की हालत में घर वापस आ गया। जब उस ने मुझे देखा तो मेरे चेहरे से ग़ुस्से को महसूस किया, कहने लगी, मेरे आक़ा! इताब में जल्दी न करो, ज़रा मेरी बात सुन लो, आप मुझे ऐसी जगह बिठा कर गए, जहां कोई अल्लाह का नाम लेने वाला नहीं था, मुझे यह डर हुआ कि कहीं यह जगह ज़मीन में न धंस जाये (जिस जगह अल्लाह तआला का ज़िक्र न हो, उस जगह जितनी जल्दी अज़ाब आ जाये क़रीने क़ियास है) उसकी इस बात से मुझे बड़ा ताज्जुब हुआ। मैं ने उससे कहा कि तू आज़ाद है, कहने लगी आक़ा, तुमने मेरे साथ अच्छा सुलूक नहीं किया। मैं ने कहा क्यों? कहने लगी कि पहले जब मैं बांदी थी तो मुझे दोहरा सवाब मिलता था (जैसा कि हदीस में आया है कि जो ग़ुलाम अल्लाह की इताअत करे और अपने मौला की ख़िदमत करे, उसको दोहरा अज्र है) अब आपने आज़ाद करके मेरा एक अज्र

ज़ाया कर दिया।

हज़रत ख़्वास रह० जो मशहूर बुज़ुर्ग हैं कहते हैं कि हम हज़रत रहला आबिदा रह० के पास गये, वह रोज़े रखते रखते काली पड़ गयीं थीं और नमाज़ पढ़ते पढ़ते (पांव शल हो गये थे जिसकी वजह से) अपाहिज हो गयी थीं। बैठ कर नमाज़ पढ़ती थीं और रोते रोते नाबीना हो गयीं थीं हमने जाकर हक़ तआला शानुहू की रहमत और माफ़ी का ज़िक्र किया कि शायद इस से उनके मुजाहदे की शिद्दत में कुछ कमी आये। उन्होंने मेरी बात सुनकर बेतहाशा एक चीख़ मारी, फिर कहने लगीं कि मुझे अपनी हालत मालूम है, उस ने मेरे दिल को ज़ख़्मी कर रखा है और मेरे जिगर को छील दिया है, काश, मैं तो पैदा ही न हुई होती, यह कह कर उन्होंने अपनी नमाज़ की नीयत बांध ली।

नमूने के तौर पर दो एक वाक़िआत ज़िक्र किये गये हैं। इमाम ग़ज़ाली रह० ने और भी इस क़िस्म के वाक़िआत औरतों के नक़ल किये हैं। इसके बाद कहते हैं कि अगर तू अपने नफ़्स की निगहदाश्त करने वाला है तो तेरे लिए ज़रूरी है कि इन मेहनत करने वाले मर्दों और औरतों के अहवाल को ग़ौर व फ़िक्र की निगाह से देखे ताकि तेरी तबीअत में निशात बढ़े और मेहनत की तुझे हिर्स पैदा हो, और अपने ज़माने के आदमियों के अह्वाल देखने से एहतिराज़ कर कि उन में से अक्सर ऐसे मिलेंगे कि अगर तू उनका इत्तिबा करेगा तो वे तुझे अल्लाह के रास्ते से गुमराह कर देंगे।

इन मेहनत करने वालों के वाक़िआत की कोई तायदाद नहीं है। हमने नमूने के तौर पर चंद लिखे हैं, जो इब्रत के लिए काफ़ी हैं। अगर तू ज़्यादा हालात देखना चाहे तो "हुलीय तुल औलिया" का मुताला किया कर कि उस में सहाबा रज़ि० और तबिअीन रह० और उन के बाद वालों के अहवाल तफ़सील से लिखे हैं (और कुछ वाक़िआत शारेहे एहया ने भी ज़िक्र किये हैं) और उनके अहवाल के देखने से मालूम होगा कि तू और तेरे ज़माने के लोग दीन से कितने दूर हैं, और अगर तेरे दिल में अपने ज़माने के लोगों को देखकर यह ख़्याल आये कि पहले ज़माने में चूंकि ख़ैर की कसरत थी इसलिए उस ज़माने में यह सहल था, अब अगर इन हालात पर अमल किया जाये तो लोग पागल कहेंगे, इसलिए जो हश्र इस ज़माने के सब आदमियों का होगा, वह मेरा भी हो जायेगा, मुसीबत जब आम आती है तो उस में सब ही को शामिल होना पड़ता है तो यह तेरे नफ़्स का धोखा है। तू ही बता कि अगर कहीं से पानी का सैलाब आ गया हो

जिस में सब ही बहते जा रहे हों तो अगर कोई शख़्स तैरना जानता है या किसी और ज़रिये से बच सकता है तो क्या वह यह समझ कर चुप हो जाये कि इस मुसीबत में तो सब ही गिरफ़्तार हैं, हालांकि सैलाब की मुसीबत बहुत थोड़ी देर की है, ज़्यादा से ज़्यादा यह कि मौत आ जायेगी, इस से ज़्यादा तो कुछ न होगा, और आख़िरत का अज़ाब निहायत सख़्त है, कभी ख़त्म होने वाला नहीं, इस बात को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए और हमेशा ग़ौर करते रहना चाहिए। *(एहया)*

हज़रत इब्राहीम अधम रह० से किसी ने अर्ज़ किया कि अगर आप किसी वक़्त तशरीफ़ रखा करें तो हम आपकी ख़िदमत में हाज़िर हो जाया करें कि कुछ इर्शादात सुनें, उन्होंने फ़रमाया, मुझे चार काम इस वक़्त दरपेश हैं, उनमें मशग़ूल हूँ उन से फ़राग़त पर यह हो सकता है :-

1. जब अज़ल में अहद लिया गया था तो हक़ तआला शानुहू ने एक फ़रीक़ के मुताल्लिक़ फ़रमाया था कि ये जन्नती हैं और दूसरों को फ़रमाया था कि ये दोज़ख़ी हैं। मुझे हर वक़्त यह फ़िक्र रहता है कि न मालूम मैं किन में हूँ।

2. जब बच्चा मां के पेट में शुरू होता है तो उस वक़्त एक फ़रिश्ता जो उस नुत्फ़े पर मुक़र्रर होता है, वह हक़ तआला शानुहू से पूछता है कि इस को सईद लिख दूँ या बदबख़्त, मुझे हर वक़्त यह फ़िक्र रहता है कि न मालूम मुझे क्या लिखा गया।

3. जब फ़रिश्ता आदमी की रूह क़ब्ज़ करता है तो यह पूछता है कि इस रूह को मुसलमानों की रूहों में रखूँ या काफ़िरों की, न मालूम मेरे मुताल्लिक़ उस फ़रिश्ते को क्या जवाब मिलेगा?

4. क़ियामत में हुक्म होगा:-

وَامْتَازُوا الْيَوْمَ اَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ ٥ (يٰس)

"वम्ताज़ुल् यौ-म अय्युहल् मुज्रिमून०" *(सूरः यासीन)*

आज मुज्रिम लोग फ़रमांबरदारों से अलाहिदा हो जायें, मुझे यह फ़िक्र रहता है कि न मालूम मेरा शुमार किस फ़रीक़ में होगा। *(तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)*

यानी जब इन चारों फ़िक्रों से अम्न नसीब हो जाये, उस वक़्त दोस्तों से बे फ़िक्री से बातें करने का वक़्त मिल सकता। अब तो मैं हर वक़्त इन फ़िक्रों में रहता हूँ, कहां इत्मीनान से बैठ सकता हूँ।

(١٥) عن ابی هریرۃؓ قال قال رسول اللّٰه صلی اللّٰه علیه وسلم لیس الغنٰی عن کثرۃ العرض ولکن الغنٰی غنی النفس متفق علیه کذا فی المشکوٰۃ

15. हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि आदमी का ग़नी होना माल की कसरत से नहीं होता बल्कि हक़ीक़ी ग़िना तो दिल का ग़नी होना है।

फ़ायदाः- मतलब हदीसे पाक का बिल्कुल ज़ाहिर है कि अगर आदमी का दिल ग़नी नहीं है तो जितना माल भी उस के पास ज़्यादा हो, वह माल के ख़र्च करने में फ़क़ीरों से ज़्यादा कम ख़र्च होगा और जितना भी माल उसके पास हो, वह हर वक़्त उसके बढ़ाने की फ़िक्र में मुहताजों से ज़्यादा परेशान होगा, और अगर उसका दिल ग़नी है तो थोड़ा सा माल भी उस को बेफ़िक्र रखेगा और जितना होगा, उसको हर वक़्त बढ़ाने के फ़िक्र से आज़ाद होगा।

इमाम राग़िब रह० कहते हैं कि ग़िना कई मायने में बोला जाता है, एक तो ग़िना के मायने किसी क़िस्म की हाजत न होने के हैं, इस मायने के एतिबार से तो सिर्फ़ हक़ तआला शानुहू ग़नी है कि उसको किसी चीज़ की एहतियाज नहीं है, इस मायने के एतिबार से हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है :-

اَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ اِلَى اللّٰهِ وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِیُّ الْحَمِیْدُ ○

"अन्तुमुल् फ़ुक़रा-उ इलल्लाहि वल्लाहु हुवल् ग़निय्युल हमीद०"

तुम सब के सब अल्लाह तआला शानुहू के मुहताज हो, वह पाक ज़ात है बे एहतियाज है, हर क़िस्म की तारीफ़ वाला है।

दूसरे मायने हाजात की कमी के हैं, इस मायने के एतिबार से हक़ तआला शानुहू ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुताल्लिक़ सूरः वज़्ज़ुहा में इर्शाद फ़रमाया :

وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغْنٰى ○

"व व-ज-द-क आइलन् फ़ अग़्ना"

और हक़ तआला शानुहू ने आपको फ़क़ीर पाया फिर आपको ग़नी बना दिया।

और इसी मायने के एतिबार से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद हदीसे बाला में है कि असल ग़िना दिल का ग़नी होना है। तीसरे मायने माल की कसरत और सामान की फ़रावानी के हैं जिसको क़ुरआन

पाक में :-

يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ أَغْنِيَاءَ مِنَ التَّعَفُّفِ (بقره ع ٣٧)

"यह्स-बुहुमुल् जाहिलु अग़्निया-अ मिनत् तअफ़्फ़ु-फ़ि"

(बक़रः, रूकूअ 37)

में ज़िक्र फ़रमाया, इस आयते शरीफ़ा का मतलब यह है कि सदक़ात असल हक़ ऐसे लोगों का है जो अल्लाह के रास्ते में घिर गये हों और नावाक़िफ़ आदमी उन के सवाल न करने की वजह से उनको मालदार समझता है।

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया, अबूज़र (रज़ि०) क्या तुम्हारा ख़्याल है कि माल की कसरत ग़िना है। मैं ने अर्ज़ किया बेशक, फिर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया क्या तुम्हारा ख़्याल है कि माल की क़िल्लत फ़क़्र है, मैं ने अर्ज़ किया, बेशक, हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि ग़िना सिर्फ़ दिल का ग़िना है और फ़क़्र सिर्फ़ दिल का फ़क़्र है। *(तर्ग़ीब)*

हक़ीक़त यही है कि असल ग़िना दिल का ग़िना है, जिस खुश क़िस्मत को अल्लाह तआला शानुहू नसीब फ़रमा दे, और यही हक़ीक़ते ज़ुह्द है। जिस दिल के अंदर माल की मुहब्बत बिल्कुल न हो, वही ग़नी है, वही ज़ाहिद है, चाहे, ज़ाहिर में उसके पास माल न हो, और जिस दिल में दुनिया की मुहब्बत हो, वह फ़क़ीर है, वह दुनियादार है चाहे कितना ही माल उसके पास हो।

फ़क़ीह अबुल्लैस रह० एक हकीम का मक़ूला नक़ल करते हैं कि हम ने चार चीज़ें तलाश कीं और उनकी तलाश का ग़लत रास्ता इख़्तियार किया। हमने ग़िना को माल में तलाश किया, हालांकि वह माल में नहीं था बल्कि क़नाअत में था (हम उस को माल में तलाश करते रहे, वह जब वहां था ही नहीं तो कैसे मिलता) हम ने राहत को (जान व माल की) कसरत में तलाश किया, हालांकि राहत इनकी कमी में थी। हमने एज़ाज़ को मख़्लूक़ में तलाश किया (कि उनकी ख़ुशी के असबाब इख़्तियार करें ताकि उनके यहां एज़ाज़ हो) मगर वह तक़्वा में मिला (और बिल्कुल सही है, जिस क़दर आदमी में तक़्वा ज़्यादा होगा, उतना ही उसका एज़ाज़ ज़्यादा होगा) हम ने अल्लाह की नेमत को खाने और पहनने में तलाश किया (और यह समझा कि ये अल्लाह के बड़े इनआमात हैं) हालांकि अल्लाह तआला शानुहू का बड़ा इन्आम इस्लाम की दौलत और गुनाहों

की सत्तारी है (जिसको यह दो नेमतें हासिल हैं, उस पर अल्लाह का बड़ा इन्आम है।)

हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल किया गया कि जिस शख़्स का दुनिया मक़्सद बन जाये हक़ तआला शानुहू उसके दिल पर तीन चीज़ें मुसल्लत कर देते हैं, एक ऐसा ग़म जो कभी ख़त्म होने वाला न हो, और ऐसा मशग़ला जिस से फ़रागत नसीब न हो, और ऐसा फ़क़्र जिसका कभी ख़ात्मा न हो।

(तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जब तुम किसी ऐसे शख़्स को देखो जिस को हक़ तआला शानुहू ने दुनिया से बे रग़बती और कम बोलना अता फ़रमाया हो तो उसके पास रहा करो, उसको हिक्मत दी गयी है। *(मिश्कात)*

(١٦) عن ابی ہریرۃ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اذا نظر احدکم الی من فضل علیہ فی المال والخلق فلینظر الی من ھو اسفل منہ متفق علیہ کذا فی المشکوٰۃ

16. हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद है कि जब आदमी किसी ऐसे शख़्स की तरफ़ देखे जो माल में या सूरत में अपने से आला हो तो ऐसे शख़्स की तरफ़ भी ग़ौर कर ले जो इन चीज़ों में अपने से कम हो।

फ़ायदा:- यानी आदमी जब किसी लखपती को देखे और उसको देखकर ललचाए और अफ़सोस करे कि यह तो ऐसा मालदार है, मैं नहीं, तो किसी ऐसे आदमी को भी ग़ौर कर ले जिसको नादारी की वजह से फ़ाक़े करने पड़ रहे हों, ताकि पहले अफ़सोस के साथ हक़ तआला शानुहू का उस पर शुक्र अदा हो सके कि उस ने ऐसा नहीं कर रखा।

एक और हदीस में है कि अपने से ज़्यादा मालदारों की तरफ़ निगाहें न ले जाया करो, अपने से कम दरजे वालों को सोचा करो, इस से उस नेमत की हक़ारत तुम्हारे दिलों में नहीं होगी, जो अल्लाह जल्ल शानुहू ने तुम्हें अता कर रखी है। *(मिश्कात)*

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझे मेरे महबूब (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने सात नसीहतें की हैं :-

1. मुझे इसका हुक्म फ़रमाया है कि मिस्कीनों से मुहब्बत किया करूं और उनके क़रीब रहा करूं।

2. मुझे इसका हुक्म फ़रमाया है कि मैं अपने से ऊँचे लोगों (ज़्यादा मालदारों) पर निगाह न रखा करूँ, अपने से कम दरजे वालों पर निगाह रखूँ, (इन पर ग़ौर किया करूँ)।

3. मुझे हुक्म फ़रमाया है कि मैं सिला-रहमी किया करूँ, अगरचे वह मुझ से मुंह फेरे (यानी जिसके साथ सिला-रहमी करूँ, वह मुझ से ग़ायब हो , दूर हो या यह कि मेरे साथ तवज्जोह से पेश न आये बल्कि मुझ से रूगर्दानी करे) तर्ग़ीब तर्हीब के अल्फ़ाज़ ये हैं कि अगरचे वह मुझ पर ज़ुल्म करे, इस से दूसरे मायने की ताईद होती है।

4. मुझे हुक्म फ़रमाया है कि मैं किसी शख़्स से कोई चीज़ न मांगू।

5. मुझे हुक्म फ़रमाया है कि मैं हक़ बात कहूँ, चाहे किसी को कड़वी ही लगे।

6. मुझे हुक्म फ़रमाया है कि मैं अल्लाह तआला शानुहू की रिज़ा के मुक़ाबले में किसी मलामत करने वाले की मालामत की परवाह न करूँ, (यानी जिस चीज़ से हक़ तआला शानुहू राज़ी हों, उसको इख़्तियार करूँ, उसके करने पर अहमक़ लोग मलामत करें तो किया करें।)

7. मुझे हुक्म फ़रमाया है कि मैं "ला हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि" कसरत से पढ़ा करूँ, इसलिए कि ये कलिमात ऐसे ख़ज़ाने से उतरे हैं जो ख़ास अर्श के नीचे है। *(मिश्कात)*

लाहौ-ल को कसरत से पढ़ने की तर्ग़ीब बहुत कसरत से रिवायात में आयी है।

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद वारिद हुआ है कि दो ख़सलतें ऐसी हैं कि जिस शख़्स में हों, हक़ तआला शानुहू उसको साबिरीन और शाकिरीन की जमाअत में शुमार करते हैं। जो शख़्स दीन के बारे में अपने से ऊँचे लोगों के अह्वाल को देखे और उनकी इत्तिबाअ् की कोशिश करे और दुनिया के बारे में अपने से कम दर्जे के लोगों को देखे और इस पर अल्लाह तआला शानुहू का शुक्र अदा करे कि उसने (महज़ अपने फ़ज़्ल से) इसको उससे बेहतर हालत में कर रखा है। हक़ तआला शानुहू उसको साबिर और शुक्र करने वालों में शुमार फ़रमायेंगे। और जो शख़्स दीन के बारे में अपने से कमतर लोगों को देखे (कि फ़लां तो इतना भी नहीं करता जितना मैं करता हूँ) और दुनिया के बारे में अपने

से ऊंचे लोगों को देखे और इस पर अफ़सोस करे कि मेरे पास इतना नहीं है कि जितना फ़लां के पास है, वह न सब्र करने वालों में शुमार है, न शुक्र गुज़ारों में।
(मिश्कात)

औन बिन अबदुल्लाह रह० कहते हैं कि मैं अक्सर मालदारों के पास बैठा करता था, तो मेरी तबीअत ग़मगीन रहती, किसी का कपड़ा अपने कपड़े से बेहतर देखता (तो अपने कपड़े के अदना होने पर अपनी ज़िल्लत महसूस करता, जिस से रंज होता) किसी का घोड़ा अपने घोड़े से आला देखता, फिर मैं ने फ़ुक़रा के पास अपनी नशिस्त शुरू कर दी तो मुझे उस रंज से राहत मिल गयी (कि इन लोगों से अपनी चीज़ों को अफ़ज़ल देखता हूँ।) (एहया)

उलमा ने लिखा है कि निकाह भी किसी ग़रीब से करे, मालदार औरत से न करे, इसलिए कि जो शख़्स मालदार औरत से निकाह करता है पांच आफ़तों में गिरफ़्तार होगा।

1. महर ज़्यादा देना पड़ेगा

2. रूख़्सती में देर और टाल मटोल होगी (कि उसके जहेज़ की तैयारी ही न ख़त्म होगी)

3. उस से ख़िदमत लेना मुश्किल होगा

4. ख़र्च ज़्यादा मांगेगी

5. तलाक़ देना चाहेगा तो उस के माल का लालच तलाक़ नहीं देने देगा।

कहते हैं कि औरत चार चीज़ों में ख़ाविंद से कमतर होनी चाहिए वर्ना ख़ाविन्द उसकी निगाह में ज़लील होगा, उम्र में, क़द की लम्बाई में, माल में, शराफ़त में, और चार चीज़ों में ख़ाविंद से बढ़ी हुई होनी चाहिए, ख़ूबसूरती में, अदब में, तक़्वा में, आदतों में। (एहया)

और माल से ज़्यादा अहम ख़िल्क़त और सेहत के एतिबार से अपने से कमतर लोगों को देखना है।

एक बुज़ुर्ग की ख़िदमत में किसी ने हाज़िर होकर अपने फ़क्र की शिकायत की और बड़ी सख़्त परेशानी का इज़्हार किया कि उसके ग़म में मरने की तमन्ना ज़ाहिर की। उन बुज़ुर्ग ने दर्याफ़्त किया कि तुम इस पर राज़ी हो कि

तुम्हारी आंखें हमेशा के लिए ले ली जायें। और तुम्हें दस हज़ार दिरम मिल जायें, वह इस पर राज़ी न हुआ, फिर फ़रमाया अच्छा इस पर राज़ी हो कि तुम्हें दस हज़ार दिरम देकर तुम्हारी ज़बान ले ली जाये, वह इस पर भी राज़ी न हुआ, फिर उन्होंने फ़रमाया कि इस पर राज़ी हो कि तुम्हारे चारों हाथ पांव काट दिये जायें और तुमको बीस हज़ार दिरम दे दिये जायें, वह इस पर भी राज़ी न हुआ, फिर फ़रमाया, अच्छा इस पर राज़ी हो कि तुम्हें मजनूं बना दिया जाये और दस हज़ार दिरम दे दिये जायें? वह इस पर भी राज़ी न हुआ तो फ़रमाने लगे कि तुम्हें शर्म नहीं आती कि तुम्हारे इक़रार के मुवाफ़िक़ पचास हज़ार से ज़्यादा मालियत का सामान तो हक़ तआला शानुहू ने तुम्हें अता फ़रमा रखा है (और यह मिसाल के तौर पर चंद चीज़ें गिनवाई हैं) फिर भी तुम शिकवा कर रहे हो।

इब्ने सिमाक रह० एक बादशाह के पास गये बादशाह के हाथ में पानी का गिलास था, बादशाह ने उनसे दख़्वास्त की कि मुझे कोई नसीहत कीजिये। इब्ने सिमाक रह० ने कहा कि अगर यह कहा जाये कि यह गिलास पानी का उसी सारी सल्तनत के बदले में मिल सकता है जो तुम्हारे पास है और न ख़रीदा जाये तो पानी मिलने की कोई सूरत नहीं, प्यासे ही रहना होगा, क्या तुम राज़ी हो जाओगे कि सारी सल्तनत देकर पानी ख़रीदो, वर्ना प्यासे मर जाओ। बादशाह ने कहा, यक़ीनन राज़ी हो जाऊँगा। इब्ने सिमाक रह० ने कहा कि ऐसी बादशाहत पर क्या खुश होना जिसकी सारी क़ीमत एक गिलास पानी हो।

इन मिसालों से यह अंदाज़ा होता है कि हक़ तआला शानुहु की एक एक नेमत हर शख़्स के पास ऐसी है कि लाखों करोड़ों उसकी क़ीमत नहीं हो सकती।

ये तो आम नेमतें हैं, जिन में हर शख़्स की शिर्कत है। अगर गहरी निगाह से ग़ौर किया जाये तो हर शख़्स के साथ ख़ुसूसी नेमतें हक़ तआला शानुहू की ऐसी हैं जिन में कोई दूसरा शरीक नहीं, और तीन चीज़ें तो ऐसी हैं कि उनमें हर शख़्स को एतिराफ़ है कि वह उस नेमत में मुम्ताज़ है, कोई दूसरा उसका शरीक नहीं।

इन में से एक तो अक़्ल है कि हर शख़्स चाहे कितना ही बेवक़ूफ़ हो, वह यह समझा करता है कि मैं सब से ज़्यादा अक़्लमंद हूँ, दूसरे उस बात को नहीं समझते जिस को मैं समझता हूँ। ऐसी हालत में चाहे वाक़िए के एतिबार से सही हो या ग़लत लेकिन इस के अपने एतिक़ाद और इक़रार के एतिबार से उस

पर हक़ तआला शानुहू का एक ऐसा इनआम है कि यह इनआम किसी दूसरे पर नहीं है। ऐसी हालत में क्या यह ज़रूरी नहीं कि अल्लाह तआला की इस नेमत में सबसे ज़्यादा शुक्रगुज़ार बने (और अगर किसी मामूली चीज़ रूपया, पैसा वग़ैरह में किसी दूसरे से कम हो तो यह सोचे कि सबसे अशरफ़ चीज़ अक़्ल में सबसे ज़्यादा बढ़ा हुआ हूँ।

दूसरी चीज़ आदात हैं कि हर शख़्स अपने सिवा दूसरे हर शख़्स में कोई न कोई ऐसी आदत समझा और पाया करता है जो उसके नज़दीक ऐब होती है, और गोया उसके नज़दीक उसके सिवा हर शख़्स के अंदर कोई न कोई अख़्लाक़ी ऐब ज़रूर है, और अपनी किसी आदत को भी (लफ़्ज़ों में चाहे मान ले, मगर दिल में) ऐबदार नहीं समझा करता, न उसके छोड़ने को तय्यार होता है। ऐसी हालत में क्या यह ज़रूरी नहीं कि आदमी यह सोचे कि हक़ तआला शानुहू ने अगर किसी एक आध चीज़ में दूसरे से कम दे रखा है तो आदात की नेमतों में उसको ख़ास तौर से सब से बढ़ा रखा है।

तीसरी चीज़ इल्म है कि हर शख़्स अपने ज़ाती हालात और अन्दरूनी अहवाल से इतना ज़्यादा वाक़िफ़ और उनका जानने वाला होता है कि कोई दूसरा शख़्स उसके अहवाल से इतना वाक़िफ़ नहीं होता और उनमें ऐसी बहुत सी चीज़ें होती हैं कि आदमी हरगिज़ यह गवारा नहीं करता कि उसके उन उयूब पर कोई दूसरा मुत्तला हो, तो हक़ तआला शानुहू का यह एहसान कि उसको अपने अहवाल का इल्म अता फ़रमाने के बावजूद दूसरों से उसकी सत्तारी फ़रमा रखी है और उसकी यह तमन्ना कि मेरे इस इल्म की किसी को ख़बर न हो, पूरी कर रखी है कि इन में दूसरा कोई भी इसका शरीक नहीं, क्या ऐसी चीज़ नहीं है जिसमें यह सबसे मुम्ताज़ है और इसका शुक्र इसके ज़िम्मे ज़रूरी है?

इनके अलावा हज़ारों चीज़ें हर शख़्स में ऐसी हैं जिनके मुताल्लिक़ वह कभी इसको गवारा नहीं कर सकता कि वह चीज़ उस से लेकर उसके बदले में उसकी ज़िद या कोई दूसरी चीज़ दे दी जाये, मसलन इंसान होना है, कोई नहीं गवारा करता कि उसको आदमी से बंदर बना दिया जाये, मर्द होना है, कोई पसंद नहीं करता कि उसको मर्द से औरत बना दिया जाये। इसी तरह मोमिन होना है, हाफ़िज़े क़ुरआन होना है, आलिम होना है, ख़ूबसूरत होना है, साहिबे औलाद होना है, ग़रज़ अख़्लाक़ में, सूरत में, सीरत में, अज़ीज़ व अक़ारिब में, अहल व अयाल में, इज़्ज़त व मर्तबे में, हर शख़्स के पास ऐसे ख़ुसूसी उमूर मिलेंगे जिन

के तबादले पर वह कभी भी राज़ी न होगा।

तो क्या फिर यह बात सही नहीं कि हर शख़्स पर अल्लाह तआला शानुहू के हज़ारों ऐसे ख़ुसूसी इनआमात हैं, जो दूसरे को नसीब नहीं, ऐसी हालत में इन सब से आंख बंद करके अगर कोई एक दो वे चीज़ें जो दूसरे के पास हैं और उसके पास नहीं है, उनमें ललचाये और नाशुक्री करे, यह इंतिहाई कमीनापन नहीं है? और अगर किसी के पास माल ही ज़्यादा देखता है तो इन उमूर में जो ऊपर ज़िक्र किये गये ग़ौर करे कि इन में से कितनी चीज़ें ऐसी हैं, जिनमें यह उस शख़्स से बढ़ा हुआ है, जिस पर रश्क या हसद कर रहा है, इस हाल में कि मजमूआ-ए-एहसानात में यह ख़ुद उससे बढ़ा हुआ है। *(एह्या)*

और इस सबके बाद जो माल उसके पास है, उसका हश्र मालूम नहीं, क्या होने वाला है वह उसके लिए राहत का सबब है या वबाले जान है। इसी लिए हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद है कि किसी फ़ाजिर शख़्स के पास कोई नेमत देख कर रश्क न करो, तुम्हें ख़बर नहीं कि मरने के बाद वह किस मुसीबत में गिरफ़्तार होने वाला है इसलिए कि फ़ाजिर शख़्स के लिए अल्लाह के यहां ऐसी हलाकत है यानी जहन्नम जो कभी ख़त्म होने वाली नहीं है। *(मिश्कात)*

आइंदा हदीस में यह मज़्मून तफ़्सील से आ रहा है।

(١٧) عن عقبة بن عامر عن النبى صلى الله عليه وسلم قال اذا رأيت الله عزوجل يعطى العبد من الدنيا عَلى معاصيهِ مايحبّ فانما هواستدراجٌ ثم تلارسول الله صلى الله عليه وسلم فَلَمَّا نَسُوْا مَاذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ حَتّٰى اِذَا فَرِحُوْا بِمَآ اُوْتُوْآ اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ ○ رواه احمد كذا فى المشكوٰة

17. हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि जब तू यह देखे कि हक़ तआला शानुहू किसी गुनाहगार पर उसके गुनाहों के बावजूद दुनिया की वुस्अत फ़रमा रहा है तो यह अल्लाह तआला शानुहू की तरफ़ से ढील है, फिर हुज़ूर सल्ल॰ ने आयते शरीफ़ा "फ़लम्मा नसू" से "मुब्लिसून" तक तिलावत फ़रमायी जिसका तर्जुमा यह है कि पस जब वे लोग उन चीज़ों को भूले रहे, जिनकी उनको नसीहत की जाती थी, तो हम ने उन पर (राहत के) हर क़िस्म के दरवाज़े खोल दिये, यहां तक कि जब वे उन चीज़ों पर जो उनको मिली थीं, इतराने लगे, तो हम ने उनको दफ़्अतन पकड़ लिया, फिर तो वे हैरत में रह गये।

फ़ायदाः- यह आयते शरीफ़ा सूरः अन्आम के पांचवें रूकूअ् की है, ऊपर से हक़ तआला शानुहू ने जो मामला पहली उम्मतों के साथ फ़रमाया है उसका इज्माली बयान है जिसका मुख़्तसर तर्जुमा यह है कि (हमने और उम्मतों की तरफ़ भी जो कि आप से पहले) ज़माने में थीं (पैग़म्बर भेजे थे) मगर उन्होंने उन पैग़म्बरों को न माना (सो हमने उनको तंगदस्ती और बीमारी) वग़ैरह मसाइब में मुब्तला किया और इन सख़्तियों के (साथ पकड़ा ताकि वे लोग ढीले पड़ जायें) कि आफ़तें आने पर अल्लाह तआला शानुहू को याद किया जाता है मगर वे इस पर भी अपनी हरकतों से बाज़ न आये (पस जब उनको हमारी तरफ़ से सज़ा पहुँची तो उन्होंने आजिज़ी क्यों न की) ताकि उनकी आह व ज़ारी और आजिज़ी और तौबा से उनका क़ुसूर माफ़ कर दिया जाता (लेकिन उनके दिल तो वैसे ही सख़्त रहे और शैतान उनके आमाले (बद को जिनमें वे मुब्तला थे और उनकी हरकतों (को उनकी निगाह में आरास्ता करके दिखाता रहा, पस जब वे लोग उन चीज़ों को भूले रहे जिनकी उनको) पैग़म्बरों की तरफ़ से (नसीहत की जाती थी तो हम ने उन पर) राहत व आराम और ऐश व इशरत की(हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिये) जिस से वे ऐश परस्ती में खूब मस्त हो गये (यहां तक कि जब वे उन चीज़ों के साथ जो उनको दी गयी थीं, खूब इतराने) और अकड़ने (लगे, तो हम ने उनको दफ़अतन पकड़ लिया) और ऐसा फ़ौरी अज़ाब एकदम उन पर मुसल्लत कर दिया कि उनको इसका वहम व गुमान भी न था (फिर तो वे हैरत में रह गये) कि यह क्या हो गया, यह मुसीबत कहां से नाज़िल हो गयी (फिर) तो हमारे फ़ौरी अज़ाब से (ज़ालिमों की बिल्कुल जड़ कट गयी और अल्लाह का शुक्र है, जो तमाम जहान का परवरदिगार है) कि ऐसे ज़ालिमों की जड़ कट गयी।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस आयते शरीफ़ा की तिलावत से हक़ तआला शानुहू की आदते शरीफ़ा की तरफ़ इशारा करके तंबीह फ़रमायी है कि अल्लाह तआला की नाफ़रमानियों और गुनाहों के बावजूद ऐश व इशरत और राहत के असबाब का होना बसा औक़ात हक़ तआला शानुहू की तरफ़ से ढील होती है, जिसको इस्तिदराज कहते हैं, जिसका क़ुरआन पाक की इस आयत में ज़िक्र है और इसके अलावा भी मुतअद्दद आयात में इस पर तंबीह फ़रमायी है, यह बड़ी ख़तरे की चीज़ है, इसलिए कि इस में अक्सर फ़ौरी अज़ाब आदमी पर ऐसा मुसल्लत हो जाता है कि वह हैरान खड़ा रह जाता है

और कोई रास्ता उसको इस आफ़त से बचने का नहीं मिलता, इसलिए इस से बहुत ज़्यादा डरते रहना चाहिए। हज़रत उबादा रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जब हक़ तआला शानुहू किसी क़ौम को बढ़ाना चाहते हैं तो उन में मियाना रवी और इफ़्फ़त (पाकदामनी) पैदा फ़रमाते हैं, और जब किसी क़ौम को ख़त्म करना मक़्सूद होता है तो उस में ख़ियानत का दरवाज़ा खुल जाता है, फिर जब वे अपनी इस हरकत पर ख़ूब ख़ुश होने लगते हैं तो एकदम उन पर अज़ाब मुसल्लत हो जाता है और यह आयत पढ़ी।

हज़रत हसन रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जिस पर वुस्अत की जाये और वह यह न समझे कि यह मेरी हलाकत का पेश ख़ेमा है, वह समझदार नहीं है, और जिस पर तंगी हो और वह यह न समझे कि यह मेरे लिए हक़ तलाआ शानुहू की तरफ़ रूजूअ् करने के लिए मुहलत है, वह समझदार नहीं। (दुर्रे मंसूर)

एक हदीस में है कि ख़ुद हुज़ूर सल्ल॰ ने भी यह दुआ की, या अल्लाह, जो मुझ पर ईमान लाये और उन अहकामात को सच्चा जाने, जो मैं लाया हूँ तू उसको माल कम अता कर, औलाद कम अता कर और अपनी मुलाक़ात का शौक़ उसको ज़्यादा दे, और जो मुझ पर ईमान न लाये और इन अहकामात को सच्चा न जाने, उसको माल भी ज़्यादा दे, औलाद भी ज़्यादा दे, और उसकी उम्र भी ज़्यादा कर। (कंज़)

बहरहाल मआसी (गुनाहों) की कसरत के साथ नेमतों का होना ज़्यादा ख़तरनाक है और ऐसे वक़्त में बहुत ज़्यादा तौबा इस्तिग़्फ़ार और हक़ तआला शानुहू की तरफ़ रूजूअ् करने की ज़रूरत है, इसी वजह से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वह इर्शाद है जो क़रीब ही इस से पहली हदीस के आख़िर में गुज़रा, कि किसी फ़ाजिर के पास कोई नेमत देख कर रश्क न करो, तुम्हें ख़बर नहीं कि वह मरने के बाद किस मुसीबत में गिरफ़्तार होने वाला है।

(١٨) عن شداد بن اوس قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم الكيس من دان نفسه وعمل لمابعد الموت والعاجز من اتبع نفسه هواها وتمنى على الله رواه الترمذى وابن ماجه كذا فى المشكوٰة وزادالسيوطى فى الجامع الصغير احمد والحاكم ورقم له بالصحة.

18. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि समझदार शख़्स वह है जो अपने नफ़्स को (अल्लाह तआला की

रिज़ा के कामों का) मुतीअ़ बनाये और मरने के बाद काम आने वाले आमाल करे और आजिज़ (बेवक़ूफ़ है) वह शख़्स जो नफ़्स की ख़्वाहिशों का इत्तिबाअ़ करे और अल्लाह तआला से उम्मीदें बांधे।

फ़ायदा:- यानी हालत तो यह है कि नफ़्स की ख़्वाहिशात के मुक़ाबले में हराम व हलाल की भी परवाह नहीं और अल्लाह तआला शानुहू से बड़ी बड़ी उम्मीदें लगाये रखता है कि वह रहीम है, करीम है और इन उम्मीदों पर गुनाह की भी परवाह न करे।

एक और हदीस में है, समझदार वह है जो मौत के बाद के लिए अमल करे और नंगा वह है जो दीन से ख़ाली हो। या अल्लाह, ज़िन्दगी सिर्फ़ आख़िरत ही की ज़िन्दगी है। *(जामिउस्सग़ीर)*

यानी वही पायदार ज़िन्दगी है जो उसमें ख़ाली हाथ गया तो उसने उम्र भी खो दी। यहां यह समझ लेना चाहिए कि हक़ तआला शानुहू की रहमत और मग़्फ़िरत का उम्मीदवार होना और उसकी तमन्ना करना और उसको अल्लाह तआला शानुहू से मांगना दूसरी चीज़ है, और उसकी रहमत और मग़्फ़िरत के घमंड पर ग़ुरूर और यह गुमान कि मैं जो चाहे करता रहूँ, मेरी मग़्फ़िरत तो हो ही जायेगी, दूसरी चीज़ है :

इमाम राज़ी रह० फ़रमाते हैं कि हक़ तआला शानुहू का इर्शाद :-

فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝

"फ़ला तग़ुर्रन्न-कुमुल् हयातुद्दुन्या वला यग़ुर्रन्न-कुम् बिल्लाहिल् ग़रूर०"

और दूसरा इर्शाद :-

وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِيُّ

व लाकिन्न-कुम् फ़तन्तुम् अन्फ़ुस-कुम् व त-रब्बस्तुम वर्तब्तुम् व ग़र्रत् कुमुल् अमानिय्यु०"

ये दोनों आयतें ग़ुरूर की मज़म्मत के लिए बहुत काफ़ी हैं। *(एहया)*

पहली आयते शरीफ़ा सूर: लुक़्मान के आख़िर में है जिसका तर्जुमा यह है कि :-

"तुम लोगों को दुनिया की ज़िन्दगी धोखे में न डाल दे (कि तुम इस में

लग कर आख़िरत को भूल जाओ) और न तुमको धोखेबाज़ (शैतान) धोखे में डाल दे।

इस आयते शरीफ़ा की तफ़्सीर में हज़रत सओद बिन जुबैर रह० फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला से धोखे में डाल देने का मतलब यह है कि तू गुनाह करता रहे और मग़्फ़िरत की तमन्नायें करता रहे।

दूसरी आयते शरीफ़ा सूरः हदीद के दूसरे रूकूअ् की है, जिसमें ऊपर से क़ियामत के दिन के एक मंज़र का ज़िक्र है कि उस दिन मुसलमानों के सामने एक नूर दौड़ता हुआ होगा जो उनके आगे आगे चल रहा होगा (यह पुल सिरात पर से गुज़रने के लिए होगा) इसके बाद इर्शाद है :-

يَوْمَ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ قِيْلَ ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ط فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ ط بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ۝ يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ط قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ اَمْرُ اللّٰهِ وَغَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝

"यौ-म यक़ूलुल् मुनाफ़िक़ू-न वलमुनाफ़िक़ातु लिल्ल ज़ी-न आ म नुन् ज़ुरूना, नक़्तबिस मिन् नूरिकुम० क़ीलर्जिअू वरा-अकुम फ़ल्तमिसू नूरन्० फ़ज़ुरि-ब बै-न हुम बिसूरिल् लहू बाब० बातिनुहू फ़ीहिर्रह्मतु व ज़ाहिरू-हू मिन क़िब लिहिल् अज़ाब० युनादूनहुम् अलम् नकुम् म-अ-कुम्० क़ालू बला व लाकिन्न कुम फ़तन्तुम अन्फ़ु-स कुम व त-रब्बस्तुम वर्तब्तुम व ग़र्रत कुमुल अमानिय्यु हत्ता जा-अ अम्रूल्लाहि व ग़र्र-कुम् बिल्लाहिल् ग़रूर०"

तर्जुमाः- उस दिन मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें मोमिनों से कहेंगे कि ज़रा हमारा इंतिज़ार कर लो ताकि हम भी तुम्हारे नूर से कुछ रोशनी हासिल कर लें, तो उनको जवाब दिया जायेगा कि तुम अपने पीछे लौट जाओ वहां रोशनी तलाश करो, फिर क़ायम कर दी जायेगी उनके दर्मियान एक दीवार, जिसका एक दरवाज़ा होगा कि उसके अंदरूनी जानिब रहमत है और उसके बाहर की तरफ़ अज़ाब (फिर वे मुनाफ़िक़) आवाज़ देंगे, क्या दुनिया में हम तुम्हारे साथ न थे, वे (मुसलमान) कहेंगे कि हां साथ थे तो सही लेकिन तुमने अपने को गुमराही में फंसा रखा था और तुम (मुसलमानों पर मसाइब के मुतमन्नी और) मुन्तज़िर रहा

करते और (इस्लाम के हक़ होने में) तुम शक किया करते थे और तुमको तुम्हारी बेहूदा तमन्नाओं ने धोखे में डाल रखा था यहां तक कि ख़ुदा का हुक्म (मौत के मुताल्लिक़) आ पहुँचा और तुमको धोखा देने वाले (शैतान) ने अल्लाह तआला के साथ धोखे में डाल रखा था।

अबू सुफ़ियान रह० से इस आयते शरीफ़ा की तफ़्सीर में नक़ल किया गया है कि "फ़तन्तुम अन्फ़ु-स कुम" यानी तुम ने गुनाहों के साथ अपने आपको गुमराही में डाल रखा था और तुमको तमन्नाओं ने धोखे में डाल रखा था कि तुम यह कहते थे कि हमारी मग़्फ़िरत हो जायेगी। *(दुर्रे मंसूर)*

साहिब मज़ाहिर रह० लिखते हैं कि शैख़ इब्ने अिबाद शाज़ली रह० बीच शरहे हिकम के कहते हैं कि उलमा बिल्लाह ने कहा है कि रजा-ए-काज़िब (झूठी उम्मीद) कि मग़रूर हो साहब उस का उस पर और बाज़ रहे अमल से और दिलेर करे उसको गुनाहों पर, हक़ीक़त में रजा नहीं है बल्कि वह आरज़ू और फ़रेब शैतान का है।

और हज़रत मारूफ़ करख़ी रह० फ़रमाते हैं कि तलब करना बहिश्त का बे अमल के एक गुनाह है गुनाहों से, और उम्मीदे शफ़ाअत बे सबब व बे इलाक़ा एक क़िस्म है फ़रेब से, और उम्मीद रखना रहमत की, इससे कि फ़रमांबरदारी न करे उसकी हमाक़त और जहालत है।

और हसन बसरी रह० कहते हैं कि एक क़ौम को बाज़ रखा बख़्शिश की आरज़ुओं ने, यहां तक कि बाहर निकली दुनिया से और हाल यह है कि नहीं उनके लिए नेकी। कहता है एक उनमें से कि अच्छा रखता हूँ मैं गुमान अपने परवरदिगार से कि बख़्शने वाला है। झूठ कहता है, अगर अच्छा होता गुमान उसका साथ परवरदिगार के, तो अच्छे अमल करता और हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि दूर रहो ऐ बन्दगाने ख़ुदा उन बातिल आरज़ुओं से कि यह वादी अहमक़ों की है कि पड़े हैं लोग इनमें। क़सम है ख़ुदा-ए-तआला की, न दी ख़ुदा-ए-तआला ने किसी बंदे को उस की आरज़ुओं से ख़ैर दुनिया में और न आख़िरत में। *(मज़ाहिरे हक़)*

इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि हर सआदत की कुंजी चौकन्ना रहना और समझ से काम करना है और हर क़िस्म की बदबख़्ती का चश्मा ग़ुरूर और ग़फ़लत है। हक़ तआला शानुहू का कोई एहसान ईमान और मअ्रिफ़त से बढ़

कर नहीं है और उनके लिए कोई ज़रिया इसके सिवा नहीं कि हक़ तआला शानुहू बसीरत के नूर के साथ दिल में इंशिराह पैदा कर दे, और हक़ तआला शानुहू का कोई अज़ाब कुफ़्र और मअ्सियत से बढ़ कर नहीं है और इसका मुहर्रिक सिर्फ़ यह है कि जहालत की ज़ुल्मत से दिल की आंख अंधी हो जाये, पस समझदार और बसीरत वाले लोगों के दिल ऐसे हैं जैसा कि किसी ताक़ में निहायत रौशन चिराग़ (बिजली का क़ुमक़ुमा) रखा हुआ हो, जिसकी मिसाल क़ुरआन पाक की आयत "क-मिश्कातिन फ़ीहा मिस्बाह" है (सूरः नूर, रूकूअ 5) और ग़ुरूर में पड़े हुए लोगों के दिल ऐसे हैं जैसा कि बहुत सी तारीकियों में कोई शख़्स हो कि कोई चीज़ उसको नज़र न आती हो:-

كَظُلُمٰتٍ فِىْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّغْشٰهُ (نور ع ٥)

"कज़ुलुमातिन् फ़ी बहरिल् लुज्जिय्यिं य् यग़शाहु॰"

(सूरः नूर, रूकूअ 5)

और जब यह मालूम हो गया कि ग़ुरूर ही असल सर चश्मा हर हलाकत का है तो इस की थोड़ी सी तफ़सील मालूम होने की ज़रूरत है, ताकि उस से एहतिमाम से बचा जा सके। ग़ुरूर की मज़म्मत क़ुरआन पाक और अहादीस में कसरत से वारिद हुई है।

और हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि समझदार शख़्स वह है जो अपने नफ़्स को क़ाबू में रखे और मरने के बाद के लिए अमल करता रहे और अहमक़ वह शख़्स है जो अपने नफ़्स की ख़्वाहिशात का इत्तिबाअ् करे और अल्लाह जल्ल शानुहू पर तमन्नायें करे और अहादीस में जह्ल के मुताल्लिक़ जितनी मज़म्मतें और वओदें आयी हैं। वे सारी ग़ुरूर पर भी सादिक़ आती हैं, इसलिए कि ग़ुरूर जह्ल से पैदा होता है, बल्कि जह्ल ही का जुज़्व है, अगरचे हर जह्ल ग़ुरूर नहीं, लेकिन हर ग़ुरूर जह्ल ज़रूर है और इनमें सबसे बढ़ा हुआ जह्ल व ग़ुरूर कुफ़्फ़ार और फ़ासिक़ फ़ाजिर लोगों का है जो कहते हैं कि दुनिया नक़द है, इस वक़्त मौजूद है और आख़िरत उधार है, बाद को आने वाली है और "नक़द रा बनसीह गुज़ाश्तन कारे ख़िरद मंदां नेस्त," नक़द को उधार पर छोड़ना समझदारों का काम नहीं है यह ख़्याल इंतिहाई बेवक़ूफ़ी और जहालत का है। यह क़ायदा वहां है जहां नक़द और उधार बराबर हों, लेकिन जहां कोई चीज़ नक़द एक रूपये में फ़रोख़्त होती हो और उधार सौ रूपये में जाती हो, वहां कोई

अहमक़ भी यह न कहेगा कि नक़द को उधार पर न छोड़ना चाहिये। हालांकि दुनिया की नक़द लज़्ज़तों को आख़िरत के मुक़ाबले में कोई निस्बत ही नहीं, दुनिया की ज़िन्दगी किसी शख़्स की अगर हो सकती है तो सौ डेढ़ सौ बरस, इस मुद्दत को आख़िरत की कभी ख़त्म न होने वाली मुद्दत के साथ क्या निस्बत हो सकती है।

इसी तरह कोई तबीब किसी बीमार को एक फल को मना करता है और मुह्लिक बताता है, लेकिन बीमार कभी यह नहीं कह सकता कि इस फल के खाने की लज़्ज़त नक़द है और सेहत उधार है, लिहाज़ा नक़द को उधार पर नहीं छोड़ना चाहिए। इसी तरह बाज़ बेवक़ूफ़ कहते हैं कि दुनिया की मज़र्रत और तकलीफ़ यक़ीनी है और आख़िरत में शक है। यक़ीन को शक पर न छोड़ना चाहिए। यह भी जहालत की बात है कि आदमी तिजारत में मशक़्क़तें बर्दाश्त करता है जो यक़ीनी हैं, महज़ नफ़े की उम्मीद पर, जिस में शक है कि तिजारत में नफ़ा होगा या नहीं।

बीमार कड़वी से कड़वी दवा पीता है, फ़स्द कराता है, जोंकें लगवाता है, शग़ाफ़ दिलवाता है, जिनकी तक्लीफ़ यक़ीनी है और यह सब कुछ सेहत की उम्मीद पर है, जिसका होना यक़ीनी नहीं। इसी तरह से यह ख़्याल भी धोखा है कि आख़िरत को हम ने देखा नहीं है, तजुर्बा नहीं किया, मालूम नहीं क्या हक़ीक़त है, यह ख़्याल भी इंतिहाई जहालत है। नावाक़िफ़ आदमी के लिए अगर ज़ाती इल्म न हो तो तजुर्बेकार वाक़िफ़ लोगों का क़ौल ही मोतबर होता है, कोई बीमार कभी यह नहीं कह सकता कि फ़लां दवा में यह तासीर मुझे मालूम नहीं कि है या नहीं, वह हमेशा इलाज में वाक़िफ़ तबीब और डाक्टरों के क़ौल पर एतिमाद करता है, कभी किसी डाक्टर से यह नहीं पूछता कि इस का असर होना मुझे दलील से समझाओ और अगर कोई ऐसा कहेगा तो वह बेवक़ूफ़ समझा जायेगा। इसी तरह आख़िरत के बारे में अंबिया, औलिया, हुकमा, और उलमा के अक़वाल जिन पर सारी दुनिया ने हमेशा एतिमाद किया है, मोतबर होंगे और चंद जाहिलों के यह कह देने से कि हमें मालूम नहीं या हमें यक़ीन नहीं, कुछ असर नहीं पड़ता। इस क़िस्म के औहाम आख़िरत के बारे में काफ़िरों को पेश आते हैं और मुसलमान अपनी ज़बान से मुसलमान होने का इक़रार करने की वजह से ज़बान से तो ऐसी बातें नहीं कहते लेकिन वे अल्लाह तआला के अहकाम को पसे पुश्त डालकर उसके गुनाहों का इर्तिकाब करके शहवतों और दुनिया की

लज़्ज़तों में मुन्हमिक होकर अमली तौर पर और ज़बाने हाल से गोया वे भी यही कहते हैं, वर्ना कोई वजह नहीं कि वे दुनिया को आख़िरत पर तर्जीह दें।

ये लोग ज़बानी तौर पर धोखे में पड़े हुए हैं, कहते हैं कि हक़ तआला शानुहू करीम है, ग़फ़ूर है, रहीम है उसकी माफ़ी के हम उम्मीदवार हैं, हमको उसकी मग़्फ़िरत पर एतिमाद है और इसका उम्मीदवार रहना मतलूब है, महमूद है, पसंदीदा है, उसकी रहमत बड़ी वसीअ् है, उसकी मग़्फ़िरत के दरियाओं के मुक़ाबले में हमारे गुनाह क्या चीज़ हैं। ख़ुद हक़ तआला शानुहू का पाक इर्शाद है जो हदीसे क़ुदसी में आया है कि मैं बंदे के गुमान के साथ हूँ, उसको चाहिए कि मेरे साथ नेक गुमान करे।

यह इर्शाद यक़ीनन सही है और हक़ तआला शानुहू का यही पाक इर्शाद है लेकिन इसके साथ यह भी समझ लेना चाहिए कि शैतान आदमी को किसी सही कलाम के ग़लत मायने से गुमराह कर सकता है। अगर ऐसा न होता तो शैतान को धोखा देने में मुश्किल पेश आती।

इसी चीज़ को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने इस इर्शाद में वाज़ेह फ़रमाया है कि समझदार वह शख़्स है जो अपने नफ़्स को मुतीअ् करे और मरने के बाद के लिए आमाल करे और अहमक़ वह शख़्स है जो नफ़्स की ख़्वाहिशात का इत्तिबाअ् करे और अल्लाह तआला पर उम्मीदें बांधे। यही वे उम्मीदें हैं हक़ तआला शानुहू पर, जिसको शैतान ने अल्लाह तआला शानुहू के साथ नेक उम्मीद का ग़िलाफ़ पहनाया है। हक़ तआला शानुहू ने अपने से उम्मीदें रखने की ख़ुद शरह फ़रमा दी। चुनांचे इर्शाद है :-

اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِیْنَ هَاجَرُوْا وَجَاهَدُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ یَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللّٰهِ ط (بقره ع ۲۷)

"इन्नल्लज़ी-न आम नू वल्लज़ी-न हाज-रू व जाह-दू फ़ी सबीलिल्लाहि उलाइ-क यर्जू-न रह्म-तल्लाह०" *(बक़रः रूकूअ 27)*

हक़ीक़त में जो लोग ईमान लाये हैं और जिन लोगों ने अल्लाह के वास्ते अपना वतन छोड़ दिया है और जिन लोगों ने अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया है (जिस में दीन के लिए हर कोशिश दाख़िल है) यही लोग हैं जो अल्लाह तआला शानुहू की रहमत के उम्मीदवार हैं।

क़ुरआन पाक में जगह जगह जन्नत को और उसकी नेमतों को आमाल

का बदला बताया गया है। ऐसी हालत में ग़ौर करने की चीज़ है कि अगर कोई शख़्स किसी को बर्तन बनाने पर मज़दूर रखे और बहुत बड़ी उज्रत उसकी मुक़र्रर कर दे जिसकी कोई हद नहीं और वह शख़्स निहायत करीम हो, मज़दूरी देने में बहुत सख़ी हो और उज्रते मुक़र्ररः पर बहुत ज़्यादा इन्आम देने वाला हो, जो बर्तन ख़राब बन जायें उन पर भी उज्रतें दे देता हो जिन में मामूली नुक़्स रह जाये उन पर भी तसामोह कर लेता हो, और मज़दूर बजाये बर्तन बनाने के उन औज़ारों को भी तोड़ दे जिन से बर्तन बनाया जाता है और यह कहे कि बर्तन बनवाने वाला बड़ा करीम है, उजरत बहुत ज़्यादा देता है इसलिए उन सबको तोड़ फोड़ कर बहुत ज़्यादा उजरत मिलने के इंतिज़ार में बैठा रहे, क्या कोई अहमक़ भी उसको अक़्ल वाला कहेगा और यह हमाक़त इस वजह से होती है कि उम्मीद और तमन्ना में फ़र्क़ नहीं समझा जाता।

हज़रत हसन बसरी रह० से किसी ने पूछा कि बाज़ लोग नेक अमल तो करते नहीं और यह कहते हैं कि हम अल्लाह तआला शानुहू से नेक उम्मीद रखते हैं, वह फ़रमाने लगे (उम्मीद तुम से) बहुत दूर है, बहुत दूर है, ये उनकी आरज़ूयें हैं जिन में वे झुके जा रहे हैं। जो शख़्स किसी चीज़ की उम्मीद रखता है, वह उसको तलब किया करता है और जो शख़्स किसी चीज़ से (मसलन अज़ाबे इलाही से) डरा करता है, वह उस से भागा करता है (उस से बचने की कोशिश किया करता है)

मुस्लिम बिन यसार रह० ने एक दिन इतना लम्बा सज्दा किया कि (दांतों में ख़ून उतर आया और) दो दांत गिर गये। एक शख़्स कहने लगे कि (मुझसे अमल तो होता नहीं, लेकिन) अल्लाह तआला से मग़्फ़िरत की उम्मीद ज़रूर रखता हूँ। मुस्लिम कहने लगे, बहुत बईद है और बहुत ही बईद है, जो शख़्स किसी चीज़ की उम्मीद करता है, उसको तलब किया करता है और जो शख़्स किसी चीज़ से डरा करता है, उस से भागा करता है। पस जब कोई शख़्स लड़का होने की उम्मीद करे और निकाह न करे या निकाह करे और सोहबत न करे, और लड़का होने की उम्मीद बांधे रहे, वह बेवक़ूफ़ कहलायेगा। इसी तरह जो शख़्स अल्लाह तआला की रहमत की उम्मीद करे और ईमान भी न लावे या ईमान लाये और नेक अमल ही न करे और गुनाहों को न छोड़े वह बेवक़ूफ़ है, अलबत्ता जो शख़्स निकाह करे और सोहबत करे फिर वह मुतरद्दिद रहे कि बच्चा होता है या नहीं होता और अल्लाह के फ़ज़्ल से उम्मीद रखे कि बच्चा

होगा और इस से डरता रहे कि रहम पर कोई आफ़त न आये, बच्चा ज़ाया न हो जाये, उसकी हिफ़ाज़त करता रहे, यहां तक कि बच्चा पैदा हो जाये तो वह अक़्लमंद है। इसी तरह जो शख़्स ईमान लाये, नेक अमल करे, बुरे आमाल से बचता रहे और अल्लाह तआला की रहमत की उम्मीद करे कि वह क़ुबूल फ़रमा लेगा और क़ुबूल न होने से डरता रहे हत्ताकि इसी हाल पर उसकी मौत आ जाये तो वह समझदार है, इसके अलावा सब बेवक़ूफ़ हैं यही लोग हैं जिनके मुताल्लिक़ क़ुरआन पाक में इर्शाद है:-

وَلَوْتَرٰى اِذِالْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ (سجده ع ۲)

"व लौ तरा इज़िल् मुज्रिमू-न नाकिसू रूऊसिहिम् अिन्द रब्बिहिम्॰"

(सज्दा, रूकूअ 1)

और अगर आप उन लोगों का हाल देखें तो अजब हाल देखें, जब कि ये मुज्रिम लोग अपने रब के सामने सर झुकाये खड़े होंगे और कहते होंगे, ऐ हमारे परवरदिगार! बस हमारी आंखें और कान खुल गये, पस हमको दुनिया में फिर भेज दीजिये ताकि हम अब नेक काम करें, अब हमको पूरा यक़ीन आ गया यानी अब हमको इसका पूरा यक़ीन आ गया कि जैसा बग़ैर निकाह के और सोहबत के बच्चा पैदा नहीं होता और बग़ैर ज़मीन को दुरूस्त करने और बीज डालने के खेती नहीं होती, उसी तरह बग़ैर नेक अमल के आख़िरत का सवाब नहीं मिलता, अलबत्ता ऐसे मौक़े पर अल्लाह तआला शानुहू की मग़्फ़िरत की उम्मीद बहुत पसंदीदा है जब कि कोई शख़्स गुनाहों में मुन्हमिक हो और तौबा करना चाहता हो और शैतान उसको धोखे में डाले कि तुझ जैसे गुनाहगार की तौबा कहां क़ुबूल हो सकती है, तूने इतने गुनाह किये हैं कि इनकी बख़्शिश तो मुम्किन ही नहीं तो उसके लिए अल्लाह जल्ल शानुहू का इर्शाद है :-

قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ٥ وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ٥ وَاتَّبِعُوْٓا اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۙ٥ اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى مَا فَرَّطْتُّ فِيْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ۙ٥ اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ۙ٥ اَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ لِيْ كَرَّةً فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ٥ (زمر ع ٦)

"क़ुल या अिबादियल्लज़ी-न अस-फ़ू अला अन्फ़ुसिहिम् ला तक़्न-तू मिर्रह्म-तिल्लाहि॰ इन्नल्ला-ह यग़्फ़िरूज़्ज़ुनू-ब जमीअन् इन्नहू हुवल् ग़फ़ूरूर्रहीम॰ व अनीबू इला रब्बिकुम व अस्लिमू लहू मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-य कुमुल् अज़ाबु सुम्-म ला तुन्सरून्॰ वत्तबिअू अह्स-न मा उन्ज़ि-ल इलैकुम् मिर्रब्बिकुम् मिन् क़ब्लि अंय्यअ् ति-य कुमुल् अज़ाबु बग़्त-तवं व अन्तुम् ला तश्अुरून॰ अन् तक़ू-ल नफ़्सुं य्या हस्रता अला मा फ़र्रत्तु फ़ी जंबिल्लाहि व इन् कुन्तु लमिनस्साख़िरीन॰ औ तक़ू-ल लौ अन्नल्ला-ह हदानी लकुन्तु मिनल् मुत्तक़ीन॰ औ तक़ू-ल ही-न तरल् अज़ा-ब लौ अन्-न ली कर्र-तन् फ़-अकू-न मिनल् मुह्सिनीन॰"

(ज़ुमर, रूकूअ 6)

तर्जुमाः- "आप कह दीजिए ऐ मेरे बंदो, जिन्होंने अपने ऊपर ज़्यादतियां (और कुफ़्र व शिर्क और गुनाहों के ज़ुल्म) किये हैं, तुम ख़ुदा की रहमत से ना उम्मीद मत हो बिलयक़ीन अल्लाह तआला शानुहू तमाम गुनाहों को माफ़ कर देगा, वाक़ई वह बड़ा बख़्शने वाला है, बड़ी रहमत करने वाला है। तुम अपने रब की तरफ़ रूजूअ् कर लो और उसकी फ़रमांबरदारी कर लो, क़ब्ल इसके कि तुम पर अज़ाब होने लगे, फिर उस वक़्त तुम्हारी कोई मदद न की जायेगी और तुम अपने रब के पास से आये हुए अच्छे अच्छे हुक्मों पर चलो, क़ब्ल इसके कि तुम पर अचानक अज़ाब आ पड़े और तुम को ख़्याल भी न हो, (और तुम्हें अल्लाह तआला की तरफ़ रूजूअ् करने का हुक्म इसलिए दिया जाता है कि कल को क़ियामत के दिन) कभी कोई शख़्स कहने लगे, अफ़सोस मेरी इस कोताही पर, जो मैं ने ख़ुदा तआला की जनाब में की (यानी उसकी इताअत में मुझ से कोताही हुई) और मैं (ख़ुदा तआला के अह्काम पर) हंसता ही रहा, या कोई यों कहने लगे कि अल्लाह तआला मुझको हिदायत करता तो मैं भी परहेज़गारों में से होता या कोई अज़ाब को देख कर यों कहने लगे कि काश मेरा (दुनिया में) फिर जाना हो जाये तो मैं नेक बंदों में से हो जाऊं।

इन आयतों में हक़ तआला शानुहू ने सारे गुनाहों की बख़्शिश के वायदे के साथ उसकी तरफ़ रूजूअ् करने का हुक्म भी फ़रमाया है और दूसरी जगहः-

وَاِنِّىْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى (طٰهٰ ع ٤)

"व इन्नी ल-ग़फ़्फ़ारूल् लिमन् ता-ब व आ-म-न व अमि-ल सालिहन् सुम्मह्त-दा"

(ताहा, रूकूअ 4)

इर्शाद फ़रमाया है कि मैं बड़ी मग़्फ़िरत करने वाला हूँ, उस शख़्स के लिए जो तौबा करे और ईमान लाये और अच्छे आमाल करे, फिर इसी राह पर क़ायम रहे।

इस आयते शरीफ़ा में मग़्फ़िरत को इन चीज़ों पर मुरत्तब फ़रमाया है, पस जो शख़्स तौबा के साथ मग़्फ़िरत का उम्मीदवार है, वह तो हक़ीक़त में उम्मीदवार है, और जो गुनाहों पर इसरार के साथ मग़्फ़िरत की उम्मीद बांधे हुए है, वह अहमक़ है, धोखे में पड़ा हुआ है। पहले लोग इबादत पर मर मिटते थे, गुनाहों से निहायत एहतिमाम से बचते थे, तक़्वे में मुबालग़ा करते थे, शुब्हे की चीज़ों से भी दूर रहते थे, रात दिन इबादत में मशग़ूल रह कर हर वक़्त अल्लाह के ख़ौफ़ से रोते थे, और इस ज़माने में हर शख़्स ख़ुश है, अल्लाह के अज़ाब से हर वक़्त मुत्मईन है, उसको किसी वक़्त भी अज़ाब का डर नहीं, दिन रात शहवतों और दुनिया की लज़्ज़तों में मुन्हमिक है, दुनिया के कमाने का हर वक़्त फ़िक्र है, और अल्लाह तआला शानुहू की तरफ़ ज़रा भी तवज्जोह नहीं है और गुमान यह है कि हम लोगों को अल्लाह के करम पर भरोसा है, उसकी मग़्फ़िरत की उम्मीद है, उसकी माफ़ी का यक़ीन है, गोया अंबिया-ए-किराम, सहाबा-ए-इज़ाम और औलिया-ए-मुख़्लिसीन में से तो किसी को उसकी रहमत की उम्मीद ही न थी, जो इस क़दर मशक्क़तें बर्दाश्त करते रहे। *(एह्या)*

(١٩) عن ابن عمرؓ قال اتیت النبی صلی اللہ علیہ وسلم عاشر عشرۃ فقام رجل من الانصار فقال یانبی اللہ من اکیس الناس واحزم الناس قال اکثرھم ذکرًا للموت واکثرھم استعدادًا للموت اولٰئک الاکیاس ذھبوا بشرف الدنیا وکرامۃ الاخرۃ رواہ ابن ابی الدنیا والطبرانی فی الصغیر باسناد حسن ورواہ ابن ماجۃ مختصرًا باسناد جیّد کذا فی الترغیب وذکرلہ الزبیدی طرقا عدیدۃ

19. हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हम दस आदमी, जिन में एक मैं भी था, हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुए, एक अंसारी ने हुज़ूर सल्ल॰ से सवाल किया कि सब से ज़्यादा समझदार और सब से ज़्यादा मुहतात आदमी कौन है; हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि जो लोग मौत को सब से ज़्यादा याद करने वाले हों और मौत के लिए सबसे ज़्यादा तैयारी करने वाले हों, यही लोग हैं जो दुनिया की शराफ़त और आख़िरत का एज़ाज़ ले उड़े।

फ़ायदा:- हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मौत को

कसरत से याद करने और याद रखने के बारे में मुख़्तलिफ़ उन्वानात से बहुत सी अहादीस वारिद हुई हैं, जिन में से बाज़ रिवायात इस रिसाले में क़रीब ही उम्मीदों के मुख़्तसर करने की हदीस के ज़ैल में गुज़र चुकी हैं, उन में हुज़ूर सल्ल॰ का हुक्म भी मुख़्तलिफ़ रिवायात में गुज़र चुका है कि लज़्ज़तों को तोड़ देने वाली चीज़ यानी मौत को कसरत से याद किया करो। हुज़ूर सल्ल॰ के इस एहतिमाम ही की वजह से इस मज़्मून को मुस्तक़िल भी ज़िक्र कर रहा हूँ, इसलिए कि मौत को कसरत से याद रखना, उम्मीदों के मुख़्तसर होने का भी ज़रिया है, मौत की तैयारी का भी सबब है, दुनिया से बे रग़बती पैदा होने का भी सबब है जो असल मक़्सूद है। माल को जमा करके बेकार छोड़ जाने से भी रोकने वाला है, आख़िरत के लिए ज़ख़ीरा जमा कर लेने में भी मुईन (मददगार) है और गुनाहों से तौबा करते रहने पर भी उभारने वाला है, दूसरों पर ज़ुल्म व सितम और दूसरे के हक़ूक़ को ज़ाया करने से भी रोकने वाला है, ग़रज़ यह अमल बहुत से फ़वाइद अपने अंदर रखता है, इसी वजह से मशाइख़े सुलूक का भी मामूल है कि अपने मुरीदीन में से अक्सरों को जिनके मुनासिबे हाल हो, इसका मुराक़बा ख़ास तौर से तल्क़ीन करते हैं।

एक हदीस में है कि एक जवान मज्लिस में खड़े हुए और अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्ल॰ मोमिनीन में सबसे ज़्यादा समझदार कौन है, हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमया कि मौत का कसरत से ज़िक्र करने वाला और उसके आने से पहले पहले उसके लिए बेहतरीन तैयारी करने वाला। *(इत्तिहाफ़)*

एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़ुरआन पाक की आयत :-

فَمَنْ يُرِدِ اللّٰهُ اَنْ يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ صَدْرَهٗ (زمر ع ۳)

"फ़मंय्युरिदिल्लाहु अंय्यह्दि य-हू-यशरह सद्-र-हू॰"

(ज़ुमर, रूकूअ 3)

तिलावत फ़रमाई जिसका तर्जुमा यह है कि हक़ तआला शानुहू जिसको हिदायत फ़रमाने का इरादा फ़रमाते हैं, इस्लाम के लिए उसके सीने को खोल देते हैं (कि इस्लाम के मुताल्लिक़ उसको शरहे सद्र हो जाता है।)

इसके बाद हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि (इस्लाम का) नूर जब सीने में दाख़िल होता है, तो सीना उसके लिए खुल जाता है। किसी ने अर्ज़ किया, या

रसूलल्लाह! इसकी (कि इस्लाम का नूर सीने में दाख़िल हो गया) कोई अलामत है, हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि धोखे के घर (दुनिया) से बुअ्द पैदा होना, हमेशा रहने वाले घर (आख़िरत) की तरफ़ रूजूअ् और मौत आने से पहले उसके लिए तैयारी करना। *(मिश्कात)*

हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि मैं ने अपनी वालिदा की क़ब्र की ज़ियारत करने की इजाज़त मांगी थी, मुझे उसकी ज़ियारत की इजाज़त मिल गयी, तुम लोग क़ब्रस्तान जाया करो, इसलिए कि यह चीज़ मौत को याद दिलाती है।

एक और हदीस में है कि इस से इब्रत होती है। एक और हदीस में है कि क़ब्रस्तान जाने से दुनिया से बे रग़्बती पैदा होती है और आख़िरत याद आती है।

हज़रत अबूज़र रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ ने मुझ से इर्शाद फ़रमाया कि क़ब्रस्तान जाया करो, इस से तुमको आख़िरत याद आयेगी और मुर्दों को गुस्ल दिया करो कि यह (नेकियों से) ख़ाली बदन का इलाज है, और इससे बहुत बड़ी नसीहत हासिल होती है, और जनाज़े की नमाज़ में शिर्कत किया करो, शायद इससे कुछ रंज व ग़म तुम में पैदा हो जाए कि ग़मगीन आदमी (जिस को आख़िरत का ग़म हो) अल्लाह तआला के साये में रहता है और हर ख़ैर का तालिब रहता है। *(तर्ग़ीब)*

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि बीमारों की इयादत किया करो और जनाज़ों के साथ जाया करो कि यह आख़िरत को याद दिलाता है।

एक हकीम किसी जनाज़े के साथ जा रहे थे, रास्ते में लोग उस मय्यित पर अफ़सोस और रंज कर रहे थे, वह साहब फ़रमाने लगे कि तुम अपने ऊपर रंज और अफ़सोस करो तो ज़्यादा मुफ़ीद है, यह तो चला गया और तीन आफ़तों से निजात पा गया, आइंदा मलकुल मौत को देखने का ख़ौफ़ इसको नहीं रहा, मौत की सख़्ती झेलने की इसको नौबत नहीं आयेगी, बुरे ख़ात्मे का ख़ौफ़ ख़त्म हो गया (अपनी फ़िक्र करो ये तीनों मरहले तुम्हारे लिए बाक़ी हैं।)

हज़रत अबूदर्दा रज़ि॰ एक जनाज़े के साथ जा रहे थे किसी रास्ता चलने वाले ने पूछा कि यह किसका जनाज़ा है? फ़रमाने लगे कि यह तेरा जनाज़ा है और अगर तुझे यह बात गरां गुज़रे तो मेरा जनाज़ा है (मतलब यह है कि यह वक़्त अपनी मौत के याद करने का है, इस वक़्त फ़ुज़ूल बात की तरफ़ मुतवज्जह होना बिल्कुल नामुनासिब है।)

हज़रत हसन बसरी रह० का इर्शाद है कि ताज्जुब और बहुत ज़्यादा ताज्जुब उन लोगों पर है जिनको (आख़िरत के) सफ़र के लिए तोशा तैयार कर लेने का हुक्म मिला हुआ है और रवानगी अंक़रीब होने का ऐलान हो चुका है, फिर भी ये लोग (दुनिया के) खेल में मशग़ूल हैं। इनके मुताल्लिक़ मशहूर है कि जब यह किसी जनाज़े को देखते तो इनका ऐसा हाल रंज व ग़म से होता, जैसा कि अभी अपनी मां को दफ़्न करके आये हों। *(तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)*

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि एक यहूदी औरत उनके पास आयी और (किसी एहसान के बदले में) कहने लगी कि अल्लाह तआला शानुहू तुम्हें क़ब्र के अज़ाब से बचाये। हज़रत आइशा रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० से पूछा, क्या क़ब्रों में भी अज़ाब होता है? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया बेशक, क़ब्रों में भी अज़ाब होता है और इसके बाद से (लोगों की तालीम के लिए) हमेशा हुज़ूर सल्ल० हर नमाज़ के बाद क़ब्र के अज़ाब से पनाह मांगा करते थे।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि मुर्दों पर क़ब्र में ऐसा सख़्त अज़ाब होता है कि उसकी आवाज़ चौपाये तक सुनते हैं। एक हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद नक़ल किया गया कि मुझे यह डर है कि तुम (ख़ौफ़ की वजह से) मुर्दों को दफ़्न करना छोड़ दोगे वर्ना मैं अल्लाह तआला से इसकी दुआ करता कि तुम्हें क़ब्र के अज़ाब की आवाज़ सुना दे।

हज़रत उस्मान रज़ि० जब किसी क़ब्र पर खड़े होते तो इतना रोते कि दाढ़ी मुबारक तर हो जाती, किसी ने पूछा कि आप इतना ज़्यादा जन्नत और जहन्नम के ज़िक्र से भी नहीं रोते, जितना क़ब्र के तज़्किरे से रोते हैं? उन्होंने फ़रमाया कि मैं ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि क़ब्र आख़िरत की मंज़िलों में से सबसे पहली मंज़िल है, जो इस से सहूलत से छूट गया, उसके लिए इसके बाद की मंज़िलें सब आसान हैं और जो इसमें (अज़ाब में) फंस गया, उसके लिए इसके बाद की मंज़िलें और भी ज़्यादा सख़्त हैं, और मैं ने हुज़ूर सल्ल० से यह भी सुना है कि मैं ने कोई मंज़र ऐसा नहीं देखा कि क़ब्र का मंज़र उस से ज़्यादा सख़्त न हो।

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद नक़ल किया गया कि क़ब्र में रोज़ाना सुबह और शाम दो वक़्त मय्यित को उसका वह घर दिखाया जाता है जिस में वह क़ियामत के बाद जायेगा। अगर वह जन्नत वालों में है तो जन्नत का

मकान दिखाया जाता है (जिस से उसको क़ब्र ही में फ़रहत और सुरूर हासिल होता रहता है) और अगर वह जहन्नम वालों में होता है तो जहन्नम का मकान दिखाया जाता है, (जिससे उसके रंज व ग़म फ़िक्र व ख़ौफ़ में इज़ाफ़ा होता रहता है।)

हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि एक मर्तबा यहूदी औरत मेरे दरवाज़े पर आयी और भीख मांगने लगी कि मुझे कुछ खाने को दे दो, अल्लाह तुम्हें दज्जाल के फ़ित्ने से और क़ब्र के अज़ाब से बचाये। हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि मैं ने उस औरत को ठहरा लिया और इतने में हुज़ूर सल्ल॰ तशरीफ़ ले आये, मैं ने हुज़ूर सल्ल॰ से अर्ज़ किया कि इस यहूदी औरत ने दो बातें कहीं। हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि दज्जाल का फ़ितना ऐसा है कि कोई नबी पहले अंबिया में से ऐसे नहीं गुज़रे जिन्होंने अपनी उम्मत को उसके फ़ित्ने से डराया न हो, लेकिन मैं उसके मुताल्लिक़ एक बात कहता हूँ जो अब तक किसी नबी ने नहीं कही, वह यह है कि वह काना है और उसकी पेशानी पर काफ़िर का लफ़्ज़ लिखा हुआ होगा, जिस को हर मोमिन पढ़ लेगा और क़ब्र के फ़ित्ने की बात यह है कि जब कोई नेक बंदा मरता है तो फ़रिश्ते उसको क़ब्र में बिठाते हैं। वह ऐसी हालत में बैठता है कि न उसको कोई घबराहट होती है न उस पर कोई ग़म मुसल्लत होता है, फिर उससे अव्वल तो इस्लाम के मुताल्लिक़ सवाल किया जाता है कि तू इस्लाम के बारे में क्या कहता था? इसके बाद फिर उससे पूछा जाता है कि तू इस शख़्स के (यानी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के बारे में क्या कहता है? वह कहता है कि यह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं जो अल्लाह तआला शानुहू के पास से हमारे पास वाज़ेह दलीलें लेकर आये, हमने उन सबको सच्चा माना जो हुज़ूर सल्ल॰ लेकर आये थे। इसके बाद उसको अव्वल दोज़ख़ का एक मक़ाम दिखाया जाता है जहां वह देखता है कि आदमी एक दूसरे पर टूटे पड़े हैं, फिर उस से कहा जाता है कि इस जगह को देख, हक़ तआला शानुहू ने तुझे इस आफ़त से निजात अता फ़रमा दी। इसके बाद उसको जन्नत का एक मक़ाम दिखाया जाता है, जहां वह निहायत ज़ेब व ज़ीनत देखता है और उसके लुत्फ़ के मनाज़िर देखता है, फिर उस से कहा जाता है कि इस में यह जगह तेरे रहने की है (क़ियामत के बाद तू यहां लाया जायेगा) तू दुनिया में आख़िरत का यक़ीन करने वाला था और इसी पर तेरी मौत हुई और इसी पर क़ियामत में तू क़ब्र से उठाया जायेगा। और जब कोई बुरा

आदमी मरता है तो उसको क़ब्र में बिठाया जाता है, वह निहायत घबराहट और ख़ौफ़ ज़दा होकर बैठता है, और उससे भी वही सवाल होता है जो पहले गुज़रा, वह जवाब देता है कि मुझे तो कुछ ख़बर नहीं लोगों को मैं ने जो कहते सुना था वही मैं भी कह देता था। उसके लिए अव्वल जन्नत का दरवाज़ा खोल कर उसको वहां की ज़ेब व ज़ीनत और जो नेमतें वहां हैं, दिखाई जाती हैं, फिर उस से कहा जाता है कि यहां तेरा असल मक़ाम था, मगर तुझे यहां से हटा दिया गया, फिर उसको जहन्नम दिखाई जाती है जहां एक पर दूसरा टूटा पड़ा है और उससे कहा जाता है कि अब तेरा ठिकाना यह है, तू दुनिया में शक ही में रहा, उसी पर मरा, उसी पर क़ियामत में उठाया जायेगा। *(तर्ग़ीब)*

हज़रत अबू क़तादा रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० के पास को एक जनाज़ा गुज़रा, हुज़ूर सल्ल० ने उसको देखकर फ़रमाया कि यह शख़्स या तो राहत पाने वाला है या इससे राहत हो गयी। इसके बाद इर्शाद फ़रमाया कि मोमिन बंदा तो मर कर दुनिया की मशक़्क़तों और तक्लीफ़ों से राहत पा लेता है और अल्लाह तआला शानुहू की रहमत के अंदर चला जाता है (यह तो राहत पाने वाला हुआ) और फ़ाजिर आदमी जब मरता है तो दूसरे आदमी और आबादियाँ और दरख़्त और जानवर सब के सब उसकी मौत से राहत पाते हैं। *(मिश्कात)*

इसलिए कि उसके गुनाहों की नहूसत से दुनिया में आफ़ात नाज़िल होती हैं, बारिश बंद हो जाती है, जिसकी वजह से शहरों में फ़साद होता है और दरख़्त ख़ुश्क होने लगते हैं, जानवरों को चारा मिलना मुश्किल हो जाता है, इस वजह से उसकी मौत से सबको राहत मिलती है कि उसकी नहूसत से सबको तक्लीफ़ पहुँच रही थी।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने एक मर्तबा मेरा मोंढ़ा पकड़ कर फ़रमाया कि दुनिया में ऐसे रहो जैसे कोई अजनबी बल्कि रास्ता चलता मुसाफ़िर होता है। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब तू सुबह करे तो शाम का इंतिज़ार न कर, और जब शाम करे तो सुबह का इंतिज़ार न कर, और अपनी सेहत के ज़माने में मर्ज़ के ज़माने के लिए तोशा ले ले (कि जो आमाल सेहत में करता होगा, मर्ज़ में उनका सवाब मिलता रहेगा) और अपनी ज़िन्दगी में मौत के लिए तोशा ले ले। *(मिश्कात)*

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मइय्यत में एक जनाज़े के साथ चले,

क़ब्रस्तान पहुँच कर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक क़ब्र के पास तशरीफ़ रखी और इर्शाद फ़रमाया कि क़ब्र पर कोई दिन ऐसा नहीं गुज़रता जिसमें वह निहायत फ़सीह और साफ़ आवाज़ के साथ यह ऐलान नहीं करती कि ऐ आदम के बेटे! तू मुझे भूल गया, मैं तंहाई का घर हूँ, अजनबीयत का घर हूँ, मैं वहशत का घर हूँ, मैं कीड़ों का घर हूँ, मैं निहायत तंगी का घर हूँ, मगर उस शख़्स के लिए जिस पर अल्लाह तआला शानुहू मुझे वसीअ् बना दे। इसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि क़ब्र जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है या दोज़ख़ के गढ़ों में से एक गढ़ा है।

हज़रत सह्ल रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु का इंतिक़ाल हुआ, सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन उन की तारीफ़ करने लगे और उनकी कसरत से इबादत का हाल बयान करने लगे। हुज़ूर सल्ल० सुकूत के साथ सुनते रहे, जब वे हज़रात चुप हुए तो हुज़ूर सल्ल० ने दर्याफ़्त किया कि यह मौत को कभी याद किया करते थे? सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, उसका ज़िक्र तो नहीं करते थे। फिर हुज़ूर सल्ल० ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि अपने जी चाहने की चीज़ों को छोड़ देते थे? (कि किसी चीज़ के खाने को मसलन दिल चाहता हो और न खाते हों) सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया, ऐसा तो नहीं होता था। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि यह सहाबी (रज़ि०) उन दर्जों को न पहुँचेंगे जिनको तुम लोग (जो इन दोनों चीज़ों को करते हो) पहुँच जाओगे।

एक और हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल० की मज्लिस में एक सहाबी रज़ि० की इबादत और मुजाहदे की कसरत का ज़िक्र हुआ, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि वह मौत को कितना याद करते थे, सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि उसका तज़्किरा तो हम ने नहीं सुना, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया तो फिर वह उस दर्जे के नहीं है (जैसा तुम समझ रहे हो)।

हज़रत बरा रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ एक जनाज़े के दफ़्न में शरीक हुए, हुज़ूर सल्ल० ने वहां जाकर एक क़ब्र के क़रीब तशरीफ़ रखी और इतना रोये कि ज़मीन तर हो गयी और इर्शाद फ़रमाया कि भाईयो, इस चीज़ के लिए (यानी क़ब्र में जाने के लिए) तैयारी कर लो। *(तर्ग़ीब)*

हज़रत शक़ीक़ बिन इब्राहीम रह० फ़रमाते हैं कि आदमी चार चीज़ों में

ज़बान से तो मेरी मुवाफ़क़त करते हैं और अमल से मुख़ालफ़त करते हैं:-

1. ये कहते हैं कि हम खुदा तआला के बंदे (और ग़ुलाम) हैं और काम आज़ाद लोगों के से करते हैं।

2. ये कहते हैं कि ख़ुदा तआला शानुहू हमारी रोज़ी का ज़िम्मेदार है लेकिन उनके दिलों को (उसकी ज़िम्मेदारी पर) उस वक़्त तक इत्मीनान नहीं होता जब तक दुनिया की कोई चीज़ उनके पास न हो।

3. ये कहते हैं कि आख़िरत दुनिया से अफ़ज़ल है, लेकिन दुनिया के लिए माल जमा करने की फ़िक्र में हर वक़्त लगे रहते हैं (आख़िरत का कुछ भी फ़िक्र नहीं)।

4. ये कहते हैं कि मौत यक़ीनी चीज़ है, आकर रहेगी लेकिन आमाल ऐसे लोगों के से करते हैं जिनको कभी मरना ही न हो।

अबू हामिद लफ़ाफ़ रह० कहते हैं कि जो शख़्स मौत को कसरत से याद करे, उसके ऊपर तीन चीज़ों का इक्राम होता है।

1. तौबा जल्द नसीब होती है,

2. माल में क़नाअत मयस्सर होती है और,

3. इबादत में निशात और दिल बस्तगी पैदा होती है।

और जो शख़्स मौत से ग़ाफ़िल रहता है, उस पर तीन अज़ाब मुसल्लत किये जाते हैं-:

1. गुनाह से तौबा में ताख़ीर होती रहती है,

2. आमदनी पर राज़ी नहीं होता (उस को कम ही समझता रहता है, चाहे कितनी ही हो जाये) और

3. इबादात में सुस्ती पैदा होती है। *(तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)*

इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि तमाम तारीफ़ें उसी पाक ज़ात के लिए हैं जिस ने बड़े बड़े ज़ालिम और जाबिर लोगों की गर्दनें मौत से मरोड़ दीं, और ऊँचे ऊँचे बादशाहों की कमरें मौत से तोड़ दीं और बड़े बड़े ख़ज़ानों के मालिकों की उम्मीदें मौत से ख़त्म कर दीं। ये सब लोग ऐसे थे जो मौत के ज़िक्र से भी नफ़रत करते थे, लेकिन अल्लाह का जब वायदा (मौत का वक़्त) आया तो

उनको गढ़े में डाल दिया गया और ऊँचे ऊँचे महलों से ज़मीन के नीचे पहुँचा दिया गया और बिजली और कुमक़ुमों की रोशनी में नर्म बिस्तरों से क़ब्र के अंधेरे में पहुंचा दिया गया। गुलामों और बांदियों से खेलने के बजाय ज़मीन के कीड़ों में फंस गये, और अच्छे अच्छे खाने पीने में लुत्फ़ उड़ाने के बजाय ख़ाक में लोटने लगे और दोस्तों की मज्लिसों के बजाय तंहाई की वहशत में गिरफ़्तार हो गये, पस क्या उन लोगों ने किसी मज़बूत क़िले के ज़रिये मौत से अपनी हिफ़ाज़त कर ली या उस से बचने के लिए कोई दूसरा ज़रिया इख़्तियार कर लिया, पस वह ज़ात पाक है जिसके क़हर और ग़लबे में कोई दूसरा शरीक नहीं और हमेशा रहने के लिए सिर्फ़ उसी की तंहा ज़ात है, कोई उसका मिस्ल नहीं।

पस जब मौत हर शख़्स को पेश आने वाली है और मिट्टी में जाकर मिलना है और क़ब्र के कीड़ों का साथी बनना है और मुन्किर नकीर से साबिक़ा पड़ना है और ज़मीन के नीचे मुद्दतों रहना है और वही बहुत तवील ज़माने तक ठिकाना है और क़ियामत का सख़्त मंज़र देखना है और उसके बाद मालूम नहीं कि जन्नत में जाना है या दोज़ख़ ठिकाना है, तो निहायत ज़रूरी है कि मौत का फ़िक्र हर वक़्त आदमी पर मुसल्लत रहे उसी के ज़िक्र का तज़्किरा, मशग़ला रहे, उसी की तैयारी में हर वक़्त मशग़ूल रहे, उसी का एहतिमाम हर चीज़ पर ग़ालिब रहे और उस की आमद का हर वक़्त इंतिज़ार रहे कि उसके आने का कोई वक़्त मुक़र्रर नहीं, न मालूम कब आ जाये।

इसलिए हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि समझदार वह शख़्स है जो अपने नफ़्स पर क़ाबू रखे और मौत के बाद काम आने वाली चीज़ों में मशग़ूल रहे और किसी काम के लिए तैयारी इसके बग़ैर नहीं होती कि हर वक़्त उसका एहतिमाम रहे, उसका ज़िक्र तज़्किरा रहे, इसलिए कि जो शख़्स दुनिया में मुन्हमिक और उसके धोखे की चीज़ों में फंसा हुआ है उस की शहवतों पर फ़रेफ़्ता है, उसका दिल मौत से बिल्कुल ग़ाफ़िल होता है और अगर मौत का ज़िक्र कभी किया जाये तो उसकी तबीअत को उससे तकद्दुर और कराहियत होती है, इसी को हक़ तआला शानुहू इर्शाद फ़रमाते हैं:-

قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِىْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَاِنَّهٗ مُلٰقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝ (جمعه ع ۱)

"क़ुल इन्नल् मौतल्लज़ी तफ़िर्रू-न मिन्हु फ़इन्न-हू मुलाक़ी-कुम्

सुम-म तुरद्दून इला आलि मिल् ग़ैबि वश्शहा दति फ़युनब्बि-उ कुम बिमा कुन्तुम् तअ्मलून॰" (जुमा, रूकूअ 1)

तर्जुमा:- आप उनसे कह दीजिये कि जिस मौत से तुम भागते हो, वह तुमको आ पकड़ेगी फिर तुम उस पाक ज़ात की तरफ़ ले जाये जाओगे, जो हर पोशीदा और ज़ाहिर बात को जानने वाली है, फिर वह तुमको तुम्हारे सब किये हुए काम जता देगी (और उनका बदला देगी)

उलमा ने लिखा है मौत के बारे में आदमी चार तरीक़े के होते हैं:-

1. एक तो वे लोग हैं जो दुनिया में मुन्हमिक हैं जिन को मौत का ज़िक्र भी इस वजह से अच्छा नहीं लगता कि उस से दुनिया की लज़्ज़तें छूट जायेंगी, ऐसा शख़्स मौत को कभी याद नहीं करता और अगर कभी करता भी है तो बुराई के साथ इसलिए कि दुनिया के छूटने का उसको क़लक़ और अफ़सोस होता है।

2. दूसरा वह शख़्स है जो अल्लाह तआला की तरफ़ रूजूअ् करने वाला तो है, मगर इब्तिदाई हालत में है, मौत के ज़िक्र से उसको अल्लाह तआला का ख़ौफ़ भी होता है और उस से तौबा में पुख़्तगी भी होती है। यह शख़्स भी मौत से डरता है मगर न इस वजह से कि दुनिया छूट जायेगी बल्कि इस वजह से कि उसकी तौबा ताम नहीं है। यह भी अभी मरना नहीं चाहता कि अपने हाल की इस्लाह कर ले और उसके फ़िक्र में लगा हुआ है, तो यह शख़्स मौत को नापसंद करने में मअ्ज़ूर है और यह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उस इर्शाद में दाख़िल न होगा जिसमें हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि जो शख़्स अल्लाह तआला के मिलने को नापसंद करता है, अल्लाह तआला शानुहू भी उसके मिलने को नापसंद फ़रमाते हैं, इसलिए कि यह शख़्स हक़ीक़त में हक़ तआला शानुहू की मुलाक़ात से कराहत नहीं करता बल्कि अपनी तक़्सीर और कोताही से डरता है।

इसकी मिसाल उस शख़्स की सी है जो महबूब की मुलाक़ात के लिए उस से पहले कुछ तैयारी करना चाहता हो ताकि महबूब का दिल ख़ुश हो, अलबत्ता यह ज़रूरी है कि यह शख़्स इसकी तैयारी में हर वक़्त मशग़ूल रहता हो, उसके सिवा कोई दूसरा मशग़ला उसको न हो और अगर यह बात नहीं है तो फिर यह भी पहले ही जैसा है, यह भी दुनिया में मुन्हमिक ही है!

3. तीसरा वह शख़्स है जो आरिफ़ है, उसकी तौबा कामिल है, ये लोग

मौत को महबूब रखते हैं, उसकी तमन्नायें करते हैं, इसलिए कि आशिक़ के लिए महबूब की मुलाक़ात से ज़्यादा बेहतर वक़्त कौन सा होगा, मौत का वक़्त मुलाक़ात का वक़्त है। आशिक़ को वस्ल के वायदे का वक़्त हर वक़्त ख़ुद ही याद रहा करता है, वह किसी वक़्त भी उसको नहीं भूलता। यही लोग हैं जिनको मौत के जल्दी आने की तमन्नायें रहती हैं, वे इसी क़लक़ में रहते हैं कि मौत आ ही नहीं चुकती कि इस मआसी के घर से जल्द ख़लासी हो।

एक रिवायत में है कि हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के इंतिक़ाल का वक़्त जब क़रीब हुआ तो फ़रमाने लगे, महबूब (मौत) एहतियाज के वक़्त आया जो नादिम हो वह कामियाब नहीं होता, या अल्लाह! तुझे मालूम है कि हमेशा मुझे फ़क़्र ग़िना से ज़्यादा महबूब रहा और बीमारी सेहत से ज़्यादा पसंदीदा रही और मौत ज़िन्दगी से ज़्यादा मरग़ूब रही, मुझे जल्दी से मौत अता कर दे कि तुझ से मिलूं।

4. चौथी क़िस्म जो सब से ऊँचा दरजा है, उन लोगों का है, जो हक़ तआला शानुहू की रिज़ा के मुक़ाबले में तमन्ना भी नहीं रखते, वे अपनी ख़्वाहिश से अपने लिए न मौत को पसंद करते हैं, न ज़िन्दगी को, यह इश्क़ की इंतिहा में रिज़ा और तस्लीम के दरजे को पहुँचे हुए हैं, बहर हाल मौत का ज़िक्र हर हालत में मूजिबे अज्र व सवाब है कि जो शख़्स दुनिया में मुन्हमिक है, उसको भी मौत के ज़िक्र से उसकी लज़्ज़तों में कमी आयेगी, और कुछ न कुछ तो दुनिया से बुअद (दूरी) पैदा होगा ही, इसलिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि लज़्ज़तों को तोड़ने वाली चीज़ (मौत) को कसरत से याद किया करो यानी इसके ज़िक्र से अपनी लज़्ज़तों में कमी किया करो ताकि अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ रुजूअ् हो सके।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि अगर जानवरों को मौत के मुताल्लिक़ इतनी मालूमात हों जितनी तुम लोगों को हैं तो कभी कोई मोटा जानवर तुमको खाने को न मिले (मौत के ख़ौफ़ से सब दुबले हो जायें)

हज़रत आइशा रज़ि॰ ने हुज़ूर सल्ल॰ से दर्याफ़्त किया कि कोई शख़्स (बग़ैर शहादत के भी) शहीदों के साथ हो सकता है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि जो शख़्स दिन रात में बीस मर्तबा मौत को याद करे वह हो सकता है। (एक हदीस में है जो शख़्स पच्चीस मर्तबा:-

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لِيْ فِي الْمَوْتِ وَفِيْ مَا بَعْدَ الْمَوْتِ

"अल्लाहुम्-म बारिक् ली फ़िल् मौति व फ़ी मा बअ्दल् मौत" पढ़े वह शहीदों के दर्जे में हो सकता है।) और इन सब फ़ज़ीलतों का सबब यही है कि मौत का कसरत से ज़िक्र करना इस धोखे के घर से बेरग्बती पैदा करता है और आख़िरत के लिये तैयारी पर आमादा करता है और मौत से ग़फ़लत दुनिया की शहवतों और लज़्ज़तों में इन्हिमाक पैदा करती है।

अता ख़ुरासानी रह॰ कहते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक मज्लिस पर गुज़र हुआ, जहां ज़ोर से हंसने की आवाज़ आ रही थी, हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि अपनी मजालिस में लज़्ज़तों को मुकद्दर करने वाली चीज़ का तज़्किरा शामिल कर लिया करो, सहाबा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्ल॰ लज़्ज़तों को मुकद्दर करने वाली चीज़ क्या है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि "मौत"।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद आया है कि मौत को कसरत से याद किया करो, यह गुनाहों को ज़ायल करती है और दुनिया से बेरग्बती पैदा करती है। *(एह्या)*

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि अगर तुमको यह मालूम हो जाये कि मरने के बाद तुम पर क्या गुज़रेगी तो कभी रग्बत से खाना न खाओ, कभी लज़्ज़त से पानी न पियो।

एक सहाबी रज़ि॰ को हुज़ूर सल्ल॰ ने वसीयत फ़रमायी की मौत का ज़िक्र कसरत से किया करो, यह तुम्हें दूसरी चीज़ों में रग्बत से हटा देगा। एक हदीस में हैं कि मौत को कसरत से याद किया करो, जो शख़्स मौत का कसरत से ज़िक्र करता है, उसका दिल ज़िंदा हो जाता है और मौत उस पर आसान हो जाती है।

एक सहाबी रज़ि॰ ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्ल॰ मुझे मौत से मुहब्बत नहीं है, क्या इलाज करूं? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया तुम्हारे पास कुछ माल है? उन्होंने अर्ज़ किया है, हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि उसको आगे चलता कर दो, आदमी का दिल माल से लगा रहता है, जब उसको आगे भेज देता है तो ख़ुद भी उसके पास जाने का दिल चाहता है और जब पीछे छोड़ जाता है तो ख़ुद भी उसके पास रहने को दिल चाहता है। *(इत्तिहाफ़)*

एक हदीस में है कि जब दो तिहाई रात गुज़र जाती तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते कि लोगो! अल्लाह को याद कर लो, अल्लाह को याद कर लो, अंक़रीब क़ियामत का ज़लज़ला फिर सूर फूँकने का वक़्त आ रहा है और (हर शख़्स की) मौत अपनी सारी सख़्तियों समेत आ रही है। *(मिश्कात)*

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह॰ का मामूल था कि रोज़ाना रात को उलमा के मजमे को बुलाते, जो मौत का और क़ियामत का और आख़िरत का ज़िक्र करते और ऐसा रोते जैसा कि जनाज़ा सामने रखा हो।

इब्राहीम तैमी रह॰ कहते हैं कि दो चीज़ों ने मुझ से दुनिया की हर लज़्ज़त को मुन्क़तअ् कर दिया, एक मौत ने, दूसरे क़ियामत में हक़ तआला शानुहू के सामने खड़ा होने के फ़िक्र ने।

हज़रत कअ्ब रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जो शख़्स मौत को पहचान ले, उस पर दुनिया की सारी मुसीबतें आसान हैं। अश्अस रह॰ कहते हैं कि हम हज़रत हसन बसरी रह॰ के पास जब भी हाज़िर होते, जहन्नम का और आख़िरत का ज़िक्र होता।

एक औरत ने हज़रत आईशा रज़ि॰ से अपने दिल की क़सावत की शिकायत की, हज़रत आईशा रज़ि॰ ने फ़रमाया कि मौत का तज़्किरा कसरत से किया करो, दिल नर्म हो जायेगा। उन्होंने ऐसा ही किया, उसके बाद हज़रत आइशा रज़ि॰ के पास आयीं और उनका बहुत बहुत शुक्रिया अदा किया। *(एह्या)*

इमाम ग़ज़ाली रह॰ फ़रमाते हैं कि मौत का मामला निहायत ख़तरनाक है और लोग उस से बहुत ग़ाफ़िल हैं। अव्वल तो अपने मशाग़िल की वजह से उसका ज़िक्र ही नहीं करते और अगर करते हैं तब भी चूँकि दिल दूसरी तरफ़ मशग़ूल होता है, इसलिए महज़ ज़बानी तज़्किरा मुफ़ीद नहीं है, बल्कि ज़रूरत इसकी है कि दिल को सब तरफ़ से फ़ारिग़ करके उस को इस तरह सोचे कि गोया वह सामने ही है जिसकी सूरत यह है कि अपने अज़ीज़ व अक़ारिब और जाने वाले अहबाब का हाल सोचे कि क्यों कर उनको चारपाई पर ले जाकर मिट्टी के नीचे दाब दिया।

उनकी सूरतों का, उनके आला मंसूबों का ख़्याल करे और यह ग़ौर करे

कि अब मिट्टी ने किस तरह उनकी अच्छी सूरतों को पलट दिया होगा, उनके बदन के टुकड़े टुकड़े अलग अलग हो गये होंगे। किस तरह बच्चों को यतीम, बीवी को बेवा और अज़ीज़ व अक़ारिब को रोता छोड़ कर चल दिये। उनके सामान, उनके माल, उनके कपड़े पड़े रह गये। यही हश्र एक दिन मेरा भी होगा।

किस तरह वे मज्लिसों में बैठ कर क़ह् क़हे लगाते थे। आज ख़ामोश पड़े हैं, किस तरह दुनिया की लज़्ज़तों में मशग़ूल थे, आज मिट्टी में मिले पड़े हैं, कैसा मौत को भुला रखा था, आज उसके शिकार हो गये, किस तरह जवानी के नशे में थे, आज कोई पूछने वाला भी नहीं है, कैसे दुनिया के धंधों में हर वक़्त मशग़ूल रहते थे, आज हाथ अलग पड़ा है, पांव अलग पड़ा है, ज़बान को कीड़े चिमट रहे हैं, बदन में कीड़े पड़ गये होंगे, कैसा खिलखिला कर हंसते थे, आज दांत गिरे पड़े होंगे, कैसी कैसी तदबीरें सोचते थे, बरसों के इंतिज़ाम सोचते थे, हालांकि मौत सर पर थी, मरने का दिन क़रीब था, मगर उन्हें मालूम नहीं था कि आज रात को मैं नहीं हूँगा। यही हाल मेरा है, आज मैं इतने इंतिज़ामात कर रहा हूँ, कल की ख़बर नहीं क्या होगा? *(एह्या)*

"आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं
सामान सौ बरस का है पल की ख़बर नहीं"

आसमानों पर जो फ़रिश्ते मुख़्तलिफ़ कामों पर मुतअय्यन हैं, उन को साल भर के अह्कामात एक रात में मिल जाते हैं कि इस साल फ़लां फ़लां काम करना है। और फ़लां फ़लां शख़्स के मुताल्लिक़ यह अमल दर आमद होगा। इस में रिवायात मुख़्तलिफ़ हैं कि ये अह्काम लैलतुल क़द्र में मिलते हैं। या शबे बरात में, जौन सी भी रात हो। कसरत से रिवायात में यह मज़्मून वारिद हुआ है कि इस रात में उन सब की फ़हरिस्त फ़रिश्तों के हवाले कर दी जाती है जो इस साल में मरने वाले हैं। दुनिया में आदमी निहायत ग़फ़लत से अपने लह्व व लंअिब में मशग़ूल होता है और आसमानों पर उसकी गिरफ़्तारी का वारंट जारी हो गया है, उसकी मौत का हुक्म सादिर हो चुका है, जिसमें न किसी सिफ़ारिश की गुंजाइश है न उस हुक्म की अपील है, न जो वक़्त उसकी मौत का तजवीज़ हुआ है, उसमें एक मिनट की ताख़ीर हो सकती है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ सूरः दुख़ान की तफ़्सीर में इर्शाद फ़रमाते हैं कि लैलतुल क़द्र में लौहे महफ़ूज़ से उन सब चीज़ों को नक़्ल किया जाता है जो

उस साल में होने वाली हैं कि इतना रिज़्क़ दिया जायेगा, फ़लां फ़लां मरेगा, फ़लां फ़लां पैदा होगा, इतनी बारिश होगी, हत्ताकि यह भी नक़ल किया जाता है कि इस साल फ़लां फ़लां हज को जायेगा।

एक हदीस में इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि तू आदमी को देखेगा कि वह बाज़ारों में चल फिर रहा है लेकिन उसका नाम इस साल के मुर्दों में लिखा जा चुका है।

अबूनज़रः रज़ि॰ कहते हैं कि इस रात में साल भर के सारे काम (फ़रिश्तों पर) मुन्क़सिम कर दिये जाते हैं, तमाम साल की भलाई, बुराई, रोज़ी और मौत, तक्लीफ़ें और नरख़ों की अरज़ानी और गरानी तमाम साल की दे दी जाती है।

हज़रत इकरमा रज़ि॰ कहते हैं कि शबे बरात में साल भर के अहकाम तै करके हवाले कर दिये जाते हैं, इस साल के मुर्दों की फ़ह्‌रिस्त और हज करने वालों की फ़ह्‌रिस्त दे दी जाती है, न उन में कमी हो सकती है, न ज़्यादती।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद वारिद हुआ है कि एक शअ्‌बान से दूसरे शअ्‌बान तक जितने मरने वाले हैं, उन सब के औक़ात लिख कर दे दिये जाते हैं। हत्ताकि आदमी दुनिया में निकाह करता है, उसके बच्चा पैदा होता है, लेकिन आसमान में उसका नाम मुर्दों की फ़ह्‌रिस्त में आ चुका है। हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शअ्‌बान में बहुत कसरत से रोज़े रखा करते थे, इसलिए कि इस में तमाम साल में मरने वालों की फ़ह्‌रिस्त मुरत्तब होती है, हत्ताकि एक आदमी निकाह करने में मशग़ूल है और वहां उसका नाम मुर्दों में लिखा गया, एक आदमी हज को जा रहा है, और उसका नाम मुर्दों में है।

एक और हदीस में है कि हज़रत आइशा रज़ि॰ ने हुज़ूर सल्ल॰ से इसकी वजह दर्याफ़्त की कि हुज़ूर सल्ल॰ शअ्‌बान में रोज़े बहुत कसरत से रखते हैं, हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि इसमें साल भर के मुर्दों की फ़ह्‌रिस्त बनती है मेरा दिल चाहता है कि मेरा नाम जब मुर्दों की फ़ह्‌रिस्त में आये तो मैं रोज़ादार रहूँ।

एक हदीस में है कि निस्फ़ शअ्‌बान की रात को हक़ तआला शानुहू मलकुल मौत को उस साल में मरने वालों की इत्तिला फ़रमा देते हैं। एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि रोज़ाना हमेशा जब आफ़ताब निकलता है तो वह

ऐलान करता है कि जो नेक काम करना है, कर ले, आज का दिन तेरी उम्र में फिर कभी नहीं आयेगा (इसलिए इस दिन में तेरी जो नेकियां लिखी जा सकती हैं, लिखवा ले) और दो फ़रिश्ते आसमान से ऐलान करते हैं एक उनमें से कहता है कि ऐ नेकी के तलब करने वाले ख़ुशख़बरी ले (और आगे बढ़) और दूसरा कहता है, ऐ बुराई के करने वाले बस कर और रूक जा (अपनी हलाकत का सामान इकट्ठा न कर) और दो फ़रिश्ते ऐलान करते हैं जिनमें से एक कहता है, या अल्लाह, ख़र्च करने वाले को उसका बदला दे और दूसरा कहता है ऐ अल्लाह माल को रोक के रखने वालो के माल को बर्बाद कर।

अता बिन यसार रह० कहते हैं कि जब निस्फ़ शअ्बान की रात होती है तो मलकुल मौत को एक फ़ह्‌रिस्त दे दी जाती है कि इसमें जिनके नाम हैं, उन सब की इस साल में रूह क़ब्ज़ कर ली जाये। यहां एक आदमी फ़र्श फ़ुरूश में लगा हुआ है निकाह करने में मशग़ूल है, मकान की तामीर करा रहा है और वहां मुर्दों की फ़ह्‌रिस्त में आ गया। (दुर्रे मंसूर)

इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि आदमी मिस्कीन पर अगर कोई आफ़त, कोई मुसीबत, कोई हादसा, कोई रंज, कोई तक्लीफ़, कोई मशक़्क़त, कोई ख़ौफ़ कभी भी न आये, तब भी मौत की सख़्ती नज़अ् की हालत और उस का अंदेशा ऐसी चीज़ है जो उसकी सारी लज़्ज़तों को मुकद्दर कर देने के लिए काफ़ी है, उसके सारे राहत व आराम को खो देने वाली चीज़ है उसकी ग़फ़्लत को ज़ायल कर देने के लिए इसी का फ़िक्र बहुत काफ़ी है, यही चीज़ ख़ुद इतनी सख़्त है कि उस के फ़िक्र और उसकी तैयारी में आदमी को हर वक़्त मशग़ूल रहना चाहिए। बिलख़ुसूस ऐसी हालत में कि उसका वक़्त मालूम नहीं कि कब आकर मुसल्लत हो जाये। एक हकीम का क़ौल है कि रस्सी दूसरे के हाथ में है, न मालूम कब खींच ले।

हज़रत लुक़्मान अलैहि० का इर्शाद अपने बेटे से है कि मौत ऐसी चीज़ है जिसका हाल मालूम नहीं कि कब आ पहुँचे, उसके लिए इस से पहले पहले तैयारी कर लें कि वह दफ़्अतन आ जाये और वाक़ई बड़े ताज्जुब की बात है कि अगर आदमी इंतिहाई लज़्ज़तों में मशग़ूल हो, लह्व व लअिब की ऊँची मज्लिस में शरीक हो और उसको यह मालूम हो जाये कि एक सिपाही उसकी तलाश में है जो (किसी जुर्म की सज़ा में) उस को पांच कोड़े मारेगा तो सारी लज़्ज़त सारा ऐश व आराम मुकद्दर हो जायेगा (बल्कि अगर सिर्फ़ इतना ही

मालूम हो जाये कि उसके पास उस की गिरफ़्तारी का वारंट है, वह आज कल में उसको गिरफ़्तार कर लेगा तब भी सारी लज़्ज़तें ख़त्म हो जायेंगी, रात को नींद उड़ जायेगी) हालांकि उसको मालूम है कि मलकुल मौत हर वक़्त उस पर मुसल्लत है और मौत की सख़्तियां (जो हज़ारों कोड़ों से बढ़ कर हैं) उस पर मुसल्लत करने वाला है, फिर भी हर वक़्त उस से ग़ाफ़िल रहता है। यह जहालत और ग़ुरूर की इंतिहा नहीं तो और क्या है?

हक़ीक़त यह है कि मौत की सख़्ती का हाल वही जानता है जिस पर गुज़र चुकी है, दूसरे को उसकी सख़्ती का हाल मालूम नहीं होता, वह सिर्फ़ क़ियास कर सकता है, या मरने वालों की हालत देख कर कुछ अंदाज़ा लगा सकता है और क़ियास इस तरह पर हो सकता है कि यह तो ज़ाहिर चीज़ है कि बदन के जिस हिस्से में रूह नहीं होती, उसको काटने से तक्लीफ़ नहीं होती (बदन की जो खाल मुर्दा हो जाती है, उसको काटने से तक्लीफ़ नहीं होती) लेकिन जिस उज़्व में और जिस हिस्से में जान होती है, उसमें सुई चुभोने से या उसके काटने से सख़्त तक्लीफ़ होती है, पस बदन के जिस उज़्व पर कोई ज़ख़्म होता है या उसको काटा जाता है या वह जल जाता है तो उससे तक्लीफ़ इस वजह से पहुँचती है कि रूह को और ज़िन्दगी को उस हिस्सा-ए-बदन से ताल्लुक़ है, उस ताल्लुक़ की वजह से उस उज़्व के ज़रिये से रूह पर असर पहुँचता है और रूह सारे बदन में फैली हुई है तो हर हर उज़्व में उसका बहुत थोड़ा सा हिस्सा असर किये हुए है और जितना हिस्सा उस उज़्व में है, उसी के बक़द्र रूह को तक्लीफ़ पहुँचती है, जो बहुत थोड़ा सा हिस्सा है लेकिन जो तक्लीफ़ आज़ा के बजाये बराहे रास्त सारी रूह को पहुँचे, जो मौत के वक़्त होती है, उसका अंदाज़ा इसी से हो सकता है कि कितनी होगी इसलिए कि मौत बराहे रास्त सारी रूह को खींचती है जो बदन के सारे आज़ा में फैली हुई है, इसलिए बदन का कोई हिस्सा भी ऐसा नहीं होता जिस में उतनी ही तक्लीफ़ न हो, जितनी कि उसके काटने में होती है, इसलिए कि किसी उज़्व के काटने से इस वजह से तक्लीफ़ होती है कि रूह उस से जुदा होती है और अगर वह मुर्दा हो, उसमें रूह न हो तो उसके काटने से ज़रा भी तक्लीफ़ नहीं होती, पस जब रूह के ज़रा से हिस्से के जुदा होने से इतनी तक्लीफ़ होती है तो जब सारी रूह को बदन के तमाम हिस्सों से खींचा जायेगा तो ज़ाहिर है कि कितनी तक्लीफ़ होगी।

लेकिन बदन का अगर एक हिस्सा काटा जाता है तो रूह का बक़ीया

हिस्सा सारे बदन में मौजूद होता है वह उस वक़्त क़वी होता है इसलिए आदमी चिल्लाता है, तड़पता है, मगर जब सारी रूह खींची जाती है तो उस में ज़ोअफ़ की वजह से इतनी क़ुव्वत नहीं रहती कि वह कराहने से कुछ आराम पा ले, अलबत्ता अगर बदन क़वी होता है तो उसकी बक़द्र सांस के उखड़ने के वक़्त उसमें आवाज़ पैदा होती है, जो सुनाई दे जाती है, क़ुव्वत नहीं होती तो यह भी पैदा नहीं होती। इसके निकलने के बाद हर उज़्व आहिस्ता आहिस्ता ठंडा होना शुरू हो जाता है, सब से पहले पांव ठंडे होते हैं, इसलिए कि रूह पांव की तरफ़ से सबसे पहले खिंचती है और वहां से निकलकर मुंह के ज़रिये से जाती है, फिर पिण्डलियां ठंडी होती हैं, फिर रानें, इसी तरह हर हर उज़्व ठंडा होता रहता है और हर एक उज़्व को उतनी ही तक्लीफ़ होती है जितनी उसके काटने से होती है, यहां तक कि जब रूह हलक़ तक पहुँचती है तो आंखों से नूर जाता रहता है।

इसी वजह से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआओं में यह भी दुआ है कि या अल्लाह, मुझ पर मौत की और नज़अ् की सख़्ती को आसान फ़रमा। लोग भी हुज़ूर सल्ल० के इत्तिबाअ् में इस दुआ को मांगते हैं मगर उसकी तक्लीफ़ से नावाक़िफ़ होने की वजह से सरसरी तौर पर मांग लेते हैं। यही वजह है कि अंबिया-ए-किराम और औलिया-ए-इज़ाम रह० मौत से बहुत ज़्यादा डरते थे।

हज़रत ईसा अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम का इर्शाद अपने हवारिय्यीन से है कि मेरे लिए हक़ तआला शानुहू से इसकी दुआ करो कि नज़अ् की तक्लीफ़ मुझ पर आसान हो जाये कि मौत के डर ने मुझे मौत के क़रीब पहुँचा दिया है।

कहते हैं कि बनी इस्राईल के आबिद लोगों की एक जमाअत एक क़ब्रस्तान में पहुँची और उन्होंने आपस में मश्वरा किया कि हक़ तआला शानुहू से इसकी दुआ की जाये कि इन में से कोई मुर्दा ज़ाहिर हो, जिससे हम पूछें कि क्या गुज़री? उन लोगों ने दुआ की, कि एक मुर्दा उन पर ज़ाहिर हुआ, जिसकी पेशानी पर कसरत से सज्दा करने का निशान भी पड़ा हुआ था, वह कहने लगा कि तुम मुझ से क्या चाहते हो? मुझे मरे हुए पचास साल हो गये, लेकिन मौत के वक़्त की तक्लीफ़ अब तक मेरे बदन से नहीं गयी।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि या अल्लाह, तू रूह को

पट्ठों से हड्डियों से और उंगलियों में से निकालता है, मुझ पर मौत की सख़्ती आसान कर दे।

हज़रत हसन रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ ने एक मर्तबा मौत की सख़्ती का ज़िक्र फ़रमाया और यह इर्शाद फ़रमाया कि इतनी तक्लीफ़ होती है जितनी कि तीन सौ जगह तलवार की काट से होती है।

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू जिहाद पर जब तर्ग़ीब देते तो फ़रमाते कि अगर तुम क़त्ल न किये गये तो बिस्तरों पर मरोगे, क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है कि हज़ार जगह तलवार की काट से मरने की तक्लीफ़ ज़्यादा सख़्त है।

औज़ाअी रह॰ कहते हैं कि हमें यह बात पहुँची है कि मुर्दों को क़ियामत में उठने तक मौत की तक्लीफ़ का असर महसूस होता रहता है। हज़रत शद्दाद बिन औस रह॰ कहते हैं कि मौत दुनिया और आख़िरत की सब तक्लीफ़ों से ज़्यादा सख़्त है, वह आरा चला देने से ज़्यादा सख़्त है, वह कैंचियों से कतर देने से ज़्यादा सख़्त है, वह देग में पका देने से ज़्यादा सख़्त है। अगर मुर्दे क़ब्र से उठ कर मरने की तक्लीफ़ बतायें तो कोई शख़्स भी दुनिया में लज़्ज़त से वक़्त नहीं गुज़ार सकता, मीठी नींद उसको नहीं आ सकती।

कहते हैं कि हज़रत मूसा अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम का जब विसाल हुआ तो हक़ तआला शानुहू ने दर्याफ़्त किया कि मौत को कैसा पाया, उन्होंने अर्ज़ किया कि मैं अपनी जान को ऐसे देख रहा था जैसे ज़िंदा चिड़िया को इस तरह आग पर भूना जा रहा हो कि न उसकी जान निकलती हो, न उड़ने की कोई सूरत हो। एक और रिवायत में है कि ऐसी हालत थी जैसा कि ज़िंदा बकरे की खाल उतारी जा रही हो।

हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का विसाल हो रहा था तो पानी से भरा हुआ प्याला हुज़ूर सल्ल॰ के क़रीब रखा हुआ था, हुज़ूर सल्ल॰ बार बार अपने मुबारक हाथ को पानी में डालते और फिर मुँह पर मलते थे और फ़रमाते थे कि या अल्लाह, नज़अ् की सख़्ती पर मेरी मदद फ़रमा।

हज़रत उमर रज़ि॰ ने हज़रत कअब रज़ि॰ से दर्याफ़्त किया कि मौत की कैफ़ियत बयान करो, उन्होंने अर्ज़ किया कि अमीरूल मोमिनीन! जिस तरह एक

कांटेदार टहनी को आदमी के अंदर दाख़िल कर दिया जाये, जिसके साथ बदन का हर उज़्व लिपट जाये, फिर एकदम उसको खींच लिया जाये, इसी तरह जान खींची जाती है।

यह सब तो नज़अ् की मुख़्तसर कैफ़ियत थी, इन सबके अलावा मलकुल मौत और उसके मददगार फ़रिश्तों की सूरतों का ख़ौफ़ एक मुस्तक़िल मरहला है, जिस सूरत पर वे गुनाहगारों की जान निकालते हैं वह ऐसी डरावनी सूरत होती है कि क़वी से क़वी आदमी भी उसके देखने की ताक़त नहीं रखता।

हज़रत इब्राहीम अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने मलकुल मौत से फ़रमाया कि तुम जिस सूरत पर फ़ाजिर लोगों की जान निकालते हो, वह मुझे दिखाओ, उन्होंने अर्ज़ किया आप तहम्मुल न फ़रमा सकेंगे। हज़रत इब्राहीम अलैहि० ने फ़रमाया कि नहीं, मैं तहम्मुल कर लूंगा। हज़रत इज़्राईल अलैहि० ने अर्ज़ किया अच्छा दूसरी तरफ़ मुंह कर लीजिये। हज़रत इब्राहीम अलैहि० ने मुंह फेर लिया, इसके बाद हज़रत इज़्राईल अलैहि० ने अर्ज़ किया कि अब देख लीजिये। हज़रत इब्राहीम अलैहि० ने जब ऊपर देखा तो एक निहायत काला आदमी (देव की शक्ल) बाल बहुत बड़े बड़े, खड़े हुए, निहायत सख़्त बदबू, काले कपड़े, उसके मुंह से, नाक से आग की लपटें निकल रही हैं। हज़रत इब्राहीम अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलाम को यह हालत देखकर ग़श आ गया, बड़ी देर में इफ़ाक़ा हुआ तो मलकुल मौत अपनी पहली सूरत पर थे। हज़रत इब्राहीम अलैहि० ने फ़रमाया कि अगर फ़ाजिर शख़्स के लिए कोई दूसरी आफ़त न हो तब भी यह सूरत ही उसकी आफ़त के लिए काफ़ी है।

यह फ़ाजिरों का हाल है लेकिन अल्लाह के मुतीअ् बंदों की रूह निकालने के वक़्त वे निहायत ही बेहतरीन सूरत में होते हैं। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ही से यह नक़ल किया गया कि उन्होंने मलकुल मौत से फ़रमाया कि मुझे उस हैअत (शक्ल) को भी दिखाओ, तो उन्होंने देखा कि एक निहायत ख़ूबसूरत जवान, निहायत नफ़ीस लिबास पहने हुए ख़ुशबूयें महकती हुईं, सामने हैं। हज़रत इब्राहीम अलैहि० ने फ़रमाया कि मोमिन के लिए अगर मरते वक़्त इस सूरत के अलावा कोई भी फ़रहत की चीज़ न हो तो यह भी काफ़ी है।

एक हदीस में है कि हक़ तआला शानुहू जब किसी बंदे से ख़ुश होते हैं तो मलकुल मौत से फ़रमाते हैं कि फ़लां बंदे की रूह ले आओ। मैं उसको राहत पहुंचाऊं, उसका इम्तिहान हो चुका है, मैं जैसा चाहता था, वैसा ही कामयाब

निकला। मलकुल मौत उसके पास आते हैं और पांच सौ फ़रिश्ते उनके साथ होते हैं, उनमें से हर फ़रिश्ता उस शख़्स को एक ऐसी ख़ुशख़बरी और बशारत देता है जो दूसरों ने न दी हो। उनके पास रैहान की टहनियां और ज़ाफ़रान की जड़ें होती हैं। वे सब फ़रिश्ते दो क़तारों में लाइन लगा कर खड़े होते हैं, जब इब्लीस यह मंज़र देखता है तो अपना सर पकड़ कर रोना चिल्लाना शुरू कर देता है। उसके हशम ख़दम दौड़े हुए आकर पूछते हैं, आक़ा क्या बात हो गयी? वह कहता है कि कमबख़्तो, देखते नहीं यह क्या हो रहा है, तुम कहां मर गये थे, वे यह कहते हैं, हमारे सरदार, हमने तो बहुत कोशिश की मगर यह गुनाहों से महफ़ूज़ रहा।

हज़रत जाबिर बिन ज़ियाद रह० के जब इंतिक़ाल का वक़्त क़रीब था, किसी ने पूछा, किसी चीज़ की रग़बत है? फ़रमाया कि हसन (रह०) से मुलाक़ात करना चाहता हूँ। हज़रत हसन बसरी रह० तशरीफ़ लाये तो लोगों ने कहा कि हसन (रह०) आ गये तो हज़रत जाबिर रह० फ़रमाने लगे, भाई यह रुख़्सत का वक़्त है, अब जा रहे हैं यह ख़बर नहीं कि जन्नत की तरफ़ या जहन्नम की तरफ़। *(एह्या)*

हज़रत तमीम दारी रह० कहते हैं कि हक़ तआला शानुहू मलकुल मौत से फ़रमाते हैं कि मेरे फ़लां वली के पास जाओ और उसकी रूह ले आओ; मैं ने उसका ख़ुशी में और ग़म में दोनों में इम्तिहान ले लिया, वह ऐसा ही निकला जैसा कि मैं चाहता था, उसको ले आओ ताकि दुनिया की मशक़्क़तों से उसको राहत मिल जाये। मलकुल मौत पांच सौ फ़रिश्तों की जमाअत के साथ उसके पास आते हैं, उन सबके पास जन्नत के कफ़न होते हैं, उनके हाथों में रैहान के गुलदस्ते होते हैं, जिन में हर एक में बीस रंग होते हैं और हर रंग में नई ख़ुशबू होती है और सफ़ेद रेशमी रूमाल में महकता हुआ मुश्क होता है, मलकुल मौत उसके सिरहाने बैठते हैं और फ़रिश्ते उसको चारों तरफ़ से घेर लेते हैं और उसके हर उज़्व पर अपना हाथ रखते हैं और यह मुश्क वाला रूमाल उसकी ठोड़ी के नीचे रखते हैं और जन्नत का दरवाज़ा उसकी निगाह के सामने खोल देते हैं। उसके दिल को जन्नत की नई नई चीज़ों से बहलाया जाता है जैसा कि बच्चे के रोने के वक़्त उसके घर वाले मुख़्तलिफ़ चीज़ों से उसका दिल बहलाते हैं कभी उसकी हूरें सामने कर दी जाती हैं, कभी वहां के फल, कभी उम्दा उम्दा लिबास, ग़रज़ मुख़्तलिफ़ चीज़ें उसके सामने की जाती हैं, उसकी हूरें (बीवियां) ख़ुशी में कूदने लगती हैं। इन सब मंज़रों को देख कर उसकी रूह बदन में फड़कने लगती

है (जैसा कि पिंजरे में जानवर निकलने को फड़कता है) और मलकुल मौत उस से कहता है, ऐ मुबारक रूह! चल ऐसी बेरियों की तरफ़ जिस में कांटा नहीं है और ऐसे केलों की तरफ़ जो तेह ब तेह लगे हुए हैं और ऐसे साए की तरफ़ जो निहायत गहरा वसीअ् है और पानी बह रहे हैं (यह चंद मंज़रों की तरफ़ इशारा है जो क़ुरआन पाक में सूरः वाकि़आ की इस आयते शरीफ़ा में ज़िक्र किए गए)।

فِيْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ ۙ وَّطَلْحٍ مَّنْضُوْدٍ ۙ وَّظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ ۙ (واقعة ع١)

"फ़ी सिद्‌रिम् मख़्ज़ूदिंव्व तल्‌हिम् मंज़ूदिंव् व ज़िल्लिम् मम्दूद्॰"

(रूकूअ 1)

और मलकुल मौत ऐसी नरमी से बातें करता है जैसा कि मां अपने बच्चे से करती है। इस वजह से कि उसको यह बात मालूम है कि यह रूह हक़ तआला शानुहू के यहां मुक़र्रब है, वह इस रूह के साथ लुत्फ़ से पेश आता है ताकि हक़ तआला शानुहू उस फ़रिश्ते से ख़ुश हों, वह रूह बदन में से ऐसी तरह सहूलत से निकलती है जैसा कि आटे में से बाल निकल जाता है। जब रूह निकलती है तो सब फ़रिश्ते उसको सलाम करते हैं और जन्नत में दाख़िल होने की बशारत देते हैं, जिसको क़ुरआन पाक :-

اَلَّذِيْنَ تَتَوَفّٰهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ طَيِّبِيْنَ (نحل ع٤)

"अल्ल ज़ी-न त तवफ़्फ़ा हुमुल् म-ला-इ कतु तय्यिबीन॰"

(सूरः नहल, रूकूअ 4)

में ज़िक्र फ़रमाया है, और अगर वह मुक़र्रब बन्दों में होता है तो सूरः वाकि़आ में उसके मुताल्लिक़ इर्शाद है :-

فَرَوْحٌ وَّرَيْحَانٌ ۙ وَّجَنَّتُ نَعِيْمٍ ۝ (واقعة ع٣)

"फ़-रौ हुंव्-व रै-हा नुंव् व जन्न-तु नअीम॰" (रूकूअ 3)

पस जिस वक़्त रूह बदन से जुदा होती है तो वह बदन से कहती है कि हक़ तआला शानुहू तुझ को जज़ाए ख़ैर दे, तू अल्लाह की बन्दगी और इताअत में जल्दी करने वाला था, उसकी नाफ़रमानी में सुस्ती करने वाला था, तुझे आज का दिन मुबारक हो तूने ख़ुद भी अज़ाब से निजात पायी और मुझे भी निजात दी और यही मज़्मून बदन रूख़्सत के वक़्त रूह से कहता है।

उसकी जुदाई पर ज़मीन के वे हिस्से रोते हैं जिन पर वह अक्सर इबादत

किया करता था। आसमान के वे दरवाज़े रोते हैं जिन से उसके आमाल ऊपर जाया करते थे, जिन से उस का रिज़्क़ उतरा करता था।

इसके बाद वे पांच सौ फ़रिश्ते मय्यित के पास जमा हो जाते हैं और जब नहलाने वाले उसको करवट देते हैं तो वे फ़रिश्ते फ़ौरन उसको करवट देने लगते हैं और जब वे कफ़न पहनाते हैं तो उस से पहले वे फ़ौरन अपना लाया हुआ कफ़न पहना देते हैं। जब वे ख़ुशबू मलते हैं तो वे फ़रिश्ते उस से पहले अपनी लाई हुई ख़ुशबू मलते हैं। इसके बाद वे उसके दरवाज़े से क़ब्र तक दोनों जानिब क़तार लगा कर खड़े हो जाते हैं। और उसके जनाज़े का दुआ और इस्तिग़फ़ार के साथ इस्तिक़बाल करते हैं।

ये सारे मंज़र शैतान देख कर इस क़दर रोता है कि उसकी हडिडयां टूटने लगती हैं और अपने लश्करों से कहता है, तुम्हारा नास हो जाये, यह तुम से किस तरह छूट गया, वे कहते हैं कि यह मासूम था।

इसके बाद जब हज़रत मलकुल मौत उसकी रूह लेकर ऊपर जाते हैं तो जिब्रील अलैहि० सत्तर हज़ार फ़रिश्तों के साथ उसका इस्तिक़्बाल करते हैं। ये फ़रिश्ते उसको हक़ तआला शानुहू की तरफ़ से बशारतें देते हैं। इसके बाद जब मलकुल मौत अलैहिस्सलाम उसको अर्श तक ले जाते हैं तो वहां पहुँच कर वह रूह सज्दे में गिर जाती है। हक़ तआला शानुहू का इर्शाद होता है कि मेरे बंदे की रूह को "सिद्‌रिम् मख़्ज़ूदिंव्व तल्हिंम् मन्ज़ूद॰ (सूरः वाक़िआ, रूकूअ 1) में पहुँचा दो।

जब उसकी लाश क़ब्र में रखी जाती है तो उसकी नमाज़ उसके दायें तरफ़ आकर खड़ी जो जाती है, रोज़ा बायें तरफ़ आकर खड़ा हो जाता है, क़ुरआन पाक की तिलावत और अल्लाह का ज़िक्र सर की तरफ़ खड़ा हो जाता है और जमाअत की नमाज़ को जो क़दम चले हैं, वे पांव की तरफ़ खड़े हो जाते हैं और (मसाइब पर और गुनाहों से) सब्र क़ब्र के एक जानिब खड़े हो जाते हैं। इसके बाद अज़ाब उस क़ब्र में अपनी गर्दन निकालता है और मुर्दे तक पहुँचना चाहता है, लेकिन अगर दायीं जानिब से आता है तो नमाज़ उसको कहती है कि परे हट, यह शख़्स ख़ुदा की क़सम दुनिया में मशक़्क़त उठाता रहा, अभी ज़रा राहत से सोया है, फिर वह बायीं जानिब से आता है तो रोज़ा इसी तरह उसको हटा देता है, फिर वह सर की तरफ़ से आता है तो तिलावत और ज़िक्र उसको

रोक देते हैं कि इधर को तेरा रास्ता नहीं, ग़रज़ वह जिस जानिब से जाना चाहता है, उसको रास्ता नहीं मिलता, इसलिए कि अल्लाह के वली को हर जानिब से इबादतों ने घेर रखा है। वह अज़ाब आजिज़ होकर वापस चला जाता है। इसके बाद सब्र जो एक कोने में खड़ा था, इन इबादतों से कहता है कि मैं इस इंतिज़ार में था कि अगर किसी जानिब (इबादत की किसी क़िस्म की कमज़ोरी से) कुछ ज़ोअ्फ़ (कमज़ोरी) हो तो मैं उस जानिब मुज़ाहमत करूंगा। मगर अल्हम्दुलिल्लाह कि तुम ने मिलकर उसको दफ़ा कर दिया, अब मैं (आमाल तुलने की) तराज़ू के वक़्त इसके काम आऊंगा।

इसके बाद दो फ़रिश्ते उस मुर्दे के पास आते हैं, जिनकी आंखें बिजली की तरह चमकती हैं और आवाज़ बादलों की ज़ोरदार गरज की तरह होती है, उनके दांतों की कुचलियां गाय के सींगों की तरह होती हैं, उनके मुंह से सांस के साथ आग की लपटें निकलती हैं। बाल इतने बढ़े हुए कि पांव तक लटके हुए, उनके एक मोंढे से दूसरे मोंढे तक इतना फ़ासला कि कई दिन में चल कर पूरा हो, मेहरबानी और नर्मी गोया उनके पास को भी नहीं गुज़री (अलबत्ता सख़्ती का मामला मोमिनों के साथ नहीं करते, लेकिन हैयत ही क्या कम है,) इनको मुन्किर नकीर कहा जाता है। इन में से हर एक के हाथ में एक एक इतना बड़ा और भारी हथौड़ा होता है कि अगर सारी दुनिया के इंसान और जिन्नात मिलकर उठायें तो उनसे उठ न सके। वे आकर मुर्दे से कहते हैं कि बैठ जा, मुर्दा एकदम बैठ जाता है और कफ़न उसके सर से नीचे सुरीन तक आ जाता है। वे सवाल करते हैं, तेरा रब कौन है? तेरा मज़हब क्या है? तेरे नबी का क्या नाम है? मुर्दा कहता है कि मेरा रब अल्लाह जल्ल शानुहू है जो वह्दहू ला शरी-क लहू है (वह तने तंहा मालिक है कोई उसका शरीक नहीं) मेरा दीन इस्लाम, मेरे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं जो ख़ातिमुन्नबिय्यीन हैं।

वे दोनों कहते हैं तूने सही कहा है, इसके बाद वे क़ब्र की दीवारों को सब तरफ़ से हटा देते हैं जिस से वह ऊपर से और चारों जानिब, दायें बायें, सिरहाने पांयती से बहुत ज़्यादा वसीअ् हो जाती है। उसके बाद वे कहते हैं कि ऊपर सर उठाओ, मुर्दा जब सर उठाता है तो उसको एक दरवाज़ा नज़र आता है, जिसमें से जन्नत नज़र आती है। वे कहते हैं कि ऐ अल्लाह के वली, वह जगह तुम्हारे रहने की है, इस वजह से कि तुम ने अल्लाह तआला शानुहू की इताअत की है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि क़सम है उस पाक ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है कि उसको उस वक़्त ऐसी ख़ुशी होती है कि जो कभी न लौटेगी। उसके बाद वे फ़रिश्ते कहते हैं कि अपने पांव की तरफ़ देखो, वह देखता है तो जहन्नम का एक दरवाज़ा नज़र आता है (जिस से उसकी हालत नज़र आती है) वे फ़रिश्ते कहते हैं कि ऐ अल्लाह के वली, तूने इस दरवाज़े से निजात पा ली, उस वक़्त भी मुर्दे को इस क़दर ख़ुशी होती है जो कभी न लौटेगी।

इसके बाद उस क़ब्र में सत्तर दरवाज़े जन्नत की तरफ़ खुल जाते हैं, जिन में से वहां की ठंडी हवायें और ख़ुशबूयें आती रहती हैं और क़ियामत तक यही मंज़र रहेगा। (इसके बाद दूसरे की हालत सुनो कि) :-

हक़ तआला शानुहू मलकुल मौत से फ़रमाते हैं कि मेरे दुश्मन के पास जाओ और उसकी जान निकाल लाओ, मैं ने उस पर हर क़िस्म की फ़राख़ी रखी, अपनी नेमतें (दुनिया में चारों तरफ़ से) उस पर लाद दीं, मगर वह मेरी नाफ़रमानी से बाज़ नहीं आया, लाओ आज उसको सज़ा दूं।

मलकुल मौत निहायत तक्लीफ़देह सूरत में उसके पास आते हैं, इस सूरत से कि बारह आंखें उन में होती हैं। उनके पास एक गुर्ज़ (लोहे का मोटा सा डंडा) जहन्नम की आग का बना हुआ होता है, जिसमें कांटे होते हैं, उन के साथ पांच सौ फ़रिश्ते जिनके साथ तांबे का एक टुकड़ा होता है और हाथों में जहन्नम की आग के बड़े बड़े अंगारे और आग के कोड़े होते हैं, जो दहकते हुए होते हैं। मलकुल मौत आते ही वह गुर्ज़ उस पर मारते हैं जिसके कांटे उसके हर रग व पै में धुस जाते हैं, फिर वह उसको खींचते हैं और बाक़ी फ़रिश्ते उन कोड़ों से उसके मुंह को और सुरीन को मारना शुरू कर देते हैं। जिससे वह मुर्दा ग़श खाने लगता है। वह उसकी रूह को पांव की उंगलियों से निकाल कर एड़ी में रोक देते हैं और पिटाई करते रहते हैं। फिर ऐड़ी से निकाल कर घुटनों में रोक देते हैं फिर वहां से निकालकर (और जगह जगह इसलिए रोकते हैं ताकि देर तक तक्लीफ़ पहुँचायी जाये।) पेट में रोक देते हैं और वहां से खींच कर सीने में रोक देते है। फिर फ़रिश्ते उस तांबे को और जहन्नम के अंगारों को उसकी ठोढ़ी के नीचे रख देते हैं और मलकुल मौत अलैहिस्सलाम कहते हैं कि ऐ मल्ऊन रूह! निकल और उस जहन्नम की तरफ़ चल जिसकी सिफ़त (क़ुरआन पाक, सूरः वाक़िआ रूकूअ 2 में) "फ़ी समूमिंव्व हमीम" (आयत) है जिस का तर्जुमा यह

है कि :-

वे लोग आग में और खोलते हुए पानी में स्याह (काले) धुंए के साये में, जो न ठंडा होगा, न फ़रहत बख़्श होगा (बल्कि निहायत तक्लीफ़ देने वाला होगा।)

फिर जब उसकी रूह बदन से रूख़्सत होती है तो वह बदन से कहती है कि हक़ तआला शानुहू तुझे बुरा बदला दे, तू मुझे अल्लाह की नाफ़रमानी में जल्दी से ले जाता था और उसकी इताअत में सुस्ती करता था, तू ख़ुद भी हलाक हुआ और मुझे भी हलाक किया और यही मज़्मून बदन रूह से कहता है, और ज़मीन के वे हिस्से जिन पर वह अल्लाह के गुनाह किया करता था, उस पर लानत करते हैं और शैतान के लश्कर दौड़े हुए अपने सरदार इब्लीस के पास जाकर ख़ुशख़बरी सुनाते हैं कि एक आदमी को जहन्नम तक पहुँचा दिया गया।

फिर जब वह क़ब्र में रखा जाता है तो ज़मीन उस पर इतनी तंग हो जाती है कि उसकी पसलियां एक दूसरे में घुस जाती हैं, फिर उस पर काले सांप मुसल्लत हो जाते हैं जो उसकी नाक और पांव के अँगूठे काटना शुरू करते हैं, यहां तक कि दर्मियान में दोनों जानिब सांप आकर मिल जाते हैं, फिर उसके पास दो फ़रिश्ते (मुन्किर नकीर जिनकी हैयत अभी गुज़र चुकी है) आते हैं और उससे पूछते हैं कि तेरा रब कौन है? तेरा दीन क्या है ? तेरे नबी कौन हैं? वह हर सवाल के जवाब में ला इल्मी ज़ाहिर करता है, और उसके जवाब पर उसको गुर्ज़ से इस क़दर ज़ोर से मारते हैं कि उस गुर्ज़ की चिंगारियां क़ब्र में फ़ैल जाती हैं। इसके बाद उसको कहते हैं कि ऊपर देख, वह ऊपर की जानिब जन्नत का दरवाज़ा खुला हुआ देखता है (उसकी बाग़ व बहार यहां से नज़र आती है) वे फ़रिश्ते उससे कहते हैं कि अल्लाह के दुश्मन, अगर तू अल्लाह तआला शानुहू की इताअत करता तो यह तेरा ठिकाना होता।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है कि उसको उस वक़्त ऐसी हसरत होती है कि ऐसी हसरत कभी न होगी, फिर दोज़ख़ का दरवाज़ा खोला जाता है और वे फ़रिश्ते कहते हैं कि अल्लाह के दुश्मन, अब तेरा यह ठिकाना है, इसलिये कि तूने हक़ तआला शानुहू की नाफ़रमानी की। इसके बाद सतत्तर (77) दरवाज़े जहन्नम के उस की क़ब्र में खोल दिये जाते हैं जिन में से क़ियामत तक गर्म

हवायें और धुआं वग़ैरह आता रहता है।

मुहद्दिसीन रहिमहुमुल्लाह इस हदीस पर सनद के एतिबार से कुछ कलाम करते हैं, लेकिन इसके मज़ामीन की ताईद बहुत सी रिवायात से होती है।

(इत्तिहाफ़)

बिलखुसूस हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि॰ और हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ की रिवायतें जो मिश्कात शरीफ़ की किताबुल जनाइज़ में और बाब इसबाते अज़ाबुल क़ब्र में हैं, अगर कोई इनका तर्जुमा देखना चाहे तो मज़ाहिरे हक़ में देखा जा सकता है। यह मंज़र बहुत ज़्यादा निगाह में रखने के क़ाबिल है कि बहुत सख़्त मंज़र है, बहुत कसरत से अहादीस में इसके वाक़िआत ज़िक्र किये गये हैं, इख़्तिसार की वजह से एक ही हदीस का तर्जुमा लिखा गया –

हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि गुनाहगारों के लिए अहले क़ुबूर से हलाकत है कि उन के ऊपर काले सांप मुसल्लत कर दिये जाते हैं, एक पांव की जानिब से, दूसरा सर की जानिब से और वे काटते हुए चले जाते हैं, यहां तक कि दर्मियान में आकर दोनों मिल जाते हैं। यही बर्ज़ख़ का अज़ाब है जिसको क़ुरआन पाक में:-

وَمِنْ وَّرَآئِهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ (مؤمنون ع ٦)

"व मिंव्वरा-इहिम बर्ज़-ख़ुन इला यौ-मि युब्अ़-सून"

(मुअ्मिनून, रूकूअ 6) से ताबीर फ़रमाया है।

यही वजह हैं कि जब हज़रत उस्मान रज़ि॰ क़ब्र का ज़िक्र करते तो इतना रोते कि दाढ़ी मुबारक तर हो जाती जैसा कि ऊपर गुज़र चुका है। इसी वजह से हुज़ूर सल्ल॰ की दुआओं में बहुत कसरत से अज़ाबे क़ब्र से पनाह मांगी गयी है, ताकि लोग कसरत से इसकी दुआ मांगें, वर्ना हुज़ूर सल्ल॰ ख़ुद तो मासूम हैं और इसी बिना पर हुज़ूर सल्ल॰ का वह इर्शाद है जो पहले गुज़रा कि तुम ख़ौफ़ की वजह से मुर्दों को दफ़्न करना छोड़ दोगे, वर्ना मैं अल्लाह तआला शानुहू से दुआ करता कि तुम्हें अज़ाबे क़ब्र सुना दे।

और यह जो कुछ है मुक़्तज़ाए अदल (इन्साफ़ का तक़ाज़ा) है इसलिए कि आदमी इस आलम में सिर्फ़ अल्लाह तआला शानुहू की इबादत के लिए भेजा गया था और हक़ तआला शानुहू ने अपने तमाम जानी और माली एहसानात के साथ क़ुरआन पाक में यह बात जता भी दी थी कि तुम्हें इस आलम में सिर्फ़

इबादत के लिए भेजा जाता है।

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ ٥ (الذّٰرِيٰت ع ٣)

"व मा ख़-लक़्तुल् जिन्-न वल्इन्-स इल्ला लियअ्बुदून॰"

(अज़्ज़ारियात, रूकूअ 3)

और इस पर भी मुतनब्बह कर दिया था कि ज़िन्दगी सिर्फ़ इम्तिहान के लिए दी गयी है कि हमारे इन एहसानात में क्या कारगुज़ारी है और मौत उस इम्तिहान का नतीजा सुनाने के लिए है:-

تَبٰرَكَ الَّذِىْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ ز وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرُ ٥ ۨ الَّذِىْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ٥ (ملك ع ١)

"तबा-रकल्ल-ज़ी बिय-दि हिल् मुल्कु व-हु-व अला कुल्लि शैइन् क़दीरू॰ नि ल्ल-ज़ी ख़-ल-क़ल् मौ-त वल् हया-त लियब्लु-व कुम् अय्यु कुम् अह्स-नु अ-म-ला॰" (अलमुल्क, रूकूअ 1)

तर्जुमाः- वह (ख़ुदा अज़्ज़ व जल्ल) बड़ा आलीशान है जिसके क़ब्ज़े में तमाम सल्तनत है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है, जिस ने मौत और ज़िन्दगी को पैदा किया ताकि तुम्हारी आज़माइश करे कि तुम में कौन शख़्स ज़्यादा अच्छे अमल करने वाला है, और जब कि यह दुनिया इम्तिहान की जगह है और जिन्न और इन्स की पैदाइश की हिक्मत सिर्फ़ इबादत है और दुनिया की जितनी लज़्ज़तें, राहतें और सामान दिये गये हैं वे सिर्फ़ इस लिये दिये गये हैं कि अपनी ज़रूरत के बक़द्र उनसे नफ़ा उठायें, और कम से कम ज़रूरत पूरी करने के बाद जो कुछ बचे, वह अपने नफ़ा के लिए अपने काम आने के लिए अल्लाह तआला शानुहू के ख़ज़ाने में जमा कर दें, फिर कितनी ग़फ़लत और हसरत और ख़सारे की बात है कि हम उन में लगकर हक़ तआला शानुहू के अह्कामात को भी भूल जायें और इस से भी आंख बंद कर लें कि हम क्यों आये थे, और यह सब हमें क्यों दिया गया था, हम किस चीज़ में लग गये और असल हसरत उस वक़्त होती है जब यह हज़ारों की मिक़्दार बड़ी मेहनत और जाँफ़शानी से कमाई हुई, अपने ऊपर ख़र्च की तंगी करके जमा की हुई दूसरों के लिए छोड़ कर ख़ुद ख़ाली हाथ दफ़्अतन इस आलम से चला जाना पड़े। अगर हमें कुछ भी अक़्ल का हिस्सा है तो थोड़ी देर बिल्कुल तंहा मकान में बैठकर यह मंज़र सोचने और ग़ौर करने का है कि अगर इसी वक़्त मौत आ जाये तो मेरा क्या बने, और सारे

साज़ व सामान का क्या बने, जो बरसों की मेहनत है, बरसों की कमाई है, बरसों का जोड़ा हुआ है।

हज़रत वह्ब बिन मुनब्बह रह० कहते हैं कि एक बादशाह था, जिस का इरादा अपनी हुकूमत की ज़मीन की सैर का और हाल देखने का हुआ। उसके लिए शाहाना जोड़ा मंगाया गया। एक जोड़ा लाया गया, वह पसंद न आया, दूसरा मंगाया, ग़रज़ बार बार रद्द के बाद निहायत पसंदीदा जोड़ा पहन कर सवारी मंगाई गयी। एक उम्दा घोड़ा लाया गया, पसंद न आया उसको वापस करके दूसरा, तीसरा मंगाया, जब वह भी पसंद न आया तो सब घोड़े सामने लाये गये उनमें से बेहतरीन घोड़ा पसंद करके सवार हुआ, शैतान मर्दूद ने उस वक़्त और भी नख़्वत नाक में फूँक दी, निहायत तकब्बुर से सवार हुआ, हशम ख़दम फ़ौज, पैदल साथ चले, मगर बड़ाई और तकब्बुर से बादशाह उनकी तरफ़ देखना भी गवारा न करता था। रास्ते में चलते चलते एक शख़्स निहायत ख़स्ता हाल पुराने कपड़ों में मिला, उसने सलाम किया, बादशाह ने इल्तिफ़ात भी न किया। उस ख़स्ता हाल ने घोड़े की लगाम पकड़ ली, बादशाह ने उसको डांटा कि लगाम छोड़, इतनी जुर्रत करता है। उसने कहा मुझे तुझ से एक काम है। बादशाह ने कहा, अच्छा सब्र कर, जब मैं सवारी से उतरूँगा, उस वक़्त कह लेना, उसने कहा नहीं, अभी कहना है और यह कह कर ज़बर्दस्ती लगाम छीन लिया। बादशाह ने कहा, कह। उसने कहा बहुत राज़ की बात है कान में कहनी है। बादशाह ने कान उसके क़रीब कर दिया। उसने कहा, मैं मलकुल मौत हूँ, तेरी जान लेना है। यह सुनकर बादशाह का चेहरा फ़क़ हो गया, और ज़बान लड़खड़ा गयी। फिर कहने लगा अच्छा मुझे इतनी मुहलत दे दे कि मैं घर जाकर कुछ अपने सामान का नज़्म कर दूँ। घर वालों से मिल लूँ। फ़रिश्ते ने कहा कि बिल्कुल नहीं, अब तू अपने घर को और सामान को कभी नहीं देख सकेगा। यह कह कर उसकी रूह क़ब्ज़ कर ली। वह घोड़े से लकड़ी की तरह नीचे गिर गया।

इसके बाद वह फ़रिश्ता मलकुल मौत एक नेक मुसलमान के पास गया कि वह (नेक बंदा) भी कहीं सफ़र में जा रहा था। उसको जाकर सलाम किया, उसने "व अलैकुमुस्सलाम" कहा उसने कहा मुझे तेरे कान में एक बात कहनी है। उसने कहा, कहो, उसने कान में कहा कि मैं मलकुल मौत हूँ। उसने कहा बहुत अच्छा किया, क्या आये, बड़ा मुबारक है ऐसे शख़्स का आना जिसका

फ़िराक़ बहुत तवील हो गया था, मुझ से तो जितने आदमी दूर हैं, उन में किसी से भी मुलाक़ात का इतना इश्तियाक़ न था जितना तुम्हारी मुलाक़ात का था। फ़रिश्ते ने कहा कि तुम जिस काम के लिए घर से निकले हो, उसको जल्दी पूरा कर लो। उसने कहा मुझे हक़ तआला शानुहू से मिलने से ज़्यादा महबूब कोई भी काम नहीं। फ़रिश्ते ने कहा कि तुम जिस हालत में मरना अपने लिये पसंद करते हो, मैं उसी हालत में जान क़ब्ज़ करूँगा। उस शख़्स ने कहा कि तुम्हें इख़्तियार है। फ़रिश्ते ने कहा मुझे यही हुक्म दिया गया है (कि तुम्हारी खुशी का इत्तिबाअ् करूँ) उस शख़्स ने कहा अच्छा तो मुझे वुज़ू करके नमाज़ पढ़ने दो और जब मैं सज्दे में जाऊं तो मेरी रूह क़ब्ज़ कर लेना, चुनांचे उसने नमाज़ शुरू की, और सज्दे में उसकी रूह क़ब्ज़ की गयी। *(एह्या)*

हक़ तआला शानुहू के बे निहायत एहसानात में से यह भी है कि इस नाकारा की सब से बड़ी लड़की अज़ीज़े मोहतरम मौलवी मुहम्मद यूसुफ़ साहब ज़ा-द फ़ज़्लुहू की अहलिया, जो अरसे से बीमार थीं और इशारे से नमाज़ पढ़ती थीं, इसी साल 29 शव्वाल 1366 हि० शब दो शंबा (पीर) में जब कि वह मग़रिब की नमाज़ में इशारा करके सज्दे में गयीं, तो वहीं रूह को उसके पैदा करने वाले के सुपुर्द कर दिया और इसी हालते सुजूद में दुनिया को रूख़्सत कर दिया। हक़ तआला शानुहू के किस किस एहसान का शुक्र अदा हो सकता है।

अबू बक्र बिन अब्दुल्लाह मुज़नी रह० कहते हैं कि बनी इस्राईल के एक शख़्स ने बहुत ज़्यादा माल जमा किया था, जब मरने का वक़्त क़रीब हो गया तो अपने बेटों से कहा कि मेरा सारा माल मेरे सामने कर दो, वह सब जल्दी जल्दी जमा किया गया, बहुत से घोड़े ऊँट, ग़ुलाम वग़ैरह सब चीज़ें सामने लायी गयीं वह उनको देखकर (हसरत से) रो रहा था कि यह सब छूट रहा है। इतने में मलकुल मौत सामने आ गये और कहने लगे, रोने से क्या फ़ायदा है, उस ज़ात की क़सम, जिसने ये सब नेमतें तुझ को अता कीं, अब तेरी जान लेकर जाऊँगा। उसने दर्ख़्वास्त की कि थोड़ी सी मुहलत अगर दे दी जाये तो मैं इन चीज़ों को तक़्सीम कर दूँ। फ़रिश्ते ने कहा, अब मुहलत का वक़्त, अफ़सोस है कि जाता रहा। काश इस वक़्त से पहले तू तक़्सीम कर देता, यह कह कर उसकी जान निकाल ली।

एक और वाक़िआ नक़ल किया गया है कि एक शख़्स ने बहुत सा माल जमा किया था और कोई चीज़ भी ऐसी न छोड़ी जो अपने यहां मंगा न ली हो।

और एक बहुत बड़ा आलीशान महल तैयार किया जिसके दो दरवाज़े थे, उन पर गुलाम मुहाफ़िज़ मुक़र्रर किये और मकान की तैयारी की बहुत बड़ी दावत की, जिस में अपने सब अज़ीज़ व अहबाब को जमा किया और एक बड़े आलीशान तख़्त पर एक टांग खड़ी करके दूसरी टांग उस पर रखे बैठा था, लोग खाना खा रहे थे और वह अपने दिल में कह रहा था कि हर क़िस्म का ज़ख़ीरा इतना जमा हो गया कि कई साल तक तो अब ख़रीदना न पड़ेगा, यह ख़्याल दिल में गुज़र ही रहा था कि एक फ़क़ीर फटे कपड़े, गर्दन में (फ़क़ीरों जैसा) झोला पड़ा हुआ दरवाज़े पर आया और इस ज़ोर से किवाड़ों को पीटना शुरू किया कि उसके तख़्त तक आवाज़ पहुँची। गुलाम दौड़े हुए बाहर आये कि यह कौन नामाक़ूल है, उससे जाकर पूछा यह क्या बात है, उस फ़क़ीर ने कहा कि अपने सरदार को मेरे पास भेज दो। गुलामों ने कहा कि हमारे आक़ा तुझ जैसे फ़क़ीरों के पास आयेंगे? उसने कहा ज़रूर आयेंगे, उससे जाकर कह दो।

वह आक़ा के पास गये और उस से क़िस्सा सुनाया। उसने कहा तुम ने उसको इस कहने का मज़ा न चखाया, इतने में उस फ़क़ीर ने दोबारा पहले से भी ज़्यादा ज़ोर से किवाड़ों को पीटा, जिस पर दरबान दौड़े हुए फिर दरवाज़े पर आये तो उस फ़क़ीर ने कहा कि उस अपने आक़ा से कह दो कि मैं मलकुल मौत हूँ, यह सुनकर उनके होश उड़ गये। और आक़ा से जाकर कहा, उस पर भी मिट्टी छित गयी और बहुत आजिज़ी से कहने लगा कि उस से कह दो कि मेरे फ़िदये में किसी दूसरे को क़ुबूल कर ले। इतने में वह फ़क़ीर अंदर पहुँच गया और उसने उससे कहा कि तुझे जो कुछ करना है, कर ले, मैं तेरी रूह क़ब्ज़ किये बग़ैर वापस नहीं जा सकता।

उसने अपना सब माल जमा कराया और माल से कहने लगा कि अल्लाह की तुझ पर लानत हो कि तूने और तेरी मशगूली ने मुझे अपने मौला की इबादत से रोक दिया और इतना वक़्त न दिया कि मैं किसी वक़्त यक्सूई से अल्लाह तआला शानुहू को याद कर लेता। हक़ तआला शानुहू ने अपनी क़ुदरत से माल को गोयाई (बोलने की ताक़त) अता की। उसने कहा, मुझे लानत क्यों करता है, मेरी ही वजह से तू बड़े बड़े बादशाहों तक ऐसे वक़्त पहुँच जाता था, जब कि नेक लोग उनके दरवाज़ों से हटा दिये जाते थे। मेरी ही वजह से तू नाज़ुक नाज़ुक औरतों की लज़्ज़तें हासिल किया करता था, मेरी ही वजह से तू बादशाहों की तरह रहता था। तू मुझे बुराई के मौक़ों में ख़र्च करता था और मैं

इंकार नहीं कर सकता था, अगर तू मुझे ख़ैर के मवाके में ख़र्च करता तो मैं तेरे काम आता। इसके बाद मलकुल मौत ने एकदम उसकी रूह क़ब्ज़ कर ली।

वह्ब बिन मुनब्बह रह० कहते हैं कि एक मर्तबा मलकुल मौत एक बहुत बड़े ज़ालिम की रूह क़ब्ज़ करके ले गये कि दुनिया में उससे बड़ा ज़ालिम कोई न था। वह जा रहे थे, फ़रिश्तों ने पूछा कि तुम ने हमेशा जानें क़ब्ज़ कीं, तुम्हें कभी किसी पर रहम भी आया? उन्होंने कहा कि सबसे ज़्यादा तरस मुझे एक औरत पर आया जो तंहा जंगल में थी, जब ही उसके बच्चा पैदा हुआ था, मुझे हुक्म हुआ कि उस औरत की जान क़ब्ज़ कर लूँ। मुझे उस औरत की और उसके बच्चे की तंहाई पर बड़ा तरस आया कि इस बच्चे का इस जंगल में जहां कोई दूसरा नहीं है क्या बनेगा? फ़रिश्तों ने कहा कि यह ज़ालिम जिसकी रूह तुम ले जा रहे हो वही बच्चा है। मलकुल मौत हैरत में रह गये, कहने लगे कि मौला तू पाक है, बड़ा मेहरबान है, जो चाहता है करता है।

हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि जब कोई शख़्स मर जाता है और उसके घर वाले रोना शुरू करते हैं। तो मलकुल मौत उस मकान के दरवाज़े पर खड़े होकर कहते हैं कि मैं ने इसकी रोज़ी नहीं खा ली (यह अपनी रोज़ी ख़त्म कर चुका है) मैं ने इसकी उम्र कम नहीं कर दी, मुझे तो इस घर में फिर आना है और बार बार आना है। इतने सब ख़त्म न हो जायें। हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि ख़ुदा की क़सम, अगर घर वाले उस वक़्त उस फ़रिश्ते को देखें और उसकी बात सुनें तो मुर्दे को भूल जायें और अपनी फ़िक्र में पड़ जायें।

यज़ीद रक़ाशी रह० कहते हैं कि बनी इस्राईल के ज़ालिमों में से एक ज़ालिम अपने घर में बैठा हुआ अपनी बीवी से तख़लिया कर रहा था, इतने में देखा कि घर में एक अजनबी आदमी दरवाज़े से चला आ रहा है, यह शख़्स निहायत गुस्से से उसकी तरफ़ लपका, उससे पूछा कि तू कौन है और घर में आने की तुझे किसने इजाज़त दी? उसने कहा कि मुझे इस घर के मालिक ने अंदर आने को कहा है और मैं वह शख़्स हूँ जिसको न कोई पर्दा रोक सकता है और न बादशाहों के पास जाने के लिए मुझे इजाज़त की ज़रूरत होती है, न किसी ज़ालिम के दबदबे से डरता हूँ, न किसी मग़रूर मुतकब्बिर के पास जाने से मुझे कोई चीज़ मानेअ् होती है। उस की यह गुफ़्तगू सुनकर वह ज़ालिम शख़्स ख़ौफ़ ज़दा हो गया, बदन में कपकपी आ गयी और औंधे मुंह गिर गया। उसके बाद निहायत आजिज़ी से कहने लगा फिर तो आप मलकुल मौत हैं। उसने कहा

हां मैं वही हूँ। साहबे मकान ने कहा कि आप मुझे इतनी मुहलत दें कि मैं वसीयत नामा लिख दूँ। फ़रिश्ते ने कहा कि अब इसका वक़्त दूर चला गया, अफ़सोस कि तेरी मुद्दत ख़त्म हो चुकी है, सांस पूरे हो चुके हैं और तेरा वक़्त ख़त्म हो गया। अब तेरे लिए ज़रा सी ताख़ीर की भी गुंजाईश नहीं।

साहबे मकान ने पूछा कि आप मुझे कहां ले जायेंगे? फ़रिश्ते ने कहा, तेरे आमाल जो आगे गये हुए हैं उनके पास ही ले जाऊँगा (जैसे अमल किये होंगे वैसा ही ठिकाना मिलेगा) और जिस क़िस्म का घर तूने उस जहान में बना रखा होगा, वही तुझे मिलेगा। उसने कहा कि मैं ने नेक आमाल कुछ भी नहीं किये और न ही कोई उम्दा घर अपने लिए अब तक बना रखा है। फ़रिश्ते ने कहा, फिर तो "लज़ा नज़्ज़ाअतल् लिश्श-वा" की तरफ़ ले जाऊँगा। यह सूरः मआरिज, रूकूअ 1 की आयत की तरफ़ इशारा है जिसका तर्जुमा यह है कि :-

बेशक वह आग ऐसी दहकती हुई है जो खाल तक खींच लेगी और उस शख़्स को जिसने (दुनिया में हक़ से) मुंह फेरा और बे-तवज्जही की वह आग खुद ही बुला लेगी (अपनी तरफ़ खींच लेगी)

इसके बाद उस फ़रिश्ते ने उसकी जान निकाल ली। घर में कोहराम मच गया, कोई रो रहा था, कोई चिल्ला रहा था। यज़ीद रक़ाशी रह० कहते हैं कि अगर लोगों को यह मालूम हो जाये कि मुर्दे पर इस वक़्त क्या गुज़र रही है तो उसके मरने से ज़्यादा रोना धोना उस हालत पर होने लगे जो उस पर गुज़र रही है। *(एह्या)*

हज़रत सुफ़ियान सोरी रह० फ़रमाते हैं कि जिस वक़्त मलकुल मौत दिल की रग को छूते हैं। उस वक़्त आदमी का लोगों को पहचानना मौक़ूफ़ हो जाता है। ज़बान बंद हो जाती है और दुनिया की सब चीज़ों को भूल जाता है। अगर उस वक़्त आदमी पर मौत का नशा सवार न हो तो तक्लीफ़ की शिद्दत से पास वालों पर तलवार चलाने लगे। बाज़ रिवायात में आया है कि जिस वक़्त सांस हलक़ में होता है, उस वक़्त शैतान उसके गुमराह करने की इंतिहाई कोशिश करता है।

एक रिवायत में है कि मलकुल मौत नमाज़ों के औक़ात में आदमियों की जुस्तजू करते हैं। ख़बर रखते हैं, अगर किसी शख़्स को नमाज़ के औक़ात का एहतिमाम रखने वाला पाते हैं तो मरते वक़्त उसको ख़ुद ही कलिमा तय्यिबा की

तल्क़ीन करते हैं और शैतान को उसके पास से हटा देते हैं।

मुजाहिद रह० कहते हैं कि जब आदमी मरने के क़रीब होता है, उस वक़्त उसके हम मज्लिसों की सूरतें उसके सामने की जाती हैं, अगर उसका बैठना उठना नेक लोगों के पास होता है तो यह मज्मा सामने लाया जाता है और फ़ासिक़, फ़ाजिर लोगों के पास होता है तो वे लोग सामने लाए जाते हैं। हज़रत यज़ीद बिन शजरा सहाबी रज़ि० से भी यही बात नक़ल की गयी है।

रबीअ् बिन बर्ज़ः रह० एक इबादत गुज़ार आदमी बसरा में थे, वह कहते हैं कि एक शख़्स मरने लगा, लोग उसको ला इला-ह इल्लल्लाह की तल्क़ीन कर रहे थे और उस की ज़बान से निकल रहा था कि (शराब का गिलास) तू भी पी, मुझे भी पिला, तू भी पी, मुझे भी पिला। इसी तरह अहवाज़ में एक शख़्स का इंतिक़ाल हो रहा था, लोग उसको ला इला-ह इल्लल्लाह कहते थे और वह कह रहा था, दस-दस रूपया, ग्यारह-ग्यारह, बारह-बारह। *(इतिहाफ़)*

इसके बिल मुक़ाबिल जिन लोगों ने मरने की तैयारियां कर रखी थीं, वे दुनिया में मौत को याद रखते थे, उसके लिए कुछ कारनामे कर रखे थे, उनके लिए मौत ऐसी ही थी जिसको हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मोमिन का तोहफ़ा बताया है।

हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु की जब वफ़ात का वक़्त क़रीब था, उनकी बीवी कह रही थीं, कि "वा हुज़्ना-ह", हाय अफ़सोस तुम जा रहे हो और वह कह रहे थे, "वा त-रबाहु ग़दन् नल्क़ल् अहिब्ब-त मुहम्मदन् व हिज़् ब-हू", कैसे मज़े की बात है, कैसे लुत्फ़ की बात है, कल को दोस्तों से मिलेंगे, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिलेंगे, उनके साथियों से मिलेंगे।

हज़रत मआज़ रज़ि० के जब इंतिक़ाल का वक़्त क़रीब था, तो फ़रमाया, या अल्लाह, तुझे मालूम है कि मैं दुनिया में ज़्यादा दिन रहना चाहता था, मगर न इस वजह से कि मुझे दुनिया से मुहब्बत थी, न इस वजह से कि यहां नहरें और बाग़ लगाऊँ, बल्कि इस वजह से चाहता था कि गर्मियों की दोपहर से रोज़े की प्यास का लुत्फ़ उठाऊँ और (दीन के लिए) मशक़्क़त में औक़ात गुज़ारूँ और तेरे ज़िक्र के हलक़ों में शरीक हुआ करूँ।

हज़रत सलमान रज़ि० का जब इंतिक़ाल होने लगा तो वह रोने लगे, किसी ने कहा कि रोने की क्या बात है, तुम जाकर हुज़ूर सल्ल० से मिलोगे, हुज़ूर

सल्ल॰ का विसाल इस हाल में हुआ कि तुम से राज़ी थे, फ़रमाने लगे कि मैं न मौत के डर से रो रहा हूँ, न दुनिया के छूटने से, बल्कि मैं इस वजह से रो रहा हूँ कि हुज़ूर सल्ल॰ ने हमसे एक अह्द लिया था कि दुनिया से इन्तिफ़ाअ् हमारा सिर्फ़ इतना हो कि जितना मुसाफ़िर का तोशे में, इस अह्द को पूरा न कर सका। लेकिन जब विसाल पर उनके घर का सामान देखा गया तो वह दस दिरम से कुछ ज़ायद था और एक दिरम 22 पैसे का होता है। यह थी कुल कायनात जिसकी ज़्यादती पर रो रहे थे।

इसके बाद उन्होंने थोड़ा सा मुश्क मंगवाया और बीवी से फ़रमाया कि इसको भिगो कर मेरे बिस्तरे पर छिड़क दो, मेरे पास ऐसी जमाअत आ रही है जो न इंसान है न जिन्न। *(इत्तिहाफ़)*

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह॰ की जब वफ़ात का वक़्त हुआ तो हंसे और फ़रमाया :-

لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ

"लिमिस्लि हाज़ा फ़ल् यअ्-म लिल् आमिलून॰"

इसी जैसी चीज़ों के वास्ते लोगों को काम करना चाहिए। (वहां की कुछ लज़्ज़तें, फ़रहतें सामने आयी होंगी), नीज़ (तथा) जब उनकी वफ़ात का वक़्त क़रीब था तो उन्होंने अपने ग़ुलाम से, जिनका नाम नस्र था, फ़रमाया कि मेरा सर ज़मीन पर रख दो, वह रोने लगे। उन्होंने पूछा कि रोने की क्या बात है? नस्र ने कहा कि आप ऐसी राहतों में ज़िन्दगी गुज़ारते थे, अब इस तरह फ़क़ीरों की तरह ज़मीन पर सर रख कर मर रहे हैं। फ़रमाने लगे कि चुप रह, मैं ने हक़ तआला शानुहू से दुआ की थी कि मेरी ज़िन्दगी मालदारों की सी हो और मौत फ़क़ीरों की।

अता बिन यसार रह॰ कहते हैं कि एक शख़्स के इंतिक़ाल का वक़्त क़रीब था शैतान उनके पास आया और कहने लगा तू मुझसे छूट ही गया। (मेरे बस में न आया) वह फ़रमाने लगे मुझे तुझ से अब तक भी इत्मीनान नहीं है।

जरीरी रह॰ कहते हैं कि मैं हज़रत जुनैद रह॰ के पास उनके इंतिक़ाल के वक़्त मौजूद था, वह क़ुरआन शरीफ़ पढ़ रहे थे। किसी ने अर्ज़ किया कि यह वक़्त (ज़ोअफ़ का है) यह तिलावत का क्या वक़्त है, फ़रमाने लगे कि इस से ज़्यादा अच्छा वक़्त तिलावत का कौन सा होगा, मेरा आमाल नामा इस वक़्त बंद

हो रहा है।

हज़रत जुनैद रह० से किसी ने पूछा कि हज़रत अबू सईद ख़ज़्ज़ार रह० इंतिक़ाल के वक़्त बहुत ही मज़े पर आ रहे थे, क्या बात थी? फ़रमाने लगे कि अगर उस वक़्त उनकी रूह इश्तियाक़ में उड़ जाती तब भी बईद न था। हज़रत ज़ुन्नून मिस्री रह० से किसी ने इंतिक़ाल के क़रीब पूछा कि कुछ फ़रमाना है, कोई ख़्वाहिश हो तो बता दें, फ़रमाया सिर्फ़ यह ख़्वाहिश है कि मरने से पहले उसकी मअ्रिफ़त हासिल हो जाये।

एक शख़्स कहते हैं कि मैं हज़रत मुम्शाद दैनूरी रह० के पास बैठा था, एक फ़क़ीर आया और कहने लगा, यहां कोई पाक साफ़ जगह ऐसी है जहां कोई मर जाये? उन्होंने एक जगह इशारा किया, जहां पानी का चश्मा भी था, वह उसके क़रीब गया, वुज़ू की और नमाज़ पढ़ी, उसके बाद पांव फैला कर लेट गया और मर गया।

अबू अली रह० रूदबारी की हम्शीरा फ़ातिमा रह० कहती हैं कि जब मेरे भाई का इंतिक़ाल होने लगा तो उनका सर मेरी गोद में था, उन्होंने आंख खोली और फ़रमाने लगे कि आसमान के दरवाज़े खुल गये और जन्नत मुज़य्यन कर दी गयी और कोई कहने वाला कह रहा था कि अबू अली अगरचे तुम इतने ऊँचे दर्जे की ख़्वाहिश नहीं कर रहे थे, मगर हमने तुम्हें ऊँचे दर्जे पर पहुँचा दिया, फिर उन्होंने दो शेर पढ़े जिनका तर्जुमा यह है :-

"तेरे हक़ की क़सम, मैं ने कभी तेरे सिवा किसी की तरफ़ (मुहब्बत की निगाह से) आंख उठा कर भी नहीं देखा, मैं देख रहा हूँ कि तू मुझे अपनी बीमार आंखों से बेचैन कर रहा है और इन रूख़्सारों से जो हया की वजह से सुर्ख़ हो गये।

हज़रत जुनैद रह० के इंतिक़ाल के वक़्त किसी ने ला इला-ह इल्लल्लाह कहा तो फ़रमाने लगे कि मैं इस लफ़्ज़ को कभी भूला ही नहीं जो अब याद करूँ।

हज़रत शिब्ली रह० के ख़ादिम बकरान दैनूरी रह० से जाफ़र बिन नसीर रह० ने पूछा कि तुम ने हज़रत शिब्ली रह० के इंतिक़ाल के वक़्त क्या मंज़र देखा? उन्होंने कहा कि वह फ़रमाते थे कि मुझ से एक दिरम (22 पैसे) का ज़ुल्म एक शख़्स पर हो गया था, मैं उसकी तरफ़ से कई हज़ार दिरम सदक़ा कर

चुका हूँ, मगर मेरे दिल पर अब तक उस दिरम का बोझ है कि क्यों रह गया, उसके बाद फ़रमाया कि मुझे वुज़ू करा दो मैं ने वुज़ू कराई और दाढ़ी में ख़िलाल करना भूल गया, वह ख़ुद ज़ोअफ़ की वजह से न कर सकते थे, ज़बान बंद हो चुकी थी, मेरा हाथ पकड़ कर अपनी दाढ़ी के अंदर कर दिया और इंतिक़ाल हो गया। यह सुनकर जाफ़र रह॰ रोने लगे कि जिस शख़्स का ऐसी हालत में भी शरीअत का अदब और एक मुस्तहब न छूटे, उसका क्या कहना।

एक बुज़ुर्ग का इंतिक़ाल होने लगा, उनकी बीवी रोने लगीं, वह फ़रमाने लगे क्यों रोती है, वह कहने लगीं कि तुम्हारी जुदाई से रो रही हूँ, वह फ़रमाने लगे कि अपने लिए रो, मैं तो आज के दिन के लिए (यानी उसके इश्तियाक़ और इंतिज़ार में) बयालीस बरस से रो रहा हूँ।

हज़रत कतानी रह॰ से किसी ने इंतिक़ाल के वक़्त पूछा कि आपके मामूलात क्या हैं? फ़रमाने लगे कि अगर मेरे इंतिक़ाल का वक़्त क़रीब न होता तो मैं न बताता, मैं चालीस बरस से अपने दिल के दरवाज़े की हिफ़ाज़त कर रहा हूँ, जब उसमें ग़ैर अल्लाह घुसने का इरादा करता है तो मैं दरवाज़ा बंद कर लेता हूँ।

हज़रत मोअतमर रह॰ कहते हैं कि मैं हकम (एक रईस) के इंतिक़ाल के वक़्त उनके पास था और दुआ कर रहा था कि हक़ तआला शानुहू इस पर मौत की सख़्ती को आसान कर दे, कि इस शख़्स में फ़लां फ़लां ख़ूबियां थीं। मैं उसकी अच्छी आदतें गिन गिन कर दुआ कर रहा था। हकम को ग़फ़लत हो रही थी, जब उनको अपनी ग़फ़लत से होश आया तो कहने लगे कि फ़लां फ़लां बात कौन शख़्स कर रहा था, मोअतमर रह॰ फ़रमाने लगे कि मैं कह रहा था, हकम ने कहा कि मलकुल मौत अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मैं हर सख़ी शख़्स के साथ नर्मी का बर्ताव करता हूँ, यह कह कर हकम की रूह परवाज़ कर गयी।

हज़रत मुम्शाद दैनूरी रह॰ के इंतिक़ाल के वक़्त एक बुज़ुर्ग उनके पास बैठे थे, वह उनके लिए जन्नत के मिलने की दुआ करने लगे, हज़रत मुम्शाद रह॰ हंसे और फ़रमाया कि तीस बरस से जन्नत अपनी सारी ज़ीनतों समेत मेरे सामने आती रही, मैं ने एक मर्तबा भी उसको निगाह भर कर नहीं देखा (मैं तो जन्नत के मालिक का मुश्ताक़ हूँ)।

जब हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह॰ की वफ़ात का वक़्त क़रीब

था तो एक तबीब ख़िदमत में हाज़िर थे, वह कहने लगे कि अमीरूल मोमिनीन को ज़हर दिया गया है, इसलिए मुझे इनकी ज़िन्दगी का इत्मीनान नहीं है। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० ने फ़रमाया कि तुम को उस शख़्स की ज़िन्दगी का भी एतिबार न चाहिए जिसको ज़हर न दिया गया हो। तबीब ने पूछा कि क्या आपको ख़ुद भी अंदाज़ा हो गया था कि मुझको ज़हर दिया गया, हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० ने फ़रमाया कि मुझे उसी वक़्त इल्म हो गया था जब यह ज़हर मेरे पेट में गया। तबीब ने कहा, आप इसका इलाज कर लीजिए वर्ना आपकी जान चली जायेगी, फ़रमाने लगे (जिसके पास जायेगी यानी मेरा रब) वह इन सब में बेहतरीन है, जिनके पास कोई जाये। ख़ुदा की क़सम! अगर मुझे यह मालूम हो कि मेरे कान के पास कोई चीज़ ऐसी रखी है जिसमें मेरी शिफ़ा है तो मैं वहां तक भी हाथ न बढाऊँ। फिर फ़रमाया, या अल्लाह! उमर को अपने से मिलने के लिए पसंद कर ले। इसके चंद ही रोज़ बाद इंतिक़ाल हो गया।

मैमून बिन मेहरान रह० कहते हैं कि हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० उस ज़माने में कसरत से मौत की दुआ किया करते थे, किसी ने अर्ज़ किया ऐसा न कीजिए, हक़ तआला शानुहू ने आपकी वजह से बहुत सी सुन्नतें (हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की) ज़िंदा कर रखी हैं, बहुत सी बिदअतें (जो शुरू हो गई थीं) दबा रखी हैं फ़रमाने लगे, क्या मैं सालेह बन्दा (हज़रत यूसुफ़ अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलाम की तरह) न बनूँ, जिन्होंने यह दुआ की थी :-

تَوَفَّنِیْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِیْ بِالصّٰلِحِیْنَ ٥(یوسف ع ۱۱)

"त-वफ़्फ़ नी मुस्लिमंव् व अल्हिक़्नी बिस्सालिहीन०"

(सूर: यूसुफ़, रूकूअ 11)

"ऐ अल्लाह, मुझे इस्लाम की हालत में मौत अता फ़रमा दे और सालिहीन के साथ मिला दे।

इंतिक़ाल के क़रीब मुस्लिमा रह० ने कहा कि आपने जो कफ़न के लिए दाम दिये हैं, उनका बहुत मामूली कपड़ा आया है, इस पर कुछ इज़ाफ़े की इजाज़त फ़रमा दें, इर्शाद फ़रमाया कि वह मेरे पास लाओ, थोड़ी देर उस कपड़े को देखा फिर फ़रमाया कि अगर मेरा रब मुझसे राज़ी है तब तो इससे बेहतर कफ़न मुझे फ़ौरन मिल जाएगा और अगर मेरा रब मुझसे नाराज़ है तो जो कफ़न

भी होगा, वह ज़ोर से हटा दिया जायेगा और उसके बदले में जहन्नम की आग का कफ़न होगा।

इसके बाद फ़रमाया, मुझे बिठाओ, बैठकर फ़रमाया, या अल्लाह तूने मुझे (जिन चीज़ों के करने का) हुक्म दिया, मुझसे तामील न हो सकी, तूने (जिन चीज़ों को) मना फ़रमाया, मुझसे उनमें नाफ़रमानी हुई, लेकिन "ला इला ह इल्लल्लाह" इसके बाद इंतिक़ाल फ़रमाया। इस दौरान में यह भी फ़रमाया कि मैं एक जमाअत को देख रहा हूँ, न तो वह आदमी हैं न जिन्न हैं।

एक रिवायत में है कि इंतिक़ाल के क़रीब सबको अपने पास से हटा दिया और फ़रमाया, यहां कोई न रहे। सब बाहर चले गये और दरवाज़े में से देखने लगे तो फ़रमा रहे थे, बहुत मुबारक है ऐसे लोगों की आमद, जो न इंसान हैं न जिन्न। इसके बाद सूरः क़सस के आख़िरी रूकूअ् की यह आयते शरीफ़ा पढ़ी :-

"तिल्कद्दारूल् आख़िर-तु", जिसमें हक़ तआला शानुहू फ़रमाते हैं कि यह आख़िरत का घर हम उन लोगों के लिए करते हैं जो न तो दुनिया में बड़ाई चाहते हैं न फ़साद। *(इत्तिहाफ़)*

एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैं ने हक़ तआला शानुहू से दुआ की कि मुझे क़ब्रस्तान वालों का हाल दिखा दे। मैं ने एक रात को देखा गोया क़ियामत क़ायम हो गयी और लोग अपनी क़ब्रों से निकलने लगे, उनको मैं ने देखा कि कोई तो सुन्दुस पर (जो एक ख़ास आला क़िस्म का रेशम है) सो रहा है, कोई रेशम पर है, कोई ऊँचे ऊँचे तख़्त पर है, कोई फूलों पर है, कोई हंस रहा है, कोई रो रहा है। मैं ने कहा, या अल्लाह अगर ये सब एक ही हाल में होते तो कैसा अच्छा था। एक शख़्स ने उन मुर्दों में से कहा कि ये आमाल के तफ़ावुत (फ़र्क़) की वजह से है। सुन्दुस वाले तो अच्छी आदतों वाले हैं और रेशम वाले शुहदा हैं और फूलों वाले कसरत से रोज़ा रखने वाले हैं और हंसने वाले तौबा करने वाले हैं और रोने वाले गुनाहगार हैं और आला मरातिब वाले (यह ग़ालिबन ऊँचे तख़्त वाले हैं) वे लोग हैं जो अल्लाह तआला शानुहू की वजह से आपस में मुहब्बत रखते थे। *(रौज़)*

एक कफ़न चोर था वह क़ब्रें खोद कर कफ़न चुराया करता था। उसने एक क़ब्र खोदी तो उसमें एक शख़्स ऊँचे तख़्त पर बैठे हुए देखे, क़ुरआन पाक

उनके सामने रखा हुआ था, वह कुरआन शरीफ़ पढ़ रहे थे और उनके तख़्त के नीचे एक नहर चल रही है। उस शख़्स पर ऐसी दहशत तारी हुई कि बेहोश होकर गिर पड़ा। लोगों ने उसको क़ब्र से निकाला तीन दिन बाद होश आया। लोगों ने क़िस्सा पूछा उसने सारा हाल सुनाया। बाज़ लोगों ने उस क़ब्र को देखने की तमन्ना की, उससे पूछा कि क़ब्र बता दे, उसने इरादा भी किया कि उनको ले जाकर क़ब्र दिखाऊं, रात को ख़्वाब में उन क़ब्र वाले बुज़ुर्ग को देखा, कह रहे हैं, अगर तूने मेरी क़ब्र बताई तो ऐसी आफ़तों में फंस जायेगा कि याद करेगा। उसने अह्द किया कि नहीं बताऊँगा। *(रौज़)*

शैख़ अबू याक़ूब सनूसी रह० कहते हैं कि मेरे पास एक मुरीद आया और कहने लगा कि मैं कल ज़ुहर के वक़्त मर जाऊँगा, चुनांचे दूसरे दिन ज़ुहर के वक़्त मस्जिदे हराम में आया, तवाफ़ किया और थोड़ी दूर जाकर मर गया। मैं ने उसको ग़ुस्ल दिया और दफ़्न किया। जब मैं ने उस को क़ब्र में रखा तो उसने आंखें खोल दीं, मैं ने कहा कि मरने के बाद भी ज़िन्दगी है, कहने लगा कि मैं ज़िन्दा हूँ और अल्लाह का आशिक़ ज़िन्दा ही रहता है। *(रौज़)*

एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैं ने एक मुरीद को ग़ुस्ल दिया उसने मेरा अंगूठा पकड़ लिया, मैं ने कहा कि मेरा अंगूठा छोड़ दे, मुझे मालूम है कि तू मरा नहीं है, यह एक मकान से दूसरे मकान में इंतिक़ाल है। उसने मेरा अंगूठा छोड़ दिया।

शैख़ इब्नुल जला रह० मशहूर बुज़ुर्ग हैं, वह फ़रमाते हैं कि जब मेरे वालिद का इंतिक़ाल हुआ और उनको नहलाने के लिए तख़्ते पर रखा तो वह हंसने लगे, नहलाने वाले छोड़ कर चल दिये, किसी की हिम्मत उनको नहलाने की न पड़ती थी। एक और बुज़ुर्ग उनके रफ़ीक़ आये, उन्होंने ग़ुस्ल दिया। *(रौज़)*

ग़रज़ साहिबे रौज़ ने बहुत से वाक़िआत इन मर मिटों के मरने के ऐसे लिखे हैं जिनसे इनका मरने के वक़्त और मरने के बाद निहायत बश्शाश होना, हंसना, मज़ाक़ करना, लुत्फ़ उड़ाना मालूम होता है। मरने के बाद कलाम करने के बाज़ वाक़िआत हाफ़िज़ इब्ने अब्दुल बर्र रह० ने इस्तीआब में भी ज़िक्र किये हैं। हज़रत ज़ैद बिन ख़ारिजः रज़ि० के तर्जुमे में लिखते हैं कि इसमें इख़्तिलाफ़ नहीं है कि उन्होंने मरने के बाद कलाम किया और इसी तरह बाज़ दूसरे सहाबा-ए-किराम रज़ि० से भी नक़ल किया है।

ग़ज़्वा-ए-मौता में जब सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ जाने लगे तो लोगों ने उन जाने वालों को ख़ैर व सलामती के साथ वापसी की दुआयें देनी शुरू कीं, इस पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि॰ ने उस वक़्त तीन शेर पढ़े, जिनका मतलब यह है कि :-

"मैं तो वापसी के बजाए यह तमन्ना करता हूं कि हक़ तआला शानुहू मेरी मग़्फ़िरत कर दे और इसके साथ ही एक तलवार सर पर ऐसी लगे जो सर के दो टुकड़े कर दे या कोई बरछा ऐसा मुझमें घुसे, जो अंतड़ियां और जिगर चीरता चला जाये।

जब मैदाने जंग पर ये हज़रात पहुँचे तो इन हज़रात की जमाअत तीन हज़ार की थी और वहां पहुँच कर मालूम हुआ कि दुश्मनों की जमाअत दो लाख है, इस बिना पर सहाबा रज़ि॰ में यह मश्वरा हुआ कि अव्वल हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस हालत की इत्तिला दी जाये, उसके बाद भी अगर हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद हो तो लड़ाई शुरू की जाये।

जब अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि॰ को मालूम हुआ कि यह मश्वरा हो रहा है तो वह आये और कहने लगे, तुम लोग भी अजीब हो, जिस चीज़ की तमन्ना में निकले थे, उसके बारे में मश्वरा कर रहे हो, तुम तो महज़ शहादत की तलब में निकले हो, हम ने कभी भी सामान और क़ुव्वत और तायदाद के भरोसे पर जंग नहीं की, हमने हमेशा सिर्फ़ मज़हबे इस्लाम की क़ुव्वत पर जंग की है, उठो और मैदान में चलो, दो हाल से ख़ाली नहीं, या ग़लबा और फ़त्ह या शहादत और हमारे लिए दोनों चीज़ें एज़ाज़ ही हैं।

उनकी यह बात सुनकर सब के सब जंग के लिए तैयार हो गये और जंग शुरू हो गयी। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रवानगी के वक़्त हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ि॰ को अमीर मुक़र्रर फ़रमाया था और इर्शाद फ़रमा दिया था कि अगर यह शहीद हो जायें तो हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब रज़ि॰ अमीर होंगे, वह भी शहीद हो जायें तो अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि॰ अमीर होंगे और अगर वह भी शहीद हो जायें तो उस वक़्त मुसलमान मश्वरे से जिसको चाहें अमीर बना लें।

चुनांचे मैदान में जब हज़रत ज़ैद रज़ि॰ और उनके बाद हज़रत जाफ़र रज़ि॰ शहीद हो गये तो लोगों ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि॰ को आवाज़

दी, यह लश्कर के किनारे पर थे, गोश्त का एक टुकड़ा उनके हाथ में था, तीन दिन से कुछ भी चखने की नौबत न आयी थी। किसी ने आकर कहा कि हज़रत जाफ़र रज़ि॰ शहीद हो गये, हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि॰ ने अपने नफ़्स को मलामत की, कि तू दुनिया ही में मश्गूल हो रहा है, (खाने में लग गया) यह कह कर उस टुकड़े को फेंक कर झंडा हाथ में लेकर आगे बढ़े, किसी ने वार किया तो हाथ की उंगली कट गयी, इस पर उन्होंने तीन शेर पढ़े जिनका मतलब यह है :-

"तू महज़ उंगली थी जो ख़ून आलूद हो गयी, इसके सिवा और क्या हुआ, और अल्लाह ही के रास्ते में हुआ जो खुद बहुत ऊँची दौलत है, ऐ नफ़्स! इस बात को समझ ले कि अगर तू शहीद न होगा तो वैसे मरेगा, मरना तो बहरहाल है ही, देख जिस चीज़ की तमन्ना तू कर रहा था यानी शहादत की, वह सामने आ गयी। अगर तू अपने पहले दो साथी ज़ैद रज़ि॰ व जाफ़र रज़ि॰ का सा कारनामा करेगा तो हिदायत याफ़्ता होगा और अगर तूने अपना क़दम पीछे हटाया तो बदबख़्त होगा।

इसके बाद अपने दिल से कहा कि तुझे इस वक़्त क्या ख़्याल हो सकता है? अगर बीवी का ख़्याल आ सकता है तो उसको तीन तलाक़, अगर गुलामों का ख़्याल आ सकता है तो वे सब आज़ाद, अगर अपना बाग़ याद आ सकता है तो वह अल्लाह के लिए सदक़ा है। ऐ नफ़्स! क्या तू जन्नत को पसंद नहीं करता, ख़ुदा की क़सम, तू उसकी तरफ़ चल कर रहेगा, ख़ुशी से चले या ज़बर्दस्ती। तूने बहुत ज़माना इत्मीनान का गुज़ार लिया है, अब क्या सोचता है, अपनी हक़ीक़त को तो सोच, तू नुत्फ़े का एक क़तरा था। ग़रज़ इस सोच के बाद हज़रत इब्ने रवाहा रज़ि॰ बढ़े और शहीद हो गये। हिकायाते सहाबा रज़ि॰ में यह क़िस्सा तफ़्सील से गुज़र चुका है और इस नौअ् (क़िस्म) के और भी क़िस्से गुज़रे हैं।

हज़रत अबू सुफ़ियान बिन हारिस रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ के चचाज़ाद भाई का इंतिक़ाल होने लगा तो घर वालों ने रोना शुरू किया तो फ़रमाने लगे, ऐसे शख़्स को मत रोओ जिसने इस्लाम लाने के बाद न ज़बान से कभी ख़ता का लफ़्ज़ निकाला, न बदन से कभी कोई ख़ता की हरकत की (यानी ऐसे शख़्स की मौत तो उसके लिए मसर्रत ही मसर्रत है।)

सनाबही रह॰ कहते हैं कि जब हज़रत उबादा रज़ि॰ का विसाल होने

लगा तो मैं पास था, मुझे रोना आ गया, फ़रमाने लगे तू क्यों रोता है, ख़ुदा की क़सम, अगर क़ियामत में मुझसे गवाही तलब की गयी तो मैं तेरे लिए बेहतर गवाही दूँगा और मुझे सिफ़ारिश की इजाज़त मिली तो तेरे लिये सिफ़ारिश करूँगा, और जहां तक मुझे क़ुदरत होगी तुझे नफ़ा पहुँचाऊंगा। इसके बाद फ़रमाया कि मैं ने जितनी हदीसें हुज़ूर सल्ल॰ से सुनी थीं और तुम्हारे नफ़े की थीं, वे सब तुम्हें पहुँचा चुका हूँ, एक हदीस के अलावा जो इस वक़्त सुनाता हूँ जबकि मैं इस जहान से जा रहा हूँ –

मैं ने हुज़ूर सल्ल॰ से सुना, जो शख़्स ला इला-ह इल्लल्लाह् मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह की गवाही दे, उस पर जहन्नम की आग हराम है।

हज़रत अबू बक्र रज़ि॰ का जब इंतिक़ाल होने लगा तो उनकी साहबज़ादी रोने लगीं, फ़रमाया बेटी रो नहीं, बेटी ने कहा अगर आपके इंतिक़ाल पर भी रोना न आये तो किसके इंतिक़ाल पर आयेगा। फ़रमाया कि इस वक़्त मुझे अपनी जान के निकलने से ज़्यादा महबूब किसी की जान निकलना भी नहीं है, हत्ताकि इस मक्खी की जान निकलना भी अपनी जान निकलने से ज़्यादा महबूब नहीं, (तो जब मौत मुझे इतनी महबूब हो रही है इस पर तू रोती है) इसके बाद हुमरान से कहा अलबत्ता इसका डर ज़रूर है कि कहीं मरते वक़्त इस्लाम न मेरे हाथ से छूट जाये।

हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि॰ का जब इंतिक़ाल होने लगा तो फ़रमाया कि मेरा ऊनी जुब्बा लाओ, वह लाया गया, जो बहुत पुराना बोसीदा था, फ़रमाया मुझे इस में कफ़न दे देना, बद्र की लड़ाई में यही जुब्बा मेरे ऊपर था।

अब्दुल्लाह बिन आमिर बिन कुरैज़ रज़ि॰ का जब इंतिक़ाल होने लगा, नज़अ् की हालत थी; हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि॰ हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि॰ उनके पास गये हुए थे। अपने आदमियों से कहा कि देखो, मेरे ये दोनों भाई रोज़े से हैं, ऐसा न हो कि इनके खाने में मेरी मौत की वजह से देर लगे और रोज़ा इफ़्तार करने में ताख़ीर हो जाये। अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि॰ फ़रमाने लगे, अगर तुझे इकराम और सख़ावत से कोई चीज़ रोक सकती थी तो नज़अ् की तक्लीफ़ रोक सकती थी, मगर यह भी तेरे लिए मानेअ् न हुई। इस हाल में इनका इंतिक़ाल हुआ कि मेहमानों के सामने खाना रखा था।

अम्र बिन औस रज़ि॰ कहते हैं कि जब उत्बा बिन अबी सुफ़ियान रज़ि॰

का इंतिक़ाल हो रहा था, मैं उनके पास गया, वह नज़अ् की हालत में थे, फ़रमाने लगे कि मैं तुम्हें चलते चलते एक हदीस सुनाता जाऊँ जो मुझे मेरी बहन उम्मे हबीबा रज़ि॰ ने सुनाई थी -

हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि जो शख़्स अल्लाह के वास्ते (यानी इख़्लास से) बारह रक्अत चाश्त की नमाज़ रोज़ाना पढ़ता रहे, हक़ तआला शानुहू उसके लिए जन्नत में एक महल बनाते हैं (यह हुज़ूर सल्ल॰ की अहादीस और दीन की इशाअत का जज़्बा था कि मौत भी मानेअ् (रोक) न हुई।)

मुहम्मद बिन मुन्कदिर रह॰ का जब इंतिक़ाल होने लगा तो वह रोने लगे, किसी ने पूछा कि रोने की क्या बात है, फ़रमाया कि मैं इस पर नहीं रोता कि मुझसे कभी कोई गुनाह हुआ हो, मेरे इल्म के मुवाफ़िक़ तो मैं ने उम्र भर में कोई गुनाह किया ही नहीं, अलबत्ता इस पर रो रहा हूँ कि कोई बात मुझ से ऐसी सरज़द हो गयी हो जिसको मैं अपने ख़्याल में सरसरी समझा हूँ और अल्लाह के नज़दीक बड़ी बात हो। इसके बाद क़ुरआन पाक की आयतः-

وَبَدَا لَهُم مِّنَ اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُونُوا يَحْتَسِبُونَ ٥(زمر ع ٥)

'व बदा ल-हुम् मिनल्लाहि मालम् यकूनू यह्त-सिबून॰' (ज़ुमर, रूकूअ 5) पढ़ी, जिसका तर्जुमा यह है कि :-

"उनके लिए अल्लाह तआला शानुहू की तरफ़ से ऐसी बात ज़ाहिर हुई जिसका उनको गुमान भी न था। यह पढ़कर फ़रमाया कि मुझे बस इसका डर है कि कोई बात ऐसी हो जाये जिसका गुमान भी न हो।

आमिर बिन अब्दे क़ैस रह॰ का जब इंतिक़ाल होने लगा तो वह रोने लगे, किसी ने कहा कि आपने तो ऐसे मुजाहदे किये हैं, आप भी रोते हैं, फ़रमाने लगे, कि मैं न तो मौत के ख़ौफ़ से रो रहा हूँ, न दुनिया के लालच से, मुझे इसका रंज है कि आज गर्मियों की दोपहर का रोज़ा और सर्दियों की आख़िर रात का तहज्जुद छूट रहा है।

हज़रत हसन रज़ि॰ का जब इंतिक़ाल होने लगा तो कुछ लोग उन की ख़िदमत में हाज़िर थे, उन्होंने अर्ज़ किया कोई आख़िरी नसीहत फ़रमा दीजिए। इर्शाद फ़रमाया कि तीन बातें तुम से कहता हूँ कि उनको सुनकर मेरे पास से चले जाना और मैं जहां जा रहा हूँ, मुझे तंहाई में वहां जाने दीजिए। इसके बाद फ़रमाया:-

1. जिस काम का दूसरे को हुक्म करो, पहले ख़ुद उस पर अमल शुरू कर दो।

2. जिस बात से दूसरों को मना करो, पहले उससे ख़ुद रूक जाओ।

3. तुम्हारा हर क़दम या तुम्हारे लिए नाफ़े है (कि जन्नत की तरफ़ पड़ता है) या मुज़िर है (कि जहन्नम की तरफ़ चलता है) इसलिए हर क़दम को उठाते वक़्त यह सोच लो कि किधर जा रहा है।

हज़रत रबीअ् रज़ि॰ का जब इंतिक़ाल हो रहा था तो उनकी बेटी रोने लगीं, फ़रमाया कि बेटी रोने की बात नहीं है, यों कहो कि आज का दिन किस क़दर ख़ुशी का है कि मेरे बाप को आज बहुत कुछ मिला।

हज़रत मकहूल शामी रह॰ का जब इंतिक़ाल होने लगा तो वह हंस रहे थे, किसी ने पूछा कि यह हंसी का वक़्त है? फ़रमाने लगे क्यों न हंसू, जबकि वह वक़्त आ गया कि जिनसे मैं घबराता था, उनसे हमेशा को जुदा होता हूँ और जिस ज़ात से उम्मीद वाबस्ता थी उसके पास जल्दी जल्दी जा रहा हूँ।

हज़रत हस्सान बिन सिनान रज़ि॰ की जब नज़अ् की हालत थी तो किसी ने कहा कि आपको बहुत तक्लीफ़ हो रही है, फ़रमाने लगे, तक्लीफ़ तो ज़रूर है मगर मोमिन की तक्लीफ़ का ऐसे वक़्त क्या ज़िक्र है जब उस को हक़ तआला शानुहू से मिलने की उम्मीद हो रही हो और उस पर उस की ख़ुशी ग़ालिब हो रही हो।

जब इब्ने इदरीस रह॰ के इंतिक़ाल का वक़्त आया तो उनकी बेटी रोने लगीं, फ़रमाया, रोने की बात नहीं है, मैं ने इस घर में चार हज़ार क़ुरआन पाक ख़त्म किये हैं।

हसन बिन हई रह॰ कहते हैं कि मेरे भाई अली रह॰ का जिस रात में इंतिक़ाल हुआ, उन्होंने मुझे आवाज़ देकर पानी मांगा, मेरी नमाज़ की नीयत बंध ही थी, मैं सलाम फेर कर पानी लेकर गया, वह फ़रमाने लगे कि मैं तो पी चुका। मैं ने कहा, आपने कहां से पी लिया? घर में तो मेरे और आपके सिवा कोई और है नहीं? कहने लगे कि हज़रत जिबरील अलैहि॰ अभी पानी लाये थे, वह मुझे पानी पिला गये और यह फ़रमा गये कि तू और तेरा भाई उन लोगों में हैं जिन पर अल्लाह तआला शानुहू ने इन्आम फ़रमा रखा है (यह क़ुरआन पाक की एक आयते शरीफ़ा की तरफ़ इशारा है, जो सूरः निसा के नवें रूकूअ् में है

"व मंय्युति अिल्ला-ह वर्रसू-ल" (अल्आयत) जिसका तर्जुमा यह है कि जो लोग अल्लाह तआला शानुहू और उसके रसूल की इताअत करते हैं, यही लोग हैं जिन पर अल्लाह तआला शानुहू ने इन्आम फ़रमा रखा है, सिद्दीक़ीन शुहदा और सालिहीन से)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मूसा रह० कहते हैं कि जब हज़रत अली बिन सालेह रह० का इंतिक़ाल हुआ, मैं सफ़र में गया हुआ था, जब मैं सफ़र से वापस आया तो उनके भाई हसन सालेह रह० के पास ताज़ियत के लिये गया, मुझे वहां जाकर रोना आ गया, वह कहने लगे कि रोने से पहले उनके इंतिक़ाल की कैफ़ियत सुनो, कैसे लुत्फ़ की है:-

जब उन पर नज़्अ् की तक्लीफ़ शुरू हुई तो मुझ से पानी मांगा, मैं पानी लेकर गया, कहने लगे, मैं ने तो पी लिया। मैं ने पूछा, किसने पिलाया, कहने लगे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रिश्तों की बहुत सी सफ़ों के साथ तशरीफ़ लाये और मुझे पानी पिला दिया। मुझे ख़्याल हुआ कि कहीं ग़फ़लत में न कह रहे हों, इसलिए मैं ने पूछा कि फ़रिश्तों की सफ़ें किस तरह की थीं, कहने लगे, ऊपर नीचे इस तरह थीं, एक हाथ को दूसरे के ऊपर करके बताया।

जब अबू बक्र बिन अयाश रह० का इंतिक़ाल होने लगा तो उनकी हमशीरा (बहन) रोने लगीं, कहने लगे बहन रोने की बात नहीं, तेरे भाई ने मकान के इस कोने में बारह हज़ार क़ुरआन पाक ख़त्म किये हैं। अम्र बिन उबैद कहते हैं कि अबू शुऐब सालेह बिन ज़ियाद रज़ि० बीमार थे, मैं उनकी अयादत (मिज़ाज पुरसी) को गया तो उनकी नज़्अ् की हालत थी, मुझसे कहने लगे कि मैं तुझे ख़ुशख़बरी सुनाऊं। मैं इस जगह एक अजनबी से आदमी को जो ओपरी सी सूरत है, देख रहा हूँ। मैं ने उनसे पूछा कि तुम कौन हो? वह कहने लगे कि मैं मलकुल मौत हूँ, मैं ने कहा, मेरे साथ नरमी का बर्ताव करना, वह कहने लगे, मुझे यही हुक्म मिला है, कि नरमी करूँ।

हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह० के साहब ज़ादे फ़रमाते हैं कि मेरे वालिद का जब इंतिक़ाल होने लगा तो मैं उनके पास बैठा था, कपड़ा मेरे हाथ में था, ताकि इंतिक़ाल के बाद जबड़ा बांध दूँ। उनको ग़शी हो जाती थी, जिस से यह ख़्याल होता था कि इंतिक़ाल हो गया, फिर इफ़ाक़ा हो जाता था और उस वक़्त वह कहते कि अभी नहीं, अभी नहीं, जब तीसरी मर्तबा यही सूरत पेश आयी तो मैंने उनसे दर्याफ़्त किया कि आप यह क्या फ़रमाते हैं? कहने लगे, बेटा

तुम्हें ख़बर नहीं, शैतान मल्ऊन मेरे पास खड़ा है और रंज व गुस्से से अपनी उंगली मुंह में दबा रहा है और कहता है कि अहमद तू मेरे हाथ से निकल गया, जब वह कहता है तो मैं उससे कहता हूँ अभी नहीं छूटा, (इतने जान न निकल जाये, इतने तुझसे इत्मीनान नहीं है)

हज़रत आदम बिन अबी अयास रह० का जब आख़िरी वक़्त था तो वह चादर में लिपटे पड़े थे और क़ुरआन शरीफ़ पढ़ रहे थे, जब क़ुरआन पाक ख़त्म किया तो कहने लगे कि मुझे जो आपसे मुहब्बत है, उसका वास्ता देकर अर्ज़ है कि मेरे साथ नरमी का बर्ताव किया जाये, आज ही के दिन के लिए आपसे उम्मीदें वाबस्ता थीं, इसके बाद ला इला-ह इल्लल्लाह कहा और रूह परवाज़ कर गयीं।

जब मुस्लिमा बिन अब्दुल मलिक का इंतिक़ाल होने लगा तो वह रोने लगे, किसी ने रोने का सबब पूछा तो कहने लगे कि मैं मौत के डर से नहीं रो रहा हूँ, मुझे अल्लाह तआला के साथ कामिल वसूक़ (यक़ीन) है। मैं इस पर रो रहा हूँ कि मैं तीस मर्तबा जिहाद में शरीक हुआ, मगर शहादत नसीब न हुई और आज औरतों की तरह बिस्तर पर जान दे रहा हूँ।

अयास बिन क़तादा अबशमी रह० ने एक दिन आईना देखा तो सर पर सफ़ेद बाल नज़र आये, कहने लगे कि सफ़ेद बाल आ जाने के बाद फिर आख़िरत के सिवा कोई मशग़ला न रहना चाहिए कि अब दुनिया से रूख़्सत होने का वक़्त आ गया। इसके बाद बहुत ज़्यादा मुजाहिदे शुरू कर दिए। एक मर्तबा जुमे के दिन नमाज़ से फ़ारिग़ होकर मस्जिद से बाहर आ रहे थे, आसमान की तरफ़ देख कर कहने लगे, तेरा आना मुबारक है, मैं तो तेरा बहुत ही सख़्त इंतिज़ार कर रहा था, इसके बाद अपने साथ वालों से कहने लगे, जब मैं मर जाऊं तो मल्हूब (किसी जगह का नाम है) में ले जाकर मुझे दफ़्न कर देना। उसके बाद रूह निकल गयी और गिर गये।

हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह० के शागिर्द इब्राहीम बिन हानी रह० का इंतिक़ाल होने लगा तो अपने लड़के इसहाक़ से दर्याफ़्त किया कि आफ़ताब गुरूब हो गया? उन्होंने कहा अभी तो नहीं हुआ लेकिन अब्बा जान, ऐसी सख़्त बीमारी में तो फ़र्ज़ रोज़ा खोलने की भी इजाज़त है, आपका तो नफ़्ल रोज़ा है, इसको खोल दीजिए, फ़रमाने लगे, अरे ठहर जा, इसके बाद (न मालूम क्या

देखा) फ़रमाने लगे इसी जैसी चीज़ों के लिए आदमी को चाहिए कि नेक अमल करता रहे (यह क़ुरआन पाक की आयत वस्साफ़्फ़ात, रूकूअ् 2 की तरफ़ इशारा है, जिसमें हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है कि बेशक यह बड़ी कामियाबी है, ऐसी ही कामियाबी हासिल करने के लिए अमल करने वालों को अमल करना चाहिए।) इसके बाद रूह परवाज़ कर गयी।

अबू हकीम हियरी रह॰ बैठे हुए, कुछ लिख रहे थे, लिखते लिखते क़लम हाथ में से रख कर कहने लगे, अगर इसी का नाम मौत है तो ख़ुदा की क़सम बड़ी अच्छी मौत है, यह कह कर मर गये।

अबुल वफ़ा बिन अक़ील रह॰ का जब इंतिक़ाल होने लगा तो घर वालों ने रोना शुरू कर दिया, कहने लगे कि पचास साल से तो इसको हटा रहा हूँ, अब कहां तक हटाऊँ, अब तुम मुझे छोड़ दो, अब मैं इस की आमद पर इसको मुबारकबाद देता हूँ।

इमाम ग़ज़ाली रह॰ ने जिनकी किताब एह्या उल उलूम मशहूर है, दो शंबा (पीर) की सुबह की नमाज़ वुज़ू करके पढ़ी फिर अपना कफ़न मंगाया, उसको चूमा, आंखों पर रखा और कहा कि बादशाह की ख़िदमत में हाज़िरी के लिए बड़ी ख़ुशी से हाज़िर हूँ, यह कह कर क़िब्ला रूख़ पांव पसार कर लेट गये और फ़ौरन इंतिक़ाल कर गये।

इब्नुल जौज़ी रह॰ कहते हैं कि जब मेरे उस्ताद अबू बक्र बिन हबीब रह॰ का इतिक़ाल होने लगा तो शागिर्दों ने अर्ज़ किया कि कुछ वसीयत फ़रमा दीजिए, फ़रमाया कि तीन चीज़ें वसीयत करता हूँ :-

1. अल्लाह का ख़ौफ़ और

2. तंहाई में उसका मुराक़बा और

3. जो चीज़ मुझे पेश आ रही है (यानी मौत) इसका ख़ौफ़ रखा जाए। मुझे इकसठ बरस गुज़र गये हैं लेकिन गोया मैं ने दुनिया को देखा भी नहीं, (ऐसे जल्दी गुज़र गये) इसके बाद एक पास बैठने वाले से पूछा, देखो मेरी पेशानी पर पसीना आ गया या नहीं, उसने अर्ज़ किया आ गया, फ़रमाया अल्लाह का शुक्र है कि यह ईमान पर मौत की अलामत है (जैसा कि हदीस में वारिद है)।

इमाम बुख़ारी रह॰ के शागिर्द अबुल वक़्त अब्दुल अव्वल रह॰ के इंतिक़ाल का जब वक़्त आया तो आख़िर कलिमा, जो उनकी ज़बान से निकला,

यह था :-

يَالَيْتَ قَوْمِي يَعْلَمُوْنَ ٥ بِمَا غَفَرَلِي رَبِّي وَجَعَلَنِي مِنَ الْمُكْرَمِيْنَ ٥

"या लै-त क़ौमी यअ्लमून॰ बिमा ग़-फ़-र-ली रब्बी व ज-अ-लनी मिनल् मुक्र-मीन॰"

(यह सूरः यासीन शरीफ़ के दूसरे रूकूअ की आयत है) जिसका तर्जुमा यह है "काश मेरी क़ौम को यह बात मालूम हो जाती कि मेरे रब ने मुझे बख़्श दिया और मुझे मोअ़ज़्ज़ज़ और मुकर्रम लोगों में शामिल कर दिया।"

मुहम्मद बिन हामिद रह॰ कहते हैं कि मैं अहमद बिन ख़िज़रविय: रह॰ के इंतिक़ाल के वक़्त उनके पास बैठा हुआ था, उनको नज़अ् शुरू हो गया था, पचानवे साल की उम्र थी, एक शख़्स ने उनसे कोई मसअला दर्याफ़्त किया, उनकी आंखों में आंसू भर आये और कहने लगे कि बेटा, पचानवे साल से एक दरवाज़े के खोलने की कोशिश में लगा हुआ हूँ, इस वक़्त वह खुलने को है, इसका फ़िक्र सवार है कि सआदत के साथ खुलता है या बदबख़्ती के साथ। इस वक़्त जवाब की मुहलत कहां, इसी में उनके क़र्ज़ख़्वाह उनके मरने की ख़बर सुनकर जमा हो गये, सात सौ दीनार (अशर्फ़ियां) उनके ज़िम्में क़र्ज़ थीं, कहने लगे या अल्लाह, तूने रहन इसलिए मशरूअ् किया है कि क़र्ज़ख़्वाहों को इत्मीनान रहे, इस वक़्त तू इन लोगों के इत्मीनान को बुला रहा है यानी इनको मेरे वजूद से इत्मीनान था, अब मैं जा रहा हूँ, इनका क़र्ज़ अदा कर। उसी वक़्त किसी ने दरवाज़ा खटखटाया और कहने लगा कि अहमद के क़र्ज़ख़्वाह कहां हैं और सब क़र्ज़ा गिन कर अदा कर गया और उनकी रूह निकल गयी।

एक बुज़ुर्ग का इंतिक़ाल होने लगा तो अपने ख़ादिम से कहा कि मेरे दोनों हाथ बांध दे और मेरा मुंह ज़मीन पर रख दे। इसके बाद वह कहने लगे कि कूच का वक़्त आ गया, न तो मैं गुनाहों से बरी हूँ, न मेरे पास कोई उज़्र है जो मअ़ज़िरत में पेश कर दूँ, न कोई ताक़त है, जिससे मदद चाहूँ, बस मेरे लिये तो तू ही है, मेरे लिये तो तू ही है, यही कहते कहते एक चीख़ मारी और इंतिक़ाल हो गया, ग़ैब से आवाज़ आयी कि इस बंदे ने अपने मौला के सामने आजिज़ी की, उस ने क़ुबूल कर लिया।

एक शख़्स कहते हैं कि एक फ़क़ीर नज़अ् की हालत में सिसक रहा था, मक्खियां उसके मुंह पर कसरत से बैठ रही थीं, मुझे तरस आया, मैं उसके

पास बैठ कर मक्खियां उड़ाने लगा, उसने आंखें खोल दीं और कहने लगा कि बरसों से ख़ास वक़्त की कोशिश में लगा हुआ था, सारी उम्र में कोशिश पर भी नसीब न हुआ, अब मिला था तो तू आकर बीच में घुस गया, जा अपना काम कर, अल्लाह तेरा भला करे।

अबूबक्र रक़ी रह० कहते हैं कि मैं अबू बक्र ज़फ़्फ़ाक़ रह० के पास सुबह के बाद मौजूद था, वह कह रहे थे, या अल्लाह ! तू मुझे इस दुनिया में कब तक डाले रखेगा, ज़ुहर का वक़्त भी न आने पाया था कि उनका विसाल हो गया।

हज़रत मक्हूल शामी रह० बीमार थे, एक शख़्स उनके पास गये और कहने लगे, हक़ तआला शानुहू आपको सेहत अता फ़रमाये, कहने लगे, हरगिज़ नहीं, ऐसी ज़ात के पास जाना जिस से ख़ैर की उम्मीद है, ऐसे लोगों के पास रहने से बेहतर है जिनकी बुराई से किसी वक़्त भी इत्मीनान नहीं है।

अबू अली रूज़बारी रह० कहते हैं कि एक फ़क़ीर मेरे पास ईद के दिन आया, बहुत ख़स्ता हाल, पुराने कपड़े, कहने लगा, यहां कोई पाक साफ़ जगह ऐसी है जहां कोई ग़रीब फ़क़ीर मर जाये, मैं ने लापरवाही से लग्व समझ कर कह दिया कि अंदर आजा और जहां चाहे पड़ के मर जा। वह अंदर आया, वुज़ू की, चंद रकआत नमाज़ पढ़ी और लेट कर मर गया। मैं ने उसकी तजहीज़ व तक्फ़ीन की और जब दफ़्न करने लगा तो मुझे यह ख़्याल आया कि उसके मुंह पर से कफ़न हटा कर उसका मुंह ज़मीन पर रख दूं, ताकि हक़ तआला शानुहू उसकी ग़ुरबत पर रहम फ़रमायें, मैं ने उसका मुंह खोला, उसने आंखें खोल दीं, मैं ने पूछा मेरे सरदार, क्या मौत के बाद भी ज़िन्दगी है? कहने लगा कि मैं ज़िन्दा हूं और अल्लाह तआला का हर आशिक़ ज़िंदा होता है, मैं कल क़ियामत में अपनी वजाहत से तेरी मदद करूंगा।

अली बिन सह्ल असबहानी रह० कहा करते थे, क्या तुम्हारा यह ख़्याल है कि मैं भी उसी तरह मरूंगा जिस तरह लोग मरते हैं, बीमारी, अयादत (सौ धंधे हो जाते हैं) मैं तो इस तरह मरूंगा कि मुझे कहा जायेगा, ऐ अली! और मैं चल दूंगा, चुनांचे ऐसा ही हुआ। एक दिन कहीं चले जा रहे थे चलते चलते कहने लगे, लब्बैक, (हाज़िर हूं) और मर गये।

अबुल हसन मुज़नी रह० कहते हैं कि अबू याक़ूब नहर जूरी रह० का

जब इंतिक़ाल होने लगा, नज़अ् के वक़्त मैं ने ला इला-ह इल्लल्लाह तल्क़ीन किया, तो मेरी तरफ़ देख कर हंसे और कहने लगे, मुझे तल्क़ीन करते हो, उस ज़ात की इज़्ज़त की क़सम, जिसको कभी मौत नहीं आयेगी, मेरे और उसके दर्मियान सिर्फ़ उसकी बड़ाई और इज़्ज़त का पर्दा है और बस, यह कहते ही रूह परवाज़ कर गयी। मुज़नी रह० अपनी दाढ़ी पकड़ कर कहते थे कि मुझ जैसा हज्जाम भला औलिया को तल्क़ीन करे, कैसी ग़ैरत की बात है और जब इस वाक़िए का ज़िक्र करते तो रोया करते।

अबुल हुसैन मालिकी रह० कहते हैं कि मैं हज़रत ख़ैर नूरबाफ़ रह० के साथ कई साल रहा, उन्होंने अपने इंतिक़ाल से आठ यौम पहले कहा कि मैं जुमेरात की शाम को मग़रिब के वक़्त मरूँगा और जुमा की नमाज़ के बाद दफ़न किया जाऊँगा, भूल न जाना, लेकिन मैं बिल्कुल भूल गया। जुमा की सुबह को एक शख़्स ने मुझे उनके इंतिक़ाल की ख़बर सुनाई, मैं फ़ौरन गया कि जनाज़े में शिर्कत करूँ। रास्ते में लोग मिले जो उनके घर से वापस आ रहे थे और यह कह रहे थे कि जुमा के बाद दफ़न होंगे, मगर मैं उनके घर पहुँच गया, मैंनें वहां जाकर उनके इंतिक़ाल की कैफ़ियत पूछी तो मुझसे एक शख़्स ने, जो इंतिक़ाल के वक़्त उनके पास मौजूद था, बताया कि रात मग़रिब की नमाज़ के क़रीब इन को ग़शी सी हुई, उसके बाद ज़रा इफ़ाक़ा सा हुआ तो घर के एक कोने की तरफ़ मुंह करके कहने लगे कि थोड़ी देर ठहर जाओ, तुम्हें भी एक काम का हुक्म है और मुझे भी एक काम का हुक्म है, लेकिन तुम्हें जिस काम का हुक्म है वह तो फ़ौत नहीं होगा और मुझे जिस काम का हुक्म है वह रह जायेगा, इसलिए थोड़ी देर ठहर जाओ; मैं उसको पूरा कर लू, जिसका मुझे हुक्म है।

उसके बाद उन्होनें पानी मंगाया, ताज़ा वुज़ू किया, नमाज़ पढ़ी और उसके बाद आंखे बंद करके पांव पसार कर लेट गये और चल दिये। किसी ने उनको ख़्वाब में देखा, पूछा क्या हाल है? कहने लगे बस यही न पूछ तुम्हारी सड़ी हुई बूदार दुनिया से ख़लासी मिल गयी।

अबू सईद ख़ज़्ज़ार रह० कहते हैं कि मैं एक मर्तबा मक्का मुकर्रमा में था, बाबे बनी शैबा से निकल रहा था, दरवाज़े से बाहर मैं ने एक निहायत ख़ूबसूरत आदमी को मरे हुए पड़ा देखा, मैं जो उसको ग़ौर से देखने लगा तो वह मेरी तरफ़ देख कर हंसने लगा और कहने लगा, अबू सईद तुम्हें मालूम नहीं कि

(मुहब्बत वाले) दोस्त मरा नहीं करते, एक आलम से दूसरे आलम में मुन्तकिल हो जाते हैं।

हज़रत ज़ुन्नून मिस्री रह॰ का जब विसाल होने लगा तो किसी ने उनसे अर्ज़ किया कि कुछ वसीयत फ़रमा दीजिए, फ़रमाने लगे कि मैं उसकी मेहरबानी के करिश्मों में मुताज्जिब हो रहा हूँ, इस वक़्त मुझे मश्ग़ूल न करो।

अबू उस्मान हियरी रह॰ कहते हैं कि जब अबू हफ़्स का इंतिक़ाल होने लगा तो किसी ने पूछा कि कोई वसीयत फ़रमा दीजिए, फ़रमाने लगे कि मुझ में बोलने की ताक़त नहीं, उसके बाद ज़रा क़ुव्वत सी मालूम हुई तो मैं ने कहा, अब फ़रमा दीजिए, मैं लोगों तक पहुँचा दूंगा। फ़रमाने लगे कि अपनी कोताही गर पूरे दिल से इंकिसार और आजिज़ी हो (बस यही मेरी आख़िरी वसीयत है।)

हज़रत जुनैद बग़दादी रह॰ फ़रमाते हैं कि जब हज़रत सिर्री सक़ती रह॰ का विसाल होने लगा, नज़अ् की हालत थी, मैं सिरहाने बैठा था, मैं ने अपना मुंह उनके मुंह पर रख दिया, मेरी आंखों से आंसू जारी थे, मेरा आंसू उनके रूख़सार पर गिरा, फ़रमाने लगे कौन है, मैं ने अर्ज़ किया, आपका ख़ादिम जुनैद, फ़रमाने लगे मर्हबा (बहुत अच्छा किया आ गए) मैं ने अर्ज़ किया कोई आख़िरी वसीयत फ़रमा दीजिए, फ़रमाने लगे कि बुरों की सोहबत से अपने को बचाना और ऐसा न हो कि ग़ैरों की सोहबत अल्लाह तआला शानुहू से तुझे जुदा कर दे।

हज़रत हबीब अजमी रह॰ (जो मशहूर अकाबिर सूफ़िया में हैं) इंतिक़ाल के वक़्त बहुत ही घबरा रहे थे, किसी ने अर्ज़ किया कि आप जैसे बुज़ुर्ग से यह घबराहट बईद है, इससे पहले तो ऐसा हाल आपका न होता था (यानी इतनी घबराहट किसी बात से भी महसूस न होती थी) फ़रमाने लगे, सफ़र बहुत लम्बा है, तोशा पास नहीं है, कभी इससे पहले इस का रास्ता देखा नहीं, आक़ा और सरदार की ज़ियारत करनी है, कभी इस से पहले ज़ियारत नहीं की, ऐसे ख़ौफ़नाक मनाज़िर देखने हैं जो पहले कभी नहीं देखे, मिट्टी के नीचे तंहा क़ियामत तक पड़े रहना है, कोई मूनिस पास न होगा। इसके बाद अल्लाह तआला शानुहू के हुज़ूर में खड़ा होना है, मुझे यह डर है कि अगर वहां यह सवाल हो गया कि हबीब साठ बरस में एक तस्बीह ऐसी पेश कर दे, जिस में शैतान का कोई दख़ल न हो तो क्या जवाब दूंगा? और यह हाल इस पर था कि साठ बरस की ज़िन्दगी में दुनिया से ज़रा सा भी लगाव न था। फिर हम जैसों का

क्या हाल होगा जो किसी वक़्त भी दुनिया तो दरकिनार गुनाहों से ख़ाली नहीं होते, हर वक़्त शैतान ही की ख़ुशामद में लगे रहते हैं।

अब्दुल जब्बार रह० कहते हैं कि मैं हज़रत फ़त्ह बिन शख़रफ़ रह० की ख़िदमत में तीस बरस रहा, उन्होंने कभी आसमान की तरफ़ मुंह नहीं उठाया, इसके बाद एक मर्तबा आसमान की तरफ़ मुंह किया और कहने लगे, अब तो आपका इश्तियाक़ बहुत ही बढ़ गया, अब जल्दी ही बुला लीजिए। इसके बाद एक हफ़्ता भी न गुज़रा कि इंतिक़ाल फ़रमा गये।

अबू सईद मूसली रह० कहते हैं कि फ़त्ह बिन सईद रह० ईदुल अज़्हा की नमाज़ पढ़ कर ईदगाह से देर में वापस हुए, वापसी में देखा कि मकानों के अंदर से क़ुर्बानी का गोश्त पकने का धुआं हर तरफ़ से निकल रहा है, तो रोने लगे और कहने लगे कि लोगों ने क़ुर्बानियों से आपका तक़र्रूब हासिल किया, मेरे महबूब, काश मुझे मालूम हो जाता कि मैं क़ुर्बानी किस चीज़ की करूँ, यह कह कर बेहोश होकर गिर गये, मैं ने पानी छिड़का, देर में होश आया, फिर उठ कर चले जब शहर की गलियों में पहुँचे तो फिर आसमान की तरफ़ मुंह उठा कर कहने लगे कि मेरे मेहबूब, तुझे मेरे रंज व ग़म का तवील होना भी मालूम है और मेरा यह गली गली फिरना भी तुझे मालूम है, मेरे महबूब ! तू मुझे यहां कब तक क़ैद रखेगा, यह कह कर फिर बेहोश होकर गिर गये, मैं ने फिर पानी छिड़का, फिर इफ़ाक़ा हो गया और चंद रोज़ बाद इंतिक़ाल हो गया।

मुहम्मद बिन क़ासिम रह० कहते हैं कि मुझ से मेरे शैख़ मुहम्मद बिन अस्लम तूसी रह० ने इंतिक़ाल से चार दिन पहले फ़रमाया कि आओ, तुम्हें ख़ुशख़बरी सुनाऊँ कि तुम्हारे साथी के (यानी मेरे) साथ हक़ तआला शानुहू ने किस क़दर एहसान किया कि मेरी मौत का वक़्त आ गया और अल्लाह तआला शानुहू का मुझ पर यह एहसान है कि मेरे पास एक दिरम भी नहीं है, जिसका हिसाब देना पड़े, अब मकान के किवाड़ बंद कर दो और मेरे मरने तक किसी को मेरे पास आने की इजाज़त न देना और यह सुन लो कि मेरे पास कोई चीज़ नहीं है, जिस में मीरास तक़्सीम हो, सिवाए इस चादर के और इस टाट के और इस वुज़ू के लोटे के और मेरी किताबों के और इस थैली में तीस दिरम हैं, यह मेरे नहीं हैं, बल्कि मेरे बेटे के हैं, उसके एक रिश्तेदार ने उसको दिये हैं और इससे ज़्यादा हलाल चीज़ मेरे लिये क्या होगी जबकि हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद यह है कि तू और तेरा माल तेरे बाप का है (लिहाज़ा यह बेटे का माल होने की वजह

से इस हदीस शरीफ़ की बिना पर मुझे हलाल है) इस में से मेरे कफ़न की इतनी मिक़्दार ख़रीद लेना जिससे मेरा सतर ढक जाये, इससे ज़्यादा इसमें से न लेना यानी सिर्फ़ लुंगी इसमें से ख़रीद लेना और यह टाट और यह चादर कफ़न में शामिल कर लेना, कफ़न के तीन कपड़े पूरे हो जायेंगे, लुंगी, चादर और तीसरा टाट हो जायेगा, इन तीनों में मुझे लपेट देना और यह वुज़ू का लोटा किसी नमाज़ी फ़कीर को सदक़ा कर देना कि वह वुज़ू कर लिया करेगा, यह सब फ़रमा कर चौथे दिन इंतिक़ाल हो गया।

अबू अब्दुल ख़ालिक़ रह० कहते हैं कि मैं यूसुफ़ बिन हुसैन रह० के पास नज़अ् की हालत में था, वह कह रहे थे, ऐ अल्लाह, मैं हाज़िर हूँ, मैं लोगों को नसीहत करता रहा और बातिन में अपने नफ़्स के साथ खोटापन करता रहा, मैं ने अपने नफ़्स के साथ जो खोट किया, उसको इसके बदले में कि तेरी मख़्लूक़ को नसीहत करता रहा, माफ़ कर दे, यही कहते कहते जान निकल गयी, रहिम-हुमुल्लाहु तआला रह्म-तन् वासिअः। *(इत्तिहाफ़)*

किस क़दर खुश क़िस्मत थे ये मरने वाले, हक़ तआला शानुहू इनकी बरकात से इस नापाक को भी कोई हिस्सा अता फ़रमा दे कि वह बड़ा करीम है, उसके करम से कोई चीज़ भी बओद नहीं।

(٢٠) عن عائشةؓ قالت جاء رجل فقعد بين يدى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال يا رسول الله ان لى مملوكين يكذبوننى ويخوننى ويعصوننى واشتمهم واضربهم فكيف انا منهم فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا كان يوم القيمة يحسب ماخانوك وعصوك وكذبوك وعقابك اياهم فان كان عقابك اياهم بقدر ذنوبهم كان ذالك كفافا لا لك ولا عليك فان كان عقابك اياهم دون ذنبهم كان فضلا لك وان كان عقابك اياهم فوق ذنوبهم اقتص لهم منك الفضل فتنحى الرجل وجعل يهتف ويبكى فقال له رسول الله صلى الله عليه وسلم اما تقرأ قول الله تعالى وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَإِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا وَكَفٰى بِنَا حَاسِبِيْنَ o فقال الرجل يا رسول الله ماأجد لى ولهؤلاء شيئا خيرا من مفارقتهم اشهدك انهم كلهم احرار رواه الترمذى كذا فى المشكوة

20. हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि एक शख़्स हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और

अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! (सल्ल॰) मेरे कई ग़ुलाम हैं, जो मुझसे झूठ भी बोलते हैं, ख़ियानत भी करते हैं, कहना नहीं मानते मैं उनको बुरा भला भी कहता हूं और मारता भी हूं, मेरा उनका (क़ियामत में) क्या मामला रहेगा? हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन जितनी मिक़्दार की उन्होंने ख़ियानत की होगी और तेरी नाफ़रमानी की होगी और झूठ बोला होगा, उस सारी मिक़्दार का वज़न किया जायेगा (कि वहां हर चीज़ का वज़न होता है चाहे वह चीज़ जिस्म वाली जौहर हो या बे जिस्म की अर्ज़ हो) और तूने जो सज़ा इन चीज़ों पर दी है, वह भी सब तौली जायेगी, पस अगर तेरी सज़ा और उनका जुर्म बराबर रहा तब तो न लेना न देना, और अगर तेरी सज़ा उनके जुर्म के वज़न में कम होगी तो जितनी कम होगी, वह तुझे दी जायेगी, और अगर सज़ा उनके जुर्म से बढ़ी हुई होगी तो उस ज़्यादती का तुझ से बदला ले लिया जायेगा, वह शख़्स अफ़सोस करते हुए रोते हुए मज्लिस से हट गये।

फिर हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, तुम ने क़ुरआन शरीफ़ की आयत (सूरः अंबिया, रूकूअ् 4) व न-ज़-अुल मवा ज़ीनल् क़िस्-त, (आयत) नहीं पढ़ी? जिसका तर्जुमा यह है कि क़ियामत के दिन हम मीज़ाने अदल क़ायम करेंगे (जिसमें आमाल का वज़न करेंगे) और किसी पर ज़रा सा भी ज़ुल्म न किया जायेगा और अगर किसी का कोई अमल राई के दाने के बराबर भी होगा तो हम उसको वहां हाज़िर करेंगे (और उस का वज़न करेंगे) और हम हिसाब लेने वाले काफ़ी हैं।

फ़ायदाः- क़ियामत के दिन हिसाब का मामला भी बड़ा सख़्त मामला है, क़ुरआन पाक और अहादीस में बहुत कसरत से उस पर तंबीहें हैं और उस की तफ़्सीलें ज़िक्र फ़रमायी गयी हैं। मिसाल और नमूने के तौर पर चंद आयात और चंद अहादीस इस जगह ज़िक्र की जाती हैं।

(१) وَاتَّقُوا يَوْمًا تُرْجَعُونَ فِيهِ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ تُوَفَّى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ (بقره ع ٣٨)

1. और उस दिन से डरते रहो जिस दिन तुम हक़ तआला शानुहू की पेशी में लाये जाओगे, फिर हर शख़्स को उसका किया हुआ अमल (यानी उसका बदला) पूरा पूरा दिया जायेगा, और उन पर किसी क़िस्म का ज़ुल्म न किया जायेगा। *(बक़रः रूकूअ 38)*

(٢) يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا ۚ وَّمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوْءٍ ۚ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهٗٓ اَمَدًا ۢ بَعِيْدًا ۭ وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ۭ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ٥

2. जिस दिन पायेगा हर शख़्स अपने सामने उस चीज़ को जो उसने किसी क़िस्म की ख़ैर की हो, या किसी क़िस्म की बुराई की हो और तमन्ना करेगा कि काश इस दिन के और उसके दर्मियान बहुत दूर की मुसाफ़त होती, और अल्लाह तआला डराता है तुमको अपने आप से, और अल्लाह तआला बड़ा शफ़ीक़ है बंदों पर (इस शफ़क़त ही की वजह से डराता है कि तुम उसके अज़ाब में मुब्तला न हो जाओ)

(आले इम्रान, रूकूअ 3)

(٣) وَمَنْ يَّغْلُلْ يَاْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ٥ (ال عمران ع١٧)

3. और जो शख़्स ख़ियानत करेगा वह अपनी उस ख़ियानत की हुई चीज़ को क़ियामत के दिन (हश्र के मैदान में) लायेगा, फिर हर शख़्स को उसके किये हुए का पूरा पूरा बदला मिलेगा

(आले इम्रान, रूकूअ 17)

(٤) كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ۭ وَاِنَّمَا تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ (ال عمران ١٩)

4. हर शख़्स को मौत का ज़ायक़ा ज़रूर चखना है और तुम्हारे (नेक और बद) आमाल का पूरा पूरा बदला क़ियामत के दिन मिलेगा।

(आले इम्रान, रूकूअ 19)

(٥) اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ٥

5. इन्नल्ला-ह सरीअुल् हिसाब॰

यह कलिमा बहुत जगह क़ुरआन पाक में वारिद हुआ है कि हक़ तआला शानुहू बहुत जल्दी हिसाब करने वाले हैं। (कि हर शख़्स का हिसाब किताब बहुत जल्दी ही पूरा कर दिया जायेगा और उसके मुवाफ़िक़ बदला दिया जायेगा)

(٦) وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِ نِ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ٥ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ٥ (اعراف ع١)

6. और उस दिन (क़ियामत के दिन) आमाल का वज़न ज़रूरी है, पस जिस शख़्स का (नेक आमाल का) पल्ला भारी होगा तो ऐसे लोग कामियाब होंगे और जिस शख़्स का (नेक आमाल का) पल्ला हल्का होगा, यही लोग हैं जिन्होंने अपना नुक़्सान कर लिया, इस वजह से कि हमारी आयतों की हक़ तलफ़ी करते थे। *(आराफ़, रूकूअ 1)*

(۷) اِنَّ رُسُلَنَا یَکْتُبُوْنَ مَا تَمْکُرُوْنَ o (یونس ع ۳)

7. बेशक हमारे क़ासिद (फ़रिश्ते) तुम्हारी सब शरारतों को लिख रहे हैं (और इन सब का बदला तुमको क़ियामत में मिलेगा, जब यह लिखा हुआ सामने लाया जायेगा)। *(यूनुस, रूकूअ 3)*

(۸) وَالَّذِیْنَ کَسَبُوا السَّیِّاٰتِ جَزَآءُ سَیِّئَۃٍ بِمِثْلِهَا وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّۃٌ مَالَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ (یونس ع ۳)

8. और जिन लोगों ने बुरे काम किये, उनकी बुराई की सज़ा उस के बराबर मिलेगी, और उनको ज़िल्लत छाएगी और उनको अल्लाह तआला (के अज़ाब) से कोई बचाने वाला न होगा (और उनके मुंह ऐसे काले होंगे) गोया उनके चेहरों पर अंधेरी रात के परत लपेट दिये गये। *(यूनुस, रूकूअ 3)*

(۹) هُنَالِكَ تَبْلُوْا کُلُّ نَفْسٍ مَّآ اَسْلَفَتْ (یونس ع ۳)

9. उस मक़ाम पर हर शख़्स अपने पहले किये कामों को (जो दुनिया में किये थे,) जांच लेगा, (कि वह किस क़िस्म के नेक या बद किये थे, फिर उसका हिसाब हो जायेगा) *(यूनुस, रूकूअ 3)*

(۱۰) لِلَّذِیْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنٰی وَالَّذِیْنَ لَمْ یَسْتَجِیْبُوْا لَهٗ لَوْاَنَّ لَهُمْ مَّافِی الْاَرْضِ جَمِیْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْحِسَابِ o (رعد ع ۲)

10. जिन लोगों ने अपने रब का कहना मान लिया, उनके वास्ते अच्छा बदला है, और जिन्होंने उसका कहना न माना, उनके पास अगर दुनिया की तमाम चीज़ें हों (बल्कि) और उसके साथ उसी के बराबर और चीज़ें हों तो सब की सब अपने फ़िदये में दे डालें (और) उनका सख़्त हिसाब होगा। *(रअ्द, रूकूअ 2)*

(١١) فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ۔ (رعد ع٦)

11. पस आपके ज़िम्मे तो (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) सिर्फ़ पहुँचा देना है (और उस पर अमल करने, न करने का) हिसाब हमारे ज़िम्मे है। (रअ्द, रूकूअ 6)

(١٢) رَبَّنَا اغْفِرْلِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ۔ (ابراهيم ع٦)

12. ऐ हमारे रब! मेरी और मेरे वालिदैन की और सब मोमिनीन की हिसाब क़ायम होने के दिन मग़्फ़िरत कर दीजिए (यह हज़रत इब्राहीम की दुआ है) *(इब्राहीम, रूकूअ 6)*

(١٣) وَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِيْنَ فِي الْأَصْفَادِ ۝ سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ ۝ لِيَجْزِيَ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ۔ إِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝ (ابراهيم ع٧)

13. और तू उस दिन मुज्रिमों को जंज़ीरों मे जकड़ा हुआ देखेगा और उनके कुरते क़तिरान (चीड़ के दरख़्त के तेल) के होंगे (कि उस तेल में पेट्रोल की तरह से आग जल्दी लगती है) और उनके चेहरों पर आग लिपटी हुई होगी (और यह सारी तक्लीफ़ें क्यों हैं) ताकि अल्लाह तआला शानुहू हर शख़्स को उसके किये हुए की सज़ा दे, बेशक अल्लाह तआला शानुहू बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है। *(इब्राहीम, रूकूअ 7)*

(١٤) وَكُلَّ إِنْسَانٍ أَلْزَمْنٰهُ طٰٓئِرَهٗ فِيْ عُنُقِهٖ ۔ وَنُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ كِتٰبًا يَّلْقٰهُ مَنْشُوْرًا ۔ إِقْرَأْ كِتٰبَكَ ۔ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا ۝ (بنی اسرائيل ع٢)

14. और हमने हर इंसान का अमल (नेक हो या बद हो) उसके गले का हार बना रखा है और क़ियामत के दिन हम उसका आमाल नामा उसके सामने कर देंगे, जिसको वह ख़ुला हुआ देखेगा (और उससे कहा जायेगा) कि अपना आमाल नामा ख़ुद ही पढ़ ले, आज तू ख़ुद ही अपना मुहासिब काफ़ी है (यानी ख़ुद ही हिसाब कर ले, किसी दूसरे की भी ज़रूरत नहीं) *(बनी इस्राईल, रूकूअ 2)*

(١٥) كَلَّا سَنَكْتُبُ مَا يَقُوْلُ (مريم ع٥)

15. (जो बात ये काफ़िर समझ रहे हैं वह) हरगिज़ नहीं है, हम

हर वह बात लिख देते हैं जो कोई ज़बान से कहता है (उसके बाद क़ियामत के दिन) वह लिखा हुआ आमाल नामा उसके सामने कर दिया जायेगा। *(मरयम, रूकूअ 1)*

(١٦) اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِىْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ۚ(انبياء ع ١)

16. लोगों के हिसाब का वक़्त तो क़रीब आ गया और ये अभी तक ग़फ़लत ही में पड़े हैं (और उसकी तैयारी से) ऐराज़ किये हुए हैं। *(अंबिया, रूकूअ 1)*

(١٧)فَاِذَا نُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَلَآ اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَّلَا يَتَسَآءَلُوْنَ ۞ فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۞ وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فِىْ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ۚ تَلْفَحُ وُجُوْهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيْهَا كَالِحُوْنَ ۞(مؤمنون ع ٦)

17. फिर जब (क़ियामत के दिन) सूर फूंका जायेगा तो (इस क़दर ख़ौफ़ होगा कि) बाहमी रिश्ते भी उस दिन न रहेंगे (यानी सब अजनबी से बन जायेंगे) बाप बेटे से भागेगा वग़ैरह वग़ैरह जैसा सूरः अ-ब-स में है, यौ-म यफ़िर्रूल् मर्-उ मिन् अख़ी-हि (आयत) और न कोई किसी को पूछेगा (और आमाल की तराज़ू खड़ी कर दी जायेंगी) पस जिस शख़्स का पल्ला भारी होगा (यानी उसकी नेकियां झुक जायेंगी) पस ऐसे लोग तो कामियाब होंगे और जिस शख़्स का पल्ला हल्का होगा पस ये वे लोग होंगे जिन्होंने अपना नुक़्सान कर लिया और जहन्नम में हमेशा के लिए रहेंगे, उनके चेहरों को आग झुलसती होगी और उस में उनके मुंह बिगड़े हुए होंगे। *(मुअमिनून, रूकूअ 6)*

(١٨)وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍ ۢ بِقِيْعَةٍ يَّحْسَبُهُ الظَّمْاٰنُ مَآءً ۗ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَهٗ لَمْ يَجِدْهُ شَيْـًٔا وَّوَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهٗ فَوَفّٰىهُ حِسَابَهٗ ۗ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۞(نور ع ٥)

18. और जो लोग काफ़िर हैं (और नूरे हिदायत से दूर हैं) उनके आमाल ऐसे हैं जैसा कि एक चटियल मैदान में चमकता हुआ रेत कि प्यासा आदमी उसको (दूर से) पानी समझता है, यहां तक कि जब (उस के पास आया) तो उसको कुछ भी न पाया और उसके पास अल्लाह तआला शानुहू को पाया, जिसने उसका पूरा पूरा हिसाब वहीं कर दिया, और अल्लाह तआला बहुत जल्दी हिसाब कर देने वाले हैं।

(नूर, रूकूअ 5)

(۱۹) اِنَّ الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا نَسُوْا يَوْمَ الْحِسَابِ ٥ (ص ع ۲)

19. जो लोग खुदा के रास्ते से भटके हुए हैं, उनके लिए सख़्त अज़ाब है इसलिए कि वे रोज़े हिसाब को भूले हुए हैं।

(मुअ्मिन,रूकूअ 2)

(۲۰) اَلْيَوْمَ تُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ط اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ٥ (مؤمن ع ۲)

20. आज (क़ियामत) के दिन हर शख़्स को उसके किए का बदला दिया जायेगा, आज ज़ुल्म नहीं है, बेशक अल्लाह तआला शानुहू बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है। *(मुअ्मिन, रूकूअ 2)*

(۲۱) وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً قف كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰٓى اِلٰى كِتٰبِهَا اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ٥
هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ط اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ٥ (جاثيه ع ٤)

21. और आप (क़ियामत के दिन) हर फ़िरक़े को देखेंगे कि (वे लोग ख़ौफ़ की वजह से) घुटनों के बल गिर पड़ेंगे, हर फ़िरक़ा अपनी किताब (नामा-ए-आमाल) की तरफ़ लाया जायेगा (और उनसे कहा जायेगा) कि आज तुमको तुम्हारे किये का बदला दिया जायेगा (और यह कहा जायेगा) कि यह हमारी किताब, (जिस में तुम्हारे आमाल लिखे हुए हैं) तुम्हारे आमाल को ठीक ठीक बता रही है, हम दुनिया में (फ़रिश्तों से) तुम्हारे आमाल को लिखवाते रहते थे (जो इस वक़्त यह तुम्हारे सामने है।) *(जासिय:, रूकूअ 4)*

(۲۲) اِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيٰنِ عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيْدٌ ٥ مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ اِلَّا
لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ ٥ (ق ع ۲)

22. जब दो अख़्ज़ करने वाले (बात को जल्दी से लेकर लिखने वाले फ़रिश्ते) लेते रहते हैं और दायीं जानिब और बायीं जानिब बैठे रहते हैं, वह (यानी आदमी) कोई लफ़्ज़ ज़बान से नहीं निकालता, मगर एक ताक लगाने वाला तैयार रहता है (और वह फ़ौरन) उसको लिख लेता है, यही आमाल नामा है। *(क़ाफ़, रूकूअ 2)*

(۲۳) يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُوْنَ لَاتَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ ٥ فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَيَقُوْلُ هَاؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِيَهْ ٥ اِنِّيْ ظَنَنْتُ اَنِّيْ مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ ٥ فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ٥ فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ٥ قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ ٥ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓئًا بِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِي الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ ٥ وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ ٥ فَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُوْتَ كِتٰبِيَهْ ٥ وَلَمْ اَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ٥ يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ٥ مَآ اَغْنٰى عَنِّيْ مَالِيَهْ ٥ هَلَكَ عَنِّيْ سُلْطٰنِيَهْ ٥ خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ ٥ ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ ٥ ثُمَّ فِيْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ ٥ (الحآقّه ع ١)

23. जिस दिन तुम (ख़ुदा तआला के सामने हिसाब के लिए) पेश किये जाओगे, तुम्हारी कोई बात पोशीदा न होगी, फिर (नामा-ए-आमाल हाथों में दे दिये जायेंगे, पस) जिस शख़्स का नामा-ए-आमाल उस के दाहिने हाथ में दिया जायेगा, वह तो (ख़ुशी के मारे आपस में) कहेगा कि लो, मेरा नामा-ए-आमाल पढ़ लो, मेरा तो (पहले ही से) एतिक़ाद था कि मुझको मेरा हिसाब पेश आने वाला है (मैं तो दुनिया ही में उसके लिए तैयारी कर रहा था) पस यह शख़्स तो पसंदीदा ज़िन्दगी यानी बहिश्ते बरीं में होगा जिसके मेवे झुके हुए होंगे (और उनसे कहा जायेगा) कि खाओ और पियो मज़े के साथ उन आमाल के बदले में जो तुमने गुज़रे हुए ज़माने में किये हैं, और जिस शख़्स का नामा-ए-आमाल उस के बाऐं हाथ में दिया जायेगा पस वह (निहायत हसरत और ग़म से) कहेगा, क्या अच्छा होता कि मुझको मेरा नामा-ए-आमाल न मिलता, और मुझको यह ख़बर ही न होती कि मेरा हिसाब क्या है, काश मौत (जो आ चुकी थी, वही) सब काम का ख़ात्मा कर देती (अफ़सोस) मेरा माल मेरे कुछ काम न आया, मेरी वजाहत भी मेरे से जाती रही। (उस शख़्स के लिए हुक्म होगा कि) इसको पकड़ो और इसके गले में तौक़ पहना दो, फिर जहन्नम में इसको दाख़िल कर दो, फिर ऐसी ज़ंजीर में जिसकी लम्बाई सत्तर गज़ हो, इसको जकड़ दो (इस आयते शरीफ़ा का कुछ हिस्सा बुख़्ल के बयान में नं॰ 12 पर गुज़र चुका है)। *(अलहाक़्क़:, रूकूअ 1)*

(۲٤) وَاِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ ٥ كِرَامًا كَاتِبِيْنَ ٥ يَعْلَمُوْنَ مَاتَفْعَلُوْنَ ٥ (انفطار)

24. और तुम पर (ऐसे फ़रिश्ते जो तुम्हारे कामों को) याद रखने वाले हैं, जो मोअज़्ज़ज़ हैं (और हर काम को) लिखने वाले हैं, मुक़र्रर हैं

जो तुम्हारे सारे अफ़्आल को जानते हैं और लिखते हैं, क़ियामत के दिन, यह सब मजमूआ पेश होगा। (इन्फ़ितार)

(۲۵) فَاَمَّا مَنْ اُوْتِیَ کِتٰبَهٗ بِیَمِیْنِهٖ ۙ فَسَوْفَ یُحَاسَبُ حِسَابًا یَّسِیْرًا ۙ وَّیَنْقَلِبُ اِلٰۤی اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ؕ وَاَمَّا مَنْ اُوْتِیَ کِتٰبَهٗ وَرَآءَ ظَهْرِهٖ ۙ فَسَوْفَ یَدْعُوْا ثُبُوْرًا ۙ وَّیَصْلٰی سَعِیْرًا ؕ اِنَّهٗ کَانَ فِیْۤ اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ؕ اِنَّهٗ ظَنَّ اَنْ لَّنْ یَّحُوْرَ ۚ (انشقاق)

25. पस जिस शख़्स का नामा-ए-आमाल उसके दाहिने हाथ में मिलेगा, उस से अंक़रीब सहल हिसाब लिया जायेगा, और वह (उससे फ़ारिग़ होकर) अपने मुताल्लिक़ीन के पास ख़ुश ख़ुश आयेगा, और जिस शख़्स का नामा-ए-आमाल उसके बायें हाथ में पीठ के पीछे से दिया जायेगा सो वह मौत को पुकारेगा (जैसा कि मुसीबत के वक़्त पुकारा जाता है) और जहन्नम में दाख़िल होगा, यह शख़्स (दुनिया में) अपने घर बहुत ख़ुश ख़ुश रहता था उसने गुमान कर रखा था कि उसको ख़ुदा के यहां जाना ही नहीं है। (इन्शिक़ाक़)

(۲٦) اِنَّ اِلَیْنَاۤ اِیَابَهُمْ ۙ ثُمَّ اِنَّ عَلَیْنَا حِسَابَهُمْ (غاشیه)

26. बेशक हमारे ही पास इन सब को लौट कर आना है फिर हमारा ही काम है इनसे हिसाब लेना। (ग़ाशियः)

(۲۷) بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا ۙ وَاَخْرَجَتِ الْاَرْضُ اَثْقَالَهَا ۙ وَقَالَ الْاِنْسَانُ مَا لَهَا ۚ یَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا ۙ بِاَنَّ رَبَّکَ اَوْحٰی لَهَا ؕ یَوْمَئِذٍ یَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا ۙ لِّیُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ؕ فَمَنْ یَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَیْرًا یَّرَهٗ ؕ وَمَنْ یَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا یَّرَهٗ

27. जब ज़मीन (ज़लज़ले की वजह से) अपनी पूरी हरकत से हिला दी जायेगी (और जब सारी दुनिया में ज़लज़ला आये तो ज़ाहिर है कि कितना बड़ा ज़लज़ला होगा) और ज़मीन अपने अंदर के सारे बोझ (ख़्वाह दफ़ीने हों या मुर्दे) बाहर निकाल कर फेंक देगी और आदमी हक्का बक्का होकर कहेगा इसको क्या हो गया और उस दिन ज़मीन जो कुछ (उसके ऊपर अच्छे या बुरे काम किये गये हैं) सबकी ख़बरें देगी, इस वजह से कि आपके रब का उसको यही हुक्म होगा (जैसा कि

आइंदा रिवायात के ज़ैल में आ रहा है) उस दिन लोग मुख़्तलिफ़ जमाअतें (कोई मुक़र्रबीन की, कोई नेक लोगों की, कोई जहन्नमियों की जमाअत होगी और फिर हर जमाअत में मुख़्तलिफ़ गिरोह होंगे, इसी तरह से कोई जमाअत सवारों कोई पैदल चलने वालों की, कोई उन लोगों की, जिनको मुंह के बल घसीटा जायेगा, ग़रज़ हर क़िस्म की मुख़्तलिफ़ जमाअतें) होकर लौटेंगी ताकि अपने आमाल को (जो दुनिया में किये थे) देख लें, पस जो शख़्स (दुनिया में) ज़र्रे के बराबर नेकी करेगा, वह उसको वहां देख लेगा और जो शख़्स ज़र्रे के बराबर बुराई करेगा, वह उसको देख लेगा।

यह नमूने के तौर पर सत्ताईस आयात हिसाब किताब और आमाल के बदले की ज़िक्र की गयी हैं। इनके अलावा सैकड़ों आयात में मुख़्तलिफ़ उन्वानात से यह और इसी क़िस्म के मज़ामीन वारिद हैं, इसी तरह अहादीस में भी हज़ारों रिवायात में उस हिसाब के दिन के सख़्त हालात ज़िक्र किये गये हैं, जिनका एहाता भी दुशवार है, लेकिन ज़रूरी है कि अपने उन औक़ात को जो महज़ दुनिया कमाने में ज़ाया किये जाते हैं, थोड़ा बहुत इन काम आने वाली चीज़ों में भी ख़र्च किया जाये, अभी वक़्त है, कुछ किया जा सकता है, बहुत जल्द वह वक़्त आने वाला है कि अफ़सोस के सिवा कुछ भी न रहेगा, नमूने के तौर पर चंद अहादीस का तर्जुमा भी इस जगह लिखा जाता है।

हज़रत आइशा रज़ि॰ एक मर्तबा जहन्नम को याद करके रोने लगीं, हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, क्या बात हुई, क्यों रो रही हो? हज़रत आइशा रज़ि॰ ने फ़रमाया, मुझे जहन्नम याद आ गयी, इस पर रो रही हूँ, आप हज़रात उस दिन अपने अह्ल व अयाल को भी याद कर लेंगे या नहीं, हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि तीन वक़्त तो ऐसे हैं जिनमें कोई किसी को याद नहीं करेगा -

1. एक तो तराज़ू के वक़्त (जब आमाल तौलने का वक़्त होगा, यहां तक कि उसको मालूम न हो जाये कि उसकी (नेकियों का) पलड़ा झुक रहा है या नहीं,

2. दूसरे जब यह ऐलान होगा कि आओ अपने अपने हिसाब की किताब ले लो, उस वक़्त कोई किसी को याद न करेगा, जब तक कि यह मालूम न हो जाये कि उसका आमाल नामा दायें हाथ में मिलता है या पुश्त के पीछे से बायें हाथ में मिलता है।

3. तीसरे पुल सिरात के वक़्त जब कि वह जहन्नम पर बिछाई जायेगी (और उस पर से चलना पड़ेगा)। (मिश्कात)

जब तक कि आदमी उस पर से ख़ैरियत से गुज़र न जाये।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन हिसाब किया जायेगा, जिसकी नेकियों में एक का भी इज़ाफ़ा हो जायेगा, वह जन्नत में चला जायेगा और जिसकी बुराईयों में एक का भी इज़ाफ़ा हो जायेगा, वह जहन्नम में जायेगा। इसके बाद उन्होंने "फ़-मन स-क़ुलत् मवाज़ीनुहू" वाली आयत पढ़ी जो नं॰ 6 पर गुज़री और फ़रमाया कि तराज़ू का पल्ला एक दाने से भी झुक जायेगा और जिनकी नेकियां और बुराईयां बराबर होगीं, वे आराफ़ में होंगे (जो जन्नत और दोज़ख़ के दर्मियान है।)

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्ह-हू फ़रमाते हैं कि जिसका ज़ाहिर उसके बातिन से ज़्यादा अच्छा होगा, उसका वज़न हल्का होगा और जिसका बातिन ज़ाहिर से ज़्यादा बेहतर होगा उसका वज़न भारी होगा।

हज़रत अनस रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि एक फ़रिश्ता तराज़ू के क़रीब मुक़र्रर होगा, पस जिसका पल्ला भारी हो जायेगा, वह ऐसे ज़ोर से ऐलान करेगा जिसको सारी मख़्लूक़ सुनेगी कि फ़लां शख़्स का फ़लां बेटा सईद हो गया और ऐसी सआदत मिली कि उसके बाद बदबख़्ती नहीं है। और अगर उसका पलड़ा हल्का हो गया तो वह इसी तरह उसके बदबख़्त होने का ऐलान करेगा, जिसको सारी मख़्लूक़ सुनेगी।

मुतअद्दद रिवायात में आया है कि वह तराज़ू इतनी बड़ी होगी कि आसमान ज़मीन और जो कुछ उनके दर्मियान हैं, सब उसके एक पलड़े में आ जायेगा। हज़रत जाबिर रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि तराज़ू में सबसे अव्वल वह नफ़क़ा रखा जाता है जो आदमी अपने अह्ल व अयाल पर ख़र्च करता है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू ज़र रज़ि॰ से इर्शाद फ़रमाया कि दो ख़सलतें तुम्हें ऐसी बताऊँ जो अमल में बहुत हल्की वज़न में बहुत भारी, एक तो अच्छी आदत, दूसरे चुप रहना। (यानी बेकार बातों से एहतिराज़ करना)।

एक और हदीस में है कि दो कलिमे ऐसे हैं। जो अल्लाह तआला शानुहू को बहुत महबूब हैं, ज़बान पर बहुत हल्के और तराज़ू में बहुत वज़नी हैं वे :-

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْم

"सुब्हा नल्लाहि व बिहम्दिही सुब्हा नल्लाहिल् अज़ीम" हैं।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद वारिद है कि जो शख़्स अपने भाई की हाजत को पूरी करे मैं उसकी तराज़ू के पास खड़ा रहूँगा, अगर उसकी नेकियां बढ़ गयीं तो बहुत ही अच्छा, नहीं तो मैं उसकी सिफ़ारिश करूँगा।

एक हदीस में है कि क़ियामत के दिन उलमा के लिखने की स्याही और शहीदों का ख़ून भी तौला जायेगा और उलमा के लिखने की स्याही का वज़न शहीदों के ख़ून से ज़्यादा वज़नी होगा।

हज़रत ईसा अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम का इर्शाद है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत के आमाल नामे का वज़न और उम्मतों से बहुत बढ़ जायेगा, इसलिए कि उनकी ज़बानें कलिमा-ए-ला इला-ह इल्लल्लाहु के साथ बहुत मानूस होंगी।

हज़रत अबूदर्दा रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जिस शख़्स को हर वक़्त पेट और शर्मगाह की फ़िक्र रहे उसका वज़न हल्का होगा। (दुर्रे मंसूर)

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि जो फ़रिश्ता दायीं जानिब होता है और नेकियों का लिखने वाला होता है, वह बायीं जानिब वाले पर अमीर होता है। जब बंदा कोई नेकी करता है तो दायीं जानिब वाला दस गुना उसका सवाब लिख देता है और जब कोई बुराई करता है तो बायीं जानिब वाला उसके लिखने का इरादा करता है तो वह मातहत होने की वजह से अमीर से लिखने की इजाज़त लेता है तो अमीर यानी दायीं जानिब का फ़रिश्ता कहता है कि अभी छः सात घंटे इंतिज़ार कर ले, अगर बंदा इस दर्मियान में उस गुनाह से तौबा कर लेता है तो वह लिखने की इजाज़त नहीं देता और अगर तौबा नहीं करता है तो वह लिख लेता है। (दुर्रे मंसूर)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद मुतअद्दद अहादीस में है कि क़ियामत के दिन तीन पेशियां होंगी, पहली दो पेशियों में तो मुतालबात, सवाल जवाब, उज़्र माज़िरत वग़ैरह सब कुछ होगा और तीसरी पेशी

में आमाल नामे हाथों में दे दिये जायेंगे, किसी के दाहिने हाथ में, किसी के बायें हाथ में। (दुर्रे मंसूर)

एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जिस शख़्स में तीन बातें हों, हक़ तआला शानुहू उसका बहुत आसान हिसाब लेते हैं और अपनी रहमत से जन्नत में दाख़िल कर देते हैं।

1. एक यह कि जो तुझे अपने एहसान से महरूम रखे तू उस पर एहसान करे,

2. दूसरे जो शख़्स तुझ से क़ता-ए-रहमी करे तू उसके साथ सिला रहमी करे,

3. तीसरे जो तुझ पर ज़ुल्म करे तू उसको माफ़ कर दे। (दुर्रे मंसूर)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि अगर (आख़िरत के अहवाल से) जो कुछ मुझे मालूम है, तुम लोगों को मालूम हो जाये तो (ख़ौफ़ की वजह से) हंसना कम कर दो और रोना बहुत ज़्यादा कर दो और बिस्तरों पर औरतों के साथ लज़्ज़त हासिल करना छोड़ दो और चिल्लाते हुए जंगल को निकल जाओ। हज़रत अबूज़र रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ का यह इर्शाद सुनकर फ़रमाने लगे, काश, मैं तो एक दरख़्त होता जो काट दिया जाता, (आदमी होता ही नहीं जो इतने मसाइब बर्दाश्त करने पड़ें।)

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि आदमी जिस हालत में मरता है, उसी हालत में क़ियामत को उठाया जायेगा, यानी जिस नेकी या बदी में मशग़ूल है और उसी हालत में मौत आ गयी, उसी हालत पर हश्र भी होगा। (मिश्कात)

एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वअ्ज़ फ़रमाया, जिसमें इर्शाद फ़रमाया, ग़ौर से सुन लो कि दुनिया एक वक़्ती मनफ़अत है जिस से हर शख़्स नफ़ा उठाता है, चाहे नेक हो या फ़ाजिर (लिहाज़ा इससे ज़्यादा नफ़ा उठाना कोई नेकी की अलामत नहीं है) और आख़िरत एक मुक़र्ररा चीज़ है जो बहरहाल वक़्ते मुक़र्रर पर आने वाली है और उसमें एक ऐसा बादशाह फ़ैसला फ़रमायेगा जो हर चीज़ पर क़ादिर है (उसके इख़्तियारात बहुत ज़्यादा वसीअ् हैं) ख़ैर सारी की सारी जन्नत में है (लिहाज़ा जो ख़ैर भी आदमी कर सके, उसमें कोताही न करे कि वह जन्नत की तरफ़ ले जाने वाली है) और

शर सारा का सारा जहन्नम में है (इसलिए ज़रा से शर से भी बचने की कोशिश करना चाहिए, उसको मामूली न समझना चाहिए कि ज़रा से शर भी जहन्नम की तरफ़ ले जाने वाला है) एहतिमाम से नेक अमल करते रहो, तुम अल्लाह तआला शानुहू की तरफ़ से निहायत ख़तरे की हालत में हो (उस से बे ख़ौफ़ और बेफ़िक्र किसी वक़्त न होना चाहिए) और इस बात को अच्छी तरह जान लो कि तुम अपने आमाल पर पेश किये जाओगे(और इनका हिसाब होगा) जो शख़्स एक ज़र्रा के बराबर भी नेकी करेगा, वह उसको देखेगा और जो शख़्स एक ज़र्रा के बराबर भी बुराई करेगा वह उसको भी देखेगा। (मिश्कात)

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू का इर्शाद है दुनिया दिन ब दिन मुंह फेरती जा रही है यानी दूर होती जा रही है, और आख़िरत रोज़ ब रोज़ क़रीब आती जा रही है और (दुनिया और आख़िरत में से) हर एक की मुस्तक़िल औलाद है, पस तुम दुनिया की औलाद न बनो, आख़िरत की औलाद बनो। आज अमल का दिन है, हिसाब का नहीं और कल को हिसाब का दिन है अमल न होगा। (मिश्कात)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि क़ियामत के दिन तीन कचहरियां होंगी:-

1. एक कचहरी में तो माफ़ी है ही नहीं, यह तो अल्लाह तआला शानुहू के साथ किसी को शरीक बनाने की है (यानी इस अदालत में तो सिर्फ़ ईमान और कुफ़्र का मुक़दमा पेश होगा और जुर्म की माफ़ी का इस अदालत में ज़िक्र ही नहीं)

2. दूसरी कचहरी में हक़ तआला शानुहू साहबे हक़ को उसका हक़ ज़रूर दिलायेंगे, ख़्वाह अपने पास से अता फ़रमायें या जिसके ज़िम्मे हक़ है, उससे वसूल करके मरहमत फ़रमायें, और यह कचहरी बंदों के आपस में एक दूसरे पर ज़ुल्म की है कि इसमें मज़लूम को ज़ालिम से बदला दिलवाया जायेगा।

3. तीसरी कचहरी हक़ तआला शानुहू के अपने हुक़ूक़ की है (फ़राइज़ वग़ैरह में कोताही की है) इसमें हक़ तआला शानुहू ज़्यादा परवाह नहीं फ़रमायेंगे, ये उस करीम के अपने हुक़ूक़ हैं, वह चाहे मुतालबा फ़रमाये या माफ़ कर दे। (मिश्कात)

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि जिस शख़्स के ज़िम्मे

उसके भाई का कोई हक़ हो कि उस पर आबरू की या माल की कोई ज़्यादती और ज़ुल्म कर रखा हो, उसको आज माफ़ करा लो, उस वक़्त से पहले पहले निबट लो, जिस दिन न दीनार होगा और न दिरम (न रूपया, न अशर्फ़ी, उस दिन सारा हिसाब नेक आमाल और गुनाहों से होगा), पस अगर उस ज़ुल्म करने वाले के पास कुछ नेक अमल है। तो उस के ज़ुल्म के बक़द्र नेकियां लेकर मज़्लूम को दे दी जायेंगी और अगर उसके पास नेकियां नहीं हैं तो मज़्लूम के उतने ही गुनाह उस पर डाल दिये जायेंगे (कि अपने गुनाहों के साथ दूसरों के गुनाहों की सज़ा में जहन्नम में कुछ ज़्यादा ज़माना पड़े रहना होगा।) *(मिश्कात)*

एक और हदीस में है कि क़ियामत के दिन हक़ वालों को उनका हक़ ज़रूर दिलवाया जायेगा, हत्ता कि बे सींग वाली बकरी के लिए सींग वाली बकरी से बदला लिया जायेगा। *(मिश्कात)*

यानी अगर दुनिया में एक बकरी के सींग थे, उसने दूसरी बकरी के मारा जिसके सींग न थे, जिसकी वजह से वह बदला न ले सकी तो उस बकरी का बदला भी वहां दिलवाया जायेगा।

एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जानते हो कि मुफ़्लिस कौन है? सहाबा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया हमारे नज़दीक तो मुफ़्लिस वह शख़्स समझा जाता है जिसके पास न दिरम (नक़द) हो, न माल। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, मेरी उम्मत का मुफ़्लिस वह है जो क़ियामत के दिन बहुत सी नमाज़, रोज़ा, ज़कात लेकर आये, लेकिन किसी को गाली दी थी, किसी को तोहमत लगाई थी, किसी का माल खा लिया था, किसी को मारा था, पस कुछ नेकियां इसने ले लीं, कुछ उसने ले लीं, और जब उसकी नेकियां ख़त्म हो गयीं और दूसरों के मुतालबे बाक़ी रह गये तो उनके मुतालबों के बक़द्र उनके गुनाह उस पर डाल दिये जायेंगे और इसके बाद उस (ज़ालिम और कसरत से इबादतों के मालिक) को जहन्नम में डाल दिया जायेगा। *(मिश्कात)*

फ़क़ीह अबुल्लैस रह॰ फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन जब लोग अपनी क़ब्रों से उठाये जायेंगे, उस वक़्त सत्तर बरस तो ऐसी हालत में खड़े रहेंगे कि उनकी तरफ़ इलतिफ़ात भी न होगा, वे इस परेशानी में इतना रोयेंगे कि आंसू ख़त्म हो जायेंगे और आंसुओं की जगह ख़ून निकलने लगेगा। इसके बाद मैदाने हश्र की तरफ़ बुलाये जायेंगे और फ़रिश्ते आसमानों से उतरने शुरू होंगे, हर

आसमान के फ़रिश्ते एक एक हलक़ा बना कर, एक आसमान वाले दूसरे आमसान वालों के पीछे खड़े होंगे, जिसको क़ुरआन पाक में :-

وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَاءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ الْمَلٰٓئِكَةُ تَنْزِيلًا ○ اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ الْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ ط وَكَانَ يَوْمًا عَلَى الْكَافِرِينَ عَسِيرًا ○ وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ يَقُولُ يٰلَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُولِ سَبِيلًا ○ يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِي لَمْ اَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيلًا ○ لَقَدْ اَضَلَّنِي عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ اِذْ جَآءَنِي وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْاِنْسَانِ خَذُولًا ○

"व यौ-म तशक़्क़-क़ुस्समा-उ बिल्ग़मा-मि व नुज़्ज़िलल् मलाइ-कतु तन्ज़ीला॰ अल् मुल्कु यौम-इज़ि निल्हक़्क़ु लिर्रह्मानि व का-न यौमन् अलल् काफ़िरी-न असीरा॰ व यौ-म य-अज़्ज़ु ज़्ज़ालिमु अला यदै-हि यक़ूलु या लै-त नित् त-ख़ज़्तु मअर्रसूलि सबीला॰ या वै ल-ता लै-तनी लम् अत्तख़िज़ फु ला नन् ख़लीला॰ ल-क़द् अज़ल्ल-नी अनि ज़्ज़िक्रि बअ्-द इज़् जा-अनी व कानश्शैतानु लिल्इंसानि ख़ज़ूला॰" (फ़ुर्क़ान, रूकूअ-3) में ज़िक्र किया गया है जिसका तर्जुमा यह है कि:

तर्जुमा:- "जिस दिन आसमान बदली पर से फट जायेगा और फ़रिश्ते कसरत से उतारे जायेंगे, उस दिन हुकूमत रहमान ही की होगी (यानी हिसाब किताब, जज़ा सज़ा में किसी का दख़ल न होगा) और वह दिन काफ़िरों पर बड़ा सख़्त होगा, जिस दिन ज़ालिम आदमी अपने हाथ काट काट खाएगा और कहेगा क्या ही अच्छा होता अगर मैं रसूल (अलैहिस्सलाम) के साथ रास्ते पर लग लेता, हाय मेरी शामत (कि मैं ने ऐसा न किया और) क्या ही अच्छा होता कि मैं फ़लां शख़्स को (जिसने नेक काम से रोका) दोस्त न बनाता, उसने मुझको नसीहत आने के बावजूद उससे बहका दिया और शैतान तो इंसान को (ऐन वक़्त पर सबको कुल्ली तौर पर) इम्दाद करने से जवाब दे ही देता है। (जिसका मुफ़स्सल क़िस्सा सूरः इब्राहीम में है।)

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि उस वक़्त हक़ तआला शानुहू की तरफ़ से इर्शाद होगा, ऐ जिन्न व इंस, मैं ने दुनिया में तुम्हें नसीहत कर दी थी, आज तुम्हारे ये आमाल तुम्हारे सामने हैं जो शख़्स अपने आमाल नामे में भलाई पाये वह अल्लाह तआला शानुहू का शुक्र अदा करे और जो नेकी न पाये वह अपने आप ही को मलामत करे (कि नसीहत की बात न मानी), उसके बाद

हक़ तआला शानुहू जहन्नम को हुक्म फ़रमावेंगे, उसका अज़ाब सामने आ जायेगा, जिसको देख कर हर शख़्स घुटनों के बल गिर जायेगा जिसको (सूरः जासियः, रूकूअ 4) में इर्शाद फ़रमाया है, कि तू हर जमाअत को देखेगा कि घुटनों के बल गिरी हुई है, और हर जमाअत अपने आमाल नामे की तरफ़ बुलाई जायेगी, उसके बाद लोगों के दर्मियान में फ़ैसले शुरु हो जायेंगे, हत्ताकि जानवरों तक के दर्मियान में भी इंसाफ़ किया जायेगा और बे सींग वाली बकरी के लिए सींग वाली बकरी से बदला लिया जायेगा, उसके बाद जानवरों को हुक्म हो जायेगा कि तुम मिट्टी बन जाओ, (तुम्हारा मामला ख़त्म हो गया) उस वक़्त काफ़िर लोग यह तमन्ना करेंगे, और काफ़िर कहेगा:-

"या लै त-नी कुन्तु तुराबा॰"

काश मैं मिट्टी हो जाता। *(अम्म रुकूअ 2)*

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि लोग जैसा कि अपनी मां के पेट से पैदा होते हैं, ऐसे ही नंगे मैदाने हश्र में होंगे। हज़रत आइशा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया या रसूलल्लहा सल्ल॰ सबके सामने नंगा होने से कैसी शर्म आयेगी, एक दूसरे को देखेंगे। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि उस वक़्त लोग अपनी मुसीबत में इस क़दर गिरफ़्तार होंगे कि एक दूसरे के देखने की मुहलत न होगी, सब की आंखें ऊपर की तरफ़ लगी हुई होंगी, हर शख़्स अपने आमाले बद के बक़द्र पसीने में ग़र्क़ होगा, किसी का पसीना पांव तक चढ़ा हुआ होगा, किसी का पिण्डली तक, किसी का पेट तक, किसी का मुंह तक आया हुआ होगा।

फ़रिश्ते अर्श के चारों तरफ़ हलक़ा बनाये हुए होंगे, उस वक़्त एक एक शख़्स का नाम लेकर पुकारा जायेगा, जिसको पुकारा जायेगा, वह मज्मे से निकल कर वहां हाज़िर होगा, जब वह हक़ तआला शानुहू के सामने खड़ा किया जायेगा तो ऐलान किया जायेगा कि इसके ज़िम्मे जिस जिस का मुतालबा हो, वह आये, उसके ज़िम्मे जिस जिस का कोई हक़ होगा या उसकी तरफ़ से उस पर किसी क़िस्म का ज़ुल्म होगा, वह एक एक करके पुकारा जायेगा और उसकी नेकियों में से उनके हुक़ूक़ अदा किये जायेंगे और अगर नेकियां नहीं होंगी या नहीं रहेंगी, तो उन लोगों के गुनाह उस पर डाल दिये जायेंगे और जब वह अपने गुनाहों के साथ दूसरे गुनाहों को भी सर ले लेगा तो उससे कहा जायेगा कि जा, अपनी मैया हाविया में चला जा (अल्क़ारिअः में इसका बयान है यानी दहकते हुए जहन्नम में)

हिसाब और किताब की इस शिद्दत को देखते हुए कोई मुक़र्रब फ़रिश्ता या नबी ऐसा न होगा जिसको अपना ख़ौफ़ न हो, मगर वे लोग जिनको हक़ तआला शानुहू महफ़ूज़ फ़रमा दे। उस वक़्त हर शख़्स से चार चीज़ों का सवाल होगा (जैसा कि पहले मुफ़स्सल हदीस में इसी फ़स्ल में नं॰ 6 पर गुज़र चुका) कि उम्र किस काम में ख़त्म की, बदन किस क़ाम में लगाया गया, अपने इल्म पर क्या अमल किया और माल कहां से कमाया और कहां ख़र्च किया?

इक्रिमा रज़ि॰ कहते हैं कि उस दिन बाप अपने बेटे से कहेगा कि मैं तेरा बाप था, मैं तेरा वालिद था, वह बेटा उसके एहसानात का इक़रार करेगा, इसके बाद बाप कहेगा कि मुझको सिर्फ़ एक नेकी की ज़रूरत है जो एक ज़र्रा के बराबर हो, शायद उसकी वजह से मेरा पल्ला झुक जाये, बेटा कहेगा कि मुझे ख़ुद ही मुसीबत पेश आ रही है, मुझे अपना हाल मालूम नहीं है कि मुझ पर क्या गुज़रेगी, मैं तो कोई नेकी नहीं दे सकता। उसके बाद वह शख़्स अपनी बीवी से इसी तरह अपने एहसान और ताल्लक़ुात जता कर मांगेगा, वह भी इसी तरह इंकार कर देगी, (ग़रज़ इसी तरह से हर शख़्स से मांगता फिरेगा) यही वह चीज़ है जिसको हक़ तआला शानुहू नेः-

وَإِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ إِلَىٰ حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ط(فاطر ع ٣)

"व इन् तद्उ मुस्क़्-लतुन् इला हिम्लिहा ला युह्म-लु मिन्हु शैअंव् व लौ का-न ज़ा क़ुर्बा॰" *(फ़ातिर, रूकूअ 3)*

में ज़िक्र फ़रमाया है जिसका तर्जुमा यह है :-

"और (उस दिन) कोई दूसरे का बोझ (गुनाह का) न उठावेगा (और ख़ुद तो कोई किसी की क्या मदद करता) अगर कोई बोझ का लदा हुआ (यानी गुनाहगार) किसी को अपना बोझ उठाने के लिए बुलावेगा तब भी उस में से कुछ बोझ न उठाया जायेगा। (यानी किसी क़िस्म की उसकी मदद न करेगा) अगरचे वह शख़्स क़राबतदार ही क्यों न हो। *(तंबीहुल ग़ाफ़िलीन)*

इक्रिमा रज़ि॰ की यह रिवायत दुर्रे मंसूर में ज़्यादा वाज़ेह अल्फ़ाज़ में है, जिसका तर्जुमा यह है कि :-

बाप बेटे से अव्वल पूछेगा कि मैंने दुनिया में तेरे साथ कैसा बर्ताव किया था, वह बहुत तारीफ़ बाप के बर्ताव की करेगा, उसके बाद बाप कहेगा कि मैं

आज तुझसे सिर्फ़ एक नेकी मांगता हूँ, शायद उसी से मेरा काम चल जाये, बेटा कहेगा कि अब्बा जान, तुमने बहुत ही मुख़्तसर चीज़ कही है, लेकिन इसके बावजूद मजबूर हूँ, मुझे ख़ुद यही ख़ौफ़ है जो तुम्हें है, उसके बाद यही सारा सवाल जवाब बीवी से होगा जैसा कि इर्शाद है

يَوْمًا لَّا يَجْزِي وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ ﴿الاية﴾

"यौमल् ला यज्ज़ी वालिदुन् अव् व-ल दिही॰"

और इर्शाद है:-

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ ﴿الاية﴾

"यौ-म यफ़ि र्रुल मर्-उ मिन् अख़ीहि॰" *(अलआयत)*

इनमें से पहली आयते शरीफ़ा सूरः लुक़्मान के आख़िरी रूकूअ् की है:-

"या अय्यु हन्ना-सुत्तक़ू रब्ब-कुम्" अल आयत। हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है :-

"ऐ लोगो ! अपने रब से डरो और उस दिन से डरो, जिस में न कोई बाप अपने बेटे की तरफ़ से कुछ मुतालबा अदा कर सकेगा और न कोई बेटा ही ऐसा है कि वह अपने बाप की तरफ़ से ज़रा सा भी मुतालबा अदा कर दे, और बेशक अल्लाह तआला का वायदा सच्चा है (कि यह दिन ज़रूर आने वाला है) सो तुमको दुन्यवी ज़िन्दगी धोखे में न डाल दे (कि तुम उस में मुन्हमिक होकर उस दिन को भूल जाओ) और न तुमको धोखा देने वाला (शैतान) धोखे में डाल दे (कि उसके बहकावे में आकर तुम उस दिन से ग़ाफ़िल हो जाओ।)

दूसरी आयते शरीफ़ा सूरः अ-ब-स में है :-

فَاِذَا جَآءَتِ الصَّآخَّةُ يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ ﴿الاية﴾

"फ़ इज़ा जा-अ-तिस्सा-ख़्ख़-तु यौ-म यफ़िर्रुल्मर्-उ"

(अल आयत)

'पस जिस दिन कानों को बहरा कर देने वाला शोर बरपा होगा (यानी क़ियामत का दिन आ जायेगा, वह ऐसा दिन होगा) जिस दिन आदमी अपने भाई से, अपनी मां से, अपने बाप से और अपनी बीवी से और अपनी औलाद से भागेगा (कोई किसी के काम न आयेगा) उस दिन हर शख़्स को अपना ही ऐसा मशग़ला होगा जो उसको दूसरे की तरफ़ मुतवज्जह न होने देगा।

इस आयते शरीफ़ा की तफ़्सीर में क़तादा रह० फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन हर शख़्स को यह बात बहुत शाक़ होगी कि कोई उसकी जान पहचान वाला क़रीबी रिश्तेदार नज़र पड़ जाये इस डर से कि कहीं वह अपना कोई मुतालबा पेश न कर दे। *(दुर्रे मंसूर)*

क़ुरआन पाक में बहुत कसरत से यह मज़्मून मुख़्तलिफ़ उन्वानात से ज़िक्र फ़रमाया गया है, सूरः बक़रः के रूकूअ 6 में है :-

وَاتَّقُوا يَوْمًا لَّا تَجْزِي نَفْسٌ عَن نَّفْسٍ (الاية)

"व त्त-क़ू यौ मल्ला तज़्ज़ी नफ़्सुन् अन्नफ़्सिन्" *(अलआयत)*

"और डरो तुम ऐसे दिन से जिसमें कोई शख़्स किसी की तरफ़ से न (जानी) बदला दे सकेगा (मसलन एक की नमाज़ के बदले में दूसरे की नमाज़ क़ुबूल कर ली जाये) और न किसी की तरफ़ से कोई सिफ़ारिश क़ुबूल हो सकती है और न किसी की तरफ़ से कोई फ़िदया (माली मुआवज़ा) लिया जा सकता है और न उनकी कोई मदद की जायेगी (कि कोई अपने ज़ोर से उनके अज़ाब को रोक दे, यह ना मुम्किन है।)

इस आयते शरीफ़ा में इआनत (मदद) के जितने ज़रिये हो सकते थे, सब की नफ़ी फ़रमा दी, इसलिए कि किसी की मदद के चार ही तरीक़े हो सकते हैं:-

1. एक यह कि कोई ज़ोरदार शख़्स बीच में हाइल हो जाये और अपने ज़ोर से रोक दे, यह नुसरत है, इसकी भी नफ़ी फ़रमा दी।

2. दूसरे बग़ैर ज़ोर के कोई शख़्स अज़ाब को रोक दे, इसकी दो सूरतें हैं:-

बग़ैर किसी क़िस्म का मुआवज़ा दिये रोके, यह सिफ़ारिश है या कोई किसी क़िस्म का बदला देकर रोके।

इसकी दो क़िस्में हैं कि जानी बदला दे या माली बदला दे, इनकी भी दोनों की नफ़ी फ़रमा दी गयी।

इसी तरह और भी बहुत से मवाक़ेअ् में यह मज़्मून मुख़्तलिफ़ उनवानात से आया है। इसके मुताल्लिक़ यह बात ज़ेहन में रखना चाहिए कि एक तो कुफ़्फ़ार का मामला है इनमें तो बिल इत्तिफ़ाक़ यही सब चीज़ें हैं, जो ऊपर

ज़िक्र की गयी हैं कि कोई नबी या वली या फ़रिश्ता कितना ही मुक़र्रब क्यों न हो, कुफ़्फ़ार के अज़ाब को नहीं हटा सकता।

दूसरा मामला गुनहगार मुसलमानों का है, इनके बारे में भी इस क़िस्म की आयात और अहादीस वारिद हुई हैं, ये सब एक ख़ास वक़्त के एतिबार से हैं इसके बाद सिफ़ारिश की इजाज़त हो जायेगी, चुनांचे क़ुरआन पाक में मुतअद्दद जगह यह मज़्मून वारिद है जिनमें से एक जगह इर्शाद है

يَوْمَئِذٍ لَّا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ (طٰه ع ٦)

"यौ-म इज़िल्ला तन्फ़-अुश्श फ़ा-अ़तु इल्ला मन् अज़ि-न ल-हू"

(ताहा, रूकूअ 6)

"उस दिन किसी को सिफ़ारिश नफ़ा न देगी मगर ऐसे शख़्स को (अंबिया और औलिया की सिफ़ारिश नफ़ा देगी) जिसके वास्ते अल्लाह तआला शानुहू ने सिफ़ारिश की इजाज़त दे दी हो और उसके वास्ते (किसी का बोलना) पसंद कर लिया हो।"

इस क़िस्म के मज़ामीन भी कसरत से वारिद हैं, लेकिन यह बात कि किसके लिए सिफ़ारिश की इजाज़त होती है, किसी को मालूम नहीं है। गो हक़ तआला शानुहू के फ़ज़्ल से उम्मीदवार हर शख़्स को रहना ही चाहिए, लेकिन यक़ीन किसी का भी नहीं है, इस वजह से यह सख़्त तरीन दिन निहायत ही ख़ौफ़ व ख़तरे का दिन है। इसकी सख़्ती के वास्ते जो कुछ बचाव किया जा सकता है वह आज ही किया जा सकता है। सदक़े की कसरत को उस दिन की शिद्दत और सख़्ती से बचाने में ख़ास दख़ल है। पहली फ़सल में कसरत से आयात और रिवायात में यह मज़्मून गुज़र चुका है।

हुज़ूर सल्ल० का मशहूर इर्शाद है (जहन्नम की) आग से बचो चाहे आधी खजूर ही से क्यों न हो।

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि सदक़ा ख़ताओं को ऐसा बुझा देता है जैसा कि पानी आग को बुझा देता है। *(इत्तिहाफ़)*

हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि क़ियामत के दिन हर शख़्स अपने सदक़े के साये में होगा। *(इत्तिहाफ़)*

यानी जिस क़दर आदमी के सदक़े की मिक़्दार बढ़ी हुई होगी, उतना ही

गहरा साया उस सख़्त दिन में होगा, जिस में गर्मी की शिद्दत से मुंह तक पसीना आया हुआ होगा। हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि सदक़ा हक़ तआला शानुहू के ग़ुस्से को भी रोकता है और सू-ए-ख़ात्मा (बुरी मौत) से भी हिफ़ाज़त का सबब है। *(मिश्कात)*

हज़रत लुक़्मान अलैहि॰ की अपने बेटे को वसीयत है कि जब तुझसे कोई ख़ता सादिर हो, सदक़ा किया कर। *(एह्या)*

पहली फ़स्ल की हदीस नं॰ 10 में यह क़िस्सा मुफ़स्सल गुज़र चुका है कि एक बदकार फ़ाहिशा औरत की कुत्ते को पानी पिलाने से मग़्फ़िरत हो गयी।

उबैद बिन उमैर रज़ि॰ कहते हैं कि मैदाने हश्र में लोग इंतिहाई भूखे होंगे, इंतिहाई प्यासे और बिल्कुल नंगे होंगे, लेकिन जिस शख़्स ने अल्लाह के वास्ते किसी को खाना खिलाया होगा, उसको हक़ तआला शानुहू खाना खिलायेंगे और जिसने अल्लाह के वास्ते किसी को पानी पिलाया होगा, उसको सैराब करेंगे और जिसने अल्लाह तआला शानुहू के वास्ते किसी को कपड़ा दिया होगा, उसको लिबास पहनायेंगे। *(एह्या)*

पहली फ़स्ल में हदीस नं॰ 11 के ज़ैल में गुज़रा है कि क़ियामत के दिन जहन्नमी एक सफ़ में खड़े किये जायेंगे, उन पर एक (कामिल वली) मुलसमान का गुज़र होगा, उस सफ़ में से एक शख़्स कहेगा कि तू मेरे लिए हक़ तआला शानुहू के यहां सिफ़ारिश कर दे। वह पूछेगा कि तू कौन है? वह जहन्नमी कहेगा, तू मुझे नहीं जानता मैं ने फ़लां वक़्त दुनिया में तुझे पानी पिलाया था।

दूसरी हदीस में गुज़रा है कि क़ियामत के दिन जब जन्नती और जहन्नमी लोगों की सफ़ें लग जायेंगी तो जहन्नमी सफ़ों में से एक शख़्स की नज़र जन्नती सफ़ों में से एक शख़्स पर पड़ेगी तो वह याद दिलायेगा कि मैं ने दुनिया में तेरे साथ फ़लां एहसान किया था, इस पर वह शख़्स उसका हाथ पकड़ कर हक़ तआला शानुहू की बारगाह में ले जायेगा और अर्ज़ करेगा कि या अल्लाह, इसका मुझ पर फ़लां एहसान है, हक़ तआला शानुहू की रहमत से उसको बख़्श दिया जायेगा।

एक और हदीस में गुज़रा है कि क़ियामत के दिन ऐलान होगा कि उम्मते मुहम्मदिया के फ़क़ीर लोग कहां हैं? उठो और लोगों को मैदाने क़ियामत में तलाश कर लो, जिस शख़्स ने मेरे लिए तुम में से किसी को एक लुक़्मा दिया

हो या मेरे लिए एक घूँट पानी पिलाया हो, या नया या पुराना कपड़ा दिया हो, उसका हाथ पकड़ कर जन्नत में दाख़िल कर दो। इस पर फ़ुक़रा-ए-उम्मत उठेंगे और उनको चुन चुन कर जन्नत में दाख़िल कर देंगे।

एक और हदीस में गुज़रा कि क़ियामत के दिन एक ऐलान करने वाला ऐलान करेगा, कहां हैं वे लोग, जिन्होंने फ़क़ीरों का और मिस्कीनों का इक्राम किया, आज तुम जन्नत में ऐसी तरह दाख़िल हो जाओ कि न तुम पर किसी क़िस्म का ख़ौफ़ है और न तुम ग़मगीन होगे।

इस क़िस्म के मज़ामीन की कई रिवायतें उस जगह गुज़र चुकी हैं। उसी फ़स्ल की हदीस नं॰ 13 के ज़ैल में गुज़रा है कि जो शख़्स किसी मुसलमान से किसी मुसीबत को ज़ायल करता है, हक़ तआला शानुहू क़ियामत की मसाइब में से उसकी कोई मुसीबत ज़ायल फ़रमा देंगे, और जो शख़्स किसी मुसलमान की पर्दापोशी करता है, हक़ तआला शानुहू क़ियामत के दिन उसकी पर्दापोशी फ़रमावेंगे।

हदीस 14 के ज़ैल में गुज़रा कि जो शख़्स अपने मुज़्तर भाई की मदद करे, हक़ तआला शानुहू उसको उस दिन साबित क़दम रखेंगे, जिस दिन पहाड़ भी अपनी जगह क़ायम न रह सकेंगे (यानी क़ियामत के दिन)।

पहली फ़स्ल की आयात में नं॰ 34 पर क़ुरआन पाक की तवील आयत गुज़र चुकी है कि वे लोग हक़ तआला शानुहू की मुहब्बत में खाना खिलाते हैं, यतीम को और मिस्कीन को और (काफ़िर) क़ैदियों को, और कहते हैं कि हम तुमको महज़ अल्लाह के वास्ते खिलाते हैं, न तो हम तुमसे इसका बदला चाहते हैं न शुक्रिया, बल्कि हमको अपने रब की तरफ़ से एक निहायत तल्ख़ और सख़्त (क़ियामत के) दिन का ख़ौफ़ है, पस अल्लाह जल्ल शानुहू उनको उस दिन की सख़्ती से महफ़ूज़ रखेगा और उनको सुरूर और ताज़गी अता फ़रमायेगा।

ग़रज़ उस फ़स्ल में कसरत से इस क़िस्म के मज़ामीन गुज़र चुके हैं। कि क़ियामत के दिन की सख़्ती के बचाव के लिए सदक़े की कसरत निहायत मुफ़ीद है और इस आयते शरीफ़ा में तो गोया ख़ुद हक़ तआला शानुहू की तरफ़ से इसका वायदा भी हो गया, फिर इससे बढ़ कर और क्या बात हो सकती है।

सातवीं फ़स्ल

ज़ाहिदों और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने वालों के वाक़िआत

इस फ़स्ल में ज़ाहिदों और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने वालों के कुछ वाक़िअता भी नमूने के तौर पर पेश करते हैं कि जिन लोगों ने दुनिया और आख़िरत की हक़ीक़त को समझ लिया, उन्होंने इस धोखे के घर से कैसी बे रग़बती बरती और आख़िरत के लिये क्या कुछ जमा कर लिया। ज़ुहद और सख़ावत मफ़्हूम और सूरते अमल के लिहाज़ से दो अलाहिदा अलाहिदा चीज़ें हैं, लेकिन माल के एतिबार से क़रीब क़रीब हैं, इसलिए कि ज़ुहद यानी दुनिया से बे रग़बती जिस शख़्स में होगी, सख़ावत उसके लिए लाज़िम है, जब उसको इसके रखने की रग़बत ही नहीं, तो मौजूद होने की सूरत में वह ला मुहाला सख़ावत ही करेगा। इसी तरह से सख़ावत वही शख़्स कर सकता है जिसको माल की मुहब्बत न हो और जितनी ज़्यादा मुहब्बत माल की होगी, उतना ही बुख़्ल उसमें करेगा, इसलिए इस फ़स्ल में दोनों क़िस्म के वाक़िआत को एक ही जगह जमा कर दिया और इसीलिए इस रिसाले में जो फ़ज़ाइले सदक़ात में था, ज़ुहद की रिवायात और आयात भी ज़िक्र की गयीं कि दुनिया से बे रग़बती पैदा करना अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने का ज़ीना है और जब तक इस गन्दगी से तबीअत को मुहब्बत और उन्स रहेगा, कभी भी ख़र्च करने को तबीअत न उभरेगी, अगर अपना दिल भी किसी वक़्त चाहेगा तो तबीअत ख़र्च पर अमादा न होगी। इसी को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बेहतरीन मिसाल से ज़ाहिर फ़रमाया।

इर्शादे आली है कि बख़ील की और सदक़ा करने वाले की (जिसकी

आदत कसरत से सदके की हो) ऐसी मिसाल है जैसा कि दो आदमी हों, उनके ऊपर लोहे की ज़िरहें इस तरह लिपटी हुई हों कि उन दोनों के हाथ भी ज़िरहों के अंदर ही सीने पर चिमटे हुए हों, ज़िरह से बाहर निकले हुए न हों, पस सदक़ा वाला यानी सख़ी शख़्स जो सदक़ा करने का आदी है, जब सदक़ा करने का इरादा करता है तो वह ज़िरह खुद ब खुद खुलती चली जाती है (और हाथ बे तकल्लुफ़ फ़ौरन ज़िरह से बाहर आ जाता है) और बख़ील जब इरादा किसी सदके का करता है तो वह ज़िरह और ज़्यादा सुकड़ जाती है जिससे हाथ अपनी जगह से जुंबिश ही नहीं कर सकता। (मिश्कात)

मलतब यह है कि सख़ी जब ख़र्च का इरादा करता है तो उसका दिल उसके लिए फ़राख़ हो जाता है जिस से वह बे तकल्लुफ़ ख़र्च करता है, और बख़ील अगर कहे सुने या किसी और वजह से किसी वक़्त इरादा भी कर लेता है तो अंदर से कोई चीज़ इस तरह उसको पकड़ लेती है जैसा कि लोहे की ज़िरह ने उसके हाथ बांध दिये हों, कि हाथों के ज़ोर से ज़िरह के अंदर से निकालना भी चाहता है यानी दिल को बार बार समझाता है मगर वह मानता ही नहीं, हाथ उठता ही नहीं, बहुत ही सही और सच्ची मिसाल है, रोज़मर्रा का मुशाहदा है कि बख़ील आदमी ख़र्च करना भी चाहता है तो हाथ नहीं उठता। कहीं दस रूपये ख़र्च करने का मौक़ा होगा तो वह दस पैसे भी मुश्किल से निकालेगा।

1. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ की पूरी ज़िन्दगी के वाक़िअता इस कसरत से इस चीज़ की मिसालें हैं कि उनका एहाता भी दुशवार है:-

ग़ज़वा-ए-तबूक के वक़्त जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चंदे की तहरीक फ़रमाई और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ का उस वक़्त जो कुछ घर में रखा था, सब कुछ जमा करके हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में पेश कर देना मशहूर वाक़िआ है, और जब हुज़ूर सल्ल॰ ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि अबू बक्र, घर में क्या छोड़ा? तो आपने फ़रमाया अल्लाह और उसका रसूल सल्ल॰ (यानी उनकी खुशनूदी का ज़ख़ीरा) घर में मौजूद है।

हिकायाते सहाबा में यह क़िस्सा मुफ़स्सल ज़िक्र किया गया है और

---

1. हिकायाते सहाबा अक्सी, पता: जव्वाद बुक डिपो, 422, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6

इसके दूसरे हज़रात के मुतअद्द वाक़िआत हिकायाते सहाबा रज़ि॰ में भी लिख चुका हूँ, वहां देखा जाये तो मालूम हो कि ईसार, हमदर्दी और अल्लाह की राह में ख़र्च करना इन्हीं हज़रात का हिस्सा था कि इसका कुछ भी शाइबा हम लोगों को मिल जाये तो न मालूम हम इसको क्या समझें, लेकिन इन हज़रात के यहां यह रोज़मर्रा के मामूली वाक़िअता थे बिलख़ुसूस हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ के मुताल्लिक़ इससे बढ़ कर क्या वज़ाहत हो सकती है कि ख़ुद हक़ तआला शानुहू ने क़ुरआन पाक में तारीफ़ के मौक़े पर फ़रमाया:-

وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى (والیل)

"व-स-युजन्न-बुहल् अतक़ा" *(आयत वल्लैल)*

"और उस (आग से) वह शख़्स दूर रखा जायेगा जो बड़ा परहेज़गार है, जो अपना माल इस ग़रज़ से (अल्लाह के रास्ते में) देता है कि पाक हो जाये और बजुज़ अपने आलीशान परवरदिगार की रिज़ाजोई के (कोई और उसकी ग़र्ज़ नहीं है और) किसी का उसके ज़िम्मे कोई एहसान न था कि उसका बदला उतारना मक़्सूद हो (इस में निहायत ही मुबालग़ा इख़्लास का है, क्योंकि किसी के एहसान का बदला उतारना भी मतलूब और मन्दूब है, मगर फ़ज़ीलत में एहसान इब्तिदाई के बराबर नहीं)। *(बयानुल क़ुरआन)*

इब्ने जौज़ी रह॰ कहते हैं कि इस बात पर इत्तिफ़ाक़ है कि यह आयते शरीफ़ा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ की शान में नाज़िल हुई।

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि मुझे किसी के माल ने इतना नफ़ा नहीं दिया जितना अबूबक्र के माल ने दिया। हुज़ूर सल्ल॰ का यह इर्शाद सुन कर हज़रत अबू बक्र रज़ि॰ रोने लगे और अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह सल्ल॰ क्या मैं और मेरा माल आपके सिवा किसी और का है? हुज़ूर सल्ल॰ का यह इर्शाद बहुत से सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ से बहुत सी रिवायात में नक़ल किया गया।

सईद बिन मुसैयिब रह॰ की रिवायत में इसके बाद यह भी है कि हुज़ूर सल्ल॰ हज़रत अबू बक्र रज़ि॰ के माल में इसी तरह तसर्रुफ़ फ़रमाते थे जिस तरह अपने माल में फ़रमाते थे।

हज़रत उर्व: रज़ि॰ कहते हैं कि जब हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ मुसलमान हुए तो उनके पास चालीस हज़ार दिरम थे, जो सब हुज़ूर सल्ल॰ के

ऊपर ख़र्च कर दिये (यानी हुज़ूर सल्ल॰ की ख़ुशनूदी में)

एक और हदीस में है कि इस्लाम लाने के वक़्त चालीस हज़ार दिरम थे और हिजरत के वक़्त पांच हज़ार रह गये थे। यह सारी रक़म ग़ुलामों के आज़ाद करने में (जिनको इस्लाम लाने के जुर्म में अज़ाब दिया जाता था) और इस्लाम के दूसरे कामों में ख़र्च किये गये। *(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)*

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि॰ कहते हैं कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ ज़ओफ़ ज़ओफ़ ग़ुलामों को ख़रीद कर आज़ाद किया करते थे। इनके वालिद अबू क़ुहाफ़ा ने फ़रमाया कि अगर तुम्हें ग़ुलाम ही आज़ाद करने हैं तो क़वी क़वी ग़ुलामों को ख़रीद कर आज़ाद किया करो कि वे तुम्हारी मदद भी कर सकें, वक़्त पर काम भी आ सकें। हज़रत अबू बक्र रज़ि॰ ने फ़रमाया कि (मैं अपने लिए आज़ाद नहीं करता) मैं तो महज़ अल्लाह तआला की ख़ुशनूदी के लिए आज़ाद करता हूँ। *(दुर्रे मंसूर)*

और हक़ तआला शानुहू के यहां ज़ओफ़ कमज़ोर की मदद का जितना अज्र है, वह क़वी की मदद से बहुत ज़्यादा है।

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि कोई शख़्स ऐसा नहीं जिसका मुझ पर एहसान हो और मैं ने उसके एहसान का बदला न दे दिया हो, मगर अबूबक्र रज़ि॰ का एहसान मेरे ज़िम्मे है (जिसका बदला मैं नहीं दे सका) हक़ तआला शानुहू ख़ुद ही क़ियामत के दिन उसके एहसान का बदला अता फ़रमायेंगे। मुझे किसी के माल ने इतना नफ़ा नहीं दिया, जितना अबू बक्र रज़ि॰ के माल ने नफ़ा दिया। *(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)*

2. हज़रत इमाम हसन रज़ि॰ की ख़िदमत में एक शख़्स हाज़िर हुए और अपनी हाजत पेश करके कुछ मदद चाही और सवाल किया, आपने फ़रमाया, तेरे सवाल की वजह से जो मुझ पर हक़ क़ायम हो गया है, वह मेरी निगाह में बहुत ऊँचा है, और तेरी जो मदद मुझे करना चाहिए वह मेरे नज़दीक बहुत ज़्यादा मिक़्दार है, और मेरी माली हालत उस मिक़्दार के पेश करने से आजिज़ है जो तेरी शान के मुनासिब हो, और अल्लाह के रास्ते में आदमी जितना भी ज़्यादा से ज़्यादा ख़र्च करे वह कम ही है, लेकिन मैं क्या करूँ? मेरे पास इतनी मिक़्दार नहीं है जो तेरे सवाल के शुक्र के मुनासिब हो। अगर तू इसके लिए तैयार हो जो मेरे पास मौजूद है, उसको तू ख़ुशी से क़ुबूल कर ले और मुझे इस पर मजबूर न

कर कि मैं उस मिक़्दार को कहीं से हासिल करूँ जो तेरे मर्तबा के मुनासिब हो और तेरा जो हक़ मुझ पर वाजिब हो गया है, उसको पूरा कर सकें, तो मैं ब-खुशी हाज़िर हूँ।

उस साइल ने कहा, ऐ रसूलुल्लाह सल्ल० के बेटे, मैं जो कुछ आप देंगे, उसी को क़ुबूल कर लूँगा और इस पर शुक्र गुज़ार हूँगा और इससे ज़्यादा न करने में आपको माज़ूर समझूँगा। इस पर हज़रत हसन रज़ि० ने अपने ख़ज़ांची से फ़रमाया कि उन तीन लाख दिरहमों में से (जो तुम्हारे पास रखवाये थे) जो बचे हों, ले आओ। वह पचास हज़ार दिरहम लाये (कि इसके अलावा वे सब ख़र्च कर चुके थे)

हज़रत हसन रज़ि० ने फ़रमाया कि पांच सौ दीनार(अशर्फ़ियां) और भी तो कहीं थे, ख़ज़ांची ने अर्ज़ किया कि वे भी मौजूद हैं। आपने फ़रमाया कि वे भी ले आओ। जब यह सब कुछ आ गया तो उस साइल से कहा कि कोई मज़दूर ले आओ, जो इनको तुम्हारे घर तक पहुँचा दे, वह दो मज़दूर लेकर आये, हज़रत हसन रज़ि० ने वह सब कुछ उनके हवाले कर दिया और अपने बदने मुबारक से चादर उतार कर मरहमत फ़रमाई कि इन मज़दूरों की मज़दूरी भी तुम्हारे घर तक पहुँचाने की मेरे ही ज़िम्मे है, लिहाज़ा यह चादर फ़रोख़्त करके इनकी मज़दूरी में दे देना।

हज़रत हसन रज़ि० के ग़ुलामों ने अर्ज़ किया कि हमारे पास तो अब खाने के लिए एक दिरम भी बाक़ी नहीं रहा, आपने सब का सब ही दे दिया, हज़रत हसन रज़ि० ने फ़रमाया कि मुझे अल्लाह तआला शानुहू की ज़ात से इसकी क़वी उम्मीद है कि वह अपने फ़ज़्ल से मुझे इसका बहुत सवाब देगा। *(एहया)*

सब कुछ दे देने के बाद जब कि अपने पास कुछ भी न रहा और मिक़्दार भी इतनी ज़्यादा थी, फिर भी इसका क़लक़ और इसकी नदामत थी कि साइल का हक़ अदा न हो सका।

3. बसरा के चंद क़ारी हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि हमारा एक पड़ोसी है जो बहुत कसरत से रोज़े रखने वाला है, बहुत ज़्यादा तहज्जुद पढ़ने वाला है, उस की इबादत को देख कर हम में से हर शख़्स रश्क करता है और इसकी तमन्ना करता है कि उसकी सी इबादत हम भी किया करें, उसने अपनी लड़की का

निकाह अपने भतीजे से कर दिया है लेकिन ग़रीब के पास जहेज़ के लिऐ कोई चीज़ नहीं है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ उन हज़रात को लेकर अपने घर तशरीफ़ ले गये और सन्दूक़ खोला जिस में से छः तोड़े (रूपया या अशर्फ़ी की थैली तोड़ा कहलाती है) निकाले और उन हज़रात के हवाले कर दिये कि उसको दे दें, ये लेकर चलने लगे तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि॰ ने उनसे फ़रमाया कि हम लोगों ने उसके साथ इंसाफ़ का बर्ताव नहीं किया, यह माल उसके हवाले कर दिया जायेगा तो ग़रीब को बड़ी दिक्क़त होगी, वह इस जहेज़ के इंतिज़ाम के झगड़े में लग जायेगा जिससे उसकी मश्ग़ूली बढ़ जायेगी, उसकी इबादत में हर्ज होगा। इस दुनिया कमबख़्त का ऐसा दर्जा नहीं है कि इसकी वजह से एक इबादत गुज़ार मोमिन का हर्ज किया जाये। हमारी इस में क्या शान घट जायेगी कि एक दीनदार की ख़िदमत हम ही कर दें। लिहाज़ा इस माल से शादी का सारा इंतिज़ाम हम सब मिलकर कर दें और सामान तैयार करके उसके हवाले कर दें। वे हज़रात भी इस पर राज़ी हो गये और सारा सामान उस रक़म से मुकम्मल तैयार करके उस फ़क़ीर के हवाले कर दिया। *(एहया)*

4. अबुल हसन मदाइनी रह॰ कहते हैं कि हज़रत इमाम हसन रज़ि॰, इमाम हुसैन रज़ि॰ और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि॰ हज के लिऐ तशरीफ़ ले जा रहे थे, रास्ते में उनके सामान के ऊँट उनसे जुदा हो गये। ये भूखे प्यासे चल रहे थे, एक ख़ेमे पर उनका गुज़र हुआ, उसमें एक बूढ़ी औरत थी, इन हज़रात ने उससे पूछा कि हमारे पीने को कोई चीज़ (पानी या दूध, लस्सी वग़ैरह) तुम्हारे पास मौजूद है? उसने कहा, है। ये लोग अपनी ऊँटनियों पर से उतरे, उस बुढ़िया के पास एक बहुत मामूली सी बकरी थी, उसकी तरफ़ इशारा करके उसने कहा कि इसका दूध निकाल लो और उसको थोड़ा थोड़ा पी लो।

उन हज़रात ने उस का दूध निकाला और पी लिया, फिर उन्होनें पूछा कि कोई खाने की चीज़ भी है? उस बुढ़िया ने कहा कि यही बकरी है, इसको तुममें से कोई ज़िब्ह कर ले तो मैं पका दूँगी। उन्होनें उसको ज़िब्ह किया, उसने पकाया। ये हज़रात खा पी कर जब शाम को चलने लगे तो उन्होनें उस बुढ़िया से कहा कि हम हाश्मी लोग हैं, इस वक़्त हज के इरादे से जा रहे हैं, अगर ज़िंदा सलामत वापस मदीना पहुँच जायें तो तू हमारे पास आना, तेरे इस एहसान का बदला देंगे।

ये हज़रात तो फ़रमा कर चले गये, शाम को जब उसका ख़ाविंद (कहीं जंगल वग़ैरह से) आया तो उस बुढ़िया ने हाश्मी लोगों का क़िस्सा सुनाया, वह बहुत ख़फ़ा हुआ कि तूने अजनबी लोगों के वास्ते बकरी ज़िब्ह कर डाली, मालूम नहीं कौन थे, कौन नहीं थे, फिर कहती है कि हाश्मी थे।

ग़रज़ वह ख़फ़ा होकर चुप हो गया, कुछ ज़माने के बाद इन दोनों मियां बीवी को गुरबत ने जब बहुत सताया तो ये मेहनत, मज़दूरी की नीयत से मदीना मुनव्वरा गये। दिन भर मेंगनियां चुगा करते और उन को बेच कर गुज़र किया करते। एक दिन वह बुढ़िया मेंगनियां चुग रही थी, हज़रत हसन रज़ि॰ ने उसको पहचान लिया और अपने ग़ुलाम को भेजकर उसको अपने पास बुलवाया और फ़रमाया कि अल्लाह की बंदी, तू मुझे भी पहचानती है? उसने कहा, मैं ने तो नहीं पहचाना, आपने फ़रमाया कि मैं तेरा वही मेहमान हूँ, दूध और बकरी वाला।

बुढ़िया ने फिर भी न पहचाना और कहा, क्या ख़ुदा की क़सम तुम वही हो? हज़रत हसन रज़ि॰ ने फ़रमाया मैं वही हूँ और यह फ़रमा कर आपने अपने ग़ुलामों को हुक्म दिया कि इसके लिए एक हज़ार बकरियां ख़रीद दी जायें, चुनांचे फ़ौरन ख़रीदी गयीं और उन बकरियों के अलावा एक हज़ार दीनार (अशर्फ़ियां) नक़द भी अता फ़रमाये और अपने ग़ुलाम के साथ उस बुढ़िया को छोटे भाई हज़रत हुसैन रज़ि॰ के पास भेज दिया।

हज़रत हुसैन रज़ि॰ ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि भाई ने क्या बदला अता फ़रमाया? उसने कहा कि एक हज़ार बकरियां और एक हज़ार दीनार, यह सुनकर उतनी ही मिक़्दार दोनों चीज़ों की हज़रत हुसैन रज़ि॰ ने अता फ़रमायी, इसके बाद उसको हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि॰ के पास भेज दिया। उन्होंने तहक़ीक़ फ़रमाया कि इन दोनों हज़रात ने क्या क्या मरहमत फ़रमाया, और जब मालूम हुआ कि यह मिक़्दार है तो उन्होंने दो हज़ार बकरियां और दो हज़ार दीनार अता फ़रमाये और फ़रमाया कि अगर तू मुझसे मिल लेती तो मैं इससे बहुत ज़्यादा देता। यह बुढ़िया चार हज़ार बकरियां और चार हज़ार दीनार (अशर्फ़ियां) लेकर ख़ाविंद के पास पहुँची कि यह उस ज़ईफ़ और कमज़ोर बकरी का बदला है।

(एह्या)

5. अब्दुल्लाह बिन आमिर बिन कुरेज़ रज़ि॰, हज़रत उस्मान रज़ि॰ के चचाज़ाद भाई, एक मर्तबा (ग़ालिबन रात का वक़्त होगा) मस्जिद से बाहर आये,

अपने मकान तंहा जा रहे थे। रास्ते में एक नौजवान लड़का नज़र पड़ा, वह उनके साथ हो लिया। उन्होंने फ़रमाया कि तुम्हें कुछ कहना है? उसने अर्ज़ किया, जनाब की सलाह व फ़लाह का मुतमन्नी हूँ, कुछ अर्ज़ करना नहीं है, मैं ने जनाब को तंहा इस वक़्त जाते देखा, मुझे अंदेशा हुआ कि तंहाई में कोई तक्लीफ़ न पहुँचे, इसलिए जनाब की हिफ़ाज़त के ख़्याल से साथ हो लिया। ख़ुदा न करे कि रास्ते में कोई नागवार बात पेश आ जाये।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन आमिर रज़ि॰ उस नौजवान का हाथ पकड़ कर अपने घर तक साथ ले गये और वहां पहुँच कर एक हज़ार दीनार (अशर्फ़ियां) उसको मरहमत फ़रमाये कि इसको अपने काम में ले आना, तुम्हारे बड़ों ने तुम्हें बहुत अच्छी तर्बियत दी है। *(एह्या)*

6. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स के मकान में खजूर का एक दरख़्त खड़ा था, जिसकी शाख़ पड़ोसी के मकान पर भी लटक रही थी। वह पड़ोसी ग़रीब आदमी था, जब यह शख़्स अपने दरख़्त पर खजूरें तोड़ने के लिऐ चढ़ता तो हरकत से कुछ खजूरें पड़ोसी के मकान में भी गिर जाया करतीं, जिनको उसके ग़रीब बच्चे उठा लिया करते। यह शख़्स दरख़्त पर से उतरता और पड़ोसी के मकान पर जाकर उन बच्चों के हाथ में से खजूरें छीन लेता, हत्ताकि उनके मुंह में से भी उंगली डाल कर निकाल लिया करता था, उस फ़क़ीर ने हुज़ूर सल्ल॰ से इसकी शिकायत की, हुज़ूर सल्ल॰ ने सुनकर कहा अच्छा जाओ।

इसके बाद खजूर के मालिक से हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि तुम्हारा फ़लां खजूर का दरख़्त जो फ़लां शख़्स के घर में झुक रहा है, वह तुम मुझे इस वायदे पर देते हो कि तुम्हें उसके बदले में जन्नत में खजूर का दरख़्त मिल जाये? उसने अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल॰ इसके और लोग भी ख़रीदार हुए, और मेरे पास और भी दरख़्त हैं, मगर उसकी खजूरें मुझे बहुत पसंद हैं, इसलिए मैं ने फ़रोख़्त नहीं किया और यह कह कर उसके देने से उज़्र कर दिया (मालिक तो बहरहाल वही था, हुज़ूर सल्ल॰ ने यह सुनकर सुकूत फ़रमाया)

एक तीसरे साहब भी इस गुफ़्तगू को सुन रहे थे, उन्होंने उसके जाने के बाद हुज़ूर सल्ल॰ से अर्ज़ किया कि अगर वह दरख़्त मैं लेकर पेश कर दूँ तो मेरे लिये भी वही वायदा जन्नत में खजूर के दरख़्त का है जो हुज़ूर सल्ल॰ ने उससे

फ़रमाया था, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुमसे भी वही वायदा है।

यह साहब उठे और उस मालिके दरख़्त के पास जाकर कहा कि मेरे पास भी खजूर का बाग़ है, तुम अपने उस दरख़्त को किसी क़ीमत पर बेच सकते हो? उसने कहा कि हुज़ूर सल्ल० ने मुझ से जन्नत में दरख़्त का वायदा किया था, मैं ने उस पर भी नहीं दिया। यह दरख़्त मुझे बहुत पसंद है, मैं उसको बेच तो सकता हूँ, मगर जितनी क़ीमत मैं चाहता हूँ, उतनी कोई देगा नहीं।

उसने पूछा कि कितनी क़ीमत चाहिए? उसने कहा कि चालीस दरख़्तों के बदले में बेच सकता हूँ। उस शख़्स ने कहा, एक टेढ़े दरख़्त की क़ीमत चालीस दरख़्त बहुत ज़्यादा है। अच्छा, अगर मैं चालीस दरख़्त उसके बदले में दूँ तो तू बेच देगा। साहबे दरख़्त ने कहा कि अगर तू अपनी बात में सच्चा है तो क़सम खा कि मैं ने चालीस दरख़्त एक दरख़्त के बदले में दे दिये। उन साहब ने क़सम खा ली कि मैं ने चालीस दरख़्त उस टेढ़े दरख़्त के बदले में दे दिये।

इसके बाद वह साहबे दरख़्त फिर गया कि मैं फ़रोख़्त नहीं करता। उन साहब ने कहा कि अब तू हरगिज़ इंकार नहीं कर सकता, तेरे कहने पर मैं ने क़सम खाई है, उसने कहा कि अच्छा इस शर्त पर कि सब के सब दरख़्त एक ही जगह हों। उन्होंने थोड़ी देर सोच कर इसका भी वायदा कर लिया कि सब एक ही जगह होंगे।

बात पुख़्ता करके यह हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर हुए कि हुज़ूर सल्ल० वह दरख़्त मैं ने ख़रीद लिया, वह हुज़ूर सल्ल० की नज़्र है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस फ़क़ीर के मकान पर तशरीफ़ ले गये और दरख़्त उस फ़क़ीर को मरहमत फ़रमा दिया। इसके बाद सूरः वल्लैल नाज़िल हुई। *(एह्या)*

7. एक शख़्स ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर होकर दो शेअ्र पढ़े, जिनका मतलब यह है कि एहसान और हुस्ने सुलूक उस वक़्त एहसान है जबकि वह उसके अहल और क़ाबिल लोगों पर किया जाये। नालायक़ों पर एहसान करना ना मुनासिब है, पस अगर तू किसी पर एहसान किया करे तो या तो ख़ालिस अल्लाह के वास्ते सदक़ा हो, (कि इस में अहलियत की शर्त नहीं है, काफ़िरों और जानवारों पर भी किया जाता है) या फिर अहले क़राबत पर किया कर कि उन का हक़्क़े क़राबत उनकी अहलियत

पर ग़ालिब है। और अगर यह दोनों बातें किसी जगह न हों तो नालायक़ पर एहसान नहीं करना चाहिए। (इन शेअ्रों में हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि॰ ही की तरफ़ इशारा था कि इनकी सख़ावत और बख़्शिश ऐसी आम थी कि हर कस व नाकस पर बारिश की तरह बरसती थी।)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि॰ ने यह शेअ्र सुनकर फ़रमाया कि ये शेअ्र आदमी को बख़ील बनाते हैं, मैं तो अपने एहसान को बारिश की तरह बरसाऊँगा, अगर वह करीम और क़ाबिल लोगों तक पहुँच जाये तो वे यक़ीनन इसी के मुस्तहिक़ हैं कि उन पर एहसान किया जाये और अगर ना अहलों तक पहुँचे तो मैं इसी क़ाबिल हूँ कि मेरा माल ना अहलों के पास ही जाये। *(एह्या)*

यह तवाज़ो के तौर पर फ़रमाया कि मैं भी ना अहल इसलिए मेरा माल भी नाकारा है, इसलिए नाकारों ही के पास जाना चाहिए।

8. हज़रत मुन्कदिर रह॰ एक मर्तबा हज़रत आइशा रज़ि॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अपनी सख़्त हाजत का इज़्हार किया, उन्होंने फ़रमाया कि मेरे पास इस वक़्त बिल्कुल कुछ नहीं है, अगर मेरे पास दस हज़ार भी होते तो सब के सब तुम्हें दे देती, मगर इस वक़्त मेरे पास कुछ भी नहीं है। वह वापस चले गये। थोड़ी देर बाद ख़ालिद बिन असद रज़ि॰ के पास से दस हज़ार का हदया हज़रत आइशा रज़ि॰ की ख़िदमत में पहुँचा, फ़रमाने लगीं कि मेरी बात का बहुत जल्द इम्तिहान लिया गया, जब ही हज़रत मुन्कदिर रह॰ के पास आदमी भेजा और उनको बुला कर वह सारी रक़म उनके हवाले कर दी, जिस में से एक हज़ार में उन्होंने एक बांदी ख़रीदी, जिसके पेट से तीन लड़के पैदा हुए, मुहम्मद, अबू बक्र, उमर तीनों के तीनों मदीना मुनव्वरा के आबिद लोगों में शुमार होते थे।

(तहज़ीबुत तहज़ीब)

क्या इन तीनों की इबादत में हज़रत आइशा रज़ि॰ का हिस्सा न होगा कि वही उनके वजूद का सबब हुईं। हज़रत आइशा रज़ि॰ की सख़ावत के वाक़िआत उन के अब्बा जान रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह से एहाते से बाहर हैं।

एक क़िस्सा हिकायाते सहाबा रज़ि॰ में भी लिख चुका हूँ कि दो गोनें दराहिम की बांटीं और यह भी याद न आया कि मेरा रोज़ा है और इफ़्तार के लिऐ एक दिरम का गोश्त ही मंगा लूँ। इन दोनों गोनों में एक लाख से ज़्यादा दिरम थे और इसी क़िस्म का एक और क़िस्सा भी रिवायात में है, जिस में एक लाख

अस्सी हज़ार दिरम बताये जाते हैं।

तमीम बिन उरवः रज़ि॰ कहते हैं कि मैं ने एक मर्तबा (अपने वालिद की ख़ाला) हज़रत आइशा रज़ि॰ को देखा कि उन्होंने सत्तर हज़ार दिरम तक़्सीम किये और वह ख़ुद पेवंद लगा हुआ कुर्ता पहन रही थीं। *(इत्तिहाफ़)*

9. अबान बिन उस्मान रह॰ कहते हैं कि एक शख़्स ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि॰ को परेशान और ज़लील करने के लिए यह हरकत की कि क़ुरैश के सरदारों के पास जाकर यह कहा कि इब्ने अब्बास (रज़ि॰) ने कल सुबह आपकी खाने की दावत की है। सब जगह पयाम पहुँचाता हुआ फिर गया। जब सुबह का खाने का वक़्त हुआ तो हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ के घर इतना मज्मा इकट्ठा हो गया कि घर भर गया। तहक़ीक़ से मालूम हुआ कि यह सूरत पेश आयी।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ ने उन सब को बिठाया और बाज़ार से फलों के टोकरे मंगा कर उनके सामने रखे कि इससे शुग़्ल करें और बात चीत शुरू कर दी और बहुत से बावर्चियों को हुक्म दे दिया कि खाना तैयार किया जाये। इतने वे हज़रात फलों के खाने से फ़ारिग़ भी न हुए थे कि खाना तैयार हो गया। सबने शिकम सेर होकर खाना खाया। इसके बाद हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ ने अपने ख़ज़ानचियों से पूछा कि क्या इतनी गुंजाइश है कि हम इस दावत के सिलसिले को रोज़ाना जारी रख सकें? उन्होंने अर्ज़ किया कि है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ ने फ़रमा दिया कि इस मजमे की रोज़ाना सुबह को हमारे यहां दावत है। रोज़ाना आ जाया करें। *(इत्तिहाफ़)*

यह ज़माना हज़रात सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के ऊपर फ़ुतूहात की कसरत का था, मगर इन हज़रात की सख़ावत के ज़ोर से माल इस तरह जल्द ख़त्म हो जाता था जैसा कि पानी छलनी में भरा और ख़त्म हुआ, इसलिए जब होता था तो ख़ूब होता था और जब वह ख़त्म हो जाता था तो अपने पास खाने को एक दिरम भी न रहता था, न जमा करने का उनका दस्तूर था, न अपने लिए अलाहिदा करके रखना ये जानते थे कि किस जानवर का नाम है। लाखों की मिक़्दार आती थी और मिनटों में तक़्सीम हो जाती थी।

10. वाक़दी रह॰ कहते हैं कि मेरे दो दोस्त थे, एक हाशमी और एक ग़ैर हाशमी, हम तीनों में ऐसे गहरे ताल्लुक़ात थे कि एक जान, तीन क़ालिब थे, मेरे

ऊपर सख़्त तंगी थी, ईद का दिन आ गया, बीवी ने कहा कि हम तो हर हाल में सब्र कर लेंगे मगर ईद क़रीब आ गयी, बच्चों के रोने और ज़िद करने ने मेरे दिल के टुकड़े कर दिये ये मौहल्ले के बच्चों को देखते हैं कि वे उम्दा उम्दा लिबास और सामान ईद के लिये ख़रीद रहे हैं और ये फटे पुराने कपड़ों में फिर रहे हैं, अगर कहीं से तुम कुछ ला सकते हो तो ला दो, इन बच्चों के हाल पर मुझे बहुत तरस आता है, मैं इन के भी कपड़े बना दूँ। मैं ने बीवी की यह बात सुन कर अपने हाशमी दोस्त को पर्चा लिखा, उसमें सूरते हाल ज़ाहिर की, इसके जवाब में उसने सर ब मुहर एक थैली मेरे पास भेजी और कहा कि इस में एक हज़ार दिरम हैं तुम इनको ख़र्च कर लो।

मेरा दिल इस थैली से ठंडा भी न होने पाया था कि मेरे दूसरे दोस्त का परचा मेरे पास इसी क़िस्म के मज़्मून का; जो मैं ने अपने हाशमी दोस्त को लिखा था, आ गया, मैं ने वह थैली सर ब मुहर उसके पास भेज दी और बीवी की शर्म से घर में जाने की हिम्मत न हुई। मस्जिद में चला गया और दो दिन रात मस्जिद ही में रहा, शर्म की वजह से घर न जा सका। तीसरे दिन मैं घर गया और बीवी से सारा क़िस्सा सुना दिया, उसको ज़रा भी नागवार न हुआ, न उसने कोई हरफ़ शिकायत का मुझसे कहा बल्कि मेरे इस फ़ेअ्ल को पसंद किया और कहा कि तुमने बहुत अच्छा किया।

मैं बात ही कर रहा था कि मेरा वह हाशमी दोस्त वही सर ब मुहर थैली हाथ में लिये आया और मुझसे पूछने लगा कि सच सच बताओ, इस थैली का क्या क़िस्सा हुआ। मैं ने उस वाक़िए को सुना दिया। इसके बाद उस हाशमी ने कहा कि जब तेरा परचा पहुँचा तो मेरे पास इस थैली के सिवा कोई चीज़ बिल्कुल नहीं थी, मैं ने यह थैली तेरे पास भेज दी। इसके बाद मैं ने तीसरे दोस्त को परचा लिखा, तो उसने जवाब में यही थैली मेरे पास भेजी, इस पर मुझे बहुत ताज्जुब हुआ कि यह तो मैं तेरे पास भेज चुका था, यह तीसरे दोस्त के पास कैसे पहुँच गयी। इसलिये मैं तहक़ीक़ के वास्ते आया था।

वाक़दी रह० कहते हैं कि हमने उस थैली में से सौ दिरम तो उस औरत को दे दिये और नौ सौ दिरम हम तीनों ने आपस में बांट लिये।

इस वाक़िए की किसी तरह मामून रशीद को ख़बर हो गयी, उसने मुझे बुलाया और मुझ से सारा क़िस्सा सुना, उसके बाद मामून रशीद ने सात हज़ार दिरम दिये। दो दो हज़ार हम तीनों को और एक हज़ार औरत को। (इत्तिहाफ़)

11. हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि॰ एक मर्तबा मदीना मुनव्वरा के एक बाग़ पर गुज़रे, उस बाग़ में हब्शी गुलाम बाग़ का रखवाली था, वह रोटी खा रहा था और एक कुत्ता उसके सामने बैठा हुआ था। जब वह एक लुक़्मा बना कर अपने मुंह में रखता तो वैसा ही एक लुक़्मा बना कर उस कुत्ते के सामने डालता। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि॰ इस मंज़र को देखते रहे।

जब वह गुलाम खाने से फ़ारिग़ हो चुका तो उसके पास तशरीफ़ ले गये, इस बात को दर्याफ़्त किया, तुम किसके गुलाम हो? उसने कहा मैं हज़रत उस्मान रज़ि॰ के वारिसों का गुलाम हूँ। उन्होंने फ़रमाया कि मैं ने तुम्हारी एक अजीब बात देखी, उसने अर्ज़ किया आक़ा तुमने क्या देखा? फ़रमाने लगे कि तुम जब एक लुक्मा खाते थे, साथ ही एक लुक़्मा इस कुत्ते को देते थे। उसने अर्ज़ किया यह कुत्ता कई साल से मेरा साथी है, इसलिए ज़रूरी है कि मैं खाने में भी इसको अपना साथी रखूँ। उन्हों ने फ़रमाया कि इस कुत्ते के लिऐ तो इससे कम दर्जे की चीज़ भी बहुत काफ़ी थी। गुलाम ने अर्ज़ किया मुझे अल्लाह जल्ल शानुहू से इसकी ग़ैरत आती है कि मैं खाता रहूँ और एक जानदार आंख मुझे देखती रहे।

हज़रत इब्ने जाफ़र रज़ि॰ उससे बात करके वापस तशरीफ़ लाये और हज़रत उस्मान रज़ि॰ के वारिसों के पास तशरीफ़ ले गये और फ़रमाया कि अपनी एक ग़रज़ लेकर आप लोगों के पास आया हूँ। उन्हों ने कहा क्या इर्शाद है? ज़रूर फ़रमा दें। आपने फ़रमाया कि फ़लां बाग़ मेरे हाथ फ़रोख़्त कर दो। उन्हों ने अर्ज़ किया कि जनाब की ख़िदमत में वह हदया है, उसको बिला क़ीमत क़ुबूल फ़रमा लें। फ़रमाने लगे कि मैं बग़ैर क़ीमत लेना नहीं चाहता क़ीमत तै होकर मामला हो गया।

फिर हज़रत इब्ने जाफ़र रज़ि॰ ने फ़रमाया कि उस में जो ग़ुलाम काम करता है उसको भी लेना चाहता हूँ। उन्हों ने उज़्र किया कि वह बचपन से हमारे ही पास पला है, उसकी जुदाई शाक़ है, मगर हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि॰ के इसरार पर उन्हों ने उसको भी उनके हाथ फ़रोख़्त कर दिया।

ये दोनों चीज़ें ख़रीद कर उस बाग़ में तशरीफ़ ले गये और उस ग़ुलाम से फ़रमाया कि मैं ने इस बाग़ को और तुमको ख़रीद लिया है। ग़ुलाम ने अर्ज़ किया कि अल्लाह तआला शानुहू आपको यह ख़रीदारी मुबारक फ़रमाये और बरकत अता फ़रमाये, अलबत्ता मुझे अपने आक़ाओं से जुदाई का रंज हुआ कि उन्हों ने

बचपन से मुझे पाला था। हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि० ने फ़रमाया कि मैं तुमको आज़ाद करता हूँ और यह बाग़ तुम्हारी नज़्र है। उस ग़ुलाम ने अर्ज़ किया कि फिर आप गवाह रहें कि यह बाग़ मैं ने हज़रत उस्मान रज़ि० के वारिसों को वक़्फ़ कर दिया।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि० फ़रमाते हैं कि मुझे उसकी इस बात पर और भी ताज्जुब हुआ और उसको बरकत की दुआयें देकर वापस आ गया।

(मुसामरात)

यह तो मुसलमानों के असलाफ़ के ग़ुलामों के कारनामे थे।

12. नाफ़ेअ् रज़ि० कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० एक दफ़ा मदीना मुनव्वरा से बाहर तशरीफ़ ले जा रहे थे, ख़ुद्दाम साथ थे, खाने का वक़्त हो गया। ख़ुद्दाम ने दस्तरख़्वान बिछाया। सब खाने के लिए बैठे। एक चरवाहा बकरियां चराता हुआ गुज़रा, उसने सलाम किया। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने उसको खाने की तवाज़ोअ् की, उसने कहा, मेरा रोज़ा है। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया कि इस क़दर सख़्त गर्मी के ज़माने में कैसी लू चल रही है, जंगल में तू रोज़ा रख रहा है, उस ने अर्ज़ किया कि मैं अपने अय्यामे ख़ालिया: को वसूल कर रहा हूँ।

यह क़ुरआन पाक की एक आयते शरीफ़ा की तरफ़ इशारा था जो सूर: अल हाक़्क़: में है कि हक़ तआला शानुहू जन्नती लोगों को फ़रमा देंगे :-

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَآ اَسْلَفْتُمْ فِى الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ (الآية)

"कुलू वश्‍र-बू हनीअम् बिमा अस्लफ़्तुम् फ़िल् अय्या मिल् ख़ालियः०"

"खाओ और पियो मज़े के साथ उन आमाल के बदले में जो तुमने गुज़रे हुए ज़माने में (दुनिया में) किये।"

इसके बाद हज़रत उमर रज़ि० ने इम्तिहान के तौर पर उससे कहा कि हम एक बकरी ख़रीदना चाहते हैं, इसकी क़ीमत बता दो और ले लो, हम इसको काटेंगे और तुम्हें गोश्त भी देंगे कि इफ़्तार में काम देगा। उसने कहा ये बकरियां मेरी नहीं हैं। मैं तो ग़ुलाम हूँ, ये मेरे सरदार की बकरियां है। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने फ़रमाया कि सरदार को क्या ख़बर होगी? उस से कह देना कि भेड़िया खा गया। उसने आसमान की तरफ़ इशारा किया और कहा' "फ़-ऐनल्लाह" और अल्लाह तआला कहां चले जायेंगे। (यानी वह पाक परवर दिगार तो देख रहा है,

जब वह मालिकुल्मुल्क देख रहा है तो मैं कैसे कह सकता हूँ कि भेड़िया खा गया।)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ ताज्जुब और मज़े से बार बार फ़रमाते थे, एक चरवाहा कहता है ऐनल्लाह (अल्लाह तआल कहां चले जायेगें, अल्लाह तआला कहां चले जायेंगे) इसके बाद हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ शहर में वापस तशरीफ़ लाये तो उस ग़ुलाम के आक़ा से उस ग़ुलाम को और बकरियों को ख़रीद कर ग़ुलाम को आज़ाद कर दिया, और वे बकरियां उस को हिबा कर दीं।

(दुर्रे मंसूर)

यह उस वक़्त चरवाहों का हाल था कि जिनको जंगल में भी यह फ़िक्र था कि अल्लाह तआला शानुहू देख रहे हैं।

13. हज़रत सईद बिन आमिर रह॰ हज़रत उमर रज़ि॰ की जानिब से हमस के हाकिम (गवर्नर) थे। अहले हमस ने हज़रत उमर रज़ि॰ से इनकी मुतअद्द शिकायतें कीं और इनके माज़ूल करने की दरख़्वास्त की, हज़रत उमर रज़ि॰ को हक़ तआला शानुहू ने फ़िरासत का ख़ास हिस्सा अता फ़रमाया था जिसकी वजह से मर्दुम शनासी में ख़ास दख़ल था, और उसका हज़ारों मर्तबा तजुर्बा भी हो चुका था। इस पर ताज्जुब फ़रमाया कि मैं ने तो बहुत बेहतर समझ कर तजवीज़ किया था और इसकी दुआ की थी कि या अल्लाह, मेरी फ़िरासत को लोगों के बारे में ज़ायल न फ़रमा कि इससे तो सारे ही महकमे के आदमियों में ना अहलों के घुस आने का अंदेशा है। इसके बाद हज़रत उमर रज़ि॰ ने हज़रत सईद रज़ि॰ को तलब किया और शिकायत करने वालों को भी बुलाया और उनसे दर्याफ़्त फ़रमाया कि तुम लोगों को इनसे क्या क्या शिकायतें हैं।

उन्होनें तीन शिकायतें की थीं, एक यह कि दिन में बहुत देर से घर से निकलते हैं (अदालत में देर से पहुँचते हैं) दूसरे रात को अगर कोई इनके पास जाये तो उस वक़्त उसकी शिकायत नहीं सुनते, तीसरे हर महीने में एक दिन की तातील (छुट्टी) करते हैं।

हज़रत उमर रज़ि॰ ने दोनों फ़रीक़ को सामने खड़ा किया और फ़रमाया कि नम्बरवार मुतालबात करो ताकि हर शिकायत का अलाहिदा अलाहिदा जवाब लिया जाये। उन लोगों ने कहा कि सुबह को देर में घर से निकलते हैं।

हज़रत उमर रज़ि॰ ने उनसे जवाब तलब किया, उन्होंने अर्ज़ किया कि

मेरी बीवी तंहा काम करने वाली है, मैं आटा गूंधता हूँ रोटी पकाता हूँ, जब रोटी तैयार हो जाती है तो खाने से फ़ारिग़ होकर वुज़ू करके बाहर चला जाता हूँ।

हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया, दूसरा मुतालबा क्या है? उन्होंने अर्ज़ किया कि रात को काम नहीं करते, कोई जाता है तो उसकी हाजत पूरी नहीं करते।

हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया इसका क्या जवाब तुम्हारे पास है? हज़रत सईद रज़ि॰ ने अर्ज़ किया, मेरा दिल नहीं चाहता था कि इसका इज़्हार करूँ। मैं ने दिन और रात को तक़्सीम कर रखा है, दिन मख़्लूक़ का और रात ख़ालिक़ की। मैं ने रात सारी की सारी अपने मौला को दे रखी है।

हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया कि तीसरा मुतालबा क्या है? उन्हों ने अर्ज़ किया कि महीने में एक दिन तातील (छुट्टी) करते हैं।

हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया इसका क्या जवाब है? हज़रत सईद रज़ि॰ ने अर्ज़ किया कि मेरे पास कोई ख़ादिम नहीं है, मैं महीने में एक दिन कपड़े ख़ुद ही धोता हूँ, उनको ख़ुश्क करके पहनने में शाम हो जाती है।

हज़रत उमर रज़ि॰ ने हक़ तआला शानुहू का शुक्र अदा किया कि मेरी फ़िरासत ग़लत न हुई। इसके बाद उन लोगों से फ़रमाया कि तुम अपने अमीर की क़द्र करो।

उन सबके जाने के बाद हज़रत उमर रज़ि॰ ने हज़रत सईद रज़ि॰ के पास एक हज़ार दीनार (अशर्फ़ियां) भेजीं कि इनको अपनी ज़रूरियात में ख़र्च करें। उनकी बीवी ने कहा, अल्लाह का शुक्र है कि उसने बहुत सी ज़रूरियात का इंतिज़ाम फ़रमा दिया। अब तुम्हें ख़ुद घर के कारोबार करने की एहतियाज न रहेगी, एक ख़ादिम भी इसमें ख़रीदा जा सकता है और दूसरी ज़रूरियात भी पूरी की जा सकती हैं।

हज़रत सईद रज़ि॰ ने फ़रमाया कि यहां हमसे भी ज़्यादा मुहताज और ज़रूरत मंद लोग मौजूद हैं, इनको उन लोगों पर ख़र्च न कर दें। बीवी ने इसको ख़ुशी ख़ुशी से क़ुबूल फ़रमा लिया। उन्हों ने उसमें से छोटी छोटी थैलियां बनाकर एक फ़लां यतीम को, एक फ़लां को, ग़रज़ बहुत सा हिस्सा तो उसी वक़्त तक़्सीम कर दिया, कुछ बचा था, उसको बीवी के हवाले कर दिया कि थोड़ा थोड़ा ख़र्च करती रहेगी। बीवी ने कहा कि बची हुई रक़म से ग़ुलाम ख़रीद लेंगे,

घर के कारोबार में तुम्हें सहूलत हो जायेगी, (फरमाने लगे) अंक़रीब तुझसे ज़्यादा हाजत वाले तेरे पास आयेंगे। (अशहुर)

14. एक मर्तबा मिस्र में क़हत पड़ा। अब्दुल हमीद बिन सअ्द मिस्र के हाकिम थे, कहने लगे, मैं शैतान को बताऊँगा कि मैं उसका दुश्मन हूँ (वह ऐसे वक़्त में बहुत एहतियात से ख़र्च करने की तर्ग़ीब देता है) मिस्र में जितने फ़ुक़रा नादार थे, सबका खाना मेरे ज़िम्मे रहेगा। चुनांचे ऐसा होता रहा, यहां तक कि क़हत दूर हो गया। बाज़ार का नर्ख़ (भाव) अर्ज़ां (सस्ता) हो गया। इसके बाद यह माज़ूल कर दिये गये। जब यह मिस्र से रूख़्सत होने लगे तो जिन ताजिरों से क़हत के ज़माने में क़र्ज़ लेकर खिलाते रहे उनके दस लाख दिरम उनके ज़िम्मे क़र्ज़ था, चूंकि वहां से रूख़्सत होकर जा रहे थे, इसलिए अपने अहल व आयाल के ज़ेवर वग़ैरह मांग कर उन ताज़िरों के पास रहन रख गये, जो चीज़ें रहन रखीं थीं, उनकी क़ीमत पचास करोड़ दिरम थी। कुछ दिन इरादा करते रहे कि उनका क़र्ज़ा अदा होकर ज़ेवरात के रहन को खलास कर लें, मगर इतनी रक़म मुहैया न हो सकी। उन ताजिरों को लिख दिया कि उन ज़ेवरों को फ़रोख़्त करके अपना क़र्ज़ा वसूल कर लें और जितनी रक़म बाक़ी बचे, वह मिस्र के उन अहले ज़रूरत पर तक़्सीम कर दें जिनकी उस वक़्त मैं ने मदद नहीं की। (इत्तिहाफ़)

ज़ेवर वालियां भी तो उसी दौर की पैदावार थीं, उनको इसमें क्या ताम्मुल हो सकता था, कि उनका ज़ेवर फरोख़्त करके फ़ुक़रा पर तक़्सीम कर दिया जाये।

15. अबू मुर्सद रह० एक मशहूर सख़ी हैं, उनके पास एक शख़्स आया और कुछ अश्आर उनकी तारीफ़ में पढ़े (करीम की मदह हमेशा सूरते सवाल होती ही है) उन्हों ने फ़रमाया कि मेरे पास इस वक़्त तेरे देने के लिए बिल्कुल कुछ नहीं है। एक सूरत हो सकती है कि तू क़ाज़ी के यहां जाकर मुझ पर दस हज़ार का दावा कर दे मैं क़ाज़ी के सामने इसका इक़रार कर लूँगा (और आदमी का किसी से वायदा कर लेना भी क़र्ज़ ही जैसा है, हुज़ूर सल्ल० का पाक इर्शाद है कि अल्अिद-तु दैनुन, (वायदा क़र्ज़ है,) क़ाज़ी तेरे क़र्ज़े में मुझे क़ैद कर देगा तो फिर मेरे घर वाले मुझे क़ैद में तो रहने नहीं देंगे, इतनी मिक़्दार जमा कर देगें। उसने ऐसा ही किया, यह क़ैद हो गये और शाम तक दस हज़ार क़ाज़ी साहब के हवाले होकर यह क़ैद से छूट आये और वह रक़म उस शख़्स को मिल गई।

(इत्तिहाफ़)

16. अरब की एक जमाअत एक मशहूर सख़ी करीम की क़ब्र की ज़ियारत को गयी। दूर का सफ़र था, रात को वहां ठहरे, उनमें से एक शख़्स ने उस क़ब्र वाले को ख़्वाब में देखा, वह उससे कह रहा है कि तू अपने ऊँट को मेरे बख़्ती ऊँट के बदले में फ़रोख़्त करता है (बख़्ती ऊँट आला क़िस्म के ऊँटों में शुमार होता है, जो उस मैय्यित ने तरके में छोड़ा था) ख़्वाब में देखने वाले ने ख़्वाब ही में मामला कर लिया।

वह साहिबे क़ब्र उठा और उसके ऊँट को ज़िब्ह कर दिया। जब यह ऊँट वाला नींद से उठा तो उसके ऊँट के ख़ून जारी था। उसने उठ कर उसको ज़िब्ह कर दिया। (कि उसकी ज़िन्दगी की उम्मीद न रही थी) और गोश्त तक़सीम कर दिया। सबने पकाया खाया, ये लोग वहां से वापस हो गये। जब अगली मंज़िल पर पहुँचे तो एक शख़्स बख़्ती ऊँट पर सवार मिला तो यह तहक़ीक़ कर रहा था कि फ़लां नाम का शख़्स तुम में से कोई है, उस ख़्वाब वाले शख़्स ने कहा कि यह मेरा नाम है। उसने पूछा कि तूने फ़लां क़ब्र वाले के हाथ कोई चीज़ फ़रोख़्त की है? ख़्वाब देखने वाले ने अपने ख़्वाब का क़िस्सा सुनाया। जो शख़्स बख़्ती ऊँट पर सवार था, उसने कहा कि वह मेरे बाप की क़ब्र थी, यह उसका बख़्ती ऊँट है। उसने मुझे ख़्वाब में कहा कि अगर तू मेरी औलाद है तो मेरा बख़्ती ऊँट फ़ला शख़्स को दे दे। तेरा नाम लिया था, यह बख़्ती ऊँट तेरे हवाले है, यह कह कर वह ऊँट देकर चला गया। *(इत्तिहाफ़)*

यह सख़ावत की हद है कि मरने के बाद भी अपनी क़ब्र पर आने वालों की मेहमानी की। बाक़ी यह बात कि मरने के बाद इस क़िस्म का वाक़िआ क्यों कर हो गया, इसमें कोई मुहाल चीज़ नहीं है। आलमे अर्वाह में इस क़िस्म के वाक़िआत मुमकिन हैं।

17. एक क़ुरैशी सफ़र में जा रहे थे, रास्ते में एक बीमार फ़क़ीर मिला, जिसको मसाइब ने बिल्कुल ही आजिज़ कर रखा था। उसने दर्ख़्वास्त की कि कुछ मदद मेरी करते जाओ, उन क़ुरैशी साहब ने अपने ग़ुलाम से कहा कि जो कुछ तुम्हारे पास ख़र्च है, वह सब ले आओ। उस ग़ुलाम ने जो कुछ था, जिसकी मिक़्दार चार हज़ार दिरम थी वह उस फ़क़ीर की गोद में डाल दिया। वह फ़क़ीर उनको लेकर ज़ोअफ़ की वजह से उठ भी ना सका। इस बड़ी मिक़्दार के मिलने पर ख़ुशी में उसके आंसू निकल आये। क़ुरैशी को यह ख़्याल हुआ कि शायद इसने इस मिक़्दार को कम समझा, इस पर रो रहा है। उससे पूछा, क्या इस वजह

से रो रहे हो कि यह बहुत कम मिक़दार है। (मगर मेरे पास इसके सिवा और कुछ इस वक़्त है नहीं) फ़क़ीर ने कहा, नहीं इस पर नहीं रो रहा हूँ, इस पर रो रहा हूँ कि तेरे करम से कितनी ज़मीन खा रही है। *(इत्तिहाफ़)*

जब एक नावाक़िफ़ साइल के सवाल पर तेरे करम का यह हाल है कि सफ़र की हालत में भी जो मौजूद था, सब दे दिया तो इससे हज़रत के करम का अंदाज़ा हो गया।

18. अब्दुल्लाह बिन आमिर बिन कुरैज़ रज़ि॰ ने हज़रत ख़ालिद बिन उक़्बा रज़ि॰ उमवी से उनका मकान अपनी ज़रूरत से नव्वे हज़ार दिरम में ख़रीदा। जब वह फ़रोख़्त हो गया और ख़ालिद रज़ि॰ के घर वालों को इसकी ख़बर हुई तो उनको रंज और सदमा बहुत हुआ। रात को कुछ रोने की आवाज़ इब्ने आमिर रज़ि॰ के कान में पड़ी, अपने घर की मस्तूरात से पूछा कि यह रोने की आवाज़ कहां से आ रही है? उन्हों ने कहा कि ख़ालिद रज़ि॰ के घर वालों को अपने मकान के फ़रोख़्त होने का सदमा हो रहा है। उसी वक़्त इब्ने आमिर रज़ि॰ ने अपने गुलाम को उन के पास भेजा और यह कहलवाया कि मकान तुम्हारी नज़्र है और क़ीमत जो मैं दे चुका हूँ, वह भी अब वापस न होगी, यह मकान मेरी तरफ़ से तुम्हारी नज़्र है। *(इत्तिहाफ़)*

19. हारून रशीद ने पांच सौ दीनार (अशर्फ़ियां) एक मर्तबा हज़रत इमाम मालिक रह॰ की नज़्र किये। हज़रत लैस बिन सअद रह॰ को इसका इल्म हुआ तो उन्होंने एक हज़ार दीनार हज़रत इमाम मालिक रह॰ के पास भेजे, बादशाह को इसका इल्म हुआ तो वह नाराज़ हुआ कि तुम रिआया होकर बादशाह से बढ़ना चाहते हो (गोया मेरी तौहीन मक़्सूद है) लैस रह॰ ने कहा, अमीरूल मोमिनीन ! यह बात नहीं है बल्कि आज कल मेरी रोज़ाना की आमदनी एक हज़ार दीनार है। मुझे ग़ैरत आई कि इतने बड़े जलीलुल क़द्र को मैं नज़राना पेश करूँ और अपनी एक दिन से भी कम की आमदनी दूँ।

हज़रत लैस रह॰ का मुस्तक़िल मामूल भी था कि हज़रत इमाम मालिक रह॰ की ख़िदमत में सौ अशर्फ़ी सालाना नज़्र पेश किया करते थे, इनके अलावा भी नज़राने आते रहते थे लेकिन इसके बावजूद अल्लाह के फ़ज़्ल से हज़रत इमाम मालिक रह॰ बसा औक़ात मक़रूज़ रहते थे और ख़ुद यह हज़रत लैस बिन साद रह॰ मशहूर मुहद्दिसीन और उलमा में हैं जिनकी रोज़ाना की उस वक़्त

की आमदनी एक हज़ार दीनार (अशर्फ़ियां) थीं, मगर उम्र भर में कभी उनके ज़िम्मे ज़कात वाजिब नहीं हुई।

मुख़्तलिफ़ ज़मानों में उनकी आमदनी मुख़्तलिफ़ रही थी और ऐसा हुआ ही करता है कि आमदनी कम व बेश होती रहा करती है, लेकिन ज़कात किसी ज़माने में भी वाजिब न हुई कि ज़कात तो जब वाजिब हो जब कोई जमा करके रखे भी। मुहम्मद बिन रमह रज़ि॰ कहते हैं कि हज़रत लैस रह॰ की सालाना आमदनी हर साल अस्सी हज़ार दीनार थी, मगर अल्लाह तआला ने कभी उन पर एक दिरम की ज़कात भी वाजिब नहीं की।

ख़ुद उनके बेटे शुऐब रह॰ कहते हैं कि मेरे वालिद की आमदनी बीस पचीस हज़ार दीनार (अशर्फ़ियां) सालाना थी, मगर वह हमेशा कर्ज़दार ही रहते थे। *(इत्तिहाफ़)*

इब्तिदा में बीस पचीस हज़ार होगी जिस पर क़र्ज़ा होता रहता था, इसके बावजूद वह सब कुछ अल्लाह के रास्ते में ख़र्च कर देते थे, इस वजह से इसका बढ़ना ज़रूरी था, इसलिए किसी वक़्त में एक हज़ार रोज़ाना भी हो गया।

एक औरत हज़रत लैस रह॰ के पास एक प्याली लेकर आयी कि मुझे थोड़े से शहद की ज़रूरत है, अगर आपके पास हो तो मरहमत फ़रमा दीजिए। उन्हों ने एक मशक शहद की उसके हवाले कर दी। किसी ने कहा कि वह थोड़ा सा मांगती थी, आपने फ़रमाया कि यह उसका फ़ेअ्ल था कि उसने अपनी हाजत के बक़द्र मांगा, मुझे उसके मुवाफ़िक़ देना चाहिए था, जितना मेरे अल्लाह ने मुझ पर एहसान फ़रमा रखा है।

एक मर्तबा कुछ लोगों ने उनके एक बाग़ का फल ख़रीदा, उसमें ख़रीदारों को नुक़्सान हुआ, उनको इत्तिला हुई। उन्हों ने बाग़ की बैअ् का मामला फ़स्ख़ कर दिया, उनकी क़ीमत वापस कर दी और उनको अपने पास से पचास हज़ार दीनार (अशर्फ़ियां) नज़्र किये, किसी ने पूछा कि यह किस चीज़ का तावान दिया? फ़रमाने लगे कि उन लोगों ने मेरे बाग़ से नफ़े की उम्मीद बांधी थी, मेरा दिल चाहा कि उनकी उम्मीद पूरी कर दूं। *(इत्तिहाफ़)*

20. हज़रत आमश सुलैमान बिन महरान रह॰ मशहूर मुहद्दिस हैं, फ़रमाते हैं कि मेरे पास एक बकरी थी, वह बीमार हो गयी। हज़रत ख़ैसमा बिन अब्दुर्रहमान रह॰ रोज़ाना सुबह को और शाम को दो वक़्त उस बकरी की इयादत

करने मेरे पास तशरीफ़ लाते, बकरी का हाल पूछते और यह भी दर्याफ़्त करते कि बच्चों को दूध तो मिलता नहीं होगा, वे ज़िद तो नहीं करते, बकरी ने कुछ खाया या नहीं, वग़ैरह वग़ैरह और हमेशा चलते हुए जिस टाट पर मैं बैठा करता था, उसके नीचे कुछ डाल जाते कि यह बच्चों के लिए उठा लेना।

बकरी की बीमारी के ज़माने में तीन सौ दीनार (अशर्फ़ियों) से ज़्यादा मुझे उनके एहसान से मिला, मुझे यह ख़्वाहिश होने लगी कि यह बकरी बीमार ही रहे तो अच्छा है। *(इत्तिहाफ़)*

21. अब्दुल मलिक बिन मरवान ने हज़रत असमा बिन ख़ारिजा रह० से पूछा कि मुझे तुम्हारी बाज़ आदतें बहुत अच्छी पहुँची हैं, तुम अपने मामूलात मुझे बताओ, उन्होंने उज़्र कर दिया कि मेरी क्या आदत अच्छी हो सकती है, दूसरों की आदतें बहुत बहुत अच्छी हैं, उन से दर्याफ़्त करें, मगर जब उन्हों ने इसरार से क़सम देकर पूछा तो उन्होंने बताया कि मुझे तीन चीज़ का हमेशा एहतिमाम रहा :-

(अ) यह कि किसी बैठने वाले की तरफ़ मैं ने पांव नहीं फैलाया,

(ब) जब मैं ने खाना पकाया और उस पर लोगों को बुलाया तो उन खाने वालों का मैं ने अपने ऊपर एहसान इससे बहुत ज़्यादा समझा जितना मेरा उन पर हो।

(स) जब मुझसे किसी ज़रूरत मंद ने कोई सवाल किया, मैं ने उसके देने में किसी मिक़्दार को भी ज़ायद नहीं समझा जो कुछ दिया, उसको हमेशा कम ही समझता रहा। *(इत्तिहाफ़)*

22. हज़रत सईद बिन ख़ालिद उमवी रह० बहुत ज़्यादा मालदार थे, अरब में उनकी सरवत ज़रबुल मसल थी, उनका दस्तूर था कि जब कोई हाजतमंद उनके पास आता तो जो मौजूद होता उस में बुख़्ल न करते, लेकिन अगर किसी वक़्त कुछ न होता तो उसको एक इक़रार नामा लिख कर दे देते कि जब मेरे पास कहीं से कुछ आयेगा (या मैं मर जाऊँ) तो इस रूक़्क़े के ज़रिये से वसूल कर लेना। *(इत्तिहाफ़)*

23. हज़रत क़ैस बिन सअद ख़ज़रजी रज़ि० एक मर्तबा बीमार हुए और अहबाब में से कोई इयादत को न आया, जिस पर उनको ताज्जुब हुआ, बिल ख़ुसूस जिनकी आमद व रफ़्त (आना जाना) ज़्यादा थी, सेहत के ज़माने में

अक्सर आया करते थे, घर के लोगों से पूछा कि यह क्या बात है? उन्हों ने बताया कि हर शख़्स तुम्हारा मक़रूज़ है, ऐसी हालत में बग़ैर क़र्ज़ा लिये हुए आने से लोगों को शर्म आती है। फ़रमाने लगे कि इस कमबख़्त माल का नास हो, यह दोस्तों की मुलाक़ात भी छुड़ा देता है, यह कह कर एक शख़्स को बुलाया और उसके ज़रिये से शहर में मुनादी कराई कि क़ैस का जिसके ज़िम्मे क़र्ज़ है, वह क़ैस ने सबको माफ़ कर दिया। इसके बाद जो इयादत करने वालों का हुजूम हुआ तो दरवाज़े की दहलीज़ भी टूट गयी। (इत्तिहाफ़)

24. मिस्र में एक साहिबे ख़ैर शख़्स थे जो अहले ज़रूरत और फ़ुक़रा के लिये चंदा दिया करते थे, जब किसी को कोई हाजत पेश आती, वह उनसे कहता, वह अहले सरवत लोगों से कुछ मांग कर उसको दे दिया करते। एक फ़क़ीर उनके पास गया और कहा कि मेरे लड़का पैदा हुआ है और मेरे पास उसकी इस्लाह के इंतिज़ाम के लिये कोई चीज़ नहीं है। यह साहब उठे और लोगों से उसके लिऐ मांगा, लेकिन कहीं से कुछ न मिला। (कि जो आदमी कसरत से मांगता रहता हो, उसको मिलना भी मुश्किल हो जाता है) यह सबसे मायूस होकर एक सख़ी की क़ब्र पर गये और उसकी क़ब्र पर बैठ कर यह सारा क़िस्सा बयान किया और वहां से उठकर चले आये और वापस आकर अपने पास से एक दीनार निकाला, उसको तोड़ कर दो टुकड़े किये और एक टुकड़ा अपने पास रख लिया, दूसरा उस फ़क़ीर को दे दिया कि मैं क़र्ज़ देता हूं, इस वक़्त तुम इससे अपना काम चला लो, जब तुम्हारे पास कहीं से कुछ आ जाये तो मेरा क़र्ज़ अदा कर देना। वह लेकर चला गया और अपनी ज़रूरत पूरी कर ली।

रात को उन साहिबे दीनार ने उस क़ब्र वाले को ख़्वाब में देखा, वह कह रहा है कि मैं ने तुम्हारी बात तो सारी सुन ली थी मगर मुझे जवाब देने की इजाज़त न हुई, तुम मेरे घर वालों के पास जाओ और उनसे कहो कि मकान के फ़लां हिस्से में जो चूल्हा बन रहा है, उसके नीचे एक चीनी का मर्तबान गड़ रहा है, उसमें पांच सौ अशर्फ़ियां हैं, वे उस फ़क़ीर को दे दें। यह सुबह को उठकर उसके मकान पर गये और घर वालों से सारा क़िस्सा और अपना ख़्वाब ब्यान किया। उन्होंने उस जगह को खोदा और वह मर्तबान पांच सौ अशर्फ़ियों का निकाल कर उसके हवाले कर दिया।

उस शख़्स ने कहा कि ख़्वाब कोई शरअी चीज़ नहीं है, तुम लोग इस

माल के वारिस और मालिक हो, इसलिए मैं महज़ अपने ख़्वाब की वजह से इसको नहीं लेता, मगर उन वारिसों ने इसरार किया कि जब वह मर कर सख़ावत करता है तो बड़ी बेग़ैरती है कि हम ज़िन्दा सख़ावत न करें। उनके इसरार पर उसने वे अशर्फ़ियां लेकर उस फ़क़ीर को दे दीं और सारा क़िस्सा सुनाया। उसने उनमें से एक दीनार लेकर उसके दो टुकड़े कर दिये, एक उन साहब को अपने क़र्ज़ की अदायगी में दिया और दूसरा टुकड़ा अपने पास रख कर कहा कि मेरी ज़रूरत को तो यह काफ़ी है, बाक़ी यह सब रक़म मेरी ज़रूरत से ज़ायद है, मैं इसको लेकर क्या करूँगा?

वह सब फ़ुक़रा पर तक़्सीम कर दी। साहिबे इत्तिहाफ़ कहते हैं कि इस क़िस्से में ग़ौर करने की चीज़ यह है कि सबसे ज़्यादा सख़ी कौन है? मय्यित या उसके घर वाले या वह फ़क़ीर, और हमारे नज़दीक तो यह फ़क़ीर सबसे ज़्यादा सख़ी है कि अपनी इस शिद्दते हाजत के बावजूद निस्फ़ (आधे) दीनार से ज़्यादा लेना पसंद न किया।

(इत्तिहाफ़)

25. अबू इस्हाक़ इब्राहीम बिन अबी हिलाल रह० मीर मुन्शी कहते हैं कि मैं एक मर्तबा वज़ीर अबू मुहम्मद महलबी के पास बैठा था, दरबान ने आकर इत्तिला दी कि सैय्यद शरीफ़ मुर्तज़ा रह० हाज़िरी की इजाज़त चाहते हैं। वज़ीर साहब ने इजाज़त दे दी और जब शरीफ़ मुर्तज़ा रह० अंदर आ गये तो वज़ीर साहब खड़े हुए और बड़े एज़ाज़ व इकराम से उनको अपनी मसनद पर बिठाया, उनसे बातें कीं और जब वह जाने लगे तो खड़े होकर उनको रूख़्सत किया, वह चले गये।

थोड़ी ही देर गुज़री थी कि दरबान ने आकर इत्तिला दी कि उनके छोटे भाई सैय्यद शरीफ़ रज़ी हाज़िरी की इजाज़त चाहते हैं। वज़ीर साहब उस वक़्त कुछ लिखने में मशग़ूल हो गये थे, उस पर्चे को जल्दी से डाल कर उठे और दरवाज़े तक हैरत ज़दा होकर गये और उनका हाथ बड़ी ताज़ीम, तकरीम से पकड़ा। उनको अपने साथ लाकर अपनी मसनद पर बिठाया और ख़ुद तवाज़ोअ् से उनके सामने बैठे और बातचीत बड़ी तवज्जोह से करते रहे और जब वह उठ कर जाने लगे तो दरवाज़े तक उन को पहुँचाने गये और वापस आकर अपनी जगह बैठ गये।

उस वक़्त तो वज़ीर साहब के पास मजमा था, मेरी कुछ पूछने की हिम्मत न हुई। जब मजमा कम हो गया तो मैं ने वज़ीर साहब से अर्ज़ किया कि

मैं एक बात दर्याफ़्त करना चाहता हूँ, अगर इजाज़त हो तो अर्ज़ करूँ। वज़ीर ने कहा, ज़रूर इजाज़त है और ग़ालिबन तुम यह पूछोगे कि मैं ने छोटे भाई का जितना इकराम किया उतना बड़े का नहीं किया? हालांकि वह इल्म और उम्र दोनों में उनसे बढ़े हुए थे, मैं ने कहा हां, यही सवाल है।

वज़ीर ने कहा सुनो, हमने एक नहर खोदने का हुक्म दिया था, उसके क़रीब शरीफ़ मुर्तज़ा की ज़मीन भी थी जिसकी वजह से उस नहर के मसारिफ़ में से सोलह दिरम के क़रीब हिस्सा रसद उनके ज़िम्मे भी पड़े थे, उन्होंने मुझे कई मर्तबा पर्चा लिखा कि इसमें से कुछ कम कर दूँ इतनी ज़रा सी रक़म के लिए बार बार वह मुझ से सवाल करते रहे, और सैय्यद रज़ी के मुताल्लिक़ मुझे एक दफ़ा मालूम हुआ कि उनके घर लड़का पैदा हुआ। मैं ने उसकी ख़ुशी में और उनकी ज़रूरत का ख़्याल करके एक ख़्वांची में सौ दीनार (अशर्फ़ियां) उनकी ख़िदमत में भेजे, उन्हों ने वापस कर दिये और यह कह कर भेजा कि वज़ीर साहब से (शुक्रिये के बाद) कह दें कि मैं लोगों की अतायें क़ुबूल नहीं करता (अल्लाह का शुक्र है मेरी ज़रूरत के बक़द्र मेरे पास मौजूद है) मैं ने फिर दोबारा वह ख़्वान भेजा कि यह दाया वग़ैरह काम करने वाली औरतों के लिये भेजा है। उन्हों ने फिर वापस कर दिया और यह फ़रमाया कि मेरे घर की औरतें भी दूसरों से कुछ लेने की आदी नहीं हैं। मैं ने तीसरी मर्तबा फिर भेजा और यह अर्ज़ किया कि जनाब के पास जो तलबा रहते हैं, ये उनके लिए हैं, फ़रमाया बड़ी ख़ुशी है और वह ख़्वान उन तलबा के दर्मियान रखवा दिया कि जिसको जितनी ज़रूरत हो ले ले।

शरीफ़ रज़ी रह॰ के यहां तलबा का बड़ा मजमा रहता था, एक मकान उन्हों ने तलबा के रहने के लिए बना रखा था, जिसका नाम दारूल उलूम रखा था, उसमें ये तलबा रहते थे और उनकी ज़रूरियात का शरीफ़ रज़ी रह॰ की तरफ़ से इंतिज़ाम था।

यह ख़्वान दारूल उलूम में रखने के बाद तलबा में से कोई भी न उठा। बजुज़ एक तालिब इल्म के कि उसने उठ कर ख़्वान में से एक दीनार निकाला और उसको वहीं तोड़ कर ज़रा सा कोना उसका अपने पास रख लिया और बाक़ी हिस्सा उसी ख़्वान में डाल दिया। शरीफ़ रज़ी रह॰ ने उस तालिब इल्म से दर्याफ़्त किया कि तुम्हें यह ज़रा सी मिक़्दार किस काम के वास्ते दरकार थी? उसने अर्ज़ किया कि एक रात मेरे पास चिराग़ में जलाने को तेल नहीं था,

ख़ज़ांची साहब मिले नहीं, मैं फ़लां दुकानदार से तेल कर्ज़ लाया था, यह उसका कर्ज़ अदा करना है।

शरीफ़ रज़ी रह० ने यह ख़बर सुन कर तलबा की तायदाद के मुवाफ़िक़ अपने ख़ज़ाने की कुंजियां बनवायीं और हर तालिब इल्म को एक एक कुंजी ख़ज़ाने की दे दी कि जिसको जब जितनी ज़रूरत हो ले ले, ख़ज़ांची साहब से पूछने की ज़रूरत नहीं, और उस ख़्वान को उसी हाल में कि एक दीनार उसमें से ज़रा सा टूटा हुआ था, वापस कर दिया। यह क़िस्सा सुन कर वज़ीर साहब ने कहा कि तुम ही बताओ कि मैं ऐसे शख़्स का इकराम क्यों न करूँ। *(इत्तिहाफ़)*

26. हज़रत इमाम शाफ़ई साहब रह० का जब इंतिक़ाल होने लगा तो आपने वसीयत फ़रमायी कि मेरा ग़ुस्ले मय्यित मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल हकीम देंगे। जब आपका इंतिक़ाल हो गया तो मुहम्मद रह० को इत्तिला दी गयी, वह तशरीफ़ लाये और फ़रमाया कि उनके हिसाब का रजिस्टर पहले मुझे दिखाओ। रजिस्टर लाया गया, उसमें हज़रत इमाम के ज़िम्मे जो कर्ज़ा लोगों का था, वह सब हिसाब करके जमा किया, उसकी मिक़्दार सत्तर हज़ार दिरम थी। मुहम्मद रह० ने फ़रमाया कि यह सब कर्ज़ा मेरे ज़िम्मे है। अपनी ज़िम्मेदारी का काग़ज़ लिख दिया और फ़रमाया कि मेरे ग़ुस्ल देने से यही मुराद थी और इसके बाद उस सारे कर्ज़े को अदा कर दिया। *(इत्तिहाफ़)*

27. हज़रत इमाम शाफ़ई रह० फ़रमाते हैं कि हम्माद बिन अबी सुलैमान रह० से (जो हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रह० के मशहूर उस्ताद हैं,) हमेशा मुहब्बत रही, इस वजह से कि मुझे उनका एक वाक़िआ मालूम हुआ था और वह यह था कि वह एक दिन गधे पर सवार जा रहे थे, उसके एड़ मारी, वह ज़ोर से दौड़ा तो उसके झटके से हज़रत हम्माद रह० के कुर्ते की घुन्डी टूट गयी। रास्ते में एक दर्ज़ी की दुकान नज़र पड़ी, उसको सिलवाने के लिए उतरने लगे। दर्ज़ी ने कहा, उतरने की ज़रूरत नहीं, मामूली सा काम है, मैं अभी लगाये देता हूँ। दर्ज़ी ने खड़े होकर वह घुंडी कुर्ते में सी दी। हम्माद रह० ने उसकी उज्रत में एक थैली दी, जिसमें दस अशर्फ़ियां थीं और मुआवज़े की कमी की माज़िरत की। *(इत्तिहाफ़)*

28. रबीअ् बिन सुलैमान रह० कहते हैं कि हज़रत इमाम शाफ़ई रह० एक मर्तबा सवारी पर सवार हो रहे थे, एक शख़्स ने जल्दी से रकाब पकड़ ली (ताकि चढ़ने में सहूलत हो) हज़रत इमाम ने मुझसे फ़रमाया कि मेरी तरफ़ से

इस शख़्स को चार अशर्फ़ियां दे दो और कमी की माज़िरत भी कर देना।

और अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर हमीदी रह० कहते हैं कि एक मर्तबा हज़रत इमाम शाफ़ई रह० हज के लिए तशरीफ़ ले गये। दस हज़ार अशर्फ़ियां आपके पास थीं। मक्का मुकर्रमा से बाहर आपका ख़ेमा लगा हुआ था। सुबह की नमाज़ के बाद आपने वहीं ख़ेमे में एक कपड़ा बिछा कर वे अशर्फ़ियां उस पर डाल दीं और (अहले मक्का में से) जो जो मिलने के लिए आता रहा, एक एक मुट्ठी उसको देते रहे। ज़ुहर के वक़्त तक वे सब ख़त्म हो गयीं। *(इत्तिहाफ़)*

29. मुहम्मद बिन इबाद महलबी रह० कहते हैं कि मेरे वालिद एक मर्तबा मामून रशीद के पास गये। उसने एक लाख दिरम नज़राना पेश किया, वहां से जब उठकर आये तो वह सब उसी वक़्त फ़ुक़रा पर तक़्सीम कर दिया। इसके बाद फिर जब मामून के पास जाने की नौबत आयी तो उसने सब तक़्सीम कर देने पर नागवारी का इज़्हार किया तो वालिद साहब ने फ़रमाया कि अमीरूल मोमिनीन मौजूद के साथ बुख़्ल करना माबूद के साथ बदगुमानी है (कि उसने एक मर्तबा तो दे दिया, फिर कहां से देगा?) *(इत्तिहाफ़)*

30. हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह अलफ़य्याज़ सहाबी रज़ि० मशहूर सख़ी लोगों में से हैं। उनके ज़िम्मे एक मर्तबा हज़रत उस्मान रज़ि० के पचास हज़ार दिरम क़र्ज़ हो गये थे। हज़रत उस्मान रज़ि० मस्जिद में तशरीफ़ ले जा रहे थे। रास्ते में मिले। उन्हों ने अर्ज़ किया कि मेरे पास दाम इस वक़्त आ गये हैं, आपका क़र्ज़ा अदा करना चाहता हूँ। हज़रत उस्मान रज़ि० ने फ़रमा दिया कि बस वह तुम्हारी ही नज़्र है। तुम्हारे ज़िम्मे लोगों के बहुत इख़्राजात रहते हैं।

जाबिर बिन क़बीसा रह० कहते हैं कि मैं बहुत दिन तक हज़रत तलहा रज़ि० के साथ रहा, बिला तलब अता करने वाला मैं ने उनसे ज़्यादा नहीं देखा। हज़रत हसन रज़ि० कहते हैं कि एक मर्तबा उन्होंने एक ज़मीन सात लाख में फ़रोख़्त की। क़ीमत जब वसूल हुई तो शाम का वक़्त हो गया था, वह रक़म रात को उनके पास रही, रात भर सख़्त बेचैनी में जागते गुज़र गयी, इस ख़ौफ़ से कि यह माल मेरे पास है (कहीं मौत न आ जाये) सुबह को उठ कर सबसे पहले उसको तक़्सीम किया।

उनकी बीवी हज़रत सअदी बिन्त औफ़ रज़ि० कहती हैं कि मैं ने एक मर्तबा उनको देखा कि बहुत गरानी सी हो रही है। मैं ने पूछा, ख़ैरियत तो है,

कैसी तबीअत हो रही है? कहने लगे मेरे पास कुछ माल जमा हो गया, उसकी वजह से बड़ी घुटन हो रही है? मैं ने कहा यह तो कुछ ऐसी बात नहीं है, ग़ुलाम को भेज कर अपने रिश्तेदारों को बुला लीजिए और (सिला रहमी में) उन पर तक़्सीम कर दीजिए। चुनांचे उन्होंने उसी वक़्त ग़ुलाम को भेज कर आदमियों को बुलाया और उसको तक़्सीम कर दिया। रावी कहते हैं कि मैं ने उनके ख़ादिम से पूछा, यह कितना माल था? उसने बताया चार लाख था।

उनकी बीवी एक और वाक़िआ यह बयान करती हैं कि एक दफ़ा वह घर में आये, चेहरा बहुत ही उतरा हुआ, रंज की वजह से स्याही चेहरे पर आ रही थी। मैं ने पूछा क्या बात है? कुछ मेरी तरफ़ से कोई नागवारी की बात पेश आयी हो तो मैं माफ़ी की दरख़्वास्त पेश करूँगी। कहने लगे नहीं तू तो मुसलमान के लिए बहुत बेहतरीन बीवी है। (कि नेक काम में मदद करती है) मैं ने पूछा फिर आख़िर क्या बात पेश आ गयी? कहने लगे, कुछ माल जमा हो गया, मुझे उसकी बड़ी बेचैनी हो रही है। मैंनें कहा, इसमें तो कोई ऐसी बात नहीं, उसे उठाकर बांट दो। इसमें क्या हो गया। बाज़ मर्तबा कोई लेने वाला नहीं आता था, तो वह रह जाता था।

उनकी बीवी सअ्दी यह भी कहती हैं कि एक मर्तबा उन्हों ने एक लाख तक़्सीम किया और अपना यह हाल था कि उस दिन मस्जिद में इस वजह से जाने में देर हो गयी कि उनके पास जो कपड़ा था (चादर) उसके दोनों किनारे सीने में मुझे देर लगी (यानी वही एक कपड़ा था, उसके सिलने के इंतिज़ार में बैठे रहे, दूसरा कपड़ा न था जिसको पहन कर मस्जिद में चले जाते।)

एक गांव के रहने वाले हज़रत तलहा रज़ि॰ के पास आये और अपनी क़राबत का वास्ता देकर (सिला रहमी के तौर पर) कुछ मांगा। फ़रमाने लगे क़राबत का वास्ता देकर आज तक मुझसे किसी ने नहीं मांगा था। मेरे पास एक ज़मीन है, हज़रत उस्मान रज़ि॰ उसको ख़रीदना चाहते थे और वह उसकी क़ीमत तीन लाख लगा चुके हैं, तेरा दिल चाहे तो वह ज़मीन ले ले, और अगर नक़द चाहिए तो मैं उसको उनके हाथ फ़रोख़्त करके उसकी क़ीमत दे दूं। उसने क़ीमत लेना पसंद किया। उन्होंनें हज़रत उस्मान रज़ि॰ के हाथ उसको फ़रोख़्त करके उसकी क़ीमत उसको दे दी। *(इत्तिहाफ़)*

इन हज़रात के पास ज़मीनों की बहुत कसरत थी, इसलिए कि जहां जहां

जिहाद में जाते, वे मुल्क फ़तह होते तो अक्सर ग़नीमत के साथ ज़मीनें भी उन मुजाहिदीन पर तक़्सीम कर दी जाती थीं।

31. एक मर्तबा हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू बैठे रो रहे थे, किसी ने रोने का सबब पूछा तो फ़रमाया कि सात दिन से कोई मेहमान नहीं आया, मुझे यह डर है कि कहीं हक़ तआला शानुहू ने (किसी बात से नाराज़ होकर) मेरे ज़लील करने का तो इरादा नहीं फ़रमा लिया। *(इत्तिहाफ़)*

32. एक मर्तबा एक शख़्स अपने एक दोस्त के पास गया और जाकर कहा कि मेरे ज़िम्मे चार सौ दिरम क़र्ज़ हो गया, तुझसे मदद चाहने आया हूँ। उसने फ़ौरन चार सौ दिरम वज़न करके दिये। जब वह चला गया तो उसने रोना शुरू कर दिया। बीवी को यह ख़्याल हुआ कि शायद इसको माल के जाने का सदमा हुआ, वह कहने लगी कि अगर इतनी गरानी थी तो देने ही की क्या ज़रूरत थी, वह कहने लगा कि मैं इस पर रो रहा हूँ कि मैं ने उसके साथ ताल्लुक़ात के बावजूद उसके हाल की ख़बर ख़ुद क्यों न रखी? उसको मुझ से मांगने की नौबत क्यों आयी? *(इत्तिहाफ़)*

33. हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि॰ एक मर्तबा जंगल में तशरीफ़ ले जा रहे थे, रास्ते में एक बाग़ पर गुज़र हुआ, वहां एक हब्शी ग़ुलाम बाग़ में काम कर रहा था, उसकी रोटी आयी और उसके साथ ही एक कुत्ता भी बाग़ में चला आया और उस ग़ुलाम के पास आकर खड़ा हो गया। उस ग़ुलाम ने काम करते करते एक रोटी उस कुत्ते के सामने डाल दी। उस कुत्ते ने उसको खा लिया और फिर खड़ा रहा, उसने दूसरी फिर तीसरी रोटी भी डाल दी। कुल तीन ही रोटियां थीं, वे तीनों कुत्ते को खिला दीं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि॰ ग़ौर से खड़े देखते रहे, जब वे तीनों ख़त्म हो गयीं तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि॰ ने उस ग़ुलाम से पूछा कि तुम्हारी कितनी रोटियां रोज़ाना आती हैं? उसने अर्ज़ किया आपने तो मुलाहज़ा फ़रमा लिया, तीन ही आया करती हैं। हज़रत ने फ़रमाया कि फिर तीनों का ईसार क्यों कर दिया? ग़ुलाम ने कहा, हज़रत यहां कुत्ते रहते नहीं हैं, यह ग़रीब भूखा कहीं दूर से मुसाफ़त तै करके आया है इसलिए मुझे अच्छा न लगा कि इस को वैसे ही वापस कर दूं। हज़रत ने फ़रमाया कि तुम आज क्या खाओगे? ग़ुलाम ने कहा, एक दिन का फ़ाक़ा कर लूंगा, यह तो कोई ऐसी बड़ी बात नहीं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ि॰ ने अपने दिल में सोचा कि लोग मुझे मलामत करते हैं कि तू बहुत सख़ावत करता है, यह ग़ुलाम तो मुझ से बहुत ज़्यादा सख़ी है। यह सोच कर शहर में वापस तशरीफ़ ले गये और उस बाग़ को और ग़ुलाम को और जो कुछ सामान बाग़ में था, सब को उसके मालिक से ख़रीदा और ख़रीद कर ग़ुलाम को आज़ाद किया और वह बाग़ उस ग़ुलाम की नज़्र कर दिया। (इत्तिहाफ़)

34. अबुल हसन अन्ताकी रह॰ ख़ुरासान के शहरों में एक जगह रै है, वहां रहते थे। एक दिन तीस आदमियों से ज़्यादा मेहमान आ गये और रोटी थोड़ी थी, तैयारी का मौक़ा न था, रात का वक़्त था। उन्हों ने जितनी रोटियां मौजूद थीं, सब के टुकड़े किये और दस्तरख़्वान पर उन को फैला कर सबको बिठाया और चिराग़ गुल कर दिया और सब के सब ने खाना शुरू कर दिया। सबके मुंह चलाने की आवाज़ आती थी, जब देर हो गयी और गोया सब बिल्कुल फ़ारिग़ हो गये तो चिराग़ लाया गया और दस्तरख़्वान उठाया गया, उसमें वे सारे टुकड़े बदस्तूर रखे थे सब ही ख़ाली मुंह चलते रहे, किसी ने भी इस ख़्याल से न खाया कि अच्छा है, दूसरे ही का काम चल जायेगा। (इत्तिहाफ़)

35. हज़रत शौअ्बा रह॰ मशहूर मुहद्दिस हैं, अमीरूल मोमिनीन फ़िल हदीस (हदीस में मोमिनों के बादशाह) उनका लक़ब है, बड़े आबिद ज़ाहिद लोगों में थे। एक मर्तबा एक साइल उनके पास हाज़िर हुआ, देने के लिए कोई चीज़ मयस्सर न हुई, अपने मकान की छत में से एक कड़ी निकाल कर उसके हवाले की (कि इसको फ़रोख़्त कर लेना) और उससे बहुत माज़िरत की कि इस वक़्त मेरे पास देने को कुछ है नहीं। (इत्तिहाफ़)

36. हज़रत अबू सहल सालूकी रह॰ एक मर्तबा वुज़ू कर रहे थे, एक शख़्स आया और कुछ ज़रूरत का इज़्हार किया। देने के वास्ते कोई चीज़ मौजूद नहीं थी, फ़रमाने लगे, थोड़ी देर इंतिज़ार कर लो, मैं वुज़ू से फ़ारिग़ हो जाऊं। जब वुज़ू कर चुके तो फ़रमाया कि यह लकड़ी का लोटा जिससे वुज़ू कर रहे थे, ले जाओ और कोई चीज़ इस वक़्त है नहीं। (इत्तिहाफ़)

37. यर्मूक की लड़ाई में साहबा-ए-किराम रज़ि॰ की एक बड़ी जमाअत ने पानी के मौजूद होते हुए इस वजह से प्यासे जान दे दी कि जब उनके क़रीब पानी पहुँचा तो किसी दूसरे ने आह कर दी और उसने बजाए अपने पीने के दूसरे

की तरफ़ पानी ले जाने का इशारा कर दिया। एक वाक़िआ इसका हिकायाते सहाबा रज़ि॰ में लिखा जा चुका है मगर असहाबे मग़ाज़ी ने लिखा है कि हज़रत इकरमा रज़ि॰ बिन अबी जहल, सुहैल बिन अमर रज़ि॰, सहल बिन हारिस रज़ि॰, हारिस बिन हिशाम रज़ि॰ और क़बीला मुग़ीरा की एक जमाअत ने इसी तरह प्यासे दम तोड़ा कि उनके पास पानी लाया जाता था और ये दूसरे की तरफ़ इशारा कर देते थे।

हज़रत इकरमा रज़ि॰ के पास पानी लाया गया तो उन्हों ने देखा कि हज़रत सुहैल बिन अम्र रज़ि॰ पानी की तरफ़ देख रहे हैं, उन्हों ने फ़रमा दिया पहले सुहेल (रज़ि॰) को पिला दो, जब उनके पास ले गये तो, उन्हों ने देखा कि हज़रत सहल बिन हारिस रज़ि॰ पानी की तरफ़ देख रहे हैं, उन्हों ने फ़रमा दिया कि पहले सहल को पिला दो, ग़रज़ इन सब हज़रात ने प्यासे ही जान दे दी।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि॰ जब इनकी लाशों पर गुज़रे तो फ़रमाने लगे कि तुम पर मेरी जान क़ुर्बान हो जाये (तुमसे इस वक़्त भी ईसार न छुटा)

(इत्तिहाफ़)

38. अब्बास बिन दहक़ान रह॰ कहते हैं कि बिश्र बिन हारिस हाफ़ी रह॰ के अलावा कोई शख़्स ऐसा न होगा जो कि जिस हाल में दुनिया में आया था यानी ख़ाली हाथ, नंगा बदन ऐसा ही दुनिया से गया हो। बिश्र बिन हाफ़ी रह॰ अलबत्ता इसी तरह गये कि वह बीमार थे, विसाल का वक़्त क़रीब था, एक साइल आ गया और अपनी ज़रूरत का हाल ज़ाहिर किया जो कुर्ता बदन पर था, वह निकाल कर उसको बख़्श दिया और ख़ुद थोड़ी देर के लिए दूसरे से कुर्ता मुस्तआर मांगा और उसी में विसाल फ़रमाया। *(इत्तिहाफ़)*

39. कौन कहता है कि ये वाक़िआत पिछले ही बुज़ुर्गों के साथ ख़ास थे। हज़रत अक़्दस मौलाना अलहाज्ज शाह अब्दुर्रहीम साहब रायपूरी क़द्दस सिर्रहू के विसाल को ज़्यादा ज़माना नहीं गुज़रा, हज़रत रह॰ का मामूल था कि जो कुछ कहीं से आता, वह फ़ौरन ही तक़्सीम फ़रमा देते और कभी कभी तकिये के नीचे कुछ रखा हुआ देख कर फ़रमाते कि यह और आ गया, और विसाल से कुछ ज़माना पहले अपने सब कपड़ों को ख़ुद्दाम पर तक़्सीम फ़रमा दिये थे और अपने मुख़्लिस ख़ादिम (ख़लीफ़ा-ए-ख़ास) हज़रत मौलाना अलहाज्ज शाह अब्दुल क़ादिर साहब दाम मज्दुहम व ज़ाद फ़ज़्लु हुम से इर्शाद फ़रमाया कि बस अब

ज़िन्दगी के जितने दिन बाक़ी हैं, तुमसे कपड़े मुस्तआर लेकर पहन लिया करेंगे, चुनांचे हज़रत मौलाना ही के कपड़े आख़िर में इस्तेमाल फ़रमाते थे।

40. एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि हम चंद आदमी तर्तूस में, जो मुल्क शाम का एक शहर है, जमा होकर बाहर जा रहे थे, चलते हुए एक कुत्ता भी हमारे साथ हो गया, जब हम शहर से बाहर निकले तो एक मरा हुआ जानवर पड़ा था, हम लोग उससे बच कर ज़रा फ़ासले से एक ऊँची जगह पर बैठ गये। वह कुत्ता जो हमारे साथ हो गया था, उसने जब उस मुर्दार को देखा तो शहर की तरफ़ वापस हो गया और थोड़ी ही देर गुज़री थी कि वह अपने साथ तक़रीबन बीस कुत्ते और लाया और उस मुर्दार के पास आकर वह ख़ुद तो अलाहिदा को बैठ गया और सब कुत्ते उसको खाते रहे। जब वे सब खाकर शहर की तरफ़ चले गये तो यह कुत्ता जो बुलाने गया था, अपनी जगह से उठा और उसके पास आकर जो हड्डियां वग़ैरह वे सब खाकर छोड़ गये थे, उनको उसने खाया और फिर शहर की तरफ़ चला गया। *(इत्तिहाफ़)*

41. अबुल हसन बूशन्जी एक बुज़ुर्ग थे। एक मर्तबा पाख़ाने में जा चुके थे, वहीं से एक शागिर्द को आवाज़ दी और अपना कुर्ता निकाल कर कहा कि यह फ़लां फ़क़ीर को दे आओ। शागिर्द ने कहा कि आप इस्तिंजे से फ़राग़त का इंतिज़ार कर लेते। कहने लगे कि मुझे उसकी ज़रूरत का ख़्याल आकर यह इरादा हुआ कि कुर्ता उसको दे दूं, और अपने नफ़्स पर इसका ऐतिमाद नहीं था कि वह इंस्तिजें से फ़राग़त तक बदल न जाये। *(इत्तिहाफ़)*

पाख़ाने में बोलना मक्रूह है लेकिन सदक़ा करने के जज़्बे और अपने नफ़्स पर बदगुमानी ने इस पर मजबूर कर दिया या उस वक़्त तक कश्फ़े औरत ही न हुआ हो (यानी सतर नहीं खोला था)।

42. अमीरूल मोमिनीन मेहदी ने मूसा बिन जाफ़र रह० को बग़ावत के अंदेशे से क़ैद कर रखा था। एक मर्तबा रात को वह तहज्जुद की नमाज़ पढ़ रहे थे, उसमें सूर: मुहम्मद की आयत-

فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ تَوَلَّيْتُمْ أَنْ تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ وَتُقَطِّعُوا أَرْحَامَكُمْ ٥ (الآية)

"फ़-हल् अ-सै तुम् इन्-त-व ल्लै तुम् अन् तुफ़्सिदू फ़िल् अर्ज़ि व तु क़त्तिअू अर्हाम-कुम०"

पर पहुँचे और यहां पहुँच कर रोने लगे। इस आयते शरीफ़ा को बार बार

पढ़ते और रोते थे। सलाम फेर कर रबीअ रह॰ से कहा कि मूसा को बुला कर लाओ। रबीअ् रह॰ कहते हैं कि मैं उनको बुला कर लाया और जब वापस आया तो तब भी वह इसी आयत को बार बार पढ़ रहे थें और रो रहे थे।

जब मूसा आये तो मेहदी ने कहा कि मैं यह आयत पढ़ रहा था, मुझे यह अंदेशा हुआ कि मैं ने कृतअ-ए-रहमी कर रखी है, अगर तू इसका वायदा करे कि मेरी औलाद के ख़िलाफ़ बग़ावत नहीं करेगा तो मैं छोड़ दूं। मूसा ने कहा, मेरी तो ऐसी हैसियत भी नहीं है और न इसका ख़्याल है। मेहदी ने रबीअ् रह॰ से कहा कि इसको इसी वक़्त तीन हज़ार अशर्फ़ियां देकर इसी वक़्त रात ही को चलता कर दो, ऐसा न हो कि फिर कहीं मेरी राय बदल जाये। *(इत्तिहाफ़)*

43. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ से नक़ल किया गया कि हज़रत हसन, हज़रत हुसैन रज़ि॰ एक मर्तबा बहुत बीमार हो गये तो हज़रत अली और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने नज़्र (मन्नत) मानी की अगर ये तन्दुरूस्त हो जायें तो शुक्राने के तौर पर तीन तीन रोज़े दोनों हज़रात रखेंगे। अल्लाह तआला शानुहू के फ़ज़्ल से साहब ज़ादों को सेहत हो गयी। उन हज़रात ने शुक्राने के रोज़े रखना शुरू फ़रमा दिये, मगर घर में न सहर के लिए कुछ था, न इफ़्तार के लिए। फ़ाक़े पर रोज़ा शुरू कर दिया।

सुबह को हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू एक यहूदी के पास तशरीफ़ ले गये, जिसका नाम शमऊन था कि अगर तू कुछ ऊन धागा बनाने के लिए उजरत पर दे दे तो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बेटी इस काम को कर देगी। उसने ऊन का एक गटठर तीन साअ् जौ की उजरत तै करके दे दिया। हज़रत फ़ातिमा रज़ि॰ ने उसमें से एक तिहाई काता और एक साअ् जौ उजरत के लेकर उनको पीसा और पांच नान उसके तैयार किये। एक एक अपना मियां बीवी का, दो दोनों साहबज़ादों के और एक बांदी का, जिसका नाम फ़िज़्ज़ा था। रोज़े में दिन भर की मज़दूरी और मेहनत के बाद जब हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू हुज़ूर सल्ल॰. के साथ मग़्रिब की नमाज़ पढ़ कर लौटे और खाना खाने के लिए दस्तर ख़्वान बिछाया गया, हज़रत अली रज़ि॰ ने टुकड़ा तोड़ा ही था कि एक फ़क़ीर ने दरवाज़े से आवाज़ दी कि ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर वालो, मैं एक फ़क़ीर मिस्कीन हूँ मुझे खाना दे दो, अल्लाह जल्ल शानुहू तुम्हें जन्नत के दस्तरख़्वान में खाना खिलाये। हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू ने हाथ रोक लिया, हज़रत फ़ातिमा रज़ि॰ से मशवरा किया, उन्हों ने

फ़रमाया ज़रूर दे दीजिये। वे सब रोटियां उसको दे दीं और घर वाले सब के सब फ़ाक़े से रहे। इसी हाल में दूसरे दिन का रोज़ा शुरू कर दिया।

दूसरे दिन में फिर हज़रत फ़ातिमा रज़ि॰ ने दूसरी तिहाई ऊन काती और एक साअ् जौ की उजूरत लेकर उसको पीसा, रोटियां पकाईं और जब हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू हुज़ूर सल्ल॰ के साथ मग़रिब की नमाज़ पढ़कर तशरीफ़ लाये और सब के सब खाने के लिए बैठे तो एक यतीम ने दरवाज़े से सवाल किया और अपनी तंहाई और फ़क्र का इज़्हार किया, उन हज़रात ने उस दिन की रोटियां उसके हवाले कर दीं और खुद पानी पीकर तीसरे दिन का रोज़ा शुरू कर दिया और सुबह को हज़रत फ़ातिमा रज़ि॰ ने ऊन का बाक़ी हिस्सा काता और एक साअ जौ का जो रह गया था, वह लेकर पीसा, रोटियां पकाईं और मग़रिब की नमाज़ के बाद जब खाने बैठे तो एक क़ैदी ने आकर आवाज़ दे दी और अपनी सख़्त हाजत और परेशानी का इज़्हार किया। उन हज़रात ने उस दिन की रोटियां उसको दे दीं और ख़ुद फ़ाक़े से रहे।

चौथे दिन सुबह को रोज़ा तो था नहीं, लेकिन खाने को भी कुछ नहीं था। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु दोनों साहबज़ादों को लेकर हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुए, भूख और ज़ोअफ़ की वजह से चलना भी मुश्किल हो रहा था। हुज़ूर सल्ल॰ ने हज़रत अली रज़ि॰ से फ़रमाया कि तुम्हारी तक्लीफ़ और तंगी को देखकर मुझे बहुत तक्लीफ़ होती है, चलो फ़ातिमा के पास चलें।

हुज़ूर सल्ल॰ हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास तशरीफ़ लाये, वह नमाज़ पढ़ रहीं थीं, भूख की शिद्दत से आंखे गड़ गयी थीं, पेट कमर से लग रहा था। हुज़ूर सल्ल॰ ने उनको अपने सीने से लगाया और हक़ तआला शानुहू से फ़रियाद की, इस पर हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम सूरः दहर की आयात:-

وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا ۔(الآية)

"व युत्‌अिमूनत्त आ-म अला हुब्बिही मिस्कीनंव्-व यतीमंव्-व असीरा॰"

लेकर आये और इस परवाना-ए-ख़ुश्नूदी की मुबारक बाद दी।

(मुसामरात अव्वल)

ये आयात पहली फ़स्ल की आयात के सिलसिले में नं॰ 34 पर गुज़र चुकी हैं, अल्लामा सुयूती रह॰ ने दुर्रे मंसूर में बरिवायत इब्ने मर्दूवियः हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ से मुख़्तसरन यह मज़्मून नक़ल किया है कि ये आयतें हज़रत

अली रज़ि॰ की और हज़रत फ़ातिमा रज़ि॰ की शान में नाज़िल हुई हैं।

44. एक शराबी था, जिसके यहां हर वक्त शराब का दौर रहता था, एक मर्तबा उसके यार अहबाब जमा थे, शराब तैयार थी, उसने अपने एक ग़ुलाम को चार दिरम दिये कि शराब पीने से पहले दोस्तों को खिलाने के लिए कुछ फल ख़रीद कर लाये।

वह ग़ुलाम बाज़ार जा रहा था, रास्ते में हज़रत मंसूर बिन अम्मार बसरी रह॰ की मज्लिस पर गुज़र हुआ, वह किसी फ़कीर के वास्ते लोगों से कुछ मांग रहे थे और यह फ़रमा रहे थे कि जो शख़्स इस फ़कीर को चार दिरम दे, मैं उसके लिए चार दुआयें करूँगा। उस ग़ुलाम ने वे चारों दिरम उस फ़कीर को दे दिये।

हज़रत मंसूर रह॰ ने फ़रमाया कि बता क्या दुआ चाहता है? ग़ुलाम ने कहा कि मेरा एक आक़ा है, मैं उससे ख़लासी यानी आज़ादी चाहता हूँ। हज़रत मंसूर रह॰ ने उसकी दुआ की, फिर पूछा कि दूसरी दुआ क्या चाहता है? ग़ुलाम ने कहा कि मुझे इन दराहिम का बदला मिल जाये। मंसूर रह॰ ने इसकी भी दुआ की, फिर पूछा कि तीसरी क्या दुआ है? ग़ुलाम ने कहा कि हक़ तआला शानुहू मेरे सरदार (को तौबा की तौफ़ीक़ दे और उस) की तौबा को क़ुबूल कर ले। मंसूर रह॰ ने इसकी भी दुआ की, और पूछा कि चौथी क्या है? ग़ुलाम ने कहा कि हक़ तआला शानुहू मेरी और मेरे सरदार की और तुम्हारी और इस मज्मे की, जो यहां हाज़िर है, सब की मग़फ़िरत फ़रमा दे। हज़रत मंसूर रह॰ ने इसकी भी दुआ की।

इसके बाद वह ग़ुलाम (ख़ाली हाथ) अपने सरदार के पास वापस चला गया (और ख़्याल कर लिया कि बहुत से बहुत इतना ही होगा कि आक़ा मारेगा और क्या होगा) सरदार इंतिज़ार में था ही देख कर कहने लगा कि इतनी देर लगा दी? ग़ुलाम ने क़िस्सा सुनाया। सरदार ने (उनकी दुआओं की बरकत से बजाए ख़फ़ा होने और मारने के) यह पूछा कि क्या क्या दुआयें करायीं? ग़ुलाम ने कहा कि पहली तो यह कि मैं ग़ुलामी से आज़ाद हो जाऊँ, सरदार ने कहा कि मैं ने तुझे आज़ाद कर दिया। दूसरी क्या थी? ग़ुलाम ने कहा कि मुझे इन दिरहमों का बदला मिल जाये, सरदार ने कहा कि मेरी तरफ़ से तुझे चार हज़ार दिरम नज़्र हैं। तीसरी क्या थी? ग़ुलाम ने कहा, हक़ तआला शानुहू तुम्हें (शराब वग़ैरह

फ़िस्क़ व फ़ुजूर) से तौबा की तौफ़ीक़ दे, सरदार ने कहा कि मैं ने (अपने गुनाहों से तौबा कर ली) चौथी क्या थी? गुलाम ने कहा कि हक़ तआला शानुहू मेरी और आपकी और इन बुज़ुर्ग की और सारे मज्मे की मग़्फ़िरत फ़रमा दे, सरदार ने कहा कि यह मेरे इख़्तियार में नहीं है।

रात को सरदार ने ख़्वाब में देखा, कि कोई शख़्स कह रहा है कि जब तूने वे तीनों काम कर दिये जो तेरे इख़्तियार में थे तो क्या तेरा यह ख़्याल है कि मैं वह काम नहीं करूँगा, जो मेरे इख़्तियार में है। मैनें तेरी और उस गुलाम की और मंसूर (रह०) की और उस सारे मज्मे की मग़्फ़िरत कर दी। *(इत्तिहाफ़)*

45. अब्दुल वह्हाब बिन अब्दुल हमीद सक़फ़ी रह० कहते हैं कि मैं ने एक जनाज़ा देखा, जिसको तीन मर्द और एक औरत लिये जा रहे हैं और कोई आदमी जनाज़े के साथ नहीं था, मैं साथ हो लिया और औरत की जानिब का हिस्सा मैं ने ले लिया। क़ब्रस्तान ले गये, वहां उसके जनाज़े की नमाज़ पढ़ी और उसको दफ़्न करके मैं ने पूछा, यह किसका जनाज़ा था? औरत ने कहा यह मेरा बेटा था। मैं ने पूछा, तेरे मुहल्ले में और कोई मर्द न था जो तेरी जगह जनाज़े का चौथ पाया पकड़ लेता। उसने कहा, आदमी तो बहुत थे लेकिन इसको ज़लील समझ कर कोई साथ न आया, मैं ने पूछा क्या बात थी जिससे ज़लील समझते थे? कहने लगी, यह मुख़न्नस था (हिजड़ा या औरतों जैसी हरकात करने वाला)।

मुझे उस औरत पर तरस आया, मैं उसको अपने साथ अपने घर ले गया और उसको कुछ दिरम और कपड़े और गेहूँ दिये, मैं ने रात को ख़्वाब में देखा कि एक शख़्स इस क़दर हसीन गोया चौदहवीं रात का चांद, निहायत सफ़ेद, उम्दा लिबास पहने हुए आया और मेरा शुक्रिया अदा करने लगा। मैनें पूछा कि तुम कौन हो? कहने लगा कि मैं वही मुख़न्नस हूँ जिसको तुमने आज दफ़्न किया, मुझ पर हक़ तआला शानुहू ने इस वजह से रहमत फ़रमा दी कि लोग मुझे ज़लील समझते थे। *(इत्तिहाफ़)*

46. मुहम्मद बिन सह्ल बुख़ारी रह० कहते हैं कि मैं मक्का मुकर्रमा के रास्ते में जा रहा था, मैं ने देखा कि एक मग़रिबी शख़्स एक ख़च्चर पर सवार है और उसके आगे एक शख़्स यह ऐलान करता जाता है कि (एक हिमयानी खोई गयी) जो शख़्स हिमयानी का पता बता दे उसको सौ अशर्फ़ियां मैं अपने पास से दूँगा, इसलिए कि उस हिमयानी में अमानतें थीं (हिमयानी, रूपया, अशर्फ़ियां

रखने की लम्बी थैली होती है जो कमर से बांधी जाती है) इस ऐलान पर एक लंगड़ा शख़्स जिसके ऊपर बहुत फटे पुराने कपड़े थे, उस मग़्रिबी के पास आया और उससे उस हिमयानी की अलामतें पूछीं कि कैसी थी? मग़्रिबी ने उसकी अलामतें बताईं और कहा कि उसमें बहुत से आदमियों की आमनतें रखी हुई हैं।

लंगड़े ने पूछा कि कोई शख़्स यहां ऐसा है कि लिखना पढ़ना जानता हो। मुहम्मद बिन सह्ल ने कहा, मैं जानता हूँ। वह लंगड़ा हम तीनों को अपने साथ अलग एक तरफ़ ले गया और एक हिमयानी निकाल कर दिखाई। वह मग़्रिबी उसके अंदर की चीज़ें बताता रहा कि दो दाने फ़लां औरत, फ़लां की बेटी के पांच सौ अशर्फ़ियों के बदले में रखे हैं और एक दाना (अदद) ,फ़लां शख़्स का सौ अशर्फ़ी में रखा है। इसी तरह एक एक चीज़ गिनवाता रहा और मैं उसके अंदर रखी हुई चीज़ों को पढ़ कर बताता रहा कि वह यह है, वह यह है। उस मग़्रिबी ने उस हिमयानी की सब चीज़ें शुमार करा दीं और वे सब की सब उसमें से पूरी निकलीं।

जब सब सही सही निकल आया तो उस लंगड़े ने वह हिमयानी मग़्रिबी के हवाले कर दी। उसने अपने वायदे के मुवाफ़िक़ अपने पास से सौ दीनार अशर्फ़ियां निकाल कर उस लंगड़े को दिये। उसने लेने से इंकार कर दिया। और यह कहा कि अगर इस हिमयानी की क़द्र मेरी निगाह में दो मेंगनियों के बराबर भी होती तो शायद तुम इसको न पा सकते, ऐसी चीज़ पर क्या मुआवज़ा लूँ जिसकी क़ीमत मेरे नज़दीक दो मेंगनियां भी नहीं हैं, और यह कह वह लगंड़ा चल दिया और उन अशर्फ़ियों की तरफ़ निगाह भर कर भी न देखा।

(मुसामरात)

47. बुख़ारा का एक हाकिम बड़ा सख़्त ज़ालिम था, एक दिन वह अपनी सवारी पर चला जा रहा था, रास्ते में एक कुत्ता नज़र पड़ा, जिसको ख़ारिश हो रही थी और सर्दी ने उसको बहुत सता रखा था। बस ज़ालिम की उस पर निगाह पड़ते ही आंखों में आंसू भर आये और अपने एक नौकर से कहा कि इस कुत्ते को मेरे घर ले जाकर मेरे आने तक इसका ख़्याल रखियो, यह कह कर वह अपने काम जहां जा रहा था चला गया। जब वापस आया तो उस कुत्ते को मंगाया और घर के एक कोने में उसको बंधवा दिया, उसके सामने टुकड़ा डाला, पानी रखवाया और उसके बदन पर तेल मलवा कर एक कपड़े की झूल उसके ऊपर डलवाई। उसके क़रीब आग रखवायी ताकि उसकी गर्मी से उस पर

सर्दी का असर ज़ायल हो जाये और इस किस्से को दो ही दिन गुज़रे थे कि उस ज़ालिम का इंतिकाल हो गया।

एक बुज़ुर्ग ने, जो उसके मज़ालिम और उसकी हालत से खूब वाकिफ़ थे, उसको ख़्वाब में देखा, उससे पूछा कि क्या गुज़री? उसने कहा कि हक़ तआला शानुहू ने मुझे अपने सामने खड़ा किया और फ़रमाया कि तू कुत्ता था (यानी कुत्तों जैसा काम करता था) इंसानों जैसा काम नहीं करता था इसलिए हमने भी एक कुत्ते ही को तुझको दे दिया (यानी उस ख़ारिशी कुत्ते के तुफ़ैल में तेरी बख़्शिश कर दी) और मेरे ज़िम्मे जो हुकूक थे, उनका ख़ुद अदा फ़रमाने का इरादा फ़रमा लिया। *(मुसामरात)*

हक़ तआला शानुहू की ज़ात बड़ी करीम है, वह सारे करीमों का मालिक है, बादशाह है, उसके करम तक कोई कहां पहुंच सकता है, किसी शख़्स की कोई अदना सी चीज़ भी उसको पसंद आ जाये तो उस शख़्स का बेड़ा पार है। आदमी उसकी ख़ुशनूदी की तलाश में रहे, न मालूम किस की क्या बात आक़ा को पसंद आ जाये।

48. अबू उमर दमिश्क़ी रह० कहते हैं कि हम चंद आदमी हज़रत अबू अब्दुल्लाह बिन जला रह० के साथ मक्का मुकर्रमा जा रहे थे कई दिन ऐसे गुज़र गये कि खाने की कोई चीज़ मयस्सर न हुई। जंगल में एक औरत मिली, एक बकरी उसके साथ थी, हमने (ख़्याल किया कि इसको ख़रीद कर पका लेंगे इसलिए) उस औरत से पूछा कि इसकी क्या क़ीमत है? उसने कहा पचास दिरम क़ीमत है। हमने कहा, हम पर एहसान कर, कुछ कम कर दे। उसने कहा, पांच दिरम क़ीमत है। हमने कहा कि मज़ाक़ न कर, सही सही क़ीमत बता दे, अभी पचास दिरम कहती थी, अभी पांच दिरम कह दिये। उस औरत ने कहा, वल्लाह मज़ाक़ नहीं करती, तुम ने कहा एहसान कर, काश मुझे इस पर क़ुदरत होती कि मैं कुछ भी क़ीमत इसकी न लेती (लेकिन मैं भी मजबूर हूं, इसलिए पांच भी बमजबूरी कह दिये।)

हज़रत इब्ने जला रह० ने साथियों से पूछा कि तुम सबके पास कितने दिरम हैं, सबका मजमूआ छः सौ दिरम हुए। इब्ने जला रह० ने फ़रमाया कि ये सब इसको दे दो और बकरी भी इसी के पास रहने दो। हमने सब दिरम उसको दे दिये और हमारा सारा सफ़र अल्लाह के फ़ज़्ल से ऐसी राहत से गुज़रा कि हद

नहीं:-

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ

"सुब्हा-न कल्लाहुम्-म व बिहम्दि-क ला इला-ह इल्ला अन्-त अस्तग़्फ़िरु-क व अतूबु इलै क॰" (मुसामरात)

49. हज़रत इब्राहीम बिन अधम रह॰ ने एक मर्तबा एक शख़्स से दर्याफ़्त किया कि तू अल्लाह का वली बनना चाहता है? उसने कहा कि ज़रूर चाहता हूँ आपने फ़रमाया कि दुनिया और आख़िरत की किसी चीज़ में भी रग़्बत न कर और अपने आपको सिर्फ़ हक़ तआला शानुहू के लिए ख़ास कर ले और तू हमातन (पूरी तरह) उसकी तरफ़ मुतवज्जह हो जा, ताकि वह भी हमातन तेरी तरफ़ मुतवज्जह हो जाये और तुझे अपना वली बना ले। (रौज़)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सही अहादीस में हक़ तआला शानुहू का यह इर्शाद वारिद हुआ है कि जो शख़्स मेरी तरफ़ चल कर आता है, मैं उसकी तरफ़ दौड़ कर चलता हूँ, और जो मेरी तरफ़ एक बालिश्त क़रीब होता है, मैं उसकी तरफ़ एक बाअ़ (यानी दो हाथ क़रीब होता हूँ)

50. हज़रत जुनैद बग़दादी रह॰ की ख़िदमत में एक शख़्स ने पांच सौ दिरम पेश किये और अर्ज़ किया कि ये अपने ख़ुद्दाम पर तक़्सीम फ़रमा दें। हज़रत ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि तुम्हारे पास इनके अलावा और भी कुछ हैं, उसने अर्ज़ किया हज़रत, मेरे पास बहुत से दीनार (अशर्फ़ियां) हैं। हज़रत रह॰ ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि तुम यह चाहते हो कि इन में और इज़ाफ़ा हो जाये या नहीं चाहते, उसने अर्ज़ किया कि यह ख़्वाहिश तो ज़रूर है। हज़रत रह॰ ने फ़रमाया कि फिर तो तुम हमसे ज़्यादा मुहताज हो (इसलिए कि हमारे पास जो कुछ है, हम उस पर इज़ाफ़ा नहीं चाहते) इसलिये ये तुम अपने ही पास रखो, यह कह कर वे दराहिम वापस कर दिये, क़ुबूल न फ़रमाये। (रौज़)

51. हज़रत अबूद्दर्दा रज़ि॰ एक मर्तबा (शागिर्दों के मज्मे में) तशरीफ़ रखते थे, उनकी बीवी आयीं और कहने लगीं कि तुम तो इनको लिए बैठे हो और घर में आटे की एक चुटकी भी नहीं है।, वह फ़रमाने लगे कि अरी अल्लाह की बंदी, हमारे सामने एक निहायत सख़्त घाटी बड़ी दुश्वार गुज़ार आ रही है, उससे सिर्फ़ वही लोग निजात पा सकेंगे जो बहुत हल्के फुल्के होंगे। बीवी यह बात सुनकर राज़ी ख़ुशी वापस चली गयीं।

एक दफ़ा आपने फ़रमाया कि दुनियादार भी खाते हैं और हम भी खाते हैं, वे भी कपड़ा पहनते हैं और हम भी पहनते हैं और उनके पास जो ज़रूरत से ज़ायद माल है, वे उसको काम में तो लाते नहीं सिर्फ़ देखते हैं कि हां यह माल है, माल को देख हम भी लेते हैं (जो दूसरों के पास होता है, लिहाज़ा देखने में तो हम और वे बराबर हैं, काम में वे भी नहीं लाते हम भी नहीं लाते) लेकिन उनको अपने माल का हिसाब देना पड़ेगा और हम हिसाब से बरी हैं कि हमारे पास है नहीं।

एक मर्तबा फ़रमाने लगे कि हमारे भाई हमारे साथ इंसाफ़ का बर्ताव नहीं करते, हमसे मुहब्बत तो अल्लाह के वास्ते करते हैं और दुनिया में हमसे अलग रहते हैं। अंक़रीब वह दिन आने वाला है कि वे तो इसकी तमन्ना करेंगे कि काश वे हम जैसे होते और हम इसकी तमन्ना नहीं करेंगे कि हम उन जैसे होते। *(रौज़)*

52. एक बुज़ुर्ग की ख़िदमत में एक शख़्स हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया कि मेरे लिये दुआ कर दीजिए, मुझे अह्लो आयाल की कसरत (और आमदनी की क़िल्लत) ने बहुत मजबूर कर रखा है। उन्हों ने फ़रमाया कि जब तेरे घर वाले तुझसे कहें कि हमारे पास न आटा है, न रोटी है, उस वक़्त की तेरी दुआ हक़ तआला शानुहू के यहां मेरी इस वक़्त की दुआ से ज़्यादा क़ाबिले क़ुबूल है।

हज़रत शैख़ रह० ने बिल्कुल सही फ़रमाया कि लोगों को आक़ा से मांगने की क़द्र नहीं है, न उसकी वक़अत क़ुलूब में है, उस करीम के यहां तड़प कर मांगने की बड़ी क़द्र है। और मुज़्तर की दुआ ख़ुसूसियत से क़ुबूल होती है। हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है।

أَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ (نمل ع٥)

"अम्मंय् युजीबुल् मुज़् तर्-र इज़ा दआहु"

क्या वह ज़ात, जो बेक़रार आदमी की सुनता है, जब वह उसको पुकारता है और उसकी मुसीबत को दूर करता है (भी ऐसी ज़ात है जिसके साथ किसी को शरीक किया जाये)

एक हदीस में है एक शख़्स ने हुज़ूर सल्ल० से पूछा कि आप किस की तरफ़ लोगों को दावत देते हैं? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उस अल्लाह वह्दहू की तरफ़ कि अगर तुझे कोई मज़र्रत पहुँचे फिर तू उसको पुकारे तो वह तेरी मुसीबत

को ज़ायल कर दे और वह अल्लाह वह्दहू कि अगर तू कहीं रास्ते में सवारी को गुम कर दे फिर उसको पुकारे तो वह तेरी सवारी को तुझ पर लौटा दे और अगर तुझे क़हत से साबिक़ा पड़े फिर तू उस को पुकारे तो वह तेरे लिये रोज़ी उतार दे।

सहीम रह० कहते हैं कि हम हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० के पस बैठे हुए थे, एक लड़की आयी और उसने अपने सरदार से कहा कि आप यहां बैठे हैं, आपके घोड़े को नज़र ने खा लिया, वह घोड़ा हैरान, सरगर्दां घूमता फिर रहा है, किसी झाड़ फूंक करने वाले को ढूँढ कर लाइये। हज़रत अब्दुल्लाह ने फ़रमाया कि किसी झाड़ने वाले की ज़रूरत नहीं, उसके नाक के दाहिने सूराख़ में चार मर्तबा, बायें में तीन मर्तबा यह दुआ पढ़ कर फूंक मारो:-

لَابَاسَ اَذْهِبِ الْبَاسَ رَبَّ النَّاسِ اِشْفِ اَنْتَ الشَّافِىْ لَايَكْشِفُ الضُّرَّ اِلَّا اَنْتَ

"ला बअ्-स अज़्ह-बिल् बअ्-स रब्बन्नासि इश्फ़ि अन्तश्शाफ़ी ला यक्शिफ़ुज़्ज़ुर्-र इल्ला अन्-त०"

तर्जुमा:- कोई ख़ौफ़ की बात नहीं है, ऐ आदमियों के रब, तू इसकी तक्लीफ़ को ज़ायल कर दे और इसको शिफ़ा अता कर दे, तू ही शिफ़ा देने वाला है, तेरे सिवा कोई शख़्स नुक़्सान को हटाने वाला नहीं है।

वह शख़्स गया और थोड़ी देर में वापस आ गया और कहने लगा कि मैं ने आपके कहने के मुवाफ़िक़ किया, वह बिल्कुल अच्छा हो गया, वह खाने भी लगा और पेशाब पाख़ाना भी किया। *(दुर्रे मंसूर)*

यह बात ख़ूब अच्छी तरह दिल में जमा लेना चाहिए और जितनी ज़्यादा दिल में यह बात पुख़्ता हो जायेगी, उतनी ही दीन और दुनिया में काम आने वाली बात है कि नफ़ा और नुक़्सान सिर्फ़ उसी पाक ज़ात वह्दहू ला शरी-क लहू के क़ब्ज़े में है, उसी से अपनी हाजात तलब करना चाहिए, उसी की तरफ़ हर मुसीबत में मुतवज्जह होना चाहिए, सारी दुनिया के क़ुलूब उसी के ताबे हैं।

53. हज़रत इब्राहीम बिन अधम रह० की ख़िदमत में एक शख़्स ने दस हज़ार दिरहम नज़्राना पेश किया, उन्हों ने उसके क़ुबूल करने से साफ़ इंकार कर दिया और फ़रमाया कि तुम यह चाहते हो कि दस हज़ार दिरम की वजह से मेरा नाम फ़ुक़रा के दफ़्तर से कट जाये, ख़ुदा की क़सम मैं इसको हरगिज़ गवारा नहीं करता।

इनका यह भी इर्शाद है कि दुनियादार दुनिया में राहत तलाश करते हैं, इस वजह से धोखे में पड़ जाते हैं (भला दुनिया में राहत कहां) अगर इन लोगों को यह मालूम हो जाये कि बादशाहत हमारे पास है तो ये लोग तलवारों से हम से लड़ने लगें।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० से किसी ने पूछा कि आदमी कौन लोग हैं? फ़रमाया, उलमा। उसने पूछा कि बादशाह कौन लोग हैं? फ़रमाया कि ज़ाहिद लोग (दुनिया से बेरग़बती करने वाले) उसने पूछा बेवक़ूफ़ अहमक़ कौन लोग हैं? फ़रमाया कि जो दीन के ज़रिये से दुनिया कमाते हों।

हज़रत ज़ुन्नून मिस्री रह० फ़रमाते हैं कि ज़ाहिद लोग आख़िरत के बादशाह हैं और वे फ़ुक़रा-ए-आरिफ़ीन हैं। हज़रत शेख़ अबू मदयन रह० फ़रमाते हैं कि बादशाहत दो तरह की होती है, एक शहरों की, दूसरी दिलों की, हक़ीक़ी बादशाह ज़ाहिद ही होते हैं। (जो दिलों के बादशाह होते हैं।)

एक जमाअत का मज़हब जिनमें हज़रत इमाम शाफ़ई रह० भी हैं, यह है कि अगर कोई शख़्स यह वसीयत करके मर जाये कि मेरे माल से इतना माल ऐसे लोगों को दे दिया जाये जो सबसे ज़्यादा समझदार हों तो वह माल वसीयत का ज़ाहिदों को दिया जायेगा। (इसलिए कि हक़ीक़ी समझदार वही हैं।) *(रौज़)*

54. इमामे कबीर आरिफ़े शहीर शैख़ अब्दुल्लाह हारिस बिन असद मुहासबी रह० ने एक मर्तबा उन उलमा का जो दुनिया की तरफ़ माइल रहते है। ज़िक्र करते हुए फ़रमाया कि ये लोग गुमान करते हैं कि सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाह अन्हुम अज्मईन के पास भी तो बहुत माल था, ये बेवक़ूफ़ सहाबा-ए-किराम रज़ि० का ज़िक्र इसलिए करते हैं कि लोग उनको माल जमा करने में माज़ूर समझने लगें। शैतान उनके साथ मक्र करता है और उनको ज़रा भी पता नहीं चलता, अरे अहमक़, तेरा नास हो जाये, तेरा हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० के माल से इस्तिदलाल करना, यह शैतान का मक्र है, वह यह अल्फ़ाज़ तेरी ज़बान से निकलवाता है ताकि तू हलाक और बर्बाद हो जाये।

जब तूने यह कहा कि हज़रात सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन ने भी माल शराफ़त और ज़ीनत के लिए जमा किया तो तूने उन सरदारों की ग़ीबत की और तूने उनकी तरफ़ बड़ी सख़्त चीज़ मंसूब कर दी, और जब तूने यह समझा कि हलाल तरीक़े से माल का जमा करना उसके तर्क

से अफ़ज़ल है तो तूने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान में गुस्ताख़ी की, तूने सारे रसूलों अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम की शान में गुस्ताख़ी की, और तूने नअूज़ु बिल्लाह उनको अनजान बताया जबकि उन्हों ने तेरी तरह से माल जमा न किया, और जब तूने यह ख़्याल किया कि हलाल तरीक़े से माल जमा करना उसके तर्क से अफ़ज़ल है तो तूने यह दावा कर दिया कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी उम्मत के साथ ख़ैरख़्वाही नहीं फ़रमायी। आसमान के रब की क़सम, तूने अपने इस दावे में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर झूठ बोला। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी उम्मत के हाल पर निहायत शफ़ीक़ थे, उनके ख़ैरख़्वाह थे, उन पर बड़े मेहरबान थे, उन पर रहम करने वाले थे।

अरे अहमक़, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने फ़ज़्ल व कमाल के बावजूद अपने तक़्वे के बावजूद, अपने एहसानात के बावजूद, अल्लाह तआला शानुहू के रास्ते में अपने मालों को ख़र्च करने के बावजूद और हुज़ूरे सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबी रज़ि॰ होने के बावजूद और उन हज़रात में होने के बावजूद जिनको हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुनिया ही में जन्नत की बशारत दे दी थी (और अशरः मुबश्शरः के नाम से मश्हूर थे, इन सब ही कमालता के बावजूद) सिर्फ़ अपने माल की वजह से क़ियामत के मैदान में रूके रहे और फ़ुक़रा-ए-मुहाजिरीन के साथ जन्नत में तशरीफ़ न ले जा सके। फिर तेरा हम लोगों के मुताल्लिक़ क्या ख़्याल है, जो दुनिया के धंधों में फंसे रहे और ताज्जुब और सख़्त ताज्जुब, उस फ़ित्ने में पड़े हुए से हैं जो हराम और मुश्तबह माल की गड़बड़ में आलूदा है., और लोगों के मैल (सदक़ात का माल) खाता हो, शहवतों और ज़ीनत और तफ़ाख़ुर में वक़्त गुज़ारता हो फिर वह हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि॰ के हाल से इस्तिदलाल करे।

इसके बाद अल्लामा मुहासबी रह॰ ने सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ के बेहतरीन हालात ज़िक्र करने के बाद कहा कि ये हज़रात मस्कनत को पसंद करने वाले थे, फ़क्र के ख़ौफ़ से बे फ़िक्र थे, अपनी रोज़ी में अल्लाह जल्ल शानुहू पर पूरा एतिमाद करने वाले थे और तक़्दीर पर राज़ी रहने वाले थे, मसाइब पर ख़ुश होने वाले थे, सरवत में शुक्रगुज़ार, ग़ुरबत में सब्र करने वाले थे, अच्छे हालात में अल्लाह जल्ल शानुहू की हम्द करने वाले थे, तवाज़ोअ् करने वाले थे, अपने

आप पर दूसरों को तर्जीह देने वाले थे। जब उनके पास फ़क्र आ जाता तो उसको मरहबा (बहुत अच्छा किया, आया) कहने वाले थे, उसको सुलहा का शिआर कहते थे, तू ख़ुदा की क़सम खाकर बता क्या तेरा भी यही हाल है, तू उनकी मुशाबहत से बहुत दूर है, तेरा हाल उनके हाल के बिल्कुल ज़िद है, तू ग़िना के वक़्त सरकश हो जाता है, सरवत के वक़्त अकड़ने लगता है, तू माल के वक़्त ख़ुशी में ऐसा मह्व होता है कि अल्लाह की नेमत का शुक्र भी भूल जाता है, तक्लीफ़ के वक़्त अल्लाह की मदद से ना उम्मीद हो जाता है, मुसीबत के वक़्त नाक मुंह चिढ़ाने लगता है और तक़्दीर पर ज़रा भी राज़ी नहीं होता। तू फ़क़ीरों से बुग्ज़ रखता है, मस्कनत से नाक चढ़ाता है, तू माल इसलिए जमा करता है ताकि दुनिया का ऐश व आराम इख़्तियार करे, उसकी रौनक़ से दिल बहलाए, उसकी लज़्ज़तों, शहवतों में मज़े उड़ाये।

वे हज़रात दुनिया की हलाल चीज़ों से इतना अलग रहते थे जितना तू हराम चीज़ों से भी अलाहिदा नहीं रहता। वे मामूली लग़्ज़िश को इतना सख़्त समझते थे जितना तू हराम और गुनाहे कबीरा को भी सख़्त नहीं समझता। काश तेरा उम्दा से उम्दा और हलाल से हलाल माल भी उनके मुश्तबह माल के बराबर होता और काश तू अपने गुनाहों से ऐसा डरता जैसा वे अपनी नेकियों के क़ुबूल न होने से डरते थे, काश तेरा रोज़ा उनके इफ़्तार के बराबर हो जाता (कि उनका इफ़्तार करना भी अल्लाह के वास्ते था, जिस पर सवाब था) और काश तेरा रात को जागना भी उनके सोने के बराबर हो जाता और काश तेरी उम्र भर की नेकियां उनकी किसी एक नेकी के बराबर हो जातीं।

अरे कमबख़्त, तेरे लिये यही मुनासिब था कि तू दुनिया से सिर्फ़ इतना हासिल करता जितना मुसाफ़िरों का तोशा होता है। काश तू दुनियादारों के हाल से इबरत पकड़ता कि वे मैदाने हश्र में हिसाब में पकड़े हुए होंगे और तू पहले ही ज़ुमरे में हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ जन्नत में चला जाता कि न तू मैदाने हश्र में रोका जाता, न तुझ पर लम्बा चौड़ा हिसाब होता, इसलिए कि हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि मेरी उम्मत के फ़ुक़रा उनके मालदारों से पांच सौ बरस पहले जन्नत में जायेंगे। *(रौज़)*

55. हज़रत अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद रह० (जो मशाइख़े चिश्तिय: के सिलसिले में मशहूर बुज़ुर्ग हैं) फ़रमाते हैं कि हम लोग एक मर्तबा कश्ती में सवार जा रहे थे, हवा की गर्दिश ने हमारी कश्ती को एक जज़ीरे में पहुँचा दिया,

हमने वहां एक आदमी को देखा कि एक बुत को पूज रहा है। हमने उससे पूछा कि तू किसकी परस्तिश करता है? उसने उस बुत की तरफ़ इशारा किया। हमने कहा, तेरा माबूद ख़ुद तेरा बनाया हुआ है और हमारा माबूद ऐसी चीज़ें बना देता है, जो अपने हाथ से बनाया हुआ हो, वह पूजने के लायक़ नहीं हैं।

उसने कहा तुम किसकी परस्तिश (अिबादत) करते हो? हमने कहा, उस पाक ज़ात की जिसका अर्श आसमान के ऊपर है, उसकी गिरफ़्त ज़मीन पर है, उसकी अज़्मत और बड़ाई सबसे बालातर है। कहने लगा, तुम्हें उस पाक ज़ात का इल्म किस तरह हुआ? हमने कहा, उसने एक रसूल सल्ल॰ (क़ासिद) हमारे पास भेजा जो बहुत करीम और शरीफ़ था। उस रसूल सल्ल॰ ने हमें ये सब बातें बतायीं। उसने कहा, वह रसूल (सल्ल॰) कहां है? हमने कहा कि उसने जब पयाम पहुँचा दिया और अपना हक़ पूरा कर दिया तो उस मालिक ने उसको अपने पास बुला लिया ताकि उसके पयाम पहुँचाने और उसको अच्छी तरह पूरा कर देने का सिला व इन्आम अता फ़रमाये। उसने कहा कि उस रसूल (सल्ल॰) ने तुम्हारे पास कोई अलामत छोड़ी है? हमने कहा, उस मालिक का पाक कलाम हमारे पास छोड़ा है। उसने कहा, मुझे वह किताब दिखाओ। हमने क़ुरआन पाक लाकर उसके सामने रखा। उसने कहा, मैं तो पढ़ा हुआ नहीं हूँ, तुम इसमें से मुझे कुछ सुनाओ। हमने एक सूरत सुनाई, वह सुनते हुए रोता रहा। यहां तक कि वह सूरत पूरी हो गयी। उसने कहा, इस पाक कलाम वाले का हक़ यही है कि उसकी नाफ़रमानी न की जाये।

इसके बाद वह मुसलमान होगया। हमने उसको इस्लाम के अर्कान और अहकाम बताये और चंद सूरतें क़ुरआन पाक की सिखाईं। जब रात हुई, इशा की नमाज़ पढ़ कर हम सोने लगे तो उसने पूछा कि तुम्हारा माबूद भी रात को सोता है। हमने कहा कि वह पाक ज़ात हय्युन् क़य्यूम है, वह न सोता है न उस को ऊंघ आती है (आयतुल कुर्सी) वह कहने लगा, तुम किस क़दर नालायक़ बंदे हो कि आक़ा जागता रहे और तुम सो जाओ। हमें उसकी बात से बड़ी हैरानी हुई।

जब हम उस जज़ीरे से वापस होने लगे तो वह कहने लगा कि मुझे भी अपने साथ ही ले चलो, ताकि मैं दीन की बातें सीखूँ। हमने अपने साथ ले लिया। जब हम शहर अबादान में पहुँचे तो मैं ने अपने साथियों से कहा कि यह शख़्स नौ मुस्लिम है, इसके लिऐ कुछ मआश का फ़िक्र भी चाहिए। हमने कुछ दिरम

चंदा किया और उसको देने लगे। उसने पूछा, यह क्या है? हमने कहा कुछ दिरम हैं इनको तुम अपने ख़र्चे में ले आना। कहने लगा, ला इला-ह इल्लल्लाह, तुम लोगों ने मुझे ऐसा रास्ता दिखाया जिस पर ख़ुद भी नहीं चलते। मैं एक जज़ीरे में था, एक बुत की परस्तिश करता था, ख़ुदा पाक की परस्तिश भी न करता था, उसने उस हालत में भी मुझे ज़ाया और हलाक नहीं किया हालांकि मैं उसको जानता भी न था, पस वह इस वक़्त मुझे क्यों कर ज़ाया कर देगा जबकि मैं उसको पहचानता भी हूँ (उसकी इबादत भी करता हूँ) तीन दिन के बाद हमें मालूम हुआ कि उसका आख़िरी वक़्त है, मौत के क़रीब है, हम उसके पास गये उससे पूछा कि तेरी कोई हाजत हो तो बता? कहने लगा कि मेरी तमाम हाजतें उस पाक ज़ात ने पूरी कर दीं (जिसने तुम लोगों को जज़ीरे में मेरी हिदायत के लिए भेजा था।)

शैख़ अब्दुल वाहिद रह॰ फ़रमाते हैं कि मुझ पर दफ़्अतन (अचानक) नींद का ग़लबा हुआ, मैं वहीं सो गया तो मैं ने ख़्वाब में देखा, एक निहायत सरसब्ज़ शादाब बाग़ है, उसमें एक निहायत नफ़ीस क़ुब्बा बना हुआ है, उस में एक तख़्त बिछा हुआ है, उस तख़्त पर एक निहायत हसीन लड़की कि उस जैसी ख़ूबसूरत औरत कभी किसी ने न देखी होगी, यह कह रही है, ख़ुदा के वास्ते उसको जल्दी भेज दो, उसके इश्तियाक़ में मेरी बेक़रारी हद से बढ़ गयी है। मेरी आंख खुली तो उस नौ मुस्लिम की रूह प्रवाज़ कर चुकी थी, हमने उसकी तजहीज़ व तक्फ़ीन की और दफ़्न कर दिया। जब रात हुई तो मैं ने वही बाग़ और क़ुब्बा और तख़्त पर वह लड़की उस के पास देखी और वह यह आयते शरीफ़ा पढ़ रहा था:-

وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ (رعد ع ۳)

"वल्-मला इ-कतु यद्ख़ुलू-न अलैहिम् मिन् कुल्लि बाब॰'

(रअद, रूकूअ 3)

जिसका तर्जुमा यह है, और फ़रिश्ते उनके पास हर दरवाज़े से आते होंगे और उनको सलाम करते होंगे (जो हर क़िस्म की आफ़त से सलामती का मुज़्दा (ख़ुशख़बरी) है और यह) इस वजह से कि तुमने सब्र किया था (और दीन पर मज़बूत जमे रहे) पस इस जहान में तुम्हारा अंजाम बहुत बेहतर है। *(रौज़)*

हक़ तआला शानुहू की अता बख़्शिश के करिश्मे हैं कि सारी उम्र बुत

परस्ती की और उसने अपने लुत्फ़ व करम से मौत के क़रीब उन लोगों को ज़बरदस्ती करती के बेक़ाबू हो जाने से वहां भेजा और उसको आख़िरत की दौलत से मालामाल कर दिया:-

اَللّٰهُمَّ لَامَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ

"अल्ला हुम्-म ला मानि-अ लिमा आतै-त वला मुअ् ती-य लिमा म-न अ्-त॰"

"मालिकुल मुल्म, जिसको तू देना चाहे, उसको कोई रोकने वाला नहीं है और जिसको तू न चाहे उसको कोई देने वाला नहीं है।

56. हज़रत मालिक बिन दीनार रह॰ एक मर्तबा बसरा की गलियों में जा रहे थे, रास्ते में एक बांदी ऐसे जाह व जलाल, हशम व ख़दम के साथ जा रही थी जैसा कि बादशाहों की बांदियां होती हैं। हज़रत मालिक रह॰ ने उसको देखा तो आवाज़ देकर फ़रमाया कि ऐ बांदी, तुझे तेरा मालिक फ़रोख़्त करता है या नहीं, वह बांदी इस फ़िक़रे को सुनकर (हैरान रह गयी) कहने लगी, क्या कहा, फिर कहो। उन्हों ने फिर इर्शाद फ़रमाया, उसने कहा, अगर वह फ़रोख़्त भी करे तो क्या तुझ सा फ़क़ीर ख़रीद सकता है? फ़रमाने लगे हां, और तुझ से बेहतर को ख़रीद सकता है। वह बांदी यह सुनकर हंस पड़ी और अपने ख़ुद्दाम को हुक्म दिया कि इस फ़क़ीर को पकड़ कर हमारे साथ ले चलो (ज़रा मज़ाक़ ही रहेगा) ख़ुद्दाम ने पकड़ कर साथ ले लिया, वह जब घर वापस पहुँची तो उसने अपने आक़ा से यह क़िस्सा सुनाया, वह भी सुनकर हंसा और उनको अपने सामने लाने का हुक्म दिया।

जब यह सामने पेश किये गये तो आक़ा के दिल पर एक हैबत सी उनकी छा गयी, वह कहने लगा, आप क्या चाहते हैं? उन्हों ने फ़रमाया कि तू अपनी बांदी को मेरे हाथ फ़रोख़्त कर दे। उसने पूछा कि आप इसकी क़ीमत दे सकते हैं? हज़रत मालिक रह॰ ने फ़रमाया कि मेरे नज़दीक इसकी क़ीमत खजूर की दो बीझी हुई गुठलियां हैं। यह सुनकर सब हंसने लगे। उसने पूछा कि तुमने यह क़ीमत किस मुनासबत से तजवीज़ की? उन्होंने फ़रमाया कि इसमें ऐब बहुत हैं। उसने पूछा कि इसमें क्या क्या ऐब हैं? फ़रमाने लगे, अगर इत्र न लगाये तो बदन से बू आने लगे, अगर दांत साफ़ न करे तो मुंह में से सड़ांध आने लगे, अगर बालों में तेल कंघी न करे तो वे परेशान हाल हो जायें, जुंए उनमें पड़ जायें,

(और सर में से बू आने लगे) ज़रा उम्र ज़्यादा हो जायेगी तो बूढ़ी बन जायेगी (मुंह लगाने के भी क़ाबिल न रहेगी) हैज़ इसको आता है, पेशाब पाख़ाना यह करती है, हर क़िस्म की गंदगियां। (थूक, सिनक, राल, नाक के चूहें वग़ैरह) इसमें से निकलते रहते हैं। ग़म रंज, मुसीबतें, इसको पेश आती रहती हैं। ख़ुद ग़रज़ इतनी है कि महज़ अपनी गरज़ से तुझसे मुहब्बत ज़ाहिर करती है, महज़ अपनी राहत व आराम की वजह से तुझसे उल्फ़त जताती है (आज कोई तक्लीफ़ तुझसे पहुँच जाये, सारी मुहब्वत ख़त्म हो जाये) इंतिहाई बेवफ़ा, कोई क़ौल क़रार पूरा न करे, इसकी सारी मुहब्बत झूठी है, कल को तेरे बाद किसी दूसरे के पहलू में बैठेगी तो उससे भी ऐसी ही मुहब्बत के दावे करने लगेगी।

मेरे पास इससे हज़ार दरजा बेहतर बांदी है जो इससे निहायत कम क़ीमत है, वह काफ़ूर के जौहर से बनी हुई है, मुश्क और ज़ाफ़रान की मिलावट से पैदा की गयी है, उस पर मोती और नूर लपेटा गया है और खारे पानी में उसका आबेदहन डाल दिया जाये तो वह मीठा हो जाये और मुर्दे से अगर वह बात करे तो वह ज़िन्दा हो जाये। अगर उसकी कलाई आफ़ताब के सामने कर दी जाये तो आफ़ताब बे नूर हो जाये गहन हो जाये, अगर वह अंधेरे में आ जाये तो सारा घर रौशन हो जाये, चमक जाये, अगर वह दुनिया में अपनी ज़ेब व ज़ीनत के साथ आ जाये तो सारा जहां मुअत्तर हो जाये, चमक जाये। उस बांदी ने मुश्क व जाफ़रान के बाग़ों में परवरिश पायी है, याक़ूत और मरजान की टहनियों में खेली है, हर तरह की नेमतों के ख़ेमे में उसका महल सराए है, तस्नीम (जो जन्नत की नहरों में से एक नहर है) का पानी पीती है, कभी वायदा ख़िलाफ़ी नहीं करती, अपनी मुहब्त को नहीं बदलती (हरजाई नहीं है) अब तुम ही बताओ की क़ीमत ख़र्च करने के एतिबार से कौन सी बांदी ज्यादा मौज़ूं है? सबने कहा कि वही बांदी जिसकी आपने ख़बर दी।

आपने फ़रमाया कि उस बांदी की क़ीमत हर वक़्त हर ज़माने में हर शख़्स के पास मौजूद है, लोगों ने पूछा कि उसकी क़ीमत क्या है? अपने फ़रमाया कि इतनी बड़ी अहम और आलीशान चीज़ के ख़रीदने के लिए बहुत मामूली क़ीमत अदा करनी पड़ती है और वह यह है कि रात का थोड़ा सा वक़्त फ़ारिग़ करके सिर्फ़ अल्लाह जल्ल शानुहू के लिए कम अज़ कम दो रक्अत तहज्जुद की पढ़ ली जायें और जब तुम खाना खाने बैठो तो किसी ग़रीब मुहताज को भी याद कर लो और अल्लाह जल्ल शानुहू की रिज़ा को अपनी ख़्वाहिशात पर

ग़ालिब कर दो, रास्ते में कोई तक्लीफ़ देने वाली चीज़ कांटा, ईंट वग़ैरह पड़ी देखो, उसको हटा दो, दुनिया की ज़िन्दगी को मामूली इख़राजात के साथ पूरा कर दो और अपना फ़िक्र व ग़म इस धोखे के घर से हटा कर हमेशा रहने वाले घर की तरफ़ लगा दो। इन चीज़ों पर एहतिमाम करने से तुम दुनिया में इज़्ज़त की ज़िन्दगी गुज़ारोगे, आख़िरत में बे फ़िक्र और एज़ाज़ व इकराम के साथ पहुँचोगे और जन्नत, जो नेमतों का घर है, उसमें अल्लाह जल्ल शानुहू रब्बुल इज़्ज़त के पड़ोस में हमेशा हमेशा रहोगे।

उस बांदी के आक़ा ने बांदी से ख़िताब करके पूछा कि तूने शैख़ की बातें सुन लीं। ये सच हैं या नहीं, बांदी ने कहा कि बिल्कुल सच हैं, शैख़ ने कहा कि अच्छा तो तू आज़ाद है। और इतना इतना सामान तेरी नज़्र है और अपने सब ग़ुलामों से कहा कि तुम भी सब आज़ाद हो और मेरे माल में से इतना इतना माल तुम्हारी नज़्र है। और मेरा यह घर और जो कुछ माल इसमें है, सब अल्लाह की राह में सदक़ा है और घर के दरवाज़े पर एक मोटे से कपड़े का पर्दा पड़ा हुआ था, उसको उतार कर अपने बदन पर लपेट लिया और अपना सारा लिबासे फ़ाख़िरा उतार कर सदक़ा कर दिया।

उस बांदी ने कहा कि मेरे आक़ा तुम्हारे बाद मेरे लिए भी यह ज़िन्दगी अब ख़ुशगवार नहीं है, और उसने भी एक मोटा सा कपड़ा पहन कर अपना सारा ज़ेब व ज़ीनत का लिबास और अपना सारा माल व मताअ् सदक़ा करके आक़ा के साथ ही हो ली। और मालिक बिन दीनार रह० उनको दुआयें देते हुए उनसे रूख़्सत हो गये और वे दोनों उस सारे ऐश व इशरत को तलाक़ देकर अल्लाह की इबादत में मशग़ूल हो गये और इसी हालत में उनका इंतिक़ाल हो गया, ग़-फ़- रल्लाहु लना व लहुम। *(रौज़)*

57. जाफ़र बिन सुलैमान रह० कहते हैं कि मैं हज़रत मालिक बिन दीनार रह० के साथ एक दफ़ा बसरा में चल रहा था, एक आलीशान महल पर गुज़र हुआ, जिसकी तामीर जारी थी और एक नौजवान बैठा हुआ मेमारों को हिदायत दे रहा था कि यहां यह बनेगा, वहां इस तरह बनेगा। मालिक बिन दीनार रह० उस नौजवान को देख कर फ़रमाने लगे कि यह शख़्स कैसा हसीन नौजवान है और कैसी चीज़ में फंस रहा है, इस को इस तामीर में कैसा इन्हिमका है, मेरी तबीअत पर यह तक़ाज़ा है कि मैं अल्लाह जल्ल शानुहू से इस नौजवान के लिए दुआ करूँ कि वह इसको इस झगड़े से छुड़ा कर अपना मुख़्लिस बंदा बना ले,

कैसा अच्छा हो अगर यह जन्नत के नौजवानों में से बन जाये। जाफ़र चल, इस नौजवान के पास चलें।

जाफ़र रह० कहते हैं कि हम दोनों उस नौजवान के पास गये, उसको सलाम किया, उसने सलाम का जवाब दिया (वह मालिक से वाकिफ़ था) मगर मालिक को पहचाना नहीं, थोड़ी देर में पहचाना तो खड़ा हो गया और कहने लगा, कैसे तशरीफ़ आवरी हुई? मालिक रह० ने फ़रमाया कि तुमने इस मकान में किस क़दर रूपया लगाने का इरादा किया है? उसने कहा, एक लाख दिरम। मालिक रह० ने फ़रमाया कि अगर तुम यह एक लाख दिरम मुझे दे दो तो मैं तुम्हारे लिये जन्नत में एक मकान का ज़िम्मा लेता हूँ, जो इससे बदरजहा बेहतर होगा और उसमें हशम व ख़दम बहुत से होंगे, उस में खेमे और कुब्बे सुर्ख़ याक़ूत के होंगे जिन पर मोती जड़े हुए होंगे, उसकी मिट्टी जाफ़रान की होगी, उसका गारा मुश्क से बना होगा जिसकी खुश्बूएं महकती होंगी, वह कभी न पुराना होगा, न टूटेगा उसको मेमार (कारीगर) नहीं बनायेंगे बल्कि अल्लाह तआला के अमर (हुक्म) कुन से तैयार हो जायेगा। उस नौजवान ने कहा, मुझे सोचने के लिए आज रात की मोहलत दीजिये, कल सुबह आप तशरीफ़ लायें तो मैं इसके मुताल्लिक़ अपनी राय अर्ज़ करूँगा।

हज़रत मालिक रह० वापस चले आये और रात भर उस नौजवान की फ़िक्र और सोच में रहे। आख़िर शब में उसके लिए बहुत आजिज़ी से दुआ की, जब सुबह हुई तो हम दोनों उसके मकान पर गये, वह नौजवान दरवाज़े से बाहर ही इंतिज़ार में बैठा था और जब हज़रत मालिक रह० को देखा तो बहुत खुश हुआ। हज़रत मालिक रह० ने फ़रमाया कि तुम्हारी कल की बात के बारे में क्या राय रही? उस नौजवान ने कहा कि आप उस चीज़ को पूरा करेंगे जिसका कल आपने वायदा फ़रमाया था? हज़रत मालिक रह० ने फ़रमाया ज़रूर।

उसने दराहिम के तोड़े सामने लाकर रख दिये और दवात क़लम लाकर रख दिया। हज़रत मालिक रह० ने एक पर्चा लिखा, जिसमें बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम के बाद लिखा कि यह इक़रार नामा है कि मालिक बिन दीनार ने फ़लां शख़्स से इसका ज़िम्मा लिया है कि उसके इस महल के बदले में हक़ तआला शानुहू के यहां उसको ऐसा एक महल जिसकी सिफ़त ऊपर बयान की गयी (जो जो सिफ़ात उस मकान की ऊपर गुज़रीं, वे सब लिखने के बाद लिखा) मिलेगा, बल्कि उससे भी कहीं ज्यादा उम्दा और बेहतर, जो उम्दा साये में हक़ तआला

शानुहू के क़रीब होगा। यह पर्चा लिख कर उसके हवाले कर दिया और एक लाख दिरम उससे लेकर चले आये। जाफ़र रह॰ कहते हैं कि शाम को हज़रत मालिक रह॰ के पास उस में से इतनी भी बाक़ी न था कि एक वक़्त के खाने ही का काम चल सके।

इस वाक़िए को चालीस दिन भी न गुज़रे थे कि एक दिन हज़रत मालिक रह॰ जब सुबह की नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो मस्जिद की मेहराब में एक पर्चा पड़ा देखा, यह वही पर्चा था जो मालिक रह॰ ने उस नौजवान को लिख कर दिया था और उसकी पुश्त पर बग़ैर रोशनाई के लिखा हुआ था कि यह अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से मालिक बिन दीनार (रह॰) के ज़िम्मे की बराअत है, जिस मकान का तुमने उस नौजवान से ज़िम्मा लिया था, वह हमने उसको पूरा पूरा दे दिया और उससे सत्तर गुना ज़्यादा दे दिया।

हज़रत मालिक रह॰ उस पर्चे को पढ़कर मुतहय्यर से हुए, उसके बाद हम उस नौजवान के मकान पर गये तो वहां मकान पर स्याही का निशान था (जो सोग की अलामत के तौर पर लगाया होगा) और रोने की आवाज़ें आ रही थीं, हमने पूछा तो मालूम हुआ कि उस नौजवान का कल गुज़िश्ता इंतिक़ाल हो गया। हमने पूछा कि उसका ग़ुस्ले मय्यित किसने दिया था, उसको बुलाया गया, हमने उससे उसके नहलाने और कफ़नाने की कैफ़ियत पूछी तो उसने कहा कि उस नौजवान ने अपने मरने से पहले मुझे एक पर्चा दिया था और यह कहा था कि जब तू मुझे नहला कर कफ़न पहनाये तो यह पर्चा उसमें रख देना। मैं ने उसको नहलाया कफ़नाया और वह पर्चा उसके कफ़न के और बदन के दर्मियान रख दिया।

हज़रत मालिक रह॰ ने वह पर्चा अपने पास से निकाल कर उसको दिखाया, वह कहने लगा कि यह वही पर्चा है, क़सम है उस ज़ात की जिसने उसको मौत दी, यह पर्चा मैं ने ख़ुद उसके कफ़न के अंदर रखा था। यह मंज़र देख कर एक दूसरा नौजवान उठा और कहने लगा कि आप मालिक हैं। आप मुझसे दो लाख दिरम ले लीजिये और मुझे भी पर्चा लिख दीजिये। हज़रत मालिक रह॰ ने फ़रमाया कि वह बात दूर चली गयी, अब नहीं हो सकता, अल्लाह जल्ल शानुहू जो चाहता है, वह करता है। इसके बाद जब भी मालिक रह॰ उस नौजवान का ज़िक्र फ़रमाते तो रोने लगते और उसके लिये दुआ करते थे। *(रौज़)*

बुज़ुर्गों को इस क़िस्म के वाक़िआत बहुत कसरत से पेश आते हैं कि जोश में कोई बात ज़बान से निकल गयी, हक़ तआला शानुहू उसको उसी तरह पूरा फ़रमाते हैं जिसको हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पाक इर्शाद में इन अल्फ़ाज़ से नक़ल किया गया कि बहुत से बिखरे हुए बालों वाले गुबार आलूद लोग जिन को लोग अपने दरवाज़े से हटा दें, और उन की परवाह भी न करें ऐसे हैं कि अगर अल्लाह जल्ल शानुहू पर किसी बात की क़सम खा लें तो वह उनकी बात को पूरा करे। *(मुस्लिम शरीफ़)*

58. मुहम्मद बिन सिमाक रह० फ़रमाते हैं कि बनू उमैया के लोगों में मूसा बिन मुहम्मद बिन सुलैमान अलहाशमी बहुत ही नाज़ परवरदा रईस था, दिल की ख़्वाहिशात पूरी करने में हर वक़्त मुन्हमिक रहता, खाने पीने में लिबास में, लह्व व लेअ़िब में ख़्वाहिशात और लज़्ज़ात की हर नौअ् में आला दरजे पर था, लड़के लड़कियों में हर वक़्त मुन्हमिक रहता, न उसको कोई ग़म था, न फ़िक्र, खुद भी निहायत ही हसीन चांद के टुकड़े की तरह से था, अल्लाह तआला शानुहू की हर नौअ् की दुन्यवी नेमत उस पर पूरी थी। उसकी आमदनी तीन लाख तीन हज़ार दीनार (अशर्फ़ियां) सालाना थी जो सारी की सारी इसी लहव व लअिब में ख़र्च होती थी।

एक ऊँचा बालाख़ाना था जिसमें कई खिड़कियां तो शारे-ए-आम की तरफ़ खुली हुई थीं, जिन में बैठ कर वह रास्ता चलने वालों के नज़ारे करता और कई खिड़कियां दूसरी जानिब बाग़ की तरफ़ खुली हुई थीं, जिनमें बैठ कर बाग़ की हवायें खाता, खुशबूयें सूंघता। इस बाला ख़ाने में एक हाथी दांत का क़ुब्बा था जो चांदी की मेख़ों से जड़ा हुआ था और सोने का उस पर झोल था। उसके अंदर एक तख़्त था जिस पर मोतियों की चादर थी और उस हाशमी के सर पर मोतियों का जड़ाव अमामा था। उस क़ुब्बा में उसके यार, अहबाब जमा रहते, ख़ुद्दाम अदब से पीछे खड़े रहते, सामने नाचने गाने वालियां क़ुब्बा से बाहर मुज्तमअ् रहतीं। जब गाना सुनने को दिल चाहता, वह सितार की तरफ़ एक नज़र उठाता और सब हाज़िर हो जातीं और जब बंद करना चाहता, हाथ से सितार की तरफ़ इशारा कर देता, गाना बंद हो जाता। रात को हमेशा जब तक नींद न आती, यही शुग्ल रहता और जब (शराब के नशे से) उसकी अक़्ल जाती रहती, याराने मजलिस उठकर चले जाते वह जौन सी लड़की को चाहता, पकड़ लेता और रात भर उस के साथ ख़लवत करता, सुबह को वह शतरंज, चौसर वग़ैरह में

मशग़ूल हो जाता। उसके सामने कोई रंज व ग़म की बात, किसी की मौत किसी की बीमारी का तज़्किरा बिल्कुल न आता। उसकी मजलिस में हर वक़्त हंसी और ख़ुशी की बातें, हंसाने वाले क़िस्से और इसी क़िस्म के तज़्किरे रहते। हर दिन नई नई ख़ुशबूएं, जो उस ज़माने में कहीं न मिलतीं, वे रोज़ाना उसकी मजलिस में आतीं उम्दा उम्दा ख़ुशबूओं के गुलदस्ते वग़ैरह हाज़िर किये जाते, इसी हालत में उसके सत्ताईस बरस गुज़रे।

एक रात को वह हस्बे मामूल अपने क़ुब्बा में था, दफ़्अतन उसके कान में एक सुरीली आवाज़ पड़ी, जो उसके गाने वालों की आवाज़ से बिल्कुल जुदा थी, लेकिन बड़ी दिलकश थी। उसकी आवाज़ ने कानों में पड़ते ही बेचैन सा कर दिया। अपने गाने वालों को बंद कर दिया और क़ुब्बा की खिड़की से बाहर सर निकाल कर उस आवाज़ को सुनने लगा। वह आवाज़ कभी कान में पड़ जाती कभी बंद हो जाती। उसने अपने ख़ुद्दाम को हुक्म दिया कि यह आवाज़ जिस शख़्स की आ रही है, उसको पकड़ कर लाओ।

शराब का दौर चल रहा था, ख़ुद्दाम जल्दी से उस आवाज़ की तरफ़ दौड़े और आवाज़ तलाश करते करते एक मस्जिद में पहुंचे, जहां एक जवान निहायत ज़ईफ़ बदन, ज़र्द रंग, गर्दन सूखी हुई, होंठों पर ख़ुश्की आयी हुई, बाल परागंदा, पेट कमर से लगा हुआ, दो ऐसी छोटी छोटी लुंगियां उसके बदन पर कि उनसे कम में बदन न ढक सके, मस्जिद में खड़ा हुआ अपने रब के साथ मशग़ूल तिलावत कर रहा, यह लोग उसको पकड़ कर ले गये, न उससे कुछ कहा न बताया। एकदम उसको मस्जिद से निकाल कर वहां बालाख़ाने पर ले जाकर उसके सामने पेश कर दिया कि हुज़ूर यह हाज़िर है। वह शराब के नशे में कहने लगा कि यह कौन शख़्स है? उन्हों ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर यह वही शख़्स है जिसकी आवाज़ आपने सुनी थी। उसने पूछा कि तुम इसको कहां से लाये हो? वे कहने लगे हुज़ूर मस्जिद में था, खड़ा हुआ क़ुरआन शरीफ़ पढ़ रहा था। उस रईस ने उस फ़क़ीर से पूछा कि तुम क्या पढ़ रहे थे? उसने अ-ऊज़ु बिल्लाह पढ़कर ये आयतें बतायीं :-

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِي نَعِيمٍ ۝ عَلَى الْأَرَائِكِ يَنظُرُونَ ۝ تَعْرِفُ فِي وُجُوهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيمِ ۝ يُسْقَوْنَ مِن رَّحِيقٍ مَّخْتُومٍ ۝ خِتَامُهُ مِسْكٌ ۚ وَفِي ذَٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنَافِسُونَ ۝ وَمِزَاجُهُ مِن تَسْنِيمٍ ۝ عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُونَ ۝ (تطفيف)

"इन्नल् अब्रा-र लफ़ी नओ-मिन्॰ अलल् अराइ-कि यन्ज़ुरून॰ तअ् रिफ़ु फ़ी वुजूहि हिम नज़्-र तन्नओम्॰ युस्क़ौ-न मिर्र-ही क़िम् मख़्तू मिन् ख़िता मुहू मिस्क॰ व फ़ी ज़ालि-क फ़ल् य-त नाफ़सिल् मु-त नाफ़िसून॰ व मिज़ाजुहू मिन् तस्नी मिन्॰ औनैय्-श्र-बु बिहल् मुक़र्र-बून॰

(सूरः तत्फ़ीफ़)

जिनका तर्जुमा यह है कि "बेशक नेक लोग (जन्नत की) बड़ी नेमतों में होंगे, मसहरियों पर बैठे हुए (जन्नत के अजाईब) देखते होंगे। ऐ मुख़ातब, तू उनके चेहरों पर नेमतों की शादाबी, सरसब्ज़ी महसूस करेगा और उनके पीने के लिये ख़ालिस शराब सर ब मुहर जिस पर मुश्क की मुहर होगी, मिलेगी (एक दूसरे पर) हिर्स करने वालों को ऐसी ही चीज़ों में हिर्स करना चाहिए (कि ये नेमतें किसको ज़्यादा मिलती हैं और इनका मिलना आमाल की वजह से होता है, इसलिए उन आमाल में हिर्स करना चाहिए, जिनसे ये नेमतें हासिल हों) और उस शराब की आमेज़िश तस्नीम के पानी से होगी (शराब में कोई चीज़ मिलाई जाती है तो उससे उसका जोश ज़्यादा बढ़ जाता है और वह तस्नीम जन्नत का) एक ऐसा चश्मा है जिस से मुक़र्रब लोग पानी पीते हैं (यानी उस चश्मे का पानी मुक़र्रब लोगों को तो ख़ालिस मिलेगा और नेक लोगों की शराब में उसमें से थोड़ा सा मिला दिया जायेगा)

इसके बाद उस फ़क़ीर ने कहा, अरे धोखे में पड़े हुए, तेरे इस महल को, तेरे इस बालाख़ाने को, तेरे इन फ़र्शों को उनसे क्या मुनासबत, वह बड़ी ऊंची मसहरिया हैं जिन पर फ़र्श बिछे हुए हैं, ऐसे फ़र्श जो बहुत बुलंद हैं (अल वाक़िअः रूकूअ 1) उनके अस्तर दबीज़ रेशम के होंगे (अर्रह्मान, रूकूअ 3) वे लोग सब्ज़ मश्जर और अजीब ग़रीब ख़ूबसूरत कपड़ों पर तकिया लगाये हुए हैं। (अर्रह्मान, रूकूअ 3) अल्लाह का वली उन मसहरियों पर से ऐसे दो चश्मों को देखेगा जो बाग़ों में जारी होंगे, (अर्रह्मान, रूकूअ 3) उन दोनों बाग़ों में हर क़िस्म के मेवे की दो दो क़िस्में होंगी (कि एक ही क़िस्म के मेवे के दो मज़े होगें) (अर्रह्मान, रूकूअ 3) वे मेवे न तो ख़त्म होंगे न उनकी कुछ रोक टोक होगी (जैसा दुनिया में बाग़ वाले तोड़ने से रोकते हैं (अल वाक़िअः, रूकूअ 1) वे लोग पसंदीदा ज़िन्दगी में बहुत बुलन्द मक़ाम पर जन्नत में होंगे (अल हाक़्क़ः, रूकूअ 1) ऐसे आली मुक़ाम जन्नत में होंगे जहां कोई लग्व बात न सुनेंगे उसमें बहते हुए चश्में होंगे और उसमें ऊँचे ऊँचे तख़्त बिछे हुए होंगे और आबख़ोरे रखे

हुए होंगे और बराबर गद्दे लगे हुए होंगे और सब तरफ़ क़ालीन ही क़ालीन फ़ैले हुए पड़े होंगे (कि जहां चाहें बैठें, सारी ही जगह सदर नशीन है (ग़ाशियः) वे लोग सय्यालों और चश्मों में रहते होंगे (वलमुर्सलात, रूकूअ 2) उस जन्नत के फल हमेशा रहने वाले होगें (कभी ख़त्म न होंगें) उसका साया हमेशा रहने वाला होगा।

यह तो अन्जाम है मुत्तक़ी लोगों का, और काफ़िरों का अंजाम दोज़ख़ है (रअद, रूकूअ 5) वह कैसी सख़्त आग होगी (अल्लाह तआला ही महफ़ूज़ रखे) बेशक मुजरिम लोग जहन्नम के अज़ाब में हमेशा रहेंगे, वह अज़ाब किसी वक़्त भी उनसे हल्का न किया जायेगा और वे लोग उसमें मायूस पड़े रहेंगे (ज़ुख़रूफ़, रूकूअ 6) बेशक मुजरिम लोग बड़ी गुमराही और (हिमाक़त के) जुनून में पड़े हुए हैं। (उनको अपनी हिमाकृत उस दिन मालूम होगी) जिस दिन मुंह के बल घसीट कर जहन्नम में फेंक दिये जायेंगे (और उनसे कहा जायेगा कि) दोज़ख़ की आग लगने का (उसमें जलने का) मज़ा चखो। (क़मर, रूकूअ 3) वे लोग आग में और खोलते हुए पानी में और काले धुएँ के साये में होंगे।

(वाक़िअः, रूकूअ 1)

मुजरिम आदमी इस बात की तमन्ना करेगा कि उस दिन के अज़ाब से छूटने के लिये अपने बेटों को, बीवी को, भाई को और सारे कुंबा को, जिन में वह रहता था और तमाम रुए ज़मीन के आदमियों को अपने फ़िदये में दे दे पर किसी तरह अज़ाब से बच जाये। लेकिन यह हरगिज हरगिज़ नहीं होगा, वह आग ऐसी शोलों वाली है कि बदन की खाल तक उतार देगी और वह आग ऐसे शख़्स को खुद बुलावेगी जिसने (दुनिया में हक़ से) पीठ फेरी होगी और (अल्लाह तआला की इताअत से) बेरूख़ी की होगी। और (नाहक़)माल जमा किया होगा और उसको उठा कर हिफ़ाज़त से रखा होगा। *(मआरिज, रूकूअ 1)*

यह शख़्स निहायत सख़्त मशक़्क़त में होगा और निहायत सख़्त अज़ाब में और अल्लाह तआला शानुहू के गुस्से में होगा और ये लोग इस अज़ाब से कभी निकलने वाले नहीं होंगे। (इस कलाम में उस फ़क़ीर ने जन्नत और दोज़ख़ की बहुत सी आयात की तरफ़ इशारा कर दिया जिनकी सूरत और रूकूअ का हवाला लिख दिया गया, पूरी आयात मुतर्जम क़ुरआन शरीफ़ में देखी जा सकती हैं।)

वह हाश्मी रईस फ़क़ीर का कलाम सुनकर अपनी जगह से उठा और

फ़क़ीर से मुआनक़ा किया और ख़ूब चिल्ला कर रोया और अपने सब अहले मलजिस को कह दिया कि तुम सब चले जाओ और फ़क़ीर को साथ में लेकर सेहन में गया और एक बोरे पर बैठ गया और अपनी जवानी पर नौहा करता रहा, अपनी हालत पर रोता रहा और फ़क़ीर उसको नसीहत करता रहा, यहां तक कि सुबह हो गयी उसने अपने सब गुनाहों से अव्वल फ़क़ीर के सामने तौबा की और अल्लाह तआला शानुहू से इसका अहद किया कि आइंदा कभी कोई गुनाह न करेगा फिर दोबारा दिन में सारे मजमे के सामने तौबा की और मस्जिद का कोना संभाल कर अल्लाह तआला शानुहू की इबादत में मश्ग़ूल हो गया और अपना वह सारा साज़ व सामान माल व मताअ् सब फ़रोख़्त करके सदक़ा कर दिया और तमाम नौकरों को मौक़ूफ़ कर दिया और जितनी चीज़ें ज़ुल्म व सितम से ली थीं, सब अहले हुक़ूक़ को वापस कीं, ग़ुलाम और बांदियों में से बहुत से आज़ाद किये और बहुत से फ़रोख़्त करके उन की क़ीमत सदक़ा कर दी और मोटा लिबास और जौ की रोटी इख़्तियार की, तमाम रात नमाज़ पढ़ता दिन को रोज़ा रखता हत्ताकि बुज़ुर्ग और नेक लोग उसके पास उसकी ज़ियारत को आने लगे और इतना मुजाहदा उसने शुरू कर दिया कि लोग उसको अपने हाल पर रहम खाने की और मशक़्क़त में कमी करने की फ़रमाईश करते और उसको समझाते कि हक़ तआला शानुहू निहायत करीम है, वह थोड़ी मेहनत पर बहुत ज़्यादा अज्र अता फ़रमाते हैं, मगर वह कहता कि दोस्तों, मेरा हाल मुझी को मालूम है, मैं ने अपने मौला की रात दिन नाफ़रमानियां की हैं। बड़े सख़्त सख़्त गुनाह किये हैं, यह कह कर वह रोने लगता और ख़ूब रोता। इसी हालत में नंगे पांव पैदल हज को गया, एक मोटा कपड़ा बदन पर था, एक प्याला और एक थैला सिर्फ़ साथ था। इसी हालत में मक्का मुकर्रमा पहुँचा और हज के बाद वहीं क़ियाम कर लिया, वहीं इंतिक़ाल हुआ, रहिम-हुल्लाहु रहम-तन वासिअ:।

मक्का के क़ियाम में रात को हतीम में जाकर रोता और गिड़गिड़ाता और कहता कि मेरे मौला मेरी कितनी ख़लतवें ऐसी गुज़र गयीं, जिनमें मैं ने तेरा ख़्याल भी न किया, मैं ने कितने बड़े बड़े गुनाहों से तेरा मुक़ाबला किया, मेरे मौला मेरी नेकियां सारी जाती रहीं (कि कुछ भी न कमाया) और मेरे गुनाह मेरे साथ रह गये हलाकत है मेरे लिए उस दिन, जिस दिन तुझसे मुलाक़ात होगी (यानी मरने के बाद) मेरे लिए हलाकत पर हलाकत है यानी बहुत ज़्यादा हलाकत है उस दिन जिस दिन मेरे आमाल नामे खोले जायेंगे। आह, वे मेरी

रूसवाईयों से भरे हुए होंगे, वे मेरे गुनाहों से पुर होंगे, बल्कि तेरी नाराज़ी से मुझ पर हलाकत उतर चुकी है और तेरा इताब मुझ पर हलाकत है, जो तेरे उन एहसानों पर होगा, जो हमेशा तूने मुझ पर किये और तेरी उन नेमतों पर होगा जिनका हमेशा मैं ने गुनाहों से मुक़ाबला किया और तू मेरी सारी हरकतों को देख रहा था। मेरे आक़ा, तेरे सिवा मेरा कौन सा ठिकाना है, जहां भाग कर चला जाऊं। तेरे सिवा कौन शख़्स ऐसा है जिससे इल्तिजा करूँ। तेरे सिवा कौन है जिस पर किसी क़िस्म का भरोसा करूँ। मेरे आक़ा मैं इस क़ाबिल हरगिज़ नहीं हूँ कि तुझसे जन्नत का सवाल करूँ। अलबत्ता महज़ तेरे करम से तेरी अता से तेरे फ़ज़ल से इसकी तमन्ना करता हूँ कि तू मुझ पर रहम फ़रमा दे और मेरे गुनाह माफ़ फ़रमा दे।

فَاِنَّكَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ

"फ़-इन्न-क अह लुत्त क़्वा व अह्लु ल् मग़्फ़ि-र:॰" (रौज़)

59. हारून रशीद का एक बेटा था जिसकी उम्र तक़रीबन सोलह साल की थी, वह बहुत कसरत से ज़ाहिदों और बुज़ुर्गों की मलजिस में रहा करता था और अक्सर क़ब्रस्तान चला जाता, वहां जाकर कहता कि तुम लोग हमसे पहले दुनिया में थे, दुनिया के मालिक थे लेकिन इस दुनिया ने तुम्हें निजात न दी हत्ता कि तुम क़ब्रों में पहुँच गये। काश मुझे किसी तरह ख़बर होती कि तुम पर क्या गुज़र रही है और तुमसे क्या क्या सवाल व जवाब हुए हैं और अक्सर यह शेअ्र पढ़ा करता -

تزوعنى الجنائز كل يوم ويحزننى بكاء النائحات

"तज़ू अनिल् जना ई-ज़ु कुल्-ल यौमिन् व यह ज़ुनु-नी बुका अुन्ना-इ हाति॰"

मुझे जनाज़े हर दिन डराते हैं और मरने वालों पर रोने वालियों की आवाज़ें मुझे ग़मगीन रखती हैं।

एक दिन वह अपने बाप (बादशाह) की मलजिस में आया, उसके पास वज़ीर, अमरी लोग सब जमा थे और लड़के के बदन पर एक कपड़ा मामूली और सर पर एक लुंगी बंधी हुई थी। अराकीने सल्तनत आपस में कहने लगे कि इस पागल लड़के की हरकतों ने अमीरूल मोमिनीन को भी दूसरे बादशाहों की निगाह में ज़लील कर दिया, अगर अमीरूल मोमिनीन इसको तंबीह करें तो शायद

यह अपनी इस हालत से बाज़ आये। अमीरूल मोमिनीन ने यह बात सुनकर उससे कहा कि, बेटा तूने मुझे लोगों की निगहा में ज़लील कर रखा है। उस ने यह बात सुन कर अपने बाप को कोई जवाब नहीं दिया, लेकिन एक परिन्द वहां बैठा था, उसको कहा कि उस ज़ात का वास्ता जिसने तुझको पैदा किया, तू मेरे हाथ पर आकर बैठ जा, वह परिन्द वहां से उड़कर उसके हाथ पर आकर बैठ गया, फिर कहा कि अब अपनी जगह चला जा। वह हाथ पर से उड़कर अपनी जगह चला गया। उसके बाद उसने अर्ज़ किया कि अब्बाजान, असल में आप दुनिया से जो मुहब्बत कर रहे हैं, उसने मुझे रूसवा कर रखा है। अब मैं ने यह इरादा कर लिया है कि मैं आपसे जुदाई इख़्तियार कर लूँ।

यह कह कर वहां से चल दिया और एक क़ुरआन शरीफ़ सिर्फ़ अपने साथ लिया, चलते हुए मां ने एक बहुत क़ीमती अंगूठी भी उसको दे दी (कि ज़रूरत के वक़्त इसको फ़रोख़्त करके काम में लाये) वह वहां से चल कर बसरा पहुँच गया और मज़दूरों में काम करने लगा। हफ़्ते में सिर्फ़ एक दिन शंबा (बार) को मज़दूरी करता और आठ दिन तक वे मज़दूरी के पैसे ख़र्च करता और आठवें दिन फिर शंबा (बार) को मज़दूरी कर लेता और एक दिरम और एक वानिक (यानी दिरम का छठा हिस्सा) मज़दूरी लेता, इससे कम या ज़्यादा न लेता। एक वानिक़ रोज़ाना ख़र्च करता।

अबू आमिर बसरी रह० कहते हैं कि मेरी एक दीवार गिर गयी थी, उसको बनवाने के लिए मैं किसी मेमार की तलाश में निकला। (किसी ने बताया होगा कि यह शख़्स भी तामीर का काम करता है) मैं ने देखा कि निहायत ख़ूबसूरत लड़का बैठा है, एक ज़ंबील पास रखी है और क़ुरआन शरीफ़ देख कर पढ़ रहा है। मैं ने उससे पूछा कि लड़के मज़दूरी करोगे? कहने लगा कि क्यों नहीं करेंगे ? मज़दूरी के लिए तो पैदा ही हुए हैं, आप बतायें क्या ख़िदमत मुझसे लेनी है। मैं ने कहा गारे मिट्टी (तामीर) का काम लेना है। उस ने कहा कि एक दिरम और एक वानिक़ मज़दूरी होगी और नमाज़ के औक़ात में काम नहीं करूँगा, मुझे नमाज़ के लिये जाना होगा

मैं ने उसकी दोनों शर्तें मंज़ूर कर लीं और उसको लाकर काम पर लगा दिया। मग़्रिब के वक़्त जब मैं ने देखा तो उसने दस आदमियों की बक़द्र काम किया, मैं ने उसको मज़दूरी में दो दिरम दिये, उसने शर्त से ज़ायद लेने से इंकार कर दिया और एक दिरम और एक वानिक़ लेकर चला गया। दूसरे दिन मैं फिर

उसकी तलाश में निकला, वह मुझे कहीं न मिला। मैं ने लोगों से तहक़ीक़ किया कि ऐसी ऐसी सूरत का एक लड़का मज़दूरी किया करता है, किसी को मालूम है कि वह कहां मिलेगा? लोगों ने बताया कि वह सिर्फ़ शंबा (बार) के ही दिन मज़दूरी करता है इससे पहले तुम्हें कहीं नहीं मिलेगा। मुझे उसके काम को देख कर ऐसी रग़बत हुई कि मैं ने आठ दिन को अपनी तामीर बंद कर दी और शंबा के दिन उसकी तलाश में निकला, वह उसी तरह बैठा क़ुरआन शरीफ़ पढ़ता हुआ मिला। मैं ने सलाम किया, और मज़दूरी करने को पूछा, उसने पहली वाली दो शर्तें बयान कीं मैं ने मंज़ूर कर लीं।

वह मेरे साथ आकर काम में लग गया। मुझे इस पर हैरत हो रही थी कि पिछले शंबा (बार) को इस अकेले ने दस आदमियों का काम किस तरह कर लिया। इसलिये इस मर्तबा मैनें ऐसी तरह छुप कर कि वह मुझे न देखे, उसके काम करने का तरीक़ा देखा तो अजीब मंज़र देखा कि वह हाथ में गारा लेकर दीवार पर डालता है और पत्थर अपने आप ही एक दूसरे के साथ जुड़ते चले जाते हैं। मुझे यक़ीन हो गया कि यह कोई अल्लाह का वली है और अल्लाह के औलिया के कामों में ग़ैब से मदद होती ही है। जब शाम हुई तो मैं ने उसको तीन दिरम देना चाहे, तो उसने लेने से इंकार कर दिया कि मैं इतने दिरम का क्या करूँगा? और एक दिरम और और एक वानिक़ लेकर चला गया।

मैं ने एक हफ़्ता फिर इंतिज़ार किया और तीसरे शंबा (बार) को फिर मैं उसकी तलाश में निकला मगर वह मुझे न मिला। मैं ने लोगों से तहक़ीक़ किया, एक शख़्स ने बताया कि वह तीन दिन से बीमार है, फ़लां वीरान जंगल में पड़ा है। मैं ने एक शख़्स को उज्रत देकर इस पर राज़ी किया कि वह मुझे उस जंगल में पहुँचा दे वह मुझे साथ लेकर उस जंगल वीरान में पहुँचा तो मैं ने देखा कि वह बेहोश पड़ा है, आधी ईंट का टुकड़ा सर के नीचे रखा हुआ है। मैं ने उसको सलाम किया, उसने जवाब न दिया। मैं ने दूसरी मर्तबा सलाम किया तो उसने (आंख खोली और) मुझे पहचान लिया, मैनें जल्दी से उसका सर ईंट से उठाकर अपनी गोद में रख लिया, उसने सर हटा लिया और चंद शेअ्र पढ़े, जिनमें से दो ये हैं:-

يا صاحبي لا تغترر بتنعم فالعمر ينفد والنعيم يزول

واذا حملت على القبور جنازة فاعلم بانك بعدها محمول

"या साहिबी ला तग़्तर्-रु बित-नअ्इमिन्
फ़ल् उमरू यन्फ़दु वन्नओमु यज़ूलु
व इज़ा हमल्-त इलल् क़ुबूरि जनाज़-तन्
फ़अ्लम् बिअन्न-क बअ्द-हा मह्मूलु"

"मेरे दोस्त दुनिया की नेमतों के धोखे में न पड़, उम्र ख़त्म होती जा रही है और ये नेमतें सब ख़त्म हो जायेंगी, जब तू कोई जनाज़ा लेकर क़ब्रस्तान में जाये तो यह सोचा कर, कि तेरा भी एक दिन इसी तरह जनाज़ा उठाया जायेगा।

इसके बाद उसने मुझसे कहा कि अबू आमिर जब मेरी रूह निकल जाये तो मुझे नहला कर मेरे इसी कपड़े में मुझे कफ़न दे देना। मैं ने कहा मेरे महबूब इसमें क्या हर्ज है कि मैं तेरे कफ़न के लिये नये कपड़े ले आऊँ। उसने जवाब दिया कि नये कपड़ों के लिये ज़िन्दा लोग ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं। (यह जवाब हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ का जवाब है, उन्होंने भी अपने विसाल के वक़्त यही फ़रमाइश की थी कि मेरी इन्हीं चादरों में कफ़न दे देना और जब उनसे नये कपड़े की इजाज़त चाही गयी थी, तो उन्होंने यही जवाब दिया था) लड़के ने कहा कि कफ़न तो (पुराना हो या नया बहरहाल) बोसीदा हो जायेगा, आदमी के साथ तो सिर्फ़ उसका अमल ही रहता है और यह मेरी लुंगी और लोटा क़ब्र खोदने वाले को मज़दूरी में दे देना और यह अंगूठी और क़ुरआन शरीफ़ हारून रशीद तक पहुँचा देना और इसका ख़्याल रखना कि ख़ुद उन्हीं के हाथ में देना और यह कह देना कि एक परदेसी लड़के की यह मेरे पास अमानत है, और वह आपसे यह कह गया है कि ऐसा न हो कि इसी ग़फ़लत और धोखे की हालत में आपकी मौत आ जाये, यह कह कर उसकी रूह निकल गयी। उस वक़्त मुझे मालूम हुआ कि यह लड़का शहज़ादा था।

उसके इंतिक़ाल के बाद उसकी वसीयत के मुवाफ़िक़ मैं ने उसको दफ़न कर दिया और दोनों चीज़ें गोरकन को दे दीं और क़ुरआन पाक और अंगूठी लेकर बग़दाद पहुँचा और क़सरे शाही के क़रीब पहुँचा तो बादशाह की सवारी निकल रही थी। मैं एक ऊँची जगह खड़ा हो गया, अव्वल एक बहुत बड़ा लश्कर निकला जिसमें तक़रीबन एक हज़ार घोड़े सवार थे, उस के बाद इसी तरह एक के बाद एक दस लश्कर निकले, हर एक में तक़रीबन एक हज़ार सवार थे, दसवें जत्थे में ख़ुद अमीरूल मोमिनीन भी थे। मैं ने ज़ोर से आवाज़ देकर कहा कि ऐ अमीरूल मोमिनीन, आपको हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

की क़राबत रिश्तेदारी का वास्ता, ज़रा सा तवक़्क़ुफ़ कर लीजिये मेरी आवाज़ पर उन्हों ने मुझे देखा तो मैं ने जल्दी से आगे बढ़कर कहा कि मेरे पास एक परदेसी लड़के की यह अमानत है, जिस ने मुझे यह वसीयत की थी कि ये दोनों चीज़ें आप तक पहुँचा दूँ।

बादशाह ने उनको देख कर (पहचान लिया) थोड़ी देर सर झुकाया, उनकी आंख से आंसू जारी हो गये और एक दरबान से कहा कि इस आदमी को अपने साथ रखो, जब मैं वापसी पर बुलाऊँ तो मेरे पास पहुँचा देना। जब वह बाहर से वापसी पर मकान पहुँचे तो महल के परदे गिरवा कर दरबान से फ़रमाया कि, उस शख़्स को बुला कर लाओ, अगरचे वह मेरा ग़म ताज़ा ही करेगा।

दरबान मेरे पास आया और कहने लगा कि अमरूल मोमिनीन ने बुलाया है और इसका ख़्याल रखना कि अमीर पर सदमे का बहुत असर है, अगर तुम दस बातें करना चाहते हो तो पांच ही पर इक्तिफ़ा करना, यह कह कर वह मुझे अमीर के पास ले गया। उस वक़्त अमीर बिल्कुल तंहा बैठे थे, मुझ से फ़रमाया कि मेरे क़रीब आ जाओ। मैं क़रीब जाकर बैठ गया। कहने लगे कि तुम मेरे इस बेटे को जानते हो? मैं ने कहा, जी हां, मैं उनको जानता हूँ। कहने लगे वह क्या काम करता था? मैं ने कहा गारे मिट्टी की मज़दूरी करते थे। कहने लगे, तुमने मज़दूरी पर कोई काम उससे कराया? मैं ने कहा, कराया है। कहने लगे, तुम्हें इसका ख़्याल न आया कि उसकी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से क़राबत थी (कि यह हज़रात हुज़ूर सल्ल॰ के चचा हज़रत अब्बास रज़ि॰ की औलाद हैं) मैं ने कहा कि अमीरूल मोमिनीन पहले अल्लाह जल्ल शानुहू से माज़िरत चाहता हूँ, उसके बाद आपसे उज़्र ख़्वाह हूँ, मुझे उस वक़्त तक इसका इल्म ही न था कि यह कौन है? मुझे उनके इंतिक़ाल के वक़्त उनका हाल मालूम हुआ। कहने लगे कि तुमने अपने हाथ से उसको ग़ुस्ल दिया। मैं ने कहा कि जी हां, कहने लगे कि अपना हाथ लाओ। मेरा हाथ लेकर अपने सीने पर रख दिया और चंद शेअ्र पढ़े जिनका तर्जुमा यह है:-

तर्जुमा:- "ऐ वह मुसाफ़िर, जिस पर मेरा दिल पिघल रहा है और मेरी आंखें उस पर आंसू बहा रही हैं, ऐ वह शख़्स जिसका मकान (क़ब्र) दूर है लेकिन उसका ग़म मेरे क़रीब है, बेशक मौत हर अच्छे से अच्छे ऐश को मुकद्दर कर देती है। वह मुसाफ़िर एक चांद का टुकड़ा था(यानी उस का चेहरा) जो

ख़ालिस चांदी की टहनी पर था (यानी उसके बदन पर) पस चांद का टुकड़ा भी क़ब्र में पहुँच गया और चांदी की टहनी भी क़ब्र में पहुँच गयी।

इसके बाद हारून रशीद ने बसरा उसकी क़ब्र पर जाने का इरादा किया, अबू आमिर रह० साथ थे। उसकी क़ब्र पर पहुँच कर हारून रशीद ने चंद शेअ्र पढ़े, जिनका तर्जुमा यह है :-

तर्जुमा:- "ऐ वह मुसाफ़िर, जो अपने सफ़र से कभी भी न लौटेगा, मौत ने कम उम्री के ही ज़माने में उसको जल्दी से उचक लिया, ऐ मेरी आंखों की ठंडक, तू मेरे लिए उंस और दिल का चैन था, लंबी रातों में भी और मुख़्तसर रातों में भी, तूने मौत का वह प्याला पिया है जिसको अंक़रीब तेरा बूढ़ा बाप बुढ़ापे की हालत में पियेगा, बल्कि दुनिया का हर आदमी उसको पियेगा चाहे जंगल का रहने वाला हो या शहर का रहने वाला हो, पस सब तारीफ़ें उसी वह्द हू ला शरी-क लहू के लिये हैं जिस की लिखी हुई तक़दीर के ये करिश्मे हैं।

अबू आमिर रह० कहते हैं कि इसके बाद जो रात आई तो जब मैं अपने वज़ाइफ़ पूरे करके लेटा ही था कि मैं ने ख़्वाब में एक नूर का क़ुब्बा देखा जिसके ऊपर अब्र की तरह नूर ही नूर फैल रहा है, उस नूर के अब्र में से उस लड़के ने मुझे आवाज़ देकर कहा, अबू आमिर, तुम्हें हक़ तआला शानुहू जज़ाये ख़ैर अता फ़रमाये। (तुमने मेरी तज्हीज़ व तक्फ़ीन की और मेरी वसीयत पूरी की) मैं ने उससे पूछा कि मेरे प्यारे, तेरा क्या हाल गुज़रा? कहने लगा कि मैं ऐसे मौला की तरफ़ पहुँचा हूँ, जो बहुत करीम है और मुझसे बहुत राज़ी है, मुझे उस मालिक ने वे चीज़ें अता कीं, जो न कभी किसी आंख ने देखीं, न कान ने सुनीं, न किसी आदमी के दिल पर उनका ख़्याल गुज़रा (यह एक मशहूर हदीस का पाक मज़्मून है, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इर्शाद फ़रमाते हैं कि अल्लाह जल्ल जलालहू का पाक इर्शाद है कि मैं ने अपने नेक बंदों के लिये ऐसी चीज़ें तैयार कर रखी हैं जो न किसी आंख ने कभी देखीं, न कान ने सुनीं, न किसी के दिल पर उनका ख़्याल गुज़रा)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि तौरात में लिखा है कि हक़ तआला शानुहू ने उन लोगों के लिये जिनके पहलू रात को ख़्वाबगाहों से दूर रहते हैं (यानी तहज्जुद गुज़ारों के लिये) वे चीज़ें तैयार कर रखी हैं, जिनको न किसी आंख ने देखा न कान से सुना, न किसी आदमी के दिल पर उनका

ख़्याल गुज़रा, न उनको कोई मुक़र्रब फ़रिश्ता जानता है, न कोई नबी, न रसूल जानता है और यह मज़्मून क़ुरआन पाक में भी है :-

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ أُخْفِيَ لَهُمْ مِّن قُرَّةِ أَعْيُنٍ (سجده ع ۲)

"फ़ला तअ्-ल मु नफ़्सुम्-मा उख़्फ़ि-य लहुम् मिन् क़ुर्र-ति अअ्युनिन्॰" *(सूरः सज्दा, रुकूअ 2)*

किसी शख़्स को ख़बर नहीं, जो जो आंखों की ठंडक का सामान ऐसे लोगों के लिये ख़ज़ाना-ए-ग़ैब में मौजूद है। *(दुर्रे मंसूर)*

इसके बाद उस लड़के ने कहा कि हक़ तआला शानुहू ने क़सम खाकर फ़रमाया है कि जो भी दुनिया से इस तरह निकल आये जैसा कि मैं निकल आया, उसके लिये यही एज़ाज़ और इकराम है जो मेरे लिये हुए।

साहबे रौज़ कहते हैं कि यह सारा क़िस्सा मुझे एक और तरीक़े से भी पहुँचा है, उसमें यह भी है कि किसी शख़्स ने हारून रशीद से उस लड़के के मुताल्लिक़ सवाल किया तो उन्होंने बताया कि मेरे बादशाह होने से पहले यह लड़का पैदा हुआ था, बहुत अच्छी तर्बियत पायी थी, क़ुरआन पाक भी पढ़ा था, और उलूम भी पढ़े थे, जब मैं बादशाह बन गया तो यह मुझे छोड़ कर चला गया था, मेरी दुनिया से उसने कोई राहत न उठायी, चलते वक़्त मैं ने ही उसकी मां से कहा था कि इसको यह अंगूठी दे दे, उस अगूंठी का याक़ूत बहुत ज़्यादा क़ीमती था मगर यह उसको भी काम में न लाया, मरते वक़्त वापस कर गया। यह लड़का अपनी वालिदा का बड़ा फ़रमांबरदार था। *(रौज़)*

जिस बाप की दुनियादारी से यह साहबज़ादा रंजीदा होकर गया है यानी हारून रशीद, बहुत नेक दिल बादशाहों में इनका शुमार है, दौलत और सरवत के साथ लग्ज़िशें तो हो ही जाती हैं लेकिन उनके दीनी कारनामे तारीख़ की किताबों में कसरत से मौजूद हैं। बादशाहत के ज़माने में सौ रक्अत नफ़्ल रोज़ाना पढ़ने का मामूल मरते वक़्त तक रहा, और अपने ज़ाती माल से एक हज़ार दिरम रोज़ाना सदक़ा किया करते थे। एक साल हज किया करते थे और एक साल जिहाद में शिर्कत करते, जिस साल ख़ुद हज को जाते, अपने साथ सौ आलिमों को मय उनके बेटों के हज को लेकर जाते, और जिस साल ख़ुद हज न करते, तीन सौ आदमियों को उनके पूरे ख़र्च और सामान, लिबास वग़ैरह के साथ हज को भेजा करते, जिनको ख़र्च भी बहुत वुस्अत से दिया जाता और लिबास भी

उम्दा दिया जाता, वैसे भी अताया की बहुत कसरत उनके यहां थी, सवाल करने वालों के लिये भी और बग़ैर सवाल के इब्तिदाअन भी, उलमा का उनकी मज्लिस में बहुत एज़ाज़ था और उनसे बहुत मुहब्बत करते थे।

अबू मुआविय: ज़रीर रह० मशहूर मुहद्दिस नाबीना ने एक मर्तबा उनके साथ खाना खाया, खाने के बाद ख़ुद हारून रशीद ने उनके हाथ धुलाये और यह कहा कि इल्म के एज़ाज़ में मैं ने धुलाये हैं।

एक मर्तबा अबू मुआविया रह० ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस जिस में हज़रत आदम अलैहि० और हज़रत मूसा अलैहि० के मुनाज़रे का ज़िक्र था, बयान की, कि एक शख़्स ने कह दिया कि इन दोनों हज़रात की मुलाक़ात कहां हुई तो बादशाह को ग़ुस्सा आ गया और कहा, मेरी तलवार लाओ, ज़िन्दीक़, बद-दीन हुज़ूर सल्ल० की हदीस पर एतिराज़ करता है। नसीहत की बातों पर बहुत कसरत से रोने वाले थे।

(तारीख़े बग़दाद लिल्ख़तीब)

60. एक मर्तबा हारून रशीद हज को जा रहे थे, रास्ते में कूफ़ा में चंद रोज़ क़ियाम किया, जब वहां से रवानगी का वक़्त हुआ तो लोग बादशाह की सवारी की सैर के शौक़ में शहर से बाहर बहुत से जमा हो गये, बहलूल मजनूं भी पहुँच गये और रास्ते में एक कूड़ी पर बैठ गये। बच्चे उनको हर वक़्त सताया ही करते थे, डले मारते, मज़ाक़ करते। वह हस्बे दस्तूर उनके गिर्द जमा हो गये। जब बादशाह की सवारी क़रीब आयी तो बच्चे सब इधर उधर हो गये, उन्होंने ज़ोर से आवाज़ देकर कहा, ऐ अमीरूल मोमिनीन, ऐ अमीरूल मोमीनीन, हारून रशीद ने सवारी का पर्दा उठाया और कहने लगे, लब्बैक या बहलूल, लब्बैक या बहलूल, बहलूल मैं हाज़िर हूँ, बहलूल मैं हाज़िर हूँ, कहो क्या कहते हो? उन्होंने कहा मुझसे ऐमन ने यह हदीस बयान की कि हज़रत क़ुदामा रज़ि० यह कहते हैं कि जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज को तशरीफ़ ले जा रहे थे तो मैं ने मिना में आप को एक ऊँट पर सवार देखा, जिस पर मामूली कजावा था, न लोगों को सामने से हटाना था, न हटो बचो का शोर था। अमीरूल मोमिनीन तेरा भी इस सफ़र में तवाज़ोअ् से चलना, तकब्बुर से चलने से बेहतर है।

हारून रशीद यह सुनकर रोने लगे, फिर कहा, बहलूल कुछ और नसीहत करो, अल्लाह तआला शानुहू तुम पर रहम करे। बहलूल ने यह सुनकर

दो शेअ्र पढ़े जिनका तर्जुमा यह है कि :-

मान ले, तस्लीम कर ले कि तू सारी दुनिया का बादशाह बन गया और सारी दुनिया की मख़्लूक़ तेरी मुतीअ् हो गयी फिर क्या हुआ? कल को तो बहरहाल तेरा ठिकाना क़ब्र का गढ़ा है। एक इधर से मिटटी डाल रहा होगा, एक उधर से मिट्टी डाल रहा होगा। इस पर हारून रशीद फिर बहुत रोये और कहने लगे, बहलूल, तुमने बहुत अच्छी बात कही, कुछ और कहो। बह्लूल ने कहा, अमीरूल मोमिनीन, जिस शख़्स को हक़ तआला शानुहू माल और जमाल अता करे और वह अपने माल को अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करे और अपने जमाल को गुनाहों से महफ़ूज़ रखे, वह अल्लाह तआला के दीवान में नेक लोगों में लिखा जाता है।

हारून रशीद ने कहा, तुमने बहुत अच्छी बात कही, इसका सिला (इनआम) मिलना चाहिए। बह्लूल ने कहा कि इनआम का रूपया उन लोगों को वापस कर जिनसे (टैक्स वग़ैरह के तौर पर) ले रखा है, मुझे तेरे इनआम की ज़रूरत नहीं। हारून रशीद ने कहा। कि अगर तुम्हारे ज़िम्मे किसी का क़र्ज़ हो तो मैं उसको अदा कर दूँ। बहलूल ने कहा कि अमीरूल मोमिनीन, क़र्ज़ से क़र्ज़ अदा नहीं किया जाता। (यानी यह रूपया जो तेरे पास है, यह ख़ुद दूसरों का हक़ है जो तेरे ज़िम्मे उनका क़र्ज़ है) हक़ वालों का हक़ वापस करो, पहले अपना क़र्ज़ा अदा करो फिर दूसरों के क़र्ज़े को पूछना।

हारून रशीद ने कहा, तुम्हारे लिए कोई वज़ीफ़ा मुक़र्रर कर दें जिस से तुम्हारे खाने का इंतिज़ाम हो जाये। बहलूल ने कहा कि मैं और तुम दोनों अल्लाह तआला शानुहू के बंदे हैं। यह मुहाल है कि वह तुम्हारी रोज़ी का तो फ़िक्र रखे और मेरी रोज़ी का फ़िक्र न फ़रमाये। इसके बाद हारून रशीद ने सवारी का पर्दा गिराया और आगे चल दिये। *(रौज़)*

हारून रशीद की यह मशहूर बात है कि नसीहत के सुनने के बाद बहुत कसरत से रोया करते थे। एक मर्तबा हज को जा रहे थे तो सअदून मजनूं रास्ते में सामने आ गये और चंद शेअ्र पढ़े जिनका मतलब यही था कि मान लो तुम सारी दुनिया के बादशाह बन गये हो लेकिन क्या आख़िर मौत न आयेगी? दुनिया को अपने दुश्मनों के लिये छोड़ दो, जो दुनिया आज तुम्हें ख़ूब हंसा रही है, यह कल को तुम्हें ख़ूब रूलायेगी।

ये अश्आर सुन कर हारून रशीद ने एक चीख़ मारी और बेहोश होकर गिर गये और इतने तवील वक़्त तक बेहोशी रही कि तीन नमाज़ें क़ज़ा हो गयीं।

(रौज़)

इनकी अंगूठी की मुहर थी (अल् अज़्मतु वल् क़ुद-र तु लिल्लह) हर किस्म की बड़ाई और हर नौअ् की क़ुदरत सिर्फ़ अल्लाह जल्ल शानुहू के लिये है, यह मज़्मून गोया हर वक़्त निगाह के समाने रहता था।

61. हज़रत मालिक बिन दीनार रह॰ फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा बसरा के जंगल में जा रहा था, मैं ने हज़रत सादून को देखा, जो सअ्दून मजनूं के नाम से मशहूर थे, मैं ने उनसे पूछा क्या हाल है? कहने लगे, ऐसे शख़्स का क्या हाल पूछते हो जो सुबह शाम हर वक़्त एक तवील सफ़र के लिये तैयार बैठा हो और सफ़र के लिये तोशा किसी क़िस्म का भी साथ न हो, न कोई सफ़र का सामान, सवारी वग़ैरह उसके पास हो और उसको ऐसे मौला के पास जाना हो, जो निहायत आदिल, बड़ा करीम है और वह लोगों के दर्मियान उस वक़्त फ़ैसला कर देगा, यह कह कर वह बहुत ज़्यादा रोने लगे। मैं ने पूछा कि रोने की क्या बात है? कहने लगे कि मैं न तो दुनिया के छूटने पर रो रहा हूँ, न मौत से घबरा कर रो रहा हूँ, बल्कि मैं अपनी उम्र के उस दिन पर रो रहा हूँ, जो किसी नेक अमल से ख़ाली रह गया हो, ख़ुदा की क़सम, मुझे अपने सामाने सफ़र की कमी रूला रही है, सफ़र बहुत तवील और बड़ी मशक़्क़त का है। बहुत सी घाटियां इस सफ़र में पेश आनी हैं और मेरे पास सफ़र का कोई भी सामान मौजूद नहीं है और इस सफ़र के सब मसाइब बर्दाश्त करने के बाद यह भी पता नहीं कि जन्नत में जाऊंगा या जहन्नम में डाल दिया जाऊंगा।

मैं ने उनसे यह हिक्मत की बातें सुनकर कहा कि लोग आपको मजनूं कहते हैं, आप तो बड़ी अच्छी बातें करते हैं। कहने लगे कि तुम भी दुनियादारों के कहने से धोखे में पड़ गये, मुझे जुनून नहीं है, मेरे आक़ा की मुहब्बत मेरे दिल में, मेरे जिगर में, मेरे गोश्त पोस्त में, मेरी हड्डियों में घुस गयी है, उसके इश्क़ में मैं हैरान व परेशान रहता हूँ (इसकी वजह से दुनिया के पागल मुझे मजनूं कहते हैं) मैं ने पूछा कि आप लोगों से भागते हैं (जंगल में पड़े रहते हैं) इस पर उन्होंने दो शेअ्र पढ़े जिनका तर्जुमा यह है कि :-

"आदमियों से हमेशा दूर रह और अल्लाह जल्ल शानुहू की हमनशीनी

हर वक़्त इख़्तियार कर, तू आदमियों का जिस हालत में दिल चाहे, तजुर्बा कर ले, तू हर हालत में उनको बिच्छू पायेगा कि तक्लीफ़ पहुँचाने के सिवा उनका कोई काम न होगा। (रौज़)

62. हज़रत अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद रह० जो मशाइख़े चिश्तिया में मशहूर बुज़ुर्ग हैं, फ़रमाते हैं कि मैं तीन रात तक मुसलसल यह दुआ करता रहा कि या अल्लाह, जन्नत में जो मेरा रफ़ीक़ हो उससे मुझे दुनिया में मुलाक़ात करा दे। तीन दिन के बाद मुझे बताया गया कि तेरी साथी मैमूना सौदा हैं (जो एक हब्शी औरत थीं, इतनी काली कि उनका लक़ब ही सौदा हो गया था) मैं ने पूछा कि वह कहां मिलेंगी? मुझे बताया गया कि कूफ़ा के फ़लां क़बीले में है।

मैं उनसे मिलने चल दिया। कूफ़ा पहुँच कर मैं ने उनका हाल दर्याफ़्त किया, मुझे बताया गया कि बकरियां चराया करती हैं, फ़लां जंगल में हैं मैं उस जंगल में पहुँचा, वह एक गुदड़ी ओढ़े नमाज़ पढ़ रही थीं, उनके क़रीब ही बकरियां और भेड़िये इकटठे चर रहे थे। जब मैं पहुँचा तो उन्होंने अपनी नमाज़ को मुख़्तसर करके सलाम फेरा और सलाम फेरने के बाद कहने लगीं, अब्दुल वाहिद आज नहीं, आज तो चले जाओ, मुलक़ाता का वायदा कल को (क़ियामत में) है।

मैं ने उन से कहा, अल्लाह तआला तुम पर रहम फ़रमाये तुम्हें किस तरह मालूम हुआ कि मैं अब्दुल वाहिद हूँ, कहने लगीं तुम्हें मालूम नहीं कि रूहें (अज़ल में) सब एक लश्कर की तरह मुज्तमा थीं, जिनका वहां आपस में तआरुफ़ हो गया, उनका यहां भी ताअरुफ़ हो जाता है (यह एक हदीस पाक का मज़्मून है जो मशहूर हदीस है।) मैं ने उन से कहा कि मुझे नसीहत कर दीजिये कहने लगीं, बड़े ताज्जुब की बात है कि जो ख़ुद वाअिज़ हो, वह दूसरों से नसीहत की दर्ख़्वास्त करे (तुम तो ख़ुद ही बड़े वाअिज़ हो) इसके बाद उन्होंने कहा, मुझे बुज़ुर्गों से यह बात पहुँची है कि जिस बंदे को हक़ तआला शानुहू दुनिया की कोई नेमत (माल, दौलत वग़ैरह) अता फ़रमाये और वह शख़्स फिर भी उसी की तलब में लगा रहे तो हक़ तआला शानुहू उस शख़्स से अपने साथ तंहाई की मुहब्बत ज़ायल कर देते हैं, और अपने से क़ुर्ब की बजाए अपने से बुअ्द (दूरी) उस पर मुसल्लत कर देते हैं और अपने साथ उन्स (ताल्लुक़) के बजाए अपने से वहशत उस पर सवार कर देते हैं इसके बाद उन्होंने पांच शेअ्र पढ़े, जिनका तर्जुमा यह है कि :-

तर्जुमा:- "ऐ वाअिज़, तू लोगों को वअ्ज़ नसीहत और तंबीह के लिये खड़ा होता है, तू लोगों को गुनाह से रोकता है हालांकि तू खुद उन गुनाहों का बीमार है, उनमें मुब्तला है, अगर तू दूसरों को नसीहत से पहले अपनी इस्लाह कर लेता, अपने गुनाहों से तौबा कर लेता, तो तेरे कहने का उनके दिलों पर असर पड़ता, लेकिन जब तू ऐसी हालत में दूसरों को मना करता है कि तू खुद उनमें मुब्तला है तो तू अपने इस मना करने में खुद शक में है (और जिसको खुद किसी बात में तरद्दुद हो, वह दूसरे को ज़ोर से क्या कह सकता है)

मैं ने पूछा कि तुम्हारी बकरियां भेड़ियों के साथ चर रही हैं। भेड़िये उनको कुछ कहते नहीं? कहने लगीं कि जा अपना काम कर, मैं ने अपने सरदार से सुलह कर ली, उसने मेरी बकरियों और भेड़ियों में सुलह करा दी। *(रौज़)*

यह अजीब बात मैं ने अपने चचा जान मौलाना मुहम्मद इल्यास साहब रह॰ के यहां हमेशा देखी कि उनके मकान में कई कई बिल्लियां और मुर्ग़ियां तमाम दिन मकान में इकट्ठी फ़िरती रहतीं, न वे मुर्ग़ियां बिल्लियों से भागतीं, न वे बिल्लियां मुर्ग़ियों को कुछ कहतीं।

63. हज़रत उत्बा ग़ुलाम रह॰ कहते हैं कि मैं बसरा के जंगल में जा रहा था, मैं ने जंगली लोगों के चंद ख़ेमे देखे, जिनकी खेती वहां थी। उन ख़ेमों में से एक ख़ेमे में एक मजनूना लड़की थी, मैं ने उसको सलाम किया, उसने मेरे सलाम का जवाब न दिया (मुम्किन है कि उसने सलाम न सुना हो या उन्होंनें जवाब न सुना हो या किसी ऐसी हालत में हो कि उस वक़्त सलाम का जवाब साक़ित हो जाता है कि बहुत सी जगह सलाम का जवाब साक़ित हो जाता है) और चंद शेअ्र पढ़े, जिनका तर्जुमा यह है कि -:

तर्जुमा:- "वे ज़ाहिद और आबिद फ़लाह को पहुँच गये, जिन्होंने अपने मौला की रिज़ा के लिऐ अपने पेटों को भूखा रखा, उन्होंने रातों को अपनी आंखों को जगाया, उनकी सारी रात ऐसी हालत में गुज़रती है कि वे मुशाहदा करते रहते हैं। उनको हक़ तआला शानुहू की महब्बत ने ऐसा हैरत में डाला है कि दुनियादार उनको मजनूं समझते हैं हालांकि ज़माने के सबसे ज़्यादा अक़्लमंद लोग यही हज़रात हैं लेकिन इनको इनके अह्वाल ने बेचैन कर रखा है। उत्बा रह॰ कहते हैं कि मैं उस मजनूना के क़रीब गया और मैं ने पूछा कि यह खेती किसकी है? कहने लगी कि अगर सही सालिम रही तो हमारी है।

मैं उसके बाद दूसरे ख़ेमों की सैर करता रहा, इतने में बड़े ज़ोर की बारिश शुरू हो गयी और आसमान से ऐसा मूसलाधार पानी पड़ा गोया मश्कों का मुंह खुल गया। मैं ने सोचा कि उस मजनूना को देखूं, वह बारिश के मुताल्लिक़ क्या कहती है (इसमें तो सारी खेतियां बर्बाद हो गयीं) मैं ने जाकर देखा कि उसकी खेती बिल्कुल पानी में डूब गयी और वह खड़ी हुई कह रही है, क़सम है, उस पाक ज़ात की, जिसने अपनी ख़ालिस मुहब्बत का कुछ हिस्सा मेरे दिल में रख दिया, मेरा दिल तुझ से राज़ी रहने में बिल्कुल पुख़्ता है। फिर वह मेरी तरफ़ मुतवज्जह होकर कहने लगी, देखो जी, उसी ने तो यह खेती जमाई, उसी ने उगाई उसी ने इसको सीधा खड़ा किया, उसी ने इसमें बालें लगायीं, उसी ने इन बालों में ग़ल्ला पैदा किया, उसी ने बारिश बरसा कर इस की परवरिश की, उसी ने इसकी ज़ाया होने से हिफ़ाज़त की और जब इसके काटने का वक़्त बिल्कुल क़रीब आ गया तो उसी ने इसको ज़ाया कर दिया, फिर आसमान की तरफ़ मुंह करके कहा कि यह सारी मख़्लूक़ तेरे ही बंदे हैं और उन सब की रोज़ी तेरे ही ज़िम्मे है तू जो चाहे कर, तुझे इख़्तियार है।

मैं ने उस से कहा कि इस खेती के बर्बाद हो जाने पर तुझे किस तरह सब्र आ गया, कहने लगी कि उत्बा चुप रहो, मेरा मालिक बड़ा ग़नी है, बड़ा क़ाबिले तारीफ़ है, उसकी तरफ़ से हमेशा नई रोज़ी मिलती रही, तमाम तारीफ़ें उस पाक ज़ात के लिये हैं जो मेरे साथ मेरी ख़्वाहिश से बहुत ज़्यादा इनआम फ़रमाता रहा। उत्बा रह० कहते हैं कि मुझे जब भी उसकी हालत और उसकी बातें याद आती हैं, बे इख़्तियार रोना आ जाता है *(रौज़)*

64. हज़रत अबुर्रबीअ् रह० फ़रमाते हैं कि मैं ने एक गांव में एक नेक औरत की शोहरत सुनी, जिसका नाम फ़िज़्ज़ा था, मेरी आदत किसी औरत से मिलने की न थी, मगर उसके अह्वाल मैं ने ऐसे सुने कि मुझे उस के पास जाने की ख़्वाहिश पैदा हुई। मैं उस गांव में गया और उसकी तहक़ीक़ की तो मुझे लोगों ने बताया कि उसके यहां एक बकरी है, जिसके थनों से दूध और शहद दोनों निकलते हैं। मुझे यह सुनकर ताज्जुब हुआ, मैं ने एक नया प्याला ख़रीदा और उसके घर जाकर मैं ने कहा, कि तुम्हारी बकरी के मुताल्लिक़ मैं ने यह शोहरत सुनी है कि वह दूध और शहद देती है मैं भी उसकी बरकत देखना चाहता हूं। उसने बकरी मेरे हवाले कर दी, मैं ने उस का दूध निकाला तो वाक़ई उसमें दूधा और शहद निकला। हमने उसको पिया।

इसके बाद मैं ने पूछा कि यह बकरी कहां से तुम्हारे पास आयी, कहने लगी, इसका किस्सा यह है कि हम ग़रीब आदमी हैं, एक बकरी के सिवा हमारे पास कुछ न था, उसी पर हमारा गुज़र था, इत्तिफ़ाक़ से बक़रईद आ गयी। मेरे ख़ाविंद ने कहा कि हमारे पास कुछ और तो है नहीं, यह बकरी हमारे पास है, लाओ इसी की क़ुर्बानी कर लें। मैं ने कहा कि हमारे पास गुज़र के लिये इसके सिवा तो कोई चीज़ है नहीं ऐसी हालत में क़ुर्बानी का हुक्म तो है नहीं, फिर क्या ज़रूरी है कि हम क़ुर्बानी करें। ख़ाविंद ने यह बात मान ली और क़ुर्बानी मुल्तवी कर दी। इसके बाद इत्तिफ़ाक़ से उसी दिन हमारे पास एक मेहमान आ गया तो मैं ने ख़ाविंद से कहा कि मेहमान के इकराम का तो हुक्म है और कोई चीज़ तो है नहीं इस बकरी को ही ज़िब्ह कर लो। वह उस बकरी को ज़िब्ह करने लगा, मुझे यह ख़्याल हुआ कि मेरे छोटे छोटे बच्चे इस बकरी को ज़िब्ह होते देख कर रोने लगेंगे, इसलिये मैं ने कहा कि बाहर ले जाकर दीवार की आड़ में ज़िब्ह कर लो, बच्चे न देखें। वह बाहर ले गये और जब उस पर छुरी चलाई तो यह बकरी हमारी दीवार के ऊपर खड़ी थी और वहां से खुद उतर कर मकान के सहन में आ गयी। मुझे यह ख़्याल हुआ कि शायद वह बकरी ख़ाविंद के हाथ से छूट गयी। मैं उसको देखने बाहर गयी तो ख़ाविंद उस बकरी की खाल खींच रहे थे। मैं ने उनसे कहा कि बड़े ताज्जुब की बात है कि ऐसी ही बकरी घर में आ गयी। उसका किस्सा मैं ने सुनाया। ख़ाविंद कहने लगे कि क्या बईद है कि हक़ तआला शानुहू ने उसका बदला हमें अता फ़रमाया हो।

यह वह बकरी है जो दूध और शहद देती है, यह सब कुछ महज़ मेहमान के इकराम की वजह से है, फिर वह औरत कहने लगी कि ऐ मेरे बच्चों यह बकरी दिलों में चरती है। अगर तुम्हारे दिल नेक रहेंगे तो इस का दूध भी अच्छा रहेगा और अगर तुम्हारे दिलों में खोट आ गया तो इस का दूध भी ख़राब हो जायेगा। अपने दिलों को अच्छा रखो, हर चीज़ तुम्हारे लिये अच्छी बन जायेगी। *(रौज़)*

65. हज़रत बहलूल रह० फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा बसरा की सड़क पर जा रहा था, रास्ते में चंद लड़के अख़रोट और बादाम से खेल रहे थे और एक लड़का उनके क़रीब खड़ा रो रहा था, मुझे यह ख़्याल हुआ कि इस लड़के के पास बादाम और अख़रोट नहीं हैं, इनकी वजह से रो रहा है। मैं ने उसको कहा,

बेटा तुझे मैं अख़रोट, बादाम ख़रीद दूँगा। तू भी उनसे खेलना। उसने मेरी तरफ़ निगाह उठा कर देखा और कहा, अरे बेवकूफ़, क्या हम खेल के वास्ते पैदा हुए हैं। मैं ने पूछा फिर किस काम के वास्ते पैदा हुए हैं? कहने लगा कि इल्म हासिल करने के वास्ते और इबादत करने के वास्ते। मैं ने कहा अल्लाह जल्ल शानुहू तेरी उम्र में बरकत करे, तूने यह बात कहां से मालूम की? कहने लगा कि हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है :-

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا (مؤمنون ع٦)

"अ-फ़ हसिब्तुम् अन्नमा ख़लक़्नाकुम् अ-ब-सा॰"

(मुअमिनून, रूकूअ 6)

"क्या तुम्हारा यह गुमान है कि हमने तुमको यों ही बेकार पैदा किया और यह कि तुम हमारे पास नहीं लौटाये जाओगे।

मैं ने कहा कि बेटा तू तो बड़ा हकीम मालूम होता है, मुझे कुछ नसीहत और कर, उसने चार शेअ्र पढ़े जिनका तर्जुमा यह है -

"मैं देख रहा हूँ कि दुनिया हर वक़्त चल चलाव में है (आज यह गया, कल वह गया) हर वक़्त चलने के लिये दामन उठाये क़दम और पिण्डली पर (दौड़ने के लिये तैयार रहती है) पस न तो दुनिया किसी ज़िन्दा के लिये बाक़ी रहती है, न कोई ज़िन्दा दुनिया के लिये बाक़ी रहता है, ऐसा मालूम होता है जैसा कि मौत और हवादिस दो घोड़े हैं जो तेज़ी से आदमी की तरफ़ दौड़े चले आ रहे हैं, पस ओ बे वकूफ़, जो दुनिया के साथ धोखे में पड़ा हुआ है, ज़रा ग़ौर कर और दुनिया से अपने लिये कोई (आख़िरत में काम करने वाली) एतिमाद की चीज़ ले ले।

यह शेअ्र पढ़कर लड़के ने आसमान की तरफ़ मुंह किया और दोनों हाथ उठाये और आंसुओं की लड़ी उसके रूख़्सारों पर जारी थी और ये दो शेअ्र पढ़े :-

يامن اليه المبتهل　　يامن عليه المتكل

يامن اذا ماامل　　يرجوه لم يخط الامل

"या मन् इलै हिल् मुब्तहिलु

या मन् अलै हिल् मुत्तकिलु

या मन् इज़ा मा आमिलु
यर्जूहू लम् यख़ुतुल् अ-म-लु"

जिनका तर्जुमा यह है कि "ऐ वह पाक ज़ात कि उसी की तरफ़ आजिज़ी की जाती है और उसी पर एतिमाद किया जाता है। ऐ वह पाक ज़ात कि जब उससे कोई शख़्स उम्मीद बांध ले तो वह ना मुराद नहीं हो सकता, उसकी उम्मीद ज़रूर पूरी होती है।

यह शेअ्र पढ़ कर वह बेहोश होकर गिर गया। मैं ने जल्दी से उसका सर उठा कर अपनी गोद में रख लिया और अपनी आस्तीन से उसके मुंह पर जो मिट्टी वग़ैरह लग गयी थी, पोंछने लगा, जब उसको होश आया तो मैं ने कहा, बेटा अभी से तुम्हें इतना ख़ौफ़ क्यों हो गया, अभी तो तुम बहुत बच्चे हो, अभी तुम्हारे आमाल नामे में कोई गुनाह भी न लिखा जायेगा। कहने लगा, बहलूल हट जाओ मैं ने अपनी वालिदा को हमेशा देखा कि जब वह आग जलाना शुरू करती हैं तो पहले छोटी छोटी छपटियां ही चूल्हे में रखती हैं उसके बाद बड़ी लकड़ियां रखती हैं। मुझे डर है कि कहीं जहन्नम की आग में छोटी लकड़ियों की जगह मैं न रख दिया जाऊँ। मैं ने कहा, साहब ज़ादे तुम तो बड़े हकीम मालूम होते हो मुझे कोई मुख़्तसर सी नसीहत करो। उसने इस पर चौदह शेअ्र पढ़े जिनका तर्जुमा यह है:-

मैं ग़फ़लत में पड़ा रहा और मौत को हांकने वाला मेरे पीछे पीछे मौत को हांके चला आ रहा है, अगर मैं आज न गया तो कल ज़रूर चला जाऊँगा। मैं ने अपने बदन को अच्छे अच्छे और नर्म नर्म लिबास से आरास्ता किया, हालांकि मेरे बदन के लिये (क़ब्र में जाकर) गलने और सड़ने के सिवा चारा-ए-कार नहीं है, वह मंज़र गोया इस वक़्त मेरे सामने है जबकि मैं क़ब्र में बोसीदा पड़ा हुआ हूँगा। मेरे ऊपर मिट्टी का ढेर होगा और नीचे क़ब्र का गढ़ा होगा और मेरा हुस्न व जमाल सारा का सारा जाता रहेगा, और बिल्कुल मिट जायेगा, हत्ता कि मेरी हड्डियों पर न गोश्त रहेगा, न खाल रहेगी। मैं देख रहा हूँ कि उम्र तो ख़त्म होती जा रही है और आरज़ूएं हैं कि पूरी नहीं हो चुकतीं और बड़ा तवील सफ़र सामने है और तोशा ज़रा सा भी साथ नहीं है और मैं ने खुल्लम खुल्ला गुनाहों के साथ अपने निगहबान और मुहाफ़िज़ का मुक़ाबला किया और बड़ी बुरी हरकतें की हैं, जो अब वापस भी नहीं हो सकतीं (यानी जो गुनाह कर चुका हूँ, वह बे किया

नहीं हो सकता) और मैं ने लोगों से छुपाने के लिये पर्दे डाले कि मेरा ऐब किसी पर ज़ाहिर न हो, लेकिन मेरे जितने मख़फ़ी गुनाह हैं, वे कल को उस मालिक के सामने ज़ाहिर होंगे (उसकी पेशी में पेश होंगे) इसमें शक नहीं कि मुझे उसका ख़ौफ़ ज़रूर था, लेकिन मैं उसके ग़ायते हिल्म पर भरोसा करता रहा (जिसकी वजह से जुर्रत होती जा रही है) और इस पर एतिमाद करता रहा कि वह बड़ा ग़फ़ूर है, उसके सिवा कौन माफ़ी दे सकता है? बेशक तमाम तारीफ़ें उसी पाक ज़ात के लिये हैं, अगर मौत के और मरने के बाद गलने और सड़ने के सिवा कोई दूसरी आफ़त न भी होती और मेरे रब की तरफ़ से जन्नत का वायदा और दोज़ख़ की धमकी न भी होती तब भी मरने और सड़ने ही में इस बात पर काफ़ी तंबीह मौजूद थी कि लह्व व लअिब से एहतिराज़ किया जाता, लेकिन क्या करें कि हमारी अक़्ल ज़ायल हो गयी (किसी बात से इब्रत हासिल नहीं होती, बस अब इसके सिवा कोई चारा नहीं कि) काश गुनाहों का बख़्शने वाला मेरी मग़्फ़िरत कर दे। जब किसी ग़ुलाम से कोई लग़्ज़िश होती है तो आक़ा ही उसको माफ़ करता है। बेशक, मैं बद्तरीन बंदा हूँ, जिसने अपने मौला के अह्द में ख़ियानत की और नालायक़ ग़ुलाम ऐसे ही होते हैं। कि उनका कोई क़ौल क़रार मोअ्तबर नहीं होता। मेरे आक़ा जब तेरी आग मेरे बदन को जलायेगी तो मेरा क्या हाल बनेगा जब कि सख़्त से सख़्त पत्थर भी उस आग को बर्दाश्त नहीं कर सकते। मैं मौत के वक़्त भी तने तंहा जाऊँगा, क़ब्र में भी अकेला ही जाऊँगा क़ब्र से भी अकेला ही उठूँगा (किसी जगह भी कोई मेरा मुअ़ीन व मददगार न होगा) पस ऐ वह पाक ज़ात जो ख़ुद अकेली है, वह्द-हू ला शरी-क लहू है ऐसे शख़्स पर रहम कर जो बिल्कुल तने तंहा रह गया।

बहलूल कहते हैं कि उसके ये अश्‌आर सुनकर मुझ पर ऐसा असर हुआ कि मैं ग़श खाकर गिर गया, बड़ी देर में जब मुझे होश आया तो वह लड़का जा चुका था। मैं ने उन बच्चों से दर्याफ़्त किया, यह बच्चा कौन था? वे कहने लगे कि तू उसको नहीं जानता यह हज़रत इमाम हुसैन रज़ि॰ की औलाद में है, मैं ने कहा, मुझे ख़ुद हैरत हो रही थी कि यह फल किस दरख़्त का है. वाक़ई यह फल उसी दरख़्त का हो सकता था। हक़ ताआला शानुहू हमें उस ख़ानदान की बरकतों से मुन्तफ़ा फ़रमाये। आमीन! (रौज़)

६६. हज़रत शिब्ली रह॰ फ़रमाते हैं कि मुझे एक मर्तबा मेरे दिल ने कहा

कि तू बख़ील है, मगर मेरे नफ़्स ने कहा कि नहीं, बख़ील नहीं हूँ। मेरे दिल ने फ़िर कहा कि नहीं तू बख़ील है, मैं ने उसके जांचने के लिये यह इरादा कर लिया कि सबसे पहले मेरे पास जो कुछ आयेगा (ख़्वाह वह कितना ही हो) मैं सब का सब उस फ़क़ीर को दे दूँगा, जो मुझे सबसे पहले मिलेगा।

मेरी यह नीयत पूरी भी न होने पायी थी कि मुझे एक शख़्स ने पचास दीनार (अशर्फ़ियां) नज़्र किये, मैं ने वे ले लिये और अपनी नीयत के मुवाफ़िक़ किसी फ़क़ीर की तलाश में निकला। सबसे पहले मुझे एक नाबीना फ़क़ीर मिला, जो एक हज्जाम से हजामत बनवा रहा था, मैं ने वे सब के सब उस नाबीना को दे दिये। उसने कहा कि ये (हजातम की उजरत में) इस हज्जाम को दे दो। मैं ने कहा कि पचास अशर्फ़ियां है (इतनी अशर्फ़ियां भी कहीं हजामत की उजरत में दी जाती हैं) उस नाबीना ने ऊपर सर उठाकर कहा कि हमने कहा नहीं था कि तू बख़ील है।

मैं ने जल्दी से वे हज्जाम को दे दिये, उस हज्जाम ने कहा कि जब यह नाबीना हजामत बनवाने बैठा था तो मैं ने इसकी गुरबत को देख कर यह नीयत कर ली थी कि इसकी उजरत न लूँगा (मुझे उन दोनों की गुफ़्तगू सुनकर इस क़दर ग़ैरत आयी कि) मैं ने उन अशर्फ़ियों को दरिया में फेंक दिया कि ख़ुदा तेरा नास करे, तुझको जो भी ज़रा दिल लगाये, हक़ तआला शानुहू उसको इसी तरह ज़लील करते हैं। *(रौज़)*

ग़ैरत की शिद्दत में इस क़िस्म के अमर का पेश आ जाना मुस्तब्अद नहीं, अगर हज़रत सुलैमान अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम "फ़-तफ़ि-क़ मस्हम् बिस्सू-क़ि वल् अअ्ना-क़ि" (साद, रूकूअ 3) कर सकते हैं। और उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ की मौजूदगी में दूसरी सौत का प्याला फोड़ सकती हैं और उसका खाना फेंक सकती हैं और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल्आस रज़ि॰ अस्फ़र की रंगी हुई चादर को सिर्फ़ हुज़ूर सल्ल॰ के इस सवाल पर कि यह क्या पहन लिया, तनूर में जला सकते हैं और अंसारी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अपने से बेइल्तिफ़ाती देख कर बने बनाये क़ुब्बा को गिरा सकते हैं। तो हज़रत शिब्ली रह॰ के अशर्फ़ियां फेंक देने में कोई इशकाल नहीं।

67. हज़रत ज़ुन्नून मिस्री रह॰ (जो अकाबिरे मशहूर सूफ़िया में हैं)

फ़रमाते हैं कि मैं एक जंगल में जा रहा था, मुझे एक नौजवान नज़र पड़ा, जिसके चेहरे पर दाढ़ी की दो लकीरें थीं (यानी निकलनी ही शुरू हुई थी) मुझे देख कर उसके बदन में कपकपी आ गयी और चेहरा ज़र्द हो गया और मुझसे भागने लगा। मैं ने कहा, मैं तो तेरे ही जैसा इंसान हूँ (जिन्न तो नहीं हूँ फिर क्यों इतना डरता और भागता है) वह कहने लगा कि तुम (इंसानों ही) से तो भागता हूँ।

मैं उसके पीछे चला और मैं ने उसको क़सम दी कि ज़रा खड़ा हो जाये वह खड़ा हो गया। मैं ने पूछा कि तू इस जंगल बयाबान में बिल्कुल तंहा रहता है कोई दुसरा रफ़ाक़त के लिये नहीं है, तुझे ख़ौफ़ नहीं मालूम होता? कहने लगा नहीं, मेरे पास तो मेरा दिल लगाने वाला है (मैं ने समझा कि इसका कोई रफ़ीक़ कहीं गया होगा) मैं ने कहा, वह कहां है? कहने लगा कि वह हर वक़्त मेरे साथ है, वह मेरे दायें बायें आगे पीछे हर तरफ़ है। मैं ने पूछा कि कुछ खाने पीने का सामान भी तेरे पास नहीं है? वह कहने लगा कि वह भी मौजूद है। मैं ने कहा वह कहां है? कहने लगा जिसने मेरी मां के पेट में मुझे रोज़ी दी, उसी ने मेरा बड़ी उम्र में भी रोज़ी की ज़िम्मेदारी ले रखी है। मैं ने कहा कि खाने पीने के लिये कुछ तो आख़िर चाहिए, उससे रात को तहज्जुद में खड़े होने की क़ुव्वत पैदा होती है, दिन के रोज़े रखने में मदद मिलती है और (बदन की क़ुव्वत से) मौला की ख़िदमत (इबादत) भी अच्छी तरह हो सकती है और मैं ने खाने पीने की ज़रूरत पर बहुत ज़ोर दिया तो वह चंद शेअ्र पढ़ कर भाग गया जिनका तर्जुमा यह है :-

तर्जुमाः- अल्लाह के वली के लिये किसी घर की ज़रूरत नहीं है, और वह हरगिज़ इसको गवारा नहीं करता कि उसकी कोई जायदाद हो, वह जब जंगल से पहाड़ की तरफ़ चल देता है तो वह जंगल उसकी जुदाई में रोता है, जिसमें वह पहले से था। वह रात के तहज्जुद पर और दिन के रोज़े पर बहुत ज़्यादा सब्र करने वाला हुआ करता है, वह अपने नफ़्स को समझा दिया करता है कि जितनी मेहनत और मशक़्क़त हो सके कर ले, इसलिये कि रहमान की ख़िदमत में कोई आड़ नहीं होती (वह बड़ी फ़ख़्र की चीज़ होती है) वह जब अपने रब से बातें किया करता है तो उसकी आंख से आंसू बहा करते हैं। और वह यह कहा करता है कि या अल्लाह, मेरा दिल उड़ा जा रहा है (इसकी तू ख़बर ले) वह यों कहा करता है कि या अल्लाह मुझे न तो (जन्नत में) याक़ूत का घर चाहिए, जिस में हूरें रहती हों और न मुझे जन्नते अदन की ख़्वाहिश है

और न जन्नत के फलों की आरज़ू है, मेरी सारी तमन्ना सिर्फ़ तेरा दीदार है, इसका मुझ पर एहसान कर दे, यही बड़ी फ़ख़्र की चीज़ है। (रौज़)

68. हज़रत इब्राहीम ख़वास रह० कहते हैं कि मैं एक मर्तबा जंगल में जा रहा था, रास्ते में एक नसरानी राहिब मुझे मिला, जिसकी कमर में ज़ुन्नार (पटका या धागा वग़ैरह जो कुफ़्र की अलामत के तौर पर काफ़िर बांधते हैं) बंध रहा था, उसने मेरे साथ रहने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की (काफ़िर फ़क़ीर अक्सर मुसलमान फ़ुक़रा की ख़िदमत में रहते चले आये हैं।) मैं ने साथ ले लिया, सात दिन तक हम चलते रहे (न खाना, न पीना) सातवें दिन उस नसरानी ने कहा, ऐ मुहम्मदी ! कुछ अपनी फ़ुतूहात दिखाओ (कई दिन हो गये, कुछ खाया नहीं) मैं ने अल्लाह तआला शानुहू से दुआ की कि या अल्लाह तआला, इस काफ़िर के सामने मुझे ज़लील न फ़रमा। मैं ने देखा कि फ़ौरन एक ख़्वान मेरे सामने रखा गया, जिस में रोटियां, भुना हुआ गोश्त, और तरो ताज़ा खजूरें और पानी का लोटा रखा हुआ था, हम दोनों ने खाया, पानी पिया और चल दिये।

सात दिन तक चलते रहे। सातवें दिन मैं ने (इस ख़्याल से कि वह नसरानी फिर न कह दे) जल्दी करके उस नसरानी से कहा कि इस मर्तबा तुम कुछ करके दिखाओ, अब के तुम्हारा नम्बर है। वह अपनी लकड़ी पर सहारा लगा कर खड़ा हो गया और दुआ करने लगा, जब ही दो ख़्वान जिन में हर चीज़ उस से दो गुनी थी, जो मेरे ख़्वान पर थी, सामने आ गए। मुझे बड़ी ग़ैरत आयी, मेरा चेहरा फ़क़ हो गया और मैं हैरत में रह गया और मैं ने रंज की वजह से खाने से इंकार कर दिया। उस नसरानी ने मुझ पर खाने का इसरार किया, मगर मैं उज़्र ही करता रहा। उसने कहा कि तुम खाओ मैं तुमको दो बशारतें सुनाऊँगा, जिनमें से पहली यह है कि:-

أَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ

"अश्हदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्-न मुहम्म दर्रसू लुल्लाह"-

(सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मैं मुसलमान हो गया हूँ और यह कह कर ज़ुन्नार तोड़ कर फेंक दिया।

और दूसरी बशारत यह है कि मैं ने जो खाने के लिये दुआ की थी, वह यही कह कर की थी कि या अल्लाह, इस मुहम्मदी का अगर तेरे यहां कोई

मर्तबा है तो इसके तुफ़ैल तू हमें खाना खिला दे। इस पर यह खाना मिला है और इसी वजह से मैं मुसलमान हुआ।

इसके बाद हम दोनों ने खाना खाया, फिर आगे चल दिये। आख़िर मक्का मुकर्रमा पहुँचे, हज किया और वह नौ मुस्लिम मक्का ही में ठहर गया, वहीं उसका इंतिक़ाल हुआ। "ग़-फ़र ल्लाहु लहू" (रौज़)

काफ़िरों के इस तरह मुसलमान होने के बहुत से वाक़िआत तारीख़ की कुतुब में मौजूद हैं और इस वाक़िए से यह भी मालूम हुआ कि हक़ तआला शानुहू बसा औक़ात दूसरों के तुफ़ैल किसी को रोज़ी देते हैं, जिनको वह मिलती है, वे अपनी बेवक़ूफ़ी से यह समझते हैं कि यह हमारा कारनामा है, हमारी कोशिश का नतीजा है। अहादीस में कसरत से यह मज़्मून आया है कि तुमको तुम्हारे ज़ोअफ़ा (कमज़ोरों, बूढ़ों) के तुफ़ैल (अक्सर) रोज़ी दी जाती है।

नीज़ इस वाक़िए से यह भी मालूम हुआ कि काफ़िरों पर भी बसा औक़ात मुसलमानों की वजह से फ़ुतूहात होती हैं जिस को ज़ाहिर में उन की मदद समझा जाता है लेकिन वह हक़ीक़त में दूसरों का तुफ़ैल होता है।

69. एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मैं ने एक ग़ुलाम ख़रीदा, जब मैं उसको लाया तो उससे पूछा कि तुम्हारा क्या नाम है? कहने लगा कि जो नाम आक़ा रखे, मैं ने पूछा कि तुम क्या काम करोगे? कहने लगा कि जो आप हुक्म देंगे। मैं ने पूछा कि तुम क्या खाना चाहते हो (ताकि तुम्हारी ख़ातिर मैं उसका फ़िक्र करूँ) कहने लगा मेरे आक़ा जो आप खिलायेंगे? मैं ने पूछा कि तुम्हारा भी किसी चीज़ के खाने का दिल चाहता है? कहने लगा, आक़ा के सामने ग़ुलाम की ख़्वाहिश क्या चीज़ है? जो आक़ा की मरज़ी है, वही ग़ुलाम की ख़्वाहिश है। उसका यह जवाब सुनकर मुझे रोना आ गया। और मुझे यह ख़्याल आया कि मेरा भी तो मेरे मौला (जल्ल शानुहू) के साथ यही मामला होना चाहिए। मैं ने उस से कहा कि तुम ने तो मुझे अपने आक़ा(तआला ज़िक्रुहू) के साथ अदब करना सिखा दिया उसने इस पर दो शेअ्र पढ़े जिनका तर्जुमा यह है कि -

अगर तेरे किसी बंदे की ख़िदमत मुझ से पूरी पूरी अदा हो जाये तो इससे बढ़कर मेरे लिये और क्या नेमत हो सकती है? पस तू महज़ अपने फ़ज़्ल से मेरी कोताही और ग़फ़लत को माफ़ कर, इसलिए कि मैं तुझे बड़ा मुहसिन और बड़ा रहीम समझता हूँ। (रौज़)

70. हज़रत मालिक बिन दीनार रह० मशहूर बुज़ुर्गों में हैं, इस रिसाले में उनके कई किस्से ज़िक्र हो चुके हैं। वह इब्तिदा में कुछ अच्छे हाल में न थे, एक शख़्स ने उन से उनकी तौबा का किस्सा पूछा कि क्या बात पेश आयी जिस पर आपने अपनी साबिक़ा ज़िन्दगी से तौबा की? वह कहने लगे कि मैं एक सिपाही था और शराब का बहुत शौक़ीन था और बहुत आदी था (हर वक़्त शराब ही में मुन्हमिक रहता था) मैं ने एक बांदी ख़रीदी जो बहुत ख़ूबसूरत थी और मुझे उस से बहुत ताल्लुक़ था उससे मेरे एक लड़की पैदा हुई। मुझे उस लड़की से भी मुहब्बत थी और वह लड़की भी मुझ से बहुत मानूस थी। यहाँ तक कि वह पांव चलने लगी तो उस वक़्त मुझे उस से और भी ज़्यादा मुहब्बत हो गयी थी कि हर वक़्त वह मेरे पास ही रहती। लेकिन उसकी आदत यह थी कि जब मैं शराब का गिलास पीने के लिये लेता, वह मेरे हाथ में से छीन कर मेरे कपड़ों पर फेंक देती (मुहब्बत की ज़्यादती की वजह से उसको डांटने को दिल नहीं मानता था) जब वह दो बरस की हो गयी तो उसका इंतिक़ाल हो गया। इस सदमे ने मेरे दिल में ज़ख़्म कर दिया।

एक दिन 15 शअ्बान की रात थी, मैं शराब में मस्त था। इशा की नमाज़ भी न पढ़ी थी, इसी हाल में सो गया। मैं ने ख़्वाब में देखा कि हश्र क़ायम हो गया, लोग क़ब्रों से निकल रहे हैं, मैं भी उन लोगों में हूँ जो मैदाने हश्र की तरफ़ जा रहे हैं। मैं ने अपने पीछे कुछ आहट सी सुनी, मैं ने जो मुड़ कर देखा तो एक बहुत बड़ा काला अज़्दहा मेरे पीछे दौड़ा आ रहा है। उसकी कैरी आंखें हैं, मुंह खुला हुआ है और बेतहाशा मेरी तरफ़ को दौड़ा हुआ आ रहा है। मैं उस के डर से घबरा कर ख़ौफ़ ज़दा ज़ोर से भाग रहा हूँ और वह मेरे पीछे भागा चला आ रहा है। सामने मुझे एक बूढ़े मियां निहायत नफ़ीस लिबास, निहायत महकती हुई ख़ुश्बू उनमें से आ रही है मिले, मैं ने उनको सलाम किया, उन्होंने जवाब दिया। मैं ने उनसे कहा कि ख़ुदा के वास्ते मेरी मदद कीजिये, वह कहने लगे कि मैं एक ज़ओफ़ आदमी हूँ, यह बहुत क़वी है यह मेरे क़ाबू का नहीं है लेकिन तू भाग जा, शायद आगे कोई चीज़ ऐसी मिल जाये जो इस से निजात का सबब बन जाये।

मैं बेतहाशा भागा जा रहा था, मुझे एक टीला नज़र पड़ा, मैं उस पर चढ़ गया, मगर वहां चढ़ते ही मुझे जहन्नम की दहकती हुई आग उस टीले के परे नज़र पड़ी। उसकी दहशत नाक सूरत और उसके मंज़र नज़र आये। इन सब

हालात के देखने के बावजूद उस सांप की इतनी दहशत मुझ पर सवार थी और ऐसी तरह भागा जा रहा था कि मैं क़रीब ही था कि जहन्नम के गढ़े में जा पड़ूं। इतने में एक ज़ोर की आवाज़ सुनाई दी, कोई कह रहा है पीछे हट जा तू इन (जहन्नमी) लोगों में से नहीं है। मैं वहां से फिर पीछे को दौड़ा वह सांप भी मेरे पीछे को लौट आया, मुझे फिर वह बड़े मियां सफ़ेद लिबास में नज़र पड़े। मैं ने उनसे फिर कहा कि मैं ने पहले भी दर्ख़्वास्त की थी कि इस अज़दहे से किसी तरह बचायें, आपने क़ुबूल न किया।

वह बड़े मियां रोने लगे और कहने लगे मैं बहुत ज़ईफ़ हूं, यह बहुत क़वी है, मैं इसका मुक़ाबला नहीं कर सकता, अलबत्ता सामने यह एक दूसरी पहाड़ी है, इस पर चढ़ जा, इसमें मुसलमानों की कुछ अमानतें रखीं है मुम्किन है तेरी भी कोई ऐसी चीज़ अमानत रखी हो जिसकी मदद से इस अज़दह से बच सके।

मैं भागा हुआ उस पर गया और वह अज़दहा मेरे पीछे पीछे चला आ रहा है,। वहां मैं ने देखा, एक गोल पहाड़ है, उसमें बहुत से ताक़ (खिड़कियां) खुले हुए हैं, उन पर पर्दे पड़े हुए हैं। हर खिड़की के दो किवाड़ हैं सोने के, जिन पर याक़ूत जड़े हुए हैं और मोतियों से लद रहे हैं और हर किवाड़ पर एक रेशमी पर्दा पड़ा हुआ है। मैं जब उस पर चढ़ने लगा तो फ़रिश्तों ने आवाज़ दी कि किवाड़ खोल दो और पर्दे उठा दो और बाहर निकल आओ, शायद इस परेशान हाल की कोई अमानत तुम में ऐसी हो जो इस वक़्त इसको इस मुसीबत से निजात दे।

उसकी आवाज़ के साथ ही एकदम किवाड़ खुल गये और पर्दे उठ गये और उस में चांद जैसी सूरत के बहुत से बच्चे निकले मगर मैं इंतहाई परेशान था कि वह सांप मेरे बिल्कुल ही पास आ गया था। इतने में बच्चे चिल्लाने लगे, अरे तुम सब जल्दी निकल आओ, वह सांप तो इसके पास ही आ गया, इस पर फ़ौजें की फ़ौजें बच्चों की निकल आयीं, उनमें दफ़अतन मेरी निगाह अपनी उस दो साला बच्ची पर पड़ी जो मर गयी थी। वह मुझे देखते ही रोने लगी और कहने लगी, खुदा की क़सम, यह तो मेरे अब्बा हैं और यह कहते ही तीर की तरह कूद कर एक नूर के पलड़े पर चढ़ गयी और अपने बाएं हाथ को मेरे दाहिने हाथ की तरफ़ बाढ़ाया, मैं जल्दी से उस से लिपट गया और उस ने अपने दाहिने हाथ को उस सांप की तरफ़ बढ़ाया। वह फ़ौरन पीछे को भागने लगा। फिर उसने मुझे बिठाया और खुद वह मेरी गोद में बैठ गयी। और अपने दाहिने हाथ को मेरी दाढ़ी

पर फेरने लगी और कहने लगी, मेरे अब्बा जान, "अलम यअ्नि लिल्ल ज़ी-न आमनू", अल आयत (सूरः हदीद, रूकूअ 2) क्या ईमान वालों (में से जो लोग गुनाहों में मुब्तला रहते हैं उन) के लिये इस बात का वक़्त अभी तक नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह के ज़िक्र के वास्ते और उस हक़ बात के वास्ते जो उन पर नाज़िल हुई है, झुक जायें।

उस की यह बात सुन कर मैं रोने लगा और मैं ने पूछा, क्या बेटी तुम सब क़ुरआन शरीफ़ को जानती हो? वह कहने लगी कि हम सब क़ुरआन शरीफ़ को तुम सबसे ज़्यादा जानते हैं, मैं ने पूछा बेटी यह सांप क्या बला थी जो मेरे पीछे लग गयी थी? उसने कहा कि यह आपके बुरे आमाल थे, आपने उसको अपने गुनाहों से इतना क़वी कर दिया था कि वह आपको अब जहन्नम में खींच कर डालने की फ़िक्र में था। मैं ने पूछा कि वह सफ़ेद पोश ज़ईफ़ बुज़ुर्ग कौन थे? कहने लगी वह आपके नेक अमल थे, जिन को आप ने इतना ज़ईफ़ (कमज़ोर) कर दिया कि वह इस सांप को आप से दफ़ा न कर सके (अलबत्ता इतनी मदद भी कर दी कि बचने का रास्ता बात दिया) मैं ने पूछा कि बेटी तुम इस पहाड़ में क्या करती हो? कहने लगी कि हम सब मुसलमानों के बच्चे हैं, क़ियामत तक हम यहां रहेंगे, आप के आने के मुन्तज़िर हैं, जब आप सब आयेंगें तो हम सब सिफ़ारिश करेंगे। इसके बाद मेरी आंख खुल गयी तो उस सांप की दहशत मुझ पर सवार थी, मैं ने उठते ही अल्लाह जल्ल शानुहू के सामने तौबा की और अपने बुरे अफ़्आल को छोड़ दिया। *(रौज़)*

यह रिसाला अंदाज़े से बहुत ज़्यादा बढ़ गया, शुरू में तो मुख़्तसर ही लिखने का ख़्याल था मगर बे इरादा तवील होता चला गया और अब इस दर्जे तक पहुँच गया कि इसके पढ़ने की उम्मीद भी कम हो चली है कि दीनी रिसालों के पढ़ने के लिये भी हम लोगों के पास वक़्त नहीं है, इस लिए दफ़अतन ख़त्म कर दिया। हक़ तआला शानुहू अपने लुत्फ़ व करम से इस नापाक को भी, जो हर वक़्त मआसी और दुनिया ही में ग़र्क़ रहता है, अपनी तरफ़ रूजूअ् की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये और इस नापाक दुनिया से नफ़रत का ज़ायक़ा नसीब फ़रमा दे।

इस रिसाले की इब्तिदा शव्वाल 1366 हि॰ में हुई थी मगर दर्मियान में ऐसे अवारिज़ पेश आते रहे कि इख़्तिताम में देर ही लगती रही, अब भी इस में

बहुत सी चीज़ों के इज़ाफ़े का ख़्याल था, मगर इसके तवील हो जाने की वजह से आज 22 सफ़र, 1368 हि॰ शबे जुमा को ख़त्म ही कर दिया।

وَاٰخِرُ دَعْوَانَآ اَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَاَتْبَاعِهٖ اَجْمَعِيْنَ بِرَحْمَتِكَ يَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ

"व आख़िरू द्अ़वाना अनिल् हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन वस्सलातु वस्सलामु अला सैय्यिदिल् मुर्स-लीन् व अला आलि-ही व असहाबिही व अत्बा अिही अज्मअीन्-बिरह्मति-क या अर्ह-मर्रा हिमीन्॰"

मुहम्मद ज़करिया उफ़ि-य अन्हु कांधलवी

मुक़ीम, मदरसा मज़ाहिरे उलूम, सहारनपुर

फ़ज़ाइले हज
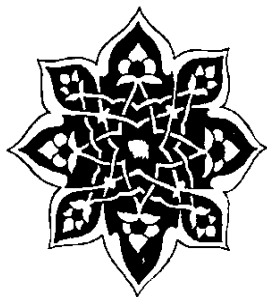
शैखुल हदीस हज़रत
मौलाना मुहम्मद ज़करिया (रह०)

www.idaraimpex.com

फज़ाइले हज

Fazail-e-Haj Hindi

लेखक: शैखुल हदीस मौलवी मुहम्मद ज़करिया (रह०)

प्रकाशन : 2015

ISBN 81-7101-028-8

TP-366-15

Published by Mohammad Yunus for

IDARA IMPEX

D-80, Abul Fazal Enclave-I, Jamia Nagar

New Delhi-110 025 (India)

Tel.: +91-11-2695 6832 & 085888 33786

Fax: +91-11-6617 3545 Email: **sales@idara.in**

Online Store: **www.idarastore.com**

Retail Shop: **IDARA IMPEX**

Shop 6, Nizamia Complex, Gali Gadrian, Near Karim's Hotel

Hazrat Nizamuddin, New Delhi-110013 Tel.: 085888 44786

विषय सूची

फ़ज़ाइले हज

क्या?	कहां?

तम्हीद

पहली फ़स्ल हज की तर्ग़ीब में

क्या?	कहां?

दूसरी फ़स्ल हज न करने के वअ़ीद में

तीसरी फ़स्ल इस सफ़र में मशक़्क़त का तहम्मुल

चौथी फ़स्ल हज की हक़ीक़त में

पांचवीं फ़स्ल हज के आदाब में

छठी फ़स्ल मक्का मुकर्रमा और काबा के फ़ज़ाइल

क्या?	कहां?

सातवीं फ़स्ल उमरः के फ़ज़ाइल

आठवीं फ़स्ल ज़ियारते मदीना

नवीं फ़स्ल आदाबे ज़ियारत में

दसवीं फ़स्ल मदीना के फ़ज़ाइल में

फ़ज़ाइले हज

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ

حَامِدًا وَّمُصَلِّيًا وَّمُسَلِّمًا

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नह्म-दूहू व नुसल्ली अला रसूलि हिल करीम॰

हामिदंव्-व मुसल्लियंव्-व मुसल्लिमा॰

अम्मा बअ्द:- इस सियहकार के क़लम से तब्लीग़ी सिलसिले में पहले भी चंद रिसाले शाए हो चुके हैं और अल्लाह जल्ल शानुहू के फ़ज़्ल से उनके दीनी मुनाफ़े के मुताल्लिक़ अकाबिर और अह्बाब की तरफ़ से तह्रीरी और ज़बानी पयामात भी ख़िलाफ़े तवक़्क़ोअ् इतनी कसरत से पहुँचे, जो मूजिबे ताज्जुब हैं। अपनी ना अह्लियत की वजह से न उनसे इस क़दर नफ़ा की तवक़्क़ोअ् (उम्मीद) थी, न अपनी बद आमालियों और कम मायगी की वजह से वे इस क़ाबिल थे कि उनसे इतना नफ़ा मख़्लूक़ को पहुँचे, क्योंकि जो शख़्स ख़ुद आमिल न हो, उसकी तहरीर व तक़रीर से भी नफ़ा कम पहुँचता है।

मैं अब तक भी इन मनाफ़े को अपने चचा जान हज़रत मौलाना मौलवी मुहम्मद इलयास साहिब रह्मतुल्लाहि अलैहि (जो अपनी तब्लीग़ी मसाओ (कोशिशों) में, न सिर्फ़ हिन्दुस्तान के हर गोशे में, बल्कि बैरूने हिन्द में भी बहुत मशहूर हैं) की तवज्जोह का असर समझता रहा और समझता हूँ। इसी वजह से उन के विसाल के बाद से जिसको चार साल से ज़्यादा अर्सा (समय) गुज़र गया, यह सिलसिला बन्द कर दिया था, हालांकि हज़रत मौसूफ़ रह॰ ने अपनी हयात के आख़िरी अय्याम में दो रिसालों की ब-इसरार फ़रमाईश की थी -

अव्वलन तिजारत और कमाई के फ़ज़ाइल में एक रिसाले का हुक्म फ़रमाया था, जिसका फ़ौरी तौर पर एक इज्माली नक़्शा भी उसी बीमारी की शिद्दत में लिख कर पेश कर दिया था, मगर मर्ज़ की शिद्दत की वजह से उसको मुलाहज़ा फ़रमाने की नौबत न आयी। दूसरे इंफ़ाक़ फ़ी सबीलिल्लाहि यानी अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने के मुताल्लिक़ जिसका तक़ाज़ा अख़ीर ज़माना-ए-हयात में उन पर शिद्दत से था और इस मज़्मून का आख़िरी अय्याम में बहुत ज़्यादा एहतिमाम था, इसके मुताल्लिक़ एक रिसाला फ़ज़ाइल में लिखने का बार बार हुक्म फ़रमाया, हत्ताकि एक बार नमाज़ खड़ी हो रही थी, दूसरा शख़्स इमाम था, तक्बीर हो चुकी थी, सफ़ से आगे को मुंह निकाल कर फ़रमाया कि देखना उस रिसाले को भूल न जाना। मगर इसके बावजूद अब तक कोई से रिसाले के लिखने की नौबत नहीं आयी।[1] और जब भी इन हालात से वाक़िफ़ अस्बाब की तरफ़ से उनके लिखने का तक़ाज़ा हुआ। अपनी ना अहलियत का तसव्वुर ग़ालिब होकर सद्दे राह (रास्ते की रूकावट) बनता रहा।

कई मर्तबा इन दोनों रिसालों के मुताल्लिक़ चचा जान रह० का इसरार याद आकर ख़्याल पैदा हुआ, फिर अपनी हालत और दुनिया की रफ़्तार ने उस ख़्याल को दबा दिया। मेरे चचाज़ाद भाई अज़ीज़ी अलहाफ़िज़ अल हाज्ज मौलवी मुहम्मद यूसुफ़ सल्लमहू[2] जो "अल्-व-लदु सिर्रुन् लिअबी-ह्"[3] के ज़ाब्ते के मुवाफ़िक़ इस ईमानी तहरीक की दावत में अपने वालिद साहब के क़दम ब क़दम और इस जज़्बे में उनके सही और हक़ीक़ी वारिस हैं उन पर दो साल से हिजाज़ में इस तहरीक को फ़रोग़ देने का जज़्बा है, ख़ुद चचा जान पर भी इसका तक़ाज़ा था। इसी जज़्बे के मातहत वह दो मर्तबा सिर्फ़ इसी मक़्सद के लिये हिजाज़ तशरीफ़ ले जा चुके थे, जिस को हज़रत मौलाना अल हाज्ज अबुल हसन अली मियां साहिब ने मुख़्तसरन उन की सवानेह में तहरीर फ़रमाया है, और हक़ीक़त भी यही है कि अरब ही वह बरगुज़ीदा जमाअत है, जिस ने इब्तिदा में तमाम दुनिया में इस्लाम को फैलाया। वे हज़रात अगर अपने अस्लाफ़ के नक़्शे क़दम पर चलें तो

1. दूसरा रिसाला "फ़ज़ाइले सदक़ात" के नाम से दो हिस्सों में छप चुका है।
2. मौलाना मौसूफ़ ने 29, ज़ीक़ादा सन् 1384 हि० को लाहौर में विसाल फ़रमाया। "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन"।
3. बेटा अपने बाप का राज़दार होता है।

यक़ीनन अब भी इन्शाअल्लाहु तआला दुनिया में इस्लाम उसी तरह चमक सकता है जिस तरह इब्तिदा-ए-ज़माने में चमका था।

इसके अलावा हाजियों की जमाअत, जो हर साल हज़ारों की तायदाद में हज को जाती है, वह हज के फ़ज़ाइल और समरात की बरकात से ना-वाक़फ़ियत और आदाबे हज के ना-मालूम होने की वजह से जिस दीनी जज़्बे और जिन बरकात के साथ उसको वापस आना चाहिए, उस से अक्सर ख़ाली हाथ वापस आती है इन वुजूहों से अज़ीज़े मौसूफ़ का दो साल से इसरार था कि हज व ज़ियारत के फ़ज़ाइल में भी चंद अहादीस का तर्जुमा उम्मत के सामने पेश करूं ताकि हज को जाने वाले हज़रात उन अहादीस की बरकत से उसी ज़ौक़ व शौक़ के साथ जायें जो उनकी शान के मुनासिब हो और हज से वापसी भी उन्हीं दीनी जज़्बात के साथ हो, जो इस मुबारक और निहायत अहम अमल के मुनासिब हो, नीज़ ज़ौक़ व शौक़ के साथ जाने वाले हुज्जाज की कसरत हो, जो ख़ुद भी दीन का जज़्बा अपने अंदर पैदा करें और वहां के क़ियाम में अहले अरब से भी उनके असली और जद्दी कामों में इश्तिग़ाल की और इन्हिमाक की इस्तिद्आ और दर्ख़्वास्त करें।

अज़ीज़े मौसूफ़ दो साल से इसकी ज़रूरत का इज़्हार और तक्मील पर इसरार कर रहे थे, मगर इधर से वायदा से आगे बढ़ने की नौबत न आयी। लेकिन हक़ सुब्हानहू व तक़द्दुस जब किसी काम का इरादा फ़रमाते हैं तो उसके लिये अस्बाब भी ग़ैब से पैदा हो जाते हैं। चचा जान के विसाल के बाद से अब तक हर साल रमज़ानुल मुबारक का महीना इस नाकारा को निज़ामुद्दीन गुज़ारने की नौबत आती रही और अपने मशाग़िल के हुजूम की वजह से 29 शअ्बान को आकर 2 शव्वाल को हमेशा वापसी हो जाती थी। इस साल बाज़ मजबूरियों की वजह से ईद के बाद भी यहां क़ियाम करना पड़ा, तो अज़ीज़े मौसूफ़ को इसरार का ज़्यादा मौक़ा मिल गया। इधर ईद की रात से उश्शाक़ की दारे महबूब पर हाज़िरी का ज़माना शुरू हो जाने से उस दियार की याद ने भी तबीअत पर असर किया, जो हर साल शव्वाल से वस्ते (दर्मियाने) ज़िलहिज्जा तक अक्सर आता रहता है, और ज्यों ज्यों हज का ज़माना क़रीब आता है यह तसव्वुर कि ख़ुश किस्मत आशिक़ इस वक़्त क्या कर रहे होंगे, अपनी तरफ़ बे इख़्तियार मुतवज्जह करता रहता है, इसलिये मुतवक्किलन अलल्लाह (अल्लाह पर भरोसा करते हुए) आज 3 शव्वाल सन् 1366 हि॰ चहार शंबा (बुध) को यह रिसाला शुरू करता

हूँ, और दस फ़स्लों और एक ख़ात्मे में मुख़्तसर तौर पर चंद अहादीस का तर्जुमा और कुछ मुतफ़र्रिक़ मज़ामीन पेश करता हूँ।

1. फ़स्ले अव्वल, तर्ग़ीबे हज में,

2. दोम, हज न करने की वईद में,

3. सोम, इस सफ़र में मशक़्क़तों के तहम्मुल में,

4. चहारूम, हज की हक़ीक़त में,

5. पंजुम, हज के आदाब में,

6. शशुम मक्का मुकर्रमा के आदाब व फ़ज़ाइल में,

7. हफ़्तुम उमरा के बयान में,

8. हश्तुम रौज़ा-ए-मुतह्हरा की ज़ियारत और मस्जिदे नबवी सल्ल॰ की हाज़िरी में,

9. नहुम, ज़ियारत के आदाब में,

10. दहुम, मदीना तय्यबा के आदाब व फ़ज़ाइल में।

ख़ात्मे में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हज का मुफ़स्सल वाक़िआ है और बाज़ (कुछ) दूसरे जां-निसारों के हज के मुख़्तसर क़िस्से हैं।

पहली फ़स्ल

हज की तर्ग़ीब में

हज के फ़ज़ाइल और उसके अहकाम में क़ुरआन पाक की बहुत सी आयात नाज़िल हुई हैं और अहादीस तो ला तायदाद वारिद हुई हैं, जिन में से नमूने के तौर पर थोड़ी सी इस रिसाले में ज़िक्र की जायेंगी।

मैं अपने हर रिसाले में इख़्तिसार की बहुत कोशिश करता हूँ कि दोनों चीज़ों के लिये न पढ़ने वालों के पास वक़्त ज़्यादा है, न रिसाले के बड़े हो जाने की वजह से क़ीमत में इज़ाफ़ा हो जाने के बाद ख़रीदने वालों के पास पैसा ज़ायद

है। हां सिनेमा देखने के लिये, ब्याह शादियों में ख़र्च करने के लिये ग़रीब से ग़रीब के पास भी पैसे की कमी नहीं, यह अल्लाह की शान है इसलिये अव्वल मुख़्तसरन चंद आयात ज़िक्र की जाती हैं, इसके बाद चंद (कुछ) अहादीस ज़िक्र की जायेंगी।

आयात

(١) وَاَذِّنْ فِی النَّاسِ بِالْحَجِّ يَاْتُوْكَ رِجَالًا وَّعَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ يَّاْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ ۝ لِيَشْهَدُوْا مَنَافِعَ لَهُمْ (حج ع ٤)

1. लोगों में हज (के फ़र्ज़ होने) का ऐलान कर दो, (इस ऐलान से) लोग तुम्हारे पास (यानी तुम्हारी इस इमारत के पास हज के लिये) चले आयेंगे, पांव पर चल कर भी और (ऐसी ऊँटनियों पर सवार होकर भी जो दूर दराज़ रास्तों से चल कर आयी हों (और सफ़र की वजह से) दुबली हो गयी हों ताकि ये आने वाले अपने मनाफ़े हासिल करें।

(हज, रूकूअ 4)

फ़ायदा - बैतुल्लाह शरीफ़ की सब से पहली बिना में इख़्तिलाफ़ है कि हज़रत आदम अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने बनाया या उस से पहले फ़रिश्तों ने बनाया था, हत्ता कि बाज़ ने कहा है कि ज़मीन की सबसे पहली इब्तिदा इसी जगह से हुई कि पानी पर एक बुलबुले की शक्ल थी, जिस से फिर बक़ीया ज़मीन का हिस्सा फैलाया गया, लेकिन हज़रत नूह अलैहि॰ के ज़माने में जब तूफ़ान आया, तो यह मकान उठा लिया गया था उस के बाद हज़रत इब्राहीम अलैहि॰ ने हज़रत इस्माईल अलैहि॰ की मदद से इस की तामीर की, जिसका ज़िक्र पहले पारे में

وَاِذْ يَرْفَعُ اِبْرَاهِيْمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَاِسْمٰعِيْلُ ۭ

में है। इस आयते शरीफ़ा से पहली आयत में इसी का बयान है कि इस घर की जगह का निशान हम ने इब्राहीम अलैहि॰ को बताया था, अल्लाह जल्ल शानुहू के हुक्म से हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने इस मकान की अज़ सरे नौ (नये सिरे से) तामीर की।

एक हदीस में आया है कि जब अल्लाह जल्ल शानुहू ने हज़रत आदम अलैहि॰ को जन्नत से उतारा तो उनके साथ अपना घर भी उतारा और फ़रमाया कि

ऐ आदम, मैं तेरे साथ अपना घर उतारता हूं। उसका तवाफ़ उसी तरह किया जायेगा, जिस तरह मेरे अर्श का तवाफ़ किया जाता है और उसकी तरफ़ नमाज़ उसी तरह पढ़ी जायेगी, जिस तरह मेरे अर्श की तरफ़ नमाज़ पढ़ी जाती है।

इसके बाद तूफ़ाने नूह के ज़माने में यह मकान उठा लिया गया। इसके बाद अंबिया-ए-किराम इस जगह का तवाफ़ करते थे, मकान न था। इसके बाद हज़रत इब्राहीम अलैहि॰ को अल्लाह जल्ल शानुहू ने इस जगह मकान बनाने का हुक्म फ़रमाया और जगह की तअ्यीन खुद फ़रमा दी। *(तर्ग़ीब, मुन्ज़री)*

हदीस में आता है कि जब हज़रत इब्राहीम अलैहि॰ बैतुल्लाह शरीफ़ की तामीर से फ़ारिग़ हुए तो बारगाहे खुदावंदी में अर्ज़ किया कि तामीर से फ़राग़त हो चुकी है। इस पर अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से हुक्म हुआ कि लोगों में हज का ऐलान करो, जिस का ऊपर की आयत में ज़िक्र है, हज़रत इब्राहीम अलैहि॰ ने अर्ज़ किया कि या अल्लाह, मेरी आवाज़ किस तरह पहुँचेगी? अल्लाह जल्ल शानुहू ने फ़रमाया कि आवाज़ का पहुँचाना हमारे ज़िम्मे है। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने ऐलान फ़रमाया जिसको आसमान व ज़मीन के दर्मियान हर चीज़ ने सुना, आज इस में कोई इश्काल नहीं रहा कि लासिल्की से एक मुल्क से दूसरे मुल्क तक आवाज़ पहुँच रही है तो ला सिल्कीयों के बनाने वालों का बनाने वाला जब आवाज़ पहुचाने का इरादा करे तो इसमें क्या इश्काल हो सकता है।

दूसरी हदीस में है कि इस आवाज़ को हर शख़्स ने सुना और लब्बैक कहा, जिसके मायने हैं कि मैं हाज़िर हूँ, यही वह लब्बैक है, जिसको हाजी एहराम के बाद से शुरू करता है। जिस शख़्स की क़िस्मत में अल्लाह जल्ल शानुहू ने हज की सआदत लिखी थी, वह इस आवाज़ से बहरावर (फ़ैज़ याब) हुआ और लब्बैक कहा।

(इत्तिहाफ़)

दूसरी हदीस में आया है कि जिस शख़्स ने भी ख़्वाह (चाहे) वह पैदा हो चुका था, या अभी तक आलमे अर्वाह में था, उस वक़्त लब्बैक कहा, वह हज ज़रूर करता है।

एक हदीस में है कि जिसने एक मर्तबा लब्बैक कहा, वह एक हज करता है। जिसने उस वक़्त दो मर्तबा लब्बैक कहा, वह दो मर्तबा हज करता है और इसी तरह जिसने इससे ज़्यादा जितनी मर्तबा लब्बैक कहा, उतने ही हज उस को नसीब होते हैं।

(दुर्रे मंसूर)

किस क़दर खुशनसीब हैं वे रूहें, जिन्होंने उस वक़्त दमादम लब्बैक कहा होगा, बीसियों हज उनको नसीब हुए या होंगे।

(۲) اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمَاتٌ ج فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوْقَ وَلَا جِدَالَ فِى الْحَجِّ ط وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ يَّعْلَمْهُ اللّٰهُ ط (بقره ع ۲۵)

2. हज (का ज़माना) चंद महीने हैं जो (मशहूर व) मालूम हैं, (यानी पहली शव्वाल से दस ज़िलहिज्जा तक) पस जो शख़्स इन अय्याम में अपने ऊपर हज मुक़र्रर कर ले (कि हज का एहराम बांधा ले) तो फिर न कोई फ़हश बात जायज़ है और न उदूले हुक्मी दुरूस्त है और न किसी क़िस्म का झगड़ा ज़ेबा है (बल्कि उस को चाहिए कि हर वक़्त नेक काम में लगा रहे) और जो नेक काम करोगें, हक़ तआला शानुहू उसको जानते हैं (उनको हर शख़्स की हर बात का हर वक़्त इल्म रहता है। उसके मुवाफ़िक़ उसको जज़ा या सज़ा देते हैं, और इसलिये उन नेकियों का बहुत बदला अता फ़रमायेंगे जो इन मुबारक औक़ात में की जायेंगी)

फ़ायदा:- फ़ह्श बात दो तरह की होती हैं -

एक वह जो पहले से भी नाजायज़ थी, उसका गुनाह हज की हालत में करने से ज़्यादा हो जाता है।

दूसरे वह जो पहले से जायज़ थी, जैसा कि अपनी बीवी से बे हिजाबी की बात करना, हज में वह भी जायज़ नहीं रहती।

इसी तरह हुक्म उदूली भी दो तरह की है-

एक वह जो पहले से ही नाजायज़ थी, जैसा कि सारे गुनाह, उनकी मासियत हज की हालत में ज़्यादा सख़्त हो जायेगी।

दूसरे वे उमूर, जो पहले से जायज़ थे, अब हज की वजह से नाजायज़ हो गये, जैसा कि ख़ुश्बू लगाना, यह अब ना जायज़ हो गया। ऐसे ही लड़ना झगड़ना पहले से भी बुरा है, मगर हज में और भी ज़्यादा बुरा है।

(बयानुल, क़ुरआन)

अगरचे उदूले हुक्मी में झगड़ा करना भी दाख़िल है, मगर चूंकि हज में अक्सर साथियों में निज़ाअ् हो ही जाता है, इसलिये एहतिमाम की वजह से उसको ख़ास तौर से ज़िक्र फ़रमाया, जैसा कि आइंदा पहली हदीस के ज़ैल (तहत) में

भी उसका ज़िक्र आ रहा है।

(۳) اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِىْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ۔ (مائدہ ع ۱)

3. आज के दिन तुम्हारे लिये तुम्हारे दीन को मैं ने (हर तरह) कामिल व मुकम्मल बना दिया और तुम पर अपना इनाम (आज) पूरा कर दिया और मैं ने इस्लाम को तुम्हारा दीन बनने के लिये (हमेशा को) पसंद कर लिया (कि क़ियामत तक तुम्हारा यही दीन रहेगा, (इसको मंसूख़ करके दूसरा दीन तज्वीज़ न किया जायेगा।)

फ़ायदाः- हज के अहम फ़ज़ाइल में से यह भी है कि यह आयत शरीफ़ा जिसमें तक्मीले दीन का मुज़्दा (यानी ख़ुशख़बरी) है। हज के मौक़े पर नाज़िल हुई।

इमाम ग़ज़ाली रह॰ ने एह्या में लिखा है कि हज इस्लाम के बुनियादी अर्कान में है। इसी पर अर्कान का इख़्तिताम हुआ है और इसी पर इस्लाम की तक्मील व तत्मीम हुई है। इसी में आयत "अल यौ-म अक्मल्तु लकुम" नाज़िल हुई है।

एक हदीस में आया है कि यहूद के बाज़ उलमा ने हज़रत उमर रज़ि॰ से अर्ज़ किया कि तुम क़ुरआन पाक में एक आयत पढ़ते हो। अगर वह आयत हम पर नाज़िल होती तो हम उस दिन को ईद का दिन बनाते, (यानी सालगिरह के तौर पर उस दिन की ख़ुशी मनाते), हज़रत उमर रज़ि॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि वह कौन सी आयत है? उन्होंने अर्ज़ किया

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ

हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया कि मुझे मालूम है कि यह किस दिन और कहां नाज़िल हुई? बिहम्दिल्लाह हमारे यहां उस वक़्त दो ईदें जमा थीं

1. एक जुमे का दिन था (कि वह भी मुसलमान के लिये बमंज़िला ईद के दिन के है)

2. दूसरे अर्फ़ा का दिन (कि वह भी बिलख़ुसूस हाजी के लिये ईद का दिन है।)

हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया कि यह आयत जुमा के दिन, शाम के वक़्त

अस्र के बाद, जबकि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अरफ़ात के मैदान में अपनी ऊंटनी पर तशरीफ़ फ़रमा थे, नाज़िल हुई। दर हक़ीक़त यह बड़ा मुज्दा है, जो इस आयते शरीफ़ा में सुनाया गया है।

एक हदीस में आया है कि इस आयते शरीफ़ा के बाद हिल्लत व हुर्मत के बारे में कोई जदीद हुक्म नाज़िल नहीं हुआ। जब आदमी हज में यह ख़्याल करे कि इस फ़रीज़े से दीन की तक्मील क़रार दी गयी और दीन मुकम्मल होने का यह ज़रिया हुआ है तो कितने ज़ौक़ व शौक़ से इस फ़रीज़े को अदा करना चाहिए, वह ज़ाहिर है।

जब यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी ऊँटनी पर थे। वह ऊँटनी बोझ की वजह से बैठ गयी, खड़ी न हो सकी।

वही के वक़्त हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में वज़्न बहुत बढ़ जाता था। हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि जब हुज़ूर सल्ल॰ ऊँटनी पर होते और वही नाज़िल होती, तो वह ऊँटनी अपनी गरदन गिरा देती और जब तक वही ख़त्म न होती, हरकत न कर सकती थी।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जब वही नाज़िल होती है तो मुझे यह ख़्याल होता है कि मेरी जान निकल जायेगी।

(दुर्रे मंसूर)

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जब आयते शरीफ़ा-

لَا يَسْتَوِى الْقَاعِدُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ غَيْرُ أُولِى الضَّرَرِ

"नाज़िल हुई तो मैं हुज़ूर सल्ल॰ के पास बैठा हुआ था। हुज़ूर सल्ल॰ पर ग़शी सी तारी हुई तो आपकी रान मेरी रान पर रखी गयी। उसके वज़्न से मेरी रान टूटी जा रही थी।

(दुर्रे मंसूर)

यह अल्लाह जल्ल शानुहू के पाक कलाम की अज़्मत व हैबत थी, जिसको हम लोग ऐसा सरसरी और लापरवाही से पढ़ते हैं, जैसा कि एक मामूली कलाम हो।

यहां तक चंद आयात का ज़िक्र था, आगे चंद (कुछ) अहादीस का तर्जुमा पेश करता हूँ।

अहादीस

(۱) عن ابی ہریرۃ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم من حج للہ فلم یرفث ولم یفسق رجع کیوم ولدتہ امہ (متفق علیہ مشکوٰۃ)

1. हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि जो शख़्स अल्लाह के लिये हज करे इस तरह कि उस हज में न रफ़स हो (यानी फ़ह्श बात) और न फ़िस्क़ हो (यानी हुक्म उदूली) वह हज से ऐसा वापस होता है, जैसा उस दिन था जिस दिन मां के पेट से निकला था।

फ़ायदा:- जब बच्चा पैदा होता है, वह मासूम होता है उस पर कोई गुनाह, कोई लग्ज़िश किसी की दारगीर कुछ नहीं होती, यही असर है उस हज का जो अल्लाह के वास्ते किया जाये। "फ़ज़ाइले नमाज़"[1] के शुरू में यह मज़्मून गुज़र चुका है कि उलमा के नज़दीक इस क़िस्म की अहादीस से सग़ीरा गुनाह मुराद हुआ करते हैं, अगरचे हज के बारे में जो रिवायात बकसरत वारिद हुई हैं, उनकी वजह से बाज़ उलमा की यह तहक़ीक़ है कि हज से सग़ाइर, कबाइर (छोटे बड़े) सब गुनाह माफ़ हो जाते हैं। इस हदीस पाक में तीन मज़्मून ज़िक्र फ़रमाये हैं :-

1. अव्वल यह कि अल्लाह के वास्ते हज किया जाये यानी उसमें कोई दुन्यवी ग़रज़, शोहरत रिया वग़ैरह शामिल न हो। बहुत से लोग शोहरत और इज़्ज़त की वजह से हज करते हैं। वे इतना हरज और ख़र्च सवाब के एतिबार से बेकार ज़ाया करते हैं, अगरचे फ़र्ज़ हज इस तरह भी अदा हो जायेगा, लेकिन अगर महज़ अल्लाह की रिज़ा की नीयत हो तो फ़र्ज़ अदा होने के साथ किस क़दर सवाब मिले, इतनी बड़ी दौलत को महज़ चंद लोगों में इज़्ज़त की नीयत से ज़ाया कर देना किस क़दर नुक़्सान और ख़सारे की बात है।

एक हदीस में आया है कि क़ियामत के क़रीब मेरी उम्मत के अमीर लोग तो हज महज़ सैर व तफ़रीह के इरादे से करेंगे (गोया लंदन व पेरिस की तफ़रीह न की, हिजाज़ की तफ़रीह कर ली) और मेरी उम्मत का मुतवस्सित (दर्मियानी) तब्क़ा तिजारत की ग़रज़ से हज करेगा कि तिजारती माल कुछ इधर से ले गये, कुछ उधर से ले आये और उलमा रिया व शोहरत की वजह से हज करेंगे (कि

---

1. फ़ज़ाइले नमाज़ शैख़ुल हदीस साहिब का एक रिसाला है।

फ़लां मौलाना साहब ने पांच हज किये, दस हज किये) और ग़ुरबा भीख मांगने की ग़रज़ से जायेंगे। *(कंज़ुल उम्माल)*

उलमा ने लिखा है कि जो लोग उजरत के साथ हज्जे बदल करते हैं कि इस हज से कुछ दुन्यवी नफ़ा हासिल हो जाये, वे भी इस में दाख़िल हैं कि गोया हज के साथ तिजारत कर रहा है, जैसा कि हदीस (15) के ज़ैल में आ रहा है।

दूसरी हदीस में आया है कि सलातीन और बादशाह तफ़रीह की नीयत से हज करेंगे और ग़नी लोग तिजारत की ग़रज से और फ़ुक़रा सवाल की ग़रज़ से और उलमा शोहरत की वजह से। *(इत्तिहाफ़)*

इन दोनों हदीसों में कुछ तआरूज़ (टकराव) नहीं। पहली हदीस में जो ग़नी बताये गये, उन से आला दर्जे के ग़नी मुराद हैं, जिनको दूसरी हदीस में सलातीन से ताबीर किया है और जिसको इस हदीस में ग़नी से ताबीर किया है, वह सलातीन से कम दर्जा मुराद है, जिसको पहली हदीस में मुतवस्सित तबक़े से ताबीर किया है।

एक हदीस में है कि हज़रत उमर रज़ि॰ सफ़ा मर्वः के दर्मियान एक मर्तबा तशरीफ़ फ़रमा थे। एक जमाअत आयी जो अपने ऊँटों से उतरी और बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ किया, सफ़ा मर्वः के दर्मियान सई की। हज़रत उमर रज़ि॰ ने उनसे दर्याफ़्त किया, तुम कौन लोग हो? उन्होंने अर्ज़ किया कि इराक़ के लोग हैं। हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया कि यहां कैसे आना हुआ? उन्होंने अर्ज़ किया कि हज के लिये। हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया, कोई और ग़रज़ तो न थी, मसलन अपनी मीरास का किसी से मुतालबा हो या किसी क़र्ज़दार से रूपया वसूल करना हो या कोई और तिजारती ग़रज़ हो। उन्होंने अर्ज़ किया नहीं, कोई दूसरी ग़रज़ न थी। हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया कि अज़ सरे नव (नये सिरे से) आमाल करो यानी पहले सारे गुनाह तुम्हारे माफ़ हो चुके।

2. दूसरी चीज़ हदीसे बाला में यह है कि उसमें रफ़स यानी फ़ुह्श बात न हो। इससे क़ब्ल क़ुरआन पाक की आयते शरीफ़ा में भी यह लफ़्ज़ "फ़ ला र-फ़-स" गुज़र चुका है।

उलमा ने लिखा है कि यह एक ऐसा जामेअ् कलिमा है, जिसमें हर क़िस्म की लग्व और बेहूदा बात दाख़िल है, हत्ताकि बीवी के सामने सोहबत का

ज़िक्र करना भी दाख़िल है, हत्ताकि इस क़िस्म की बात का आंख से या हाथ से इशारा करना भी दाख़िल है कि इस क़िस्म का ज़िक्र शह्वत को उभारता है।

3. तीसरी चीज़ जो इस हदीस पाक'में ज़िक्र की गयी, वह फ़ुसूक़ यानी हुक्म उदूली न होना है यह भी क़ुरआन पाक की आयते मज़्कूरा में गुज़र चुका है।

उलमा ने लिखा है कि यह भी एक जामेअ् कलिमा है, जो अल्लाह जल्ल शानुहू की हर क़िस्म की नाफ़रमानी को शामिल है इसमें झगड़ा करना भी दाख़िल है कि यह भी हुक्म उदूली है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक हदीसे पाक में इर्शाद फ़रमाया कि हज की ख़ूबी नर्म कलाम करना और लोगों को खाना खिलाना है। लिहाज़ा किसी से सख़्ती से गुफ़्तगू करना नर्म कलाम के मनाफ़ी है, इसलिये ज़रूरी है कि आदमी अपने साथियों पर बार बार एतिराज़ न किया करे। बद्दुओं से सख़्ती से पेश न आये। हर शख़्स के साथ तवाज़ोअ् से और ख़ुशअख़्लाक़ी से पेश आये।

उलमा ने लिखा है कि ख़ुश अख़्लाक़ी यह नहीं है कि दूसरे को तक्लीफ़ न पहुँचाये। बल्कि ख़ुशख़ुल्क़ी यह है कि दूसरे की अज़ीयत (तक्लीफ़) को बर्दाश्त करे। सफ़र के मायने लुग़त में ज़ाहिर करने के हैं। उलमा ने लिखा है कि सफ़र को सफ़र इसी वजह से कहा जाता है कि इसमें आदमी के अख़्लाक़ ज़ाहिर होते हैं।

हज़रत उमर रज़ि॰ ने एक शख़्स से दर्याफ़्त किया कि तुम फ़लां को जानते हो कि कैसा आदमी है? उन्होंने अर्ज़ किया कि जी जानता हूं। हज़रत उमर रज़ि॰ ने दर्याफ़्त किया कि तुमने कभी कोई सफ़र उसके साथ किया है? उन्होंने अर्ज़ किया कि सफ़र तो नहीं किया। हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया कि फिर तुम उसको नहीं जानते।

एक हदीस में है कि हज़रत उमर रज़ि॰ के सामने एक साहब ने किसी की तारीफ़ की कि बहुत अच्छे आदमी हैं। हज़रत उमर रज़ि॰ ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि तुमने उनके साथ कोई सफ़र किया है? उन्होंने अर्ज़ किया कि सफ़र तो नहीं किया। फिर हज़रत उमर रज़ि॰ ने दर्याफ़्त किया, तुम्हारा उनके साथ कोई मामला पड़ा है? उन्होंने अर्ज़ किया कि मामला भी नहीं पड़ा, तो हज़रत उमर रज़ि॰ ने

फ़रमाया कि फिर तुम्हें उनके हाल की क्या ख़बर है? *(इतिहाफ़)*

हक़ यह है कि आदमी का हाल ऐसी ही चीज़ों से ज़ाहिर होता है, वैसे देखने में तो सब ही अच्छे मालूम होते हैं, मगर सफ़र में अक्सर कशीदगी हो ही जाती है, इसलिये क़ुरआन पाक में हज के साथ "व ला जिदा-ल" को ख़ास तौर से ज़िक्र किया गया है।

(٢) عن ابی ہریرۃؓ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم المبرور لیس لہ جزاء الا الجنۃ (متفق علیہ، مشکوٰۃ)

2. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि नेकी वाले हज का बदला जन्नत के सिवा कुछ नहीं।

फ़ायदा:- बाज़ उलमा ने कहा है कि नेकी वाले हज का मतलब यह है कि उसमें किसी क़िस्म की मासियत न हो। इसी वास्ते अक्सर हज़रात इस का तर्जुमा हज्जे मक़्बूल करते हैं कि जब आदाब व शराइत की रिआयत होगी, कोई लग़्ज़िश उसमें न होगी, तो वह हज इन्शाअल्लाह मक़्बूल ही होगा।

हज़रत जाबिर रज़ि॰ की हदीस में है कि हज की नेकी लोगों को खाना खिलाना और नर्म गुफ़्तगू करना है।

दूसरी हदीस में है कि हज की नेकी खाना खिलाना और लोगों को कसरत से सलाम करना है। *(तर्ग़ीब)*

एक हदीस में है कि जब हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि नेकी वाले हज का बदला जन्नत के सिवा कुछ नहीं, तो सहाबा रज़ि॰ ने दर्याफ़्त किया कि हुज़ूर नेकी वाला हज क्या चीज़ है? तो हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि खाना खिलाना और सलाम कसरत से करना। *(कंज़)*

(٣) عن عائشۃؓ ان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم قال ما من یوم اکثر من ان یعتق اللہ فیہ عبدًا من النار من یوم عرفۃ وانہ لیدنوثم یباھی بھم الملئکۃ.

فیقول ما اراد ھؤلآءِ (رواہ مسلم)

3. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि कोई दिन ऐसा नहीं, जिसमें अल्लाह तआला अर्फ़े के दिन से ज़ायद बंदों को जहन्नम से निजात देते हों, यानी जितनी कसीर मिक़्दार को अर्फ़े के दिन ख़लासी होती है, उतनी कसीर तायदाद किसी और दिन को नहीं होती।

हक़ तआला शानुहू (दुनिया के) क़रीब होते हैं, फिर फ़ख़्र के तौर पर फ़रमाते हैं, कि ये बंदे क्या चाहते हैं?

फ़ायदा:- अल्लाह जल्ल शानुहू का क़रीब होना या नीचे के आसमान पर उतरना या इस क़िस्म के और जो मज़ामीन ज़िक्र किये गये हैं, उनकी असल हक़ीक़त तो अल्लाह जल्ल शानुहू ही को मालूम है कि वह हर वक़्त क़रीब है, उतरने चढ़ने के ज़ाहिरी मायने से बालातर है।

उलमा इस क़िस्म के मज़ामीन को रहमते ख़ास्सा के क़रीब होने से ताबीर फ़रमाया करते हैं, जो मज़्मून हदीसे बाला में मज़्कूर है। इस क़िस्म के मज़ामीन बहुत सी अहादीस में वारिद हुए हैं।

एक हदीस में है कि जब अर्फ़े का दिन होता है तो हक़ तआला शानुहू सब से नीचे के आसमान पर उतर कर फ़रिश्तों से फ़ख़्र के तौर पर फ़रमाते हैं कि मेरे बंदों को देखो कि मेरे पास ऐसी हालत में आये हैं कि सर के बाल बिखरे हुए हैं, बदन पर और कपड़ों पर सफ़र की वजह से गुबार पड़ा हुआ है, लब्बैक अल्लाहुम्म लब्बैक का शोर है, दूर दूर से चल कर आये हैं। मैं तुम्हें गवाह बनाता हूँ कि मैंने उनके गुनाह माफ़ कर दिये। फ़रिश्ते अर्ज़ करते हैं कि या अल्लाह, फ़लां शख़्स गुनाहों की तरफ़ मंसूब है और फ़लां मर्द और फ़लां औरत तो (बस क्या कहा जाये) हक़ तआला शानुहू का इर्शाद होता है कि मैंने इन सब की मग़्फ़िरत कर दी। हुज़ूर सल्ल॰ फ़रमाते हैं कि उस दिन से ज़्यादा किसी दिन भी लोग जहन्नम की आग से आज़ाद नहीं होते। *(मिश्कात)*

एक और हदीस में है कि हक़ तआला शानुहू फ़रमाते हैं कि ये मेरे बंदे, बिखरे हुए बालों वाले मेरे पास आये हैं मेरी रहमत के उम्मीदवार हैं। (इसके बाद बंदों से ख़िताब फ़रमाते हैं) अगर तुम्हारे गुनाह रेत के ज़र्रों के बराबर हों और आसमान की बारिश के क़तरों के बराबर हों और तमाम दुनिया के पेड़ों के पत्तों के बराबर हों, तब भी बख़्श दिये, जाओ, बख़्शे बख़्शाये अपने घर चले जाओ। *(कंज़)*

एक और हदीस में है कि हक़ तआला शानुहू फ़ख़्र के तौर पर फ़रिश्तों से फ़रमाते हैं कि देखो मैंने इन बंदों की तरफ़ अपना रसूल भेजा, ये उस पर ईमान लाये, मैंने इन पर किताब नाज़िल की, ये उस पर ईमान लाये। तुम गवाह रहो कि मैंने उनके सारे गुनाह माफ़ कर दिये। *(कंज़)*

ग़रज़ बहुत कसरत से रिवायात में यह मज़्मून वारिद हुआ है। इन ही जैसी अहादीस की बिना पर बाज़ उलमा ने कहा है कि हज की माफ़ी सग़ीरा गुनाहों के साथ मख़्सूस नहीं, कबीरा गुनाह भी उससे माफ़ हो जाते हैं। वह बा इख़्तियार बादशाह है। उसकी नाफ़रमानियों का नाम गुनाह है। वह किसी आदमी को या किसी जमाअत को अपने फ़ज़्ल से बिल्कुल ही माफ़ कर दे, तो न उस के लुत्फ़ व करम से बईद है, न किसी दूसरे का उसमें इजारा है।

शिफ़ा-ए-क़ाज़ी अयाज़ में एक क़िस्सा लिखा है कि एक जमाअत सअ़दून ख़ौलानी रह० के पास आयी और उनसे ये क़िस्सा बयान किया कि कतामा क़बीला के लोगों ने एक आदमी को क़त्ल किया और उसको आग में जलाना चाहा। रात भर उस पर आग जलाते रहे, मगर आग ने उस पर ज़रा भी असर न किया। बदन वैसा ही सफ़ेद रहा। सअ़दून रह० ने फ़रमाया कि शायद उस शहीद ने तीन हज किये होंगे। लोगों ने कहा, जी हां तीन हज किये हैं। सअ़दून रह० ने कहा कि मुझे यह हदीस पहुँची है कि जिस शख़्स ने एक हज किया, उसने अपना फ़रीज़ा अदा किया और जिसने दूसरा हज किया, उसने अल्लाह को क़र्ज़ दिया और जो तीन हज करता है, तो अल्लाह जल्ल शानुहू उसकी खाल को, उसके बाल को आग पर हराम कर देता है।

(٤) عن طلحةؓ بن عبيد الله بن كريز ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال ما روئ الشيطان يوما هو فيه اصغر ولا ادحر ولا احقر ولا اغيظ منه فی يوم عرفة وما ذاك الا لما يرى من تنزل الرحمة وتجاوز الله عن الذنوب العظام الا ما رؤى يوم بدر رواه مالكؒ مرسلا (مشكوة)

4. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि ग़ज़्वा-ए-बद्र का दिन तो मुस्तस्ना है। उसको छोड़ कर कोई दिन अर्फ़ा के दिन के अलावा ऐसा नहीं, जिसमें शैतान बहुत ज़लील हो रहा हो, बहुत रांदा फिर रहा हो। बहुत हक़ीर हो रहा हो, बहुत ज़्यादा ग़ुस्से में भर रहा हो, और यह सब कुछ इस वजह से कि अरफ़ा के दिन में अल्लाह की रहमतों का कसरत से नाज़िल होना बंदों के बड़े बड़े गुनाहों का माफ़ होना देखता है।

फ़ायदा:- शैतान को उस दिन में जितना भी गुस्सा हो, जितना भी उस पर रंज व मलाल का असर हो, जितना भी वह परेशान हाल हो, क़रीने क़ियास

है क्योंकि उसकी उम्र भर कि मेहनत की बड़ी मशक़्क़तों और मेहनतों से उसने लोगों से गुनाह कराये, वे आज एक रहमत के झोंके में सब साफ़ हो गये। इस पर जितना भी उसको गुस्सा और रंज हो वह ज़ाहिर है।

एक हदीस में आया है कि शैतान अपने शरीर लश्कर को इस पर मामूर करता है कि वे हाजियों के रास्ते में बैठकर उनको रास्ते से बे राह करें।

(कंज़)

सूफ़िया में से एक साहिबे कश्फ़ का क़िस्सा इमाम ग़ज़ाली रह० ने लिखा है कि उनको अर्फ़ा के दिन शैतान नज़र आया, कि बहुत ही कमज़ोर हो रहा है, चेहरा ज़र्द पड़ा है, आंखों से आंसू जारी हैं, कमर से सीधा खड़ा नहीं हुआ जाता, वह झुक रही है। उन बुज़ुर्ग ने उससे दर्याफ़्त फ़रमाया कि तू क्यों रो रहा है? उसने कहा कि मुझे यह चीज़ रूला रही है कि हाजी लोग, बिला किसी दुन्यवी ग़रज़ तिजारत वग़ैरह के उसकी बारगाह में हाज़िर हो गये। मुझे यह डर और रंज है कि वह पाक ज़ात इन लोगों को ना मुराद नहीं रखेगी, इस ग़म में रो रहा हूँ, वह फ़रमाते हैं कि फिर मैंने उस से पूछा कि तू दुबला क्यों हो गया? उसने कहा कि घोड़ों की आवाज़ से, जो हर वक़्त अल्लाह के रास्तों में (हज, उमरा, जिहाद वग़ैरह में) फिरते रहते हैं। काश, ये सवारियां मेरे रास्ते (लह्व व लअिब, बदकारी, हराम कमाई वग़ैरह में) फिरतीं, तो मुझे कैसी अच्छी लगतीं। उन्होंने फ़रमाया कि तेरा रंग ऐसा ज़र्द क्यों पड़ गया? उसने कहा कि लोग एक दूसरे को नेकियों पर आमादा करते हैं, इस काम में एक दूसरे की मदद करते हैं। अगर यह आपस की इमदाद व इआनत गुनाहों के करने में होती तो मेरे लिये किस क़दर मसर्रत का सबब होती। उन्होंने फ़रमाया कि तेरी कमर क्यों झुक गयी? उसने कहा कि बंदा हर वक़्त यह कहता है कि या अल्लाह, ख़ात्मा बिलख़ैर अता कर। ऐसा शख़्स जिसको अपने ख़ात्मे का हर वक़्त फ़िक्र रहे, कब अपने किसी नेक अमल पर घमंड करेगा।

(٥) عن ابن شماسة قال حضرنا عمرو بن العاص وهو فی سیاقة الموت فبکی طویلا وقال فلما جعل الله الاسلام فی قلبی اتیت النبی صلی الله علیه وسلم فقلت یا رسول الله ابسط یمینك لا بایعك فبسط یده فقبضت یدی فقال مالك یا عمرو قال اردت ان اشترط قال تشترط ماذا قال ان یغفرلی قال اما علمت یا عمرو ان الاسلام یهدم ما کان قبله وان الهجرة تهدم

ما كان قبلها وان الحج يهدم ما كان قبله رواه ابن خزيمة فى صحيحه هكذا مختصرًا و رواه مسلم وغيره اطول منه كذا فى الترغيب.

5. इब्ने शमासः रज़ि॰ कहते हैं कि हम लोग हज़रत अम्र बिन आस रज़ि॰ के पास हाज़िर हुए। उनका आख़िरी वक़्त था, इंतिक़ाल हो रहा था। हज़रत अम्र रज़ि॰ उस वक़्त बहुत देर तक रोते रहे। इसके बाद अपने इस्लाम लाने का क़िस्सा सुनाया और फ़रमाने लगे कि जब अल्लाह जल्ल शानुहू ने मेरे दिल में इस्लाम लाने का जज़्बा पैदा कर दिया, तो मैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि बैअत के लिये हाथ दे दीजिये। म मुसलमान होता हूँ। हुज़ूर सल्ल॰ ने अपना दस्ते मुबारक फैलाया तो मैंने अपना हाथ खींच लिया, हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि यह क्या, मैंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल॰ मैं पहले एक शर्त करना चाहता हूँ और वह यह है कि अल्लाह जल्ल शानुहू मेरे पिछले गुनाह माफ़ कर दे। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि अम्र, तुझे यह बात मालूम नहीं कि इस्लाम उन सब गुनाहों को ख़त्म कर देता है जो कुफ़्र की हालत में किये गये हों, और हिजरत उन सब लग़्ज़िशों को ख़त्म कर देती है जो हिजरत से पहले की हों, और हज उन सब क़ुसूरों का ख़ात्मा कर देता है जो हज से पहले किये हों।

फ़ायदा:- इस हदीस शरीफ़ में इस चीज़ से क़ता नज़र कि गुनाहे सग़ीरा मुराद हैं या कबीरा, जैसा कि सबसे पहली हदीस में गुज़र चुका है, यह अम्र क़ाबिले लिहाज़ है कि एक किसी का हक़ होता है और एक उसका गुनाह। हज वग़ैरह से गुनाह तो माफ़ हो जाते हैं, मगर हुक़ूक़ माफ़ नहीं होते। मसलन, किसी शख़्स का माल चुरा लिया। इसमें एक तो वह माल है जो चुराया है, दूसरे उस चोरी का गुनाह है। गुनाह के माफ़ होने का यह मतलब नहीं कि जिसका माल चुराया है, वह भी वापस करना न पड़ेगा। उसका वापस करना तो ज़रूरी है, अलबत्ता इस चोरी करने का जो गुनाह हुआ वह माफ़ हो सकता है।

एक हदीस में आया है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अर्फ़ा की शाम को अरफ़ात के मैदान में उम्मत की मग़्फ़िरत की दुआ मांगी और बहुत इलहाह व ज़ारी से देर तक मांगते रहे। रहमते इलाही जोश में आयी और अल्लाह जल्ल शानुहू का इर्शाद हुआ कि मैं ने तुम्हारी दुआ क़ुबूल कर ली और

जो गुनाह बंदों ने मेरे किये हैं, वे माफ़ कर दिये, अलबत्ता जो एक दूसरे पर ज़ुल्म किये हैं, उनका बदला लिया जायेगा। हुज़ूर सल्ल॰ ने फिर दर्ख़्वास्त की और बार बार यह दर्ख़्वास्त करते रहे कि या अल्लाह, तू इस पर भी क़ादिर है कि मज़्लूम के ज़ुल्म का बदला तू अता फ़रमा दे। और ज़ालिम के क़ुसूर को माफ़ फ़रमा दे। मुज़्दलिफ़ा की सुबह को अल्लाह जल्ल शानुहू ने यह दुआ भी क़ुबूल फ़रमा ली। उस वक़्त हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तबस्सुम फ़रमाया। सहाबा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया कि आपने ऐसी हालत में (इलहाह् व ज़ारी की) तबस्सुम फ़रमाया, कि ऐसे वक़्त तबस्सुम की आदते शरीफ़ा नहीं है। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि जब अल्लाह जल्ल शानुहू ने मेरी यह दुआ क़ुबूल फ़रमायी और शैतान को इस का पता चला तो आह व वावैला से चिल्लाने लगा और मिट्टी अपने सर पर डालने लगा।

(٦)عن سهل بن سعدؓ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم مامن مسلم يلبى الالبى من عن يمينه وشماله من حجر اوشجر او مدرحتى تنقطع الارض من ههنا وههنا. رواه الترمذى وابن ماجه كذافى المشكوة

6. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जब हाजी लब्बैक कहता है, तो उसके साथ उसके दायें और बायें जो पत्थर, दरख़्त ढेले वग़ैरह होते हैं, वे भी लब्बैक कहते हैं, और इसी तरह व-सिलसिला ज़मीन के मुन्तहा तक यह सिलसिला चलता है।

फ़ायदाः- मुतअद्दद अहादीस में आया है कि लब्बैक कहना हज का शिआर है।

एक हदीस में आया है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम जब लब्बैक कहते थे तो हक़ तआला शानुहू जवाब में फ़रमाते थे, लब्बैक या मूसा! *(कंज़)*

हाजी की एक लब्बैक ही नहीं, उस की हर हर चीज़ में मुस्तक़िल अज्र और फ़ज़ीलत है।

एक हदीस में आया है, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में मिना की मस्जिद में हाज़िर था कि दो शख़्स, एक अंसारी और एक सक़फ़ी हाज़िरे ख़िदमत हुए और सलाम के बाद अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल॰ हम कुछ दर्याफ़्त करने आये हैं?

हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि तुम्हारा दिल चाहे तो तुम दर्याफ़्त कर लो और तुम कहो तो मैं बताऊं कि तुम क्या दर्याफ़्त करना चाहते हो? उन्होंने अर्ज़ किया आप ही इर्शाद फ़रमा दें।

हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि तुम हज के मुतअल्लिक़ दर्याफ़्त करने आये हो कि हज के इरादे से घर से निकलने का क्या सवाब है और तवाफ़ के बाद दो रकअत पढ़ने का क्या फ़ायदा है, और सफ़ा मर्व: के दर्मियान दौड़ने का क्या सवाब है? और अरफ़ात पर ठहरने और शैतानों के कंकरियां मारने का क्या सवाब है, और क़ुर्बानी करने का और तवाफ़े ज़ियारत करने का क्या सवाब है? उन्होंने अर्ज़ किया कि उस पाक ज़ात की क़सम। जिसने आपको नबी बनाकर भेजा है, यही सवालात हमारे ज़ेहन में थे। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि हज का इरादा करके घर से निकलने के बाद तुम्हारी (सवारी) ऊंटनी जो एक क़दम रखती है या उठाती है वह तुम्हारे आमाल में एक नेकी लिखी जाती है, और एक गुनाह माफ़ होता है और तवाफ़ के बाद दो रक्अतों का सवाब ऐसा है, जैसा एक अरबी गुलाम को आज़ाद किया हो और सफ़ा मर्व: के दर्मियान सई का सवाब सत्तर गुलामों को आज़ाद कराने के बराबर है और अरफ़ात के मैदान में जब लोग जमा होते हैं, तो हक़ तआला शानुहू दुनिया के आसमान पर उतर कर फ़रिश्तों से फ़ख़्र के तौर पर फ़रमाते हैं कि मेरे बंदे दूर दूर से परागंदा बाल आये हुए हैं मेरी रहमत के उम्मीदवार हैं।

अगर तुम लोगों के गुनाह रेत के ज़र्रों के बराबर हों या बारिश के क़तरों के बराबर हों या समुन्दर के झागों के बराबर हों, तब भी मैंने माफ़ कर दिये। मेरे बंदों, जाओ बख़्शे बख़्शाये चले जाओ, तुम्हारे भी गुनाह माफ़ हैं और जिन की तुम सिफ़ारिश करो, उनके भी गुनाह माफ़ हैं। इसके बाद हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि शैतानों के कंकरियां मारने का हाल यह है कि हर कंकरी के बदले एक बड़ा गुनाह, जो हलाक कर देने वाला हो, माफ़ होता है और क़ुर्बानी का बदला अल्लाह के यहां तुम्हारे लिये ज़ख़ीरा है और एहराम खोलने के वक़्त सर मुंडाने में हर बाल के बदले में एक नेकी है और एक गुनाह माफ़ होता है। इस सब के बाद जब आदमी तवाफ़े ज़ियारत करता है तो ऐसे हाल में तवाफ़ करता है कि उस पर कोई गुनाह नहीं होता और एक फ़रिश्ता मोंढों के दर्मियान हाथ रख कर कहता है कि आइंदा अज़ सरे नौ आमाल कर, तेरे पिछले सब गुनाह तो माफ़ हो चुके हैं।

(तर्ग़ीब)

लेकिन यह ज़रूरी है कि हज वही हज्जे मब्रूर हो, जो हक़ीक़तन हज कहलाने का मुस्तहिक़ है।

मशाइख़ ने लिखा है कि लब्बैक उस निदा का जवाब है जो अल्लाह जल्ल शानुहू के हुक्म से हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने फ़रमायी थी, जिसका ज़िक्र क़ुरआन पाक की आयत "व अज़्ज़िन फ़िन्नासि" में गुज़र चुका है। इस लिये जैसा कि हाकिम की पुकार पर दरबार की हाज़िरी में उम्मीद व ख़ौफ़ की हालत होती है, ऐसा ही हाल होना चाहिए, उससे डरते रहना चाहिए, ऐसा न हो कि कहीं अपनी बद आमालियों से हाज़िरी ही क़ुबूल न हो।

मुतर्रिफ़ बिन अब्दुल्लाह रज़ि॰ अरफ़ात के मैदान में यह दुआ कर रह थे कि या अल्लाह, इन सब को मेरी नहूसत की वजह से महरूम न फ़रमा।

बक्र मुज़नी रह॰ कहते हैं कि एक बुज़ुर्ग अरफ़ात के मैदान में हुज्जाज को देख कर कहते थे कि मुझे यह ख़्याल हो रहा है कि मैं अगर न हूं तो इन सब की मग़्फ़िरत हो जाती। (इत्तिहाफ़)

हज़रत अली ज़ैनुल आबिदीन रह॰ ने जब हज के लिये एहराम बांधा तो चेहरा ज़र्द हो गया और बदन पर कपकपी आ गयी और लब्बैक न कह सके। किसी ने अर्ज़ किया कि आपने एहराम के शुरू में लब्बैक नहीं कही, तो फ़रमाया कि मुझे डर है कि कहीं इसके जवाब में ला लब्बैक न कहा जाये, यानी तेरी हाज़िरी मोतबर नहीं। इसके बाद बड़ी मुश्किल से लब्बैक कहा तो ग़शी आ गयी और ऊंटनी पर से गिर पड़े। इसके बाद जब लब्बैक कहते, यही हाल होता। सारा हज इसी तरह पूरा किया।

अहमद रह॰ कहते हैं कि मैं अबू सुलैमान रह॰ के साथ हज को गया, जब एहराम बांधना शुरू किया तो उन्होंने लब्बैक न कही, यहां तक कि हम एक मील चले, इसके बाद उनको ग़शी आ गयी। जब ग़शी से इफ़ाक़ा हुआ तो मुझसे कहने लगे कि अहमद, हक़ तआला शानुहू ने हज़रत मूसा अलैहि॰ की तरफ़ यह वही भेजी थी कि ज़ालिमों से कह दो कि मेरा ज़िक्र कम किया करें, इसलिये कि (जब आदमी अल्लाह जल्ल शानुहू का ज़िक्र करता है तो अल्लाह जल्ल शानुहू के इर्शाद "फ़ज़्कुरूनी अज़्कुर्कुम" (तुम मुझे याद करो, मैं तुम्हें याद करूंगा) कि बिना पर हक़ तआला शानुहू भी उस ज़ालिम का ज़िक्र करते हैं। इस बिना पर फ़रमाया) कि मैं उस ज़ालिम का ज़िक्र लानत से करता हूं। इस के बाद अबू सुलैमान रह॰ ने कहा कि अहमद, मुझे यह बताया गया कि जो शख़्स नाजायज़

उमूर के साथ हज करता है और लब्बैक कहता है तो हक़ तआला शानुहू फ़रमाते हैं ला लब्बैक, तेरी लब्बैक क़ुबूल नहीं, जब तक इन नाजायज़ उमूर को न छोड़े। *(इत्तिहाफ़)*

तिर्मिज़ी शरीफ़ में हज़रत शद्दाद बिन औस रज़ि॰ से रिवायत की है कि अक़्लमंद शख़्स वह है, जो अपने नफ़्स से हिसाब करता रहे और आख़िरत के लिये अमल करता रहे, और आजिज़ व बेवक़ूफ़ है वह शख़्स जो अपने नफ़्स को ख़्वाहिशों की तरफ़ लगाये रखे और अपनी आरज़ुओं के पूरा होने की उम्मीद बांधे रहे। *(नुज़हत)*

लेकिन इस सब के बावजूद अल्लाह के लुत्फ़ व करम का उम्मीदवार भी रहना चाहिए कि उस का फ़ज़्ल और करम हमारे गुनाहों से कहीं ज़्यादा है। हुज़ूर सल्ल॰ की दुआ के अलफ़ाज़ हैं :-

اَللّٰهُمَّ مَغْفِرَتُكَ اَوْسَعُ مِنْ ذُنُوْبِىْ وَرَحْمَتُكَ اَرْجٰى عِنْدِىْ مِنْ عَمَلِىْ

"या अल्लाह तेरी मग़्फ़िरत मेरे गुनाहों से बहुत ज़्यादा वसीअ् है और तेरी रहमत मेरे आमाले हसनः से ज़्यादा उम्मीद के क़ाबिल है।

एक बुज़ुर्ग मक्का मुकर्रमा में सत्तर साल रहे और बराबर हज और उमरे करते रहे, लेकिन जब वह हज या उमरे का एहराम बांधते और लब्बैक कहते तो जवाब ला लब्बैक मिलता। एक मर्तबा एक नौजवान ने उनके साथ ही एहराम बांधा और उनको जब ला लब्बैक का जवाब मिला तो उसने भी सुना, तो वह कहने लगा, चचा जान। आपको तो ला लब्बैक कहा। कहने लगे कि बेटा, तूने भी सुना? उसने कहा, मैंने भी सुना है। इस पर शैख़ रोये और कहने लगे कि बेटा,मैं तो सत्तर वर्ष से यही जवाब सुनता हूँ। जवान ने कहा, फिर क्यों आप इतनी मशक़्क़त हमेशा उठाते हैं? शैख़ ने कहा कि बेटा, इसके सिवा और कौन सा दरवाज़ा है, जिसको पकड़ लूँ और उसके सिवा कौन मेरा है, जिसके पास जाऊँ। मेरा काम तो कोशिश है, वह चाहे रद्द करे या क़ुबूल करे। बेटा, ग़ुलाम को यह ज़ेबा नहीं कि वह इतनी बात की वजह से आक़ा के दर को छोड़ दे। यह कह कर शैख़ रो पड़े। हत्ताकि आंसू सीने तक बहने लगे। इसके बाद फिर लब्बैक कहा तो जवान ने सुना कि जवाब में कहा गया कि हमने तेरी पुकार को क़ुबूल कर लिया और हम ऐसा ही करते हैं हर एक शख़्स के साथ जो हमारे साथ हुस्ने ज़न रखे, बख़िलाफ़ उसके जो अपनी ख़्वाहिशात का इत्तिबाअ् करे और हम पर

उम्मीदें बांधे। जवान ने जब यह जवाब सुना, तो कहने लगा कि चचा, तुमने भी यह जवाब सुना। शैख़ यह कह कर कि मैंने भी सुन लिया, इतना रोये कि चीखें निकल गयीं।

अबू अब्दुल्लाह जिला रह० कहते हैं कि मैं ज़ुलहुलैफ़ा में था, एक नौजवान ने एहराम बांधने का इरादा किया और वह बार बार यह कह रहा था, ऐ मेरे रब, मुझे यह डर है कि मैं लब्बैक कहूँ और तू ला लब्बैक कह दे। कई मर्तबा यही कहता रहा, आख़िर एक मर्तबा उसने ज़ोर से लब्बैक अल्लाहुम्मा कहा और उसी में रूह निकल गयी।

(मुसामरात)

अली बिन मुवफ़्फ़क़ रह० कहते हैं कि मैं अर्फ़े की शब (रात) में मिना की मस्जिद में ज़रा सोया, तो मैंने ख़्वाब में देखा, कि दो फ़रिश्ते सब्ज़ लिबास पहने हुए आसमान से उतरे। एक ने दूसरे से पूछा कि इस साल कितने आदमियों ने हज किया है ? दूसरे ने जवाब दिया कि मुझे तो मालूम नहीं, तो उस पूछने वाले ने ख़ुद ही कहा कि छः लाख आदमी हैं। उसने फिर सवाल किया कि तुम्हें मालूम है कि इनमें से कितने आदमियों का हज क़ुबूल हुआ। उसने जवाब दिया कि मुझे तो मालूम नहीं। उसने ख़ुद ही बताया कि इनमें से सिर्फ़ छः आदमियों का हज क़ुबूल हुआ। यह कह कर वे दोनों आसमान की तरफ़ चले गये।

इब्ने मुवफ़्फ़क़ रह० कहते हैं कि इस ख़्वाब की वजह से घबरा कर मेरी आंख खुल गयी और मुझे बड़ा सख़्त फ़िक्र व ग़म सवार हो गया। ख़ुद अपने बारे में सोच में पड़ गया कि छः आदमी कुल हैं, जिनका हज क़ुबूल हुआ, मैं भला उनमें कैसे हो सकता हूँ? इसके बाद अरफ़ात से वापसी पर भी मैं मज्मे को देख रहा था और सख़्त फ़िक्र में था कि इतना बड़ा मज्मा और इसमें से सिर्फ़ छः आदमियों का हज क़ुबूल हुआ है। मुज़दलिफ़ा में इसी सोच में मेरी आंख लग गयी, तो वही दो फ़रिश्ते फिर नज़र आये और वही सवाल व जवाब जो ऊपर गुज़रे, आपस में किये। इसके बाद उस फ़रिश्ते ने कहा कि तुम्हें मालूम है कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने इसमें क्या हुक्म फ़रमा दिया? दूसरे ने कहा मुझे तो मालूम नहीं, तो उसने कहा यह फ़ैसला हुआ है कि उन छः में से हर एक के तुफ़ैल में एक एक लाख का हज क़ुबूल कर लिया जाये।

इब्ने मुवफ़्फ़क़ रह० कहते हैं कि फिर जो मेरी आंख खुली तो मुझे इतनी ख़ुशी हो रही थी कि बयान से बाहर है।

इन्हीं बुज़ुर्ग का एक और क़िस्सा लिखा है, वह कहते हैं कि मैंने एक साल हज किया। इसके बाद मुझे तरस आया कि बाज़ आदमी ऐसे भी होंगे जिनका हज क़ुबूल न हुआ हो, तो मैंने दुआ की कि या अल्लाह मैंने अपना हज उसको बख़्शा, जिसका हज क़ाबिले क़ुबूल न हो।

(रौज़ुर्रयाहीन में इस क़िस्से में कुछ अल्फ़ाज़ की कमी बेशी है, उस में लिखा है कि मैंने पचास से ज़्यादा हज किये और उन सबका सवाब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन और अपने वालिदैन को बख़्शता रहा। एक हज रह गया, मैंने अरफ़ात के मैदान में लोगों के रोने की आवाज़ सुनकर उसको बख़्श दिया, जिसका हज क़ुबूल न हुआ हो) इसके बाद मुज़्दलिफ़ा में मुझे ख़्वाब में अल्लाह जल्ल शानुहू की ज़ियारत हुई। हक़ तआला शानुहू ने फ़रमाया कि ऐ अली, तू मुझसे ज़्यादा सख़ी बनना चाहता है। मैंने सख़ावत पैदा की और मैंने सख़ी लोगों को पैदा किया। मैं तमाम सख़ी लोगों से ज़्यादा सख़ी, सारे करीमों से ज़्यादा करीम, सारे बख़्शिश करने वालों से ज़्यादा बख़्शिश करने वाला, मैंने हर उस शख़्स का हज, जो क़ाबिले क़ुबूल न था, उसके तुफ़ैल में क़ुबूल कर लिया, जिसका हज मक़्बूल था। *(इत्तिहाफ़)*

और रौज़ में है कि मैंने उन सबको बख़्श दिया और उनके साथ उन से कई चंद लोगों को और उनमें से हर शख़्स की सिफ़ारिश उसके घरवालों में, उसके दोस्तों में और उसके पड़ोसियों में क़ुबूल की।

अबू अब्दुल्लाह जौहरी रह० का भी एक क़िस्सा इस क़िस्म का रिसाले के ख़त्म पर हिकायात में नं० 13 पर आ रहा है और हज़रत ज़ैनुल आबिदीन रज़ि० के लब्बैक न कह सकने का क़िस्सा हिकायात में नं० 17 पर आ रहा है। इन वाक़िआत से मालूम हुआ कि अल्लाह जल्ल शानुहू के लुत्फ़ व करम से यह उम्मीद रखना चाहिए कि वह महज़ अपने करम से नवाज़ देगा।

एक हदीस में आया है कि वह शख़्स बहुत बड़ा गुनहगार है जो अरफ़ात के मैदान में भी यह समझे कि मेरी मग़्फ़िरत नहीं हुई। *(इत्तिहाफ़)*

(٧) عن ابی موسیٰ رفعه الی النبی صلی الله علیه وسلم قال الحاج یشفع فی اربعمائة اهل بیت اوقال من اهل بیته ویخرج من ذنوبه کیوم ولدته امه رواه البزار وفیه اولم یسم کذافی الترغیب.

7. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि हाजी की सिफ़ारिश चार सौ घरानों में मक़्बूल होती है या यह फ़रमाया कि उस के घराने में से चार सौ आदमियों के बारे में क़ुबूल होती है। रावी को शक हो गया कि क्या अल्फ़ाज़ फ़रमाये थे, और यह भी फ़रमाया कि हाजी अपने गुनाहों से ऐसा पाक हो जाता है, जैसा कि पैदाईश के दिन था।

फ़ायदाः- चार सौ आदमियों के बारे में सिफ़ारिश क़ुबूल होने का यह मतलब है कि इतने लोगों की मग़्फ़िरत का तो गोया अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से वायदा है और इससे ज़्यादा में कोई मानेअ् नहीं।

बहुत सी रिवायतों में यह वारिद हुआ है कि हाजी जिनके लिये दुआ-ए-मग़्फ़िरत करता है, वह क़ुबूल होती है।

हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रह० जो मशहूर सूफ़िया में हैं, एक मर्तबा अरफ़ात के मैदान में इर्शाद फ़रमाने लगे कि तुम लोगों का क्या ख़्याल है, अगर यह सारा का सारा मज्मा किसी करीम के दरवाज़े पर जाकर एक छदाम उससे मांगे, क्या वह करीम इंकार कर देगा? लोगों ने कहा, कभी भी इंकार नहीं कर सकता, फ़रमाने लगे कि ख़ुदा की क़सम! अल्लाह जल्ल शानुहू के नज़्दीक इन सब की मग़्फ़िरत कर देना, उस करीम के छदाम देने से भी ज़्यादा आसान है, अल्लाह तआला के करम के मुक़ाबले में यह कुछ भी नहीं। *(रौज़ुर्रयाहीन)*

(٨) عن ابن عمرؓ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم اذا لقيت الحاج فسلم عليه وصافحه ومره ان يستغفرلك قبل ان يدخل بيته فانه مغفور له رواه احمد كذا فى المشكوٰة

8. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जब किसी हाजी से मुलाक़ात हो तो उसको सलाम करो, उससे मुसाफ़ा करो और इस से पहले कि वह अपने घर में दाख़िल हो, अपने लिये दुआ-ए-मग़्फ़िरत की उससे दर्ख़्वास्त करो कि वह अपने गुनाहों से पाक साफ़ होकर आया है।

फ़ायदाः- एक हदीस में आया है कि मुजाहिद और हाजी अल्लाह का वफ़्द हैं, जो मांगते हैं, वह उनको मिलता है, जो दुआ करते हैं वह क़ुबूल होती है, और दूसरी अहादीस में भी मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ से यह मज़्मून वारिद हुआ है।

एक हदीस में खुद हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह दुआ आयी है कि या अल्लाह, तू हाजी की भी मग़्फ़िरत कर और जिस की मग़्फ़िरत की हाजी दुआ करे, उसकी भी मग़्फ़िरत फ़रमा।

एक हदीस में आया है कि हुज़ूर सल्ल० ने तीन मर्तबा यह दुआ की, इससे और भी ज़्यादा ताकीद मालूम होती है।

हज़रत उमर रज़ि० से नक़ल किया गया कि हाजी की भी अल्लाह के यहां से मग़्फ़िरत है और हाजी 20 रबीउल अव्वल तक जिसके लिये दुआ-ए-मग़्फ़िरत करे, उसकी भी मग़्फ़िरत है। सलफ़ (पहले बुज़ुर्गों) का मामूल था कि वे हुज्जाज की मुशायअत (रुख़्सत करते वक़्त दूर तक साथ चलना) भी करते थे और उनका इस्तिक़्बाल भी करते थे। और उनसे दुआ की दरख़्वास्त करते थे। (इतिहाफ़)

(٩) عن بريدةؓ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم النفقة فى الحج كالنفقة فى سبيل الله بسبعمائة ضعف . رواه احمد والطبرانى والبيهقى و اسناد احمد حسن كذا فى الترغيب.

9. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि हज में ख़र्च करना जिहाद में ख़र्च करने की तरह से एक (रूपया) का बदला सात सौ (रूपया) है।

फ़ायदा:- एक हदीस में आया है कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत आइशा रज़ि० से इर्शाद फ़रमाया कि तेरे उमरे का सवाब तेरे ख़र्च के बक़द्र है, यानी जितना ज़्यादा उसमें ख़र्च किया जायेगा, उतना ही सवाब होगा।

एक हदीस में है कि हज में ख़र्च करना अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करना है, जिसका सवाब सात सौ दर्जा मुज़ाअफ़ होता है। (कंज़)

एक हदीस में आया है कि हज में ख़र्च करना एक दिरम चार करोड़ दिरम के बराबर है। यानी एक रूपया चार करोड़ रूपये ख़र्च करने के बराबर है। इसके बाद भी अगर मुसलमान वहां जाकर रूपया ख़र्च करने में बुख़्ल और कंजूसी का ख़्याल करे तो किस क़दर ख़सारे की बात है।

मशाइख़ ने हज के आदाब में ख़र्च करने में तंगी न करना ख़ास तौर से ज़िक्र किया है।

इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि इसराफ़ से मुराद अच्छे अच्छे लज़ीज़ चीज़ों के खाने और पीने में ख़र्च करना मुराद है, लेकिन वहां के लोगों पर ख़र्च करने में कोई इसराफ़ है ही नहीं। मेरे मशाइख़ का इर्शाद है कि अगर खाने पीने की चीज़ों में भी वहां के ताजिरों की इआनत का इरादा कर ले, तो यह भी फिर अपनी ज़ात पर ख़र्च के बजाये वहां के अहले ज़रूरत पर ख़र्च बन जाता है, इसका ख़ुसूसियत से ख़्याल रखना चाहिए।

मुझे अपने आक़ा व मुर्शिद हज़रते अक़्दस मौलाना ख़लील अहमद साहिब नव्वरल्लाहु मर्क़दहू की हम रकाबी (साथ) में दो मर्तबा इस पाक ज़मीन पर हाज़िरी की सआदत नसीब हुई। मैंने हमेशा हज़रत का यह मामूल बड़ी ख़ुसूसियत से देखा कि वहां के क़ियाम में हिंद के वाक़िफ़ जाने वाले अगर कोई हदिया पेश करते तो अव्वल तो हज़रत बड़े इसरार से उसको यह कह कर वापस फ़रमाते कि यहां के लोग ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं, उनकी ख़िदमत में पेश किया जाये। मख़्सूस अहले फ़ज़्ल व कमाल का पता भी बता देते। इसके बाद अगर कोई इसरार करता तो मजबूरन हज़रत क़ुबूल फ़रमा कर इस नाकारा को इस इर्शाद के साथ मरहमत फ़रमा देते, इसकी कोई चीज़ बाज़ार से मंगा लेना कि यहां के ताजिरों की भी मदद करना चाहिए।

हज़रत उमर रज़ि० का इर्शाद है कि आदमी के करीम होने के आसार में से है कि उसके सफ़र का तोशा उम्दा हो।

उलमा ने लिखा है कि तोशा के उम्दा होने से ख़ुद उसका बेहतर होना भी मुराद हो सकता है और ख़र्च करने में तबीअत पर बार न हो, यह भी मुराद हो सकता है।

हज़रत उमर रज़ि० का दूसरा इर्शाद है कि बेहतरीन हाजी वह है, जिसकी नीयत में इख़्लास हो, नफ़क़ा बेहतर हो और अल्लाह के साथ यक़ीने कामिल हो।

(इत्तिहाफ़)

एक ज़ईफ़ हदीस में आया है कि जो शख़्स अल्लाह की रिज़ा की जगह ख़र्च करने में बुख़्ल करता है, उसको इससे कई गुना ज़्यादा अल्लाह की नाराज़ी में ख़र्च करना पड़ता है। और जो शख़्स किसी दुन्यवी ग़रज़ से हज्जे फ़र्ज़ को ताख़ीर करता है, उसकी यह ग़रज़ उस वक़्त तक मुअख़्ख़र कर दी जाती है जब तक लोग हज से फ़ारिग़ होकर न आ जायें। और जो शख़्स अपने किसी मुसलमान

भाई की मदद करने से पहलू तही करता है, उसको किसी गुनाह की चीज़ में इआनत (मदद) करना पड़ती है।

(तर्ग़ीब, और 'कंज़' में हज़रत अबू जुहैफ़ा कि रिवायत तिबरानी के हवाले से है)

(١٠) عن جابرؓ رفعه ماامعرحاج قط قيل لجابرؓ ماالامعار قال ماافتقر رواه الطبرانی فی الاوسط والبزّار ورجاله رجال الصحيح كذا فی الترغيب

10. हज़रत जाबिर रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल करते हैं कि हाजी फ़क़ीर हरगिज़ नहीं हो सकता।

फ़ायदाः- एक दूसरी हदीस में इर्शाद है कि हज और उमरे की कसरत फ़क्र को रोकती है। (कंज़)

एक और हदीस में है कि लगातार हज व उमरा बुरे ख़ात्मे से भी हिफ़ाज़त का सबब है। और फ़क्र को भी रोकते हैं। (कंज़)

एक हदीस में है कि हज करो, ग़नी बनोगे, सफ़र करो, सेहतयाब होगे। (कंज़)

यानी तब्दीले आब व हवा अक्सर सेहत का सबब होती है और बहुत कसरत से इसका तजुर्बा हुआ है।

एक हदीस में है कि लगातार हज व उमरा फ़क्र और गुनाहों को ऐसा दूर करते हैं, जैसा कि आग की भट्टी लोहे के मैल को दूर करती है। (कंज़)

(١١) عن عائشةؓ قالت استاذنت النبی صلی الله عليه وسلم فی الجهاد فقال جهادكن الحج (متفق عليه، مشكوٰة)

11. हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जिहाद में शिर्कत की इजाज़त मांगी। हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम्हारा जिहाद हज है।

फ़ायदाः- एक और हदीस में हज़रत आइशा रज़ि॰ से नक़ल किया है कि उन्होंने हुज़ूर सल्ल॰ से पूछा कि क्या औरतों पर भी जिहाद है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि हां, ऐसा जिहाद है जिसमें क़िताल नहीं और वह हज और उमरा है। (मिश्कात)

हज़रत हुसैन रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि एक शख़्स हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया मैं ज़ईफ़ भी हूं और कम हिम्मत भी हूं। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया आओ, मैं तुम्हें ऐसा जिहाद बताऊं, जिसमें कोई कांटा भी नहीं चुभता (यानी ज़ख़्म ज़रा भी नहीं) और वह है हज। (तर्ग़ीब)

एक हदीस में हज़रत आइशा रज़ि॰ से नक़ल किया है, उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह, हम देखते हैं कि जिहाद सब आमाल से अफ़्ज़ल है, क्या हम औरतें जिहाद न किया करें? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया तुम्हारे लिये अफ़ज़ल जिहाद हज्जे मक़बूल है। (तर्ग़ीब)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया है कि बूढ़े और ज़ईफ़ लोगों का और औरतों का जिहाद हज है। (तर्ग़ीब)

एक और हदीस में है कि बच्चे और बूढ़े और ज़ईफ़ आदमियों का और औरतों का जिहाद, हज और उमरा है। (कंज़)

इस क़िस्म के बहुत से इर्शादात अहादीस में वारिद हैं और इन सब के अलावा एक इर्शाद हुज़ूर सल्ल॰ का अहादीस में आया है और वह यह है कि हुज़ूर सल्ल॰ ने अपने हज के मौक़े पर औरतों से इर्शाद फ़रमाया कि यह हज है, जिसको तुम कर रही हो, इसके बाद अपने घर के बोरियों पर रहना।

इस हदीस पाक की वजह से उम्महातुल मुअ्मनीन में से हज़रत ज़ैनब रज़ि॰ और हज़रत सौदा रज़ि॰ ने तो कोई हज इसके बाद नहीं किया और यह फ़रमाया करती थीं कि जब हमने हुज़ूर सल्ल॰ से ख़ुद यह इर्शाद सुना है, फिर कैसे घर से सफ़र के लिये निकलें, लेकिन और बाक़ी अज़्वाजे मुतह्हरात पहली अहादीस की बिना पर हज और उमरे के लिये तशरीफ़ ले जाती रहीं। (तर्ग़ीब)

हुज़ूर सल्ल॰ के दोनों इर्शाद अपनी जगह पर बिल्कुल सही हैं और इन में कोई तआरूज़ (टकराव) नहीं। असल यह है कि औरतों का मस्अला बड़ा नाज़ुक है, उनका सफ़र बड़ी शरायत को चाहता है। इसलिये जहां तक हज और उमरे और उनकी फ़ज़ीलत का ताल्लुक़ है, औरतों के लिये वह बेहतरीन जिहाद है और बेहतरीन इबादत है, लेकिन चूंकि इसमें कुछ शरायत और पाबंदियां हैं, जिनका हासिल होना अक्सर दुश्वार हो जाता है, इसलिये एहतियातन हुज़ूर सल्ल॰ ने यह फ़रमा दिया, वह पाबंदी एहतियात की और महरम के वजूद की है।

बहुत सी अहादीस में यह इर्शाद है कि औरत के लिये सफ़र नाजायज़ है, उस वक़्त तक कि उसके साथ कोई महरम न हो।

एक हदीस में है कि कोई मर्द हरगिज़ किसी अजनबी औरत के साथ तंहा मकान में न रहे और कोई औरत हरगिज़ बग़ैर महरम के सफ़र न करे।

(मिश्कात)

एक हदीस में वारिद हुआ है कि औरत पर्दे की चीज़ है। जब वह घर से निकलती है तो शैतान उसके पीछे लग जाता है और उसकी फ़िक्र में रहता है।

एक हदीस में है कि जिस जगह तंहा अजनबी मर्द व औरत होंगे, तीसरा शख़्स वहां शैतान होगा। *(मिश्कात)*

एक हदीस में है कि (ना-महरम) औरतों के पास जाने से बहुत बचो। किसी ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर, अगर देवर हो? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि देवर तो मौत है। *(मिश्कात)*

मौत होने का मतलब यह है कि उसके लिये हलाकत के अस्बाब बवजह हर वक़्त के क़ुर्ब के बहुत ज़्यादा पैदा हो सकते हैं। इस क़िस्म की बहुत सी वईदें अहादीस में वारिद हैं। और सफ़र में बसा औक़ात अजनबी मर्दों के साथ तंहा मकान में रह जाने की नौबत आ जाती है और बग़ैर महरम के तो सफ़र जायज़ ही नहीं, चाहे तंहा रहने की नौबत आये या न आये। पस इस सूरत में नेकी बर्बाद, गुनाह लाज़िम का क़िस्सा हो जाता है।

(۱۲) عن ابن عباسؓ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من اراد الحج فليتعجل رواه ابوداؤد وفي الترغيب بلفظ اخر عن الاصبهاني.

12. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो हज का इरादा करे, उसको जल्दी करना चाहिए।

फ़ायदाः- दूसरी हदीस में यह इर्शाद है कि फ़र्ज़ हज में जल्दी करो, न मालूम क्या बात पेश आ जाये। *(तर्ग़ीब)*

एक और हदीस में इर्शाद है कि हज में जल्दी करो, किसी को बाद की क्या ख़बर है कि कोई मर्ज़ पेश आ जाये या कोई और ज़रूरत दर्मियान में लाहिक़ हो जाये। *(कंज़)*

एक और हदीस में है कि हज निकाह से मुक़द्दम है। *(कंज़)*

एक हदीस में है कि जिस को हज करना है, जल्दी करना चाहिए, कभी आदमी बीमार हो जाता है, कभी सवारी का इंतिज़ाम नहीं रहता, कभी और कोई ज़रूरत लाहिक़ हो जाती है। *(कंज़)*

एक हदीस में है कि हज करने में जल्दी करो, न मालूम क्या उज़्र पेश आ जाये। *(कंज़)*

इन अहादीस की बिना पर इमामों में से एक बड़ी जमाअत का मज़हब यह है कि जब किसी शख़्स पर हज फ़र्ज़ हो जाये तो उसको फ़ौरन अदा करना वाजिब है, ताख़ीर करने से गुनहगार होता है।

एक हदीस में आया है कि फ़र्ज़ हज अदा करो, वह बीस मर्तबा जिहाद करने से बढ़ा हुआ है। *(कंज़)*

एक हदीस में है कि हज करना जिहाद है और उमरा करना नफ़्ल है। *(कंज़)*

(۱۳) عن ابی هریرةؓ قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم من خرج حاجًا فمات کتب له اجر الحاج الی یوم القیمة ومن خرج معتمرا فمات کتب له اجر المعتمر الی یوم القیمة ومن خرج غازیا فمات کتب له اجر الغازی الی یوم القیمة رواه ابو یعلی من روایة ابن اسحٰق وبقیة رواته ثقات کذا فی الترغیب.

13. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स हज के लिये जाये और रास्ते में इंतिक़ाल कर जाये, उसके लिये क़ियामत तक हज का सवाब लिखा जायेगा और इसी तरह जो शख़्स उमरे के लिये जाये और रास्ते में इंतिक़ाल कर जाये उसको क़ियामत तक उमरे का सवाब मिलता रहेगा, और जो शख़्स जिहाद के लिये निकले और रास्ते में इंतिक़ाल कर जाये, उसके लिये क़ियामत तक मुजाहिद का सवाब लिखा जायेगा।

फ़ायदाः- एक और हदीस में वारिद है कि जो शख़्स हज या उमरे के लिये निकले और मर जाये, न उसकी अदालत में पेशी है, न हिसाब किताब उससे कह दिया जायेगा, कि जन्नत में दाख़िल हो जा। *(तर्ग़ीब)*

एक और हदीस में इर्शाद है कि बैतुल्लाह इस्लाम के स्तूनों में से एक स्तून है, जो शख़्स हज या उमरे के लिये निकले और रास्ते में मर जाये तो जन्नत

में दाख़िल हो जायेगा और जो फ़राग़त के बाद वापस हो, वह अज्र और ग़नीमत के साथ वापस होगा। *(तर्ग़ीब)*

ग़नीमत का मतलब यह है कि दुनिया में भी उस ख़र्च का बदला मिलता है, जो हज में ख़र्च किया, जैसा कि हदीस नं॰ 10 के ज़ैल में गुज़र चुका है।

एक और हदीस में इर्शाद है कि जो मक्का के रास्ते में जाते हुए या वापसी में मर जाये, उसकी न पेशी है न हिसाब किताब है। *(तर्ग़ीब)*

एक हदीस में है कि जो शख़्स हज या उमरे के इरादे से मक्का के रास्ते में मर जाये न उसकी पेशी है न हिसाब किताब है वह सीधा जन्नत में दाख़िल हो जायेगा। *(कंज़)*

एक हदीस में है कि आदमी के मरने की बेहतरीन हालत यह है कि हज से फ़राग़त पर या रमज़ान के रोज़े रख कर मरे। *(कंज़)*

यानी ये दोनों हालतें ऐसी हैं कि गुनाहों से पाक साफ़ होगा। एक हदीस में है कि जो एहराम की हालत में मरेगा, वह हश्र में लब्बैक कहता हुआ उठेगा। *(कंज़)*

(١٤) عن ابن عباس رضی اللّٰہ تعالیٰ عنہما قال ان امرأة من خثعم قالت یارسول اللّٰہ ان فریضة اللہ فی الحج ادرک ابی شیخًا کبیرًا لا یثبت علی الراحلة افاحج عنہ قال نعم وذلک فی حجة الوداع (متفق علیہ مشکوٰة)

14. एक सहाबी औरत रज़ि॰ ने हुज़ूर सल्ल॰ से दर्याफ़्त किया कि हुज़ूर, अल्लाह के फ़रीज़ा-ए-हज ने मेरे बाप को ऐसी हालत में पाया कि वह बूढ़े हैं, सवारी पर भी सवार नहीं हो सकते, क्या मैं उनकी तरफ़ से हज्जे बदल करूँ? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि हां उनकी तरफ़ से हज करो।

फ़ायदा:- एक दूसरी हदीस में है कि एक सहाबी मर्द ने हुज़ूर सल्ल॰ से दर्याफ़्त किया कि मेरी हमशीरा ने हज की नज़्र की थी। अब उनका इंतिक़ाल हो गया, क्या करना चाहिए? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि अगर उनके ज़िम्मे किसी का क़र्ज़ होता तो तुम अदा करते या न करते? उन्होंने अर्ज़ किया जी हुज़ूर सल्ल॰, अदा करता। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि यह अल्लाह का क़र्ज़ है, इसको अदा करो। *(मिश्कात)*

एक और सहाबी रज़ि॰ का क़िस्सा है कि उन्होंने हुज़ूर सल्ल॰ से अर्ज़ किया कि मेरे वालिद बहुत बूढ़े हैं, न हज कर सकते हैं, न उमरा कर सकते हैं। न सफ़र कर सकते हैं। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि अपने वालिद की तरफ़ से हज भी करो, उमरा भी करो। *(मिश्कात)*

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ ने इस नौअ् (क़िस्म) के सवाल के जवाब में फ़रमाया, अगर तेरे बाप के ज़िम्मे क़र्ज़ा होता और तू अदा करता तो वह अदा हो जाता या नहीं? उन्होंने अर्ज़ किया अदा हो जाता। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि, फिर अल्लाह तो बड़े रहम वाले हैं, (यानी वह क़र्ज़ा क्यों न क़ुबूल करेंगे?) अपने बाप की तरफ़ से हज कर। *(कंज़)*

एक हदीस में इर्शाद है कि, जो शख़्स अपने वालिदैन की तरफ़ से उनके इंतिक़ाल के बाद हज करे, उसके लिये जहन्नम की आग से ख़लासी है, और वालिदैन के लिये पूरा हज लिखा जाता है। उसके सवाब में कोई कमी नहीं होती और किसी अपने क़रीबी रिश्तेदार के लिये इससे बढ़कर सिला रहमी नहीं है कि उसके मरने के बाद उसकी तरफ़ से हज करके उस की क़ब्र में पहुँचाये। *(कंज़)*

एक सहाबी रज़ि॰ ने दर्याफ़्त किया कि या रसूलल्लाह, सल्ल॰ जब मेरे वालिदैन ज़िंदा थे तो मैं उनके साथ हुस्ने सुलूक किया करता था। अब उन का इंतिक़ाल हो गया है, अब मैं उनके साथ हुस्ने सुलूक करना चाहता हूँ तो इसका क्या तरीक़ा है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि जब अपने लिये नमाज़ पढ़ो तो उनके लिये भी नमाज़ पढ़ो। यानी नमाज़ पढ़ कर उसका सवाब उनको पहुँचाओ और जब अपने लिये रोज़े रखो तो उनके लिये भी रोज़े रखो।

एक सहाबी रज़ि॰ ने हुज़ूर सल्ल॰ से दर्याफ़्त किया कि हम अपने मुर्दों की तरफ़ से सदक़ा करते हैं, हज करते हैं, उनके लिये दुआ-ए-मग़्फ़िरत करते हैं, यह उन तक पहुँचता है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, पहुँचता है और वे इससे ऐसे खुश होते हैं जैसा कि तुम्हारे पास तबाक़ में कोई हदिया पेश किया गया हो। *(मनासिके क़ारी)*

दूसरे की तरफ़ से हज दो तरह किया जाता है।

1. एक सूरत तो यह है कि किसी की तरफ़ से हज्जे नफ़्ल करे, इसके लिये तो कोई शर्त नहीं, जिसका दिल चाहे,जिसकी तरफ़ से चाहे, हज्जे नफ़्ल या

उमरा या तवाफ़ कर सकता है।

2. दूसरी सूरत यह है कि जिसकी तरफ़ से हज्जे बदल करे, उसके ज़िम्मे हज फ़र्ज़ हो, इसके लिये कुछ शराइत हैं, जिनको वक़्त पर उलमा से तहक़ीक़ कर लेना चाहिए।

(۱۵) ان الله ليدخل بالحجة الواحدة ثلثة نفر الجنة الميت والحاج عنه والمنفذ لذلك عبهب عن جابرؓ كذا فى الكنز.

15. हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि हक़ तआला शानुहू (हज्जे बदल में) एक हज की वजह से तीन आदमियों को जन्नत में दाख़िल फ़रमाते हैं। एक मुर्दा (जिसकी तरफ़ से हज्जे बदल किया जा रहा है) दूसरा हज करने वाला, तीसरा वह शख़्स (वारिस वग़ैरह) जो अब हज करा रहा है (यानी हज्जे बदल के लिये रूपया दे रहा है।)

फ़ायदा:- एक दूसरी हदीस में है कि जो शख़्स किसी की तरफ़ से हज करे, उस हज करने वाले को भी उतना ही सवाब होता है, जितना उस शख़्स को हो, जिसकी तरफ़ से हज किया जाता है। *(कंज़)*

इब्ने मुवफ़्फ़क़ रह॰ कहते हैं कि मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से मुतअद्दद हज किये। एक मर्तबा ख़्वाब में हुज़ूर सल्ल॰ की ज़ियारत हुई। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि इब्नुल मुवफ़्फ़क़ तूने मेरी तरफ़ से हज किये। मैंने अर्ज़ किया जी हुज़ूर किये। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, तूने मेरी तरफ़ से लब्बैक कहा। मैंने अर्ज़ किया कि हज़रत कहा। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि मैं क़ियामत के दिन उसका बदला दूँगा। कि हश्र के मैदान में तेरा हाथ पकड़ कर जन्नत में दाख़िल कर दूँगा और लोग अपना हिसाब किताब करते रहेंगे। *(इत्तिहाफ़)*

एक हदीस में आया है कि किसी दूसरे की तरफ़ से हज करने में चार शख़्सों को हज का सवाब मिलता है, एक वसीयत करने वाले को, दूसरे उसको जो उस वसीयत को लिखे, तीसरे रूपया ख़र्च करने वाले को, चौथे हज करने वाले को। *(कंज़)*

लेकिन एक बात का निहायत एहतिमाम से ख़्याल रखना चाहिए, वह यह कि हज्जे बदल में नीयत ख़ालिस रखने की एहतिमाम से कोशिश करे, मक़सद

महज़ हज व ज़ियारत और दूसरे की इआनत हो। इस हज की वजह से कोई दुन्यवी मनफ़अत मक़सूद न हो। अगर ऐसा हुआ तो हज कराने वाले को तो सवाब मिल ही जायेगा, मगर उस हज करने वाले का सवाब तो ख़त्म हुआ।

इमाम ग़ज़ाली रह० ने लिखा है कि जो शख़्स उजरत के साथ हज्जे बदल करता है, वह दीन के अमल से दुनिया कमा रहा है, इसलिये बेहतर यह है कि उसको मुस्तक़िल मश्ग़ला और तिजारत न बनाये कि अल्लाह जल्ल शानुहू दीन के तुफ़ैल दुनिया तो अता फ़रमा देते हैं, लेकिन दुनिया के बदले दीन अता नहीं फ़रमाते, यानी उसकी ग़रज़ तो दुनिया का ईंधन जमा करना हो और उसको सवाब मिल जाये, यह नहीं होता। *(इत्तिहाफ़)*

हज न करने की वअ़ीद में

हज अर्काने इस्लाम में एक अहम रूक्न है और इसी पर अर्कान की तमामी हुई है, जैसा कि पहली फ़स्ल में गुज़र चुका है, इसलिये इसमें कोताही पर जितनी सख़्ती हो, वह क़रीने क़यास है। अल्लाह जल्ल शानुहू का इर्शाद है।

आयात

وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا ؕ وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ○ (آل عمران ع ١٠)

और अल्लाह जल्ल शानुहू के (खुश करने के) वास्ते लोगों के ज़िम्मे इस मकान (यानी बैतुल्लाह) का हज (फ़र्ज़) है, उस शख़्स के ज़िम्मे है, जो वहां जाने की सबील रखता हो, और जो मुंकिर हो तो (अल्लाह जल्ल शानुहू का क्या नुक़्सान है) अल्लाह तआला तमाम जहांन से ग़नी हैं। (उनको क्या परवाह?)

फ़ायदा:- उलमा ने लिखा है कि हज की फ़रज़ियत की इब्तिदा इसी

आयते शरीफ़ा के नुज़ूल से हुई। (ऐनी)

इस आयते शरीफ़ा में बहुत सी ताकीदें जमा हो गयीं -

1. अव्वल "लिल्लाहि" का लाम ईजाब के लिये है जैसा कि अल्लामा ऐनी रह॰ ने लिखा।

2. दूसरे "अलन्नासि" का लफ़्ज़ जो निहायत लुज़ूम पर दलालत करता है, यानी लोगों की गरदनों पर यह हक़ लाज़िम है।

3. तीसरे "अलन्नासि" के बाद "मनिस्त-ता-अ" को ज़िक्र करना, जिसमें दो तरह की ताकीद है, एक बदल की दूसरे इज्माल के बाद तफ़्सील की।

4. चौथे हज न करने वाले को "मन् क-फ़-र" से ताबीर किया।

5. पांचवीं उस पर अपने इस्तिग़ना और बे-परवाही का ज़िक्र फ़रमाया जो बड़े गुस्से की अलामत है और उसकी रूसवाई पर दलालत करता है।

6. छठे उसके साथ सारे जहान से इस्तिग़्ना का ज़िक्र फ़रमाया जिससे और भी ज़्यादा ग़ुस्से का इज़्हार होता है। (इत्तिहाफ़)

इसमें कई नम्बर ऐसे हैं। जो अरबी से ताल्लुक़ रखते हैं, मेरा मक़्सद उनके ज़िक्र करने से यह है कि इस एक ही आयते शरीफ़ा में कई वजह से ताकीद और हज न करने वालों पर इताब है।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ से नक़ल किया गया है कि जो शख़्स तन्दुरूस्त हो और पैसे वाला हो कि हज को जा सके और फिर बग़ैर हज किये मर जाये, क़ियामत में उसकी पेशानी पर काफ़िर का लफ़्ज़ लिखा हुआ होगा। इसके बाद उन्होंने यह आयते शरीफ़ा "व मन क-फ़-र" आख़िर तक पढ़ी। (दुर्रे मंसूर)

हज़रत सईद बिन जुबैर रह॰, इब्राहीम नख़ई रह॰, मुजाहिद ताऊस रह॰ जो ताबेईन उलमा में मशहूर हैं, इन हज़रात में से हर एक से ये नक़ल किया गया कि अगर मुझे किसी शख़्स के मुताल्लिक़ मालूम हो जाये कि वह ग़नी था, उस पर हज वाजिब था, फिर बग़ैर हज किये मर गया तो मैं उसके जनाज़े की नमाज़ न पढ़ूं। (इत्तिहाफ़)

अगरचे अइम्मा-ए-अर्बअ: के नज़दीक हज न करने से आदमी काफ़िर नहीं होता, जब तक कि हज का इंकार न करे, लेकिन जो वईदें ऊपर ज़िक्र की गयीं, वे क्या कम हैं और आइंदा जो हुज़ूर सल्ल॰ के इर्शादात इस बारे में आ रहे

हैं, ये मज़ीद बर आं। (यानी वे इरशादात इसके अलावा हैं।)

وَاَنْفِقُوْا فِیْ سَبِیْلِ اللّٰہِ وَلَا تُلْقُوْا بِاَیْدِیْکُمْ اِلَی التَّھْلُکَةِ ۛ (بقرہ ع ۲٤)

और तुम लोग ख़र्च किया करो अल्लाह के रास्ते में और अपने ही हाथों अपने आप को हलाकत में न डालो।

फ़ायदाः- एक जमाअते मुफ़स्सिरीन से यह नक़ल किया गया कि इस आयते शरीफ़ा में अल्लाह के हुक़ूक़े वाजिबा में ख़र्च न करने पर वईद है और ज़ाहिर है कि जब हज जैसे अहम फ़रीज़े में कोई शख़्स अल्लाह के दिये हुए माल को ख़र्च नहीं करेगा, तो उसकी अपने हाथों हलाकत में क्या शक है।

(۱) عن علیؓ قال قال رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم من ملك زادًا وّراحلة تبلغه الی بیت اللّٰہ ولم یحج فلا علیه ان یموت یهودیا اونصرانیا وذلك انّ اللّٰہ تبارك وتعالٰی یقول وَلِلّٰہِ عَلَی النَّاسِ حِجُّ الْبَیْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ اِلَیْهِ سَبِیْلًا ط رواه الترمذی وقال هذا حدیث غریب وفی اسناده مقال کذا فی المشکوٰة

1. हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि जिस शख़्स के पास इतना ख़र्च हो और सवारी का इंतिज़ाम हो कि बैतुल्लाह शरीफ़ जा सके और फिर वह हज न करे तो कोई फ़र्क़ नहीं इस बात में कि वह यहूदी होकर मर जाये या नसरानी होकर। इस के बाद हुज़ूर सल्ल॰ ने अपने इस इर्शाद की ताईद में वह आयत पढ़ी जो ऊपर गुज़री "व लिल्लाहि अलन्ना-सि हिज्जुल् बैति"

फ़ायदाः- मुहद्दिसीन के क़वाइद के मुवाफ़िक़ इस हदीस की सनद में कलाम है, लेकिन ऊपर की आयते शरीफ़ा और दूसरी रिवायात से इस हदीस शरीफ़ की ताईद होती है।

इमाम ग़ज़ाली रह॰ फ़रमाते हैं कि कितनी अहम इबादत है कि इस का छोड़ने वाला गुमराही में यहूद और नसारा के बराबर शुमार होता है।

(۲) عن ابی امامة قال قال رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم من لم یمنعه من الحج حاجة ظاهرة اوسلطان جابر اومرض حابس فمات ولم یحج فلیمت ان شاء یهودیا وان شاء نصرانیا رواه الدارمی کذا فی المشکوٰة وفی الاتحاف روی الحدیث بالفاظ مختلفة وکذا بسط طرقه السیوطی فی الدر

2. हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि जिस शख़्स के लिये कोई वाक़ई मजबूरी हज से मानेअ् न हो, ज़ालिम बादशाह की तरफ़ से रोक न हो या ऐसा शदीद मर्ज़ न हो जो हज से रोक दे फिर वह बग़ैर हज किये मर जाये तो उसको इख़्तियार है कि चाहे यहूदी हो कर मरे या नसरानी मरे।

फ़ायदा:- हज़रत उमर रज़ि॰ से भी यह मज़्मून नक़ल किया गया कि उन्होंने तीन दफ़ा फ़रमाया कि ऐसा शख़्स चाहे यहूदी होकर मरे, चाहे नसरानी मरे।

दूसरी हदीस में हज़रत उमर रज़ि॰ से यह नक़ल किया गया कि जो शख़्स हज की ताक़त रखता हो और हज न करे। क़सम खाकर कह दो कि वह नसरानी मरा है या यहूदी मरा है। *(कंज़)*

हज़रत उमर रज़ि॰ का यह इर्शाद मुम्किन है कि उनकी यही तहक़ीक़ हो, वरना उलमा के नज़दीक हज न करने से काफ़िर नहीं होता, इंकार से काफ़िर होता है।

एक और हदीस में हज़रत उमर रज़ि॰ से नक़ल किया गया कि मेरा दिल चाहता है कि तमाम शहरों में ऐलान करा दूँ कि जो शख़्स बावजदू क़ुदरत के हज न करे, उस पर जिज़्या मुक़र्रर कर दिया जाये। यह मुसलमान नहीं, मुसलमान नहीं। *(कंज़ व इत्तिहाफ़)*

जिज़्या काफ़िरों पर मुक़र्रर किया जाता है, मुसलमान पर जिज़्या नहीं होता।

(٣) من كان له مال يبلغه حج بيت ربه او تجب عليه فيه الزكوة فلم يفعل سأل الرجعة عند الموت. (ت عن ابن عباس كنز)

3. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ ने फ़रमाया कि जिस शख़्स के पास इतना माल हो जो हज कर सके और हज न करे या इतना माल हो जिस पर ज़कात वाजिब हो और ज़कात अदा न करे, वह मरते वक़्त दुनिया में वापस आने की तमन्ना करेगा।

फ़ायदा:- तमन्ना करने से क़ुरआन पाक की उस आयत शरीफ़ा की तरफ़ इशारा है, जिसमें इर्शाद है:-

حَتّٰى اِذَاجَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ o لَعَلِّىْٓ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ كَلَّآ اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَآئِلُهَا وَمِنْ وَّرَآئِهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ o (مؤمنون)

तर्जुमाः- हत्ता कि जब उनमें से किसी को मौत आने लगती है, उस वक़्त कहता है कि "ऐ मेरे रब, मुझको दुनिया में वापस कर दीजिये ताकि मैं जिस (माल व मताअ़) को छोड़ आया हूँ उसमें फिर नेक काम करूँ। (अल्लाह जल्ल शानुहू फ़रमाते हैं) ऐसा हरगिज़ नहीं होगा। यह उस की एक बात है जिसको वह कहे जा रहा है और इनके आगे बर्ज़ख़ का आलम (यानी क़ब्र में रहना) है क़ियामत तक के लिये।

हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि गुनाहगारों के लिये क़ब्र में हलाकत है कि काले सांप उनके सर से और पांव से डसना शुरू करते हैं, यहां तक कि डसते डसते बीच के हिस्से में सर और पांव वाले मिल जाते हैं। यही वह बर्ज़ख़ का अ़ज़ाब है, जिसका इस आयते शरीफ़ा में ज़िक्र है। *(दुर्रे मंसूर)*

एक हदीस में आया है कि, हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ ने फ़रमाया कि जिस शख़्स के पास हज को जाने का सामान हो और हज न करे या उसके पास माल हो और ज़कात अदा न करे, वह मरते वक़्त दुनिया में वापस किये जाने की दख़्र्वास्त करेगा, किसी शख़्स ने अर्ज़ किया कि दुनिया में वापसी की तमन्ना काफ़िर करेंगे। यानि ये आयते शरीफ़ा मुसलमानों के लिये नहीं है वे दुनिया में वापसी की तमन्ना नहीं करेंगे। हज़रत इब्ने अब्बाए रज़ि॰ ने फ़रमाया कि मैं क़ुरआन पाक की दूसरी आयतें सुनाता हूँ, जिनमें मुसलमानों ही का ज़िक्र है। इसके बाद इब्ने अब्बास रज़ि॰ ने सूरः मुनाफ़िक़ून की आख़िरी आयतें,

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ

आख़िर सूरः तक पढ़ीं जिनका तर्जुमा यह है कि -

ऐ ईमान वालो, तुमको तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न करने पायें और जो ऐसा करेगा (कि उसके माल-औलाद उसको अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल कर दें) यही लोग ख़सारे वाले हैं और हमने जो कुछ माल दिया है उसमें से इससे पहले पहले (अल्लाह के कामों में) ख़र्च कर लो कि तुम में से किसी के (सर पर) मौत आ जाये और वह (हसरत और तमन्ना से) कहने लगे, ऐ मेरे रब, मुझ को थोड़े दिन की और मुहलत क्यों न दी॰ कि मैं ख़ैरात दे लेता और नेक काम करने वालों में शामिल हो जाता। (अब यह तमन्ना बेकार है, इसलिये कि) अल्लाह जल्ल शानुहू जब किसी की उम्र ख़त्म हो जाये, तो हरगिज़ मोहलत नहीं देते और अल्लाह तआ़ला को तुम्हारे सब कामों की पूरी

ख़बर है।

एक दूसरी हदीस में है कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ ने यही आयते शरीफ़ा "या अय्युहल्लज़ी-न आमनू" पढ़ी और फ़रमाया कि यह मुसलमान का ज़िक्र है कि जब उसको मौत आती है और उसके पास माल हो, जिसकी ज़कात अदा न की हो या हज न किया हो और अल्लाह के हक़ अदा न किये हों, वह मौत के वक़्त दुनिया में वापस आने की दरख़्वास्त करता है, लेकिन अल्लाह जल्ल शानुहू का इर्शाद है कि "व लंय्युअख़्ख़िरल्लाहु नफ़्सन्" (आयत) अल्लाह जल्ल शानुहू उसको हरगिज़ मोहलत नहीं देते, जिसकी उम्र की मीआद ख़त्म हो चुकी हो। *(दुर्रे मंसूर)*

(٤) عن ابی سعید الخدری ان رسول الله صلی الله علیه وسلم قال یقول الله عزوجل ان عبدًا صححت له جسمه ووسعت علیه فی المعیشة تمضی علیه خمسة اعوام لا یفد الی المحروم رواه ابن حبان فی صحیحه وقال علی بن المنذر اخبرنی بعض اصحابنا کان حسن بن حی یعجبه هذا الحدیث وبه یاخذ ویحب للرجل الموسر الصحیح ان لا یترك الحج خمس سنین کذا فی الترغیب وفی الباب عن خبابٌ وابی هریرةٌ کما فی الکنز.

4. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि अल्लाह जल्ल शानुहू का फ़रमान है कि जो बंदा ऐसा हो कि मैंने उसको सेहत अता कर रखी हो, और उसकी रोज़ी में वुसअत दे रखी हो और उसके ऊपर पांच साल ऐसे गुज़र जायें कि वह मेरे दरबार में हाज़िर न हो, वह ज़रूर महरूम है।

फ़ायदा:- इस मज़्मून की कई हदीसें रिवायत की गयी है। इस हदीस का तक़ाज़ा यह था कि हर साहिबे सरवत पर अगर उसमें हज की ताक़त हो तो हर पांच साल में एक मर्तबा हज फ़र्ज़ होता लेकिन चूंकि दूसरी अहादीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से साफ़ लफ़्ज़ों में यह साबित हो गया कि हज उम्र भर में एक ही मर्तबा फ़र्ज़ है, इसलिये इस हदीस को फ़र्ज़ पर तो हमल नहीं किया जाता, लेकिन ख़ैर व बरकत की महरूमी से क्या इंकार है, जबकि अल्लाह जल्ल शानुहू का इर्शाद भी है और उसकी अता की हुई सेहत और रिज़्क़

की वुसअत भी है। ऐसी हालत में अगर कोई दूसरी दीनी ज़रूरत मुक़द्दम न हो तो फिर हाज़िर होना ही चाहिए। अलबत्ता अगर कोई दूसरी दीनी ज़रूरत राजेह हो तो वह मुक़द्दम होगी और इसी तरह अगर फ़ुक़रा की कसरत हो तो सदक़ा हज्जे नफ़्ल से अफ़ज़ल होगा।

(٥) روی عن ابی جعفر محمد بن علیؒ عن ابیه عن جده قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم مامن عبد ولا امة یضن بنفقة ینفقها فیما یرضی الله الا انفق اضعافها فیما یسخط الله ومامن عبد یدع الحج لحاجة من حوائج الدنیا الارأی المحلقین قبل ان تقضی تلك الحاجة یعنی حجة الاسلام ومامن عبدیدع المشی فی حاجة اخیه المسلم قضیت اولم تقض الاابتلی بمعونة من مائم علیه ولا یوجر فیه . رواه الاصبهانی وفیه نکارة کذا فی الترغیب ورواه فی مجمع الزوائد بروایة الطبرانی فی الکبیر عن ابی جحیفة وقال فیه عبید بن القاسم الاسدی وهو متروك قلت وهو من رواة ابن ماجه وذکره صاحب الکنز.

5. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल किया गया कि जो कोई भी मर्द या औरत किसी ऐसे ख़र्च में बुख़्ल करे जो अल्लाह की रिज़ा का सबब हो तो वह उससे बहुत ज़्यादा ऐसी जगह ख़र्च करेगा, जो अल्लाह की नाराज़ी का सबब हो, और जो शख़्स किसी दुन्यवी ग़रज़ से हज को जाना मुलतवी करेगा, तो वह अपनी उस ग़रज़ के पूरा होने से पहले देख लेगा कि लोग हज से फ़ारिग़ होकर आ गये, और जो शख़्स किसी मुसलमान की मदद में पांव हिलाने से गुरेज़ करेगा, उसको किसी गुनाह की इआनत में मुब्तला होना पड़ेगा, जिसमें कुछ भी सवाब न हो।

फ़ायदा:- मुहद्दिसीन रहिमहुमुल्लाह के क़वाइद के मुवाफ़िक़ यह रिवायत ज़ईफ़ है, लेकिन ऐसे उमूर में ज़ईफ़ रिवायत ज़िक्र की जाती है, इसलिये मुहद्दिसीन इसको ज़िक्र फ़रमाते हैं, इससे क़त्ए नज़र तजुर्बे से भी इसकी ताईद होती है। जो लोग उमूरे ख़ैर से बचा बचा कर रखते हैं ख़्वाह म ख़्वाह मुक़द्दमात वग़ैरह में, रिश्वतों में और उनसे बढ़ कर बाज़ औक़ात हरामकारियों में, नाच गानों और सिनेमाओं में ख़र्च होने लगता है। अगर अल्लाह की इस अता फ़रमायी हुई दौलत को ख़ैर के कामों में आदमी ख़र्च करे, तो फिर इन बलाओं से हिफ़ाज़त

रहे। यह अम्र ज़रूर क़ाबिले लिहाज़ है कि ये वईदें उसी वक़्त हैं, जबकि इस्तिताअत (गुन्जाइश) के बावजूद फ़र्ज़ हज अदा न करे। और इसके बिल मुक़ाबिल नादारी की हालत में बिल खुसूस जबकि दूसरों के हुक़ूक़ अपने ज़िम्मे हों, उनके हुक़ूक़ की ज़िम्मेदारी नफ़्ल हज से कहीं ज़्यादा है।

इब्ने अमीरूल हाज्ज रह० मदख़ल में लिखते हैं कि बाज़ आदमी अपने अहल व अयाल को ज़ियाअ् में (यानी उनका कोई इंतिज़ाम किये बग़ैर) छोड़ कर हज को चले जाते हैं, हालांकि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि आदमी के गुनाह के लिये यही काफ़ी है कि जिस का खाना अपने ज़िम्मे है, उसको ज़ाया कर दे।

तीसरी फ़स्ल

इस सफ़र की मशक़्क़तों के तहम्मुल में

सफ़र ख़्वाह (चाहे) कैसा ही हो, वह फ़ी नफ़्सिही (अपने आप में) मशक़्क़त का सबब है, इसी वजह से शरीअत ने इसमें ख़ुसूसी रिआयत यहां तक फ़रमायी कि फ़र्ज़ नमाज़ें चार रक्अत की जगह दो रक्अत कर दीं।

खुद नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि अस्स-फ़-रु क़ित्अतुम मिनन्नारि० (यानी सफर आग का एक टुकड़ा है) पस मशक्कत तो इसमें होती ही है और फिर यह सफ़र तो खुसूसियत से आशिक़ाना सफ़र है, उश्शाक़ ही की तरह इसको तै करना चाहिए कि उनको कोई बुरा कहे, गालियां दे, पत्थर मारे, जो चाहे करे वे अपने ख़्यालात में मस्त और अपने ज़ौक़ व शौक़ में शादां और फ़रहां रहते हैं, और हर मशक़्क़त का बशर्ते कि किसी दूसरी दीनी मस्लहत या सेहत के ख़िलाफ़ न हो, तहम्मुल करना ज्यादती-ए-अज्र का सबब है।

इमाम ग़ज़ाली रह॰ ने लिखा है कि इस सफ़र में आदमी जो कुछ ख़र्च करे, उसको निहायत खुश दिली से करे और जो नुक़्सान जानी या माली पहुंचे उसको तीबे ख़ातिर से बर्दाश्त करे कि यह उसके हज के क़ुबूल होने की अलामत है। हज के रास्ते में मुसीबत, जिहाद में ख़र्च करने के बराबर है, कि एक दिरम के बदले में सात सौ दिरम मिलते हैं और हज के रास्ते में तक्लीफ़ का उठाना जिहाद में तक्लीफ़ उठाने के बराबर है, इसलिये जो मशक़्क़त या नुक़्सान बर्दाश्त करेगा, अल्लाह के यहां उसका बड़ा अज्र है, वह ज़ाया नहीं है। *(इत्तिहाफ़)*

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद सही हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल॰ ने हज़रत आइशा रज़ि॰ से इर्शाद फ़रमाया कि -:

لٰكِنَّ اَجْرَكِ عَلٰى قَدْرِ نَصَبِكِ

तेरे उमरे का सवाब बक़द्र तेरी मशक़्क़त के है, इसलिये यह बात तो ज़ाहिर है कि इस सफ़र में जितनी मशक़्क़त होगी, उतना ही अज्र भी होगा, मगर यह बात ज़रूर क़ाबिले लिहाज़ है कि वही मशक़्क़त अज्र का बाइस है जो मम्दूह हो, बेवजह की मशक़्क़त मम्दूह नहीं।

बुख़ारी शरीफ़ में एक हदीस है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का गुज़र एक शख़्स पर हुआ, जिसके हाथ में रस्सी बंधी हुई थी और दूसरा शख़्स उसी रस्सी से खींच कर उसको तवाफ़ करा रहा था। हुज़ूर सल्ल॰ ने उस रस्सी को काट दिया और फ़रमाया कि हाथ पकड़ कर खींचो। बज़ाहिर यह शख़्स ना बीना थे या कोई और आरज़ा ऐसा था जिसकी वजह से दूसरे शख़्स की ज़रूरत थी।

इसी तरह एक और क़िस्सा हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल॰ ने देखा कि दो शख़्स किसी रस्सी वग़ैरह से बंधे हुए चल रहे हैं। हुज़ूर सल्ल॰ ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि यह क्या है? उन्होंने अर्ज़ किया कि हमने यह मन्नत मानी है कि इसी तरह आपस में बंधे हुए काबे तक जायेंगे। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि इस रस्सी को तोड़ दो, यह मन्नत सही नहीं हैं, मन्नत नेक काम में होती है, यह शैतानी हरकत है। *(ऐनी अलल् बुख़ारी)*

अलबत्ता पैदल चलना इस रास्ते में मम्दूह और पसंदीदा है, जिस क़दर तहम्मुल हो सके, उसको बर्दाश्त करना चाहिए।

बाज़ उलमा ने तो इस आयते शरीफ़ा की बिना पर जो रिसाले के शुरू

में:-

وَاَذِّنْ فِی النَّاسِ بِالْحَجِّ یَاْتُوْکَ رِجَالًا

(आयत) गुज़री है और इसमें "रिजालन्" यानी पैदल चलने वालों को सवारी पर चलने वालों से पहले ज़िक्र किया गया है, यह फ़रमा दिया कि पैदल सफ़र करना सवारी पर हज करने से अफ़ज़ल है और बाज़ उलमा ने यहां तक फ़रमा दिया कि जो लोग पैदल सफ़र के आदी हैं, उन पर हज फ़र्ज़ होने के लिये सवारी के ख़र्चे की ज़रूरत नहीं, जब बदन में ताक़त हो, रास्ता मामून हो, तो उन पर हज फ़र्ज़ हो जाता है। *(ऐनी)*

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पाक इर्शादात में भी हज के लिये पैदल चलने की फ़ज़ीलतें कसरत से वारिद हुई हैं, जिनमें से चंद यहां ज़िक्र की जाती हैं।

अहादीस

(۱) عن ابن عباس مرفوعا من حج الی مکة ماشیا حتی رجع کتب له بکل خطوة سبعمائة حسنة من حسنات الحرم قیل وماحسنات الحرم قال کل حسنة بمائة الف حسنة صححه الحاکم کذا فی العینی قلت وفی المستدرك بلفظ من حج من مکة ماشیا حتی یرجع الی مکة الحدیث وهکذا فی الکنز وقال قط فی الافراد طباك وتعقب هـق وضعفه.

1. हुज़ूर सल्ल० से नक़ल किया गया कि जो शख़्स हज के लिये पैदल जाये और आये, उसके लिये हर हर क़दम पर हरम की नेकियों में से सात सौ नेकियां लिखी जायेंगी। किसी ने अर्ज़ किया कि हरम की नेकियों का क्या मतलब ? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि हर नेकी एक लाख नेकी के बराबर है।

फ़ायदाः- इस हिसाब से सात सौ नेकियां सात करोड़ के बराबर हो गयीं और हर हर क़दम पर यह सवाब है, तो सारे रास्ते के सवाब का क्या अंदाज़ा हो सकता है?

एक हदीस में आया है कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने अपने इंतिक़ाल के वक़्त अपनी औलाद को वसीयत फ़रमायी कि पैदल हज किया करो, फिर ऊपर की हदीस बयान की। *(इत्तिहाफ़ुस्सादः)*

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुतअद्दद रिवायात में नक़ल

किया गया कि मस्जिदे हराम में एक नमाज़ का सवाब एक लाख नमाज़ों के बराबर है।

हसन बसरी रह॰ फ़रमाते हैं कि हरम में एक रोज़ा एक लाख रोज़ों का सवाब रखता है और एक दिरम सदक़ा एक लाख दिरम का सवाब रखता है और इसी तरह हर नेकी जो हरम में की जाये, ग़ैर हरम की एक लाख के बराबर है। *(इत्तिहाफ़)*

यहां एक अहम बात यह भी क़ाबिले लिहाज़ है कि जैसा हरमे मोहतरम में एक नेकी का सवाब एक लाख नेकी के बराबर है, वहां गुनाह का वबाल भी बहुत ज़्यादा है। इसी वजह से बाज़ उलमा ने मक्का मुकर्रमा में क़ियाम को मकरूह लिखा है कि गुनाह आदमी से हो हीं जाता है और वहां गुनाह करना बहुत सख़्त है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मैं रकिय्यः (एक जगह का नाम है, जो हरम से बाहर है) में सत्तर गुनाह कर लूं, यह इससे बेहतर है कि मक्का मुकर्रमा में एक गुनाह करूं। *(इत्तिहाफ़)*

छठी फ़स्ल की सातवीं हदीस के ज़ैल (तहत) में यह मज़्मून तफ़्सील से आ रहा है।

(٢)عن عائشةؓ مرفوعًا الملئكة لتصافح ركبان الحاج وتعتنق المشاة اخرجه ابن الجوزى فى مثير العزم كذافى الاتحاف وفى الدر اخرجه البيهقى عنها

2. हज़रत आइशा रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ से नक़ल फ़रमाती हैं कि फ़रिश्ते उन हाजियों से जो सवारी पर आते हैं मुसाफ़ा करते हैं और जो पैदल चलकर आते हैं उनसे मुआनक़ा करते हैं।

फ़ायदा:- हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ से नक़ल किया गया कि वह जब बीमार हुए तो फ़रमाया कि मुझे किसी चीज़ का इतना अफ़सोस नहीं है, जितना इस बात का है कि मैंने पैदल हज नहीं किया, इसलिये कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने "व अज़्ज़िन् फ़िन्नासि बिल् हज्जि॰" (आयत) इस आयते शरीफ़ा में पैदल चलने वालों को पहले ज़िक्र फ़रमाया है। *(दुर्रे मंसूर)*

यह आयते शरीफ़ा और इसका तर्जुमा रिसाले के शुरू में गुज़र चुका है। मुजाहिद रह॰ कहते हैं कि हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल अलैहि॰ ने पैदल हज किया। *(दुर्रे मंसूर)*

एक रिवायत में नक़ल किया गया कि हज़रत आदम अलैहि॰ ने हिन्दुस्तान से पैदल चलकर एक हज़ार हज किये हैं। *(तर्ग़ीब)*

दूसरी हदीस में आया है कि चालीस हज पैदल किये हैं। *(इत्तिहाफ़)*

इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि अंबिया-ए-किराम अलैहि॰ का मामूल पैदल हज करने का था। *(इत्तिहाफ़)*

मुल्ला अली क़ारी रह॰ ने लिखा है कि अफ़ज़ल यह है कि जब हरम में दाख़िल हो तो उस वक़्त पैदल चले।

इमाम ग़ज़ाली रह॰ ने लिखा है कि जो शख़्स क़ादिर हो, उसके लिये अफ़ज़ल यह है कि पैदल चले, इसलिये कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ ने अपने बेटों को अपने इंतिक़ाल के वक़्त इसकी वसीयत फ़रमायी, और यह फ़रमाया कि पैदल चलने वाले के लिये हर क़दम पर सात सौ नेकियां लिखी जाती हैं और हर नेकी एक लाख के बराबर है। इसलिये जो लोग चलने के आदी हैं और रास्ते का अम्न हासिल हो, उनके लिये पैदल चलना अफ़ज़ल है, अलबत्ता॰यह शर्त ज़रूरी है कि रास्ता पैदल चलने के लिये मामून हो, और कम अज़ कम मक्का मुकर्रमा से जब अरफ़ात पर हज करने जायें, उस वक़्त तो नौजवानों को और पैदल चलने पर क़ादिर लोगों को पैदल ही चलना चाहिए, कि इसमें अलावा सवाब के हर जगह पर मुस्तहब्बात की रिआयत क़ाबू में रहती है। सवारी के पाबंद होने से हर जगह बे बस होना पड़ता है और बहुत से मुस्तहब्बात तर्क हो जाते हैं और यह सफ़र कुछ तवील (लम्बा) भी नहीं है। आठवीं तारीख़ को मक्का मुकर्रमा से मिना तक जाना है, जो सिर्फ़ तीन मील है, नवीं को सुबह को मिना से अरफ़ात पर जाना है जो पांच छः मील है। ये मामूली मामूली मंज़िलें ऐसी नहीं कि नौजवानों के और चलने पर क़ादिर लोगों के लिये बार हों और सवाब इतना ज़्यादा कि हर क़दम पर सात करोड़ नेकियां मिलें।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ की उस रिवायत में, जो ऊपर ज़िक्र की गयी है, एक रिवायत में यह भी आया है कि जब उन्होंने अपनी औलाद को पांव (पैदल) चलने की वसीयत फ़रमायी, तो उन्होंने दर्याफ़्त किया कि कहां से पांव चला करें, उन्होंने इर्शाद फ़रमाया कि मक्का मुकर्रमा से जब चलो तो पांव चलो।

एक हदीस में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ से नक़ल किया गया कि जो शख़्स मिना से अरफ़ात तक पांव पर जाये, उसको एक लाख नेकियां हरम की

नेकियों में से मिलेंगी।

अली बिन शुऐब रह० से नक़ल किया गया कि उन्होंने नीसापुर से पांव चल कर साठ से ज़्यादा हज किये हैं।

और मुग़ीरह बिन हकीम रह० से नक़ल किया गया कि उन्होंने मक्का से चल कर पचास से ज़्यादा हज पैदल किये।

और अबुल अब्बास रह० से नक़ल किया गया कि उन्होंने अस्सी हज पैदल किये हैं।

और अबु अब्दुल्लाह मग़िरबी रह० ने 97 हज पैदल किये हैं,

(इत्तिहाफ़)

क्या अंदाज़ा है इन हज़रात के सवाबों का कि हर क़दम पर सत्तर क़रोड़ नेकियां उन को मिली होंगी।

क़ाज़ी अयाज़ रह० ने शिफ़ा में लिखा है कि एक बुज़ुर्ग ने हज का तमाम रास्ता पैदल क़ता (तै) किया। लोगों ने जब मशक़्क़त का ज़िक्र किया तो फ़रमाया कि जो ग़ुलाम अपने आक़ा से भागा हुआ हो, क्या वह सवारी पर सवार होकर हाज़िर हो? अगर मैं इस की क़ुदरत पाता कि सर के बल चल कर हाज़िर हूँ, तो इसी तरह हाज़िर होता।

यह एक मामूली सी मिसाल है, इस सफ़र में मशक़्क़त बर्दाश्त करने की। इसी तरह हर उस चीज़ में है, जो ख़िलाफ़े तबअ् पेश आये, कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वह इर्शाद जो इस फ़स्ल के शुरू में है, जिसमें हज़रत आइशा रज़ि० से फ़रमाया कि तेरा अज्र बक़द्र तेरी मशक़्क़त उठाने के है, हर तक्लीफ़ को शामिल है, लिहाज़ा जितना भी तकालीफ़ का तहम्मुल हो सके, उसको निहायत बशाशत और ख़ंदा पेशानी से बर्दाश्त करना चाहिए, शिकवे शिकायत और बदकलामी, बदगोयी से अपने हज के कसीर अज्र व सवाब को ज़ाया न करना चाहिये।

इमाम ग़ज़ाली रह० ने लिखा है कि हरगिज़ मुनासिब नहीं कि अपने साथियों पर बार बार ऐतिराज़ करता रहे, इसी तरह अपने ऊँट वाले पर और दूसरे लोगों पर, बल्कि सबके साथ नर्मी का बर्ताव करे और ख़ुशख़ुल्क़ी को मज़बूत पकड़े और ख़ुशख़ुल्क़ी यह नहीं है कि दूसरों को अज़ीयत न पहुँचाये, बल्कि ख़ुशख़ुल्क़ी यह है कि अज़ीयत का तहम्मुल करे, इसी वजह से बाज़ उलमा ने

सवारी पर हज को अफ़ज़ल बताया है कि पांव चलने से बसा औक़ात आदमी में हैजान और ग़ुस्सा पैदा हो जाता है। और हज में इससे बहुत एहतियात रखना चाहिये। लिहाज़ा जिन लोगों के पैदल चलने से अख़्लाक़ ख़राब हो जाते हो, दिल में तंगी और मलाल पैदा होता हो, उनको पैदल न चलना चाहिये। *(इतिहाफ़)*

ज़ौक़ व शौक़ और रग़बत व इश्तियाक़ इस इबादत की ख़ुसूसियत से जान है, जिस तरह एक आशिक़ महबूब के शहर की तरफ़ सरापा शौक़ व इज़्तिराब के साथ चलता है कि न धूप की परवाह, न बारिश की, न राहत की, न तक्लीफ़ की, न किसी के तान तश्नीअ़ की, न बुरा भला कहने की, इसी तरह यह सफ़र भी तै करना चाहिये -

है रीत आशिक़ों की तन-मन निसार करना,
रोना, सितम उठाना, दिल से नियाज़ करना!!

चौथी फ़स्ल

हज की हक़ीक़त में

हज दर हक़ीक़त दो मंज़रों का नमूना है और इसकी हर हर चीज़ में दो हक़ीक़तें पिनहां (छुपी) हैं। अगरचे अल्लाह जल्ल शानुहू के हर हुक्म में लाखों मस्लहतें और हिक्मतें ऐसी हैं कि जिन तक हर शख़्स के ख़्याल की भी रसाई नहीं होती, लेकिन बाज़ मसालेह ऐसी खुली हुई और ज़ाहिर होती हैं जो हर शख़्स के ज़ेहन में आ जाती हैं, इसी तरह हज के हर हर रूक्न में बहुत सी मसालेह तो ऐसी हैं जिन तक ज़हन की रसाई भी नहीं, लेकिन ये दोनों चीज़ें उसके हर हर रूक्न में हर हर जुज़्व में बिल्कुल अयां (ज़ाहिर) हैं। एक यह कि नमूना है मौत का और मरने के बाद के हालात का, दूसरा नमूना है इश्क़ और मुहब्बत के इज़्हार का और रूह को हक़ीक़ी इश्क़ और हक़ीक़ी मुहब्बत से रंगने का। नमूने के तौर पर दोनों मंज़रों की तरफ़ मुख़्तसर तरीक़े से तंबीह की जाती है और इस नमूने पर ग़ौर करने से सब चीज़ों में ये उमूर ज़ाहिर और वाज़ेह हो जायेंगे।

पहला नमूना मौत और उसके माबाद (जो कुछ बाद में है) का मंज़र है कि आदमी जिस वक़्त घर से चलता है, सब अज़ीज़ और अक़ारिब घर बाहर वतन अहबाब को एक लख़्त छोड़ कर दूसरे मुल्क गोया दूसरे आलम का सफ़र इख़्तियार करता है। जिन चीज़ों के साथ दिल मश्गूल था, घर बाहर खेती बाग़ अहबाब की मज्लिसें, सब ही उस वक़्त छूट रही हैं, जैसा कि मरने के वक़्त सब को बयक वक़्त ख़ैरबाद कहना पड़ता है हज को रवानगी के वक़्त सही चीज़ क़ाबिले ग़ौर व फ़िक्र है और क़ाबिले इब्रत व एतिबार है कि जैसा आज आरज़ी मुद्दत के लिये सब कुछ छूट रहा है, बहुत जल्द वह वक़्त भी आने वाला है कि हमेशा के लिये ये सब चीज़ें छूटने वाली हैं। इस के बाद सवारी पर सवार होना, अगर इब्रत और ग़ौर की निगाह से देखा जाये तो जनाज़े पर सवार होकर चल देने की याद ताज़ा करता है। गाड़ी में बैठने के बाद वह भी हर क़दम पर वतन और अहबाब से दूरी और जुदाई बढ़ाती रहती है। और जनाज़ा उठाने वाले भी हर क़दम पर सब अइज़्ज़ा और घर बाहर, साज़ व सामान से दूर ले जाते हैं। कुछ लोग ज़रूर जनाज़े की नमाज़ तक साथ देते हैं और कुछ क़ब्र तक भी पहुँचा देते हैं, और कुछ क़ब्र में रखने और मिट्टी डालने तक भी साथ देते हैं।

ये सारे मंज़र हाजी के साथ भी पेश आते हैं, कुछ लोग घर ही से मुसाफ़ा करके "फ़ी अमानिल्लाह" कह देते हैं। कुछ स्टेशन तक तक्लीफ़ फ़रमा लेते हैं और कुछ बहुत ही ख़ास होते हैं जो आगे जहाज़ तक भी पहुँचा देते हैं। जहाज़ (और क़ब्र) में जाने वाले सिर्फ़ वही रफ़ीक़ और साथी होते हैं जो इस आलम तक साथ देने वाले हों, चाहे वे अज़ीज़ व अक़ारिब हों, या माल या मताअ् हों। इनमें बाज़ रफ़ीक़े सफ़र ऐसे मुख़्लिस, ग़मगुसार, राहत रसां होंगे, जो हर हर क़दम पर राहत पहुँचाते हैं, और बाज़ रफ़ीक़ ऐसे बदख़ुल्क़, कज मिज़ाज, ज़िद्दी, झगड़ालू होते हैं, जो सफ़र की हर मंज़िल में बजाये राहत के और मुसीबत का सबब बनते हैं। बेऐनिही (बिल्कुल इसी तरह) यही सारी सूरत आख़िरत के सफ़र में पेश आती है कि क़ब्र में साथ जाने वाले वही रफ़ीक़े सफ़र हैं, जो आख़िर तक साथ रहने वाले हैं। इनमें आमाले हसना हर क़िस्म की राहत और आराम का सबब हैं और आमाले सय्यिआ (बुरे आमाल) हर क़िस्म की अज़ीयत और तक्लीफ़ का सबब हैं, और आमाले हसना निहायत हसीन व जमील आदमी की सूरत में क़ब्र में साथ रहते हैं, और आमाले सय्यिआ, निहायत क़बीह सूरत, डरावनी और गंदी बूदार सूरत में साथ रहते हैं। उस आलम में जितनी राहत पहुँचती है, वह अपने

नेक आमाल से पहुँचती है, जो मरने से पहले कर लिये हों, जैसा कि सफ़रे हज में जितनी राहत पहुँचती है, वह उस माल व ज़र और सामान से पहुँचती है जो सफ़र से पहले मुहय्या कर लिया हो। हां किसी खुशक़िस्मत के लिये कोई अज़ीज़े क़रीब या दोस्त कुछ पढ़ कर या सदका खैरात कर के कुछ "ईसाले सवाब" कर दे तो मरने के बाद भी अपनी निहायत ज़रूरत के वक़्त काम आ जाता है, जैसा कि हाजी के पास कोई उस का अज़ीज़ या दोस्त बज़रिये हुंडी वग़ैरह कोई रूपया पैसा भेज दे, तो उस सफ़र में कितनी मुसर्रत और खुशी और राहत का सबब उसके लिये बने।

इसके बाद सफ़र के दर्मियान में जितने ख़तरात, डाकू, चोर, सख़्त मिज़ाज हाकिमों की तरफ़ से सामान की तफ़्तीश, हालात की तहक़ीक़ात, पासपोर्ट वग़ैरह की जांच पड़ताल के जितने मनाज़िर हाजी को देखना पड़ते हैं, वे क़ब्र के सारे मंज़रों की याद दिलाते रहते हैं कि मुन्किर नकीर का सवाल भी होगा, अपने ईमान का इम्तिहान भी होगा और सांप बिच्छू वग़ैरह कीड़े मकोड़े भी क़ब्र में तरह तरह से सतायेंगे, आमालनामा भी अपने साथ ही होगा-

وَكُلَّ إِنسَانٍ أَلْزَمْنَاهُ طَائِرَهُ فِي عُنُقِهِ

हां बहुत से मालदार जिनको अल्लाह ने दौलत बे शुमार दी है, वे मामूली सी तफ़्तीश और पास पोर्ट वग़ैरह के बाद चंद घंटो में हिजाज़ पहुँच जाते हैं, और जिनके पास नेक आमाल का ज़ख़ीरा मालामाल कर देने वाला हो, वे क़ब्र के इन सारे अहवाल से बेख़बर और बे फ़िक्र दुल्हनों की तरह इसमें ऐसे आराम फ़रमाते हैं कि क़ियामत तक का सारा तवील ज़माना उनके लिये घंटों और मिनटों में गुज़र जायेगा, जैसा कि नयी दुल्हन पहली शब में कमख़्वाब और मख़मल के बिस्तरों पर सोती है, इसी तरह ये लोग क़ब्र में सो जाते हैं।

इसके बाद एहराम की दो सफ़ेद चादरें कफ़न की चादरों की याद हर वक़्त ताज़ा रखती हैं। अगर इब्रत की निगाह हो तो जितने दिन एहराम में बंध रहे, हर वक़्त उसी तरह कफ़न की दो चादरों में लिपटे रहना याद रहना चाहिए, और एहराम के वक़्त लब्बैक (हाज़िर हूँ, हाज़िर हूँ) क़ियामत में पुकारने वाले की आवाज़ पर दौड़ पड़ने की याद दिलाती है:-

يَوْمَئِذٍ يَتَّبِعُونَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهُ

(उस दिन सब के सब खुदा की तरफ़ से पुकारने वाले (यानी सूर फूँकने

वाले फ़रिश्ते) के कहने पर हो लेंगे)

وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰى اِلٰى كِتَابِهَا

(तू देखेगा हर उम्मत को ज़ानू पर गिरी हुई और हर उम्मत पुकारी जायेगी अपनी किताब की तरफ़)

और मक्का मुकर्रमा में दाख़िल होना गोया उस आलम में दाख़िल हो जाना है, जिसमें अल्लाह की रहमत की उम्मीद है कि मक्का दारूल अम्न है, लेकिन अपनी बद आमालियों से यह ख़ौफ़ भी ग़ालिब है कि अम्न की जगह भी अम्न न मिले। मक्के का सारा क़याम उसी बीम व रजा की याद को ताज़ा करता रहता है कि इस जगह का अम्न की जगह होना अल्लाह की रहमत और मग़्फ़िरत और करम और लुत्फ़ व इनाम व एहसान की याद ताज़ा करता रहता है और अपनी बद आमालियां जो सारी उम्र की हैं, वे याद आ कर -

"मर के भी चैन न आया तो किधर जायेंगे ।"

की याद ताज़ा करती हैं।

और बैतुल्लाह पर नज़र पड़ना क़ियामत में घर के मालिक के दीदार को याद दिलाता है और जिस क़दर ख़ौफ़, और हैबत, अज़्मत और जलाल का वह मन्ज़र है, वही सारे आदाब उस वक़्त होना चाहियें, जैसा कि किसी बड़े बादशाह के दरबार में हाज़िरी के वक़्त होते हैं।

और बैतुल्लाह का तवाफ़ उन फ़रिश्तों की याद ताज़ा करता है, कि जो अर्शे मुअल्ला का तवाफ़ करते रहते हैं और करते रहेंगे।

और काबे के पर्दो से लिपट कर रोना और मुलतज़म को चिमटना उस क़ुसूरवार की मिसाल है, जो किसी बड़े मुहिसन व मुरब्बी का बड़ा क़ुसूर करके उस का दामन पकड़ कर माफ़ी के लिये रोता है और उसके घर के दर व दीवार को पकड़ कर रोता है कि क़ुसूर की माफ़ी के यही रास्ते हैं और क़ियामत में अपने गुनाहों को याद करके रोने की मिसाल है।

और सफ़ा मर्वः के दर्मियान दौड़ना मैदाने हश्र में इधर उधर दौड़ने की याद ताज़ा करता है। क़ुरआन पाक का इर्शाद है:-

يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ كَاَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنْتَشِرٌ ۝

वाले फ़रिश्ते) के कहने पर हो लेंगे)

وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰى اِلٰى كِتَابِهَا

(तू देखेगा हर उम्मत को ज़ानू पर गिरी हुई और हर उम्मत पुकारी जायेगी अपनी किताब की तरफ़)

और मक्का मुकर्रमा में दाख़िल होना गोया उस आलम में दाख़िल हो जाना है, जिसमें अल्लाह की रहमत की उम्मीद है कि मक्का दारूल अम्न है, लेकिन अपनी बद आमालियों से यह ख़ौफ़ भी ग़ालिब है कि अम्न की जगह भी अम्न न मिले। मक्के का सारा क़ियाम उसी बीम व रजा की याद को ताज़ा करता रहता है कि इस जगह का अम्न की जगह होना अल्लाह की रहमत और मग़्फ़िरत और करम और लुत्फ़ व इनाम व एहसान की याद ताज़ा करता रहता है और अपनी बद आमालियां जो सारी उम्र की हैं, वे याद आ कर -

"मर के भी चैन न आया तो किधर जायेंगे ।"

की याद ताज़ा करती हैं।

और बैतुल्लाह पर नज़र पड़ना क़ियामत में घर के मालिक के दीदार को याद दिलाता है और जिस क़दर ख़ौफ़, और हैबत, अज़्मत और जलाल का वह मज़्हर है, वही सारे आदाब उस वक़्त होना चाहियें, जैसा कि किसी बड़े बादशाह के दरबार में हाज़िरी के वक़्त होते हैं।

और बैतुल्लाह का तवाफ़ उन फ़रिश्तों की याद ताज़ा करता है, कि जो अर्शे मुअल्ला का तवाफ़ करते रहते हैं और करते रहेंगे।

और काबे के पर्दों से लिपट कर रोना और मुलतज़म को चिमटना उस क़ुसूरवार की मिसाल है, जो किसी बड़े मुह्सिन व मुरब्बी का बड़ा क़ुसूर करके उस का दामन पकड़ कर माफ़ी के लिये रोता है और उसके घर के दर व दीवार को पकड़ कर रोता है कि क़ुसूर की माफ़ी के यही रास्ते हैं और क़ियामत में अपने गुनाहों को याद करके रोने की मिसाल है।

और सफ़ा मर्वः के दर्मियान दौड़ना मैदाने हश्र में इधर उधर दौड़ने की याद ताज़ा करता है। क़ुरआन पाक का इर्शाद है:-

يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ كَاَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنْتَشِرٌ ۝

"क़ब्रों से इस तरह निकल रहे होंगे, गोया वे टिड्डी दल हैं, जो परागंदा हैं।"

यह मंज़र बंदे के नाक़िस ख़्याल में क़ियामत के एक अजीब मंज़र की याद ताज़ा करता है, जिसका बड़ा मुफ़स्सल क़िस्सा अहादीस में आता है कि हश्र के दिन जब मख़्लूक़ निहायत परेशान हाल होगी और मसाइब की कसरत से तंग होकर यह सोचेगी कि अंबिया-ए-किराम अलैहि॰ बड़ी ऊँची हस्तियां हैं और अल्लाह के मक़्बूल बंदे हैं, उनसे जाकर सिफ़ारिश की दर्ख़्वास्त करें, इस ख़्याल से सबसे पहले हज़रत आदम अलैहि॰ के पास जाकर अर्ज़ करेंगे कि आप हमारे बाप हैं। अल्लाह ने आपको अपने हाथ से पैदा किया, फ़रिश्तों से सज्दा कराया, ख़ुद हर चीज़ के नाम आप को तालीम दिये, वग़ैरह वग़ैरह, आप हमारी सिफ़ारिश कर दें, तो वे फ़रमायेंगे, मैं तो नहीं कर सकता, अगर मुझसे उस मम्नूअ् दाने के खाने का सवाल हो गया तो क्या होगा? तुम नूह अलैहि॰ के पास जाओ। ये लोग परेशान हाल हज़रत नूह अलैहि॰ के पास जायेंगे, वे भी उज़्र फ़रमा देंगे कि मैंने तूफ़ान के ज़माने में अपने बेटे के बचाने का बे महल सवाल कर लिया था। तुम हज़रत इब्राहीम अलैहि॰ के पास जाओ, वह भी उज़्र फ़रमा कर हज़रत मूसा अलैहि॰ का हवाला देंगे। वह भी उज़्र फ़रमा कर हज़रत ईसा अलैहि॰ का हवाला देंगे। वह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में जाने का मश्वरा देंगे और यह फ़ख़्र हुज़ूर सल्ल॰ ही के लिये है कि उस जलाल के दिन में सिफ़ारिश की इब्तिदा फ़रमा देंगे।

यह बहुत तवील क़िस्सा है। मुझे तो सिर्फ़ यही मंज़र सामने लाना है कि इधर से उधर और उधर से इधर मारे मारे परेशान हाल एक दिन फिरना है, जो बड़ा सख़्त दिन होगा।

अरफ़ात का मैदान तो हश्र के मैदान का पूरा नमूना है ही, कि आफ़ताब की तमाज़त और सब का एक लक़ व दक़ मैदान में ऐसी हालत में इज्तिमाअ् कि मग़्फ़िरत की उम्मीद है, गुनाहों का ख़ौफ़ है। बंदे के नाक़िस ख़्याल में अरफ़ात के मैदान में बड़ी ग़ौर व फ़िक्र की जो चीज़ है वह अहद व मीसाक़ है, जो अज़ल में "अलस्तु बिरब्बिकुम" से लिया गया था कि आलमे अर्वाह में हक़ सुब्हानहू व तक़द्दुस ने सारी अर्वाह से यह सवाल किया था, क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ, सब ने एक ज़बान होकर कहा था कि बेशक आप हमारे रब हैं।

मिश्कात शरीफ़ में बरिवायत मुस्नद अहमद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद नक़ल किया है कि यह अहद अरफ़ात ही के मैदान में हुआ था। यह वक़्त और यह जगह इसके याद करने की है कि क्या अहद किया था और उस अहद को किस तरह पूरा किया?

इसके बाद मुज़दलिफ़ा, मिना वग़ैरह के इज्तिमाआत में इमाम ग़ज़ाली रह॰ फ़रमाते हैं कि इन मवाक़ेअ् में लोगों का इज़्दिहाम और उन का शोर व शग़ब मुख़्तलिफ़ ज़ुबानें, मुख़्तलिफ़ आवाज़ें और लोगों का अपने अपने इमामों के पीछे चलना क़ियामत के मैदानों में अपने अपने अंबिया और मुक़्तदियों के पीछे चलने की और हैरानी और परेशानी के आलम में कभी यहां और कभी वहां जाने की याद ताज़ा करता है। इन मवाक़ेअ् में आजिज़ी और ज़ारी (रोने) का एहतिमाम कर कि काम आने वाली चीज़ है।

यह मुख़्तसर ख़ाका है हज के उस मंज़र का, जो क़ियामत की याद को ताज़ा करता है, जिसको मुख़्तसर अल्फ़ाज़ और मुख़्तसर अहवाल के साथ इशारात के तर्ज़ पर मैंने लिखा है। ग़ौर किया जाये तो इसी नमूने से बहुत सी तफ़्सीलात समझ में आ सकती हैं।

दूसरा मंज़र इज़्हारे इश्क़ व मुहब्बत का है। वह हाजी के हाल से ऐसा ज़ाहिर और वाज़ेह है कि उसके लिये किसी तफ़्सील की हाजत नहीं, बंदों का ताल्लुक़ हक़ तआला शानुहू व तक़द्दुस के साथ दो तरह का है–

1. एक नियाज़ मंदी और बन्दगी का कि वह पाक ज़ात मालिक है, ख़ालिक़ है। इस ताल्लुक़ का मज़्हर नमाज़ है, जो सरासर नियाज़ व इज़्हारे अब्दियत है, इसी लिये इसमें सारी चीज़ें उसी ताल्लुक़ का मज़्हर हैं, कि निहायत वक़ार व सुकून के साथ मौज़ूं लिबास और शाही आदाब के मुनासिब हालात के साथ हाज़िरी दरबार की है कि वुज़ू और पाक कपड़ों के साथ निहायत वक़ार और सुकून से अव्वल कानों पर हाथ रखकर अपनी अब्दियत और अल्लाह जल्ल जलालुहू की बड़ाई का इक़रार करे, फिर हाथ बांध कर मारूज़ा पेश करे, फिर सर झुका कर ताज़ीम करे और फिर ज़मीन पर माथा रगड़ कर अपनी नियाज़मंदी और इज्ज़ का इज़्हार करे और आक़ा की बड़ाई का ज़बान से इक़रार करता रहे और कोई क़ौल और फ़अ्ल उस की बड़ाई और अपने इज्ज़ के ख़िलाफ़ न हो। इस नौअ् में सुकून और वक़ार की जितनी पाबंदी की जायेगी, वह उसके शायाने

शान होगा, इसीलिये नमाज़ के लिये भाग कर चलना मक्रूह है। नमाज़ के इंतिज़ार में बैठे हुए भी उगंलियों में उगंलियां डालकर बैठना मक्रूह है, नमाज़ में उंगलियां चटख़ाना मक्रूह है, बे ज़रूरत खांसना मक्रूह है हत्ता कि इधर उधर नज़र करना मक्रूह है, बे-तर्तीब यानी ना-मौज़ूं हैअत से कपड़ा पहनना मक्रूह है। ऐसे ही बदन पर कपड़ा लटकाना मक्रूह है। यह इबादत नमाज़ में बात करने से ज़ाया हो जाती है, वुज़ू टूट जाने से जाती रहती है। हत्ताकि बे इख़्तियार और बे इरादा भी हंस पड़ने से ज़ाया हो जाती है हत्ता कि सज्दे में दोनों पांव ज़मीन से उठ जाने से ज़ाया हो जाती है, इसलिऐ कि यह भी सुकून और वक़ार के ख़िलाफ़ है।

2. हक़ तआला शानुहू व तक़द्दुस के साथ दूसरा ताल्लुक़ मुहब्बत और इश्क़ का है, कि वह मुरब्बी है, मुनइम है, मुह्सिन है और जमाल व कमाल के जितने औसाफ़ हो सकते हैं उन सब के साथ मुत्तसिफ़ है। इधर हर आदमी में फ़ितरी तौर पर इश्क़ व मुहब्बत का माद्दा मौजूद है-

अज़ल से हुस्न परस्ती लिखी थी क़िस्मत में,
मेरा मिज़ाज लड़कपन से आशिक़ाना था।।

पैदा हुए तो हाथ जिगर पर धरे हुए,
क्या जानें हम हैं कब से किसी पर मरे हुए।।

मेरी तिफ़्ली में शाने इश्क़ बाज़ी आशकारा थी,
अगर बचपन में खेला खेल तो आंखें लड़ाने का।।

जो चश्म कि बे-नम हो वह हो कोर तो बेहतर,
जो दिल कि हो बे-दाग़ वह जल जाये तो अच्छा।।

तेरे फ़िराक़ में जीना बशर का काम नहीं,
हज़ार शुक्र कि इस उम्र को दवाम नहीं।।

शायद बज़्मे अज़ल ने इक निगाहे नाज़ से,
इश्क़ को इस अंजुमन में मस्नद आरा कर दिया।।

इसी ताल्लुक़ का मज़्हर हज है कि सफ़र की इब्तिदा ही सब ताल्लुक़ात को ख़त्म करके सब अज़ीज़ व अक़ारिब, घर बार से मुंह मोड़ कर कूचा-ए-यार की तरफ़ जाना है और जंगलों और गली कूचों में मारे मारे फिरना है कि यही दो चीज़ें आशिक़ों का काम हैं-

मा व मजनूं हम सबक़ बूदेम दर दीवाने इश्क़,
ओ बसिहरा रफ़्त व मा दर कूचहा रुस्वा शुदेम॥

नया रंग लायी मेरी बेकसी,
छुटा देश जंगल की धुन हो गयी॥

चमन से मुझे शौक़े सहरा हुआ,
नए रंग का मुझको सौदा हुआ॥

हसरत व यास व तमन्ना तुम्हें वहशत की क़सम,
भीड़ छोड़ो मुझे जंगल को निकल जाने दो॥

और यह सारी वहशत और इश्तियाक़ क्यों है? यह इज़्तिराब और बेचैनी आख़िर क्यों मुसल्लत हुई? इसलिये कि महबूब के दर पर उश्शाक़ के इज्तिमाअ् का एक वक़्त मुक़र्रर है, वह क़रीब आ गया–

इजाज़त हो तो आकर मैं भी शामिल उनमें हो जाऊं?
सुना है कल तेरे दर पर हुजूमे आशिक़ां होगा॥

दोस्त आवारगी हमी ख़्वाहद,
रफ़्तने हज बहाना उफ़्तादस्त॥

यानी महबूब आवारगी का नज़ारा देखना चाहता है, हज के सफ़र को उस का बहाना बना दिया और जब इस इरादे और जज़्बे से घर से निकलना है तो यह खूब समझ लेना चाहिए कि इश्क़ में मसाइब एक लाज़िमी चीज़ है-

सालिके राहे मुहब्बत का ख़ुदा हाफ़िज़ है,
इसमें दो चार बहुत सख़्त मक़ाम आते हैं॥

ओ दिल, ज़रा संभल के मुहब्बत का नाम ले,
कमबख़्त, बारे इश्क़ उठाया न जायेगा॥

जब इश्क़ के तुफ़ैल यह मुबारक सफ़र है, तो रास्ते की सब मशक़्क़तें उसी ज़ौक़ और जज़्बे के मातहत होना ज़रूरी हैं और उसी फ़रेफ़्तगी से उनको बर्दाश्त करना चाहिए -

मसाइब, हादसे, आफ़त, अलम, ज़िल्लत, क़ज़ा, तुर्बत,
दिखाती जाये जो उनकी जवानी, देखते जाओ॥

दर्द व ग़म, रंज व अलम, फ़िक्र व क़लक़, ख़ौफ़ व हिरास
वह बला कौन सी है जो शबे हिजरां में नहीं॥

अज़ीयत मुसीबत, मलामत बलायें,
तेरे इश्क़ में हमने क्या क्या न देखा॥

उल्फ़त में बराबर है जफ़ा हो कि वफ़ा हो,
हर चीज़ में लज़्ज़त है, अगर दिल में मज़ा हो॥

इसके बाद एहराम भी इसी आशिक़ाना रंग का पूरा मज़्हर है कि न सर पर टोपी, न बदन पर कुर्ता, फ़क़ीराना सूरत, न खुश्बू, न ज़ीनत, एक मज्नूनाना हैअत जो कर्ब व बेचैनी के कमाल को ज़ाहिर करती है।

खुशी से अपनी रूसवाई गवारा हो नहीं सकती,
गरेबां फाड़ता है तंग जब दीवाना आता है॥

चश्म तर ख़ाक बसर चाक गरेबां दिलेज़ार,
इश्क़ का हमने यह दुनिया में नतीजा देखा॥

न रख लिबास का उलझाव तन पे दस्ते जुनूं,
किया है चाक गरेबां तो फाड़ दामन भी॥

असल यह था कि घर से निकलते ही यह हालत शुरू हो जाती। इसी वजह से बाज़ उलमा के नज़दीक घर ही से एहराम बांध कर जाना अफ़ज़ल है मगर चूंकि एहराम के बाद बहुत सी चीज़ें नाजायज़ हो जाती हैं और इस क़िस्म के लिबास का तहम्मुल भी बाज़ नाज़ परवर्दा लोगों को मुश्किल हो जाता है इसलिये अल्लाह की रहमत ने इसकी इजाज़त दे दी कि शुरू से एहराम न बांधा जाये कि उसमें मशक़्क़त होगी, अलबत्ता जब कू-ए-यार के क़रीब पहुँचे तो इस का एहतिमाम ज़रूरी है कि उसके कूचे में इसी हाल में दाख़िल होना है कि सर पर बाल बिखरे हुए हों, लिबास में मजनूनाना हैअत हो, मैले कुचैले हाल में अज़ खुद रफ़्ता आशिक़ों की सी सूरत हो, इसी को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने पाक इर्शाद में ज़ाहिर फ़रमायीः-

अल हाज्जु अश-शअ़सुतुफ़्ल।

"हाजी बिखरे हुए बालों वाला मैला कुचैला होता है", यानी यह कि रास्ते

में कुछ गर्द गुबार भी बेताबी और शौक़ में बदन पर पड़ा हो। इसी हालत को हक़ तआला शानुहू खुद भी तफ़ाख़ुर के तौर पर फ़रिश्तों से ज़ाहिर फ़रमाते हैं:-

انظرو الی زواریتی قد جاءونی شعثا غبرا

"मेरे घर के मुश्ताक़ों को देखो कि मेरी तरफ़ बिखरे हुए बालों और गर्द व गुबार की हालत में आये हैं"-

अपने दीवानों की फ़रियाद से खुश होते हैं,
पसे दीवार खड़े सुनते हैं, शेवन उनका।।

नाले करता जो मैं फिरता हूँ तो खुश होते हैं,
ग़श वे इस पर हैं कि शोहरत मेरी हर सू हो जाये।

और ज़ाहिर है कि जब जंगलों और पहाड़ों की ख़ाक छानता हुआ रोता पीटता वहां पहुँचा है, तो ये चीज़ें ज़रूर होंगी और जितने असरात उसके ज़्यादा होंगे, उतना ही शौक़ और बेताबी का इज़्हार होगा-

छाने हैं, पाये मुहब्बत से बयाबां क्या क्या,
पार तलवों से हुए ख़ारे मुग़ीलां क्या क्या।।

वहशी ने तेरे ख़ाक उड़ाई यहां तलक,
मिलता नहीं ज़मीं का पता आसमां तलक।।

इसी हालत में मस्तानावार "लब्बैक अल्लाहुम्-म लब्बै-क, लब्बै-क ला शरी-क ल-क लब्बै-क" (मैं हाज़िर हूँ, मैं हाज़िर हूँ, ऐ अल्लाह मैं हाज़िर हूँ, तेरा कोई शरीक नहीं, मैं हाज़िर हूँ, मैं हाज़िर हूँ) का नारा लगाता हुआ रोता और चिल्लाता हुआ, नाला व फ़रियाद करता हुआ पहुँचता है। इसी की तरफ़ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने पाक इर्शाद "अल हज्जु अल अज्जु वस्सज्जु" में इर्शाद फ़रमाया कि हज (का कमाल खूब) चिल्लाना और क़ुर्बानी का खून बहाना है।

बहुत सी अहादीस में मर्दों के लिये लब्बैक आवाज़ से पढ़ने की तर्ग़ीब है। एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद है कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने मुझसे यह कहा है कि अपने साथियों को इस का हुक्म करो कि लब्बैक पुकार कर कहें और ज़ाहिर बात है कि नाला व फ़रियाद के साथ चिल्लाना इश्क़ की जान है:-

नाला कर लेने दें लिल्लाह न छेड़ें अहबाब,
ज़ब्त करता हूँ तो तक्लीफ़ सिवा होती है॥

फुगां में, आह में, फ़रियाद में, शेवन मे, नाले में,
सुनाऊँ दर्दे दिल ताक़त अगर हो सुनने वाले में॥

दम ब दम सीना-ए-सोज़ां से न कर नाला गरम,
पड़ न जायें तेरी मिन्क़ार में छाले बुलबुल,

बेखुदी शौक़ की और अर्ज़े तमन्ना उनसे,
नहीं मालूम कि मुंह से मेरे क्या क्या निकला॥

किसी की याद ने क्या क्या नये तोहफ़े दिये हमको,
जिगर में टीस, दिल में दर्द, लब पर आह व नाले हैं॥

कौन होता है मूनिसे शबे ग़म,
नाला होता है, आह होती है॥

इसी बेचैनी और इज़्तिराबे नाला और फ़रियाद के साथ आख़िर वह महबूब के शहर तक पहुँच जाता है और मक्का मुकर्रमा में दाख़िल हो जाता है:-

ढूढंते ढूढंते जा पहुँचे हम उसके घर तक,
दिले गुम गश्ता मेरे हक़ में तू रहबर निकला॥

जज़्बे दिल ने आज कू-ए-यार में पहुँचा दिया,
जीते जी मैं गुलशने जन्नत में दाख़िल हो गया॥

मैं ने अपने हज़रत मुर्शिदे आलम मौलाना ख़लील अहमद साहिब नव्वरल्लाहु मर्क़दहू को बहुत कम शेअ्र पढ़ते सुना है, लेकिन जब हज के लिये तशरीफ़ ले गये और मस्जिदे हराम में तशरीफ़ फ़रमा थे तो मैंने बहुत अजीब अंदाज़ से यह शेअ्र पढ़ते सुना:-

कहां हम और कहां यह निकहते गुल,
नसीमे सुबह! तेरी मेहरबानी॥

एक दिल खोया हुआ, जिसके दिल में वाक़ई ज़ख़्मे मुहब्बत हो, जब महबूब के घर जाता है तो उस पर क्या गुज़रती है, और वह क्या सोचता है ये चीज़ें अल्फ़ाज़ से ताबीर नहीं होतीं

ताबे नज़्ज़ारा-ए-माशूक़ कहां आशिक़ को,
ग़श ने मूसा को सरे तूर संभलने न दिया॥

वह कहता है –

ऐ दिल, यह शबे वस्ल न कल होगी मयस्सर,
जो कुछ कि उड़ाने हैं मज़े आज उड़ा ले॥

इसके बाद वह जो जो हरकतें करता है, वह किसी ज़ाब्ते और आईन की पाबंद नहीं, कहीं महबूब के घर के चक्कर काटता है, कहीं उसके दर व दीवार और चौखट को चूमता है, आंखें मलता है, पेशानी और सर रगड़ता है –

सर को वहशत में पहाड़ों से बचा कर लाया,
दर व दीवार सरे कूचा-ए-जाना के लिये॥

हमको तवाफ़े कूचा-ए-जानां चाहिये,
ज़ाहिद को काबा, रिंद को मैख़ाना चाहिये॥

तवाफ़ की इब्तिदा हजरे अस्वद के बोसे से है, जिसको हदीसे पाक में अल्लाह जल्ल शानुहू के दस्ते मुबारक से ताबीर किया है और इसका बोसा गोया दस्तबोसी है आक़ा-ए-करीम की और इंतिहाई लुत्फ़ व करम है उस मालिक का, जिसने यह सआदत ख़ाक के पुतलों को अता फ़रमायी। उश्शाक़ के नज़दीक महबूब के घर को दर व दीवार को चूमना उस की अत्बाबोसी[1], क़दमबोसी, दस्तबोसी वग़ैरह इश्क़ के ऐसे लवाज़िमात में से है कि शायद ही कोई दिल खोया हुआ शाइर ऐसा होगा, जिस ने किसी न किसी उन्वान से इसको अहम मक़सद न बनाया हो:-

امر على الديار ديار ليلى اقبل ذا الجدار و ذا الجدار

(मैं जब लैला के शहर में पहुँचा हूँ, कभी इस दीवार को चूमता हूँ, कभी उस दीवार को)

रखा सर पांव पर उसके तो बोला,
कि तू भी बे सर पावं का किस क़दर है॥

मुझ पर न करें कोई इनायत,
हसरत है यह कह दें मुस्कुरा कर॥

आराम किया करूं मैं जब तक,
आंखें तलवों से तू मला कर॥

पामाल कर गया है कोई दिल को राह में,
आंखों को मल रहे हैं किसी नक़्शे पा से हम॥

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हजरे अस्वद पर अपने लबे मुबारक रखे और बहुत देर तक रखे रहे और आंसू जारी थे, इसके बाद हुज़ूर सल्ल॰ ने देखा कि हज़रत उमर रज़ि॰ भी खड़े रो रहे हैं। हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया, यही जगह है, जहां आंसू बाहाये जाते हैं।

मुख़्तसर यह है हमारी दास्तां,
खुद ब खुद हैं आंख से आंसू रवां॥

रूख़्सारे ज़र्द पर मेरे बहते हैं अश्के ख़ूं,
यकजा दिखा रही है ख़ज़ां व बहार रंग॥

ज़मीं तक मेरे आंसू आने लगे,
फ़लक तक मेरे नाले जाने लगे॥

मेरी चश्मे तर का यह क्या हाल है,
कि दामन से ता आस्तीं लाल है॥

न आंखों से लगती झड़ी आंसुओं की,
जो ग़म की घटा दिल पे छायी न होती॥

काबे शरीफ़ के पर्दे से लिपटना चिमटना भी इसी आशिक़ाना शान का एक ख़ास मंज़र है कि महबूब के दामन से चिमटना भी इश्क़ के मज़ाहिर में से एक मख़्सूस मन्ज़र है -

ऐ नातवाने इश्क़ तुझे हुस्न की क़सम,
दामन को यों पकड़ कि छुड़ाया न जा सके॥

ऐ जुनूं दीवानी ऐसी भी क्या?
दामने बादे बहारी छोड़ दे॥

मुद्दतों में जिसके हाथ आयी हो वह,
आस्तीं क्यों कर तुम्हारी छोड़ दे॥

उस के दामन को पकड़ मैंने कहा,
अब कोई छोड़ूं हूं ए रश्के परी॥

मुस्करा कर नाज़ से कहने लगा,
आशिक़ी करते हो या ज़ोर आवरी॥

मुलतज़म, जो काबा शरीफ़ की दीवार का एक ख़ास हिस्सा है, मुतबर्रक जगह है, उस जगह खुसूसियत से दुआ क़ुबूल होती है।

हदीस में आता है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ उससे चिमट रहे थे और अपने चेहरे को उस से लगा रहे थे-

आज अर्शद को अजब हाल में देखा हमने,
रो रहा था वह किसी शख़्स की दीवार के पास॥

इसके बाद सफ़ा-मर्वः के दर्मियान दौड़ना भी इसी मजनूनाना अंदाज़ का एक पुर कैफ़ मंज़र है कि नंगे सर, न कुर्ता, न पाजामा, इधार से उधर, उधर से इधर भागे भागे फिर रहे हैं।

क्यों कर जुनूं में दश्त नवरदी न हो पसंद,
पाया है आबलों ने मज़ा नोके ख़ार में॥

अब नहीं दिल को किसी सूरत क़रार
उस निगाहे नाज़ ने क्या सेहर ऐसा कर दिया॥

गर ऐ ज़ाहिद दुआ-ए-ख़ैर मी गोई मुरा ईं गो,
कि आं आवारा-ए-कू-ए-बुतां आवारा तर बादा॥

यानी सूफ़ी जी, अगर तुम इस नाकारा के लिये कभी दुआ-ए-ख़ैर करो तो यह दुआ करना कि वह जो माशूक़ों की गलियों का आवारागर्द है, उसकी आवारगी और ज़्यादा हो जाये, इसी इज़्तिराब, बेचैनी, आवारागर्दी सेहरानवर्दी का मज़्हर है कि सुबह को मक्का में, रात को मिना में, फिर सुबह को अरफ़ात का जंगल बयाबान, शाम होते ही मुज़दलिफ़ा भाग आये। सुबह ही सुबह वहां से फिर मिना दोपहर को फिर मक्का मुकर्रमा वापसी, शाम को फिर मिना लौट गये-

इश्के मौला के कम अज़ लैला बुवद,
कू-ए-गश्तन बहरे ऊ औला बुवद॥

यानी मौला का इश्क़ क्या लैला के इश्क़ से भी कम हो सकता है, मौला के इश्क़ में तो गली गली मारे मारे फिरना और भी ज्यादा बेहतर है-

एक जा रहते नहीं आशिक़े बदनाम कहीं,
दिन कहीं, रात कहीं, सुबह कहीं, शाम कहीं॥

है गदाई मुझ को बेहतर तेरे हुस्न व इश्क़ की,
हम भिखारी भीख के, दर दर हमें रूकना पड़ा॥

दश्त में, सहरा में, वीराने में, कु-ए-यार में,
चलता फिरता मिस्ले साया मैं इन्ही चारों में हूँ॥

इश्क़े ख़ाना ख़राब की ख़ातिर,
दर ब बदर शहरेयार फिरते हैं॥

वहशते दिल से हैं मजनूं की तरह ख़ाक बसर,
छानते फिरते हैं हम कोह व बयाबान दिन रात॥

इन सब के बाद मिना में शयातीन के पत्थर मारना उस जुनून व वहशत के आख़िरी हिस्से का नज़ारा है, जो उश्शाक़ को पेश आता है। आशिक़ का जुनून जब हद से तजावुज़ करता है तो वह हर उस शख़्स के पत्थर मारा करता है, जिसको वह अपने काम में मुख़िल समझता है-

मैं उसे समझूं हूं दुश्मन, जो मुझे समझाये है॥

और सबसे आख़िर में क़ुर्बानी, जो हक़ीक़तन अपनी जान की क़ुर्बानी है, अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपनी ग़ायते रहमत और राफ़त (मेहरबानी) से उसको जानवर की यानी माल की क़ुर्बानी से बदल दिया है, यही इश्क़ का मुन्तहा और आख़िरी हाल है:-

मौत ही से कुछ इलाजे दर्दे फ़ुर्क़त हो तो हो,
ग़ुस्ले मय्यत ही हमारा ग़ुस्ले सेहत हो तो हो॥

मौत ही है इलाज आशिक़ का,
इससे अच्छी नहीं दवा कोई॥

किसी की तेग़ हो मेरा गुलू हो,
दिले मुज़्तर की पूरी आरज़ू हो।

ऐ मौत, जल्द आ कि यह झगड़ा कहीं चुके,
कब तक शबे फ़िराक़ के सदमे उठाये दिल।।

सिसकता छोड़ कर जाता है, वह मुझ नीम बिस्मिल को,
खुदा रा बढ़ के ऐ शौके शहादत रोक ले उसको ॥

ये मुख़्तसर इशारात हैं हज के उस मंजर के, जो इश्क़ से ताल्लुक़ रखते हैं, जिसके दिल में कुछ चोट होगी, कोई ज़ख़्म लगा होगा, दीवानगी से कोई साबक़ा पड़ा होगा, वह इन इशारात के बाद वहां पहुँच कर देखेगा कि इस सफ़र का हर हर जुज़ इस मज़्हर को अपने अंदर पूरी तरह लिये हुए है, तफ़्सील के लिये दफ़तर भी काफ़ी नहीं, और फिर जज़्बात काग़ज़ पर आते भी नहीं:-

दर्दे दिल दूर से हम तुमको सुनायें क्यों कर?,
डाक में भेज दें आहों की सदायें क्यों कर?।।

काग़ज़ तमाम, किल्क तमाम, और हम तमाम,
पर दास्ताने शौक़ अभी ना तमाम है।।

इनके अलावा हज की हिक्मतें या अल्लाह जल्ल शानुहू के किसी भी हुक्म की हिक्मतें कोई कहां तक बयान कर सकता है। अल्लाह जल्ल शानुहू के हर हुक्म में इतनी हिक्मतें हैं कि उनमें से बहुत से मसालेह तक हमारी अक़्लों की रसाई भी नहीं है और हर हुक्म में जितना भी ग़ौर किया जाये, रोज़ ब रोज़ फ़वाइद ज़ायद ही समझ में आते रहते हैं और हर शख़्स अपने अपने फ़ह्म के मुवाफ़िक़ उन पर ग़ौर करता रहता है। सियासी हज़रात के नज़दीक इस हैसियत से भी इसमें इतने फ़वाइद हैं कि वे सब तहरीर में भी नहीं आ सकते, लेकिन जैसा कि मिसाल के और नमूने के तौर पर ऊपर की दो हिक्मतों की तरफ़ इशारे किये गये हैं, इसी तरह नमूने के तौर पर चंद उमूर की तरफ़ मुतवज्जह करता हूँ और इनमें ग़ौर करने से हज़ारों मसालेह समझ में आ सकते हैं -

1. हर हाकिम और बादशाह को अपनी रिआया के मुख़्तलिफ़ तबक़ात को बयक वक़्त एक जगह जमा करने का जितना एहतिमाम और ख़्वाहिश होती है, वह सबको मालूम है कि इसके लिये मुख़्तलिफ़ नौअ् के जश्न और मुख़्तलिफ़ नाम से अन्जुमनें बना कर उनके सालाना जलसे वग़ैरह कराये जाते हैं। हज में यह मस्लहत अला वज्हिल अतम (पूरी तरह) पूरी होती है।

2. मुसलमानों की फ़लाह व बहबूद के लिये मुख़्तलिफ़ ममालिक के अहलुर्राय अगर कोई लायहा-ए-अमल तज्वीज़ करें तो उसकी तश्कील और इशाअत के लिये यह बेहतरीन मौक़ा है।

3. अगर इस्लामी ममालिक के अफ़राद के दर्मियान इत्तिहाद और ताल्लुक़ात की वुसअत की कोई सूरत हो सकती है तो हज के मौक़े से बेहतर सूरत नहीं।

4. "इल्मुल् अल सिना" के शौक़ीन हज़रात के लिये हज के ज़माने से बेहतरीन मौक़ा शायद न मिल सके कि एक ही जगह अरबी, उर्दू, तुर्की, फ़ारसी, हिन्दी, पश्तू, चीनी, जावी, अंग्रेज़ी वग़ैरह वग़ैरह हर ज़बान से वाक़िफ़ लोग मिलेंगे।

5. सिपाहियाना ज़िन्दगी, जो इस्लामी ज़िन्दगी का खुसूसी शिआर है,हज के सफ़र में पूरे तौर से पायी जाती है। लिबास व मआश में भी, चलने फिरने में भी।

6. सरमायादारी के मुख़ालिफ़, अमीर व ग़रीब में मुसावात पैदा करने की जितनी कोशिश करते रहते हैं, उसको अख़बार पढ़ने वाले हज़रात बख़ूबी जानते हैं और यह भी साथ ही मालूम है कि कोई सूरत भी आज तक कामियाब नहीं हो सकी। इस्लाम का हर हुक्म नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात, इस मस्लहत को निहायत आसान और कामियाब तरीक़े से पूरा करता है इस्लामी उसूल से बेहतर चीज़ न आज तक पैदा हो सकी, न आइंदा हो सके, बशर्ते कि इन अहकाम को इस्लाम की सही तालीम के मातहत अदा किया जाये।

7. दुनिया के मुख़्तलिफ़ तबक़ात में मुसावात (बराबरी) पैदा करने के लिये भी हज बेहतरीन अमल है कि अमीर, ग़रीब, बादशाह, फ़क़ीर, हिन्दी, अरबी, तुर्की, चीनी वग़ैरह सब एक ही हाल में, एक ही लिबास में एक ही मशग़ले में मोतद बिही (अच्छे ख़ासे) ज़माने तक रहते हैं।

8. क़ौमी हफ़्ता मनाने के लिये लोग कितने इन्तिज़ामात, ऐलानात, इख़्राजात करते हैं, मुसलमानों के लिये ज़िलहिज्जा के पहले पन्द्रह दिन क़ौमी हफ़्ते से भी बढ़कर हैं कि जिनके लिये न इन्तिज़ामाते खुसूसी करने की ज़रूरत है, न प्रोपेगंडे की।

9. दुनिया के सब मुसलमानों में आपस में उखुव्वलत, (भाई चारा)

मुहब्बत ताल्लुक़ात, तआरुफ़ और रिश्ता-ए-इत्तिहाद क़ायम करने के लिये हज बेहतरीन मौक़ा है।

10. इशाअते इस्लाम के शौक़ीन दीनी अहकाम की अहमियत और तब्लीग़ को इस मौक़े पर एहतिमाम से लेकर उठें, मक़ामी हज़रात बाहर से आने वाले मेहमानों की असल ख़ातिर और ज़ियाफ़त इसको समझें कि उनमें दीनी ज़ज्बा क़ुव्वत पकड़े, उनमें दीन के अहकाम पर अमल का वलवला और शौक़ पैदा हो, उनमें जो ज़ौअ्फ़ या बद्दीनी के असरात हों वे ज़ायल हो जायें, इसी तरह बाहर से आने वाले हज़रात मक़ामी अस्हाब की इआनत इसको समझें, तो दीन को जिस क़दर फ़रोग़ हो वह अज़्हर मिनश्शम्स[1] है।

11. गुरबा और उमरा का इख़्तिलात जो मुस्तक़िल तौर पर एक मक़्सूद चीज़ है कि इसकी वजह से एक तरफ़ अमीरों में से नख़्वत और ग़ुरूर दूर हो और दूसरी जानिब ग़ुरबा का हौसला बढ़े, वह हज में ऐसे कामिल तौर से पाया जाता है कि जिस की नज़ीर दूसरी जगह न मिलेगी। उमरा अपनी बदनी ज़रूरियात की वजह से ग़ुरबा की तरफ़ मुतवज्जह होंगे कि बार बरदारी, खाना पकाना और आमद व रफ़्त की तमाम ज़रूरियात का उनको ख़ुद पूरा करना मुश्किल है दूसरी जानिब ग़ुरबा की माली ज़रूरियात उनको उमरा की तरफ़ मुतवज्जह करेंगी, जिसकी वजह से इन दोनों तबक़ों का इख़्तिलात जो बसा औक़ात तआरुफ़ और मदारात से बढ़कर मवद्दत और दोस्ती तक पहुँच जाता है, जिस का सफ़रे हज में पूरी तरह से मुशाहदा होता रहता है।

12. मुसलमानों के इज्तिमाअ् को बिलख़ुसूस जबकि वे आजिज़ी और मस्कनत, ज़ारी और तज़र्रूअ् के साथ हो, अल्लाह जल्ल शानुहू की रहमत और लुत्फ़ व करम के मुतवज्जह करने में जितना दख़ल है, वह आमी से आमी आदमी से भी मख़फ़ी नहीं, हज का मौक़ा इसका बेहतरीन मंज़र है कि अ़रफ़ात का मैदान इस का ख़ुसूसी मज़्हर है।

13. आसारे क़दीमा का तहफ़्फ़ुज़ और अस्लाफ़, बिलख़ुसूस पहले अंबिया-ए-किराम के अहवाल का इल्म और इस्तिहज़ार सफ़रे हज का ख़ुसूसी समरा है।

---

1. सूरज की तरह रोशन यानी बिल्कुल साफ़।

14. मआशी हैसियत से दुनिया की मालूमात का ज़रिया सफ़रे हज से बेहतर नहीं है कि हर मुल्क की मस्नूआत, ईजादात, पैदावार के हालात और इस क़िस्म की जितनी तफ़सीलात मालूम करना चाहें, इस सफ़र में बेहतरीन तरीक़े से हासिल हो सकती हैं।

15. इल्मी हैसियत से सफ़रे हज निहायत बेहतर चीज़ है कि इस मौक़े पर हर जगह के उलमा मौजूद होते हैं। उनकी इल्मी हैसियत और हर मुक़ाम के इल्मी मराकिज, इल्मी कारनामे, उनकी तरक्क़ियात और तनज़्ज़ुल और उनके अस्बाब पर तफ़्सील से इत्तिला हो सकती है और मुख़्तलिफ़ नौअ् के उलमा से इफ़ादा और इस्तिफ़ादा हासिल हो सकता है।

16. दुनिया भर के औलिया, अब्दाल व अक़्ताब का एक मोतद बिही तब्क़ा हर साल हज में शिर्कत करता है, उनके फ़ुयूज़ व बरकात, अनवार व कमालात से इस्तिफ़ादे का बेहतरीन मौक़ा है।

17. अल्लाह की मासूम मख़्लूक़ फ़रिश्ते जो अर्श इलाही के तवाफ़ में हर वक़्त मशग़ूल रहते हैं, हज में उनसे तशब्बोह हासिल होता है और हदीस के पाक इर्शाद "मन तशब्ब-ह बिक़ौमिन फ़हु-व मिन हुम" (जो किसी क़ौम के साथ मुशाबहत पैदा करता है, उन्हीं में शुमार किया जाता है,) की बिना पर फ़रिश्तों के साथ, जो किसी वक़्त और किसी आन अल्लाह जल्ल शानुहू की मंशा के ख़िलाफ़ नहीं करते, मुशाबहत हासिल होती है।

18. पहली उम्मतों में मज़हबी हैसियत से रह्बानियत एक बहुत ही अहम और ऊँची चीज़ शुमार की जाती थी, मगर इस्लाम ने उसको रोक कर उसका बदल सफ़रे हज को क़रार दिया, चुनांचे ज़ीनत की अश्या, बीवी से सोहबत दरकिनार, सोहबत का ज़िक्र तक नाजायज़ कर दिया और उसका नेअ्मुल् बदल उसको क़रार दिया। *(इत्तिहाफ़)*

19. दुनियावी हैसियत से हर क़ौम में एक मेला लगता है और यह एक क़दीम दस्तूर है। हर मुल्क और हर मज़हब के लोग इसके हमेशा से आदी हैं। आम तौर पर लोग उसकी तरफ़ तब्अन मुतवज्जह होते हैं, साल भर तक उसका इंतिज़ार व एहतिमाम करते हैं। इस्लाम ने मुसलमानों के लिये हज को इसका नेअ्मुल् बदल क़रार दिया कि बजाये लह्व व लअिब, खेलकूद, शोर व शग़ब के मुख़्तलिफ़ मुज़ाहरों और नारों के, इन ही चीज़ों को इबादत की शक्ल में बदल

दिया, जिसमें इन सब जज़्बात का, जो लह्व व लअिब की शक्ल में थे तौहीद व इश्क़े इलाही की तरफ़ इमाला हो गया।

20. हज उन मुतबर्रक मक़ामात की ज़ियारत का ज़रिया और बरकात हासिल करने का मौक़ा है, जहां लाखों उश्शाक़ ने एड़ियां और माथे रगड़ रगड़ कर जाने दे दी।

21. सफ़र से एक तरफ़ तो अख़्लाक़ की जिला और सफ़ाई होती है, दूसरी तरफ़ बदन की सेहत के लिये मुईन है, हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है:- "साफ़िरू तसिहहू" (सफ़र करो, सेहतयाब होगे) (कंज़)

तब्दीले आब व हवा सेहत के लिये मुईन व मदद गार है। हज का सफ़र इसका बेहतरीन ज़रिया है।

22. हज उस इबादत की यादगार और बक़ा है जो हज़रत आदम अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम के ज़माने से लेकर हर मज़हब व मिल्लत में रही है।

23. इस्लाम का इब्तिदाई दौर जहां मुसलमान निहायत बेकसी के आलम में हर वक़्त मज़्लूमाना ज़िन्दगी बसर करते थे और हर क़िस्म के ज़ुल्म व सितम का शिकार होते थे और निहायत सब्र व इस्तिक़लाल के साथ उन सब मज़ालिम को बर्दाश्त करते थे जो कुफ़्फ़ार की तरफ़ से उन पर होते रहते थे और इस्लाम का इंतिहाई दौर जहां वे हिजरत के बाद ग़ालिब और फ़ातेह की शक्ल में रहे और ग़ालिब व क़वी होकर अपने कमाले अख़्लाक़ से न सिर्फ़ यह कि पुराने मज़ालिम को बिल्कुल नज़र अंदाज़ कर दिया, बल्कि अपने अख़्लाक़ की ख़ूबी और वुस्अत से इस्लाम को ऐसा फैलाया कि दुनिया के गोशे गोशे में उस का नूर फैल गया। इस सफ़रे हज में दोनों शहरों की ज़ियारत से दोनों यादगारें ताज़ा होती हैं और दोनों सबक़ याद करने का उम्मत को मौक़ा मिलता है।

24. मक्का मुकर्रमा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मौलद है, पैदाइश यहां हुई और 53 साल की उम्र तक के मुख़्तलिफ़ दौर यहां गुज़रे, उसके बाद मदीना तैयबा हिजरत का घर है और मज़ारे मुबारक वहां है। रिसालत के अक्सर अहकाम वहां नाज़िल हुए। इस सफ़र से दोनों यादगारों की ज़ियारत हुज़ूर सल्ल॰ के हर ज़माने की याद को ताज़ा करने वाली है और मुहब्बत को बढ़ाने वाली है। लोग यादगार क़ायम करने के लिये मुख़्तलिफ़ चीज़ें ईजाद

किया करते हैं। इस्लाम ने हज व ज़ियारत का हुक्म देकर खुद इस यादगार को क़ायम कर दिया।

25. मर्कज़े इस्लाम की तक़्वियत व क़ुव्वत और हरमैन शरीफ़ैन के रहने वालों की इआनत नुसरत, उनके हालात की तहक़ीक़, उनके साथ हमदर्दी और ग़मगुसारी का बेहतरीन ज़रिया हज व ज़ियारत है कि जब उनसे तफ़्सीली मुलाक़ात होगी तो उनकी इआनत और मदद का जज़्बा खुद ब खुद दिल में पैदा होगा और वहां से वापसी पर भी अर्से तक उनकी याद रहेगी। नमूने के तौर पर चंद उमूर की तरफ़ मुख़्तसर और मुज्मल इशारात किये हैं। ग़ौर करने से बहुत से उमूर और मसालेह समझ में आते रहते हैं, लेकिन यह निहायत अहम जुज़्व है कि असल मक़्सद अल्लाह जल्ल शानुहू के साथ ताल्लुक़ का बढ़ाना है और दुनिया मुहब्बत और उस की से बेरग्बती पैदा करना है। इस मज़्मून को एक क़िस्से पर ख़त्म करता हूँ जिसको साहिबे इत्तिहाफ़ ने नक़ल किया है।

शैख़ुल मशाइख़ क़ुत्बे दौरां शिब्ली क़द्दस सिर्रहू के एक मुरीद हज करके आये तो शैख़ ने उनसे सवालात फ़रमाये। वह फ़रमाते हैं कि मुझसे शेख़ ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि तुमने हज का इरादा और अज़्म किया था? मैंने अर्ज़ किया कि जी! पुख़्ता क़स्द हज का था। आपने फ़रमाया कि इसके साथ उन तमाम इरादों को एकदम छोड़ने का अहद कर लिया था, जो पैदा होने के बाद से आज तक हज की शान के ख़िलाफ़ किये? मैंने कहा, यह अहद तो नहीं किया था। आपने फ़रमाया कि फिर हज का अहद ही नहीं किया।

फिर शैख़ ने फ़रमाया कि एहराम के वक़्त बदन के कपड़े निकाल दिये थे? मैंने अर्ज़ किया जी, बिल्कुल निकाल दिये थे। आपने फ़रमाया, उस वक़्त अल्लाह के सिवा हर चीज़ को अपने से जुदा कर दिया था? मैंने अर्ज़ किया, ऐसा तो नहीं हुआ, आपने फ़रमाया, तो फ़िर कपड़े ही क्या निकाले?

आपने फ़रमाया, वुज़ू और ग़ुस्ल से तहारत हासिल की थी? मैंने अर्ज़ किया जी हां, बिल्कुल पाक साफ़ हो गया था। आपने फ़रमाया, उस वक़्त हर क़िस्म की गन्दगी और लग़्ज़िश से पाकी हासिल हो गयी थी? मैंने अर्ज़ किया, यह तो न हुई थी। आपने फ़रमाया, फिर पाकी ही क्या हासिल हुई?

फिर आपने फ़रमाया, लब्बैक पढ़ा था, मैंने अर्ज़ किया जी हां, लब्बैक पढ़ा था। आपने फ़रमाया कि अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से लब्बैक का जवाब

मिला था? मैंने अर्ज़ किया कि मुझे तो कोई जवाब नहीं मिला। तो फ़रमाया कि फिर लब्बैक क्या कहा?

फिर फ़रमाया कि हरमे मोहतरम में दाख़िल हुए थे? मैंने अर्ज़ किया कि दाख़िल हुआ था। फ़रमाया उस वक़्त हर हराम चीज़ के हमेशा हमेशा के लिये तर्क का अज़्म कर लिया था? मैंने कहा, यह तो मैंने नहीं किया। फ़रमाया कि फिर हरम में भी दाख़िल नहीं हुए।

फिर फ़रमाया कि मक्का की ज़ियारत की थी? मैंने अर्ज़ किया जी ज़ियारत की थी। फ़रमाया, उस वक़्त दूसरे आलम की ज़ियारत नसीब हुई? मैंने अर्ज़ किया कि उस आलम की तो कोई चीज़ नज़र नहीं आयी। फ़रमाया फिर मक्का की भी ज़ियारत नहीं हुई।

फिर फ़रमाया कि मस्जिदे हराम में दाख़िल हुए थे? मैंने अर्ज़ किया कि दाख़िल हुआ था। फ़रमाया कि उस वक़्त हक़ तआला शानुहू के क़ुर्ब में दाख़िला महसूस हुआ? मैं ने अर्ज़ किया कि मुझे तो महसूस नहीं हुआ। फ़रमाया कि तब तो मस्जिद में भी दाख़िला नहीं हुआ।

फिर फ़रमाया कि काबा शरीफ़ की ज़ियारत की? मैंने अर्ज़ किया कि ज़ियारत की। फ़रमाया कि वह चीज़ नज़र आयी जिसकी वजह से काबे का सफ़र इख़्तियार किया जाता है? मैंने अर्ज़ किया कि मुझे तो नज़र नहीं आयी। फ़रमाया फिर तो काबा शरीफ़ को नहीं देखा। फिर फ़रमाया कि तवाफ़ में रमल किया था? (ख़ास तौर से दौड़ने का नाम है) मैंने अर्ज़ किया कि किया था। फ़रमाया कि उस भागने में दुनिया से ऐसे भागे थे, जिससे तुमने महसूस किया हो कि तुम दुनिया से बिल्कुल यकसू हो चुके हो? मैंने अर्ज़ किया कि नहीं महसूस हुआ। फ़रमाया कि फिर तुमने रमल भी नहीं किया।

फिर फ़रमाया कि हज्रे अस्वद पर हाथ रखकर उस को बोसा दिया था? मैंने अर्ज़ किया जी, ऐसा किया था। तो उन्होंने ख़ौफ़ज़दा होकर एक आह खींची और फ़रमाया कि तेरा नास हो। ख़बर भी है कि जो हज्रे अस्वद पर हाथ रखे वह गोया अल्लाह जल्ल शानुहू से मुसाफ़ा करता है और जिससे हक़ सुब्हानहू व तक़द्दुस मुसाफ़ा करे, वह हर तरह से अम्न में हो जाता है, तो क्या तुझ पर अम्न के आसार ज़ाहिर हुए? मैंने अर्ज़ किया कि मुझ पर तो अम्न के आसार कुछ भी ज़ाहिर नहीं हुए, तो फ़रमाया कि तूने हज्रे अस्वद पर हाथ ही नहीं रखा।

फिर फ़रमाया कि मक़ामे इब्राहीम पर खड़े होकर दो रक्अत नफ़्ल पढ़ी थी। मैं ने अर्ज़ किया कि पढ़ी थी। फ़रमाया कि उस वक़्त अल्लाह जल्ल शानुहू के हुज़ूर में एक बड़े मर्तबे पर पहुंचा था क्या इस मर्तबे का हक़ अदा किया और जिस मक़्सद से वहां खड़ा हुआ था वह पूरा कर दिया? मैं ने अर्ज़ किया मैं ने तो कुछ नहीं किया। फ़रमाया कि तूने फिर तो मक़ामे इब्राहीम पर नमाज़ ही नहीं पढ़ी।

फिर फ़रमाया कि सफ़ा मर्वः के दर्मियान सई के लिये सफ़ा पर चढ़े थे? मैं ने अर्ज़ किया चढ़ा था। फ़रमाया वहां क्या किया ? मैंने अर्ज़ किया कि सात मर्तबा तक्बीर कही और हज के मक़्बूल होने की दुआ की। फ़रमाया कि क्या तुम्हारी तक्बीर के साथ फ़रिश्तों ने भी तक्बीर कही थी और अपनी तक्बीर की हक़ीक़त का तुम्हें एहसास हुआ था? मैं ने अर्ज़ किया नहीं। फरमाया कि तुमने तक्बीर ही नहीं कही। फिर फरमाया कि सफ़ा से नीचे उतरे थे। मैंने अर्ज़ किया कि उतरा था। फ़रमाया उस वक़्त हर क़िस्म की इल्लत दूर हो कर तुम में सफ़ाई आ गयी थी? मैंने अर्ज़ किया कि नहीं, फ़रमाया कि न तुम सफ़ा पर चढ़े न उतरे।

फिर फ़रमाया कि सफ़ा मर्वः के दर्मियान दौड़े थे? मैंने अर्ज़ किया कि दौड़ा था। फ़रमाया कि उस वक़्त अल्लाह के अलावा हर चीज़ से भाग कर उसकी तरफ़ पहुँच गये थे? (ग़ालिबन "फ़-फ़र्रतु मिन्कुम लम्मा ख़िफ़्तुकुम" की तरफ़ इशारा है, जो सूरः शुअरा में हज़रत मूसा अलैहि॰ के क़िस्से में है। दूसरी जगह अल्लाह पाक का इर्शाद है कि "फ़-फ़िर्रू इलल्लाह") मैंने अर्ज़ किया कि नहीं। फ़रमाया कि तुम दौड़े ही नहीं।

फिर फ़रमाया कि मर्वः पर चढ़े थे। मैंने अर्ज़ किया कि चढ़ा था। फ़रमाया कि तुम पर वहां सकीना नाज़िल हुआ और उससे वाफ़िर हिस्सा हासिल किया? मैं ने अर्ज़ किया कि नहीं। फ़रमाया कि मर्वः पर चढ़े ही नहीं।

फिर फ़रमाया कि मिना गये थे। मैंने अर्ज़ किया, गया था। फ़रमाया कि वहां अल्लाह जल्ल शानुहू से ऐसी उम्मीदें बंध गयी थीं जो मआसी के हाल के साथ न हों। मैंने अर्ज़ किया कि न हो सकीं। फ़रमाया कि मिना ही नहीं गये।

फिर फ़रमाया कि मस्जिदे खैफ़ में (जो मिना में है) दाख़िल हुए थे? मैंने अर्ज़ किया कि दाख़िल हुआ था। फ़रमाया कि उस वक़्त अल्लाह जल्ल शानुहू के ख़ौफ़ का इस क़दर ग़लबा हो गया था, जो उस वक़्त के अलावा न हुआ हो?

मैंने अर्ज़ किया कि नहीं। फ़रमाया कि मस्जिदे खैफ़ में दाख़िल ही नहीं हुए।

फिर फ़रमाया कि अरफ़ात के मैदान में पहुँचे थे? मैंने अर्ज़ किया कि हाज़िर हुआ था। फ़रमाया कि वहां इस चीज़ को पहचान लिया था कि दुनिया में क्यों आये थे? और क्या कर रहे हो? और अब कहां जाना है? और इन हालात पर मुतनब्बह करने वाली चीज़ को पहचान लिया था? मैंने अर्ज़ किया कि नहीं, फ़रमाया कि फिर तो अरफ़ात पर भी नहीं गये।

फिर फ़रमाया कि मुज़्दलिफ़ा गये थे? मैंने अर्ज़ किया कि गया था। फ़रमाया कि वहां अल्लाह जल्ल शानुहू का ऐसा ज़िक्र किया था जो उस के अलावा सब को दिल से भुला दे? (जिसकी तरफ़ क़ुरआन पाक की आयत "फ़ज़्कुरूल्ला-ह अिन्दल् मशअ-रिल हराम" में इशारा है) मैंने अर्ज़ किया कि ऐसा तो नहीं हुआ। फ़रमाया कि फिर तो मुज़्दलिफ़ा पहुँचे ही नहीं।

फिर फ़रमाया कि मिना में जा कर क़ुर्बानी की थी? मैंने अर्ज़ किया कि की थी, फ़रमाया कि उस वक़्त अपने नफ़्स को ज़िब्ह कर दिया था? मैंने अर्ज़ किया नहीं। फ़रमाया कि फिर तो क़ुर्बानी ही नहीं की।

फिर फ़रमाया कि रमी की थी? (यानी शैतानों के कंकरिया मारी थीं) मैंने अर्ज़ किया कि की थी। फ़रमाया कि हर कंकरी के साथ अपने साबक़ा जहल को फेंक कर कुछ इल्म की ज़्यादती महसूस हुई। मैं ने अर्ज़ किया कि नहीं। फ़रमाया कि रमी भी नहीं की।

फिर फ़रमाया कि तवाफ़े ज़ियारत किया था? मैंने अर्ज़ किया, किया था, फ़रमाया कि उस वक़्त कुछ हक़ाइक़ मुन्कशिफ़ हुए थे और अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से तुम पर ऐज़ाज़ व इकराम की बारिश हुई थी? इसलिये कि हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद है कि हाजी और उमरा करने वाला अल्लाह की ज़ियारत करने वाला है और जिसकी ज़ियारत को कोई जाये, उस पर हक़ है कि अपने ज़ायरीन का इकराम करे। मैंने अर्ज़ किया कि मुझ पर तो कुछ मुन्कशिफ़ नहीं हुआ। फ़रमाया कि तुमने तवाफ़े ज़ियारत भी नहीं किया।

फिर फ़रमाया कि हलाल हुए थे? (एहराम खोलने को हलाल होना कहते हैं) मैंने अर्ज़ किया कि हुआ था? फ़रमाया कि हमेशा हलाल कमाई का उस वक़्त अहद कर लिया था? मैंने अर्ज़ किया नहीं, फ़रमाया कि तुम हलाल भी नहीं हुए। फिर फ़रमाया कि अलविदाई तवाफ़ किया था? मैंने अर्ज़ किया कि किया था।

फ़रमाया कि उस वक़्त अपने तन मन को पूरी तरह अल-विदाअ् कह दिया था? मैंने अर्ज़ किया नहीं। फ़रमाया कि तुमने तवाफ़े विदाअ् भी नहीं किया।

फिर फ़रमाया कि दोबारा हज को जाओ और इस तरह हज करके आओ, जिस तरह मैं ने तुमसे तफ़्सील बयान की। फ़क़त

यह तवील क़िस्सा इसलिये नक़ल किया ताकि अंदाज़ा हो कि अहले ज़ौक़ का हज किस तरह होता है? हक़ तआला शानुहू अपने लुत्फ़ व करम से कुछ ज़ायक़ा इस नौअ् के हज का इस महरूम को भी अता फ़रमाये आमीन।

पांचवीं फ़स्ल

हज के आदाब में

हज के मुताल्लिक़ बहुत से रसाइल उलमा ने लिखे हैं, जिनमें तफ़सीली तौर पर हज के आदाब और हर हर रूक्न के आदाब ज़िक्र किये गये हैं। यह सफ़र सारी उम्र में अक्सर एक ही मर्तबा होता है, इसलिये मुनासिब है कि जब सफ़रे हज का इरादा हो तो उसके मुताल्लिक़ मोतबर उलमा के मुतअद्द रसाइल मंगवा कर उनको बहुत एहतिमाम से दो चार मर्तबा सफ़र से पहले मुताला कर ले, ताकि यह बड़ी रक़म जो इस सफ़र में ख़र्च होती है, आदाब की रिआयत के साथ ख़र्च होने की वजह से बेहतरीन मसरफ़ में ख़र्च हो। ऐसा न हो कि जहालत और ना वाक़्फ़ीयत की वजह से कोई ऐसी हरकत कर जाये। जिससे हज भी फ़ासिद हो जाये। सफ़र से पहले अगर इन रसाइल को चंद मर्तबा मुंताला कर लेगा तो मज़ामीन से एक मुनासबत पैदा होकर मौक़े पर अक्सर बातें याद आती रहेंगी और फिर इन रसाइल को सफ़र में भी साथ रखे ताकि हर मौक़े पर उस जगह के अहकाम और आदाब देखे जा सकें। अहले इल्म भी उनसे मुस्तग़्नी नहीं। दर्स के वक़्त इन मसाइल को पढ़ लेने से मुस्तहज़र नहीं होते। अक्सर देखा गया कि जो हज़रात दो तीन हज कर चुके हैं, वे हज के मसाइल में अहले इल्म से जिनका पहला ही हज हो, फ़ौक़ियत ले जाते है। इस जगह तमाम आदाब का एहाता मक़्सूद

नहीं है, वे हर जगह के अलाहिदा हैं! मुख़्तसरन चंद अहम उमूर का ज़िक्र किया जाता है। हक़ तआला शानुहू का पाक इर्शाद है:-

وَتَزَوَّدُوْا فَاِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى (بقره ع ۲۵)

(और जब हज का इरादा करो) तो ख़र्च ज़रूर साथ ले लिया करो, क्योंकि सबसे बड़ी बात ख़र्च लेने में (भीख मांगने से) बचा रहना है।

फ़ायदा:- इस आयते शरीफ़ा में सबसे अहम और सबसे मुक़द्दम चीज़ की तरफ़ इशारा फ़रमाया है और वह यह है कि हज को जाने के वक़्त रास्ते का ख़र्च साथ होना चाहिये, महज़ तवक्कुल पर चल देना हर शख़्स का काम नहीं।

अहादीस में कसरत से यह मज़्मून वारिद हुआ है कि बाज़ लोग बग़ैर ख़र्च के हज को चल देते थे और कहते थे कि हम मुतवक्किल हैं, फिर वहां पहुँच कर लोगों से सवाल करते थे, इस पर यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई।

एक हदीस में है कि बाज़ लोग बग़ैर ज़ादेराह के हज को चल देते थे और कहते थे कि जब हम हज को जाते हैं, फिर भी अल्लाह जल्ल शानुहू हमें न खिलायेगा, इस पर यह आयत नाज़िल हुई कि ज़ादेराह लिया करो। बेहतरीन ज़ादेराह वह है जो तुम्हारे चेहरों को लोगों के सामने होने से रोक दे।

(दुर्रे मंसूर)

यानी लोगों से सवाल की ज़िल्लत से रोक दे। यहां एक अहम बात यह क़ाबिल समझने के है कि तवक्कुल बहुत ऊँची और आला और अफ़ज़ल सिफ़त है, लेकिन वह ज़बानी चीज़ नहीं है, बल्कि क़ल्बी चीज़ है। जिसका दिल इस क़दर मुतमइन हो कि उस को अपनी जेब में पैसा होने पर इतना एतिमाद न हो, जितना अल्लाह के ख़ज़ाने में होने पर एतिमाद होता है, उस को तवक्कुल सज़ावार (सही और लायक़) है और उसकी शान के मुनासिब है और जिसको यह दर्जा हासिल न हो, उसके लिये मुनासिब नहीं। यहां दो वाक़िए क़ाबिले ग़ौर हैं-

1. एक हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० का मशहूर क़िस्सा है कि जब ग़ज़्वा-ए-तबूक के वक़्त हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों से चंदे की तहरीक फ़रमायी तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० जो कुछ घर में था सब कुछ ले आये, कुछ भी घर में न छोड़ा। बंदा अपने रिसाला "हिकायाते सहाबा" में इस क़िस्से को मुफ़स्सल ज़िक्र कर चुका है।

2. दूसरा वाक़िआ यह है कि एक सहाब एक बैज़े के बक़द्र सोने का डला लाये और हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में पेश करके अर्ज़ किया कि यह सदक़ा है, मेरे पास इसके सिवा कुछ नहीं। हुज़ूर सल्ल॰ ने इस तरफ़ से ऐराज़ फ़रमा लिया। वह दूसरी तरफ़ को सामने हाज़िर हुए और यही अर्ज़ किया। इसी तरह हुज़ूर सल्ल॰ ऐराज़ फ़रमाते रहे और वह बार बार सामने आकर यही अर्ज़ करते रहे। चौथी मर्तबा में हुज़ूर सल्ल॰ ने उसको लेकर इस ज़ोर से फेंका कि अगर उनके लग जाता तो ज़ख़्मी कर देता, फिर इर्शाद फ़रमाया कि बाज़ आदमी अपना सब कुछ सदक़ा कर देते हैं फिर लोगों की तरफ़ दस्ते सवाल बढ़ाते हैं।

इन दो क़िस्सों से इस का सही अंदाज़ा हो जाता है कि तवक्कुल किस हालत में सज़ावार है कि जो शख़्स बिल्कुल ख़ाली हाथ होकर भी न बे सब्री करे, न दिल में, अल्लाह जल्ल शानुहू और बंदों की तरफ़ से शिकवा पैदा हो, न लोगों से सवाल करे, उसको यक़ीनन मुनासिब है और जो ऐसा न हो, बल्कि दूसरों के लिये बार बने और बे सब्री, नाशुक्री में मुब्तला हो, उसके लिये हरगिज़ मुनासिब नहीं कि बग़ैर ज़ादेराह के महज़ तवक्कुल पर चल दे।

اَلْحَجُّ اَشْهُرٌ مَّعْلُوْمَاتٌ ج فَمَنْ فَرَضَ فِيْهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ

यह आयते शरीफ़ा भी आदाबे हज के अहम तरीन आदाब को शामिल है। इसका तर्जुमा पहली फ़स्ल में गुज़र चुका और कुछ तौज़ीह पहली फ़स्ल की अहादीस में सबसे पहली हदीस में गुज़र चुकी।

अहादीस

(۱) عن ابی هریرةؓ قال قال رسول الله صلی الله علیه وسلم اذا خرج الحاج حاجا بنفقة طیبة ووضع رجله فی الغرز فنادی لبیك اللّٰهمّ لبیك ناداه مناد من السماء لبیك وسعدیك زادك حلال وراحلتك حلال وحجك مبرور غیرما زور واذا خرج بالنفقة الخبیثة فوضع رجله فی الغرز فنادی لبیك ناداه مناد من السماء لالبیك ولا سعدیك زادك حرام ونفقتك حرام وحجك مازور غیرمبرور رواه الطبرانی فی الاوسط ورواه الاصبهانی من حدیث اسلم مولیٰ عمرؓ مرسلا مختصرا كذا فی الترغیب وفی الاتحاف بتخریج ابی ذر الهروی وفی منسكه عن ابی هریرةؓ بلفظ اخرزائدا علیه وفی الكنز بمعناه عن عمرو انس و غیرهما.

1. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल किया गया कि जब हाजी हलाल माल के साथ हज को निकलता है और सवारी पर सवार होकर कहता है कि "लब्बैक अल्लाहुम्-म" फ़रिश्ता भी आसमान से उसकी ताईद और तक़्वियत में "लब्बैक व सअ्दैक्" कहता है। (यानी तेरा लब्बैक कहना मक़्बूल है) वह फ़रिश्ता कहता है कि तेरा तोशा भी हलाल है, तेरी सवारी भी हलाल है (कि हलाल माल से हासलि हुए) और तेरा हज मबरूर है (जिसका बयान फ़स्ले अव्वल हदीस नं॰ 2 में गुज़र चुका है) और कोई वबाल तुझ पर नहीं और जब आदमी हराम माल के साथ हज को जाता है और सवारी पर सवार होकर लब्बैक कहता है। तो फ़रिश्ता आसमान से कहता है कि न लब्बैक, न सअ्दैक् यानी तेरी लब्बैक ग़ैर मक़्बूल है, तेरा तोशा हराम है, तेरा ख़र्च हराम है, तेरा हज मअ्सियत है, यह हज मबरूर नहीं।

फ़ायदा:- एक हदीस में है कि जब आदमी हराम माल के साथ हज को जाता है और लब्बैक कहता है तो, अल्लाह जल्ल शानुहू का पाक इर्शाद होता है कि तेरी लब्बैक नहीं, यह मर्दूद है।

एक और हदीस में है कि अल्लाह जल्ल शानुहू का पाक इर्शाद होता है कि यह हज तेरा मर्दूद है यानी मक़्बूल नहीं।

एक हदीस में आया है कि जो शख़्स हराम कमाई के साथ हज को जाये, उसका सफ़र अल्लाह की इताअत में नहीं है, और जब वह सवारी पर सवार होकर लब्बैक कहता है तो फ़रिश्ता कहता है कि न लब्बैक, न सअ्दैक, तेरी कमाई हराम, तेरा लिबास हराम (कि हराम कमाई से तैयार हुआ) तेरी सवारी हराम, तेरा तोशा हराम, तू ऐसे हाल में लौट की तुझ पर वबाल है और बुराई का मुज़्दा अपने साथ लेता जा, और जब आदमी हलाल माल के साथ हज को जाता है और सवारी पर सवार होकर लब्बैक कहता है तो फ़रिश्ता भी उसके साथ लब्बैक व सअ्दैक कहता है और कहता है कि तेरी कमाई हलाल है, तेरा लिबास हलाल है, तेरी सवारी हलाल है, तेरा तोशा हलाल है, हज्जे मबरूर के साथ वापस हो, तुझ पर कोई वबाल नहीं।

एक हदीस में आया है कि जब हज़रत मूसा अलैहि॰ ने हज किया तो सफ़ा मर्वः के दर्मियान वह लब्बैक पढ़ते हुए दौड़ रहे थे कि आसमान से आवाज़

आयी "लब्बैक अब्दी अ-न म-अ-क" (मेरे बंदे, मैं भी लब्बैक कहता हूँ और तेरे साथ हूँ) यह सुनकर हज़रत मूसा अलैहि० सज्दे में गिर गये। *(दुर्रे मंसूर)*

हज़रत ज़ैनुल आबिदीन रह० का क़िस्सा फ़स्ले अव्वल की हदीस नं० 6 में गुज़र चुका है कि जब एहराम बांधा तो लब्बैक कहने के वक़्त चेहरा ज़र्द हो गया और बदन पर कपकपी आ गयी और लब्बैक न कह सके। किसी ने दर्याफ़्त किया, तो फ़रमाया कि मुझे डर है कि उसके जवाब में "ला लब्बैक" न कह दिया जाये कि तेरी लब्बैक मोतबर नहीं। अगरचे फ़ुक़हा के नज़दीक फ़र्ज़ हज इससे भी अदा हो जाता है, लेकिन वह हज्जे मक़्बूल नहीं होता और इस हराम कमाई का गुनाह मुस्तक़िल अलाहिदा रहता है। हम लोग इसमें बहुत तसाहुल और ग़फ़लत करते हैं। अपनी क़ुव्वत और ज़ोर के घमंड पर दूसरों के माल पर ज़ुल्म से क़ब्ज़ा कर लेते हैं और दिल में ख़ुश होते हैं कि किस की मजाल है जो हम से मुतालबा कर सके, या हम पर इलज़ाम क़ायम कर दे, लेकिन कल जब हर मज़्लूम क़वी होगा, उस वक़्त अपने उस ज़ुल्म की हक़ीक़त वाज़ेह होगी। जब एक दानिक़ जो तक़रीबन दो पैसे के बराबर होता है, उसके बदले में सात सौ मक़्बूल नमाज़ें अदा करनी पड़ेंगी, हालांकि इतनी मक़्बूल नमाज़ें शायद हमारे पास हों भी नहीं, लेकिन फ़ी दो पैसा यह अदायगी क़ियामत में करना पड़ेगी। *(शामी)*

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मर्तबा एक सहाबा रज़ि० से दर्याफ़्त किया कि जानते हो मुफ़्लिस कौन है? सहाबा ने अर्ज़ किया कि हम तो मुफ़्लिस उसको कहते हैं जिसके पास माल व मताअ् न हो। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि मुफ़्लिस तो वह है जो क़ियामत के दिन बहुत सी नमाज़ें, रोज़े वग़ैरह लेकर आये, लेकिन किसी को दुनिया में गालियां दी थीं, किसी पर तोहमत लगयी थी, किसी का माल खा लिया था। किसी को मारा था, क़ियामत में उसकी नेकियों में से कुछ इसने ले लिया, कुछ उसने ले लिया और नेकियां ख़त्म हो गयीं तो उन मज़्लूम लोगों के गुनाह उसके ज़ुल्म के बक़द्र लेकर उस पर डाल दिये जायेंगे और फिर जब नेकियां ख़त्म हो गयीं और गुनाह अपने अलावा दूसरों के भी सर पड़ गये तो उसको जहन्नम में फेंक दिया जायेगा। *(मिश्कात)*

दूसरी हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि जिसके ज़िम्मे किसी दूसरे का हक़ हो, आबरू रेज़ी का हो या किसी और क़िस्म का हो, वह आज दुनिया में माफ़ करा ले, क़ब्ल इसके कि वह दिन

आ जाये, जिसमें रूपया पैसा आदमी के पास न होगा, अगर कोई नेक अमल उसके पास है तो उससे ज़ुल्म का बदला अदा किया जायेगा और उसके पास नेक अमल नहीं है तो मज़्लूम के गुनाह उस पर लाद दिये जायेंगे। *(मिश्कात)*

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद है कि जो शख़्स एक बालिश्त ज़मीन किसी दूसरे की ज़ुल्म से छीन लेगा, क़ियामत के दिन वह हिस्सा सात ज़मीनों तक तौक़ बना कर उस ज़ालिम की गरदन में डाल दिया जायेगा। *(मिश्कात)*

उसका जितना बोझ और वज़न गरदन पर पड़ेगा वह ज़ाहिर है।

एक मर्तबा हुज़ूर सल्ल॰ सूरज गरहन की नमाज़ पढ़ रहे थे, उसमें हुज़ूर सल्ल॰ के सामने जन्नत और दोज़ख़ के अहवाल ज़ाहिर हुए तो हुज़ूर सल्ल॰ ने जहन्नम में एक औरत को देखा, जिसने किसी बिल्ली को दुनिया में बांध रखा था और उसके खाने की ख़बरगीरी में कोताही की, जिसकी वजह से उसको अज़ाब हो रहा था कि न उसने उसके खाने की ख़बर रखी और न उसको आज़ाद छोड़ा कि वह अपने आप ज़मीन पर गिरी पड़ी चीज़ों से पेट भर लेती। *(मिश्कात)*

जो लोग जानवारों को पालते हैं। उन पर उनकी ख़बरगीरी की बड़ी सख़्त ज़िम्मेदारी है, वे बे ज़बान अक्सर भूख, प्यास में मुब्तला हो जाते हैं और उन पालने वालों को अपने कारोबार में ख़्याल भी नहीं रहता।

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद है कि क़ियामत में बदतरीन शख़्स वह है जो दूसरे की दुनिया की ख़ातिर अपनी आख़िरत को नुक़्सान पहुँचाये। *(मिश्कात)*

कि दूसरे ने किसी पर ज़ुल्म किया। आप ताल्लुक़ात के ज़ोर में उसके हामी बन गये, जिससे दुनिया का नफ़ा तो उसको हासिल हुआ और आख़िरत उसके साथ अपनी भी बर्बाद हुई, इसलिये निहायत एहतिमाम से ऐसे उमूर से बचना चाहिए और हर वक़्त इसकी फ़िक्र करनी चाहिए कि न मालूम कब मौत आ जाये और यह वबाल सर पर रहे, बिल ख़ुसूस सफ़रे हज को जाते वक़्त बहुत एहतिमाम से इन उमूर से पाकी हासिल करे कि तवील सफ़र है, न मालूम वापसी मुक़द्दर है या नहीं।

(۲) عن ابن عباسؓ قال كان فلان ردف رسول الله صلى الله عليه وسلم يوم

عرفة فجعل الفتى يلاحظ النساء ينظر اليهن فقال له رسول الله صلى الله عليه وسلم يا ابن اخى ان هذا يوم من ملك فيه سمعه وبصره ولسانه غفرله رواه احمد باسناد صحيح كذا فى الترغيب والقصة معروفة فى كتب الحديث عن الفضل بن عباس رويت بطرق عديدة والفاظ مختلفة.

2. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि एक नौ उम्र लड़के हुज़ूर सल्ल॰ के साथ सवारी पर सवार थे, उनकी नज़र औरतों पर पड़ गयी, और उन को देखने लगे। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, भतीजे, यह ऐसा दिन है कि जो शख़्स इस दिन में अपने कान आंख, और ज़बान की हिफ़ाज़त रखे, उसकी मग़्फ़िरत हो जाती है।

फ़ायदाः- चूंकि मज्मे का किस्सा होता है, हर किस्म के मर्द व औरत एक जगह जमा होते हैं, इसलिये बहुत एहतिमाम से उस दिन अपनी हिफ़ाज़त रखना ज़रूरी है, ऐसा न हो कि बद-नज़री से या ना महरम की आवाज़ लज़्ज़त के सुनने से या किसी नाजायज़ लफ़्ज़ के ज़बान से निकालने से नेकी बर्बाद गुनाह लाज़िम हो जाये, इसलिये क़ुरआन पाक में भी इसको एहतिमाम से ज़िक्र किया गया-

فَمَنْ فَرَضَ فِيهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ

"कि ये चीज़ें हज में नहीं होनी चाहियें।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि अगर आदमी की नज़र किसी अजनबी औरत पर पड़ जाये और वह फ़ौरन अपनी नज़र को हटा ले, तो हक़ तआला शानुहू उसको ऐसी किसी इबादत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाते हैं, जिसकी लज़्ज़त और हलावत उसको महसूस होती है। *(मिश्कात)*

एक हदीस में है कि जब आदमी किसी अजनबी औरत के साथ तंहा मकान में होता है तो तीसरा शख़्स वहां शैतान होता है। *(मिश्कात)*

इस सफ़र में अक्सर औरतें ना महरमों के साथ सफ़र करती हैं और बसा औक़ात महरम के साथ होने की सूरत में भी अवारिज़ की वजह से मकान में तंहा हो जाने की नौबत आ जाती है, इसलिये बहुत एहतिमाम से इस का लिहाज़ रखना चाहिये कि ऐसी नौबत न आ सके।

एक हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि कोई औरत किसी ना-महरम के साथ तंहा मकान में न ठहरे और कोई औरत बग़ैर महरम के सफ़र न करे। एक सहाबी रज़ि॰ ने अर्ज़ किया कि, या रसूलल्लाह! मेरा नाम फ़्लां ग़ज़्वे में जाने वालों में लिखा गया और मेरी बीवी हज को जा रही है। हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि जाओ, अपनी बीवी के साथ हज को जाओ। *(मिश्कात)*

यहां जिहाद जैसी अहम चीज़ में जाने वाले सहाबी (रज़ि॰) को बीवी के हज की वजह से हुज़ूर सल्ल॰ ने मुअख़्ख़र कर दिया।

एक हदीस में वारिद है कि जब औरत घर से निकलती है तो एक शैतान उसके साथ लग जाता है, यानी ख़ुद उसको बहकाने के लिये और दूसरों को उसकी तरफ़ मुतवज्जह करने के लिये हर वक़्त कमबख़्त ताक में रहता है, इसलिये महरम का ऐसी हालत में साथ रहना ज़रूरी है।

एक हदीस में आया है कि हुज़ूर सल्ल॰ ने तंहाई में औरत के पास जाने की मुमानअत फ़रमायी। किसी ने अर्ज़ किया, हुज़ूर सल्ल॰ अगर जाने वाला देवर हो यानी ख़ाविंद का भाई? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि देवर तो मौत है, यानी उससे ज़्यादा अंदेशा और ख़ौफ़ है और बहुत ज़्यादा एहतियात की ज़रूरत है कि हर वक़्त का पास रहना है, इसमें ख़तरात का ज़्यादा अंदेशा है।

हदीसे पाक में कान आंख वग़ैरह की हिफ़ाज़त को फ़रमाया है, वह ना महरमों की बात सुनना या देखने के साथ मख़्सूस नहीं, बल्कि किसी की ग़ीबत, चुगलख़ोरी वग़ैरह सुनना या ज़बान से अदा करना सब ही इस में दाख़िल हैं। इसी तरह हर क़िस्म की नाजायज़ चीज़ लह्व व लअिब को देखना भी इसमें शामिल है।

(۳) عن ابن عمرؓ قال سال رجل رسول الله صلی الله علیه وسلم فقال ماالحاج قال الشعث التفل فقام اخر فقال یا رسول الله ای الحج افضل قال العج والثج کذا فی المشکوٰة.

3. एक सहाबी रज़ि॰ ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सवाल किया कि हाजी की क्या शान होनी चाहिये? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि बिखरे हुए बालों वाला मैला कुचैला हो फिर दूसरे सहाबी रज़ि॰ ने सवाल किया कि हज कौन सा अफ़ज़ल है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि जिसमें ख़ूब (लब्बैक के साथ) चिल्लाना हो, और

(क़ुर्बानी का) खूब ख़ून बहाना हो।

फ़ायदाः- इस हदीस शरीफ़ में तीन मज़्मून ज़िक्र किये गये हैं।

1. अव्वल यह कि हाजी की शान यह है कि बिखरे हुए बाल हों, कपड़े मैले हों, यह असल हाजी की शान है। उसकी शान के यह हरगिज़ मुनासिब नहीं कि इस हालत में भी ज़ेब व ज़ीनत की तरफ़ मुतवज्जह हो। इसी वजह से एहराम की हालत में खुश्बू का इस्तेमाल नाजायज़ क़रार दिया गया कि आशिक़ को इन चीज़ों से क्या काम।

एक मर्तबा ज़िलहिज्जा की आठ या नौ तारीख़ थी। हज़रते अक़्दस मौलाना अल हाज्ज सय्यद हुसैन अहमद साहिब मदनी अदामल्लाहु ज़िला-ल ब-र कातिही तशरीफ़ लाये। मैंने इत्र की शीशी मलने के लिये सामने की। मौलाना ने उस को लेकर मला और निहायत ठंडा सांस भरकर फ़रमाया कि आज उश्शाक़ इत्र से रोक दिये गये हैं। इससे अंदाज़ा होता है कि जिनके दिलों में इश्क़ का ज़ख़्म है, वे मक्का से दूर रह कर भी वहां के तसव्वुर की लज़्ज़त हासिल करते रहते हैं।

मैंने अपने वालिद साहब को अक्सर देखा कि ज़िलहिज्जा की शुरू की तारीख़ों में अक्सर बे इख़्तियार उनके मुंह से लब्बैक निकल जाती थी। पहली फ़स्ल की हदीस नं॰ 3 के ज़ैल में गुज़र चुका है कि हक़ तआला शानुहू इस बात पर फ़रिश्तों से फ़ख़्र करते हैं कि मेरे बंदे बिखरे हुए बाल और ग़ुबार आलूद कपड़ों से आये हैं और मुतअद्दद अहादीस में इस तफ़ाख़ुर का ज़िक्र आया है।

2. दूसरा मज़्मून लब्बैक आवाज़ से पढ़ना, यह भी कसरत से रिवायात में वारिद हुआ है।

एक हदीस में आया है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम मेरे पास तशरीफ़ लाये और फ़रमाया कि अल्लाह जल्ल शानुहू का इर्शाद है कि तुम अपने साथियों को इस का हुक्म करो कि लब्बैक पुकार कर कहें, इसलिये कि यह हज का शिआर है।

एक और हदीस में है कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने खुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि आप लब्बैक पुकार कर कहें कि यह हज का शिआर है। (कंज़)

पहली फ़स्ल की हदीस नं॰ 6 पर गुज़र चुका है कि जब आदमी लब्बैक

कहता है तो उस के साथ हर पत्थर और दरख़्त और ज़मीन भी लब्बैक कहती है और एक हदीस में आया है कि जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम लब्बैक कहते थे तो हक़ तआला शानुहू की तरफ़ से लब्बैक या मूसा जवाब में इर्शाद होता था।

3. तीसरा मज़्मून हदीसे बाला में क़ुर्बानी की कसरत है। क़ुर्बानी मुस्तक़िल इबादत है जो साहिबे निसाब पर वाजिब है और जो साहिबे निसाब न हो, उसके लिये मुस्तहब है, लेकिन हज में इसकी फ़ज़ीलत और भी ज़्यादा है और इसकी कसरत मर्ग़ूब है। ख़ुद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने हज में सौ ऊँट क़ुर्बानी किये थे। हुज़ूर सल्ल० का पाक इर्शाद है कि क़ुर्बानी करना हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की सुन्नत है और क़ुर्बानी के जानवर के हर बाल के बदले में एक नेकी है।

एक हदीस में है कि क़ुर्बानी का जानवर जब ज़िब्ह होता है तो पहले क़तरे पर क़ुर्बानी करने वाले के सब गुनाह माफ़ हो जाते हैं। और क़ियामत के दिन क़ुर्बानी का जानवर मय अपने ख़ून और गोश्त वग़ैरह के लाया जायेगा और सत्तर दर्जे ज़्यादा वज़नी बना कर आमाल की तराज़ू में रखा जायेगा। *(कंज़)*

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी और अपनी तमाम उम्मत की तरफ़ से क़ुर्बानी की तो उम्मत को भी ज़ेबा है कि अपनी क़ुर्बानी के साथ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से भी एक क़ुर्बानी किया करें। हज़रत अली रज़ि० हमेशा एक बकरा अपनी तरफ़ से क़ुर्बानी करते थे और एक हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ से। किसी ने आपसे दर्याफ़्त किया तो आपने फ़रमाया कि मुझे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि मैं आपकी तरफ़ से क़ुर्बानी करूँ, इसलिये मैं हमेशा करता रहूँगा। *(कंज़)*

हज़रत उमर रज़ि० अपने छोटे बच्चों की तरफ़ से ख़ुद क़ुर्बानी किया करते थे। क़ुर्बानी दर हक़ीक़त एक बहुत अहम यादगार है जिसकी तरफ़ हुज़ूर सल्ल० के पाक इर्शाद कि हज़रत इब्राहीम की सुन्नत है में इशारा गुज़र चुका है। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम के बुढ़ापे की हालत में बड़ी तमन्नाओं से औलाद हुई और जब वह होनहार देखने के क़ाबिल हुई कि बाप की भी देख कर रूह ताज़ा हो जाये तो उनको ज़िब्ह कर देने का इशारा हुआ, जो हक़ीक़तन हज़रत इब्राहीम और साहबज़ादा हज़रत इस्माईल अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु

वस्सलाम के लिये बड़ा सख़्त इम्तिहान था, दोनों बाप बेटों ने इस इम्तिहान को पूरा करने में बशाशत से पेशक़दमी की और हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने तेज़ छुरी लेकर साहबज़ादे के गले पर चला दी, लेकिन अल्लाह की क़ुदरत का यह अदना करिश्मा था कि इस अमल की तक्मील बजाये साहिबज़ादे के, जानवर पर हुई। लेकिन "क़द सद्दक़्तर्रूअ्या" (तुमने अपने ख़्वाब को सच्चा कर दिखाया) का मुज़्दा मिला तो हक़ीक़तन यह अपनी औलाद की क़ुर्बानी का बदल है, जो महज़ अल्लाह के लुत्फ़ व करम से उसका बदल बन गया। उस वक़्त यही तसव्वुर होना चाहिये कि गोया अपने नफ़्स को और आल औलाद को अल्लाह के रास्ते में क़ुर्बान कर रहा है।

इज्माली आदाब

शरीअत के हर हुक्म और इस्लाम के हर रूक्न के साथ कुछ आदाब भी मुक़र्रर हैं। नमाज़ हो या रोज़ा, ज़कात हो या हज, हर चीज़ में आदाब की तहक़ीक़ और उसकी रिआयत की हत्तल वसअ् (जहां तक हो सके) कोशिश होना चाहिये।

हज़रते अक़्दस शाह अब्दुल अज़ीज़ साहिब नव्वरल्लाहु मर्क़दहू ने तफ़्सीरे अज़ीज़ी में तहरीर फ़रमाया है कि:-

من تهاون بالاداب عوقب بحرمان السنة ومن تهاون بالسنة عوقب بحرمان الفرائض ومن تهاون بالفرائض عوقب بحرمان المعرفة

"यानी जो शख़्स आदाब में सुस्ती करता हैं, वह सुन्नत से महरूमी की बला में गिरफ़्तार किया जाता है और जो सुन्नत में सुस्ती करता है, वह फ़राइज़ के छूटने की मुसीबत में मुब्तला होता है, और जो फ़राइज़ में सुस्ती करता है, वह मअ्रिफ़त की महरूमी में मुब्तला होता है।"

यही वजह है कि बहुत से उमूर पर अहादीस में कुफ़्र का इतलाक़ किया गया है कि वह इसी ज़ाब्ते के मुवाफ़िक़ कुफ़्र तक पहुँचा देता है, इसलिये शरीअत के हर हुक्म मे आदाब का एहतिमाम चाहे किसी उज़्र की वजह से न हो सके, मुज़ायक़ा नहीं, मगर उनकी वक़अत और अहमियत दिल में होना चाहिये, लापरवाही और फ़ुज़ूल समझ कर उनको हरगिज़ न

छोड़ना चाहिये। अहकामें शरइय्यः के आदाब व मुस्तहब्बात उलमा ने बड़े एहतिमाम से अपनी अपनी जगह जमा किये हैं, उनकी तहक़ीक़ व तफ़्तीश की जाये। उलमा के इख़्तिलात और उनके मुज़ाकरों से भी बहुत से आदाब मालूम हो जाते हैं। यहां चंद आदाब का ज़िक्र नमूने और इज्माल के तौर पर किया जाता है-

1. जब अल्लाह जल्ल शानुहू किसी खुश नसीब को इस सआदत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये, मसलन हज फ़र्ज़ हो जाये या हज्जे नफ़्ल के अस्बाब पैदा हो जायें, तो फिर इरादे की तक्मील में उज्लत (जल्दी) करना चाहिये, बिलखुसूस फ़र्ज़ हज को मामूली उज़्रों की वजह से हरगिज़ मुअख़्ख़र न करना चाहिये। कि शैतान ऐसे मवाक़े पर लग्व ख़्यालात और बे मंहल ज़रूरियात दिल में जमा कर देता है और तरह तरह के वस्वसे दिल में डालता है।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से नक़ल किया गया कि शैतान का मक़ूला जो क़ुरआन पाक में सूरः आराफ़ रूकूअ् 2 में ज़िक्र किया गया-

قَالَ فَبِمَآ اَغْوَيْتَنِىْ لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَآئِلِهِمْ ؕ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ۝

तर्जुमा:- "शैतान ने कहा कि ब सबब इसके कि या अल्लाह, आपने मुझे गुमराह किया है, मैं क़सम खाता हूँ कि मैं उन आदमियों के लिये आपकी सीधी राह पर जाकर बैठूँगा, और फिर चारों तरफ़ से उन पर हमला करूँगा, आगे से भी पीछे से भी, दायें से भी, बायें से भी और उन में से आप अक्सर लोगों को शुक्रगुज़ार न पायेंगे,

सीधी राह दीन का रास्ता है और दीन के सारे ही शोबे इसमें दाख़िल हैं।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ से नक़ल किया गया कि ख़ास तौर पर हज का रास्ता इससे मुराद है। *(इत्तिहाफ़)*

यानी वह कमबख़्त उस पर मुसल्लत होकर चारों तरफ़ से आदमी को परेशानियों में मुब्तला करता है और तरह तरह के उज़्र सामने ला कर हज़ से रोकता है और ज़ाहिर बात है कि जब हज से उसकी सारी मेहतन बेकार हो जाती है, अरफ़ात का रोना उम्र भर के गुनाहों को धो देता है, तो वह जितना भी इस

सफ़र के ख़िलाफ़ सई करे, क़रीने क़ियास है, इसलिये मवानेअ् (रूकावटों) को शैतानी असर समझ कर हत्तल् वसअ् उनके दफ़ा करने की और उनको ग़ैर अहम समझने की कोशिश करना चाहिये।

2. मुनासिब है कि जब सफ़र का इरादा हो तो मस्नून इस्तिख़ारा कर ले, नफ़्से हज के लिये इस्तिख़ारे की ज़रूरत नहीं, मसल मशहूर है -

दर कारे ख़ैर हाजत हेच इस्तिख़ारा नेस्त ॥

"कारे ख़ैर में इस्तिख़ारे की हाजत नहीं" लेकिन चूंकि अहम सफ़र है, रास्ता दुश्वार गुज़ार है, इन उमूर के मुताल्लिक़ इस्तिख़ारा करे कि कब चले, किस रास्ते से जाये, किस जहाज़ में जाये वग़ैरह वग़ैरह।

हज़रत जाबिर रज़ि॰ इर्शाद फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमें इस्तिख़ारा करने की तालीम इस तरह एहतिमाम से दिया करते थे, जिस एहतिमाम से क़ुरआन पाक की सूरः याद कराते थे और यह इर्शाद फ़रमाया करते थे कि जब कोई मुहतम्म बिश्शान अम्र पेश आये तो दो रक्अत नफ़्ल नमाज़ पढ़ने के बाद यह दुआ पढ़े। इस्तिख़ारे की दुआ मशहूर है, हज के सब रसाइल में मौजूद है।

3. हज के मसाइल मालूम करने की सई (कोशिश) करे। इब्ने अमीरूल हाज्ज रह॰ लिखते हैं कि सब से अहम चीज़ उन मसाइल का मालूम करना है, जो हज को जाने के क़ब्ल और रवानगी के बाद और हज के दौरान में पेश आते हैं, कि इल्म का सीखना हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हर शख़्स पर फ़र्ज़ किया है, इसलिये हज के फ़राइज़ और सुनन और जो चीज़ें उसमें हराम या मकरूह हैं, उनका मालूम करना ज़रूरी है। *(मद्ख़ल)*

बहुत से रसाइल उर्दू में इस मौज़ूअ् पर शाया हो (छप) चुके हैं, उनको बिल इस्तीआब दो चार मर्तबा सफ़र से पहले पढ़ ले, ताकि ना वाक़फ़ियत की वजह से इस अहम फ़रीज़े की अदाएगी में नुक़्सान न रह जाये। आम उलमा भी इससे बे नियाज़ नहीं हैं। दर्स के वक़्त मसाइल का नज़र से गुज़र जाना दूसरी बात है, वक़्त पर मुस्तहज़र होना और चीज़ है। यह सही है कि उनको सरसरी तौर से देख लेना काफ़ी है, अवाम को बहुत एहतिमाम से और ग़ौर से देखने की ज़रूरत है और ज़्यादा बेहतर यह है कि किसी आलिम की रफ़ाक़त सफ़र में इख़्तियार करे और हर चीज़ को उससे तहक़ीक़ करता रहे। तीन रिसालों के मुताले का

बंदा-ए-नाकारा ख़ुसूसियत से मश्विरा देता है।

1. एक ज़ुब्दतुल मनासिक, मुअल्लफ़ा क़ुत्बे आलम हज़रत गंगोही नव्वरल्लाहु मर्क़दहू॰

2. दूसरे "ज़ियारतुल हर मैन" मुअल्लफ़ा मौलाना आशिक़ इलाही साहिब रहमतुल्लाहि, अलैहि,

3. तीसरे "मुअल्लिमुल हुज्जाज" मुअल्लफ़ा मौलाना सईद अहमद साहिब रह॰ ज़ा-द मज्दु हुम, मुफ़्ती मज़ाहिरे उलूम।

इनके अलावा और जो रसाइल मोतमद उलमा के मिल सकें।

4. जब सफ़र करें तो नीयत ख़ालिस अल्लाह की रिज़ा होना चाहिये, लोगों का दिखलावा या हाजी कहलाने का शौक़ या सैर तफ़रीह वग़ैरह फ़ासिद इरादे हरगिज़ न होना चाहियें, जैसा कि पहली फ़स्ल की हदीस नं॰ 1 में गुज़र चुका है।

5. एक या इससे ज़्यादा रफ़ीक़े सफ़र ऐसे लोग तलाश किये जायें जो दीनदार, सालेह नेक हों, दीन के कामों में दिलचस्पी और शौक़ रखने वाले हों, ताकि रास्ते में मुईन व मददगार हों। अगर ये किसी काम को भूल जायें तो वे याद दिलायें और नेक कामों की तर्ग़ीब देते रहें। अगर किसी काम में सुस्ती पैदा हो तो वे हिम्मत बंधायें। अगर कहीं बुज़दिली पैदा हो तो वे बहादुरी पैदा करें। अगर कोई परेशानी पैदा हो तो सब्र दिलायें। कोई आलिम हो तो और भी बेहतर है कि मसाइल में भी मदद देता रहे।

उलमा ने लिखा है कि रिश्तेदार के बनिस्बत अजनबी ज़्यादा बेहतर हैं कि रास्ते में बसा औक़ात तबीअतों के इख़्तिलाफ़ की वजह से आपस में शकर रंजी पैदा हो जाती है, जिससे क़त्ए ताल्लुक़ की नौबत आ जाती है। अगर रिश्तेदार के साथ ऐसी नौबत आयेगी, तो क़ता-रहमी का गुनाह होगा, अलबत्ता अगर अपने ऊपर या रफ़ीक़ पर इसका इत्मीनान हो कि ऐसी नौबत न आयेगी तो मुज़ायक़ा नहीं।

6. हज के लिये हलाल माल तलाश करे, जिसमें शुब्ह न हो। हराम माल से ख़्वाह रिश्वत का हो या ज़ुल्म से किसी से हासिल किया हो, ऐसे माल से हज्जे फ़र्ज़ तो अदा हो जाता है लेकिन वह हज मक़्बूल नहीं होता, जैसा कि इसी फ़स्ल की पहली हदीस में मुफ़स्सल गुज़र चुका। उलमा ने लिखा है कि अगर माल

मुरतब्क हो तो फिर उलमा ने उसकी यह सूरत तज्वीज़ की है कि क़र्ज़ लेकर हज कर ले और फिर उस माल से क़र्ज़ अदा कर दे।

7. अपने सब पिछले गुनाहों से तौबा करे और किसी का माल ज़ुल्म से ले रखा हो तो उसको वापस करे और किसी और क़िस्म का किसी पर ज़ुल्म किया हो तो उससे माफ़ कराये। जिन लोगों से अक्सर साबक़ा पड़ता रहता हो, उनसे कहा सुना माफ़ करा ले। अगर कुछ क़र्ज़ा अपने ज़िम्मे हो तो उसको अदा करे या अदायेगी का कोई इंतिज़ाम कर दे। जो अमानतें लोगों की अपने पास हों, उनको वापस करे, या कोई मुनासिब इंतिज़ाम अमानत रखने वालों की रिज़ा से कर दे। जिन लोगों का ख़र्च अपने ज़िम्मे है, जैसे बीवी, छोटी औलाद, वग़ैरह उनके ख़र्च का बंदोबस्त अपनी वापसी के ज़माने तक कर दे।

उलमा ने लिखा है कि जिस शख़्स पर कोई ज़ुल्म कर रखा हो या उसका कोई और हक़ अपने ज़िम्मे हो, तो वह बमंज़िला एक क़र्ज़ख़्वाह के है, जो उससे यह कहता है कि तू कहां जा रहा है, क्या तू इस हालत में शहंशाह के दरबार में हाज़िरी का इरादा करता है कि तू उसका मुज्रिम है, उसके हुक्म को ज़ाया कर रहा है, हुक्म उदूली की हालत में तू हाज़िर हो रहा है, इससे नहीं डरता कि वह तुझ को मर्दूद करके वापिस कर दे। अगर तू क़ुबूलियत का ख़्वाहिशमंद है तो इस ज़ुल्म से तौबा कर के हाज़िर हो, उसका मुतीअ् और फ़रमांबरदार बन कर पहुँच, वरना तेरा यह सफ़र इब्तिदा के एतिबार से मशक़्क़त ही मशक़्क़त है और इंतिहा के एतिबार से मर्दूद होने के क़ाबिल है।

8. हलाल व तैय्यिब माल से इतना ख़र्च अपने साथ ले, जो बग़ैर तंगी के पूरे सफ़र की आमद व रफ़्त को काफ़ी हो जाये। बल्कि एहतियातन कुछ ज़ायद ले, ताकि रास्ते में ग़ुरबा की कुछ इआनत कर सके, खाने में से अहले ज़रूरत की तवाज़ोअ् कर सके, जो लोग ज़रूरत की मिक़्दार से भी कम लेकर जाते हैं, वे अक्सर दूसरों पर बोझ बन जाते हैं, और सवाल के मुर्तकिब होते हैं। हक़ सुब्हानहू व तक़द्दुस ने क़ुरआन पाक में "व तज़व्वदू" का हुक्म इर्शाद फ़रमाया, जैसा कि इसी फ़स्ल के शुरू में मुफ़स्सल गुज़र चुका है।

9. जब सफ़र शुरू करे तो दो रकअत नफ़्ल पढ़े, जिसमें पहली रकअत में "क़ुल या अय्युहल् काफ़िरु-न" और दूसरी रक्अत में "क़ुल हुवल्लाह" पढ़ना औला है और बेहतर यह है कि दो रक्अत घर में पढ़े और दो रक्अत मुहल्ले की

मस्जिद में।

10. चलने से पहले और चलने के बाद कुछ सदक़ा करे और अपनी वुस्अत के मुवाफ़िक़ करता रहे कि सदक़ा करने को बलाओं और मुसीबतों के दफ़ा करने में ख़ास दख़ल है।

एक हदीस में आया है कि सदक़ा करना अल्लाह के गुस्से को दूर करता है और बुरी मौत से हिफ़ाज़त का सबब है।

एक हदीस में आया है कि जो शख़्स किसी को कपड़ा पहनाये, जब तक उसके बदन पर कपड़ा रहेगा, पहनाने वाला अल्लाह की हिफ़ाज़त में रहेगा। *(मिश्कात)*

11. जब घर से निकलने लगे तो उस वक़्त की मख़्सूस दुआयें, जो अहादीस में कसरत से आयी हैं, पढ़ कर निकले। हर हर जगह की दुआयें इतनी कसीर हैं कि अगर इस रिसाले में सब को जमा किया जाये तो इसका हजम तीन हिस्से बढ़ जायेगा। इसलिये इसमें दुआयें ज़िक्र नहीं की गयीं। अगर अल्लाह ने तौफ़ीक़ अता फ़रमायी तो किसी वक़्त सिर्फ़ दुआयें एक रिसाले में जमा कर दी जायेंगी। दूसरे रसाइल में तलाश करके जो मिल सकें, पढ़ ली जायें। हज की दुआओं में मुस्तक़िल रिसाले भी शाया हो चुके हैं, तलाश कर के कोई ख़रीद लिया जाये, तो बेहतर है।

12. चलते वक़्त मक़ामी रूफ़क़ा, अइज़्ज़ा, अहबाब से मुलाक़ात करके उनको अल विदाअ् कहे और उनसे अपने लिये दुआ की दर्ख़्वास्त करे कि उनकी दुआयें भी उसके हक़ में ख़ैर का सबब होंगी।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है, जब कोई आदमी तुममें से सफ़र करे, तो अपने भाइयों को सलाम करके जाए, उनकी दुआएं उसकी दुआ के साथ मिलकर ख़ैर में ज़्यादती का सबब होंगी। अल विदाअ् कहते वक़्त मस्नून यह है कि यों कहे :-

أَسْتَوْدِعُ اللّٰهَ دِيْنَكُمْ وَأَمَانَتَكُمْ وَخَوَاتِيْمَ أَعْمَالِكُمْ (اتحاف)

"अस्तौदि अुल्ला-ह-दी नकुम व अमा-न-त कुम व ख़वाती-म अअ् मालिकुम॰" *(इत्तिहाफ़)*

13. जब घर के दरवाज़े से निकले तो उस वक़्त के लिए भी मुतअद्द

दुआयें अहादीस में आयी हैं। एक हदीस में आया है कि जब आदमी घर से निकलते वक़्त यह दुआ पढ़े -

بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

"बिस्मिल्लाहि तवक्कल्तु अलल्लाहि ला हौ-ल व ला क़ूव्व-त इल्ला बिल्लाहिल् अलिय्यिल् अज़ीम॰"

तो उससे कहा जाता है कि तू अपने मक़्सद की तरफ़ रास्ता पायेगा और रास्ते में तेरी हिफ़ाज़त की जायेगी और शैतान उससे दूर हो जाता है।

14. जब सफ़र शुरू होने लगे तो क़ाफ़िले में किसी दीनदार, समझदार, तजुर्बेकार, मुतहम्मिल मिज़ाज, जफ़ाकश, मुतवाज़ेअ् शख़्स को अमीरे क़ाफ़िला बना लेना चाहिये, क़ुरैशी हो तो अफ़ज़ल है।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि जब तीन आदमी भी सफ़र करें तो चाहिये कि एक को अपने में से अमीरे क़ाफ़िला बना लें। *(मिश्कात)*

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आम मामूल था कि जब कोई क़ाफ़िला रवाना होता तो किसी एक शख़्स को उनमें से अमीर बना देते और जो शख़्स अमीर बने, उसको इमारत के हुक़ूक़ और उसके आदाब की रिआयत करना चाहिये। रूफ़क़ा के अहवाल की ख़बरगीरी, उनके सामान की निगरानी के अस्बाब पैदा करना, उनको आराम व राहत पहुँचाना अमीर के ज़िम्मे है। इस सिलसिले में अशज्ज अब्दुल क़ैस की हदीस जो आदाबे ज़ियारते मदीना नं॰ 11 में आ रही है, देखनी चाहिये।

15. बेहतर यह है कि सफ़र की इब्तिदा पंज शंबा (जुमेरात) के दिन सुबह के औक़ात में हो।

एक हदीस में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पंज शंबा (जुमेरात) के रोज़ सफ़र की इब्तिदा को पसंद फ़रमाते थे। *(मिश्कात)*

दूसरी हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल॰ किसी लश्कर या क़ाफ़िले को रवाना फ़रमाते तो दिन के अव्वल हिस्से में रवाना फ़रमाते।

सख़र रज़ि॰ एक बड़े ताजिर थे, हुज़ूर सल्ल॰ के इस एहतिमाम की वजह से उनको भी इसका ख़ास एहतिमाम था कि जब अपना माले तिजारत रवाना करते

तो दिन के शुरू हिस्से में रवाना करते, इसमें उनको बड़ा नफ़ा हासिल होता।

(मिश्कात)

16. सवारी पर सवार होने की और उतरने की दुआयें, भी अहादीस में मुतअद्दिद वारिद हुई हैं उनको मालूम और महफ़ूज़ करना औला है कि हर मंज़िल पर उतरते चढ़ते पढ़ता रहे और अगर सवारी और सफ़र अपने क़ब्ज़े का हो तो बेहतर यह है कि रात का कुछ हिस्सा और सुबह का इब्तिदाई हिस्सा सफ़र करने में गुज़रे और दिन को मंज़िल करे।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि रात का सफ़र इख़्तियार करो कि ज़मीन रात को लपेट दी जाती है यानी मुसाफ़त जल्दी तै होती है और तजुर्बा भी इसका बारहा हुआ, लेकिन यह वहीं हो सकता है जहां ऊँटों का सफ़र अपने इख़्तियार का हो, रास्ता मामून व महफ़ूज़ हो, रेलों के सफ़र में उसके औक़ात की पाबंदी है।

17. जब किसी जगह मंज़िल में पहुँचे तो एहतियात यह है कि चलने फ़िरने में भी तंहा न जाये, ता वक़्ते कि अम्न और इत्मीनान का हाल मालूम न हो कि अजनबी जगह का हाल मालूम नहीं होता और मंज़िल पर भी एहतियात यह है कि रूफ़क़ा में से नम्बरवार एक दो आदमी सामान की हिफ़ाज़त के जिम्मेदार रहें। रात के वक़्त अगर मंज़िल हो तो जागने वालों के औक़ात मुरत्तब कर लिये जायें कि नम्बरवार एक दो आदमी जागते रहें कि यह जान व माल की हिफ़ाज़त का ज़रिया है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आदते शरीफ़ा थी कि मंज़िल पर पहुँच कर तै फ़रमा दिया करते थे कि हिफ़ाज़त का काम किस के सुपुर्द है।

मेरे वालिद साहब नव्वरल्लाहु मर्क़द-हू ने कई मर्तबा यह क़िस्सा सुनाया कि मेरे दादा साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि अक्सर बार बार इस पर अल्लाह का शुक्र अदा किया करते कि घर में तमाम रात कोई न कोई अल्लाह की इबादत में मश्ग़ूल रहता है और इस पर बार बार शुक्र के तौर पर मसर्रत ज़ाहिर फ़रमाया करते थे कि अल्लाह का कितना बड़ा एहसान है, और सूरत उसकी यह होती थी कि मेरे वालिद साहब रह० को कुतुब बीनी और मुताले का बहुत ज़ौक़ और शौक़ था। रात का अक्सर हिस्सा वह मुताले में सर्फ़ किया करते थे। वह फ़रमाया करते थे

कि मुझे किताब देखने में वक़्त का अंदाज़ा न होता था निस्फ़ रात तक मैं किताब देखता और वालिद साहब यानी मेरे दादा साहब आराम फ़रमाते, निस्फ़ लैल के बाद वह तहज्जुद के लिये जब उठते तो फ़रमाते मियां, यह्या, तुम अब तक नहीं सोये, जल्दी सो जाओ। उनके तक़ाज़े पर मैं मजबूरन किताबें रख कर सोता और वह तहज्जुद में मशगूल हो जाते और सुल्स लैल (तिहाई रात) तहज्जुद पढ़ कर वह तो खुद आराम करने के लिये सुदुस आख़िर (आख़री छटे हिस्से) में लेट जाते और मेरे ताया साहिब रह्मतुल्लाहि अलैहि मौलाना मुहम्मद साहिब को आवाज़ देकर तहज्जुद के लिये जगा देते। वह सुबहे सादिक़ तक तहज्जुद में मशगूल रहते। अफ़सोस कि अपने अकाबिर के मामूलाते ख़ैरात व बरकात में से भी कुछ न कमाया, फ़ या लिल असफ़्।

18. सफ़र में जब किसी ऊँची जगह पर चढ़े तो अलावा दूसरी दुआओं के अल्लाहु अक्बर तीन मर्तबा और जब नीचे की जगह उतरे तो अलावा और दुआओं के सुब्हानल्लाह तीन मर्तबा कहना औला है और जब सफ़र में किसी जगह वहशत सवार हो और घबराहट होने लगे तो:-

سُبْحَانَ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ رَبِّ الْمَلٰٓئِكَةِ وَالرُّوْحِ جَلَّلَتِ السَّمٰوٰتُ بِالْعِزَّةِ وَالْجَبَرُوْتِ ط

"सुब्हानल् मलिकिल् कुद्दूसि रब्बुल् मला-इकति वर्रूहि-जल्ल-ल-तिस्समावाति बिल् अिज़्ज़ति वल् ज-ब-रूति•" पढ़ना औला भी है और मुजर्रब भी है।

19. अगर कोई शख़्स बिना मशक़्क़त के पैदल हज करे तो क्या ही कहना, बशर्ते कि किसी दूसरे मक्रूह में मुब्तला न हो जाये, लेकिन अगर सवारी पर हज करे, तब भी औला यह है कि अपनी हिम्मत और वुस्अत मे मुवाफ़िक़ जितना ब-सहूलत तहम्मुल हो सके, पांव चले, बिल ख़ुसूस मक्का से अरफ़ात के दर्मियान' कि हर हर क़दम पर सात सौ नेकियां हरम की नेकियों में से शुमार होती हैं और हरम की नेकी एक लाख के बराबर होती है, जैसा कि तीसरी फ़स्ल की पहली हदीस में मुफ़स्सल गुज़रा।

अकाबिर का अक्सर मामूल रहा कि ऊँटों के सफ़र पर जब अस्र की नमाज़ के लिये उतरते तो मग़्रिब तक पांव चल कर मग़्रिब की नमाज़ से फ़ारिग़ होकर सवार होते कि यह वक़्त मुख़्तसर भी होता है और गर्मी धूप या अंधेरा भी नहीं होता।

उलमा ने लिखा है कि मक्का से अरफ़ात और मिना तक पैदल जाना ज़्यादा पसंदीदा और बेहतर है। जो लोग क़वी चलने के आदी हों, उनको इस हिस्से के लिये सवारी का पाबंद नहीं होना चाहियै। कि इससे बसा औक़ात सवारी की मजबूरी से बहुत से मुस्तहब्बात तर्क हो जाते हैं।

20. सवारी के जानवर की रिआयत और उसके हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त भी ज़रूरी है। उसके तहम्मुल से ज़्यादा मशक़्क़त उस पर डालना जायज़ नहीं। अस्लाफ़ में से मुत्तक़ी और परहेज़गार हज़रात उस पर लेट कर सोने से भी एहतिराज़ करते थे कि इससे उस पर बोझ बढ़ जाता है।

उलमा ने लिखा है कि जानवर को अज़ीयत पहुँचाने और बे वजह तक्लीफ़ देने का भी क़ियामत में मुतालबा होगा।

हज़रत अबूदर्दा सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु अपने इंतिक़ाल के वक़्त अपने ऊँट से ख़िताब करके फ़रमा रहे थे कि अल्लाह जल्ल शानुहू की बारगाह में मुझसे झगड़ा न कीजियो मैंने तेरी ताक़त से ज़्यादा काम तुझ से कभी नहीं लिया।

(इत्तिहाफ़)

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आदते शरीफ़ा थी कि इस्तिंजे के लिये किसी दरख़्त की आड़ या किसी बाग़ में तशरीफ़ ले जाया करते। एक मर्तबा एक बाग़ में तशरीफ़ ले गये तो एक ऊँट हुज़ूर सल्ल॰ को देखकर चिल्लाया। हुज़ूर सल्ल॰ उसके पास तशरीफ़ ले गये। उसके कान की जड़ पर दस्ते मुबारक फेरा और फ़रमाया, इसका मालिक कौन है? एक अंसारी नौ उम्र तशरीफ़ लाये और कहा कि यह मेरा है। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि इस ऊँट ने तुम्हारी शिकायत की कि तुम इससे काम ज़्यादा लेते हो और खाने को कम देते हो।

(अबू दाऊद)

21. इसी तरह सवारी के मालिक के हुक़ूक़ की भी रिआयत ज़रूरी है, उसकी इजाज़त से ज़्यादा सामान रखना जायज़ नहीं। जितनी मिक़्दार किराये में तै हो चुकी है, उतनी ही रखना जायज़ है। इसमें रेल वग़ैरह का सफ़र भी यही हुक्म रखता है कि चुरा छुपाकर इस्तिहक़ाक़ से ज़्यादा सामान बिला महसूल अदा किये रखना जायज़ नहीं। अपने अस्लाफ़ का मामला तो इसमें इस क़द्र एहतियात का था कि वह अब समझ में भी मुश्किल से आता है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रज़ि॰, जो मशहूर मुहद्दिस और मशहूर

इमाम हैं, एक मर्तबा सफ़र में तशरीफ़ ले जा रहे थे। किसी ने उन को एक ख़त दिया कि यह भी लेते जायें। उन्होंने फ़रमाया कि मैं ऊँट वाले को अपना सामान दिखा चुका हूँ। अब उसको पहले इत्तिला कर दूँ कि यह और लेता हूँ। वह इजाज़त दे देगा तो ले लूँगा। (इत्तिहाफ़)

और अली बिन मअ्बद रह॰ मुहद्दिस का मशहूर क़िस्सा जो "हिकायाते सहाबा" में लिखा जा चुका है कि किराये के मकान से मिट्टी उठा कर ख़त को खुश्क करने पर ख़्वाब में तंबीह हुई।

22. सारे सफ़र में तनअ्उम और ज़ेब व ज़ीनत के अस्बाब से बचे कि यह सफ़र आशिक़ाना सफ़र है, माशूक़ाना नहीं है जैसा कि मुफ़स्सल पहले गुज़र चुका है, ख़ुद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है "अल हाज्जु अश्-शअिसुत्तफ़िलु" जैसा कि इसी फ़स्ल की तीसरी हदीस में गुज़रा, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ जब हुज्जाज को देखते, तो फ़रमाते कि हाजी कम होते जा रहे हैं और सफ़र करने वाले बढ़ते जा रहे हैं। इसी में एक शख़्स को देखा कि मामूली हैअत और मामूली लिबास में है। फ़रमाया हां यह हुज्जाज में है। (इत्तिहाफ़)

23. सफ़र में जो कुछ ख़र्च करे, वह निहायत बशाशत और फ़राख़ दिली से ख़र्च करे, दिल तंगी इस मुबारक सफ़र के इख़राजात में हरगिज़ न होना चाहिये। पहली फ़स्ल की हदीस नं॰ 9 में गुज़र चुका है कि एक रूपये का सवाब इस सफ़र में सात सौ रूपये के बराबर है, ऐसी हालत में जो पैसा इस मुबारक सफ़र में ख़र्च हो जाये, वह अज्र ही अज्र है, इससे यह मक़्सूद नहीं कि इसराफ़ (फ़ुज़ूल ख़र्ची) किया जाये, लेकिन यह ज़रूर है कि हर ख़र्च की ज़्यादती इसराफ़ नहीं, बल्कि इसराफ़ बेमहल ख़र्च करना है, वहां के मज़दूरों पर ऊँट वालों पर मकानात के किरायों में जो ख़र्च किया जाये और उसमें उन लोगों की इआनत की नीयत भी शामिल कर ली जाये तो फिर कोई भी ख़र्च बार नहीं।

24. अलबत्ता रिश्वत देने से हत्तलवसअ् एहतिराज़ करे और जहां तक मजबूरी न हो जाये, रिश्वत न दे कि वह हराम है, हत्ता कि बाज़ उलमा ने लिखा है कि टैक्स देने की वजह से हज्जे नफ़्ल का छोड़ देना औला है कि टैक्स देने में ज़ालिमीन की इआनत है। (एह्या)

25. इस सफ़र में जो मशक़्क़तें तक्लीफ़ें पहुँचें, उनको निहायत ख़ंदा

इमाम हैं, एक मर्तबा सफ़र में तशरीफ़ ले जा रहे थे। किसी ने उन को एक ख़त दिया कि यह भी लेते जायें। उन्होंने फ़रमाया कि मैं ऊँट वाले को अपना सामान दिखा चुका हूँ। अब उसको पहले इत्तिला कर दूँ कि यह और लेता हूँ। वह इजाज़त दे देगा तो ले लूँगा। *(इत्तिहाफ़)*

और अली बिन मअ्बद रह० मुहद्दिस का मशहूर क़िस्सा जो "हिकायाते सहाबा" में लिखा जा चुका है कि किराये के मकान से मिट्टी उठा कर ख़त को ख़ुश्क करने पर ख़्वाब में तंबीह हुई।

22. सारे सफ़र में तनअ्उम और ज़ेब व ज़ीनत के अस्बाब से बचे कि यह सफ़र आशिक़ाना सफ़र है, माशूक़ाना नहीं है जैसा कि मुफ़स्सल पहले गुज़र चुका है, ख़ुद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है "अल हाज्जु अश्-शअिसुत्तफ़िलु" जैसा कि इसी फ़स्ल की तीसरी हदीस में गुज़रा, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० जब हुज्जाज को देखते, तो फ़रमाते कि हाजी कम होते जा रहे हैं और सफ़र करने वाले बढ़ते जा रहे है। इसी में एक शख़्स को देखा कि मामूली हैअत और मामूली लिबास में है। फ़रमाया हां यह हुज्जाज में है। *(इत्तिहाफ़)*

23. सफ़र में जो कुछ ख़र्च करे, वह निहायत बशाशत और फ़राख़ दिली से ख़र्च करे, दिल तंगी इस मुबारक सफ़र के इख़राजात में हरगिज़ न होना चाहिये। पहली फ़स्ल की हदीस नं० 9 में गुज़र चुका है कि एक रूपये का सवाब इस सफ़र में सात सौ रूपये के बराबर है, ऐसी हालत में जो पैसा इस मुबारक सफ़र में ख़र्च हो जाये, वह अज्र ही अज्र है, इससे यह मक़्सूद नहीं कि इसराफ़ (फ़ुज़ूल ख़र्ची) किया जाये, लेकिन यह ज़रूर है कि हर ख़र्च की ज़्यादती इसराफ़ नहीं, बल्कि इसराफ़ बेमहल ख़र्च करना है, वहां के मज़दूरों पर ऊँट वालों पर मकानात के किरायों में जो ख़र्च किया जाये और उसमें उन लोगों की इआनत की नीयत भी शामिल कर ली जाये तो फिर कोई भी ख़र्च बार नहीं।

24. अलबत्ता रिश्वत देने से हत्तलवसअ् एहतिराज़ करे और जहां तक मजबूरी न हो जाये, रिश्वत न दे कि वह हराम है, हत्ता कि बाज़ उलमा ने लिखा है कि टैक्स देने की वजह से हज्जे नफ़्ल का छोड़ देना औला है कि टैक्स देने में ज़ालिमीन की इआनत है। *(एह्या)*

25. इस सफ़र में जो मशक़्क़तें तक्लीफ़ें पहुँचें, उनको निहायत ख़ंदा

पेशानी और बशाशत से बर्दाश्त करे, हरगिज़ उन पर ना शुक्री और बे सब्री का इज़्हार न करे। उलमा ने लिखा है कि इस सफ़र में बदन को किसी क़िस्म की तक्लीफ़ पहुंचाना भी अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने के क़ायम मक़ाम है। *(इत्तिहाफ़)*

कि जैसा माल ख़र्च करना माली सदक़ा है, यह जानी सदक़ा है।

26. मआसी से बचने की बहुत ही एहतिमाम से कोशिश करे। कुरआन पाक में ख़ास तौर से इस को ज़िक्र फ़रमाया है –

فَمَنْ فَرَضَ فِيهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ فِي الْحَجِّ

"पहली फ़स्ल में यह आयत गुज़र चुकी है और उसी फ़स्ल की पहली हदीस में यह मज़्मून गुज़र चुका है। उलमा ने लिखा है कि अल्लाह जल्ल शानुहू तक वसूल उस वक़्त नहीं हो सकता, जब तक लज़्ज़तों से एहतियात और शहवतों से हिफ़ाज़त न हो। इसी वजह से पहले लोग रह्बानियत इख़्तियार किया करते थे, जिसका बदल हज में यह रखा गया है कि बीवी से सोहबत भी ना जायज़ कर दी गयी। *(इत्तिहाफ़)*

27. नमाज़ों का निहायत एहतिमाम रखे। बहुत से हाजी सफ़र की मशक़्क़त और काहिली से इसमें सुस्ती कर देते हैं। यह बहुत बड़ा गुनाह है।

उलमा ने लिखा है कि अगर शब (रात) के सफ़र की वजह से आख़िरी रात हो जाये तो लेट कर न सोये, बल्कि कुहनी खड़ी करके उस पर टेक लगा कर सो जाये। ऐसा न हो कि लेट कर सोने से ग़फ़लत की नींद आ जाये और सुबह की नमाज़ फ़ौत हो जाये कि नमाज़ की फ़ज़ीलत हज की फ़ज़ीलत से ज़्यादा है। *(इत्तिहाफ़)*

उलमा ने लिखा है कि हज की शराइत में से है कि नमाज़ को अपने औक़ात में अदा करने पर रास्ते में क़ुदरत हो। अगर रास्ता ऐसा बन जाये कि नमाज़ के अदा करने का वक़्त नहीं मिल सकता तो हज की फ़रज़ियत नहीं रहती।

अबुल क़ासिम हकीम रह० कहते हैं कि जो शख़्स जिहाद में जाये और उसकी वजह से उसकी एक नमाज़ फ़ौत हो जाये तो उसको उसके कफ़्फ़ारे में सौ जिहाद करने की ज़रूरत है, ताकि उस एक नमाज़ के फ़ौत होने का कफ़्फ़ारा हो सके।

अबू बक्र वर्राक़ रह० जब हज के इरादे से तशरीफ़ ले चले तो एक ही

मंज़िल पर पहुँच कर फ़रमाने लगे कि मुझे वापस घर पहुँचाओ। मैंने एक ही मंज़िल में सात सौ कबीरा गुनाह कर डाले। उलमा को बड़ा ताज्जुब है कि एक मंज़िल चलने में इतने गुनाह कबीरा हो भी सकते हैं या नहीं? एक मामूली फ़ासिक़ फ़ाजिर से भी चंद मील चलने में इतने गुनाह नहीं हो सकते, फिर एक शैख़ुल मशाइख़ जो अकाबिर में हैं, उनसे कैसे सादिर हुए? बाज़ अकाबिर ने कहा कि एक नमाज़ की जमाअत फ़ौत हो गई थी और एक हदीस में आया है कि जिसने जमाअत की नमाज़ तर्क कर दी, उसने गोया सात सौ कबीरा गुनाह किये हैं।

(शर्हे लुबाब)

मुम्किन है शैख़ को यह हदीस पहुँची हो। मारूफ़ कुतुब में बंदे को यह हदीस नहीं मिली और हज भी ग़ालिबन नफ़्ल होगा।

28. सारे सफ़र को ज़ौक़ व शौक़ और आशिक़ाना वालिहाना जज़्बे से करे, जैसा कि पहले मुफ़स्सल गुज़र चुका कि यह इबादत सारी ही मज़्हरे इश्क़ है, यह समझे कि अल्लाह के दरबार में हाज़िर हो रहा है और ऐसा है गोया शहंशाह ने कोई दरबार मुक़र्रर किया है और खुश क़िस्मती से दावती कार्ड उसके नाम का भी आ गया इसलिये कि बग़ैर अल्लाह जल्ल शानुहू की तौफ़ीक़ के कुछ नहीं होता, उसी की तरफ़ से तलब और हाज़िरी की तलब होती है, जब ही कोई शख़्स जा सकता है।

मेरी तलब भी किसी के करम का सदक़ा है,
क़दम ये खुद नहीं उठते, उठाये जाते हैं।।

और अल्लाह तआला की ज़ात से उम्मीद रखे कि जब दुनिया में उसने अपने मकान की ज़ियारत की सआदत नसीब फ़रमायी, तो आख़िरत में अपनी ज़ियारत से भी महरूम न फ़रमाएगा।

29. अपनी हर इबादत में अल्लाह के लुत्फ़ व करम से क़ुबूल की उम्मीदे वासिक़ रखे। वह बड़ा करीम है और उसके करम का हर शख़्स को उम्मीदवार रहना चाहिये।

कि शेवा है करीमों का निभाना अपने चाकर का,

पहली फ़स्ल की हदीस नं॰ 6 के ज़ैल में गुज़रा है कि वह शख़्स बड़ा गुनहगार है, जो अरफ़ात के मैदान में भी यह समझे कि मेरी मग़्फ़िरत नहीं हुई। और हदीस नं॰ 4 और नं॰ 5 में तो मग़्फ़िरत का बिल्कुल यक़ीन है। अल्लाह का

लुत्फ़ व करम, उसका फ़ज़्ल व इनाम, उसकी ज़र्रानवाज़ी, बंदा परवरी से कामिल उम्मीद रखे कि हर अमल कुबूल होगा, मगर इस उम्मीद में घमंड का शायबा हरगिज़ न आये। अपने आमाल के क़ुसूर की वजह से उसको इसका मुस्तहिक़ समझे कि क़ाबिले क़ुबूल नहीं।

इब्ने अबी मुलैका॰ रह॰ कहते हैं कि मैं हज़राते सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम में से तीस हज़रात से मिला। हर एक उनमें से अपने मुनाफ़िक़ होने से डर रहा था। *(बुख़ारी)*

यानी वे ये समझते थे कि हमारे आमाल का बातिन ऐसा बेहतर नहीं है जैसा ज़ाहिर है। इससे उनको अपने ऊपर निफ़ाक़ का ख़ौफ़ हो जाता था।

एक सहाबी रज़ि॰ ने हुज़ूर सल्ल॰ से पूछा कि हर शख़्स जिहाद करता है, वह सवाब की उम्मीद भी रखता है और यह भी चाहता है कि उसका नाम हो जाये। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि उसको कोई सवाब नहीं। उन्होंने मुकर्रर सहकर्रर (दोबारा तिबारा) यही सवाल किया और हुज़ूर सल्ल॰ यही जवाब इर्शाद फ़रमाते रहे। इसके बाद हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि अल्लाह जल्ल शानुहू सिर्फ़ उसी अमल को क़ुबूल फ़रमाते हैं, जो ख़ालिस उसी के लिये हो। *(तर्ग़ीब)*

हज़रत शफ़ी रह॰ एक ताबई हैं मदीना मुनव्वरा हाज़िर हुए, तो उन्होंने देखा कि एक साहब हैं, जिनके पास बड़ा मज्मा लगा हुआ है। उन्होंने पूछा कि यह कौन साहब हैं? लोगों ने बताया कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु व अर्ज़ाहु हैं। यह क़रीब पहुँचे और अर्ज़ किया कि मैं आपसे कोई हदीस सुनना चाहता हूँ, जो आपने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अच्छी तरह समझी हो। उन्होंने फ़रमाया कि हां, हां, मैं तुम्हें एक हदीस सुनाता हूँ जिसको मैंने हुज़ूर सल्ल॰ से ख़ूब समझा और अच्छी तरह मालूम किया। इसके बाद हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ चीख़ मार कर रोने लगे, जिससे बेहोशी के क़रीब हो गये। थोड़ी देर के बाद जब सुकून हुआ तो फ़रमाया कि मैं तुम्हें एक हदीस सुनाता हूँ जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस घर में मुझे सुनायी थी। उस वक़्त मैं था और हुज़ूर सल्ल॰ थे, कोई तीसरा हमारे साथ न था, इतना कह कर फिर चीख़ मार कर उसी तरह रोने लगे, गोया बेहोश हो जायेंगे। फिर जब सुकून हुआ तो मुंह पोंछ कर फ़रमाया कि हां मैं तुम्हें एक हदीस सुनाता हूँ, जो हुज़ूर सल्ल॰ ने मुझे इस घर में सुनायी थी। उस वक़्त मैं था और हुज़ूर सल्ल॰ थे, कोई तीसरा

न था। इतना कह कर फिर उसी तरह चीख़ मार कर रोने की सूरत पेश आ गयी और पहले से भी ज़्यादा सख़्त। इसके बाद मुंह के बल ज़मीन पर गिर गये। मैं बहुत देर तक उनको पकड़े बैठा रहा। इसके बाद जब इफ़ाक़ा हुआ तो फ़रमाया कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन जब अल्लाह तबारक व तआला बंदों के हिसाब की तरफ़ तवज्जोह फ़रमायेंगे और हर आदमी ख़ौफ़ की वजह से घुटनों के बल गिरा हुआ होगा, तो सबसे पहले तीन शख़्स बुलाये जायेंगे।

1. एक हाफ़िज़े क़ुरआन,

2. दूसरा मुजाहिद,

3. तीसरा मालदार।

और सबसे पहले हाफ़िज़े क़ुरआन से मुतालबा होगा कि मैंने तुझ को वह चीज़ अता की जो मैंने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर उतारी। वह अर्ज़ करेगा कि बेशक आपने यह दौलत अता फ़रमायी थी, तो सवाल होगा कि तूने अपने इस इल्म में क्या अमल किया? वह अर्ज़ करेगा कि मैं दिन रात उसकी तिलावत वग़ैरह में मशग़ूल रहता था। इर्शाद होगा कि झूठ बोलता है। फ़रिश्ते भी सब एक ज़बान होकर कहेंगे कि झूठ है झूठ है। फिर अल्लाह जल्ल जलालुहू का इर्शाद होगा कि यह महज़ इसलिये होता था कि लोग कहेंगे कि बड़ा जय्यिद क़ारी है, सो कहा जा चुका। फिर मालदार से मुतालबा होगा कि मैंने तुझ को इतनी वुस्अत माल की अता की कि किसी चीज़ में किसी दूसरे का मुहताज तू नहीं रहा। वह अर्ज़ करेगा कि बेशक ऐसा ही था। इर्शाद होगा कि मेरे इस अता किये हुए माल में तूने क्या अमल किया? वह अर्ज़ करेगा कि मैं सिला-रहमी करता था और सदक़ात करता रहता था। इर्शाद होगा कि झूठ है और फ़रिश्ते भी सब कहेंगे कि झूठ है झूठ है। फिर अल्लाह पाक का इर्शाद होगा कि यह इसलिये किया जाता था कि लोग कहेंगे, फ़लाँ बड़ा सख़ी है, सो कहा जा चुका। फिर मुजाहिद से सवाल होगा कि तुम्हारा क्या अमल है? वह अर्ज़ करेगा कि या अल्लाह, तूने जिहाद का हुक्म किया मैंने तेरे रास्ते में जिहाद किया, यहां तक कि जान दे दी। इर्शादे आली होगा कि झूठ बोलता है। फ़रिश्ते भी कहेंगे कि झूठ है झूठ है। इर्शाद होगा कि यह तू इसलिये किया था कि लोग कहेंगे कि बड़ा बहादुर है, सो कहा जा चुका। इसके बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू

हुरैरह रज़ि॰ के ज़ानू पर हाथ मार कर फ़रमाया कि ये तीन शख़्स हैं, जिनसे जहन्नम की आग सबसे पहले भड़कायी जायेगी, इसके बाद शफ़ी रह॰ अमीर मुआविय: रज़ि॰ के पास गये तो उनसे हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ की इस हदीस का तज़्किरा किया। अमीर मुआविय: रज़ि॰ ने फ़रमाया कि जब इन तीन का यह हश्र हुआ तो बाक़ी लोगों का क्या कुछ हाल होगा? यह कह कर अमीर मुआविय: रज़ि॰ इस क़दर रोये कि देखने वालों को ख़्याल हुआ कि यह रोते रोते हलाक हो जायेंगे। इसके बाद अमीर मुआविया रज़ि॰ को जब इफ़ाक़ा हुआ तो फ़रमाने लगे कि, अल्लाह जल्ल शुानहू ने भी हक़ फ़रमाया और उसके पाक रसूल सल्ल॰ ने भी, फिर अमीर मुआविय: रज़ि॰ ने क़ुरआन पाक की यह आयत तिलावत फ़रमायी:- *(तर्ग़ीब)*

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ اِلَيْهِمْ اَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا النَّارُ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوْا فِيْهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝ (هود ع ٢)

"तर्जुमा:- और जो शख़्स (अपने नेक आमाल से) महज़ दुनिया का तालिब हो और उसकी रौनक़ हासिल करना चाहता हो (जैसे शोहरत, नेक नामी वग़ैरह) तो हम उन लोगों को उन के आमाल का बदला दुनिया ही में पूरे तौर से देते हैं और दुनिया में उनके लिए कुछ कमी नहीं होती, और आख़िरत में ऐसे लोगों के लिये बजुज़ दोज़ख़ के और कुछ नहीं। उन्होंने जो कुछ (दुनिया में) किया था, वह आख़िरत में सब का सब बेकार साबित होगा (और जब नीयत ख़ैर नहीं तो) वह सब का सब बातिल और लग़्व है।"

जब यह हालत है तो अपने किसी अमल के मुताल्लिक़ यह घमंड कि यह अल्लाह के वास्ते हो गया, बहुत मुश्किल है, मगर यह कि अल्लाह जल्ल शानुहू ही अपने फ़ज़्ल व करम से तसामुह का मामला फ़रमा कर उस को क़ुबूल कर ले तो उसकी रहमत से बिल्कुल बईद नहीं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मर्तबा एक नौजवान सहाबी रज़ि॰ की इयादत के लिये तशरीफ़ ले गये। वह सख़्त अलील थे, और इंतिक़ाल का वक़्त क़रीब था। हुज़ूर सल्ल॰ ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि क्या हाल है? उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह, अल्लाह की रहमत का उम्मीदवार हूँ और अपने

गुनाहों से डर रहा हूँ। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि ये दोनों चीज़ें उस वक़्त किसी बंदे के दिल में जमा नहीं होतीं, मगर यह कि अल्लाह जल्ल शानुहू उसको वह चीज़ अता फ़रमाते हैं, जिस की वह उम्मीद कर रहा है और उस चीज़ से अम्न नसीब फ़रमाते हैं, जिस से वह डर रहा है। *(जम्उल फ़वाइद)*

हज़रत उमर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि अगर क़ियामत में यह ऐलान हो कि सिर्फ़ एक शख़्स की बख़्शिश होगी, बाक़ी सब दोज़ख़ में डाल दिये जायेंगे, तो मुझे (अल्लाह की रहमत से) ये उम्मीद होगी कि वह एक शख़्स मैं ही हूँगा और अगर यह ऐलान हो कि सिर्फ़ एक शख़्स जहन्नम में जायेगा, बाक़ी सब जन्नत में दाख़िल होंगे, तो मुझे यह ख़ौफ़ होगा कि वह एक मैं ही न हूँ।

हज़रत अली रज़ि॰ का इर्शाद अपने साहबज़ादे से है कि बेटा, अल्लाह से ऐसा ख़ौफ़ कर कि अगर तमाम दुनिया के आदमियों की नेकियां लेकर जाये तो वे भी क़ुबूल न हों और अल्लाह पाक से ऐसी उम्मीद रख कि अगर तू सारी दुनिया के गुनाह अपने साथ लेकर जाये, तो वे भी माफ़ कर दे। *(एह्या)*

तंबीहः- यह नमूने के तौर पर चंद आदाब पर तंबीह है, ज़ियारते मदीना के मज़्मून में भी कुछ आदाब आ रहे हैं, वे भी मलहूज़ रखिये।

छठी फ़स्ल

मक्का मुकर्रमा और काबा शरीफ़ के फ़ज़ाइल में

इन दोनों के और इनके ख़ास-ख़ास मक़ामात के बहुत से फ़ज़ाइल क़ुरआन पाक और अहादीस में आये हैं। नमूने के तौर पर चंद का ज़िक्र इस जगह किया जाता है। हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है -

إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِي بِبَكَّةَ مُبَارَكًا وَهُدًى لِلْعَالَمِينَ ۝

यक़ीनन वह मकान जो सबसे पहले लोगों (की इबादत) के वास्ते

मुक़र्रर किया गया, वह मकान है जो मक्के में है (यानी काबा शरीफ़), बरकत वाला मकान है और तमाम लोगों के लिये हिदायत (की चीज़) है।

(सूरः आले इमरान, रूकूअ 1)

फ़ायदाः- हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू से नकल किया गया कि मकानात तो इससे पहले भी थे लेकिन इबादत के लिये सबसे पहले यही मकान मौज़ूअ् हुआ। मुतअद्दद सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ से नक़ल किया गया कि तमाम ज़मीन के पैदा होने से पहले यह जगह पानी के बुलबुले की तरह से थी, फिर इसी को फैला कर सारी ज़मीन इसी से बनायी गयी, जैसा कि आटे के पेड़े से फैला कर रोटी बनायी जाती है।

बाज़ उलमा ने कहा है कि यहूद बैतुल मक्दिस को सब से अफ़ज़ल शहर बताया करते थे कि वहां बहुत से अंबिया-ए-किराम का क़ियाम रहा है। इस पर ये आयतें नाज़िल हुईं। *(दुर्रे मंसूर)*

فِيهِ اٰيٰتٌ بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِيْمَ ۝ (ال عمران)

इसमें बहुत सी खुली हुई निशानियां (उसकी अफ़ज़लियत की) मौजूद हैं, मिनजुम्ला उनके उसमें मक़ामे इब्राहीम है।

(आले इमरान, रूकूअ 1)

फ़ायदाः- मक़ामे इब्राहीम एक पत्थर है, जिस पर खड़े होकर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम ने काबे की तामीर की थी और इस पत्थर पर आपके क़दमों का निशान बन गया था और अब वह काबा शरीफ़ के क़रीब एक क़ुब्बा में है, जिसको मक़ामे इब्राहीम ही कहा जाता है।

मुजाहिद कहते हैं कि इस पत्थर में क़दम के निशानात का होना भी एक खुली निशानी है। *(दुर्रे मंसूर)*

وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ط (ال عمران ع ١)

और जो शख़्स उसके (यानी हरम की हुदूद के) अंदर दाख़िल हो जाये वह अम्न वाला हो जाता है।

(आले इमरान, रूकूअ 1)

फ़ायदाः- दो वजह से वह जगह मक़ामे अम्न हैः-

1. एक आख़िरत के एतिबार से कि उसमें नमाज़ व हज वग़ैरह करने से

जहन्नम के अज़ाब से अम्न होता है और

2. दूसरे इस वजह से कि जो शख़्स बाहर किसी को क़त्ल करके उसमें दाख़िल हो जाये, तो उसको बदले में वहां क़त्ल न किया जायेगा। अलबत्ता उस को खाना वग़ैरह बंद करके मजबूर किया जायेगा कि वहां से बाहर निकले और बाहर क़त्ल किया जाये।

हज़रत उमर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि अगर मैं अपने बाप के क़ातिल को भी हरम में पाऊँ, तो वहां उसको हाथ न लगाऊँ, यहां तक कि बाहर निकले, हत्ता कि हज़रत उमर रज़ि॰ के साहबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ से यह नक़ल किया गया है कि अगर मैं अपने बाप हज़रत उमर रज़ि॰ के क़ातिल को वहां पाऊं तो मैं उसको मजबूर न करूँ।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ से भी यही अपने वालिद के क़ातिल के मुताल्लिक़ नक़ल किया गया। (दुर्रे मंसूर)

وَاِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَاَمْنًا ط (بقره ع ١٥)

और वह वक़्त भी याद करने के क़ाबिल है, जिस वक़्त हमने ख़ाना-ए-काबा को लोगों के लिये मर्जअ् बनाया, और अम्न (की जगह)। (सूरः बक़रः रूकू 15)

फ़ायदाः- मर्जअ् बनाने के दो मतलब हो सकते हैं -

1. एक यह कि क़िब्ला बनाया कि लोग नमाज़ में उसकी तरफ़ रूजूअ् करें।

2. दूसरे यह कि हज व उमरा के लिये उसकी तरफ़ चल कर आयें और हो सकता है कि "मसाबतन" सवाब से हो कि सवाब की जगह बनाया कि वहां एक नेकी का सवाब एक लाख के बराबर है।

इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मर्जअ् होने का मतलब यह है कि इससे लोगों का दिल नहीं भरता। एक मर्तबा हज करके जाते हैं फिर बार बार उसकी तरफ़ लौटते हैं। (दुर्रे मंसूर)

وَاِذْ يَرْفَعُ اِبْرَاهِيْمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَاِسْمٰعِيْلُ ط رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ط اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ٥ (بقره ع ١٥)

और वह वक़्त भी याद करने के क़ाबिल है, जबकि बुलंद कर रहे

थे इब्राहीम अलैहिस्सलाम दीवारें काबा शरीफ़ की और (उनके साथ मदद कर रहे थे) इस्माईल अलैहिस्सलाम और यह कहते जा रहे थे कि ऐ हमारे रब, यह ख़िदमत हमारी क़ुबूल कर लीजिये। बिला शुब्ह आप ख़ूब सुनने वाले हैं (दुआओं के) और ख़ूब जानने वाले हैं (लोगों के हालात और नीयतों को) *(सूरः बक़रः, रूकूअ 15)*

फ़ायदाः- काबा की तामीर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने की, यह तो क़तई चीज़ है, क़ुरआन पाक में साफ़ मौजूद है।

उलमा ने लिखा है कि इस मकान से अफ़ज़ल कौन सा मकान हो सकता है कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने इसके बनाने का हुक्म फ़रमाया, हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने इसकी इंजीनियरी की, नक़्शा बताया। हज़रत इब्राहीम ख़लील अलैहि॰ जैसे बड़े नबी, उसके मेअ्मार और हज़रत इस्माईल ज़बीहुल्लाह जैसे जां निसार तामीर में मदद गार थे, अल्लाहु अक्बर। कितनी बड़ी अज़मत है इस मकान की।

इब्ने सअद की एक रिवायत में है कि हज़रज इब्राहीम अलैहिस्सलाम की उम्र उस वक़्त सौ बरस की थी और हज़रत इस्माईल अलैहि॰ की तीस बरस की। *(दुर्रे मंसूर)*

काबे की तामीर मुअर्रिख़ीन के नज़दीक मुतअद्दद मर्तबा हुई उनमें से बाज़ मुत्तफ़क़ अलैहि हैं और बाज़ मुख़्तलफ़ फ़ीहि, उसकी बहस यह नाकारा मुअत्ता इमाम मालिक की अरबी शरह में तफ़्सील से ज़िक्र कर चुका है। जिसका इज्माल यह है :-

1. मशहूर क़ौल के मुवाफ़िक़ सबसे अव्वल इसकी तामीर फ़रिश्तों ने की है, हज़रत आदम अलैहि॰ की पैदाइश से दो हज़ार साल क़ब्ल, और बाज़ हज़रात का क़ौल है कि यह दूसरी तामीर है। इससे पहले हक़ तआला शानुहू के अम्र "कुन" से इसकी तामीर हुई, जिसमें फ़रिश्तों का भी दख़ल न था।

2. हज़रत आदम अलैहि॰ की तामीर है, जो मुहद्दिसीन और मुअर्रिख़ीन के नज़दीक मशहूर है, मगर क़तई रिवायत नहीं। रिवायात में आया है कि पांच पहाड़ों के पत्थरों से हज़रत आदम अलैहि॰ ने उसको बनाया था लबनान, तूरे सीना, तूरे ज़ीता, जूदी, हिरा।

बाज़ रिवायात में आया है कि हज़रत आदम अलैहि॰ ने बुनियादी हिस्सा

तामीर किया था। उसके ऊपर आसमान से बैते मामूर नाज़िल हो कर रखा गया था। इसके बाद हज़रत आदम अलैहि॰ के विसाल पर या तूफ़ाने नूह के वक़्त वह आसमान पर उठा लिया गया।

3. हज़रत शीस अलैहि॰, जो हज़रत आदम अलैहि॰ के साहब ज़ादे नबी हुए, उनकी तामीर बतायी जाती है।

4. हज़रत इब्राहीम अलैहि॰ की बिना जो ऊपर गुज़री और यह क़तई है,। मुअर्रिख़ीन ने लिखा है कि यह बिना नौ गज़ ऊँची थी और 30 गज़ लम्बी और 23 गज़ चौड़ी थी। यह मुसक़्क़फ़ (छत दार) न थी, और इसके अंदर एक कुवां था, जिसमें वह नज़्र व नियाज़ डाल दी जाती थी, जो काबे पर निसार की जाती थी।

5. अमालिक़ा की और

6. जुर्हुम की, ये अरब के दो क़बीले हज़रत नूह अलैहि॰ की औलाद में हैं।

7. क़ुसई की तामीर है, जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पांचवीं पुश्त में दादा हैं।

8. क़ुरैश की तामीर, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जवानी के ज़माने में, जिसके बहुत से क़िस्से अहादीस में आते हैं, हुज़ूर सल्ल॰ की उम्र शरीफ़ उस वक़्त 25 साल की थी और बाज़ ने पैंतीस साल की बतायी है। इसकी तामीर में हुज़ूर सल्ल॰ की भी शिर्कत हुई कि अपने कांधे पर पत्थर उठा कर लाते थे। यही वह तामीर है जिसमें हज्रे अस्वद को अपनी जगह पर रखने में क़ुरैश में ऐसा निज़ाअ् पैदा हुआ कि हर जानिब से तलवारें निकल आयीं और हर क़बीला चाहता था कि यह सआदत उसके हिस्से में आये। हुज़ूर सल्ल॰ ने उसका यह बेहतरीन फ़ैसला किया, कि अपनी चादर मुबारक पर उसको रख कर फ़रमाया कि हर क़बीले का एक एक आदमी इस चादर के किनारे को पकड़ ले। इसी तरह इसको काबे की दीवार तक ले जाकर फ़रमाया कि तुम सब मुझे अपनी तरफ़ से वकील बना दो कि इस पर से उठा कर दीवार पर रख दूँ। सब ने वकील बना दिया और हुज़ूर सल्ल॰ ने अपने दस्ते मुबारक से ऊपर रख दिया। क़ुरैश ने इस तामीर में इस का अहद किया था कि इस में मुश्तबह कमाई न लगायी जायेगी, हलाल कमाई कम रह गयी, जिसकी वजह से हतीम की जानिब दीवार को पीछे

हटा दिया और कुछ हिस्सा काबा शरीफ़ का बाहर रह गया और काबे का दरवाज़ा भी हज़रत इब्राहीम अलैहि० की तामीर के ख़िलाफ़ बहुत ऊँचा कर दिया कि हर शख़्स उसमें दाख़िल न हो सके। बल्कि दाख़िले के वास्ते सीढ़ी लगाना पड़े, जिसको दिल चाहे सीढ़ी लगा कर दाख़िल करें, जिसको चाहे दाख़िल न होने दें। हुज़ूर सल्ल० की ख़्वाहिश थी कि काबे शरीफ़ को अज़ सरे नौ क़वाइदे हज़रत इब्राहीम अलैहि० पर तामीर किया जाये, मगर इसकी नौबत न आयी।

9. सन् 64 हि० में यज़ीद की फ़ौज ने जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० पर मक्का में चढ़ाई की तो मिन्जनीक़ से आग बरसायी जिससे काबे का परदा भी जल गया और काबे की दीवारों को भी नुक़्सान पहुँचा। इसी दौरान में यज़ीद मर गया और फ़ौजें वहां से वापस आ गयीं, तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० ने काबे को मुनहदिम करके अज़ सरे नौ तामीर किया, जिसमें हुज़ूर सल्ल० की ख़्वाहिश के मुवाफ़िक़ हतीम के हिस्से को अंदर दाख़िल किया और दरवाज़ा जमीन के क़रीब कर दिया कि हर शख़्स उसमें दाख़िल हो सके, और दूसरा दरवाज़ा उसके मुक़ाबिल दीवार में क़ायम कर दिया कि लोग एक दरवाज़े से दाख़िल हों, दूसरे से निकलते रहें और आने जाने में मुज़ाहमत न हो। जुमादिल उख़्रा सन् 64 हि० में यह तामीर शुरू हुई और रजब सन् 64 हि० या सन् 65 हि० में पूरी हुई।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० ने इसकी ख़ुशी में बहुत बड़ी दावत की, जिसमें सौ ऊँट ज़िब्ह किये। काबे शरीफ़ की तामीर तो हज़रत ज़ुबैर के साहब ज़ादे ने पूरी फ़रमा दी, लेकिन इस हादसे में एक अहम नुक़्सान यह हुआ कि हज़रत इस्माईल ज़बीहुल्लाह के फ़िदये में जो मेंढा जन्नत का ज़िब्ह हुआ था उसके सींग उस वक़्त से काबे शरीफ़ में महफ़ूज़ थे। वे इस हादसे में जल गये।

(इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन०)

10. हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० के इंतिक़ाल के बाद अब्दुल मलिक बिन मर्वान के ज़माना-ए-हुकूमत में हज्जाज ने बादशाह को बहकाया कि इब्ने ज़ुबैर रज़ि० ने काबा में तग़य्युर कर दिया और उस हाल पर नहीं रहा, जिस पर हुज़ूर सल्ल० के ज़माने में था, अब्दुल मलिक ने उसको इजाज़त दे दी कि उसी सूरत पर कर दिया जाये, इस पर हज्जाज ने क़दीम तर्ज़ के मुवाफ़िक़ शर्क़ी दरवाज़े को ऊँचा कर दिया और उसके बिल मुक़ाबिल दरवाज़े को बंद कर दिया। और हतीम की जानिब से दीवार तोड़ कर पीछे हटा दी और अंदर के हिस्से में भराव

करके काबे की सतह को अंदर से ऊंचा कर दिया। सन् 73 हि॰ में यह तग़य्युर हुआ, उसके बाद से उसी हाल पर बैतुल्लाह शरीफ़ एक अर्से तक रहा कि उसकी तीन जानिबें हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि॰ की तामीर से थीं और हतीम की जानिब हज्जाज की तामीर से।

बाज़ लोगों की राय यह है कि अब तक असल तामीर यही है और आइंदा के तग़य्युरात मरम्मतें हैं, मुस्तक़िल तामीरें नहीं हैं।

मुहद्दिसीन ने रिवायत की है कि हारून रशीद वग़ैरह बाज़ सलातीन ने इरादा किया कि काबा शरीफ़ को हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि॰ की तामीर के मुवाफ़िक़ कर दिया जाये, इसलिये कि वह हुज़ूर सल्ल॰ की मंशा के मुवाफ़िक़ थी, मगर हज़रत इमाम मालिक रह॰ ने बड़े इसरार से इस इरादे को मुलतवी कराया, ताकि काबे की तामीर बादशाहों का खेल न बन जाये। कि हर बादशाह अपने नाम की ख़ातिर इस में तामीर का सिलसिला शुरू कर दे।

11. सन् 1021 हि॰ में सुलतान अहमद तुर्की ने छत बदलवायी और दीवारों में जहां जहां बोसीदगी आ गयी थी, उसकी मरम्मत करायी, मीज़ाबुर्रहमत को दुरूस्त किया। यह दर हक़ीक़त पूरी तामीर की तज्दीद नहीं, बल्कि इस्लाह और मरम्मत है।

12. सन् 1039 हि॰ में सुलतान मुराद के ज़माने में जब बहुत ज़ोर से सैल का पानी मस्जिद में पहुँच गया और बैतुल्लाह शरीफ़ की बाज़ दीवारें भी गिर गयीं, तो सुलतान मौसूफ़ ने उनकी तामीर करायी, ग़ालिब यह है कि जो हिस्सा मुनहदिम हो गया था, उसी की तामीर हुई, इसलिये इसको भी बाज़ मुअर्रिख़ीन सिर्फ़ तर्मीम बताते हैं और बाज़ तामीरे जदीद, वल्लाहु अअ्लम।

हज़रत शाह हब्दुल अज़ीज़ साहिब नव्वरल्लाहु मर्क़-दहू ने अपनी तफ़्सीर में यह लिखा है कि हज्रे अस्वद की जानिब के अलावा और जानिबों की तामीर की, इस सूरत में इस वक़्त बैतुल्लाह शरीफ़ हज्रे अस्वद की जानिब से हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि॰ की तामीर है और बाक़ी जानिबों में सुलतान मुराद का तामीर किया हुआ है। इस साल मुहर्रम सन् 1367 हि॰ में सुलतान इब्ने सऊद ने उस के दरवाज़े के किवाड़ों और चौखट की तज्दीद की।

جَعَلَ اللّٰهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيَامًا لِّلنَّاسِ (مائدہ ع ۱۳)

हक़ तआला शानुहू ने काबे को जो मोहतरम घर है, लोगों के

क़ायम रहने का सबब बना दिया। *(माइदा, रूकूअ 13)*

फ़ायदा:- हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि लोगों के क़ायम रहने का सबब उनके दीन का रहना और निशानाते हज का क़ायम रहना है।

दूसरी हदीस में उनसे नक़ल किया गया कि उनका क़ायम रहना यह है कि जो लोग उस में पहुँच जायें वे मामून हो जायें।

हसन बसरी रह॰ ने यह आयत तिलावत फ़रमायी और फ़रमाया कि लोग अपने दीन पर क़ायम रहेंगे, जब तक कि इस घर का हज करते रहें और नमाज़ में उस की तरफ़ मुंह करते रहें। *(दुर्रे मंसूर)*

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि बैतुल्लाह का तवाफ़ बहुत कसरत से किया करो। दो मर्तबा यह बिल्कुल मुन्हदिम हो चुका है और तीसरी मर्तबा जब बिल्कुल्लिया मुन्हदिम हो जायेगा तो उठा लिया जायेगा।

इमाम ग़ज़ाली रह॰ ने हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू का इर्शाद नक़ल किया है कि हक़ तआला शानुहू जब दुनिया को बर्बाद करने का इरादा फ़रमायेंगे तो सबसे पहले बैतुल्लाह को मुन्हदिम कराया जायेगा। फिर दुनिया बर्बाद की जायेगी। *(इत्तिहाफ़)*

अलामाते क़ियामत की रिवायात में क़ियामत के क़रीब काबे का मुन्हदिम होना कसरत से वारिद हुआ है। हुज़ूर सल्ल॰ का पाक इर्शाद है कि वह हब्शी गोया मेरी नज़र के सामने है, जो काबे शरीफ़ को एक-एक पत्थर उस का गिरा कर मुन्हदिम करेगा।

एक हदीस में आया है कि लोग ख़ैर के साथ रहेंगे, जब तक कि इसकी हुर्मत की (यानी मक्का और हरमे मक्का की) ऐसी ताज़ीम करते रहेंगे, जैसा कि इसकी ताज़ीम का हक़ है और जब इसकी ताज़ीम को ज़ाया कर देंगे, तो हलाक हो जायेंगे। *(मिश्कात)*

एक हदीस में है कि क़ियामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी, जब तक कि हज्रे अस्वद और मक़ामे इब्राहीम न उठा लिये जायें।

एक हदीस में अलामाते क़ियामत में है कि हब्शा के लोग काबे पर चढ़ाई करेंगे और वह इतना बड़ा लश्कर होगा कि उसका अगला हिस्सा हज्रे अस्वद के पास होगा और पिछला हिस्सा जद्दा में समुन्दर के क़रीब और काबे शरीफ़ को एक एक पत्थर गिरा कर तोड़ेंगे। *(इत्तिहाफ़)*

अहादीस

(١) عن ابن عباسؓ قال قال رسول اللّٰه صلی اللّٰه علیه وسلم ان اللّٰه فی کل یوم ولیلة عشرین ومائة رحمة تنزل علی هذا البیت ستون للطائفین واربعون للمصلین وعشرون للناظرین کذافی الدرعن ابن عدی والبیهقی وضعفه وغیرهماوحسنه المنذری وفی الکنزبالفاظ اخروهوفی المسلسلات للشاه ولی اللّٰه الدهلوی۔

1. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि अल्लाह जल्ल शानुहू की एक सौ बीस रहमतें रोज़ाना उस घर पर नाज़िल होती हैं, जिनमें से साठ तवाफ़ करने वालों पर और चालीस वहां नमाज़ पढ़ने वालों पर और बीस बैतुल्लाह को देखने वालों पर होती हैं।

फ़ायदा:- बैतुल्लाह शरीफ़ का सिर्फ़ देखना भी इबादत है।

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रह० ताबई फ़रमाते हैं कि जो ईमान व तस्दीक़ के साथ काबे को देखे, वह ख़ताओं से ऐसा पाक हो जाता है, जैसा आज ही पैदा हुआ।

अबुस्साइब मदनी रह० कहते हैं, जो ईमान व तस्दीक़ के साथ काबे को देखे, उसके गुनाह ऐसे झड़ते जाते हैं जैसे पत्ते दरख़्त से झड़ जाते हैं, और जो शख़्स मस्जिद में बैठकर बैतुल्लाह को सिर्फ़ देखता रहे, चाहे तवाफ़ व नमाज़े नफ़्ल न पढ़ता हो, वह अफ़ज़ल है, उस शख़्स से जो अपने घर में नफ़्लें पढ़े और बैतुल्लाह को न देखे।

हज़रत अता फ़रमाते हैं कि बैतुल्लाह को देखना भी इबादत है और बैतुल्लाह को देखने वाला ऐसा है, जैसा कि रात को जागने वाला दिन में रोज़ा रखने वाला और अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाला और अल्लाह की तरफ़ रूजूअ् करने वाला।

हज़रत अता रह० ही से यह भी नक़ल किया गया कि एक मर्तबा बैतुल्लाह को देखना एक साल की इबादते नफ़्ल के बराबर है।

ताऊस रह० कहते हैं कि बैतुल्लाह का देखना अफ़ज़ल है, उस शख़्स की

इबादत से भी, जो रोज़ेदार, शब बेदार और मुजाहिद फ़ी सबीलिल्लाह हो।

इब्राहीम नख़ई रह० कहते हैं कि बैतुल्लाह का देखने वाला मक्का से बाहर इबादत में कोशिश से लगे रहने के बराबर है। (दुर्रे मंसूर)

और तवाफ़ करने वालों पर जिस क़दर रहमतें नाज़िल होती हैं, वह इस हदीस से ज़ाहिर है, इसी वास्ते उलमा ने लिखा है कि मस्जिदे हराम में तहिय्यतुल मस्जिद से तवाफ़ अफ़ज़ल है, अगर किसी वजह से तवाफ़ न कर सके तो तहिय्यतुल मस्जिद पढ़े, वरना बजाये तहिय्यतुल मस्जिद के मस्जिद में जाते ही तवाफ़ करना अफ़ज़ल है। अलबत्ता अगर नमाज़ का वक़्त क़रीब हो तो फिर उस वक़्त तक तवाफ़ न करे। खुशकिस्मत हैं वे लोग, जिनको अल्लाह जल्ल शानुहू अपने लुत्फ़ व फ़ज़्ल से कसरत से तवाफ़ करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमायें।

कुर्ज़ बिन वबरः रह० एक बुज़ुर्ग थे, जिनका मामूल हमेशा रोज़ाना सत्तर तवाफ़ दिन में और सत्तर तवाफ़ रात में करने का था, जिसकी मसाफ़त तीस मील रोज़ाना की हुई। और हर तवाफ़ के बाद दो रक्अत तहिय्यतुत्तवाफ़ की कुल दो सौ अस्सी रक्अतें हुईं। इनके अलावा दो मर्तबा रोज़ाना क़ुरआन पाक ख़त्म करने का मामूल था। (एह्या)

यही लोग हैं जो आख़िरत की दायमी ज़िन्दगी के लिये बहुत कुछ कमा कर ले जा रहे हैं।

(٢) عن ابن عباس قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم فى الحجر والله ليبعثه الله يوم القيمة له عينان يبصر بهما ولسان ينطق به يشهد على من استلمه بحق رواه الترمذى وابن ماجه والدارمى كذا فى المشكوٰة .

2. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़सम खाकर इर्शाद फ़रमाते हैं कि हज्रे अस्वद को अल्लाह जल्ल शानुहू क़ियामत के दिन ऐसी हालत में उठाएंगे कि उसके दो आंखें होंगी, जिन से वह देखेगा और ज़बान होगी, जिससे वह बोलेगा और गवाही देगा उस शख़्स के हक़ में, जिसने उस को हक़ के साथ बोसा दिया हो।

फ़ायदाः- हक़ के साथ बोसा देने का मतलब यह है कि ईमान और तस्दीक़ के साथ बोसा दिया हो।

हज़रत जाबिर रज़ि० हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल

करते हैं कि काबे के लिये एक ज़बान है और दो होंठ हैं, उसने (पहले ज़माने में) हक़ तआला शानुहू से शिकायत की कि ऐ अल्लाह, मेरी तरफ़ लौटने वाले कम हो गये, और ज़ियारत करने वाले कम हो गये तो हक़ तआला शानुहू ने फ़रमाया कि मैं एक ऐसी क़ौम (मुसलमान) पैदा करने वाला हूँ, जो बड़े खुशूअ् वाली होगी, बड़े सज्दे करने वाली (नमाज़ी) होगी, वे तेरी तरफ़ ऐसे झुकेंगे, जैसा कि कबूतर अपने बैज़े की तरफ़ झुकता है। *(तर्ग़ीब)*

एक और हदीस में आया है कि हज्रे अस्वद और रूकने यमानी क़ियामत के दिन ऐसे हाल में उठेंगे कि उनके लिये दो आंखें और दो ज़बानें और दो होंठ होंगे, वफ़ा की गवाही देंगे उन लोगों के लिये जो उनको बोसा देंगे यानी इसकी गवाही देगें कि इन बोसा देने वालों ने इक़रार पूरा कर दिया। *(तर्ग़ीब)*

एक हदीस में है कि हज़रत उमर रज़ि॰ जब तवाफ़ करते हुए हज्रे अस्वद पर पहुँचे तो उसको बोसा दिया और फ़रमाया कि मैं जानता हूँ कि तू एक पत्थर है, न तू कोई नफ़ा पहुँचा सकता है, न नुक़्सान पहुँचा सकता है। अगर मैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को न देखता कि आपने तुझे बोसा दिया, तो कभी बोसा न देता। हज़रत अली कर्रमल्लहु वज्हहू पास खड़े थे। उन्होंने अर्ज़ किया कि ऐ अमीरूल मोमिनीन! यह नफ़ा और नुक़्सान पहुँचाता है। हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया कि यह कैसे? हज़रत अली रज़ि॰ ने फ़रमाया कि अज़ल में जब अल्लाह जल्ल शानुहू ने सारे बंदों से अपने रब्बुल आलमीन होने का इक़रार लिया था तो उस इक़रार को किताब में दर्ज करके इस पत्थर में महफ़ूज़ कर दिया था। बस यह क़ियामत के दिन गवाही देगा कि फ़लां ने इक़रार पूरा कर दिया और फ़लां (यानी काफ़िर) मुंकिर हुआ। *(इत्तिहाफ़)*

ग़ालिबन इसी वजह से इस जगह जो दुआ मस्नून है, उसके अल्फ़ाज़ हैं-

اَللّٰهُمَّ اِيْمَانًا بِكَ وَتَصْدِيْقًا بِكِتَابِكَ وَوَفَاءً بِعَهْدِكَ ـ

("अल्लाहुम्-म ईमानम् बि-क व तस्दीक़म् बिकिताबि-क॰ व वफ़ाअम् बिअह्दि-क॰"

"ऐ अल्लाह, मैं बोसा देता हूँ तुझ पर ईमान लाते हुए और तेरी किताब की तस्दीक़ करते हुए और तेरे अहद को पूरा करते हुए।")

हज़रत उमर रज़ि॰ को लोगों के अक़ाइद का बहुत फ़िक्र व एहतिमाम रहता था कि मुबादा अक़ीदे में कोई लग़्ज़िश हो जाये, इसी वजह से "बैअतुर्रिज़्वान"

करते हैं कि काबे के लिये एक ज़बान है और दो होंठ हैं, उसने (पहले ज़माने में) हक़ तआला शानुहू से शिकायत की कि ऐ अल्लाह, मेरी तरफ़ लौटने वाले कम हो गये, और ज़ियारत करने वाले कम हो गये तो हक़ तआला शानुहू ने फ़रमाया कि मैं एक ऐसी क़ौम (मुसलमान) पैदा करने वाला हूँ, जो बड़े ख़ुशूअ़ वाली होगी, बड़े सज्दे करने वाली (नमाज़ी) होगी, वे तेरी तरफ़ ऐसे झुकेंगे, जैसा कि कबूतर अपने बैज़े की तरफ़ झुकता है। *(तर्ग़ीब)*

एक और हदीस में आया है कि हज्रे अस्वद और रूकने यमानी क़ियामत के दिन ऐसे हाल में उठेंगे कि उनके लिये दो आंखें और दो ज़बानें और दो होंठ होंगे, वफ़ा की गवाही देंगे उन लोगों के लिये जो उनको बोसा देंगे यानी इसकी गवाही देंगे कि इन बोसा देने वालों ने इक़रार पूरा कर दिया। *(तर्ग़ीब)*

एक हदीस में है कि हज़रत उमर रज़ि॰ जब तवाफ़ करते हुए हज्रे अस्वद पर पहुँचे तो उसको बोसा दिया और फ़रमाया कि मैं जानता हूँ कि तू एक पत्थर है, न तू कोई नफ़ा पहुँचा सकता है, न नुक़्सान पहुँचा सकता है। अगर मैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को न देखता कि आपने तुझे बोसा दिया, तो कभी बोसा न देता। हज़रत अली कर्रमल्लहु वज्हहू पास खड़े थे। उन्होंने अर्ज़ किया कि ऐ अमीरूल मोमिनीन! यह नफ़ा और नुक़्सान पहुँचाता है। हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया कि यह कैसे? हज़रत अली रज़ि॰ ने फ़रमाया कि अज़ल में जब अल्लाह जल्ल शानुहू ने सारे बंदों से अपने रब्बुल आलमीन होने का इक़रार लिया था तो उस इक़रार को किताब में दर्ज करके इस पत्थर में महफ़ूज़ कर दिया था। बस यह क़ियामत के दिन गवाही देगा कि फ़लां ने इक़रार पूरा कर दिया और फ़लां (यानी काफ़िर) मुंकिर हुआ। *(इत्तिहाफ़)*

ग़ालिबन इसी वजह से इस जगह जो दुआ मस्नून है, उसके अल्फ़ाज़ हैं-

اَللّٰهُمَّ اِيْمَانًا بِكَ وَتَصْدِيْقًا بِكِتَابِكَ وَوَفَاءً بِعَهْدِكَ ؕ

("अल्लाहुम्-म ईमानम् बि-क व तस्दीक़म् बिकिताबि-क॰ व वफ़ाअम् बिअह्दि-क॰"

"ऐ अल्लाह, मैं बोसा देता हूँ तुझ पर ईमान लाते हुए और तेरी किताब की तस्दीक़ करते हुए और तेरे अहद को पूरा करते हुए।")

हज़रत उमर रज़ि॰ को लोगों के अक़ाइद का बहुत फ़िक्र व एहतिमाम रहता था कि मुबादा अक़ीदे में कोई लग़्ज़िश हो जाये, इसी वजह से "बैअतुर्रिज़्वान"

जिस दरख़्त के नीचे हुई थी, वह बैअत चूंकि बहुत अहम थी, हत्तांकि हक़ तआला शानुहू ने भी रिज़ा का परवाना उन हज़रात के लिये क़ुरआन पाक में नाज़िल फ़रमाया। चुनांचे इर्शाद है:-

لَقَدْ رَضِيَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ (فتح)

"बेशक अल्लाह जल्ल शानुहू राज़ी हो गया, उन मुसलमानों से जब कि वे दरख़्त के नीचे आप से बैअत कर रहे थे।

लेकिन जब हज़रत उमर रज़ि॰ को यह मालूम हुआ कि लोग उस दरख़्त के पास बरकत के तौर पर जाते हैं तो उस दरख़्त को कटवा दिया।

(दुर्रे मंसूर)

इसी तरह हज़रत उमर रज़ि॰ को यहां भी ख़्याल हुआ कि लोग बुत परस्ती से निकलकर आ रहे हैं, ऐसा न हो कि इस पत्थर को भी बुतों के पत्थर के मुशाबेह समझ कर बुत परस्ती का शायबा उनमें रह जाये, इसलिये इस पर मुतनब्बह करने के लिये कि यह पत्थर की कोई ताज़ीम नहीं है, बल्कि सिर्फ़ तामीले हुक्म है। मुश्रिकीन की तरह से यह बात नहीं कि इस पत्थर में कोई तक़र्रुब पैदा करने की ख़ासियत है। (इत्तिहाफ़)

इसी तरह से ख़ुद काबे शरीफ़ के मुताल्लिक़ हज़रत उमर रज़ि॰ का यह इर्शाद नक़ल किया गया कि यह चंद पत्थरों का मकान है, लेकिन अल्लाह ने इसको हमारा क़िबला मुक़र्रर कर दिया कि ज़िन्दगी में इसकी तरफ़ नमाज़ पढ़ें और मरने के बाद इसकी तरफ़ मुंह करके लिटाया जाये। (कंज़)

एक हदीस में आया है कि हज़रत उमर जब हज्रे अस्वद पर पहुँचे तो फ़रमाया मैं इस की गवाही देता हूँ कि तू एक पत्थर है न नफ़ा पहुँचा सकता है न नुक़्सान। मेरा रब सिर्फ़ वही है जिस के सिवा कोई माबूद नहीं। अगर मैं यह न देखता कि हुज़ूर सल्ल॰ ने तुझे बोसा दिया और हाथ लगाया तो न बोसा देता न हाथ लगाता। (कंज़)

एक हदीस में आया है कि हज़रत उमर रज़ि॰ ने जब हज्रे अस्वद को बोसा दिया तो फ़रमाया:-

بِسْمِ اللّٰهِ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ عَلٰى مَاهَدَانَا وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الَّذِىْ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ اٰمَنْتُ بِاللّٰهِ وَكَفَرْتُ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ وَاللَّاتِ وَالْعُزّٰى وَمَايُدْعٰى مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنَّ وَلِيِّ َۦ اللّٰهُ الَّذِىْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ ۝

"इसमें हर क़िस्म के शिर्क से बेज़ारी का इज़्हार फ़रमाया, इससे यह बात भी ज़ाहिर हो गयी कि बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ या हज्रे अस्वद वग़ैरह का बोसा इसको बुत परस्ती से कोई मुशाबहत नहीं। अव्वल इस वजह से कि इस का तवाफ़ वग़ैरह सिर्फ़ तामीले इर्शादे खुदावंदी है और बुतों के तवाफ़ का या किसी बुत के तवाफ़ का कोई हुक्म मालिकुल मुल्क से नहीं हैं।

दूसरे इस वजह से भी कि काबे शरीफ़ या हज्रे अस्वद वग़ैरह में ग़ैरूल्लाह से कोई ताल्लुक़ या इलाक़ा और निस्बत नहीं है, मौला ही का घर है, बख़िलाफ़ बुतों के क़ि ये ग़ैरूल्लाह से ताल्लुक़ रखते हैं, जिसमें शिर्क ज़ाहिर है, और हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू का यह इर्शाद कि नफ़ा देता है वह शहादत और गवाही का नफ़ा है, अदालत में किसी की गवाही देना उसके लिये नाफ़ेअ् तो बहुत ज़्यादा है, मगर इससे उसका क़ाबिले परस्तिश होना लाज़िम नहीं आता।

हदीस में आया है कि मुअज़्ज़िन की अज़ान की आवाज़ जहां तक पहुँचे हर रत्ब व याबिस उसके लिये क़ियामत में गवाही देगा लेकिन इसकी वजह से हर रत्ब व याबिस (खुश्क व तर चीज़) का काबिले परस्तिश होना लाज़िम नहीं आता।

(٣) عن ابن عباسؓ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم نزل الحجر الاسود من الجنة وهو اشد بياضا من اللبن فسودته خطايا بنى ادم رواه احمد والترمذى وقال هذا حديث حسن صحيح كذا فى المشكوٰة.

3. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि हजरे अस्वद जब जन्नत से दुनिया में उतरा तो वह दूध से ज़्यादा सफ़ेद था, आदमियों की ख़ताओं ने उसको काला कर दिया।

फ़ायदाः- यानी लोगों ने जो उसको गुनाहों से आलूदा हाथों से छुआ तो उनके गुनाहों की तासीर से वह स्याह हो गया। बड़ी इब्रत का मक़ाम है कि जब महज़ हाथ लगाने से पत्थर पर यह असर हुआ तो उन दिलों का क्या हाल होता होगा, जो गुनाहों से हर वक़्त वाबस्ता रहते हैं।

एक हदीस में आया है कि जब आदमी कोई गुनाह करता है तो उस के दिल में एक स्याह दाग़ लग जाता है, अगर वह तौबा इस्तिग़फ़ार से उस को धो देता है तो वह साफ़ हो जाता है वरना वह लगा रहता है और जब दूसरा गुनाह करता है तो दूसरा दाग़ लग जाता है, इसी तरह होते होते सारा दिल स्याह हो जाता

है। इसी की तरफ़ कुरआन पाक की आयत:-

كَلَّا بَلْ سكة رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ٥

"तर्जुमा:- (बल्कि उनके बुरे आमाल का उनके दिलों पर ज़ंग जम गया) में इशारा किया गया।

एक हदीस में आया है कि हज्रे अस्वद और मकामे इब्राहीम जन्नत के याकूतों में से दो याकूत हैं। अगर मुश्रिकीन उसको न छूते तो जो भी बीमार ख़्वाह कैसी ही बीमारी होती, जब उसको छूता तो तन्दुरुस्त हो जाता। एक हदीस में है कि हज्रे अस्वद जन्नत के पत्थरों में से एक पत्थर है, अगर गुनाहों की नहूसत जो काफ़िरों के छूने से उससे वाबस्ता हो गयी न होती, तो जो अंधा, कोढ़ी या किसी और मर्ज़ का बीमार उसको छूता तो वह तन्दुरुस्त हो जाता।

(इत्तिहाफ़)

(٤) عن ابی هريرةؓ ان النبی صلى الله عليه وسلم قال وكل به سبعون ملكا يعنی الركن اليمانی فمن قال اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِی الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ قالوا آمين رواه ابن ماجه كذا فی المشكوة.

4. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि रूक्ने यमानी पर सत्तर फ़रिश्ते मुकर्रर हैं, जो शख़्स वहां जाकर यह दुआ पढ़े "अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलु कल् अफ्-व वल् आफ़िय-त, फ़िद्दुन्या, वल् आख़िर-ति रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह-स-न-तंव्-व फ़िल् आख़िर-ति ह-स-न-तंव् व क़िना अज़ाबन्नार॰" तो वे फ़रिश्ते उसकी दुआ पर आमीन कहते हैं (दुआ का तर्जुमा इस तरह है, ऐ अल्लाह मैं तुझसे माफ़ी का तालिब हूँ, और दोनों जहान में आफ़ियत मांगता हूँ। ऐ अल्लाह तू दुनिया में भी भलाई अता कर और आख़िरत में भी और जहन्नम के अज़ाब से हिफ़ाज़त फ़रमा)

फ़ायदा:- रूक्ने यमानी भी बा बरकत मक़ाम है।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ फ़रमाते हैं, कि हमने हज्रे अस्वद या रूक्ने यमानी का इस्तिलाम नर्मी या सख़्ती में नहीं छोड़ा, जब से हमने देखा कि हुज़ूर सल्ल॰ उनका इस्तिलाम किया करते थे, रूक्ने यमानी का इस्तिलाम यह है कि तवाफ़ करते हुए उस पर हाथों को फेरे।

एक हदीस में आया है कि हज्रे अस्वद और रूक्ने यमानी का मस करना (छूना) ख़ताओं को साक़ित करता है।

(कंज़)

एक हदीस में है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रूक्ने यमानी को भी बोसा दिया है।

(इत्तिहाफ़)

इस जगह इस बात का लिहाज़ रखना ज़रूरी है कि हज्रे अस्वद और रूक्ने यमानी का इस्तिलाम ऐसी तरह होना चाहिये जिसमें दूसरों को अज़ीयत न पहुँचे कि यह फेअ्ल मुस्तहब है और मुसलमान को ईज़ा (तक्लीफ़) पहुँचाना हराम है।

(٥) عن ابن عباسؓ يقول سمعت النبی صلی اللہ علیہ وسلم يقول الملتزم موضع يستجاب فيه الدعاء مادعا الله فيه عبد الا استجابها كذا فی المسلسلات للشاہ ولی اللہ الدہلوی وذكره الجزری فی الحصن مجملا.

5. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ से नक़ल करते हैं कि मुलतज़म ऐसी जगह है, जहां दुआ क़ुबूल होती है। किसी बंदे ने वहां ऐसी दुआ नहीं की, जो क़ुबूल न हुई हो।

फ़ायदा:- मुलतज़म हजरे अस्वद से लेकर काबे शरीफ़ के दरवाज़े तक का हिस्सा कहलाता है, ग़ालिबन इसी वजह से उसका नाम मुलतज़म है कि उसके मायने चिमटने की जगह के हैं।

अबू दाऊद में हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ से नक़ल किया गया कि उन्होंने इस जगह खड़े होकर अपने सीने और चेहरे को दीवार से चिमटा दिया और दोनों हाथों को दीवार पर फैला दिया और यह कहा कि मैंने इस तरह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को करते देखा। इस जगह के मुताल्लिक़ जो हदीस दुआ के क़ुबूल होने की नक़ल की जाती है।

मेरे हज़रत नव्वरल्लाहु मर्क़दहू से लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तक हर उस्ताज़े हदीस सुनाते वक़्त अपना ज़ाती तजुर्बा यह बताता है कि मैंने इस जगह दुआ की और वह क़ुबूल हुई और इस नापाक का भी ज़ाती तजुर्बा है।

हसन बसरी रह॰ ने जो ख़त मक्का वालों को लिखा है उसमें तहरीर

फ़रमाया है कि वहां पन्द्रह जगह दुआ क़ुबूल होती है –

1. तवाफ़ करते वक़्त, 2. मुलतज़म पर, 3. मीज़ाबे रहमत के पास, 4. काबा शरीफ़ के अंदर, 5. ज़मज़म के कुंए के पास, 6. सफ़ा, 7. और मर्वः पर, 8. और उनके दर्मियान दौड़ते हुए, 9. मक़ामे इब्राहीम के पास, 10. अरफ़ात के मैदान में, 11. मुज़दलिफ़ा में, 12. मिना में, 13., 14, 15, और तीनों शैतानों के कंकरियाँ मारते वक़्त। *(हिस्ने हसीन)*

और दुर्रे मंसूर की रिवायत में लिखा है कि मुलतज़म और मीज़ाबे रहमत के नीचे और रूक्ने यमानी के पास और सफ़ा और मर्वः पर और उनके दर्मियान और हज्रे अस्वद और मक़ामे इब्राहीम के दर्मियान और काबा शरीफ़ के अंदर और मिना, मुज़दलिफ़ा, अरफ़ात और तीनों शैतानों के पास।

हमारे हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ साहिब नव्वरल्लाहु मर्क़दहू ने अपनी तफ़सीर में इसी रिवायत को इख़्तियार किया है।

बाज़ उलमा ने इनके अलावा मताफ़ यानी तवाफ़ करने की जगह और बैतुल्लाह शरीफ़ पर नज़र पड़ते वक़्त और हतीम और हज्रे अस्वद और रूक्ने यमानी के दर्मियानी हिस्सा को भी ख़ुसूसियत से दुआ के क़ुबूल होने की जगह बताया है।

बाज़ उलमा से यह भी नक़ल किया गया है कि मुलतज़म रूक्ने यमानी से लेकर काबा के ग़रबी दरवाज़े तक का हिस्सा है जो बंद है, यह अगरचे मशहूर क़ौल के ख़िलाफ़ है, लेकिन बाज़ अकाबिर का क़ौल तो है ही। *(शर्हे लुबाब)*

(٦) عن انس بن مالکؓ قال قال رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم صلوٰۃ الرجل فی بیتہ بصلوٰۃ وصلوٰتہ فی مسجد القبائل بخمس وعشرین صلوٰۃ وصلوٰتہ فی المسجد الذی یجمع فیہ بخمسمائۃ صلوٰۃ وصلوٰتہ فی المسجد الاقصٰی بخمسین الف صلوٰۃ وصلوٰتہ فی مسجدی بخمسین الف صلوٰۃ وصلوٰتہ فی المسجد الحرام بمائۃ الف صلوٰۃ۔ راہ ابن ماجہ کذا فی المشکوٰۃ۔

6. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि आदमी अगर अपने घर पर नमाज़ पढ़े तो सिर्फ़ एक नमाज़ का सवाब उसको मिलता है और मुहल्ले की मस्जिद में पच्चीस गुना सवाब मिलता है और जामा मस्जिद में पांच सौ गुना सवाब ज़्यादा होता है और बैतुल

मक़्दिस की मस्जिद में पचास हज़ार नमाज़ों का सवाब है और मेरी मस्जिद में यानी मदीना पाक की मस्जिद में पचास हज़ार का सवाब है और मक्का मुकर्रमा की मस्जिद में एक लाख नमाज़ों का सवाब है।

फ़ायदा:- मुतअद्दद (बहुत सी) अहादीस में यह मज़्मून वारिद हुआ है कि मक्का मुकर्रमा की मस्जिद में एक लाख नमाज़ों का सवाब है।

हसन बसरी रह॰ फ़रमाते हैं कि मक्का में एक दिन का रोज़ा मक्का से बाहर एक लाख रोज़ों के बराबर है, वहां एक दिरम (जो तक़्रीबन चार आने का होता है, दिरम चांदी के एक सिक्के का नाम है जो 3½ माशे का होता है, चांदी की क़ीमत बढ़ जाने से दिरम की क़ीमत भी बढ़ गयी है) बाहर के लाख दिरम के बराबर है, और इसी तरह वहां की हर नेकी बाहर की एक लाख नेकी के बराबर है। *(इत्तिहाफ़)*

तीसरी फ़स्ल की पहली हदीस में खुद नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद गुज़र चुका है कि हरम की नेकी एक लाख के बराबर है।

बहुत सी अहादीस से यह मालूम होता है कि मस्जिदे नबवी का सवाब मस्जिदे अक़्सा से ज़ायद है, लेकिन इस हदीस में दोनों का सवाब पचास हज़ार आया है, इसलिये उलमा ने उन रिवायात की वजह से इस हदीस में यह तौजीह फ़रमायी है कि यहां हर मस्जिद का सवाब इस पहली मस्जिद के एतिबार से है यानी जामा मस्जिद का सवाब मस्जिदे क़बीला के सवाब से पांच सौ मर्तबा ज़ायद है। इस सूरत में जामा मस्जिद का सवाब बारह हज़ार पांच सौ हो गया और मस्जिदे अक़्सा का सवाब 62 करोड़ 50 लाख हो गया और मस्जिदे मदीना का 3 नील बारह ख़रब पचास अरब हुआ और मस्जिदे हराम का इक्तीस संघ पच्चीस पदम हुआ, इस सूरत में मस्जिदे मदीना का सवाब मस्जिदे अक़्सा से बहुत ज़्यादा हो गया, लेकिन आम रिवायात में मस्जिदे हराम का सवाब, जो एक लाख है, इससे बहुत ज़ायद हो गया और बेहतर है कि जब मस्जिद शरीफ़ में दाख़िल हो, एतिकाफ़ की नीयत कर लिया करे। अव्वल तो हर मस्जिद का यही हुक्म है कि जब नमाज़ के वास्ते किसी मस्जिद में भी दाख़िल हो तो एतिकाफ़ की नीयत कर लिया करे, ताकि इतनी देर एतिकाफ़ का सवाब मुस्तक़िल होता रहे और मस्जिदे हराम और मस्जिदे नबवी में तो ख़ास तौर से इसका ख़्याल रखे। इमाम नववी रह॰ ने लिखा है कि यह बहुत अहम चीज़ है, इसका बहुत एहतिमाम होना चाहिये।

(۷) عن عمرؓ قال لان اخطئ سبعين خطيئة بركية احب الى من ان اخطئ خطيئة واحدة بمكة كذا في الكنز عن الازرقي.

7. हज़रत उमर रज़ि॰ का इर्शाद है कि मक्का में एक ख़ता करूँ इससे यह बहुत ज़्यादा पसंद है कि (मक्का से बाहर) रकिय्यः में सत्तर ख़तायें करूँ।

फ़ायदा:- जैसा कि मक्का मुकर्रमा में नेकियों का सवाब बहुत ज़्यादा है, ऐसे ही वहां गुनाह का वबाल भी सख़्त है। इसी वजह से हज़रत उमर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मक्का से बाहर सत्तर लग़्ज़िशें मक्का की एक लग़्ज़िश से बेहतर हैं।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ का भी यही इर्शाद तीसरी फ़स्ल की पहली हदीस के ज़ैल में गुज़र चुका है और हज़रत उमर रज़ि॰ से कई मज़्मून इसके हम मायने ज़िक्र किये गये। इसी वजह से बाज़ अकाबिर मक्का मुकर्रमा में क़ियाम को पसंद न करते थे कि उसके अदब व एहतिराम का हक़ अदा करना मुश्किल है।

इमाम ग़ज़ाली रह॰ ने लिखा है कि वहां ख़ताओं का इर्तिकाब सख़्त मम्नूअ् है और क़रीब है कि अल्लाह जल्ल शानुहू के ग़ुस्से का मूजिब बन जाये। *(इत्तिहाफ़)*

वह्ब बिन वर्द रह॰ एक बुज़ुर्ग हैं, फ़रमाते हैं कि मैं एक दिन हतीम मे नमाज़ पढ़ रहा था कि मैंने काबे के पर्दों के अंदर से यह आवाज़ सुनी कि मैं अव्वलन अल्लाह जल्ल शानुहू से शिकायत करता हूँ और उसके बाद ऐ जिब्रील तुमसे शिकायत करता हूँ लोगों की कि वे मेरे गिर्द हंसी मज़ाक़ और लग्व बातों में मश्ग़ूल रहते हैं। अगर ये लोग अपनी हरकतों से बाज़ न आये, तो मैं ऐसा फटूँगा कि हर हर पत्थर मेरा जुदा जुदा हो जायेगा। *(एह्या)*

हज़रत उमर रज़ि॰ ने एक मर्तबा क़ुरैश के लोगों को मुख़ातब करके फ़रमाया कि तुमसे पहले क़बीला अमालिक़ा इस घर का मुतवल्ली और मुंतज़िम हुआ था। उन लोगों ने इसके एहतिराम में तसाहुल किया और ताज़ीम का हक़ अदा न किया तो अल्लाह जल्ल शानुहू ने उनको हलाक कर दिया। इसके बाद क़बीला बनू जुर्हुम इसके मुतवल्ली बने और जब उन लोगों ने इसकी बे हुरमती की तो अल्लाह जल्ल शानुहू ने उनको भी हलाक कर दिया, लिहाज़ा तुम लोग बहुत

ज़्यादा इसकी ताज़ीम किया करो, इसमें सुस्ती न करो। *(कंज़)*

मूसा बिन मुहम्मद रह॰ कहते हैं कि एक मर्तबा एक अजमी शख़्स तवाफ़ कर रहा था, नेक दीनदार आदमी था तवाफ़ करते हुए एक ख़ूबसूरत औरत की पाज़ेब की आवाज़, जो तवाफ़ कर रही थी, उसके कानों में पड़ी। यह शख़्स उस औरत को घूरने लगा, रूक्ने यमानी से एक हाथ निकला और इस ज़ोर से उसको थप्पड़ मारा की आंख निकल गयी और बैतुल्लाह शरीफ़ की दीवार से एक आवाज़ आयी कि हमारे घर का तवाफ़ करता है और हमारे ग़ैर को देखता है, यह थप्पड़ उस नज़र के बदले है और अगर आइंदा कोई और हरकत करेगा तो हम भी ज़्यादा बदला देंगे। *(मुसामरात)*

(۸) عن عائشةؓ قالت كنت احب ان ادخل البيت واصلى فيه فاخذ رسول الله صلى الله عليه وسلم بيدى فادخلنى فى الحجر فقال صلى فى الحجر اذا اردت دخول البيت فانما هو قطعة من البيت فان قومك اقتصروا حين بنوا الكعبة فاخرجوه من البيت رواه ابو داؤد.

8. हज़रत आइशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि मेरा दिल चाहता था कि मैं काबे शरीफ़ के अंदर जाऊँ और अंदर जाकर नमाज़ पढ़ूँ। हुज़ूर सल्ल॰ ने मेरा हाथ पकड़ कर हतीम में दाख़िल कर दिया और यह फ़रमाया कि जब तेरा काबे में दाख़िल होने को दिल चाहा करे तो यहां आकर नमाज़ पढ़ लिया कर। यह काबे ही का टुकड़ा है। तेरी क़ौम ने जब काबे की तामीर की तो इस हिस्से को (ख़र्च की कमी की वजह से) काबे से बाहर कर दिया था।

फ़ायदा:- काबा शरीफ़ के अंदर दाख़िल होना मुस्तहब है और वह भी क़ुबूलियते दुआ की ख़ास जगह है, जैसा कि हदीस नं॰ 5 के ज़ैल में गुज़रा, लेकिन रिश्वत देकर अंदर जाना जायज़ नहीं। क़ुरैश ने जब बैतुल्लाह को तामीर किया था, जैसा कि काबे की तामीरों के सिलसिला नं॰ 8 में गुज़र चुका है, तो उसके अंदर की सतह को बुलंद कर दिया था और दरवाज़ा बहुत बुलंद कर दिया था ताकि बग़ैर सीढ़ी लगाये आदमी अंदर न जा सके और यह अपने इख़्तियार की बात रहे कि जिसको चाहें दाख़िल होने दें, जिसको दिल चाहे दाख़िल न होने दें। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तमन्ना और ख़्वाहिश थी

कि काबे की तामीर को साबिक़ा तर्ज़ के मुवाफ़िक़ कर दिया जाये, चुनांचे हुज़ूर सल्ल॰ ने हज़रत आइशा रज़ि॰ से फ़रमाया कि अरब नौ मुस्लिम हैं, यानी मुबादा काबे के गिराने से उनके जज़्बात में इश्तिआल पैदा हो। अगर यह बात न होती तो मैं काबे को अज़ सरे नौ तामीर करता और हतीम का हिस्सा अंदर दाख़िल कर देता और उसके दो दरवाज़े कर देता कि एक से लोग दाख़िल हों और दूसरे से बाहर निकलें और दरवाज़े को ज़मीन से मिला देता। तेरी क़ौम ने इसलिये इसके दरवाज़े को बुलंद किया ताकि जिसको वे पसंद करें, वह दाख़िल हो सके।

दूसरी हदीस में इर्शाद है कि हज़रत आइशा रज़ि॰ से हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि बैतुल्लाह के बारे में तेरी क़ौम ने कोताही की। अगर वे कुफ़्र के ज़माने से क़रीब न होते तो मैं उस हिस्से को जिसको उन्होंने बाहर निकाल दिया, बैतुल्लाह के अंदर दाख़िल कर देता अगर मेरे बाद काबा शरीफ़ के बनाने की नौबत आयी तो आ, मैं तुझे दिखा दूं कि वह कितना हिस्सा है जिसको उन्होंने बाहर निकाल दिया। इसके बाद हुज़ूर सल्ल॰ ने तक़रीबन सात हाथ के बक़द्र हिस्सा दिखाया।

यह और इस क़िस्म की दूसरी रिवायात की बिना पर जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि॰ ने अपने ज़माने में काबे शरीफ़ को बनाया तो हुज़ूर सल्ल॰ की ख़्वाहिश के मुवाफ़िक़ उसकी तामीर में इस्लाहात कर दीं और हतीम के हिस्से को अंदर दाख़िल कर दिया, लेकिन इसके बाद अब्दुल मलिक के ज़माने में हज्जाज ने फिर उसको वैसे ही कर दिया, जैसा कि हुज़ूर सल्ल॰ के ज़माने में था, उसकी नीयत तो जो भी चाहे हो, लेकिन यह अल्लाह जल्ल शानुहू का इनाम हुआ कि यह हिस्सा तामीर से बाहर हो गया, जिसकी वजह से अब काबे शरीफ़ के अंदर दाख़िल होना हर शख़्स के लिये आसान हो गया कि इस हिस्से पर न तामीर है, न रिश्वत की ज़रूरत है। जिसका जब दिल चाहे, वहां जाकर नमाज़ पढ़े, दुआ मांगे, कि यह काबे के अंदर के हिस्से के हुक्म में है, इसलिये हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत आइशा रज़ि॰ से जब उन्होंने अंदर दाख़िले की तमन्ना की तो फ़रमाया कि यहां खड़ी होकर नमाज़ पढ़ ले, औरतों के लिये बिलख़ुसूस अंदर जाने में बहुत सी मुश्किलात हैं, उन के लिये यह हिस्सा ख़ास तौर से ग़नीमत और अल्लाह का एहसान है। काबे के अंदर दाख़िल होना भी अगरचे मुस्तहब है और बेहतर है लेकिन इसके आदाब और भी ज़्यादा हैं। उलमा ने लिखा है कि अगर कोई शख़्स दाख़िल हो तो निहायत वक़ार व अज़्मत

से दाख़िल हो। बेहतर यह है कि मोज़े पहन कर दाख़िल न हो, बल्कि उनको निकाल दे और दाख़िले से पहले ग़ुस्ल करे और निहायत ख़ुशूअ् ख़ुज़ूअ् के साथ रोता हुआ दाख़िल हो।

एक बुज़ुर्ग से किसी ने पूछा कि आप काबे के अंदर दाख़िल हुए थे? उन्होंने फ़रमाया कि ये पांव इस क़ाबिल भी नहीं कि मेरे पांव रब के घर के चारों तरफ़ फिरें, तो मैं उनको इस क़ाबिल कहां समझता हूं कि इस पाक घर के अंदर उनको दाख़िल करूं, मुझे इनका हाल मालूम है, कि ये कहां कहां चले फिरे हैं और किस किस बुरे इरादे से चले हैं। *(इत्तिहाफ़)*

काबा किस मुंह से जाओगे, ग़ालिब
शर्म तुमको मगर नहीं आती।।

ब ज़मीं चूं सज्दा कर्दम ज़ ज़मीन निदा बरामद,
कि मुरा ख़राब कर दी तू ब सिज्दा-ए-रियाई॥

ब तवाफ़े काबा रफ़्तम ब हरम रहम नदादंद,
कि बरूने दर चे कर दी कि दरूने ख़ाना आई॥

कहते हैं कि मैंने जब ज़मीन पर सज्दा किया, तो ज़मीन से यह आवाज़ आयी कि तूने इस रिया के सज्दे से मुझे क्यों ख़राब किया, और जब मैं काबे को गया तो मुझे अंदर दाख़िल न होने दिया और यह आवाज़ आयी कि दरवाज़े से बाहर क्या गुल खिलाये जो अंदर आने की उमंग पैदा हुई।

उलमा ने लिखा है कि काबा शरीफ़ में दाख़िल होने वाले को दो चीज़ से ख़ुसूसियत से बचना चाहिये, जिसको गुमराह लोगों ने घड़ रखा है, एक दरवाज़े के सामने बिलमुक़ाबिल दीवार में कड़ा है, जिसको जाहिल लोग उर्वतुल वुस्क़ा कहते हैं और यह समझते हैं कि जो उसको पकड़ ले, उसने उर्वतुल वुस्क़ा को पकड़ लिया। यह महज़ जहालत है। दूसरे काबा शरीफ़ के दर्मियान में एक मीख़ है जिसको अहमक़ सुर्रतुद्दुन्या (दुनिया की नाफ़) कहते हैं, और अपनी नाफ़ उस पर रगड़ते हैं। ये दोनों बातें महज़ लग्व और हिमाक़त हैं, इनकी कोई असल नहीं। *(मनासिके नववी व इत्तिहाफ़)*

(٩) عن جابرؓ يقول سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول ماء زمزم لما شرب له رواه ابن ماجه وبسط صاحب الاتحاف في تخريجه وقال

شیخنا الشاہ عبد الغنی ھذا الحدیث مشہور علی الالسنۃ کثیرًا واختلف الحفاظ فیہ فمنہم من صححہ ومنہم من حسنہ ومنہم من ضعفہ والمعتمد الاول. اھ. وقال ابن حجر فی شرح مناسك النووی قد کثر کلام المحدثین فی ھذا الحدیث والذی استقر علیہ امر محققیھم انہ حسن او صحیح وقول الذھبی انہ باطل وابن الجوزی انہ موضوع مردود. اھ

9. नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि ज़मज़म का पानी जिस नीयत से पिया जाये, वही फ़ायदा उससे हासिल होता है।

फ़ायदा:- एक दूसरी हदीस में आया है कि अगर तू उसको प्यास बुझाने के वास्ते पिये तो उसका काम दे और अगर खाने की जगह पेट भरने के लिये पिये तो उसका काम दे और अगर किसी मरज़ से सेहत की नीयत से पिये तो उसका काम दे। यह हज़रत जिब्रील अलैहि॰ की ख़िदमत है और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की सबील है। *(इत्तिहाफ़)*

हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम की ख़िदमत का मतलब यह है कि उनकी सई से यह चश्मा ज़मीन से उबला था, जिसका क़िस्सा मशहूर व मारूफ़ है।

हज़रत सुफ़ियान बिन उयैना रह॰ जो मशहूर मुहद्दिस हैं, उनके पास एक शख़्स आये और उनसे अर्ज़ किया कि आप यह कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि ज़मज़म का पानी जिस काम के लिये पिया जाये, उसी काम के लिये है, क्या यह हदीस सही है? उन्होंने कहा कि सही है तो उन्होंने अर्ज़ किया कि मैंने इसलिये पिया ताकि आप दो सौ हदीसें मुझे सुनायें, उन्होंने फ़रमाया बैठ जाओ और दो सौ हदीसें उनको सुना दीं।

इब्ने उयैना रह॰ ने यह भी कहा कि हज़रत उमर रज़ि॰ ने ज़मज़म का पानी पीते हुए कहा कि, या अल्लाह, मैं क़ियामत के दिन की प्यास बुझाने के लिये पीता हूँ। *(कंज़, इत्तिहाफ़)*

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज्जतुल विदाअ् में ज़मज़म का पानी ख़ूब पिया और यह इर्शाद फ़रमाया कि मेरा दिल चाहता है कि ख़ुद डोल भर कर पियूँ, मगर फिर सब लोग ख़ुद भरने लगेंगे, इसलिये नहीं भरता।

बाज़ रिवायात में आया है कि हुज़ूर सल्ल॰ ने खुद भरा। मुम्किन है कि किसी वक़्त खुद भरा हो और दूसरे वक़्त मज्मे की वजह से यह उज़्र फ़रमा दिया हो।

एक हदीस में आया है कि हुज़ूर सल्ल॰ ने हज़रत अब्बास रज़ि॰ से ज़मज़म का पानी तलब किया। उन्होंने अर्ज़ किया इस पानी में (जो कोई हौज़ की क़िस्म से पानी के मुज्तमअ् होने की जगह थी) सब लोग हाथ डाल देते हैं। घर में साफ़ पानी रखा हुआ है, उसमें से लाऊँ? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया नहीं, जिसमें से सब पीते हैं उसी में से पिलाओ। उन्होंने पेश किया। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पिया और आंखों पर डाला, फिर दोबारा लेकर पिया और अपने ऊपर दोबारा डाला। *(कंज़)*

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल किया गया कि हममें और मुनाफ़िक़ीन में यह फ़र्क़ है कि वे ज़मज़म के पानी को खूब सैराब होकर नहीं पीते, (मामूली सा पीते हैं)।

एक और हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल॰ ने एक मर्तबा डोल भरने का हुक्म फ़रमाया, डोल भर कर कुंए के किनारे पर रखा गया। हुज़ूर सल्ल॰ ने उस डोल को हाथ से पकड़ कर बिस्मिल्लाह कह कर देर तक पिया, फिर फ़रमाया, अलहम्दु लिल्लाह, इसके बाद फिर बिस्मिल्लाह कह कर देर तक पिया, फिर फ़रमाया अल हम्दु लिल्लाह, फिर इर्शाद फ़रमाया कि हममें और मुनाफ़िक़ों में यही फ़र्क़ है कि वे खूब सैराब होकर नहीं पीते।

एक हदीस में आया है कि हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि नेक लोगों के मुसल्ले पर नमाज़ पढ़ा करो और नेक लोगों के पानी से पानी पिया करो। सहाबा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया कि नेक लोगों का मुसल्ला क्या चीज़ है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि मीज़ाबे रहमत के नीचे। फिर सहाबा रज़ि॰ ने अर्ज़ किया कि नेक लोगों का पानी क्या है? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि ज़मज़म। *(इत्तिहाफ़)*

उम्मे मअ्बद रज़ि॰ कहती हैं कि मेरे खेमे के पास को एक ग़ुलाम गुज़रे जिनके साथ दो मश्कीजे पानी के थे, मैंने पूछा ये मश्कीज़े कैसे हैं? उन्होंने कहा कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वालानामा मेरे सरदार के पास पहुँचा कि हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में ज़मज़म का पानी भेजा जाये, मैं बहुत उज्लत से ले जाना चाहता हूँ ताकि रास्ते में खुश्क न हो जाये। *(कंज़)*

हज़रत आइशा रज़ि॰ ज़मज़म का पानी अपने साथ ले जाती थीं, और यह नक़ल करती हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ भी ले जाया करते थे।

एक हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल॰ साथ ले जाया करते थे और बीमारों पर छिड़कते थे और हज़रत हसन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा की तह्नीक के वक़्त उनको दिया था। (शर्ह लुबाब)

बच्चे के पैदा होने के बाद सबसे पहले उस के मुंह में कुछ डालने को तह्नीक कहते हैं।

और इससे बढ़ कर क्या फ़ज़ीलत होगी कि शबे मेराज में हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम आसमान से बुराक़ लाये और जन्नत से सोने का तश्त लाये लेकिन क़ल्बे अत्हर को धोने के लिये बजाये जन्नत के पानी के ज़मज़म का पानी इस्तेमाल किया गया, हालांकि हज़रत जिब्रील अलैहिस्लाम जब बहुत सी चीज़ें वहां से लाये तो जन्नत का पानी लाने में क्या इश्काल था।

हज़रत इब्ने अब्बस रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब ज़मज़म का पानी पीते तो यह दुआ पढ़ते -

اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْئَلُكَ عِلْمًا نَّافِعًا وَّرِزْقًا وَّاسِعًا وَّشِفَاءً مِّنْ كُلِّ دَاءٍ

"अल्ला हुम्-म इन्नी अस्अलु-क इल्मन् नाफ़िअंव् व रिज़्क़व् वासिअंव् व शिफ़ाअम् मिन् कुल्लि दाइन्॰"

(ऐ अल्लाह, मैं तुझसे ऐसा इल्म मांगता हूँ, जो नफ़ा देने वाला हो और वसीअ् रिज़्क़ और हर बीमारी से शिफ़ा चाहता हूँ)

(١٠) عن ابن عباس ؓ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لمكة ماطيبك من بلد واحبك الى ولولا ان قومى اخرجونى منك ماسكنت غيرك رواه الترمذى وقال حديث حسن غريب اسنادًا كذا فى المشكوٰة وفى الاخرى له والله انك لخير ارض الله واحب ارض الله الى الله الحديث.

10. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्के को ख़िताब फ़रमा कर इर्शाद फ़रमाया कि तू कितना बेहतर शहर है और मुझको कितना ज़्यादा महबूब है। अगर मेरी क़ौम मुझे न निकालती तो, तेरे सिवा किसी दूसरी जगह क़ियाम न करता।

फ़ायदाः- इस हदीस की वजह से, नीज़ उन अहादीस की वजह से जिन में मक्का की हर नेकी का सवाब एक लाख आया है, एक बड़ी जमाअत का मज़हब यह है कि मक्का मुकर्रमा सारे शहरों से अफ़ज़ल है और वहां क़ियाम करना मुस्तहब और अफ़ज़ल है और ज़ाहिर है कि जब एक एक नमाज़ एक लाख की शुमार होती हो तो फिर कौन है जिसको यह मर्ग़ूब न हो। लेकिन इसके बावजूद बड़े अकाबिर वहां के क़ियाम को पसंद न फ़रमाते थे।

मुल्ला अली क़ारी रह० ने लिखा है कि मक्का मुकर्रमा का क़ियाम साहिबैन रह० के नज़दीक मुस्तहब है और इसी पर फ़तवा है और यही बाज़ शाफ़अिय्यः और बाज़ हनाबिला का मुख़्तार है। लेकिन इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रहि० और इमाम मालिक रहि० वहां के मुस्तक़िल क़ियाम को मक्रूह फ़रमाते थे और एक बड़ी जमाअत का मुहतात लोगों में से यही मज़हब है, मुबादा वहां रह कर आदमी को वहां से कोई गरानी और मलाल पैदा हो या उसके एहतिराम में किसी क़िस्म की कमी हो जाये या वहां रह कर आदमी से किसी क़िस्म का गुनाह सादिर हो जाये जैसा कि वहां नेकियों का सवाब कहीं ज़्यादा है, ऐसे ही वहां रह कर गुनाह करने का वबाल भी बहुत सख़्त है, लेकिन अल्लाह के वे मुख़्लिस बंदे जो गुनाहों से मुहतरिज हों उनके लिये अफ़्ज़लियत में क्या कलाम है, लेकिन वह इतनी क़लील मिक़्दार है कि उन पर हुक्म लगाना भी ऐसा है जैसा आम मख़्लूक़ में बादशाह लेकिन पारसाई का झूठा दावा करने वालों का एतिबार नहीं कि वैसे तो हर शख़्स अपने को यही कहता है कि मैं वहां रहने के शरायत पूरे कर सकता हूँ, दावा बहुत सह्ल है:-

बहुत मुश्किल है बचना बादा-ए-गुलगों से ख़लवत में,
बहुत आसान है यारों में मआज़ल्लाह कह देना॥

मुल्ला अली क़ारी रह० फ़रमाते हैं कि हज़रत इमामे आज़म रह० ने अपने ज़माने के लोगों के हालात के लिहाज़ से कराहत और नापसंदीदगी का इज़्हार फ़रमाया। अगर वे इन हालात को देखते, जिनको हम अपने ज़माने में देख रहे हैं तो वे वहां के क़ियाम के हराम होने का फ़तवा देते। यह मुल्ला अली क़ारी रह० मशाहीरे उलमा में हैं। 1014 हि० में वफ़ात पायी है। जब यह अपने ज़माने का यह हाल फ़रमा रहे हैं तो आज चौदहवीं सदी के आख़िर का जो हाल होगा, वह अज़्हर मिनश्शम्स है।

इमाम ग़ज़ाली रह॰ फ़रमाते हैं कि जिन मुहतात उलमा ने मक्का के क़ियाम को मकरूह बताया है, उसकी तीन वजह हैं -

1. अव्वल यह कि ऐसा न हो कि वहां के क़ियाम से वह ज़ौक़ शौक़ और तड़प और बेक़रारी जो काबा शरीफ़ के साथ होना चाहिए, वह कम हो जाये।

2. दूसरे यह कि इससे रवानगी के वक़्त जो फ़िराक़ की तड़प और दोबारा लौटने का जज़्बा पैदा होगा, वह वहां रहने में हासिल नहीं होता, इसी लिये बुज़ुर्गों का इर्शाद है कि तू किसी दूसरे शहर में रहे और तेरा दिल मक्का मुकर्रमा में अटका रहे, यह बेहतर है इससे कि तू मक्का में रहे और तेरे दिल में किसी दूसरी जगह का दाअिया पेश आये, और बाज़ बुज़ुर्गों से नक़ल किया गया कि बहुत से लोग ख़ुरासान में रहने वाले मक्का से ताल्लुक़ के एतिबार से बाज़ उन लोगों से क़रीब हैं जो तवाफ़ कर रहे हों, बल्कि बाज़ लोग तो ऐसे होते हैं कि ख़ुद काबा उनकी ज़ियारत को जाता है।

3. तीसरी वजह यह है कि मबादा वहां रह कर कोई गुनाह सादिर हो जाये कि यह सख़्त ख़तरनाक है और अल्लाह जल्ल शानुहू के ग़ुस्से का मूजिब है। फ़क़त, वैसे तो मक्का मुकर्रमा सारा ही बा बरकत है। उसकी हर जगह हर दर व दीवार, हर पत्थर और रेत का ज़र्रा बा बरकत है। लेकिन चंद मुक़ामात और भी ज़्यादा ख़ुसूसियत रखते हैं। जिनमें से बाज़ इस फ़स्ल में गुज़र चुके हैं, मुस्तक़िल अहादीस उनके फ़ज़ाइल में लिखी जा चुकी हैं।

1. इनके अलावा हज़रत ख़दीजा रज़ि॰ का दौलतकदा,जहां हज़रत फ़ातिम तुज़्ज़हरा रज़ि॰ पैदा हुईं और हज़रत इब्राहीम रज़ि॰ के अलावा सब औलाद यहीं पैदा हुई, हिजरत तक हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का क़ियाम इसी मकान में रहा।

उलमा ने लिखा है कि मस्जिदे हराम के बाद मक्का के तमाम मकानात में यह मकान अफ़ज़ल है।

2. दूसरे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैदाइश की जगह जो मौलदे नबी के नाम से मशहूर है।

3. तीसरे हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ का मकान, जो ज़ोक़्क़ाक़े सव्वाग़ीन (ज़रगरों की गली) में है, उसको दारूलहिजरत भी कहते हैं। इसलिये कि हिजरत की इब्तिदा इसी मकान से हुई। हिजरत से क़ब्ल हुज़ूर सल्ल॰ रोज़ाना

यहां तशरीफ़ लाया करते थे। वहां दो पत्थर थे, एक का नाम मुतकल्लिम है, उसने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सलाम किया था, दूसरा मुत्तका जिस पर हुज़ूर सल्ल॰ टेक लगा कर बैठते थे।

4. मौलदे अली, हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू की पैदाइश की जगह,

5. दारे अरक़म जो दारे खेज़रान से मशहूर है, सफ़ा पहाड़ के क़रीब है, इसमें हज़रत उमर रज़ि॰ इस्लाम लाये थे और चालीस का अदद आप के ईमान लाने पर पूरा हुआ था और क़ुरआन पाक की आयत:-

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ٥

इस पर नाज़िल हुई थी। इसी में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इब्तिदा-ए-इस्लाम में मख़्फ़ी रहा करते थे।

6. जबले सौर का ग़ार, जिसमें हिजरत के वक़्त हुज़ूरे अक़्दस सल्ल॰ और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ पोशीदा हुए थे, क़ुरआन पाक में "सानियस्नैन॰ इज़ हुमा फ़िल ग़ार" में इसी ग़ार का ज़िक्र है।

7. जबले हिरा का ग़ार जिसमें हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नुबुव्वत से पहले कई कई दिन तक इबादत किया करते और तंहाई इख़्तियार फ़रमया करते थे और इसी में सबसे पहले आप पर "इक़रा' नाज़िल हुई।

8. मस्जिदुर्राय:, मक्का में मुअल्ला की तरफ़ है, हुज़ूर सल्ल॰ ने उसमें नमाज़ पढ़ी है।

9. मस्जिदुल जिन्न, जिस जगह जिन्नात का इज्तिमाअ् हुआ और हुज़ूर सल्ल॰ हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि॰ के साथ उस जगह तशरीफ़ ले गये और हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि॰ को एक जगह बैठाकर ख़ुद आगे तशरीफ़ ले गये और जिन्नात को तालीम फ़रमायी, क़ुरआन पाक सुनाया।

10. मस्जिदुश्शजर: जो मस्जिदे जिन्न के मुक़ाबिल है, इस जगह एक दरख़्त था, जिसको हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बुलाया, वह ज़मीन को चीरता हुआ हाज़िरे ख़िदमत हो गया। फिर हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि वापस चले जाओ, वह अपनी जगह वापस चला गया।

11. मस्जिदुल ग़नम, जिसको मस्जिदुल इजाब: भी कहते हैं। इस जगह

हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़त्हे मक्का में बैअत ली थी।

12. मस्जिदे अज्याद।

13. मस्जिदे जबल, अबू क़ुबैस, जो हरम शरीफ़ से नज़र आती है, लेकिन इस जगह बकरी की सिरी खाने के मुताल्लिक़ जो रिवायत मशहूर है वह ग़लत है।

14. मस्जिदे तुवा, जो तनअीम के रास्ते में है। हुज़ूर सल्ल॰ की जब उमरः या हज के लिये तशरीफ़आवरी हुई तो इस जगह क़ियाम फ़रमाया।

15. मस्जिदे आइशा, तनअीम पर जहां उमरे का एहराम बांधा जाता है।

16. मस्जिदुल उक़बा, मिना के क़रीब जहां अंसार ने हिजरत से क़ब्ल बैअत की थी, यह मस्जिद मक्का से मिना जाते हुए बायें हाथ पर रास्ते से अलाहिदः को है।

17. मस्जिदुल जिअ़र्राना, जहां हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़त्हे मक्का के बाद जब तायफ़ से लौट रहे थे, एहराम बांध था।

18. मस्जिदुल कब्श, जिसको मन्हरे इब्राहीम भी कहते हैं, यहां हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने हज़रत इस्माईल अलैहि॰ को ज़िब्ह किया था।

19. मस्जिदुल ख़ैफ़, मिना में मशहूर मस्जिद है, जिसमें कहते हैं कि सत्तर नबी वहां मदफ़ून हैं।

20. ग़ारे मुर्सलात, जो मस्जिदे ख़ैफ़ के क़रीब है, सूरः वल मुर्सलात वहां नाज़िल हुई।

21. जन्नतुल, मुअल्ला, मक्का, मुकर्रमा का मक़्बरा (जहां हज़रत ख़दीजा रज़ि॰ की क़ब्र है और अहादीस में इस मक़्बरे की फ़ज़ीलत भी आयी है, इनके अलावा और भी बहुत से मुतबर्रक मक़ामात हैं और मक्का मुकर्रमा में कौन सी जगह ऐसी होगी, जहां हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ के क़दमे मुबारक न पड़े हों, लेकिन मुल्ला अली क़ारी रह॰ ने इन मवाज़ेअ् (जगहों) को ख़ास तौर से ज़िक्र किया है।)

सातवीं फ़स्ल

उमरः के बयान में

जैसा कि नमाज़ में कुछ तो फ़र्ज़ नमाज़े हैं, जो पांच मख़्सूस औक़ात में फ़र्ज़ की गईं। और कुछ नवाफ़िल हैं, जो जां निसार क़द्रदानों के लिये इसलिये मशरूअ की गयीं कि जब उनका दरबार की हाज़िरी को दिल चाहे, हाज़िर हो जायें। इसी तहर से बैतुल्लाह शरीफ़ की ज़ियारत में एक तो हज फ़र्ज़ है, जो मख़्सूस वक़्त में होता है। दूसरा उमरः है, जो साल भर में बजुज़ पांच दिन के, यानी नवीं ज़िलहिज्जा से 13 तक तो उमरः करना मकरूह है कि यह हज का मख़्सूस वक़्त है। इसके अलावा जिस दिन जितने दिल चाहे उमरे करे। यह भी अल्लाह का फ़ज़्ले अज़ीम है कि मुश्ताक़ लोगों की हाज़िरी के वास्ते हर वक़्त हाज़िरी की इजाज़त फ़रमा दी।

उमरः अगरचे इमाम अबू हनीफ़ा और इमाम मालिक के नज़दीक सुन्नत है लेकिन इमाम शाफ़ई और इमाम अहमद के नज़दीक वाजिब है, इसलिये कम अज़ कम एक उमरः आदमी को ज़रूर कर लेना चाहिये कि दो इमामों के नज़दीक यह मुस्तक़िल वाज़िब है और हनफ़िय्यः के नज़दीक भी एक उमरः कम अज़ कम करना सुन्नते मुअक्कदा है, मशहूर क़ौल के मुवाफ़िक़, वरना बाज़ उलमा-ए-हनफ़िय्यः ने इसको वाजिब कहा है और बाज़ ने फ़र्ज़े किफ़ाया, इसलिये एक उमरः तो जो शख़्स जाने की ताक़त रखता हो या वहां पहुँच जाये, वह ज़रूर ही कर ले। क़ुरआन पाक में भी उसका हुक्म फ़रमाया है:-

وَأَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ (بقره)

"और पूरा पूरा अदा किया करो, हज और उमरे को, ख़ालिस अल्लाह जल्ल शानुहू के वास्ते।"

फ़ायदाः- एक हदीस में आया है कि हज और उमरे का पूरा पूरा अदा करना यह है कि अपने घर से हज का या उमरे का एहराम बांध कर चले। (दुर्रे मंसूर)

अपने घर से एहराम बांध कर चलना अफ़ज़ल है। मुतअद्दद रिवायात में इसकी फ़ज़ीलत आयी है, लेकिन चूंकि एहराम में बहुत सी चीज़ों की एहतियात ज़रूरी है और ज्यादा दिन तक एहराम बांधने में बसा औक़ात ऐसी चीज़ें सादिर हो जाती हैं, जो एहराम के मनाफ़ी हैं, इसलिये उलमा एहतियात इसमें बताते हैं कि मीक़ात ही से एहराम बांधा जाये कि गुनाह से बचना फ़ज़ीलत हासिल करने से ज्यादा अहम और मुक़द्दम है। अहादीस में भी उमरे के फ़ज़ाइल बहुत सी रिवायात में आये हैं उनमें से बाज़ पहली फ़स्ल में हज के साथ गुज़र चुके हैं, जैसा कि हदीस नं॰ 11, 14, 15 में गुज़रा। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हिजरत के बाद हज तो एक ही मर्तबा किया है, लेकिन उमरे चार किये, जिनमें से एक पूरा न हो सका, कि मुश्रिकीन ने मक्का में दाख़िल न होने दिया और इस पर फ़ैसला हुआ कि इस साल न करें, दूसरे साल आकर कर लें और तीन उमरे पूरे किये।

अहादीस

(۱) عن عمرو بن عبسةؓ قال قال رسول اللّٰه صلى اللّٰه عليه وسلم افضل الاعمال حجة مبرورة اوعمرة مبرورة اخرجه احمد و الطبرانی کذا فی الدر.

1. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि अफ़ज़ल तरीन अमल नेकी वाला हज या नेकी वाला उमरः है।

फ़ायदाः- पहली फ़स्ल की हदीस नं॰ 2 में नेकी वाले हज का बयान गुज़र चुका है, वही मतलब नेकी वाले उमरे का है।

एक हदीस में आया है कि उमरः छोटा हज है। (दुर्रे मंसूर)

यानी जो बरकात व समरात और फ़ज़ाइल हज के हैं वही सब, कुछ कमी के साथ उमरः के हैं।

(۲) عن ابی هريرةؓ قال قال رسول اللّٰه صلى اللّٰه عليه وسلم العمرة الى العمرة كفارة لما بينهما متفق عليه كذا فى المشكوة.

2. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि एक उमरः दूसरे उमरः तक दर्मियानी हिस्से के लिये कफ़्फ़ारा है।

फ़ायदाः– यानी एक उमरः करने के बाद दूसरे उमरे तक के दर्मियान में जिस क़दर लग़्ज़िशें हुई होंगी, वे माफ़ हो जायेंगी।

एक और हदीस में आया है कि एक उमरा दूसरे उमरे तक कफ़्फ़ारा है, दर्मियान के गुनाहों का और ख़ताओं का। (कंज़)

और भी मुतअद्दद रिवायात में यह मज़्मून वारिद हुआ है।

(۳) عن ابن عباس قال جاءت ام سليم الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقالت حج ابو طلحة وابنه وتركاني فقال يا ام سليم عمرة فى رمضان تعدل حجة معي رواه ابن حبان فى صحيحه كذا فى الترغيب.

3. हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ की खिदमत में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया कि (मेरे ख़ाविंद) अबू तल्हा और उनके बेटे तो हज को चले गये और मुझे छोड़ गये। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि रमज़ान में उमरः करना मेरे साथ हज करने के बराबर है।

फ़ायदाः– हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि रमज़ानुल मुबारक में उमरः करना हज के बराबर फ़ज़ीलत रखता है, मुख़्तलिफ़ अहादीस में वारिद हुआ है।

एक हदीस में आया है कि जब हुज़ूर सल्ल॰ हज को तशरीफ़ ले जाने लगे, तो एक सहाबी औरत ने अपने ख़ाविंद से कहा कि मुझे भी हुज़ूरे अक़्दस सल्ल॰ के साथ हज करा दो। उन्होंने फ़रमाया कि मेरे पास कोई सवारी नहीं। बीवी ने कहा कि तुम्हारा फ़लाँ ऊँट है? ख़ाविंद ने फ़रमाया कि वह तो मैं अल्लाह के रास्ते में वक़्फ़ कर चुका हूँ। मजबूरन वह बेचारी रह गयी। जब हुज़ूर सल्ल॰ हज से फ़ारिग़ होकर तशरीफ़ लाये तो ख़ाविंद ने यह क़िस्सा हुज़ूर सल्ल॰ से अर्ज़ किया। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि हज भी तो अल्लाह ही का रास्ता था, अगर उस ऊँट पर हज करा देते, तो कुछ मुज़ायक़ा न था। फिर ख़ाविंद ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल॰, मेरी अहलिया ने सलाम अर्ज़ किया है और यह दर्याफ़्त किया है कि आपके साथ हज न करने की तलाफ़ी अब क्या हो सकती है? हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि मेरी तरफ़ से उनको सलाम कह देना और यह कह देना कि रमज़ानुल मुबारक में उमरा करना मेरे साथ हज करने के बराबर है।

(अबू दाऊद)

इसी क़िस्म का क़िस्सा हज़रत उम्मे सिनान रज़ि॰ के साथ भी पेश आया और उम्मे मअ्क़िल रज़ि॰ के साथ भी और उम्मे तुलैक़ के साथ भी और उम्मे हुशैम रज़ि॰ के साथ भी कि ये सब हज का इरादा फ़रमाती रहीं, लेकिन किसी न किसी उज़्र की वजह से न जा सकीं, तो हुज़ूर सल्ल॰ ने हर एक से यही इर्शाद फ़रमाया कि रमज़ानुल मुबारक का उमरा हज़ करने के बराबर है।

हाफ़िज़ ने फ़त्हुल बारी में इनकी रिवायात ज़िक्र फ़रमायी हैं कि उमरे का हज के बराबर होने का मतलब यह नहीं है कि उस उमरे से हज्जे फ़र्ज़ पूरा हो जायेगा। यह इज्माई मसअला है, इसमें किसी को भी ख़िलाफ़ नहीं है कि फ़र्ज़ हज इससे अदा नहीं होता, बल्कि मतलब यह है कि उमरे के साथ रमज़ानुल मुबारक की फ़ज़ीलत मिल जाने की वजह से हज के सवाब के बराबर हो जाता है।

इब्ने जौज़ी रह॰ कहते हैं कि बसा औक़ात वक़्त की फ़ज़ीलत की वजह से अमल का सवाब बढ़ जाता है, जैसा कि ख़ुलूसे नीयत और इख़्लास की वजह से बढ़ जाता है। *(फ़त्हुलबारी)*

(٤) عن ابی ھریرۃ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم الحاج والعمار وفد اللہ ان دعوہ اجابھم وان استغفروہ غفرلھم رواہ ابن ماجہ کذافی المشکوۃ.

4. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि हज करने वाले और उमरा करने वाले अल्लाह जल्ल शानुहू का वफ़्द हैं। अगर वे लोग दुआ मांगें तो अल्लाह जल्ल शानुहू उनकी दुआ क़ुबूल करता है और अगर वे मग़्फ़िरत चाहें तो उनके गुनाहों की मग़्फ़िरत फ़रमाता है।

फ़ायदा:- जैसा कि बहुत से आदमी एक जमाअत बनाकर बतौरे वफ़्द के कहीं सरकारों, दरबारों में जाते हैं, ऐसे ही ये लोग गोया वफ़्द के तौर पर हक़ तआला शानुहू की बारगाह में हाज़िर होते हैं और जैसा कि वफ़ूद का इकराम व एज़ाज़ होता है, ऐसे ही उनका भी अल्लाह जल्ल शानुहू के यहां इकराम होता है।

एक और हदीस में आया है कि अल्लाह का वफ़्द तीन क़िस्म के लोग हैं:- 1. एक मुजाहिद, 2. दूसरे हाजी, 3. तीसरे उमरा करने वाले। *(मिश्कात)*

एक और हदीस में आया है कि हाजी और उमरः करने वाले अल्लाह जल्ल शानुहू का वफ़्द हैं। जब दुआ करते हैं तो क़ुबूल होती है और अल्लाह से जो मांगते हैं। उनका सवाल पूरा किया जाता है। *(तर्ग़ीब अन जाबिर)*

एक और हदीस में है कि हज करने वाले और उमरा करने वाले अल्लाह का वफ़्द हैं, जो मांगते हैं वह दिया जाता है और जो दुआ करते हैं वह क़ुबूल होती है, जो ख़र्च करते हैं उसका बदल उनको मिलता है। क़सम है उस पाक ज़ात की, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है कि जब किसी ऊँची जगह पर कोई शख़्स लब्बैक कहता है या तक्बीर कहता है तो उसके सामने का सारा हिस्सा ज़मीन का दुनिया के ख़त्म तक लब्बैक और तक्बीर कहने लगता है। *(तर्ग़ीब)*

एक और हदीस में है कि हाजी और उमरा करने वाले अल्लाह का वफ़्द हैं, जो मांगते हैं, वह उनको मिलता है, जो दुआ करते हैं, वह क़ुबूल की जाती है, जो ख़र्च करते हैं, उसका बदल उनको मिलता है और एक एक दिरम के बदले में दस दस लाख दिरम दिये जाते हैं। *(तर्ग़ीब)*

एक हदीस में है कि मक्का शरीफ़ के रहने वाले अगर इसको जान लें कि हाजियों का उन पर कितना हक़ है तो उनकी आमद पर ये लोग जाकर उनकी सवारियों को बोसा दें, इसलिये कि वे लोग अल्लाह का वफ़्द हैं।

(दुर्रे मंसूर)

(٥) عن ابن مسعودؓ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم تابعوا بين الحج والعمرة فانهما ينفيان الفقر والذنوب كما ينفى الكير خبث الحديد والذهب والفضة رواه الترمذى والنسائى كذافى المشكوة.

5. हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि मुताबअत करो दर्मियान हज और उमरा के, कि वे दोनों मुफ़्लिसी और गुनाहों को ऐसा दूर करते हैं जैसा आग की भट्टी लोहे और सोने चांदी के मैल को दूर कर देती है।

फ़ायदा:- मुताबअत करने का मतलब बाज़ उलमा ने लिखा है कि क़िरान करो, जो हज की तीन क़िस्मों में से एक क़िस्म है और हनफ़ीया के नज़दीक सब क़िस्मों में सबसे ज़्यादा अफ़ज़ल यही सूरत है और मुहक़्क़िक़ीन के नज़दीक हुज़ूर सल्ल॰ का एहराम भी उसी का था, उसमें हज और उमरे का दोनों का एहराम एक साथ बांधा जाता है और मुताबअत करने का मतलब यह भी हो सकता है कि अगर पहले हज कर लिया है तो बाद में उमरा करे और पहले उमरा किया है तो बाद में हज करे यह भी मुताबअत हो गयी।

एक और हदीस में है कि हज और उमरे के दर्मियान मुताबअत उम्र में

इज़ाफ़ा करती है और फ़क्र और गुनाहों को ऐसा ज़ायल करती है, जैसा आग की भट्टी मैल को ज़ायल करती है। (तर्ग़ीब)

एक हदीस में है:-

ادیموا الحج والعمرة لله (الحدیث)

हज और उमरा अल्लाह तआला के लिये हमेशा करते रहो कि ये दोनों फ़क्र और गुनाहों को ऐसा ज़ायल करते हैं, जैसा भट्टी लोहे के ज़ंग को। (कंज़)

एक और हदीस में है कि हज और उमरे की कसरत फ़क्र को रोक देती है। (कंज़)

एक और हदीस में है कि लगातार हज करना और लगातार उमरा करना फ़क्र और गुनाहों को ऐसा दूर करते हैं जैसा कि आग लोहे के मैल को। (कंज़)

एक और हदीस में है कि हज और उमरे में मुताबअत करना उम्र को भी बढ़ाता है और रोज़ी को भी ज़्यादा करता है। (कंज़)

और बहुत सी रिवायात में यह मज़्मून ज़िक्र किया गया।

इमाम नववी रह० ने लिखा है कि उमरा कसरत से करना मुस्तहब है और इब्ने हज्र मक्की रह० ने इमाम शाफ़ई रहि० से नक़ल किया है कि कोई महीना ऐसा न जाना चाहिये जिसमें बशर्ते क़ुदरत कम अज़ कम एक उमरा न करे और दो तीन कर ले तो बहुत बेहतर है। (शर्हे मनासिक)

(٦) عن ابی ہریرةؓ عن رسول الله صلی الله علیه وسلم قال جهاد الکبیر والضعیف والمرأة الحج والعمرة رواه النسائی باسناد حسن کذا فی الترغیب.

6. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि बूढ़े और ज़ईफ़ लोगों का और औरतों का जिहाद हज और उमरा है।

फ़ायदा:- पहली फ़स्ल की ग्यारहवीं हदीस के ज़ैल में भी यह मज़्मून गुज़र चुका है।

हज़रत आइशा रज़ि० ने भी हुज़ूर सल्ल० से दर्याफ़्त किया कि क्या औरतों पर भी जिहाद है हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि औरतों पर ऐसा जिहाद है, जिसमें क़िताल नहीं और वह हज और उमरा है। (तर्ग़ीब)

एक सहाबी रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह, मैं बहुत कम हिम्मत हूँ, दुश्मन के मुक़ाबले की ताक़त नहीं रखता। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया मैं तुम्हें ऐसा जिहाद बताऊँ, जिसमें लड़ाई न हो? उन्होंने अर्ज़ किया कि, इर्शाद फ़रमावें। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि हज और उमरा है। *(दुर्रे मंसूर)*

(۷) عن ام سلمةؓ ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال من اهل بعمرة من بيت المقدس غفرله رواه ابن ماجه باسناد صحيح كذا فى الترغيب.

7. हज़रत उम्मे सलमा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि जो शख़्स बैतुलमक़्दिस से उमरे का एहराम बांध कर आये, उसके गुनाह बख़्श दिये जायेंगे।

फ़ायदाः- उम्मे हकीम ताबई औरत हैं। उन्होंने हज़रत उम्मे सलमा रज़ि॰ से यह हदीस सुनी और सिर्फ़ एहराम बांधने के लिये बैतुलमक़्दिस तशरीफ़ ले गयीं और वहां से एहराम उमरे का बांध कर वापस आयीं। *(तर्ग़ीब)*

यह वक़्अत थी उन हज़रात के यहां हुज़ूर सल्ल॰ के पाक इर्शादात की कि जो शख़्स कोई हदीस सुन लेता था, अपनी वुस्अत के मुवाफ़िक़ उस पर अमल करने की कोशिश करता था, चाहे उसमें कितनी ही मशक़्क़त उठाना पड़े।

एक और हदीस में हज़रत उम्मे सलमा रज़ि॰ से ये अलफ़ाज़ नक़ल किये गये कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स हज या उमरे के लिये मस्जिदे अक़्सा से मस्जिदे हराम तक आये, उसके अगले पिछले सब गुनाह माफ़ हो जाते हैं और जन्नत उसके लिये वाजिब हो जाती है। *(दुर्रे मंसूर)*

आठवीं फ़स्ल

ज़ियारते मदीना

मुल्ला अली क़ारी रह॰ ने जो मशहूर आलिम, फ़क़ीह, मुहद्दिसे हनफ़ी हैं, उन्होंने लिखा है कि चंद हज़रात के अलावा जिन का ख़िलाफ़ कुछ मोतबर नहीं, बिल इत्तिफ़ाक़ तमाम मुसलमानों के नज़दीक हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम की ज़ियारत अहम तरीन नेकियों में है और अफ़ज़ल तरीन इबादात में है और आला दरजात तक पहुँचने के लिये कामियाब ज़रिया और पुर उम्मीद वसीला है, उसका दर्जा वाजिबात के क़रीब है, बल्कि बाज़ उलमा ने वाजिब कहा है कि उस शख़्स के लिये जिसमें वहां हाज़िरी की वुसअत हो, उसको छोड़ना बड़ी ग़फ़लत और बहुत बड़ी जफ़ा है और बाज़ मालिकिय्य: ने कहा है कि वहां क़ियाम के इरादे से चलना मक्का मुकर्रमा में क़ियाम के इरादे से अफ़ज़ल है यानी हज की वजह से चलना तो दूसरी बात है, इसके अलावा मदीने पाक की तरफ़ चलना अफ़ज़ल है, फ़क़त।

दुर्रे मुख़्तार में लिखा है कि हुज़ूर सल्ल॰ की क़ब्र की ज़ियारत मंदूब है, बल्कि बाज़ उलमा ने उस शख़्स के हक़ में, जिसमें वुसअत हो, वाजिब कहा है।

अल्लामा शामी रह॰ कहते हैं कि ख़ैर रमली शाफ़ई रह॰ ने इब्ने हजर रह॰ से इस क़ौल को नक़ल किया और इसकी ताईद की। यक़ीनन नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम – كما يحب ربنا ويرضى ويعدد مايحب ويرضى – के जितने एहसानात उम्मत पर हैं और जो उम्मीदें मरने के बाद आपसे वाबस्ता हैं, उनके लिहाज़ से वुसअत और ताक़त के बाद भी हाज़िरी न नसीब हो, बेहद महरूमी है और मामूली अअ्ज़ार (उज़्रों) से इस सआदते उज़्मा से महरूमी इंतिहाई क़सावत और जफ़ा है।

अगरचे बाज़ उलमा ने बाज़ रिवायात की बिना पर बजाये हुज़ूर सल्ल॰ की क़ब्र मुबारक की ज़ियारत के, मस्जिद की ज़ियारत की नीयत को ज़रूरी बताया है, लेकिन अइम्मा-ए-अर्बअ: के सब मज़ाहिब इस पर मुत्तफ़िक़ हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ की क़ब्र मुबारक की ज़ियारत का इरादा भी मुस्तहब है। हनफ़िया को मोतबर किताब से मुल्ला अली क़ारी रह॰ की इबारत ऊपर नक़ल कर चुका हूँ। शाफ़ईय्य: के मुक़्तदा इमाम नववी रह॰ अपनी मनासिक में लिखते हैं कि जब हज से फ़ारिग़ हो जाये तो चाहिये कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्रे मुबारक की ज़ियारत की नीयत से मदीना मुनव्वरा का इरादा करे कि हुज़ूर सल्ल॰ की क़ब्र की ज़ियारत अहमतरीन क़ुरुबात में से है और कामियाब मसाई से है।

अन्वारे सातिआ में मालिकिय्य: के मज़हब में लिखा है कि हमारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र की ज़ियारत पसंदीदा सुन्नत है जो

शर्अन मत्लूब है और मर्ग़ूब है और अल्लाह जल्ल शानुहू के यहां क़ुर्बत पैदा करने में बहुत ऊँची चीज़ है और क़ाज़ी अयाज़ मालिकी रह० ने शिफ़ा में लिखा है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र की ज़ियारत मुज्मअ् अलैहि सुन्नत है, बल्कि बाज़ उलमा-ए-मालिकिय्यः ने तो वाजिब फ़रमा दिया जैसा कि क़स्तलानी रह० ने मवाहिब में अबू इम्रान फ़ारसी रह० का क़ौल नक़ल किया है।

मुग़्नी जो फ़िक़्हे हनाबिला की बहुत मोतबर किताब है उसमें लिखा है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र शरीफ़ की ज़ियारत मुस्तहब है, इसलिये कि हज़रत इब्ने उमर रज़ि० ने हुज़ूर सल्ल० का यह इर्शाद नक़ल किया है कि जो शख़्स हज करे, फिर मेरी क़ब्र की ज़ियारत करे, उसने गोया ज़िन्दगी में मेरी ज़ियारत की, और एक हदीस में है कि जिसने मेरी क़ब्र की ज़ियारत की, उसके लिये मेरी शफ़ाअत वाजिब हो गयी और इमाम अहमद रह० ने हुज़ूर सल्ल० की यह हदीस नक़ल की कि जो शख़्स मेरी क़ब्र के पास मुझ पर सलाम करे तो मैं उसके सलाम का जवाब देता हूँ और शर्हे कबीर में जो मज़हबे हनाबिला की अहम किताब है, लिखा है कि जब हज से फ़ारिग़ हो जाये तो मुस्तहब है कि हुज़ूर सल्ल० की और हुज़ूर सल्ल० के दोनों साथियों की क़ब्र की ज़ियारत करे। इसके बाद वही अहादीस ज़िक्र कीं, जो मुग़्नी में गुज़रीं।

दलीलुत्तालिब जो फ़िक़्हे हंबली का मशहूर मतन है, उसमें हज के अहकाम लिखने के बाद लिखा है कि हुज़ूर सल्ल० की क़ब्रे मुबारक और हुज़ूर सल्ल० के दो साथियों की क़ब्र की ज़ियारत मस्नून है उसके शारेह नैलुल मआरिब में लिखते हैं कि इस का लाज़िमी नतीजा यह है कि इन क़ब्रों की ज़ियारत के लिये सफ़र करना भी मुस्तहब है, इसलिये कि हाजी हज के बाद बग़ैर सफ़र के उनकी ज़ियारत कैसे कर सकता है। इसी तरह रौज़ुल मर्बअ् फ़िक़्हे हंबली में लिखा है कि हुज़ूर सल्ल० की क़ब्रे अत्हर और हुज़ूर के दोनों साथियों की क़ब्रों की ज़ियारत मुस्तहब है, इसलिये कि हदीस में आया है कि जिसने हज किया, फिर मेरी क़ब्र की ज़ियारत की वह ऐसा है, जैसा कि मेरी ज़िन्दगी में मेरी ज़ियारत की। इन सबसे मालूम हुआ कि अइम्मा-ए-अर्बअः (चारों इमामों) का मुत्तफ़क़ा मसअला है, इसीलिये बाज़ उलमा ने इसको इज्माई मसअला बताया, जैसा कि शुरू में गुज़रा। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से भी मुतअद्दद रिवायात में इसकी तर्ग़ीब वारिद हुई है।

(١) عن ابن عمرؓ قال قال رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم من زار قبری وجبت له شفاعتی رواه البزار والدار قطنی قاله النووی وقال ابن حجر فی شرح المناسك رواه ابن خزیمة فی صحیحه و صححه جماعة كعبد الحق والتقی والسبكی اهـ وقال القاری فی شرح الشفا صححه جماعة من ائمة الحدیث اهـ

1. इब्ने उमर रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नक़्ल करते हैं कि जिस शख़्स ने मेरी क़ब्र की ज़ियारत की, उसके लिये मेरी शफ़ाअत ज़रूरी हो गयी।

(٢) عن ابن عمرؓ قال قال رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم من جاء نی زائرا لایهمه الّازیارتی كان حقا علیّ ان اكون له شفیعًا قال العراقی رواه الطبرانی وصححه ابن السكن كذا فی الاتحاف وبسط فی تخریجه وقال صححه عبد الحق فی سكوته والتقی والسبكی باعتبار مجموع الطرق

2. हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि जो मेरी ज़ियारत को आये और उसके सिवा कोई और नीयत उसकी न हो,तो मुझ पर हक़ हो गया कि मैं उसकी सिफ़ारिश करूँ।

फ़ायदा:- दुनिया में कौन शख़्स ऐसा होगा, जिसको मह्शर के हौलनाक मंज़र में हुज़ूर सल्ल॰ की शफ़ाअत की ज़रूरत न हो और कितना खुश क़िस्मत है वह शख़्स जिसके मुताल्लिक़ हुज़ूर सल्ल॰ यह फ़रमा दें कि उसकी शफ़ाअत मेरे ज़िम्मे ज़रूरी है।

अल्लामा ज़र्क़ानी रहि॰ शर्हे मवाहिब में लिखते हैं कि उसके लिये खुसूसी शफ़ाअत मुराद है, रफ़ए दरजात की हो या उस हौलनाक दिन में अम्न की हो या जन्नत में बग़ैर हिसाब दाख़िले की या उमूमी सिफ़ारिश के अलावा उसके लिये खुसूसियत से शफ़ाअत हो।

इब्ने हजर मक्की रह॰ शर्हे मनासिक नववी में तहरीर फ़रमाते हैं कि हदीस में जो यह वारिद हुआ है कि जो शख़्स मेरे पास आये और मेरी ज़ियारत के अलावा कोई और ग़रज़ उसकी न हो, तो मुझ पर उसका हक़ हो गया कि मैं

क़ियामत के दिन उसकी सिफ़ारिश करूं। मेरी ज़ियारत के सिवा कोई और ग़रज़ उसकी न हो का मतलब यह है कि कोई ऐसी ग़रज़ न हो, जो ज़ियारत के मुताल्लिक़ न हो, लिहाज़ा मस्जिदे नबवी में एतिकाफ़ की नीयत या इबादत की कसरत या सहाबा रज़ि॰ वग़ैरह की ज़ियारत की नीयत इसके मनाफ़ी नहीं, बल्कि हमारे उलमा ने इसकी तस्रीह की है कि हुज़ूर सल्ल॰ की ज़ियारत के साथ मस्जिदे नबवी की ज़ियारत की भी नीयत कर ले।

हनफ़िय्यः में से साहिबे दुर्रे मुख़्तार रह॰ ने भी यही लिखा है कि क़ब्र शरीफ़ के साथ मस्जिदे नबवी की ज़ियारत की भी नीयत कर ले, लेकिन इब्ने हुमाम रह॰ ने फ़ुक़हा-ए-हनफ़िय्यः में से लिखा है कि इस हदीस की बिना पर पहली मर्तबा तो सिर्फ़ क़ब्रे मुबारक ही की नीयत होना चाहिये, अलबत्ता अगर मुक़द्दर यावरी करे और दोबारा हाज़िरी की सआदत नसीब हो, तो मस्जिद और क़ब्र शरीफ़ दोनों की नीयत करे, और अल्लामा शामी रह॰ ने मुल्ला जामी रह॰ से नक़ल किया है कि उन्होंने एक मर्तबा महज़ ज़ियारत की नीयत से सफ़र किया, उसमें हज को भी शामिल न किया, ताकि महज़ ज़ियारत ही की नीयत हो। मुहब्बत की बात तो यही है।

(٣) عن ابن عمرؓ قال قال رسول الله صلي الله عليه وسلم من زارنی بعد وفاتی فکانما زارنی فی حیاتی رواه الطبرانی والدار قطنی والبیهقی وضعفه کذا فی الاتحاف وفی المشکوٰة بروایة البیهقی فی الشعب بلفظ من حج فزار قبری بعد موتی کان کمن زارنی فی حیٰوتی واستدل به ا لموفق فی المغنی علی استحباب الزیارة

3. हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि जिसने मेरी वफ़ात के बाद मेरी ज़ियारत की तो ऐसा है गोया कि मेरी ज़िन्दगी में ज़ियारत की।

फ़ायदा:- मिश्कात शरीफ़ में इर्शाद नक़ल किया गया कि जिस शख़्स ने हज किया, फिर मेरी क़ब्र की ज़ियारत की, वह मिस्ल उस शख़्स के है जिसने कि मेरी ज़िन्दगी में ज़ियारत की हो।

इसके मिस्ल होने का मतलब यह नहीं कि वह सहाबी हो गया बल्कि मतलब यह है कि अंबिया-ए-किराम अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा होते हैं, तो गोया यह ऐसा ही है जैसा कि ज़िन्दगी में कोई शख़्स दरे दौलत पर हाज़िर हो और मकान से बाहर ही मिल कर आये।

इस हदीस में यह फ़रमाया गया कि हज के बाद मेरी ज़ियारत करे।

इसमें उलमा का इख़्तिलाफ़ है कि मदीना तैयबा की हाज़िरी पहले होना चाहिये या हज पहले करना चाहिये।

इब्ने हजर रह॰ ने लिखा है कि हमारे अक्सर मशाइख़ की यह राय है कि हज पहले करना चाहिये, लेकिन मुवज्जह यह मालूम होता है कि अगर वक़्त में वसीअ गुंजाइश हो कि हज से पहले ज़ियारत इत्मीनान से कर सके और फिर हज भी इत्मीनान से हो सके तो ज़ियारत पहले कर ले, ऐसा न हो कि हज के बाद कोई आरिज़ पेश आ जाये, अलबत्ता अगर वक़्त में तंगी हो तो हज को मुक़द्दम करे। मुल्ला अली क़ारी रह॰ ने लिखा है कि अगर हज फ़र्ज़ है, तब तो हज को मुक़द्दम करना चाहिये, बशर्ते कि मदीना मुनव्वरा रास्ते में न पड़ता हो। अगर रास्ते में पड़ता हो तो फिर बग़ैर ज़ियारत के आगे बढ़ना क़सावत है। यह बहरहाल ज़रूरी है कि हज के वक़्त में गुंजाइश हो, उसके फ़ौत होने का अंदेशा न हो, और अगर हज नफ़्ल है तो उस को इख़्तियार है कि जिसको चाहे मुक़द्दम करे और औला यह है कि हज को मुक़द्दम करे ताकि गुनाहों से हज की बदौलत पाक होकर हरमे पाक की ज़ियारत करे।

(٤) عن رجل من ال الخطاب عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال من زارنی متعمدًا کان فی جواری یوم القیٰمۃ ومن سکن المدینۃ وصبر علی بلائھا کنت لہ شھیدًا وشفیعا یوم القیٰمۃ ومن مات فی احد الحرمین بعث اللہ من الامنین رواہ البیھقی فی الشعب کذا فی المشکوٰۃ وفی الاتحاف بروایۃ الطیالسی بسندہ الی ابن عمرؓ عن عمرؓ ثم قال وعن رجل من ال حاطب رفعہ من زارنی متعمدًا کان فی جواری یوم القیٰمۃ الحدیث اخرجہ البیھقی وھو مرسل والرجل المذکور مجھول اھ وبسط الکلام علی طرقہ السبکی وقال ھو مرسل جید۔

4. हुज़ूर सल्ल॰ से नक़ल किया गया कि जो शख़्स इरादा करके मेरी ज़ियारत करे, वह क़ियामत में मेरे पड़ोस में होगा और जो शख़्स मदीना में क़ियाम करे और वहां की तंगी और तक्लीफ़ पर सब्र करे, मैं उसके लिये क़ियामत में गवाह और सिफ़ारिशी हूँगा, और जो हरमे मक्का मुकर्रमा या हरमे मदीना में मर जायेगा, वह क़ियामत में अम्न वालों में

उठेगा।

फ़ायदा:- मुतअद्दद रिवायात में यह मज़्मून आया है कि जो शख़्स इरादा करके मेरी ज़ियारत करे, वह क़ियामत में मेरा पड़ोसी है, इरादा करके का मतलब यह है कि महज़ इसी इरादे से आया हो, यह न हो कि सफ़र किसी दुन्यवी ग़रज़ से था, रास्ता चलते ज़ियारत भी कर ली।

हदीस नं॰ 2 में भी इसी क़िस्म का लफ़्ज़ गुज़र चुका है कि मेरी ज़ियारत के अलावा कोई और इरादा न हो।

दूसरा मज़्मून जो हदीसे बाला में मदीना मुनव्वरा में क़ियाम के मुताल्लिक़ है, उसकी रिवायात आइंदा आ रही हैं।

(٥) عن ابن عمر قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من حج البيت ولم يزرني فقد جفاني رواه ابن عدى فى الكامل وغيره كذا فى شفاء الاسقام وفى شرح اللباب رواه ابن عدى بسند حسن وبسط فى تخريجه صاحب الاتحاف وقال رد السيوطى على ابن الجوزى فى ايراده فى الموضوعات وقال لم يصب اهـ وقال القارى فى شرح الشفاء رواه ابن عدى بسند يحتج به.

5. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल किया गया कि जिस शख़्स ने हज किया और मेरी ज़ियारत न की, उसने मुझ पर ज़ुल्म किया।

फ़ायदा:- कितनी सख़्त वईद है और बिल्कुल ज़ाहिर है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जो एहसानात उम्मत पर हैं, उनके लिहाज़ से वुसअत के बावजूद हाज़िर न होना सरासर ज़ुल्म व जफ़ा है। मुहद्दिसीन हज़रात ने इस हदीस पर कलाम कर दिया वर्ना इस की वजह से ज़ियारत वाजिब ही होती।अल्लामा क़स्तलानी रह॰ मवाहिबे लदुन्निय: में लिखते हैं कि जिस शख़्स ने बावजूद वुसअत के ज़ियारत न की, उसने यक़ीनन जफ़ा की।

(٦) عن انسؓ قال لما خرج رسول الله صلى الله عليه وسلم من مكة اظلم منها كل شيء ولما دخل المدينة اضاء منها كل شيء فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم المدينة بها قبرى و بها بيتى وتربتى وحق على كل مسلم زيارتها اخرجه ابوداؤد كذا فى الاتحاف فلينظر فلم احده.

6. हज़रत अनस रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हिजरत करके मक्का से तशरीफ़ ले गये तो वहां की हर चीज़ पर अंधेरा छा गया और जब मदीना पहुँचे तो वहां की हर चीज़ रौशन हो गयी। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि मदीने में मेरा घर है और इसी में मेरी क़ब्र होगी और हर मुसलमान पर हक़ है कि उसकी ज़ियारत करे।

फ़ायदा:- यक़ीनन हर मुसलमान पर हक़ है कि उस पाक जगह की ज़ियारत करे और किस क़दर ख़ुशनसीब हैं वे मुसलमान जिनको वहां का क़ियाम नसीब है कि हर वक़्त यह सआदत उनको मयस्सर होती रहती है और इस हक़ की अदाएगी उनको हर वक़्त मयस्सर है।

(٧) عن انسؓ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم من زارني في المدينة محتسبا كان في جِواري وكنت له شفيعًا يوم القيمة رواه العقيلي والبيهقي وابوعوانة بالفاظ مختلفة ذكرها القارى في شرح الشفاء وقال قوله في جواري بكسر الجيم وفي نسخة بضم الجيم اى في ذمتي وعهدى.

7. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स मदीना में आकर मेरी ज़ियारत सवाब की नीयत से करे (यानी कोई और ग़रज़ न हो) वह मेरे पड़ोस में होगा और मैं क़ियामत के दिन उसका सिफ़ारशी हूँगा।

फ़ायदा:- यह मज़्मून हदीस नं॰ 4 के ज़ैल में भी गुज़र चुका है। इस हदीस में बाज़ उलमा ने जुवार को जीम के पेश से बताया है, इस सूरत में तर्जुमा यह होगा कि वह शख़्स मेरे अहद और मेरी पनाह में होगा। उस हौल के दिन में कोई शख़्स हुज़ूर सल्ल॰ की पनाह में आ जाये तो इससे बढ़कर क्या दौलत हो सकती है।

(٨) عن ابن عباسؓ من حج الى مكة ثم قصدني في مسجدى كتب له حجتان مبرورتان اخرجه الديلمي كذا في الاتحاف

8. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल किया गया कि जो शख़्स हज के लिये मक्का जाये फिर मेरा क़स्द करके मेरी मस्जिद में आये, उसके लिये दो हज्जे मक़्बूल लिखे जाते हैं।

फ़ायदा:- यानी उसके हज का सवाब दो गुना हो जाता है।

(۹) عن ابی هريرةؓ ان النبی صلی اللّٰه عليه وسلم قال ما من احد يسلّم علیّ عند قبری الارد اللّٰه علیّ روحی حتی اردعليه السلام رواه احمد فی رواية عبد اللّٰه كذا فی المغنی للموفق واخرجه ابو داؤد بدون لفظ عند قبری لكن رواه فی باب زيارة القبور بعد ابواب المدينة من كتاب الحج ·

9. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स भी मेरी क़ब्र के पास आकर मुझ पर सलाम पढ़े, तो अल्लाह जल्ल शानुहू मेरी रूह मुझ तक पहुँचा देते हैं, मैं उस के सलाम का जवाब देता हूँ।

फ़ायदा:- इब्ने हज्र रह० शर्हे मनासिक में लिखते हैं कि मेरी रूह मुझ तक पहुँचाने का मतलब यह है कि बोलने की क़ुव्वत अता फ़रमा देते हैं। क़ाज़ी अयाज़ रह० ने फ़रमाया कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रूहे मुबारक अल्लाह जल्ल शानुहू की हुज़ूरी में मुस्तग़रक़ रहती है, तो इस हालत से सलाम का जवाब देने की तरफ़ मुतवज्जह होती है। *(बज़्ल)*

अक्सर उलमा ने मिनजुम्ला उनके हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० से भी अल्लामा ज़र्क़ानी रह० ने नक़ल किया कि यह मतलब नहीं कि उस वक़्त रूह वापस आती है, बल्कि वह तो विसाल के बाद एक मर्तबा वापस आ चुकी, तो मतलब यह है कि मैं (चूंकि रूह मेरी वापस आ चुकी है) उसके सलाम का जवाब देता हूँ।

(۱۰) وقال ابن ابی فديك سمعت بعض من ادركت يقول بلغنا انه من وقف عند قبر النبی صلی اللّٰه عليه وسلم فتلا هذه الاية اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ثم يقول صلی اللّٰه عليك يا محمد من يقولها سبعين مرة ناداه ملك صلی اللّٰه عليك يافلان ولم تسقط له حاجة كذا فی الشفاء قال القاری فی شرحه رواه البيهقی وابن ابی فديك ثقة جماعة واحتج به اصحاب الكتب الستة ومعنی قوله بلغنا ای فی الحديث.

10. यह नक़ल किया गया कि जो शख़्स हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्रे मुबारक के पास खड़े होकर यह आयत पढ़े:-

"इन्नल्ला-ह व मलाइ-क-तहू युसल्लू-न अलन्नबिय्यि" उसके बाद सत्तर मर्तबा "सल्लल्लाहु अलै-क या मुहम्मद" कहे, तो एक फ़रिश्ता कहता है, ऐ शख़्स, अल्लाह जल्ल शानुहू तुझ पर रहमत नाज़िल करता है, और उसकी हर हाजत पूरी कर दी जाती है।

फ़ायदाः– मुल्ला अली क़ारी रह॰ ने लिखा है कि सल्लल्लाहु अलैक या मुहम्मद की जगह या रसूलल्लाह कहे तो ज़्यादा बेहतर है।

अल्लामा क़स्तलानी रह॰ ने शैख़ ज़ैनुद्दीन मराग़ी रह॰ वग़ैरह से भी यही नक़ल किया कि "या रसूलल्लाह, कहना औला है।"

अल्लामा ज़र्क़ानी रह॰ शर्हे मवाहिब में लिखते हैं कि यह इस वजह से कि हुज़ूर सल्ल॰ का नाम लेकर पुकारने की मुमानअत है, लेकिन अगर यही लफ़्ज़ रिवायत में मंक़ूल है तो मंक़ूल की रिआयत की वजह से मुमानअत न रहेगी। इस नापाक व नाकारा के ख़्याल में रौज़ा-ए-अक़्दस पर मुज़व्विरों के रटे हुए अलफ़ाज़ बग़ैर समझे तोतों की तरह पढ़ने के बजाये निहायत ख़ुज़ूअ, ख़ुशूअ, सुकून, वक़ार से सत्तर मर्तबा "अस्सलातु वस्सलामु अलै-क या रसूलल्लाह" हर हाज़री के वक़्त पढ़ लिया करे, तो शायद ज़्यादा बेहतर हो।

अल्लामा ज़र्क़ानी शर्हे मवाहिब में लिखते हैं कि सत्तर मर्तबा की ख़ुसूसियत इसलिये है कि इस अदद को इजाबत (क़ुबूलियत) में दख़ल है। क़ुरआन पाक में भी मुनाफ़िक़ीन के बारे में हुज़ूर सल्ल॰ को इर्शाद हुआ है किः-

إِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِيْنَ مَرَّةً فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ

अगर तुम इन मुनाफ़िक़ों के लिये सत्तर मर्तबा इस्तिग़फ़ार करो, तब भी इन की मग़्फ़िरत न होगी।

(۱۱) عن ابی هريرةؓ قال قال رسول الله صلی الله عليه وسلم من صلی علیّ عند قبری سمعته ومن صلی علی نائيا كفی امردنياه واخرته وكنت له شهيدًا و شفيعًا يوم القيمة رواه البيهقی فی الشعب والخطيب وابن عساكر كذا فی الدرو بسط طرقه السبكی فی شفاء الاسقام وفی المواهب وشرحه عزاه الی ابن ابی شيبة وعبد الرزاق.

11. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद

है कि जो शख़्स मेरी क़ब्र के पास खड़ा होकर मुझ पर दरूद पढ़ता है, मैं उसको खुद सुनता हूँ और जो किसी और जगह दरूद पढ़ता है तो उसकी दुनिया और आख़िरत की ज़रूरतें पूरी की जाती हैं और मैं क़ियामत के दिन उसका गवाह और उसका सिफ़ारिशी हूँगा।

फ़ायदा:- दूसरी बहुत सी अहादीस में आया है कि जो दूर से कोई शख़्स दरूद शरीफ़ पढ़ता है; तो अल्लाह जल्ल शानुहू ने फ़रिश्ते मुक़र्रर फ़रमा रखे हैं जो उसका सलाम मुझ तक पहुँचाते हैं। इस हदीस शरीफ़ में क़ब्र शरीफ़ पर खड़े होकर दरूद शरीफ़ पढ़ने की किस क़दर फ़ज़ीलत है कि सरवरे आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसको खुद बनफ़्से नफ़ीस सुनते हैं और किस क़दर खुशनसीब हैं वे मुबारक हज़रात, जो इस पाक शहर में रहने वाले हैं और हर वक़्त बिला वास्ता दरूद शरीफ़ हुज़ूर सल्ल॰ को सुनाते रहते हैं।

सुलैमान बिन सुहैम रह॰ कहते हैं कि मुझे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत हुई। मैंने हुज़ूर सल्ल॰ से दर्याफ़्त किया, या रसूलल्लाह, ये जो लोग हाज़िरे ख़िदमत होकर सलाम करते हैं, आपको उनका इल्म होता है। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया हां होता है और मैं उनके सलाम का जवाब देता हूँ। اخرجه سعيد بن منصور كذا فى الا تحاف

(अख़रजहू सईद इब्ने मन्सूर, कज़ा फ़िल इत्तिहाफ़)

(١٢) عن ابى هريرةؓ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا تشد الرحال الاالى ثلاثة مساجد مسجدالحرام والمسجد الاقصى ومسجدى هذا متفق عليه كذا فى المشكوٰة وعند احمد وابى يعلى وابن خزيمة والطبرانى والضيامن حديث ابوسعيد بلفظ لا تشد رحال الطى الى مسجديذكر الله فيه الاالى ثلاثة مساجد كذا فى الاتحاف.

12. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि न सफ़र किया जाये, मगर तीन मस्जिदों की तरफ़, एक मस्जिदे हराम, दूसरे मस्जिदे बैतुल मक़्दिस, तीसरे मेरी यह मस्जिद।

फ़ायदा:- चूंकि इस हदीस शरीफ़ में तीन मसाजिद के अलावा किसी और जगह के सफ़र की मुमानअत की गयी। इस लिए बाज़ उलमा ने इस से दलील पकड़ कर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मज़ारे पाक के

इरादे से सफ़र की मुमानअत फ़रमायी है। वे हज़रात फ़रमाते हैं कि इस नीयत से सफ़र न करे, बल्कि मस्जिदे नबवी की ज़ियारत की नियत से सफ़र करे, अलबत्ता वहां पहुंचने के बाद मज़ारे पाक की ज़ियारत में कोई मुज़ायक़ा नहीं। लेकिन जमहूर उलमा के नज़दीक इस हदीस शरीफ़ का यह मतलब हरगिज़ नहीं, बल्कि मतलब यह है कि इन तीन मसाजिद के अलावा किसी और मस्जिद के इरादे से सफ़र न करे, इस लिए कि ये तीन मसाजिद तो बहुत अहमियत रखती हैं, जैसा कि छठी फ़स्ल की हदीस न॰ 6 में गुज़र चुका है। इस के अलावा और मसाजिद में कोई ख़ास ख़ुसूसियत नहीं।

जम्हूर की ताईद इससे भी होती है कि इस मज़्मून की बाज़ रिवायात में ख़ुद तसरीह मौजूद है, चुनांचे एक हदीस में आया है कि किसी मस्जिद की तरफ़ सफ़र न किया जाये बजुज़ इन तीन मसाजिद के, यह साफ़ और वाज़ेह है कि ख़ास ख़ास शहरों की मसाजिद की नीयत करके सफ़र न किया जाये, जैसा कि हमारे ज़माने में दस्तूर है कि दिल्ली की जामा मस्जिद में आख़िरी जुमा पढ़ने की नीयत से बम्बई कलकत्ता तक से लोग आते हैं। यह महज़ फ़ुज़ूल और लग्व है।

इमाम ग़ज़ाली रह॰ फ़रमाते हैं कि बाज़ उलमा ने इस हदीस की वजह से उलमा और सुलहा की क़ब्रों की ज़ियारत के सफ़र को ना जायज़ बताया, हालांकि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि मैंने क़ब्रों की ज़ियारत को मना कर दिया था, अब (इजाज़त देता हूँ) ज़ियारत किया करो, और हदीस मज़्कूरा बाला मसाजिद के बारे में वारिद हुई है कि इन तीन मस्जिदों के अलावा और सब मसाजिद बराबर हैं, उनमें कोई ऐसी तर्जीह नहीं जिसकी वजह से सफ़र किया जाये, और मज़ारात की बरकात और चीज़ है। मैं पूछता हूँ, क्या अंबिया की क़ब्रों की ज़ियारत को भी मना कर दिया जायेगा और जब उसको मना नहीं किया जा सकता तो औलिया की क़ब्रें भी ऐसी ही हैं। फ़क़त!

बंदा ज़ईफ़ कहता है कि औलिया की क़ब्रों के लिये सफ़र करना तो मुख़्तलफ़ फ़ीहि है कि जायज़ है या नहीं, लेकिन इसमें शक नहीं कि इन मसाजिद के अलावा बहुत से सफ़र बिल इत्तिफ़ाक़ जायज़ बल्कि बाज़ वाजिब हैं, जैसा कि हज की नीयत से सफ़र, जिहाद के लिये सफ़र, तलबे इल्म के लिए सफ़र, हिज्रत का सफ़र, तिजारत के लिए सफ़र इसलिये यह तो बहरहाल कहना होगा कि इस हदीस पाक से मुतलक़न सफ़र की उन तीन मसाजिद के अलावा मुमानअत मक़्सूद नहीं है।

अल्लामा क़स्तलानी रह॰ ने मवाहिबे लदुन्निय: में यह क़िस्सा नक़ल किया है कि शैख़ वलिय्युद्दीन इराक़ी रह॰ कहते हैं कि मेरे वालिद ज़ैनुद्दीन इराक़ी और शैख़ अब्दुर्रहमान बिन रजब हंबली रह॰ दोनों हज़रात हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह की क़ब्र की ज़ियारत को साथ चले, जब शहर के क़रीब पहुँचे तो इब्ने रजब रह॰ को ख़्याल आया, कहने लगे कि मैंने हज़रत ख़लीलुल्लाह अलैहि॰ की मस्जिद में नमाज़ पढ़ने की नीयत कर ली, ताकि क़ब्र की ज़ियारत की नीयत न रहे। ज़ैन इराक़ी कहने लगे कि तुमने हुज़ूर सल्ल॰ के इर्शाद के ख़िलाफ़ किया। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि तीन मसाजिद के अलावा सफ़र न किया जाये और तुमने इन तीन के अलावा चौथी की नीयत कर ली और मैंने हुज़ूर सल्ल॰ के इर्शाद की तामील की। हुज़ूर सल्ल॰ का मशहूर इर्शाद है कि क़ुबूर की ज़ियारत किया करो और किसी हदीस में यह नहीं आया कि अंबिया की क़ुबूर के अलावा, लिहाज़ा मैं ने इर्शाद के मुवाफ़िक़ किया। *(ज़र्क़ानी)*

सहाबा किराम रज़ि॰ और ताबईन हज़रात से क़ब्रे अतहर की ज़ियारत के लिये सफ़र साबित है।

1. अल्लामा सुबकी रह॰ ने लिखा है कि हज़रत बिलाल रज़ि॰ का सफ़र शाम से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र शरीफ़ की ज़ियारत के लिये उम्दा सनदों से साबित है, जो मुतअद्दद रिवायात में मज़्कूर है, मिनजुम्ला उनके यह है कि बैतुलमक़्दिस की फ़त्ह के बाद हज़रत बिलाल रज़ि॰ ने हज़रत उमर रज़ि॰ से दर्ख़्वास्त की कि मुझे यहां क़ियाम की इजाज़त दे दी जाये। हज़रत उमर रज़ि॰ ने मंज़ूर फ़रमा लिया और उन्होंने वहां क़ियाम फ़रमाया, वहीं निकाह कर लिया। इसके बाद एक दिन ख़्वाब में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत हुई और फ़रमाया बिलाल, यह क्या जफ़ा है, क्या मेरी ज़ियारत करने का वक़्त नहीं आया। यह ख़्वाब देखते ही हज़रत बिलाल रज़ि॰ की आंख खुली तो निहायत ग़मगीन ख़ौफ़ज़दा परेशान थे, फ़ौरन ऊँट पर सवार होकर मदीना तैयबा हाज़िर हुए और रोते हुए मज़ारे पाक पर हाज़िर हुए। हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा ख़बर सुनकर तशरीफ़ लाये और बिलाल रज़ि॰ से अज़ान कहने की फ़रमाइश की, यह उनसे मिल कर लिपट गये और साहबज़ादों की तामीले इर्शाद में अज़ान कही। आवाज़ सुनकर घरों से मर्द औरतें बे क़रार रोती हुई निकल आयीं और हुज़ूर सल्ल॰ के ज़माने की याद ने सब ही को तड़पा दिया। यहां इस्तिदलाल इस ख़्वाब से नहीं है, बल्कि हज़रत बिलाल

रज़ि॰ के सफ़र से है।

2. मुतअद्दिद रिवायात में है कि हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह॰ मुस्तक़िल तौर पर शाम से ऊँट सवार क़ासिद भेजा करते थे, ताकि क़ब्रे अत्हर पर उन का सलाम पहुँचायें। *(शिफ़ाउल अस्क़ाम)*

3. हज़रत उमर रज़ि॰ जब बैतुलमक़्दिस तशरीफ़ ले गये तो कअ्बे अह्बार जो यहूद के बहुत बड़े आलिम थे, मुसलमान हुए। हज़रत उमर रज़ि॰ को उनके इस्लाम लाने की बड़ी खुशी हुई और उनसे फ़रमाईश की कि मेरे साथ मदीना चलें, ताकि हुज़ूर सल्ल॰ की क़ब्रे मुबारक पर हाज़िरी हो, उन्होंने क़ुबूल किया और हज़रत उमर रज़ि॰ के इर्शाद की तामील की।

4. मुहम्मद बिन उबैदुल्लाह बिन अम्र अतबी कहते हैं कि मैं मदीना तैयबा हाज़िर हुआ तो क़ब्रे अत्हर पर ज़ियारत के लिये हाज़िर हुआ और हाज़िरी के बाद वहीं एक जानिब बैठ गया। इतने में एक शख़्स ऊँट पर सवार बद्वाना (देहाती) सूरत हाज़िर हुए और आकर अर्ज़ किया कि या ख़ैर्रुसुल, (ऐ रसूलों की बेहतरीन ज़ात) अल्लाह जल्ल शानुहू ने आप पर क़ुरआन शरीफ़ नाज़िल फ़रमाया–

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ

तर्जुमा:– और अगर ये लोग जब उन्होंने अपने नफ़्स पर ज़ुल्म कर लिया था, आपके पास आ जाते और आकर अल्लाह तआला शानुहू से अपने गुनाहों की माफ़ी मांगते और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी उनके लिये माफ़ी मांगते तो ज़रूर अल्लाह तआला को तौबा क़ुबूल करने वाला पाते। ऐ अल्लाह के रसूल, मैं आपके पास हाज़िर हुआ हूँ और अल्लाह जल्ल शानुहू से अपने गुनाहों की मग़्फ़िरत चाहता हूँ और उसमें आप की शफ़ाअत का तालिब हूँ। इसके बाद वह बद्दू रोने लगे और ये शेअर पढे:–

يا خير من دفنت بالقاع اعظمه — فيه لعفاف وفيه الجود والكرم

نفسي الفداء لقبرانت ساكنه — فطاب من طيبهن القاع والاكم

"ऐ बेहतरीन ज़ात, उन सब लोगों में, जिनकी हड्डियां हमवार ज़मीन में दफ़्न की गयीं कि उनकी वजह से ज़मीन और टीलों में भी उम्दगी फैल गयी। मेरी जान क़ुर्बान उस क़ब्र पर, जिसमें आप मुक़ीम हैं

कि इसमें इफ़्फ़त है, इसमें जूद है, इसमें करम है।"

इसके बाद उन्होंने इस्तिग़फ़ार की और चले गये।

अत्बी रह० कहते हैं कि मेरी ज़रा आंख लग गई, तो मैंने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत की, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि जाओ उस बद्दू से कह दो कि मेरी सिफ़रिश से अल्लाह जल्ल शानुहू ने उसकी मग़्फ़िरत फ़रमा दी।

ذكره ابن عساكر فى تاريخه وابن الجوزى فى شير العزم وغيرهما با سانيد هم كذا فى شفاء الاسقام والمواهب وذكره الموفق مختصرًا .)

अक्सर हज़रात ने यही दो शेअ्र नक़ल किये हैं, मगर इमाम नववी रह० ने अपने मानसिक में इसके बाद दो शेअ्र और नक़ल किये हैं -

انت الشفيع الذى ترجى شفاعته — على الصراط اذا مازلت القدم

وصاحباك لاانساهما ابدًا — منى السلام عليكم ماجرى القلم

तर्जुमाः- आप ऐसे सिफ़ारिशी हैं जिनकी सिफ़ारिश के हम उम्मीदवार हैं जिस वक़्त कि पुल सिरात पर लोगों के क़दम फ़िसल रहे होंगे, और आप के दो साथियों को तो मैं कभी भी नहीं भूल सकता। मेरी तरफ़ से तुम सब पर सलाम होता रहे जब तक कि दुनिया में लिखने के लिये क़लम चलता रहे, यानी क़ियामत तक।

नवीं फ़स्ल

आदाबे ज़ियारत में

हज के मुताल्लिक़ जितने रसाइल अरबी फ़ारसी या उर्दू में लिखे गये हैं, सब में रौज़ा-ए-अत्हर पर हाज़िरी और ज़ियारत के आदाब व फ़ज़ाइल तफ़्सील से लिखे गये हैं। उलमा ने इससे मुस्तक़िल इस्तिदलाल उसकी फ़ज़ीलत और इस्तेहबाब पर किया है कि जो शख़्स भी अहकामे हज लिखता है, वह उसके साथ ही साथ आदाबे ज़ियारत भी लिखता है।

इस्हाक़ बिन इब्राहीम फ़क़ीह रह॰ कहते हैं कि हमेशा से हुज्जाज का यह मामूल मुतआरफ़ है कि जो शख़्स हज करता है, वह मदीना मुनव्वरा हाज़िर होता है, ताकि हुज़ूर सल्ल॰ की मस्जिद में नमाज़ पढ़े और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रौज़ा-ए-अत्हर की ज़ियारत से तबर्रुक हासिल करे और हुज़ूर सल्ल॰ के मिंबर और क़ब्र शरीफ़ और बैठने की जगह और जहां हुज़ूर सल्ल॰ का दस्ते मुबारक लगा है या क़दम शरीफ़ गुज़रा है, वग़ैरह वग़ैरह उमूर से बरकत हासिल करे।

मुल्ला अली क़ारी रह॰ शर्हे शिफ़ा में लिखते हैं, लेकिन इन सबमें अस्ली नीयत हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत ही की होना चाहिये। बाक़ी मशाहिद की ज़ियारत तब्अन होना चाहिये। इससे कौन इंकार कर सकता है कि सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ के ज़माने से हर साल लाखों की तायदाद में हज के लिये मख़्लूक़ जाती है और बहुत कम लोग ऐसे होंगे जो अअ्ज़ार की वजह से मदीना तैयबा हाज़िर न होते हों, अगर इन हज़रात की यह हाज़िरी रौज़ा-ए-अत्हर की ज़ियारत के लिये नहीं है, बल्कि मस्जिदे नबवी की ज़ियारत के लिये जाना है तो उनमें से दसवां बीसवां हिस्सा मस्जिदे अक़्सा की ज़ियारत के लिये भी तो जाया करता कि वह भी तीन मसाजिद में से एक है, इसलिये जिन उलमा ने इस को इज्माई मसअला लिखा है, वह बे महल नहीं है।

आठवीं फ़स्ल के शुरू में चारों अइम्मा की फ़िक़्ह की किताबों की इबारतें नक़्ल की गयीं हैं, जिनसे मालूम होता है कि ये सब हज़रात इसके इस्तेहबाब पर मुत्तफ़िक़ हैं, बल्कि फ़िक़्हे हंबली की किताब "दलीलुत्तालिब" में क़ब्र शरीफ़ की ज़ियारत को तो सुन्नत लिखा है और मस्जिदे नबवी में नमाज़ को मुस्तहब लिखा है।

जिन हज़रात ने हज में रसाइल लिखे हैं, उनमें ज़ियारत के आदाब और ज़ियारत के वक़्त सलाम वग़ैरह के अलफ़ाज़ भी तहरीर फ़रमाये हैं। मुख़्तसर तौर पर चंद आदाब इस रिसाले में भी लिखे जाते हैं, वरना असल तो यह है कि -

"मुहब्बत तुझको आदाबे मुहब्बत ख़ुद सिखा देगी।"

आदाबे हज में जो मज़ामीन गुज़र चुके हैं वे भी ख़ास तौर से मलहूज़ रखे जायें।

1. इसमें इख़्तिलाफ़ है कि हज को मुक़द्दम करे या ज़ियारत को, इसके मुताल्लिक़ इससे पहली फ़स्ल की हदीस नं॰ 3 में गुज़र चुका है।

2. जब ज़ियारत का इरादा करे तो सबसे अव्वल चीज़ यह है कि इस सफ़र में सफ़र की नीयत क्या होना चाहिये। बहुत से हज़रात ने उस हदीस की बिना पर जो इससे पहली फ़स्ल के नं॰ 12 पर गुज़री है, यह तहरीर फ़रमाया है कि रौज़-ए-अत्हर की ज़ियारत के साथ साथ मस्जिदे नबवी की भी ज़ियारत की नीयत कर ले, ताकि इश्काल ही बाक़ी न रहे। लेकिन शैख़ इब्ने हुमाम रह॰ ने फ़त्हुल क़दीर में लिखा है कि इस अब्दे ज़ईफ़ के नज़दीक नीयत को ख़ालिस हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्रे मुबारक की ज़ियारत के लिये ख़ास करना चाहिये कि इसमें हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इकराम की ज़्यादती भी है और उस हदीस शरीफ़ पर अमल भी है जिसमें "ला तुअ्मिलुहू हाज-तुन इल्ला ज़ियारती" वारिद हुआ है कि मेरी ज़ियारत के अलावा कोई और काम उसको न हो। फिर अगर कभी मुक़द्दर ने यावरी की तो दूसरी मर्तबा में क़ब्रे शरीफ़ के साथ मस्जिद की ज़ियारत की भी नीयत कर ले, इस हदीस का शैख़ ने ज़िक्र फ़रमाया है, इसके हममायने दूसरी हदीस आठवीं फ़स्ल के नं॰ 2 पर गुज़र चुकी है।

क़ुत्बे आलम हज़रत गंगोही नव्वरल्लाहु मर्क़दहू ने भी इसी को तर्जीह दी है, चुनांचे ज़ुब्दतुल मनासिक में तहरीर फ़रमाया है कि ग़रज़ जब अ़ज़्म मदीने का हो तो बेहतर यों है कि नीयत ज़ियारते क़ब्रे मुतह्हर की करके जावे, ताकि मिस्दाक़ उस हदीस का हो जावे कि जो कोई महज़ मेरी ज़ियारत को आवे, शफ़ाअत उसकी मुझ पर हक़ हो गयी। यह वही हदीस है जो पहली फ़स्ल की नं॰ 2 पर गुज़र चुकी है।

3. जब ज़ियारत की नीयत से सफ़र करे, ख़्वाह (चाहे) क़ब्रे अत्हर की ज़ियारत की नीयत हो या मस्जिद की ज़ियारत की, तो अपनी नीयत को ख़ालिस अल्लाह की रिज़ा के वास्ते ख़ास करे। इसमें कोई शायबा रिया का, तफ़ाख़ुर का, शोहरत का, सैर व सियाहत का या किसी और दुन्यवी ग़रज़ का हरगिज़ न होना चाहिये कि इस सूरत में नेकी बर्बाद गुनाह लाज़िम है। अगर महज़ इस वजह से सफ़र किया कि लोग ताना देंगे कि बुख़्ल की वजह से मदीने का सफ़र भी नहीं किया, तो अपनी जान को बेफ़ायदा मशक़्क़त में डाला और पैसे ज़ाया किये, जैसा कि पहली फ़स्ल की हदीस न॰ 1 और आदाबे हज में यह मज़्मून गुज़र चुका है।

4. मुल्ला अली क़ारी रह॰ ने शर्हे लुबाब में लिखा है कि नीयत के

ख़ालिस होने की अलामत यह है कि फ़राइज़ और सुनन न छूटने पावें वरना ज़ियारत से मशक़्क़त और माली नुक़्सान के सिवा कुछ भी हासिल न हुआ बल्कि तौबा और कफ़्फ़ारा ज़िम्मे हो गया।

बंदा-ए-नाकारा के ख़्याल मे सुनन का इस सफ़र में ख़ास एहतिमाम रखे, अगरचे सफ़र की वजह से सुन्नतों में ख़िफ़्फ़त आ जाती है और सफ़र में सुन्नतों का वह हुक्म नहीं रहता, जो हज़र में है, लेकिन मदीना पाक की हाज़िरी में हत्तल वसअ ज़्यादा एहतिमाम मुनासिब है। बल्कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मामूलात, आदाते शरीफ़ा की तहक़ीक़ करके उनके इत्तिबाअ् की सई करे, तो इस सफ़र की शान के ज़्यादा मुनासिब है।

5. इस सफ़र में दरूद शरीफ़ की खुसूसियत से कसरत रखे और निहायत तवज्जोह से पढ़े। तमाम उलमा ने इसकी बहुत ताकीद लिखी है कि इस सफ़र में दरूद शरीफ़ की निहायत कसरत करे। जितनी कसरत होगी, उतना ही मुफ़ीद होगा। बल्कि मुल्ला अली क़ारी रह० ने तो शर्हे लुबाब में यहां तक लिखा है कि फ़राइज़ और ज़रूरियाते मआश से जितना वक़्त बचे, वह सब का सब दरूद शरीफ़ के पढ़ने में ख़र्च करे, इसलिये कि जितनी भी मक़्सद में तवज्जोह ताम होगी, उतना ही सवाब ज़्यादा होगा।

इब्ने हजर शर्हे मनासिक नववी में लिखते हैं कि इस रास्ते में दरूद शरीफ़ की कसरत अफ़ज़ल है तो क्या तिलावत से भी अफ़ज़ल होगी या तिलावत उससे अफ़ज़ल होगी या दोनों बराबर ? तीन सूरतें हो गयीं और इसी तरह से हर वह जगह, जहां दरूद शरीफ़ की कसरत मतलूब है, जैसा कि शबे जुमा वग़ैरह और ज़ाहिर यह है कि इस जगह दरूद शरीफ़ की कसरत तिलावत की कसरत से भी अफ़ज़ल है, इसलिये कि यह इस वक़्त एक वक़्ती वज़ीफ़ा है और उलमा ने इसकी तसरीह की है कि तिलावत मुतलक़न अफ़ज़ल है, लेकिन जिन खुसूसी मवाक़े के लिये ख़ास ख़ास ज़िक्र वारिद हुए हैं, वहां वही ज़िक्र अफ़ज़ल होंगे।

अल्लामा जज़री रह० हिस्ने हसीन में लिखते हैं कि -:

افضل الذكر القران الا فيما شرع بغيره

"अफ़्ज़लुज़ ज़िक्रि अल क़ुरआनु इल्ला फ़ीमा शुरि-अ बिग़ैरिही०" (यानी सबसे अफ़ज़ल ज़िक्र क़ुरआन पाक की तिलावत है, मगर जो जगह किसी दूसरे ज़िक्र से मशरूअ हो, वहां वह अफ़ज़ल होगा।)

मौलाना अब्दुल हई साहब इसके हाशिये पर तहरीर फ़रमाते हैं :-

मसलन रूकूअ सज्दा तस्बीह के साथ मशरूअ् है, हत्ताकि उसमें अगर तिलावत की जाये तो मकरूह होगी।

6. ज़ौक़ शौक़ पैदा करे और जितना क़रीब होता जाये, शौक़ व इश्तियाक़ में ज़्यादती पैदा करे -

वादा-ए-वस्ल चूं शवद नज़दीक,
आतिशे शौक़ तेज़ तर गरदद॥

(जब वस्ल का वायदा क़रीब आता है तो शौक़ की आग और ज़्यादा भड़क जाया करती है)

कभी कभी इस ज़ौक़ को पैदा करने के वास्ते नातिया अशआर भी पढ़ लिया करे। हुज़ूर सल्ल॰ की सीरत की कोई किताब साथ हो या मिल जाये तो उसको पढ़ लिया करे या सुन लिया करे। आपस की मज्लिसों में भी हुज़ूर सल्ल॰ ही के हालात का तज़्किरा रहा करे और जो दिन मदीना पाक के क़ुर्ब का आता जाये, उसमें ख़ुशी और इश्तियाक़ बढ़ता जाये।

7. रास्ते में जो मस्जिदें या मवाक़े ऐसे आयें, जिनमें हुज़ूरे अक़दस सल्ल॰ या सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का क़ियाम या नमाज़ पढ़ना मालूम हो, उनकी ज़ियारत करता जाये और वहां नवाफ़िल पढ़े या ज़िक्र व तिलावत वग़ैरह करे,। इसी तरह जो कुंए रास्ते में ऐसे आयें उनका पानी बरकत के हुसूल की नीयत से पिये। इनमें से बाज़ का बयान दसवीं फ़स्ल में आयेगा और इनके अलावा दूसरे रसाईल से तलाश करे। "मुअल्लिमुल हुज्जाज" और "ज़ियारतुल हरमैन" जिनका शुरू में ज़िक्र आ चुका है। इनमें भी बहुत से मवाक़े ज़िक्र किये गये हैं, उनको ग़ौर से पढ़े और मवाक़े की तहक़ीक़ करे। इन सब में "मुअर्रस" जो ज़ुल हुलैफ़ा के क़रीब हैं, वहां नमाज़ पढ़ना ज़्यादा अहम है कि शाफ़ईयः उसको सुन्नते मुअक्कदा कहते हैं। और बाज़ उलमा से इसका वाजिब होना नक़ल किया गया।
(शर्हे मनासिक नववी)

8. जब मदीना तैयबा क़रीब आ जाये तो बहुत ज़्यादा ज़ौक़ व शौक़ में ग़र्क़ हो जाये, कसरत से दरूद शरीफ़ बार बार पढ़े। अगर सवारी पर हो तो उसको तेज़ चलाने की कोशिश करे। हदीस में आया है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते और मदीना तैयबा क़रीब होता

तो अपनी सवारी को तेज़ चलाते।

وابرح مايكون الشوق يومًا اذا دنت الخيام الى الخيام

तर्जुमा:- "सबसे बढ़ा हुआ शौक़ उस दिन होता है, जब उश्शक़ के ख़ेमे माशूक़ के ख़ेमे के क़रीब हो जायें।

9. जब मदीना तैयबा की दीवारों पर नज़र पड़ जाये और उसके मुअत्तर बाग़ नज़र आने लगें, जो बीरे अली के बाद से नज़र आने लगते हैं, तो बेहतर यह है कि सवारी से नीचे उतर जाये और रोता हुआ नंगे पांव चले।

ولما راينا رسم من لم يدع لنا فؤادا لعرفان الرسوم ولا لبا
نزلنا عن الاكوار منشى كرامة لمن بان عنه ان نلم به ركبا

तर्जुमा:- जब हमने उस महबूब के शहर के निशानात देखे, जिसने निशानात के पहचानने के वास्ते न हमारे पास दिल छोड़ा, न अक़्ल छोड़ी तो हम अपनी सवारियों से उतर गये और उसके इकराम में पैदल चलने लगे, इसलिये कि उसकी शान से यह बहुत बईद बात थी कि उस के पास सवार होकर जायें।

पहले उमरा, वुज़रा के मुताल्लिक़ लिखा है कि वे ज़ुल हुलैफ़ा से, जो तक़रीबन छः मील है, पैदल चलने लगते थे और हक़ यह है कि उस जगह पांव के बजाये सर के बल भी चले, तो उस जगह के हक़ का कोई हिस्सा भी अदा नहीं हो सकता।

لو جئتكم قاصدًا اسعى على بصرى لم اقض حقا واىّ الحق اديت

तर्जुमा:- "अगर मैं तुम्हारी ख़िदमत में पांव के बजाये आंखों से चलकर आता, तब भी मैं हक़ अदा न कर सकता था और मैंने आक़ा, तुम्हारा और ही कौन सा हक़ अदा किया, जो यही अदा करता।"

ولما راينا من رجوع حبيبنا بطيبة اعلاما اثرن لنا الحبا
وبالترب منها اذا كحلنا جفوننا شفينا فلا باسا نخاف ولا كربا

तर्जुमा:- जब मदीना पाक में महबूब की मंज़िल के आसार नज़र आने लगे तो उन्होंने मुहब्बत को भड़का दिया और जब वहां की मिटटी को आंखों का सुर्मा बनाया, तो सारी बीमारियों से शिफ़ा हो गयी कि अब न किसी क़िस्म का मर्ज़ है, न तक्लीफ़।

10. जब फ़सीले मदीना आ जाये तो दरूद शरीफ़ के बाद यह दुआ

पढ़े:-

اَللّٰهُمَّ هٰذَا حَرَمُ نَبِيِّكَ فَاجْعَلْهُ لِي وِقَايَةً مِّنَ النَّارِ وَاَمَانًا مِّنَ الْعَذَابِ وَسُوْٓءِ الْحِسَابِ

"अल्लाहुम-म हाज़ा ह-र-मु नबिय्यि-क फ़ज्अलहु ली विक़ाय-तम मिनन्नारि व अमानम् मिनल अज़ाबि व सू-इल हिसाब॰"

तर्जुमा:- ऐ अल्लाह यह तेरे नबी का हरम आ गया, इस को तू मेरे आग से बचने का ज़रिया बना दे और अज़ाब से बचने का ज़रिया बना दे और हिसाब की बुराई से बचने का सबब बना दे।

इसके बाद उस पाक शहर की ख़ैर व बरकत हासिल होने की दुआ करे और उसके आदाब बजा लाने की तौफ़ीक़ की दुआ करे और किसी ना मुनासिब हरकत में इब्तिला से बचने की दुआ करे और ख़ूब दुआयें करे।

11. बेहतर यह है कि शहर में दाख़िल होने से पहले ग़ुस्ल करे और पहले मयस्सर न हो तो दाख़िल होने के बाद मस्जिद में दाख़िल होने से पहले कर ले और ग़ुस्ल न हो सके तो वुज़ू कम अज़ कम ज़रूर कर ले, लेकिन औला ग़ुस्ल ही है कि जितनी नज़ाफ़त और तहारत ज़ायद होगी उतना ही औला है। इसके बाद बेहतरीन लिबास पहने और ख़ुश्बू लगाये जैसा कि ईदैन या जुमा के लिये करता हो, मगर तवाज़ोअ् और इन्किसार मलहूज़ रहे, तफ़ाख़ुर पास न आये।

क़बीला अब्दुल क़ैस का वफ़्द जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को दूर से देख कर सब लोग शौक़ व इज़्तिराब में ऊँटों से कूद पड़े और ऊँट छोड़ कर हुज़ूर की बारगाह में दौड़ पड़े, लेकिन इस वफ़्द के रईस मुंज़िर बिन आइज़, जिनको अशज्ज अब्दुल क़ैस से ताबीर करते हैं वह ऊँटों के साथ जाये क़ियाम पर पहुँचे और अपने और सब साथियों का सामान जमा किया और एहतियात से रखा। इसके बाद ग़ुस्ल किया, नये कपड़े पहने और आहिस्ता आहिस्ता वक़ार के साथ मस्जिदे नबवी में हाज़िर हुए, अव्वल दो रक्अत तहिय्यतुल मस्जिद पढ़ी और दुआ की फिर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मज्लिस में हाज़िर हुए। हुज़ूर सल्ल॰ ने उनकी इस अदा को पसंद फ़रमाया और इर्शाद फ़रमाया कि तुम में दो ख़स्लतें ऐसी हैं जो अल्लाह जल्ल शानुहू को पसंद हैं, एक हिल्म यानी बुर्दबारी, दूसरे वक़ार। *(मज़ाहिर)*

12. बाज़ उलमा ने उस वक़्त कुछ सदक़ा करना भी आदाब में लिखा है यानी मस्जिद में दाख़िल होने से पहले पहले कुछ सदक़ा कर दे।

इब्ने हजर रह॰ लिखते हैं कि मस्नून यह है कि कुछ सदक़ा करे, चाहे क़लील ही क्यों न हो। और उसका अहले मदीना पर सर्फ़ करना औला और बेहतर है यानी उन लोगों पर जो ख़ास मदीने के बाशिंदे हैं। अल बत्ता अगर ग़ैरे मदनी ज़्यादा मुहताज हों, तो वे मुक़द्दम हैं, बंदे के ख़्याल में उस वक़्त की ख़ुसूसियत ग़ालिबन इस आयते शरीफ़ा की वजह से है, जो सूरः मुजादला में है :-

يَـٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوٓا۟ إِذَا نَـٰجَيْتُمُ ٱلرَّسُولَ فَقَدِّمُوا۟ بَيْنَ يَدَىْ نَجْوَىٰكُمْ صَدَقَةً ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَأَطْهَرُ ۚ فَإِن لَّمْ تَجِدُوا۟ فَإِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ

"ऐ ईमान वालो। जब तुम रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से सरगोशी किया करो तो इससे पहले कुछ ख़ैरात दे दिया करो। यह तुम्हारे लिये (सवाब हासिल होने के लिये) बेहतर है और गुनाहों से पाक होने का ज़रिया है। अगर तुममें सदक़ा देने की क़ुदरत न हो तो अल्लाह जल्ल शानुहू ग़फ़ूरूर्रहीम हैं" (यह हुक्म इब्तिदाअन वाजिब था, इसके बाद की आयत से मंसूख़ हो गया।)

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू इर्शाद फ़रमाते हैं कि इस सदक़े वाली आयत पर सबसे पहले मैंने अमल किया, जब यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई तो मेरे पास एक दीनार (अशर्फ़ी) था, उसको मैंने भुना कर दिरम बना लिये। जब हुज़ूर सल्ल॰ से गुफ़्तगू करता, तो एक दिरम पहले सदक़ा कर देता। उसके बाद यह हुक्म मंसूख़ हो गया।

13. जब शहर में दाख़िल हो तो उस वक़्त की ख़ुसूसी दुआयें पढ़ता हुआ निहायत ख़ुशूअ् ख़ुज़ूअ् से दाख़िल हो, अब तक की अदमे हाज़िरी (हाज़िरी न होने) का क़लक़ हो, दुनिया में हुज़ूर सल्ल॰ की ज़ियारत न नसीब होने का रंज हो। आख़िरत में ज़ियारत नसीब होने की आरज़ू और तमन्ना हो और इसका ख़ौफ़ हो कि न मालूम मुक़द्दर है या नहीं और जैसा कि किसी बड़े से बड़े दरबार में हाज़िरी के वक़्त रोअब व जलाल का असर हो, वही मंज़र यहां हो, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अज़्मत और क़द्र व मंज़िलत मलहूज़ हो, दरूद शरीफ़ लगातार ज़बान पर जारी हो। *(लुबाब)*

14. जब क़ुब्बा-ए-ख़िज़रा पर नज़र पड़े तो अज़्मत व हैबत और हुज़ूर सल्ल॰ की उलुव्वे शान का इस्तिहज़ार करे और यह सोचे कि इस पाक क़ुब्बे में

वह ज़ाते अक़्दस है, जो सारी मख़्लूक़ात से अफ़ज़ल है, अंबिया की सरदार है, फ़रिश्तों से अफ़ज़ल है। क़ब्र शरीफ़ की जगह सारी जगहों से अफ़ज़ल है, जो हिस्सा हुज़ूर सल्ल० के बदने मुबारक से मिला हुआ है, वह काबे से अफ़ज़ल है, अर्श से अफ़ज़ल है, कुर्सी से अफ़ज़ल है हत्ताकि आसमान व ज़मीन की हर जगह से अफ़ज़ल है। *(लुबाब)*

15. शहर में दाख़िल होने के बाद सबसे पहले मस्जिदे नबवी में हाज़िर हो, अगर मस्तूरात की या सामान वग़ैरह की मजबूरी हो तो दूसरी बात है, वरना सब उलमा ने लिखा है कि शहर में दाख़िल होने के बाद सब से पहले मस्जिद में हाज़िर होना अफ़ज़ल है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आम मामूल भी अहादीस में यही आया है कि जब सफ़र से वापस तशरीफ़ लाते तो अव्वल मस्जिद में तशरीफ़ ले जाते।

16. औरतों के लिये मुनासिब यह है कि अगर शहर में दिन को दाख़िल होने की नौबत आवे तो वे रात तक इंतिज़ार करें और रात के वक़्त में मस्जिद में हाज़िर हों, इसलिये कि उनके लिये हर वह चीज़ मुक़द्दम है, जो पर्दे में मुईन हो।

17. मस्जिद में दाख़िले के वक़्त उस जगह के आदाब की रिआयत रखे कि दायां पांव पहले मस्जिद में रखे, फिर बायां पांव रखे और मस्जिद में दाख़िल होने की दुआयें पढ़े और एतिकाफ़ की नीयत करे। अगर हर मस्जिद में हमेशा दाख़िल होते हुए एतिकाफ़ की नीयत कर लिया करे तो मुफ़्त का सवाब है, इसलिये मुनासिब है कि जब किसी मस्जिद में दाख़िल हो तो एतिकाफ़ की नीयत कर लिया करे।

18. बेहतर यह है कि मस्जिदे नबवी में बाबे जिब्रील से दाख़िल हो, इसलिये कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मामूल इस दरवाज़े से दाख़िल होने का था, जिसकी ग़ालिबन वजह यह है कि अज़्वाजे मुतह्हरात रज़ि० के हुजरे इसी जानिब ज़्यादा थे। *(शर्हे मनासिके नववी)*

लेकिन इस दरवाज़े से दाख़िल होना ज़रूरी नहीं, जिस दरवाज़े से चाहे दाख़िल हो जाए। *(शर्हे लुबाब)*

19. मस्जिद में दाख़िल होने के बाद ख़ुशूअ़ ख़ुज़ूअ़, इज्ज़ व इंकिसार में बहुत एहतिमाम करे, वहां की ज़ेब व ज़ीनत, फ़र्श फ़ुरूश, झाड़ फ़ानूस, क़ालीन, क़ुमक़ुमों में न लग जाये, न इन चीज़ों की तरफ़ इल्तिफ़ात करे निहायत अदब और

वक़ार से नीची नज़र किये हुए निहायत ही अदब और एहतिराम से जाये, बे अदबी और ला उबालीपन की कोई हरकत न करे, बड़े ऊँचे दरबार में पहुँच गया है, ऐसा न हो कि बे अदबी की कोई हरकत हिरमान व ख़ुसरान का सबब बन जाये।

20. मस्जिद में जाने के बाद सबसे पहले रौज़ा-ए-मुक़द्दसा में जाये, यह जगह वह हिस्सा है जो मिंबर शरीफ़ और क़ुब्बा शरीफ़ के दर्मियान में है, इस को रौज़ा इसलिये कहा जाता है कि हुज़ूर सल्ल॰. का पाक इर्शाद है कि मेरी क़ब्र और मेरे मिंबर का दर्मियानी हिस्सा जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है। रौज़ा बाग़ को कहते हैं। आइंदा फ़स्ल में यह हदीस आ रही है। अगर बाबे जिब्रील से मस्जिद में दाख़िल होने की नौबत आती है, तो बेहतर यह है कि हुजरे शरीफ़ के पीछे से रौज़े में जाये, ताकि हुजरे के सामने से गुज़रने की सूरत में बग़ैर सलाम किये आगे बढ़ना न पड़े।

21. रौज़ा-ए-मुक़द्दसा में पहुँच कर अव्वल तहिय्यतुल मस्जिद पढ़े। मस्जिद में हाज़िरी के बाद हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िरी से क़ब्ल तहिय्यतुल मस्जिद का पढ़ना औला है, इसलिये कि यह अल्लाह का हक़ है जो रसूल सल्ल॰ के हक़ पर मुक़द्दम है। नं॰ 11 में अशज्ज अब्दुल क़ैस के क़िस्से में गुज़र चुका है कि उन्होंने अव्वल तहिय्यतुल मस्जिद पढ़ी, फिर हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुए।

हज़रत जाबिर रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि मैं सफ़र से आया था, हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। हुज़ूर सल्ल॰ ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि तहिय्यतुल मस्जिद पढ़ ली। मैंने अर्ज़ किया कि नहीं, फ़रमाया कि जाओ पहले तहिय्यतुल मस्जिद पढ़ कर बाद में मेरे पास आना। *(शर्हे मनासिके नववी)*

22. तहिय्यतुल मस्जिद की इन दो रक्अतों में "क़ुल या और क़ुल हुवल्लाहु" पढ़ना औला है, इसलिये कि पहली सूरः शरीफ़ में शिर्क से नफ़ी और इंकार है और दूसरी सूरः में अल्लाह की वह्दानियत और ज़ात व सिफ़ात का इक़रार है।

23. उलमा ने लिखा है कि रौज़े में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के खड़े होने की जगह बरकत की नीयत से खड़ा होना औला है, इस जगह की तअ्यीन ज़ुब्दा में इस तरह की है कि मिंबर दाहिने मोंढ़े की सीध पर रहे और वह स्तून, जिसके सामने संदूक़ है, सामने रहे।

इमाम ग़ज़ाली रह॰ ने एहया में भी यही लिखा है कि वह स्तून जिसके पास संदूक़ है, मुंह के सामने हो और वह दायरा जो मस्जिद के क़िब्ले की दीवार में है, सामने रहे, लेकिन इब्ने हज्र रह॰ ने शर्हे मनासिक में लिखा है कि अब वहां संदूक़ नहीं रहा, वह जल गया। अब उसकी जगह एक मेहराब बना दी गयी है। यही वह जगह है जिसको मेहराबुन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कहते हैं। सब अकाबिर उलमा ने इस जगह क़ियाम को औला बताया है, इसलिये इस बा बरकत जगह का एहतिमाम करना चाहिये, लेकिन इस नापाक को मदीना तैयबा के एक साला क़ियाम में एक मर्तबा भी यहां खड़े होने की जुर्रत और हिम्मत न हुई। अगर यह जगह किसी वजह से मयस्सर न हो सके तो फिर सारे रौज़े में किसी जगह तहिय्यतुल मस्जिद पढ़े।

24. तहिय्यतुल मस्जिद से फ़ारिग़ होने के बाद अल्लाह जल्ल शानुहू का लाख लाख शुक्र अदा करे कि उसने यह नेअ्मते जलीला अता फ़रमायी और उस पाक ज़ात से हज व ज़ियारत की क़ुबूलियत की दुआ करे और चाहे सज्दा-ए-शुक्र करे, चाहे दो रकअत शुक्राना पढ़े। बहुत से उलमा ने उस वक़्त सज्दा-ए-शुक्र करने को लिखा है। यहां यह बात क़ाबिल याद रखने के है कि हनफ़िय्या के नज़दीक मशहूर क़ौल के मुवाफ़िक़ शुकराने का महज़ सज्दा मशरूअ् नहीं, बल्कि जहां शुक्र का सज्दा वारिद हुआ है उनकी तहक़ीक़ के मुवाफ़िक़ वहां शुकराने की नफ़्लें मुराद हैं, लेकिन इस जगह पर हनफ़िय्य: ने सज्दा-ए-शुक्र का जवाज़ लिखा है जैसा कि शर्हे लुबाब में तस्रीह है और इसके बिल मुक़ाबिल शाफ़अिय्य: की तहक़ीक़ के मुवाफ़िक सज्दा-ए-शुक्र बग़ैर नफ़्लों के भी मशरूअ् है, लेकिन इस जगह वे सज्दा-ए-शुक्र के क़ायल नहीं, जैसा कि शर्हे मनासिके नववी में इब्ने हजर रह॰ ने तस्रीह की है।

25. अगर मस्जिद में दाख़िल होने के वक़्त फ़र्ज़ नमाज़ खड़ी होने को है तो उस वक़्त तहिय्यतुल मस्जिद न पढ़े, बल्कि फ़र्ज़ नमाज़ में शिर्कत करे, उसी में तहिय्यतुल मस्जिद की भी नीयत कर ले, तो तहिय्यतुल मस्जिद का सवाब भी मिल जायेगा। इसी तरह अगर ऐसे वक़्त में मस्जिद में दाख़िल हुआ, जबकि नफ़्लें मक्रूह हैं, जैसा कि अस्र के बाद, तो उस वक़्त भी तहिय्यतुल मस्जिद न पढ़े।

26. नमाज़ से फ़राग़त के बाद क़ब्र शरीफ़ की तरफ़ चले, इस हाल में कि दिल को सब कदूरात और आलाइशों से पाक रखे और हमातन नबी करीम

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ाते अक़्दस की तरफ़ पूरी तवज्जोह करे।

उलमा ने लिखा है कि जिस क़ल्ब में दुनिया की गंदगियां और लह्व व लअिब, शहवतें और ख़्वाहिशें भर रही हों, उस दिल पर वहां की बरकात का कुछ असर नहीं होता, बल्कि ऐसे दिल वालों पर जो दुनिया पर पड़े रहें और आख़िरत से और उसके फ़िक्र से बे ताल्लुक़ हों, हुज़ूर सल्ल॰ के गुस्से और ऐराज़ का अंदेशा है। अल्लाह ही अपने फ़ज़्ल से उस से पनाह दे। लिहाज़ा हर शख़्स के लिये ज़रूरी है कि जहां तक मुम्किन हो उस वक़्त अपने दिल को दुन्यवी ख़ुराफ़ात से ख़ाली रखने की कोशिश करे और अल्लाह की रहमत की वुसअत, अफ़्व व करम के कमाल की उम्मीद रखे और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शाने रहमतुल्लिल आलमीन पर नज़र रखे और हुज़ूर ही के वसीले से अल्लाह से माफ़ी का तालिब बन कर हाज़िर हो। *(शर्हे लुबाब)*

27. जब किसी क़ब्र पर हाज़िरी हो तो मय्यित के पांव की तरफ़ से जाये ताकि मय्यित को अगर हक़ तआला शानुहू आने वाले का कश्फ़ अता फ़रमाये, तो देखने में सहूलत रहे, इसलिये कि जब मय्यित क़ब्र में दायीं करवट लेटी है तो उसकी नज़र क़दमों की तरफ़ होती है। अगर कोई सिरहाने की जानिब से आये तो मय्यित को देखने में तअब और मशक़्क़त होती है। *(फ़त्हुल क़दीर)*

इसी ज़ाब्ते के मुवाफ़िक़ इस जगह भी बाज़ उलमा ने लिखा है कि क़दमे मुबारक की जानिब से हाज़िर हो, जैसा कि इब्ने हजर रह॰ ने शर्हे मनासिक में नक़ल किया है। मुवाहिब मे लिखा है कि ज़ाइर के लिये मुनासिब यह है कि क़िब्ले की जानिब से होकर मुवाजह शरीफ़ पर हाज़िर हो, लेकिन अगर पांव की तरफ़ से हाज़िर हो तो यह अदब के लिहाज़ से औला है, मगर बाज़ उलमा ने आम ज़ाब्ते के ख़िलाफ़ इस जगह पर सिरहाने से हाज़िरी को तर्जीह दी है, इस वजह से तहिय्यतुल मस्जिद रौज़े में पढ़ी गयी, जो हुज़ूर सल्ल॰ के बिल्कुल सिरहाने है, इस सूरत में अगर वहां से चल कर पांव की तरफ़ को आयेगा तो सूरत क़ब्रे मुबारक के तवाफ़ की सी बन जायेगी और क़ब्र का तवाफ़ बिल्कुल जायज़ नहीं। इसलिये इसकी सूरत से बचने की रिआयत से इस जगह सिरहाने से हाज़िरी को गवारा किया गया, वरना आम अदब हर क़ब्र पर हाज़िरी का यही है कि पावं की तरफ़ से हाज़िर हो।

28. जब मुवाजह शरीफ़ पर हाज़िर हो तो सिरहाने की दीवार के कोने

में जो स्तून है, उससे तीन चार हाथ के फ़ासले से खड़ा हो और पुश्त क़िब्ले की तरफ़ करे और बायीं तरफ़ को ज़रा मायल हो ताकि चेहरा-ए-अन्वर के बिल्कुल सामने हो जाये। (ज़ुब्दा)

साहिबे इत्तिहाफ़ कहते हैं कि यह स्तून अब पीतल की दीवार के अंदर आ गया।

मुल्ला अली क़ारी रह० ने लिखा है कि चांदी की कील, जो उस दीवार में है, उसके मुक़ाबिल खड़ा हो। (शर्हे लुबाब)

लेकिन अब तीन झरोके सामने की पीतल की दीवार में कर दिये गये, जिनसे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़राते शैख़ैन रज़ि० की मुबारक क़ब्रों का सामना होता है।

इब्ने हजर रह० कहते हैं कि चांदी की मेख़ जिस पर सोने का झोल है, वह चेहरा-ए-अन्वर की मुहाज़ात में है।

29. दीवार से तीन चार गज़ के फ़ासले पर खड़ा हो, ज़्यादा क़रीब न हो कि अदब के ख़िलाफ़ है और निगाह नीची रहना चाहिये, इधर उधर देखना उस वक़्त सख़्त बे अदबी है, हाथ पांव भी साकिन और वक़ार से रहें। यह ख़्याल करे कि चेहरा-ए-अन्वर इस वक़्त मेरे सामने है, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मेरी हाज़िरी की इत्तिला है। हुज़ूर सल्ल० की उलुव्वे शान और उलुव्वे मर्तबत का इस्तिहज़ार पूरी तरह से दिल में हो।

इब्ने अमीरूल हाज्ज रह० मदख़ल में लिखते हैं कि जितने भी तवाज़ोअ् और आदाब उस वक़्त की हाज़िरी के लिखे जाते हैं उससे कहीं ज़्यादा तवाज़ोअ् और इज्ज़ व इंन्किसार होना चाहिये, इसलिये कि आप की ज़ात ऐसी शफ़ीअ् है, जिसकी शफ़ाअत मक़्बूल है जिसने आप के दर का इरादा किया, वह मुराद को पहुँचा और जो आपकी चौखट पर हाज़िर हो गया, वह ना मुराद नहीं रहा। जिस शख़्स ने आपके वसीले से दुआ की, वह क़ुबूल हुई, और जो मांगा वह मिला। तजुर्बा और वाक़िआत इसकी शहादत देते हैं, इसलिये जितना ज़्यादा अदब हो सके, दरेग़ न करे और यह समझे गोया मैं ज़िन्दगी में आप की मज्लिस में हाज़िर हूँ, इसलिये कि उम्मत के हालात के मुशाहदे में और उनके इरादे और क़स्द के ज़हूर में इस वक़्त आपकी हयात और ममात में कोई फ़र्क़ नहीं।

(मदख़ल अव्वल)

30. इसके बाद हुज़ूर सल्ल० पर सलाम पढ़े। मनासिक के रसाइल में सलाम के अल्फ़ाज़ बहुत से नक़ल किये गये हैं। इसमें सलफ़ का मामूल मुख़्तलिफ़ रहा है। बाज़ अकाबिर मुख़्तलिफ़ उनवान और मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ के साथ सलाम पढ़ते थे और ज़ौक़ व शौक़ का तक़ाज़ा यही है -

यां लब पे लाख लाख सुख़न इज़्तिराब में,
वां एक ख़ामुशी तेरी सब के जवाब में॥

और बाज़ हज़रात निहायत मुख़्तसर अल्फ़ाज़ में सलाम पढ़ते थे, अदब और हैबत का तक़ाज़ा यही है -

बे ज़बानी तर्जुमाने शौक़ं बेहद हो तो हो,
वरना पेशे यार काम आती हैं तक़रीरें कहीं.

मुल्ला अली क़ारी रह० ने लिखा है कि बाज़ अकाबिर जैसे कि हज़रत इब्ने उमर रज़ि० सिर्फ़ "अस्सलामु अलै-क अय्युहन्नबिय्यु व रह्मतुल्लाहि व-ब-र कातुहू" पर इक्तिफ़ा करते थे और बाज़ हज़रात तवील सलाम को इख़्तियार करते थे, और अहादीस में मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ और मुख़्तलिफ़ उन्वानों से दरूद शरीफ़ वारिद होने से इस की ताईद होती है।

हज़रत गंगोही नव्वरल्लाहु मर्क़दहू ने ज़ुब्दा में सलाम के अल्फ़ाज़ नक़ल करने के बाद लिखा है कि सलाम में जिस क़दर चाहे अल्फ़ाज़ ज़्यादा करे, मगर अदब और इज्ज़ के कलिमात हों, लेकिन सलफ़ यहां मुख़्तसर अल्फ़ाज़ कहने को पसंद करते हैं और जहां तक भी इख़्तिसार हो सके, मुस्तह्सन रखते हैं।

इमाम नववी रह० ने अपनी मनासिक में सलाम में तवील अल्फ़ाज़ लिखने के बाद लिखा है कि हज़रत इब्ने उमर रज़ि० वग़ैरह से ग़ायते इख़्तिसार नक़ल किया गया। हज़रत इब्ने उमर रज़ि० तो इतना ही कहते थे "अस्सलामु अलै-क या रसूलल्लाह, अस्सलामु अलै-क या अबा बक्र, अस्सलामु अलै-क या 'अ-ब ताहु०"

इस नाकरा के नाक़िस ख़्याल में जो शख़्स सलाम के अल्फ़ाज़ का तर्जुमा और मतलब समझता हो और उन अल्फ़ाज़ के बढ़ाने से ज़ौक़ में इज़ाफ़ा होता हो, उसको तो तत्वील मुनासिब है और अगर ये दोनों बातें न हों तो तोते की तरह से मुज़व्विरीन के अल्फ़ाज़ दोहराने की ज़रूरत नहीं, इंतिहाई ज़ौक़ व शौक़

और ग़ायत सुकून और वक़ार से आहिस्ता आहिस्ता ठहरा ठहरा कर "अस्सलातु वस्सलामु अलै-क या रसूलल्लाह" पढ़ता रहे और जब तक शौक़ में इज़ाफ़ा पावे, इन्हीं अल्फ़ाज़ को या और किसी सलाम को बार बार पढ़ता रहे, इससे पहली फ़स्ल के नं॰ 10 पर सल्लल्लाहु अलै-क या रसूलल्लाह सत्तर मर्तबा पढ़ना गुज़रा है, वह भी बेहतर है, मगर सुकून और वक़ार और ज़ौक़ व शौक़ से पढ़े।

31. यह निहायत अहम और ज़रूरी बात है कि सलाम पढ़ते वक़्त शोर व शग़ब हरगिज़ न करे, न ज़ोर से चिल्लाये बल्कि इतनी आवाज़ से कहे कि अंदर तक पहुँच जाये।

मुल्ला अली क़ारी रह॰ ने लिखा है कि न तो ज़्यादा जहर हो और न बिल्कुल इख़्फ़ा हो, बल्कि मुतवस्सित और मोतदिल आवाज़ हुज़ूरे क़ल्ब और अपनी बद आमालियों की वजह से शर्म व हया लिये हुए हो। बुख़ारी शरीफ़ में एक क़िस्सा लिखा है, हज़रत साइब रज़ि॰ कहते हैं कि मैं मस्जिद में खड़ा था। एक शख़्स ने मेरे एक कंकरी मारी। मैंने उधर को देखा तो वह हज़रत उमर रज़ि॰ थे। उन्होंने मुझे (इशारे से बुला कर) कहा कि ये दो आदमी जो बोल रहे हैं उन दोनों को बुलाकर लाओ। मैं उन दोनों को हज़रत उमर रज़ि॰ के पास लाया। हज़रत उमर रज़ि॰ ने उनसे पूछा कि तुम कहां के रहने वाले हो? उन्होंने अर्ज़ किया कि ताइफ़ के रहने वाले हैं। हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया कि अगर तुम इस शहर के रहने वाले होते तो तुम्हें मज़ा चखाता, तुम हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद में चिल्ला कर बोल रहे हो।

मुहम्मद बिन मुस्लिमा रज़ि॰ कहते हैं कि किसी शख़्स को भी यह नहीं चाहिये कि मस्जिद में ज़ोर से बोले। *(शर्हे शिफ़ा)*

हज़रत उमर रज़ि॰ के इस क़िस्से में बाज़ रिवायात में हज़रत उमर रज़ि॰ का इर्शाद नक़ल किया गया कि ऐसे कोड़े मारता कि बदन दर्द करने लगता। अब गोया अजनबी दूसरे शहर के होने की वजह से मस्‌अले से ना वाक़िफ़ियत को उज़्र क़रार दिया।

हज़रत आइशा रज़ि॰ जब कहीं क़रीब कील मेख़ वग़ैरह ठोकने की आवाज़ सुनतीं तो आदमी भेज कर उनको रोकतीं कि ज़ोर से न ठोकें, हुज़ूर सल्ल॰ की तक्लीफ़ का लिहाज़ रखें।

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू को अपने मकान के किवाड़ बनवाने की

ज़रूरत पेश आयी तो बनाने वालों को फ़रमाया कि शहर के बाहर बक़ीअ् में बना कर लायें। उनके बनाने की आवाज़ का शोर हुज़ूरे सल्ल॰ तक न पहुँचे।

अल्लामा क़स्तलानी रह॰ मुवाहिब में लिखते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ अदब का वही मामला होना चाहिये जो ज़िन्दगी में था, इसलिये कि हुज़ूर सल्ल॰ अपनी क़ब्र में ज़िंदा है।

(शर्हे मुवाहिब)

हक़ तआला सुब्हानहू व तक़द्दुस ने क़ुरआन पाक में सूरः हुजुरात में ख़ुसूसियत से इस तरफ़ तंबीह फ़रमायी है, इर्शादे वाला है कि :-

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْٓا اَصْوَاتَكُمْ (الآية)

"या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तर्फ़अू अस्वात कुम॰" *(आयत)*

"ऐ ईमान वालों, तुम अपनी आवाज़ें नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आवाज़ से ऊँची न करो और न आपस में ऐसे ज़ोर से गुफ़्तगू करो, जैसा कि आपस में एक दूसरे से गुफ्तगू करते हैं। (ऐसा न हो कि इस हकरत से) तुम्हारे (पहले किये हुए नेक) अमल बर्बाद हो जायें और तुम को ख़बर भी न हो।"

बुख़ारी शरीफ़ की हदीस में है कि हज़राते शैख़ैन हज़रत अबू बक्र रज़ि॰ और हज़रत उमर रज़ि॰ के दर्मियान किसी मश्विरे की गुफ़्तगू में जो हुज़ूर सल्ल॰ की मज्लिस में थी, इख़्तिलाफ़े राय की वजह से तेज़ गुफ़्तगू हो गयी थी, जिस पर यह आयत नाज़िल हुई।

जब हज़राते शैख़ैन पर यह इताब है तो हम तुम किस शुमार में हैं। अहादीस में आया है कि इस आयते शरीफ़ा के बाद हुज़ूर सल्ल॰ की मज्लिस में हज़रत उमर रज़ि॰ की आवाज़ ऐसी होती कि बाज़ औक़ात मुकर्रर (दोबारा) पूछना पड़ता कि क्या कहा?

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह। मैं तो अब से आपसे इस तरह गुफ़्तगू करूँगा, जैसा कि कोई राज़ की बात करता हो।

हज़रत साबित बिन क़ैस रज़ि॰ जहूरिय्युस्सौत थे। इस आयत के नाज़िल होने के बाद इस रंज व ग़म में कि मैं तो हमेशा ही ज़ोर से बोलता हूँ, मैं तो बस जहन्नमी हो गया, घर से न निकलते थे कई दिन के बाद हुज़ूर सल्ल॰ ने दर्याफ़्त

फ़रमाया तो वाक़िआ मालूम हुआ, हुज़ूर सल्ल॰ ने उनकी तसल्ली फ़रमायी और उनको जन्नती होने की बशारत दी। (दुर्रे मंसूर)

ऐसी हालत में जो लोग वहां शोर बरपा करते हैं, उनको डरना चाहिए और बहुत एहतियात लाज़िम है।

32. सलाम के बाद अल्लाह जल्ल शानुहू से हुज़ूर सल्ल॰ के वसीले से दुआ करें और हुज़ूर सल्ल॰ से शफ़ाअत की दर्ख़्वास्त करें।

बाज़ उलमा ने तवस्सुल को मना फ़रमाया है, लेकिन जम्हूर उलमा उसके जवाज़ के क़ायल हैं। मुग़्नी जो फ़िक़्हे हनाबिला में मशहूर व मारूफ़ है, उसमें अल्फ़ाज़े सलाम में ये अल्फ़ाज़ भी ज़िक्र किये हैं –

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ قُلْتَ وَقَوْلُكَ الْحَقُّ "وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ۝" وَقَدْ اَتَيْتُكَ مُسْتَغْفِرًا مِّنْ ذُنُوْبِيْ مُسْتَشْفِعًا بِكَ اِلٰى رَبِّيْ فَاَسْئَلُكَ يَارَبِّ اَنْ تُوْجِبَ لِيَ الْمَغْفِرَةَ كَمَا اَوْجَبْتَهَا لِمَنْ اَتَاهُ فِيْ حَيَاتِهٖ الخ

"अल्लाहुम-म इन्न-क क़ुल्-त व क़ौलुकल हक़्क़ु व लौ अन्नहुम इज़् ज़-ल मू अन्फुस-हुम जाऊ-क फ़स्तग़्फ़रूल्ला-ह वस्तग़्फ़-र लहुमुर्रसूलु ल-व-ज दुल्ला-ह तव्वाबर्रहीमा व क़द् अतैतु-क मुस्तग़्फ़िरम् मिन् ज़ुनूबी मुस्तश्फ़िअम् बि-क इला रब्बी फ़स्अलु-क या रब्बि अन् तूजि-ब लियल् मग़्फ़िर-त कमा औजब्त-हा लिमन् अता-हु फ़ी हयातिही" *(आख़िर तक)*

"ऐ अल्लाह, तेरा पाक इर्शाद है और तेरा इर्शाद हक़ है और वह यह है "व लौ अन्न-हुम इज़् ज़-ल-मू" आख़िर आयत तक। अब मैं आपके पास आया हूँ। और अपने गुनाहों से मग़्फ़िरत चाहता हूँ और आपसे अपने रब की बारगाह में शफ़ाअत चाहता हूँ। ऐ अल्लाह, मैं तुझसे यह मांगता हूँ कि तू मेरी मग़्फ़िरत को वाजिब कर दे जैसा कि तूने उस शख़्स की मग़्फ़िरत को वाजिब किया जो हुज़ूर की ख़िदमत में उनकी ज़िन्दगी में हाज़िर हुआ हो।"

यही अल्फ़ाज़ शर्हे कबीर में भी नक़ल किये गये। इसी तरह इन दोनों किताबों में उत्बा का वह क़िस्सा भी नक़ल किया गया जो इससे पहली फ़स्ल के आख़िर में गुज़रा और इसमें आयते शरीफ़ा "व लौ अन्न-हुम इज़ ज़-ल-मू" (आयत) का तर्जुमा भी गुज़र चुका है।

खुलफ़ाये अब्बासिया में से मंसूर अब्बासी ने हज़रत इमाम मालिक रह० से दर्याफ़्त किया कि दुआ के वक़्त हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ चेहरा करूँ या क़िब्ले की तरफ़? तो हज़रत इमाम मालिक रह० ने फ़रमाया कि आप की तरफ़ से मुंह हटाने का क्या महल है, जबकि आप तेरा भी वसीला हैं और तेरे बाप हज़रत आदम अलैहि० का भी वसीला हैं। हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ मुंह कर के हुज़ूर सल्ल० से शफ़ाअत चाहो. अल्लाह जल्ल शानुहू उनकी शफ़ाअत क़ुबूल करे।

अल्लामा ज़र्क़ानी रह० कहते हैं कि इस क़िस्से को क़ाज़ी अयाज़ रह० ने मोतबर असातिज़ा से नक़ल किया है, इसका इंकार करना जुर्रत है।

(शर्हे मुवाहिब)

अल्लामा क़स्तलानी शाफ़ई रह० ने मुवाहिब में लिखा है कि ज़ाइरीन को चाहिये कि बहुत कसरत से दुआयें मांगें और हुज़ूर सल्ल० का वसीला पकड़ें और हुज़ूर सल्ल० से शफ़ाअत चाहें कि हुज़ूर सल्ल० की ज़ाते अक़्दस ऐसी है कि जब उनके ज़रिये से शफ़ाअत चाही जाये तो हक़ तआला शानुहू क़ुबूल फ़रमायें।

अल्लामा ज़र्क़ानी मालिकी रह० इसकी शरह में लिखते हैं कि अल्लामा ख़लील रह० (मालिकी) की मनासिक में भी यही मज़्मून लिखा है।

इब्ने हुमाम रह० ने फ़त्हुल क़दीर में लिखा है और इससे हज़रत क़ुद्दिस सिर्रुहू ने ज़ुब्दा में नक़ल किया है कि सलाम के बाद फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वसीले से दुआ करे और शफ़ाअत चाहे और ये अल्फ़ाज़ कहे:-

يَارَسُوْلَ اللّٰهِ اَسْاَلُكَ الشَّفَاعَةَ وَاَتَوَسَّلُ بِكَ اِلَى اللّٰهِ فِيْ اَنْ اَمُوْتَ مُسْلِمًا عَلٰى مِلَّتِكَ وَسُنَّتِكَ

"या रसूलल्लाहि असअलुकश्शफ़ाअ-त व अ-त वस्सलु बि-क इलल्लाहि फ़ी अन् अमू-त मुस्लिमन अला मिल्लति-क व सुन्नति-क०"

"ऐ अल्लाह के रसूल, मैं आपसे शफ़ाअत चाहता हूँ और आपके वसीले से अल्लाह से यह मांगता हूँ कि मेरी मौत आपके दीन और आपकी सुन्नत पर हो।"

इमाम नववी रह० ने अपनी मनासिक में हज़रत उमर रज़ि० पर सलाम के बाद लिखा है कि फिर पहली जगह यानी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम के सामने आये और हुज़ूर सल्ल॰ के वसीले से अपने लिये दुआ करे और हुज़ूर सल्ल॰ की शफ़ाअत के ज़रिये अल्लाह जल्ल शानुहू से दुआ करे और बेहतर चीज़ वह है जो अतबी (रह॰) से नक़ल की गयी। अतबी का क़िस्सा इससे पहली फ़स्ल के ख़त्म पर गुज़र चुका है।

इब्ने हजर मक्की शाफ़ई रह॰ इसकी शरह में लिखते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ के साथ तवस्सुल करना सलफ़े सालेह का तरीक़ा रहा है। अंबिया और औलिया ने हुज़ूर सल्ल॰ के वसीले से दुआ की है।

हाकिम ने रिवायत नक़ल की है और इसको सही बताया है कि जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से दाना खाने की ख़ता सादिर हुई तो उन्होंने अल्लाह जल्ल शानुहू से हुज़ूर सल्ल॰ के तुफ़ैल दुआ की। अल्लाह जल्ल शानुहू ने दर्याफ़्त किया कि आदम, तुम ने मुहम्मद को कैसे जाना, अभी तो मैंने उनको पैदा भी नहीं किया? तो हज़रत आदम अलैहि॰ ने अर्ज़ किया कि या अल्लाह, जब आपने मुझे पैदा किया था और मुझमें जान डाली थी तो मैंने अर्श के स्तूनों पर:-

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

"ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह॰"

लिखा हुआ देखा था तो मैं ने समझ लिया था कि आपने अपने नाम के साथ जिसका नाम मिलाया है, वह सारी मख़्लूक़ में आपको सबसे ज़्यादा महबूब होगा। हक़ तआला शानुहू ने फ़रमाया कि बेशक वह सारी मख़्लूक़ में मुझे सबसे ज़्यादा महबूब है और जब उसके तुफ़ैल तुमने मग़्फ़िरत तलब की, तो मैंने तुम्हारी ख़ता माफ़ कर दी। नीज़ नसाई और तिर्मिज़ी ने नक़ल किया है कि एक नाबीना हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और बीनाई के लिये दुआ चाही। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि तुम कहो तो मैं दुआ करूँ। लेकिन अगर तुम सब्र करो तो ज़्यादा बेहतर है। उन्होंने दुआ की दर्ख़्वास्त की। हुज़ूर अक़्दस सल्ल॰ ने उनको फ़रमाया कि पहले बहुत अच्छी तरह से वुज़ू करो, उसके बाद यह दुआ पढ़ो:-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ وَاَتَوَجَّهُ اِلَیْكَ بِنَبِیِّكَ مُحَمَّدٍ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ نَبِیِّ الرَّحْمَةِ یَا
مُحَمَّدُ اِنِّیْ اَتَوَجَّهُ بِكَ اِلٰی رَبِّیْ فِیْ حَاجَتِیْ لِتَقْضِیَ لِیْ اَللّٰهُمَّ فَشَفِّعْهُ فِیَّ

"अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलु-क व अ-त-वज्जहु इलै-क बिनबिय्यि-क

मुहम्मदिन् सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल-म नबिय्यिर्रह्मति या मुहम्मदु इन्नी अ-त-वज्जहु बि-क इला रब्बी फ़ी हाजती लितुक़्ज़ा ली-अल्लाहुम्-म फ़-शफ़्फ़िअहु फ़िय्-य॰"

"ऐ अल्लाह, मैं आपसे सवाल करता हूँ और आपके नबी जो रहमत के नबी हैं, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वास्ते से आप की तरफ़ मुतवज्जह होता हूँ। ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, मैं आपके तुफ़ैल अपने रब की तरफ़ मुतवज्जह होता हूँ ताकि मेरी यह हाजत पूरी हो जाये, ऐ अल्लाह, हुज़ूर सल्ल॰ की सिफ़ारिश मेरे हक़ में क़ुबूल फ़रमा।"

तिर्मिज़ी ने इस हदीस को सही बताया है और बैहक़ी ने भी इसको सही बताया है और बैहक़ी की रिवायत में इसके आगे यह भी है कि इस दुआ के पढ़ने के बाद वह साहब बीना हो गये और तबरानी ने उम्दा सनद के साथ हुज़ूर सल्ल॰ की एक दुआ के अल्फ़ाज़ ये नक़ल किये:-

بِحَقِّ نَبِيِّكَ وَالْاَنْبِيَآءِ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِيْ (كذا فى الاصل)

बिहक़्क़ि नबिय्यि-क वल् अम्बिया इल्लज़ी-न मिन् क़ब्ली"

(कज़ा फ़िल अस्लि)

"ऐ अल्लाह, तेरे नबी के तुफ़ैल और गुज़िश्ता अंबिया के तुफ़ैल"

इसके बाद इब्ने हजर रह॰ ने और भी ताईदें इस मज़्मून की नक़ल कीं और इस दुआ के मुताल्लिक़ एक क़िस्सा ज़ियारत के क़िस्से में नं॰ 33 पर भी आ रहा है।

33. इस मज़्मून से यह भी मालूम हो गया कि इस दुआ के वक़्त भी मुंह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ होना चाहिये, अगरचे आम दुआ का अदब यह है कि मुंह क़िब्ले की तरफ़ होना चाहिये, लेकिन उस वक़्त क़िब्ले की तरफ़ मुंह करने से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ पुश्त होती है जो अदब के ख़िलाफ़ है, इसलिये उस वक़्त उसी तरफ़ मुंह करके दुआ करे।

34. इसके बाद अगर किसी और शख़्स ने अपनी तरफ़ से हुज़ूर सल्ल॰ की बारगाह में सलाम अर्ज़ करने की फ़रमाइश की हो तो उसकी तरफ़ से भी इस तरह सलाम अर्ज़ करे, "अस्सलामु अलै-क या रसूलल्ला-हि, मिन फ़ुलानिब्नि फ़ुलानिन् यस्तश्फ़िअु बि क इला रब्बि-क"।

"आप पर सलाम ऐ अल्लाह के रसूल, फ़लाँ की तरफ़ से जो फ़लां का बेटा है और वह आपसे अल्लाह की पाक बारगाह में सिफ़ारिश चाहता है।"

पहले फ़लाँ की जगह उस शख़्स का नमा ले, दूसरे फ़लां की जगह उसके बाप का नाम ले। अगर अरबी में कहना मुश्किल हो तो उर्दू में अर्ज़ कर दे कि फ़लाँ फ़लाँ आदमियों ने आपकी बारगाह में सलाम अर्ज़ किया और शफ़ाअत की दर्ख़्वास्त की है।

अल्लामा ज़र्क़ानी रह० कहते हैं कि अगर किसी शख़्स ने किसी से सलाम पहुँचाने की दर्ख़्वास्त की हो और उसने उस दर्ख़्वास्त को क़ुबूल कर लिया हो यानी वायदा कर लिया हो कि मैं सलाम पहुँचा दूँगा तो उस पर अब उस सलाम का पहुँचाना वाजिब हो गया इसलिये कि यह बमंज़िलः उसकी अमानत के है, जिसको यह क़ुबूल कर चुका।

साहिबे इत्तिहाफ़ लिखते हैं कि सलफ़ ख़लफ़ सब का मामूल दूसरों की मारफ़त सलाम भेजने का रहा है और सलातीन तो मुस्तक़िल क़ासिद मदीना तैयबा हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में सलाम पहुँचाने के लिये भेजा करते थे।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० भी हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में सलाम अर्ज़ करने के लिये मुस्तक़िल क़ासिद भेजा करते थे।

नाज़िरीने रिसाला से यह रू स्याह भी दर्ख़्वास्त करता है कि अगर इस मुबारक वक़्त में यह सियह कार किसी को याद आ जाये तो :- -

اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ اللهِ مِنْ زَكَرِيَّا بْنِ يَحْيَى الْكَانْدَهلوِى يَسْتَشْفَعُ اِلٰى رَبِّكَ

"अस्सलामु अलै-क या रसूलल्लहि मिन ज़-क-रिय्यब्नि यह्या अल् कांधलवी यस्तश्फ़िअ़ु बि-क इला रब्बि-क"

अर्ज़ कर दें, एहसान होगा और ये अल्फ़ाज़ याद न रहें तो उर्दू ही में इस नाकारा का सलाम अर्ज़ कर दें।

(और नाशिर बन्दा मुहम्मद इलियास ख़ां बिन जनाब बरकात अहमद खां मरहूम भी सलाम अर्ज़ करने की दर्ख़ास्त करता है।)

35. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर सलाम पढ़ने के बाद तक़रीबन एक हाथ दायीं तरफ़ हट कर हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु अन्हु पर सलाम पढ़े।

मशहूर क़ौल के मुवाफ़िक़ हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ब्र मुबारक हुज़ूर सल्ल० की क़ब्रे अतहर के पीछे इस तरह से है कि हज़रत सिद्दीक़े अक्बर का सरे मुबारक हुज़ूर सल्ल० के शाने के मुक़ाबिल है, इसलिये एक हाथ दायीं जानिब को हो जाने से हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ि० का सामना हो जाता है।

36. हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ि० पर सलाम से फ़राग़त के बाद एक हाथ दायीं जानिब हट कर हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु पर सलाम पढ़े, इसलिये कि मशहूर क़ौल के मुवाफ़िक़ हज़रत फ़ारूक़ रज़ि० की क़ब्रे मुबारक हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ब्रे मुबारक के पीछे ऐसी तरह से है कि हज़रत उमर रज़ि० का सर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० के शाने के मुक़ाबिल है।

37. इन दोनों हज़रात की ख़िदमत में भी अगर किसी ने सलाम अर्ज़ करने की दर्ख़्वास्त कर दी हो तो हर एक की ख़िदमत में अपना सलाम पढ़ने के बाद उसका सलाम अर्ज़ कर दे और यह सरापा ख़ता व क़ुसूर भी दर्ख़्वास्त करता है कि अगर नाज़िरीन को किसी वक़्त याद आ जाये तो इस नापाक का सलाम भी दोनों बारगाहों तक पहुँचा दें। अल्लाह जल्ल शानुहू आपको इस एहसान का अपने लुत्फ़ से अज्र अता फ़रमाये।

38. बहुत से उलमा ने लिखा है कि हज़राते शैख़ैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा पर अलाहिदा अलाहिदा सलाम पढ़ने के बाद फिर इन दोनों हज़रात के दर्मियान में खड़ा हो यानी जिस जगह खड़े होकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु पर सलाम पढ़ा है, उससे तक़्रीबन निस्फ़ हाथ बायीं जानिब को खड़ा हो ताकि दोनों के दर्मियान में हो जाए और फिर दोनों पर मुश्तरक सलाम पढ़े, जिसके अल्फ़ाज़ ज़ुब्दा में ये लिखे हैं:-

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمَا يَاضَجِيْعَيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَرَفِيْقَيْهِ وَوَزِيْرَيْهِ جَزَاكُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ الْجَزَاءِ جِئْنَا كُمَا نَتَوَسَّلُ بِكُمَا اِلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِيَشْفَعَ لَنَا وَيَدْعُوْلَنَا رَبَّنَا اَنْ يُّحْيِيَنَا عَلٰى مِلَّتِهٖ وَسُنَّتِهٖ وَيَحْشُرَنَا فِيْ زُمْرَتِهٖ وَجَمِيْعَ الْمُسْلِمِيْنَ.

"तुम दोनों पर सलाम ऐ हुज़ूर सल्ल॰ के पहलू में लेटने वालो। तुम पर सलाम ऐ हुज़ूर सल्ल॰ के दोनों साथियो। तुम पर सलाम ऐ हुज़ूर सल्ल॰ के दोनों वज़ीरो, तुम्हें हक़ तआला शानुहू (हमारी तरफ़ से) बेहतरीन बदला (तुम्हारे एहसानात) का अता फ़रमाये। हम तुम्हारे पास इसलिये हाज़िर हुए कि तुमसे हुज़ूर सल्ल॰ की बारगाह में इस बात की सिफ़ारिश चाहते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ हमारे लिये अल्लाह पाक के दरबार में शफ़ाअत फ़रमा दें और अल्लाह से यह दुआ फ़रमा दें कि वह हमें हुज़ूर सल्ल॰ के दीन पर और हुज़ूर सल्ल॰ की सुन्नत पर ज़िंदा रखे और हमारा और तमाम मुसलमानों का हश्र हुज़ूर सल्ल॰ की जमाअत में हो।

बाज़ हज़रात ने इस सलाम के अल्फ़ाज़ भी कम व बेश लिखे हैं, जैसा कि सब सलामों में है, बाज़ हज़रात ने मुख़्तसर अल्फ़ाज़ नक़ल फ़रमाये हैं और बाज़ ने ज़ायद तहरीर फ़रमाये हैं। और बाज़ ने इस मुश्तरक सलाम को ज़िक्र ही नहीं किया कि जब अलाहिदा अलाहिदा सलाम अर्ज़ कर चुका है, फिर मुश्तरक की क्या ज़रूरत बाक़ी रही। लेकिन जिन हज़रात ने इस को ज़िक्र फ़रमाया है, ग़ालिबन इसी वजह से कि यहां अब दोबारा सलाम तो बमंज़िला तम्हीद और अदब के है असल मक़्सूद इन दोनों हज़रात की ख़िदमत में सिफ़ारिश की दर्ख़्वास्त है कि यह हुज़ूर सल्ल॰ की बारगाह में दुआ की दर्ख़्वास्त और सिफ़ारिश कर दें, इसलिए इस का तर्जुमा लिखा है कि इससे यह अंदाज़ा हो सके कि इस मुकर्रर (दोबारा) सलाम की ग़रज़ क्या है ।

39. इसके बाद फिर बायीं तरफ़ आ कर दोबारा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने खड़ा होकर हाथ उठाकर अव्वल अल्लाह जल्ल शानुहू की खूब हम्द व सना करे। इस नेमते जलीला का और उसकी तमाम नेमतों का शुक्र अदा करे, फिर खूब ज़ौक़ व शौक़ से हुज़ूर सल्ल॰ पर दरूद शरीफ़ पढ़े, फिर आपके वसीले से अल्लाह जल्ल शानुहू से अपने लिये, अपने वालिदैन के लिये, अपने मशाइख़ के लिये, अपने अहल व अयाल के लिये, अपने अज़ीज़ व अक़ारिब के लिये, अपने दोस्तों और मिलने वालों के लिये और उन लोगों के लिये, जिन्होंने दुआ की दर्ख़्वास्त की हो और तमाम मुसलमानों के लिये, ज़िन्दों के लिये और मुर्दों के लिये खूब दुआ करे और अपनी दुआ को आमीन पर ख़त्म करे। *(शर्ह लुबाब)*

और याद आ जाये तो नाकारा ज़करिया को भी अपनी इस मुबारक दुआ में शामिल कर ले।

40. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़राते शैख़ैने की मुबारक क़ब्रों की तर्तीब और सूरत में सात रिवायात कुतुबे हदीस व सियर में आयी हैं, उन सब में दो रिवायातें ज़्यादा मशहूर हैं। उन दोनों की सूरत यहां लिखी जाती है, ताकि हाज़िरीन को समझने में सहूलत हो।

पहली सूरत यह है:-

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

हज़रत सिद्दीके अक्बर रज़ियल्लाहु अन्हु

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु

दूसरी सूरत यह है:-

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम | हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि॰

हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ि॰

अल्लामा समहौवी रह॰ ने वफ़ाउल वफ़ा में इन सब सूरतों को तफ़सील से बयान किया है और इस (पहली) सूरत को सबसे ज़्यादा सही और राजेह रिवायत बयान किया है।

इसके इत्तिबाअ् में साहिबे इत्तिहाफ़ ने भी इसको अशहरूर्रिवायात लिखा है।

अल्लामा समहौवी रह॰ ने लिखा है कि ये दो सूरतें उन सब रिवायात में ज़्यादा राजेह हैं जो हुज़ूर सल्ल॰ की क़ब्र की तस्वीर में वारिद हुई हैं।

अबू दाऊद शरीफ़ में यह दूसरी सूरत वारिद हुई और हाकिम ने इस को सही बताया।

अल्लामा ज़र्क़ानी रह॰ ने शर्हे मुवाहिब में लिखा है कि इन सात रिवायात में से पांच ज़ईफ़ हैं और दो सही हैं। इन दो में भी पहली सूरत को अक्सर उलमा ने राजेह क़रार दिया और रज़ीन ने इसी पर वुसूक़ किया। इमाम नववी रह॰ ने

इसको मशहूर रिवायत क़रार दिया।

41. इसके बाद उस्तुवाना अबू लुबाबा के पास आकर दो रक्अत नफ़्ल पढ़ कर दुआ करे। *(ज़ुब्दा)*

42. फिर दोबारा रौज़ा में जाकर नफ़्लें पढ़े और दुआ दरूद वग़ैरह में खुज़ूअ़ व खुशूअ़ से मशग़ूल रहे। दसवीं फ़स्ल में जहां मस्जिद के स्तूनों का ज़िक्र आ रहा है, उसमें इस स्तून का मुफ़स्सल हाल आ रहा है।

43. इसके बाद मिंबर के पास आ कर दुआ करे। उलमा ने लिखा है कि मिंबर की उस जगह पर जिसको रूम्माना कहते हैं, हाथ रख कर दुआ करे, इसलिये कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुत्बे के वक़्त उस पर दस्ते मुबारक रखते थे।

इमाम ग़ज़ाली रह० ने एह्या में लिखा है कि मुस्तहब यह है कि नीचे वाले रूम्माना पर हाथ रखे कि हुज़ूर सल्ल० उस पर हाथ रखते थे, लेकिन मुल्ला अली क़ारी रह० ने लिखा है कि वह रूम्माना अब बाक़ी नहीं जब मस्जिदे नबवी में दूसरी मर्तबा आग लगी है, उसमें जल गया था। शिफ़ा-ए-क़ाज़ी अयाज़ रह० और उसकी शरह "लि अलिय्यिल क़ारी" में लिखा है कि हज़रत इब्ने उमर रज़ि० को देखा गया कि मिंबर पर हुज़ूर सल्ल० के बैठने की जगह हाथ फेर कर उन्होंने अपने मुंह पर हाथ फेरा, और इब्ने क़ुसैत और अतबी कहते हैं कि मिंबर के उस रूम्माना पर जो क़ब्र के नज़दीक है और हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० उसको अपने दाहिने हाथ से पकड़ा करते थे, सहाबा-ए-किराम रज़ि० बरकत की नीयत से उस पर दायां हाथ फेरा करते थे। रूम्माना मिंबर की वह मूंठ कहलाती है, जो अनार की शक्ल किनारों पर बनी हुई होती है।

44. इसके बाद उस्तुवाना हन्नाना के पास जाकर दरूद शरीफ़ और दुआ एहतिमाम से करे। *(ज़ुब्दा)*

स्तूनों के बयान में सबसे पहले इसी का ज़िक्र आ रहा है।

45. इसके बाद बाक़ी मशहूर स्तूनों के पास जाकर दुआ करे। *(लुबाब)*

46. और इसकी कोशिश करे कि वहां के क़ियाम में कोई नमाज़ मस्जिदे नबवी की जमाअत से फ़ौत न होने पाये। *(फ़त्हुल क़दीर)*

कि क़ियाम थोड़ा है और सवाब बहुत ज़्यादा न मालूम फिर हाज़िरी मयस्सर हो सके या न हो सके।

47. इसका ख़्याल रखे कि ज़ियारत के वक़्त न दीवारों को हाथ लगावे कि यह बे अदबी और गुस्ताख़ी है और न दीवारों को बोसा दे कि यह हज्रे अस्वद ही का अमल है, न दीवारों को चिमटे न तवाफ़ करे, इसलिये कि तवाफ़ बैतुल्लाह शरीफ़ के साथ ख़ास है, क़ब्र का तवाफ़ हराम है।

मुल्ला अली क़ारी रह॰ ने लिखा है कि जाहिलों के फ़ेअ्ल का इत्तिबाअ् न करे, चाहे वे सूरत से मशाइख़ मालूम होते हों, न क़ब्र के सामने झुके, न ज़मीन को बोसा दे, न क़ब्र की तरफ़ मुंह करके इस नीयत से कि इधर क़ब्र है, नमाज़ पढ़े।

मुल्ला अली क़ारी रह॰ लिखते हैं कि अगर क़ब्र की ताज़ीम के लिहाज़ से उस तरफ़ मुंह करके नमाज़ पढ़े तो उसके कुफ़्र का फ़त्वा दिया जायेगा, अलबत्ता हुजरे की पुश्त पर चूंकि दीवार हायल है, इसलिये क़ब्र शरीफ़ का इरादा किये बग़ैर नमाज़ पढ़ना जायज़ है। *(शर्हे लुबाब)*

मुवफ़्फ़क़ बिन क़ुदामा रह॰ मुग़्नी में लिखते हैं कि क़ब्रे अत्हर की दीवार को न तो छूना मुस्तहब है, न चूमना।

इमाम अहमद रह॰ ने इसके मारूफ़ होने का इंकार फ़रमाया है, अलबत्ता उन्होंने हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ का यह फ़ेअ्ल नक़ल किया कि वह मिंबर पर हुज़ूर सल्ल॰ के बैठने की जगह हाथ रख कर अपने मुंह पर फेरा करते थे।

इमाम नववी रह॰ लिखते हैं कि क़ब्रे अत्हर का तवाफ़ करना नाजायज़ है और पेट का या कमर का क़ब्र शरीफ़ की दीवार से चिमटाना मक्रूह है। इसी तरह उस पर हाथ फेरना या उसको चूमना, बल्कि अदब यह है कि उससे दूर खड़ा हो, जैसा कि हुज़ूर सल्ल॰ की हयात में अदब की वजह से दूर खड़ा होता, यही सही है और तमाम उलमा की मुत्तफ़क़ा राये है, इसके ख़िलाफ़ जो बाज़ अवाम का अमल देखे तो उससे धोखा न खाये और उनकी जहालत की बातों की तरफ़ इल्तिफ़ात न करे। और जो यह ख़्याल करे कि दीवार पर हाथ फेरने से बरकत मक़्सूद है, यह उसकी जहालत है, इसलिये कि बरकत उसमें होती है जो शरीअते मुतहहरा के मुवाफ़िक़ हो, हक़ के ख़िलाफ़ में बरकत कहां।

48. बिला ज़रूरते शदीदा क़ब्र शरीफ़ की तरफ़ पुश्त न करे, न नमाज़ में, न बग़ैर नमाज़ के। *(शर्हे लुबाब)*

बल्कि नमाज़ में ऐसी जगह खड़े होने की सई करे कि न इस जानिब मुंह

हो, न पुश्त और बिला नमाज़ तो उस तरफ़ पुश्त करने की कोई वजह हो ही नहीं सकती।

49. इसका लिहाज़ रखे कि जब क़ब्र शरीफ़ के मुक़ाबिल से गुज़रना हो तो खड़े होकर सलाम करके आगे बढ़े, हत्ताकि उलमा ने लिखा है कि अगर मस्जिद से बाहर भी क़ब्र शरीफ़ के मुक़ाबिल से गुज़रे तो खड़े होकर सलाम कर के आगे बढ़े।

हज़रत अबू हाज़िम सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक शख़्स उनके पास आये और यह कहा कि मैंने हुज़ूर सल्ल॰ की ख़्वाब में ज़ियारत की। हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि अबू हाज़िम से कह देना कि तुम मेरे पास से ऐराज़ करते हुए गुज़र जाते हो, खड़े होकर सलाम भी नहीं करते। इसके बाद अबू हाज़िम का यह मामूल हो गया था कि जब उधर से गुज़रते तो खड़े होकर सलाम करके आगे बढ़ते। *(शर्ह लुबाब)*

50. मदीना पाक के क़ियाम में क़ब्र शरीफ़ पर कसरत से हाज़िरी का एहतिमाम रखे। इमामे आज़म रह॰, इमाम शाफ़ई रह॰, इमाम अहमद रह॰, तीनों हज़रात के नज़दीक कसरत से हाज़िर होते रहना पसंदीदा है, अलबत्ता इमाम मालिक रह॰ ने कसरते हाज़िरी को पसंद नहीं किया, जिसकी वजह उलमा यह फ़रमाते हैं कि मुबादा बार बार की हाज़िरी से तबीअत में बे रग़बती पैदा न हो जाये। *(शर्ह लुबाब)*

51. मस्जिद शरीफ़ में रहते हुए हुजरे शरीफ़ की तरफ़ और मस्जिद से जब बाहर हो तो, कुब्बा शरीफ़ जहां से नज़र आता हो, बार बार उनको देखना, उन पर नज़र जमाये रखना भी अफ़ज़ल है और इन्शाअल्लाह मूजिबे सवाब है। *(शर्ह लुबाब, शर्ह मनासिक नववी)*

निहायत ज़ौक़ व शौक़ के साथ चुपचाप वालिहाना नज़र जमाये रखे।

सुकूते इश्क़ को तर्जीह है इज़्हारे उल्फ़त पर,
मेरी आहें रसा निकलीं, पे नाले बेअसर निकले।।

52. मदीना मुनव्वरा के क़ियाम में जितना ज़्यादा से ज़्यादा वक़्त मस्जिदे नबवी में गुज़र सके, ग़नीमत समझे। क़ुरआन पाक कम अज़ कम एक तो ख़त्म कर ही ले और मुस्तक़िल एतिकाफ़ भी, जितने दिन का नसीब हो सके, नेमत है।

रातों को जितना ज़्यादा से ज़्यादा इबादत में गुज़ार सके, बेहतर है कि यह मुबारक रातें फिर कहां मिलेंगी। *(शर्हे लुबाब)*

ज़ुब्दा में हज़रत क़ुत्बे आलम रह० ने लिखा है कि जब तक मदीना मुनव्वरा में रहे तिलावत और ज़िक्र करता रहे और सलात व सलाम खूब करता रहे और रातों को बहुत जागे और वक़्त ज़ाया न करे।

53. ज़ुब्दा में लिखा है और बाद ज़ियारते क़ब्रे मुबारक के हर रोज़ या जुमा को ज़ियारत मज़ाराते बक़ीअ् की भी ज़रूर करे कि हज़रत उस्मान और हज़रत अब्बास और हज़रत हसन और हज़रत इब्राहीम और अज़्वाजे मुतह्हरात और अस्हाबे किराम रिज़्वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमअ़ीन वहां तशरीफ़ रखते हैं।

शर्हे लुबाब में लिखा है कि ज़ाईरीन को रोज़ाना बक़ीअ् में हाज़िर होना चाहिये। और मदीना मुनव्वरा के रहने वालों को जुमा को हाज़िर होना चाहिये।

इमाम नववी रह० ने लिखा है कि मुस्तहब यह है कि रोज़ाना बक़ीअ् में हाज़िर हो, बिल ख़ुसूस जुमा के दिन और यह हाज़िरी हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्रे अत्हर पर हाज़िरी के बाद हो और वहां जाकर मारूफ़ क़ब्रों की ज़ियारत करे जैसा कि हज़रत इब्राहीम रज़ि०, हज़रत उस्मान रज़ि०, हज़रत अब्बास रज़ि०, हज़रत हसन रज़ि०, और हज़रत अली बिन हुसैन ज़ैनुल आबिदीन रज़ि० और हज़रत मुहम्मद बाक़र बिन अली रज़ि० और जाफ़र बिन मुहम्मद रज़ि० वग़ैरह, और सबसे आख़िर में हुज़ूर सल्ल० की फूफी हज़रत सफ़िया रज़ि० की क़ब्र पर हाज़िरी दे, इसलिये कि अहले बक़ीअ् की क़ुबूर की फ़ज़ीलत और उनकी ज़ियारत के बारे में बहुत कसरत से अहादीस वारिद हुई हैं जिनमें से बाज़ दसवीं फ़स्ल की हदीस नं० 9 के ज़ैल (तहत) में आ रही हैं।

इब्ने हजर रह० शर्हे मनासिक में लिखते हैं कि बेहतर यह है कि वहां जा कर सबसे पहले हज़रत उस्मान रज़ि० की क़ब्रे मुबारक पर हाज़िर हो। अगर किसी दूसरे बुज़ुर्ग की क़ब्र रास्ते में पड़ जाये तो उस वक़्त तो मुख़्तसर सलाम करके आगे बढ़ जाये और हज़रत उस्मान रज़ि० की क़ब्र शरीफ़ की ज़ियारत के बाद फिर वापस आ कर खड़ा हो, इसलिये कि हज़रत उस्मान रज़ि० उन सबमें अफ़ज़ल हैं। जो बक़ीअ् में मदफ़ून हैं और उनके बाद फिर हज़रत अब्बास की क़ब्र पर हाज़िर हो। बक़ीअ् में हज़रात सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन की बहुत

बड़ी जमाअत मद्फ़ून है।

हज़रत इमाम मालिक रह० फ़रमाते हैं कि तक़रीबन दस हज़ार सहाबी रज़ि० मद्फ़ून हैं।

उलमा ने लिखा है कि इन सब हज़रात के लिये दुआ और ईसाले सवाब करें।

(शर्हे मनासिक नववी)

इमाम ग़ज़ाली रह० लिखते हैं कि, मुस्तहब यह है कि रोज़ाना हुज़ूर सल्ल० पर सलाम पढ़ने के बाद बक़ीअ् की ज़ियारत को हाज़िर हुआ करे।

साहिबे इत्तिहाफ़ बरिवायत इमाम मुस्लिम रह० हज़रत आइशा रज़ि० से नक़ल करते हैं कि मेरी बारी की शब में हमेशा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बक़ीअ् तशरीफ़ ले जाते थे।

शर्हे लुबाब में लिखा है, इस में इख़्तिलाफ़ है कि बक़ीअ् में हाज़िरी की इब्तिदा कहां से करे। बाज़ ने हज़रत उस्मान रज़ि० से फ़रमाया इस लिये कि वह सब हज़रात से, जो वहां आराम फ़रमा रहे हैं, अफ़ज़ल हैं, बाज़ ने हज़रत इब्राहीम रज़ि० से, इसलिये कि वह हुज़ूर सल्ल० के जिगर गोशा हैं। हुज़ूर सल्ल० ने उनके बारे में फ़रमाया कि अगर इब्राहीम ज़िंदा रहते तो नबी होते। बाज़ ने हज़रत अब्बास रज़ि० से, इसलिये कि वह हुज़ूर सल्ल० के चचा हैं और बक़ीअ् में सबसे अव्वल उनकी क़ब्र मुबारक आती है। वहां से बग़ैर सलाम के आगे चले जाना बे अदबी है, नीज़ उनके क़रीब हज़रत हसन रज़ि० और दीगर अहले बैत हैं कि उन सब का मजमूआ हज़रत उस्मान रज़ि० की फ़ज़ीलत से बढ़ जायेगा।

मुल्ला अली क़ारी रह० कहते हैं कि यह मुवज्जह है और ज़ियारत करने वालों को इसी में सहूलत है कि यह जगह बक़ीअ् में सबसे पहले आती है।

54. इमाम ग़ज़ाली रह० ने लिखा है, मुस्तहब यह है कि हर पंज शंबा (जुमेरात) को शुहदा-ए-उहुद की ज़ियारत करे। सुबह की नमाज़ मस्जिदे नववी में पढ़कर चला जाये ताकि ज़ुहर तक वापसी हो जाये और कोई नमाज़ मस्जिदे नववी की फ़ौत न हो।

साहिबे इत्तिहाफ़ लिखते हैं कि पंज शंबा (जुमेरात) की ख़ुसूसियत इस वजह से शायद हो कि यह वाक़िआ इस दिन हुआ या इस वजह से कि यह दिन मदीना वालों की फ़राग़त का है या इस वजह से कि हुज़ूर सल्ल० ने पंज शंबा की सुबह में उम्मत के लिये बरकत की ख़बर या दुआ फ़रमायी या किसी और

रातों को जितना ज़्यादा से ज़्यादा इबादत में गुज़ार सके, बेहतर है कि यह मुबारक रातें फिर कहां मिलेंगी। (शर्हे लुबाब)

ज़ुब्दा में हज़रत कुत्बे आलम रह॰ ने लिखा है कि जब तक मदीना मुनव्वरा में रहे तिलावत और ज़िक्र करता रहे और सलात व सलाम खूब करता रहे और रातों को बहुत जागे और वक़्त ज़ाया न करे।

53. ज़ुब्दा में लिखा है और बाद ज़ियारते क़ब्रे मुबारक के हर रोज़ या जुमा को ज़ियारत मज़ाराते बक़ीअ् की भी ज़रूर करे कि हज़रत उस्मान और हज़रत अब्बास और हज़रत हसन और हज़रत इब्राहीम और अज़्वाजे मुतहहरात और अस्हाबे किराम रिज़्वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन वहां तशरीफ़ रखते हैं।

शर्हे लुबाब में लिखा है कि ज़ाईरीन को रोज़ाना बक़ीअ् में हाज़िर होना चाहिये। और मदीना मुनव्वरा के रहने वालों को जुमा को हाज़िर होना चाहिये।

इमाम नववी रह॰ ने लिखा है कि मुस्तहब यह है कि रोज़ाना बक़ीअ् में हाज़िर हो, बिल खुसूस जुमा के दिन और यह हाज़िरी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्रे अत्हर पर हाज़िरी के बाद हो और वहां जाकर मारूफ़ क़ब्रों की ज़ियारत करे जैसा कि हज़रत इब्राहीम रज़ि॰, हज़रत उस्मान रज़ि॰, हज़रत अब्बास रज़ि॰, हज़रत हसन रज़ि॰, और हज़रत अली बिन हुसैन ज़ैनुल आबिदीन रज़ि॰ और हज़रत मुहम्मद बाक़र बिन अली रज़ि॰ और जाफ़र बिन मुहम्मद रज़ि॰ वग़ैरह, और सबसे आख़िर में हुज़ूर सल्ल॰ की फूफी हज़रत सफ़िया रज़ि॰ की क़ब्र पर हाज़िरी दे, इसलिये कि अहले बक़ीअ् की क़ुबूर की फ़ज़ीलत और उनकी ज़ियारत के बारे में बहुत कसरत से अहादीस वारिद हुई हैं जिनमें से बाज़ दसवीं फ़स्ल की हदीस नं॰ 9 के ज़ैल (तहत) में आ रही हैं।

इब्ने हजर रह॰ शर्हे मनासिक में लिखते हैं कि बेहतर यह है कि वहां जा कर सबसे पहले हज़रत उस्मान रज़ि॰ की क़ब्रे मुबारक पर हाज़िर हो। अगर किसी दूसरे बुज़ुर्ग की क़ब्र रास्ते में पड़ जाये तो उस वक़्त तो मुख़्तसर सलाम करके आगे बढ़ जाये और हज़रत उस्मान रज़ि॰ की क़ब्र शरीफ़ की ज़ियारत के बाद फिर वापस आ कर खड़ा हो, इसलिये कि हज़रत उस्मान रज़ि॰ उन सबमें अफ़ज़ल हैं। जो बक़ीअ् में मदफ़ून हैं और उनके बाद फिर हज़रत अब्बास की क़ब्र पर हाज़िर हो। बक़ीअ् में हज़रात सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन की बहुत

बड़ी जमाअत मद्फ़ून है।

हज़रत इमाम मालिक रह० फ़रमाते हैं कि तक़रीबन दस हज़ार सहाबी रज़ि० मद्फ़ून हैं।

उलमा ने लिखा है कि इन सब हज़रात के लिये दुआ और ईसाले सवाब करे। *(शर्हे मनासिक नववी)*

इमाम ग़ज़ाली रह० लिखते हैं कि, मुस्तहब यह है कि रोज़ाना हुज़ूर सल्ल० पर सलाम पढ़ने के बाद बक़ीअ् की ज़ियारत को हाज़िर हुआ करे।

साहिबे इत्तिहाफ़ बरिवायत इमाम मुस्लिम रह० हज़रत आइशा रज़ि० से नक़ल करते हैं कि मेरी बारी की शब में हमेशा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बक़ीअ् तशरीफ़ ले जाते थे।

शर्हे लुबाब में लिखा है, इस में इख़्तिलाफ़ है, कि बक़ीअ् में हाज़िरी की इब्तिदा कहां से करे। बाज़ ने हज़रत उस्मान रज़ि० से फ़रमाया इस लिये कि वह सब हज़रात से, जो वहां आराम फ़रमा रहे हैं, अफ़ज़ल हैं, बाज़ ने हज़रत इब्राहीम रज़ि० से, इसलिये कि वह हुज़ूर सल्ल० के जिगर गोशा हैं। हुज़ूर सल्ल० ने उनके बारे में फ़रमाया कि अगर इब्राहीम ज़िंदा रहते तो नबी होते। बाज़ ने हज़रत अब्बास रज़ि० से, इसलिये कि वह हुज़ूर सल्ल० के चचा हैं और बक़ीअ् में सबसे अव्वल उनकी क़ब्र मुबारक आती है। वहां से बग़ैर सलाम के आगे चले जाना बे अदबी है, नीज़ उनके क़रीब हज़रत हसन रज़ि० और दीगर अहले बैत हैं कि उन सब का मजमूआ हज़रत उस्मान रज़ि० की फ़ज़ीलत से बढ़ जायेगा।

मुल्ला अली क़ारी रह० कहते हैं कि यह मुवज्जह है और ज़ियारत करने वालों को इसी में सहूलत है कि यह जगह बक़ीअ् में सबसे पहले आती है।

54. इमाम ग़ज़ाली रह० ने लिखा है, मुस्तहब यह है कि हर पंज शंबा (जुमेरात) को शुहदा-ए-उहुद की ज़ियारत करे। सुबह की नमाज़ मस्जिदे नबवी में पढ़कर चला जाये ताकि ज़ुहर तक वापसी हो जाये और कोई नमाज़ मस्जिदे नबवी की फ़ौत न हो।

साहिबे इत्तिहाफ़ लिखते हैं कि पंज शंबा (जुमेरात) की खुसूसियत इस वजह से शायद हो कि यह वाक़िआ इस दिन हुआ या इस वजह से कि यह दिन मदीना वालों की फ़रागत का है या इस वजह से कि हुज़ूर सल्ल० ने पंज शंबा की सुबह में उम्मत के लिये बरकत की ख़बर या दुआ फ़रमायी या किसी और

वजह से हो, सब मुह्तमल हैं।

मुल्ला अली क़ारी रह॰ ने लिखा है कि जबले उहुद और शुहदा-ए-उहुद दोनों की मुस्तक़िल ज़ियारत की नीयत करे, इसलिये कि जबले उहुद के फ़ज़ाइल भी अहादीस में बहुत आये हैं। मुस्तहब यह है कि पंज शंबा की सुबह को सवेरे नमाज़ के बाद रवाना हो जाये ताकि ज़ुहर तक वापस हो सके और वहां जाकर सबसे अव्वल सय्यदुश् शुहदा हज़रत हमज़ा रज़ि॰ के मज़ार पर हाज़िर हो। हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि मेरे सब चचाओं में हज़रत हमज़ा रज़ि॰ अफ़ज़ल हैं। दूसरी हदीस में है कि क़ियामत के दिन सब शुहदा के सरदार हज़रत हमज़ा (रज़ि) होंगे। वहां जाकर हज़रत हमज़ा रज़ि॰ की क़ब्रे मुबारक पर निहायत ख़ुशूअ् ख़ुज़ूअ से उनकी अ़ज़्मत व एहतिराम की रिआयत करते हुए खड़ा हो, इसके बाद फिर दूसरे मज़ारात पर।

55. इमाम नववी रह॰ ने लिखा है कि क़ुबा की हाज़िरी का इस्तेहबाब बहुत मुअक्कद है और औला यह है कि शंबा (बार) के दिन हाज़िर हो। इस हाज़िरी में उस की ज़ियारत की नीयत हो और उसकी मस्जिद में नमाज़ पढ़ने की नीयत हो, इसलिये कि तिर्मिज़ी शरीफ़ वग़ैरह में सही हदीस में आया है कि मस्जिदे क़ुबा में नमाज़ पढ़ना बमंज़िला उमरा करने के है और एक हदीस में है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर शंबा के दिन मस्जिदे क़ुबा तशरीफ़ ले जाते थे।

मुल्ला अली क़ारी रह॰ ने लिखा है कि मस्जिदे मक्का, मस्जिदे मदीना, मस्जिदे अक़्सा के बाद सब मसाजिद से अफ़ज़ल मस्जिदे क़ुबा है। बल्कि एक रिवायत में तो हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद यहां तक नक़ल किया गया कि मैं दो रक्अत मस्जिदे क़ुबा में पढ़ूं यह मुझे मस्जिदे अक़्सा में दो दफ़ा जाने से ज़्यादा महबूब है, लेकिन मशहूर रिवायात से मस्जिदे अक़्सा की फ़ज़ीलत ज़्यादा मालूम होती है। यह भी हो सकता है कि फ़ज़ीलत और चीज़ है महबूबियत दूसरी चीज़ है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मामूल ज़्यादातर शंबा को तशरीफ़ ले जाने का था। और दो शंबा को तशरीफ़ ले जाना और 20 रमज़ान की सुबह को तशरीफ़ ले जाना भी वारिद हुआ है।

56. इनके बाद मदीना पाक के दूसरे मुतबर्रक मक़ामात की ज़ियारत औला है।

इमाम नववी रह॰ ने लिखा है कि मुस्तहब यह है कि मदीना मुनव्वरा के मुतबर्रक मक़ामात की ज़ियारत करे, जो तक़रीबन तीस मवाज़े (जगहें) हैं अहले मदीना उनको जानते हैं और इसी तरह से उन सात कुओं का पानी पिये, जिनसे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का वुज़ू या गुस्ल करना वारिद हुआ है।

इमाम ग़ज़ाली रह॰ ने भी यही मज़्मून लिखा है कि बिअ्रे अरीस के पास जा कर जो मस्जिदे क़ुबा के क़रीब है, जिसके मुताल्लिक़ कहा जाता है कि इस कुएं में हुज़ूर सल्ल॰ ने अपना लबे मुबारक डाला है, उससे वुज़ू करे और उस का पानी पिये और मस्जिदे फ़त्ह के पास आये जो ख़ंदक के क़रीब है, और ऐसे ही बक़ीया मसाजिद और मुतबर्रक मक़ामात, जिनकी तायदाद तक़रीबन तीस है, अहले मदीना के यहां ये मवाक़े मारूफ़ हैं। ऐसे ही सातों कुओं का पानी शिफ़ा और बरकत की नीयत से पिये।

साहिबे इत्तिहाफ़ कहते हैं कि ये सात कुंए बिअ्रे अरीस, बिअ्रे हा, बिअ्रे रूमा, बिअ्रे अरस, बिअ्रे बुज़ाअः, बिअ्रे बुस्सा हैं और सातवें में इख़्तिलाफ़ हैं कि बिअ्रे सुक़या, विअ्रे अहन, बिअ्रे जमल में से कौन सा है। इसके बाद साहिबे इत्तिहाफ़ ने इन सब कुओं के मुताल्लिक़ अहादीस ज़िक्र की हैं।

साहिबे लुवाब कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ का इस्तेमाल, जिन कुओं से नक़ल किया जाता है, वे सत्रह हैं, लेकिन उनमें सब मारूफ़ नहीं, इसी तरह नवाहे मदीना और मक्के के रास्ते में बहुत सी मसाजिद हुज़ूर सल्ल॰ की तरफ़ मंसूब हैं, जिनमें से अक्सर ज़ियारतुल हरमैन में ज़िक्र की हैं, वहां देख लिया जाये।

57. वहां के क़ियाम में सदक़ात की कसरत रखे, बिलख़ुसूस मदीना पाक के रहने वालों पर ।

साहिबे लुवाब ने लिखा है कि मदीना के मुस्तक़िल रहने वाले हों, या बाहर के लोग, जो वहां आकर मुक़ीम हो गये हों, वे बाहर के रहने वालों पर मुक़द्दम हैं, इसलिये कि मदीना के रहने वालों से मुहब्बत वाजिब है।

इमाम नववी रह॰ ने लिखा है कि मदीना के क़ियाम में जितने ज़्यादा से ज़्यादा रोज़े रख सके, रखे, जितना ज़्यादा मुम्किन हो, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पड़ोसियों पर सदक़ा करे कि यह भी हुज़ूर सल्ल॰ की

ख़िदमत गुज़ारी में दाख़िल है।

58. मदीने के क़ियाम में जो कुछ ख़रीदे उसमें यह नीयत रखे कि यहां के ताजिरों की मआश यही है। अगर इनकी तिजारत में वुसअत और फ़रोग़ रहा तो इनका यह सिलसिला-ए-मआश क़ायम रहेगा और ये हज़रात राहत से सुकून व इत्मीनान के साथ यहां क़ियाम कर सकेंगे और हम लोग इसका ज़रिया बनेंगे और जब इस इरादे से ख़रीदेगा तो उसमें यह इश्काल भी न होगा कि ज़्यादा पैसे कैसे ख़र्च हो गये कि यह हक़ीक़त में एक नौअ् का सदक़ा है, बशर्ते कि यही नीयत हो, बल्कि कुछ चीज़ें इसी नीयत से ख़रीद ले कि वैसे सदक़ा करने में, जब तक वे दाम लेने वाले के पास रहेंगे, उस वक़्त तक वह मुन्तफ़ेअ् हो सकता है और इस सूरत में उनकी तिजारत को फ़रोग़ होगा, जिससे वे देर तक मुन्तफ़ेअ् हो सकते हैं, अलबत्ता जिन हज़रात के पास सिलसिला तिजारती नहीं है, उनको वैसे ही हदिया करे और बेहतर यह है कि बजाये सदक़ा के हदिये की नीयत करे कि ये ऊँचे हज़रात हैं।

59. सब अहले मदीना के साथ हर बात में हुस्ने सुलूक और अच्छा बर्ताव करे कि वे हुज़ूर सल्ल॰ के पड़ोसी हैं।

अल्लामा ज़र्क़ानी शर्हे मुवाहिब में लिखते हैं कि वहां के रहने वालों का इकराम करो और अगर उनमें से बाज़ के मुताल्लिक़ कोई ऐसी बात कही गयी है यानी कोई ना मुनासिब हरकत उसकी मालूम भी हो तब भी वह हुज़ूर सल्ल॰ के पड़ोसी होने के शर्फ़ से बहरा अंदोज़ हैं ही और इस अजल्ल महबूब के पड़ोसी होने का फ़ख़्र तो उनको है ही, और अगर उनकी कोई बुराई बड़ी भी हो जाये तब भी पड़ोसी होने का तमग़ा तो उनसे सल्ब नहीं होगा।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद कि जिब्रील अलैहिस्सलाम मुझे पड़ोसी के बारे में बार बार वसीयत करते रहे, हर पड़ोसी को शामिल है, इसमें अच्छे बुरे की तख़्सीस नहीं, वह हर मुत्तक़ी और ग़ैर मुत्तक़ी को शामिल है और अगर कोई शख़्स उनमें से किसी के मुताल्लिक़ हुज़ूर सल्ल॰ का इत्तिबाअ् छोड़ने का इल्ज़ाम दे और यह बात उसमें साबित भी हो जाये, तब भी पड़ोसी होने की वजह से जो इकराम उसका है, उसमें कमी न की जाये कि वह इस बात की वजह से पड़ोसी होने के हक़ से महरूम नहीं हो सकता, बल्कि अल्लाह की ज़ात से क़वी उम्मीद है कि उसको मरने से पहले पहले रुजूअ् की तौफ़ीक़ अता होगी और इंशाअल्लाह ख़ात्मा बिल ख़ैर नसीब होगा।

فیا ساکنی اکناف طیبة کلکم الی القلب من اجل الحبیب حبیب

"फ़ या साकिनी अक्नाफ़ि तैब-त कुल्लुकुम,
इलल् क़ल्बि मिन अज्लिल् हबीबि हबीबु"

तर्जुमाः- "ऐ तैबा के रहने वालो, तुम सबके सब मेरे दिल को, महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वजह से महबूब हो"

इसके बाद बहुत से अश्आर उन्होंने मदनी हज़रात के बारे में लिखे।

हज़रत इमाम मालिक रह॰ जब अमीरूल मोमिनीन मेहदी के पास तशरीफ़ ले गये, तो बादशाह ने दर्ख़्वास्त की कि मुझे कुछ वसीयत फ़रमा दीजिये। हज़रत इमाम रह॰ ने फ़रमाया कि सबसे अव्वल अल्लाह जल्ल शानुहू का ख़ौफ़ और तक़्वा इख़्तियार करना, इसके बाद अहले मदीना पर मेहरबानी, कि वे हुज़ूर के शहर के रहने वाले हुज़ूर सल्ल॰ के पड़ोसी हैं। मुझे हुज़ूर सल्ल॰ का यह इर्शाद पहुँचा है कि मदीना मेरी हिजरत की जगह है, उसी में मेरी क़ब्र होगी, उसी से मैं क़ियामत के दिन उठूँगा, उसके रहने वाले मेरे पड़ोसी हैं। मेरी उम्मत के ज़िम्मे ज़रूरी है कि उनकी निगहबानी करें। जो मेरी वजह से उनकी ख़बरगीरी करेगा, मैं उसके लिये क़ियामत में शफ़ीअ् या गवाह बनूँगा और जो मेरे पड़ोसियों के बारे में मेरी वसीयत की रिआयत न करे, हक़ तआला शानुहू उसको तीनतुल ख़बाल पिलाये। दूसरी हदीस में है कि तीनतुल ख़बाल जहन्नमी लोगों का निचोड़ है, यानी पसीना, लहू, पीप वग़ैरह। *(वफ़ा अव्वल)*

60. इमाम नववी रह॰ ने लिखा है कि आदाब में से यह भी है कि मदीना तैयबा के पूरे क़ियाम में इस शहर की अज़्मत और बुज़ुर्गी का इस्तिहज़ार रहे और यह बात तसव्वुर में रहे कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने इस पाक शहर को अपने महबूब नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हिजरत के लिये पसंद फ़रमाया और यहां हुज़ूर सल्ल॰ का क़ियाम और उसको वतन बनाना मुक़द्दर फ़रमाया और इसके गली कूचों में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चलने फिरने का इस्तिहज़ार रहे।

इमाम ग़ज़ाली रह॰ कहते हैं कि जब से तेरी नज़र मदीना पाक पर पड़े, इस मज़्मून को अपने ज़ेहन में रख कि यह वह शहर है जिसको अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़ियाम के लिये पसंद

किया और इसकी तरफ़ हिजरत तज्वीज़ की और यही वह शहर है जिसमें अल्लाह जल्ल शानुहू ने शरीअते मुतह्हरा के फ़राइज़ नाज़िल किये और हुज़ूर सल्ल० ने अपनी सुन्नतें जारी कीं। इसी शहर मे आकर दुश्मनों से जिहाद किया, इसी शहर में आपके दीन को ग़लबा हासिल हुआ, यहां तक कि इसी शहर में आपका विसाल होकर आप की क़ब्रे मुबारक बनी, और इसी में आपके दो वज़ीरों की क़ब्र बनी और इसमें हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़दमे मुबारक जा बजा पड़े, और यह सोचता रह कि जिस जगह भी तेरा क़दम पड़े, वहां किसी न किसी वक़्त में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का क़दम मुबारक भी पड़ा होगा, इसलिये अपना हर क़दम निहायत सुकून व वक़ार के साथ इस बात से डरते हुए कि इस जगह हुज़ूर सल्ल० का क़दम मुबारक भी पड़ा था और हुज़ूर सल्ल० की रफ़्तार की जो कैफ़ियत अहादीस में आयी है, उसको तसव्वुर करते हुए चल, इसके साथ ही हुज़ूर सल्ल० की अज़्मत, रफ़अते शान जलालत व अज़्मते मर्तबत कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने पाक नाम के साथ साथ हुज़ूर सल्ल० का नाम मुबारक रखा, ज़ेहन में रखो और इससे डरते रहो कि कहीं बे अदबी की नहूसत से अपने पहले नेक अमल भी ज़ाया न हो जायें।

यह इमाम ग़ज़ाली रह० ने क़ुरआन पाक की आयत –

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْٓا اَصْوَاتَكُمْ (حجرات)

के मज़्मून की तरफ़ इशारा किया, जिसका तर्जुमा यह है कि।

ऐ ईमान वालो, तुम अपनी आवाज़ें नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आवाज़ से ऊँची न करो और न उनसे ऐसे ज़ोर से गुफ़्तगू करो, जैसा कि आपस में एक दूसरे से बातें करते हैं (ऐसा न हो कि इससे) तुम्हारे आमाल बर्बाद हो जायें और तुम्हें ख़बर भी न हो।

नं० 31 पर यह मज़्मून तफ़सील से गुज़र चुका है। इसके बाद इमाम ग़ज़ाली रह० लिखते हैं कि फिर उस दौर का तसव्वुर करो जब कि सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन की जमाअत यहां हाज़िर थी। हुज़ूर सल्ल० के मुशाहदे और हुज़ूर सल्ल० के बा-बरकत कलाम के सुनने से मुस्तफ़ीद होते थे:-

चमन के तख़्त पर जिस दम शहे गुल का तजम्मुल था,
हज़ारों बुलबुलों की फ़ौज थी, एक शोर था, गुल था।

जब आये दिन ख़िज़ां के कुछ न था जुज़ ख़ार गुलशन में,
बताता बाग़बां रो रो यहां गुंचा, यहां गुल था॥

उसके बाद इस पर अफ़सोस और रंज व ग़म करो कि मैं हुज़ूर सल्ल० की और सहाबा-ए-किराम रज़ि० की भी ज़ियारत से महरूम रह गया और दुनिया में तो यह महरूमी हो ही गयी, आख़िरत का हाल मालूम नहीं क्या हो, ज़ियारते अक़्दस शौक़ से नसीब होती है या हसरत से कि कहीं दरबार से हटा न दिया जाऊँ। और अपनी बद आमालियां हाज़िरी में मानेअ् न बन जायें। इसलिये कि हदीस पाक में आया है कि क़ियामत में बाज़ आदमी मेरे पास से हटा दिये जायेंगे। मैं कहूँगा कि ये तो मेरे साथी हैं, तो जवाब मिलेगा कि तुम्हें मालूम नहीं कि तुम्हारे बाद इन्होंने क्या किया, बस अगर तुमने हुज़ूर सल्ल० की शरीअते मुतह्हरा के एहतिराम की ख़िलाफ़वर्ज़ी की तो इससे बे फ़िक्र न रहो कि किसी वक़्त यह बेराही तुम्हारे और हुज़ूर सल्ल० के दर्मियान हायल न हो जाये और इसके साथ ही अल्लाह की पाक ज़ात से उम्मीदें वाबस्ता रखो कि जब उसने दुनिया में इतनी दूर वतन से इस दरबार की हाज़िरी की सआदत नसीब फ़रमायी तो उसके लुत्फ़ व करम से बईद नहीं कि आख़िरत की बा बरकत ज़ियारत से महरूम न फ़रमायेगा। हक़ तआला शानुहू इस सआदत से इस सियह कार को भी नवाज़ दे। "आमीन या रब्बल आलमीन बिवसीलति नबिय्यि-क सय्यिदिल मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम०"

61. जब ज़ियारते सय्यिदुल इन्स वल जान्न, फ़ख़्रे आलम अलैहिस्सलातु वस्सलाम और ज़ियारते मशाहिदे मुतबर्रका से फ़राग़त के बाद वापसी का इरादा हो तो मुल्ला अली क़ारी रह० ने लिखा है कि मुस्तहब यह है कि मस्जिदे नबवी में दो रक्अत नफ़्ल अल विदाई पढ़े और रोज़े में हो तो बेहतर है, उसके बाद अपनी ज़रूरियात के लिये दुआयें करे और हज व ज़ियारत के क़ुबूल की दुआएं करे और ख़ैर व आफ़ियत के साथ वतन पहुँचने की दुआ करे और यह दुआ करे कि यह हाज़िरी आख़िरी न हो, फिर भी इस पाक दरबार की हाज़िरी नसीब हो और इस की कोशिश करे कि रूख़सत के वक़्त कुछ आंसू निकल आयें कि यह क़ुबूलियत की अलामात में से है। फिर रोना न आवे तब भी रोने वालों की सी सूरत के साथ हसरत व रंज व ग़म साथ लिये हुए वापस हो, और चलते वक़्त भी कुछ सदक़ा जो मयस्सर हो करे और सफ़र से वापसी के वक़्त जो दुआयें अहादीस में वारिद हुई हैं वे पढ़ते हुए और वापसी सफ़र के आदाब की रिआयत करते हुए वापस

हो:-

उठ के साक़िब गो चला आया हूँ उसकी बज़्म से,
दिल की तस्कीन का मगर सामां उसी महफ़िल में है।

अपनी ना अहिलयत से हाज़िरी के आदाब पूरे न लिख सका, नमूने के तौर पर चंद आदाब लिख दिये हैं, नाज़िरीन इससे अंदाज़ा लगायें और दो उसूल के तहत में शरीअते मुतह्हरा के दायरे के अंदर रहकर जो कुछ कर सकते हों, कसर न छोड़ें। अव्वल अदब व एहतिराम, दूसरे शौक़ व ज़ौक़ इसके बाद ज़ाइरीन के चंद वाक़िआत पर इस फ़स्ल को ख़त्म करता हूँ कि उनके हालात भी नमूना और उस्वा हैं। अत्बी रह० का मशहूर क़िस्सा और इसके अलावा चंद वाक़िआत इससे पहली फ़स्ल के ख़त्म पर भी गुज़र चुके हैं।

❁❁❁❁❁❁❁❁❁❁❁

1. हज़रत उवैस क़रनी रह० मशहूर ताबिई हैं, सय्यिदुत्ताबिओन उनका लक़ब है। हुज़ूर सल्ल० का ज़माना उन्होंने पाया है, मगर मां की ख़िदमत की वजह से हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िरी से क़ासिर रहे। हुज़ूर सल्ल० से उनके मुताल्लिक़ नक़ल किया गया कि बेहतरीन ताबिई उवैस क़रनी हैं।

एक रिवायत में उनके मुताल्लिक़ आया है कि अगर वह किसी बात पर क़सम खा लें तो अल्लाह जल्ल शानुहू उसको पूरा करें।

एक हदीस में उनके मुताल्लिक़ आया है कि जो उनसे मिले, उनसे अपने लिये मग़्फ़िरत की दुआ कराये।

एक हदीस में हज़रत उमर रज़ि० और हज़रत अली रज़ि० को हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि उनसे अपने लिये इस्तिग़्फ़ार करायें। बड़े फ़ज़ाइल उनके अहादीस में वारिद हैं। जंगे सिफ़्फ़ीन में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की हिमायत में शहीद हुए। *(इसाबा)*

जब हज किया और मदीना तैयबा की हाज़िरी पर मस्जिदे नबवी में दाख़िल हुए, तो किसी ने इशारे से बताया कि यह क़ब्रे अत्हर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की है, तो बेहोश होकर गिर पड़े। जब ग़शी से इफ़ाक़ा हुआ तो फ़रमाने लगे कि मुझे ले चलो, मुझे उस शहर में चैन नहीं जिसमें

हुज़ूर सल्ल॰ मद्फ़ून हों। (इत्तिहाफ़)

2. एक बद्दू क़ब्रे अत्हर पर हाज़िर हुए और खड़े होकर अर्ज किया या अल्लाह, तूने ग़ुलामों के आज़ाद करने का हुक्म दिया है, यह तेरे महबूब हैं और मैं तेरा ग़ुलाम हूँ। अपने महबूब की क़ब्र पर मुझ ग़ुलाम को आग से आज़ादी अता फ़रमा। ग़ैब से एक आवाज़ आयी कि तुमने अपने तंहा के लिये आज़ादी मांगी तमाम आदमियों के लिये आज़ादी क्यों न मांगी, हमने तुम्हें आग से आज़ादी अता की। (मुवाहिब)

3. अस्मई रह॰ कहते हैं कि एक बद्दु क़ब्र शरीफ़ के सामने आ कर खड़े हुए और अर्ज़ किया, या अल्लाह यह आपके महबूब हैं और मैं आपका ग़ुलाम और शैतान आपका दुश्मन। अगर आप मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दें तो आपके महबूब का दिल खुश हो, आप का ग़ुलाम कामियाब हो जाये और आपके दुश्मन का दिल तिलमिलाने लगे, और अगर आप मग़्फ़िरत न फ़रमायें तो आपके महबूब को रंज व ग़म हो और आप का दुश्मन खुश हो और आप का ग़ुलाम हलाक हो जाये। या अल्लाह, अरब के करीम लोगों का दस्तूर यह है कि जब उनमें कोई बड़ा सरदार मर जाये तो उसकी क़ब्र पर ग़ुलामों को आज़ाद किया करते हैं और यह पाक हस्ती सारे जहानों की सरदार है, तू इसकी क़ब्र पर मुझे आग से आज़ादी अता फ़रमा।

अस्मई रह॰ कहते हैं कि मैंने उससे कहा कि ऐ अरबी शख़्स, अल्लाह जल्ल शानुहू ने तेरे इस बेहतरीन सवाल पर (इंशा अल्लाह) तेरी ज़रूर बख़्शिश कर दी। (मुवाहिब)

4. हज़रत हसन बसरी रह॰ फ़रमाते हैं कि हज़रत हातिम असम्म बलख़ी रह॰ जो मशहूर सूफ़िया में हैं, कहते हैं कि तीस बरस तक एक क़ुब्बा में उन्होंने चिल्ला किया था कि बे ज़रूरत किसी से बात नहीं की। जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र पर हाज़िर हुए तो इतना ही अर्ज़ किया ऐ अल्लाह, हम लोग तेरे नबी की क़ब्रे अत्हर की ज़ियारत को हाज़िर हुए तू हमें ना मुराद वापस न कीजियो। ग़ैब से एक आवाज़ आयी कि हमने तुम्हें अपने महबूब की क़ब्र की ज़ियारत नसीब ही इसलिये की कि उसको क़ुबूल करें। जाओ हमने तुम्हारे और तुम्हारे साथ जितने हाज़िरीन हैं, सब की मग़्फ़िरत कर दी।

(ज़ुर्क़ानी अलल मुवाहिब)

बाज़ औक़ात अलफ़ाज़ चाहे कितने ही मुख़्तसर हों, जब इख़्लास से निकलते हैं तो वे सीधे पहुँचते हैं।

5. शैख़ इब्राहीम बिन शैबान रह० फ़रमाते हैं कि मैं हज से फ़राग़त पर मदीना मुनव्वरा हाज़िर हुआ और क़ब्रे अत्हर पर हाज़िर होकर मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में सलाम अर्ज़ किया तो हुजरे शरीफ़ के अंदर से मैंने "व अलैकस्सलाम" जवाब में सुना। *(क़ौलुन बदीअ़)*

6. अल्लामा क़स्तलानी रह० जो मशहूर मुहद्दिस हैं, मुवाहिब लदुन्निय: में लिखते हैं कि मैं एक मर्तबा इस क़दर सख़्त बीमार हुआ कि तबीब इलाज से आजिज़ हो गये और कई साल तक मुसलसल बीमार चला। मैंने एक मर्तबा 28 जमादिल ऊला 893 हि० को जब कि मैं मक्का मुकर्रमा में हाज़िर था, हुज़ूर सल्ल० के वसीले से दुआ की। इसके बाद मैं सो रहा था कि मैंने ख़्वाब में देखा कि एक आदमी हैं जिनके हाथ में एक काग़ज़ है, जिसमें यह लिखा हुआ है कि यह दवा अहमद बिन क़स्तलानी के लिये हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ से हुज़ूर सल्ल० के इर्शाद से अता हुई है। मैं ख़्वाब से जागा तो मर्ज़ का असर तक भी न था। वह फ़रमाते हैं कि सन् 885 हि० में मुझे एक वाक़िआ और पेश आया कि मैं क़ब्र शरीफ़ की ज़ियारत से वापस हो रहा था कि रास्ते में एक हबशी हिरन ने मेरी ख़ादिमा के टक्कर मारी, जिससे वह गिर गयी और कई दिन तक सख़्त तक्लीफ़ रही। मैंने हुज़ूर सल्ल० के वसीले से उसके लिये दुआ-ए-सेहत की तो ख़्वाब में देखा कि एक शख़्स हैं, जिनके साथ एक जिन्न है, जिसने हिरन की सूरत में ख़ादिमा को टकराया था। वह साहब कहने लगे कि इस को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तेरे पास भेजा है। मैंने उस जिन्न को मलामत की और इसको क़सम दी कि फिर कहीं ऐसी हरकत न करना। इसके बाद जो मेरी आंख खुली तो उस ख़ादिमा पर कुछ भी असर तक्लीफ़ का न था। *(मुवाहिब)*

7. हज़रत इब्राहीम ख़वास रह० फ़रमाते हैं कि मैं एक सफ़र में प्यास से इस क़दर बेचैन हुआ कि चलते चलते प्यास की शिद्दत से बेहोश होकर गिर गया। किसी ने मेरे मुंह पर पानी डाला। मैंने जो आंखें खोलीं तो एक शख़्स हसीन चेहरा, निहायत ख़ूबसूरत घोड़े पर सवार खड़ा है। उसने मुझे पानी पिलाया, और कहा कि मेरे साथ घोड़े पर सवार हो जाओ। थोड़ी देर चले थे, वह कहने लगे, यह क्या

आबादी है? मैंने कहा, यह तो मदीना मुनव्वरा आ गया। कहने लगे, उतर जाओ। और जब रौज़ा-ए-अक़्दस पर हाज़िर हो तो यह अर्ज़ कर देना कि आपके भाई ख़ज़िर ने भी सलाम अर्ज़ किया है। *(रौज़ पेज 90)*

8. शैख़ अबुल ख़ैर अक़्तअ् रह० फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा मदीना तैयबा हाज़िर हुआ और पांच दिन ऐसे गुज़र गये कि खाने को कुछ भी न मिला कोई चीज़ चखने की भी नौबत न आयी। मैं क़ब्रे अत्हर पर हाज़िर हुआ। और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़राते शैख़ैन पर सलाम अर्ज़ करके मैंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह मैं आज रात को हुज़ूर का मेहमान बनूँगा। यह अर्ज़ करके वहां से हट कर मिंबर शरीफ़ के पीछे जाकर सो गया। मैंने ख़्वाब में देखा कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ फ़रमा हैं, दायीं जानिब हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ हैं और बायीं जानिब हज़रत उमर फ़ारूक़ हैं और हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू सामने हैं। हज़रत अली रज़ि० ने मुझको बुलाया और फ़रमाया कि देख हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ़ लाये हैं, मैं उठा तो आपने मुझे एक रोटी मरहमत फ़रमायी। मैंने आधी खायी और जब मेरी आंख खुली तो आधी मेरे हाथ में थी। *(रौज़, वफ़ा)*

इसी क़िस्म का एक क़िस्सा शैख़ इब्ने जिला रह० का नं० 22 पर आ रहा है।

9. अब्दाल में से एक शख़्स ने हज़रत ख़ज़िर अलैहि० से दर्याफ़्त किया कि तुमने अपने से ज़्यादा मर्तबे वाला भी कोई वली देखा? फ़रमाने लगे हां देखा है, मैं एक मर्तबा मदीना तैयबा में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद में हाज़िर था। मैंने इमाम अब्दुर्रज़्ज़ाक़ मुहद्दिस रह० को देखा कि वह अहादीस सुना रहे है। और मज्मा उनके पास अहादीस सुन रहा है। और मस्जिद के एक कोने में एक जवान घुटनों पर सर रखे अलाहिदा [illegible]ा है। मैंने उस जवान से कहा, तुम देखते नहीं कि मज्मा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसें सुन रहा है तुम उनके साथ शरीक नहीं होते? उस जवान ने न तो सर उठाया और न मेरी तरफ़ इल्तिफ़ात किया और कहने लगा कि इस जगह वे लोग हैं जो रज़्ज़ाक़ के अब्द से हदीसें सुनते हैं और यहां वे हैं जो ख़ुद रज़्ज़ाक़ से सुनते हैं न कि उसके अब्द (बन्दे) से। हज़रत ख़ज़िर अलैहि० ने फ़रमाया कि अगर तुम्हारा कहना हक़ है तो बताओ कि मैं कौन हूँ। उसने अपना सर उठाया और कहने लगा कि अगर फ़िरासत सही है तो आप ख़ज़िर हैं। हज़रत ख़ज़िर फ़रमाते हैं कि इससे

मैंने जाना कि अल्लाह जल्ल शानुहू के बाज़ वली ऐसे भी हैं। जिनके उलुव्वे मर्तबा की वजह से मैं उनको नहीं पहचानता। हक़ तआला शानुहू उनसे राज़ी हो और हमको भी उनसे नफ़ा पहुँचाये। आमीन। *(रौज़)*

10. एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि हम मदीना मुनव्वरा में हाज़िर थे और उन करामात का तज़्किरा कर रहे थे जो अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने से ताल्लुक़ रखने वालों को अता फ़रमायी हैं। एक नाबीना हमारे क़रीब बैठे हुए हमारी बातें सुन रहा था। वह आगे बढ़ा और कहने लगा कि मुझे तुम्हारी बातों से उंस (लागव) हुआ एक बात सुनो। मैं अयालदार आदमी था, बक़ीअ् में लकड़ियां काटने जाया करता था। मैंने एक मर्तबा वहां एक नौ जवान को देखा कि उस पर कत्तान का कुर्ता है। हाथ में जूते ले रखे हैं। मैंने ख़्याल किया कि कोई पागल है। मैंने उसके कपड़े छीनने का इरादा किया और उससे कहा कि अपने कपड़े उतार दे, उसने कहा जा अल्लाह की हिफ़ाज़त में चला जा। मैंने दोबारा सेहबारा इसी तरह तक़ाज़ा किया। उसने कहा कि मेरे कपड़े ज़रूर ही लेगा। मैंने कहा कि इसके बग़ैर चारा नहीं, उसने दो उंगलियों से मेरी आंखों की तरफ़ इशारा किया। वे दोनों निकल कर बाहर गिर पड़ीं। मैंने कहा, तुझे ख़ुदा की क़सम! तू यह बता दे कि तू कौन है? वह कहने लगा कि मैं इब्राहीम ख़्वास हूँ।

साहिबे रौज़ कहते हैं कि हज़रत ख़्वास रह॰ ने अपने लुटेरे पर अंधे होने की बद् दुआ की और हज़रत इब्राहीम बिन अधम रह॰ ने उस सिपाही के लिये, जिसने उनको पीटा था जन्नत की दुआ की। इसकी वजह यह है कि हज़रत ख़्वास रह॰ ने चोर की हालत से यह अंदाज़ा फ़रमा लिया था कि वह बग़ैर सज़ा के तौबा नहीं करेगा और हज़रत इब्राहीम रह॰ को यह अंदाज़ा हुआ कि सज़ा से वह तौबा न करेगा, इस लिये उस पर दुआ का एहसान किया, जिसकी बरकत से उसको तौबा नसीब हुई और जब वह माफ़ी चाहने के लिये माज़िरत के तौर पर हाज़िर हुआ तो हज़रत इब्राहीम ने फ़रमाया कि जो सर माज़िरत का मुहताज था, वह मैं बलख़ में छोड़ आया। *(रौज़)*

11. एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मैं मक्का मुकर्रमा में था। मेरे पास एक यमन के रहने वाले बुज़ुर्ग आये और फ़रमाया कि मैं तुम्हारे लिये एक हदिया लाया हूँ। इसके बाद उन्होंने एक दूसरे साहब से जो उनके साथ थे कहा कि अपना क़िस्सा इनको सुनाओ। उन्होंने अपना यह क़िस्सा सुनाया कि जब मैं हज के इरादे से सन्आ से चला तो बड़ा मज्मा मुझे बाहर तक रूख़सत करने के वास्ते आया और

रूख़सत करते वक़्त एक शख़्स ने उनमें से मुझसे कह दिया जब तुम मदीना तैयबा हाज़िर हो तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़राते शैख़ैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा की ख़िदमात में मेरा भी सलाम अर्ज़ कर देना। मैं मदीना तैयबा हाज़िर हुआ और उस आदमी का सलाम अर्ज़ करना भूल गया। जब मदीना तैयबा से रूख़सत होकर पहली मंज़िल ज़ुल हुलैफ़ा पर पहुँचा और एहराम बांधने लगा तो मुझे उस शख़्स का सलाम याद आया। मैंने अपने साथियों से कहा कि मेरे ऊँट का भी ख़्याल रखना मुझे मदीना तैयबा वापस जाना पड़ गया। एक चीज़ भूल आया। साथियों ने कहा कि अब क़ाफ़िले की रवानगी का वक़्त है, तुम फिर मक्के तक भी क़ाफ़िले को न पा सकोगे, मैंने कहा, तो मेरी सवारी को भी अपने साथ लेते जाना। यह कह कर मदीना तैयबा लौट आया और रौज़ा-ए-अक़्दस पर हाज़िर होकर उस शख़्स का सलाम मैंने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में और हज़राते शैख़ैन की ख़िदमत में पहुँचाया, उस वक़्त रात हो चुकी थी। मैं मस्जिद से बाहर निकला तो एक आदमी ज़ुल हुलैफ़ा की तरफ़ से आता हुआ मिला मैंने उससे क़ाफ़िले का हाल पूछा तो उसने कहा कि वह रवाना हो चुका। मैं मस्जिद में लौट आया और यह ख़्याल हुआ कि दूसरा क़ाफ़िला किसी वक़्त जाता हुआ मिलेगा तो उसके साथ रवाना हो जाऊँगा। मैं रात को सो गया। अख़ीर शब में मैंने हुज़ूर सल्ल० और हज़राते शैख़ैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा की ज़ियारत की। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह, यह शख़्स है। हुज़ूर सल्ल० मेरी तरफ़ मुतवज्जह हुए और फ़रमाया अबुल वफ़ा, मैंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! मेरी कुन्नियत तो अबुल अब्बास है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि तुम अबुल वफ़ा हो (यानी वफ़ादार) इसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे मस्जिदे हराम (यानी मक्का मुकर्रमा की मस्जिद) में रख दिया। मैं मक्का मुकर्रमा में आठ दिन तक मुक़ीम रहा। इसके बाद मेरे साथियों का क़ाफ़िला मक्का मुकर्रमा पहुँचा। *(रौज़)*

12. अबू इमरान वासती रह० फ़रमाते हैं कि मैं मक्का मुकर्रमा से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्रे अत्हर की ज़ियारत के इरादे से चला, जब मैं हरम से बाहर निकला, मुझे इतनी शदीद प्यास लगी कि मैं अपनी ज़िन्दगी से मायूस हो गया। मैं अपनी जान से ना उम्मीद होकर एक कीकर (बबूल) के दरख़्त के नीचे बैठ गया। दफ़्अतन एक शहसवार सब्ज़ घोड़े पर सवार मेरे पास पहुँचे। उस घोड़े का लगाम भी सब्ज़ था, ज़ीन भी सब्ज़ थी, और

सवार का लिबास भी सब्ज़ था, उनके हाथ में सब्ज़ गिलास था, जिसमें सब्ज़ ही रंग का शर्बत था। वह उन्होंने मुझे पीने के लिये दिया, मैंने तीन मर्तबा पिया, मगर उस गिलास में से कुछ कम न हुआ। फिर उन्होंने मुझ से दर्याफ़्त किया कि तुम कहां जा रहे हो? मैंने कहा कि मदीना तैयबा हाज़िरी का इरादा है ताकि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में सलाम करूँ। और हुज़ूर सल्ल॰ के दोनों साथियों को सलाम करूँ। उन्होंने फ़रमाया कि जब तुम मदीना पहुँच जाओ और हुज़ूर सल्ल॰ और हज़रात शैख़ैन रज़ि॰ की ख़िदमत में सलाम कर चुको तो यह अर्ज़ कर देना कि रिज़्वान आप तीनों हज़रात की ख़िदमत में सलाम अर्ज़ करते थे। *(रौज़)*

रिज़्वान उस फ़रिश्ते का नाम है, जो जन्नत के नाज़िम हैं।

13. सय्यद अहमद रिफ़ाई रह॰ मशहूर बुज़ुर्ग अकाबिरे सूफ़िया में हैं, उनका क़िस्सा मशहूर है कि जब 555 हि॰ में हज से फ़ारिग़ होकर ज़ियारत के लिये हाज़िर हुए और क़ब्रे अत्हर के मुक़ाबिल खड़े हुए तो ये दो शेअ्र पढ़ेः-

فی حالة البعد روحی کنت ارسلها   تقبل الارض عنی وھی نائبتی

وھذہ دولة الاشباح قدحضرت   فامدد یمینک کی تحظی بھا شفتی

तर्जुमाः- दूरी की हालत में मैं अपनी रूह को ख़िदमते अक़्दस में भेजा करता था। वह मेरी नायब बनकर आस्ताना-ए-मुबारक चूमती थी। अब जिस्मों की हाज़िरी की बारी आई है। अपना दस्ते मुबारक अता कीजिये ताकि मेरे होंठ उसको चूमें।

इस पर क़ब्र शरीफ़ से दस्ते मुबारक बाहर निकला और उन्होंने उसको चूमा। *(अल्हावी लिस्सुयूती)*

कहा जाता है कि उस वक़्त तक़रीबन नव्वे (90) हज़ार का मज्मा मस्जिदे नबवी में था, जिन्होंने इस वाक़िए को देखा और हुज़ूर सल्ल॰ के दस्ते मुबारक की ज़ियारत की, जिनमें हज़रत महबूबे सुब्हानी क़ुत्बे रब्बानी शैख़ अब्दुल् क़ादिर जीलानी नव्वरल्लाहु मर्क़दहू का नामे नामी भी ज़िक्र किया जाता है। *(अल बुनियानुल मुशय्यिद)*

13. सय्यद नूरूद्दीन ऐजी शरीफ़ अफ़ीफ़ुद्दीन रह॰ के वालिद माजिद के मुताल्लिक़ लिखा है कि जब वह रौज़ा-ए-मुक़द्दसा पर हाज़िर हुए और अर्ज़

किया:-

"अस्सलामु अलै-क अय्यु हन्नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व ब-र कातुहू"

तो सारे मज्मे ने जो वहां हाज़िर था, सुना कि क़ब्र शरीफ़ से ""व अलै-कस्सलामु या व-ल-दी" का जवाब मिला। *(अलहावी)*

15. शैख़ अबू नस्र अब्दुल वाहिद बिन अब्दुल मलिक बिन मुहम्मद बिन अबी सअ्द अस्सूफ़ी अल कर्ख़ी रह० फ़रमाते हैं कि मैं हज से फ़रागत के बाद ज़ियारत के लिये हाज़िर हुआ। हुजरा-ए-शरीफ़ा के पास बैठा हुआ था कि शैख़ अबू बक्र दियार बिकरी रह० तशरीफ़ लाये और मुवाजह शरीफ़ा के सामने खड़े होकर अर्ज़ किया, अस्सलामु अलै-क या रसूलल्लाह" तो मैंने हुजरा-ए-शरीफ़ा के अंदर से यह आवाज़ सुनी "व अलैकस्सलामु या अबा बक्र" और इसको सब लोगों ने जो हाज़िर थे सुना। *(अलहावी)*

16. युसूफ़ बिन अली रह० कहते हैं कि एक हाशिमी औरत मदीना तैयबा में रहती थी और बाज़ ख़ुद्दाम उस को सताया करते थे। वह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमते अक़्दस में फ़रियाद लेकर हाज़िर हुई तो रौज़ा-ए-शरीफ़ से यह आवाज़ आयी कि -

امالك في اسوة فاصبري كما صبرت او نحوهذا

"क्या तेरे लिये मेरी इत्तिबाअ् में रग़बत नहीं, जिस तरह मैंने सब्र किया, तू भी सब्र कर।

वह औरत कहती है कि इस आवाज़ के बाद, जिस क़दर कोफ़्त मुझे थी, वह सब जाती रही और वे तीनों ख़ादिम जो मुझे सताया करते थे मर गये। *(अल हावी)*

17. हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू से मंक़ूल है कि जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दफ़्न से फ़ारिग़ हुए तो एक बद्दू हाज़िर हुए और क़ब्रे अत्हर पर पहुँच कर गिर गये और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह, आपने जो कुछ इर्शाद फ़रमाया, वह हमने सुना, और जो अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से आपको पहुँचा था और आपने उसको महफ़ूज़ फ़रमाया था उसको हमने महफ़ूज़ किया, इस चीज़ में जो आप पर अल्लाह जल्ल शानुहू ने नाज़िल की (यानी क़ुरआन पाक) यह वारिद है -

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْظَّلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ۝ (نساء ع٩)

"अगर ये लोग जब उन्होंने अपने नफ़्स पर ज़ुल्म कर लिया था, आपके पास आ जाते और आ कर अल्लाह जल्ल शानुहू से माँफ़ी मांग लेते और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी उनके लिये माफ़ी मांगते तो ज़रूर हक़ तआला शानुहू को तौबा क़ुबूल करने वाला, रहम करने वाला पाते।"

इसके बाद उस बद्दू ने कहा कि बेशक मैंने अपने नफ़्स पर ज़ुल्म किया है और अब मैं आपके पास मग़्फ़िरत का तालिब बन कर हाजिर हुआ हूँ इस पर क़ब्रे अत्हर से आवाज़ आयी कि बेशक तुम्हारी मग़्फ़िरत हो गयी। *(हावी)*

18. हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जब दुश्मनों ने हज़रत उस्मान को महसूर कर रखा था, मैं उनकी ख़िदमत में सलाम के लिये हाज़िर हुआ तो फ़रमाने लगे कि भाई, बहुत अच्छा क्या आये। मैंने इस खिड़की में से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत की। हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया, उस्मान तुम्हें इन लोगों ने महसूर कर रखा है। मैंने अर्ज़ किया जी, कर रखा है। फिर हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि तुम्हें प्यासा कर रखा है? (कि उन लोगों ने पानी अंदर जाना बंद कर दिया था) मैंने अर्ज़ किया जी हां, इस पर हुज़ूर सल्ल॰ ने एक डोल पानी का लटकाया, जिसमें से मैंने पानी पिया। इस पानी की ठंडक अब तक मेरे दोनों शानों और दोनों छातियों के दर्मियान महसूस हो रही है। इसके बाद हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि अगर तुम चाहो तो इनके मुक़ाबले में तुम्हारी मदद की जाये और तुम्हारा दिल चाहे तो यहां हमारे पास ही आकर इफ़्तार कर लेना। मैंने अर्ज़ कर दिया कि हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िरी ही चाहता हूँ। उसी दिन शहीद कर दिये गये। रज़ियल्लाहु अन्हु व अर्ज़ाहु॰ *(हावी)*

19. मक्का मुकर्रमा में एक बुज़ुर्ग, जिनको इब्ने साबित रह॰ कहा जाता था रहते थे। साठ साल तक हर साल हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत के लिये भी हाज़िर हुआ करते थे और ज़ियारत करके वापस आ जाते।एक साल किसी आरिज़ की वजह से हाज़िर न हो सके। कुछ ग़ुनूदगी की हालत में अपने हुजरे में बैठे थे कि हुज़ूर सल्ल॰ की ज़ियारत की, हुज़ूर सल्ल॰

ने इर्शाद फ़रमाया कि, इब्ने साबित, तुम हमारी मुलाक़ात को न आये इस लिये हम तुमसे मिलने आये हैं।

(हावी)

20. हज़रत उमर रज़ि॰ के ज़माने में एक मर्तबा मदीना तैयबा में क़हत पड़ा। एक शख़्स हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्रे अत्हर पर हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह, आपकी उम्मत हलाक हो रही है। अल्लाह तआला से बारिश मांग दीजिये। उन्होंने ख़्वाब में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत की। इर्शाद फ़रमाया कि उमर (रज़ि॰) से मेरा सलाम कह दो और यह कह दो कि बारिश होगी और यह भी कह देना कि (अलैक अल् कैस अल् कैस) "होशमंदी और होशियारी को मज़बूत पकड़ें"। वह शख़्स हज़रत उमर रज़ि॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और पयाम पहुँचाया। हज़रत उमर रज़ि॰ सुन कर रोने लगे और अर्ज़ किया या अल्लाह, मैं अपनी क़ुदरत के बक़द्र तो कोताही नहीं करता।

(वफ़ाउल वफ़ा)

21. मुहम्मद बिन मुन्कदिर रह॰ कहते हैं कि एक शख़्स ने मेरे वालिद के पास अस्सी अशर्फ़ियां अमानत रखीं और यह कह कर जिहाद में चला गया कि अगर ज़रूरत पड़े तो ख़र्च कर लेना, मैं वापस आकर ले लूँगा। उनके जाने के बाद मदीना मुनव्वरा में ज़्यादा तंगी पेश आयी। मेरे वालिद ने वे ख़र्च कर डालीं। जब वह वापस आये तो उन्होंने अपनी रक़म तलब की। वालिद साहब ने कल का वायदा कर लिया और रात को क़ब्रे अत्हर पर हाज़िर होकर आजिज़ी की। कभी क़ब्र शरीफ़ के क़रीब दुआ करते, कभी मिंबर शरीफ़ के मुत्तसिल तमाम रात यों ही गुज़र गयी। सुबह के क़रीब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्रे अत्हर के क़रीब दुआ कर रहे थे कि अंधेरे में एक शख़्स की आवाज़ सुनी, वह कह रहे हैं, अबू मुहम्मद, यह ले लो, मेरे वालिद ने हाथ बढ़ाया तो उन्हें एक थैली दी, जिसमें अस्सी अशर्फ़ियां थीं।

(वफ़ा)

22. अबू बक्र बिन अल मुक़री रह॰ कहते हैं कि मैं और इमाम तबरानी और अबुश्शैख़ रह॰ मदीना तैयबा में हाज़िर थे, खाने को कुछ मिला नहीं, रोज़े पर रोज़ा रखा। जब रात हुई, इशा के क़रीब मैं क़ब्रे अत्हर पर हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह, भूख, यह अर्ज़ करके मैं लौट आया। मुझ से अबुल क़ासिम रह॰ कहने लगे कि बैठ जाओ, या तो कुछ खाने को आयेगा या मौत आयेगी।

(तबरानी)

इब्ने मुन्कदिर रह॰ कहते हैं कि मैं और अबुश् शैख़ तो खड़े हो गये। तबरानी वहीं बैठे कुछ सोचते रहे, कि दफ़्अतन एक अलवी ने दरवाज़ा खटखटाया, हमने किवाड़ खोले तो उनके साथ दो गुलाम थे और उन दोनों के हाथ में एक एक बहुत बड़ी ज़ंबील थी, जिसमें बहुत कुछ था। हम तीनों ने खाया, ख़्याल था कि यह बचा हुआ ये गुलाम खायेंगे मगर वे सब कुछ वहीं छोड़ गये और वह अलवी कहने लगे कि तुम ने हुज़ूर सल्ल॰ से शिकायत की। मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत की। हुज़ूर सल्ल॰ ने हुक्म फ़रमाया कि मैं तुम्हारे पास कुछ पहुंचाऊं? *(वफ़ा)*

23. इब्ने जिला रह॰ कहते हैं कि मैं मदीन तैयबा हाज़िर हुआ। मुझ पर फ़ाक़ा था। मैं क़ब्र शरीफ़ के क़रीब हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया हुज़ूर, मैं आपका मेहमान हूँ। मुझे कुछ गुनूदगी सी आ गयी तो मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत की। हुज़ूर सल्ल॰ ने मुझे एक रोटी मरहमत फ़रमायी, मैंने आधी खायी और जब मैं जागा तो आधी मेरे हाथ में थी। *(वफ़ा)*

इससे क़ब्ल नं॰ 8 पर शैख़ अबुल ख़ैर अक़्तअ् रह॰ का क़िस्सा इस जैसा गुज़र चुका, वह दूसरा क़िस्सा है।

24. सूफ़ी अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अबी ज़रआ रह॰ फ़रमाते हैं कि मैं अपने वालिद और अबू अब्दुल्लाह बिन ख़फ़ीफ़ रह॰ के साथ मक्का मुकर्रमा हाज़िर हुआ। बड़ी सख़्त तंगी थी, फ़ाक़ा बहुत सख़्त हो गया था, इसी हालत में हम मदीना तैयबा हाज़िर हुए और ख़ाली पेट ही रात गुज़ारी। मैं उस वक़्त तक ना बालिग़ था। बार बार वालिद के पास जाता और भूख की शिकायत करता। मेरे वालिद उठ कर क़ब्र शरीफ़ के क़रीब हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह, मैं आज आप का मेहमान हूँ। यह अर्ज़ करके वहीं मुराक़बे में बैठ गये। थोड़ी देर बाद मुराक़बे से सर उठाया और सर उठाने के बाद कभी रोने लगते कभी हंसने लगते किसी ने इसका सबब पूछा तो कहने लगे कि मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत की। आपने मेरे हाथ में चंद दिरम रख दिये, हाथ खोला तो उसमें दिरम रखे हुए थे। सूफ़ी जी कहते हैं कि हक़ तआला शानुहू ने उनमें इतनी बरकत फ़रमायी कि हमने शीराज़ लौटने तक उसी में से ख़र्च किया। *(वफ़ा)*

25. शैख़ अहमद बिन मुहम्मद सूफ़ी रह॰ कहते हैं कि मैं जंगल में तेरह

माह तक हैरान व परेशान फिरता रहा। मेरे बदन की खाल भी छिल गयी। मैं उसी में मदीना तैयबा हाज़िर हुआ और रौज़ा-ए-अक़्दस पर हाज़िर होकर हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में और हज़राते शैख़ैन की ख़िदमत में सलाम अर्ज़ किया। इसके बाद मैं सो गया। मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत की। इर्शाद फ़रमाया अहमद, तुम आये, मैंने अर्ज़ किया जी हुज़ूर, हाज़िर हुआ हूँ और मैं भूखा भी हूँ, आप का मेहमान हूँ, हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि अपने दोनों हाथ खोलो। मैंने दोनों हाथ खोल दिये। हुज़ूर सल्ल॰ ने उनको दराहिम से भर दिया। मेरी जब आंख खुली तो दोनों हाथ दराहिम से भरे हुए थे। मैंने उसी वक़्त रोटी और फ़ालूदा ख़रीदा और खा कर जंगल चल दिया। (वफ़ा)

26. साबित बिन अहमद अबुल क़ासिम बग़दादी रह॰ फ़रमाते हैं कि उन्होंने एक मुअज़्ज़िन को देखा कि वह मदीना पाक में मस्जिदे नबवी में सुबह की अज़ान दे रहे थे। अज़ान में मुअज़्ज़िन ने कहा, "अस्सलातु ख़ैरूम् मिनन्नौ-मि" तो एक ख़ादिम ने आकर उनके थप्पड़ मार दिया वह मुअज़्ज़िन रोया और अर्ज़ करने लगा या रसूलल्लाह, आपकी मौजूदगी में मेरे साथ यह हो रहा है। उस ख़ादिम पर फ़ालिज गिर गया लोग उसको उठा कर उसके घर ले गये, और तीन दिन बाद वह मर गया। (वफ़ा)

27. सैय्यद अबू मुहम्मद अब्दुस्सलाम हुसैनी रह॰ कहते हैं कि मैं मदीना तैयबा में था। तीन दिन तक कुछ खाने की नौबत न आयी। मैंने मिंबर शरीफ़ के क़रीब जाकर दो रकअत नमाज़ पढ़ी इसके बाद मैंने कहा, दादा अब्बा, मुझे भूख लग रही है और मेरा दिल सरीद खाने को चाहता है। इसके बाद मैं सो गया। थोड़ी देर गुज़री थी कि एक शख़्स ने आकर मुझे जगाया और लकड़ी के एक प्याले में सरीद, उसमें ख़ूब घी और गोश्त और बहुत सी ख़ुश्बूएं पड़ी हुई थीं, मुझे दिया। मैंने पूछा कि यह कहां से आया है। वह कहने लगे कि मेरे बच्चे तीन दिन से इसका तक़ाज़ा कर रहे थे। आज मुझे कुछ मुक़द्दर से मिल गया था, इसलिये मैंने पकाया था। फिर पका कर मैं सो गया, तो मैंने ख़्वाब में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा, इर्शाद फ़रमा रहे हैं कि तेरे एक भाई ने इसकी तमन्ना मुझ से की है, इसमें से उसको भी खिलाना। (वफ़ा)

28. शैख़ अब्दुस्लाम बिन अबिल क़ासिम सक़ली रह॰. कहते हैं कि मुझ से एक शख़्स ने यह बयान किया कि मैं मदीना तैयबा में हाज़िर था। मेरे पास कोई

चीज़ नहीं थी, जिससे मैं बहुत ज़ईफ़ हो गया। मैं हुजरा शरीफ़ा पर हाज़िर हुआ और हाज़िर होकर मैंने अर्ज़ किया, ऐ अव्वलीन व आख़िरीन के सरदार, मैं मिस्र का रहने वाला हूँ। मैं पांच महीने से ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हूँ। अल्लाह जल्ल शानुहू से और आप से सवाल करता हूँ कि किसी ऐसे शख़्स को मुतय्यन फ़रमा दीजिये जो मेरे खाने की ख़बर ले लिया करे या मेरे जाने का इंतिज़ाम कर दे। फिर मैंने और दुआयें मांगीं और मिंबर शरीफ़ के पास जाकर बैठ गया। दफ़्अतन मैंने देखा कि एक शख़्स हुजरा-ए-शरीफ़ा के पास हाज़िर हुए और कुछ बोल रहे हैं। उसमें ऐ मेरे दादे, ऐ मेरे दादे, भी कह रहे है। फिर वह साहब वहां से मेरे पास आये और मेरा हाथ पकड़ कर कहा, उठो। मैं उठ कर उनके साथ हो लिया। वह मुझे साथ लेकर बाबे जिब्रील से निकले और बक़ीअ़ में से निकल कर बाहर एक ख़ेमे में ले गये। उसमें एक बांदी और एक ग़ुलाम थे। उनसे जाकर कहा उठो, अपने मेहमान के लिये खाना तैयार करो। ग़ुलाम ने लकड़ियां इकट्ठी करके आग जलायी और बांदी ने आटा पीस कर मलता (एक ख़ास क़िस्म की रोटी) तैयार की और मेज़बान ने इतनी देर मुझे बातों में लगाये रखा। जब वह तैयार हो गयी तो बांदी ने लाकर उसको आधी आधी करके दो जगह रखी, फिर घी का डिब्बा लाकर उन दोनों टुकड़ों पर बहा दिया। इसके बाद सैहानी खजूरें जो बहुत बड़ी बड़ी आला क़िस्म की खजूरें होती हैं, वे बहुत सी रखीं। फिर मुझसे कहा खाओ। मैंने खाया, उसने तक़ाज़ा किया कि और खाओ। मैंने और खाया। फिर उसने तक़ाज़ा किया, मैंने कहा मेरे सरदार, मैंने कई महीने से गेहूँ नहीं खाया था और नहीं खाया जाता, उसने मेरे पास से जो बचा था, वह भी और जो दूसरा टुकड़ा रखा हुआ था, वह एक ज़ंबील में रखा और दो साअ़ ख़ज़ूर जो तक़रीबन सात सेर पुख़्ता हुईं, उस जंबील में रखकर मुझसे दर्याफ़्त किया कि तुम्हारा नाम क्या है? मैंने नाम बताया कहने लगे, तुम्हें ख़ुदा की क़सम, फिर कभी दादा अब्बा से शिकायत न करना, उनको इससे बहुत तक्लीफ़ होती है, जब तक तुम्हारे जाने की सूरत निकले, उस वक़्त तक जब तुम्हें ज़रूरत होगी, खाना वहीं तुम्हारे पास पहुँच जाया करेगा। यह कह कर अपने ग़ुलाम से कहा कि यह जंबील लेकर इनके साथ जाओ और इनको मय इस ज़ंबीज के हुजरा-ए-शरीफ़ा तक पहुँचा कर आओ। मैं ग़ुलाम के साथ चला। बक़ीअ़ में पहुँच कर मैंने ग़ुलाम से कहा, कि बस मैं रास्ते पर पहुँच गया अब तुम वापस चले जाओ। ग़ुलाम ने कहा अल्लाहु वाहिद, मुझे इसकी क़ुदरत नहीं कि आपको हुजरा-ए-शरीफ़ा तक पहुँचाने से पहले वापस हूँ।

कभी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मेरे सरदार को इस की न ख़बर कर दें। उसने मुझे हुजरा-ए-शरीफ़ा तक पहुँचाया। मैं चार दिन तक उस ज़ंबील से खाता रहा। जब वह ख़त्म हो गयी और मुझे भूख मालूम हुई तो वही गुलाम मुझे और खाना दे गया। इसी तरह होता रहा, यहां तक कि एक क़ाफ़िला यंबूअ् जाने वाला तैयार हो गया और मैं उसके साथ यम्बूअ् चला गया। *(वफ़ा)*

29. अबुल अब्बास बिन नफ़ीस मुक़री रह० जो नाबीना भी थे, कहते हैं कि मैं तीन दिन मदीना तैयबा में भूखा रहा, तो मैं क़ब्र शरीफ़ पर यह अर्ज़ करके कि हुज़ूर सल्ल० मैं भूखा हूँ। ज़ोअ्फ़ की हालत में सो गया। एक लड़की आयी और पांव से मुझे हरकत देकर जगाया और कहा चलो, मैं साथ हो लिया। वह अपने घर ले गयी और गेहूँ की रोटी और घी और खजूरें मेरे सामने रख कर कहने लगी कि अबुल अब्बास, खाओ, मुझे मेरे दादा ने इसका हुक्म फ़रमाया है और जब भूख लगा करे, यहां आकर खा जाया करो।

अबू सुलैमान दाऊद रह० इस क़िस्से को नक़ल करके लिखते हैं कि इस क़िस्म के वाक़िआत बहुत कसरत से नक़ल किये गये हैं और उनमें बकसरत यह देखा गया कि इस क़िस्म का हुक्म हुज़ूर सल्ल० ने अपनी शरीफ़ औलाद ही को ज़्यादातर फ़रमाया है बिलखुसूस जब कि खाने की क़िस्म की कोई चीज़ देने का इर्शाद हुआ हो, और करीमों की आदत भी यही होती है कि जब कोई शख़्स ज़ियाफ़त तलब करे तो अपने ही घर से इब्तिदा फ़रमाया करते हैं। इसी ज़ाब्ते के मुवाफ़िक़ आं हज़रत सल्ल० ने भी अक्सर खाने का हुक्म अपनी ही औलाद को फ़रमाया है। *(वफ़ा)*

30. बाज़री रह० ने "तौसीक़ु उरल इमान" में अबुन्नोमान रह० से नक़ल किया है कि ख़ुरासान के रहने वाले एक साहब हर साल हज को जाया करते और जब मदीना तैयबा हाज़िर होते तो सय्यद ताहिर अलवी रह० की ख़िदमत में भी नज़राना पेश किया करते। एक साहब ने, जो मदीना ही के रहने वाले थे, इन ख़ुरासानी से एक मर्तबा यह कहा कि तुम ताहिर अलवी को जो कुछ देते हो, वह ज़ाया करते हो। वह उसको गुनाहों में ख़र्च कर देता है, ख़ुरासानी ने उस साल ताहिर साहब को कुछ न दिया और दूसरा साल भी ऐसे ही गुज़र गया कि वह अपनी आदत के मुवाफ़िक़ जो कुछ लेकर आये थे वह अहले मदीना को तक़्सीम कर गये और ताहिर साहब को कुछ न दिया। जब तीसरे साल वह हज के इरादे से अपने घर से चलने लगे तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की

ज़ियारत ख़्वाब में हुई। हुज़ूरे सल्ल० ने तंबीह फ़रमायी कि तूने ताहिर अलवी के बारे में उसके मुख़ालिफ़ की बात का यक़ीन कर लिया और जो तू उस को दिया करता था, वह बंद कर लिया। ऐसा न करना चाहिये, जो वज़ीफ़ा उसका रूका हुआ है, वह भी दो और आइंदा जब तक जारी रख सको बंद न करो। वह ख़ुरासानी बहुत ख़ौफ़ ज़दा नींद से उठे और एक थैली अलाहिदा उनके नाम की जिसमें छः सौ अशर्फ़ियां थीं, अपने साथ ले ली और जब मदीना मुनव्वरा हाज़िर हुए तो सबसे पहले सय्यद ताहिर अलवी रह० के मकान पर पहुँचे, वहां महफ़िल भर रही थी। अलवी साहब ने उन ख़ुरासानी का नाम लेकर कहा कि अगर तुमको हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इर्शाद न फ़रमाते तो तुम मुझ तक न आते। तुमने मेरे बारे में अल्लाह के दुश्मन की बात का यक़ीन कर लिया और अपना मामूल बंद कर लिया। जब हुज़ूर सल्ल० ने मलामत फ़रमायी और हुक्म फ़रमाया कि तीन साल का वज़ीफ़ा दो, जब लेकर आये हो, यह कह कर हाथ फैलाया और कहा लाओ छः सौ अशर्फ़ियां, यह सारी बात सुनकर ख़ुरासनी को और भी दहशत हुई और वह कहने लगा कि वाक़िआ तो सारा इसी तरह है, मगर तुम्हें इस सारे वाक़िए की किस तरह ख़बर हुई। अलवी ने कहा कि मुझे सारा हाल मालूम है। पहले साल जब तुमने कुछ न दिया तो इससे मेरी मओशत पर असर पड़ा,जब दूसरे साल तुम आकर चले गये और मुझे तुम्हारे आने और जाने का हाल मालूम हुआ तो मुझे बहुत ज़ैक़ हुई। मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़्वाब में देखा। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि तू रंज न कर। मैंने फ़लां ख़ुरासानी को ख़्वाब में तंबीह कर दी और उससे कह दिया कि गुज़िश्ता का भी अदा करे। और आइंदा भी हत्तल मक़्दूर बंद न करे। मैंने इस ख़्वाब पर अल्लाह का शुक्र अदा किया। जब तुम सामने आये तो मुझे यक़ीन हो गया कि तुमने ख़्वाब देख लिया। यह सुनकर ख़ुरासानी ने छः सौ अशर्फ़ियों की थैली निकाली और उनको देकर उनकी दस्तबोसी की और अपनी कोताही की माफ़ी चाही कि मैंने तुम्हारे मुख़ालिफ़ की बात का यक़ीन कर लिया।

सैय्यद समहौवी रह० ने इस क़िस्से को नक़ल करने के बाद लिखा है कि यह ताहिर अलवी ताहिर बिन यहया बिन हुसैन बिन जाफ़र अलहुज्जः बिन उबैदुल्लाह बिन ज़ैनलु आबिदीन अली बिन अल इमाम हुसैन रिज़्वानुल्लाहि अलैहिम अज़मईन हैं। *(शिफ़ा)*

31. एक औरत हज़रत आइशा रज़ि० की ख़िदमत में हाज़िर हुई और

दर्ख़्वास्त की कि मुझे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्रे अतहर की ज़ियारत करा दो। हज़रत आइशा रज़ि॰ ने हुजरा-ए-शरीफ़ा के उस हिस्से को, जिसमें क़ब्र शरीफ़ थी, परदा हटा कर खोला। वह औरत क़ब्र शरीफ़ की ज़ियारत करके रोती रही और रोते रोते वहीं इंतिक़ाल कर गयी। रज़ियल्लाहु अन्हा व अरज़ाहा। *(शिफ़ा)*

32. ख़ालिद बिन मअ्दान रह॰ की बेटी अब्दह रह॰ कहती हैं कि मेरे वालिद का हमेशा यह मामूल था कि रात को जब सोने लेटते तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत के शौक़ में बेचैन हो जाते और मुहाजिरीन और अंसार सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ का नाम लेकर याद करते और कहते या अल्लाह, यही हज़रात मेरे उसूल व फ़ुरूअ् हैं, मेरा दिल उनसे मिलने को बेताब है, मेरा इश्तियाक़ बढ़ता जा रहा है। या अल्लाह मुझे जल्दी से मौत अता फ़रमा कि उनसे मिलूँ। इसी में नींद आ जाती तो सो जाते। *(शिफ़ा)*

33. उस्मान बिन हुनैफ़ रज़ि॰ कहते हैं कि एक साहब हज़रत उस्मान रज़ि॰ के पास अपनी किसी ज़रूरत से बार बार हाज़िर होते थे। वह उनकी तरफ़ इल्तिफ़ात न फ़रमा रहे थे, न उनकी ज़रूरत की तरफ़ तवज्जोह फ़रमा रहे थे। उन साहब ने इब्ने हुनैफ़ रह॰ से इसकी शिकायत की। उन्होंने यह तर्कीब बतायी कि तुम वुज़ू कर के मस्जिदे नबवी में जाओ और दो रकअत नफ़्ल पढ़ कर यह दुआ पढ़ो :-

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُكَ وَاَتَوَجَّهُ اِلَيْكَ بِنَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَبِيِّ الرَّحْمَةِ يَا مُحَمَّدُ اِنِّیْ اَتَوَجَّهُ بِكَ اِلٰى رَبِّكَ اَنْ تَقْضِىَ حَاجَتِیْ

"अल्लाहुम्-म इन्नी अस्अलु-क व अ-त-वज्जहु इलै-क बिनबिय्यिना मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल-म नबिय्यिर्रहमति या मुहम्मद् इन्नी अ-त-वज्जहु बि-क इला रब्बि-क अन् तुक़ज़ा हाज-ती॰"

और यह दुआ पढ़ कर अपनी हाजत को अल्लाह जल्ल शानुहू के सामने पेश करो। उन्होंने इस के मुवाफ़िक़ किया। इसके बाद वह हज़रत उस्मान रज़ि॰ की ख़िदमत में गये। वहां पहुँचते ही दरबान आया और उनको हाथों हाथ ले गया। वहां पहुँचे तो हज़रत उस्मान रज़ि॰ ने बहुत इक्राम किया, अपनी जगह बिठाया और उनकी ज़रूरत को ख़ुद दर्याफ़्त करके पूरा किया और इसकी माज़िरत फ़रमायी कि इस वक़्त तक तुम्हारी ज़रूरत को पूरा न कर सका और आइंदा के लिये इर्शाद

फ़रमाया कि जो ज़रूरत हुआ करे, बे तकल्लुफ़ कह दिया करें। यह साहब जब हज़रत उस्मान रज़ि॰ के पास से वापस आये तो इब्ने हुनैफ़ रह॰ से मिले और उनका बहुत शुक्रिया अदा किया कि तुम्हारी सिफ़ारिश से मेरा काम हो गया। हक़ तआला शानुहू तुम्हें इसकी जज़ा-ए-ख़ैर दे।

इब्ने हुनैफ़ रज़ि॰ ने कहा कि मैंने कोई सिफ़ारिश नहीं की। बल्कि बात यह है कि मैं हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर था कि एक नाबीना हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अपनी बीनाई की शिकायत की। हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि सब्र करो और कहो तो मैं दुआ कर दूँ। उन्होंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह कोई हाथ पकड़ने वाला भी मेरे पास नहीं है। इसकी बहुत तक्लीफ़ है। तो हुज़ूर सल्ल॰ ने यही तर्कीब उनको बतायी थी कि वुज़ू करके दो रक्अत नमाज़ पढ़ें, फिर इस दुआ को पढ़ कर दुआ करें।

इब्ने हुनैफ़ रज़ि॰ कहते हैं कि थोड़ा अर्सा भी न गुज़रा था कि वह नाबीना ऐसे आये, गोया उनकी आंखों को कुछ नुक़्सान ही न पहुँचा था।

अल्लामा सुब्की रह॰ कहते हैं कि इस क़िस्से में उस्मान बिन हुनैफ़ रज़ि॰ के फ़हम से इस्तिदलाल है कि वह हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर थे।

(वफ़ा)

यानी उन्होंने इस क़िस्से को उन नाबीना के साथ मख़्सूस नहीं समझा, बल्कि हर शख़्स के लिये इस दुआ से तवस्सुल को आम समझा। इन नाबीना का क़िस्सा आदाबे ज़ियारत के नं॰ 32 पर भी गुज़र चुका है।

34. अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह॰ फ़रमाते हैं कि मैंने इमाम अबू हनीफ़ा रह॰ से सुना कि जब अय्यूब सुख़्तयानी रह॰ मदीना तैयबा में हाज़िर हुए तो मैं भी मदीना मुनव्वरा में हाज़िर था, मैंने दिल में सोचा कि मैं ग़ौर से देखूं कि यह किस तरह क़ब्र शरीफ़ पर हाज़िर होते हैं, मैंने जाकर देखा कि वह हाज़िर हुए और क़िब्ले की तरफ़ पुश्त और हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ मुंह करके खड़े हुए और बेतसन्नोअ् रोते रहे। *(वफ़ा)*

बे ज़बानी तर्जुमाने शौक़ बेहद हो तो हो,
वर्ना पेशे यार काम आती हैं तक़रीरें कहीं॥

गिरा कर चार आंसू हाले दिल सब कह दिया उनसे,
दिया मुझको ज़बां का काम चश्मे ख़ूं फशां तूने॥

35. अबू मुहम्मद इश्बेली रह० कहते हैं कि ग़र्नाता का एक शख़्स इस क़दर बीमार हुआ कि हद नहीं। अतिब्बा उसके इलाज से आजिज़ हो गये, ज़िन्दगी से मायूसी हो गयी।

वज़ीर अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अबी ज़ाल ने एक ख़त हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमते अक़्दस में लिखा, उसमें चंद शेअ्र भी लिखे जो वफ़ा उल वफ़ा में मज़्कूर हैं। वह ख़त हुज्जाज के क़ाफ़िले में से एक शख़्स को दे दिया। उसमें बीमारी से सेहत की दुआ की दख़्र्वास्त की थी, वह क़ाफ़िला जब मदीना पाक पहुँचा और वह ख़त क़ब्र शरीफ़ पर पढ़ा गया, उसी वक़्त वह बीमार अच्छा हो गया। जब वह शख़्स जिस के हाथ ख़त गया था, हज से वापस आया तो उसने देखा कि वह बीमार ऐसा था, गोया कभी कोई बीमारी उसको पहुँची ही नहीं। *(वफ़ा)*

36. हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि जब मेरे वालिद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० बीमार हुए तो यह वसीयत फ़रमायी कि मेरे इंतिक़ाल के बाद मेरी लाश रौज़ा-ए-अक़्दस पर ले जाकर अर्ज़ कर देना कि यह अबू बक्र है। आप के क़रीब दफ़न होने की तमन्ना रखता है। अगर वहां से इजाज़त हो जाये तो मुझे वहां दफ़न कर देना और इजाज़त न हो तो बक़ीअ् में दफ़न कर देना, चुनांचे आपके विसाल के बाद वसीयत के मुवाफ़िक़ जनाज़ा वहां ले जाकर क़ब्र शरीफ़ के क़रीब यही अर्ज़ कर दिया गया, वहां से एक आवाज़ हमें आयी, आदमी कहने वाला कोई नज़र नहीं आता था कि एज़ाज़ व इक्राम के साथ अंदर ले आओ।

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू फ़रमाते हैं कि जब हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० के विसाल का वक़्त क़रीब हुआ तो मुझे अपने सिरहाने बिठा कर फ़रमाया कि जिन हाथों से तुमने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ग़ुस्ल दिया था, उन्हीं हाथों से मुझे ग़ुस्ल देना और ख़ुशबू लगाना और मुझे उस हुजरे के क़रीब ले जाकर जहां हुज़ूर सल्ल० की क़ब्र है, इजाज़त मांग लेना, अगर इजाज़त मांगने पर हुजरे का दरवाज़ा खुल जाये तो मुझे वहां दफ़न कर देना, वरना मुसलमानों के आम क़ब्रस्तान (बक़ीअ्) में दफ़न कर देना।

हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं कि जनाज़े की तैयारी के बाद सबसे पहले

मैं आगे बढ़ा और मैंने जाकर अर्ज़ किया या रसूलल्लाह, यह अबू बक्र यहां दफ़न होने की इजाज़त मांगते हैं, तो मैंने देखा कि एक दम हुजरे के किवाड़ खुल गये और एक आवाज़ आयी कि दोस्त को दोस्त के पास पहुँचा दो।

अल्लामा सुयूती रह० ने ख़साइसे कुबरा में इन दोनों को ज़िक्र किया है, मुहद्दिसाना हैसियत से इस रिवायत को मुन्कर बताया है, लेकिन तारीख़ी हैसियत तो बाक़ी है ही।

37. हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रह० मशहूर ताबिई हैं, बड़े बड़े अजीब अजीब वाक़िआत उनकी इबादत, ज़ोहद और कलिमतुल् हक़्क़ कहने में किसी से न डरने के कुतुब में मौजूद हैं, पचास वर्ष तक कोई नमाज़ उनकी जमाअत से फ़ौत नहीं हुई, बल्कि तक्बीरे ऊला फ़ौत नहीं हुई और चालीस वर्ष तक किसी नमाज़ की अज़ान ऐसी नहीं हुई कि यह अज़ान से पहले से मस्जिद में मौजूद न हों और पचास वर्ष तक सुबह की नमाज़ इशा के वुज़ू से पढ़ी। *(हुलिया)*

हुर्रा की मशहूर लड़ाई जो यज़ीद के लश्करों की अहले मदीना से सन् 63 हि० में हुई उसमें सब अहले मदीना ख़ौफ़ व हिरास और जंग की कसरत की वजह से कुछ मुंतशिर और कुछ अपने घरों में छुप गये थे। मस्जिदे नबवी में फ़ौजियों के घोड़े कूदते फिरते थे। सतरह सौ ऊँचे दर्जे के मुहाजिरीन व अंसार इस जंग में शहीद हुए और दस हज़ार से ज़्यादा आम मोमिनीन अलावा बच्चों और औरतों के। *(वफ़ा)*

उस ज़माने में कई दिन तक हज़रत सईद बिन मुसय्यिब तने तंहा मस्जिदे नबवी में पड़े रहे। वह कहते हैं कि कई दिन तक इतना दूसरे आदमी मस्जिद में आना शुरू नहीं हुए। मैं हर नमाज़ के वक़्त अज़ान और तक्बीर की आवाज़ क़ब्र शरीफ़ में से सुना करता था। *(ख़ंसाइसे कुबरा, क़ौले बदीअ)*

यह उश्शाक़ व जांनिसारों का नमूना था। इबरत के लिये तीन वाक़िआत मुख़ालफ़त के लिख कर इस मज़्मून को ख़त्म करता हूँ। ये वाक़िआत इस लिहाज़ से अहम हैं कि हाज़िरीन को ऐसी कोई हरकत ज़ाहिरी या बातिनी करने से एहतिराज़ करना चाहिये जो अदब के ख़िलाफ़ हो।

38. अमीरूल मोमिनीन हज़रत मुआविय: रज़ि० के ज़माने में उनके ईमा से या महज़ सुर्ख़ रूई और तक़र्रूब हासिल करने के लिये उनके ईमा के बग़ैर मर्वान ने, जो उनकी तरफ़ से मदीना मुनव्वरा का अमीर था, यह चाहा कि हुज़ूरे

अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मिंबर शरीफ़ जो मस्जिदे नबवी में है, उसको यहां से उखाड़ कर शाम में अमीर मुआविय: के पास भेज दिया जाये और इस ग़रज़ से उसको उखड़वाना शुरू किया। उसी वक़्त दफ़्अतन आफ़ताब गहन हो गया और मदीना मुनव्वरा में इस क़दर सख़्त अंधेरा हो गया कि सितारे नज़र आने लगे। मर्वान ने आकर लोगों से माज़िरत की और खुत्बे में इसका ऐलान किया कि इस क़िस्म का कोई इरादा नहीं है बल्कि अमीर मुआविय: रज़ि॰ ने यह लिखा था कि उसको दीमक लग जाने का अंदेशा है, इसलिये उसके नीचे और सीढ़ियों का इज़ाफ़ा करके उसको ऊपर रखने का इरादा है, उसी वक़्त बढ़ई को बुलवा कर छ: सीढ़ियां बनवायीं और उनके ऊपर उस मिंबर शरीफ़ को रखा, जिसकी वजह से मिंबर शरीफ़ की कुल नौ सीढ़ियां हो गयीं वरना इससे क़ब्ल हुज़ूर सल्ल॰ के ज़माने से कुल तीन ही दर्जे थे, दो सीढ़ियां और एक ऊपर बैठने का।

(नुज़हत)

39. सुलतान नूरूद्दीन आदिल बादशाह मुत्तक़ी और साहिबे औराद व वज़ाईफ़ थे। रात का बहुत सा हिस्सा तहज्जुद और वज़ाइफ़ में ख़र्च होता था। 557 हि॰ में एक शब (रात) तहज्जुद के बाद सोये तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत हुई कि हुज़ूर सल्ल॰ ने दो कैरी आंखों वाले आदमियों की तरफ़ इशारा फ़रमा कर सुलतान से इर्शाद फ़रमाया कि इन दोनों से मेरी हिफ़ाज़त करो। सुलतान की घबराहट से आंख खुली, फ़ौरन उठ कर वुज़ू किया और नवाफ़िल पढ़ कर दोबारा लेटे तो मअन् आंख लगी और यही ख़्वाब बेऐनिही दोबारा नज़र आया, फिर जागे और वुज़ू करके नवाफ़िल पढ़ीं, फिर लेटे और मअन् आंख लगने पर तीसरी मर्तबा फिर यही ख़्वाब नज़र आया तो उठ कर कहने लगे कि अब नींद की कोई गुंजाइश नहीं, फ़ौरन रात ही को अपने वज़ीर को जो नेक सालेह आदमी थे, जमालुद्दीन नाम बताया जाता है और इस नाम में इख़्तिलाफ़ भी है, बुलाया और सारा क़िस्सा सुनाया। वज़ीर ने कहा कि अब देर की क्या गुंजाइश है। फ़ौरन मदीना तैयबा चलिये और इस ख़्वाब का तज़्किरा किसी से न कीजिये, बादशाह ने फ़ौरन रात ही को तैयारी की और वज़ीर और 20 नफ़र मख़्सूस ख़ुद्दाम लेकर तेज़ रौ ऊंटनियों पर बहुत सा सामान और माल व मताअ् लदवा कर मदीना तैयबा को रवाना हो गये और रात दिन चलकर सोलहवें दिन मिस्र से मदीना तैयबा पहुँचे। मदीना तैयबा से बाहर ग़ुस्ल किया और निहायत अदब व एहतिराम से मस्जिद शरीफ़ में हाज़िर हुए और रौज़ा-ए-जन्नत में

रक्अत नफ़्ल पढ़ी और निहायत मुतफ़क्किर बैठे सोचते रहे कि क्या करें। वज़ीर ने ऐलान किया कि बादशाह ज़ियारत के लिये तशरीफ़ लाये हैं। और अहले मदीना पर बख़्शिश और अम्वाल भी तक़्सीम होंगे और बहुत बड़ी दावत का इंतिज़ाम किया, जिसमें सारे अहले मदीना को मद्अू किया। बादशाह अता के वक़्त बहुत गहरी निगाह से लोगों को देखते। सब अहले मदीना यके बाद दीगरे आकर अतायें लेकर चले गये। मगर वे दो शख़्स जो ख़्वाब में देखे थे नज़र न आये। बादशाह ने पूछा कि कोई और बाक़ी रहा हो तो उसको भी बुला लिया जाये। मालूम हुआ कि कोई बाक़ी नहीं रहा। बहुत ग़ौर व खोज़ और बार बार कहने पर लोगों ने कहा कि दो नेक मर्द मुत्तक़ी परहेज़गार मग़्रिबी बुज़ुर्ग हैं। वे किसी की कोई चीज़ नहीं लेते। ख़ुद बहुत कुछ सदक़ात ख़ैरात अहले मदीना पर करते रहते हैं। सबसे यक्सू रहते हैं, गोशानशीन आदमी हैं। बादशाह ने उनको भी बुलवाया और देखते ही पहचान लिया कि यही वे दोनों हैं, जो ख़्वाब में दिखाये गये थे। बादशाह ने उनसे पूछा कि तुम कौन हो? कहने लगे कि मग़्रिब के रहने वाले हैं, हज के लिये हाज़िर हुए थे, हज से फ़रागत पर ज़ियारत के लिये हाज़िर हुए और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैह व सल्लम के पड़ोस में पड़े रहने की तमन्ना हुई तो यहां क़ियाम कर लिया। बादशाह ने कहा, सही सही बता दो। उन्होंने जो पहले कहा था, उसी पर इसरार किया। बादशाह ने उनकी क़ियामगाह पूछी। मालूम हुआ कि रौज़ा-ए-अक़्दस के क़रीब ही एक रिबात में क़ियाम है। बादशाह ने उनको तो वहीं रोके रखने का हुक्म दिया और ख़ुद उनकी क़ियामगाह पर गया। वहां जाकर बहुत तजस्सुस किया, वहां माल व मताअ् तो बहुत सा मिला और किताबें वग़ैरह रखी हुई मिलीं, लेकिन कोई ऐसी चीज़ न मिली, जिससे ख़्वाब के मज़्मून की ताईद होती। बादशाह बहुत परेशान और मुतफ़क्किर था। अहले मदीना बहुत कसरत से सिफ़ारिश के लिये हाज़िर हो रहे थे कि ये नेक बुज़ुर्ग दिन भर रोज़े रखते हैं, हर नमाज़ रौज़ा-ए-शरीफ़ा में पढ़ते हैं, रोज़ाना बक़ीअ् की ज़ियारत करते हैं,। हर शंबा को क़ुबा जाते हैं, किसी साइल को रद्द नहीं करते, इस क़हत के साल में अहले मदीना के साथ इंतिहाई हमदर्दी और ग़मगुसारी इन्होंने की है। बादशाह हालात सुनकर ताज्जुब करते थे और इधर उधर मुतफ़क्किर फिर रहे थे। दफ़्अतन (अचानक) ख़्याल आया कि उनके मुसल्ले को जो एक बोरिये पर बिछा हुआ था, उठाया उसके नीचे एक पत्थर बिछा हुआ था उसको उठाया तो उसके नीचे एक सुरंग निकली जो बहुत गहरी खोदी गयी थी और बहुत दूर तक चली गयी थी।

हत्ताकि क़ब्रे अत्हर तक पहुँच गयी थी। यह देख कर सब दंग रह गये। बादशाह ने उनको ग़ुस्से में कांपते हुए पीटना शुरू किया कि सही सही वाक़िआ बताओ। उन्होंने बताया कि वे दोनों नसरानी हैं और ईसाई बादशाहों ने बहुत सा माल उनको दिया है और बहुत ज़्यादा देने का वायदा किया है। वे हाजियों की सूरत बना कर आये हैं ताकि क़ब्रे अत्हर से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जसदे (जिस्म) अत्हर को ले जायें। वे दोनों रात को उस जगह को खोदा करते और जो मिट्टी निकलती उसको चमड़े की दो मश्कें उनके पास मग़रिबी शक्ल की थीं उनमें भर कर रात ही को बक़ीअ् में डाल आया करते थे। बादशाह इस बात पर कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने और उसके पाक रसूल सल्ल० ने इस ख़िदमत के लिये उनको मुन्तख़ब किया, बहुत रोये और दोनों को क़त्ल कराया और हुजरा-ए-शरीफ़ा के गिर्द इतनी गहरी खंदक़ खुदवायी कि पानी तक पहुँच गयी और उसमें रांग या सीसा पिघला कर भरवा दिया कि जसदे अत्हर तक किसी की रसाई न हो सके। *(वफ़ा अव्वल)*

40. शैख़ शम्सुद्दीन सवाब रह० जो ख़ादिमीने हरमे नबवी के रईस थे, कहते हैं कि मेरे एक मुख़्लिस रफ़ीक़ थे, जो अमीरे मदीना के यहां बहुत कसरत से आते जाते थे और मुझे भी जिस क़िस्म के काम पेश आते, उन्हीं के ज़रिये से अमीर तक पहुँचाता था, एक दिन वह रफ़ीक़ मेरे पास आये और कहने लगे कि आज बड़ा सख़्त हादसा पेश आ गया। मैंने कहा, क्या हुआ? कहने लगे कि हलब के रहने वालों की एक जमाअत अमीर के पास आयी है और बहुत सा माल रिश्वत का अमीर को इसलिये दिया है कि वह हज़राते शैख़ैन रज़ियल्लाहु अन्हुमा के मुबारक अज्साम को यहां से ले जाने पर मदद दे। अमीर ने उस को क़ुबूल कर लिया है, शैख़ सवाब रह० कहते हैं कि यह ख़बर सुनकर मेरे रंज की इंतिहा न रही। मैं इन्तिहाई फ़िक्र में था कि अमीर का क़ासिद मुझे बुलाने आ गया। मैं वहां गया। अमीर ने मुझसे कहा कि आज रात को कुछ लोग मस्जिद में आयेंगे, तुम उनसे तअर्रूज़ न करना और वे जो कुछ करें उनको करने देना, तुम किसी बात में दख़ल न देना। मैं बहुत अच्छा कह कर चला आया, मगर सारा दिन हुजरा-ए-शरीफ़ा के पीछे बैठे रोते हुए गुज़र गया। एक मिनट को आंसू न थमता था और किसी को ख़बर न थी कि मुझ पर क्या गुज़र रही है। आख़िर इशा की नमाज़ से फ़रागत पर जब सब आदमी चले गये और हमने किवाड़ वग़ैरह बंद कर लिये तो बाबुस्सलाम से कि यह दरवाज़ा अमीर के घर के क़रीब था, लोगों ने

दरवाज़ा खुलवा कर अंदर आना शुरू किया। मैं उनको एक एक करके चुपके चुपके गिन रहा था चालीस आदमी अंदर दाख़िल हुए। उनके साथ फावड़े और टोकरियां और ज़मीन खोदने के बहुत से आलात थे। वे अंदर दाख़िल होकर हुजरा-ए-शरीफ़ की तरफ़ को चले। खुदा की क़सम ! मिंबर तक भी न पहुँचे थे कि एकदम उनको मय उनके सारे साज़ व सामान के ज़मीन निगल गयी और निशान तक भी पैदा न हुआ। अमीर ने बहुत देर तक उनका इंतिज़ार करके मुझे बुला कर पूछा कि सवाब, वे लोग अभी तक तुम्हारे यहां नहीं पहुँचे? मैंने कहा, हां आये थे और ये क़िस्सा उनके साथ गुज़रा। अमीर ने कहा देखो क्या कह रहे हो? मैंने कहा, बिल्कुल ऐसा ही हुआ है, आप चलें, मैं वह जगह बताऊँ जहां यह क़िस्सा गुज़रा। अमीर ने कहा, अच्छा बस यह बात यहीं तक रहे। अगर यह बात किसी और पर ज़ाहिर की गयी तो सर उड़ा दिया जायेगा। *(वफ़ा अव्वल)*

हक़ तआला शानुहू अपने लुत्फ़ व करम से वहां के आदाब के बजा लाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। और महज़ अपने लुत्फ़ व करम से बे अदबी के वबाल से महफ़ूज़ फ़रमाए।

तंबीह:- गुज़िश्ता वाक़िआत में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब वग़ैरह में ज़ियारत के मुतअद्द क़िस्से गुज़रे। उनके मुताल्लिक़ एक ज़रूरी बात ज़ेहन नशीन कर लेना चाहिए कि जिस शख़्स ने ख़्वाब में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत की, उसने हक़ीक़त में हुज़ूर सल्ल० ही की ज़ियारत की। इसमें तरद्दुद नहीं, इसलिये कि मुतअद्द मशहूर और सही रिवायात में मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह पाक इर्शाद वारिद हुआ है कि जिसने ख़्वाब में मुझे देखा, उसने हक़ीक़त में मुझ ही को देखा है, इसलिये कि शैतान को यह क़ुदरत नहीं दी गयी कि वह मेरी सूरत बना सके। लेकिन इसके बावजूद चूंकि देखने का आला और ज़रिया खुद देखने वाले की ज़ात होती है और आले के फ़र्क़ की वजह से उस चीज़ में फ़र्क़ पड़ जाता है, जिसको देखा जाये, मसलन सुर्ख़ ऐनक, सब्ज़ ऐनक स्याह ऐनक, से जिस चीज़ को देखा जायेगा, वह ऐसी ही नज़र आयेगी जैसी ऐनक होगी, असल चीज़ के रंग में कोई फ़र्क़ न होगा जैसा कि दूरबीन, खुर्दबीन के तफ़ावुत से चीज़ में तफ़ावुत मालूम होता है और भैंगी आंख एक के बजाए दो देखती है इसलिये अगर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत में कोई चीज़ शाने वाला के मुनासिब नज़र न आये तो वह नज़र का क़ुसूर

है। इसी तरह अगर शरीअते मुतह्हरा के ख़िलाफ़ कोई बात सुनने में आये तो वह सुनने का क़ुसूर होगा।

इब्ने अमीरुल हाज्ज रह० मदख़ल में लिखते हैं कि इससे बहुत एहतिराज़ करना चाहिये कि ख़्वाब में या ग़ैबी आवाज़ से जागते में किसी ऐसी चीज़ की तरफ़ क़ल्ब को तमानीनत और सुकून हो, जो सदरे अव्वल के ख़िलाफ़ हो। इस तरह से ख़्वाब में देखने की वजह से किसी ऐसी चीज़ की तरफ़ मानूस हो, जो सलफ़ के ख़िलाफ़ हो, इससे भी एहतिराज़ करना चाहिये जैसा कि बाज़ लोगों को पेश आ गया कि उनको हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़्वाब में किसी चीज़ के करने या न करने का हुक्म फ़रमाया और देखने वाले ने महज़ ख़्वाब की बिना पर उस पर अमल शुरू कर दिया और उसको किताबुल्लाह और सुन्नते रसूलुल्लाह पर पेश करके नहीं जांचा, हालांकि हक़ तआला शानुहू का इर्शाद है :-

فَإِنْ تَنَازَعْتُمْ فِي شَيْءٍ فَرُدُّوهُ إِلَى اللهِ وَالرَّسُولِ

"और अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ रद्द करने का मतलब उसकी किताब पर पेश करना है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ रद्द करने का मतलब आप की हयात में आपकी ज़ात पर पेश करना था और आपके विसाल के बाद आपकी सुन्नत पर पेश करना है। अगरचे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद कि जिसने मुझे ख़्वाब में देखा उसने मुझ ही को देखा, बे तरद्दुद हक़ है, लेकिन हक़ तआला शानुहू ने ख़्वाब पर अमल का मुकल्लफ़ नहीं बनाया और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि तीन आदमी मर्फ़ू उल क़लम हैं उनमें :-

1. एक वह शख़्स है जो सो रहा हो, यहां तक कि जाग जाये।

(2. दूसरा बच्चा, 3. तीसरा मजनूं)

इसके अलावा यह भी वजह है कि इल्म और रिवायत उसी शख़्स से हासिल की जा सकती है जो मुतयक़्क़ज़[1] हो, हाज़िरूल अक़्ल हो, और सोने वाला ऐसा नहीं होता, इसी वजह से उलमा ने लिखा है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कोई हुक्म या मुमानअत अगर ख़्वाब में देखी जाये तो

1. जागा हुआ

उसको किताब व सुन्नत पर पेश किया जाये। अगर उनके मुवाफ़िक़ हो तो ख़्वाब भी हक़ है और कलाम भी हक़ है और यह देखने वाले की तमानीनत के लिये बशारत के तौर पर है, और अगर उनके ख़िलाफ़ हो तो समझना चाहिए कि ख़्वाब तो हक़ है, लेकिन शैतानी असर से सुनने वाले के कान में ऐसी चीज़ पड़ी, जो हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद नहीं फ़रमायी।

इमाम नववी रह० ने "तहज़ीबुल अस्मा-इ वल्लुग़ात" के शुरू में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ख़साइस में लिखा है कि जिसने आपको ख़्वाब में देखा, बेशक उसने आप ही को देखा कि शैतान आपकी सूरत नहीं बना सकता, लेकिन उसमें अगर कोई चीज़ ख़्वाब में अहकाम के मुताल्लिक़ सुनी तो उस पर अमल ज़ायज़ नहीं, न इस वजह से कि ख़्वाब में कोई तरद्दुद है, बल्कि इस वजह से कि देखने वाले का ज़ब्त मोअ्तमद नहीं।

साहिबे मदख़ल ने आगे भी इस में तवील कलाम किया है, बक़द्रे ज़रूरत नक़ल किया गया और इनके अलावा और भी बहुत से उलमा ने इसी की तसरीह फ़रमायी है, जो ऊपर गुज़रा।

दसवीं फ़स्ल

मदीना तैयबा के फ़ज़ाइल में

जिस शहर को अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने महबूबे दो जहां के सरदार की क़ियामगाह तज्वीज़ किया हो, उसके लिये इससे बढ़कर क्या फ़ज़ीलत होगी कि अल्लाह पाक ने अपने महबूब के रहने के लिये उसको पसंद किया और उसके बाद फिर किसी दूसरे शहर को उस पर क्या फ़ौक़ियत हो सकती है।

क़ाज़ी अयाज़ रह० फ़रमाते हैं कि वे मवाक़े जो वह्य के नुज़ूल के साथ आबाद हुए हों, क़ुरआन पाक उनमें नाज़िल होता रहा हो, हज़रत जिब्रील, हज़रत मीकाइल अलैहिमस्सलाम बार बार उनमें हाज़िर होते रहे हों, मुक़र्रब फ़रिश्ते उनमें उतरते रहे हों, उनके मैदान अल्लाह के पाक ज़िक्र और तस्बीह से गूंजते रहे हों,

उनकी मिट्टी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जिस्मे अत्हर पर फैली हुई हो, अल्लाह के दीन और उसके पाक रसूल सल्ल॰ की सुन्नतें वहां से इस क़द्र कसीर मिक़्दार में जारी हुई हों, वहां फ़ज़ाइल और बरकात व ख़ैरात के मशाहिद हों, वहां हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के खड़े होने के और चलने फिरने के मक़ामात हों, वे इस क़ाबिल हैं कि उनके मैदानों की ताज़ीम की जाये, उनकी ख़ुश्बुओं को सूँघा जाये, उस के दर व दीवार को चूमा जाये। *(शिफ़ा)*

अहादीस में भी इस पाक शहर और इसके बहुत से मवाज़े (मक़ामात) के फ़ज़ाइल वारिद हुए हैं, जिनमें से चंद यहां ज़िक्र किये जाते हैं।

अहादीस

(١) عن جابر بن سمرةؓ قال سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول ان الله تعالٰى سمى المدينة طابة رواه مسلم كذا فى المشكوة.

1. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने इस शहर मदीना का नाम ताबः रखा है।

फ़ायदा:- यानी हक़ तआला शानुहू ने वही के ज़रिये से इसका नाम ताबः रखा और एक रिवायत में तैयबा आया है, इसके मायने पाकी के भी हैं, और उम्दगी के भी, कि यह शिर्क की गंदगी से पाक है या यह कि इसकी आब व हवा उम्दा है, मोतदिल मिज़ाज वालों के मुवाफ़िक़ है और बाज़ ने कहा है कि इसके अंदर रहने वाले पाकीज़ा लोग हैं, उनकी वजह से ये नाम रखा गया। *(मनासिके नववी)*

इब्ने हजर मक्की रह॰ लिखते हैं कि मदीना तैयबा के तक़रीबन एक हज़ार नाम हैं, जिनमें से इमाम नववी रह॰ ने अपने मनासिक में मशहूर होने की वजह से पांच नाम ज़िक्र किये हैं :-

मदीना, ताबः, तैयबा, दार, यस्रिब।

इनमें से यस्रिब ज़मान-ए-जाहिलिय्यत का नाम है। हुज़ूर सल्ल॰ ने इसको पसंद नहीं फ़रमाया, चुनांचे सही हदीस में आया है कि लोग इसको यस्रिब

कहते हैं यह मदीना है जैसा कि दूसरी हदीस में आ रहा है, ग़ालिबन नापसंदीदगी की वजह यह है कि यसूरिब के मायने मलामत और हुज़्न के हैं, और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आदते शरीफ़ा बुरा नाम बदल कर बेहतर नाम रखने की थी, जैसा कि दूसरी हदीस के ज़ैल में मुफ़स्सल आ रहा है।

इमाम नववी रह॰ फ़रमाते हैं कि मदीना दीन से मुश्तक़ है, जिसके मायने ताअत के हैं, इसलिये यह नाम रखा गया कि इस शहर में अल्लाह की इताअत की जाती है।

साहिबे इत्तिहाफ़ ने बहुत से नाम मदीना तैयबा के नक़्ल करके लिखा है कि नामों की कसरत भी शरफ़त पर दलालत करती है और उन सब में मशहूर नाम मदीना है।

(٢) عن ابی ہریرۃؓ قال قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم

امرت بقریۃ تاکل القری یقولون یثرب وہی المدینۃ تنفی الناس کما ینفی

الکیر خبث الحدید متفق علیہ کذا فی المشکوٰۃ .

2. हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि मुझे एक ऐसी बस्ती में रहने का हुक्म दिया गया जो सारी बस्तियों को खा ले, लोग उस बस्ती को यस्रिब कहते हैं। उसका नाम मदीना है। वह बुरे आदमियों को इस तरह दूर कर देती है जिस तरह भट्ठी लोहे के मैल कुचैल को दूर कर देती है।

फ़ायदा:- इस हदीस शरीफ़ में कई मज़्मून ज़िक्र किये गये हैं :-

1. अव्वल यह कि मुझे ऐसी बस्ती में रहने का हुक्म किया गया जिससे मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्ल॰ का इस शहर में क़ियाम अपनी ख़्वाहिश और अपने इरादे से नहीं था, बल्कि अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से यहां क़ियाम का हुक्म किया गया था।

हज़रत उमर रज़ि॰ से नक़्ल किया गया कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिये मदीने को पसंद किया। *(कंज़)*

एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़्ल किया गया कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने वही भेजी है कि इन तीन बस्तियों में से जहां तुम क़ियाम करो, वहीं तुम्हारी हिजरत की जगह है, मदीना, बहरैन, किन्सरैन। *(कंज़)*

एक और हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि मुझे हिजरत की जगह

दिखायी गयी है जो एक शोर ज़मीन, दो कंकरीली ज़मीनों के दर्मियान है, यह जगह हिज्र हो (एक जगह का नाम है) या यस्रिब हो। (कंज़)

इन रिवायात में कोई तआरूज़् नहीं है। अक़रब यह है कि अव्वल हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पसंदीदगी का इख़्तियार दिया गया हो, उसके बाद हुज़ूर सल्ल० ने जब खुद हक़ सुब्हानहू व तक़द्दस से इस्तिख़ारा किया हो तो अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ से मदीना पाक की तअ़यीन हो गयी हो।

तारीख़े ख़मीस में लिखा है कि अहले सियर ने कहा है कि जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अहले मदीना से बैअते उक़्बा कर ली और सहाबा-ए-किराम मुश्रिकीन की ईज़ा रसानी की वजह से मक्का मुकर्रमा में कियाम पर क़ादिर न रहे, तो उनको मदीना तैयबा हिजरत की इजाज़त फ़रमा दी। और बुख़ारी शरीफ़ और मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल किया गया कि मुझे हिजरत की जगह दिखायी गयी, वह एक ज़मीन है जिसमें खजूर के दरख़्त हैं। मेरा ख़्याल हुआ कि यह जगह शायद यमामा है। बाद में मालूम हुआ कि वह यस्रिब है।

बाज़ उलमा ने फ़रमाया है कि अव्वल हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ऐसी सिफ़त के साथ दिखाया गया जो मदीना पाक में और दूसरी जगहों में मुश्तरक थी, इसके बाद ऐसी सिफ़ात के साथ दिखाया गया जो मदीना मुनव्वरा के साथ मख़्सूस थीं, तो वह मुतअय्यन हो गया।

एक हदीस में आया है कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी मदीना की तरफ़ हिजरत की इजाज़त चाही तो हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि ठहर जाओ, मुझे भी अंक़रीब इजाज़त होने को है।

एक और हदीस में है कि हज़रत अबू बक्र रज़ि० ने उन्हीं अय्याम में ख़्वाब देखा था कि आसमान से एक चांद मक्का मुकर्रमा में उतरा, जिसकी वजह से सारा मक्का रौशन हो गया, फिर वह चांद आसमान की तरफ़ चढ़ा और मदीना तैयबा में जा उतरा, जिसकी वजह से मदीना की सारी ज़मीन रौशन हो गयी।

यह तवील ख़्वाब है, इसी में आख़िर में है कि फिर वह चांद आइशा के घर में गया और उनके घर की ज़मीन शक़ हो गयी, जिसमें वह चांद पोशीदा हो गया।

कहते हैं कि हज़रत अबू बक्र रज़ि० को फ़न्ने ताबीर से पहले ही से बहुत

मुनासबत थी। इस ख़्वाब से उन्होंने मदीने की हिजरत और आख़िर में हुज़ूर सल्ल॰ का हज़रत आइशा रज़ि॰ के मकान में दफ़न होना समझ लिया था। *(ख़मीस)*

2. दूसरा मज़्मून यह है कि इस बस्ती की सिफ़त यह बयान की गयी है कि सारी बस्तियों को खा ले।

उलमा ने इससे मदीना तैयबा की सारी बस्तियों से अफ़ज़ल होने पर इस्तिदलाल किया है और मुतअद्द अक़्वाल उसकी शरह में नक़ल किये गये।

बाज़ उलमा ने इसका मतलब ही यह लिखा है कि वह बस्ती यानी मदीना सारी बस्तियों से अफ़ज़ल है यानी उसकी फ़ज़ीलत इतनी ग़ालिब और बढ़ी हुई है कि और सब बस्तियों की फ़ज़ीलतें उसके मुक़ाबले में मग़्लूब और कल अदम (न होने के बराबर) हैं, गोया औरों की फ़ज़ीलतें उसके मुक़ाबले में मादूम हो गयीं, यही मुराद है खा लेने से। कहते हैं कि इस मतलब की ताईद तौरात शरीफ़ से भी होती है। उसमें अल्लाह जल्ल शानुहू ने फ़रमाया है:-

يا طابة يا مسكينة انى سارفع اجاجيرك على اجاجير القرى

"ऐ ताब:, ऐ मिस्कीन शहर, मैं तेरी छतों को सारी बस्तियों की छतों पर बुलंद करूँगा।"

और बाज़ उलमा ने लिखा कि इस बस्ती के रहने वाले दूसरे शहरों को फ़त्ह कर लेंगे और उन पर ग़ालिब हो जायेंगे जैसा कि कहते हैं कि फ़लाँ शख़्स ने फ़लां को खा लिया, यानी क़ुव्वत से उस पर ग़ालिब आ गया और बाज़ उलमा ने कहा है कि दोनों मायने मुराद हैं यानी इस बस्ती की फ़ज़ीलत दूसरी बस्तियों पर ग़ालिब होगी और इसके आदमी दूसरे शहरों के आदमियों पर फ़त्ह और ग़लबा हासिल करेंगे। *(ज़ुर्क़ानी मुवाहिब)*

साहिबे मज़ाहिरे हक़ ने लिखा है कि जो कोई इस शहर में रहता है, ग़ालिब होता है और फ़त्ह करता है और शहरों को।-यह ख़ासियत है इस शहरे अज़ीमुश्शान की कि जो इसमें आता है, अक्सर शहरों पर ग़ालिब होता है। पहले इसमें क़ौमे अमालिक़ा आयी, वह ग़ालिब हुई और शहरों और विलायतों को फ़त्ह किया, फिर यहूद आये वे ग़ालिब हुए अमालिक़ा पर, फिर अंसार पहुँचे वे ग़ालिब हुए यहूद पर, फिर सय्यिदुल मुर्सलीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुहाजिरीन आये उनको किस तरह ग़लबा हुआ कि मश्रिक़ से मग़्रिब तक ले लिया।

3. तीसरा मज़्मून यह है कि लोग उसको यस्रिब कहते हैं।, उसका नाम मदीना है। ज़माना-ए-जाहिलिय्यत में इस शहर का नाम यस्रिब था। इब्तिदा-ए-इस्लाम में भी इसी से ज़िक्र होता रहा।

साहिबे मज़ाहिरे हक़ ने लिखा है कि हुज़ूर सल्ल॰ ने इसको यस्रिब कहने से मना फ़रमाया, या तो इसलिये कि वह ज़माना-ए-जाहिलिय्यत का नाम है या इसलिये कि वह मुश्तक़ है सर्ब से, जिसके मायने हलाक और फ़साद के हैं या इसलिये कि यस्रिब असल में एक बुत का नाम था, उसके नाम पर शहर का नाम रखा गया, या इसलिये कि यस्रिब एक ज़ालिम शख़्स का नाम था।

और बुख़ारी ने अपनी तारीख़ में एक हदीस लिखी है कि जो कोई एक बार यस्रिब कहे, चाहिये कि दस बार मदीना कहे ताकि तदारुक और तलाफ़ी हो। हाफ़िज़ इब्ने हजर रह॰ फ़त्हुलबारी में लिखते हैं कि बाज़ उलमा ने इस हदीस से मदीना मुनव्वरा को यस्रिब कहने के मक्रूह होने पर इस्तिदलाल किया है। ये हज़रात यह फ़रमाते हैं कि क़ुरआन पाक में जो सूरः अहज़ाब में "या अह्-ल यसरि-ब ला मुक़ा-म लकुम्" वारिद हुआ है और उसमें इसको यस्रिब से ताबीर किया है, वह ग़ैर मुस्लिमों का क़ौल नक़ल किया है, इससे जवाज़ पर इस्तिदलाल नहीं होता।

और इमाम अहमद ने हज़रत बरा रज़ि॰ की हदीस से हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल किया है कि जो मदीना को यस्रिब कहे, उसको इस्तिग़्फ़ार करना चाहिये। उसका नाम ताब: है ताब: है।

और एक हदीस में हज़रत अबू अय्यूब से नक़ल किया गया कि हुज़ूर सल्ल॰ ने मदीना को यस्रिब कहने से मना किया, इसी वजह से ईसा बिन दीनार मालिकी रह॰ लिखते हैं कि जो मदीने को यस्रिब कहे, उस पर एक ख़ता लिखी जाती है और ना पसंदीदगी की वजह या तो यह है कि यह तस्रीब से है, जिसके मायने डांटने के और मलामत करने के हैं या सर्ब से है जिसके मायने फ़साद के हैं और दोनों मायने बुरे हैं और हुज़ूर सल्ल॰ की आदते शरीफ़ा थी कि बुरे नाम को बदल कर अच्छा नाम तज्वीज़ फ़रमाते थे और बाज़ ने कहा है कि यह नाम यस्रिब बिन क़ानिया बिन महल्-दील बिन ईल बिन ईस बिन इरम बिन साम बिन हज़रत नूह अलैहिस्सलाम के नाम पर है कि वह इस जगह सबसे पहले आबाद हुआ। जिसके नाम पर यह नाम रखा गया और उसका भाई ख़ैबूर था, जिसके नाम पर उसके रहने की वजह से ख़ैबर रखा गया।

4. चौथा मज़्मून यह है कि बुरे आदमियों को इस तरह दूर कर देता है जैसा कि आग की भट्ठी लोहे के मैल को। इस का मतलब बाज़ उलमा ने लिखा है कि इब्तिदा-ए-इस्लाम में कुफ़्र व शिर्क का इससे बिल्कुल्लिया दूर हो जाना मुराद है।

(मज़ाहिर)

और बाज़ उलमा ने लिखा है कि यह हुज़ूर सल्ल॰ के ज़माने के साथ ख़ास है।

एक हदीस में एक क़िस्सा भी आया है कि एक बद्दू जो मदीने में रहता था, उसको शिद्दत से बुख़ार आया, जिसकी वजह से उसने मदीने में रहने से घबरा कर हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया कि मेरी बैअत तोड़ दीजिये। मैं यहां नहीं रहता। हुज़ूर सल्ल॰ ने बैअत तोड़ने से इंकार किया। फिर दोबारा सहबारा आकर इसरार किया। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इंकार फ़रमाते रहे। मगर वह निकल गया। जिस पर हुज़ूर सल्ल॰ ने यह इर्शाद फ़रमाया कि मदीना भट्टी की तरह से है, बुरे को निकाल देता है, अच्छे को ख़ालिस करता है यानी निखारता है।

बाज़ उलमा ने कहा है कि आख़िर ज़माने में भी यही बात होगी, यानी दज्जाल के ज़माने में कि मदीना पाक से बुरे बुरे आदमी निकल जायेंगे। चुनांचे एक हदीस में आया है कि क़ियामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी, जब तक मदीना से बुरे बुरे आदमी न निकल जायें।

बुख़ारी शरीफ़ की एक हदीस में है कि हर शहर में दज्जाल का गुज़र होगा, मगर मक्का मुकर्रमा और मदीना मुनव्वरा में उसका दाख़िला नहीं हो सकेगा। फ़रिश्ते इन दोनों शहरों की हिफ़ाज़त करेंगे। उस वक़्त मदीना मुनव्वरा में तीन मर्तबा ज़लज़ला आयेगा, जिससे हर काफ़िर और मुनाफ़िक़ उससे निकल पड़ेगा।

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह॰ फ़रमाते हैं कि हर वह शख़्स मुराद है जिसके ईमान में ख़ुलूस न हो।

5. पांचवां मज़्मून यह है कि इस हदीसे पाक से मदीना मुनव्वरा के सारे शहरों से अफ़ज़ल होने पर इस्तिदलाल किया गया, जैसा कि दूसरे मज़्मून में गुज़रा। मक्का मुकर्रमा के अलावा और जितने शहर हैं उन पर मदीना पाक की फ़ज़ीलत तो मुसल्लम है और इसमें कोई इख़्तिलाफ़ नहीं है, लेकिन इसमें उलमा में इख़्तिलाफ़ हो गया कि मदीना पाक की फ़ज़ीलत मक्का मुकर्रमा पर भी है या

नहीं।

अक्सर उलमा ने मक्का मुकर्रमा को सबसे अफ़ज़ल शहर बताया है जैसा कि जम्हूर उलमा का मज़हब है और बाज़ हज़रात ने मदीना मुनव्वरा को मक्का मुकर्रमा से भी अफ़ज़ल फ़रमाया है, जैसा कि इमाम मालिक और दूसरे बाज़ उलमा से नक़ल किया गया, जैसा कि क़रीब ही मुफ़स्सल आयेगा, लेकिन इससे क़ब्ल दो अम्र (बात) याद रखने के क़ाबिल हैं :-

(क) अव्वल यह कि मदीना तैयबा की वह ज़मीन जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जिस्मे मुबारक से मुत्तसिल है, उसमें कोई इख़्तिलाफ़ उलमा में नहीं है, वह बिल इत्तिफ़ाक़ सब उलमा के नज़दीक सब जगहों से अफ़ज़ल है। इब्ने असाकिर रह०, क़ाज़ी अयाज़ रह० वग़ैरह हज़रात ने इस पर सारी उम्मत का इत्तिफ़ाक़ और इज्माअ् नक़ल किया है कि यह हिस्सा ज़मीन का बैतुल्लाह शरीफ़ से भी अफ़ज़ल है, बल्कि क़ाज़ी अयाज़ रह० ने लिखा है कि अर्शे मुअल्ला से भी अफ़ज़ल है जिसकी वजह उलमा ने यह लिखी है कि आदमी जिस जगह दफ़्न होता है, उसी जगह की मिट्टी से इब्तिदा में वह पैदा किया जाता है, तो गोया हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बदने मुबारक भी उसी मिट्टी से बना है। *(शर्हे मनासिके नववी)*

मुवाहिबे लदुन्निया में लिखा है कि यह इज्माई मसअला है कि जो ज़मीन का हिस्सा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जिस्मे मुबारक से मिला हुआ है, वह सारी दुनिया की ज़मीन से अफ़ज़ल है, हत्ता कि काबे शरीफ़ की ज़मीन से भी अफ़ज़ल है, बल्कि इब्ने अक़ील हंबली रह० से नक़ल किया गया है कि वह जगह अर्श से भी अफ़ज़ल है ,बल्कि बाज़ उलमा ने तो इस वजह से कि हुज़ूर सल्ल० का बदने मुबारक ज़मीन में है, ज़मीन को आसान से अफ़ज़ल बताया है, लेकिन जम्हूर उलमा का मज़हब यह है कि आसमान ज़मीन से अफ़ज़ल है, इसलिये कि आसमान पर अल्लाह की नाफ़रमानी नहीं होती, और ज़मीन पर कुफ़्र व शिर्क होता है, अलबत्ता वह जगह जो अंबिया अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम के मुबारक बदनों से मुत्तसिल है, वह आमसानों से अफ़ज़ल है।

(शर्हे मुवाहिब)

अर्श से अफ़ज़ल होने की वजह यह है कि हक़ तआला शानुहू मकान से बे नियाज़ है और ज़मीन के उस हिस्से में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का जिस्मे मुबारक मौजूद है।

(ख) इसके बाद दूसरा अम्र यह भी ज़ेहन में रखने का है कि मक्का मुकर्रमा में काबा शरीफ़ हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र शरीफ़ के अलावा दुनिया की सब जगहों से बिल इत्तिफ़ाक़ अफ़ज़ल है, इसमें भी किसी का इख़्तिलाफ़ नहीं है।

इब्ने हजर रह० शर्हे मनासिके नववी में लिखते हैं कि उलमा में जो इख़्तिलाफ़ मक्का या मदीना के अफ़ज़ल होने में है, वह काबा शरीफ़ के अलावा में है। काबा शरीफ़ बिल इत्तिफ़ाक़ मदीना मुनव्वरा से अफ़ज़ल है बजुज़ क़ब्र शरीफ़ के उस हिस्से के, जो हुज़ूर सल्ल० के बदने मुबारक से मिल रहा है कि वह काबा शरीफ़ से भी अफ़ज़ल है।

इन दो चीज़ों के बाद फिर इसमें इख़्तिलाफ़ है कि मक्का मुकर्रमा अफ़ज़ल है या मदीना तैयबा अफ़ज़ल है।

इमाम नववी रह० अपने मनासिक में लिखते हैं कि हमारे नज़दीक यानी शाफ़अिय्यः के नज़दीक मक्का मुकर्रमा अफ़ज़ल है, यही अक्सर फ़ुक़हा का मज़हब है और इमाम अहमद बिन हंबल रह० का राजेह क़ौल भी यही है।

मुल्ला अली क़ारी रह० कहते हैं कि यही मज़हब है इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम शाफ़ई, इमाम अहमद का।

इब्ने हजर रह० कहते हैं कि इब्ने अब्दुल बर्र रह० ने इसी को नक़ल किया। हज़रत उमर, हज़रत अली, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद, हज़रत अबू दर्दा, हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हुम से, उन हज़रात की दलील यह है कि मक्का मुकर्रमा के बारे में जो सवाब आमाल का रिवायात में आता है, वह मदीना मुनव्वरा के सवाब से ज़्यादा है, यानी एक लाख नमाज़ों का सवाब कसरत से अहादीस में आया है, जैसा कि तीसरी फ़स्ल की हदीस नं० 1 में और छठी फ़सल की हदीस नं० 6 में गुजर चुका है, नीज़ इसी फ़स्ल की हदीस नं० 10 में गुज़रा कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मक्का मुकर्रमा को फ़रमाया कि तू अल्लाह की ज़मीन में सबसे बेहतर है और अल्लाह के नज़दीक सबसे ज़्यादा महबूब है।

दूसरा क़ौल हज़रत इमाम मालिक रह० का है कि मदीना तैयबा मक्का मुकर्रमा से अफ़ज़ल है। इमाम अहमद रह० का दूसरा क़ौल भी इसी के मुवाफ़िक़ है और हज़रत उमर रज़ि० का मज़हब भी यही नक़ल किया जाता है। पहले क़ौल

में भी हज़रत उमर रज़ि॰ का नामेनामी गुज़र चुका है, इसलिये उनके भी इस मसअले में दो क़ौल हो गये। इन हज़रात की दलील एक तो यही हदीस है, जिसका बयान हो रहा है, नीज़ एक हदीस में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल किया गया कि हर शहर तलवार से फ़त्ह हुआ, मगर मदीना तैयबा क़ुरआन से फ़त्ह हुआ। *(ज़क़ानी)*

नीज़ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का क़ियाम मदीना मुनव्वरा में इतना तवील है कि हिजरत से लेकर क़ियामत तक इसी शहर में क़ियाम है और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जिस्मे मुबारक के यहां मौजूद होने की वजह से जिस क़दर अल्लाह जल्ल शानुहू की रहमतें हर आन और हर वक़्त नाज़िल होती रहती हैं, उनका न शुमार हो सकता है न अंदाज़ा। नीज़ शरीअते मुतहहरा की तक्मील और शरीअत के जितने अहकाम इस शहर में नाज़िल हुए, उतने न मक्का मुकर्रमा में नाज़िल हुए, न किसी और जगह। नीज़ इसी फ़स्ल के नं॰ 5 पर जो हदीस आ रही है उससे भी ये हज़रात इस्तिदलाल फ़रमाते हैं जो मदीना तैयबा को मक्का मुकर्रमा से अफ़ज़ल बताते हैं। बंदे के नाक़िस ख़्याल में उस हदीस से भी इस्तिदलाल किया जा सकता है जो इस फ़स्ल के नं॰ 9 के ज़ैल में हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद आ रहा है कि कोई ज़मीन ऐसी नहीं कि जो मुझे ज़्यादा महबूब हो, इस एतिबार से कि मेरी क़ब्र वहां हो, बजुज़ (सिवाए) मदीना के।

(۳) عن سعدؓ قال قال رسول اللّٰہ صلی اللّٰہ علیہ وسلم انی احرم مابین لا بتی المدینۃ ان یقطع عضاھھا او یقتل صیدھا وقال المدینۃ خیرلھم لو کانوا یعلمون لا یدعھا احد رغبۃ عنھا الا ابدل اللّٰہ فیھا من ھو خیر منہ ولا یثبت احد علی لاوائھا وجھدھا الا کنت لہ شفیعا او شھیدًا یوم القیٰمۃ رواہ مسلم کذا فی المشکوٰۃ وفی تحریم المدینۃ عن علیؓ عند الشیخین وفی الصبر علی لاواء المدینۃ روایات کثیرۃ فی الصحاح.

3. हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि मदीना मुनव्वरा की दोनों जानिब जो कंकरीली ज़मीन है, इसके दर्मियानी हिस्से को मैं हराम क़रार देता हूँ। इस लिहाज़ से कि उसके ख़ारदार दरख़्त काटे जायें या उसमें शिकार किया जाये, और हुज़ूर सल्ल॰ ने यह भी इर्शाद फ़रमाया कि मदीना मोमिनीन के क़ियाम के लिये बेहतरीन जगह है। अगर वे इसकी ख़ूबियों को जानें तो यहां का क़ियाम न छोड़ें और जो शख़्स यहां के क़ियाम को उससे बददिल

होकर छोड़ेगा, अल्लाह जल्ल शानुहू उसका नेअ्मल बदल यहां भेज देगा, और जो शख़्स मदीना तैयबा के कि़याम की मुश्किलात को बर्दाश्त करके यहां कि़याम करेगा, मैं कि़यामत के दिन उसका सिफ़ारिशी या गवाह बनूँगा।

फ़ायदा:- इस हदीस शरीफ़ में कई मज़्मून हैं। और हर मज़्मून बहुत सी मुख़्तलिफ़ रिवायात में वारिद हुआ है :-

1. अव्वल यह है कि मैं मदीने को हराम क़रार देता हूँ। मदीना मुनव्वरा के दोनों जानिब पथरीली ज़मीन है। इन दोनों के दर्मियानी हिस्से का मतलब यह है कि तमाम मदीना और उसके क़रीब की ज़मीन को हराम क़रार देता हूँ।

बुख़ारी शरीफ़ और मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में हज़रत अली रज़ि॰ से हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल किया गया कि जबले और और जबले सौर के दर्मियानी हिस्से को हराम क़रार देता हूँ, जबले सौर जबले उहुद के क़रीब एक छोटा सा पहाड़ बताते हैं और हराम करने का मतलव यह है कि यह जगह मोहतरम और हरम के हुक्म में है, न इस जगह शिकार किया जाये, न यहां का ख़ुद रौ (ख़ुद उगने वाला) घास काटा जाये जैसा कि मक्का मुकर्रमा के हरम में ये चीज़ें ना जायज़ हैं, ऐसे ही हुज़ूर सल्ल॰ ने यहां के मुताल्लिक़ भी इर्शाद फ़रमाया, लेकिन दूसरी रिवायात की बिना पर हनफ़िय्य: के नज़दीक दोनों जगह के हुक्म में यह फ़र्क़ है कि मक्का मुकर्रमा के हरम में ये चीज़ें नाजायज़ हैं और अगर कोई ऐसा करेगा तो बदला देना वाजिब होगा और हरमे मदीना में ख़िलाफ़े औला हैं और बदला देना वाजिब न होगा। यह मुमानअत भी दोनों जगह मकान की फ़ज़ीलत के लिहाज़ से है, जैसा कि शाही महलों के आस पास की जगहें सारी दुनिया में मोहतरम और क़ाबिले अदब होती हैं, वहां शिकार वग़ैरह खेलने की भी इजाज़त नहीं होती और किसी को वहां की पैदावार में तसर्रूफ़ का भी हक़ नहीं होता, यह एक मारूफ़ चीज़ है।

2. दूसरा मज़्मून मदीना मुनव्वरा में कि़याम के मुताल्लिक़ है। यह मज़्मून भी बहुत सी रिवायात में आया है।

बुख़ारी शरीफ़ की एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पेशीनगोई के तौर पर फ़रमाया कि यमन फ़तह होगा। बाज़ लोग उसके हालात की तहक़ीक़ करेंगे फिर अपने अहल व अयाल को और जो लोग उनके

कहने में आ जायेंगे उनको लेकर वहां चले जायेंगे हालांकि मदीना उनके लिये बेहतर था, काश, वे यहां की बरकात को जानते और शाम फ़त्ह होगा, लोग वहां के हालात की ख़बरें सुनकर अपने अहल को और जो उनके कहने में आ जायेंगे, उनको लेकर वहां मुंतक़िल हो जायेंगे, हालांकि मदीना उनके लिये बेहतर था। काश, वे इसको जानते। इराक़ फ़त्ह होगा और लोग वहां के हालात मालूम करके वहां अपने अहल को और जो कहने में आ जायें, उनको लेकर वहां मुंतक़िल हो जायेंगे और मदीना उनके लिये बेहतर था, काश, वे इसको जानते।

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० फ़रमाते हैं कि यह हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद इसी तरह पूरा हुआ और ये शहर इसी तर्तीब से फ़त्ह हुए। *(फ़त्ह)*

हज़रत अबू उसैद रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हुज़ूर सल्ल० के चचा हज़रत हमज़ा रज़ि० शहीद हुए तो हम लोग हुज़ूर सल्ल० के साथ हज़रत हमज़ा की क़ब्र पर थे और उनका कफ़न सिर्फ़ एक छोटी सी चादर थी जो बदन पर भी पूरी न आती थी। जब उससे उनके चेहरे को ढांका जाता तो पांव खुल जाते, और जब पांव पर खींची जाती तो चेहरा खुल जाता, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि चादर को मुंह की तरफ़ कर दो और पांव पर दरख़्त के पत्ते डाल दो। सहाबा-ए-किराम रज़ि० रो रहे थे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि एक ज़माना आने वाला है कि लोग शादाब ज़मीनों की तरफ़ निकलेंगे, वहां जाकर खाने और पहनने को खूब मिलेगा, कसरत से सवारियां मिलेंगी तो अपने घरवालों को लिखेंगे कि तुम हिजाज़ की क़हत ज़दा ज़मीन में पड़े हो, यहां आ जाओ, हालांकि मदीना उनके लिये बेहतर है, काश वे जानते इस अम्र को। *(तर्ग़ीब)*

मुस्लिम शरीफ़ की एक हदीस में है कि अंक़रीब लोग दूसरे शहरों की सरवत और पैदावार को देख कर अपने क़रीबी रिश्तेदारों को वहां बुलावेंगे कि यहां बड़ी पैदावार है, यहां आ जाओ, लेकिन मदीने का क़ियाम उनके लिये बेहतर है। काश वे इसकी बेहतरी को जानते। *(ज़ुर्क़ानी अलल् मुवाहिब)*

और ज़ाहिर है कि दुनिया की सरवत या पैदावार जितनी भी ज़्यादा हो जाये, जो बात मदीना पाक में बरकात के एतिबार से है और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पड़ोसी होने की जो सआदत वहां हासिल है और दीन की तरफ़ रग़बत के जो अस्बाब वहां हैं, वे किसी दूसरी जगह कहां मयस्सर आ सकते हैं, और इन क़ीमती मोतियों के मुक़ाबले में दुन्यावी माल व मताअ् लाखों का हो या करोड़ों का, कब मुक़ाबला कर सकता है।

मुस्नद बज़्ज़ार की एक हदीस में हज़रत जाबिर रज़ि॰ से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नक़ल किया गया कि एक ज़माना ऐसा आयेगा कि मदीना मुनव्वरा से बाज़ आदमी किसी शादाब ज़मीन की तरफ़ सरवत की तलाश में जायेंगे और वहां उनको सरवत और शादाबी मिल जायेगी तो वे अपने अहल व आयाल को भी वहां मुंतक़िल कर लेंगे, लेकिन अगर वे मदीना के फ़ज़ाइल से बा ख़बर होते तो यक़ीनन मदीना उनके लिये बेहतर था।

(ज़ुर्क़ानी)

3. तीसरा मज़्मून यह है कि जो शख़्स मदीना के क़ियाम को उससे ऐराज़ करके और बद दिल होकर छोड़ेगा। हक़ तआला शानुहू उसका नेअ्मल बदल यहां तज्वीज़ करेगा।

हाफ़िज़ इब्ने अब्दुल बर्र रह॰ क़ाज़ी अयाज़ रह॰ वग़ैरह ने इसको हुज़ूर के ज़माने के साथ ख़ास बताया है, लेकिन इमाम नववी रह॰ और अल्लामा अबी मालिकी रह॰ वग़ैरह ने इसको हमेशा के लिये आम बताया है।

अल्लामा ज़ुर्क़ानी रह॰ लिखते हैं कि यह बात उन हज़रात के लिये है जो वहां के बाशिंदे हैं, वहां के मुस्तक़िल रहने वाले हैं और जो हज़रात दूसरी जगह के मुक़ीमीन महज़ ज़ियारत के लिये आये हैं वे इसमें दाख़िल नहीं हैं। लेकिन यह इश्काल होता है कि बाज़ हज़रात सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम ने भी मदीना तैयबा के क़ियाम को तर्क करके दूसरी जगह को वतन बनाया है लेकिन हक़ीक़त में इश्काल नहीं है इसलिये कि इन हज़रात का तर्के वतन दर हक़ीक़त एक बड़ा मुजाहदा और ईसार था। अगर ये हज़रात हक़ तआला शानुहू उनकी क़ब्रों को अन्वार व बरकात से खूब पुर करे, अपनी ज़ाती ग़रज़ और अपनी ज़ात के नफ़ा को मुक़द्दम फ़रमाते तो आज हिन्दुस्तान और दुनिया के दूसरे मुल्कों में इस्लाम कैसे फैलता। यह इन्हीं हज़रात की क़ुर्बानियों का समरा है कि दुनिया के हर ख़ित्ते में इस्लाम की रौशनी फैली हुई है। इन हज़रात का दूर दराज़ शहरों में जाकर क़ियाम फ़रमाना दीन की ख़ातिर था। इस्लाम की ख़ातिर था, अल्लाह की रिज़ा के वास्ते था और उसके पाक रसूल सल्ल॰ की मेहनत को फैलाने के वास्ते था, यह खुद हुज़ूर ही की खुश्नूदी के वास्ते अपनी दिलबस्तगी को छोड़ना था।

أُرِيْدُ وِصَالَهُ وَيُرِيْدُ هِجْرِي فَأَتْرُكُ مَا أُرِيْدُ لِمَا يُرِيْدُ

तर्जुमा:- "मैं महबूब का विसाल चाहता हूँ और वह मुझसे जुदाई पसंद करता है, इसलिये मैं अपनी खुशी को उसकी खुशी पर क़ुर्बान करता हूँ।"

इन हज़राते सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के मदीना पाक छोड़ने पर वहां की बरकात से, वहां की नमाज़ों में अज्र व सवाब की ज़्यादती से, जो नुक़्सान वाक़ेअ हुआ, इंशाअल्लाह उससे करोड़ों दर्जा ज़ायद वह सवाब उनको मिलता रहेगा, जो उनकी बरकत से दुनिया में इस्लाम फैलने से उनके हिस्से में आया और क़ियामत तक आता रहेगा, इसलिये कि बहुत सी अहादीस में यह मज़्मून आया है कि जो शख़्स कोई नेक काम करे तो उसको उसका सवाब तो होगा ही लेकिन उसकी वजह से जितने आदमी उस नेक काम को करते रहेंगे, उन सब के करने का सवाब करने वालों को मुस्तक़िल मिलता रहेगा, और उस शख़्स को सब करने वालों के करने का सवाब मुस्तक़िल मिलता रहेगा। इस लिहाज़ से मदीना पाक के छूटने से जो इन हज़रात के आमाल के सवाबों में कुछ कमी हुई होगी, उससे बदरजहा ज़ायद क़ियामत तक जितने आदमी मुसलमान होते रहेंगे और नेक आमाल करते रहेंगे, उनके आमाल का सवाब उन हज़रात को इंशाअल्लाह होता रहेगा, जिनकी वजह से जहा जहां इस्लाम फैला, इसी वजह से अकाबिर तालीम व तब्लीग़ पर बहुत ज़्यादा ज़ोर देते रहे कि आदमी अगर खुद नेक आमाल करे तो उसका सवाब अपनी ज़िन्दगी तक है, लेकिन अगर दूसरों को नेक अमल पर लगा जाये, तो उन सबके आमाल का सवाब उस शख़्स को मिलता रहेगा, जिसकी सई और कोशिश से दूसरे लोगों ने कोई नेक अमल किया हो, मुफ़्त का सवाब है और गोया एक सरमाया है जो किसी तिजारत में लगा दिया और हमेशा उसका नफ़ा मिलता रहेगा या एक किराये की जायदाद है, जिसका किराया घर बैठे हमेशा वसूल होता रहेगा, इसलिये बहुत ज़्यादा कोशिश इसकी होना चाहिए कि अपनी कोशिश से जितने भी ज़्यादा से ज़्यादा आदमी दीन पर क़ायम हो जायें, दीन पर पुख़्ता हो जायें, नेक अमल करने लगें, वह ग़नीमत है।

4. चौथा मज़्मून इस हदीस में यह है कि जो शख़्स मदीना तैयबा की तकालीफ़ को बर्दाश्त करके, उन पर सब्र करके वहां क़ियाम करेगा, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि मैं उसका सिफ़ारिशी या गवाह हूँगा। यह मज़्मून बहुत सी आहदीस में ज़िक्र किया गया है।

हर्रा की लड़ाई में जबकि मदीना मुनव्वरा पर चढ़ाई हो रही थी, एक

शख़्स हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि॰ के पास आए और जंग की वजह से मदीना पाक में सख़्त गरानी और अपने कुंबे की कसरत का ज़िक्र करके कहीं बाहर जाने का मश्वरा करने लगे। हज़रत अबू सईद ख़ुदीर रज़ि॰ ने फ़रमाया, तेरा नास हो, मैं कभी भी तुझे किसी दूसरी जगह मुंतक़िल होने का मश्वरा नहीं दूँगा। मैंने ख़ुद हुज़ूर सल्ल॰ से सुना है कि जो शख़्स मदीना की सख़्ती और भूख पर सब्र करेगा, मैं उसका क़ियामत में सिफ़ारिशी या गवाह हूँगा।

बाज़ उलमा ने कहा यह रावी को शक है कि हुज़ूर सल्ल॰ ने सिफ़रिशी का लफ़्ज़ फ़रमाया या गवाह का लफ़्ज़ फ़रमाया।

अल्लामा क़स्तलानी रह॰ फ़रमाते हैं कि यह लफ़्ज़ यानी सिफ़रिशी या गवाह हज़रत जाबिर, हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर, हज़रत अबू सईद ख़ुदरी, हज़रत अबू हुरैरह, हज़रत अस्मा बिन्ते उमैस, हज़रत सफ़िया बिन्ते अबी उबैद रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन, सब की हदीसों में मौजूद है। यह बात बहुत दुश्वार है कि सब ही को शक हो गया, इसलिये ज़ाहिर यह है कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सललम ने ख़ुद ही दोनों लफ़्ज़ इर्शाद फ़रमाये और यह आदमियों के इख़्तिलाफ़ की वजह से फ़रमाया कि बाज़ लोगों के लिये सिफ़ारिशी बनूँगा और बाज़ के लिये गवाह, मसलन गुनाहगारों के लिये सिफ़रिशी और मुत्तक़ी लोगों के लिये गवाह, या यह कि जिन हज़रात की वफ़ात हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हयात में हुई, उनके लिये गवाह और जिनकी वफ़ात हुज़ूर सल्ल॰ के विसाल के बाद हुई, उनके लिये सिफ़ारिशी।

बाज़ रिवायात में "या" के बजाये "और" का लफ़्ज़ आया है कि मैं उनके लिये सिफ़रिशी और गवाह बनूँगा। इस रिवायत के मुवाफ़िक़ सब के लिये दोनों चीज़ें जमा हो गयीं और यह सिफ़ारिश और शहादत जो इन हज़रात के लिये होगी, वह आम मोमिनीन के लिये सिफ़ारिश और शहादत के अलावा ख़ुसूसी होगी जो अहले मदीना के एज़ाज़ व इक्राम पर दलालत करती है और बाज़ उलमा ने कहा है कि यह सिफ़ारिश ही ख़ास क़िस्म की होगी मसलन तख़फ़ीफ़े हिसाब की सिफ़ारिश हो या किसी ख़ास नौअ् के इक्राम की सिफ़ारिश हो, मसलन अर्श के साया तले होने की या जन्नत में जल्दी दाख़िले की या ख़ुसूसी मिंबरों की, जैसा कि अहादीस में बाज़ लोगों के मुताल्लिक़ आता है कि वे नूर के मिंबरों पर होंगे या और कोई इसी क़िस्म के एज़ाज़ की, और जो शख़्स इन फ़ज़ाइल से वाक़िफ़

होगा, वह कैसे वहां की मशक़्क़तों पर रग़बत से राज़ी न होगा, बिलख़ुसूस जबकि
हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का क़ुर्ब हर वक़्त हासिल होः-

पाए दर ज़ंजीर पेशे दोस्तां,
बह कि वा बेगान्गां दर बोस्तां।।

"दोस्तों के साथ क़ैद में रहना भी ग़ैरों के साथ बाग़ मे रहने से बेहतर है।"

और इसके साथ ही वहां के क़ियाम में, जो हर अमल में सवाब में ज़्यादती है, वह मज़ीद बरआं, और यह तो जब है कि वहां मशक़्क़तें ज़ायद हों भी, वरना कौन सी जगह दुनिया में ऐसी है, जहां किसी न किसी नौअ् की तकालीफ़ नहीं हैं और ख़ुसूसन इस फ़िल्ने के ज़माने में तो हर जगह तकालीफ़ ही तकालीफ़ हैं, इसके बावजूद लोग जहां मुक़ीम हैं, उससे मुन्तक़िल होना ख़ुशी से गवारा नहीं करते, तो फिर मदीना जैसी जगह के क़ियाम का क्या कहना।

(٤) عن ابى هريرةؓ ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال ان الايمان ليارز الى المدينة كما تارز الحية الى جحرها رواه البخارى.

4. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि बेशक ईमान मदीने की तरफ़ ऐसा खिंच कर आता है, जैसा कि सांप अपने सूराख़ की तरफ़ आ जाता है।

फ़ायदाः- बाज़ उलमा ने कहा है कि यह इब्तिदाई ज़माने के एतिबार से है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में और ख़ुलफ़ाए राशिदीन के और सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अज्मईन के ज़माने में, जिन लोगों के दिल में ईमानी जज़्बा था, वे जोक़ दर जोक़ मदीना तैयबा हुज़ूर सल्ल॰ की ज़ियारत और दीन के सीखने के वास्ते आते थे और बाज़ ने कहा है कि तमाम ज़मानों के लिये है कि ईमानी जज़्बा रखने वाले हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र शरीफ़ की ज़ियारत और हुज़ूर सल्ल॰ की मस्जिद में नमाज़ और आपके और आपके सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ के आसार की ज़ियारत के शौक़ में खिंचे चले जाते हैं, और बाज़ उलमा ने फ़रमाया है कि यह हुज़ूर सल्ल॰ ने आख़िर ज़माने का हाल बताया है कि सारी दुनिया में से दीन सिमट कर मदीना तैयबा में आ जायेगा, इसकी ताईद एक और हदीस से होती है, जिसको इमाम

तिर्मिज़ी रह॰ ने हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ से नक़ल किया है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि इस्लाम की बस्तियों में सबसे आख़िरी बस्ती जो क़ियामत के दिन वीरान होगी, वह मदीना तैयबा होगा यानी उसकी वीरानी सारी आबादियों के बाद होगी। *(मिश्कात)*

(٥) عن انس رضي عن النبى صلى الله عليه وسلم قال اللّٰهمّ اجعل بالمدينة ضعفى ما جعلت بمكة من البركة متفق عليه كذا فى المشكوٰة

5. हज़रत अनस रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह दुआ नक़ल करते हैं कि ऐ अल्लाह तआला, जितनी बरकतें आपने मक्का मुकर्रमा में रखी हैं, उनसे दोगुनी बरकतें मदीना मुनव्वरा में अता फ़रमा।

फ़ायदाः- जो हज़रात मदीना तैयबा को मक्का मुकर्रमा से अफ़ज़ल बताते हैं, वे इस हदीस से भी इस्तिदलाल करते हैं जैसा कि हदीस नं॰ 3 के ज़ैल में गुज़रा, और जो हज़रात मक्का मुकर्रमा को अफ़ज़ल बताते हैं वे फ़रमाते हैं कि इस हदीस शरीफ़ में बरकत से मुराद ख़ास तौर से रोज़ी में बरकत मुराद है।

मुस्लिम शरीफ़ की एक हदीस में यह मज़्मून ज़रा तफ़सील से आया है, जिसका तर्जुमा यह है कि हज़रत अबू हुरैरह रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि सहाबा रज़ि॰ का मामूल यह था कि जब मौसम में कोई फल आता तो सबसे पहला फल हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पेश किया जाता। हुज़ूर सल्ल॰ उसको लेकर यह दुआ फ़रमाते कि ऐ अल्लाह, हमारे फलों में बरकत फ़रमा और हमारे शहर में बरकत फ़रमा और हमारे साअ् में बरकत फ़रमा और हमारे मुद्द में बरकत अता फ़रमा, ऐ अल्लाह, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम तेरे बंदे थे, तेरे ख़लील थे, तेरे नबी थे और मैं भी तेरा बंदा हूँ और तेरा नबी हूँ। उन्होंने मक्का मुकर्रमा के लिये दुआ की, मैं वैसी ही दुआ मदीना तैयबा के लिये करता हूँ और उससे दोचंद की दुआ करता हूँ। इसके बाद किसी छोटे बच्चे को वह फल मरहमत फ़रमा देते।

इस हदीस शरीफ़ में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ की तरफ़ इशारा फ़रमाया, जो क़ुरआन पाक में मज़्कूर हैः-

فَاجْعَلْ اَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِىْٓ اِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرٰتِ

"कि ऐ अल्लाह, लोगों के दिल इस शहर(मक्का मुकर्रमा) में रहने वालों की तरफ़ माइल कर और उनको फल अता फ़रमा।"

एक हदीस में हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ गोश्त और पानी में बरकत के मुताल्लिक़ वारिद हुई और हुज़ूर सल्ल० ने अपनी इस दुआ को हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की दुआ पर मुरत्तब फ़रमाया, इसलिये ये हज़रात फ़रमाते हैं कि यह बरकत भी उन ही चीज़ों के मुताल्लिक़ है। साअ् और मुद्द दो पैमाने हैं, जिनसे ग़ल्ला नापा जाता है, उनमें बरकत के यह मायने हैं कि रिज़्क़ में फ़राख़ी हो।

उलमा ने लिखा है कि इस दुआ का क़ुबूल होना मुशाहदे में आता है कि जो मिक़्दार खाने की मदीना तैयबा में काफ़ी हो जाती है, उतनी मिक़्दार खाने की मदीना तैयबा से बाहर काफ़ी नहीं होती, वहां रहने में इसका तजुर्बा होता है। *(फ़त्ह)*

और जो हज़रात मदीना तैयबा की अफ़ज़लियत के क़ायल हैं, वे फ़रमाते हैं कि बरकत के मायने ख़ैर में ज़्यादती के हैं जो दीन और दुनिया दोनों की ख़ैर को शमिल है, इसलिये हर नौअ् की ख़ैर में मक्का मुकर्रमा से दो चंद की दुआ है। *(फ़त्ह)*

एक हदीस में आया है कि, हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते हैं कि हम हुज़ूर सल्ल० के साथ जा रहे थे। जब मदीने से बाहर हर्रा में सुक़्या पर पहुँचे (एक जगह का नाम है मदीना की आबादी से बाहर) तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वुज़ू का पानी मंगाया और वुज़ू करके क़िब्ले की तरफ़ मुंह करके खड़े हुए और अल्लाहु अक्बर कहने के बाद यह दुआ की, ऐ अल्लाह हज़रत इब्राहीम तेरे बंदे थे, तेरे ख़लील थे, उन्होंने मक्का वालों के लिये बरकत की दुआ की और मैं मुहम्मद हूँ, (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तेरा बंदा हूँ, तेरा रसूल हूँ। मैं तुझसे मदीना वालों के लिये दुआ करता हूँ कि तू उनके मुद्द में और उनके साअ् में ऐसी ही बरकत कर जैसी कि तूने अहले मक्का के लिये की और इसके साथ दो चंद बर्कतें ज़्यादा कर। *(कंज़)*

इस हदीस शरीफ़ में तीन गुना ज़्यादती की दुआ हुई। साहिबे तर्ग़ीब ने इस की सनद को उम्दा और क़वी बताया है।

हज़रत उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा मदीना तैयबा में गरानी बहुत

हो गयी और लोग सख़्त मशक़्क़त में पड़ गये तो हुज़ूर सल्ल॰ ने सब्र की तलक़ीन फ़रमायी और यह ख़ुशख़बरी दी कि मैंने तुम्हारे लिये तुम्हारे साअ् में और तुम्हारे मुद्द में बरकत की दुआ की है। यह भी इर्शाद फ़रमाया कि खाना अलाहिदा अलाहिदा न खाया करो, इकट्ठे होकर खाया करो। इस सूरत में एक का खाना दो को काफ़ी हो जाता है और दो का खाना चार को काफ़ी हो जाता है और चार का पांच छः को काफ़ी हो जाता है। इकट्ठे खाने में बरकत होती है। जो शख़्स मदीना तैयबा की मशक़्क़त पर सब्र करेगा, मैं क़ियामत के दिन उसके लिये सिफ़ारिशी और गवाह बनूँगा और जो शख़्स मदीना से ऐराज़ करके यहां से जायेगा, हक़ तआला शानुहू उसका बेहतरीन बदल यहां कर देगा और जो मदीना वालों के साथ बुराई का इरादा करेगा, वह इस तरह पिघल जायेगा जैसा कि पानी में नमक पिघल जाता है। *(तर्ग़ीब)*

यह मज़्मून भी बहुत सी रिवायात में नक़ल किया गया, जैसा कि आइंदा हदीस के ज़ैल में आ रहा है।

(٦) عن سعدؓ قال قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا يكيد اهل المدينة احد الا انماع كما ينماع الملح فى الماء متفق عليه كذا فى المشكوٰة

6. हज़रत सअद रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जो कोई भी मदीना मुनव्वरा में रहने वालों के साथ मक्र करेगा, वह ऐसा घुल जायेगा जैसा कि पानी में नमक घुल जाता है।

फ़ायदा:- यह मज़्मून बहुत सी अहादीस में बहुत मुख़्तलिफ़ उन्वानात से नक़ल किया गया, इससे पहली हदीस के ज़ैल में हज़रत उमर रज़ि॰ से भी हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद इस क़िस्म का नक़ल किया गया।

मुस्लिम शरीफ़ की एक हदीस में है कि जो शख़्स मदीना वालों के साथ किसी क़िस्म की बुराई का इरादा करेगा तो हक़ तआला शानुहू उसको आग में इस तरह पिघला देंगे, जिस तरह आग में रांग पिघलता है या पानी में नमक घुल जाता है।

हज़रत जाबिर रज़ि॰ ने एक मौक़े पर इर्शाद फ़रमाया कि वह शख़्स बर्बाद हो जाये, जो अल्लाह के रसूल सल्ल॰ को डराता है, उनके साहबज़ादे ने पूछा कि हुज़ूर सल्ल॰ का विसाल हो चुका। हुज़ूर सल्ल॰ को कोई शख़्स किस तरह डरा सकता है, तो हज़रत जाबिर रज़ि॰ ने फ़रमाया कि मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम से सुना है कि जो शख़्स मदीना वालों को डराता है, वह उस चीज़ को डराता है जो मेरे पहलू के दर्मियान है (यानी मेरे दिल को)।

एक दूसरी हदीस में है कि जो शख़्स मदीना वालों को डराये अल्लाह जल्ल शानुहू उसको डराये।

हज़रत उबादा रज़ि॰ से हुज़ूर सल्ल॰ का यह इर्शाद नक़ल किया गया कि ऐ अल्लाह, जो शख़्स मदीना वालों पर ज़ुल्म करे या उनको डराये, तू उसको डरा और उस पर अल्लाह की लानत, फ़रिश्तों की लानत और सारी दुनिया की लानत, न उनकी फ़र्ज़ इबादत मक़्बूल, न नफ़्ल इबादत मक़्बूल।

हज़रत साइब बिन ख़ल्लाद रज़ि॰ से भी हुज़ूर सल्ल॰ का यह इर्शाद ऐसे ही नक़ल किया गया, जैसा कि हज़रत उबादा रज़ि॰ ने नक़ल किया।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि॰ से नक़ल किया गया कि हुज़ूर सल्ल॰ ने इर्शाद फ़रमाया कि जो मदीना वालों को तक्लीफ़ पहुँचाये, उसको अल्लाह तआला तक्लीफ़ पहुँचाये और उस पर अल्लाह की लानत, फ़रिश्तों की लानत, सारी दुनिया के आदमियों की लानत, न उसका फ़रीज़ा मक़्बूल, न नफ़्ल।

(तर्ग़ीब)

हज़रत ज़ैद बिन अस्लम रज़ि॰ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ ने यह दुआ की है कि ऐ अल्लाह, जो मदीना वालों के साथ बुराई का इरादा करे, तू उसको ऐसा पिघला दे जैसा कि रांग आग में और नमक पानी में और चिकनाई धूप में पिघलती है। *(कंज़ुल उम्माल)*

और भी बाज़ सहाबा रज़ि॰ से इस क़िस्म के मज़ामीन नक़ल किये गये हैं। यह बड़ी सख़्त वईदें हैं जो लोग ज़ियारत के वास्ते वहां हाज़िर हों, वे इस का बहुत ज़्यादा ख़्याल और एहतिमाम रखें कि उन लोगों को अज़ीयत पहुँचायें, न ख़रीद और फ़रोख़्त में उनसे किसी क़िस्म की चालबाज़ी और मक्र करें, यहां रहते हुए भी वहां के रहने वालों के साथ इसका बहुत लिहाज़ रखें, जो मामला उनके साथ करें, वह निहायत सफ़ाई का होना चाहिय, किसी क़िस्म की दग़ा और फ़रेब उन लोगों के साथ करने से बहुत ज़्यादा एहतिराज़ करें।

(٧) عن انسؓ عن النبی صلی اللّٰه علیه وسلم من صلی فی مسجدی اربعین صلوة لا تفوته صلوة کتب له براءة من النار وبراءة من العذاب وبرئ من النفاق رواه احمد والطبرانی فی الاوسط ورجاله ثقات وروی الترمذی بعضه کذا فی الترغيب

7. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स मेरी मस्जिद में चालीस नमाज़ें ऐसी तरह पढ़े कि एक नमाज़ भी उस की मस्जिद से फ़ौत न हो, तो उस के लिए आग से बराअत लिखी जाती है, अज़ाब से बराअत लिखी जाती है और वह शख़्स निफ़ाक़ से बरी है।

फ़ायदा:- बड़ी अहम फ़ज़ीलत है और बड़ी आसान। ज़ाइरीन को चाहिए कि कम अज़ कम आठ रोज़ का कियाम वहां ज़रूर करें और जाने से पहले ऊंट या मोटर वालों से आठ रोज़ का क़ियाम तै कर लें ताकि चालीस नमाज़ें पूरी हो जाएं और इस का एहतिमाम करें कि इस दर्मियान में कोई नमाज़ फ़ौत न होने पाए। अगर किसी जगह ज़ियारत वग़ैरह को जाना हो तो ऐसी सूरत तज्वीज़ करें कि सुबह की नमाज़ मस्जिदे नबवी में पढ़ कर जाएं और ज़ुहर की नमाज़ वापसी में मस्जिद में मयस्सर हो जाए।

(٨) عن عائشةؓ ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم کان یقول للمریض بِسمِ اللّٰہِ تُربَۃُ اَرضِنَا بِرِیقَۃِ بَعضِنَا یُشفٰی سَقِیمُنَا رواہ البخاری بمعناہ مسلم و ابوداؤد وغیرھما

8. हज़रत आईशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मरीज़ के लिए फ़रमाया करते थे-"बिस्मिल्लाहि तुर्ब-तु अर्ज़िना बिरीक़-ति बअ्ज़िना यश्फ़ी सक़ीम-ना•

फ़ायदा:- इस दुआ का तर्जुमा यह है कि अल्लाह के नाम के साथ हमारी ज़मीन की मिट्टी हम में से बाज़ आदमियों के लब के साथ मिल कर हमारे बीमार को शिफ़ा देती है।

मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि जब कोई आदमी बीमार होता या उस के ज़ख़्म वग़ैरह होता तो हुज़ूर सल्ल० ऐसा करते।

इमाम नववी रह० कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल० उंगली को लब (होंट मुबारक) लगा कर ज़मीन पर लगाते ताकि उस को मिट्टी लग जाए और यह दुआ पढ़ते, फिर उस को उस जगह लगा देते जो माऊफ़ है।

बाज़ उलमा ने इसको आम कहा है, वह हर जगह की मिट्टी के मुताल्लिक़ ऐसा ही कहते हैं और इसकी वजह यह बताते हैं कि वतन की मिट्टी को मिज़ाज से मुनासबत में ख़ास दख़ल होता है, जैसा कि हाफ़िज़ रह० ने फ़त्हुल बारी में इस को तफ़्सील से नक़ल किया है और बाज़ उलमा ने इस को मदीना

7. हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स मेरी मस्जिद में चालीस नमाज़ें ऐसी तरह पढ़े कि एक नमाज़ भी उस की मस्जिद से फ़ौत न हो, तो उस के लिए आग से बराअत लिखी जाती है, अज़ाब से बराअत लिखी जाती है और वह शख़्स निफ़ाक़ से बरी है।

फ़ायदाः- बड़ी अहम फ़ज़ीलत है और बड़ी आसान। ज़ाइरीन को चाहिए कि कम अज़ कम आठ रोज़ का कियाम वहां ज़रूर करें और जाने से पहले ऊंट या मोटर वालों से आठ रोज़ का क़ियाम तै कर लें ताकि चालीस नमाज़ें पूरी हो जाएं और इस का एहतिमाम करें कि इस दर्मियान में कोई नमाज़ फ़ौत न होने पाए। अगर किसी जगह ज़ियारत वग़ैरह को जाना हो तो ऐसी सूरत तज्वीज़ करें कि सुबह की नमाज़ मस्जिदे नबवी में पढ़ कर जाएं और ज़ुहर की नमाज़ वापसी में मस्जिद में मयस्सर हो जाए।

(٨) عن عائشةؓ ان النبی صلی اللہ علیہ وسلم کان یقول للمریض بِسمِ اللّٰہِ تُرْبَۃُ اَرْضِنَا بِرِیْقَۃِ بَعْضِنَا یُشْفٰی سَقِیْمُنَا رواہ البخاری بمعناہ مسلم و ابوداؤد وغیرھما

8. हज़रत आईशा रज़ि॰ फ़रमाती हैं कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मरीज़ के लिए फ़रमाया करते थे-"बिस्मिल्लाहि तुर्ब-तु अर्ज़िना बिरीक़-ति बअ्ज़िना यश्फ़ी सक़ीम-ना॰

फ़ायदाः- इस दुआ का तर्जुमा यह है कि अल्लाह के नाम के साथ हमारी ज़मीन की मिट्टी हम में से बाज़ आदमियों के लब के साथ मिल कर हमारे बीमार को शिफ़ा देती है।

मुस्लिम शरीफ़ की हदीस में है कि जब कोई आदमी बीमार होता या उस के ज़ख़्म वग़ैरह होता तो हुज़ूर सल्ल॰ ऐसा करते।

इमाम नववी रह॰ कहते हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ उंगली को लब (होंट मुबारक) लगा कर ज़मीन पर लगाते ताकि उस को मिट्टी लग जाए और यह दुआ पढ़ते, फिर उस को उस जगह लगा देते जो माऊफ़ है।

बाज़ उलमा ने इसको आम कहा है, वह हर जगह की मिट्टी के मुताल्लिक़ ऐसा ही कहते हैं और इसकी वजह यह बताते हैं कि वतन की मिट्टी को मिज़ाज से मुनासबत में ख़ास दख़ल होता है, जैसा कि हाफ़िज़ रह॰ ने फ़त्हुल बारी में इस को तफ़्सील से नक़ल किया है और बाज़ उलमा ने इस को मदीना

पाक की मिट्टी के साथ ख़ास बताया है।

अल्लामा क़स्तलानी ने मुवाहिबे लदुन्निया में मदीना पाक की ख़ुसूसियात में लिखा है कि इस का गुबार जुज़ाम और वर्स के लिए ख़ुसूसियत से शिफ़ा है।

अल्लामा ज़ुर्क़ानी कहते हैं कि यह न कोई तिब्बी चीज़ है न अक़्ली चीज़ है लेकिन मुन्किर को नफ़ा नहीं करती, अल्लामा ज़ुर्क़ानी ने बाज़ लोगों के हालात भी लिखे हैं जिन को बरस की बीमारी थी और मदीना पाक की मिट्टी मलने से वे अच्छे हो गए, अल्लामा क़स्तानी कहते हैं, बल्कि हर मर्ज़ के लिए शिफ़ा है।

अल्लामा ज़ुर्क़ानी रह० ने लिखा है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मर्तबा क़बीला बनूल हारिस के पास गये, वे लोग बीमार थे। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, क्या हाल है? कहने लगे, हुज़ूर ! हम लोग बुख़ार में मुब्तला हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम्हारे पास तो सईब मौजूद है। (यह मदीना की एक ख़ास जगह का नाम है जो वादी-ए-बुत्हान में है) उन्होंने अर्ज़ किया कि सईब को क्या करें? हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, उस की मिट्टी लेकर पानी में डाल कर उस पर यह पढ़ कर लब डालो-

بِسْمِ اللّٰهِ تُرَابُ اَرْضِنَا بِرِيْقِ بَعْضِنَا شِفَاءٌ لِّمَرِيْضِنَا بِاِذْنِ رَبِّنَا

इन हज़रात ने उसका इस्तेमाल किया। अल्लाह के फ़ज़्ल से बुख़ार जाता रहा।

इस क़िस्से के नक़ल करने वाले एक रावी कहते हैं कि लोगों के उस जगह से मिट्टी उठाने की वजह से वहां गढ़ा भी पड़ गया, बहुत से लोगों ने इस का तजुर्बा किया।

अल्लामा समहूदी रह० कहते हैं कि यह जगह अब तक भी मौजूद है। लोग इस की मिट्टी बीमारों के वास्ते लाते हैं।

हज़रत साबित बिन क़ैस रज़ि० हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद नक़ल करते हैं कि मदीने का गुबार कोढ़ की बीमारी के लिए शिफ़ा है। *(ज़ुर्क़ानी)*

इस नाकारा का तजुर्बा तो यहां तक है कि मदीना तैयबा की मिट्टी इस दुआ के साथ ताऊन की गिलटी तक के लिए भी नाफ़ेअ हुई है और वफ़ाउल वफ़ा में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद नक़ल किया है कि उस ज़ात की क़सम ! जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है, इस की मिट्टी में हर बीमारी का इलाज है।

(٩) عن ابن عمرؓ ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال من استطاع ان يموت بالمدينة فليمت بها فانى اشفع لمن يموت بها رواه الترمذى و ابن ماجه وابن حبان فى صحيحه والبيهقى ولفظ ابن ماجه فانى اشهد لمن مات بها كذا فى الترغيب

9. हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जो शख़्स इस की ताक़त रखता हो कि मदीना तैयबा में मरे, चाहिए कि वहीं मरे, इस लिए कि मैं उस शख़्स का सिफ़ारिशी हूंगा जो मदीना में मरेगा।

दुसरी हदीस में है कि मैं उसका गवाह बनूंगा।

फ़ायदा:- बहुत से सहाबा रज़ि॰ से यह मज़्मून नक़ल किया गया। हजरत सुमैता कहती हैं कि हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि जो शख़्स इस की ताक़त रखता हो कि मदीना के सिवा कहीं न मरे, वह मदीना ही में मरे, इस लिए कि मैं उस के लिए ग़वाह बनूंगा जो मदीना में मरे। *(तर्ग़ीब)*

उलमा ने लिखा है कि शफ़ाअत से मुराद खास किस्म की शफ़ाअत है, वर्ना हुज़ूर सल्ल॰ की आम शफ़ाअत तो सारे ही मुसलमानों के लिए होगी, और ताक़त रखने का मतलब यह है कि इस की कोशिश करे कि वहां आख़िर तक रहे।

अल्लामा ज़र्क़ानी रह॰ कहते हैं कि यह तर्ग़ीब है वहां से बाहर न जाने की, कि मरने तक वहीं रहे।

इब्नुल हाज्ज रह॰ कहते हैं कि इस को ताक़त रखने से ताबीर किया, गोया इशारा है इस तरफ़ कि इस की इन्तिहाई कोशिश करे।

मेरे मोहतरम बुज़ुर्ग हज़रत मौलाना अल-हाज सैय्यद अहमद साहिब फ़ैज़ाबादी नव्वरल्लाहु मर्क़दहू ने जो मदरसा शरअिया मदीना तैयबा के बानी और हज़रत शेख़ुल अरब वल्अजम हज़रते अक़्दस मौलाना सैय्यद हुसैन अहमद साहिब मदनी के बड़े भाई थे, कई मर्तबा फ़रमाया कि हिन्दुस्तान के दोस्तों से मिलने के लिए जाने को तो एक मर्तबा दिल चाहता है, मगर बुढ़ापा आ गया, ऐसा न हो कि मदीने की मौत नसीब न हो।

मेरे आक़ा हज़रते अक़्दस मौलाना ख़लील अहमद साहिब नव्वरल्लाहु मर्क़दहू ने मुल्तज़म पर जो दुआएं कीं, मिनजुम्ला उन के यह भी थी कि हक़

तआला शानुहू मदीना पाक की मौत नसीब फ़रमाए।

और हज़रत उमर रज़ि॰ की दुआ तो मशहूर है-

اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِي شَهَادَةً فِي سَبِيْلِكَ وَاجْعَلْ مَوْتِي بِبَلَدِ رَسُوْلِكَ

अल्लाहुम्म- र्ज़ुक़्नी शहाद-तन् फ़ी सबीलि-क वज्अल मौती बि ब-ल-दि-रसूलि-क

"ऐ अल्लाह! मुझे अपने रास्ते में शहादत अता फ़रमा और अपने रसूल के शहर में मौत अता फ़रमा।

इन दोनों दुआओं का जमा होना बज़ाहिर दुश्वार था कि मदीना-ए-पाक दारुल इस्लाम, और कुफ़्र से ऐसा बईद हो चुका था कि शैतान भी उस से मायूस हो चुका था। ऐसी हालत से वहां शहादत बज़ाहिर दुश्वार थी, लेकिन अल्लाह जल्ल शानुहू जिस काम का इरादा फ़रमा लें, तो उन को अस्बाब पैदा करने क्या मुश्किल हैं। ख़ास मस्जिदे नबवी में सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के बड़े मज्मे के दर्मियान ऐन नमाज़ की हालत में अबू लुअ्लुअ् काफ़िर के हाथ शहादत नसीब हुई।

यहया बिन सईद रह॰ कहते हैं कि एक मर्तबा एक क़ब्र खोदी जा रही थी और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वहां तशरीफ़ फ़रमा थे, एक साहब तशरीफ़ लाए और क़ब्र को देख कर कहने लगे कि मोमिन के लिए यह कैसी बुरी जगह है। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि तुम ने कैसी बुरी बात कही।

हुज़ूर सल्ल॰ की मुराद ग़ालिबन यह थी कि मोमिन की क़ब्र को बुरी जगह बताया, हालांकि वह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है।

वह साहब कहने लगे, हुज़ूर सल्ल॰! मेरा मक़्सद तो यह था कि यहां मर गये, कहीं जाकर अल्लाह के रास्ते में शहीद हो जाते। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि शहादत के बराबर तो कोई चीज़ ही नहीं, लेकिन सारी ज़मीन पर कोई जगह ऐसी नहीं, जहां मुझे अपनी क़ब्र बनायी जानी पसन्दीदा हो, बजुज़ (सिवाए) मदीना तैयबा के। हुज़ूर सल्ल॰ ने तीन मर्तबा यही अल्फ़ाज़ फ़रमाए। *(मिश्कात)*

मदीना पाक की मौत ईमान के साथ किसी ख़ुशनसीब को मयस्सर हो जाए, इस से बढ़ कर मरने के वक़्त क्या दौलत हो सकती है कि जन्नतुल बक़ीअ् की मिट्टी नसीब हो जाए, जहां हुज़ूर सल्ल॰ के अहले बैत मद्फ़ून हैं, दो के

अलावा सारी अज़्वाजे मुतहहरात मद्फ़ून हैं और सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन की कितनी बड़ी जमाअत मद्फ़ून है। हज़रत इमाम मालिक रह॰ से नक़ल किया गया है कि दस हज़ार सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम इस मक़्बरे में मद्फ़ून हैं। (ज़ुर्क़ानी)

इन पाक अर्वाह पर अल्लाह जल्ल शानुहू की किस क़दर रहमतें हर वक़्त नाज़िल होती होंगी, यह ज़ाहिर चीज़ है।

इब्ने नज्जार रह॰ ने हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद नक़ल किया है कि दो क़ब्रस्तान आसमान वालों के लिए ज़मीन पर ऐसे चमकते हैं जैसा कि ज़मीन वालों के लिए आसमान पर चांद और सूरज एक बक़ीअ् का क़ब्रस्तान, दूसर मक़्बरा अस्क़लान।

और कअब अहबार, जो तौरात के बड़े आलिम थे, फ़रमाते हैं कि तौरात में लिखा है कि जन्नतुल बक़ीअ् एक क़ुब्बा की तरह से है, जिस पर मुस्तक़िल फ़रिश्तों की जमाअत मुक़र्रर है कि जब वह पुर हो जाए, उसको जन्नत में उल्ट दें। (ज़ुर्क़ानी)

और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि॰ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़ल करते हैं कि क़ियामत में सब से अव्वल मेरी क़ब्र शक़ होगी, मैं उस में से निकलूंगा, फिर अबूबक्र रज़ि॰ अपनी क़ब्र से निकलेंगे, फिर उमर, फिर मैं जन्नतुल बक़ीअ् में जाऊंगा और वहां जितने मद्फ़ून हैं, उन सब को अपने साथ लुंगा, फिर मक्का मुकर्रमा के क़ब्रस्तान वालों का इन्तिज़ार करूंगा, वे मक्का और मदीना के दर्मियान आ कर मुझ से मिलेंगे।

इमाम तिर्मिज़ी ने इस हदीस को सहीह् बताया है। (ज़ुर्क़ानी)

(۱۰) عن ابی ہریرۃؓ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم ما بین بیتی ومنبری روضۃ من ریاض الجنۃ ومنبری علی حوضی رواہ البخاری ومسلم وغیرھما وفی حدیث سعد ابن ابی وقاصؓ عند البزار بسند رجالہ ثقات وعند الطبرانی من حدیث ابن عمرؓ بلفظ القبر فعلی ھذا المراد بالبیت بیت عائشۃؓ الذی صار فیہ قبرہ کذا فی الفتح۔

10. हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो जगह मेरे घर यानी मेरी क़ब्र और मेरे मिंबर के दर्मियान है, वह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है और मेरा मिंबर मेरे हौज़ पर है।

फ़ायदाः- इस हदीस शरीफ़ में दो मज़्मून वारिद हैं-

1. अव्वल यह कि मस्जिदे नववी का वह हिस्सा, जो क़ब्रे अत्हर और मिंवर शरीफ़ के दर्मियान है, वह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है। यह मशहूर क़ौल के मुवाफ़िक़ है कि मेरे घर से मुराद हज़रत आईशा रज़ि का घर है, जिस में वाद में हुज़ूर सल्ल० की क़ब्र शरीफ़ बनी।

बाज़ उलमा ने मेरे घर से आम मुराद लिया है यानी तमाम अज़्वाज के घर और ज़वाइदे मुस्नद अहमद की एक रिवायत से इस की ताईद की, जिस में वारिद हुआ है कि इन घरों के और मिंबर के दर्मियान एक बाग़ है जन्नत के बाग़ों में से। इस सूरत में अज़्वाजे मुतह्हरात के जो मकानात वलीद बिन अब्दुल मलिक के ज़माने में मस्जिदे नबवी में दाख़िल हुए हैं। वह सारा हिस्सा रौज़ा ही है। *(नुज़्हत)*

इस के मतलब में उलमा के तीन क़ौल हैं-

1. अव्वल यह कि अल्लाह की रहमतों के नाज़िल होने में यह हिस्सा ऐसा ही है जैसा कि जन्नत का बाग़ हो कि जिस तरह वहां हर वक़्त अल्लाह जल्ल शानूहू की रहमतें नाज़िल होती रहती हैं, इस तरह यहां भी हर वक़्त अल्लाह जल्ल शानुहू की रहमतें नाज़िल होती हैं।

2. दूसरा क़ौल यह है कि इस जगह हक़ीक़त में जन्नत का एक टुकड़ा है, जो इस दुनिया में मुंतक़िल किया गया है और बेऐनिही यह टुकड़ा जन्नत में मुंतक़िल किया जाएगा।

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० फ़त्हुल बारी में फ़रमाते हैं कि इस हदीस से भी मदीना तैयबा के मक्का मुकर्रमा से अफ़ज़ल होने पर इस्तिदलाल किया गया है, इस लिए कि इस हदीस से मालूम होता है कि यह हिस्सा जन्नत का टुकड़ा है और दूसरी हदीस में हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद नक़्ल किया गया कि जन्नत का एक कमान के बक़द्र हिस्सा भी दुनिया और जो कुछ दुनिया में है, सब से अफ़ज़ल है।

अक्सर उलमा के नज़्दीक यह तीसरा क़ौल राजेह है।

इब्ने हजर मक्की रह० शर्हे मनासिके नववी में लिखते है, सब से बेहतर क़ौल वह है जो इमाम मालिक रह० वग़ैरह से नक़्ल किया गया कि यह हदीस अपने ज़ाहिर पर है और यह जगह जन्नत में मुंतक़िल हो जाएगी।

2. दूसरा मज़्मून हदीसे बाला में यह है कि मेरा मिंबर मेरे हौज़ पर होगा,

इस के मायने में भी उलमा के तीन क़ौल हैं-

1. अव्वल यह कि यह मिंबर शरीफ़ जो मस्जिद में है। यह बेऐनिही हौज़े कौसर पर मुंतक़िल हो जाएगा।

2. दूसरा क़ौल यह है कि यह हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हौज़े कौसर का हाल बयान फ़रमाया कि उस पर मेरे लिए एक मिंबर होगा। इस सूरत में मस्जिद के इस मिंबर से कोई ताल्लुक़ नहीं।

3. तीसरे मायने यह हैं कि मस्जिद में जो मिंबर शरीफ़ है, उस के मुत्तसिल इबादत करने का समरा और असर यह है कि उस की बरकत से क़ियामत में हौज़े कौसर पर हाज़िरी नसीब होती है।

क़ाज़ी अयाज़ रह॰ ने शिफ़ में लिखा है कि पहले मायने सब से ज़्यादा ज़ाहिर हैं।

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह॰ फ़तहुल बारी में फ़रमाते हैं कि अक्सर उलमा ने यही फ़रमाया है कि वही मिंबर मुराद है, जिस पर खड़े होकर हुज़ूर सल्ल॰ ने यह इर्शाद फरमाया था।

और हज़रत अबूसईद ख़ुदरी रज़ि॰ की रिवायत से इसी की ताईद होती है। वे हुज़ूर सल्ल॰ का यह इर्शाद नक़ल करते हैं कि मेरे मिंबर के पाए जन्नत में सतून बना दिए जाएंगे।

और भी बहुत से उलमा ने इसी मायने को तर्जीह दी है। इसी वजह से मस्जिदे नबवी के दर्मियान में ये दो जगह, एक रौज़ा, दूसरे मिंबर की जगह ख़ास तौर से अहम हैं। इन के अलावा और भी बाज़ मवाक़े ख़ुसूसी हैं, जिन के पास जाकर ख़ुसूसियत से दरूद व दुआ वग़ैरह करना चाहिए। हज की किताबों में उन को तफ़्सील से ज़िक्र किया है, उन में से चंद को यहां भी ज़िक्र किया जाता है।

मुल्ला अली क़ारी रह॰ फ़रमाते हैं कि जिन स्तूनों की ख़ास फ़ज़ीलत है और इसी तरह से उन के अलावा जो मुतबर्रक मक़ामात हैं, उन की ज़ियारत करना चाहिए और उन के पास ख़ुसूसियत से नवाफ़िल- दुआ वग़ैरह करना चाहिए, बिल ख़ुसूस मस्जिद का जो हिस्सा हुज़ूर सल्ल॰ के ज़माने में मस्जिद था, वह ख़ास तौर से ज़्यादा अहम और ज़्यादा क़ाबिले एहतिमाम है और इस हिस्से में जितने सतून हैं, वे ख़ास तौर पर मुतबर्रक हैं कि बुख़ारी शरीफ की हदीस के मुवाफ़िक़ सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ सतूनों के क़रीब कसरत से नमाज़ पढ़ा करते थे, उन में

से आठ सतून ख़ास तौर से अफ़्ज़ल और मुतबर्रक और मारूफ़ हैं।

1. उस्तुवाना-ए-मुख़ल्लक़ः - यह जगह सब से ज़्यादा मुतबर्रक है। यह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नमाज़ पढ़ने की जगह है, इसी को उस्तुवाना-ए-हन्नाना भी कहते हैं। इस जगह खजूर का वह तना था, जिस पर टेक लगा कर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मिंबर बनने से पहले ख़ुत्बा पढ़ा करते थे जब मिंबर शरीफ़ तैय्यार हुआ और हुज़ूर सल्ल॰ ख़ुत्बे के लिए उस पर तशरीफ़ फ़रमा हुए तो उसमें से बहुत ज़ोर से रोने की आवाज़ आयी।

एक रिवायत में है कि उस के रोने से मस्जिद गूंज गयी।

दूसरी रिवायत में है कि उस के रोने से और उस की हालत से मस्जिद वाले भी रोने लगे। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस के पास आए और उस पर दस्ते मुबारक रखा, जिस से उस का रोना बन्द हुआ। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि इस के क़रीब अल्लाह का ज़िक्र होता था, अब मिंबर बन जाने से यह उस से महरूम हो गया, इस की वजह से रो रहा है। अगर मैं उस पर हाथ न रखता तो क़ियामत तक इसी तरह रोता रहता, इस के बाद उस को दफ़्न कर दिया गया।

बहुत मशहूर क़िस्सा है। दस सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ ने इसको नक़ल किया है। हसन बसरी रह॰ जब इस का क़िस्सा नक़ल फ़रमाते तो रोने लगते और फ़रमाते कि अल्लाह के बंदो! खजूर के दरख़्त को तो हुज़ूर सल्ल॰ का इतना इश्तयाक़ हो, तुम तो इस से भी ज़्यादा शौक़ के अहल थे। *(शिफ़ा)*

एक हदीस में है कि जब मिंबर तैयार हो गया और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जुमा के दिन उस पर तशरीफ़ फ़रमा हुए तो यह सतून ऐसे ज़ोर से चिल्लाया, क़रीब था कि फट जाए। हुज़ूर सल्ल॰ मिंबर से उतरे और उसे अपने से लगाया, तो इस तरह सिसकियां ले रहा था जैसे बच्चा किया करता है, जिस वक़्त कि उस को रोते हुए को चुप किया जाए। *(बुख़ारी)*

इसी वजह से उस को उस्तुवाना-ए-हन्नानः कहते हैं, जिस के मायने रोने वाली ऊंटनी के हैं और मुख़ल्लक़ः ख़लूक़ से, जो एक मुरक्कब ख़ुश्बू का नाम है, वह उस पर ख़ास तौर से मली जाती थी, अगरचे और सतूनों पर भी मली जाती थी और इस लिए और भी बाज़ सतूनों को मुख़ल्लक़ा कहा जाता था, मगर अक्सर इसी को कहा जाता है।

हज़रत इमाम मालिक रह॰ फ़रमाते हैं कि मस्जिदे नबवी में नमाज़ के लिए सब से अफ़ज़ल जगह यही है। इसी जगह मेहराबुन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम से मेहराब बना दी गयी, जो हुज़ूर सल्ल॰ के ज़माने में न थी बल्कि वलीद बिन अब्दुल मलिक के ज़माने में जब हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह॰ ने बहैसियते अमीरे मदीना होने के मस्जिद की तामीर करायी है, उस वक्त से मेहराब बनी है। *(नुज़्हतुन्नाज़िरीन)*

2. उस्तुवाना-ए-आइशा:- जिस को उस्तुवानतुल मुहाजिरीन भी कहते हैं, इस लिए कि मुहाजिरीन की अक्सर नशिस्त इस जगह रहती थी। इब्तिदाअन हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुसल्ला इसी जगह था। इस के बाद आगे के सतून की तरफ़, जो न॰ 1 में गुज़रा, तज्वीज़ हुआ। इस को उस्तुवानतुल क़ुरअ: भी कहते हैं, जिसकी वजह यह है कि हज़रत आइशा रज़ि॰ ने हुज़ूर सल्ल॰ से नक़ल किया कि इस मस्जिद में एक जगह ऐसी है कि अगर लोगों को उस का हाल मालूम हो जाए तो उस के लिए हुजूम की वजह से क़ुरअ: डालना पड़े। लोगों ने हज़रत आइशा रज़ि॰ से पुछा कि वह कौन सी जगह है, तो उन्होंने उस वक़्त बताने से इन्कार फ़रमाया। इस के बाद हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि॰ के इसरार पर हज़रत आइशा रज़ि॰ ने उनको बताया। इसी लिए इस को उस्तुवाना-ए-आइशा कहते हैं कि उन की हदीस और उन की तअ्यीन से इस की तअ्यीन हुई। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ हज़रत उमर रज़ि॰ अक्सर इस के क़रीब नमाज़ पढ़ा करते थे। एक हदीस में आया है कि इस जगह दुआ क़ुबूल होती है।

3. उस्तुवानतुत्तौब: :- और इसको उस्तुवाना-ए-अबू लुबाब: भी कहते हैं। हज़रत अबू लुबाबा रज़ि॰ मश्हूर सहाबी हैं ग़ज़्वा-ए-बनी क़ुरैज़ा के वक़्त एक ग़लती उन से सरज़द हो गयी थी, वह यह कि जिस वक़्त यहूद बनी क़ुरैज़ा का मुहासरा हो रहा था, तो उन्होंने तंग आकर हथियार डालने का इरादा किया और अबू लुबाबा रज़ि॰ से ज़माना-ए-जाहिलिय्यत से बहुत ज़्यादा ताल्लुक़ात थे, तो उन्होंने मश्वरे के लिए उन को बुलाया कि हुज़ूर सल्ल॰ का अिन्दिया उन से अपने मुताल्लिक़ मालूम करें। वह वहां तशरीफ़ ले गये। वे सब उन को देख कर बे-तहाशा रोने लगे। उन के रोने को देख कर उन का भी दिल भर आया और उन के दर्याफ़्त करने पर उन्होंने अपने हल्क़ की तरफ़ इशारा किया, गोया कि हुज़ूर सल्ल॰ का अिन्दिया क़त्ल करने का है, लेकिन इस के बाद मअन् तनब्बुह हुआ कि मुझ से बड़ी ग़लती हुई। वहां से वापस आकर अपने आप को उस जगह जो

खजूर का सतून था, उस से बाँध दिया कि जब तक मेरी तौबा क़ुबूल न होगी, अपने को न खोलूंगा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही खोलेंगे, तो इस जगह से रिहाई करूंगा। हुज़ूर सल्ल० को जब इत्तिला हुई तो आपने फ़रमाया कि अगर वह मेरे पास आ जाते, तो मैं अल्लाह जल्ल शानुहू से उन के लिए इस्तिग़फ़ार करता, मगर अब वह बराहे रास्त अपनी तौबा के क़ुबूल पर मदार रख चुके हैं, तो जब तक तौबा क़ुबूल न हो, मैं कैसे खोल सकता हूं। कई दिन इसी हाल में गुज़र गये कि न खाना, न पीना। भूख की वजह से आंखों के सामने अंधेरा हो गया। कानों से ऊंचा सुनाई देने लगा। कई दिन के बाद एक शब में कि उस दिन हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० के मकान पर थे, तहज्जुद के वक़्त उनकी तौबा क़ुबूल हुई, हुज़ूर सल्ल० ने इसकी इत्तिला फ़रमाई सहाबा-ए-किराम रज़ि० ने उनको खोलना चाहा और क़ुबूले तौबा की बशारत दी, मगर उन्होंने कहा कि जब तक हुज़ूर सल्ल० ही अपने मुबारक हाथ से न खोलेंगे मुझे खुलना मन्ज़ूर नहीं, चुनांचे हुज़ूर सल्ल० जब सुबह की नमाज़ के लिए बाहर तशरीफ़ लाए तो उन को खोला।

बाज़ उलमा ने कहा है कि ग़ज़्वा-ए-तबूक में जो हज़रात रह गये थे, उन में अबू लुबाबा रज़ि० भी थे और इस ग़ज़्वे में शिर्कत न होने के रंज व ग़म में उन्होंने अपने आप को इस सतून से बांध दिया था और इसी हाल में जब कई दिन गुज़र गये और आयते शरीफ़ा "व आख रू- नअ्-त-र-फ़ु बिज़ूनूबिहिम०" नाज़िल हुई तो उनको खोला गया। इस सतून के क़रीब क़िब्ले की जानिब हुज़ूर सल्ल० ने एतिकाफ़ भी किया है और अक्सर ज़ुअफ़ा मसाकीन वग़ैरह इस सतून के क़रीब बैठते थे, तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सुबह की नमाज़ के बाद तुलूए आफ़ताब तक उन के पास तशरीफ़ फ़रमा होते थे।

4. **उस्तुवानतुस् सरीर:-** हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एतिकाफ़ के ज़माने में इसी जगह शब को आराम फ़रमाया करते थे, इस लिए यह नाम हुआ। सरीर के असल मायने तख़्त के हैं। हुज़ूर सल्ल० के आराम फ़रमाने के लिए कोई चीज़ इस जगह बिछायी जाती थी, जो लकड़ी की होगी।

5. **उस्तुवाना-ए-अली :-** जिस को उस्तुवानतुल मुहरिस और उस्तुवानतुल हुरस भी कहते हैं। हरस के मायने हिफ़ाज़त के हैं।

बाज़ सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम दरबानी के तौर पर इस जगह

तशरीफ़ फ़रमा होते थे और अक्सर हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू तशरीफ़ रखते थे, इस लिए उस्तुवाना-ए-अली भी नाम हो गया। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत आइशा रज़ि॰ के हुजरे से जब तशरीफ़ लाते थे, तो इस जगह को गुज़रते।

6. **उस्तुवाना-ए-वुफ़ूद** :- हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में जो अरब के वफ़ूद आते थे, वे अक्सर इसी जगह बिठाए जाते थे। हुज़ूर सल्ल॰ इस जगह तशरीफ़ लाकर उन से गुफ़्तगू फ़रमाते, उन को अह्काम की तल्क़ीन फ़रमाते।

उलमा का इन दोनों स्तून न॰ 5 व न॰ 6 की तअ्यीन में इख़्तिलाफ़ है, जिस को "नुज़्हतुन्नाज़िरीन' वग़ैरह में ज़िक्र किया है।

7. **उस्तुवाना-ए-तहज्जुद**- कहते हैं कि अक्सर शब के वक़्त जब सब आदमी चले जाते तो इस जगह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तहज्जुद के लिए एक बोरिया बिछाया जाता था और हुज़ूर सल्ल॰ यहां तहज्जुद अदा फ़रमाते थे।

बाज़ रिवायात से मालुम होता है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रमज़ानुल मुबारक में तीन रात जो नमाज़ पढ़ी है और बहुत मज्मा जमा हो जाता था और हुज़ूर सल्ल॰ ने तरावीह के फ़र्ज़ होने के ख़ौफ़ से फिर नहीं पढ़ी, वह इसी जगह पढ़ी गयी है, मगर अक्सर रिवायात में इस का मस्जिदे नबवी में होना मालूम होता है। *(नुज़्हत)*

और यह जगह उस वक़्त मस्जिदे नबवी में दाख़िल नहीं थी।

8. **उस्तुवाना-ए-जिब्रील** :- उलमा ने लिखा है कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम के आने की एक ख़ास जगह थी, लेकिन यह सतून इस वक़्त हुजरा-ए-शरीफ़ की तामीर के अन्दर आ गया है, बाहर से उस की ज़ियारत नहीं होती। ये आठ सतून उलमा ने ख़ास गिनवाए हैं। लेकिन यह ज़ाहिर बात है कि मस्जिदे नबवी का कौन-सा हिस्सा ऐसा होगा जहां हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़दमे मुबारक न पड़े हों और सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ ने नमाज़ें न पढ़ी हों और न सिर्फ़ मस्जिदे नबवी, बल्कि मदीना तैयबा के सारे शहर का कौन सा हिस्सा ऐसा होगा, जहां इन बा-बरकत हस्तियों के क़दम बारहा न पड़े हों, इस लिए कि वहां की हर जगह बा बरकत है। हक़ तआला उस की बरकत से इन्तिफ़ाअ् की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए कि असल तौफ़ीक़ ही है।

ख़ात्मा

इस में सारे उलमा का इत्तिफ़ाक़ है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हिजरत के बाद सिर्फ़ एक ही मर्तबा हज किया है। सन दस हिजरी में, जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी का आख़िरी साल था और इस सफ़र में ऐसे वाक़िआत का हुज़ूर सल्ल० की तरफ़ से ज़ुहूर हुआ जैसा कि किसी से रूख़्सत होते वक़्त हुआ करते हैं। इसी वजह से इस का नाम हज्जतुल विदाअ् यानी रुख़्सत का हज पड़ गया कि गोया हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हक़ तआला शानुहू के यहां जाने के लिए इस सफ़र के इज्तिमाअ् के वक़्त सारे मुसलमानों से जो हाज़िर थे, रुख़्सत हो गये। सफ़रे हज की इब्तिदा के वक़्त हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने इरादे का ऐलान फ़रमाया, तो हज़ारों की मिक़्दार में सहाबा-ए-किराम रज़ि० ने हमरिकाबी और मअिय्यत का फ़ख़्र हासिल करने के लिए हज का इरादा फ़रमा लिया और जो ख़बर सुनता गया, वह हमरिकाबी की कोशिश करता गया, इन में से एक बड़ी मिक़्दार मदीना तैयबा रवानगी से क़ब्ल पहुंच गयी और जो वहां हाज़िर न हो सके थे, वे रास्ते में मिलते रहे और जिन को इतना भी वक़्त न मिला, वे मक्का मुकर्रमा और बाज़ बराहेरास्त अरफ़ात पर पहुंचे, ग़रज़ बहुत कसीर मज्मा इस हज में हमरिकाब था, जिस की मिक़्दार एक लाख चौबीस हज़ार तक बतायी जाती है।

(लमआत हाशिया अबूदाऊद)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लहु अलैहि व सल्लम मदीना मुनव्वरा में ज़ुहर की नमाज़ पढ़ कर रवाना हुए और असर की नमाज़ ज़ुल हुलैफ़ा में पहुंच कर अदा फ़रमायी इस में मुअर्रिख़ीन का इख़्तिलाफ़ है कि रवानगी की तारीख़ क्या थी, 24, 25, 26, ज़ीक़ादा, तीन क़ौल हैं और इसी तरह दिन के मुताल्लिक़ भी, पंजशंबा, जुमा, शंबा, तीन क़ौल हैं जिन में से जुमा का दिन जिन हज़रात ने कहा है, वह सही रिवायात के ख़िलाफ़ है, इस लिए कि रवानगी से क़ब्ल मदीना पाक में चार रक्अत ज़ुहर की पढ़ना मशहूर रिवायात में हैं।

इस नाकारा के नज़्दीक 25 ज़ीक़ादा शंबा के दिन रवानगी रिवायात से

राजेह मालुम होती है। शब को ज़ुलहुलैफ़ा में क़ियाम फ़रमाया और तमाम अज़्वाजे मुतह्हरात से, जो हमराह थीं सोहबत की। इसी वजह से उलमा के नज़दीक, अगर बीवी साथ हो तो एहराम से क़ब्ल सोहबत करना मुस्तहब है कि एहराम के तवील ज़माने में दोनों के लिए इफ़्फ़त का सबब है।

दूसरे दिन ज़ुहर के वक़्त हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एहराम के लिए ग़ुस्ल किया और एहराम की चादरें ज़ैबे तन फ़रमायीं और ज़ुलहुलैफ़ा की मस्जिद में ज़ुहर की नमाज़ के बाद क़िरान का एहराम बांधा।

मुहक़्क़िक़ीन उलमा के नज़दीक हुज़ूर सल्ल० का एहराम शुरू ही से क़िरान का था। यहां हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा-ए-किराम रज़ि० को इख़्तियार दे दिया कि जिस का दिल चाहे इफ़राद, तमत्तोअ़, क़िरान में से जौन-सा चाहे, बांध ले। ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने क़िरान का बांधा कि हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने रात को तशरीफ़ लाकर यह फ़रमाया था कि यह वादि-ए-अक़ीक़ मुबारक वादी है, आप इसमें नमाज़ पढ़ें और हज और उमरा दोनों का एहराम बांधें, इस के बाद मस्जिद से बाहर तशरीफ़ लाकर ऊंटनी पर सवार हुए और ज़ोर से लब्बैक पढ़ा। चूंकि मस्जिद की आवाज़ क़रीब के लोगों ने सुनी थी और यहां ऊंटनी पर तशरीफ़ रखने के बाद दूर तक आवाज़ गयी, इस लिए बहुत से हज़रात ने यह समझा कि उसी वक़्त हुज़ूर सल्ल० ने एहराम की इब्तिदा फ़रमायी । इस के बाद हुज़ूर सल्ल० की मुबारक ऊंटनी आप को अपनी पुश्त पर लेकर चली और बीदा की पहाड़ी पर चढ़ी, जो ज़ुलहुलैफ़ा के क़रीब है, चूंकि हाजी के लिए हर ऊंची जगह चढ़ते हुए लब्बैक ज़ोर से पढ़ना मुस्तहब है, इस लिए हुज़ूर सल्ल० ने यहां भी ज़ोर से लब्बैक पढ़ा, जिस की आवाज़ पहाड़ी का ऊंचान होने की वजह से और भी ज़्यादा दूर तक गयी। इस की वजह से सहाबा रज़ि० की एक बड़ी जमाअत इस जगह हुज़ूर सल्ल० का एहराम बांधना नक़ल करती है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लहु अलैहि व सल्लम ने लब्बैक पढ़ते हुए मक्का मुकर्रमा की तरफ़ रवानगी शुरू की, हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने आकर यह दर्ख़्वास्त की कि सहाबा-ए-किराम रज़ि० को हुक्म फ़रमा दिजिए कि लब्बैक ज़ोर से पढ़ें। चुनांचे हुज़ूर सल्ल० ने इस का हुक्म फ़रमा दिया।

रास्ते में जब वादी-ए-रौहा पर पहुंचे तो हुज़ूर सल्ल० ने वहां नमाज़ पढ़ी

और यह फ़रमाया कि सत्तर नबियों ने इस जगह नमाज़ पढ़ी। हुज़ूरे अक्दस सल्ल० का सामान और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० का सामान सब एक ऊंट पर था, जो हज़रत अबूबक्र रज़ि० के गुलाम की सपुर्दगी में था।

जब वादी-ए-अर्ज मे पहुंचे, तो देर तक ये हज़रात उनका इन्तिज़ार फ़रमाते रहे, बड़ी देर में वे आये और कहा कि ऊंट तो खो गया। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने उन को मारा कि एक ही तो ऊंट था वह भी गुम कर दिया और हुज़ूर तबस्सुम फ़रमा कर इर्शाद फ़रमा रहे थे कि इन मुहरिम को देखो, यह क्या कर रहे हैं यानी एहराम की हालत में मारते हैं। सहाबा रज़ि० को जब मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्ल० के सामान की ऊंटनी गुम हो गयी तो जल्दी से खाना तैयार करके लाए। हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत अबूबक्र रज़ि० को बुलाया कि आओ, अल्लाह तआला ने बेहतरीन ग़िज़ा अता फ़रमायी, मगर हज़रत अबूबक्र को गुस्सा आ रहा था, हुज़ूर सल्ल० ने उन को फ़रमाया कि अबू बक्र ग़ुस्से को जाने दो। इस के बाद हज़रत सअ्द रज़ि० और हज़रत अबू क़ुबीस रज़ि० अपने सामान की ऊंटनी लेकर हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल०! यह क़ुबूल फ़रमा लें, मगर हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, अल्लाह तुम्हें बरकत अता फ़रमाए। हमारी ऊंटनी अल्लाह के फ़ज़्ल से मिल गयी। जब वादी-ए-अस्फ़ान में, जो मक्का मुकर्रमा के क़रीब है, तशरीफ़ फ़रमा रहे थे, तो हज़रत सुराक़ा रज़ि० ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! हमें हज का तरीक़ा इस तरह बता दीजिए कि गोया हम आज ही पैदा हुए हैं, यानी इस पर इत्मीनान न फ़रमावें कि यह बात तो इन को पहले से मालुम होगी। हुज़ूर सल्ल० ने इन हज़रात को बताया कि मक्का में दाख़िल होकर क्या क्या करें। सरिफ़ में पहुंच कर हज़रत आइशा रज़ि० को हैज़ आने लगा। वह बहुत परेशान हुईं, रोने लगीं कि मेरा तो सफ़र ही बेकार हो गया। हज का वक़्त क़रीब आ गया और मैं नापाक हो गयी। हुज़ूर सल्ल० ने तसल्ली दी कि यह तो सारी ही औरतों को पेश आता है, फिर उन को बताया कि वह अब क्या करें और सहाबा-ए-किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को इर्शाद फ़रमाया कि जिन के साथ हदी नहीं है, वे मक्का मुकर्रमा में दाख़िल हो कर उमरा कर के अपना एहराम खोल दें।

मक्का मुकर्रमा के क़रीब जब वादी-ए-अज़्रक़ पर पहुंचे, तो इरशाद फ़रमाया कि मेरे सामने इस वक़्त वह मंज़र है, जब हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम इस जगह पर हज के लिए गुज़र रहे थे और कानों में उंगलियां देकर ज़ोर से लब्बैक पढ़ रहे थे। इस के बाद हुज़ूरे अक्दस ज़ूतुवा पहुंचे जो मक्का मुकर्रमा के बिल्कुल

क़रीब है और शब को यहां क़ियाम फ़रमाया और सुबह को मक्का मकुर्रमा में दाख़िल होने की ग़रज़ से ग़ुस्ल किया और चाश्त के वक़्त 4 ज़िलहिज्जा यक्शंबा (इतवार) की सुबह में मक्का मुकर्रमा में दाख़िल हुए इस दिन और तारीख़ में उलमा का सब का क़रीब क़रीब इत्तिफ़ाक़ है कि मक्का मुकर्रमा में दाख़िले की यही तारीख़ और यही दिन था। बन्दे के नज़दीक ज़ीक़ादा का यह महीना उन्तीस दिन का था, इस लिए शंबा को चल कर नवें दिन मक्का मुकर्रमा में दाख़िल हुए।

मक्का मुकर्रमा में पहुंच कर सब से अव्वल मस्जिदे हराम में तशरीफ़ ले गये और हज्रे अस्वद को बोसा दिया और तवाफ़ किया, तहिय्यतुल मस्जिद भी नहीं पढ़ी। मस्जिद में दाख़िल होते ही तवाफ़ शुरू फ़रमा दिया। तवाफ़ से फ़राग़त पर मक़ामे इब्राहीम पर दोगाना अदा किया जिस में सूरः काफ़िरून और सूरः इख़्लास पढ़ी। इस के बाद फ़िर हज्रे अस्वद को बोसा दिया और बाबुस्सफ़ा से निकल कर सफ़ा की पहाड़ी पर तशरीफ़ ले गये और ऊपर चढ़े, यहां तक कि बैतुल्लाह नज़र आने लगा, फिर बड़ी देर तक तक्बीर व तहमीद और दुआ करते रहे। इस के बाद सफ़ा व मर्वः के दर्मियान सात चक्कर पूरे फ़रमाए और मर्वः पर जब सई से फ़राग़त फ़रमायी तो जिन हज़रात के साथ हदी नहीं थी, उनको एहराम खोलने का हुक्म फ़रमा दिया, इस के बाद क़ियामगाह पर तशरीफ़ ले आए और चार दिन क़ियाम फ़रमाया।

आठ ज़िलहिज्जा पंजशंबा (जुमेरात) को चाश्त के वक्त मिना तशरीफ़ ले गये और सब सहाबा-ए-किराम रज़ि० भी हज का एहराम बांध कर हमरिकाब थे। पांच नमाज़ें मिना में पढ़ीं। इसी श्ब में सूरः वल मुर्सलात हुज़ूर सल्ल० पर नाज़िल हुई। जुमा की सुबह को तुलूए आफ़्ताब के बाद अरफ़ात तशरीफ़ ले गये और नमरः में जो ख़ेमा हुज़ूर सल्ल० के लिए ख़ुद्दाम ने पहले से लगा लिया था, थोड़ी देर क़ियाम फ़रमाया। फिर ज़वाल के बाद अपनी ऊंटनी पर, जिस का नाम क़स्वा था, सवार होकर बतने ग़र्नः में, जो वहीं क़रीब है तशरीफ़ लाए और बहुत तवील ख़ुत्बा पढ़ा। इस ख़ुत्बे में ऐसे अल्फ़ाज़ भी थे, कि शायद तुम इस साल के बाद मुझे न देखो और यह कि इस साल के बाद कभी भी मेरा-तुम्हारा यहां इज्तिमाअ् न होगा, वग़ैरह-वग़ैरह।

ख़ुत्बे के बाद हज़रत बिलाल रज़ि० को तक्बीर का हुक्म फ़रमाया और ज़ुहर और अस्र की नमाज़ें ज़ुहर ही के वक़्त में पढ़ायीं। नमाज़ से फ़राग़त के बाद

अरफ़ात के मैदान में तशरीफ़ लाए और मग़्रिब तक अपनी ऊंटनी पर दुआ में बड़े एहतिमाम से मश्ग़ुल रहे। इसी दौरान में हज़रत उम्मे फ़ज़ल रज़ि॰ ने यह मालुम करने के लिए कि आप का रोज़ा है या नहीं, एक प्याले में दूध भेजा, जिस को हुज़ूर सल्ल॰ ने अपनी ऊंटनी पर सारे मज्मे के सामने नोश फ़रमाया ताकि सब को मालूम हो जाए कि रोज़ा नहीं है। इसी दौरान में एक सहाबी ऊंट पर से गिर कर मर गये। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि इन के एहराम के कपड़ों ही में इन को कफ़्ना दो, यह क़ियामत में लब्बैक ही पढ़ते हुए उठेंगे।

उस जगह नज्द की एक जमाअत बराहे रास्त पहुंची और हुज़ूर से एक आदमी के ज़रिए से आवाज़ देकर दर्याफ़्त कराया कि हज क्या है। हुज़ूर सल्ल॰ ने एक आदमी को हुक्म फ़रमाया कि ऐलान कर दो कि हज अरफ़े में ठहरने का नाम है। जो शख़्स 10 ज़िलहिज्जा की सुबह से पहले पहले याहं पहुंच जाए, उस का हज हो गया। *(अबू दाऊद)*

हुज़ूर सल्ल॰ मग़्रिब तक उम्मत के लिए मग़्फ़िरत की दुआ बहुत ही इलहाह् व ज़ारी से मांगते रहे। हक़ तआला शानुहू के यहां से उम्मत के लिए मज़लिम के सिवा और सब चीज़ों की मग़्फ़िरत का वायदा हो गया, मगर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फिर भी इल्तिजा फ़रमाते रहे कि या अल्लाह ! यह भी हो सकता है कि मज़्लूमों को तू अंपने पास से बदला अता फ़रमा दे और ज़ालिमों को माफ़ फ़रमा दे, इसी दौरान में आयते शरीफ़ा:-

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِىْ

नाज़िल हुई, जिस का बयान सब से पहली फ़स्ल में गुज़र चुका है। जिस वक़्त यह आयते शरीफ़ा नाज़िल हुई तो वही के बोझ से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ऊंटनी बैठ गयी, खड़ी न हो सकी।

ग़ुरूब के बाद नमाज़ से क़ब्ल हुज़ूर सल्ल॰ वहां से रवाना हुए। ऊंटनी ऐसे ज़ोरों पर थी। कि निहायत शिद्दत से उस की बाग खींच रखी थी। वह जोश में दौड़ना चाहती थी। जहाँ ज़रा चढ़ायी आती तो हुज़ूर सल्ल॰ ऊंटनी की बाग ज़रा ढीली फ़रमा देते थे, फिर उसको ज़ोर से खींच लेते, हत्ता कि उसका सर बाग से ज़्यादा खींचने की वजह से कजावे से लगा जा रहा था। हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ के पीछे ऊंटनी पर थे। रास्ते में एक जगह मुज़्दलफ़ा के क़रीब हुज़ूर सल्ल॰ को पेशाब की ज़रूरत हुई. उतर कर पेशाब किया, वुज़ू किया। हज़रत

उसामा रज़ि॰ ने वुज़ू कराया।

हज़रत इब्ने उमर रज़ि॰ का मामूल इत्तिबाअ् के शौक़ में हमेशा यह रहा कि जब हज करते तो इस मौक़े पर उतर कर वुज़ू किया करते और ज़ौक़ में कहा करते कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यहां वुज़ू किया था। हज़रत उसामा रज़ि॰ ने वुज़ू के बाद हुज़ूर सल्ल॰ से नमाज़ की याद देहानी की। हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया, आगे चलो। मुज़दलिफ़ा पहुंच कर सब से पहले हुज़ूर सल्ल॰ ने नये वुज़ू के बाद मग़िब और इशा की नमाज़ पढ़ायी, इस के बाद दुआ में मश्गूल हुए। बाज़ रिवायात में आता है कि इस जगह मज़ालिम के बारे में हुज़ूर सल्ल॰ की दुआ क़ुबूल हो गयी । हुज़ूर सल्ल॰ ने बच्चों और औरतों को नीज़ ज़ुअफ़ा को हुजूम में तक्लीफ़ होने के ख़्याल से रात ही में मुज़्दलिफ़ा से मिना को रवाना फ़रमा दिया और ख़ुद तमाम रुफ़क़ा के साथ सुबहे सादिक़ के बाद सवेरे से नमाज़े पढ़कर तुलूए आफ़्ताब से क़ब्ल मिना के लिए रवाना हुए और उस वक़्त हज़रत उसामा रज़ि॰ तो पैदल चलने वालों में थे और हज़रत फ़ज़्ल बिन अब्बास रज़ि॰ हुज़ूर सल्ल॰ के पीछे ऊंटनी पर सवार थे। रास्ते में एक नौजवान लड़की ने हुज़ूर सल्ल॰ से अपने बाप के हज्जे बदल का मस्अला दर्याफ़्त किया। हज़रत फ़ज़्ल रज़ि॰ भी नौ-उम्र थे। उन की निगाह उस औरत पर पड़ी। हुज़ूर सल्ल॰ ने अपने दस्ते मुबारक से हज़रत फ़ज़्ल रज़ि॰ के चेहरे को दूसरी तरफ़ फेर दिया कि ना-महरम को न देखें और यह इर्शाद फ़रमाया कि आज का दिन ऐसा दिन है कि जो शख़्स इस में अपनी आंख, कान और ज़बान की हिफ़ाज़त करे उस की मग़्फ़िरत होती है।

रास्ते ही से हज़रत फ़ज़्ल रज़ि॰ ने हुज़ूर सल्ल॰ के लिए कंकरियां चुनीं, लोग मसाइल भी दर्याफ़्त करते जाते थे और हुज़ूर सल्ल॰ जवाब फ़रमाते जा रहे थे। एक साहब ने दर्याफ़्त किया, हुज़ूर सल्ल॰! मेरी वालिदा इतनी बुढ़ी हैं कि अगर सवारी पर उनको बांध कर बिठाया जाए तो उनकी मौत का अंदेशा है, क्या मैं उन की तरफ़ से हज कर सकता हूं? हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि अगर तुम्हारी वालिदा के ज़िम्मे किसी का क़र्ज़ होता, तो क्या तुम अदा न करते? ऐसे ही हज को भी समझो। जब हुज़ूर सल्ल॰ रास्ते में वादी-ए-मुहस्सिर पर पहुंचे, जहां हक़ तआला शानुहू ने अब्रहा के हाथी को हलाक किया था, जबकि उसने मक्का मुकर्रमा पर चढ़ाई की थी, तो हुज़ूर सल्ल॰ ने अपनी ऊंटनी को तेज़ कर दिया कि जल्दी से इस अज़ाब की जगह से आगे बढ़ जाएं। मिना पहुंच कर सीधे

जमरा-ए-अ-क़बा पर पहुंचे और सात कंकरियां उस के मारीं और लब्बैक का पढ़ना जो एहराम के बाद से अब तक वक़्तन फ़वक़्तन होता रहता था, उस वक़्त बन्द कर दिया। उस के बाद मिना में क़ियामगाह पर तशरीफ़ लाए और बड़ा तवील वअ़ज़ फ़रमाया, जिस में बहुत से अहकाम का ऐलान किया और इस क़िस्म के मज़ामीन भी इर्शाद फ़रमाए जैसा कि अल-विदाअ् के वक़्त कहे जाते हैं, फिर क़ुर्बानी की जगह तशरीफ़ ले गये और अपनी उम्र के सालों के मुताबिक़ 63 ऊंट अपने दस्ते मुबारक से क़ुर्बानी किए, जिन में 6-7 ऊंट उमंड़ कर क़ुर्बान होने के लिए आगे बढ़ रहे थे, हर एक ज़बाने हाल से जल्दी क़ुर्बान होना चाहता था:-

दाग़ जाते तो हैं मक़्तल में पर अव्वल सब से,
देखिए वार करे वह सितम आरा किस पर।

63 के अलावा बाक़ी ऊंटों को हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू ने क़ुर्बान किया, कुल अदद 100 थे। क़ुर्बानी के बाद ऐलान फ़रमा दिया कि जिस का दिल चाहे, इनमें से गोश्त काट कर ले जाए। इस के बाद हज़रत अली रज़ि॰ से इर्शाद फ़रमाया कि हर ऊंट में से एक-एक बोटी लेकर सब को एक बर्तन में जोश दें। उस का शोरबा हुज़ूर सलल॰ ने पिया ताकि हर ऊंट को हुज़ूर सल्ल॰ के नोश फ़रमाने की सआदत हासिल हो, अपनी अज़्वाजे मुतह्हरात की तरफ़ से गाय ज़िब्ह की। क़ुर्बानी से फ़राग़त के बाद हज़रत मामर रज़ि॰ या हज़रत ख़राश रज़ि॰ को बुलाया और उनसे हजामत बनवायी, सर मुंडाया, लबें बनवायीं, नाख़ुन तरशवाए और ये बाल और नाख़ुन जां-निसारों में तक़्सीम करा दिए। कहते हैं कि कहीं-कहीं जो बाल मुबारक मौजूद हैं, वे इन्हीं में का बक़ीया है। इस के बाद एहराम की चादरें उतार कर कपड़े पहने, ख़ुश्बू लगायी। इस दौरान में कसरत से सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ आकर हज के मुताल्लिक़ मसाइल दर्याफ़्त करते रहे। इस दिन में चार काम करने हैं, रमी, ज़िबह, सर मुंडाना, तवाफ़े ज़ियारत करना, यही तर्तीब इन की है। इस में बहुत-हज़रात से भूल वगैरह की वजह से तर्तीब में तक़द्दुम तअख़्ख़ुर हुआ। हर शख़्स आ कर अर्ज़ करता कि मुझ से बाजाए इस के ऐसे हो गया। हुज़ूर सल्ल॰ फ़रमाते, इस में कोई गुनाह नहीं हुआ, अल-बत्ता इस में गुनाह है कि किसी मुसलमान की आबरूरेज़ी की जाए, ज़ुहर के वक़्त हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लहु अलैहि व सल्लम तवाफ़े ज़ियारत के लिए मक्का मुकर्रमा तशरीफ़ ले गये और ज़ुहर की नमाज़ मक्का मुकर्रमा में पढ़ी या मिना वापस आ

कर कुंए पर तशरीफ़ ले गये और ख़ुद नहीं ख़ींचा, बल्कि यह फ़रमाया कि अगर मुझे यह डर न होता कि लोग तुम पर ग़लबा करने लगेंगे तो ख़ुद खींच कर पीता, लेकिन इन दोनों में कुछ इश्काल नहीं। ज़मज़म शरीफ़ का पीना बार-बार हुआ, इस लिए किसी मौक़े पर ख़ुद खींच कर पिया हो जब भीड़ न हो और किसी मौक़े पर भीड़ की वजह से ऐसा फ़रमा दिया हो, इस में इश्काल नहीं। आप ने ज़मज़म शरीफ़ खडे हो कर पिया और फिर सफ़ा- मर्वः की दोबारा सई की या नहीं की, इस में इख़्तिलाफ़ है। हनफ़िय्या के क़वाइद के मुवाफ़िक़ तो की है, इस के बाद मिना वापस तशरीफ़ ले गये और तीन दिन वहां क़ियाम किया और रोज़ाना ज़वाल के बाद तीनों जमरात की रमी किया करते थे और बाज़ रिवायात में है कि उन अय्याम में, जब मिना में क़ियाम था, रोज़ाना रात को बैतुल्लाह शरीफ़ की ज़ियारत और तवाफ़ के लिए तशरीफ़ लाते और मिना के क़ियाम में मुतअद्दद वअ्ज़ भी हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाए, जिन में इस क़िसम के अलफ़ाज़ भी हैं कि मैं शायद तुम से फिर न मिल सकूं, मिना ही के क़ियाम में सूरः "इज़ा जा-अ नस्-रूल्लह" नाज़िल हुई। बाज़ रिवायात में है कि हज से क़ब्ल मदीना तैयबा ही में नाज़िल हो चुकी थी और मुतअद्दद रिवायात में है कि इस सूरः के नाज़िल होने के बाद हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया कि इस सूरः में मेरी वफ़ात की ख़बर दी गयी है, मैं अन्क़रीब जाने वाला हूं।

इस के बाद 13 ज़िल हिज्जा सह-शंबा (मंगल) को ज़वाल के बाद आख़िरी रमी से फ़ारिग़ हो कर हुज़ूर सल्ल॰ मिना से रवानां हुए और मक्का मुकर्रमा के बाहर मुहस्सब में जिस को बतहा और ख़ैफ़ बनी किनाना भी कहते है।, एक ख़ेमा में, जिसको हुज़ूर सल्ल॰ के ग़ुलाम हज़रत अबू राफ़िअ् रज़ि॰ ने हुज़ूर सल्ल॰ के यहां तशरीफ़ लाने से पहले ही इस जगह लगा रखा था, क़ियाम किया और चार नमाज़ें ज़ुहर से इशा तक वहां अदा फ़रमायीं और इशा के बाद थोड़ी देर इसमें आराम किया यह वही जगह है, जिस जगह कुफ़्फ़ार ने बैठ कर इब्तिदा-ए-इस्लाम यानी नुबुव्वत के छठे वर्ष में यह मुआहदा किया था कि बनू हाशिम और बनू मुत्तलिब का बायकाट कर दिया जाए कि न उन से लेन-देन किसी क़िस्म का किया जाए, न उनको खाने को दिया जाए, न उनसे कोई मुलाक़ात करे, न सुलह की बात करे, जब तक ये लोग नऊज़ु बिल्लाह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हमारे हवाले न कर दें, ताकि हम हुज़ूर सल्ल॰ को क़त्ल करें। यह मुआहदा उसी जगह लिखा गया था, जिस का क़िस्सा मशहूर है।

हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आज दो जहां का सरदार होने की हैसियत से यहां क़ियाम किया और इशा के बाद थोड़ी देर आराम फ़रमा कर तवाफ़े विदाअ् के लिए मक्का मुकर्रमा तशरीफ़ लाए और इसी रात में हज़रत आइशा रज़ि॰ को उनके भाई के साथ उमरे का एहराम बांधने के लिए तन्ओम भेजा और उमरा कराया। हज़रत आइशा रज़ि॰ जब उमरा से फ़ारिग़ हो कर मुहस्सब पहुंच गयीं, तो हुज़ूर सल्ल॰ ने क़ाफ़िले को मदीना तैयबा की तरफ़ रवानगी का हुक्म फ़रमाया। इसमें इख़्तिलाफ़ है कि इस हज के मौक़े पर हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बैतुल्लाह शरीफ़ के अन्दर दाख़िल हुए या नहीं। दाख़िल होना तो मुहक़्क़क़ है, लेकिन बाज़ उलमा हज के अय्याम में दाख़िल होना बताते हैं और बाज़ हज़रात इस ज़मानो के बजाए फ़तहे मक्का के ज़माने में बताते हैं और तवाफ़े विदाअ् से फ़रागत के बाद बाज़ रिवायात के मुवाफ़िक़ सुबह की नामज़ मक्का मुकर्रमा में पढ़ा कर जिस्में सुरः वत्तूर हुज़ूर सल्ल॰ ने पढ़ी, 14 ज़िलहिज्जा सन 10 हि॰ चहार शंबा (बुध) की सुबह को मदीना तैयबा की तरफ़ मय ख़ुद्दाम जांनिसारान वापसी हुई और जब 18 ज़िलहिज्जा सन 10 हि॰ यक शंबा (इतवार) को ग़दीर ख़ुम पर जो जोहफ़ा के क़रीब एक जगह है, पहुंचे, तो हुज़ूर सल्ल॰ ने एक ऊंची जगह मिंबर की शक्ल पर खड़े हो कर वअ्ज़ फ़रमाया जिस में हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू के मनाक़िब भी इर्शाद फ़रमाए यही वह चीज़ है, जिस को राफ़ज़ियों ने बिगाड़ कर ईदे ग़दीर से मशहूर किया। हज़रत अली कर्रमल्लाहु वज्हहू का इर्शाद है कि मेरे बारे में दो जमाअतें हलाक होंगी- एक वह जो मुहब्बत के दावे में इफ़रात करें और दूसरे वह जो अदावत में इफ़रात करें।

(तारीख़ुलख़ुलफ़ा बरिवायतें हाकिम वग़ैरह)

यानी राफ़ज़ी और ख़ारिजी।

इसके बाद जब ज़ुल हुलैफ़ा पहुंचे तो शब को वहां क़ियाम फ़रमाया और सुबह के वक़्त मुअर्रस के रासते से मदीना मुनव्वरा में यह दुआ पढ़ते हुए तशरीफ़ ले गये।

آيِبُوْنَ تَائِبُوْنَ عَابِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ

आइबू-न ताइबू-न आबिदू-न लिरब्बिना हामिदू-न

हम लौटने वाले हैं, ऐसी तरह कि तौबा करने वाले है अपने गुनाहों से और अल्लाह तआला की इबादत करने वाले हैं और अपने रब की तारीफ़ करने

वाले हैं। फ़क़त।

इस नापाक ने सन 1342 हि॰ में एक रिसाला अरबी ज़ुबान में हज्जतुल विदाअ् में लिखा था ताकि हुज़ूर सल्ल॰ के हज की रिवायाते मुतफ़र्रिक़ा मुसलसल तरीक़े से मुस्तहज़र रहें। उसमें हर क़ौल का माख़ज़ और फ़िक़्ही मबाहिस भी लिखे थे और उसमें हर रिवायत का हवाला भी दर्ज किया था, उसी से यह वाक़िआ नक़ल किया है। उसमें हर वाक़िए का हवाला मौजूद है, अभी तक उसके तबा होने (छपने) का वक़्त नहीं आया, क्या बईद है, किसी वक़्त अल्लाह जल्ल शानुहू के फ़ज़्ल से आ जाए। इसके बाद दो माह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस आलम में तशरीफ़ फ़रमा रहे, फिर रफ़ीक़े आला के साथ जा मिले और हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ि॰ ख़लीफ़ा-ए-अव्वल हुए। पहले साल हज़रत उमर रज़ि॰ को अमीरुल हज बना कर भेजा और ख़ुद तशरीफ़ न ले जा सके, दूसरे साल ख़ुद अमीरुल हज बन कर तशरीफ़ ले गये और फिर वह भी इस आलम से रुख़्सत हो गये, तो हज़रत उमर रज़ि॰ ख़लीफ़ा-ए-सानी हुए और ख़िलाफ़त के पहले साल में हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि॰ को अमीरुल हज बना कर रवाना फ़रमाया और इसके बाद से दस साल तक मुसलसल ख़ुद अमीरुल हज बन कर तशरीफ़ ले गये और अपनी हयात (ज़िन्दगी) के आख़िरी साल में अज़वाजे मुतह्हरात को ख़ुसूसियत के साथ अपने साथ हज कराया।

इसके बाद हज़रत उस्मान रज़ि॰ ख़लीफ़ा-ए-सालिस हुए तो पहले साल यानी सन 24 हि॰ में हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि॰ को अमीरुल हज बना कर रवाना फ़रमाया और 25 हि॰ से 34 हि॰ तक हर साल ख़ूद हज के लिए तशरीफ़ ले जाते रहे, इस के बाद महसूर कर दिए गए और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि॰ को अमीरुल हज बना कर रवाना फ़रमाया।

हज़रत सय्यिदुल मशारिक़ वल मग़ारिब अली कर्रमल्लाहु वज्हहू ख़िलाफ़त से क़ब्ल तो ब-कसरत हज करते रहे, लेकिन ख़िलाफ़त के ज़माने में जंगे जमल व सिफ़्फ़ीन वग़ैरह की वजह से ख़ुद तशरीफ़ ले जाने की नौबत न आ सकी।

(मुसामरात)

अब आख़िर में चंद क़िस्से अल्लाह वालों के हज के "रौज़ुर्रिया हीन" वग़ैरह से नक़ल करता हूं कि वे हज करने वालों के लिए नमूना और इब्रत हैं। इस के बाद इस रिसाले को ख़त्म कर दूंगा।

1. हज़रत ज़ुन्नून मिस्री रह० फ़रमाते हैं कि मैं एक दिन बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ कर रहा था लोगों की आंखें बैतुल्लाह पर लग रही थीं, जिस से आंखों को सुकून मिल रहा था कि दफ़्अतन एक शख़्स बैतुल्लाह के क़रीब आये और यह दुआ करने लगे "ऐ मेरे रब तेरा मिस्कीन बन्दा, जो तेरे दरबार से धुतकारा हुआ है और तेरे दर से भागा हुआ है, ऐ अल्लाह! मैं तुझ से वह चीज़ मांगता हूं जो सब चीज़ों से ज़्यादा क़रीब हो और वह इबादत मांगता हूं, जो सब से ज़्यादा तुझे महबुब हो ऐ अल्लाह ! मैं तुझ से तेरे बर्गुज़ीदा बन्दों के तुफ़ैल और तेरे अंबिया के वसीले से यह मांगता हूं कि अपनी मुहब्बत की शराब का एक प्याला मुझे पिला दे और मेरे दिल पर से अपनी मअ्रिफ़त से जहल के परदे हटादे, ताकि मैं शौक़ के बाज़ुओं से उड़ कर तेरे तक पहुंच जाऊं और इर्फ़ान के बाग़ों में तेरे से सारगोशियां करूं।"

इसके बाद वह शख़्स इतने रोए कि आंसू टप-टप ज़मीन पर गिर रहे थे, फिर हंसे और चल दिए। ज़ुन्नून रह० फ़रमाते हैं कि मैं उन के पीछे चल दिया और मैं अपने दिल में सोच रहा था कि यह शख़्स या तो बड़ा कामिल है या कोई पागल है। वह मस्जिद से बाहर निकल कर एक वीराने की तरफ़ चल दिए। मैं पीछे-पीछे जा रहा था। वह मुझसे कहने लगे, तुम्हें क्या हुआ? क्यों चले आ रहे हो? अपना काम करो।

मैंने पूछा, अल्लाह तुम पर रहम करे, तुम्हारा क्या नाम है? कहने लगे अब्दुल्लाह । मैं ने कहा, यह तो ज़ाहिर है कि सब ही अल्लाह के बन्दे हैं और अल्लाह के बन्दों की औलाद हैं, तुम्हारा नाम क्या है? कहने लगे मेरे बाप ने मेरा नाम सअ्दून रखा था। मैं ने कहा, जो सअ्दून मजनूं के नाम से मशहूर हैं कहने लगे कि हां, वही हूं।

मैंने पूछा वे कौन बर्गुज़ीदा लोग हैं, जिन के वसीले से तुमने दुआ की। कहने लगे, वे लोग हैं जो अल्लाह की तरफ ऐसे चलते है, जैसे वह शख़्स चलता है, जिसने इश्क़ को अपना नसबुल ऐन बना रखा हो और वे दुनिया से ऐसे अलग हो गये हैं, जैसा वह शख़्स हो जिस के दिल को किसी चीज़ ने पकड़ लिया हो। इसके बाद वह कहने लगे कि ज़ुन्नून ! मैं ने सुना है, तुम यह कहते हो कि मैं अस्बाबे मअ्रिफ़त सुनना चाहता हूं। मैं ने कहा, आप के उलूम से तो नफ़ा पहुंचना ही चाहिए, तो उन्होंने दो शेअ्र अरबी के पढ़े, जिन का मतलब यह है कि आरिफ़ीन के दिल हर वक़्त मौला की याद में मुश्ताक़ रहते हैं, और इश्तियाक़ में

नाला करते रहते हैं, यहां तक कि उस के क़ुर्ब में मंज़िल बना लेते हैं, अपने मौला के इश्क़ में ऐसे ख़ुलूस से लगते हैं कि उस के इश्क़ से हटाने वाली उन के लिए कोई चीज़ नहीं रहती। (रौज़)

2. हज़रत जुनैद बग़दादी रह० फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा तंहा हज को गया और मक्का मुकर्रमा में कुछ क़ियाम कर लिया। मेरी आदत थी कि जब रात का अंधेरा ज़्यादा हो जाता तो मैं तवाफ़ किया करता। एक मर्तबा मैंने एक नौ उम्र लड़की को देखा कि वह तवाफ़ कर रही है और ये अश्आर गा रही है-

(١) ابی الحب ان یخفی وکم قد کتمته   فاصبح عندی قد اناخ وطنبا

(٢) اذا اشتد شوقی هام قلبی بذکره   وان رمت قربا من حبیبی تقربا

(٣) ویبد وافانی ثم احیابه له   ویسعدنی حتی الذواطربا

तर्जुमा:- 1. मैं ने अपने इश्क़ को कितना छुपाया, मगर अब वह किसी तरह मख़्फ़ी नहीं रहता। अब तो उस ने खुल्लम खुल्ला मेरे पास डेरा डाल दिया।

2. जब माशूक़ के शौक़ का मुझ पर ग़लबा होता है तो मेरा दिल उसके ज़िक्र से फड़कने लगता हैं और अगर मैं अपने महबूब से क़ुर्बत चाहती हूं तो वह फ़ौरन मुझ से तक़र्रुब करता है।

3. और जब वह हाज़िर होजाता है तो मैं उसमें फ़ना हो जाती हूं और फिर उसी के लिए उसी की बदौलत ज़िंदा हो जाती हूं और वह मेरी हाजत रवाई करता है, हत्ता कि मैं ख़ूब लज़्ज़त पाती हूं और मज़े में आ जाती हूं।

हज़रत जुनैद रह० फ़रमाते हैं, मैं ने उससे कहा ऐ लड़की ! तू अल्लाह से नहीं डरती, ऐसी बा-बरकत जगह ऐसे शेअ्र पढ़ती है। वह मेरी तरफ़ मुतवज्जह हुई और कहने लगी कि जुनैद।

لولا التقی لم ترنی   اهجر عن طیب الوسن

"अगर अल्लाह का डर न होता, तो तू मुझे न देखता कि मैं मीठी नींद को छोड़े फिरती हूं।"

ان التقی شردنی   کماتری عن وطنی

"तू तो देख ही रहा है कि अल्लाह के ख़ौफ़ ही ने मुझ को मेरे वतन से धकेला और भगाया है।"

افر من وجدی به   فحبه هیمنی

"उसी का इश्क़ मेरे साथ लगा हुआ है, जिसकी वजह से मैं भागी फिर रही हूं और उसी की मुहब्बत ने मुझे हैरान व परेशान कर रखा है।"

इस के बाद उसने पूछा कि जुनैद! तुम अल्लाह का तवाफ़ करते हो या बैतुल्लाह का तवाफ़ करते हो? मैंने जवाब दिया कि मैं बैतुल्लाह शरीफ का तवाफ़ करता हूं तो उसने अपना मुंह आसमान की तरफ़ किया और कहने लगी, सुब्हानल्लाह! आप की भी क्या अजीब मशिय्यत है, जो मख़्लूक़ ख़ुद पत्थर जैसी है, वह पत्थरों ही का तवाफ़ करती है। इसके बाद तीन शेअ्र और पढ़े, जिनका मतलब तह है कि।

"लोग पत्थरों का तवाफ़ कर के आप का क़ुर्ब ढूंढते हैं इन लोगों के दिल ख़ूद भी पत्थरों से ज़्यादा सख़्त हैं और अपने ख़्याल में तक़र्रुब के महल में उतरे हुए हैं। अगर ये लोग अपने इश्क़ में सच्चे होते तो उनकी सिफ़ात अपनी तो ग़ायब हो जातीं और अल्लाह की मुहब्बत की सिफ़ात उनमें पैदा हो जातीं।"

हज़रत जुनैद रह० फ़रमाते हैं कि मैं उसकी इस गुफ़्तगू से ग़श खा कर गिर गया। जब मुझे ग़शी से इफ़ाका हुआ तो वह लड़की जा चुकी थी।

3. हज़रत बिशर हाफ़ी रह० फ़रमाते हैं कि मैंने अरफ़ात के मैदान में शाम के वक़्त एक शख़्स को देखा कि वह निहायत बेताबी से रो रहा है और बेचैनी से रोते हुए चंद शेअ्र पढ़ रहा है, जिन का तर्जुमा यह है कि वह कितनी पाक ज़ात है, वह हर ऐब से पाक है। अगर हम कांटों पर और गर्म सूइयों पर उसके सामने सज्दे में गिरें, तब भी उसकी नेमतों के हक़ का उश्रे अशीर भी अदा न हो, बल्कि उश्रे अशीर का उश्रे अशीर भी अदा न हो । इसके बाद उन्हों ने ये शेअ्र पढ़े:-

كم قد زللت فلم اذكرك فى ذللى وانت يا مالكى بالعيب تذكرنى

كم اكشف السترجهلا عند معصيتى وانت تلطف بى حلما وتسترنى

तर्जुमा:- ऐ पाक ज़ात । मैं ने कितनी मर्तबा लग़्ज़िशें कीं और कभी अपनी लग़्ज़िश में तुझे याद न किया और मेरे मालिक ! तू मुझे ग़ायबाना हमेशा याद करता रहा। मैं अपनी जहालत से किनी मर्तबा गुनाहों के साथ अपनी परदादरी कर चुका हूं और तू अपने हिल्म के साथ मुझ पर लुत्फ़ व मेहरबानी करता है और मेरी परदा पोशी करता है।

हज़रत बिशर रह० कहते हैं कि फिर वह मेरी नज़रों से ग़ायब हो गये।

मैं ने लोगों से दर्याफ़्त किया कि यह कौन बुज़ूर्ग थे, तो मालुम हुआ कि वह हज़रत अबू उबैद ख़वास रह० थे, जो मुम्ताज़ बुज़ुर्गों में हैं। उन के मुताल्लिक़ मशहूर है कि सत्तर वर्ष तक आसमान की तरफ मुंह नहीं उठाया। किसी ने उनसे इसकी वजह पूछी तो फ़रमाया कि मुझे शर्म आती है कि इतने बड़े मोहि्सन की तरफ़ इस स्याह मुंह को अठाऊं किस क़दर ताज्जुब की बात है कि अल्लाह के फ़रमांबरदार बन्दे तो इस क़दर आजिज़ी करें और अपनी हुस्ने इबादत के बावजूद अल्लाह जल्ल शानुहू से इस क़दर शर्माएं और गुनाहगार अपने गुनाहों पर न शर्माएं और नाज़ करें। या अल्लाह! अपने पाक चेहरे की तरफ़ नज़र करने से क़ियामत में हम को महरूम न कीजिए और अपने सालेह (नेक) बन्दों की बरकात से हमें भी मुन्तफ़अ् फ़रमा और दारैन में उनके ज़ेरे साया रख। *(रौज़ 57)*

4. हज़रत मालिक बिन दीनार रह० फ़रमाते हैं कि मैं हज के लिए जा रहा था। रास्ते में एक नौजवान को देखा कि पैदल चल रहा है, न तो उस के पास सवारी, न तोशा, न पानी। मैं ने उसको सलाम किया, उसने सलाम का जवाब दिया। मैंने कहा, जवान ! कहां से आ रहे हो? कहने, लगा, उसी के पास से। मैंने कहा, कहां जा रहे हो? कहा उसी के पास । मैंने कहा, तोशा कहां है? कहा उसी के ज़िम्मे है। मैं ने कहा, यह रास्ता बग़ैर तोशे और पानी के तै नहीं होगा, आख़िर तेरे साथ कुछ है भी? उसने कहा मैंने सफ़र के शुरू के वक़्त पांच हर्फ़ तोशे के लिए पकड़ लिए थे। मैंने पूछा वे पांच हर्फ़ कौन से हैं? उसने कहा, अल्लाह तआला का पाक इर्शाद "काफ़, हा, या, ऐन, साद"! मैं ने पूछा इस के क्या मायने हुए? कहने लगा कि काफ़ के मायने काफ़ी, किफ़ायत करने वाला, हा के मायने हादी, हिदायत करने वाला, या के मायने मूवी, ठिकाना देने वाला, ऐन के मायने आलिम, हर बात का जानने वाला, साद के मायने सादिक़, अपने वायदे का सच्चा। पास जिस शख़्स का साथी किफ़ायत करने वाला, हिदायत करने वाला जगह देने वाला, बा-ख़्बर और सच्चा हो वह बर्बाद हो सकता है? या उसको किसी बात का ख़ौफ़ हो सकता है? क्या वह शख़्स भी इसका मुहताज है कि तोशा और पानी लादे-लादे फिरे। हज़रत मालिक रह० फ़रमाते हैं कि मैंने उस की गुफ़्तगू सुन कर अपना कुरता उसको देना चाहा, उसने क़ुबूल करने से इन्कार कर दिया और कहा बड़े मियां ! दुनिया के कुरते से नंगा रहना अच्छा है। दुनिया की हलाल चीज़ों का हिसाब देना है और उसकी हराम चीज़ों का अज़ाब भुगतना है। जब रात का अंधेरा हुआ तो, उस जवान ने अपना मुंह आसमान की तरफ किया और यह कहा,

ऐ वह पाक! जिस को बन्दों की ताअत से ख़ुशी होती है और बन्दों के गुनाहों से उस का कुछ नुक़्सान नहीं होता, मुझे वह चीज़ अता फ़रमा, जिस से तुझे ख़ुशी होती है यानी ताअत और वह चीज़ माफ़ फरमा दे, जिस से तेरा कोई नुक़्सान नहीं यानी गुनाह। इसके बाद जब लोगों ने एहराम बांधा और लब्बैक कहा तो वह चुप था मैं ने कहा तुम लब्बैक नहीं पढ़ते? कहने लगा, मुझे यह डर है कि मैं लब्बैक कहूं और वहां से जवाब मिले "ला लब्बैक वला सअ्दैक" न तेरी लब्बैक मौतबर न सअ्दैक मोतबर, न मैं तेरा कलाम सुनता हूं, न तेरी तरफ़ इल्तिफ़ात करता हूं।

इसके बाद वह चला गया। उस के बाद मैंने सारे रास्ते उस को नहीं देखा, आख़िर में मिना में वह नज़र पड़ा और उसने चंद शेअ्र पढ़े, जिन का तर्जुमा यह है।

कि वह महबूब, जिसको मेरा ख़ून बहाना अच्छा मालूम होता है, मेरा ख़ून उसके लिए हरम में भी हलाल है, और हरम से बाहर भी। ख़ुदा की क़सम ! अगर मेरी रूह को यह पता चल जाए कि वह किस पाक ज़ात के साथ अटकी हुई है तो वह क़दम के बजाए सर के बल खड़ी हो जाए और मलामत करने वाले मुझे उसके इश्क़ में मलामत न कर, अगर तुझे वह नज़र आ जाए, जो मैं देखता हूं, तू कभी भी लब कुशाई न करे। लोग अपने बदन से बैतुल्लाह का तवाफ़ करते हैं। अगर वे अल्लाह की पाक ज़ात का तवाफ करते, तो हरम से भी बे नियाज़ हो जाते। ईद के दिन लोगों ने तो भेड़-बकरी की क़ुर्बानी की, लेकिन माशूक़ ने मेरी जान की उस दिन क़ुर्बानी की। लोगों ने हज किया है और मेरा हज अपनी सुकून की चीज़ का है। लोगों ने क़ुर्बानियां की हैं, मैं तो अपने ख़ून की और अपनी जान की क़ुर्बानी करता हूं।

इसके बाद यह दुआ की, "ऐ अल्लाह! लोगों ने क़ुर्बानियों के साथ तेरा तक़र्रुब हासिल किया, मेरे पास कोई चीज़ क़ुर्बानी के लिए नहीं है, सिवाए अपनी जान के, मैं इसको तेरी बारगाह में पेश करता हूं, तू इस को क़ुबूल कर ले। इसके बाद एक चीख़ मारी और मुर्दा होकर गिर गया। इसके बाद ग़ैब से एक आवाज़ आयी कि यह अल्लाह का दोस्त है, ख़ुदा का क़तील है।

मालिक रह० कहते हैं कि मैंने उसकी तज्हीज़ व तक्फ़ीन की और रात भर उसकी सोच में परेशान और मुतफ़क्किर रहा। इसी में आंख लग गयी, तो ख़्वाब में उस को देखा। मैंने पूछा, तुम्हारे साथ क्या मामला हुआ? कहने लगे कि

जो शुहदा-ए-बद्र के साथ हुआ, बल्कि उस पर भी कुछ ज़्यादा हुआ। मैंने पूछा कि ज़्यादा होने की क्या वजह? कहने लगे कि वह काफ़िरों की तलवार से शहीद हुए थे और मैं इश्क़े मौला की तलवार से।

इसका मतलब यह नहीं कि हर बात में उनसे ज़्यादती हो, किसी बात में ज़्यादती हो जाना काफ़ी है, वरना इन हज़रात के लिए सहाबी होने का जो फ़ज़्ल है, उसको ग़ैर-सहाबी कहां पहुंच सकते हैं

5. हज़रत ज़ुन्नून रह० फ़रमाते हैं कि हज के सफ़र में एक जंगल में मुझे एक नौ-जवान ख़ुबसूरत लड़का मिला, गोया चांदी का टुकड़ा है और इश्क़ उसके बदन में जोश मार रहा था, वह भी हज के लिए जा रहा था। मैंने उस को साथ ले लिया। मैंने उससे कहा कि बड़ा तवील सफ़र है, तो उसने एक शेअ्र पढ़ा जिसका तर्जुमा यह है कि काहिलों और उकता जाने वालों के लिए यह सफ़र बईद है, लेकिन मुश्ताक़ों के लिए कुछ भी दूर नहीं।

6. हज़रत शिबली रह० जब अरफ़ात पर पहुंचे तो, बिल्कुल चुप चाप रहे, कोई लफ़्ज़ भी ज़बान से नहीं निकाला। जब वहां से मिना की तरफ़ चले, हद्दे हरम के जो दो निशान हैं, उनसे आगे गढ़ गए, तो आंखों से आंसू बहने लगे और चंद अश्आर पढ़े जिनका तर्जुमा यह है:-

"मै चल रहा हूं इस हाल में कि मैंने अपने दिल पर तेरी मुहब्बत की मुहर लगा दी, ताकि इस दिल पर तेरे सिवा किसी का गुज़र न हो। काश मैं अपनी आंखों को ऐसी तरह बन्द करता कि तेरा दीदार नसीब होने तक किसी को भी न देखता। दोस्तों में बाज़ तो ऐसे होते हैं, जो एक ही के हो रहते हैं और बाज़ ऐसे होते हैं, जिन में दूसरों की भी शिर्कत होती है, लेकिन जब आंखों से आंसू निकल कर रुख़सारों पर बहने लगते हैं, तब ज़ाहिर हो जाता है कि कौन वाक़ई रो रहा है और कौन बनावटी रोना रो रहा है।" *(रौज़)*

अदू में और मुझ में ग़ौर कर लो फ़र्क़ इतना है
कोई बनता है दीवाना, कोई होता है दीवाना।

7. हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रह० अरफ़ात के मैदान में ग़ुरूब तक बिल्कुल चुप रहे और जब आफ़ताब ग़ुरूब हो गया, तो फ़रमाने लगे, ऐ अल्लाह ! अगरचे तूने माफ़ फ़रमा दिया, लेकिन मेरी बदहाली पर फिर भी अफ़सोस है। *(रौज़)*

8. इब्राहीम बिन मुह्लब रह॰ कहते हैं कि मैं तवाफ़ कर रहा था। मैंने एक बांदी को देखा कि वह काबा शरीफ़ का परदा पकड कर कह रही थी, ऐ मेरे सरदार! तुझे मुझ से मुहब्बत करने की क़सम ! मेरा दिल फेर दे। मैंने उस से पूछा कि ऐ लड़की ! तुझे किस तरह मालूम हुआ कि हक़ तअला शानुहू तुझ से मुहब्बत करते हैं। कहने लगी कि उस की शफ़क़तों से मालूम हुआ। मेरे पकड़ने के लिए इस्लामी लश्कर भेजे, उन पर कितने कितने माल ख़र्च किए, जब कहीं मुझे काफ़िरों के पंजे से निकाला, मुझे मुसलमान बनाया, अपनी मअ्रिफ़त अता फ़रमायी, हालांकि मैं उसको बिलकुल नहीं जानती थी। ऐ इब्राहीम! क्या यह उसकी मुहब्बत और शफ़क़त नहीं? कहने लगी, ज़्यादा से ज़्यादा और बड़ी से बड़ी जो चीज़ हो सकती हो। मैं ने पूछा, वह कैसी है? कहने लगी कि शराब से ज़्यादा लतीफ़ और गुलाब के अर्क़ से ज़्यादा दिल पसन्द। इस के बाद उसने तीन शेअ्र पढ़े जिनका मतलब यह है कि बेचैन आदमी सब्र व सुकून को नहीं जानता कि क्या होता है, उस के पास तो बहने वाली आंखें होती हैं, जिनको रोने ने बेकार कर दिया हो, और एक बदन होता है, जो इश्क़ के शोलों की वजह से दुबला हो गया हो और फ़रेफ़्ता की बीमारी का क्या इलाज हो सकता है और मुहब्बत का अंजाम बड़ा सख़्त है, बिलख़ुसूस जबकि मेहरबानी करने वाले उसकी तरफ़ नेज़ों से मेहरबानी करते हों। वह यह शेअ्र पढ़ते हुए चल दी। *(रौज़)*

9. मालिक बिन दीनार रह॰ कहते हैं कि मैं ने एक नौ-जवान को एक दफ़ा देखा कि क़ुबूलियत के आसार उसके चेहरे पर ज़ाहिर हैं और आंखों से आंसू लगातार रूख़्सारों पर बह रहे हैं। मैंने उस को देख कर पहचाना कि अर्सा हुआ, बसरा में एक ज़माने में उसको बड़ी नाज़ व नेमत में देख चुका था। उस वक़्त देख कर मैंने उसको पहचाना और उस की यह हालत देख कर मुझे भी रोना आ गया। उसने भी मुझे देख कर पहचान लिया और मुझे सलाम किया और कहने लगा, मालिक! तुम्हें ख़ुदा की क़सम! ख़ास वक़्त में मुझे याद रखना और मेरे लिए अल्लाह तआला से मग़्फ़िरत की दुआ मांगना। क्या बईद है अल्लाह जल्ल शानुहू मेरे हाल पर रहम फ़रमाए और मेरे गुनहों को माफ़ करदे और यह कह कर दो शेअ्र पढ़े, जिनका तर्जुमा यह है कि:-

जब महबूब तेरी तरफ़ मुतवज्जह हो तो मेरा भी उस से ज़िक्र कर दीजियो और यह कह देना कि किसी वक़्त भी तेरी याद से उसका दिल ख़ाली नहीं होता, शायद वह जब मेरा नाम सुने तो यों पूछे कि फलां शख़्स पर क्या गुज़र रही है।

मालिक रह॰ कहते हैं कि ये शेअ्र पढ़ कर वह रोता हुआ चल दिया। इतने में हज का ज़माना आ गया मैं हज के लिए रवाना हुआ। इत्तिफ़ाक़ से मैं मस्जिदे हराम में बैठा था कि मैंने एक शख़्स के गिर्द मज्मा इकट्ठा देखा और वह शख़्स बेताब होकर रो रहा है और उस की तड़प और बेताबी से लोगों को तवाफ़ मुश्किल हो गया। मैंने जो उठ कर उसको देखा, तो वही जवान था। मैं उसको देख कर ख़ुश हुआ और मैं ने उससे कहा कि अल्लाह का शुक्र है कि उसने तेरी तमन्ना पूरी कर दी, तो उसने चंद शेअ्र पढ़े, जिन का तर्जुमा यह है कि:-

लोग बिला ख़ौफ़ व ख़तर मिना की तरफ चले और जब वे मिना में पहुंच गये, तो अपनी आरज़ुओं को पा लिया। लोगों ने अल्लाह तआला से आरज़ुएं मांगीं, अल्लाह ने उनको उनकी तमन्नाऐं अता कीं और उनकी ख़ालिस तौबा की बदौलत उनको फ़हश और बद-कारी से महफ़ूज़ रखा। उन के ऊपर साक़ी ने शराब का दौर चलाया और जब उन्हों ने पूछा कि साक़ी कौन है तो कहा कि:-

انا الله فادعونی انا الله ربکم   لی المجد والعلیا والملك والثناء

"मैं हूं तुम्हारा माबूद, तुम मुझे पुकारो। मैं तुम्हारा रब हूं, मेरे ही लिए बुज़ुर्गी है, मेरे ही लिए बड़ाई है, मेरा ही मुल्क है और मेरे ही लिए सारी तारीफ़ें हैं।"

मालिक रह॰ कहते हैं कि मैं ने उस से कहा कि वल्लाह ! मुझे अपना हाल बताओ, क्या गुज़री? कहने लगा बड़ी अच्छी गुज़री, मुझे अपने फ़ज़्ल से यहां बुलाया। मैं हाज़िर हो गया और जो मैंने मांगा, वह मुझे मिला। फिर उसने चंद शेअ्र पढ़े, जिन का तर्जुमा यह है कि-

जब महबूब ने मुझे बुलाया, तो मैंने कहा मुबारक! मुबारक! क्या ही बेहतर है तेरा विसाल और कितनी शीरीं है तेरी मुहब्बत और कितना मज़ेदार है तेरा इश्क़! तेरे हक़ की क़सम ! तूही मत्लूब है तूही मक़्सूद है, तेरी ही आरज़ुएं हैं, लोग मुझे तेरी मुहब्बत में मलामत करते हैं, किया करें और जितनी चाहे मलामतें करें, मेरा दिल तेरे सिवा किसी चीज़ का मुश्ताक़ नहीं। लोग अपने-अपने माशूक़ों के शहरों को फ़्लां फ़्लां को याद करते हैं, किया करें मुझे तो जब किसी शहर का तज़्किरा आ जाए, तू ही याद आता है।

मालिक रह॰ कहते हैं कि यह कह कर वह तवाफ़ में मशग़ूल हो गया फिर मुझे ख़बर नहीं कहां गया।

10. एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मैं एक साल सख़्त तरीन गर्मी के ज़माने में हज को चला, लू बड़ी शिद्दत से चलती थी। एक दिन जब कि मैं वस्ते हिजाज़ में पहुंच गया, इत्तिफ़ाक़न क़ाफ़िले से बिछड़ गया और मुझे कुछ ग़ुनूदगी-सी आ गयी। दफ़अतन आंख जो खुली तो मुझे उस जंगल बयाबान में एक आदमी नज़र आया तो मैं जल्दी-जल्दी उसकी तरफ़ चला, देखा तो एक कमसिन लड़का था, जिस के दाढ़ी भी न थी और इस क़दर हसीन कि गोया चौदहवीं रात का चांद, बल्कि दोपहर का सूरज उस पर नाज़ व नेमत के करिश्मे चमक रहे हैं, मैंने उसको सलाम किया। उसने कहा इब्राहीम! वअलैकुमुस्सलाम, मेरा नाम लेने पर मुझे इन्तिहाई हैरत हुई और मुझ से सुकून न हो सका। मैंने बड़े ताज्जुब से पूछा कि साहिब ज़ादे ! तुझे मेरा नाम किस तरह मालुम हुआ तूने मुझे कभी देखा भी नहीं! कहने लगा कि इब्राहीम जब से मुझे मअ्रिफ़त हासिल हुई मैं अंजान नहीं बना और जब से मुझे विसाल नसीब हुआ, कभी फ़िराक़ नहीं हुआ।

मैंने पूछा कि इस सख़्त गर्मी में इस जंगल में तुझे क्या मजबूरी खींच कर लायी? कहने लगा कि इब्राहीम ! उस के सिवा मैं ने कभी किसी से उन्स पैदा नहीं किया और न उसके सिवा कभी किसी को साथी और रफ़ीक़ बनाया। मैं उसकी तरफ़ बिल्कुल्लिया मुन्क़तअ् हो चुका हूं और उसके मअ्बूद होने का इक़रार कर चुका हूं। मैंने पूछा कि तेरे खाने पीने का ज़रिया क्या है? कहने लगा कि महबूब ने अपने ज़िम्मे ले रखा है। मैं ने कहा कि ख़ुदा की क़सम! मुझे इन अवारिज़ की वजह से जो मैं ने ज़िक्र किए, तेरी जान के हलाक हो जाने का अन्देशा है, तो उसने रोते हुए कि उसकी आंखों से आसुओं की लड़ी मोतियों की तरह से उस के रूख़्सारों पर पड़ रही थी, चंद शेअ्र पढ़े जिनका तर्जुमा यह है कि:-

"कौन शख़्स डरा सकता है मुझ को जंगल की सख़्ती से, हालांकि मैं इस जंगल को अपने महबूब की तरफ चलकर क़तअ् कर रहा हूं और उस पर ईमान ला चुका हूं। इश्क़ मुझ को बेचैन कर रहा है और शौक़ उभारे लिए जाता है और अल्लाह का चाहने वाला कभी किसी आदमी से नहीं डर सकता। अगर मुझे भूख लगेगी तो अल्लाह का ज़िक्र मेरा पेट भरेगा और अल्लाह की हम्द की वजह से मैं प्यासा नहीं हो सकता और अगर मैं ज़ईफ़ हूं, तो उसका इश्क़ मुझे हिजाज़ से ख़ुरासान तक (यानी पूरब से पच्छिम तक) ले जा सकता है। तू मेरे बचपन की वजह से मुझे हक़ीर समझता है, अपनी मलामत को छोड़, जो होना था हो चुका।

मैंने पूछा तुझे ख़ुदा की क़सम! अपनी सही-सही उम्र बता क्या है? कहने लगा कि तूने बडी सख़्त क़सम मुझ को दे दी, जो मेरे नज़दीक बहुत ही बड़ी है मेरी उम्र बारह वर्ष की है।

फिर वह कहने लगा कि इब्राहीम! तुझे मेरी उम्र पूछने की क्या ज़रूरत पेश आयी? मैंने बता तो दी ही। मैंने कहा कि तेरी बातों ने हैरत में डाल दिया, कहने लगा कि अल्लाह का शुक्र है, उसने बड़ी नेमतें अता फ़रमायीं, और अल्लाह का फ़ज़्ल है कि उसने अपने बहुत से मोमिन बंदों से अफ़ज़ल बनाया।

इब्राहीम रह॰ कहते हैं कि मुझे उसकी हुस्ने सूरत, हुस्ने सीरत और उसके शीरीं कलाम पर बड़ा ही ताज्जुब हुआ। मैंने कहा कि सुब्हानल्लाह, हक़ तआला शानुहू ने कैसी कैसी सूरतें बनायी हैं। उसने थोड़ी देर नीचे को सर झुका लिया, फिर ऊपर की तरफ़ मुंह उठाकर बहुत तिरछी कड़वी निगाह से मुझे देखा और चंद शेअ्र पढ़े, जिनका तर्जुमा यह है :-

"अगर मेरी सज़ा जहन्नम हो तो मेरे लिये हलाकत है। उस वक़्त मेरी यह रौनक़ और ख़ूबसूरती क्या बनायेगी। उस वक़्त मेरी सारी ख़ूबियों को अज़ाब ऐबदार बना देगा और जहन्नम में तवील अर्से तक रोना पड़ेगा और जब्बार जल्ल जलालुहू यह फ़रमायेगा, ओ बद् तरीन ग़ुलाम, तू मेरे नाफ़रमानों में है तूने दुनिया में मेरा मुक़ाबला किया, मेरी हुक्म उदूली की, क्या तू मेरे अहद व पैमान को (जो अज़ल में हुए थे) भूल गया था या मेरी (क़ियामत की) मुलाक़ात को भूल गया था। (ऐ इब्राहीम) तू उस दिन देखेगा कि फ़रमांबरदारों के मुंह चौदहवीं रात के चांद की तरह चमक रहे होंगे और हक़ तआला शानुहू अपने ऊपर से अन्वार के पर्दे हटा देंगे, जिसकी वजह से ये फ़रमांबरदार उस पाक ज़ात की ज़ियारत से ऐसे मब्हूत हो जायेंगे कि उसके मुक़ाबले में हर नेमत और हर राहत को भूल जायेंगे और हक़ तआला उन फ़रमांबरदारों को हैबत और ख़ुश्नूदगी का लिबास पहनायेंगे और उनके चेहरों को रौनक़ और शादाबी अता होगी।

ये अश्आर पढ़ कर कहने लगा ऐ इब्राहीम, मह्जूर वह है जो दोस्त से मुंक़तअ् हो गया हो और विसाल उसको हासिल है जिसने अल्लाह की इताअत से वाफ़र हिस्सा लिया, लेकिन इब्राहीम, अपने रूफ़क़ाए सफ़र से बिछड़ गये हो। मैंने कहा, हां मैं ऐसा ही रह गया।, तुझसे अल्लाह के वास्ते सवाल करता हूँ कि तू मेरे लिये दुआ कर कि मैं अपने साथियों से जा मिलूँ। मेरे इस कहने पर उस

लड़के ने आसमान की तरफ़ देखा और कुछ आहिस्ता आहिस्ता ज़बान से कहा कि मुझे उसके होंठ हरकत करते हुए मालूम हुए। उस वक़्त मुझे दफ़्अतन नींद का झोंका सा आया बेहोशी सी हुई। उससे जो मैंने इफ़ाक़ा पाया तो क़ाफ़िले के बीच में ऊँट पर अपने आपको पाया और मेरे ऊँट पर जो मेरा साथी था वह मुझ से कह रहा था, इब्राहीम, होशियार रहो, संभले रहो, ऐसा न हो कि ऊँट पर से गिर जाओ और उस लड़के का मुझे कुछ पता न चला कि वह आसमान पर उड़ गया या ज़मीन के अंदर उतर गया। जब हम सारा रास्ता तै कर के मक्का मुकर्रमा पहुँच गये और मैं हरम शरीफ़ में दाख़िल हुआ तो क्या देखता हूँ कि वह लड़का काबे शरीफ़ का परदा पकड़े हुए रो रहा है और चंद शेअ्र पढ़ रहा है, जिनका तुर्जमा यह है:-

तर्जुमाः- "मैं काबे का परदा पकड़ रहा हूँ और बैतुल्लाह की ज़ियारत भी कर रहा हूँ, लेकिन दिल में जो कुछ है, उसको और राज़ की बात को तू ख़ूब जानता है। मैं बैतुल्लाह की तरफ़ पैदल चल कर आया हूँ, कहीं सवार नहीं हुआ, इसलिये कि मैं बावजूद अपनी कमसिनी के फ़रेफ़्ता आशिक़ हूँ, मैं बचपन ही से तुझ पर मरने लगा हूँ, जबकि मैं इश्क़ को जनता भी न था, और अगर लोग मलामत करें किसी बात पर तो मैं अभी इश्क़ का तिफ़्ले मक्तब हूँ, ऐ अल्लाह अगर मेरी मौत का वक़्त आ गया हो, तो शायद मैं तेरे वस्ल से बहरा याब हो सकूँ।

इसके बाद वह बे इख़्तियार सज्दे में गिर गया और मैं देखता रहा। उसके बाद मैं उसके पास गया और उसको हिलाया तो वह इंतिक़ाल कर चुका था। "रज़ियल्लाहु अन्हु व अर्ज़ाहु॰"

इब्राहीम रह॰ कहते हैं कि मुझे उसके इंतिक़ाल का बड़ा सख़्त सदमा हुआ। मैं वहां से उठकर अपनी क़ियामगाह पर आया और उसके कफ़न देने के लिये कपड़ा लिया और मदद के लिये एक दो आदमी साथ लिये और वहां पहुँचा, जहां उसको मुर्दा छोड़ कर आया था, तो उसकी लाश का कहीं पता न चला। वहां दूसरे हाजियों से दर्याफ़्त किया, मगर किसी को भी पता न था, न किसी ने उसको देखा, तो मैं समझा कि अल्लाह जल्ल शानुहू ने उसको लोगों की आंखों से पोशीदा फ़रमा रखा था।

मैं वहां से अपनी क़ियामगाह पर वापस आ गया और मुझे कुछ गुनूदगी सी आ गयी, तो मैंने उसको ख़्वाब में देखा कि वह एक बहुत बड़े मज्मे में है

और सबसे पेशपेश है, और उस पर इस क़दर नूर चमक रहा है और ऐसे उम्दा जोड़े हैं कि उनकी सिफ़त बयान में नहीं आ सकती। मैंने उससे पूछा कि तू वही लड़का है? कहने लगा कि मैं वही हूँ। मैंने पूछा कि क्या तेरा इंतिक़ाल नहीं हुआ? उसने कहा कि हां हो गया है। मैंने कहा कि मैंने तो तुझे तज्हीज़ व तक्फ़ीन के लिये बहुत तलाश किया, कहीं पता न चला। कहने लगा, इब्राहीम, सुन जिसने मुझे मेरे शहर से निकाला और अपनी मुहब्बत में फ़रेफ़्ता किया और मेरे अज़ीज़ व अक़ारिब से जुदा किया, उसी ने मुझे कफ़न दिया और किसी दूसरे का मोहताज नहीं बनने दिया। मैंने पूछा, कि हक़ तआला शानुहू ने मरने के बाद तेरे साथ क्या मामला किया? उसने कहा कि अल्लाह जल्ल जलालुहू ने मुझे अपने सामने खड़ा किया और फ़रमाया कि तू क्या चाहता है? मैंने अर्ज़ किया कि इलाही, तू ही मक़सूद है और तेरी ही मुझे आरज़ू है। फ़रमाया कि बेशक तू मेरा सच्चा बंदा है और जो तू मांगे उसके लिये कोई रूकावट नहीं है। मैंने अर्ज़ किया कि मैं यह चाहता हूँ कि मेरे ज़माने के तमाम आदमियों में मेरी सिफ़ारिश क़ुबूल फ़रमा ले। इर्शाद हुआ कि उन सबके बारे में तेरी सिफ़ारिश मक़्बूल है।

इब्राहीम रह॰ कहते हैं कि इसके बाद उस लड़के ने ख़्वाब में मुझ से रूख़सती मुसाफ़ा किया और मैं नींद से बेदार हो गया। मैंने अपने हज के जो अर्कान बाक़ी थे, वे पूरे किये, लेकिन उस लड़के की याद से और उसके रंज से मेरे दिल को क़रार न था। मैं हज से फ़ारिग़ होकर वापस हुआ, लेकिन रास्ते में सारे क़ाफ़िले वाले यह कहते थे कि इब्राहीम, तेरे हाथ की महक से हर शख़्स हैरान है कि कैसी खुश्बू आ रही है और इस वाक़िए के नक़्ल करने वाले कहते हैं कि मरने तक इब्राहीम रह॰ के हाथों में से वह खुश्बू आती रही। *(रौज़)*

11. हज़रत इब्राहीम ख़्वास रह॰ फ़रमाते हैं कि मैं एक साल हज के लिये जा रहा था, बहुत से रफ़ीक़ साथ थे। चलते चलते एक मर्तबा मुझे तंहाई का ग़लबा हुआ और यह दिल में तक़ाज़ा हुआ कि सब का साथ छोड़ कर अकेले चलूँ। मैंने उस रास्ते को छोड़ कर जिस पर सब चल रहे थे, एक दूसरा तंहाई का रास्ता इख़्तियार कर लिया और मैं तीन दिन और तीन रात बराबर चलता रहा। न तो मुझे उनमें खाने का ख़्याल आया, न पीने का, न कोई और हाजत पेश आयी। तीन दिन रात चलने के बाद मैं एक ऐसे जंगल में पहुँच गया, जो बड़ा शादाब सर सब्ज़ और हर क़िस्म के फल और फूल उसमें लगे हुए, जो बड़े महकदार थे और उसके बीच में एक चश्मा है, मुझे ये ख़्याल हुआ कि यह तो जन्नत है और मैं

सख़्त हैरत में पड़ गया। मैं इसी फ़िक्र व सोच में था कि एक जमाअत आती नज़र आयी, जिनके चेहरे तो आदमियों जैसे थे और उन पर मुरक़्क़ा चादरें और ख़ुशनुमा लुंगियां थीं। उन लोगों ने आकर मुझको घेर लिया और सलाम किया। मैंने सलाम का जवाब दिया और कहा कि तुम कहां मैं कहां, फिर मुझे यह ख़्याल हुआ कि यह जिन्नात की क़ौम है। इतने में उनमें से एक ने कहा कि हममें एक मस्अले में इख़्तिलाफ़ हो रहा है और हम जिन्नात में से हैं, जिन्होंने बैअ़तुल उक़्बा की रात में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अल्लाह का पाक कलाम सुना था। हुज़ूर सल्ल० के पढ़ने की आवाज़ ने हमें दुनिया के सारे कामों से छुड़ा दिया और यह जगह अल्लाह जल्ल शानुहू ने हमारे लिये मुज़य्यन फ़रमा दी। मैंने पूछा कि इस जगह से वह जगह कितनी दूर है, जहां मैंने अपने सफ़र के साथियों को छोड़ा है। मेरे इस सवाल पर एक शख़्स ने उनमें से तबस्सुम करते हुए कहा कि अबू इस्हाक़, अल्लाह जल्ल शानुहू के यही अजीब भेद हैं, इस जगह तुम्हारी क़ौम का कभी कोई शख़्स बजुज़ एक आदमी के नहीं आया। एक जवान तुम्हारी जिंस से आया था, उसका यहां इंतिक़ाल हो गया था और यह देख उसकी क़ब्र है। उसकी क़ब्र मैंने देखी कि उस पानी के तालाब के किनारे थी, उसके गिर्द छोटा सा बाग़ीचा था, जिसमें ऐसे फूल लग रहे थे कि मैंने उस जैसे कभी नहीं देखे थे। फिर वह जिन्न कहने लगा कि उस जगह के और इस जगह के दर्मियान इतने इतने महीनों का या इतने इतने वर्षों का रास्ता है।

इब्राहीम रह० ने कहा कि अच्छा इस जवान का हाल मुझे बताओ, उनमें से एक ने सुनाया कि हम लोग इस चश्मे के किनारे बैठे हुए इश्क़ के बारे में बहस कर रहे थे कि इतने में एक जवान आया और उसने आकर सलाम किया, हमने सलाम का जवाब दिया और हमने पूछा कि जवान कहां से आये हो?

उसने कहा कि शहर नेशापूर से आया हूँ। हमने पूछा कि उस शहर को छोड़े हुए कितने दिन हुए? उसने कहा कि सात दिन हुए हैं। हमने कहा कि शहर से किस इरादे से चले थे? उस जवान ने कहा कि मैंने अल्लाह जल्ल शानुहू का पाक इर्शाद सुना है :-

وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ○

तर्जुमा:- तुम अपने रब की तरफ़ रूजूअ् करो और उस की फ़रमांबरदारी करो, क़ब्ल इसके कि तुम पर अज़ाब होने लगे, फिर उस वक़्त तुम्हारी किसी की

तरफ़ से भी कोई मदद न की जाये।'

हमने उस जवान से पूछा कि इनाबत क्या है? और अज़ाब क्या है, उसने बयान करना शुरू किया और जब अज़ाब बयान करना शुरू किया तो एक चीख़ मारी और मर गया। हम लोगों ने उसको क़ब्र में दफ़न कर दिया।

इब्राहीम रह० कहते हैं कि मुझे इस क़िस्से से बड़ी हैरत हुई। इसके बाद मैं उस जवान की क़ब्र के नज़दीक गया, तो उसके सिरहाने नर्गिस के फूलों का एक बहुत बड़ा गुलदस्ता रखा था, इतना बड़ा था जैसे बड़ी चक्की हो और उस की क़ब्र पर ये लफ़्ज़ लिखे हुए थे :-

هٰذَا قَبْرُ حَبِيْبِ اللّٰهِ قَتِيْلُ الْغَيْرَةِ

"हाज़ा क़ब्रु हबीबिल्लाहि क़तीलल ग़ैर-ति"

(यह अल्लाह के दोस्त की क़ब्र है, जो ग़ैरत का क़तल किया हुआ है।)

और नर्गिस के एक पत्ते पर इनाबत की तफ़्सीर लिखी हुई थी। मैंने उसको पढ़ा। उन जिन्नात ने मुझसे इसका मतलब पूछा। मैंने उसका मतलब बतलाया तो वे बहुत खुश हुए और मज़े में लौटने लगे। जब इससे उन्हें सुकून सा हुआ तो कहने लगे कि हमारा वह मस्अला जिस में झगड़ा था, हल हो गया।

इब्राहीम रह० कहते हैं कि फिर मुझे कुछ ग़ुनूदगी सी आयी। इसके बाद जो मेरी आंख खुली तो मैं मस्जिदे आइशा के पास था, (जो तन्ईम के पास मक्का मुकर्रमा के क़रीब है) और मेरे कपड़ों में फूलों का गुलदस्ता था, जो एक साल तक मेरे पास रहा। एक साल तक उसमें कोई तग़य्युर न हुआ, उसके चंद अय्याम बाद वह खुद ब खुद गुम हो गया।

12. ताजिरों की एक जमाअत एक मर्तबा हज को गयी। रास्ते में जहाज़ टूट गया और हज का वक़्त तंग हो गया था। उनमें से एक शख़्स के साथ पचास हज़ार का माल था, वह उसको छोड़कर हज को चल दिया। साथियों ने उसको मश्वरा दिया कि अगर तू यहां ठहर जाये तो तेरा सामान कुछ निकल सकता है वह ताजिर कहने लगा कि खुदा की क़सम अगर सारी दुनिया का माल मुझे मिल जाये, तब भी हज के मुक़ाबले में उसको तर्जीह न दूं कि वहां की हाज़िरी में औलिया अल्लाह की ज़ियारत नसीब होगी और मैं इन हज़रात में जो कुछ देख चुका हूं बस देख चुका हूं (बयान से बाहर है) लोगों ने पूछा कि आख़िर तूने क्या देखा? उस ताजिर ने सुनाया कि हम एक मर्तबा हज को जा रहे थे कि प्यास की

शिद्दत ने सबको परेशान कर दिया और एक एक गिलास इतने इतने दामों में मिल रहा था। मैंने एक दिन प्यास की शिद्दत में सारे क़ाफ़िले को छान डाला, कहीं पानी का घूंट न क़ीमत से मिला, न किसी और तरह से, और प्यास की वजह से मेरा दम निकलने लगा। मैं चंद क़दम आगे चला तो एक फ़क़ीर जिसके साथ एक बरछा था और एक प्याला, उसने अपने बरछे को एक हौज़ की नाली में गाड़ दिया, उसके नीचे से पानी उबलने लगा और नाली के ज़रिये से हौज़ में जमा होने लगा। मैं हौज़ की तरफ़ गया और खूब सेर हो कर पानी पिया और अपना मश्कीज़ा भी भर लिया। इसके बाद क़ाफ़िले वालों को मैंने ख़बर की। सब क़ाफ़िले वाले उससे सेराब हुए और वह हौज़ उसी तरह लबरेज़ था। वह ताजिर कहने लगा, ऐसी जगह हाज़िरी से कोई बाज़ रह सकता है कि जहां ऐसे ऐसे बुज़ुर्ग जमा होते हों? *(रौज़)*

इब्ने अरबी रह॰ ने भी मुहाज़रात में इस क़िस्से को नक़ल किया है और लिखा है कि उसका तमाम माल पचास हज़ार अशर्फ़ियों का था, जिनमें एक मोती चार हज़ार अशर्फ़ियों का था।

13. अबू अब्दुल्लाह जौहरी रह॰ कहते हैं कि मैं एक साल अरफ़ात के मैदान में था। मेरी ज़रा सी आंख लगी, तो मैंने देखा कि दो फ़रिश्ते आसमान से उतरे। एक ने उनमें से अपने साथी से कहा कि इस साल कितने आदमियों ने हज किया? साथी ने जवाब दिया कि छः लाख आदमियों ने हज किया, लेकिन उनमें से सिर्फ़ छः आदमियों का हज क़ुबूल हुआ। मुझे यह बात सुनकर इस क़दर रंज हुआ, दिल चाहा कि अपने मुंह पर तमांचे मारूं और अपनी हालत पर खूब रोऊं। इतने में उस पहले फ़रिश्ते ने पूछा कि जिन लोगों का हज क़ुबूल नहीं हुआ, उनके बारे में अल्लाह जल्ल जलालुहू ने क्या मामला फ़रमाया? दूसरे फ़रिश्ते ने जवाब दिया कि करीम ने करम की निगाह फ़रमायी और मक़्बूलीन में से हर एक के तुफ़ैल एक एक लाख का हज क़ुबूल फ़रमा लिया और यह खुदा तआला का बड़ा फ़ज़्ल है। वह अपना फ़ज़्ल व इनाम जिसको चाहे बख़्श दे। *(रौज़)*

इस क़िस्म का एक वाक़िआ अली बिन मुवफ़्फ़क़ रह॰ का पहली फ़स्ल की हदीस नं॰ 6 के ज़ैल में भी गुज़र चुका है।

14. अली बिन मुवफ़्फ़क़ रह॰ कहते हैं कि मैं एक मर्तबा हरम शरीफ़ में बैठा हुआ था और उस वक़्त तक साठ हज कर चुका था। मेरे दिल में यह वस्वसा गुज़रा कि कब तक इन जंगल बयाबानों में फिरता रहूंगा (अब ख़त्म करूं,

बहुतेरे हज कर लिये) मुझ पर दफ़्अतन नींद का ग़लबा हुआ, तो मैंने एक ग़ैबी आवाज़ देने वाले को देखा, वह कह रहा है, ऐ इब्ने मुवफ़्फ़क़, तू अपने घर उसी को बुलाता है, जिसके बुलाने से तेरा दिल खुश हो। मुबारक हैं वे लोग जिनको अल्लाह जल्ल शानुहू चाहें और आला जगह बुलायें। इसके बाद उस आवाज़ देने वाले ने दो शेअ्र पढ़े, जिनका तर्जुमा यह है :-

मैंने ज़ियारत के लिये अपने से मुहब्बत रखने वालों को बुलाया है और उनके अलावा किसी को नहीं बुलाया, ये लोग मेरे घर की तरफ़ इक्राम के साथ आये हैं, पस मुबारक हैं ये करीम लोग भी और वह ज़ात भी जिसने इनको बुलाया। (रौज़)

15. हज़रत ज़ुन्नून मिस्री रह० फ़रमाते हैं कि मैंने एक नौजवान को काबा शरीफ़ के पास देखा कि दमादम रूकूअ् सज्दे कर रहा है। मैंने पूछा कि बड़ी कसरत से नमाज़ें पढ़ रहे हो। वह कहने लगा कि वापसी-ए-वतन की इजाज़त मांग रहा हूँ। इतने में मैंने देखा कि एक काग़ज़ का पर्चा ऊपर से गिरा, उसमें लिखा हुआ था कि यह अल्लाह जल्ल शानुहू जो बड़ी इज़्ज़त वाला, बड़ी मग़्फ़िरत वाला है, की तरफ़ से अपने सच्चे शुक्रगुज़ार बंदे की तरफ़ है कि तू वापस चला जा, इस तरह कि तेरे अगले पिछले गुनाह सब बख़्श दिये गये। (रौज़)

16. सह्ल बिन अब्दुल्लाह रह० फ़रमाते हैं कि किसी वली का लोगों के साथ मेल जोल रखना उसकी ज़िल्लत का सबब होता है और सिर्फ़ अल्लाह जल्ल शानुहू के साथ लगाव उसकी इज़्ज़त का सबब होता है। मैं ने बहुत कम वली ऐसे देखे हैं, जो यकसू न रहते हों।

अब्दुल्लाह बिन सालेह रह० एक बुज़ुर्ग थे, जिन पर अल्लाह जल्ल शानुहू की ख़ास अताया थीं और बहुत इनामात थे, वे लोगों से भाग कर एक शहर से दूसरे शहर में फिरते रहते थे। इसी तरह आख़िर मक्का मुकर्रमा पहुँच गये और वहां बहुत तवील क़ियाम किया। मैंने उनसे कहा कि इस शहर में तो आपने बहुत ज़्यादा क़ियाम किया। कहने लगे कि मैं इस शहर में क्यों कर न ठहरूँ। मैंने ऐसा कोई शहर नहीं देखा, जिसमें इस शहर से ज़्यादा रहमतें और बरकतें नाज़िल होती हों। इस शहर में सुबह को और शाम को फ़रिश्ते उतरते हैं। मैंने इस शहर में बड़े बड़े अजाइबात देखे हैं। फ़रिश्ते मुख़्तलिफ़ सूरतों में बैतुल्लाह का तवाफ़ करते हैं और यह सिलसिला ख़त्म नहीं होता। अगर मैं उन सब अजाइबात को बयान करूँ,

जो मैं ने यहां देखे हैं तो जिन का ईमान कामिल नहीं, उनकी अक़्लें उनको बरदाश्त भी न कर सकेंगी। मैंने दर्याफ़्त किया कि तुम्हें ख़ुदा की क़सम, कुछ अपने देखे हुए अजाइबात मुझे भी सुनाओ। कहने लगे कि कोई वली कामिल, जिसकी विलायत सही हो चुकी हो, ऐसा नहीं जो हर जुमा की शब में इस शहर में न आता हो, उन्हीं लोगों के देखने के वास्ते मेरा यहां क़ियाम है। मैंने उनमें से एक साहब को देखा, जिनका नाम मालिक बिन क़ासिम जबली रह० था, वह आये और उनके हाथ में से गोश्त की ख़ुश्बू आ रही थी। मैंने कहा कि तुम शायद अभी खाना खा कर आये हो। कहने लगे, अस्तग़्फ़िरूल्लाह, मैंने तो एक हफ़्ते से कुछ नहीं खाया, अलबत्ता अपनी वालिदा को खाना खिला कर आया हूँ। और जल्दी इसलिये की, ताकि मक्का मुकर्रमा में सुबह की नमाज़ में शिर्कत कर लूँ।

अब्दुल्लाह रह० कहते हैं कि जहां से मालिक आये थे, उस जगह का और मक्का मुकर्रमा का नौ सौ फ़र्सख़ का फ़ासिला है (एक फ़र्सख़ तीन मील का होता है तो सत्ताईस सौ मील हुए) इसके बाद अब्दुल्लाह ने मुझसे पूछा कि तुझे इस क़िस्से का यक़ीन आ गया? सह्ल रह० कहते हैं कि हां यक़ीन आ गया। कहने लगे अल्लाह का शुक्र है कि मुझे एक मोमिन आदमी मिला और बाज़ बुज़ुर्गों ने बयान किया कि उन्होंने काबा शरीफ़ के गिर्द फ़रिश्तों को और अंबिया को और औलिया को बसा औक़ात देखा और ज़्यादातर जुमा की शब में और दो शंबा (पीर) और पंजशंबा (जुमेरात) की शब में देखा, इसके बाद और आजाइब अंबिया की ज़ियारत के मुताल्लिक ज़िक्र किये। *(रौज़)*

17. कहते हैं कि हिशाम बिन अब्दुल मलिक, जबकि वह शाहज़ादा था और ख़ुद उस वक़्त तक बादशाह नहीं बना था, हज को गया और तवाफ़ करते हुए उसने हज्रे अस्वद को बोसा देने का इरादा किया और इंतिहाई कोशिश के बावजूद हुजूम की कसरत से इस पर क़ुदरत न हुई। इतने में हज़रत ज़ैनुल आबिदीन अली बिन इमाम हुसैन रज़ि० तवाफ़ करते हुए हज्रे अस्वद पर पहुँचे तो एक दम सारा मज्मा ठहर गया और उनके रास्ते से इधर उधर हो गया। वह इत्मीनान से बोसा देकर चल दिये। किसी ने हिशाम से पूछा कि यह कौन शख़्स है (जिसका एज़ाज़ शाहज़ादे से भी ज़्यादा है) हिशाम ने कह दिया कि मैं नहीं जानता। उलमा ने लिखा है कि वह जान बूझ कर अंजान बन कर इंकार करता था, ताकि उसके मुसाहिबीन वग़ैरह जो शाम से उसके साथ आये हुए थे, उनके दिल में हज़रत ज़ैनुल आबिदीन रह० की वक़्अत ज़्यादा पैदा न हो और यह बनू उमैया

अह्ले बैत की वक़्अत को गवारा न करते थे। फ़र्ज़दक़ जो अरब का मशहूर शायर है, वह भी वहां खड़ा था, उसने कहा, मैं इनको जानता हूँ फिर उसने चंद शेअ्र पढ़े :-

هٰذَا ابْنُ خَيْرِ عِبَادِ اللّٰهِ كُلِّهِم ۔ هٰذَا التَّقِيُّ النَّقِيُّ الطَّاهِرُ الْعَلَمُ

هٰذَا الَّذِي تَعْرِفُ الْبَطْحَاءُ وَطْأَتَهُ ۔ وَالْبَيْتُ يَعْرِفُهُ وَالْحِلُّ وَالْحَرَمُ

يَكَادُ يُمْسِكُهُ عِرْفَانُ رَاحَتِهِ ۔ رُكْنُ الْحَطِيْمِ إِذَا مَاجَاءَ يَسْتَلِمُ

مَاقَالَ لَا قَطُّ إِلَّا فِي تَشَهُّدِهِ ۔ لَوْلَا التَّشَهُّدُ كَانَتْ لَاءُهُ نَعَمُ

إِذَا رَأَتْهُ قُرَيْشٌ قَالَ قَائِلُهَا ۔ إِلَى مَكَارِمِ هٰذَا يَنْتَهِي الْكَرَمُ

إِنْ عُدَّ أَهْلُ التُّقَى كَانُوْا أَئِمَّتَهُمْ ۔ أَوْ قِيلَ مَنْ خَيْرُ أَهْلِ الْأَرْضِ قِيلَ هُمُ

هٰذَا ابْنُ فَاطِمَةٍ إِنْ كُنْتَ جَاهِلَهُ ۔ بِجَدِّهِ أَنْبِيَاءُ اللّٰهِ قَدْ خُتِمُوْا

وَلَيْسَ قَوْلُكَ مَنْ هٰذَا بِضَائِرِهِ ۔ اَلْعَرَبُ تَعْرِفُ مَنْ أَنْكَرْتَ وَالْعَجَمُ

يُغْضِي حَيَاءً وَيُغْضٰى مِنْ مَهَابَتِهِ ۔ فَلَا يُكَلَّمُ إِلَّا حِيْنَ يَبْتَسِمُ

जिनका तर्जुमा यह है कि :-

1. यह अल्लाह के बंदों में से बेहतरीन की औलाद है, यह मुत्तक़ी पाक साफ़ और सरदार है।

2. यह वह शख़्स है जिसके क़दम को सारा मक्का जानता है, यह वह शख़्स है जिसको बैतुल्लाह जानता है, इसको हिल्ल व हरम पहचानते हैं।

3. यह वह शख़्स है कि जब हज्रे अस्वद का बोसा देने के लिये उस के क़रीब जाये तो उसके हाथों को पहचान कर क़रीब है कि हज्रे अस्वद का कोना उसके हाथों को पकड़ ले। इस सूरत में हाथों की ख़ुसूसियत इस वजह से है कि हज्रे अस्वद के बोसे के वक़्त दोनों हाथ इस कोने पर रखे जाते हैं। इस मतलब के मुवाफ़िक़ रूक्नुल हतीम से मजाज़न रूक्ने काबा मुराद होगा। और हो सकता है कि यह तर्जुमा किया जाये कि जब यह शख़्स तवाफ़ करते हुए हतीम की तरफ़ पहुँचता है तो क़रीब है कि हतीम वाला कोना उसके हाथों को पहचान कर उनको चूमने के लिये पकड़ ले। इस मतलब के मुवाफ़िक़ रूक्नुल हतीम अपने ज़ाहिर पर होगा और हाथों के पहचानने की ख़ुसूसियत अता और जूद की कसरत की तरफ़ इशारा होगा।

4. यह वह शख़्स है जिसने कभी ला नहीं कहा, ला के मायने नहीं के हैं, यानी कभी किसी मांगने वाले को इंकार नहीं किया और बजुज़ कलिमा-ए-तैयबा के कि इसमें "लाइला-ह" में ला कहना पड़ता है, उसकी मजबूरी है और वह हर अत्तहिय्यात में पढ़ा जाता है। अगर यह मजबूरी न होती तो उसकी ज़बान से ला कभी न निकलता।

5. जब क़बीला क़ुरैश जो करम में मशहूर क़बीला है, उसको देखता है तो कहने वाला बेसाख़्ता कह देता है कि उसके अख़्लाक़ पर करम का मुन्तहा है, यानी उससे ज़्यादा करीम कोई नहीं।

6. और जब कहीं अह्ले तक़्वा का शुमार होने लगे तो यही लोग उसमें भी मुक़्तदा होंगे और जब यह पूछा जाये कि दुनिया की बेहतरीन हस्तियां कौन हैं, तो इन्हीं लोगों की तरफ़ उंगलियां उठेंगी।

7. ओ हिशाम, अगर तू इससे जाहिल है तो सुन कि यह फ़ातिमा रज़ि० की औलाद है और इसी के दादा (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर नुबुव्वत ख़त्म कर दी गयी,

8. तेरा यह कहना कि यह कौन है, इसको ऐब नहीं लगाता, जिसके पहचानने से तूने इंकार कर दिया, इसको अरब जानता है, अजम जानता है।

9. यह वह शख़्स है जो शर्म की वजह से अपनी आंख नीची रखता है और सारी दुनिया उसकी अज़्मत और हैबत से आंख नीचे रखती है कोई शख़्स उसके सामने उस वक़्त तक रौअब की वजह से बात नहीं कर सकता, जब तक कि वह खंदापेशानी से पेश न आये।

अश्आर का तर्जुमा ख़त्म हो गया।

साहिबे रौज़ ने इतने ही अश्आर नक़ल किये हैं। यह क़सीदा बड़ा है और बहुत से अश्आर शायर ने उनकी और उस ख़ानदान की फ़ज़ीलत में बरजस्ता कहे हैं, वफ़यातुल अअ्यान, मिरातुल जिनान, हयातुल हैवान वग़ैरह में इस क़सीदे को ज़िक्र किया है। दुररे नज़ीद इस क़सीदे की मुस्तक़िल शरह है। इसमें नक़ल किया है कि हिशाम ने इस क़सीदे को सुनकर ग़ुस्से में आकर फ़रज़दक़ को क़ैद करा दिया।

दर हक़ीक़त हज़रत जैनुल आबिदीन रह० की इबादत और जूद व करम इतने बढ़े हुए थे कि उनके वाक़िआत का इख़्तिसार भी दुश्वार है। रात दिन में एक

हज़ार रक्अत नफ़्ल पढ़ा करते थे और जब वुज़ू करते तो चेहरे का रंग ज़र्द हो जाता और जब नमाज़ को खड़े होते तो बदन पर कपकपी आ जाती। किसी ने इसकी वजह पूछी तो फ़रमाया कि तुम्हें ख़बर नहीं कि किस पाक ज़ात के सामने खड़ा होता हूँ।

एक मर्तबा सज्दे में थे कि घर में आग लग गयी, लोगों ने शोर मचाया, ऐ रसूलुल्लाह के बेटे, आग लग गयी, आग, आग। मगर यह इत्मीनान से नमाज़ पढ़ते रहे। जब फ़ारिग़ हुए तो आग बुझ बुझा चुकी थी। किसी ने उनसे पूछा, तो फ़रमाया कि इससे ज़्यादा सख़्त आग (यानी जहन्नम की आग) के ख़ौफ़ ने इसकी तरफ़ मुतवज्जह न होने दिया। आप का मामूल था कि रात को अंधेरे में पोशीदा लोगों के घरों पर जाकर उनकी इआनत फ़रमाया करते थे और बहुत से घराने ऐसे थे, जिनका गुज़ारा आप की इमदाद पर था और उनको यह भी पता न चलता था कि यह कौन शख़्स है? जब आप का इंतिक़ाल हुआ तो मालूम हुआ कि सौ घर मदीना तैयबा में ऐसे थे, जिन पर आप ख़र्च फ़रमाया करते थे।

(रौज़)

ऐसी हालत में फ़र्ज़दक़ जो कहे, वह सही है।

हज़रत इमाम मालिक रह॰ का इर्शाद है कि ख़ानदाने नुबुव्वत में हज़रत ज़ैनुल आबिदीन रह॰ जैसा शख़्स कोई भी न था। (यानी अपने ज़माने में)।

यह्या बिन सईद रह॰ कहते हैं कि हाशिमी ख़ानदान में जितने हज़रात का ज़माना मैंने पाया है, उनमें आप अफ़ज़ल तरीन शख़्स थे।

सईद बिन मुसय्यिब रह॰ कहते हैं कि आपसे ज़्यादा मुत्तक़ी मैंने नहीं देखा। इन हालात पर भी जब आप हज को तश्रीफ़ ले गये और एहराम बांधने का वक़्त आया तो आप का चेहरा ज़र्द हो गया और लब्बैक न कह सके। लोगों ने पूछा कि आप लब्बैक नहीं पढ़ते, तो फ़रमाया कि मुझे ये ख़ौफ़ है कि कहीं जवाब में "ला लब्बैक" न कह दिया जाये। मगर जब लोगों ने इस्रार किया कि एहराम बांधने के वक़्त लब्बैक कहना ज़रूरी है तो आपने लब्बैक पढ़ा और बेहोश होकर सवारी पर से गिर पड़े और हज के ख़त्म तक यही सूरत रही कि जब लब्बैक कहते, यही हालत होती।

हज़रत इमाम मालिक रह॰ से नक़ल किया गया है कि जब हज़रत ज़ैनुल आबिदीन रह॰ ने एहराम बांधा और लब्बैक कहने का इरादा किया तो बेहोश होकर

ऊँटनी पर से गिर गये और हड्डी टूट गयी। *(तह्ज़ीबुत्तह्ज़ीब)*

हज़रत ज़ैनुल आबिदीन रह॰ से बड़ी हिक्मत के इर्शादात किताबों में नक़ल किये गये। आपका इर्शाद है कि अल्लाह जल्ल शानुहू की इबादत बाज़ लोग उसके ख़ौफ़ से करते हैं, यह गुलामों की इबादत है (कि डंडे के ज़ोर से काम करें) और बाज़ लोग उसके इनामात के वास्ते करते हैं। यह ताजिरों की इबादत है। (कि हर काम में कमाई की फ़िक्र है।)

अह्रार की इबादत यह है कि उसके शुक्र में इबादत करें। आपके साहिबज़ादे हज़रत बाक़िर रह॰ फ़रमाते हैं कि मुझे मेरे वालिद हज़रत ज़ैनुल आबिदीन रज़ि॰ ने वसीयत फ़रमायी है कि पांच क़िस्म के आदमियों के पास मत लगना, हत्ताकि रास्ता चलते भी उनका रफ़ीक़े सफ़र न बनना :-

1. एक फ़ासिक़ शख़्स कि वह एक लुक़्मे के बदले में तुझे बेच देगा, बल्कि एक लुक़्मे से कम में भी बेच देगा। मैंने अर्ज़ किया कि एक लुक़्मे से कम का क्या मतलब? फ़रमाया कि महज़ इस उम्मीद पर कि लुक़्मा किसी से मिल जाये, फिर वह उसकी उम्मीद पूरी भी न हो।

2. दूसरे, बख़ील के पास न लगना कि वह तेरी सख़्त हालत के वक़्त भी तुझसे किनारा कशी करेगा,

3. तीसरे, झूठ बोलने वाला शख़्स बमंज़िला उस बालू के है, जो दूर से पानी मालूम होता हो, वह क़रीब आने वालों को दूर बतायेगा, दूर होने वाली चीज़ को क़रीब करके बताएगा।

4. चौथे बेवक़ूफ़, अहमक़ से दूर रहना कि वह नफ़ा पहुँचाने का इरादा करेगा और नुक़्सान पहुँचायेगा। इसी वजह से कहा गया है कि समझदार दुश्मन, नादान दोस्त से बेहतर है।

5. पांचवे उससे दूर रहना, जो अपने रिश्तेदारों से क़ता-रहमी करता हो, इसलिये कि मैंने ऐसे शख़्स को क़ुरआन पाक में तीन जगह मलऊन पाया।

(रौज़)

18. हज़रत इमाम ज़ैनुल आबिदीन रह॰ के साहिबज़ादे हज़रत इमाम बाक़िर मुहम्मद बिन अली रह॰ जब हज को तशरीफ़ ले गये और बैतुल्लाह शरीफ़ पर नज़र पड़ी तो इतने ज़ोर से रोये कि चीख़े निकल गयी। लोगों ने कहा कि सब लोगों की नज़रें इधर लग गयीं, आप चीख़ें न मारें। फ़रमाया कि शायद अल्लाह

जल्ल शानुहू मेरे रोने की वजह से रहमत की नज़र फ़रमा ले, जिसकी वजह से कल क़ियामत के दिन कामियाब हो जाऊँ। इसके बाद तवाफ़ किया और तवाफ़ के बाद मक़ामे इब्राहीम पर जा कर नफ़्लें पढ़ीं, तो सज्दे की जगह आंसुओं की वजह से भीग गयी थी। आपने अपने एक साथी से फ़रमाया कि मुझे सख़्त रंज है और मेरा दिल सख़्त फ़िक्र में मश्गूल है। किसी ने पूछा कि आप को किस चीज़ का रंज है फ़रमाया कि जिसके दिल में अल्लाह का ख़ालिस दीन दाख़िल हो जाये, वह उसको अल्लाह के मा सिवा से ख़ाली कर देता है और दुनिया इन चीज़ों के अलावा और क्या चीज़ है? यही सवारी है, जिस पर सवार होकर आये हो, यही कपड़ा है, जिसको पहन रखा है। यही बीवी है जो मिल गयी, यही खाना है जो खाया है। *(रौज़)*

19. हज़रत लैस बिन सअ्द रह० कहते हैं कि मैं सन् एक सौ तेरह (13) हिजरी में पैदल हज को गया जब मैं मक्का मुकर्रमा पहुँच गया तो अस्र की नमाज़ के वक़्त जबले अबू क़ुबीस पर चढ़ गया, वहां मैंने एक साहब को बैठे देखा कि वह दुआयें मांग रहे हैं और "या रब्बि या रब्बि" इतनी मर्तबा कहा कि दम घुटने लगा, फिर उन्होंने "या रब्बाहु, या रब्बाहु" इसी तरह कहा कि दम निकलने लगा। फिर इसी तरह "या अल्लाहु या अल्लाहु" कहते रहे कि दम घुटने लगा, फिर इसी तरह "या हय्यु या हय्यु" लगातार कहते रहे, फिर इसी तरह "या रहमानु या रहमानु" फिर "या रहीमु या रहीमु" इसी तरह कहा कि दम घुटने लगा, फिर "या अर्हमुर्राहिमीन" भी इसी तरह कहा सात मर्तबा कि दम घुटने लगा। इसके बाद वह कहने लगे "या अल्लाहु" मेरा अंगूरों को जी चाह रहा है, वह अता फ़रमा और मेरी चादरें पुरानी हो गयीं।

लैस रह० कहते हैं कि ख़ुदा की क़सम, उनकी ज़बान से ये लफ़्ज़ पूरे निकले भी नहीं थे कि मैंने एक टोकरी अंगूरों से भरी हुई रखी देखी, हालांकि उस वक़्त रूए ज़मीन पर कहीं अंगूर का निशान भी न था और दो चादरें रखी हुई देखीं। उन्होंने अंगूर खाने का इरादा किया, तो मैंने कहा कि मैं भी इनमें आपका शरीक हूँ। फ़रमाया कि कैसे? मैंने कहा कि जब आप दुआ कर रहे थे तो मैं आमीन आमीन कह रहा था। फ़रमाने लगे, आओ, खाओ, लेकिन इसमें से कुछ साथ न ले जाना। मैं आगे बढ़ा और उनके साथ ऐसी अजीब चीज़ खायी कि उम्र भर ऐसी चीज़ न खायी थी। वे अजीब क़िस्म के अंगूर थे कि उनमें बीज भी न था। मैंने ख़ूब पेट भर कर खाए, मगर उस टोकरी में कुछ कमी न हुई। फिर उन्होंने

फ़रमाया कि इन दोनों चादरों में जौन सी तुम्हें पसंद हो ले लो। मैंने कहा कि चादर की मुझे ज़रूरत नहीं है। फिर फ़रमाने लगे कि ज़रा सामने से हट जाओ। मैं इनको पहन लूँ। मैं परे को हट गया तो उन्होंने एक चादर लुंगी की तरह बांध ली, दूसरी ओढ़ ली और जो चादरें पहले से पहने हुए थे उनको हाथ में लेकर पहाड़ से नीचे उतरे। मैं पीछे हो लिया। जब सफ़ा मर्वः के दर्मियान पहुँचे तो एक साइल ने कहा कि रसूलुल्लाह के बेटे ! यह कपड़ा मुझे दे दीजिये। अल्लाह जल्ल शानुहू आप को जन्नत का जोड़ा अता फ़रमाये। वे दोनों चादरें उसको दे दीं। मैंने उस साइल के क़रीब जाकर उससे पूछा कि यह कौन हैं? उसने कहा कि हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ हैं, फिर उनके पास वापस आया कि उनसे कुछ सुनूं, मगर कहीं पता न चला। *(रौज़)*

यह हज़रत इमाम बाक़िर रह० के साहिबज़ादे हैं। हज़रत इमाम मालिक रह० फ़रमाते हैं कि मैं बारहा उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ। मैंने हमेशा तीन इबादतों में से किसी न किसी में मशग़ूल पाया, नमाज़ या तिलावत या रोज़ा, और बग़ैर वुज़ू के हदीस नक़ल न करते थे। *(तह्ज़ीबुत्तह्ज़ीब)*

सुफ़ियान सोरी रह० फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत जाफ़रे सादिक़ रज़ि० से सुना, फ़रमाते थे कि इस ज़माने में सलामती कमयाब हो गयी और अगर वह कहीं मिल सकती है तो गोशा-ए-ग़ुमनामी में है और अगर इसमें नहीं (यानी यह मयस्सर न हो सके) तो फिर यकसूई और तंहाई में तलाश की जाये। लेकिन तंहाई गुमनामी के बराबर नहीं हो सकती। और अगर वहां भी न हो सके, तो फिर चुप रहने में और चुप रहना तंहाई की बराबरी नहीं कर सकता और अगर ख़ामोशी में भी न हो सके, तो फिर सलफ़े सालेह के कलाम में और सईद शख़्स वह है, जो अपने नफ़स में ख़लवत और यकसूई पाये।

हज़रत जाफ़र रह० अपने बाप दादा की रिवायात से हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद नक़ल करते हैं कि जिस शख़्स पर अल्लाह जल्ल शानुहू का कोई इनाम हो उसको ज़रूरी है कि उसका शुक्र अदा करे और जिस पर रिज़्क़ में तंगी हो, वह इस्तिग़फ़ार की कसरत करे और जिसको कोई परेशानी लाहिक़ हो, वह लाहौ-ल पढ़ा करे। *(रौज़)*

20. हज़रत शक़ीक़ बलख़ी रह० फ़रमाते हैं कि मैं सन एक सौ उन्चास (149) हिजरी में हज को जा रहा था, रास्ते में क़ादसिया (एक शहर का नाम

है) में उतरा। मैं लोगों की ज़ेब व ज़ीनत और उनका हुजूम और कसरत देख रहा था। मेरी नज़र एक नौजवान ख़ूबसूरत पर पड़ी कि उसने कपड़ों के ऊपर एक बालों का कपड़ा पहन रखा था, पांव में जूता भी था और सबसे अलाहिदा बैठा था। मैंने ख़्याल किया कि यह लड़का सूफ़ी क़िस्म के आदमियों में से मालूम होता है कि रास्ते में दूसरों पर बोझ ही बनेगा, मैं उसको जाकर फ़हमाइश करूँ, इस ख़्याल से मैं उसके क़रीब गया, जब उसने मुझे अपनी तरफ़ आते देखा, कहने लगा ऐ शक़ीक़:-

اِجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ اِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ اِثْمٌ (حجرات)

"इज्तनिबू कसीरम-मिनज़्ज़न्नि इन्-न बअ्ज़ज़्ज़न्नि इस्मुन्॰" *(हुजुरात)*

(बदगुमानी से बचो। बाज़ गुमान गुनाह होते है) और यह कह कर मुझे छोड़ कर चल दिया। मैंने सोचा कि यह तो बड़ी मुश्किल बात हो गयी, मेरा नाम लेकर (हालांकि मुझको जानता भी नहीं) मेरे दिल की बात कह कर चल दिया। यह तो कोई वाक़ई बुज़ुर्ग आदमी है मैं उसके पास जाकर अपने गुमान की माफ़ी कराऊँ। मैं जल्दी जल्दी उसके पीछे चला, मगर वह मेरी नज़रों से ग़ायब हो गया पता न चला। जब हम वाक़्सा पहुँचे तो दफ़्अतन उस पर नज़र पड़ी कि वह नमाज़ पढ़ रहा है और उसका बदन कांप रहा है और आंसू बह रहे हैं। मैंने उसको पहचान लिया और उसकी तरफ़ बढ़ा ताकि अपने उस गुमान की माफ़ी कराऊँ। मगर मैं ने उसकी नमाज़ से फ़राग़त का इंतिज़ार किया और जब वह सलाम फेर कर बैठा तो मैं उसकी तरफ़ बढ़ा। जब उसने मुझको अपनी तरफ़ बढ़ते हुए देखा तो कहने लगा, ऐ शक़ीक़ पढ़ो) :-

وَاِنِّىْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى (طٰه ع ٤)

"और बिला शुबह मैं बड़ा बख़्शने वाला हूँ, ऐसे लोगों का जो तौबा कर लें और ईमान ले आयें और फिर सीधे रास्ते पर क़ायम रहें।"

यह आयत पढ़ कर वह फिर चल दिया। मैंने कहा कि यह शख़्स तो अब्दाल में से मालूम होता है। दो मर्तबा मेरे दिल की बात पर मुतनब्बेह कर चुका। फिर जब हम ज़ियाला में पहुँचे तो दफ़्अतन मेरी नज़र उस जवान पर पड़ी कि वह एक कुएं पर खड़ा है। एक बड़ा सा प्याला उसके हाथ में है और कुएं से पानी लेने का इरादा कर रहा था कि वह प्याला कुएं में गिर पड़ा। मैं उसकी तरफ़ देख रहा था, उसने आसमान की तरफ़ देखा और एक शेअ्र पढ़ा जिसका तर्जुमा यह

है कि "तू ही मेरा परवरिश करने वाला है, जब मैं प्यासा हूँ पानी से और तू ही मेरी रोज़ी (का ज़रिया) है, जब मैं खाने का इरादा करूँ," इसके बाद उसने कहा, ऐ मेरे अल्लाह, तुझे मालूम है ऐ मेरे माबूद, मेरे आक़ा, कि इस प्याले के सिवा मेरे पास कुछ नहीं है, पस इस प्याले से मुझे महरूम न फ़रमाईये।

शक़ीक़ रह० कहते हैं कि ख़ुदा की क़सम, मैंने देखा कि कुएं का पानी ऊपर को आ गया। उसने हाथ बढ़ाया और प्याला पानी से भर कर निकाल लिया, अव्वल वुज़ू किया और चार रक्अत नमाज़ पढ़ी। इसके बाद रेत इकट्ठा करके एक एक मुट्ठी भर कर उस प्याले में डालता जाता था और उसको हिला कर पी रहा था। मैं उसके क़रीब गया और सलाम किया। उसने सलाम का जवाब दिया। मैंने कहा अल्लाह ने जो नेअ्मत तुम्हें अता की है, उसमें से कुछ अपना बचा हुआ मुझे भी खिला दीजिये। कहने लगा कि शक़ीक़ अल्लाह जल्ल शानुहू की ज़ाहिरी और बातिनी नेअ्मतें हम पर रही हैं। अपने रब के साथ नेक गुमान रखो। यह कह कर वह प्याला मुझे दे दिया। मैंने जो उसको पिया तो ख़ुदा की क़सम! उसमें सत्तू और शकर घुली हुई थी। उससे ज़्यादा ख़ुश ज़ायक़ा और उससे ज़्यादा ख़ुश्बूदार चीज़ मैंने कभी नहीं खायी थी। मैंने ख़ूब पेट भर पिया, जिसकी बरकत से कई दिन तक न तो मुझे भूख लगी, न प्यास लगी। इसके बाद मक्का मुकर्रमा में दाख़िल होने तक मैंने उसको नहीं देखा। जब हमारा क़ाफ़िला मक्का मुकर्रमा पहुँच गया तो मैंने क़ुब्बतुश शराब के क़रीब एक मर्तबा आधी रात के क़रीब नमाज़ पढ़ते देखा। बड़े ख़ुशूअ् से नमाज़ पढ़ रहा था और ख़ूब रो रहा था। सुबह तक इसी तरह नमाज़ पढ़ता रहा। जब सुबह सादिक़ हो गई तो वह उसकी जगह बैठा तस्बीह पढ़ता रहा उसके बाद सुबह की नमाज़ पढ़ी और फिर बैतुल्लाह शरीफ़ का तवाफ़ किया, फिर वह बाहर जाने लगा तो मैं उसके पीछे लग गया। बाहर जाकर देखा, तो रास्ते में जिस हालत पर देखा था, उसके बिल्कुल ख़िलाफ़ बड़े हशम व ख़दम ग़ुलाम उसके मौजूद हैं, चारों तरफ़ से उसको घेर रखा है। सलाम करके हाज़िर हो रहे हैं। मैंने एक शख़्स से जो मेरे क़रीब था, दर्याफ़्त किया कि यह बुज़ुर्ग कौन है? उसने बताया कि यह हज़रत मूसा बिन जाफ़र रह० यानी हज़रत जाफ़रे सादिक़ रह० के साहिब ज़ादे हैं। मुझे ताज्जुब हुआ और मैंने ख़्याल किया कि ये अजाइब वाक़ई ऐसे ही सैय्यद के होने चाहियें। *(रौज़)*

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह.० ने तहज़ीब में लिखा है कि हज़रत मूसा काज़िम के मनाक़िब बहुत हैं। इन हज़रात का तो पूछना ही क्या है कि यह उस ख़ानदान

के चांद सूरज और सितारे हैं। हक़ तआला शानुहू ने इस ख़ानदान ही में वह ख़ुसूसी जौहर और अख़्लाक़ का कमाल रखा है, जहां तक हम जैसों की परवाज़ भी नहीं है सय्यिदों के ख़ानदान का मामूली से ममूली आदमी भी कोई अजीब आदत अपने अंदर रखता है–

"ईं ख़ाना हमा आफ़्ताब अस्त"

21. हज़रत अबू सईद ख़ज़्ज़ाज़ रह॰ फ़रमाते हैं कि मैं मस्जिदे हराम में गया तो मैंने एक फ़क़ीर को देखा कि उस पर दो फटे हुए कपड़े हैं और लोगों से सवाल कर रहा है। मैंने अपने दिल में सोचा कि ऐसे ही लोग आदमियों पर बोझ होते हैं, उसने मेरी तरफ़ देखा और यह आयत पढ़ी :–

وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَافِيْٓ اَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوْهُ (بقره ع ۳۰)

"इसका यक़ीन रखो कि अल्लाह जल्ल शानुहू जानता है उस चीज़ को जो तुम्हारे दिलों में है, पस उससे डरते रहो"। *(बक़रः, रूकूअ 30)*

अबू सईद कहते हैं कि मैंने अपने दिल में अपनी बद गुमानी से तौबा की तो उसने मुझे आवाज़ दी और यह आयत पढ़ी:–

وَهُوَالَّذِىْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ (شورى ع ۱۳)

"और वह ऐसी पाक ज़ात है, जो अपने बंदों की तौबा क़ुबूल करता है और तमाम गुनाहों को माफ़ कर देता है। *(रौज़)*

22. एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैं एक क़ाफ़िले के साथ जा रहा था, रास्ते में मैंने एक औरत को देखा कि क़ाफ़िले से आगे आगे जा रही है मैंने ख़्याल किया कि यह ज़ईफ़ा इसलिये क़ाफ़िले से आगे चल रही है कि कहीं क़ाफ़िले का साथ न छूट जाये। मेरे साथ चंद दिरम थे, वह मैं जेब से निकाल कर उसको देने लगा और उससे मैंने कहा कि जब क़ाफ़िला मंज़िल पर ठहरे तो मुझे तलाश कर के मिल लेना। मैं क़ाफ़िला वालों से कुछ चंदा करके तुम्हें दे दूंगा। उससे सवारी किराये पर कर लेना, उसने अपना हाथ ऊपर को किया और मुट्ठी में कोई चीज़ ली, तो वे दिरम थे, वे उसने मुझे दे दिये और यह कहा कि तूने जेब से लिये हमने ग़ैब से लिये। इसके बाद मैंने एक औरत को देखा कि वह ख़ाना-ए-काबा का पर्दा पकड़े हुए चंद अशआर पढ़ रही है, जिनका तर्जुमा यह है :–

"ऐ दिलों के महबूब, मेरे लिये तेरे सिवा कोई नहीं, आज तू रहम कर

दे, उस पर जो तेरी ज़ियारत को हाज़िर हुई, मेरा सब्र जाता रहा और तेरा इश्तियाक़ बहुत बढ़ गया और दिल को इससे इंकार है कि वह तेरे सिवा किसी से भी मुहब्बत करे तू ही मेरा सवाल है, तू ही मेरा मत्लूब है, तू ही मेरी मुराद है। काश मुझे यह मालूम हो जाता कि तेरी मुलाक़ात कब हो सकेगी, मुझे जन्नत से उसकी नेअ्मतें मक़्सूद नहीं! मुझे जन्नत इस लिये मत्लूब है कि उसमें तेरा दीदार होगा। *(रौज़)*

23. अबू अब्दुर्रहमान ख़फ़ीफ़ रह० कहते हैं कि मैं हज के इरादे से चलता हुआ बग़दाद पहुँचा और मेरे दिमाग़ में सूफ़ियाना घमंड था यानी अक़ीदत की पुख़्तगी, मुजाहदे की शिद्दत और अल्लाह के मासिवा को पसे पुश्त डाल देना, मैंने चालीस दिन तक कुछ नहीं खाया न पिया और हज़रत जुनैद बग़दादी रह० की ख़िदमत में भी हाज़िर न हुआ और मैं हर वक़्त बा वुज़ू रहता। इसी हालत में बग़दाद से भी चल दिया। मैंने जंगल में एक कुएं पर एक हिरनी को पानी पीते हुए देखा, मुझे भी प्यास शिद्दत की लग रही थी। जब मैं कुएं के क़रीब पहुँचा तो वह हिरनी मुझे देख कर चली गयी और कुएं का पानी जो मन तक आ रहा था और हिरनी उससे पी रही थी, वह भी कुएं के अंदर नीचे उतर गया मैं आगे चल दिया और मैंने अर्ज़ किया, ऐ मेरे सरदार, मेरी क़द्र तेरे यहां इस हिरनी के बराबर भी नहीं, तो मैंने अपने पीछे से एक आवाज़ सुनी, वह यह थी कि हमने तेरा इम्तिहान किया था, तूने सब्र न किया (शिकवा शुरू कर दिया) जा कुएं पर लौट जा पानी पी ले। हिरनी बग़ैर प्याला और रस्सी के आयी थी, तेरे पास प्याला भी था और रस्सी भी थी। मैं जब कुएं पर लौटा तो वह लबरेज़ था। मैंने अपना प्याला भर लिया, उसी में से मैं पानी भी पीता रहा और वुज़ू भी करता रहा, मगर वह पानी ख़त्म न हुआ, यहां तक कि मैं मदीना तैयबा पहुँच गया, इसके बाद हज से फ़ारिग़ होकर जब मैं बग़दाद पहुँचा और जामए बग़दाद में गया तो हज़रत जुनैद रह० की नज़र मुझ पर पड़ी, फ़रमाने लगे कि अगर तू सब्र करता तो पानी तेरे क़दमों के नीचे से उबलने लगता।

24. एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि वह जंगल में जा रहे थे, उनको एक फ़क़ीर मिले जो नंगे पांव नंगे सर जा रहे थे, दो पुराने कपड़े उनके पास थे, एक की लुंगी बांध रखी थी और एक चादर की जगह ओढ़ रखा था, न उनके साथ कोई खाने की चीज़ थी, न प्याला, मैंने अपने दिल में कहा कि अगर इनके पास पानी का बर्तन और रस्सी ही होती तो अच्छा था। जब पानी की ज़रूरत होती तो

पानी खींच कर वुज़ू वग़ैरह कर लेते। मैं उनके साथ ही लग लिया, गर्मी बड़ी सख़्त पड़ रही थी मैंने उस फ़क़ीर से कहा कि जवान, अगर यह चादर जो कांधे पर ओढ़ रहे हो, सर पर डाल लो तो अच्छा है, धूप से बचाव हो जायेगा, उसने कुछ जवाब न दिया, ख़ामोश चलता रहा। थोड़ी देर बाद मैंने उनसे कहा कि तुम नंगे पांव चल रहे हो, अगर राय हो तो मेरा जूता पहन लो। थोड़ी देर में नंगे पावं चल लूँ, थोड़ी देर तुम नंगे पावं चल लो। वह कहने लगे, तुम तो बड़े फ़ुज़ूल गो आदमी हो, तुमने हदीस नहीं पढ़ी? मैंने कहा पढ़ी है। कहने लगे तुमने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद नहीं पढ़ाः-

مِنْ حُسْنِ إِسْلَامِ الْمَرْءِ تَرْكُهُ مَا لَا يَعْنِيهِ

"आदमी के इस्लाम की ख़ूबी में से बेकार बात का छोड़ देना है"

यह कह कर वह चुप हो गया और हम चलते रहे। इतने में मुझे प्यास लगी और हम समुन्दर के किनारे पर चल रहे थे। वह मेरी तरफ़ मुतवज्जह हुआ और कहने लगा कि तुम्हें प्यास लग रही है। मैंने कहा नहीं।

उसके बाद हम आगे चलते रहे, मगर मुझे प्यास की इतनी शिद्दत हुई कि दम घुटने लगा। वह फिर मेरी तरफ़ मुतवज्जह हुआ और कहने लगा कि प्यास लग रही है? मैंने कहा हां, प्यास तो लग रही है मगर तुम ही इस वक़्त क्या कर सकते हो? उसने मेरे हाथ से प्याला लिया और समुन्दर में घुस गया और पानी भर कर मुझे लाकर दिया कि लो पी लो। मैंने जो उसको पिया तो दरिया-ए-नील के पानी से ज़्यादा मीठा और ज़्यादा साफ़ था और उसमें कुछ घास सा भी था। मैंने अपने दिल में कहा कि यह तो कोई बड़े वलियुल्लाह हैं अब तो मैं कुछ नहीं कहता, जब मंज़िल पर पहुँचूंगा तो इनसे दर्ख़्वास्त करूँगा कि मुझे भी अपने साथ रखें। वह वहीं खड़ा हो गया और कहने लगा कि तुम्हें कौन सी सूरत पसंद है? या तो तुम आगे आगे चलो या मैं चलूँ? मैंने अपने दिल में ख़्याल किया कि अगर यह आगे चल दिया तो ऐसा न हो कि मैं साथ न लग सकूँ और यह मुझसे फ़ौत हो जाये, इसलिये मैं आगे बढ़ जाऊं और चलते चलते किसी जगह बैठ जाऊंगा जब यह वहां पहुँचेगा तो मैं इससे दर्ख़्वास्त करूँगा कि मुझे अपना रफ़ीक़े सफ़र बना लें, मुझे यह ख़्याल आया ही था कि वह कहने लगा अबू बक्र, या तो तुम आगे बढ़ जाओ मैं यहां बैठ जाता हूँ या तुम बैठ जाओ मैं जाता हूँ। मेरा तुम्हारा साथ नहीं हो सकता। यह कह कर वह जा, वह जा।

मैं एक मंज़िल पर पहुँचा, वहां मेरा एक दोस्त था। उन लोगों के यहां एक शख़्स बीमार पड़ा था। मैंने अपना प्याला उनको दिया कि इसमें से ज़रा सा पानी उस बीमार पर छिड़क दो। उन्होंने छिड़का वह अल्लाह के फ़ज़्ल से उसी वक़्त अच्छा हो गया। इसके बाद मैंने उन लोगों से उस फ़क़ीर के मुताल्लिक़ दर्याफ़्त किया, किसी को भी उसका हाल मालूम न था, सब ने कह दिया कि हमने तो उसको नहीं देखा। *(रौज़)*

25. शैख़ फ़त्ह मूसली रह॰ कहते हैं कि मैंने जंगल में एक नाबालिग़ लड़का देखा कि वह पैदल चल रहा है और उसके होंठ हरकत कर रहे हैं। मैंने उसको सलाम किया। उसने सलाम का जवाब दिया। मैंने कहा साहिबज़ादे, कहां जा रहे हो? कहने लगा कि बैतुल्लाह शरीफ़ जा रहा हूँ। मैंने पूछा कि तुम्हारे होंठ हरकत कर रहे थे? कहने लगा कि क़ुरआन शरीफ़ पढ़ रहा था। मैंने कहा अभी तो तुम मुकल्लफ़ भी नहीं बने। कहने लगा कि मैं देखता हूँ कि मौत मुझ से कम उम्र वालों को भी पकड़ लेती है मैंने कहा, तुम्हारे क़दम छोटे हैं और रास्ता बहुत दूर है। कहने लगा कि मेरा काम क़दम उठाना है और अल्लाह जल्ल शानुहू का काम मक़्सूद पर पहुँचाना है। मैंने कहा, कोई तोशा, कोई सवारी? कहने लगा कि मेरा तोशा यक़ीन है और मेरी सवारी पांव है। मैंने कहा कि मैं तो रोटी और पानी पूछता हूँ। कहने लगा चचा जान, अगर कोई आदमी तुम्हें बुलाये तो तुम्हें यह ज़ेबा है कि उसके घर खाने के वास्ते अपना खाना ले जाओ? मैंने कहा नहीं, कहने लगा कि मेरे आक़ा ने अपने बंदों को अपने घर बुलाया है और ज़ियारत की इजाज़त दी है। उन लोगों के ज़ोअ्फ़े यक़ीन ने उनको मजबूर कर रखा है कि अपने तोशे साथ लिये जा रहे हैं। मुझे तो यह बात बहुत ना पसंद हुई और मैंने उसके एहतिराम का लिहाज़ किया। ऐसी हालत में तुम्हारा ख़्याल है कि वह मुझे ज़ाया कर देगा। मैंने कहा, हरगिज़ नहीं। हाशा व कल्ला। इसके बाद वह बच्चा मुझ से ग़ायब हो गया मैंने फिर उसको मक्का मुकर्रमा में देखा, जब उसकी निगाह मुझ पर पड़ी तो कहने लगा कि या शैख़, तुम अब तक भी अपने उसी ज़ोअ्फ़े यक़ीन पर हो। इसके बाद उस बच्चे ने चंद शेअ्र पढ़े, जिनका तर्जुमा यह है।

सारे जहानों का मालिक, मेरी रोज़ी का ज़िम्मेदार है, फिर मैं क्यों मख़्लूक़ को अपनी रोज़ी की तक्लीफ़ दूँ। मेरे मालिक ने जो कुछ मेरा नफ़ा और नुक़्सान है, मेरे पैदा होने से पहले मेरे मुक़द्दर में लिख दिया है, वह मेरी फ़राख़ी की हालत में बड़ी बख़्शिश वाला, अता करने वाला है और मेरी तंगदस्ती में मेरी नेक नीयती

मेरी साथी है, जैसा कि मेरा आजिज़ और बेवकूफ़ होना मेरी रोज़ी को नहीं हटा सकता, ऐसे ही मेरी ज़हानत मेरी रोज़ी को नहीं खींच सकती। (रौज़)

26. एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैं हिजाज़ के जंगल में कई दिन तक इस हालत में रहा कि कुछ न खाया, एक दिन मेरा दिल रोटी और गरम गरम बाक़िल्ला (अरब का मशहूर सालन लोबिये की क़िस्म का होता है) को चाहा। मैंने सोचा कि मैं जंगल बयाबान में हूँ और यहां से इराक़ तक की मुसाफ़त बहुत दूर है यहां गरम गरम बाक़िल्ला कहां? मैं इसी सोच में था कि एक बद्दू आवाज़ लगाता मिला, ले लो रोटी गरम बाक़िल्ला। मैं उसकी तरफ़ बढ़ा। मैंने पूछा गरम है? कहने लगा, हां है और अपनी लुंगी बिछायी, उस पर रोटी और गरम गरम बाक़िल्ला रखा और कहा कि लो खाओ। मैंने खाया, कहने लगा और खाओ, मैनें और खाया, फिर तीसरी मर्तबा उसने तक़ाज़ा किया, मैंने और भी खा लिया फिर चौथी मर्तबा उसने जब तक़ाज़ा किया तो मैंने उससे पूछा कि उस ज़ात के हक़ की क़सम। जिसने तुझे मेरे लिये इस जंगल बयाबान में भेजा है मुझे यह बता कि तू कौन है ? कहने लगे कि मैं ख़ाज़िर हूँ। यह कह कर वह ग़ायब हो गये। (रौज़)

27. हज़रत शक़ीक़ बलख़ी रह० कहते हैं कि मुझे मक्का मुकर्रमा के रास्ते में एक अपाहिज मिला, जो घिसट कर चल रहा था। मैंने पूछा कि तुम कहां से आये हो? कहने लगा कि समरक़ंद से। मैंने पूछा कि वहां से चले हुए कितना अर्सा गुज़रा? कहने लगा, दस वर्ष से ज़्यादा हो गये। मैं बड़े ताज्जुब और हैरत से उसको देखने लगा, वह कहने लगा, शक़ीक़ क्या देख रहे हो? मैंने कहा कि तुम्हारे ज़ोअ्फ़ और सफ़र की दराज़ी से ताज्जुब में पड़ गया। कहने लगा कि शक़ीक़, सफ़र की दूरी को मेरा शौक़ क़रीब कर देगा और मेरे ज़ोअ्फ़ का मुतहम्मिल मेरा मौला है। ऐ शक़ीक़ तुम एक ज़ईफ़ बंदे से ताज्जुब कर रहे हो, जिसको उसका मालिक उठाये लिये जा रहा है। फिर उसने दो शेअ्र पढ़े, जिनका तर्जुमा यह है :-

"मेरे आक़ा, मैं आपकी ज़ियारत को जा रहा हूँ और इश्क़ की मंज़िल कठिन है, लेकिन शौक़ उस शख़्स की मदद किया करता है, जिसकी माल मदद नहीं करता, जिसको रास्ते की हलाकत का ख़ौफ़ हो जाये, वह आशिक़ नहीं है, हरगिज़ नहीं है और न वह आशिक़ है, जिसको रास्ते की सख़्ती इरादे से रोक दे। (रौज़)

"राह याबम या न याबम आरज़ूए मी कुनम,
हासिल आयद या न आयद जुस्तुजूए मी कुनम॥

28. शैख़ नज्मुद्दीन अस्फ़हानी रह० मक्का मुकर्रमा में एक बुज़ुर्ग के जनाज़े में शरीक हुए। जब लोग उनको दफ़्न कर चुके तो तल्क़ीन करने वाले ने क़ब्र के पास बैठकर तल्क़ीन की। शैख़ नज्मुद्दीन रह० हंसने लगे और उनकी आदत हंसने की बिल्कुल नहीं थी। बाज़ ख़ुद्दाम ने हंसी की वजह पूछी तो शैख़ ने झिड़क दिया। कई दिन बाद फ़रमाया कि मैं इसलिये हंसा था कि जब तल्क़ीन करने वाला क़ब्र पर तल्क़ीन के लिये बैठा तो मैंने उन बुज़ुर्ग को, जो दफ़्न किये गये थे यह कहते हुए सुना, देखो जी, हैरत की बात है कि एक मुर्दा ज़िंदा को तल्क़ीन कर रहा है। *(रौज़)*

अरब में बाज़ अइम्मा के मज़हब के मुवाफ़िक़ यह दस्तूर है कि जब मय्यित को दफ़न कर देते हैं तो एक शख़्स उसकी क़ब्र के पास बैठकर कलिमा-ए-तैयिबा वग़ैरह पढ़ता है और मुन्किर नकीर के सवाल जवाब दोहराता है, उसको तल्क़ीन कहते हैं। इन बुज़ुर्ग का यह इर्शाद कि मुर्दा ज़िंदा को तल्क़ीन कर रहा है, ज़ाहिर है कि मरने वाला अल्लाह के इश्क़ की वजह से ज़िंदा है और जो तल्क़ीन कर रहा था, वह इस दौलत से ख़ाली होगा।

29. शैख़ मुज़्नी रह० फ़रमाते हैं कि मैं मक्का मुकर्रमा में मुक़ीम था। मुझ पर एक घबराहट बहुत शिद्दत से सवार हुई। और मैं मदीना पाक की हाज़िरी के इरादे से मक्का मुकर्रमा से चल दिया। जब बीरे मैमूना पहुँचा तो एक नौजवान को पड़ा हुआ पाया कि उसकी नज़अ् की हालत है। मैंने उसके क़रीब पहुँच कर कहा कि ला इला-ह इल्लल्लाह पढ़ो। उसने फ़ौरन आंखें खोल दीं और एक शेअ्र पढ़ा जिसका तर्जुमा यह है कि अगर मैं मर जाऊँ तो मेरा दिल इश्क़े मौला से भरा हुआ है और करीम लोग इश्क़ की बीमारी में मरा करते हैं। यह कह कर वह मर गया। मैंने उसको ग़ुस्ल दिया, कफ़नाया, जनाज़े की नमाज़ पढ़ी और जब उसको दफ़ना चुका तो वह घबराहट, जो मुझ पर सवार थी, जिसकी वजह से मैनें सफ़र का बे इख़्तियार इरादा किया था, वह भी जाती रही, मैं उसको दफ़ना कर मक्का मुकर्रमा वापस आ गया। *(रौज़)*

30. एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैं मक्का मुकर्रमा में था, हमारे क़रीब एक नौ जवान रहा करता था, उसके पास पुरानी चादरें थीं, वह न हमारे पास आता

जाता न कभी पास बैठता। मेरे दिल में उसकी मुहब्बत घर कर गयी। मेरे पास एक जगह से बहुत हलाल ज़रिये से दो सौ दिरम आये। मैं वे लेकर उस जवान के पास गया और मैंने उसके मुसल्ले पर उनको रख कर कहा कि बिल्कुल हलाल ज़रिये से मुझे मिले हैं, इनको तुम अपनी ज़रूरियात में ख़र्च कर लेना। उस जवान ने मुझे तिरछी और तेज़ तुर्श निगाह से देखा और यह कहा कि अल्लाह पाक के साथ यह हमनशीनी (पास बैठना) मैंने सत्तर हज़ार अशर्फ़ियां नक़द, जो मेरे पास थीं, अलावा जायदाद के और किराये के मकानात के इन सबसे अपने को फ़ारिग़ करके ख़रीदा है। तू इन दराहिम के साथ मुझे धोखे में डालना चाहता है। यह कह कर अपना मुसल्ला झाड़ कर खड़ा हो गया, जिस इस्तिग़ना से वह उठ कर जा रहा था और मैं बैठा उन दराहिम को चुन रहा था, उस वक़्त की, उसकी सी इज़्ज़त और अपनी सी ज़िल्लत मैंने उम्र भर किसी की नहीं देखी। *(रौज़)*

यानी उस वक़्त उसकी इज़्ज़त जितनी मेरी निगाह में थी, उतनी इज़्ज़त कभी किसी की नहीं हुई और जितनी उस वक़्त दिरम चुनते हुए मुझे अपनी ज़िल्लत महसूस हो रही थी, उतनी ज़िल्लत कभी अपनी या किसी और की मुझे महसूस नहीं हुई।

31. एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैं मदीना तैयिबा में हाज़िर था। रौज़ा-ए-मुक़द्दस पर मैं हाज़िर हुआ, तो मैंने एक अजमी शख़्स को देखा जो रौज़े पर अल विदाई सलाम कर रहा था। जब वह जाने लगा तो मैं भी उसके पीछे हो लिया। जब वह ज़ुल हुलैफ़ा पहुँचा तो नमाज़ पढ़ी और एहराम बांधा। मैंने भी नमाज़ पढ़ी और एहराम बांध लिया और जब वह चलने लगा तो उसके पीछे हो लिया। वह मेरी तरफ़ मुतवज्जह हुआ और कहने लगा, तुम्हारा क्या मक़्सद है? मैंने कहा, तुम्हारे साथ जाना चाहता हूँ। उसने इंकार कर दिया। मैंने ख़ुशामद और आजिज़ी की। उसने कहा, अगर यही करना है तो मेरे क़दम पर क़दम रखते चले आओ। मैंने कहा अच्छा वह ग़ैर मारूफ़ रास्ते पर चल दिया। और मैं क़दम ब क़दम उसके पीछे हो लिया। थोड़ी ही रात गुज़री थी कि चिराग़ नज़र आये। मुझे कहने लगा कि यह मस्जिदे आइशा रज़ि० है (जो मक्का मुकर्रमा से तीन मील तन्ईम पर है) या तो तुम आगे बढ़ जाओ या मैं आगे बढ़ जाऊँ। मैंने कहा कि जैसे तुम्हारी राय हो, वह आगे बढ़ गये और मैं वहां सो गया। जब सहरी का वक़्त हुआ, मैं मक्का मुकर्रमा पहुँचा और तवाफ़ और सई के बाद शैख़ अबू बक्र कत्तानी रह० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। उनकी ख़िदमत में बहुत से मशाइख़ तशरीफ़ रखते

थे। वे फ़रमाने लगे, कब आये? मैंने अर्ज़ किया, अभी हाज़िर हुआ। फ़रमाया, किधर से आ रहे हो। मैंने अर्ज़ किया मदीना तैयिबा से। कहने लगे मदीना से कब चले थे, मैंने अर्ज़ किया गुज़िश्ता रात वहीं था। वे मशाइख़ जो हाज़िरे मज्लिस थे, एक दूसरे का मुंह देखने लगे।

शैख़ कत्तानी रह० ने कहा कि किसके साथ आये हो, मैंने अर्ज़ किया कि एक बुज़ुर्ग के साथ आया हूं जिनके ये हालात और यह क़िस्सा गुज़रा। शैख़ कत्तानी रह० ने कहा कि यह शैख़ अबू जअ्फ़र दामग़ानी रह० हैं और तुमने जो हालात सुनाये वे उनके अहवाल में से बहुत मामूली चीज़ हैं। इसके बाद शैख़ कत्तानी रह० ने अपने साथियों से कहा चलो, शैख़ दामग़ानी की तलाश करें, कहां हैं और मुझसे फ़रमाया कि तुम्हारा यह हाल नहीं था कि एक शब में यहां पहुँच जाओ। (इसलिये मैंने तफ़्सील पूछी) फिर दर्याफ़्त फ़रमाया कि चलते हुए ज़मीन कैसी मालूम हो रही थी? मैंने अर्ज़ किया, जैसे दरिया की मौज कश्ती के नीचे मालूम होती है। *(रौज़)*

32. हज़रत सुफ़ियान बिन इब्राहीम रह० कहते हैं कि मैंने एक मर्तबा मक्का मुकर्रमा में मौलदुन्नबी के पास इब्राहीम बिन अदहम रह० को बहुत रोते हुए देखा। वह मुझे देख कर रास्ते से परे हट गये। मैंने उनको सलाम किया और वहां नमाज़ पढ़ी। फिर उनसे पूछा कि क्या बात हुई, क्यों रो रहे हो? वह कहने लगे, ख़ैरियत है, कुछ नहीं, मैंने दोबारा सेहबारा यही सवाल किया वह यही जवाब देते रहे। मैंने बार बार सवाल किया तो वह कहने लगे कि अगर मैं वजह बता दूं तो तुम उसको पोशीदा रखोगे या लोगों पर ज़ाहिर कर दोगे? मैं ने कहा तुम शौक़ से कहो (यानी मैं मख़्फ़ी रखूंगा) कहने लगे कि तीस बरस से मेरा दिल सकबाज (एक क़िस्म का खाना, जिसमें सिरका और गोश्त और मेवाजात पड़ते हैं) खाने को चाहता था और मैं मुजाहदे के तौर पर उसको रोकता था, रात मुझ पर नींद का बहुत ग़लबा हुआ। मैंने ख़्वाब में एक जवान को देखा कि वह निहायत हसीन शख़्स है और उसके हाथ में एक सब्ज़ प्याला है, जिससे भाप उठ रही है और सकबाज की ख़ुश्बू उसमें से आ रही हैं मैंने अपने दिल को संभाला, उसने मेरे पास आकर कहा, इब्राहीम लो, इसको खा लो। मैंने कहा, जिस चीज़ को अल्लाह के वास्ते छोड़ दिया, उसको अब नहीं खाना है। वह कहने लगा, अगरचे अल्लाह जल्ल शानुहू ख़ुद खिलायें? मुझसे रोने के सिवा इसका कोई जवाब न बन पड़ा। वह कहने लगा अल्लाह तुझ पर रहम करे, इसको खाले। मैंने कहा, हमें यह हुक्म

है कि जब तक हमें पूरा हाल किसी चीज़ का मालूम न हो जाये (क्या चीज़ है, कहां से आयी है?) उस वक़्त तक अपने बरतन में न डालें, वह कहने लगे, अल्लाह तुम्हारी हिफ़ाज़त करे, इसको खा लो, यह मुझे (जन्नत के नाज़िम) रिज़वान ने दी है और यह कहा है कि ऐ ख़ाज़िर, यह इब्राहीम को खिला दो, उसने बहुत सब्र कर लिया और ख़्वाहिशात को बहुत रोक लिया। फिर उन्होंने कहा कि इब्राहीम, अल्लाह जल्ल शानुहू खिलाते हैं। और तुम इंकार करते हो। मैंने फ़रिश्तों से सुना है कि जो शख़्स बे तलब मिलने पर इंकार करता है, उसको तलब पर भी नहीं मिलता। मैंने कहा, अगर यह बात है तो मैं आपके सामने हाज़िर हूं। मैंने तो अपने अहद को अब तक नहीं तोड़ा। इतने में एक जवान और आया और उसने हज़रत ख़ाज़िर को कुछ देकर यह कहा कि इसका लुक़्मा बना कर इब्राहीम के मुंह में दे दो। वह मुझे अपने हाथ से खिलाते रहे और जब मेरी आंख खुली तो उसकी शीरीनी मेरे मुंह में थी और जाफ़रान का रंग मेरे होठों पर था, मैं ज़म ज़म के कुएं पर गया और मुंह को धोया, मगर न मुंह में से मज़ा जाता है, न होठों पर से रंग जाता है मैंने भी देखा तो वाक़ई उसका असर मौजूद था। मैंने अल्लाह जल्ल शानुहू से यह दुआ की, ऐ वह पाक ज़ात, जो ऐसे लोगों को खिलाती है,. जो अपनी ख़्वाहिशात को रोकते हों, जबकि वे अपनी रोक को सही कर लें। ऐ वह पाक ज़ात जिसने अपने औलिया के दिलों के लिये सही रहना लाज़िम कर दिया, ऐ वह पाक ज़ात जिसने उनके दिलों को अपनी मुहब्बत की शराब से सैराब किया, तू अपने लुत्फ़ से सुफ़ियान को भी ये चीज़ें अता फ़रमा। फिर मैंने इब्राहीम बिन अदहम रह० का हाथ पकड़ कर उसको आसमान की तरफ़ उठाया और अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह, इस हाथ की बरकत से और इस हाथ वाले की बरकत से और इसके उस मर्तबे के तुफ़ैल जो उसका तेरे नज़दीक है और तेरे इस जूद व अता के तुफ़ैल से जो उसने तुझ से पाया, तू अपने इस बंदे सुफ़ियान पर भी बख़्शिश फ़रमा, जो तेरी अता का इंतिहाई मुहताज है और तेरे एहसान का निहायत ज़रूरतमंद है या अर्हमर्राहिमीन, महज़ अपनी रहमत से, अगरचे ऐ रब्बुल आलमीन, यह सुफ़ियान इसका मुस्तहिक़ बिल्कुल नहीं है। *(रौज़)*

33. हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रह० ही का यह क़िस्सा है कि जब यह हज को तशरीफ़ ले गये, तो यह तवाफ़ कर रहे थे कि इनकी निगाह एक हसीन नौ जवान पर पड़ी, जिसके हुस्न व जमाल से लोग ताज्जुब कर रहे थे। हज़रत इब्राहीम रह० ने उसको बहुत ग़ौर से देखा और रोने लगे, उनके बाज़ साथी

(बदगुमानी से) कहने लगे:-

إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ○

"इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन॰"

शैख़ पर तो ग़फ़लत तारी हो गयी (कि एक हसीन लड़के को देख कर घूरने लगे) फिर उस मोतरिज़ ने शैख़ से अर्ज़ किया, ऐ मेरे सरदार, यह देखना कैसा, जिसके साथ रोना भी है (जिससे यह ख़्याल होता है कि इस लड़के के इश्क़ ने पकड़ लिया) शैख़ ने फ़रमाया कि मैंने अल्लाह से एक अहद किया है, जिसके तोड़ने पर क़ुदरत नहीं, वरना इस लड़के को अपने पास बुलाता और इससे मिलता, इसलिये कि यह मेरा बेटा है और मेरी आंख की ठंडक है। मैं इसको बचपन में बहुत कम उम्र का छोड़कर घर से निकल गया था, अब यह जवान हो गया तुम देख ही रहे हो, मगर मुझे अल्लाह से शर्म आती है कि जिस चीज़ को उसके लिये छोड़ आया था, अब फिर उधर लौटूं।

इसके बाद हज़रत शैख़ इब्राहीम रह॰ ने तीन शेअ्र पढ़े जिनका तर्जुमा यह है कि जबसे मैंने उस पाक ज़ात को पहचाना है, उस वक़्त से अब तक जिधर भी मैंने नज़र की, अपने महबूब को उधर ही पाया। मुझे अपनी निगाह पर यह ग़ैरत है कि मैं उसके सिवा किसी को न देखूं। ऐ मेरे ज़ख़ीरे की इंतिहा। ऐ मेरे सवाल की ग़ायत, ऐ मेरे असासे की पूंजी, काश तेरी मुहब्बत हश्र तक मेरे दिल में रहे। फिर शैख़ ने मुझसे फ़रमाया कि तुम उस लड़के के पास जाओ और उसको सलाम करो, शायद इसी से मुझे तसल्ली हो। मैं उस लड़के के पास गया और मैंने उससे कहा, हक़ तआला शानुहू तुम्हारे वालिद को बरकत अता फ़रमाये। वह कहने लगा, चचा जान मेरे वालिद कहां? वह तो मेरे बचपन ही में अल्लाह के रास्ते में लग गये थे। काश मैं एक मर्तबा उनकी ज़ियारत कर लूं और फिर उसी वक़्त मेरी जान निकल जाये। हाय! अफ़सोस, यह कह कर वह रोने लगा और रोने की कसरत से उसका दम घुटने लगा। फिर उसने कहा कि वल्लाह, मेरी यह तमन्ना है कि मैं एक मर्तबा उनकी ज़ियारत कर लूं, फिर उसी वक़्त मर जाऊं। इसके बाद चंद शेअ्र ज़ौक़ व शौक़ के पढ़े। मैं हज़रत इब्राहीम के पास लौट कर आया, तो वह सज्दे में पड़े हुए थे और आंसुओं से सज्दे की जगह तर थी और अल्लाह के सामने आजिज़ी कर रहे थे। इसके बाद हज़रत इब्राहीम रह॰ ने दो शेअ्र पढ़े, जिनका तर्जुमा यह है कि मैंने सारी दुनिया को तेरे इश्क़ में छोड़ा और अपने अयाल को यतीम बनाया ताकि तुझे देख लूं। अगर तू इश्क़ में मेरी हाजत रवाई न करेगा तो

यह दिल तेरे सिवा किसी जगह भी सुकून नहीं पायेगा। मैंने हज़रत इब्राहीम रह० से कहा, आप उस लड़के के लिये दुआ करें। हज़रत इब्राहीम रह० ने कहा कि हक़ तआला शानुहू उसको गुनाहों से महफ़ूज़ फ़रमाये और अपनी मरज़ियात पर अमल में उसकी इआनत फ़रमाये। (रौज़)

34. अबू बक्र दक़्क़ाक रह० कहते हैं कि मैंने बीस साल मक्का मुकर्रमा में क़ियाम किया। मेरा जी दूध को चाहता ही रहा (मगर जानबूझ कर नहीं पिया या मयस्सर न हुआ) जब मुझे ख़्वाहिश बहुत बढ़ी तो मैं अस्क़लान गया और वहां अरब के एक क़बीले का मेहमान बना। वहां मेरी निगाह एक हसीन लड़की पर पड़ गयी। इस क़दर हसीन थी कि उसने मेरे दिल को पकड़ लिया। वह लड़की मुझसे कहने लगी कि अगर तू सच्चा होता तो दूध की ख़्वाहिश तेरे दिल से निकल जाती। मैं यह सुन कर मक्का मुकर्रमा लौट आया और बैतुल्लाह का तवाफ़ किया। मैंने ख़्वाब में हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की ज़ियारत की। मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी, अल्लाह जल्ल शानुहू आपकी आंख को ठंडा रखे। आप ज़ुलैख़ा से ख़ूब बचे, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया, बल्कि ऐ मुबारक, अल्लाह जल्ल शानुहू तेरी आंख को ठंडा रखे, अस्क़लान की लड़की से बच गये, फिर हज़रत यूसुफ़ अला नबिय्यिना व अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने यह आयत तिलावत फ़रमायी :-

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ○

"और जो शख़्स अपने रब के सामने खड़े होने से डरता रहे, उसके लिये दो जन्नतें हैं।"

एक बुज़ुर्ग का इर्शाद है कि आदमी नफ़्स के फंदे से नफ़्स के ज़रिये से नहीं निकल सकता, अलबत्ता नफ़्स के फंदे से अल्लाह तआला के ज़रिये से निकल सकता है। इन बुज़ुर्ग का यह भी इर्शाद है कि अल्लाह के साथ राहत पकड़ो। अल्लाह तआला से राहत न पकड़ो, जिस शख़्स ने अल्लाह जल्ल शानुहू के साथ राहत पकड़ी, उसने निजात पाई और जिसने अल्लाह से अलाहिदा होकर राहत पकड़ी वह हलाक हो गया। अल्लाह के साथ राहत पकड़ना दिल का उसके ज़िक्र के साथ मुअत्तर होना और बस जाना है और अल्लाह से राहत पकड़ना दिल का ग़ाफ़िल रहना है। (रौज़)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जब आदमी

की नज़र किसी औरत के हुस्न पर पड़ जाये और वह फ़ौरन अपनी नज़र को उससे हटा ले तो हक़ तआला शानुहू उसको किसी ऐसी इबादत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाते हैं, जिसकी लज़्ज़त उसको महसूस होती है। *(मिश्कात)*

35. हज़रत शैख़ अबू तुराब बख़्शी रह० फ़रमाते हैं कि जो शख़्स किसी ऐसे शख़्स को जो अल्लाह जल्ल शानुहू के साथ मशग़ूल हो रहा है, किसी दूसरे शुग़्ल में लगावे, उसी वक़्त हक़ तआला श्हानुहू का ग़ुस्सा फ़ौरन उसकी पकड़ करता है, हक़ तआला शानुहू हमें अपने ग़ुस्से और अज़ाब से पनाह दे। *(रौज़)*

यह बहुत अहम चीज़ है। बहुत से लोग अल्लाह जल्ल शानुहू के साथ की मशग़ूली की नाक़द्री करते हुए ऐसे हज़रात को जो ज़िक्र व शुग़्ल में मशग़ूल होते हैं, आवाज़ें देने लगते हैं, इसका बहुत लिहाज़ रखना चाहिय, बिलख़ुसूस अह्लुल्लाह (अल्लाह वालों) के औक़ात की ख़ुसूसी रिआयत रखना चाहिये।

36. एक बुज़ुर्ग का क़िस्सा नक़ल किया है कि उन्होंने तंहा हज किया, अज़ीज़ व अक़ारिब कोई साथ न था और यह अहद किया कि किसी से सवाल न करूंगा। चलते चलते रास्ते में एक ऐसा वक़्त आया कि एक ज़माने तक कहीं से कुछ न मिला, हत्ता कि ज़ोअ्फ़ की वजह से चलने से आजिज़ हो गये और दिल में यह ख़्याल आया कि अब इज़्तिरार का दर्जा पहुँच गया, अपने आपको हलाकत में डालने की अल्लाह जल्ल शानुहू ने मुमानअत फ़रमायी है इसलिये अब मुझे सवाल कर लेना चाहिये। लेकिन फिर दिल में एक खटक पैदा हुई और आख़िर यह तै कर लिया कि अल्लाह तआला से जो अहद कर लिया, वह नहीं तोडूँगा, चाहे मर जाऊँ। चूंकि ज़ोअ्फ़ की वजह से चलने से आजिज़ हो गये थे, इसलिये रह गये और सारा क़ाफ़िला रवाना हो गया और यह मौत के इंतिज़ार में क़िबला रू हो कर एक जगह लेट गये। इतने में एक सवार उनके क़रीब आया, उसके पास एक बरतन में पानी था, वह उसने इनको पिलाया और जो हाजत थीं वह सब पूरी की। और फिर पूछा कि तुम क़ाफ़िला के साथ मिलना चाहते हो। उन बुज़ुर्ग ने फ़रमाया कि क़ाफ़िला अब कहां, न मालूम कितनी दूर निकल चुका? उस सवार ने कहा कि खड़े हो और मेरे साथ चलो, यह चंद ही क़दम उसके साथ चले थे कि उसने कहा कि तुम यहां ठहर जाओ, क़ाफ़िला तुमसे आ मिलेगा। यह वहां ठहर गये तो क़ाफ़िला पीछे से आता हुआ उनको मिला। *(रौज़)*

37. अबुल हसन सिराज रह० कहते हैं कि मैं एक मर्तबा हज को गया,

मैं तवाफ़ कर रहा था। मेरी निगाह एक ऐसी हसीन औरत पर पड़ी, जिसके चेहरे का हुस्न चमक रहा था। मैंने कहा वल्लाह, ऐसी हसीन औरत मैंने आज तक नहीं देखी। यह उसके चेहरे की सारी रौनक़ इस वजह से है कि इसको कभी कोई रंज व ग़म नहीं पहुँचा। उसने मेरी यह बात सुन ली। कहने लगी, तुमने यह क्या कहा, वल्लाह, मैं ग़मों में जकड़ी हुई हूँ और मेरा दिल फ़िक्रों से और आफ़तों से ज़ख़्मी है और कोई भी मेरे ग़मों में मेरा शरीक नहीं रहा। मैंने पूछा क्या हुआ? कहने लगी कि मेरे ख़ाविंद ने क़ुर्बानी की एक बकरी ज़िब्ह की। मेरे दो छोटे छोटे बच्चे खेल रहे थे और एक बच्चा दूध पीता मेरी गोद में था। मैं गोश्त पकाने के लिये उठी तो उन दोनों लड़कों में से एक ने दूसरे से कहा कि मैं तुझे बताऊँ कि अब्बा ने बकरी किस तरह ज़िब्ह की। उसने कहा बता, तो उसने छोटे भाई को लिटा कर बकरी की तरह ज़िब्ह कर दिया। फिर वह उसको ज़िब्ह करके डर के मारे भाग गया और पहाड़ पर चढ़ गया वहां एक भेड़िये ने उसको खा लिया। बाप उसकी तालश में निकला और ढूंढते ढूंढते प्यास की शिद्दत से मर गया। मैं दूध पीते बच्चे को बिठा कर दरवाज़े तक गयी कि शायद ख़ाविंद का कुछ पता किसी से मिले तो वह बच्चा घसिटता हुआ हांडी के पास पहुँच गया जो चूल्हे पर रखी हुई जोश से पक रही थी। उस को जो उसने हिलाया, वह पकती पकती उस पर गिर गयी जिससे उस बच्चे का सारे बदन का गोश्त जल कर हड्डियों से अलग हो गया, मेरी एक बड़ी लड़की जो अपने ख़ाविंद के घर थी उसको जब इस सारे क़िस्से की ख़बर पहुँची, तो वह ख़बर सुनकर ज़मीन पर गिर गयी, इसी में उसकी भी मौत मुक़द्दर थी, वह भी मर गयी। मुक़द्दर ने उन सबके दर्मियान से मुझे अकेली को छोड़ दिया। मैंने कहा, इन सब मुसीबतों पर तुझे किस तरह सब्र आया। वह कहने लगी जो शख़्स सब्र और बेसब्री में अलग अलग ग़ौर करेगा, वह उनके दर्मियान बहुत बौने बओद पायेगा, सब्र का अंजाम महमूद है और बे सब्री पर कोई अज्र नहीं मिलता। फिर उसने तीन शेअ्र पढ़े और चल दी, जिनका तर्जुमा यह है कि मैंने सब्र किया, इसलिये कि सब्र बेहतरीन एतिमाद की चीज़ है और अगर बे सब्री से मुझे कोई फ़ायदा पहुँच सकता तो करती। मैंने ऐसी मुसीबतों पर सब्र किया कि अगर वे मसाइब सख़्त पहाड़ों पर पड़तीं तो वे पहाड़ भी टुकड़े टुकड़े हो जाते। मैंने अपने आंसुओं पर क़ुदरत पायी, पस उनको निकलने से रोक दिया, अब वे आंसू अंदर ही अंदर मेरे दिल पर गिर रहे हैं। *(रौज़)*

38. हज़रत शैख़ अली बिन मोवफ़्फ़क़ रह० फ़रमाते हैं कि मैं एक साल

सवारी पर हज को जा रहा था। रास्ते में पैदल हज को जाने वालों का क़ाफ़िला मिला। मुझे वे लोग पैदल चलते हुए बहुत अच्छे लगे, मैं भी सवारी पर से उतर कर उनके साथ पैदल चलने लगा और अपनी सवारी पर एक और शख़्स को अपनी जगह बिठा दिया और हम मारूफ़ रास्ते से हट कर दूसरी तरफ़ को चल दिये। चलते चलते एक जगह जाकर हम सोने लेट गये तो मैंने ख़्वाब में देखा कि चंद लड़कियां आयीं, जिनके हाथ में सोने के तश्त और चांदी के आफ़ताब हैं। और वे पैदल चलने वालों के पांव धो रही हैं। और मेरे सिवा सबके पांव धोये। उनमें से एक ने कहा कि यह भी तो उन्हीं में है, बाक़ी सब कहने लगीं नहीं इसके पास सवारी मौजूद है। उस लड़की ने कहा, नहीं यह भी इनमें शामिल है, इसलिये कि इनके साथ चलने को इसने पसंद किया है, तो उन्होंने मेरे भी पांव धोए, इसकी वजह से पैदल चलने का जिस क़दर तकान और तअब मुझ पर था, सारा बिल्कुल जाता रहा। (रौज़)

39. हज़रत इब्राहीम ख़वास रह० फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा जंगल में जा रहा था, मुझे बड़ी मशक़्क़त उठानी पड़ी और बड़ी मुसीबत पेश आयी, जिसको मैंने बर्दाश्त किया और खंदा पेशानी से उस पर सब्र किया। जब मैं मक्का मुकर्रमा में दाख़िल हुआ तो मुझमें इस कारनामे पर एक उज्ब सा पैदा हुआ। तवाफ़ ही की हालत में पीछे से एक बुढ़िया ने आवाज़ दी कि इब्राहीम, उस जंगल में यह बंदी भी तेरे ही साथी थी, मगर मैंने तुझसे इसलिये कोई बात नहीं की थी कि अल्लाह जल्ल शानुहू से तेरा ध्यान हट कर दूसरी तरफ़ लगेगा। यह वस्वसा जो तुझे इस वक़्त आ गया, इसको अपने दिल से निकाल दे। (रौज़)

40. एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत समनून रह० को देखा कि तवाफ़ में झूमते हुए (मज़े लेकर) चल रहे हैं। मैंने उनका हाथ पकड़ लिया और कहा, तुम्हें अल्लाह जल्ल शानुहू के सामने खड़े होने की क़सम ! मुझे यह बताओ कि तुम किस तरीक़े से अल्लाह तक पहुँचे, जब उन्होंने अल्लाह के सामने खड़े होने का लफ़्ज़ सुना तो बेहोश होकर गिर पड़े।

जब होश आया तो दो शेअ्र पढ़े, जिनका तर्जुमा यह है कि बहुत से मुसीबत ज़दा ऐसे हैं कि बीमारियां उनके बदन में घुसी हुई हैं और उनका दिल सब दिलों से ज़्यादा बीमार है। अगर वे ख़ौफ़ और हिरास से मर जाएं तो बर महल है, इसलिये कि यौमुल हिसाब में अल्लाह के सामने खड़ा होना बहुत सख़्त चीज़ है।

इसके बाद हज़रत समनून रह० ने फ़रमाया कि मैंने पांच बातें लाज़िम पकड़ ली थीं और अपने दिल पर उनको पक्का कर लिया है :-

1. अव्वल यह कि जो चीज़ मुझ में ज़िंदा थी यानी ख़्वाहिशे नफ़्स उसको मैंने मार दिया और जो चीज़ मुर्दा थी यानी मेरा दिल उसको ज़िंदा कर लिया।

2. दूसरी बात यह है कि जो चीज़ मुझ से ग़ायब थी, यानी आख़िरत उसको मैंने हर वक़्त अपनी आंखों के सामने कर लिया, और जो चीज़ मेरे सामने थी, यानी दुन्यवी अग़राज़, उनको मैंने अपने सामने से हटा दिया।

3. तीसरी बात यह है कि जो चीज़ मुझसे फ़ना हो रही थी, यानी तक़्वा उसको मैंने बाक़ी रखा, और जो मेरे पास जमा थी यानी ख़्वाहिशात, उनको फ़ना कर दिया।

4. चौथी चीज़ यह है कि जिससे तुम सबको वहशत होती है, उससे मैंने उंस पैदा कर लिया, और जिससे तुम सब को उंस है, उससे मैं भागने लगा, इसके बाद वह चंद शेअ्र पढ़ते हुए चल दिये, जिनका तर्जुमा यह है कि मेरी रूह पूरी की पूरी आपकी तरफ़ मुतवज्जह है। अगर इसमें वह हलाक हो जाये, तब भी मैं आपसे उसको जुदा नहीं कर सकता। मेरी रूह आपसे ख़ौफ़ में और अफ़सोस में रोती रहती है हत्ताकि कहा जाता है कि वह रोने से टुकड़े-टुकड़े हो जायेगी, पस एक करम की नज़र उस पर कर दीजिये, अगरचे दुनियावी मुनाफ़े आपने बहुत से अता फ़रमाये और उनसे हमेशा नफ़ा होता रहा। *(रौज़)*

शुरू में पांच बातें ज़िक्र की थीं, तफ़्सील में चार ही आयी हैं, लेकिन हक़ीक़त यह है कि इन सब की रूह भी एक ही चीज़ है, ख़्वाहिशाते नफ़्स को क़ाबू में रखना, इसीलिये शैख़ फ़रमाते हैं :-

बिअिल्लाहि अज़ दो क़दम राहे ख़ुदा बेश नेस्त,
यक क़दम बर नफ़्से ख़ुद नह् दीगरे बर कूए दोस्त।।

"ख़ुदा की क़सम, अल्लाह जल्ल शानुहू के यहां का रास्ता दो क़दम से ज़्यादा नहीं, पहला क़दम अपने नफ़्स पर रख दे, दूसरा महबूब की गली में रखा हुआ है।"

41. शैख़ अबू याक़ूब बसरी रह० फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा हरम

शरीफ़ में दस दिन तक भूखा रहा। मुझे बहुत ही ज़ोअ्फ़ हो गया। मेरे दिल ने मुझे मजबूर किया कि बाहर चलूं, शायद कुछ मिल जाये, जिससे भूख में कुछ कमी हो। मैं बाहर निकला तो एक शलग़म सड़ा हुआ पड़ा हुआ मिला। मैंने उसको उठा लिया, मगर दिल में उससे एक वहशत सी हुई, गोया कोई यह कह रहा है कि दस दिन तक भूखा रहा और आख़िर में मिला तो यह सड़ा हुआ शलग़म, मैंने उसको फेंक दिया और फिर मस्जिदे हराम में आकर बैठ गया। इतने में एक शख़्स मेरे सामने आकर बैठा, एक जुज़दान मेरे सामने रखा और कहा, इसमें एक थैली है, जिसमें पांच सौ दीनार (अशर्फ़ियां) हैं। यह आप की नज़्र हैं। मैंने उससे पूछा कि मेरी क्या ख़ुसूसियत है, जिसकी वजह से ये मुझे दे रहे हो उसने कहा कि हम लोग दस दिन से समुन्दर में चक्कर खा रहे थे। हमारी कश्ती डूबने लगी थी, तो हममें से हर एक शख़्स ने अलग अलग कोई मन्नत मानी थी, मैंने यह नज़्र की थी कि अगर मैं ज़िंदा सलामत पहुँच जाऊँ तो यह थैली उस शख़्स को दूँगा, जिस पर मक्का में रहने वालों में सब से पहले मेरी निगाह पड़े। यहां पहुँच कर सबसे पहले आप पर नज़र पड़ी। मैंने कहा इसको खोलो, उसने खोला तो सफ़ेद मिस्री और एक कअ्क (एक ख़ास क़िस्म की रोटी होती है) और छिले हुए बादाम और शकर पारे थे मैंने हर एक में से एक एक मुट्ठी भर ली और मैंने कहा कि यह बाक़ी ले जाओ। मेरी तरफ़ से अपने बच्चों को तक़सीम कर देना। तुम्हारी नज़्र मैंने क़ुबुल कर ली, फिर मैंने अपने दिल में महा कि तेरा रिज़्क़ दस दिन से तेरे पास खिंचा हुआ आ रहा है और तू इसको यों ढूँढता फिरता है। *(रौज़)*

42. शैख़ बनान रह० फ़रमाते हैं कि मैं मिस्र से हज को जा रहा था। मेरा तोशा मेरे साथ था, रास्ते में एक औरत मिली, कहने लगी, बनान, तुम भी हम्माल (मज़दूर) ही निकले, तोशा लादे लिये जा रहे हो, तुम्हें यह वहम है कि वह तुम्हें रोज़ी नहीं देगा। मैंने उसकी बात सुन कर अपना तोशा फेंक दिया। तीन दिन तक मुझे कुछ खाने को न मिला, रास्ते में चलते चलते मुझे एक पाज़ेब (पांव का ज़ेवर) पड़ा हुआ मिला। मैंने यह सोच कर उठा लिया कि इसका मालिक मिल जायेगा, तो उसको दूँगा। वह शायद इस पर मुझे कुछ दे दे, तो वह औरत फिर सामने आयी, कहने लगी, तुम तो दुकानदार ही निकले कि वह पाज़ेब के बदले में शायद कुछ दे दे। इसके बाद उस औरत ने मेरी तरफ़ कुछ दिरम फेंक दिये कि ले इन्हें ख़र्च करता रहियो। मैंने उनको ख़र्च करना शुरू किया और वापसी में मिस्र तक उन्होंने मुझे काम दिया, एक शायर ने कहा है :-

كم من قوى قوى فى تقلبه مهذب الرأى عنه الرزق منحرف

"कितने ही क़वी आदमी हैं जो अपने कारोबार में भी क़वी है और राय भी बहुत बेहतर रखते हैं, लेकिन रोज़ी उनसे हटी हुई है।"

وكم من ضعيف ضعيف فى تقلبه كأنه من خليج البحر يغترف

"और कितने ज़ईफ़ आदमी हैं, जो अपने कारोबार में भी ज़ईफ़ है, लेकिन रोज़ी ऐसी कमाते हैं, गोया समुन्दर से पानी भर रहे हैं।"

هذا دليل على ان الاله له فى الخلق سر خفى ليس ينكشف

"यह दलील है इस पर कि अल्लाह तआला की मख़्लूक़ के बारे में मख़्फ़ी भेद हैं, जो हर किसी पर ज़ाहिर नहीं होते"। (रौज़)

43. शैख़ अबू बक्र कत्तानी रह॰ फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हज के ज़माने में मक्का मुकर्रमा में मशाइख़ के दर्मियान इश्क़े इलाही के मस्अले में बहस हुई और बड़े बड़े मशाइख़ ने इसमें कलाम किया। हज़रत जुनैद बग़दादी रह॰ भी मज्मे में तशरीफ़ रखते थे और वह इस मज्लिस के छोटों में थे। मशाइख़ ने उनसे फ़रमाया कि इराक़ी तुम भी कुछ कहो, हज़रत शैख़ जुनैद रह॰ ने सर झुकाया और आंसू आंखों से बहने लगे और फ़रमाया कि आशिक़ वह बंदा है जो अपने नफ़्स से जाता रहा हो, अपने रब के ज़िक्र में हर वक़्त लगा रहे, उस के हुक़ूक़ की अदाएगी में मुस्तइद रहे, अपने दिल से हर वक़्त उसको देखता रहे, मौला की हैबत के अनवार ने उसके दिल को जला रखा हो और उसकी मुहब्बत की शराबे ख़ालिस पी रखी हो, और जब्बार सुब्हानहू अपनी ग़ैबत के पर्दों से निकल कर उस पर ज़ाहिर हो गया हो, पस वह आशिक़ अगर कलाम करे तो अल्लाह ही के साथ हो, कोई हर्फ़ ज़बान से निकाले तो अल्लाह की तरफ़ से हो, कोई हरकत करे तो उसी के हुक्म से, और अगर साकिन हो, तो उसी के साथ सुकून हो। पस वह हर वक़्त अल्लाह ही से वाबस्ता है, अल्लाह ही के वास्ते है, अल्लाह ही के साथ है। इस तक़्रीर पर सब मशाइख़ रोने लगे और फ़रमाने लगे कि इससे बेहतर ताबीर नहीं हो सकती, अल्लाह तेरी टूटी को बनाये ऐ आरिफ़ों के ताज। (रौज़)

44. हज़रत ज़ह्हाक़ बिन मुज़ाहिम रह॰ फ़रमाते हैं कि मैं जुमा की शब में कूफ़ा में जामा मस्जिद के इरादे से निकला। चांदनी रात थी। मस्जिद के सहन में एक जवान को मैंने देखा कि सज्दे में पड़ा हुआ बे तहाशा रो रहा है मैंने ख़्याल किया कि यह कोई वली है। मैं उसके क़रीब गया, ताकि उसकी बात सुनू, तो वह

यह कह रहा था :-

علیک یا ذاالجلال معتمدی طوبیٰ لمن کنت انت معناہ

"ऐ इज़्ज़त वाले, तेरे ही ऊपर मुझको भरोसा है। खुश्हाल है वह जिसका तू मक़्सूद है।"

طوبیٰ لمن بات خائفا وجلا یشکوالی ذی الجلال بلواہ

"खुशहाल है वह जो सारी रात ख़ौफ़ और डर में गुज़ार दे और इज़्ज़त वाले ही से अपनी मुसीबत का इज़्हार करे।"

ومابہ علۃ ولا سقم اکثر من حبہ لمولاہ

"और उसको इससे बढ़ कर कोई इल्लत और कोई मरज़ न हो कि उसको अपने मौला से इश्क़ है।"

اذا خلا فی الظلام مبتھلا اجابہ اللہ ثم لبّاہ

"जब वह अंधेरी रात में तने तंहा आजिज़ी करने वाला हो तो अल्लाह तआला की तरफ़ से उसकी पुकार का जवाब हो और लब्बैक हो"

वह शख़्स पहला मिसरा "अलै-क या ज़ुल जलालि मोअ्तमदी" बार बार पढ़ रहा था और रो रहा था। उसके बे इख़्तियार रोने से मुझे भी उस पर तरस खा कर रोना आ गया। फिर उसने ऐसे कलाम किया, जिससे मैं यह समझा कि उसको कोई ख़ास नूर नज़र आया और उसने किसी को ये दो शेअ्र पढ़ते हुए सुना, जिनका तर्जुमा यह है कि "मेरे बंदे, मैं मौजूद हूँ, तू मेरी हिफ़ाज़त में है और जो कुछ तू कह रहा है, हम उसको सुन रहे हैं। तेरी आवाज़ के मेरे फ़रिश्ते मुश्ताक़ हैं और तेरे सारे गुनाह हमने माफ़ कर दिये।"

हज़रत ज़ह्हाक़ रह० कहते हैं कि फिर मैंने उसको सलाम किया उसने जवाब दिया, मैंने कहा, हक़ तआला शानुहू तुम्हारी इस रात में बरकत अता फ़रमाये और तुममें बरकत फ़रमाये और तुम पर रहम करे, तुम कौन हो? कहने लगे, मैं राशिद बिन सुलैमान हूँ, मैंने नाम से उन को पहचान लिया, क्योंकि मैं पहले से उनके हालात सुनता रहता था और उनसे मिलने का मुश्ताक़ था। मगर इस पर क़ादिर न हो सका था। आज अल्लाह जल्ल शानुहू ने ऐसा सहल कर दिया। मैंने ख़िदमत में रहने की दर्ख़्वास्त की, तो फ़रमाया कि यह बहुत दुश्वार है। भला जो शख़्स रब्बुल आलमीन से मुनाजात की लज़्ज़त पाता हो, वह मख़्लूक़

से कब उंस रख सकता है, कहने लगे, वल्लाह, अगर हमारे ज़माने के आदमियों पर पहले मशाइख़ में से किसी का गुज़र हो तो वह कह देगा कि ये लोग तो आख़िरत के दिन पर ईमान भी नहीं रखते। यह कह कर राशिद रह० मेरी नज़र से ग़ायब हो गये, अल्लाह जाने वह आसमान पर चढ़ गये या ज़मीन में उतर गये। मुझे उनकी जुदाई से रंज हुआ और मैंने अल्लाह तआला से दुआ की कि मरने से पहले पहले उनसे फिर मुलाक़ात नसीब हो जाये। इत्तिफ़ाक़ से मैं एक मर्तबा हज को गया। तो काबे शरीफ़ की दीवार के साए तले उनको बैठे देखा और एक मज्मा उनके पास था, जो सूरः अन्आम उनको सुना रहा था। जब उन्होंने मुझे देखा तो तबस्सुम फ़रमाया कि यह उलमा की मेहरबानी है और वह औलिया की तवाज़ोअ् थी। फिर उठे और मुझसे मुसाफ़ा और मुआनक़ा किया और फ़रमाया कि तुमने अल्लाह से दुआ की कि मरने से पहले उनसे मुलाक़ात हो जाये। मैं ने अर्ज़ किया, जी हां दुआ की थी, फ़रमाया "अल हम्दु लिल्लाहि अला ज़ालि क" मैंने अर्ज़ किया, अल्लाह आप पर रहम करे। उस रात को जो कुछ आपने देखा था और सुना था, वह मुझे बता दीजिये। उन्होंने ज़ोर से एक ऐसी चीख़ मारी जिससे मैं यह समझा कि उनके दिल का परदा फट गया और बेहोश होकर गिर गये और जो मज्मा उनके पास था और पढ़ रहा था, वह चला गया। जब उनको होश आया तो फ़रमाया, मेरे भाई क्या तुझे यह मालूम नहीं कि अल्लाह के चाहने वालों के दिलों में किस क़दर ख़ौफ़ और हैबत उसके असरार के खोलने में होती है। मैंने पूछा, अच्छा ये कौन लोग थे जो आपके पास पढ़ रहे थे? फ़रमाया कि ये जिन्नात की जमाअत थी। क़दीम ताल्लुक़ात की बिना पर मैं इनका एहतिराम करता हूं। ये हर साल मेरे साथ हज किया करते हैं और मुझ को क़ुरआन शरीफ़ सुनाया करते हैं। फिर उन्होंने मुझको रूख़्सत किया और फ़रमाया,हक़ तआला शानुहू जन्नत में तुमको मिलावे, जहां न जुदाई होगी, न मशक़्क़त, न ग़म होगा, न कुलफ़त। यह कह कर फिर मुझ से ग़ायब हो गये। इसके बाद मैंने उनको न देखा। *(रौज़)*

45. कहते हैं, हरम शरीफ़ के आबिदों में एक आबिद थे, जो हर वक़्त खुदा तआला में मश्ग़ूल रहते, हमेशा रोज़ा रखते और शाम को रोज़ाना एक आदमी उनको दो रोटियां दे जाता। उनसे रोज़ा इफ़्तार कर लेते। एक दिन उनके दिल में यह ख़्याल आया कि तू अपनी रोज़ी में इस आदमी पर इत्मीनान रखता है और सारी मख़्लूक़ के राज़िक़ को भुला रखा है, यह बड़ी ग़फ़लत की बात है, जब शाम को हस्बे मामूल वह रोटी देने वाला आया तो उसकी रोटी वापस कर दी।

वह तो चला गया, लेकिन उस आबिद पर तीन दिन ऐसे गुज़रे कि कुछ खाने को न मिला। हक़ तआला शानुहू की बारगाह में इल्तिजा की तो रात को ख़्वाब में देखा कि हक़ तआला शानुहू की बारगाह में खड़ा हूँ। और हक़ तआला शानुहू फ़रमाते हैं कि मेरे बंदे तूने वे रोटियां, जो मैंने अपने एक बंदे के हाथ भेजी थीं, क्यों वापस कर दी थीं? मैंने अर्ज़ किया या अल्लाह, मुझे यह ख़्याल पैदा हुआ कि इसमें तेरे ग़ैर की तरफ़ क़ल्ब को तमानीनत होती है। इर्शाद हुआ, उसको तेरे पास कौन भेजता था? मैंने अर्ज़ किया कि आप ही भेजते थे, इर्शाद हुआ कि तू किससे लेता था? अर्ज़ किया कि आप ही से लेता था, इशार्द हुआ कि उनको ले ले, फिर ऐसा न करना। इसके बाद ख़्वाब ही में देखा कि वह रोटी देने वाला भी हक़ तआला शानुहू की बारगाह में खड़ा है। उससे इर्शाद हुआ कि मेरे बंदे तूने मेरे बंदे की रोटी क्यों बंद कर दी? उसने अर्ज़ किया या अल्लाह तुझे ख़ूब मालूम है। इर्शाद हुआ कि तू वे रोटी किसको देता था? उसने अर्ज़ किया या अल्लाह आपही को देता था। इर्शाद हुआ कि तू वे रोटी हस्बे मामूल जारी कर दे। तुझे उसके बदले में जन्नत मिलेगी। *(रौज़)*

46. अहमद बिन अबिलहवारी रह० कहते हैं कि मैं अबू सुलैमान दारानी रह० के साथ मक्का मुकर्रमा के रास्ते में जा रहा था कि मेरा मश्कीज़ा गिर गया। मैंने अबू सुलैमान रह० से उसकी ख़बर की, उन्होंने कहा "या राद्दज़्ज़ाल्ल-ति उर्दुद् अलैनज़्ज़ाल्ल-ति" (ऐ गुमशुदा चीज़ के लौटाने वाले, हमारी गुमशुदा चीज़ हम पर लौटा दे।) थोड़ी देर भी न गुज़री थी कि एक शख़्स आवाज़ दे रहा था कि यह मश्कीज़ा किस का गिरा है? मैंने देखा तो वह मेरा ही था। मैंने ले लिया तो अबू सुलैमान कहने लगे कि ऐ अहमद क्या तुझे यह गुमान हुआ कि हक़ तआला शानुहू हमें बग़ैर पानी ही के रखेंगे। इसके बाद हम थोड़ी दूर चले। सर्दी बड़ी सख़्त पड़ रही थी और हम पोस्तीनें पहन रहे थे। हमने एक आदमी को देखा कि उस पर दो पुरानी चादरें हैं और उस को पसीना आ रहा है। उसको अबू सुलैमान ने तवाज़ोअ़ की कि हम सर्दी के कपड़ों से कुछ तुम्हारी मदद करें तो उसने यह जवाब दिया कि गर्मी और सर्दी दोनों अल्लाह जल्ल शानुहू की मख़्लूक़ हैं। अगर वह हुक्म करे तो ये मुझ पर मुसल्लत हो सकती हैं और वह इर्शाद फ़रमा दे तो मुझे छोड़ देंगी मैं तो इस जंगल में तीस वर्ष से फिरता रहता हूँ, न सर्दी से कभी मुझे कपकपी हुई, न गर्मी में पसीना आया, वह अपनी मुहब्बत की गर्मी का लिबास मुझे सर्दी के ज़माने में पहना देता है और गर्मी के ज़माने में अपनी मुहब्बत

की ठंडक के ज़ौक़ में लपेट देता है, ऐ दारानी, तुम कपड़ों की तरफ़ इशारा करते हो और ज़ोहद को छोड़ते हो, इसलिये सर्दी तुमको सताती है। ऐ दारानी तुम रोते और चिल्लाते हो और पंखों से राहत पाते हो। अबू सुलैमान दारानी रह० कहते हैं कि मुझे हक़ीक़त में उस शख़्स के सिवा किसी ने नहीं पहचाना, यानी मेरी कमी पर मुतनब्बेह किया। *(रौज़)*

47. एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैंने तवाफ़ में एक अधेड़ उम्र के आदमी को देखा कि इबादत की कसरत ने उसको ज़ईफ़ कर रखा है। उसके हाथ में लकड़ी थी, जिसके सहारे से वह तवाफ़ कर रहा था मैंने उससे उसका शहर पूछा, उसने ख़ुरासान बताया। फिर उसने मुझसे पूछा कि तुम्हारे शहर का रास्ता यहां से कितनी दूर का है? मैंने कहा कि दो तीन माह का। कहने लगा कि फिर भी तुम हर साल हज को नहीं आते? मैंने पूछा कि तुम्हारे शहर से यहां तक का रास्ता कितने दिन का है? कहने लगा कि पांच साल का (उस ज़माने में रास्तों की सहूलत के ये अस्बाब हासिल न थे जो अब हैं।) मैंने कहा कि वल्लाह, यह हक़ तआला शांनुहू का खुला फ़ज़्ल है और उसके साथ सच्ची मुहब्बत का असर है (कि इतना लंबा सफ़र तै कर के हाज़िरी मयस्सर हो जाये) इस पर वह हंसा और दो शेअ्र पढ़े, जिनका तर्जुमा यह है, "जिससे तुझे इश्क़ है, उसकी ज़ियारत कर, अगरचे तेरा घर दूर हो, और उस तक हाज़िरी में बंदिशें और मानेअ् हों, तेरे घर की दूरी उसकी ज़ियारत से मानेअ् न होना चाहिये, इसलिये कि आशिक़ अपने माशूक़ का बड़ी कसरत से ज़ियारत करने वाला होता है"। *(रौज़)*

48. एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैंने मक्का के रास्ते में एक जवान को देखा, वह ऐसी मज़े की चाल चल रहा है, अकड़ता हुआ, जैसा अपने घर में टहल रहा हो। मैंने पूछा कि यह कैसी चाल है? कहने लगा कि यह चाल उन जवानों की है जो रहमान के ख़ादिम हैं और दो शेअ्र पढ़े, जिनका यह तर्जुमा है, "मैं तेरी वजह से फ़ख़्र करता हुआ हैरान व सरगरदां फिरता हूँ, मगर जब तेरा ज़िक्र हो तो ख़ौफ़ की वजह से पिघलने लगता हूँ। अगर मुझमें मरने की क़ुदरत होती तो तेरे इश्तियाक़ में और तेरे अज़ीम मर्तबे के इकराम में मर जाता"। फिर मैंने पूछा कि, तेरी सवारी और तोशा कहां है? तो उसने बुरी तरह मुझे घूरा। फिर कहने लगा, अरे ग़ौर तो कर, अगर कोई ज़ईफ़ ग़ुलाम किसी करीम आक़ा के दौलतकदे पर ज़ियारत की ग़रज़ से हाज़िर हो और अपना खाना पीना बांध कर साथ लाये तो वह आक़ा अपने ग़ुलामों को हुक्म देगा कि इसको यहां से निकाल दो। मेरे आक़ा

जल्ल जलालुहू ने जब मुझे अपने घर बुलाया तो अपने ऊपर तवक्कुल और एतिमाद मुझे अता फ़रमा दिया, यह कह कर वह गायब हो गया। *(रौज़)*

49. एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैं मक्का मुकर्रमा में था। एक फ़क़ीर को देखा कि उसने तवाफ़ किया। इसके बाद अपनी जेब से एक परचा निकाला और उसको पढ़ा, दूसरे और फिर तीसरे दिन भी ऐसा ही किया। इसके बाद एक दिन उसने तवाफ़ किया और ज़ेब से निकाल कर परचा पढ़ा और थोड़ी दूर चला और मर के गिर गया। मैंने उसकी ज़ेब से परचा निकाल कर देखा तो उसमें लिखा था:-

وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا (طور ع ٢)

"तू अपने परवरदिगार के हुक्म का मुन्तज़िर रह, क्योंकि तू हमारी आंखों के सामने है।" *(रौज़)*

असल आयते शरीफ़ा में तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ख़िताब है, जिस का ऊपर से बयान है कि आप के इन ज़ालिम मुख़ालिफ़ीन के लिये अज़ाब तज्वीज़ है। आप अपने रब की इस तज्वीज़ पर सब्र से बैठे रहें (और कुछ फ़िक्र न करें) इसलिये कि आप हमारी हिफ़ाज़त में हैं, मगर आयते शरीफ़ा के उमूम का तर्जुमा वह है जो ऊपर लिखा गया।

50. हज़रत बिश्र हाफ़ी रह० की ख़िदमत में एक मज्मा हाज़िर हुआ और सलाम किया। हज़रत ने दर्याफ़्त फ़रमाया, तुम कौन लोग हो? उन्होंने अर्ज़ किया, हम शाम के रहने वाले हैं, हज के इरादे से जा रहे हैं। आपकी ख़िदमत में सलाम के लिये हाज़िर हुए हैं। फ़रमाया, हक़ तआला शानुहू तुम्हें जज़ा-ए-ख़ैर अता फ़रमाये। उन्होंने अर्ज़ किया, हमारी यह तमन्ना है कि आप भी हमारे साथ तश्रीफ़ ले चलें, ताकि आपकी बरकात से हम मुन्तफ़ेअ् हों। आपने इंकार फ़रमा दिया। उन लोगों ने जब बहुत ज़्यादा इसरार किया तो फ़रमाया कि जब तुम ने यही तै कर रखा है, तो तीन शर्तों के साथ मैं चल सकता हूँ :-

1. अव्वल यह कि हमारे साथ न कुछ सामान हो,

2. दूसरे यह कि हम रास्ते में किसी से सवाल न करें,

3. तीसरे यह कि अगर रास्ते में कोई हमको कुछ दे तो हम क़ुबूल न करें।

लोगों ने अर्ज़ किया कि पहली दो शर्तें कि हम न कुछ साथ रखें और

न किसी से सवाल करें, यह तो हो सकता है, लेकिन बावजूद एहतियात के कोई शख़्स कुछ दे, उसको हम क़ुबूल न करें, इसकी ताक़त हममें नहीं है, फ़रमाने लगे कि इसका मतलब तो यह हुआ कि तुम अपने घर से दूसरों के तोशों पर भरोसा करके निकलते हो। अल्लाह जल्ल शानुहू पर भरोसा नहीं है। मैं इस हालत में तुम्हारे साथ नहीं जा सकता, मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो। और तुम जाओ, अपना काम करो, फिर फ़रमाया कि बेहतरीन फ़ुक़रा तीन क़िस्म के हैं:-

1. अव्वल वह जो खुद सवाल न करे और अगर दिया जाये तो क़ुबूल न करे। यह रूहानी लोगों में से है या यह कहा कि रूहानिय्यीन के साथ हैं।

2. दूसरी क़िस्म वह कि खुद तो सवाल न करे, लेकिन अगर दिया जाए तो क़ुबूल कर ले। इसके लिये हज़रते क़ुदुस में दस्तरख़्वान बिछाये जाते हैं।

3. तीसरी क़िस्म यह कि सवाल करे और बक़द्रे ज़रूरत ले ले। इसकी सदाक़त उसके फ़ेअ्ल का कफ़्फ़ारा हो जाती है। *(रौज़)*

51. हज़रत शैख़ अबू जाफ़र हद्दाद रह० जो हज़रत शैख़ जुनैद बग़दादी रह० के उस्ताद हैं, फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा मक्का मुकर्रमा में था, मेरी हजामत बहुत बढ़ गयी और पैसा पास न था कि हजामत बनवाता। मैं एक हज्जाम के पास जो चेहरे से भला आदमी मालूम होता था, गया और उससे कहा कि अल्लाह के वास्ते मेरी हजामत बना दोगे। कहने लगा हां हां, बड़े इक्राम के साथ वह एक दुनियादार की हजामत बना रहा था। उसको दर्मियान में रोक कर पहले मेरी हजामत बनायी और फिर मुझे एक काग़ज़ की पुड़िया दी। उसमें चंद दराहिम थे। मैंने वे ले लिये और यह इरादा किया कि जब मुझे सबसे पहले कुछ मिलेगा, तो इस हज्जाम को दूँगा। मैं मस्जिद में गया। वहां मेरा एक भाई मिला, उसने कहा कि तुम्हारे एक भाई बसरा से एक थैली तुम्हारे वास्ते लाये हैं, उसमें तीन सौ अशर्फ़ियां हैं, वह अल्लाह के वास्ते तुम्हें दे गये हैं। मैंने वह थैली ले ली और हज्जाम के पास जाकर कहा कि ये तीन सौ अशर्फ़ियां हैं, इनको तुम अपनी ज़रूरियात में ख़र्च कर लेना। हज्जाम ने कहा, शैख़ तुम्हें शर्म न आयी, अव्वल तो तुमने यह कहा कि अल्लाह के वास्ते हजामत बनाओ, फिर मैं उस पर उजरत ले लूँ? जाओ तुम्हें अल्लाह तआला माफ़ करे। *(रौज़)*

हज़रत शिबली रह० का भी इस क़िस्म का एक क़िस्सा मशहूर है। *(रौज़)*

52. हज़रत इब्राहीम बिन अदहम रह० ने एक शख़्स से तवाफ़ की हालत में फ़रमाया कि यह बात समझ ले कि तू सालिहीन के दर्जे को उस वक़्त तक नहीं पहुँच सकता जब तक कि छः घाटियों को पार न कर ले :-

1. अव्वल यह कि तू नेअ्मत के दरवाज़े को बंद कर ले और सख़्ती का दरवाज़ा खोले।

2. दूसरे यह कि इज़्ज़त के दरवाज़े को बंद करे और ज़िल्लत के दरवाज़े को खोले।

3. तीसरे यह कि राहत के दरवाज़े को बंद करे और मशक़्क़त के दरवाज़े को खोले।

4. चौथे यह कि सोने के दरवाज़े को बंद करे और जागने के दरवाज़े को खोले।

5. पांचवें यह कि ग़िना के दरवाज़े को बंद करे और फ़क़्र के दरवाज़े को खोले।

6. छठे यह कि उम्मीदों के दरवाज़े को बंद करे और मौत की तैयारी के दरवाज़े को खोले। *(रौज़)*

53. मुहम्मद बिन हुसैन बग़दादी रह० फ़रमाते हैं कि मैं एक साल हज को गया। मैं इत्तिफ़ाक़ से मक्का के बाज़ार से गुज़र रहा था कि एक बूढ़ा आदमी एक लड़की का हाथ पकड़े हुए था, लड़की का रंग मुतग़य्यर हो रहा था, बदन बहुत लाग़र, लेकिन उसके चेहरे पर एक नूरानी चमक थी, वह बूढ़ा पुकार रहा था कि कोई इस लड़की का ख़रीदार है, कोई है जो इसको पंसद करे, कोई है जो बीस अशर्फ़ी से इसकी क़ीमत ज़्यादा दे, इस शर्त पर कि मैं इसके हर ऐब से बरी हूँ। मैंने उस शैख़ के क़रीब जाकर पूछा कि इस बांदी की क़ीमत का हाल तो मालूम हो गया, इसमें ऐब क्या है? वह कहने लगा कि यह लड़की पागल है, हर वक़्त ग़म्ज़दा रहती है रात भर नमाज़ पढ़ती है, दिन भर रोज़ा रखती है, न खाती है न पीती है, हर जगह बिल्कुल तंहाई पसंद करती है। जब मैंने उसकी बात सुनी तो वह लड़की मुझे पसंद आ गयी। और मैंने उसको ख़रीद लिया और अपनी क़ियामगाह पर ले गया। मैंने उसको देखा कि वह ज़मीन की तरफ़ सर झुकाए बैठी है, फिर उसने सर उठाया और कहने लगी कि मेरे छोटे आक़ा, आप का वतन कहां है? अल्लाह तआला आप पर रहम करे। मैंने कहा, इराक़ है, कहने लगी

मैंने कहा कि दोनों नहीं, कहने लगी तो क्या कौन सा इराक़? बसरा या कूफ़ा? मैंने कहा कि दोनों नहीं, कहने लगी तो क्या आप बग़दाद के रहने वाले हैं? मैंने कहा, हां, कहने लगी वाह वाह, वह तो आबिदों का शहर है। ज़ाहिदों का शहर है। मुझे ताज्जुब हुआ कि यह बांदी एक कोठरी से दूसरी कोठरी में जाने वाली इसको आबिदों और ज़ाहिदों की क्या ख़बर। मैंने उससे दिल्लगी के तौर पर पूछा कि तू उनमें से किन किन आबिदों को जानती है, कहने लगी, मालिक बिन दीनार को, बिश्र हाफ़ी को, सालिह मुर्री को, अबू हातिम सजिस्तानी को, मारूफ़ कर्ख़ी को, मुहम्मद बिन हुसैन बग़दादी को, राबिआ अद्वीया को, शअवाना को, मैमूना को। मैंने उससे पूछा कि तुझे इन सब का हाल किस तरह मालूम हुआ? कहने लगी कि ऐ जवान मैं इन को कैसे न जानूँ? ख़ुदा की क़सम ये लोग दिलों के तबीब हैं। ये वे लोग हैं, जो आशिक़ को माशूक़ का रास्ता बताते हैं। फिर उसने चार शेअ्र पढ़े, जिनका तर्जुमा यह है :-

यह क़ौम वे लोग हैं, जिनके फ़िक्र अल्लाह के साथ वाबस्ता हो गये। पस उनके लिये कोई फ़िक्र ही किसी और का नहीं रहा। इन लोगों का मक़्सद सिर्फ़ उनका मौला और उनका सरदार है, क्या ही बेहतरीन मक़्सद है, जो सिर्फ़ एक बे नियाज़ ज़ात के वास्ते है, न तो दुनिया उनसे उलझती है और न खानों की उम्दगी, न दुनिया की लज़्ज़तें, न औलाद, न उनसे अच्छा लिबास झगड़ता है, न माल की रोज़ अफ़्ज़ूं ज़्यादती, न तायदाद की कसरत। इसके बाद मैंने कहा ऐ लड़की मैं मुहम्मद बिन हुसैन ही हूँ, कहने लगी मैंने अल्लाह तआला से दुआ की थी कि तुम से मेरी कहीं मुलाक़ात हो जाये। तुम्हारी वह दिलकश आवाज़ क्या हुई, जिससे तुम मुरीदीन के दिलों को ज़िंदा किया करते थे और सुनने वालों की आंखें उससे भर आया करती थीं। मैंने कहा, बिहालिही मौजूद है, कहने लगी, ख़ुदा की क़सम! मुझे क़ुरआन पाक कुछ सुना दो, मैंने बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़ी, तो उसने बहुत ज़ोर से एक चीख़ मारी और बेहोश हो गयी। मैंने उस पर पानी छिड़का, जिससे उसको इफ़ाक़ा हुआ तो कहने लगी, जिसके नाम का यह असर है अगर मैं उसको पहचान लूँ और जन्नत में उसको देख लूँगी तो क्या हाल होगा? फिर कहने लगी, अच्छा पढ़िए। अल्लाह जल्ल शानुहू आप पर रहम करे। मैंने यह आयत पढ़ी :-

أَمْ حَسِبَ الَّذِينَ اجْتَرَحُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ نَجْعَلَهُمْ كَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَوَاءً مَحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ (جاثيه ع ٢)

"जो लोग बुरे काम करते हैं, क्या वे यह गुमान करते हैं कि हम उनको उन लोगों के बराबर कर देंगे जो ईमान लाये और अच्छे अमल किये कि उन सब का जीना मरना एक सा हो जाये (जो ऐसा गुमान करते हैं) बहुत बुरी तज्वीज़ कर रहे हैं।"

यह आयत सुनकर वह कहने लगी कि अल्लाह का शुक्र है, हमने कभी किसी की न परिस्तश की, न किसी सनम को बोसा दिया और कुछ पढ़िए। अल्लाह आप पर रहम करे। मैंने पढ़ा :-

اِنَّآ اَعْتَدْنَا لِلظّٰلِمِيْنَ نَارًا اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا وَاِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِى الْوُجُوْهَ ط بِئْسَ الشَّرَابُ ط وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا ٥ (كهف ع ٤)

"बेशक हमने ज़ालिमों के लिये आग तैयार कर रखी है, जिसकी क़नातें उनको चारों तरफ़ से घेरे हुए होंगी और अगर वे लोग फ़रियाद करेंगे तो ऐसे पानी से उनकी फ़रियाद रसी की जायेगी, जो तेल की तलछट की तरह (बदहैअत) होगा (और ऐसा सख़्त गर्म) कि मुंहों को पका देगा, क्या ही बुरा पानी होगा और (जहन्नम) क्या ही बुरा ठिकाना होगा।"

वह कहने लगी कि तुमने अपने दिल पर ना उम्मीदी लाज़िम कर दी, अपने दिल को उम्मीद और ख़ौफ़ के दर्मियान मुअत्तर करो,

"कुछ और पढ़ो अल्लाह जल्ल शानुहू आप पर रहम करे" तो मैंने पढ़ा:-

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ (عبس)

"बहुत से चेहरे उस दिन ख़ंदा व शादां होंगे और यह पढ़ा:-

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ (قيمه ع ١)

"बहुत से चेहरे उस दिन बा रौनक़ होंगे और अपने रब की तरफ़ देखते होंगे"।

इस पर वह कहने लगी, हाय, मुझे उस दिन उसकी मुलाक़ात का कितना इश्तियाक़ होगा, जिस दिन वह अपने दोस्तों के लिये तजल्ली फ़रमायेगा, कुछ और पढ़िए, अल्लाह तआला आप पर रहम करे, मैंने यह आयात पढ़ीं :-

يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ٥ بِاَكْوَابٍ وَّاَبَارِيْقَ وَكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ لَّا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ ٥ (واقعه ع ١)

कुछ आयतें:-

لِأَصْحَابِ الْيَمِينِ ٥

तक, यानी सूरः वाक़िआ के पहले रूकूअ् के ख़त्म तक पढ़ीं, जिनका तर्जुमा यह है। कि

"इन (आला दर्जे वालों) के पास ऐसे लड़के, जो हमेशा लड़के ही रहेंगे, ये चीज़ें लेकर हमेशा आते जाते रहेंगे, आबख़ोरे और आफ़ताबे और ऐसे गिलास जो बहती हुई शराब से भरे गये हों, कि न इस शराब से उनको सर का दर्द होगा (यानी चक्कर आएगा) न अक़्ल में फ़ुतूर आयेगा और ऐसे मेवे लेकर आयेंगे, जिनको ये लोग पसंद करें और परिंदों का गोश्त जो उनको मर्ग़ूब हो, और उनके लिये ख़ूबसूरत बड़ी बड़ी आंखों वाली हूरें होंगी, जैसा कि (हिफ़ाज़त से) पोशीदा रखा हुआ मोती, यह सब कुछ बदला है उन आमाल का जो वे (दुनिया में) किया करते थे, (ये लोग जन्नत में) न बक बक सुनेंगे, न कोई और बेहूदा बात, बस सलाम ही सलाम की आवाज़ (हर तरफ़) से आयेगी और (नम्बर दो के हज़रात) जो दाहिने वाले हैं (यानी उनके आमालनामे दाहिने हाथ में मिले हैं) वे दाहिने वाले भी कैसे अच्छे आदमी हैं। वे उन बाग़ों में रहेंगे, जहां बग़ैर कांटों की बेरियां होंगी, और तेह ब तेह केले लगे हुए होंगे और बहुत लम्बा साया होगा और बहता हुआ पानी होगा और बहुत कसरत से मेवे होंगे, जो न ख़त्म होंगे और न उनमें किसी क़िस्म की रोक टोक होगी (जितना जिसका दिल चाहे खाये) और ऊँचे ऊँचे फ़र्श होंगे (और उनके लिये भी औरतें होंगी जिनको) हमने ख़ास तौर से बनाया यानी ऐसा बनाया कि वे (हमेशा हमेशा) कुंवारियां ही रहेंगी (यानी सोहबत के बाद फिर कुंवारी बन जायेंगी) और (नाज़ व अंदाज़ के लिहाज़ से) महबूबा होंगी और (जन्नत वालों की) हम उम्र होंगी और ये सब चीज़ें दाहिने वालों के लिये हैं।

(तर्जुमा ख़त्म हुआ।)

फिर वह लड़की मुझसे कहने लगी, मेरा ख़्याल है कि तुमने भी हूरों से मंगनी की है, कुछ उनके महरों के वास्ते भी ख़र्च किया है? मैंने पूछा कि मुझे बता दे, उनका महर क्या होगा? मैं तो फ़क़ीर आदमी हूँ, कहने लगी, रात को तहज्जुद पढ़ना दिन को रोज़ा रखना और फ़क़ीरों व मसाकीन से मुहब्बत रखना, इसके बाद उस बांदी ने छः शेअ्र पढ़े जिनका तर्जुमा यह है :-

"ऐ वह शख़्स जो हूरों से उनके पर्दे में मंगनी करता है और उनके आ़ली

मर्तबा के वावजूद उनका तालिब है, कोशिश के साथ खड़ा हो जा, सुस्ती हरगिज़ न कर, नफ़्स से मुजाहदा कर, उसको सब्र का आदी बना, रात को तहज्जुद पढ़ा कर, दिन को रोज़ा रखा कर, यह उनका महर है। अगर तेरी दोनों आंखें उनको इस हाल में देख लें, जबकि वे तेरी तरफ़ मुतवज्जह हो रही हों और उनके सीनों पर अनारों की तरह से उनके पिस्तान उभर रहे हों और वे अपनी हम उम्र लड़कियों के साथ चल रही हों और उनके सीनों पर चमकते हुए हार पड़े हुए हों तो उस वक़्त तेरी निगाह में यह दुनिया की जितनी ज़ेब व ज़ीनत है, सारी ही सुबुक बन जाये। ये अश्‌आर पढ़ कर उसको बेहोशी तारी हो गयी। मैंने फिर उसके चेहरे पर पानी वग़ैरह छिड़का तो उसको इफ़ाक़ा हुआ और उसने ये शेअ्र पढ़े :-

اِلٰهِیْ لَا تُعَذِّبْنِیْ فَاِنِّیْ مُقِرٌّ بِالَّذِیْ قَدْ کَانَ مِنِّیْ

"ऐ अल्लाह तआला, तू मुझे अज़ाब से बचाईयो। बेशक मैं अपने गुनाहों का जो मुझ से सादिर हुए, इक़रार करने वाली हूँ।"

فَکَمْ مِّنْ زَلَّةٍ فِی الْخَطَایَا غَفَرْتَ وَاَنْتَ ذُوْفَضْلٍ وَّمَنٍّ

"तूने कितनी कसरत से मेरी ख़ताओं की लग़्ज़िशें माफ़ फ़रमायी हैं, तू बड़े फ़ज़्ल वाला है, बड़े एहसान वाला है।"

یَظُنُّ النَّاسُ بِیْ خَیْرًا وَّاِنِّیْ لَشَرُّ النَّاسِ اِنْ لَّمْ تَعْفُ عَنِّیْ

"लोग मुझे अच्छा आदमी गुमान करते हैं, लेकिन अगर तू मेरी ख़ताएं माफ़ न कर दे तो मैं बदतरीन आदमी हूँ।"

وَمَالِیْ حِیْلَةٌ اِلَّا رَجَائِیْ لِعَفْوِكَ اِنْ عَفَوْتَ وَحُسْنُ ظَنِّیْ

"मेरे लिये कोई तदबीर नहीं, इसके सिवा कि तेरी बख़्शिश की उम्मीद है और तेरे साथ मुझे हुस्ने ज़न है (कि तू ज़रूर करम करेगा)।

ये अश्‌आर पढ़ कर उस बांदी को फिर ग़शी हो गयी, मैं जो उसके क़रीब पहुँचा तो मर चुकी थी। मुझे उसके इंतिक़ाल का बेहद सदमा हुआ। मैं उठ कर बाज़ार गया कि उसके तज्हीज़ व तक्फ़ीन का सामान ख़रीद लाऊँ। जब मैं बाज़ार से लौटा तो वह कफ़नी, कफ़्नाई ख़ुश्बू लगी हुई मुअत्तर नाश (लाश) रखी हुई थी, दो सब्ज़ कपड़ों में उसका कफ़न था, जो जन्नत का लिबास था, कफ़न में दो सतरें नूर से लिखी हुई थीं, पहली सतर (लाइन) पर :-

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

लिखा हुआ था, दूसरी पर यह आयत :-

اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ٥

"ख़बरदार रहो कि अल्लाह के वलियों को न तो ख़ौफ़ होता है, न ग़मगीन होते हैं।"

मैं और मेरे साथी उसके जनाज़े को उठा कर ले गये। जनाज़े की नमाज़ पढ़ कर दफ़्न दिया और उसकी क़ब्र पर सूरः यासीन शरीफ़ पढ़ कर अपने हुजरे में चला गया। मेरी आंखों से आंसू बह रह थे। दिल उसके फ़िराक़ से ग़मगीन था। वापस आकर मैंने दो रक्अत नमाज़ पढ़ी और सो रहा। ख़्वाब में देखा कि वह लड़की जन्नत में फिर रही है, निहायत महकते हुए जाफ़रान के बग़ीचे में है। रेशम के और इस्तबरक़ के जोड़े पहन रही है उसके सर पर एक मोतियों से जड़ा हुआ ताज है और पावों में सुर्ख़ याक़ूत के जूते हैं, मुश्क व अंबर की ख़ुश्बू उससे महक रही है, उसका चेहरा शम्स व क़मर से ज़्यादा रोशन है। मैं ने कहा, ऐ लड़की, ज़रा ठहर तू यह तो बता दे कि यह मर्तबा किस अमल की बदौलत तुझे मिला। कहने लगी कि फ़ुक़रा और मसाकीन की मुहब्बत से और इस्तिग़फ़ार की कसरत से और मुसलमानों के रास्ते में से तक्लीफ़ देने वाली चीज़ हटा देने से। फिर उसने तीन शेअ्र पढ़े, जिनका तर्जुमा यह है :-

"मुबारक है वह शख़्स जिसकी आंखें रातों को जागती हों और अपने मालिक के इश्क़ की बेचैनी में रात गुज़ार दे और किसी दिन अपनी कोताहियों पर नोहा कर लिया करे और अपनी ख़ताओं पर रो लिया करे और शब को अकेला खड़ा हो, अल्लाह के अज़ाब के ख़ौफ़ से अख़्तर शुमारी करता हो, इस हाल को हक़ तआला शानुहू की निगाह हिफ़ाज़त कर रही हो। (रौज़)

54. हज़रत शैख़ इब्राहीम ख़्वास रह० का मामूल था कि जब कहीं सफ़र को तशरीफ़ ले जाते, न किसी से तज़्किरा करते, न किसी को ख़बर होती, एक लोटा हाथ में लिया और चल दिये।

हामिद अस्वद रह० कहते हैं कि एक मर्तबा मैं भी मस्जिद में हाज़िरे ख़िदमत था। आप हस्बे मामूल लोटा लेकर चल दिये मैं भी पीछे पीछे हो लिया। जब हम क़ादसिया में पहुँचे तो आपने दर्याफ़्त फ़रमाया हामिद, कहां का इरादा है?

मैंने अर्ज़ किया कि मैं तो हम रिकाबी के लिये चल पड़ा। फ़रमाया कि मेरा इरादा मक्का मुकर्रमा जाने का है, मैंने अर्ज़ किया मैं भी इन् शाअल्लाह वहीं चलूँगा। जब हमको चलते चलते तीन दिन हो गये तो एक नौ जवान हमारे साथ और भी हो लिया और एक दिन रात वह हमारे साथ चलता रहा, लेकिन उसने एक भी नमाज़ न पढ़ी। मैंने शैख़ से अर्ज़ किया कि यह तीसरा आदमी जो हमारे साथ मिल गया, नमाज़ नहीं पढ़ता। शैख़ ने उससे पूछा कि तू नमाज़ क्यों नहीं पढ़ता? उसने कहा मेरे ज़िम्मे नमाज़ नहीं है, आपने फ़रमाया कि क्यों? क्या तू मुसलमान नहीं है? उसने कहा, नहीं! मैं तो नसरानी हूँ, लेकिन मैं नसरानियत में भी तवक्कुल पर गुज़र करता हूँ। मेरे नफ़्स ने यह दावा किया था कि वह तवक्कुल में पुख़्ता हो गया। मैंने इसको झुठलाया और उस जंगल बयाबान में जहां माबूद के सिवा कोई भी नहीं है, ला डाला, ताकि उसके दावे का इम्तिहान करूँ। शैख़ उसकी यह बात सुनकर चल दिये और मुझ से फ़रमाया कि इससे तअर्रूज़ न करो, तुम्हारे साथ पड़ा चलता रहे। वह हमारे साथ चलता रहा, यहां तक कि हम बले मर्व पर पहुँचे, वहां शैख़ ने अपने मैले कपड़े बदन से उतारे और उनको धोया, फिर उस लड़के से पूछा कि तुम्हारा क्या नाम है? उसने कहा, अब्दुल मसीह। शैख़ ने फ़रमाया कि अब्दुल मसीह, यह मक्का की दहलीज़ है यानी हरम आ गया और अल्लाह जल्ल शानुहू ने मुश्रिकों का दाख़िला इसमें ममनूअ् क़रार दिया है। चुनांचे इर्शाद है :-

إِنَّمَا الْمُشْرِكُونَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ

"मुश्रिकीन नापाक हैं ये मस्जिदे हराम के क़रीब भी न हों, और अपने नफ़्स का जो तू इम्तिहान करना चहाता था, वह तुझ पर ज़ाहिर हो गया। पस ऐसा न हो कि तू मक्का में दाख़िल हो जाये, अगर हम तुझे वहां देखेंगे तो ऐतिराज़ करेंगे"।

हामिद रह० कहते हैं कि हम उसको वहीं छोड़ कर आगे बढ़ गये, मक्का मुकर्रमा पहुँचे। इसके बाद हम अरफ़ात पर पहुँचे तो क्या देखते हैं कि वह लड़का एहराम बांधे हुए लोगों के मुंह देखता हुआ हमारे पास पहुँच गया और शैख़ के ऊपर गिर पड़ा। शैख़ ने पूछा, अब्दुल मसीह, क्या गुज़री? क्या हुआ? कहने लगा कि ऐसा न कहो। अब मैं अब्दुल मसीह नहीं हूँ, बल्कि उसका ग़ुलाम हूँ। जिसके हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम भी ग़ुलाम थे। हज़रत इब्राहीम रह० ने पूछा कि अपनी सरगुज़श्त तो सुनाओ। कहने लगे कि जब तुम मुझे वहां छोड़ कर चले आये तो

मैं उसी जगह बैठ गया और जब मुसलमानों का एक और क़ाफ़िला आया तो मैं भी मुसलमानों की तरह एहराम बांध कर अपने आपको मुसलमाना ज़ाहिर करके उनके साथ हो लिया। जब मक्का मुकर्रमा पहुँच कर बैतुल्लाह पर मेरी नज़र पड़ी, तो इस्लाम के अलावा जितने मज़ाहिब थे वे सब एक दम मेरी निगाह से गिर गये। मैंने ग़ुस्ल किया, मुसलमान हुआ और एहराम बांधा और आज सुबह से तुम को ढूंढता फिरता हूँ। इसके बाद से हम और वह साथ ही रहे, यहां तक कि सूफ़िया ही की जमाअत में उसका इंतिक़ाल हुआ। *(रौज़)*

55. हज़रत अबू सईद ख़ज़्ज़ाज़ रह॰ फ़रमाते हैं कि मैं मक्का मुकर्रमा में था। एक मर्तबा बाबे बनी शब्बीर से गुज़र रहा था कि मैंने एक नौ जवान की लाश रखी हुई देखी, जो निहायत हसीन चेहरे वाला था। मैंने जो उसके चेहरे को ग़ौर से देखा, तो वह तबस्सुम करते हुए कहने लगा, अबू सईद, तुम्हें मालूम नहीं कि उश्शाक़ मरते नहीं, बल्कि वे ज़िंदा ही रहते हैं, अगरचे ज़ाहिर में मर जायें। उनकी मौत एक आलम से दूसरे आलम में इंतिक़ाल होता है।

शैख़ अबू याक़ूब सुनौसी रह॰ फ़रमाते हैं कि मेरे पास एक मुरीद मक्का मुकर्रमा में आया और कहने लगा कि ऐ उस्ताद, मैं कल को ज़ुहर के वक़्त मर जाऊंगा। यह अशर्फ़ी ले लीजिये। इसमें से निस्फ़ तो क़ब्र खोदने वाले की उजरत है और निस्फ़ कफ़न वग़ैरह की क़ीमत है। जब दूसरे दिन ज़ुहर का वक़्त आया वह मस्जिदे हराम में आया और तवाफ़ किया और थोड़ी दूर जाकर मर गया। मैंने उसकी तज्हीज़ व तक्फ़ीन की जब उसको क़ब्र में रखा तो उसने आंखें खोल दीं। मैंने कहा, क्या मरने के बाद भी ज़िन्दगी है? कहने लगा, हां मैं ज़िंदा हूँ, और अल्लाह जल्ल शानुहू का हर आशिक़ ज़िंदा होता है। *(रौज़)*

हमारे अकाबिर में हज़रत हाफ़िज़ मुहम्मद ज़ामिन साहिब शहीद थानवी रह॰ के साहिबज़ादे हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ साहिब रह॰ बड़े साहिबे तसर्रुफ़ बुज़ुर्ग थे। उनके तसर्रुफ़ात और ज़ूदअसर तावीज़ों के बहुत से क़िस्से मैंने अपने अकाबिर से, जिन्होंने उनकी ज़ियारत की और उनके तसर्रुफ़ात देखे बकसरत सुने हैं। यह क़िस्सा मैंने अपने मामू मौलवी महमूद साहिब रामपुरी रह॰ से सुना है कि उन्होंने इंतिक़ाल से एक दिन क़ब्ल मौलवी महमूद साहिब से फ़रमाया कि हमें बहुत से चुटकुले मालूम हैं। एक तुम्हें भी बता देंगे। घर बैठे दो सौ रूपये माहवार मिलते रहेंगे। किसी वक़्त पूछ लेना। मैंने कहा बेहतर है। ख़्याल किया कि किसी दिन

फ़ुर्सत के वक़्त पूछ लूँगा। शाम को अस्र की नमाज़ के वक़्त जब तक्बीर हो रही थी, सफ़ से ज़रा आगे मुंह निकाल कर मेरी तरफ़ चुपके से इशारा करके फ़रमाया कि वह बात याद रखना, फिर हम चले जायेंगे। मुझे बड़ी हैरत हुई, यह क्या वक़्त था उसका। दूसरे दिन सुबह को देवबंद वग़ैरह मुतअद्दद जगह अहबाब को ख़ुतूत लिखवाये, जिसमें मुख़्तलिफ़ उमूर के साथ यह लफ़्ज़ भी था कि मेरा आज सफ़र का इरादा है। हम लोग यह समझते रहे कि अक्सर भोपाल कियाम रहता है, वहां तशरीफ़ ले जाने का इरादा होगा या कहीं और, रौअब की वजह से हर शख़्स हर वक़्त बात करने की जुर्रत न करता था। अगरचे तबए मुबारक में मिज़ाह बेहद था, लेकिन उसके साथ ही जलाल भी बहुत था। शाम को अस्र की नमाज़ पढ़ कर जब हम सब घर की तरफ़ चले, वह अक्सर औक़ात मस्जिद में तशरीफ़ रखा करते थे, इसलिये मस्जिद में रह गये, चंद ही क़दम बाहर चले थे कि एक शख़्स पीछे से दौड़ा हुआ आया कि हज़रत हाफ़िज़ साहिब का विसाल हो गया हम लोग हैरत से वापस हुए कि अभी सबके साथ नमाज़ पढ़ी है मस्जिद में आकर देखा तो चारपाई पर क़िब्ला रूख़ लेटे हुए हैं, लुंगी जो हमेशा का मामूल थी, बंध रही है और कुरता निकला हुआ सिरहाने रखा है। रहिम-हुल्लाहु रह्म-तन् वासिअ-तन्।

56. सईद बिन अबी अरूबा रह० फ़रमाते हैं कि हज्जाज सक़फ़ी (जिसका ज़ुल्म व सितम शोहरा-ए-आफ़ाक़ है) जब हज को गया तो रास्ते में एक जगह मंज़िल पर ख़ादिमों से नाश्ता तलब किया और अपने दरबान से कहा कि देख यहां कोई मक़ामी आदमी हो तो उसको मेरे साथ खाना खाने के लिये बुला ला, ताकि मैं उससे यहां के हालात की तहक़ीक़ करूँ। वह गया और पहाड़ पर एक बद्दू दो चादरों में पड़ा हुआ सो रहा था, उसको लात मार कर उठाया कि चल, तुझ को अमीर बुला रहे हैं, वह आया तो हज्जाज ने कहा कि हाथ धोकर मेरे साथ खाने में शरीक हो जाओ, उस बद्दू ने कहा कि मुझे उसने दावत दे रखी है, जो तुझ से भी अफ़ज़ल है। हज्जाज ने कहा, वह कौन? कहने लगा कि हक़ तआला शानुहू ने मुझे रोज़े की दावत दी है। हज्जाज कहने लगा, ऐसी सख़्त गर्मी में रोज़ा? बद्दू ने कहा कि हां ऐसे दिन के लिये जो इससे भी ज़्यादा सख़्त गर्म होगा। हज्जाज ने कहा, आज इफ़्तार कर लो, कल क़ज़ा रख लेना। बद्दू ने कहा, अगर तुम इसका ज़िम्मा लो कि मैं कल तक ज़िंदा रहूँगा तो मैं इफ़्तार कर लूँ। हज्जाज ने कहा, इसका कौन ज़िम्मा ले सकता है? कहने लगा, तो फिर नक़द को ऐसे उधार पर महव्वल करता है, जिसका ज़िम्मा भी नहीं लेता। हज्जाज

ने कहा, यह खाना बहुत लज़ीज़ है, बद्दू ने कहा कि न तुमने इसको लज़ीज़ बनाया, न बावरची ने, बल्कि तन्दुरूस्ती ने इसको अच्छा कर रखा है।

मुसन्निफ़ ने दो शेअ्रों में इसकी तौज़ीह की है कि खाने को बावर्ची अच्छा नहीं करता, बल्कि तन्दुरूस्ती से खाना अच्छा होता है। अगर मेरी सेहत अच्छी नहीं तो कोई भी खाना लज़ीज़ नहीं और सेहत अच्छी है तो सारी खाने की चीज़ें लज़ीज़ हैं। (रौज़)

57. हज्जाज बिन यूसुफ़ जब हज को गया तो एक शख़्स को देखा कि उसकी मौजूदगी में काबे के गिर्द ज़ोर से लब्बैक कहता हुआ तवाफ़ कर रहा है, हज्जाज ने कहा कि इस शख़्स को मेरे पास पकड़ कर लाओ। वह हाज़िर किया गया। हज्जाज ने पूछा कि तू किन लोगों में से है? उसने कहा मुसलामनों में से। हज्जाज ने कहा, मैं यह नहीं पूछता। उस ने कहा और क्या मक़्सद है? हज्जाज ने कहा, किस शहर का रहने वाला है? उसने कहा यमन का। हज्जाज ने पूछा कि तूने मुहम्मद बिन युसूफ़ (जो हज्जाज का हक़ीक़ी भाई था) को किस हाल में छोड़ा? वह कहने लगा, बहुत मोटा ताज़ा, कसरत से कपड़े पहनने वाला, बहुत कसरत से सवारी पर फिरने वाला, कभी शहर के अंदर कभी शहर के बाहर घूमने वाला, हज्जाज ने कहा, मेरा यह सवाल नहीं, उसने कहा और क्या मक़्सद है? हज्जाज ने कहा, उसकी आदतें कैसी हैं? कहने लगा, बड़ा ज़ालिम, बड़ा जाबिर, मख़्लूक़ का मुतीअ्, ख़ालिक़ का गुनाहगार, हज्जाज ने कहा तुझे ऐसी सख़्त बातें कहने की हिम्मत कैसे हुई? जबकि तू उसका मर्तबा मेरी निगाह में (रिश्तेदारी की वजह से) जानता है। उसने कहा, क्या उसका मर्तबा तेरी निगाह में उससे ज़्यादा है, जो मेरा मर्तबा अल्लाह जल्ल शानुहू की निगाह में है? मैं उसके घर की ज़ियारत के वास्ते आया हूँ, उसके नबी की तस्दीक़ करने वाला हूँ, उसका फ़र्ज़ अदा कर रहा हूँ, उसके दीन की इताअत कर रहा हूँ। यह सुनकर हज्जाज चुप हो गया, कुछ जवाब न दे सका। वह आदमी वापस चला गया और काबे का परदा पकड़ कर कहने लगा, ऐ अल्लाह तुझी से पनाह मांगता हूँ और तुझी को जाए पनाह बनाता हूँ। ऐ अल्लाह तेरी कशाइश ही क़रीब है और तेरा ही एहसान क़दीम है, और तेरी ही आदात बेहतरीन हैं। (रौज़)

58. एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मैं एक मर्तबा तवाफ़ कर रहा था, दफ़्अतन मैंने एक लड़की को देखा कि उसके कांधे पर एक बच्चा बहुत कमसिन बैठा है और वह यह निदा कर रही है, ऐ करीम, ऐ करीम, तेरा गुज़रा हुआ ज़माना,

(यानी कैसा मूजिबे शुक्र है) मैंने पूछा, वह क्या चीज़ है जो तेरे और मौला के दर्मियान गुज़री। कहने लगी कि मैं एक मर्तबा कश्ती पर सवार थी और ताजिरों की एक जमाअत हमारे साथ थी। तूफ़ानी हवा ऐसी ज़ोर से आयी कि वह कश्ती ग़र्क़ हो गयी और सबके सब हलाक हो गये। मैं और यह बच्चा एक तख़्ते पर रह गये और एक हबशी आदमी दूसरे तख़्ते पर। हम तीन के सिवा कोई भी उनमें से न बचा। जब सुबह का चांदना हुआ तो उस हबशी ने मुझे देखा और पानी को हटाता हटाता मेरे तख़्ते के पास पहुँच गया और जब उसका तख़्ता मेरे तख़्ते के साथ मिल गया, तो वह भी मेरे तख़्ते पर आ गया और मुझसे बुरी बात की ख़्वाहिश करने लगा। मैंने कहा अल्लाह से डर, हम किस मुसीबत में मुब्तला हैं, इससे ख़लासी उसकी बंदगी से भी मुश्किल हो रही है, चे जाए कि उसका गुनाह ऐसी हालत में करें। कहने लगा, इन बातों को छोड़, खुदा की क़सम यह काम तो होकर रहेगा। यह बच्चा मेरी गोद में सो रहा था। मैंने चुपके से एक चुटकी इसके भर ली, जिससे यह एकदम रोने लगा। मैंने उससे कहा, अच्छा ज़रा ठहर जा, मैं इस बंच्चे को सुला दूं फिर जो मुक़द्दर में होगा, हो जायेगा। उस हब्शी ने इस बच्चे की तरफ़ हाथ बढ़ा कर इसको समुन्दर में फेंक दिया। मैंने अल्लाह पाक से कहा, ऐ वह पाक ज़ात जो आदमी के और उसके दिली इरादे में भी हाइल हो जाती है, मेरे और इस हब्शी के दर्मियान तू ही अपनी ताक़त और क़ुदरत से जुदाई कर, बेतरद्दुद तू हर चीज़ पर क़ादिर है। खुदा की क़सम। मैं इन अल्फ़ाज़ को पूरा भी न करने पायी थी कि समुन्दर से एक बहुत बड़े जानवर ने मुंह खोले हुए सर निकाला और उस हब्शी का एक लुक़्मा बना कर समुन्दर में घुस गया और मुझे अल्लाह जल्ल शानुहू ने महज़ अपनी ताक़त और क़ुदरत से उस हब्शी से बचाया। वह हर चीज़ पर क़ादिर है, पाक है, उसकी बड़ी शान है, उसके बाद समुन्दर की मौजें मुझे थपेड़ती रहीं, यहां तक कि वह तख़्ता एक जज़ीरे के किनारे से लग गया। मैं वहां उतर पड़ी और सोचती रही कि यहां घास खाती रहूँगी। पानी पीती रहूँगी, जब तक अल्लाह जल्ल शानुहू कोई सहूलत की सूरत पैदा करे। उसी की मदद से कोई सूरत हो सकती है। चार दिन मुझे उस जज़ीरे में गुज़र गये। पांचवे दिन मुझे एक बड़ी कश्ती समुन्दर में चलती हुई नज़र आयी। मैंने एक टीले पर चढ़ कर उस कश्ती की तरफ़ इशारा किया और जो कपड़ा मेरे ऊपर था, उसको खूब हिलाया। उसमें से तीन आदमी एक छोटी नाव पर बैठ कर मेरे पास आये। मैं उनके साथ उस नाव पर बैठकर कश्ती पर पहुँची तो मेरा यह बच्चा जिस को

हब्शी ने समुन्दर में फेंक दिया था, उनमें से एक आदमी के पास था। मैं इसको देख कर इस पर गिर पड़ी। मैंने इसको चूमा, गले से लगाया, और मैंने कहा, यह मेरा बच्चा है, मेरा जिगर पारा है। वे कश्ती वाले कहने लगे, तू पागल है, तेरी अक़्ल मारी गयी है। मैंने कहा, न मैं पागल हूँ, न मेरी अक़्ल मारी गयी, मेरा अजीब क़िस्सा है। फिर मैंने उनको अपनी सरगुज़िश्त सुनाई।

यह माजरा सुनकर सब ने हैरत से सर झुका लिया और कहने लगे, तूने बड़ी हैरत की बात सुनाई और अब हम तुझे ऐसी ही बात सुनायें जिससे तुझे ताज्जुब होगा। हम उस कश्ती में बड़े लुत्फ़ से चल रहे थे। हवा मुवाफ़िक़ थी। इतने में एक जानवर समुन्दर के पानी से ऊपर आया, उसकी पुश्त पर यह बच्चा था और उसके साथ ही एक ग़ैबी आवाज़ हमने सुनी कि अगर इस बच्चे को उसकी पुश्त पर से उठा कर अपने साथ न लिया तो तुम्हारी कश्ती डुबो दी जायेगी। हममें से एक आदमी उठा और इस बच्चे को उसकी पुश्त पर से उठा लिया और वह जानवर फिर पानी के अंदर चला गया। तेरा वाक़िआ और यह वाक़िआ दोनों बड़ी हैरत के हैं और अब हम सब अहद करते हैं कि आज के बाद से अल्लाह जल्ल शानुहू हमें कभी किसी गुनाह पर न देखेगा, इसके बाद उन सब ने तौबा की। वह पाक ज़ात कितनी मेहरबान है बंदों के अहवाल की ख़बर रखने वाली है, बेहतरीन एहसानात करने वाली है, वह पाक ज़ात मुसीबत ज़दों की मुसीबत के वक़्त मदद को पहुँचने वाली है। *(रौज़)*

59. हज़रत अबू अम्र ज़ज्जाजी रह॰ फ़रमाते हैं कि मैं हज के इरादे से चला और हज़रत जुनैद रह॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, उन्होंने एक दिरम मुझे अता फ़रमाया। मैंने उसको अपने कमरबंद में बांधा लिया। इसके बाद जिस जगह भी पहुँचा, खुद ब खुद मेरा इंतिज़ाम होता चला गया। जब हज से फ़ारिग़ होकर हज़रत जुनैद रह॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आपने हाथ फैला दिया और फ़रमाया कि लाओ हमारा दिरम। मैंने ख़िदमत में पेश कर दिया। फ़रमाया, इसकी मुहर कैसी पायी? मैं ने कहा, बड़ी चालू। *(रौज़)*

60. शैख़ युसूफ़ बिन हमदान रह॰ फ़रमाते हैं कि मैं बसरा के रास्ते से मक्का मुकर्रमा को चला। फ़ुक़रा की एक जमाअत मेरे साथ थी, उनमें एक जवान था, जिसकी बेहतरीन सोहबत और औक़ात की हिफ़ाज़त और ज़िक्र में हर वक़्त की मश्गूली से मुझे उस पर रश्क आता था। वह हर वक़्त अल्लाह के ज़िक्र व

मुनाजात में मश्ग़ूल रहता। जब हम मदीना तैयबा में पहुँचे तो वह जवान बीमार हुआ और सख़्त बीमार होकर हमसे जुदा हो गया। एक दिन मैं अपने चंद रूफ़क़ा को साथ लेकर उसकी बीमार पुर्सी को गया। हमने जब उसकी हालत और बीमारी की शिद्दत देखी तो हममें से बाज़ ने मश्वरा दिया कि इस वक़्त किसी तबीब की तरफ़ रूजूअ् करना चाहिये कि इसकी बीमारी की तश्ख़ीस करे, शायद कोई दवा मुफ़ीद हो जाये, उस जवान ने यह गुफ़्तगू सुनकर आंखें खोल दीं और मुस्कुराया और कहने लगा, बुज़ुर्गों, और दोस्तों, मुवाफ़क़त के बाद मुख़ालफ़त किस क़दर बुरी चीज़ है, जब अल्लाह जल्ल शानुहू किसी बंदे के लिये एक हाल को पसंद करे और बंदा दूसरी हालत की कोशिश करे तो क्या यह अल्लाह के इरादे की मुख़ालफ़त नहीं है? हम लोग उसकी बात से शर्मिन्दा हुए, फिर उसने हमें देखा और कहने लगा कि अगर इश्क़ के मारे हुए की बीमारी के लिये कोई दवा किसी सेहत पाये हुए के पास तुम्हें मिले, तो इश्क़ के बीमार के लिये दवा तलब करो, बाक़ी ये बीमारियां तो बदन की पाकी और गुनाहों का कफ़्फ़ारा हैं, आख़िरत को याद दिलाने वाली हैं और इश्क़ के मारे हुए को बीमारी नफ़्स का मुशाहदा और ख़्वाहिशात का इत्तिबाअ् है, फिर उसने तीन शेअ्र पढ़े, जिनका तर्जुमा यह है :-

तर्जुमाः- अल्लाह के हाथ में मेरी दवा है और वही मेरी बीमारी से वाक़िफ़ है। मैं अपने नफ़्स पर ख़्वाहिशात के इत्तिबाअ से ज़ुल्म कर रहा हूँ, जब किसी बीमारी की दवा करता हूँ तो मर्ज़ मेरी दवा पर ग़ालिब हो जाता है।

(रौज़)

61. एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि मुझ पर एक मर्तबा क़ब्ज़ (दिल तंगी) और ख़ौफ़ का शदीद ग़लबा हुआ, मैं परेशान हाल होकर बग़ैर सवारी और तोशे के मक्का मुकर्रमा चल दिया। तीन दिन तक इसी तरह बग़ैर खाए पीए चलता रहा। चौथे दिन मुझे प्यास की शिद्दत से अपनी हलाकत का अंदेशा हो गया और जंगल में कहीं साएदार दरख़्त का भी पता न था। कि उसके साए में ही बैठ जाता। मैंने अपने को अल्लाह के सुपुर्द कर दिया और क़िब्ले की तरफ़ मुंह करके बैठ गया और मुझे नींद सी आ गयी, तो मैंने ख़्वाब में एक शख़्स को देखा कि मेरी तरफ़ हाथ बढ़ा कर फ़रमाया, लाओ हाथ बढ़ाओ, मैंने हाथ बढ़ाया। उन्होंने मुझसे मुसाफ़ा किया और फ़रमाया, तुम्हें ख़ुशख़बरी देता हूँ कि तुम सही सालिम हज भी करोगे और क़ब्रे अत्हर की ज़ियारत भी करोगे। मैंने कहा, अल्लाह आप पर रहम करे, आप कौन हैं, फ़रमाया मैं ख़ाज़िर हूँ। मैंने अर्ज़ किया कि मेरे लिये दुआ

कीजिये, फ़रमाया ये अल्फ़ाज़ तीन मर्तबा कहो :-

يَا لَطِيْفًا بِخَلْقِهٖ يَا عَلِيْمًا بِخَلْقِهٖ يَا خَبِيْرًا بِخَلْقِهٖ

اُلْطُفْ بِیْ يَا لَطِيْفُ يَا عَلِيْمُ يَا خَبِيْرُ

"ऐ वह पाक ज़ात,जो अपनी मख़्लूक़ पर मेहरबान है, अपनी मख़्लूक़ के हाल को जातना है, उनकी ज़रूरियात से बा ख़बर है, तू मुझ पर लुत्फ़ व मेहरबानी फ़रमा, ऐ लतीफ़, ऐ अलीम, ऐ ख़बीर।"

फिर फ़रमाया कि यह एक तोहफ़ा है, जो हमेशा काम आने वाला है जब तुझे कोई ज़ीक़ पेश आये या कोई आफ़त नाज़िल हो तो इनको पढ़ लिया कर, तो तंगी रफ़अ् हो जायेगी और आफ़त से ख़लासी होगी। यह कह कर वह तो ग़ायब हो गया मुझे एक शख़्स ने "या शैख़, या शैख़" कह कर आवाज़ दी। मैं उसकी आवाज़ से नींद से जागा तो वह शख़्स ऊँटनी पर सवार था। मुझसे पूछने लगा कि ऐसी सूरत में ऐसे हुलिये का कोई नौ जवान तो तुमने नहीं देखा मैंने कहा कि मैंने तो किसी को नहीं देखा। कहने लगा हमारा एक नौ जवान सात दिन हो गये, घर से चला गया। हमें यह ख़बर मिली कि वह हज को जा रहा है। फिर उस सवार ने मुझसे पूछा कि तुम कहां का इरादा कर रहे हो। मैंने कहा, जहां अल्लाह तआला ले जाये। उसने अपनी ऊँटनी बिठायी और उससे उतर कर एक तोशेदान में से दो रोटियां सफ़ेद, जिनके दर्मियान में हलवा रखा हुआ था, निकालीं और ऊँट पर से पानी का मश्कीज़ा उतारा और मुझे दिया। मैंने पानी पिया और एक रोटी खायी। वही मुझे काफ़ी हो गयी। फिर उसने मुझे अपने पीछे ऊँट पर सवार कर लिया। हम दो रात और एक दिन चले तो क़ाफ़िला हमें मिल गया। वहां उसने क़ाफ़िलों वालों से उस जवान का हाल दर्याफ़्त किया। मालूम हुआ कि वह क़ाफ़िले में है। वह मुझे वहां छोड़ कर तलाश में गया। थोड़ी देर के बाद जवान को साथ लिये हुए मेरे पास आया और उससे कहने लगा कि बेटा, इस शख़्स की बरकत से अल्लाह जल्ल शानुहू ने तेरी तलाश मुझ पर आसान कर दी। मैं उन दोनों को रूख़्सत करके क़ाफ़िले के साथ चल दिया। फिर मुझे वह आदमी मिला और मुझे एक लिपटा हुआ काग़ज़ दिया और मेरे हाथ चूम कर चला गया। मैंने जो उसको देखा तो उसमें पांच अशर्फ़ियां थीं। मैंने उसमें से ऊँट किराया किया और उसी से खाने पीने का इंतिज़ाम किया और हज किया। और इसके बाद मदीना तैयबा में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रौज़ा-ए-अतहर की

ज़ियारत की। इसके बाद हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह की क़ब्रे मुबारक की ज़ियारत की और जब कभी कोई तंगी या आफ़त पेश आयी तो हज़रत ख़ाज़िर की बतायी हुई दुआ पढ़ी। मैं उनकी फ़ज़ीलत और उनके एहसान का मोअ़्तरिफ़ हूँ और इस नेअ़्मत पर अल्लाह तआला का शुक्रगुज़ार हूँ। (रौज़)

62. एक बुज़ुर्ग हज़रत ख़ाज़िर से अपनी मुलाक़ात का बहुत तवील क़िस्सा नक़ल करते हैं। आख़िर में हज़रत ख़ाज़िर ने फ़रमाया कि मैं सुबह की नमाज़ मक्का मुकर्रमा में पढ़ता हूँ और तुलूए आफ़ताब तक हतीम में रूक्ने शामी के क़रीब बैठता हूँ और ज़ुहर की नमाज़ मदीना तैयबा में पढ़ता हूँ और अस्र की बैतुल मक़्दिस में और मग़रिब की तूरे सीना पर और इशा की सद्दे सिकन्दरी पर। (रौज़)

63. एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैं बाज़ रूफ़का के साथ अदन से चला। जब रात हुई तो मेरे पांव में कोई चीज़ लग गयी, जिसकी वजह से मैं चल न सका। तंहा समुन्दर के किनारे बैठा रह गया। मैं दिन भर का रोज़ेदार था और खाने पीने की कोई चीज़ मेरे पास न थी, मैंने इसी हाल में सोने का इरादा कर लिया। दफ़्अतन मेरे सामने दो रोटियां, उनमें एक परिंदा भुना हुआ रखा था, आयीं। मैंने परिंदे को उठा कर अलग को रख दिया कि एक काला हब्शी मेरे सामने आया, उसके हाथ में लोहे का गज़ था, मुझसे कहने लगा ओ रियाकार खा ले। मैंने एक रोटी और थोड़ा सा परिंदा खाया, और बाक़ी एक कपड़े में लपेट कर अपने सरहाने रख कर सो गया, जब मेरी आंख खुली तो देखा, कपड़ा उसी तरह मेरे सर के नीचे रखा हुआ है, और ख़ाली है न रोटी है न परिंदा। (रौज़)

64. एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं कि सुलहा की एक जमाअत के साथ मैं एक मर्तबा मक्का मुकर्रमा में बैठा हुआ था। हम में एक हाशिमी बुज़ुर्ग भी थे उन पर ग़शी सी तारी हुई। जब उनको इफ़ाक़ा हुआ तो कहने लगे कि मैंने जो कुछ देखा वह तुम ने भी देखा। हमने कहा, हमें तो कुछ नज़र नहीं आया। कहने लगे कि मैंने फ़रिश्तों को देखा कि एहराम बांधे हुए तवाफ़ कर रहे हैं। मैंने उनसे पूछा कि तुम कौन हो? कहने लगे कि हम फ़रिश्ते हैं। मैंने पूछा कि तुम्हारी मुहब्बत हक़ तआला शानुहू से कैसी है? कहने लगे कि हमारी मुहब्बत अंदर से है, और तुम्हारी मुहब्बत बाहर से है। (रौज़)

65. शैख़ अबू सुलैमान दारानी रह० फ़रमाते हैं कि मैंने एक साल तज्रीद

के साथ हज का और हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र शरीफ़ की ज़ियारत का इरादा किया। मैं चल रहा था, रास्ते में एक नौ जवान इराक़ी मिला, जिसकी जवानी ज़ोरों पर थी। वह भी इसी तरह सफ़र का इरादा कर रहा था, लेकिन जब वह क़ाफ़िले के साथ चलता, तो क़ुरआन पाक की तिलावत करता रहता और जब मंज़िल पर क़ाफ़िला ठहरता, तो वह नमाज़ में मश्गूल हो जाता, रात भर नमाज़ पढ़ता, दिन भर रोज़ा रखता। उसने सारा रास्ता इसी तरह तै किया, हत्ताकि हम मक्का मुकर्रमा पहुँच गये तो वह जवान मुझसे रूख़्सत होने लगा, मैं ने उससे पूछा कि बेटा, किस चीज़ ने तुझे ऐसे सख़्त मुजाहदे पर आमादा किया, जो मैं सारे रास्ते देखता चला आया। कहने लगा, अबू सुलैमान। मैंने ख़्वाब में जन्नत का एक महल देखा कि वह सारा इस तरह बना हुआ था कि उसकी एक ईंट सोने की, फिर एक ईंट चांदी की ऊपर तक, उसके बाला ख़ाने भी इसी तरह बने हुए थे और उनमें हर दो बुर्जियों के दर्मियान एक एक हूर ऐसी थी कि उसका सा हुस्न व जमाल और उसकी सी चेहरे की रौनक़ किसी ने न देखी होगी, उनकी ज़ुल्फ़ें सामने लटक रही थीं, उनमें से एक मुझे देख कर हंसने लगी तो उसके दांतों की रोशनी से जन्नत चमकने लगी। उसने कहा, ऐ जवान, अल्लाह जल्ल शानुहू के लिये मुजाहदा कर, ताकि मैं तेरे लिये हो जाऊँ, तू मेरे लिये, फिर मेरी आंख खुल गयी। यह मेरा क़िस्सा है। अब मुझ पर ज़रूरी है कि मैं इंतिहाई कोशिश करूँ और जो कोशिश करता है वह पा लेता है। यह तुमने जो कुछ मेरा मुजाहदा देखा है, उस हूर से मंगनी के वास्ते है। मैंने उससे दुआ की दर्ख़्वास्त की। वह मेरे लिये दुआ करके चला गया। अबू सुलैमान रह० कहते हैं कि उसके जाने के बाद मैं ने अपने नफ़्स को कहा कि एक हूर की तलब में अगर इतनी कोशिश हो सकती है तो हूर के रब की तलब में कैसी कोशिश होना चाहिये। *(रौज़)*

66. हज़रत ज़ुन्नून मिस्री रह० फ़रमाते हैं कि मैं मक्का मुकर्रमा के इरादे से एक जंगल में चल रहा था। मुझे प्यास की ऐसी सख़्त शिद्दत हुई कि मैं उससे आजिज़ हो गया क़रीब ही एक क़बीला बनी मख़्ज़ूम में गया। वहां मैंने एक बहुत कमसिन लड़की को, जो निहायत ही हसीन थी, देखा कि वह अश्आर के साथ गुनगुना रही थी, मुझे उसकी उम्र के लिहाज़ से इससे बहुत ताज्जुब हुआ, इसलिये कि वह बहुत कम उम्र थी।

मैंने उससे कहा कि तुझे हया नहीं आती, यों गा रही है। कहने लगी,

ज़ुन्नून चुप रहो, रात मैंने ख़ुशी ख़ुशी शराबे इश्क़ का एक गिलास पिया है, जिससे मैं अपने मौला के इश्क़ में नशा में हूँ। मैंने कहा, तू तो बड़ी हकीम मालूम होती है। मुझे कुछ नसीहत कर। कहने लगी, ज़ुन्नून चुप रहने को लाज़िम कर लो, और दुनिया में से सिर्फ़ इतनी रोज़ी पर क़नाअत करो, जिससे आदमी ज़िंदा रहे, ताकि जन्नत में उस पाक ज़ात की ज़ियारत हो सके जिसको कभी फ़ना नहीं। मैंने पूछा यहां पीने का पानी भी है? कहने लगी, तुझे पानी की जगह बताऊँ? मैंने सोचा कोई कुआं, चश्मा वग़ैरह बतायेगी। मैंने कहा, हां बताओ। कहने लगी, क़ियामत में पानी पीने वालों के चार दर्जे होंगे:-

1. एक जमाअत तो वह होगी, जिसको फ़रिश्ते पानी पिलायेंगे, जिसको हक़ तआला शानुहू ने :-

بَيْضَاءَ لَذَّةٍ لِلشَّارِبِيْنَ

(बैज़ा-अ लज़्ज़-तिल्लिश्शारिबी-न) में इर्शाद फ़रमाया (सूरः साफ़्फ़ात रूकूअ 2) में है कि उनके पास बहती हुई शराब का गिलास लाया जायेगा, जो सफ़ेद होगी, पीने वालों के लिये लज़ीज़ होगी।

2. दूसरी जमाअत को रिज़वान (जन्नत के नाज़िम) पिलायेंगे जिसको अल्लाह जल्ल शानुहू ने "मिज़ाजुहू मिन तस्नीम" से ताबीर फ़रमाया (जो अम्-म के पारे में सूरः तत्फ़ीफ़ में है कि उसकी आमेज़िश तस्नीम से होगी जो एक चश्मा है, जिससे मुक़र्रब आमदी पीते हैं।)

3. और तीसरा फ़िर्क़ा वह है, जिसको ख़ुद हक़ सुब्हानुहू व तक़द्दुस पिलायेंगे, जिसको अल्लाह जल्ल शानुहू ने

وَسَقَاهُمْ رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ○

से ताबीर फ़रमाया है। (जो सूरः दह्र में हैं कि उनका रब उनको पाकीज़ा शराब पिलायेगा) वह लड़की कहने लगी कि ज़ुन्नून, तुम अपना भेद दुनिया में अपने मौला के सिवा किसी से न कहो, ताकि हक़ तआला शानुहू तुम्हें आख़िरत में ख़ुद पानी पिलायें।

मुसन्निफ़ कहते हैं कि शुरू में चार जमाअतों का ज़िक्र था, आख़िर में तीन ही ज़िक्र की गयीं।

4. शायद चौथी जमाअत वह है जिनको नौ उम्र लड़के पिलायेंगे

जिसकोः-

وَيَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُخَلَّدُونَ بِأَكْوَابٍ وَأَبَارِيقَ وَكَأْسٍ مِنْ مَعِينٍ

से ताबीर किया जो सूरः वाक़िआ में है कि उनके पास ऐसे लड़के जो हमेशा लड़के ही रहेंगे, ये चीज़ें लेकर आमद व रफ़्त रखेंगे, आबख़ोरे और आफ़्ताबे और ऐसा जामे शराब जो बहती हुई शराब से भरा जायेगा। *(रौज़)*

67. हज़रत उमर रज़ि॰ के दरवाज़े पर एक मर्तबा चंद लोग हाज़िर थे, एक बांदी गुज़री। लोगों ने कहा कि यह अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ि॰ की बांदी है। आपने फ़रमाया कि नहीं, यह अमीरूल मोमिनीन की नहीं है, न उसके लिये हलाल है, यह बैतुलमाल की है, उसको बैतुलमाल से सिर्फ़ यह चीज़ जायज़ है, एक जोड़ा गर्मी का, एक सर्दी का और वह चीज़ जिससे हज और उमरा कर सके और एक मुतवस्सित आदमी की रोज़ी जो न ज़्यादा अमीर हो, न ज़्यादा ग़रीब।

असलम हज़रत उमर रज़ि॰ के ग़ुलाम फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हज़रत उमर रज़ि॰ की रग़बत ताज़ा मछली की मालूम हुई। आपके ग़ुलाम यरफ़ा रज़ि॰ अपनी ऊँटनी पर सवार होकर समुन्दर के किनारे से मछली ख़रीद कर लाये और तेज़ आमद व रफ़्त की वजह से ऊँटनी को पसीना आ गया। उन्होंने वापस आकर ऊँटनी को ख़ूब धो दिया कि पसीना मालूम न हो। हज़रत उमर रज़ि॰ ने फ़रमाया कि चलो, तुम्हारी ऊँटनी को देखें, तशरीफ़ लाये तो उसके कान के नीचे पसीना था जो धोने से रह गया था। उसको देख कर फ़रमाया कि यह धोना भूल गये (गोया यह तअ़्ना था कि इसका पसीना साफ़ कर दिया) इसके बाद फ़रमाया कि एक आदमी को ख़्वाहिशे नफ़स के वास्ते तुमने इस जानवर को अज़ाब में मुब्तला किया। उमर इस मछली को वल्लाह, बिल्कुल नहीं चखेगा। अब्दुल्लाह बिन आमिर रज़ि॰ कहते हैं कि मैं हज़रत उमर रज़ि॰ के साथ हज को गया। आपके लिये न ख़ेमा लगता था, न छोलदारी, एक चादर या चमड़ा किसी दरख़्त के नीचे डाल दिया जाता, उसके साए में आप तशरीफ़ रखते। *(तारीख़ुल ख़ुलफ़ा)*

68. हज़रत फ़ुज़ैल बिन अयाज़ रह॰ मशहूर बुज़ुर्ग हैं, अरफ़ात के मैदान में लोग तो सब के सब कसरत से दुआयें मांग रहे थे और वह ऐसी बुरी तरह रो रहे थे, जैसे किसी औरत का बच्चा मर गया हो और वह आग में जल रही हो। जब ग़ुरूब का वक़्त होने लगा, तो अपनी दाढ़ी पकड़ कर आसमान की तरफ़ मुंह

उठाया, और फ़रमाने लगे कि अगर तू माफ़ भी कर दे तब भी मेरी बदहाली पर इंतिहाई अफ़सोस है। *(एह्या)*

इब्ने अरबी रह॰ ने भी मुहाज़रात में इस क़िस्से को नक़ल किया और इस पर यह इज़ाफ़ा किया कि मुतर्रिफ़ रह॰ यह दुआ कर रहे थे, "ऐ अल्लाह, मेरी मौजूदगी की वजह से इन सब को तू महरूम न फ़रमा और बक्र बिन अब्दुल्लाह रह॰ यह कह रहे थे, यह अरफ़ात का मैदान किस क़दर अशरफ़ मक़ाम है और इसके हाज़िरीन के लिये किस क़दर बाइसे रिज़ा है, अगर मेरा वजूद यहां न होता"।

69. रबीअ् बिन सुलैमान रह॰ कहते हैं कि में हज के लिये जा रहा था। मेरे साथ मेरे भाई थे और एक जमाअत थी। जब हम कूफ़े में पहुँचे तो वहां ज़रूरियाते सफ़र ख़रीदने के लिये बाज़ारों में घूम रहा था कि एक वीरान सी जगह में एक ख़च्चर मरा हुआ पड़ा था और एक औरत जिसके कपड़े बहुत पुराने, बोसीदा थे चाकू लिये हुए उसके टुकड़े गोश्त के काट काट कर एक ज़ंबील में रख रही थी। मुझे यह ख़्याल हुआ कि यह मुर्दार गोश्त लिये जा रही है, इस पर सुकूत करना हरगिज़ न चाहिये, अजब नहीं, यह कोई भटियारी औरत है। यही पका कर लोगों को खिला देगी। मैं चुपके से उसके पीछे हो लिया, इस तरह कि वह मुझे न देखे। वह औरत एक बड़े मकान में पहुँची, जिसका दरवाज़ा भी ऊँचा था। उसने जाकर दरवाज़ा खटखटाया। अंदर से आवाज़ आयी कौन है? उसने कहा, खोलो मैं ही बद हाल हूँ। दरवाज़ा खोला गया और उसमें से चार लड़कियां आयीं, जिनके चेहरे से बदहाली और मुसीबत के आसार ज़ाहिर हो रहे थे। वह औरत अंदर गयी और वह ज़ंबील उन लड़कियों के सामने रख दी। मैं किवाड़ों की दराज़ों से झांक रहा था। मैंने देखा, अंदर से घर बिल्कुल बर्बाद ख़ाली था। उस औरत ने रोते हुए लड़कियों को आवाज़ दी कि लो, इसको पका लो और अल्लाह का शुक्र अदा करो। अल्लाह तआला का अपने बंदों पर इख़्तियार है, उसी के क़ब्ज़े में लोगों के क़ुलूब हैं। वे लड़कियां उसको काट काट कर आग पर भूनने लगीं। मुझे बहुत ज़ीक़ हुई। मैंने बाहर से आवाज़ दी, ऐ अल्लाह की बंदी! अल्लाह के वास्ते इसको न खाओ। वह कहने लगी तू कौन है? मैंने कहा मैं एक परदेसी आदमी हूँ, कहने लगी ऐ परदेसी तू हमसे क्या चाहता है? हम ख़ुद ही मुक़द्दर के क़ैदी हैं। तीन साल से हमारा न कोई मुईन, न मदद गार, तू हमसे क्या चाहता है? मैंने कहा, मजूसियों के एक फ़िर्क़े के सिवा मुर्दार का खाना किसी मज़हब में

जायज़ नहीं।

वह कहने लगी, हम ख़ानदाने नुबुव्वत के शरीफ़ (सैय्यद) हैं। इन लड़कियों का बाप बड़ा शरीफ़ था। वह अपने ही जैसों से इनका निकाह करना चाहता था, इसकी नौबत न आयी, उसका इंतिक़ाल हो गया जो तर्का उसने छोड़ा था, वह ख़त्म हो गया। हमें मालूम है कि मुरदार का खाना जायज़ नहीं, लेकिन इज़्तिरार में जायज़ हो जाता है। हमारा चार दिन का फ़ाक़ा है।

रबीअ् रह० कहते हैं कि उसके हालात सुनकर मुझे रोना आ गया और मैं रोता हुआ दिल बेचैन वहां से वापस हुआ और मैंने अपने भाई से आकर कहा कि मेरा इरादा तो हज का नहीं रहा। उसने मुझे बहुत समझाया, हज के फ़ज़ाइल बताये कि हाजी ऐसी हालत में लौटता है कि उस पर कोई गुनाह नहीं रहता वग़ैरह वग़ैरह। मैंने कहा, बस लम्बी चौड़ी बातें न करो। यह कह कर मैंने अपने कपड़े और एहराम की चादरें और जो सामान मेरे साथ था वह सब लिया और नक़द छः सौ दिरम थे, वे लिये और उनमें से सौ दिरम का आटा ख़रीदा और सौ दिरम का कपड़ा ख़रीदा और बाक़ी दिरम जो बचे वे आटे में छुपा कर उस बुढ़िया के घर पहुंचा और यह सब सामान और आटा वग़ैरह उसको दे दिया। उस औरत ने अल्लाह का शुक्र अदा किया और कहने लगी, ऐ इब्ने सुलैमान, जा अल्लाह जल्ल शानुहू तेरे अगले पिछले सब गुनाह माफ़ करे और तुझे हज का सवाब अता करे और अपनी जन्नत में तुझे जगह अता फ़रमाये, और इसका ऐसा बदल अता फ़रमाये, जो तुझे भी ज़ाहिर हो जाये। सबसे बड़ी लड़की ने कहा, अल्लाह जल्ल शानुहू तेरा अज्र दो चंद करे और तेरे गुनाह माफ़ करे, दूसरी ने कहा, अल्लाह जल्ल शानुहू तुझे इस से बहुत ज़्यादा अता फ़रमाये, जितना तूने हमें दिया। तीसरी ने कहा, हक़ तआला शानुहू हमारे दादे के साथ तेरा हश्र करे। चौथी ने, जो सबसे छोटी थी कहा, ऐ अल्लाह, जिसने हम पर एहसान किया, तू उसका नेअ्मल बदल उसको जल्दी अता कर और उसके अगले पिछले सब गुनाह माफ़ कर।

रबीअ् रह० कहते हैं कि हुज्जाज का क़ाफ़िला रवाना हो गया। मैं कूफ़ा ही में मजबूरन पड़ा रहा कि वे सब हज से फ़ारिग़ होकर लौट भी आये। मुझे ख़्याल हुआ कि इन हुज्जाज का इस्तिक़्बाल करूँ, उनसे अपने लिये दुआ कराऊँ किसी की मक़्बूल दुआ मुझे भी लग जाये। जब हुज्जाज का एक क़ाफ़िला मेरी आंखों के सामने आ गया तो मुझे अपने हज से महरूमी पर बहुत अफ़सोस हुआ और रंज की वजह से मेरे आंसू निकल आये। जब मैं उनसे मिला तो मैंने कहा,

अल्लाह जल्ल शानुहू तुम्हारा हज क़ुबूल करे और तुम्हारे इख़राजात का बदल अता फ़रमाये, उनमें से एक ने कहा कि यह दुआ कैसी? मैंने कहा ऐसे शख़्स की दुआ, जो दरवाज़े तक की हाज़िरी से महरूम हो रहा हो, वे कहने लगे, बड़े ताज्जुब की बात है, अब तू वहां जाने से इंकार करता है, तू हमारे साथ अरफ़ात के मैदान में नहीं था? तूने हमारे साथ रमी-ए-जमरात नहीं की? तूने हमारे साथ तवाफ़ नहीं किए? मैं अपने दिल में सोचने लगा कि यह अल्लाह का लुत्फ़ है, इतने में खुद मेरे शहर के हाजियों का क़ाफ़िला आ गया। मैंने कहा, हक़ तआला शानुहू तुम्हारी सई मश्कूर फ़रमाये, तुम्हारा हज क़ुबूल फ़रमाये। वह भी यही कहने लगे कि तू हमारे साथ अरफ़ात पर नहीं था या रमी-ए-जमरात नहीं की, अब इंकार करता है? उनमें से एक शख़्स आगे बढ़ा और कहने लगा कि भाई, अब इंकार क्यों करते हो? क्या बात है? आख़िर तुम हमारे साथ मक्का में नहीं थे या मदीना में नहीं थे? जब हम क़ब्रे अत्हर की ज़ियारत करके बाबे जिब्रील से बाहर को आ रहे थे, उस वक़्त इज़्दिहाम की कसरत की वजह से तुमने यह थैली मेरे पास अमानत रखवायी थी, जिसकी मोहर पर लिखा हुआ है (मन आ-म-लना रबि-ह) "हमसे जो मामला करता है, नफ़ा कमाता है" यह तुम्हारी थैली वापस है।

रबीअ् रह० कहते हैं कि वल्लाह, मैंने उस थैली को कभी इससे पहले देखा भी न था, उसको लेकर घर वापस आया, इशा की नमाज़ पढ़ी, अपना वज़ीफ़ा पूरा किया, इसके बाद इसी सोच में जागता रहा कि आख़िर यह क़िस्सा क्या है? इसी में मेरी आंख लग गयी, तो मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत की, मैंने हुज़ूर सल्ल० को सलाम किया और हाथ चूमे। हुज़ूर सल्ल० ने तबस्सुम फ़रमाते हुए सलाम का जवाब दिया और इर्शाद फ़रमाया कि ऐ रबीअ्, आख़िर हम कितने गवाह इस पर क़ायम करें कि तूने हज किया, तू मानता ही नहीं, सुन बात यह है कि तूने उस औरत पर, जो मेरी औलाद थी, सदक़ा किया और अपना ज़ादे राह ईसार करके अपना हज मुलतवी कर दिया, तो मैंने अल्लाह जल्ल शानुहू से दुआ की कि वह इसका नेअ्मल बदल तुझे अता फ़रमाये, तो हक़ तआला शानुहू ने एक फ़रिश्ता तेरी सूरत का बना कर उसको हुक्म फ़रमा दिया कि वह क़ियामत तक हर साल तेरी तरफ़ से हज किया करे और दुनिया में तुझे यह अिवज़ (बदल) दिया कि छः सौ दिरम के बदले छ सौ दीनार (अशर्फ़ियां) अता कीं, तू अपनी आंख को ठंडी रख। फिर हुज़ूर सल्ल० ने भी यही अल्फ़ाज़ इर्शाद फ़रमाए :-

"मन आ-म-लना रबि-ह"

रबीअ् रह० कहते हैं कि जब मैं सोकर उठा तो उस थैली को खोला, उसमें छः सौ अशर्फ़ियां थीं। (रूश्फ़तुस्साबी)

70. सैय्यद समहौदी रह० ने जवाहर में इसी क़िस्म का दूसरा क़िस्सा लिखा है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० का मामूल यह था कि वह एक साल हज किया करते और एक साल जिहाद किया करते। वह फ़रमाते हैं कि एक साल जबकि मेरा हज का साल था, मैं पांच सौ अशर्फ़ियां लेकर हज के इरादे से चला और कूफ़े में जिस जगह ऊँट फ़रोख़्त होते हैं, पहुँचा ताकि ऊँट ख़रीदूं। वहां मैंने देखा कि कूड़ी पर एक बत्त (बतख़) मरी पड़ी हुई है और एक औरत उसके पास बैठी हुई उसके पर नोच रही है। मैं उस औरत के क़रीब गया और उससे पूछा, यह क्या हरकत कर रही है? वह कहने लगी, जिस काम से तुम्हें कोई वास्ता नहीं, उसकी तहक़ीक़ की क्या ज़रूरत ? मुझे उसके कहने से कुछ सोच सा हुआ, तो मैंने पूछने पर इसरार किया। वह कहने लगी, तुम्हारे इसरार ने मुझे अपना हाल ज़ाहिर करने पर मजबूर ही कर दिया। मैं सैयदानी हूँ। मेरे चार लड़कियां हैं। उनके बाप का अभी इंतिक़ाल हो गया है। आज चौथा दिन है कि हमने कुछ नहीं चखा। ऐसी हालत में मुर्दार हलाल है। मैं यह बत्त ले जाकर उन लड़कियों को खिलाऊँगी।

इब्ने मुबारक रह० कहते हैं कि मुझे अपने दिल में नदामत हुई और मैंने उस औरत से कहा अपनी गोद फैला। उसने फैलायी, मैंने पांच सौ अशर्फ़ियां उसकी गोद में डाल दीं। वह सर झुकाये बैठी रही। मैं वह अशर्फ़ियां डाल कर घर चला आया और हज का इरादा मुलतवी कर दिया और अपने घर वापस हो गया।

जब हुज्जाज फ़रागत के बाद आये मैं उनसे मिला, तो जिससे मैं मिलता और यह कहता कि हक़ तआला शानुहू तुम्हारा हज क़ुबूल करे, वही यह कहता कि अल्लाह तआला तुम्हारा भी हज क़ुबूल करे, और जब मैं कोई बात करता तो वे कहते कि हां हां फ़लाँ जगह जब तुमसे मुलाक़ात हुई थी। मैं बड़ी हैरत में था, यह क्या मामला है? मैंने रात को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाब में ज़ियारत की। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि अब्दुल्लाह, ताज्जुब की बात नहीं है कि तूने मेरी औलाद में से एक मुसीबतज़दा की मदद की थी, मैंने अल्लाह तआला से दुआ की कि तेरी तरफ़ से एक फ़रिश्ता मुक़र्रर कर दे, जो

हर साल तेरी तरफ़ से क़ियामत तक हज करता रहे, अब तुझे इख़्तियार है चाहे हज करना चाहे न करना।

(रौज़ा)

उश्शाक़ और मुख़्लिसीन के वाक़िआत की न कोई हद है न कोई इंतिहा। पौने चौदह सौ साल में से हर साल में कितने उश्शाक़ और मुख़्लिसीन ऐसे होंगे जिनके अजीब वाक़िआत गुज़रे। कोई लिखे तो कहां तक लिखे। सत्तर का अदद अहादीस में भी कसरत पर दलालत करता है, इसलिये इसी अदद पर इस सिलसिले को ख़त्म करता हूँ, अलबत्ता इन वाक़िआत में तीन अम्र क़ाबिले लिहाज़ हैं :-

1. अव्वल यह कि ये अह्वाल और वाक़िआत जो गुज़रे हैं वे इश्क़ और मुहब्बत पर मब्नी हैं और इश्क़ के क़वानीन आम क़वानीन से बालातर हैं :-

"मक्तबे इश्क़ के अंदाज़ निराले देखे,
उसको छुट्टी न मिली, जिसने सबक़ याद किया।।"

इश्क़ के ज़वाबित किसी उसूल के मातहत नहीं होते, न ये पढ़ने लिखने से आते हैं, बल्कि इश्क़ पैदा करने से आते हैं :-

"मुहब्बत तुझ को आदाबे मुहब्बत खुद सिखा देगी"

अपना काम कोशिश और सई करके इस समुन्दर में कूद पड़ना है, इसके बाद हर मेहनत आसान है और हर मशक़्क़त लज़ीज़ है, हर वह चीज़ जो इश्क़ से बे बहरा है लोगों के लिये मुसीबत और हलाकत है, वह इस समुन्दर के ग़ोता लगाने वाले के लिये आसान और लुत्फ़ व फ़रहत की चीज़ है। इस समुन्दर में ग़ोता लगाने वाले अंजाम और अवाक़िब की मस्लहत बीनियों से बालातर होते हैं:-

"अबस है जुस्तुजू बहरे मुहब्बत के किनारे की,
बस उसमें डूब ही जाना है ऐ दिल, पार हो जाना।।

लिहाज़ा इन वाक़िआत को इसी ऐनक से देखने की ज़रूरत है और इस रंग में रंग जाने की कोशिश करना चाहिये, लेकिन जब तक इश्क़ पैदा न हो, उस वक़्त तक न तो इन वाक़िआत से इस्तिदलाल करना चाहिए और न इन पर ऐतिराज़ करना चाहिए, इसलिये कि वे इश्क़ के ग़लबे में सादिर होते हैं।

इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि जो शख़्स मुहब्बत का प्याला पी लेता

है, वह मख़्मूर हो जाता है, उसके कलाम में भी वुस्अत आ जाती है, अगर उसका
वह नशा ज़ाइल हो जाए तो वह देखे कि जो कुछ उसने ग़लबे में कहा है, वह
एक हाल है, हक़ीक़त नहीं, और उश्शाक़ के कलाम से लज़्ज़त तो हासिल की
जाती है, उस पर एतिमाद नहीं किया जाता। *(एह्या, 3)*

2. दूसरा अम्र यह है कि इन क़िस्सों में अक्सर मवाक़े में तवक्कुल की
वे मिसालें गुज़री हैं जो हम जैसे ना अह्लों के अमल तो दर किनार ज़ेहनों से भी
बालातर हैं। उनके मुताल्लिक़ यह बात ज़ेहन में रखना चाहिए कि तवक्कुल का
मुन्तहा यही है, जो इन वाक़िआत से ज़ाहिर होता है और वह पसंदीदा भी है और
उसके कमाल पर पहुँचने की सई और कम से कम तमन्ना तो होना ही चाहिए,
लेकिन जब तक यह दर्जा हासिल न हो उस वक़्त तक तर्के असबाब न करना
चाहिए।

एक बुज़ुर्ग कहते हैं कि मैंने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन यहया रह० से पूछा
कि तवक्कुल की हक़ीक़त क्या है? उन्होंने फ़रमाया कि अगर बहुत बड़े अज़्दहे
के मुंह में तू हाथ दे दे और वह पहुँचे तक उसको खा ले तो उस वक़्त भी तुझे
अल्लाह जल्ल शानुहू के सिवा किसी का ख़ौफ़ न हो, मैं इसके बाद बा यज़ीद
रह० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ कि उनसे इसके मुताल्लिक़ दर्याफ़्त करूँ, उनके
किवाड़ बंद थे। मैंने दरवाज़ा खटखटाया, उन्होंने अंदर ही से जवाब दे दिया कि
तुझे अब्दुर्रहमान रह० के जवाब से किफ़ायत न हुई, जो मेरे पास पूछने के वास्ते
आया है। मैंने अर्ज़ किया कि किवाड़ तो खोल दीजिये। फ़रमाया तुम इस वक़्त
मुलाक़ात के लिये तो आये नहीं, बात पूछने आये थे, उसका जवाब मिल गया और
किवाड़ न खोले। एक साल के बाद मैं दोबारा उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो
फ़ौरन किवाड़ खोल दिये और फ़रमाया कि इस वक़्त तुम मिलने के लिये आये
हो। *(रौज़)*

मुल्ला अली क़ारी रह० ने शरहे मिश्कात में लिखा है कि अस्बाब का
इख़्तियार करना तवक्कुल के मनाफ़ी नहीं है, और अगर कोई शख़्स ख़ालिस
तवक्कुल का इरादा करे तो इसमें भी मुज़ाईक़ा नहीं है, बशर्ते कि मुस्तक़ीमुल हाल
हो, अस्बाब छोड़ कर परेशान न हो, बल्कि अल्लाह जल्ल शानुहू के सिवा किसी
दूसरे का ख़्याल भी उसको न आवे, और जिन हज़रात ने तर्के अस्बाब की मज़म्मत
फ़रमायी है, उसकी वजह यह है कि लोग उसका हक़ अदा नहीं करते, बल्कि
दूसरे लोगों के तोशादानों पर निगाह रखते हैं। *(मिर्क़ात, 3)*

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि अगर तुम अल्लाह जल्ल शानुहू पर ऐसा तवक्कुल करो जैसा कि उसका हक़ है तो तुम को ऐसी तरह रिज़्क़ अता फ़रमाये जैसे परिंदों को देता है कि सुबह को भूखे घोंसलों से निकलते हैं और शाम को पेट भरे वापस होते हैं।

हुज़ूर सल्ल॰ का इर्शाद है कि जो अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ बिल्कुल्लिया मुन्क़तेअ् हो जाये तो हक़ तआला शानुहू उसकी हर ज़रूरत को पूरा करते हैं और ऐसी तरह रोज़ी पहुँचाते हैं कि जिसका उसको गुमान भी नहीं होता।

एक और हदीस में है कि जो शख़्स यह चाहता है कि वह सबसे ज़्यादा मुस्तग़नी हो, वह ऐसा बन जाए कि उसको अल्लाह जल्ल शानुहू की अता पर इससे ज़्यादा भरोसा हो जितना उस माल पर होता है जो अपने पास मौजूद है। *(एह्या, 4)*

इसका अंदाज़ा दो क़िस्सों से होता है, जो अहादीस में मशहूर हैं :-

एक हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ का मशहूर क़िस्सा कि जब हुज़ूर सल्ल॰ ने ग़ज़्वा-ए-तबूक के लिये चंदा किया तो हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि॰ जो कुछ घर में था, सब कुछ ले आये और जब हुज़ूर सल्ल॰ ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि घर में क्या छोड़ा तो आपने फ़रमाया कि अल्लाह जल्ल शानुहू और उसका रसूल सल्ल॰। हिकायाते सहाबा रज़ि॰ में यह क़िस्सा नक़ल भी कर चुका हूँ।

दूसरा वाक़िआ यह है कि एक शख़्स हुज़ूर सल्ल॰ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और एक सोने की डली अंडे के बराबर पेश की और अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह, मुझे एक मादिन (कान) से मिल गयी, मैं इसको अल्लाह के रास्ते में देता हूँ। इसके सिवा मेरे पास कोई चीज़ नहीं। हुज़ूर सल्ल॰ ने उससे ऐराज़ फ़रमाया। उन साहब ने दूसरी और तीसरी मर्तबा इसी तरह इसरार से पेश किया। हुज़ूर सल्ल॰ ने उसको लेकर ऐसे ज़ोर से फेंका कि अगर उनके लग जाती तो ज़ख़्मी कर देती और यह इर्शाद फ़रमाया कि बाज़ आदमी अपना सारा माल सदक़ा कर देते हैं, फिर लोगों के सामने हाथ फैलाने के वास्ते बैठ जाते हैं। *(अबूदाऊद)*

इन साहब का एतिमाद अलल्लाह और तवक्कुल हज़रत सिद्दीके अकबर के मुक़ाबले में क्या हो सकता था, इसी वजह से हुज़ूर सल्ल॰ ने वहां सब कुछ क़ुबूल फ़रमा लिया और यहां नाराज़ी का इज़्हार फ़रमाया।

इस सिलसिले में हमारे अकाबिर का तर्जे अमल बहुत ही अजीब और पसंदीदा है, और वह वह है, जिसको हज़रते अक्दस सैय्यिदुत्ताइफ़: शैख़ुल मशाइख़ शाह वलिय्युल्लाह साहब रह० ने अपने उस रिसाले में तहरीर फ़रमाया है, जिसमें अपने मुबश्शिरात को जमा किया है, फ़रमाते हैं कि मैंने एक मर्तबा हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रूहानी सवाल किया कि अस्बाब के इख़्तियार करने में और उसके छोड़ने में अफ़ज़ल चीज़ कौन सी है, तो मुझ पर हुज़ूर सल्ल० का एक रूहानी फ़ैज़ हुआ, जिस की वजह से मेरा क़ल्ब अस्बाब और औलाद वग़ैरह की तरफ़ से बिल्कुल सर्द पड़ गया। उसके थोड़ी देर बाद यह हालत ज़ायल हुई तो मैंने अपनी तबीअत को अस्बाब की तरफ़ माइल पाया और अपनी रूह को अस्बाब से हटा कर अल्लाह को सौंप देने की तरफ़ माइल पाया। *(दुर्रे समीन)*

हक़ीक़त में यह बेहतरीन सूरत है कि इसमें वे इश्कालात भी पैदा नहीं होते जो तर्के अस्बाब में अक्सर पैदा हो जाते हैं। हुज़ूर सल्ल० का इर्शाद है कि ग़िना माल की कसरत से नहीं होता, बल्कि ग़िना हक़ीक़त में दिल का ग़िना है। *(मिश्कात)*

इमाम ग़ज़ाली रह० ने लिखा है कि तवक्कुल के तीन दर्जे हैं :-

1. पहला दर्जा तो ऐसा है जैसा कि कोई शख़्स किसी मुक़दमे में किसी होशियार माहिर तजुर्बेकार को वकील बनाले कि वह हर चीज़ में उस वकील की तरफ़ रूजुअ् करता है, लेकिन उसका यह तवक्कुल फ़ानी है, कसबी है, उसको अपने तवक्कुल का शऊर और एहसास है।

2. दूसरा दर्जा जो पहले से आला है, वह ऐसा है जैसा कि ना समझ बच्चे का अपनी मां की तरफ़, कि वह हर बात में उसी को पुकारता है और जब कोई घबराहट या तक्लीफ़ की बात उसको पेश आती है तो सबसे पहले उसके मुंह से अम्मां निकलता है, इन ही दोनों की तरफ़ हज़रत सहल रज़ि० ने इशारा किया है जबकि उनसे किसी ने पूछा कि तवक्कुल का अदना दर्जा क्या है? फ़रमाया कि उम्मीदों का ख़त्म कर देना। फिर साइल ने पूछा कि दर्मियानी दर्जा क्या है? फ़रमाया कि इख़्तियार का छोड़ देना। फिर साइल ने पूछा कि आला दर्जा क्या है? फ़रमाया कि उसको वह पहचान सकता है, जो दूसरे दर्जे पर पहुँच जाये।

3. इमाम ग़ज़ाली रह० ने लिखा है कि तीसरा दर्जा जो सबसे आला है,

वह यह कि अल्लाह जल्ल शानुहू के साथ ऐसा हो जाए जैसा कि मुर्दा नहलाने वाले के हाथ में है कि उसकी अपनी कोई हरकत रहती ही नहीं। इसी दर्जे पर पहुँच कर अल्लाह जल्ल शानुहू से मांगने का भी मुहताज नहीं रहता, वह खुद ही बिला तलब उसकी ज़रूरियात का तकफ़्फुल करता है जैसा कि नहलाने वाला खुद ही मय्यत की ज़रूरियाते ग़ुस्ल को पूरा करता है। *(एह्या 4)*

इस पर यह इश्काल कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आम तरीक़ अस्बाब के इख़्तियार का था, सही है लेकिन हक़ यह है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्ल॰ के शायाने शान वही हालत थी जिसको हुज़ूर सल्ल॰ ने इख़्तियार फ़रमाया। अगर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हालात इन वाक़िआत की नौइयत के होते तो उम्मत बड़े सख़्त इब्तिला में पड़ जाती। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उम्मत पर शफ़्क़त की वजह से इसका बहुत एहतिमाम था कि ऐसी चीज़ इख़्तियार न फ़रमायें जिसमें उम्मत को मशक़्क़त हो।

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चाश्त की नमाज़ न पढ़ते थे और मैं पढ़ती हूँ। बेशक हुज़ूर सल्ल॰ बाज़ अमल बावजूद कि हुज़ूर सल्ल॰ की ख़्वाहिश उसके करने की होती थी, इस ख़ौफ़ से छोड़ देते थे कि कहीं उम्मत पर फ़र्ज़ न हो जाये।

(अबू दाऊद)

हज़रत आइशा रज़ि॰ के इस इर्शाद का मतलब कि हुज़ूर सल्ल॰ नहीं पढ़ते थे और मैं पढ़ती हूँ एहतिमाम और दवाम है, कि जिस शिद्दते एहतिमाम से हज़रत आइशा रज़ि॰ पढ़ती थीं, हुज़ूर सल्ल॰ उतने एहतिमाम से न पढ़ते थे, वरना बीसयों रिवायात में हुज़ूर सल्ल॰ का चाश्त की नमाज़ पढ़ना वारिद हुआ है और यक़ीनन हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रूही फ़िदाहु अबी व उम्मी, अगर इतने शदीद एहतिमाम से पढ़ते, तो यही चीज़ उसको वाजिब बना देती।

तरावीह के बारे में बड़ी कसरत से रिवायात में वारिद हुआ है कि हुज़ूर सल्ल॰ ने चंद रात पढ़ीं और फिर छोड़ दीं। सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ को इसका इश्तियाक़ इतना बढ़ा कि हद नहीं। जब चंद रातों के बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने ख़ेमे से बाहर तशरीफ़ नहीं लाए तो सहाबा-ए-किराम रज़ि॰ को यह ख़्याल हुआ कि शायद नींद की वजह से आंख लग गयी, इसलिये

ऐसी चीज़ें इख़्तियार कीं, जिनसे बग़ैर जगाए आंख खुल जाये। हुज़ूर सल्ल० ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं तुम्हारी हरकतें देखता रहा और बिहम्दिल्लाह उस रात मैं ग़ाफ़िल भी न था, लेकिन मुझे इसके सिवा कोई चीज़ निकलने से मानेअ् न हुई कि मैं इससे डरा कि तुम पर फ़र्ज़ न हो जाये। अगर तुम पर फ़र्ज़ हो जाती तो इसका निभाना तुम्हें मुश्किल हो जाता। *(मिश्कात-अबू दाऊद)*

और जब यह हालत है कि हुज़ूर सल्ल० बावजूद ख़्वाहिश के अ-म-दन (जानबूझ कर) रूख़्सत पर अमल फ़रमाते थे, तो हुज़ूर सल्ल० के लिये उसका सवाब भी वाजिब और अज़ीमत ही का होता था।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने यह सुना कि बैठ कर नमाज़ पढ़ने का सवाब खड़े होकर नमाज़ पढ़ने से आधा तो है। मैं हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में एक मर्तबा हाज़िर हुआ तो हुज़ूर सल्ल० बैठ कर नमाज़ पढ़ रहे थे। मैं सर पर हाथ रख कर बैठ गया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि अब्दुल्लाह बिन अम्र, तुम्हें क्या हो गया? उन्होंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर सल्ल० मैंने यह सुना था कि आप ने यह इर्शाद फ़रमाया है कि बैठकर नमाज़ पढ़ने का सवाब खड़े होकर नमाज़ पढ़ने से आधा है। अब मैंने देखा कि आप बैठ कर नमाज़ पढ़ रहे हैं। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि तुमने सही सुना, लेकिन मैं इसमें तुम जैसा नहीं हूँ। हुज़ूर सल्ल० के इस पाक इर्शाद का मतलब कि "तुम जैसा नहीं हूँ" यही है कि मेरे लिये आधा सवाब नहीं है। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान तो बहुत आला व अरफ़अ् है। इसमें उलमा का दर्जा भी मशाइख़े सुलूक से मुम्ताज़ है और दोनों जमाअतों की दो अलाहिदा शानें हैं।

एक हदीस में इस क़िस्म का मज़्मून वारिद हुआ है कि जब कोई शख़्स किसी को हदया दे और उसके पास और लोग भी हों तो वह हदया मुश्तरक है। इस हदीस का क्या मतलब है? और किस क़िस्म का हदया इससे मुराद है? और मुहद्दिसाना हैसियत से यह हदीस किस दर्जे की है? ये मुस्तक़िल बहसें अपनी जगह पर हैं, लेकिन इस हदीस की बिना पर अह्ले इल्म की ज़बान पर अल् हदाया मुश्त-र-क-तुन "हद्या में शिर्कत है," शाये है।

एक बुज़ुर्ग की ख़िदमत में किसी शख़्स ने कोई हदया भेजा। हाज़िरीन में से किसी ने मिज़ाहन कह दिया कि "अल हदाया मुश्त-र-क-तुन्"। उन बुज़ुर्ग ने इर्शाद फ़रमाया कि शिर्क ही से बचने के वास्ते तो इतने दिनों से मुजाहदे कर रहे

हैं, शिर्कत हमें गवारा नहीं। यह तुम्हारी नज़्र है और जब वह चीज़ उनसे न उठी तो ख़ादिम से फ़रमा दिया कि यह इनके घर दे आओ।

हज़रत इमाम अबू यूसुफ़ रह० की ख़िदमत में किसी ने हद्या भेजा, वहां भी किसी ने मज्मे में से कहा "अल् हदाया मुश्त-र-क-तुन," हज़रत इमाम अबू यूसुफ़ रह० ने फ़रमाया कि यह हद्या इससे मुराद नहीं है, यह कह कर ख़ादिम से फ़रमा दिया कि इस को मेरे घर दे आओ।

उलमा का इर्शाद है कि दोनों क़िस्से अपनी अपनी जगह पर निहायत मौज़ूं हैं। एक ज़ाहिद बुज़ुर्ग की वही शान थी और एक फ़क़ीह के लिये यही मुनासिब था, इसलिये कि अगर यह मुश्तरक क़रार देते तो फ़िक़्ह के एतिबार से एक इमाम का मज़हब बन जाता और उम्मत के लिये दिक़्क़त होती।

साहिबे रौज़ लिखते हैं कि जल्बे मन्फ़अत और दफ़्-ए मज़र्रत के अस्बाब का इख़्तियार करना ही तरीक़ा जम्हूर अंबिया और जम्हूर औलिया का है, लेकिन इससे उन औलिया-ए-किराम पर जो मज़र्रतों से न बचते थे और अपने लिये अस्बाब इख़्तियार न फ़रमाते थे, एतिराज़ नहीं हो सकता, इसलिये कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम शरीअते मुतह्हरा पर चलाने वाले थे, इसलिये ऐसे सहल रास्ते पर चलाते थे, जिस पर अवाम व ख़वास सब चल सकें, और अगर क़ाफ़िलों का चलाने वाला किसी ऐसे मुश्किल रास्ते पर क़ाफ़िले को ले जाए जिस पर वह ख़ुद तो अपनी क़ुव्वत से चल सकता हो लेकिन क़ाफ़िले की अक्सरियत उस रास्ते की मुतहम्मिल न हो तो वह क़ाफ़िले वालों के ऊपर मेहरबान शुमार न होगा और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आलीशान ख़ुद हक़ सुब्हानहू व तक़द्दुस ने यह बतायी :-

عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُم بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ ٥(توبه)

पूरी आयते शरीफ़ा का तर्जुमा और मतलब यह है :-

"(ऐ लोगों) तुम्हारे पास एक ऐसे पैग़म्बर तशरीफ़ लाये हैं, जो तुम्हारी जिन्स से हैं, जिनको तुम्हारी मज़र्रत की बात निहायत गरां गुज़रती है, तुम्हारी मन्फ़अत के बड़े ख़्वाहिशमंद रहते हैं। (यह बात तो सब के साथ है, फिर बिल ख़ुसूस) मोमिनीन के साथ तो बड़े शफ़ीक़ और मेहरबान हैं।"

पस अगर क़ाफ़िले के क़वी लोग किसी मस्लहत से सख़्त रास्ते को

इख़्तियार कर लें तो क़ाफ़िले का ले जाने वाला उनको न रोकेगा। (रौज़)

यही वजह है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इमामों को तवील नमाज़ पढ़ाने पर निहायत शिद्दत से डांटते थे, और यह इर्शाद फ़रमाते थे कि जो इमाम बने वह ज़रूर हल्की नमाज़ पढ़े और जो अपनी तंहा नमाज़ पढ़े, वह जितनी चाहे लंबी नमाज़ पढ़े।

3. तीसरी बात जो इन वाक़िअता में क़ाबिले लिहाज़ है और वह भी हक़ीक़त में पहली ही बात पर मुतफ़र्रअ़ है, वह यह है कि बाज़ वाक़िआत में ऐसी शिद्दत मिलती है, जो सरसरी नज़र में अपने आप को हलाकत में डालना है, और बज़ाहिर यह नाजायज़ मालूम होता है। इसके मुताल्लिक़ यह बात ज़रूर समझ लेना चाहिए कि ये वाक़िआत बमंज़िला दवा के हैं और दवा में तबीबे हाज़िक़ बसा औक़ात संखिया भी इस्तेमाल कराया करता है, लेकिन इसका इस्तेमाल तबीब की राय के मुवाफ़िक़ तो मुनासिब है, बल्कि बसा औक़ात ज़रूरी, लेकिन बिना उसके मश्वरे के नाजायज़ और मूजिबे हलाकत।

इसी तरह इन वाक़िआत में जिन हाज़िक़ तबीबों ने इन दवाओं का इस्तेमाल किया है, उन पर ऐतिराज़ अपनी नादानी और फ़न से नावाक़फ़ियत पर मब्नी (आधारित) है, लेकिन जो खुद तबीब न हो और किसी तबीब का उस को मश्वरा हासिल न हो उसको ऐसे उमूर जो शरीअते मुतहहरा के ख़िलाफ़ मालूम होते हों, इख़्तियार करना जायज़ नहीं हैं, अलबत्ता फ़न के अइम्मा पर क़वाइद से वाक़िफ़ लोगों पर ऐतिराज़ में जल्दी करना, बिल खुसूस ऐसे लोगों की तरफ़ से जो खुद वाक़फ़ियत न रखते हों, ग़लत चीज़ है और हलाकत में अपने आप को डालना हर हाल में नाजायज़ नहीं है। अगर दीनी मस्लहत उसकी मुतक़ाज़ी हो तो फिर मुबाह से भी आगे बढ़ जाता है।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है कि अल्लाह जल्ल शानुहू दो शख़्सों पर बड़ा ताज्जुब फ़रमाते हैं, यानी उनसे बहुत राज़ी होते हैं :-

1. एक वह शख़्स जो अपने नर्म नर्म बिस्तर पर लिहाफ़ के अंदर महबूबा बीवी के साथ लिपटा हो और एकदम बशाशत के साथ वहां से उठ कर नमाज़ के लिये खड़ा हो जाये। हक़ तआला शानुहू फ़रिश्तों के सामने उस शख़्स पर तफ़ाख़ुर फ़रमाते हैं।

2. दूसरा वह शख़्स जो एक लश्कर के साथ मिलकर जिहाद में शिर्कत कर रहा हो और यह लश्कर शिकस्त खाकर भागने लगे और उसमें से कोई शख़्स भागने में अल्लाह जल्ल शानुहू का ख़ौफ़ करे और तने तंहा वापस होकर मुक़ाबला करे, हत्ताकि शहीद हो जाये, तो हक़ तआला शानुहू इर्शाद फ़रमाते हैं कि देखो, मेरा यह बंदा मेरे इनामात में रग़बत और मेरी नाराज़ी के ख़ौफ़ से लौटा, हत्ता कि उस का ख़ून भी बहा दिया गया। *(मिश्कात)*

अब यह शख़्स जो वहां लौटा है, ज़ाहिर है कि मरने ही के वास्ते लौटा है कि जब पूरा लश्कर शिकस्त खाकर भागने लगा, तो उसमें एक आदमी क्या कर सकता है। इसके बावजूद हक़ तआला शानुहू इस पर तफ़ाख़ुर फ़रमाते हैं।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि आदमियों की ज़िन्दगी में बेहतरीन ज़िन्दगी उस शख़्स की है, जो अपने घोड़े की बाग हाथ में रखे, अल्लाह के रास्ते में उसकी कमर पर उड़ा उड़ा फिरे, जहां कहीं कोई घबराहट और ख़ौफ़ की बात सुन ले, फ़ौरन उसकी तरफ़ उड़ जाए, मौत और क़त्ल को ढूंढता फिरता हो, जहां कहीं उसका गुमान हो, वहीं पहुँच जाए। *(मिश्कात)*

अगर ये हज़रात अल्लाह के रास्ते में अपने आपको ख़तरात में डाल दें, तो इन पर ऐतिराज़ मुश्किल है, बिलख़ुसूस जबकि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद ये भी है :-

المجاهد من جاهد نفسه

"कामिल जिहाद करने वाला वह है, जो अपने नफ़्स से जिहाद करे" *(मिश्कात)*

दूसरी हदीस के अल्फ़ाज़ ये हैं :-

المجاهد من جاهد هواه

"असल मुजाहिद वह है जो अपनी ख़्वाहिशे नफ़्सानी से जिहाद करे (और उसको मग़्लूब करे)। *(अत्-तशर्रुफ़)*

इसी लिये सूफ़िया की इस्तिलाह में इस का नाम जिहाद अक्बर है। ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से भी इस क़िस्म का मज़्मून नक़ल किया गया।

अल्लामा शामी रह॰ फ़रमाते हैं कि जिहाद की फ़ज़ीलत बहुत ज़्यादा है और क्यों न हो, जबकि उसका हासिल आदमी की सबसे ज़्यादा महबूब चीज़ जान को अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करना है, और अल्लाह की रिज़ा के वास्ते उस पर सख़्त मशक़्क़तें डालना है, और इस जिहाद से बढ़ कर नफ़्स को ताआत की पाबंदी पर मजबूर करना है और उसको उसकी ख़्वाहिशात से बचाना है। इसीलिये हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब एक ग़ज़वे से वापस तशरीफ़ ला रहे थे, तो हुज़ूर सल्ल॰ ने फ़रमाया था :-

رجعنا من الجهاد الاصغر الى الجهاد الاكبر

"हम लोग छोटे जिहाद से अब बड़े जिहाद की तरफ़ लौट रहे हैं।"

एक दूसरी हदीस में हज़रत जाबिर रज़ि॰ से नक़ल किया गया कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में कुछ लोग ग़ज़वा करने वाले हाज़िर हुए। आपने फ़रमाया, तुम बहुत अच्छा आना आए, क्योंकि जिहादे असग़र से जिहादे अक्बर की तरफ़ आए यानी मुजाहदा करना बंदे का अपनी हवा-ए-नफ़्सानी से। *(अत्-तशर्रुफ़, 2)*

पस अगर ये हज़रात इस जिहादे अक्बर में अपने आपको मशक़्क़तों में डालें तो इसमें कोई इश्काल नहीं है। दुश्मन के मग़लूब करने के वास्ते अपने आप को मशक़्क़तों में डालना बाइसे अज्र है, न कि बाइसे ऐतिराज़। हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है :-

"तेरा सबसे बड़ा दुश्मन तेरा नफ़्स है जो तेरे दो पहलुओं के दर्मियान में है।"

लिहाज़ा इस बड़े दुश्मन को मग़लूब करने के वास्ते भूखा रहना, प्यासा रहना, ख़तरात में अपने को डालना, मशक़्क़तों को बर्दाश्त करना, जहां तक किसी दूसरे अहम दीनी काम के नुक़्सान का सबब न बने, मर्ग़ूब है, हक़ तआला शानुहू इन मरमिटों के तुफ़ैल से उनके फ़ुयूज़ व बरकात का कुछ हिस्सा इस नापाक सियहकार को भी अता फ़रमावे, तो उसकी अता व करम से बईद नहीं कि वह करीम जिसको चाहे नवाज़ दे।

यह रिसाला शव्वाल सन् 1366 हि॰ में निज़ामुद्दीन के क़ियाम में लिखा

ISBN 81-7101-481-X

ISBN 81-7101-212-4

ISBN 81-7101-213-2

ISBN 81-7101-385-6

ISBN 81-7101-479-8

ISBN 81-7101-368-6

ISBN 81-7101-555-7

ISBN 81-7101-474-7

ISBN 81-7101-506-9